

पूना गायन समाज.

संगितसार ७ माग.

जयपुराधीश महाराजा मवाई प्रतापिमंह देवछत.

पकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी संकेटरी,गायन समाज.

माग १ ला.

स्वराध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार पुस्तक मकाशक कर्वानें आपने स्वाधीन रखा है.

पूना ' आर्थभूषण ' मेसमें छपां,

2920.

संपूर्ण ग्रन्थका सूरूप स्था १ और प्रत्येक भागका सूर्वक कर इ. स. १८६७ का आक्ट २५ क्र अनुसार रजिस्टर किया है, HIS HIGHNESS

Sir Madho Sing Bahadur,

G. C. S. I.

MAHARAJA OF JAIPUR.

Your Highness,

On behalf of the Poona Gayan Samaj, I humbly beg to approach Your Highness and express our heartfelt thanks for the signal help that your Highness has rendered to the cause of music by graciously according permission to give publicity to this work, which treats of the complete theory and science of ancient Indian music, vocal and instrumental and the art of dancing. The work was compiled in the Hindi language in seven parts after consulting various Sanskrit authorities on music in general and the standard systematic work of Sangit Ratnakar in particular, by Your Highness's illustrious ancestor His Highness Maharaja Sawai Pratapsinha Deo (who ruled from 1779 to 1804 A.D.)

The undersigned, feels that, the work cannot be more fittingly offered to the public than by being dedicated to Your Highness who has carried on the traditions of Your Highness's noble ancestor. The choice is eminently suitable inasmuch as Your Highness has shown yourself to be no mean patron of the fine and liberal arts, and one who has taken a deep interest in education. It is a great thing in a ruler, if he is able to appreciate wit and learning in others, or if he is able to take advantage of such facilities, but "to drink indeed of the true fountains of learning nay to have such a fountain of learning in himself" is a rare combination. Your Highness may well lay claim to such a distinction. At Your Highness's feet, therefore, do we respectfully lay this oblation and trust that, under so distinguished a patronage the work may find suitable reception by the public.

"Radha Govind Sangit Sar" in seven parts is being published, the first of which is now issued.

Poona Gayan Samaj, No. 12 Shanwar Peith, Poona City, 25th June 1910. I remain,
Your Highness's
Respectful and obedient servant,
B. T. SAHASRABUDDHE,
Hon. Secretary,
Gayan Samaj, Poona.

समर्पण.

चयपुराधीश हिज हाइनेस सर माधोसिंह बहादूर जी. सी. एस. आय. की सेवामें ।

श्रीमान् महाराजाधिराज,

पूना गायनसमाजकी तरफसे मैं विनयपूर्वक आपकी सेवामें उपस्थित होता हूँ और हादिक धन्यवाद देताहूं कि आपने दयापूर्वक इस यन्थको प्रकाशित कर-नेकी आज्ञादी। इस यन्थमें गाने, बजाने ओर नृत्यके गम्भीर विषयोंकी सिद्धान्त-सहित पूर्णमीमांसा पाचीन भारतके आचार्योंके मतानुसारकी गई है।

श्रीमानके प्रसिद्ध पूर्वज महाराजा सवाई प्रतापिसह देव (जिनका राज्य काल १७७९ से १८०४ ई. तक था) ने संस्कृतके पाचीन प्रन्थोंका मथकर और संगीत रत्नाकरके आधारपर इस प्रन्थकी सात भागोंमें रचनाकी। निम्न लिखतका पूर्ण विश्वास है कि श्रीमानके चरणकमलें समर्भण करके यह प्रन्थ सर्वसाधारणको भेट करना परमोचित होगा।

श्रीमानने अपने पसिद्ध पूर्वजकी मर्यादाको पाछन करतेहैं अतएव इसका समर्पण श्रीमान्के कमछचरणोमें ही करना ठीकहै क्यों कि आप गुणके पसिद्ध याही हैं ओर शिक्षामें आपको बहुत उत्साहमी है राजामें यह एक बड़ी विशेषता होती है की वह गूण ओर विद्याका उचित आदरसत्कार करता है अथवा वह स्वयमव दूसरोंके गूण और विद्यासें छाभ उठाता है। परन्तु विद्यासरोवरमें अमृतपान करना या ऐसे सरोवरका आत्मामे ही होना दुर्छभ है। श्रीमान् इस अपूर्व गुणसें अलंकत है; अतएव श्रीमान् महाराजाधिराजके चरण-कमलें में सादर इस शुद्रापहारको अर्पण करता हूं और आशा करता हूं कि ऐसे प्रसिद्ध संरक्षककी कृपासें इस यन्थका योग्य स्वागत सर्वसाधारण करेंगे.

राधागोविंद संगीत्सार सात भागोंमें छप रहा है। पहला भाग बिलकुल तैय्यार है।

पूना गायनर माज,) नंबर १२ शनवार पेठ, पूना-२५ जून १९१०.) श्रीमानका विवीत पार्थि, बलदंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी, सेकेटरी, गायकार्ड्स, पूना.

PREFACE.

The Government of Bombay in the Educational Department, having recognised the importance of Indian Music by the award of a grant-in-aid to the Gayan Samaj Music School, as well as by the appointment of music teachers in the Government Male and Female Training Colleges at Poona, Ahmedabad, Hyderabad (Sindh), Dharwar and Dhulia, the Gayan Samaj deemed it necessary to publish text-books on music, including primary courses for use in schools.

The Samaj next turned its attention to the ancient musical literature of India. The present impetus to general education and the awakening of interest in music, have created a desire to enquire into and study the ancient Indian works on music. Efforts. in this direction are sure to appeal to lovers of music of all grades amateurs as well as professionals, and the Samaj hope that in entering on this field, they will not have laboured in vain. entertain the hope that a day will sooner or later arrive when treatises on music will be prescribed as texts for the University Examinations. Radha Govind Sangit Sar is written in Hindi the most popular vernacular of India. The idea of the Samai undertaking the publication of this work was suggested by the Deputy Educational Inspector, Poona, in his report No. 922 dated 17th August 1908, to the Educational Inspector C. D., in connection with the inspection of the music classes of the Gayan Samaj. It is hoped that, it will spread among the Indian public a clear idea of the science of the system of Indian music, as inculcated by the ancient writers.

It is a complete and exhaustive work in seven parts on the lines of the Sangit Ratnakar. The author H. H. Sawai Pratap Sinha Deo, Maharajah of Jaipur who ruled the State from A. D. 1779 to 1804, has consulted several Sanskrit authorities. It is a free translation of Sangit Ratnakar the most ancient complete treatise in Sanskrit by Saranga Deo of Kashmir said to have been written in the early part of the 13th century.

It contains the following chapters viz : -(1) Swaradhyaya: On musical notes, scales &c., (2) Wadyadhyaya: On musical

The work consists of the above-mentioned seven parts and the first one Swaradhyaya is now issued and the others will follow as they will be ready.

Any one who studies this work, will be struck with the numerous opportunities that present themselves for comparing the ancient Indian system of music with the Western system as well as the music as practised at present. If by the introduction of the ancient Indian works on music to the public they obtain a closer insight into the system of our musical science, a few years will doubtless witness a vast change in the study and position of music in India.

The grateful thanks of the Samaj are due to the Kishangarh Durbar for the presentation of the manuscript in their possession which has enabled the Samaj to undertake this publication as well as to the Bhavnagar and Bharatpur Durbars and to sheit Madhowdas Gokuldas Pasta of Bombay for their pecuniary help-in-aid of the same.

Thanks are also due to Pandit Madhusudanji Daroga of the Jaipur Palace Library and Pandit Vinayak Jagannath Bawa Thakurdas of Poona for their help in connection with the publication of this work.

No. 12, Shanwar Peth,
Poons City,
25th June 1919.

BALWANT TRIMBAK SAHASRABUDDHE,
Honorary Secretary,
Gayan Samaj, Poons.

भूमिका.

बंबई गवर्मेंटने, गायनसमाजके संगीत पाठशालाको साम्पत्तिक सहायता द्कर और पुना, अमदाबाद, हैदाबाद (सिंध), धारवाड और धूलियाके मर्दाने और जनाने दोनोंही प्रकारके सरकारी ट्रेनिंग कॉलेजोंमें संगीतके आचार्यों (Music teachers) को नियुक्त करके. शिक्षाविभागमें भारतीय संगीतकी महिमा और अवश्यकता को स्वीकार कियाहै। अतएव गायनसमाज संगीत शास्त्रके ग्रंन्थोंकि प्रकाशन और स्कूलोंके वास्ते संगीत पाइमरोंके रचनेकी अवश्यकता समझती है।

इसके बाद समाजका ध्यान भारतके पाचीन संगीत यन्थोंकी ओर आकर्षित हुआ आधुनिक विद्यापसार ओर संगीतमें रुचिकी वृद्धीके कारण भारतके पाचीन संगीत ग्रन्थोंके अवलोकन ओर अध्ययनकी लोगोंमें पबल इच्छा उत्पन्न हुई है इस ओर, अतएव जो कुछ पयत्न किया जायगा, उससें, अवश्यमेव सब पकारके संगीत रसिकोंको सहानुभित होगी। और समाजको आशाहै कि इस कार्यक्षेत्रमें पदार्पण करनेसें समाजका परिश्रम निष्फल न होगा। समाज आशा करती है कि वह दिन जल्दी या देरमें अवश्य आयगा जब युनिव-र्सिटी (University) के परीक्षाके लिये संगीत ग्रन्थ रख्ले जायगे. राधा गोविंद संगीतसार हिंदी भाषामें है। यह भाषा भारतीय भाषाओंसें सबसें ज्यादा प्रचलित है। शिक्षाविभागके डिप्युटी इन्स्पेक्टरसाहिबने पुनाके गायन समाजके संगीत स्कूलके विषयमें जो रिपोर्ट नंबर ९२२ तारीख १७ ऑगस्ट सन १९०८. शिक्षाविभागके इन्स्पेक्टरसाहेबर्ने भेजीथी उसमें उन्होंने इस उपयुक्त बन्थके पकाशनका विचार पगट कियाथा। और उनकेही विचारके अनु-सार समाजने इस कार्यको उठाया है। "यह आशा की जातीहै कि. इस यन्थकेद्वारा भारतवासीयों । भारतके पाचीन संगीतशासका ठीक ज्ञान होगा।

यह पुस्तक संपूर्ण है, और इसमें पूरी तोरसें विषयकी व्याख्या की गयीहै। संगीत रत्नाकरके तरहसे यह पुस्तक ७ भागों में विभाजितहै। मंथरचिता जयपुराधीश महा-राज सवाई प्रतापसिंह देवने जिनका राज्य, सन १७७९ ते १८०४ तक हुआ। बहूतसे पाचीन संस्कृत यन्थोंको देख मालकर इस पुस्तकको रचाहै। यह ग्रंथ संगीत रत्नाकरका स्वतंत्र अनुवाद है। संगीत रत्नाकर संस्कृतमें सबसे पुरातन संपूर्ण ग्रंथ है, जिसको, कहते हैं, काश्मीरके सारंग देवने इसवी १३ वी शताब्दीक पारंभमें लिखाथा।

राधागोविंद संगीतसारमं ७ अध्याय है।

१ स्वराध्याय. २ वाद्याध्याय. ३ नृत्याध्याय. ४ प्रकिर्णाध्याय. ५ प्रबं-धाध्याय. ६ तालाध्याय. ७ रागाध्याय ।

यह ग्रंथ उपयुक्त ७ भागों ने विभाजित है। पहिला भाग स्वराध्याय इस समय छपकर तय्यार है. ओर अन्य ६ भाग ज्यो ज्यो छपते जायेंगे त्यों त्यों प्रकाशित होते जायेंगे।

जो इस यंथको पढेगा, वह यह देखकर चिकत होयेगा. कि, कितनी जगहपर पाश्चात्य संगीत और आधुनिक संगीतसे पाचीन संगीतक साथ मुका-बिला होसकता है। भारतीय पाचीन संगीत यंथोक पचारसें यदि सर्वसाधारण हमारा संगीत पशालीका ज्यादा, सूक्ष्म ज्ञान हो जाय तो थोडेही सम-यमें अवश्यमेव भारतमें संगितके महत्व और अध्यायनक विषयमें लोगोंमें बडा भारी परिवर्तन होगा।

समाज किशनगढ दरबारको इस यंथकी हस्तलिखत प्रति देनेके लियं भन्यवाद देती है; क्योंकि दरबारकी ही क्रपासे समाज इस यंथको छापसकी है।

और समाज साम्पत्तिक सहायतीक लिये भावनगर और भरतपूर द्रबा-रोंकी और बंबईके शेट माधवदास गोकुलदास पास्नाके बहुतही कृतज्ञ है।

इस ग्रंथके प्रकाशनमं जो सहायता पंडित मधुसूदनजी दरागा जयपूर राजभवनके पुस्तकाध्यक्ष ओर पूनाँके पंडित विनायक जगन्नाथबुवा ठाकुरदासने दीई है. उसके छिये समाज उनको धन्यवाद देवी है।

नंबर १ - रानवार पेठ, पूना,) वळवंत त्र्यंवक सहस्रवृद्धी, ता. २५।६।१९१०.) सेकेटरी न्ययन्यस्यार, पूना.

श्रीराधागोविंद सगीतसार.

प्रथम स्वराध्याय- राचिपत्र.

~			•	
विषयक्रम.		ष्ट्रष्ट	विषयक्रम.	ध्य.
गणेशस्तवन	•••	9	गुद्ध चोरासी तानके लहान गायवेको	
सरस्वतीस्तवन	•••	२	फल वगरे	45
गौरीपतिस्तवन	•••	ર	संगीत मीमांमाके मतसो कुट ताननको	
नर्दाकशोरस्तवन	•••	3	ਲਹਰ	45
भानुवंशवर्णन	•••	3	एक स्वर्गादंकनके क्रमसों नाम	Ę o
भानुवंशाराजवर्णन	•••	¥	ओडव तानको भेद संख्या	Ę 9
जयपूर वर्णन	•••	ч	चार स्वरनक तानकी सख्या	६२
राजसंदर्तन	•••	દ્	तीन स्वरनके तानकी संख्या	Ę 3
सांगतको लछन	•••	12	दोय म्वरनंक तानकी संख्या	દ્રે ર
तर्यात्रकको लखन	•••	98	एक म्वरके नानकी संख्या	ę̈́Υ
गातप्रशंसा	•••	9 3	पुनरुक्ति तानकी संख्या	8.4
गांतको स्वरूप	•••	58	मृर्च्छनाके भेद	દ્દેષ્ટ
पुरुषशारीरवर्णन (पिडोत्पत्ति)	•••	98	कृट ताननकी संख्या	603
नादको प्रकार		२२	मुर्च्छना प्रकरण	ξw
नादको स्थान	•••	२२	विरुत मुर्च्छनाके पाडव भेद	93
चलवीणाके उतारिवेका प्रकार	•••	२४	विरुत मुच्छनाके औडव भेद	७५
शृतिलक्षण	•••	24	प्रस्तार संस्था	5
मातो स्वरको स्वरूप । याम	•••	२८	स्वगेके तानके भेद	હહ
साना म्वरके म्थान	•••	२९	नष्ट र्रादृष्ट वड मेह्नको लछन	७७
मात म्बरन्के, कुल, जानि, वर्ण,	द्विप,		सातां स्वरके तानके विचार	
काष, देवता, छंद, रम	•••	30	सख्याप्रस्तार उद्धिष्ट	<9
मात स्वरोका मंत्र	•••	51	नष्टको पकार	cy
विक्रत स्वरनको लखन	•••	33	एक आदि म्बग्को पस्तार तीन म्बर ताई	. 20
विरुत म्वरनके ४२ भेद		3.4	चार खरोका पस्तार	cc
२२ विरुत म्बर संगान पा <u>रि जात</u> व	र मतसे	. 38	षांच स्वरोका शस्तार	66
गद् विरुत स्वरनेक मिलीक र इ	कार-	•	छ म्बरोका प्रस्तार	40
वादि, संवादि, विवादि, अनव	र्गाद्	3 6	सान स्वराका प्रस्तार	900
थातमङ्ख चक	• • •	3<	साधारण पकरण ग्रामके अन्तर स्वर वगैरे	964
र्वाणाशस्तार चक्र	•••	3<	वर्णालकार. स्थाई, आरोही, अवरो ^,	•
प्रामके लछन	•••	¥o	संचार्ग ठछन	966
म्च्छनाको लछन	•••	¥0	🗯 ॰ स्थाईगत अलंकार	940
दोना यामकी ५६ प्रकारकी मर्स्त	ता	83	,, ३२ आरोही अलंकार	952
"क्क भृच्छनाक मात मात भेद	अंतर ।	,	,, १२ अवराही अलंकार	9 99
पुच्छना वगर	• • • •	*2	,, २५ संचारी अलंकार	950
तानका लक्षण, संख्या व उदाह	राण व		,, ७ गीतनमे गायवेके अलंकार	
मुर्च्छनाके भेद		43	, ५ रागनके अग	200

बिषयक्रम.	पृष्ठ.	विषयक्रम.	प्रम
अनोए विलासके मतसों मेलके लक्षण		नंद्यंती जातिको लछन व उदाहरण.	२४५
व उदाहरण	२०९	जाति तालिका	249
शुद्ध पाडव मेल	205	गीतिप्रकरण	२५२
श्रुद्ध औडव मेल	210	षाड्जी आदिक सात सुद्ध जातिनके	
विकंत स्वर पाडव मेल	290	कपालनकी उत्पत्ति लंछन	२५२
विकत स्वर ओडव मेल	290	कंबलको उत्पत्ति, गाईवेको फल	२५५
तीव गांधार विकत स्वर मेल	२१०	जातिनको दरताव गीतनमे होय याते	
तीव मध्यम जुत विऋत स्वर मेल	293	गीतको लखन	२५५
क्येमल धैवत जुत विकत स्वर मेल	299	मामधी गीतको लछन	२५६
तीव निषाद जुत विऋत स्वर मेल ओर	,	अर्ध मागधी गीतको लढन	२५६
विकत स्वरन मेल	२१२	संभाविताको लखन	240
जातिनके तेरह अंग, नाम, लखन	२२०	प्रथुटा गीनको ठछन्	२५७
अठारह रागनकी जानिको लङन 🛛	२२३	मागुधी गीतको दुसरी ल्रांचन	२५८
विकत जाति	२२३	अर्ध मागधी गीतको दुसरो लछन	२५ँ८
षाडजी जातिको लक्षण व उदाहरण	२२४	मथुला गीतको दुसरो लङन	२५९
आर्षभी जातिको लक्षण व उदाहरण	२२६	कोमल धेवत मेल पांडव यंत्र	२५९
गांघारी जातिको लक्षण द उदाहरण	२२७	औडव "	२६∙ं
मध्यमा जातिको लछन व उदाहरण	२२९	संपूर्ण पाडव औडव ,,	२६०
पंचमी जातिको लङ्ग व उदाहरण	230	धेवत कोमल औडव ,,	२६ १
वैवर्ता जातिको लक्षन व उदाहरण	239	रियभ कोमल तीवतर मध्यम यंत्र 🐍 .	२६१
नेपादि जातिको लछन व उदाहरण	235	कामल धेवत संपूर्ण यंत्र	२६३
गर्ज कै शिकी जातिको लखन व उदाहरण	1२३४	रियम कोमल तीवतर मध्यम यंत्र	२६२
।इजोदी च्यवा जातिको लछन व उदाहरण	1234	पाडव, औडव यंत्र	२६२
बड्ज मध्यमा जा तिको लङन व उदाहरण	२३७	संपूर्ण पाडव, औडव यंत्र	२६३
बांघारोदीच्यवा जातिको लछन व		गातमं, रिष्भ कोमल, धेवत कोमल पूर्व	
उदाहरण	₹3€	निषाद् यंत्र	२६३
क्मगांधारी जातिको लखन व उदाहरण	२३९	धेवत कामल निषाद तीवतर यत्र	368
केशिकी जातिको लखन व उदाहरण	२४०	मध्यम संपूर्ण यंत्र	288
मध्यमोदीच्यवा जातिको लछन व उदाहरू०	ग२४२	परिश्रष्ट बनहटीरुत शुद्ध ओर विकत-	
कामीरवी जातिको लछन व उदाहरण	२४३	स्तर यंत्र	366
गांधार पंचमी जातिको लछन व उदाहरण	1२४४	रागोंसें नाम मिले हुवे मुख्य. २३ मेलको यंद्र	356
आंध्री जातिको लखन व उदाहरण	२४६	कर्नाटकी ७२ मेलके यंत्र	300

संगीतसार.

श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्ये नमः ॥

अथ श्रीराधागोविंदसंगीतसारं लिख्यते ॥

नमस्तस्मै गणेशाय सर्वविद्योपशान्तये ॥ कार्यारंभेषु सर्वेषु पूजितो यः सुरासुरै: ॥ १ ॥ हंसवाहनमारूढां वीणापुस्तकधारिणीं ॥ बुद्धिदात्रीमबुद्धीनां वंदेऽहं तां
सरस्वतीं ॥ २ ॥ राधापाणः पियसखा मुरलीवादने रतः ॥ वृंदावनिः ंजांतः गतो
जयति केशवः ॥ ३ ॥ गणपितमिभवंद्यं श्रीशपादारिवंदं दिनपितहरदेवीपादपः
तथेव ॥ निपुणजनसुतृष्टौ भाषया रच्यंतऽसौ सकलहितसुदर्भः सप्तसंगीतभावः ॥ ४ ॥
राधागोविंदसंगीतसारोऽयं ग्रंथनायकः ॥ श्रीमत्मतापिसहेन कृतो माधवतुष्टये ॥ ५ ॥
हस्तेन भावान् चरणेन तालान् मुखेन गीतं कथयन् मनोज्ञं ॥ मृदंगनादानुगतासः –
तृष्टपृष्टोदरः पातु स वो गणेशः ॥ ६ ॥

गणेशस्तः न ।

दें हा ॥ वक्र तुंड विघने सगुर गननायक घननाथ ॥ श्रीमतापनृपकीं करीं सदा प्रसन्न सनाथ ॥ ७ ॥ शुंडा दंड प्रचंड अति विघन विहंड गनेश ॥ गिरि-जासुत राजत सुखगुरु दीजे गिरा सुदेश ॥ ८ ॥ सवैया ॥ सेस सुरेस महे-शनमें जिन ध्यान तें पाप कटें सुहमेसके ॥ कामनादेन कीं कल्पतरू भवसिंधुके तारन नाव सुदेशके ॥ गिरिजाधिर गोद लडाइ जिन्हें सुखसंपित पाई महानहवे सके ॥ जो चहे सिद्धिकों या जगमें भलंभावसों सेड लेड याव गने सके ॥ ९ ॥ किवित्त ॥ अरुन वसन तन आभूषन मित घन चंदन लगायें गरें हार मुकतानिकें ॥ पर्जयम ल जूत अभय लडूवा थालकरमें विराजे नाथ रिद्धिसिद्धिमानके ॥ मू-सिप सवार परिवार हैं उदार सुरभक्ति प्राया विघाती विघन वितानके ॥ एक-वंत बुद्धितंत जिस मात् सतक साजो सब काज ॥ श्रीप्रताप महिमानके ॥ १०॥

सरस्वतीस्तवन।

दोहा ॥ विधि हरि शिव वंदन करत बानि देवता पार ॥ सरसुतिके ध्यान तें होय बुद्धिविसतार ॥ ११ ॥ हंस चढी कर बीन शित गावत नित संगीत दीजे भूप प्रतापकों विद्या अखिल पुनीत ॥ १२ ॥ किबित्त ॥ हंसपर जो हैं अंग उज्ज्वल वसनत्पोहें मोतिहारसोहें वीन पुस्तककों धोरंजू ॥ जिनको सुध्यान कियें भारता प्रवाह पुलें नासत ॥ अज्ञान ग्यान तुरत उधारेजू ॥ नृपकि पंडित सभाके मांझते ईनर पावत बडाई जगजस विसतारंजू ॥ स्मृतिन वषानि वेदपुरानिगानि ऐसी बानी महारानी श्रीप्रताप काम सारंजू ॥ १३ ॥ सात सुरतीन ग्राम इकंईस मूर्च्छना हें सौही कुटतांन सुद्धतानके समाजकों बीना मिध भाव दरसावें चले चावभरी मुखसों उचारें सामवेद सुखसाजकों ॥ ध्यानजन कुमति तिमिरितोरिवेमं भात जाकों गुनगान विद्यादान वरकाजकों ॥ सुमति उपाय क्यों नसेवो मनलाय तिहचार पगकंज वातीसुर सिरताजकों ॥ १४ ॥

गौरीपतिस्तवन।

सोरटा ॥ अंगविभूति सुगंध गंगतासके सीसपें ॥ संगगोरि अरधंग की जै रूपा महीपमें ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वंदन सुरमानव करत देत सकर सूष-वृंद ॥ कासीवासी ईसके नमा चरनअरविंद ॥ १६ ॥ किबित्त ॥ सोहि-चंदभारुगरें मुंडरुकी मारुधरें अंगनमें व्यारुचित्त चारु ब्रह्मजा पेथें ॥ ओढे गजपारु सीसगंग है रसारु तीननंनहें विसारु है कररुा दीह पपाये ॥ गो-रिजा अर्धग पे असंग भूतसंग चढे वरधउतंगजारें जंग भवतापयें ॥ दुषहर-संकरसो रूपा भाय चायरहो नितही सहाय नृपकूरम प्रतापयें ॥ १० ॥ ऊची ओर नीची जहांदेबतहें भूमितहा भरत हें पाव आपनोई आगें सरसें ॥ जात तहें अमकष्ट होइ जिन ज्याइ यातं करफूरुतोरि वेकों आपनोइ परसें मृगकी चर-मकरिरच रहीसे जतायें। आपनी करोटही सों सों वें पीति दरसें ॥ ऐसे अ-धैंगा निर्मारिक सने हवस गंगाधर मेरेनुर आनंदकों वरसें ॥ १८ ॥

नंदािकशोरस्तवन।

दोहा ॥ नमो नमो आनंद्घन सुंदर जुगलिकसोर ॥ वृंदा विर्पृत्ते विसालजुत-सवरसि कनि सिरमोर ॥ १९ ॥ मुकटमनोहर सीसपर उर वैजंतीमाल । श्रीपताप हिय वसौ यहैं ध्यानगोपाल ॥ २० ॥ विधिवछ लिष अचरज अये वरसल जे सुरहंद । जुगलरूप नवरस भये जय राधेगोविंद ॥ २१ ॥ कों न तें न कमलापती केसी राय कल्पान क्रमपितकी कीर्तिकों करह छपाकुलमान ॥ २२ ॥ ॥ किबित्त ॥ हात-मधिजिनके लसत नवनीत अरमेषलानीतं वरमें ॥ अतिसरसीरहै ॥ तिलकललाखघ-दतकेकठुलाउ रकन चिंत अंगक गुलाल सार ह ॥ अलक कपोल घनसांवल वर-नत्पोंही नासा ॥ अग्रमोतिमुषमंद हि हसीर हैं ॥ संतसुषदाई मेरें सुभगसदाई उर-वालकगुविंदजूकी मूरली वसी रहे ॥ २३ ॥ लिलिक सूभीं पाषलुकी है विसार भार तुरग कलंगीर य चरन भारेकी ॥ केसरिकीषोरिकांत कुंडल लसनीके मंद मु-सिकां निकरेनंन नि निजारेकी घरदार जामा उपरें नाजरिछोरटारवाजयह वीस-कंठवनमाल वारेकी ।। कोटिकामवारं वनें देषतनिहारें ऐसी वसौ छवि हियमांहि गोविंद पियारेकी ॥ २४ ॥ चाराचमकायोषोरिके सरिवनायो नकवे सरिसहायो कांनकुंडल दिपायो है ॥ हारदरसायो नीमाचुस्त अगला योवूटीसूथ नदिषायो सौं धें अंगसरसायो है ॥ राधेरंगछायो वृजकुल हकहायो वंसीसुर मंद गायो सुरनउ-लसायो है ॥ कुंजनीरसायो राममंडल रचायो रसलरव रसायो सो गुविंदमनभायो है ॥२५॥ सरद निसामें सुवचादिनीअमंदसुचित सुनासमीप नीप कुंज सुषकारि है ॥ विविध सिंगार अंग अंगन सुंठार तहां करत उदार केलिमें न रसभारि है ॥ न्यारि न्यारि रीति दरसार्वे हावभाव नमें नेहरसभानें दोऊ पीतम पियारी हैं ॥ कोटिका-मवारी छवि जाननविसारी ऐसे जुगलविहारी परतनमनवारी हैं ॥२६॥ ॥ दोहा ॥ सातसुरनके देव मुनि कुल छंदजाति सुग्राम ॥ श्री सवाई प्रतापके पुरवी मनके काम ॥ २७ ॥ क्रेस मुरेस महेस गुरु गिरा गनेस दिनेस ॥ वरदीये यह नृपति-कीं भक्तिऊजे सहमेस ॥ २८ ॥

राजः र्णन्. (भानुवंशवर्णन.)

राजा र्णान ।। छप्पे ॥ देवश्रेष्ठ हरि देव गिरनमें हे विषाना ॥ निदयनमें सुरसारिय धातुमें कंचनजानां ॥ तपजपसें सुरज्ञान जानदानमें धरती मंहीरकुछमें

ब्रम्हपधान ब्रम्हकुल कश्यपमुनि सुर देव दैत्य चरियरणगतताते उतमभानकुल ॥ राजाधिराज तावंसमें उपजे राघव बल अतुल ॥ २९ ॥ ॥ दोहा ॥ रिव-कुल वरनन करतही होय सकल मनकोंम ॥ भाषे वेदपुरानमें साथे आठों जॉम ॥ ३० ॥ ॥ छण्पे ॥ कश्यपकुल उद्योत कियो त्रिमुवनपित सूरज ॥ वैव-स्वत मनु ताभये वाजे नभ तुरज ॥ तिहें कुलसगर नरेस ताहिसवनीके जान्पों भो दिलीप तिहिंवस राज मारगयहि वान्पो ॥ तिहि वंस अंसर ॥ वंसमभये नृपित भगीरथ धर्मवर ॥ तप आपकीन सुरलोक तें गंगायुहिम आनिधर ॥ ३९ ॥

भानुवंशी राजवर्णन।

दोहा ॥ रविवंसी राजा नवें कुछमुजादयहरीति ॥ वेद धनुष्य मीजन सवद्रहेरै न दिनमीत ॥ ३२ ॥ फिर उपजेता वंसमें राजा रघु अवतंस ॥ सात दकार कीये मगट सुरनर करत पसंस ॥ ३३ ॥ दीक्षादान दया सुदम देव दिवाकर नाथ ॥ दरसन मुनिगन धैनुद्विज रहे निरंतर साथ ॥ ३४ ॥ तांपे नृपवर अज भये तासुत दसरथ भूप ॥ तिनके घर अवतार लिय च्यारी सरूप अनूप ॥ ३५॥ रामचंद्र छछमन प्रभु भरतसत्रुघन भ्रात ॥ इनके दरसन ध्यान तें मिटे सकछ उतपात ॥ ३६ ॥ रामायनमें रामके वरने चरित अनूप ॥ रामनाम पावन करत जिनकीये आपसरूप ॥ ३७ ॥ विश्वामित्र मुनिंदकों जगि पूरनप्रभुकीन ॥ तारी गौतमनारि ोें सिवधनुतोरि पवीन ॥ ३८ ॥ जनकसुताब्याही प्रभु रामचंद्र अव-तार ॥ तिनके उपजे दोइ सुत कुसलव राजकुवार ॥ ३९ ॥ कुसकुमारते भी पगट कूरमा लिविसतार ॥ उपजे जाके कुलनूपति कछ वाहे सिरदार ॥ ४० ॥ अ-विध दिलीपत यागपर रोहितास आसेर ॥ गोपाचलनरवर पुरी राज थानआ मेर ॥ ४१ ॥ जैसें सूरजकी किरन पूरें सकलहि थानं ॥ तैसें क्रमनृपितकी सब जग फिरै सुआंन ॥४२॥ क्रमकुल राजा भये किये सुरनउपगार॥ कोलगि कविवरनन करें होय ग्रंथ विस्तार ॥ ४३ ॥ ॥ सोरटा ॥ पुरी आमेर अजित मत्सवदेव न-के वीचमें कलिसों शौभय मीति तहा धरम निजकाल किय ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जहां दांन तप जग्य जप वरन २ निजधर्म ॥ जथा जोग सबहें इन्छ तजत पापके धर्म ॥ ४५ ॥ रविवंसी राजे तहां कूरम कुलके चंद ॥ पृथिराज पृथुरूपके दई छाप गोविंद् ॥ ४६ ॥ तार्क सुरवरवीर भो भारा मल हरिसेव ॥ ढुंढाहर नि-सवसिकीयो तासुत भगवत देव ॥ ४७ ॥ छे छपान निज हातमें जीति छई गुज-रात ॥ तासुत राजा भान भो देस बिदश निष्पात ॥ ४८ ॥ अटक कटक रिपु काटिकें सालकोट किये हद ॥ कालि लगट आसामलों जीतीमानमरद ॥ ४९ ॥ सागर खडग पषारिकें रही न अरिपै रीस ॥ मूठ काठकी जवन कर दीनी मान महीस ॥ ५० ॥ कासी पुस्कर आदियें कीने मंदिरमान ॥ महादान दीने सुजन सब जगमें किय आंन ॥ ५१ ॥ तासु तनय जगतेस नृप हने जवनदल बूंद् ॥ जगत शिरोमणि प्रमु थपे गाये जस कवि छंद ॥ ५२ ॥ महा सिंव्हताके भये जीते वह संमाम ॥ तार्के जयसिंह नृप भये किये साहके काम ॥ ५३ ॥ जयमंदिरे सुंदर महल जयित वास किय वाग ॥ दिछिन पित लेकें सिवा मिले साह अनु-राग ॥ ५४ ॥ रामसिंहताके पगट सव विद्यापरवीन ॥ सिवा भूप जहँ सरनलिष अद्भुत जस जग छीन ॥ ५५ ॥ किसनसिंह जहाँ अवतरे तेग त्याग जग कीन ॥ तासुत नृपविसने सभो जदृथ दघट कीन ॥ ५६ ॥ गनपति हरिहर कीया पूजि दिय द्विज दाँन ॥ ताकेउम प्रभावतें भो जयसिंह नृप आँन ॥ ५७ ॥ पुहमीके राजा नमें भये सवाई आप ॥ बम्हपुरी रचि दिजनकों दीनें दान अपाय ॥ ५८ ॥ जग्य दान सवविधि किये जीतिलये सव देस ॥ जयपुर सब नगरीकी दूलहरूयो नरेस ॥ ५९ ॥ थायनुथप दिल्लीस की कृरम करत अपार ॥ च्यारैंबेंद अठारहीं सुने पुरान विचार ॥ ६० ॥

जैपूरवर्णन।

अथ जैपुर वर्णन ॥ दोहा ॥ पोरि अगकी कोट हछिव सं-द्र्यद्रद्रों सिरताज ॥ रागर नरनारी दुवदरराजें सकल तमाज ॥ ६१ ॥ ॥ नीसान ॥ सञ्चा नगर सराईया सब नगरिन ऊपर ॥ जयपुर मार्नाह दुसराया जगमें मूपर ॥ जामें भान अनुपेह अमरावित लाजें चार वरन यह आश्रमा रिबि-सिमिसो राजें ॥ अपने ॥ २ ॥ इष्टके मंदिर छविछाजे ॥ चोपरके बाजा-रमें कुंडेंवंबा राजे ॥ गह महली अपारहें नो निधिसिद्धि गाजें ॥ अगरिन चं-दनको धुवा घर २ में ताजे ॥ वापी कूप तडाग्द्रों आराम अपार जहा स्मान गुन गांनके नरनारि उदारा ॥ दीनकों देते फिरे धनधान सुताजे राजें महल कु-

बेरसे सुवनसे साजे ॥ सोहें महल कईलासज्यां ओपमे सुभकाजें ॥ चक्रवर्ती महा-राजकें बहु वाजिन वाजें ॥ षरे राजके चोकमें चतुरंग समाजें ॥ राज राजके हु-कमकी जय ॥ २ ॥ निधि गाजें ॥ ६२ ॥ इति जयपुर वर्णन ॥

राजसंवर्तन।

अथ राजसंवर्तन ॥ दोहा ॥ तिनके रतन समानद्दै ॥ ईश्वर मधुर कर साह ॥ महाराज ईश्वर कीयो राजसुजस करि चाह ॥ ६३ ॥ गये ईस जगदीसपै बैठे मधकर राज ॥ तिनको वर दाता भये सकल देव सुषसाज ॥ ६४ ॥ जाचकके समये सदा माधव माधव इंद ॥ नाक्षर रसनानपटिके हत सकल कंविवृंद ॥ ६५ ॥ जाचे-राजा जानिकें आपस्वारथी दीन ॥ नटत भूप पग लगत जब धरा कंप वहु लीन ॥ ६६ ॥ तिनकें देव समानहूमदे महाराज कुवार ॥ पृथ्वीसिंह महाराज पुनी श्रीमताप अवतार ॥ ६७ ॥ करी पुहर्भाको राज पृथु वसे सुरगके वास राजपाट बैठे अटलैं श्रीपतापसै विलास ॥ ६८ ॥ सिवर विदस रथ पुत्र ज्यों माधव त-नय वर्षांन ॥ तासों चहु दिस नृपति जुन आयमिले सुलतान ॥ ६९ ॥ सकल वेद विद्यानिपुन राजनीत पृथुरूप ॥ विरुद् वदन श्रीरामसे सव जग कहत अनूप ॥ ७० ॥ कहते मरहटी हट चढी निजिपयसों नितवेंन ॥ भेटो भूप प्रताप जव होय परसपर चैन ॥ ७१ ॥ भूमिभार छिमसे षसे साई रसो गंभीर ॥ धरमयुधिष्ठिर ज्यों क-रत बरजनज्यों रनधीर ॥ ७२ ॥ देषीया कलिकालमें अचिरजि होइ अनूप ॥ मेंटेंमन संदेहकों ध्यान दरस दिय भूष ॥ ७३ ॥ छंद ॥ कंपत सायर आपत पनके ताप चढत अति सीत सुधाकर होत अनल मुषमलिन रहत मति ॥ कमलाहरि उरधरि यदांमबुद्धि छूटा देवा ॥ स्याम वरन रविपुत्र पवनलिषचंच लभेवा ॥ राजा-धिराज परतापनितदान कराहिं वरसत रहेतं ॥ हयगय अपार धन वसन्मने जनक विधन अगनित छहत ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ पूजि पंचाईनदेवता वर मार्गोनित एह ॥ मोपै भूप प्रताप्कि क्रपादीठ कर देह ॥ ७५ ॥ साजें भूप प्रताप जबब्है चेतन जड छंद ॥ सकल दोई इकठोर मिलि परसत पर अरविंद ॥ ७६ ॥ नुषि त्विनित्तिर मुकटमिन श्रीप्रताप महाराज ॥ जाके दानसों लगी हिंदु बानकी लाज ॥ ७७ ॥ किवित्त ॥ सुरन हीमो सर गोर्विद जूकी आरतीकों दरवरदोनि अब इरसन पागें हैं ॥ हाजर हजारन नरेस सगहोंत छहिकें सुदृष्टि तेवे सु

अनुरागेंहे ॥ घेरदार वारं २ वागें कोंइ कैठीलि कविनकें आइयों विचार जिय जागे हैं ॥ जैसें ओर भूप दौरि लागत हें पायत्यों दौरी करिदौरह्यता े पाय लागें है ॥ ७८ ॥ उमग चलत श्रीपताप भूप तव दौरइक ठौरन्हे पगनपरसत हैं ॥ यह लिकिव आप आपनी सुमित वलड मगित जुगित कहिवेकों हुलसत हैं ॥ आइ इन लागी हिंदवानेंकी सरमसोई सुकर निमिस परगठ दरसत हैं ॥ कैथों जडरूप थेता चारु पग कंजनमें नेहर सवसुहने अरसतेहं ॥ ७९ ॥ सुनि सपनेमे आई व-छिकी अबाई तन छाई विकलाई सुधिबुद्धि विसरति हैं ॥ वूंड तें कहें नवें नमूक जोवर तार्वेसें नर्नेन ॥ अछे हमेह असुवाट रित हैं ॥ हियधरकात जिय भूछि २ जात पुनी वातकी दवीसी ॥ धुकी मरन गिरत है ॥ तुव अरिनारि अकुछ ॥ इवार २ इसि कुरम प्रताप तुव नामसों डरित हें ॥८०॥ संपित सुरिंद असुरिंद जछरछनकी नाग नाह-कीन्हं नाना भांति करिदेषियंनुज्जलनुजासवारे सुमग सुवा सवारें नूतन अवासवारेनित-अवरे षिय ॥ रुचिर चदौवा त्येंविछा इति दिवालगीरीसाईवानपरदादमकीपुंजयेषिये ॥ अमल पवास दासिदासम विलास जुनसी पताप भोंन अनकान्हतें विसेषिये ॥ ८९ ॥ धरम धुज धीर कवि पंडित विवेकी विर नीति छोकरीति मीतिज सके सथाय जू दां न दया मांन उपगारसतसीलग्यान विक्रमनुदारतावडाईमें अमापज्वसन सुगंध सुचिरुपमति आभूषनवेंनचतुराई भरेहरेंहियतापजूर्तईनरयावेंजहमींसरहने-सऐमी सभामें सुर सप्तमसोहं श्रीपतापज् ॥ ८२ ॥ ताराइंदु विंवके ओर गंगा हिमागिरि े ऊदिगाज निमिसदास दिसहि महानि है ॥ मुकतानुद्धिहंस गनमान-हंसपुनि पुंडरीक रूपनीरनीरनुछहानी है ॥ चितसतो गुण मद दया निज धर्म कर्मन सुरमालहरव्हें निवहाना हैं ॥ नृपति पताप तुव जससरिताकी ऐसें लोक ॥ २ ॥ देस ॥ २ ॥ कहत कहानी है ॥ ८३ ॥ अटक विट कटक कटीले भटना मही सोंन्ह कें सटपट रटें चलचल ॥ मरदहहेलावेरुहेलाओचदेलावीरवांकेन्हउदेला उठेहाकनसोंहरुहरु ॥ रुखन विचछरुछोपछन साहेदह्छद्दछ्टाई सकेईवारडास्वो मलमल ॥ उमर राज रहो राजा ॥ श्रीपताप जाके कता जिभियता कलक ताकी-थोषलभल ॥ ८४ ॥ संगतिको गुन फीरचरन्हलहत यह जगत विदित भाषे लोक वेद टेर हैं ॥ चंदन समीप तरु चंदनही होत त्योंहां विष मिलिपय होत विषति हिंबेर हैं ॥ अचिराजि मोहि एक क़्रम मताप भू तुव करसरस दयासता दरे रहें ॥

तार्मेवसि कैसेईनकठिनकरालतेगविन हिदरेग ीनी ॥ अरिगनजेर है ॥ ८५ ॥ अंग रक्तिनितिगिरिजालसतहांकें रेंनर देवसे वभेबनलहतेहें ॥ भासत विभूति राजराज हितकारी गनमोहत अनेक नाग वंदनी वहत हैं ॥ छोचन विसाछ नुयसकित सुमंत्र स्त्रीन दीन वंधुताहि हरजोईसो कहत है ॥ नीलकंठरतियनपाल प्रताप भूपमेरेजां-निसंभुत्तमताई सीचहेतहें ॥ ८६ ॥ मोंनकूलभाँनभयोतूही भूवमंडल मेंघर्मधुरंधारी-इजो देष्यो नहि आंनमें ॥ दछिनकी भोज सब छिनमें हि डारीकाटि हारे देस मुगस्य पठान जे जमाँनमें ॥ किरगे फिरंगी तेऊ जंगी महि भंगा किये दिल्लीपति म्हंजू ॥ भयो तेरि आज आनमें ॥ श्रीप्रतापआन नृपकी जैकी तेरसम तेरी आज आंन किरै सकल जिहानमें ॥ ८७ ॥ काविलष धार वीजापुर अर पद्दण सों भाग तेरद छिनमें परिजायपाजें हैं ॥ नूप जे अराज जिल्हें मिलतें सुराजदीनं वि-मुष हिराजकीनें तुरत अराजे हें ॥ कहां हो कनाऊं जग छानुन हिवोस आज दिल्लीपति हा तपस्वी जाके अन काजे हें ॥ क्यों न होई एती श्रीमताप में प्रताप जग जा कें सीसत्ती कर गुविंद कर राजें हें ॥ ८८ ॥ घटअरको टटाहि डारहो मनीम न के पालिवो सुजन जोग पस्वोजेन पत्री है ॥ वरसें ज्यों इंद्र निसदिन ज्यो कनक छर दीन दुज जाचक निकारिकें सुपत्रि है ॥ रूप अति रूपोपन परो रनसूरोजाकी रसनां रटत नाम गोविंद इकात्रि है ॥ हेरेबहु तेरे जगछत्री वेनछत्री रे मताप सम छत्रीकोंन छत्री जगछत्री है ॥ ८९ ॥ कहां भयो जीये मह कुछमें जनम पापो पाया सुत बंधु दारा रूप धन लाह हैं ॥ कहा भयो जो यैकरे मोती सिरोच छहेंह ॥ हयगयपालकी सुरथ सरसाह हें ॥ कहां भयो सुद्ध मन याइकें ्रा दिकीने जप तप दान वत तीरथनु छाह है ॥ एते भये होत कहा है सुत नपारो जोपै रीझे नही जायें श्रीपताप नंरनाह है ॥ ९० ॥ जग जस फैलीजाकी िवांचारुचांदि निसी राजपताप सभान ग्रीष्म समाजकं ॥ राधे कृष्ण नाम जाकी रसना रटन नीत वटत् वधाई धर्म होत सुषदाजकें।। कहां लोग नावों राज **रुख्नी सुजाकी देवी** पाई येन समताई धन सुसाजके ॥ मघवाज्यों राजताकें सुत-तिरताज आज सव सुषसाजश्री पताप महाराजकें ॥ ९१ ॥ सुंदर सरसवें नव-रसें सुधाकें करकरें व कदानमांन रायत राजेंके ॥ इष्ट परान पूरेभलसूरे क्कालि ारिमनं परजभारा पर दार धन त्यागके रहत सुमंध सने कहते

सवागे बने ॥ भने बहु ग्रंथ पंथ चले सत्य पाजके ॥ सिंगारबादिबलके उदार ऐसे सेवक हैं आज श्रीप्रताप महाराजकें ॥ ९२ ॥ अरिपुरजारि वेमें अनल-सवल महाविधि विलसाईवेमें संतितके येस हैं ॥ बानि महारानि तुववानीमें वसी-हें सदा संपत्ति धनपरिपूरन उमेस हैं ॥ रछामें रमेस बुद्धि देवोमें गनेस तुव मब-छ प्रताप साधिवेवें दिनेसहें ॥ श्रीपतापजूंके ऐसें मुषसरसावनकों सप्तसुर देव रहें हाजर हमेंसहें ॥ ९३ ॥ अर्जुनसे वीर रनधीर जहा रामसम विदुरसे मंत्री-ज्ञान शिवसे विराजहें ॥ करत मवेस तहा पाप होत दूरी महाहरत मतापछेहें ॥ सुषके समानहें कवि अरुपंडितओ राग करि मंडितहें होत दिनरेंन तहां धर्मन काजहें ॥ रचिह सुधर्म जिमि भूपसतामें राजे धर्मसुत राजजों पताप महाराजहें ॥ ९४ ॥ छंद् ॥ अंगनिब्रह्मसरस्वती सर्व हरि गणपति दिनपति ॥ पातसुमुख श्री ईस ग्यान नव बेद जग्पथिति राघव पुष्कर जीव युनि पंडव भारत रिव ॥ सुचिलिषनियसहाय रुचिर सिषुगिरि अवधि छवि सुबाहा त्रिपदिगरा जया रिधि-सिधि संज्ञा दुषहरो ॥ आनंदुरूप मंगल वरनषडजादिक नुपवर न करो ॥ ९५॥ ।। कान्यछंद ।। षङ षडग वर रिषभ वेद गांधार अवाजें मध्यम हा सवठोर ॥ राजश्री पंचमराजें ॥ धैवतमेटे विघन तेंज नीवाद समाजें ॥ मंगलकाप अनुप सात स्वर वरंदय राजें ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ मंदिर सुंदरधर अनंत वृंदा विपिन निवास ॥ हवा महल नृप नव रच्यो तहविय जुगलविलास ॥ ९७ ॥ ॥ छंद ॥ एक घोस महाराज राजे सुरमंडन ॥ श्रीपताप रघुवंस सकल रिपुगनके खंडन ॥ आज्ञाकिय श्रित कंठन भेद ते ब्रह्महि यावै ॥ राधा कृष्ण विहार नित्य वृंदामन भावें ॥ ति-नंके रहस्य संगीत बिन या जगमें केसें छहत ॥ राधा गोविंद संगीततें ॥ स्वयं बस सहि मुनि कहत ॥ ९८ ॥ ॥ दोहां ॥ न्यास वचन भागोतमें स्वयं ऋष्ण भगवान् ओर कला अवतार हैं मुनि नृपभक्ति प्रधान ॥ ९९ ॥ ॥ श्लोक ॥ एते चांश कलापुंसः । कृष्णस्तु भगवान्स्वयं ॥ १०० ॥ . ॥ दोहा ॥ भीति सर्वे आनंदसरस शशीनिवास सुखरास ॥ इंद धर्म रघु कृष्णसम सजें तहां नृपराज ॥ १०९ ॥ चंद महल पिय मोंनमें सार्जे सभा समाज ॥ भरत भगीरथ भान समराजत नृपराज ॥ १०२ ॥ मंत्रीगनउमरावसवपास खवास अपार ॥ परम स्वामी भरमी मगट करत जगत उपगार ॥ १०६ ॥ हयरथ परमारथ करें

राज सभाकें छोग ॥ धरम करम परतावतें निसदिन किय सुभभोग ॥ १०४ ॥ गजपित रथपित अस्वपित हें पालकी नसीन ॥ एवत रावल राव धन राजराय पद-लीन ॥ १०५ ॥ फोंजे भूप प्रतापकी मोंजे पावें नित ॥ भेदत गजरथ तुरी विजय करत रिप जित ॥ १०६ ॥ राज मंडली मेंलसें सरपति समरन नाह ॥ खासादे बिखवास गन बोछे करी उछाह ॥ १०७ ॥ ॥ चौपई ॥ सुनो तिवारी नंद किसोर छेनु छाइ पंडित इकठोर ॥ यंथ सकल संगीत विचार कीजे भाषा पकट उदार ॥ १०८ ॥ राधा गुविंद संगीतसार यंथनाम राखतऊ विचार ॥ भेद सम-त्रियेह सुनें सुनावें ॥ जे जन च्यार पदारथ पावे ॥ १०९ ॥ ॥ दोहा ॥ गुन आगर नागर नवल सागर हद्य अतोल ॥ वे राधागोविंद्को पढे संगीत क-होल ॥ ११० ॥ श्रीराधा माधव मगट कीनें रास विलास ॥ त्रिभुवन लिनुमोहि मभु नवरस जस परकास ॥ १११ ॥ हुकम सीस धरि जोरकर बोले नंद की-सोर ॥ पंडित कवि दरबारमें अगनित हें या ठोर ॥ ११२ ॥ मथ्रा स्थित तैलंगभट सिरी किसनसुखदाई ॥ त्यों भट चुनीलाल हें कवि कुलसंपरदाय ॥ ११३ ॥ गौड मिश्र इंदोरिया रामराय कवि जान ॥ इनजुतकी जे ग्रंथकों बजभाषा परमान ॥ ११४॥ अज्ञा कीये तब नावत बलेवनाइयहयंथ ॥ मन माचिन पुनितलखिगीतउद्धिकों मंथि ॥ ११५॥ द्विज बोले करि जोरिकं भयो भाग धनि आज ॥ जनम सफलपायेस् अव आज्ञाकीये महाराज ॥ ११६ ॥ आज्ञा सुनि कवि सिरधरी फूलमाल ज्योंसीस ॥ लगें करन संगीत द्विजच्यारी ज-पनिजईस ॥ ११७ ॥ सामवेद गायोज विधि शिवके कये संगीत ॥ भरत मतंग मुनिंद गनिकयह ऊमतमतमुपुनीत ॥ ११८ ॥ पारिजात संगीत मत रतनाकर संगीत ॥ दरपन राग विवोधवर चंद्रोदय परतत ॥ ११९ ॥ त्यों अनुप अंकुस सुपथ ठबे अनूप विठास ॥ रागमाछ रतनावली तिरनें नृत्य मिमांस ॥ १२० ॥ कोलों मंथ सुनामको बरनन करो पकास ॥ सवको मत लेकें कियो जुगल स-कर विलास ॥१२१॥ । अथ यंथ प्रसंसा किबत्त ॥ चुनि २ सवैयंथगुनि ॥२॥ हियें मांझ पंडित कविन सवही कौमंतलीनोहै ॥ स्वर अर राग ताल धरिकें पबंध तहां वाद्य परकीर्ण ॥ नुत्यरसपरवीनोहै ॥ जगमे गहन ही सो पगट दिखायो जिन ऐसो बुद्धिबलकोनुकरिहैनकीनोहै ॥ राधिका गुविंद भक्ति पाई ॥ भीपताप

आप राधिका गुविंदको संगीतसारकीनोहै ॥ १२२ ॥ ॥ दोहा ॥ रंजन मन सव लिछिन जुत वेद पुरान ममान ॥ पढत सुणत आनंदमय च्यार पदारथ खांन ॥ १२३ ॥ यंथ जवाहर जगमगत ज्यों हरि परख प्रवीन ॥ रतन अमोलक मोल तिहिं जानें हिर रस छीन ॥ १२४ ॥ परस्वर जामे ताल हैं ग्राम तीन नरीत ॥ देव लोक रागावली रूप विराट संगीत ॥ १२५ ॥ जो लौभुवि गंगा समुद्र रवि तारा घन चंद ॥ तोलो सार संगीत यह बहुविध करो अनंद ॥ १२६ ॥ सजनकें आनंद हित कूरम नृपति पताप ॥ रच्यो य्रंथ संगीत यह हऱ्यो सकल संताप ॥ १२७ ॥ नाग लोक तह नृत्यहै सुरवाजित्र विचार ॥ गान सुरग त्रयि लोकमें राजत त्रिक निरधार ॥ १२८ ॥ उदै भयो जग भांन ज्यों सार संगीत नि-वास ॥ छिष गुन मन सैचित कमल ज्यों अगनित धरी प्रकास ॥ १२९ ॥ सिव-शिर तें पकट करि भरत भगीरथ रूप ॥ गीतमई गंगा विमल जग मल धूत अनूप ॥ १३० ॥ धनि विधि सिववानि उमा धनि धनि भरत मुनिंद ॥ धनि मतंग रिषिवृंद धनि धनि हनुमान कपिंद ॥ १३१ ॥ विधि हरिहर अंबा रवि सुनि संगीत विचारि ॥ नारद परमानंद है गावै वीणाधारी ॥ १३२ ॥ वचन अनंद सुछंद किय सरसुति रचे अपार ॥ वीणाधार तरेंन दिन किय संगीत विचार ॥ १३३ ॥ हरत दुष्टके पानकों दुर्ग पगट प्रवीन ॥ रहे मन संगीत पुनि मुनि कास्यप रस लीन ॥ १३४ ॥ रिषि मतंग हनुमान कपि कर्ता यंथ प्रवीन ॥ सार दुलोको हर मुनी रचे गीत गुन लीन ॥ १३५ ॥ कंवलास्वतरवाय मुनि हाहा दूदूरंभ ॥ राघव वानसतानुषा अरजुन आदि अभंग ॥ १३६ ॥ रामायण गाई सकल राम कुवार सुजाँन॥मारग देव अहोवलसुकिलाथ गुन पाँन॥१३०॥ सोमनाथ रतनाकरसु दामोदर कविरास ॥ भाव भद्दवहुकद्दकरि यो सँगीत विलास ॥ १३८ ॥ ॥ देहि। ॥ इनकों सीसनवाइकें पूजि महेस गनेस ॥ करों सार संगीतको भाषा रचिके वेस ॥ १३९ ॥ इतिश्री राजवंमवरननग्रंथप्रसंसा संपूर्ण ॥ इतिश्री मत्सूरज कुलमंडनअरिगन् खंडनमहीमंडलापंडल सकल विद्या विसारद धरमा तार श्रीमन्महेंद्रमहाराजाधिराजमहाराज राजेंद्र श्री ७ सवाई प्रतापसिंह देव विरचित श्रीराधागीविंदसैगीतसारे स्वराध्यायमंगलाचरन रांजवर्नन ॥ ग्रंथप्रसंसानामप्रथमोविलास समाप्तमगमत्।। १॥

श्रीगणाधिपतये नमः ॥ श्रीराधागोविंदो जयित ॥ अथ संगीत-को लछन लिखते ॥ पथम गीत दुसरो वाजो तिसरो नृत्य ये तीनो मिलिकें जब होय तब संगीत कहावें ॥ तहां कितनेंक आचारीज यह कहें हेकि गीत ॥ अरुवाद्य ये दोनोही मिलिकें संगीत कहें हैं ॥ ओर तीसरो ज्यो नृत्य सो तो गीत वाद्यको समीपी है यातें याको संगीतमें अंग कहें हे ॥ ओर संगीत ततो गीत अर वाद्य येहि दोनों हें ॥ ओर गीत नृत्य वाद्य ये तिन्यों मिलिकें तूर्यत्र कहोत है ॥ इति संगीतको लछन समामम् ॥

अथ तूर्यात्रकको लखन लिख्यते ॥ ज्यो कंठसों वाजेमें मिलिकें गावै॥ ओर पावन सों घुंघुराकी गित मिलाईके वाजेमे नाचे तव इन तीनोंनको तूर्य कहें है ॥ ओर ताल ज्यो हे सोतो गीत नृत्य वाद्यको मूल है ॥ यातै ताल सहित गीत वाद्य नृत्य संगीत जानिये ॥ ओर तालकों जानिकें संगीत करे तो मुक्ति पावे ॥ या तै-ताल मुख्य है ॥ अर या संगीतमें गीत मुख्य जानिये ॥ काहे तेंकि सिगरे देवता ॥ अर दैत्य गंधवेये सिद्धिके लियें सिवजीकों सेवेहें ॥ ऐसे सवनके पूज्य शिवजी रात दीन गीत गावत ब्रह्मानंदमें मन्न रहें हे या तें गीत मुख्य है ॥ इतिश्री तूर्या-त्रकको लखन समाप्तम् ॥

अथ गीतप्रसंसा लिखते ॥ या गीतकी महिमा शिवजीनें पार्वतीजी सों कही है ॥ हे भवानी तू सुनि जितनें दान संसारमें है ॥ तिनके दिये तें पुण्य है ताकी संख्याको प्रमानमें जानों हों ॥ ओर भिक्त करिके ज्यो मनुष्य मेरे आगे वा वि-ष्णुके आगे जो गीत गावे ॥ ताके पुण्यकी संख्यामें नही जानों हो ॥ या तें ज्यो कोई नर वा नारी लोभ करिकें ॥ वा आपनी जींवका करिकें ॥ अथवा मनके आनंदके ॥ अर्थ ॥ अथवा कपट करिकें ॥ शुद्ध वा अशुद्ध गीत गावे है ॥ सो नर वा नारी ॥ दिज्य हजार वरसनाई मेरे शिम होकनं ॥ सगरे गनको सिरदार होइ के ॥ दिज्य हजार वरसनाई मेरे शिम होकनं ॥ याते ज्यो गीत शिवजीकों परमप्यारे है ॥ ओर जाके गुज बलासों कहेन जाय है वागीतके गुज साधारणमें मनुष्यतों कहांसी कहि सके ॥ ओर ज्यो कोई मनुष्य गुरके पास गीतको तत्व जानिकें रिति सुपवित्र होईकें मुद्रावानी तालसुद्ध जुन ॥ गीत गावे श्रीनारायणकें रिसाइवेंसो

पुरख शिवलोक शिवजिके संग बहोतकाल ताई विहार करि ॥ पीछे शिवरूप होई ओर सव देवनमें शिरोमणि होय है ॥ श्रीकृष्णचंद्रजीकी बास्रीकी धूनिसों मम होई गोपीकों वा वजवासीनकों आनंद देत भये ॥ ओर गीतसों अत्यंत प्रसन्न भये ॥ ओर ऊस देवदानव यक्ष राक्षस मनुष्य आदि सबकों गीत सुख देते है ॥ अरुबालक अज्ञानऊ रोवेतो गीत सुनिकें ॥ आनंद पाँवे ॥ और वनवासी मृगया गीतकों सुनीकें ॥ अहेडीके बस होइ पाण देहें माने ज्यो कोई मन्ष्यजन्म पाय ॥ भन्ने कुलको कहाय ॥ सरव संपति पाय ॥ संगीत शास्त्रवा रस शुंगार ॥ आदिशास्त्रको न जानें है ॥ सोवह मनुष्यी विनासींग विनाँ पूछिकी पसो सरूप है ॥ यातें ब्रह्माजी नित्य सामबेद गांवे है ॥ ओर सरस्वतीजी वीणा वजावे है ॥ श्रीगोविंद प्रभुमहाराज मुरन्टी बर्जाव है ॥ और शिवजी महाराज तो रागकी मूरतिही है ॥ या संगीतकों महातम श्रीवेद्व्यासजीनें ॥ श्रीमद्भागवत पुरानमें वरनन कियो हेंसो कहुहु ॥ श्लोक ॥ शृण्वन् सुभदाणि रथांगपाणेर्जन्मानि कर्माणि च यानि लोके॥ गीतानि नामानि तदर्थकानि गायन् विलज्जो विचरेदसंगम् ॥ १ ॥ याकी वचनीकी ज्यो कोइ पाणि रथांगपाणि ज्यां श्रीभगवान् तिलेक मंगलरूपजे ॥ अवतार जिनके जनम करम चरित्रनमें मतिनकों या मनुष्यलोकमें ॥ श्रीभगवानकी मीतिके अरथ गीत ॥ १ ॥ प्रबंध ॥ २ ॥ छंद ॥ ३ ॥ पद ॥ ४ ॥ वानी रतके लोभ तजि ॥ आनंदमें मगन होई गावै ॥ सोई पुरखेको इण भूजनममें धन्य कहे है ॥ पदमपुराणमें कही है ॥ श्रीविष्णुभगवानकी वचन नारदजीसों ।।श्लोक।। नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हदयेन च । मद्भक्त्या यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ १ ॥ ऐसी लोककी वचनोक्ती ॥ श्रीमद्भागवताजीमें कहत हें ॥ यथा भगवान् कहत हैं हे नारदजी में ते सति बहु पसन होइ करिकें ॥ मेरो ज्यो वै-कुंडनिजधामतामें समय पावतहों ओर बहोत जतन करिकें सिद्ध भये जें जोगी॥ तिनके इदयनमें ॥ समय पावतहों अरु ज्यो आठ पहरमेरे भक्त संगीतामृत सुगु-णानु वाद्भेजो गावे है ॥ तहांभे आठ पहर निरंतर तिनमें रहत हों ॥ यातें नार-दर्जी तुमहु मेरें गुजानुवादकी गान करी ॥ ओ धर्मशास्त्रहुमें गीतकों प्रकार याग्यवल्कमुनिश्वरने कह्यो ।।श्लोंका। हंहो विमा गुरामेतत् शृणुध्वं तत्त्वं दृष्टं वोस्ति यद्यत्र वांछा ॥ नानारूपैर्भाविता भावलेशैरंगोत्तीर्णा नर्तकी कामयध्वं ॥ ३ ॥ याकी

वचनां ते हैं ॥ हे बाह्मणा इह गुप्त वात हम तुमकु कहें हैं ॥ सो तुम सब बा हमण सुनी ॥ जो तुमारि तन्त्व वस्तु जानिवेकी इच्छा है तो ॥ अनेक प्रकारके भावन करिकें ॥ युक्ति जोना प्रताको देखो ॥ आर विग्न्यानेश्वरके वचन ॥श्लोक।। वीणावादनतत्त्वज्ञः अतिज्ञातिविशारदः ॥ तालज्ञश्च प्रसादेन मोक्षमार्गं निगच्छिति ॥ १ ॥ याकी वचनीका है ॥ जो कोइ वीणा बजायको तत्त्व जानें ॥ वाइसों श्रति ॥ ओर श्रतिनकी जातिकों जानें ॥ ताल मारगकों जानेंवि नहि वेद कहै ॥ मोक्ष मारगकों पांवं ॥ ऐ देव देवनको गायोजो गीत ॥ ताहि मनुष्य-जनम पाइकें शास्त्रकी रीतिसों गावे ॥

अथ गीतको स्वरूप वरनन कहते हैं ॥ गीतनाद सरूप जा-निये ॥ सो नाद बाजेसों उत्पन्न होय ॥ वे दोऊ नाद बाजेंसों मिलिकें नृत्य होय है ॥ याते गीत वाद्य नृत्य ये तिनो नादके अधीन है सो वह नाद दोय पकारको है ॥ तहां पथम आहत ॥ १ ॥ दुसरो अनाहत २ याकों भाषामें ॥ अनहद कहत है ॥ सो वह दोनो तरहको नाद ॥ पुरषसरीरमे होत है ॥ योतें पुरषके सरीरको वरनन करत है ॥

अथ एक पसिर वरनन लिख्यंत ॥ तहां सबको प्रमान जो ब्रह्स चिदानंद हें ॥ अर अजित कहें काहुसों जीत्पोनहि जाय है ॥ चिदानंद कहें ग्यान सुखरूप हे ॥ अरिनरंजन कहें मायासों दूरि है ॥ ईश्वर कहें सवनको स्वामी है ॥ एक लिंगकहें ये नादको कारण है ॥ अर अदिनीय कहि ये मेद रहित है ॥ अर निर्विकार कहि ये ॥जनम मरन आदिजे छह विकारि तिन करिके रहित हैं ॥ ओर निराकार कहि ये ॥ आकार जाको नहि है ॥ और सर्वेश्वर कहि ये सर्व कर्मनंके फलको दाता है ॥ ओर विमु कहि ये ॥ सवमें व्यापक हा रह्यो है ॥ अनि सुर कहि है ज्याको ओर कोइ सम नही है ॥ ओर सर्व सक्ति कही ये ॥ सव सकति करिके जुक्क है ॥ अर सर्वज्ञ कहि ये सव जाने है ॥ वाहि ब्रह्मके अंस सव जीव हैं ॥ अर विद्याजुक्त है ॥ योतें आपको नहीं जोनें हें ॥ जेसे वडी अगनिके टेरतें छोटा चिनगाइ है ॥ ऐसे अपने रूपकों नहीं जानें हैं ॥ याहितें वडी देहादिक उपा- चिननें पहें है ॥ ओर बहोत दीननके सुख दुख देनें वारे पुण्यपापरूप जें कर्म

तिनकों भोग करे है ॥ बाह्मण आदि जातिके हे देहको पायकें वडी वा छोटि आरवलसों पुण्य पापके फल जे सुख दुख तिनकों पांवें हें ये तो स्थल सरिरको भे कहा है ॥ अर ओर या स्थूछ सरीरको कारन सुक्षम सरीर कहे है ॥ सा गुप्त है देखनेमे नहि आवे है ॥ वहे वासना रूप है ॥ या ते तत्वग्यानसी सत्यं अंगसों भगवानकी भक्तिसों ॥ ओर सव जीवनके प्रतिपालसों ॥ दान पृण्यके वर-नोसों जीवनेषं दयासों वासनाको नास होय। तव मुक्ति होय है॥ सो वह वासना सरीरके अनंत गुण है ॥ प्रभुकी रूपातें उनगुनकों जीत्ये है ॥ अथवा वासना-रूप सुछिम सरीरको सरूप वरनन लिख्यते ॥ ज्यो सुक्षम पृथवि आदि पांच तत्व॥ अर पांच इंदिया ॥ अर पांच रूपादिकविसय अर मनबुद्धिइनसंग्रह ॥ १७॥ तत्व नसों सुक्षम सरिर भयो है ॥ सो सुक्षम सिरर ॥ सुख दुख भागवेंकां जीवके अर्थ पाण सगति चेतना सगति जुत ॥ स्थूल सरीरको उपजावें हें ॥ सो यह स्थूल सरीर जहां ताई जीव मुक्त होयकें ब्रह्ममें लीन होय ॥ तहां ताई स्थूल शरीर रहे ॥ ऐसे जगतको सृष्टि पलय वेरवेर हात है ॥ तहां ब्रह्मतें जीव आत्मा जुदो है ॥ जीवात्मा तें जगत जुदो है ॥ तोहू तेंसे सुवरनको कुंडल सुवरनही है ॥ अर व्यवहारमें न्यारो है ॥ ऐसे बहाही जगमें है ॥ ओर जगतमें न्यारो हू है तहा बहा है सो नाद रूप है ॥ सा वाहा बहा जगतमें व्याप्या है ॥ याने जगतहू नादरूप है ॥ तहां नादकं दोय भेद कहे है ॥ तिनमें प्रथम अनाहतनादताको लखन लिख्यते ॥ वहै अनाहतनाद निराकार है ॥ यांतं निरंजन किह ये ॥ उत-पति अर नास करिके रहित है।। सव जिवनमं व्याप रह्यो है।। ओर निरामय कहि ये एक है ॥ सो अनाहत छोकान् रंजन नहि करिनें सके हें ॥ योगमार्ग में छियो है ॥ अब दुसरो ज्यो आहतनाद ताकी उत्तपति कहे है ॥ आहतनाद श्रति स्वर ॥ आदिके द्वारेतें लोककों ॥ अनुरंजन करे है ओर देवताकै ॥ आगे गांन किये तें मुक्ति देत हैं ॥ अरु धरम अरथ कामना मोक्षही देत है ॥ ओर संपूरन सुख देवे ॥ यातें आहत नाद्की ॥ उत्पति श्रुति स्वरके नाम भेद कहे है ॥ तहा पुण्यपापके फल भोगवेकों ॥ यह जीव सुक्षम अर स्थूलै देह जनम जनमें पांवे हैं ॥ सी सरिर जीवात्माकें ॥ सुख दुख देवेंकुं भ्रम रूप हैं ॥ अर विचार करे तो मूवो है ॥ तहां आदिसों जगतकी जगतकी उतपति लिखे है ॥ पह लेई निरंजन ज्यों बस

तिनमें मायाकी ग्रहणकीयी ॥ तव ब्रह्म तें आकास भयो ॥ आकास तें पोंन भयो पोंन ते अगनि भइ॥ अगनि तें जल भये जल तें पृथिवी भई॥ अर सबद १ परस । २ । रूप । ३ । रस । ४ । गंध । ५ । ये पांच तनमात्रा ॥ आकासादिक पंच तत्व तें भई ॥ ये पंच महाभूत आकासादिक अर सर्वदादिक पंच तन्मात्रा विराट पुरुषको सरीर ज्यों ब्रह्मांडताको रचत भये ॥ वा ब्रह्मांते ब्रह्मा जी उतपन भेय ॥ वे ब्रह्माजी भगवानकी आज्ञातें वेद पायकें ॥ चौदें प्रजापतिनकों स्रजत भये ॥ वे प्रजापित ब्रह्माजीसों वरपाईकें स्त्रिपुरुष मिछि मैथुना श्रष्टि उतपन्न करत भये ॥ तहां शरीर च्यार पकारको हैं ॥ तहां प्रथम स्वेद्ज कही ये पसी-नासो भये ॥ जूवालिक आदिक जानिये ॥ ओर दूसरे उद्गीज कहि ये बृछ लतादिक जानि ये । २ । अर तिसरे अंडज कहीये पछी अर सर्प आ-दिका जानिये । ३ । चौथे जरायुक कि ये ॥ मनुष्य आदि देह जानि ये । ४ । तहां लोकानुरंजन आहत नाद मन्ष्यसिरिंगे पगट होय है यातें ॥ मन्ष्य सरिरको मरूप वरनन कहत हैं ॥ तहां जीवात्मा आकासमें विचेरं हैं ॥ वाही आकासमें सूर्य देव अपनी किरननसों खेचिकें पृथिवीकों जल मेघमें भरे हैं ॥ वह मेघवरषा कालमें जीवात्मासहित जल पृथिवीमें वरषे है ॥ वहै जल जीवात्मासहित ॥ अन्नादिक वनस्पातिमं बैठै हैं ॥ वा अन्नादिकनको स्त्रीपुरुष भोजन करे हें ॥ वे स्त्रीरितुसमयें पुरुषसों संभोग करे है ॥ तव पुरषको वीर्य स्त्रीके गर्भ समयमें ॥ स्त्रीकें रजसों मिले हैं ॥ ता तें गर्भ रहे हैं बाह्यकों गर्भको पहले महिनामें कलल कहे है।। अर वेहि गर्भमें दुसरे महिनामें सघन होय हैं फेर पिंड होय हैं ॥ अर इकठोरी होइ है ॥ फेर येषा कहियें जरीकी कोथरी होय है ॥ वा कोथलीमें एक वीरजकों वुदवुदासो होई है ॥ स्त्री वा पुरष वा नपुंसक तिनकी पहालि ॥ अवस्था है तदा पुरसको वीरज घनो होय ॥ अर स्त्रीको रज थोरो होय तो पुरषकी उत्पति होय ॥ अर स्त्रीको रज बहुत होय पुरषको विज थोरो होइ तो स्त्रीकी उत्पति होय ॥ अर पुरषको वि-जस्त्रीको रजत वरावर होय तो नर्पुंसककी उत्पति होय ओर वा गर्भके तीरसे महिनामें दोऊ हात दोऊ पाव माथेको चिन्है होय है ॥ औरहु सब अंगनेक सूक्षम आकार होइ है ओर वोधे महिनामें सारा गर्भकें सब अंगु पुष्ट होय हैं।

और सुर विरता ॥ आदिपुरुषकें गुन अर भयादिक स्त्रीकें गुन ओर नपुंसककें मिले भये गण होंइ हैं ॥ ओर चोथे महिनामें वह बालक भोजनकी इछा करे है ॥ तब वांकीमाको तरह तरहकी वस्तमें खोवंमें मन चले हैं ॥ ओर पांचवें महिनामें वा गर्भकें मांसरुधिरवितयें होय हैं ॥ ओर छटे महिनामें वा गर्भके ॥ हाड नस न-खरोम बल वर्ण ये होय है ॥ ओर सातवं महिनामें वा गर्भके सब अंग संपूर्ण होय है ॥ तब पूर्व जनमके कीये कर्मनको याद करत वा गर्भते निकर्सिबेंकों भग-वानकों ध्यान करे है ॥ ओर आठवा महिनामें त्वचा अर सुमरन ॥ ओज क-हिये हि मति ये होत हैं ॥ याहां तें आठवें महिनामें उतपन्न भयो बालक ओ-जसो रहित होत हैं ।। यातें नही जीवे हें ॥ ओर नवें महिनामें यह गर्भ जनम छे-तहें ॥ तब यांके सरीरमें बल ॥ १ ॥ इंदिय ॥ २ ॥ माण ॥ ३ ॥ सगति ॥ ४ ॥ किया सगति ॥ अंतःकरण ग्यानेंदिय कर्मेंदिय कमतें बुद्धि बी वे है ॥ अथ या देहके चक छिख्यते ॥ तहां सरिरके पावनकी पगथछीमें अनंतनामाचक हैं ॥ ओर वा वैही पगथलीमें छाया नाम चक्र हैं ॥ अर दहिनें पावमें वातचक्र है ॥ तातें ऊपर गुदा अर लिंगकें बिचमें आधारचक है ॥ सो वही ॥ या चार दलको है ॥ तिनमें पहले पत्रमें परमानंद है ॥ १ ॥ अर दूसरे पत्रमें सहजानंद है ॥ २ ॥ अर तिसरे पत्रमें विरानंद है ॥ ३ ॥ अर चोथे पत्रमें योगानंद है ॥ ४ ॥ ओर वही आधारचक्रके नीचें बसकुंडलनी है॥ याकूं जो बसरंधमें चढावे तो अमृतकूं देती है ॥ अर लिंगकें मूलमें एक स्वाधिष्टानचक है ॥ वाके छह दल है ताहाके पहले दलमे नम्नता है ॥ १ ॥ अर दूसरे पत्रमें क्रूरता है ॥ २ ॥ अर तीसरे पत्रमें गरव नास है ॥ ३ ॥ अर चोथै पत्रमें मूर्च्छा है ॥ ४ ॥ अर पांचवें पत्रमें अ-वतार है ॥ ५ ॥ अर छटवें पत्रमें अविस्वास हें ॥ ६ ॥ यां चक्रमें कामसिकको वास है ॥ अर तातें उपर नाभिमें दस पखुडिनको मणिपूरक नाम चक्र है ॥ तहां ॥ १ ॥ पहले दलमें निदा हैं ॥ अर ॥ २ ॥ दूसरे दलमें तृष्णा है ॥ अर ॥ ३ ॥ तिसरे दलमें ईरसा है ॥ अर ॥ ४ ॥ चोथे दलमें चुगली है ॥ अर ॥ ५ ॥ पांचवें दलमें लज्जा है ॥ अर ॥६॥ छटे दलमें भय है अर ॥७॥ सातवें दलमें दमा है ॥ अर ॥ ८ ॥ औरवे दलमें मोह है ॥ अर ॥ ९ ॥ नवें दलमें कृटिलता है ॥ अर ॥१०॥ दसवे दलमें दारून्यता है ॥ रत्नाकरातपहीन है ॥ अर

यां चक्रमें श्रीसूर्य देवतको वासो हैं ॥ ता तें उपर हदयमें अनाहत चक्र हैं ॥ याकी ओंकार कीसि तर है ॥ सोहं बारह पखुडीको है ॥ तहा ॥ १ ॥ पहले दलमें ममताको नास है।। अर।।२।। दूसरे दलमें छल हैं।। अर ॥३॥ तिसरे दलमें संदेह है ॥ अर ॥ ४ ॥ चोथे दलमें पछतावो हैं ॥ अर ॥५॥ पांचवें दलमें आसाको पकास है ॥ अर ॥ ६ ॥ छटवें दलमें चिंता है ॥ अर ॥ ७ ॥ सातवें दलमें कामनास है ॥ अर ॥ ८ ॥ आठवै दलमें समता है ॥ अर ॥ ९ ॥ नवमें दलमें छल हें पाखंड है ॥ अर ॥ १०॥ दसवें दलमें विव्हलता है ॥ अर ॥ १ १॥ ग्यारवें दलमें विवेकता है ॥ अर ॥ १२ ॥ बारवें दलमें अहंकार है ॥ या चकमें शिवजीको वासो हैं ॥ तार्के उपर कंठमें सोहलें पखुडीको विशुद्धि चक्र है ॥ तहां ॥१॥ मथम दलमें उंकार है ॥ अर ॥ २ ॥ दूसरे दलमें सामवेदकों जन्हजूनिय नाम साम है ॥ अर ॥ ३ ॥ तीसरे दछमें हुंफट् नाम चक्र है ॥ अर ॥ ४ ॥ चौथे दलमें वीशद मंत्र है ॥ अर ॥ ५ ॥ पांचवें दलमें ववषट् मंत्र है ॥ अर ।। ६ ।। छटे दलमें स्वधा शब्द है ।। अर ७ सातवें दलमें स्वाहा शब्द है ।। अर ८ आठवें दलमें नमो मंत्र है ॥ अर ९ नवेंम दलमें अमृत मंत्र है ॥ ओर १० दसर्वे दलमें पड्ज है ॥ ओर ११ ग्यारवै दलमें रिषभ है ॥ अर १२ बारवें दलमें गंधार है ॥ अर १३ तेरवें दलमें मध्यम है ॥ अर १४ चोदवें दलमें पंचम है ॥ अर १५ पन्धरवें दलमें धैवत है ॥ अर १६ सोलवें दलमें निषाद है ॥ अर यह चक सर-स्वतीको स्थान है ॥ अर कंठके ऊपर घेंटिमें ॥ बारह है दुलको ललना नाम चक है।। तहां १ प्रथम दलमें मद हें।। अर २ दूसेरें दलमें मान हें।। अर ३ तिसेरें दलमें स्नेह है ॥ अर ४ चोथे दलमें शोक है ॥ अर ५ पांचवें दलमें स्वेद है ॥ अर ६ छटवें दलमें लोभ है।। अर ७ सातवें दलमें आज कहे है।। अर ८ आठवे दलमें संभ्रम कहे है ॥ अर ९ नवमें दलमें लोभ है ॥ अर १० दसवें दलमें श्रदा कहाते है ॥ अर ११ ग्यारवा दलमें संतोष है ॥ अर १२ बारवा दलमें अपराध कहै है ॥ यह ठलना चक ऐसो ज़ानिये ॥ इति ठलनाचक समाप्तम् ॥

ता ललना चकके ऊपर जिन्हामें तीन पृखुडीको लोल चक है वाकी जल-चक कहत है ॥ ताकें बिचमें पत्रमें न्हस्वता रहे है ॥ अर ऊपरके पत्रमें सुक्षमता रहे है ॥ अर दाहिने पत्रमें दीरघता है वा चकमें स्वादू लीजीये है ॥ तातें ऊपर

तालुवामें वरुण चक्र है ॥ ताकी दोंय पखुडी है ॥ सों वे पखुडी निचे उपर है ॥ तीनके बिचमें तीन मारग है ॥ तहां ऊपरके मारगेंम तों आहर कहिये पवनको रोकी वो होत है ॥ ओर नीचेंठं मारगेंमं प्राण वायीको रोकी वो है ॥ अर साह-मको मारग है तामें सब उतपन्न होत है ॥ तहां उन तीनों मारगनमे छं कं खं ये तिनो बीजका अक्षर कहाते है।। तातें उपर नासिकार्के दहिनें छिंद्रमें सुगंध नामकों चक्र है ॥ ओर नासिकांके बायें छिद्रमें दरगंधि नामको चक्र है ॥ ओर बायें कानमें निह सव्यनाम चक है।। दहिनें कांनमें सब्द नाम चक्र है।। ओर बाये नेत्रमें रूप नाम चक्र है ॥ दहिनें नेत्रमें ज्योति नाम चक्र है ॥ ताकें ऊपर भ्र-कुटीनके बीचमें तीन दलको ॥ अज्ञा नामको चक है ॥ ताकें प्रथम दलमें सता गुण मगट होय है ॥ ओर दूसरे दलमें रजोगुण मगट होय है ॥ ओर तीसरे द-लमें तमोगुण पगट होय है ॥ ता चक्र तें ऊपर कपालमें छह दलको मन चक है ॥ तहाका १ पथम दलमें स्वम है ॥ ओर दूसरे २ दलमें शृंगार आदि रस-की सेवन है ॥ अर तीसरे ३ दलमें आद्यांन कहिये सुगंधकी ज्ञान है ॥ ओर ४ चोथे दलमें रूपको ज्ञान है ॥ ओर ५ पांचें दलमें ताती सीरि वस्तुको ज्ञान है ॥ ताके ऊपर सोहले पखुडीनको चंद चक है ॥ तहां वा चकमें सोलैहु दलमें मै चंद्रमा कीसि सोहले कला है।। तहां १ पथम दलमें रूपा है अर २ दूसरे दलमें क्षमा है ॥ अर ३ तीसरे दलमें सुधापणें है ॥ अर ४ चोथे दलमें धीरजता है ॥ अर ५ पांचवां दलमें वैराग्यता कहै है ॥ अर ६ छटवा दलमें निश्चयता है ॥ अर ७ सांतवां दलमें हरष है ॥ अर ८ आठवां दलमें हिसवो है ॥ अर ९ नवमां दलमें रोमांच है ॥ अर १० दसमां दलमें ध्यान है ॥ अर ११ ग्यारवां दछमें सुस्थिरता कहते है ॥ भेले पकारकी थिरता है ॥ अर १२ बारवां दलमें बोझिलपणों है ॥ अर १३ तेरवां दलमें उद्यम है सी कहिये है कारज करिवेकी इछा है ॥ अर १४ चोद्वें दलमें निरमलता है ॥ अर १५ पन्धरवां दलमें चितको उदारपनी है ॥ ओर १६ सोलवें दलमें चितकी एकता है॥ तहां बसरंधेमें भ्रमर नांमकी एक गुंफा है ॥ तांके ऊपर दीसाको सोवाको वरणन है ॥ ऐसो दीपक चक है ॥ ताकी सात पखुडी है ॥ तिन सात पखुडी नमें । यं । रं। छं। वं। शं। षं। सं। यें सात मात्राका है ॥ ओर सो। हं। हं। सः।

यह अजपा मंत्रको पाणशक्तिको वासो है ॥ अर वह हंस कहते परमात्मा दे-वता है ॥ अनुभव सक्ति है ॥ ओर स्वाचकमें । अनहद नाद होय है ॥ वि-सर्ग ॥ अर । स्वर । इनसों यक है ॥ ओर वा चक्रमें श्रीवागवादिनी सरस्व-तीको वासो कहे है ॥ महापीठ कहिये समाधि ओर उनमनि विद्या कहिये ॥ संसारमें उदासीनता ॥ अर चोथी अवस्था कहियें ॥ जीवकी ब्रह्म रूपता ॥ अरू करुण रस है अर कियाकी उत्पति है सो सक्ति है ॥ ओर वित स्वरूप अर ज्ञान स्वरूप निराकारको वास है ॥ यहां समान नांमकी पवन है ॥ बांकी मध्य गित कहे है ॥ ओर ढेढी जो नाडी सुषुमनादिक तिनको वा कमलमें संभोग है ॥ अर वहां जीव सुखको विलास करे है। ओर तेजको समूह है ॥ सूक्ष्म पंचभूतको आसरो है॥ अर वा कमलमें॥ ब्रह्मावरतनी नाम गंगा है ॥ अर वहां ही एक दलको ब्रह्मचक्र है ॥ वादलमें एक ओंकार है ॥ याहीके पास मायाचक्र है ॥ स्थामजा-को वर्ण है ॥ अर हजार ज्यांकें पखुडी है ॥ उन पखुडीनमें हजार मात्रा कहेंं बिंदु है ॥ ओर वहै चक्रमें ब्रह्मरंध्र है ॥ अमृतको वास है ॥ अब वह चक्र अमृ-तकी धारासों सब सरीरकों पृष्ट करे है ॥ वहाही पकासनामको चक्र है ॥ अनेक रंगके जामें दल है उन दलमें मात्रा कहतें ॥ बिंदूनके समूह है ॥ ओर अहंकारको रंगे लालता करिकें युक्त है ॥ तहां हदयेंमं जो अनाहत चक्र है ॥ ताके पहिलो दल ॥ ओर आठवों दल ॥ ओर ग्यारमें दल ॥ ओर बारमें दल ॥ इन ओर दलमें अम तो जीव जब जायो है ॥ तब गीतादिक की सिद्धिको चाह है ॥ वाहि अनाहत चक्रमें ॥ चोथे दल ॥ छटनु दल अर दसवों दल ॥ इनमें जब भ्रमतो जीव होवै है ॥ तब गीतादिककी इछा नहीं करे है ॥ ओर विशुद्ध चक तें आठवें दलतें लेकें पधरवें दल ताई ॥ जे आठ दल तिनमें जब आवे है ॥ तब गीतादिककी सिद्धिको विचारे है। ओर वांहि विशख चक्रकें।। सीलेंब दलमें जब जीव आवै ॥ तब गीतकों नही चाहे है ॥ अर छछना चक्रके दसर्वे ग्यारवे दुटमें जब जीव चाहे है ॥ तब गीतादीककी सिद्धि चाहे है ॥ अर यांहि चक्रके पहले दलमें ॥ अर चोथे दलमें ॥ अर पांचवें दलमें जीव आवे है तब गीता-दिककी सिद्धि नही चाहे है ॥ इनही तीनों चककें बाँकी रहे ज्यो दल तिनमें ॥ अर चक्रहूके दछमें जब जीव आवे तब गीतादिकमें सुख नही पांवें है ॥

अथ नादकी उत्पतिकों प्रकार लिख्यते॥ नहां प्रथम ज्यो आधार-चक्रतांके दोय अंगुल ऊपर ॥ अर स्वाधिष्ठान चक्रतें दोय अंगुल नीचें एक अंगल प्रमान जो देह मध्य तहां सक्षम रूप अगनिकी सिखा है ॥ कंदनसिरसींवा ो रंग हैं ॥ सो वह अगनिकी सिखा दो अंगुल लंबी है ॥ ओर वह देवको जों कंद हें ॥ सो चार अंगुलको चोफूटो है ॥ जाको बहायंथि नाम कहे है ॥ वा बहा ग्रंथिमे बारह दलको नाभिकमल हे ॥ ता चक्रमें यह जीव भ्रम रहे ॥ अर सुषुन्ना नाडीके मारग करिके ॥ ब्रह्मरंधकों चढे है ॥ अर उतरे है ॥ प्राणवार करके जुक्त जीव ऐसी चढ़े उतरे है ॥ जैसे जिवडापे नट चढ़े है ॥ अर उतिर आवे है ॥ ओर वायु सुषुन्ना नाडीके ओर पास ॥ ओरहू नाडी हें ॥ ब्रह्मरंध परयंत लंबी हैं॥ ओर मूलाधारकें मध्यमें॥ सुषुष्ठाके कंद कीसी नाई स्थित है॥ वै ने सब सरीरको जिवावें है ॥ वे नाडी अनेक हैं ॥ तिनमें चौदा ॥ १४ ॥ मुख्य है ॥ तिनमे ॥ १ ॥ पथम नाडी सुषुष्ता ॥ अर ॥२॥ दूसरी नाडी इडा ॥ अर ॥ ३ ॥ तिसरी नाडी पिंगला ॥ अर ॥ ४ ॥ चोथी नाडी कुहू ॥ अर ॥ ५ ॥ पंचमी नाडी पयस्वीनि ॥ अर ॥ ६ ॥ छटवी नाडी गांधारी ॥ अर ॥७॥ सप्तमी नाडी हस्तीजिव्हा ॥ अर ॥८॥ आठमी नाडी वारणा ॥ अर ॥९॥ नवमी नाडी यशस्विनी ॥ अर ॥ १० ॥ दसमी नाडी विश्वोदरा ॥ अर ॥ ११ ॥ ग्यारवी नाडी शंखिनी ॥ अर ॥ १२ ॥ बारमी नाडी पूषा ॥ अर ॥ १३ ॥ तेरवी नाडी सरस्वती ॥ अर ॥ १४ ॥ चोदमी नाडी अलंबुषा उन चोदा नाडीनमें ॥ पथम ॥ १ ॥ सुषुन्ना ॥ दूसरी ॥ २ ॥ इंडा ॥ तिसरी ॥ ३ ॥ पिंगला ॥ ये नाडी तीन मुख्य है उन तीनों नाडीनमें सुषुम्ना नाडी मुख्य है ॥ विस नाडीको विष्णु देवता कहते हैं ॥ अर सुषुम्नाके बाई ओर इडा' नाडी है ॥ दहिनी ओर पिंगला है ॥ तहांमें इडा नाडीनमें चंद्रमा बिचमें रहे है ॥ अर पिंगलामें सूर्य देवता बिचमें रहे है।। वा बीचरे है सो ये इडा पिंगला दोनु नाडीमें जब स्वास विचरे।। तब या जिवको काल पकडी लेत है ॥ ओर सुषुष्ठामें जब माणवायु रहे है ॥ तब काल नहीं पकड सके हैं ॥ ओर बाकीकी नाडी अंपने अपने ठिकानें शरीरमें व्यापि रहि है ॥ यांतें यह सरीर निकंमा है ॥ यामें भाग वा मोक्ष साधना यही एक गुण है ॥ इति हिंदोहर ति संपूर्ण ॥

अथ नादको प्रकार लिख्यते ॥ या पिंडमें दोय प्रकारको नाद होत हं ॥ तहां प्रथम अनाहतनाद है ॥ यांको लोकीकमें अनहतनाद कहत है ॥ सो यह अनहदको दोऊ कान मुंडे तब यह सुन्योंपरे है ॥ सो यह अनहद रूप है ॥ यातें यामें मन संसारि जीवकों नही छगे है ॥ जो परमेश्वरकी छपा होई ॥ सरस्र चितमें द्यालता होई ॥ तब वा नादकों पाँवे ॥ अर दूसरो जो आहतनाद ॥ सो लोकानुरंजन है ॥ यातें सहजही मनुष्यनके मनकूं एकता करे है ॥ यातें बडे बडे भरतादिक मुनिश्वर आहतनादकों ॥ श्रुतिस्वर विवेक करिकें सेवै है यातें ॥ ओर भूलोक भुक्तिमुक्तिके लिये ॥ अहनदनादकों मानें है ॥ तातें आहत-नादकों ॥ लोकानुरंजनके अरथ ॥ श्रुतिस्वर विवेक करिके गानकें लिये सं-गीतशास्त्रकों ॥ सरूपकमसों कहे है ॥ ओर यामं श्रुतिस्वर आदिक जे कारन ते कहिये है ॥ ब्रह्मा विष्ण शिव आदिदेवता नादसों पसन होत है ॥ यातें देवता दैत्य नाग गंधर्व नर याके पार कोननही पावे है।। सो यहां नादसमुद्र अपरंपार है ॥ ताको पार सरस्वती हुनं नही पायो ॥ सो अबह बुडावेको भय करि विणाकै मिसर्सों नुं वा सरसती है ॥ अर शिव कहत है ॥ जे विणा बजाइये वारो ॥ अर शुति जाति ताल इनतीनोनके ॥ जानिवें वारो विनें वेदहीसां मोक्षमारगकों जात है ॥ या संसारमें धरम अरथ काम मोक्ष ४ ए च्यारो पदारथ पावे है ॥ याते ब्रह्महु नाद सरूप है ॥ या पिंडमं चैतन्य जो जीवात्मा ज्यो जब शब्द कीयो चाहै ॥ तब मनको परन करेहै ॥ सो मन सरीरमें रहहै ज्यो अगिनताको भेरै है ॥ अर वह अगनि पवनकों पेरन करे है ॥ सो पवन ब्रह्म ग्रंथ मूलाधार च तें ॥ ऊपरकों चलतो नाम हद्य ॥ कंठमं हद्य ॥ कंठ मस्तक ओर मूलमें ध्वनि करे है ॥ तहा नाभिमें ॥ अति सुक्षम ध्यनि जानिये ॥ अर हदयमें सुक्षम ध्वनि जानीय ॥ कंठमें पृष्ट ध्वनि जानीय ॥ अर मस्तकमं अपृष्टध्वनि जानिये ॥ मुखमें कृत्रिम ध्वनि जानियें ॥ तहां नकार पाणको नाम है ॥ ओर दकार अग्निको नाम है ॥ यहां शब्द माण अग्निके संगतें उत्पन्न होय है ॥ यातें शम्दको नाद कहे है ॥ इति नादकी उत्पत्तिको प्रकरण संपूर्णम् ॥

अथ नादको स्थान लिख्यते ॥ तहां वा नादके तीन स्थान है ॥ पहिलो १ इदय ॥ द्वितीय २ कंठ ॥ तिसरो ३ मस्तक ॥ तहां मथम इदयमें मन्द्रनाद जानिये ॥ अर

कंटमं मध्यम नाद जानिये॥ मस्तकमें तारनाद जानियें॥ ये तिनो स्थान पहले तें हुवें दुनें है वे एक एक स्थान बाईस बाईस तरह तरहके है ॥ वे बाईस भेद श्रुति जा-निये॥ तहा हदयमें सुषम्ना ॥ आदिके चोहदे नाडी सुदि हैं ॥ तिनमें बाईस नाडी तिरछी लगी है ॥ वीणाकी सारिकी तरे है ॥ उनमें आई करिके पवन अहटे है ॥ तब वाईसवों श्रुतिको ग्यान होत हे ॥ अर वें वाईसवों श्रुति कमसों ऊंची ऊंची जानिय ॥ ऐसैहीकंठमें अर मस्तकमे बाईस बाईस श्रुतिनकी बाईस बाईस तिन छानमें जानि ये ॥ अथ अतिनकें ग्यानके अर्थ बाईस तारकी श्रुतिवीणाको मकार लिख्यते ॥ तहां दोयवीणा कीजिये ॥ तामं एकतो ध्रुववीणा कीजिये ॥ अर दुसरी चलवीणा कीजिये ॥ तहां चलवीणां बाईस तारकी कीनि तहां हलोतार अत्यं-त ढीलो कीजिये ॥ परंतु तहां ताई ढीलि कीजिये ॥ तहां तांई वा तारमें ॥ अनु-रण कही ये गंकार है ॥ अर गंकारहीन न कीजिये ॥ अर दूसरी तारयातें कछूक उंचो करिये ॥ जैसे तीसरे तारकी धूनिसू निची ॥ अर पहले तारकी धूनिसू उचि ॥ औसो दुसरो तार करनां ॥ अब ऐसे दुसरे तारकसो तीसरो तार ऊंची कछ़क कीजिये ॥ वासों चौथो तार कछ़क ऊंचो कीजिये ॥ सो चौथे तारको इतनों कचा कीजिये ॥ जैसे पड्जस्वर रहे है ॥ ऐसेहि सातमं तारमं रिखब राखिये ॥ ऐसेहि नवमें तारमें गंधार राखिये ॥ याहि कमसों और तेरवे तारमें याहि क-मसौ मध्यम राखिये ॥ अर सातवे तारमे याही कमसों पंचम राखिजे ॥ वीसवे तारमें याही कमसों धेवत राखीये ॥ ओर बाईसवें तारमें यांहि कमसो निषाद राखीये ॥ तहां चौथे तारसों ऊंचो कछुक पांचवो तार कीजियै ॥ पांचवें तारसों अंचो कछुक छटो तार कीजियै ॥ अर छट्टें तारसुं कछुक ॥ अंचें सातवीं तार कीजिये ॥ अर सातवे तारसूं ऊंचो आठंवो तार कीजिये ॥ आठवे तारसूं नवमीं तार ऊंचा कीजिये ॥ नवमं तारसूं दसमों तार कछुक ऊंचो कीजिये ॥ दसवें ता-रसीं ग्यारमीं तार कछुक ऊंची कीजियै ॥ ग्यारवें तारसूं बारमीं तार कछुक ऊंची कीजिये ॥ बारमें तारसों तेरमों तार कछुक ऊंची कीजिये ॥ तेरमें तारसों चोदवों तार कछुक ऊंचा कीजिये।। चोदवें तारसों पंधरवों तार कछुक अंचो कीजिये ॥ पंधरवं तारसों सोछवें तार कछुक ऊंची कीजिये ॥ सीछवें तारसीं सनरवीं तार कछुक ऊंची कीजिये ॥ सतरवें तारसीं अठारमीं तार कछुक ऊंची कीजिये।। अठारवी तारसों उगणिसमों तार कछुक ऊंचो कीजिये॥ उगणिसवां ता-रसों विसमों तार कछुक ऊंचो कीजिये॥ विसमो तारसों इकविसउ तार कछुक ऊंचो कीजिये॥ इकविसवें तारसों बाईसवों तार कछुक ऊंचो कीजिये॥ ऐसे बाईसकी तारकी ध्विनसों बाईसों श्रुति जानिये॥ तेसे बाईसमी श्रुतिनके बाईस तार चलवीणोंमं चले जैसे कमसें ऊंचे ऊंचे कीने है॥ ऐसेही ध्रुववीणां मे॥ बाईसवों तार यांहि कमसों राखिये॥ फरवां ध्रुववीणांके तार तो वैसेहि राखिये॥ और चलविणांके तारकों उतारियें॥

अथ चलविणाके उतारिवेंकों प्रकार लिख्यते ॥ वा चलविणामें बाई-सवां जो तार ॥ तामें निषादकी दुसरी श्रुतिहै ॥ ता बाईसवें तारकों धुववी-णामें ज्यो इकवीसवी तार।तामें निषादकी पहली श्रुति है। सी बाईसवे तारकी बरोबर ॥ चलवीणांकां बाईसवीं तार उतारि देनी याहि कमसीं चलविणांके सब तारनकी उतारि देनी ॥ याकी मथम सारणा कहे है ॥ या मथम सारणाम ॥ एक तार घटत ॥ चौथै तारकी षड्ज तीसरे तारमें आवैहे ॥ ओर सातवें तारको रिखम ॥ छटे तारमें आवे है ॥ अर नोवें तारको गंधार ॥ आठवे तारमें आवे है ॥ तेरवे तारको मध्यम बारमें तारमें आवे है ॥ अर तेरवें नारमें पंचम सोछवें तारमें आवे है ॥ अर विंसवे तारको धवत उगणिसवे तारमे आवे है ॥ अर बाईसवे तारको निषाद इकवीसवै तारमें आवे है । फेर दुसरी सारणा कीजीयै ॥ तहां चल-वीणांकें अंतकें तारकें। धववीणांक विसवी तारकी बरोबर उतारनी । याहिसों क-मसों चलवीणांकें । ओर भी सब तार उतारनें । यह दुसरी सारणां है । या दुसरी सारणाम । गांधार तो रिखभमें ॥ और निषाद धवतमें लीन होत है ॥ तहां तब-वीणांमें तीसरें तारकां षड्ज दुसरे तारपे आवे है।। ओर छटै तारको रिखम पांचवे तारमें आवे है ॥ आठवे नारको गंधार सातवे नारपे आवे है ॥ अर बारवें नारको मध्यम ग्यारवे तारमे आवे है ॥ सोलवे तारको पंचम पंधरवे तारमे आवे है ॥ ओर उगणिसवै तारको धेवत ॥ आठवै तारपै आवै है ॥ इकविसवै तारको नि-बाद । वीसवै तारपै आवे है ॥ अस गंधारको निवाद रिखम धैवतमें छीन होत है ॥ अब तीसरे सारणा कहे है । या तीसरिं सारणांमें धुववीणांमें उगणीसर्वे तारकी बरोबर । द्विणांको अंतको तार उतारणे याहि कमसी चलवीणां ।

ओर भी सब तार उतारणे। तब रिखभ षड्जमें छीन होत है। तहां चछवीणांके इसरे तारपे पड्ज पथम तारमे आवे है। ओर पांचवें तारको रिखम । चोथे ता-रें भावे है ॥ गंधार छटवें तारपे आवे है । अर मध्यम दसवे तारपे आवे है ॥ अर पंचम चोद्वे तारपे आवे है ॥ धेवत सतरवे तारपे आवे है ॥ और निषाद उगणिसवै तारपे आवे है ॥ असे रिखम तो पड्जमें ॥ ओर धैवत पंचममें छीन होत है ॥ अथ चोथीसारणा लिख्यते ॥ या चोथी सारणामें ॥ धुववीणा के आठवे तार कीं बरोबर चलवीणां के अंत को तार उतारणें ॥ याहि कमसों बलवीणां के ॥ ओर सबतार उतारनें या चोथी सारणां मे चलवीणां के प्रथम तारको ॥ षड्ज सुक्षम निषादमें लीन होत है ॥ अर चोथै तारको रिखभ तिसरै-तार पे आवे है। छटवे तारको गंधार पांचवे तार पे आवे है ॥ अर दसवे तारको मध्यम नवमें तारपें आवे है ॥ चोदवे तारको पंचम तरवें तारपें आवे है ॥ अर सतरवें तारको धेवत सोलवे तारपे आवे है।। अर उगणिसवे तारको निषाद अठरवै तारपे आवे है ॥ या सारणमें षड्ज सूक्षम निषादमें ॥ अर मध्यम गंधारमें ॥ अर पंचम मध्यममें लीन होत है याहि चलवीणांमें श्रुतिनकों ग्यान होत हैं॥ तहां पथम तो वरणन है सो श्रुति है॥अर अनुरणन स्वर है॥यातें स्वरको कारन श्रुति है। जैसे दहीको कारन दूध है। ये श्रुति मंद्र मध्यम बाईसवों तार ॥ इन तीनों स्थानन की मिलिकें छोसट श्रुति होत है ॥ अथ श्रुतिनको लक्षण लि-ख्यते ॥ प्रथम स्वरकी आदिमें हातकों ओर तंत्री आदिनके संयोगसों भयो जो शब्दसो श्रुति कहि ये ॥ इति संगीत रत्नाकर मतसों ध्रुववीणां चलवीणां सरूप निरूपम श्रुतिलक्षण कहा। है सो संपूर्णम् ॥

अथ संगीत दरपणको श्रुति ठक्षण छिल्यते ॥ जो वीणादिकमें अंगुठी को वा दंड ॥ आदिकके ताडनसों जो सब्द होय सो श्रुति कहि ये ॥ आर ताडन सों सब्द भये उपरांत जो वीणादिकी तारमें जो गंकाकार होय है ॥ सो स्वर कहि ये है ॥ वा गंकारको कारन जो ताडनमें भयो जो सब्द सो श्रुति कहि ये है सो वें श्रुति बाईस है ॥ अथ श्रुतिकें उच्चारनको जो समय वाको सक्षण छिल्यते ॥ एक छघु अक्षरको उच्चार तिनके कालमें होई ॥ सो काल श्रुति जानि ये ॥ ये तिन्यो प्रामसों श्रुति तिन प्रकारकी है ॥ तहां एक एक प्रामकी

बाईस बाईस श्रुति है। यातें तिन यामकी ।६६। छासट श्रुति होत है ॥ तहां सरीर-की बाईस श्रुति है ॥ तेहू हद्य अर कंठ अर मस्तक ॥ इनितनों स्थानमें तीन पकारकी है ॥ तातें सरीरकी श्रुतिहु । ६६ । छिहा सट है तहां सरी-रकी बाईसबी श्रुतिनके नाम कोईक आचारि जन कहे है तिनके नाम लि-रूयते ॥ नादांता । १ । निष्कला । २ । गृढा । ३ । सकला । ४ । मधुरा । ५ । **छिता । ६ । एकाक्षरा । ७ । भ्रंगजाति । ८ । रसगीतिका । ९ । रंजिका** । १०। पूरणा । ११ । अलंकारिणी । १२ । वैणिका । १३ । वलिता । १४ -त्रिस्थाना । १५ । सुखरा । १६ । सौम्या । १७ । भाषांगीका । १८ । वा-र्तिका । १९ । व्यापिका । २० । पसन्ता । २१ । सुभगा । २२ । इनही ना-मनकोकी कितनेहु ॥ आचारि जन वीणांकी श्रुतिनके नाम कहे है ॥ ओर। तीबादिके नांम ॥ सरीरकी श्रुतिनके कहे है ॥ उंन श्रुतिनसों अनुरणन कहिये ॥ गंकार रूप सात प्रकारको स्वर होत है ॥ जैसे दूधको दधी होत है ॥ जैसे ओ-रसंवादि आदि स्वरकें च्यारि भेद श्रुतिनकी फल जानियै॥ अथ सातों स्वरमें रहे जो श्रुति तिनके तिबादिक नाम िल्यते ॥ तिबा। १ । कुमद्दति । २ । मंद्रा । ३ । छंदोवति । ४ । ये च्यार श्रुति षड्जकी हें ॥ दयावति । १ । रंजिनी । २ । रतिका । ३ । ये तीन श्रुति रिखमकी हैं ॥ रौदि । १ । कोधा । २। ये दोनो श्रुति गांधारकी हैं । विज्ञका । १ । मसारीणि । २ । मीति । ३ । संमार्जिनी । ४ । ये च्यार श्रुति मध्यमकी हैं । क्षिति । १ । रक्ता । २ । संदिषिणी । ३ । आलापिणी । ४ । ये च्यार श्रुति पंचमकी हैं । मदंति । १ । रोहिणी। २। रम्या। ३। ये तिन श्रुति धैवतकी है ॥ उद्या। १। क्षोभिणी । २ । ये दोय श्रुति निषादकी हैं ॥ इति तिवादिक श्रुतिनके नाम ॥ अथ श्रुतिनकी पांच जाति लिख्यते ॥ तहां प्रथम दिसा जाति ॥ ओर दूसरी आयता जाति ॥ अर तिसरी करूणा जाति ॥ अर चांथी मृदु जाति ॥ अर पांचमी मध्या जाति ये पांचों जाति । श्रुतिनकी है ॥ तिनकें भेद कहत है ॥ तहां दिसाकी श्रुतिभेद चार श्रुति हें ॥ तित्रा । १ । रोदि । २ । विज्ञिका । ३ । उद्या । ४ । ओर आपतांके भेद पांच श्रुति हैं ॥ कुमुद्दती । १ । कोधा । २ । मसारिणी । ३ । संदिपिणी । ४ । रोहिणी । ५ । करुणा जातिनके भेद तिन

श्रुति हैं ॥ दयावति । १ । आलापिनी ।२ । सदंतिका । ३ । ओर मृदुजातिन े भेद च्यार श्रुति है ॥ मंदा । १ । रतिका । २ । पीति । ३ । क्षिति । ४ । अब इन श्रुतिनके स्थानक स्वर हैं ॥ इति श्रुति जाति संपुर्णे ॥ अथ स्वरस्रक्षण खिल्यते ॥ संगीत रत्नाकरकें मतसों ॥ जो श्रुति कहीये ॥ अंगुरी अर वीणांके ॥ तारमें संयोगतें भयो जो शब्द ॥ ता शब्द तें उत्पन्न भयो ओर स्निग्ध कहिये ॥ काननकी प्यारो लगे॥ अर अनुरणन कहिये गंकार रूप ॥ ओर आपहि ते श्रोतानेके चितको अनुरंजन करे ॥ सो अनुरणन करेंसो कहिये हैं ॥ यहही **ठछन संगीत पारिजातमें क**ह्यो है ॥ शृंगारहारकों प्रंथमै ॥ यह स्वर विष्णु स-रूप करिके वरणन कहा है ॥ श्रृतिनेतं तो स्वर भयो है ॥ स्वर तें तीन ग्राम भयो हैं ॥ ओर ग्रामोमें जाति भई हैं ॥ जातिन तें राग भयो हैं ॥ अर कछून उत्पन्न भयो शब्द मात्र तामें स्वर व्यास होय रहा है ॥ अथ स्वर या शब्दको अरथ ठिख्यते ॥ स्व कहिये आपस को कहिये सोभायमान होय तातें स्वर कहिये ॥ वह स्वर सात प्रकारका है ॥ तहां पहलो क्रमसों स्वर च्यार श्रुतिधारे है ॥ ओर दूसरे स्वरकी तीन श्रुति है ॥ तिसरे स्वरकी दोय श्रुति है ॥ अर चोथे स्वरकी च्यार श्रुति है ॥ पांचवे स्वरकी ४ श्रुति है ॥ ओर छहटे स्वरकी तीन श्रुति है ॥ अर सातवें स्वरकी दोय श्रुति हैं ॥ ये सात स्वर हैं इनमें ज्यो स्वर जितनी श्रुती कों धारन करे हैं ॥ तिननी श्रुतिनसों वा स्वरकी उत्पति जानिये ॥ अथ सांती स्वरके नाम लिख्यते ॥ प्रथम षड्ज । १ । दूसरो रिषभ । २ । तीसरो गंधार । ३ । चोथो मध्यम । ४ । पांचवो पंचम । ५ । छटवो धेवत । ६ । सातवो निषाद । ७ । ये सातों स्वरकी संज्ञा जानिये ॥ अब इन स्वरनकी एक संज्ञा ओरहु कहि है ॥ षड्जको स कहियै । १। रिषभकों री कहियै। २ । गांधारकों ग कहिये ॥ ३ ॥ मध्यमकों म कहिये । ४ । पंचमकों प कहिये । ५ । धैवतको ध कहिये । ६ । निषादकों नी कहिये । ७ । तातें सातोनकी सारिगमपधनि पिहवि संज्ञा है। तहां सरीरमें त्वचा। १। रुधिर। २। मांस । ३। मेद । ४। अस्थि । ५ । मज्जा । ६ । शुक्र । ७ । ये सात धातु है ॥ इनमें सात स्वर बसे है ॥ यांतें सात स्वर है ॥ अरु संरिरमें मूळाधार । १ । स्वाधिष्ठान । २ । मणिपूर । ३। अनाहत । ४। विशद्ध । ५। आग्या । ६। सहस्राद्छ । ७। इन

सांती चक्रनमें सातों स्वरनकों क्रमेंत बासों हैं ॥ याहु तें सातों स्वर जानियें ॥ अथ मतंगरिषिके मतसों सातों स्वरनके नामको अरथ लिख्यते ॥ तहां ततकाल उत्पन्न होइ तांको पड्ज किहेंये ॥ अथवा छह स्वर पड्जेंत उत्पन्न होइ हैं यातें पड्ज है ॥ अथवा ॥ कंठहद्यतालू जीमिं नासिका मस्तक है ॥ इन छह स्थान तें जाकि जाकि उत्पति होयसो पड्ज कहींये है ॥ अथवा कंठेंतें पड्ज-की उत्पति है ॥ अरु हद्यमें रिषम भयो है ॥ नासिकातें गांधार भयो है ॥ अरु नामितें मध्यम जानि ये ॥ हद्यतें कंठतें मस्तकतें पंचम स्वर भयो है ॥ अरु लिखाट ते धैवत भयो है ॥ अरु सब अंगनकी संधिनसों निपाद स्वर भयो है ॥ इति सांतो स्वरके नाम उत्पति संपूणम् ॥

अथ सांतों स्वरकों स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ तहां प्रथम षड्जको स्वरूपकों ध्यान लिख्यते ॥ छहजांकें मुख है ॥ अर चार जांकें हात हैं ॥ तहां दोय हातनमें कमल लिये है ॥ ओर दोय हातनसों वीणा बजोंवें है ॥ लाल कम- लसो जांकों रंग है ॥ ओर मोरपंच है ॥ इति षड्जस्वरको स्वरूपध्यान संपूणम् ॥

अथ रिषमस्वर ो स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक जाको मुख है ॥ च्यारि जाके मुजा है ॥ विनमें दोय हातनमें तौ कमल है ॥ ओर दोय हातनमें वीणा बजावे है ॥ नीलोजांको वरण कहते है ॥ अर बैलपर चढी है ॥ नामितें पॉन उठिकें तालुवा ॥ अरु जिल्हाके अप्रमें अटके है ॥ तब रिषम स्वरकों बैलनाद करे है ॥ इति रिषम स्वरको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ गांधरको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक जाके मुख है गौरो-जाको रंग है ॥ च्यार जाके हात है ॥ ओर च्यारी हातनमें वीणां ॥ फल कमछ घंटा ॥ ये लियें है ॥ अर मेंढापर चढो है यह प्राणवायु नामितें उठिकें कंठमें जि-व्हाके अंतसों अटक है तब गांधारस्वरूपको स्वर उत्पन्न होइ है ॥ इति गांधार स्वरको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥

अथ मध्यमको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक ज्यांके मुख है ॥ ध्यार ज्यांके मुजा है ॥ अर सोनें सरीसो जांको रंग है ॥ अर वीणा कालेसा कमल वरदान लियें है कुर दातरीपर चढरोहै ॥ अर साती स्वरनकें मध्यम मे स्वर है ॥ वासों मध्यम कहत है ॥ पाणवायु नामिसों उठिकें हृदय अर ॥ ओठमें अटकें है ॥

तब मध्यम स्वर पगट होत है ।। यासी मध्यम स्वर कहे है ।। इति मध्यम स्व-रको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ।।

अथ पंचमस्वरको स्वरूप लिख्यते ॥ जांकं एक मुख है ॥ अर छह भुजा है ॥ और विचित्र वरण है ॥ ओर दोनु हातनमें वीणा है ॥ बाकीके च्यारू हातमें संख कमलावर अभय धारन करे है ॥ कोयलीपर चढी है ॥ और प्राण-वायु नामितें उठिखें हदयतें ॥ कंठतें दोनु ओठ इनमें अटकें है ॥ तब पंचम स्वर उतपन्न होई है ॥ इति पंचमस्वरको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ धैवतको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ एक ज्यांके मुल है ॥ गौरो जाको शरिर है अर च्यार जांके भुजा है ॥ अर वीणा कलस खट्टांगफल ये च्यारों हातनमें ॥ घोडापें चढी है ॥ माणवायु नाभितें उठिकें हृद्य दांत सिर मस्तक कंठ इनमें अटके है तब धैवतस्वर उतपन्न होइ है ॥ ओर धी कहै तें बुद्धि जामें होई सो धैवत कहि ये ॥ इति धैवतको स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ निषादको स्वरूप ध्यान लिख्यते ॥ हातीको जांकं मुख है ॥ अर च्यार जांके भुजा है ॥ च्यारो हातनमं त्रिशूछ । १। कमछ । २। फरसी । ३। विजोरो । ४। छिये है ॥ हिस्तिकं उपिर चढी है ॥ ओर छहों स्वर यामें लीन होय है ॥ यांतं याकों निषाद स्वर कहे है ॥ इति सातों स्वरके स्वरूप ध्यान संपूर्णम् ॥

अथ सांतो स्वरके स्थान लिख्यते॥ षड्ज कंटमें, रिषम, मस्तकमें, गांधार, नासिकामें, मध्यम, इद्यमें ॥ पंचम नाभिमें ॥ ठठाटमें धेवत, ब्रह्मांडमें निषाद, रहें है ॥ इति सातो स्वरस्थान संपूर्णम् ॥ अव इन स्वरनकी आदिकें ॥ एक एक अक्षर करि के ॥ ध्रुवपद् आदिमें रासिवें को ॥ सातों स्वरनकी संज्ञा कीनि है ॥ मतंगके मतमे ॥ यातें सरिगम प ध नि॥ यह सातों स्वरनकी संज्ञा है ॥ तहां निषाद अरु गांधार ॥ य दोनुं उंचे स्वर है ॥ अरु धेवत रिषम य नीचे स्वर है ॥ षड्ज, रिषम, पंचम य समान स्वर है ॥ तहां बाजों ॥ और अंगुठीनके ताडनतें भई ज्यो ध्वनि सो श्रुति कहावे है ॥ वा श्रुतिके पिछे अनुरणन रूप कांनन कों प्पारी ॥ और मनुष्यनके मनकों आपनें हि वसकरे ऐसि जो ध्वनि सो श्रुक्ष कहिये ॥ तहां वह स्वर दोई कारका कहते है ॥ एक

तो ध्वनिरूप कहते है ॥ अर दूसरो वरणरूप कहते है ॥ तहां वरणरूप स्वर चौदा ॥ १४ ॥ मकारका कहते है ॥ अ इ उ ए ओ ऐ औ ऋ द ये नपूंसक है ॥ ओर जिव्हा मूलिय । क ू । ओर उपधमानीय । प ू अरु विसर्ग कहिये । अ: । अरु अनुस्वार कहिये मस्तक उपि विदि होय तिनुने । यथा ॥ अं ॥ ओर यम् कहिये यकारय । ये चौदा स्वर है ॥ अथ वरणस्वरके स्थान लिख्यते ॥ हद्य । १ । कंठ । २ । मस्तक । ३ । जिव्हाको मूल । ४ । दांत । प । नासिका । ६ । होट । ७ । तालवो । ८ । ये वरणस्वरकें उचार करिवेंके स्थान हैं आठ ॥ इति वर्णध्वनिके उचार करिवेंके स्थान संपूणम् ॥ तहां वर्ण जो उकारादि सो सिवरूप हें ॥ ओर मात्रा स्वर जे अकारादि सो शक्तिरूप है ॥ ओर व्यंजन अक्षर जो खोडे अक्षर तीनकी अर्ध मात्रा है ॥ सो वर्णरूप ध्वनिकों विचार प्रबंधाध्यायमें कहेंगे ॥ इति सुद्धस्वरलक्षण उत्पतिस्थानस्वरूप संपूर्णम् ॥

अथ संगीतरत्नाकरकें मतसों सात स्वर्न े उल्लाति वर्ण दिप ऋषि देवता छंदरस लिख्यते ॥ तहां प्रथम सात स्वरनके नाम कहेहें ॥ सा १ । र । र । र । र । र । र । प । प । ध । ६ । नि । ७ । ॥ तहां प्रथम पड्जकों वरनन करे है ॥ यह पड्ज स्वरदेवताकुलमें उत्पन्न भयो है ॥ जालणयांकि जाति है ॥ लाल कमलसो जाको रंग है ॥ अर जंबूदिपयांकोस्थान है ॥ अर रिष अग्न है यांको ॥ अरयांको देवताही अग्न है ॥ अर यांको अनुष्टुपछंद है ॥ वीर अद्भुत यांके रस है ॥ इति पड्ज ॥ अथ रिषम स्वरवरणनं यह रिषमस्वर ऋषिकुलमें उतपन भयो है ॥ अर क्षत्रियांकी जाति है ॥ अर सुपेद यांको रंग है ॥ साकदिपयांको स्थान है ॥ अर क्षत्रियांकी जाति है ॥ अर गांधारस्वरवरणनं ॥ यह गांधारस्वर देवताकुलमें उतपन्न भयो है ॥ इति रिषम ॥ अथ गांधारस्वरवरणनं ॥ यह गांधारस्वर देवताकुलमें उतपन्न भयो है ॥ वैश्य याकी जाति है ॥ अर सुवरण सरीसो जांको रंग है ॥ अर कुशदिप यांको स्थान है ॥ अर चंद्रमा देवता यांको ऋषि कहते है ॥ अर संरस्वती वाग्वादीनी यांको देवता है ॥ अर विष्टुप यांको छंद है ॥ अर करुणा जामें रस है ॥ इति गांधार ॥ अथ मध्यमस्वर वरणनं ॥ यह मध्यमस्वर देवताकुलमें उत्पन्न भयो है ॥ अर बाह्मण यांकी

जाति है कुंदनके फूलकोसो रंग है ॥ कीचद्वीप यांकी स्थान है ॥ अर विष्णु यांको रिखि है ॥ अर सिव यांको देवता है ॥ अर बृहस्पित यांको छंद है ॥ अर हास्यजांमें रस है ॥ इति मध्यम ॥ अथ पंचमस्वर वरणनं ॥ यह पंचमस्वर पितुस्वरनके कुलनमें उत्पन्न भयो है ॥ बाह्मण यांकी जाति है ॥ श्याम यांको रंग है ॥ शाल्मलीद्वीप यांको स्थान है ॥ नारद यांको रिखि है ॥ लक्ष्मी महा-रानी यांको देवता है ॥ अर पंक्ति यांको छंद है ॥ अर शुंगारज्यामें रस है ॥ इति पंचम ॥ अथ धैवतवरणनं ॥ यह धैवतस्वर ऋषि कुलमें उतपन्न भयो है ॥ अर क्षत्रि इनांकी जाति है ॥ अर पीतइताको रंग है ॥ अर स्वेतदीप यांको स्थान है ॥ अर इनीको विश्वावसु ऋषि है ॥ अर गणपती इनीको देवता है ॥ अर उल्मिक इनीको छंद है ॥ अर भीभत्सभयानक जांमें रस है ॥ इति धेवत ॥ अथ निषादस्वरवरणनं ॥ यह निषादस्वर असुर कुलनमें उतपन्न भयो है ॥ अर वैश्य यांकी जाति है।। अर कपूरकोसो यांको रंग है।। अर पुष्कर यांको द्विपस्थान है ॥ अर तुंबरू नामा यांको ऋषि है ॥ अर सूर्यनारायन यांको देवता है ॥ अर जगित यांको छंद है ॥ अर करुणयामें रस है ॥ इति निषाद ॥ अथ सप्त स्वरकी जनावरकी बोछि करी निश्चे छिल्यते ॥ जो संगीत रत्नाकरेमंतौयातरह छिखे है ॥ खड़ स्वरकी मोरकी बोलि तें जांनियें ॥ १ ॥ ऋषभस्वर पपै यांकी बोरि तें जांनिये ॥ २ ॥ गांधारस्वर बकरािक बोरि तें जानियें ॥ ३ ॥ मध्यम स्वर कुरुदांतलीकी बोलि तें जांनियें ॥ ४ ॥ पंचमस्वर कोयलीकी बोलि तें जांनियें ॥ ५ ॥ धैवत स्वर मीरगकी बोलि तें जांनियें ॥ ६ ॥ निषाद स्वर हातीकी बोछि तें जांनियें ॥ ७ ॥ अथ संगीत दर्पनमें यांतरेहंछिषे हैं ॥ षड्ज स्वर मोरकी बोछि तें जांनियें ॥ १ ॥ रिषभ स्वर बहरूंकी बोछि तें जांनिये ॥ २ ॥ गांधार स्वर बकराकी बोलि तें जांनिये॥ ३ ॥ मध्यम स्वर कुरदांतलिकी बोलि तें जां-निये ॥ ४ ॥ पंचम स्वर कोइलकी बोलि ते जांनिये ॥ ५ ॥ धेवत स्वर घोडाकी बोलि तें जांनिये ॥ ६ ॥ निषाद स्वर हातीकी बोलि तें जांनिये ॥ ७ ॥ इति संगीत दर्पनभेद संपूर्णम् ॥ इति सातस्वर समाप्तम् ॥ अथ श्रीखडुमंत्ररं वन्हिऋषिरनुष्टुप् छंदः॥ ब्रह्मा देवता सुपर्वजं कुल जंबुद्दीपशृंगा-

री रसः गातापान ः मयूरोबाहन । स्वरसष्टचर्थे जपे विनियोगः । खहुदीर्थे स्वरे रंगा-

निषण्णुस्वश्वतर्हस्तोत्पलद्वयधारी सविणेस्तामरस प्रभुरवभरवभलय इति बीजं स्व-णास्रयत्वादिति खड्गः ॥ १ ॥ अस्य श्रीऋषभमंत्रस्य वेधा ऋषिः गायत्रीछंदः॥ आग्निर्देवता साकद्विप ऋषिगीता पद्मसुरसो हास्यवाहनं गोसर्वपापश्चयार्थे जपे विनियोगः । एकवऋश्रतुर्हस्तः कमलद्वयधारिसीवणानीलवर्णः । २ । अस्य श्री गांधारमंत्रस्य शशांको ऋषिः । त्रिष्टुप्छंदः । शशांको देवता सुपर्वजं कुलं कैंच-द्वीपं विष्णुर्गतारसोवीरः । मेषोवाहनसंकरपीत्यर्थे जपे विनियोगः । एकवद्नः गौरवर्णः ॥ चतुःकरः वीणां फलाञ्जघटभूत् । ३ । अस्य त्रस्य लक्ष्मीनारायणो ऋषिः ॥ बृहतिछंदः भारतीदेवता कुशद्वीपं गाता चंद्रः कौंच शांतो रसः वाहनं कौंचः भारतीपीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ हेमवर्णः । चतुकरवीणां कमलसपद्मवरभूत् । ४ । अस्यश्रीपंचम मंत्रस्य नारदक्किषः । पंक्तिछंदः स्वयंभू देवता पितृवंशाः । द्वीप शाल्मलाः । नारदो गातारसः शुंगारवाहनो कोकिलः । स्वयंभूपीत्यर्थे जपे विनियोगः । एकवद्नः भिन्नवर्णः षट्करं करद्वयेन वीणां वादयन् शंखाञ्जवरदा भयमभूत् । ५ । अस्य श्रीधैवतमंत्रस्य तुंबरुऋषिः उष्णिक्छंदः संभु देवता ऋषिजं कु-छं । श्वेतद्वीपं भयानको रसः मातातुंबरुः यानरस्वः शंभुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। एकवक्रश्रतुकरः वीणां कलशाखट्टांगफलगौरवरणभूत् । ६ । अस्य श्रीनिषाद्-मंत्रस्य ध्वनि ऋषिः जगति छंदः गणेशो देवता आसुरं कुछं कौंच द्वीपं शांतो रसः गाता तुंबरु वाहनं गजगणेशमीत्यर्थे जपे विनियोगः । गजवक्र चित्रवर्णः । चतुर्भुजः त्रिशुलपद्मपरशुबिजपूरभूत् । ७ । इति निषादः । इन सांतो स्वर-नकों रागकी उतपती है ॥ इनकों विचारिकें जहां जैसो स्वर रागके वरतयेमें होइताही स्वरसों आरंभ वास पाप्त कीजि ये ॥ ये सातों स्वर संगीतशासकी मल है ॥ इनकों मर जादसों वर ताव कीजि ये ॥ तव जो जो फल कहा है ॥ सो सो फल पावे है। यहनाद ब्रह्म अपार है ॥ यांको पारकाहू नेंही पायोनही परंतु जो थोरो घनु अपनि बुद्धि माफिक शास्त्रके मतसों समि नाद ब्रह्मकों सेवै ॥ ता नाद ब्रह्म पाईवें के ये सुद्ध सात स्वर उपाय कहे है ॥ यातें इन सातों स्वर-नकी गुरु गुपते ॥ साचे अभ्यास कीजीय ॥ इनही शुष्ट सात स्वरनेत विकत भेपेते कोर । १२ । अथ वा वाईस २२ अथवा वीचातीस । ४२ । विकात-

स्वरनके भेद होत हैं । सो विकत स्वरनके भेद कहे है सर्व ग्रंथके मतसों ॥ अथ विकत स्वरनको छक्षण छिख्यते ॥ शुद्धता करिके हीन जो स्वर सो विकत स्वर कहिये है ॥ सो शुद्धता ईहीनता दोय प्रकारकी है ॥ एकतो भीतर की है ॥ एक बाहारकी है ॥ तहां भीतरकी तो हदयसों होई है ॥ और बाहरकी विणादिकमे पगट होई है ॥ तहां रत्नाकरके मतसों बारह ॥ १२॥ विकत स्वर कहे है ॥ तहां चार श्रुतिको जो षड्ज स्वर है॥ सो विकत होय करिके॥ जब दोय श्रुतिकों रहै॥ तब एकतो च्युत दुसरी अच्युत संज्ञा पावें है सो कहे है।। जब निषादस्वर काकली करिके षड्जकी दोई पहिल भुतिल तब च्यार भुतिकों निषाद काकली संज्ञा पावे है।। अर जब रिषभ स्वर षड्ज साधारण होईकें षड्जकी पिछली एक श्रुतिले है ॥ तब रिषम च्यार श्रुतिको विकत होयकें विकत संज्ञा पावे है।। अरु जब षड्जकी एक श्रुतिलेके निषाद केंसिक होई तब दोई श्रुतिकी षड्ज च्युत होत है।। विकत संज्ञा पावे है ॥ अर जब गांधार स्वर मध्यम साधारण होईकं । मध्यमकी पहली एक श्रुतिले है ॥ तब तीन श्रुतिको गांधार साधारण होत है ॥ ओर जब अंतर करिके मध्यमकी दोय श्रुतिले है तब च्यार श्रुतिको गांधार विकत होत है ॥ ऐसे गांधारके दोय भेद हें ॥ और मध्यम स्वरकी दोय श्रुति ॥ अंतर करि-कै जब गांधार छेत हैं ॥ तब दोय श्रुतिको जो मध्यम है ॥ सो अच्युत संज्ञा पावै है ॥ ओर जब पंचम स्वर तीन श्रुतिपें रहिकें मध्यमकी पिछली जब एक श्रुतिले है ॥ और गांधार मध्यमकी पहली श्रुतिलेकें जब साधारण होत है ॥ तब दोय श्रुतिको मध्यम विकत होयंके च्युत संज्ञा पावे है।। तहां आसंका करे है कि पड्ज मध्यम गांधार ग्राम थापि स्वर है ॥ इनके दोय दोय भेद कैसे कहीं है ॥ ओर दोई दोई भेद कहींगे तो दोय षड्ज माम दोय मध्यम माम कहें चहियें ॥ तहां भाव भटनें ॥ समाधान कीयो है ॥ कि ये षड्ज ओर मध्यम स्वर ये दोनु अपने ॥ अपनें ग्राममें तो एकही रहे है ॥ ओर षड्ज तो मध्यम ग्राममें ॥ अर मध्यम स्वर षड्ज माममें दोय दोय भेद पांवे है ॥ यातें कछुभी दोष नही ॥ ओर पंचम स्वर जब अपनी तिसरी श्रुतिपें रहे तब पंचम तीन श्रुतिको विकत होत है ॥ जबही तीन श्रुतिकी पंचम मध्यमकी पिछली एक श्रुतिले है ॥ तब च्यार श्रुतिको पंचम होत है ॥ और जब मध्यम ग्राममें तीन श्रुतिको

धैवत है ॥ पंचमकी एक श्रुतिले है ॥ तब च्यार श्रुतिनको धैवत विक्रत होत है ॥ और निषाद स्वर जब षड्जकी एक पहली श्रुति है तिनमें लेवें है ॥ तब तीन श्रुतिको निषाद कैसिक होत है ॥ और जब निषाद देाय श्रुतिनकों षड्ज की वऊलि दोय श्रुतिले है ॥ तब च्यार श्रु-तिनकों निषाद काकली होय है ॥ एसें बारा है ॥ १२ ॥ तो विक्रत स्वर अर सात शुद्ध स्वर ७ मिलके उगणिस १९ भेद है ॥ इति संगीत रत्नाक-रकें मतसों बारह १२ विक्रत भेद संपूर्णम् ॥

अथ अनोपविलासके मतसों सकल कलावंत मतके विकर्तनके बेचालिस ४२ भेद लिख्यते ॥ तहा रंजनि श्रुतियें रिषभ रहे ॥ तब मृदु संज्ञा पावै ॥ २ ॥ एसें रिषभकें दोय भेद हैं ॥ रौदि श्रुतिमें जब गांधार उहरे ॥ तब मृदु संज्ञा पावे ॥ ३ ॥ रतिका श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब अतिमंद संज्ञा पावे ॥ ४ ॥ रंजनी श्रुतिमें गांधार ठहरे ॥ तब अतिमंद संज्ञा पावै ॥ ५ ॥ ऐसें गांधा-रकें तीन भेद हें ॥ पीति श्रुतिमें मध्यम उहरे तब मृदु संज्ञा पावै । ६ । पसादनी श्रुतिमें मध्यम ठहरे ॥ तब अतिमंद संज्ञा पाँवे ॥ ७ ॥ विज्ञका श्रुतिमं मध्यम ठहरे ॥ तब मंद संज्ञा पावै ॥ ८ ॥ कोधाश्रुतिमें मध्यम ठहरे ॥ तब शुद्धग मध्यम संज्ञा पांवे ॥ ९ ॥ रीदि श्रुतिमें मध्यम ठहरै तब मंदग मध्यम संज्ञा पावे ॥ १०॥ रतिका श्रुतिमें मध्यम ठहरै तब शुद्ध रिखभ-मध्यम संज्ञा पावै ॥ ११ ॥ ऐसे म-ध्यमके छह भेद है ॥ संदीपिनी श्रुतिमें पंचम ठहरे ॥ तब दीप्ता संज्ञा पायै। १२। ऐसे पंचमको एक भेद है ॥ रोहिणी श्रुतिमं धेवत ठहरै ॥ तब मृदु संज्ञा पावे ॥ १३ ॥ मदंती श्रुतिमें धेवत ठहरै ॥ तब मंद संज्ञा पावै ॥ १४ ॥ अलापनि श्रुतिमें धैवत ठहरे ॥ तब शुद्ध पंचम संज्ञा पावै ॥ १५ ॥ ऐसे तीन भेद धै-वतकें है ॥ उम्र श्रुतिमें निषाद ठहरे ॥ तब मंद निषाद संज्ञा पावे ॥ १६ ॥ रम्या श्रुतिमें निषाद ठहरे ॥ तब शुद्ध संज्ञा पाव ॥ १७॥ रोहिणी श्रुतिमें निषाद ठहरे ॥ तब म, ध, नी संज्ञा पाये है ॥१८॥ मदंति श्रुतिमं निषाद ठहरे ॥ तब अतिमंद ध, नी संज्ञा पावे ॥ १९ ॥ ऐसं च्यारी भेद निषाद्कें है उपर के बड्जकी तीत्र श्रुतिमें निषाद उहरे तब तीक्षण संज्ञा पावै। २०। अर वोही षद्जकी कुमुद्दती श्रुतिमें निषाद ठहरे। तब तीक्षणतर संज्ञा पावे । २१।

अर वाही षड्जकी मंदा श्रुतिमें निषाद उहरे । तब तीक्षणतम संज्ञा पावै । २२ । ऐसे तीन भेद निषादके है। निषादकी उय श्रुतिमें धैवत टहरै। तब धैवत तीक्षण संज्ञा पावे । २३ । क्षोमिनी श्रुतिमें धैवत ठहरै । तब शुद्ध नी धैवत संज्ञा पांवे । २४ । षड्जकी तीव श्रुतिमें धेवत उहरे ॥ तब तीव्रनिनि धेवत संज्ञा पावै । २५ । वाही षड्जकी कुमुद्दती श्रुतिमें धैवत ठहरै ॥ तब अतिती-क्षण संज्ञा पांवे । २६ । ऐसे धेवतके भेद च्यार प्रकारको है । जब पंचमकी क्षिती श्रुतिमें मध्यम ठहरै। तब तीक्षण संज्ञा पावै। २७। पंचमकी रक्ता श्रुति-में मध्यम ठहरै । तब अतितीक्षण संज्ञा पावे । २८ । पंचमकी संदीपनी श्रुतिमें मध्यम उहरै। तब तीक्षणतम मध्यम संज्ञा पावै। २९। ऐसं मध्यके तीन भेद है॥ मध्यमकी विज्ञका श्रुतिमें गांधार ठहरे ॥ तब तीक्षण संज्ञा गांधार पावै । ३० । मध्यमकी प्रसारिणी श्रुतिमें गांधार ठहरे । तब तीक्षणतर संज्ञा गांधार पावे । ३१। मध्यमकी पीति श्रुतिमें गांधार ठहरे । तब तीक्षणतम गांधार संज्ञा पावै ॥ ३२ ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुतिमें गांधार ठहरे। तब शुद्ध म गांधार संज्ञा पावे ॥ ३३ ॥ पंचमकी क्षिति श्रुतिमें गांधार ठहरे ॥ तब मध्यम तीक्षण गांधार संज्ञा पावै ॥ ३४ ॥ पंचमकी रक्ता श्रुतिमें गांधार ठहरै ॥ तब तीक्षणतम मध्यम गांधार संज्ञा पाव ॥ ३५ ॥ ऐसे गांधारके छह भेद है ॥ गांधारकी रौदि श्रुतिमें रिषभ ठहरै ॥ तब रिषम तीक्षण संज्ञा पावै ॥ ३६ ॥ गांधारकी कोधा श्रुतिमें रिषम ठहरै ॥ तब शुद्ध गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ३७ ॥ मध्यमकी विज्ञका श्रुदिने रिषभ ठहरे ॥ तब तीक्षण गांधार रिषभ संज्ञा पावै ॥ ३८ ॥ मध्यमकी पता-रिणी श्रुतिमें रिषभ उहरे ॥ तब तीक्षणतर गांधार संज्ञा पाँवे ॥ ३९ ॥ मध्य-मकी पीति श्रुतिमें ठहरै ॥ तब तीक्षणतमः गांधार रिषम संज्ञा पानै ॥ ४० ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुतिमें रिषभ ठहरे ॥ तब श्रुद्ध गांधार रिषभ संज्ञा पाँवै ॥ ४ ९ ॥ पंचम दोयकी क्षिति श्रुतिमें रिषम ठहरै ॥ तब तीक्षण मध्यम गांधार रिषम संज्ञा पावै ॥ ४२ ॥ असे रिषमके सात भेद है । या रिषम रीति सी गांधार मध्यम इन तीनी स्वरनके तानीके नी भेद हैं ॥ सो तिनोनके तो सताइस भेद है ॥ और पंचमको एक भेद है ॥ धैवतके सात भेद है ॥ निषादक सात भेद है ॥ ऐसे सबके भेद मिलिके ४२ बेचालीस भेद है ॥ सो बेचालिसतो विकत स्वर ॥ अरु सात शुद्ध स्वर मिलिके ४९ ेधुण्यस्याहः स्वरनके भेद जानिये ॥ इति अनोपविलासे सकल कलावंत मतसे बेचालीर ४२ विकत स्वर भेद संपूर्णम् ॥

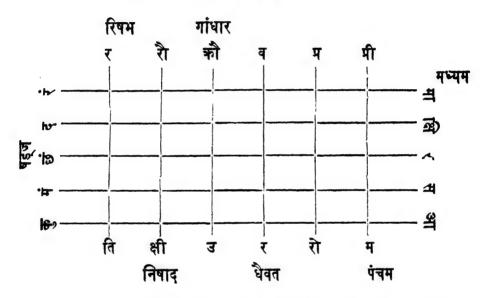
अथ संगीत पारिजातके मतसो वाईस विकत स्वर लिख्यते ॥ तहां पड्ज तो शुद्ध स्वर है ॥ १ ॥ अर रिषमके च्यारी भेद है । ४ । जब रिषम स्वर द्यावित श्रुतिपें ठहरै ॥ तब रिषभ पूरव संज्ञा पावै । १ । अरु रंजनि श्रुतिपें रिषभ उहरै तब रिषभ कोमल संज्ञा पावै ॥ १ ॥ अरु जब रातिका श्रुतिपें उहरै। तब रिषभ शुद्ध जानियें। २। अर गांधारकी एक रौद्धि श्रुतिलें तब रिषभ तीव जांनियें। ३। अरु गांधारकी दोय श्रुतिले तब रिषभ तीव्रतर जांनियें । ४। यह रिषभके च्यारी भेद है। ४। ओर गांधारके पांच भेद है। ५। जब गांधार रिषभकी रतिका श्रुतिपें ठहरै ॥ तब पूरव संज्ञा पावै । १ । अरु गां-धार अपनि रौदि श्रुविपें उहरै । तब कोमल संज्ञा पावै । २ । जब अपनी दूसरी कोधा श्रुतिप उहरै। तब गांधार शुद्ध जांनियें॥ अरु गांधार मध्यमकी पहली जो एक श्रुतिले तब तीव गांधार जानिये । ३ । अरु जब मध्यमकी दूसरी पसारिणी श्रुतिलें ॥ तब गांधार तीवतर जांनियें । ४ । ओर जब मध्यमकी तीसरी श्रुति मीतिकों हे ॥ तब गांधार तीव्रतम जांनियें । ५ । तीव्रतम गांधार ही मध्यम जांनियें ॥ मध्यमकी संमार्जनी श्रुति चोथीले तब गांधार अतितीव्रतम संज्ञा पावै ॥ यांको शुद्ध मध्यम गांधार कहत है ॥ ६ ॥ ऐसं गांधारके छह भेद है ॥ जब मध्यम अपनी पसारिणी श्रुति दूसरीपें ठहरे ॥ तब पूरव मध्यम जांनियें। १। जब अपनी मीति श्रुति तिसरीपें उहरें ॥ तब कोमल मध्यम जांनियें ॥ २ ॥ अरु जब अपनी संमार्जनी चोथी श्रुतिर्प ठहरे । तब शुद्ध म-ध्यम जांनियें ॥ ३ ॥ ओर पंचमकी एक पहली क्षिति श्रुतिकों ले । तब तीव मध्यम जांनियें । ४ । ओर पंचमकी रक्ता श्रुति दूसरीकों छें ॥ तब तीव्रतर मध्यम जांनिये। ५। अरु जब पंधमकी तीसरी श्रुति संदीपनीकों हे॥ तब तीवतम मध्यम जांनियै। या तीवतममध्यमको बृदु पंचम कहत है ॥ ऐसे मध्य-मके पांच मेद कहत है ॥ जब पंचम अपनी चोथी आलापनि भृतिपें उहरै । तब

शुद्ध पंचम जानिये ॥ ऐसे धैवतके च्यार भेद हैं ॥ जब धैवत अपनी पहली मदंनी श्रुतिपें उहरे ॥ तब पूरव धैवत जांनियें । २ । अरु धैवत अपनी रम्या श्रुति तीसरीपें उहरे ॥ तब धैवत जांनियें । ३ । अरु पहले धैवत निषादकी पहली उम्र श्रुतिले ॥ तब तीन धैवत जांनियें । ४ । अथ निषादके च्यार भेद कहते हैं । जब निषाद धैवतकी पिछली रम्या श्रुतिपें उहरें ॥ तब पूरव निषाद जांनियें । १ । अरु जब निषाद अपनी पहली उम्र श्रुतिपें उहरें । तब तुद्ध निषाद जांनियें ॥ अरु जब पड़की पहली श्रुति तीनेपें उहरें तब तीन निषाद जांनियें ॥ अरु जब षड़की पहली श्रुति तीनेपें उहरें तब तीन निषाद जांनियें । यह साधारण निषाद है ॥ अरु षड़की जब दूसरी श्रुति कुमुद्दिकों ले ॥ तब तीनतर निषाद जानियें । याकों काकली निषाद कहते है ॥ अरु षड़जकी जब तीसरी श्रुति मंदाकों ले । तब तीनतम निषाद जांनिये॥ याही तीन-तम नीषादकों मृदु षड्ज कहे है । याहीको केशिक निषाद कहे है । ऐसे बाइस तो विकत स्वर है ॥ २२ ॥ अरु सात सुद्ध स्वर है ७ सो इनके लखन कहे हैं । भरतादि मुनिश्वरोने यांतें सब ठोर विणानमें । यह भेद जांनिये ॥ ऐसें सात सुद्ध स्वर अर बाइस विकत स्वर मिलिकें येगुणतिस २९ भेद होत है । सो समझिलियें ॥ इति वार्द्धस विकत स्वरलक्षण संपूर्णम् ॥

अथ ईनशुद्ध विकत स्वरनकें मिलिकें च्यार प्रकार लिख्यते ॥
तहां प्रथम वादी १ दूसरें। संवादि २ तिसरों विवादि ३ चोथों अनुवादि ४
ये च्यार है। तिनके कमसों छक्षण छिख्यते। जो रागकी उतपन्न करें ॥ ओर
रागमें व्यापे सो स्वर वादी जांनियें।। ओर जो स्वर वाको निर्वाह करें सो संवादि
जांनियें।। ओर वादी संवादि सों। बन्यों सो राग जो स्वरके आये ते बिगडी
जाइ सो स्वर विवादि जांनियें।। ओर ज्या स्वरकों आये सो राग सुधेरे हूं नहीं।।
ओर बिन आंयें बिगडें हू नहीं सो स्वर अनुवादि जांनियें।। अथ वादिकों विशेष
छक्षण छिख्यते। जो स्वर राग जातिमें यह न्यास। अंश। आदि भेद करिकें।।
बारबार आवे हैं।। सो वादी स्वर जांनिये। सोहि वादि स्वर रागकी आदि कहिये हैं।। अथ वादी संवादी अनुवादी विवादीकें ज्ञानके अरथ दोय चक लिखें
हैं।। तहां ऊर्ध्वरेखा छह करिये हैं।। ओर तिरिछ पांच रेखा करिये हें। तिनके
अम वाईस करीयं है। २२। तहा छह छकीरनमें उपर छीछकीरके बाई श्रो

िकं अग्रमं तीत्रा श्रुति राखिये ॥ फेर मंडलचकमं करिकं ॥ बाईसों अग्रनमं क्षोमिणीपर्यंत बाईसों श्रुति राखिये ॥ यह श्रुतिमंडलचक है सो जांनियं ॥ इति श्रुतिविधान चक्रमंडल संपूर्णम् ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ अथ २ तिमंडलचक लिख्यते ॥



अथ दुसरो विणाप्रस्तार चक लिख्यते ॥ तहां एक उर्ध्वंडा-कार रेषा कीजियें ॥ ओर वां रेषामें तिरछी बाइस रेखा बरोबर कीजीयें ओर तिरछी रेषाकें दोनु ओर निकसतें अग्रभाग राखिये तहां उपरकी बाई ओरकी तिरछी रेषाकें उपरकें अग्रभागमें तीन्ना छिखिये । वाही कमसो बाइसों। अग्रभागनमें बाइसो श्रुति छिखिये । ओर जितनी श्रुतिकों जो स्वर होइ ति-वनी श्रुतिकी रछीछीककें ॥ अग्रभागमें वह स्वर छिखिये ॥ यां कमसों अपनी श्रुतिकी छिककेनी चछे अग्रभागमें सातों स्वर राखिये । वा रितिसों विणाप तर चक्र रचिये । इन दोनुं चक्रनमें वादी संवादी विचार कीजे सो विचार छिखिये । जो सांतों स्वरनमें परस्पर संवादि जो स्वर सो वह दिहादिन होइतो जिन दोय स्वरनकों रोनारिकों देखिये । तिन दोनुं स्वरनके बीचके रेखाग्र गीनियोवें बीचकें रेखाग्र बारा १२ अथवा ८ आहे ॥ तो वे दोनुं स्वर परस्पर संवादि जानिये ॥ जैसे पहुज वा मध्यम ॥ वा षड्ज ॥ अर पंचम परस्पर संवादि है ॥ ओर निषाद गांधार ये परस्पर संवादि है ॥ अरु षड्जादिक पंचम स्वरनमें विवादि है ॥ ओर मतंगके मतेंनो निषाद अरु गांधार परस्परमें तो संवादि है ॥ ओर रिषम ओर

॥ अथ	विणाप्रस्तार चक लिख्यते॥
William	तीवा
	कु मुद्दती
<u></u>	मंदा
षड्ज	छंदोवती
-	द्यावती
_	रंजनी
रिषभ-	रतिका
	रादि
गांधार-	कोधा
	— विज्ञिका
**************************************	. प्रसारिणी
	मीति
मध्यम	मार्जनि
	रूति
	रका
	संदीपनी
पंचम	आलापनि
	मदंती
	रोहिणी
1	रम्या
धैवत-	ऊया •
निषाद	<u> शोभिणी</u>

धैवतकें विवादि है औसे रि-पभ अरु धैवत संवादि है परस्परमें ओर निषाद गांधा-रकें विवादि है। अरु जिन दोनुं स्वरनकें बीचमें एक श्र-तिको अंतर होय ते स्वर परस्पर विवादि जांनियें। जै-से धवत अर निषाद परस्पर विवादि है ॥ असेहि रिषभ-गांधार परस्पर विवादि है। ओर जिन दोनुं स्वरनके बी-चकी श्रुतिमें ॥ संवादि वा विवादिको लक्षण न पावै है। तिननसों परस्पर विवादि स्वर जांनियें ओर रागको कारण स्वर वादि जांनियें ॥ ओर ज्या स्वरविना राग बिगडे नहीं सो अनुवादि ह ॥ तहां वादि स्वर राजा जांनियें॥ ओर संवादि मंत्री जानियें॥ ओर अनुवादि स्वर सेवक जांनियें। ओर विवादि स्वर शत्र जांनियें ॥ इति वादी-संवादीअनुवादीविवादिनको

अथ ग्रामकें लक्षण लिख्यते ॥ जहां प्रथम स्वर आपनी चोथी श्रुति आलापनीमें उहरै ॥ सो षड्ज याम जांनिये ॥ अरु जहां पंचम स्वर अपनी तीसरी श्रुति संदीपनीमें विकत होयकें उहरे ॥ सो मध्यम ग्राम जांनिये ॥ अथवा जहां धैवत तीन श्रुतिकों होय सो ॥ षड्ज ग्राम जांनियें ॥ अरु जहां पंचमकी पी-छली एक श्रुतिलेकें। च्यार श्रुतिकों विकत धैवत होई सो मध्यम ग्राम जांनियें॥ ओर जहां गांधार स्वर रिषभकी पीछली एक श्रुति । अरु मध्यमकी पहली एक श्रुतिलेकें च्यार श्रुतिको विकत होई ॥ अरु धैवत स्वर पंचमकी एक श्रुति लेकें। ओर निषाद धैवतकी एक पीछली श्रुति ॥ अरु षड्जकी एक पहली श्रुति छेकें। च्यारु श्रुतिकों विकत होई। सो गांधार ग्राम जांनियें॥ या गां-धार ग्रामकों नारदजीनें स्वरगमें वरत्पी है ॥ यातें यह ग्राम मनुष्यलोकमें नही है ॥ ओर सातों स्वरननें षड्ज अरु मध्यम दोनुं स्वर ॥ च्यारी चारी श्रुतिकें हें अर वह स्वर देवताका कुलमें उतपन भये है।। यातें य यामथापि स्वर है। इनहीके नामसों दोय याम जांनियें ॥ ओर गांधारदेवताकुलमें उतपन भयो है। यातें गांधारहु यामथापि है। तातें नारदजीनें गांधार याम गायो है। यातें तीसरी याम गांधारके नामसों जानिये ॥ अब तीनों यामकें देवता कहे ह । तहां षडु ग्रामके तो ब्रह्माजी देवता है ॥ १ ॥ अरु मध्यम ग्रामके विष्णु देवता है । २ । अरु गांधार ग्रामके शिवजी देवता है । ३ । यातें श्रुति स्वरकों समूह-माम जांनियै। जैसे कुटुंबी महस्त एक माममें वसे हें ॥ ऐसे श्रुति स्वर मूर्छना तांन अनेक जातिनके राग इन यामनमें वसति हैं ॥ यातें स्वरादिकनके वसिवे के ये ग्राम जांनियें इन तीनों ग्रामनमें षड्ज ग्राम । अरु मध्यम ग्राम । ये दोनुं माम मनुष्यलोकमें वरतें जाई हैं। अरु तीसरी गांधार माम तो स्वरगमें वरत्था जाये है। मनुष्यलोकमें वरत्यो जाई नहीं तहां षड्जग्राम तो सुद्ध स्वर वरते जाय हैं॥ अरु मध्यम ग्राममें विकत स्वर वरते जाय हैं ॥ इति दोनुं ग्राम भेद संपूर्णम् ॥ अथ मूर्छनाको लक्षण लिख्यते॥ कमते सातों स्वरनको आरोह अव-

अथ मूर्छनाको लक्षण लिख्यते॥ कमर्ते सातों स्वरनको आरोह अव-रोह जो है सो मूर्छना जांनियै। मूर्छना कहिये श्रोतानकों हरष वधावेनेकों रागकी सिद्धिको कारनसो वह मूर्छना एक एक माममें सात सात तरहेकी हैं। सो वह मूर्छना च्यार प्रकारकी हैं॥ एक तो शुद्ध। १। काकली॥ दूसरी साधारण । २ । काकली । तिसरी अंतर । ३ । काकली । चोथी अंतर ॥४॥ काकलिं । ये च्यार भेद जांनिये । तहां दोनुं प्रामकी शुद्ध मूर्छना चौदा प्रकारकी होत है । तामें प्रथम षड्ज प्रामकी सात मूर्छना ताके नाम कह हुं प्रथम तो उत्तरमंद्रा । १ । अर दुसरी रजनी । २ । अर तिसरी उत्तरायता । ३ । अर चोथी शुद्ध षड्ज । ४ । अर पंचमी मत्सरक्रता । ५ । अर छटी अश्वकांता । ६ । अर सातमी अभिरुद्धता ॥ ७ ॥ इति षड्ज प्रामकी सात मूर्छना संपूर्णम् ॥

अथ मध्य ग्रामकी सात मूर्छना ताके नाम लिख्यते सोविरी । १। हिरणाश्वा । २ । कलोपनता । ३ । शुद्धमध्या । ४ । मार्गी । ५ । पौरवी । ६ । हषका ॥ ७ ॥ इति मध्यम ग्रामकी मूर्छना सात संपूर्णम ॥

अथ गांधार बामकी सात मूर्छनाके नाम लिख्यते ॥ नंदा ॥ १ ॥ विविशाखा । २ । सुमुषी । ३ । विचित्रा । ४ । रोहिणी । ५ । सुषा ६ । आलापनी ॥ ७ ॥ इति गांधार बामकी सात मूर्छना संपूर्णम् ॥

अथ सरीर विणाके तीनो यामकी मूर्छना तिनके नाम एकीस है नारदमुनीने कहे है ते संगीतमीमांमा वा संगीतरत्नाकरके
मतसों लिख्यते ॥ प्रथम षड्ज प्रामकी मूर्छना कहु हुं। उत्तरमंद्रा । १ ।
अभिरुद्गता । २ । अश्वकांता । ३ । सौविरी । ४ । हृष्यका । ५ । उत्तरायता । ६ । रजनी । ७ । अथ मध्यम प्रामकी मूर्छना लिख्यते ॥ आप्यायिनी
। १ । विश्वहता । २ । चंद्रा । ३ । हेमकपर्दिनी । ४ । मेत्री । ५ । चंद्रावती
। ६ । पिआ । ७ । अथ गांधार प्रामकी मूर्छना लिख्यते । नंद्रा । १ । विसाला । २ । सुमुखी । ३ । विचित्रा । ४ । रेवती । ५ । सुषा । ६ । आल्याया
। ७ । इति सरीरग्राम मूर्छना संपूर्णम् ॥

ये नाम पहले तो शुद्ध मूर्छनाके जांनिये । १ । इन नामनके पहले काकली सब्द लगाये । एही काकली मूर्छनाके नाम जांनिये । २ । ओर इनमें पहले अंतर शब्द लगाये तें ॥ एहि अंतर मूर्छना जांनिये । ३ । ओर इनमें पहले काकली अंतर शब्द लगाये तें एहि का-कली अंतर मूर्छनाके नांम जांनिये ॥ ४ ॥ ऐसें पड्ज ग्रामकी पहली

शुद्ध मूर्छनाको नांम उत्तरमंद्रा ॥ अरु षड्ज यामकी पहलीक काकली मूर्च्छनांको नांम काकली उत्तरमंद्रा जांनियें ॥ अरु षड्ज यामकी पहली अंतर मूर्च्छनाको नाम । अंतर उत्तरमंद्रा जांनियें ॥ या रीतिसां तीनों यामनकी एकीसों मूर्च्छनानके च्यारी भेदनमें नाम जांनियें । तहां गांधार यामकी मूर्च्छनानको उच्च्यार स्वर्गमें जांनियें । ओर षड्ज याम । १ । ओर मध्यम याम । २ । ये दोनुं मनुष्यलोकमें वरतें जायेहें ॥ यातं इन दोनुंनकी मूर्च्छनानको उत्तपत्ति मकार कहे हें । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनो स्थानक जोगतें मूर्च्चनाको आरंभ होतहें । यहां यामयामकी सात सात मूर्च्चनां कही तिनकी संख्या कहते है ॥ जा मूर्च्चनामें पड्ज वा मध्यम स्वर सात स्वरकी गिणतीम ज्यो स्वर आवे ॥ ता भेद पड्ज यामकी वा मध्यम यामकी मूर्च्चना जांनियें । जेसं उत्तरमंद्रामें मथम पड्ज स्वर हे तो वह षड्जयामकी पहली मूर्च्चना जांनियें ॥ या रितिसों सातो मूर्च्चनाके भेद संख्या समिसियें ॥ इति देानुं यामकी छप्पन प्रकारकी मूर्च्चना संपूर्णम ॥

अथ एक एक मूर्छनाके सात सात भेद होतहं ता को प्रकार लिख्यते।
तहां जो मूर्छनाके सात भेद होत हं ॥ तहां मूर्छनाक सात भेद
करिनें होई ॥ ता मूर्छनाके कमसों प्रथमादिक एक एक स्वर छोडीकें वाकीके
स्वरनकों उच्चार कीजे ॥ ओर जितनें छोडे स्वर तितनें कमसों ॥ अंतिमें पिढिये ॥
यहां छह स्वर छोडिये ॥ अरु सातमों स्वर नहीं छोडिये । तब पहले भेदसों
छह भेद मिलिकें सात भेद होत हें ॥ ऐसें छप्पन मूर्छनाकें तीनसेंब्याण्णव भेद होत है ॥ ३९२ ॥ अथ दोनुं ग्रामनकी शुद्ध चोहदे
॥ १८ ॥ मूर्छनानकी उतपत्ती लिखते हैं । तहां षड़जग्रामकी सात मूर्छनांक भेद
कहतेहें ॥ जो मध्यम ग्रामके पड्ज । सो लेकं निषाद तांई ॥ सात स्वरन करिके । षड्जग्रामकी पहली उत्तरमंदा मूर्छना जांनिये ॥ अर वाहिकी छह मूर्छना रजनि आदिके मध्यम ग्रामके षड्ज ते लेकें ॥ अवरोहकम करिकें ॥ आये
जो निचले निषाद आदिक रिषभपर्येत षडजग्रामके छह स्वर तिन करिकें जांनियं ॥ ओर मध्यम ग्रामके मध्यम स्वर सो लेके ॥ गांधार ग्रामके गांधारस्वरतांई ॥ सात स्वरन करिकें मध्यम ग्राभकी पहसों धारि मूर्छना जांनियें ॥ ओर

बाकीकी हरिणा वादिक छह मूर्छना मध्यम ग्रामके गांधारसो लेकें ॥ अवरोह-कम करिकें ॥ आये जो निचले निचले षड्जग्रामके पंचम परयंत छह स्वर तिन करिकें जांनियें ॥ अथ संगीत मीमांसांक मतसों पड्जग्रामकी शुद्ध सात मर्छ-नाको उदाहरण जंत्र छिल्यते । मद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों ठिकाणोंके जागतें मूर्छनाको आरंभ हात है ॥ याही क्रमसों सब मूर्छनानके ॥ सात सात भेद एक एकके जोनि ॥ असेंही जंत्रमें समझिलीजिये ॥ इति मू-र्छना प्रकार प्रकरण संपूर्णम् ॥ अथ तानको लक्षण लिख्यते ॥ मूर्छना-नेमं विस्तार पगट होतहै ताको तान कहीये । सो वह तांन अनेक प्रकारको है । तहां प्रथम तानके दोय भेद हैं। एक तो शुष्द तान। १। दुसरी कूट तान। २। तहां शुद्ध तानके भेद कहे हैं। तहां मूर्छनांमं एक स्वरके दूर कीयेतें खाडव शुद्ध तान होत है ॥ ओर दूर दूर स्वर दूर कीयतें ॥ ओडव शुद्ध तान होत है । यह तान मूर्छना ने भये है । यातें भूर्छनाही हैं ॥ परंतु स्वरके घटायेतें । इनकों तान कहते हें ॥ और मुर्छना ना सान स्वरकी कहिये । ओर छह स्वरको पांच स्वरको तान संज्ञा पाँच है। यहां शुद्ध मृर्छनातं चारासी । ८४ । तांन होत हैं ॥ ओर काकली । १ । अंतर । २ । तद्भ गोपेन । ३ । मूर्छनातें तानही होत हैं । यह भरतमुनिको मत है ॥ अथ कृटतानका लक्षण लिख्यते ॥ मूर्छनाके सात स्वर ॥ जब मूर्छना ऋम छोडिकें उलट पलट होय । तव वें मूर्छनानको कूट-त'न कहत है ॥

संगोतरार.

88		•	सँगात	ार ॉर.		
<i>ス</i> ን	4	#	व	ঘ	可	4
ㅂ	ъ	а	ष	र्म)	4	ক
н	q	च	ন)	4	ネ	႕
व	ব্	a	শ্ৰ	र्य	ㅂ	ㅋ
ল	ച)	ঝ	ক	ㅋ	쁘	-4
ョ	কা	ম	ㅋ	म	d	दा
ফা	7	坦	书	а	च्य	a)
षड्ज यामके रिपभसो लेके मध्यम यामके षडजताई सात स्वर क- रिकें षड्ज यामकी अभिरुड्गता मूर्छना जांनिये ७ यांको देवता वरुणा.	षड्ज यामके गांधारसी लेके मध्यम यामके रिषभतांई सात स्वरति- करिकें षड्ज यामकी मूर्छना जो अश्वकांता जांनियं६ दे. अश्विनकुमार.	षड्ज यामके मध्यमसो लेके मध्यम यामके गांधारतांई सांत स्वर नि- करिकं षड्ज यामकी मत्सरिकता मूर्छना जांनिये ५ यांको देवता नागर.	षड्ज यामके पंचमसो लेकें मध्यम यामके मध्यमतांई सात स्वरन. करिके षड्ज यामकी सुद्ध षड्जा मूर्छना जानियें ४ यांक्वो देवना ब्रह्मा.	षड्ज यामके धेवतसी लेके मध्यम प्रामके पंचमताई सात स्वर करिक षड्ज यामकी उत्तरायना मूर्छना जांनिये ३ यांको देवता ब्रह्मा.	षड्ज यामके निषाद्तों लेकें मध्यम यामके धैवततांई सात स्वरन क- रिकें षड्ज यामकी रजनीमूर्छना जांनिये २ यांको देवता राक्षस.	मध्यम थामके षड्जसों लेकं मध्यम थामके निषादतांई जो सात स्वर- नकरिके षड्ज थामकी पहली उत्तरमंद्रा मूर्छना जांनिये १ देवता यक्ष.

॥ अथ दोनो यामनकी खाडव औडव तानकी संल्या लिल्यते ॥

॥ अथ मध्यम शामकी सुद्ध सात मूर्छनाको उदाहरणयंत्र लिस्यते ॥

नि स रि	<u></u> 4 자	শ্ৰ ম ন		
				य म व
		ㅋ #	리 표	ਸ ਸ ਕ ਲ
<u>.</u>	1	ı 4	। च ष	। <u>च</u> छ <u>ग</u>)
4		ਲ	표 회	ম ন ক
অ	-		ক্র ব	ন্র ন
षर्ज शामक निषाद्ता उक मध्यम शामक धवतताई सात स्वर- नेन मध्यम शामकी मार्गीमूर्छना जानिये ५ यांको देवता सिद्ध है.		मध्यम यामके षड्जसो लेके मध्यम यामके निषादतांई सात स्व नेतं मध्यम यामकी शुद्ध मध्या मूर्छना जांनिये ४ यांको देवता गंधवं है	मध्यम आमके रिषभसो लेकें गांधार आमके षड्जतांई सात स्व नतें मध्यम आमकी कलोपनता मूर्छना जांनिये ३ यांके. देवता पवन हैं मध्यम आमके षड्जतो लेके मध्यम आमके निषादतांई सात स्व नतें मध्यम आमकी शुद्ध मध्या मूर्छना जांनिये ४ यांको देवता गंधवे हैं.	मध्यम यामके गांधारसो छेके गांधार यामके रिषभतांई सात स्वर- नेतें मध्यम यामकी हरिणा॰वा मूर्छना जांनिये २ यांको देवता इंद्र है. मध्यम यामके रिषभसो छेके गांधार यामके षड्जतांई सात स्वर- नेतें मध्यम यामकी कटोपनता मूर्छना जांनिये ३ यांको-देवता पवन है. मध्यम यामके षड्जसो छेके मध्यम यामके निषादतांई सात स्वर- नेतें मध्यम यामकी शुद्ध मध्या मूर्छना जांनिये ४ यांको देवता गंधवं है.

॥ अथ न्त्रह्ताद्धोदिषादन्ते अरथ लिख्यते ॥ जब उमा ॥ १ ॥ क्षोभिणी । २ । इन दोय । श्रुतिनको शुद्ध निषाद है ॥ सो शुद्ध निषाद षड्जकी पहली दोय श्रुति तीवा ॥ १ ॥ कुमुद्दति ॥ २ ॥ इनसें तब च्यार श्रुतिकों निषाद होय ॥ सोवा काकली निषाद संज्ञा पावै ॥ इन मूर्छनामें काकलिनिषाद् है यातें यह मूर्छना काकली है ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामकी काकली मूर्छना सात ताको उदाहरण ॥

Ħ	E.	न	म	ь	হ	(E	Ħ	म	(E	ष्ट	ь	Ħ	न	क	म	काकली उत्तर मंद्रा मूर्छना ॥ १ ॥
Œ	Ħ	œ	न	Ħ	ь	চ	佢	币	ব	ъ	Ħ	Ħ	(F	Ħ	म	काकली रजनि मूर्छना । २ ।
ক	Œ	Ħ	Œ	न	Ħ	ь	137	त	ь	Ħ	=	(F)	Ħ	Œ	R	काकली उत्तरायता मूर्छना । ३ ।
ь	 	Œ	Ħ	(F)	Ħ	म	ь	ь	Ħ	=	(F	#	Œ	क	4	काकली शुद्ध षड्जा मूर्छना । ४ ।

॥ अथ षड्ज बामकी काकली मूर्छना पांचसूं भेद उदाहरण ॥

Ħ	ь	ख	क	म	⊕	듁	tr	Ħ	#	Œ	#	Œ	to	ь	म	काकली मत्सरिक्टता मूर्छना । १ ।
Ħ	Ħ	Þ	to	Œ	Ħ	œ	F	Ħ	œ	Ħ	Œ	प्र	ь	Ħ	म	काकली अश्वकांता मूर्छना । २ ।
(IL	म	it.	ь	च	Œ	缸	Œ	Œ	Ħ	Œ,	চ	5	Ħ	•	स	काकली अभिरुद्गता मूर्छना । ३ ।

॥ इति पद्दल श्राम ने काकली मूर्छना साताने उदाहरण यंत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ मध्यम श्रामकी काकली मूर्छना ७ को उदाहरण ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	Ч	म
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग
रि	ग	म	q	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि
स	रि	ग	म	q	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
नि	स	रि	ग	म	प	घ	नि	नि	घ	प	म	ग	रि	स	नि
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध
प	ध	नि	स	रि	ग	म	ч	4	म	ग	रि	स	नि	ध	प

अब जंत्रको प्रकार लिखुहूं ॥ जंत्रका उभा कोठा ॥ ७ ॥ आझा कोठा । १४ । तहां उपरला कोठा मध्यम ग्रामकी काकली ॥ प्रथम कोठाकी सुं लेनें कोठे चोदातांई ॥ प्रथमकी काकली सौवीरी मूर्छना । १ । दूसराकी कोठेकी काकली हरिणाश्वा मूर्छना । २ । तीसराकी काकली ह्व्येष्ट्राह्य मूर्छना ॥ ३ ॥ चोथाकी काकली सुद्ध मध्या मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांकी काकली मार्गी मूर्छना । ५ । छटीकी पौरवी मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवांकी काकली ह्रष्यका मूर्छना ॥ ७ ॥ इनम्माण सात कोठेक मूर्छना यंत्र समझिये ॥ इति मध्यम ग्रामकी काकली मूर्छना सातको उदाहरण यंत्र संपूर्णम् ॥ श्री राधागोविंदाभ्यां नमः ॥

अथ षड्ज याम वा मध्मम याम इन दोनुंनकी चोहदे। १४। अंतर मूर्छना है ॥ तिनको लक्षण लिख्यते ॥ जबं इन मूर्छना नांम सुद्ध गांधारके स्थान अंतर गांधार लीजिये ॥ अरु सुद्ध गांधार नही लीजिये ॥ तब ये अंत- मूर्छना होत है ॥ अथ अंतर गांधारको अरथ लिख्यते ॥ जहां रीदि ॥ १ ॥ कोधा ॥ २ ॥ इन दोय श्रुतिनको शुद्ध गांधार मध्यम स्वर दोई पहली श्रुति ॥ एकतो विज्ञका ॥ १ ॥ दूसरी पसारिणी ॥ २ ॥ इनकों लेकें चार श्रुतिको गांधार होई ॥ ताको नाम अंतर गांधार जांनिये ॥ मूर्छनानेंमं अंतर गांधार जांनिये ॥ इति ॥

॥ अथ षड्ज श्रामकी अंतर मूर्छना सात ७ को उदाहरणयंत्र लिख्यते॥

स	रि	ग	म	Ч	ध	नि	स	स	नी	ध	ч	म	ग	रि	स	१
नी	स	रि	ग	म	प	ध	नी	नी	ध	प	म	ग	रि	स	नि	२
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	q	म	ग	रि	स	नि	ध	3
प	घ	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	स	नि	ध	4	ક
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	4
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	E
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	હ

अब यंत्रको प्रकार लिखत हुं॥ तहां उपरला कोठाकी वलीमें प्रथमकी अंतर उत्तरमंद्रा मूर्छना॥ १ ॥ दूसरीकी अंतररजनी मूर्छना॥ २ ॥ तीसरी उत्तरायता मूर्छना॥ ३ ॥ चौथी अंतर शुद्ध षड्जा मूर्छना ॥ ४ ॥ पंचमी अंतर मत्तरिकृता मूर्छना॥ ४ ॥ छटी अंतर अश्वकांता मूर्छना॥ ६ ॥ सातमी अंतर अभिरुद्धता मूर्छना॥ ७ ॥ इन प्रकार करिकें । सात स्वरनके अंतर मूर्छनान ने यंत्रके मांहिनें समझिये॥ इति षड्ज यामकी अंतरमूर्छना सात ७ को यंत्रमें उदाहरण दिखाईयोहें समझिवेके॥ श्रीमदनमोहनाय नमः॥ श्रीगोवर्धनाय नमः॥ ॥ श्रीरस्तु॥

॥ अथ मध्यम ग्रामकी अंतर मुर्छना ७ को उदाहरण ॥

									-						
म	ч	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स्	नि	ध	Ч	म
ग	म	प	ध	नि	स	रि	म	ग	रि	स	नि	ध	d	म	ग
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि
स	रि	ग	म	4	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
नि	स	रि	ग	म	प	ध'	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि
ध	नि	स	रि	ग	म	प	ध	ध	ŧ	म	ग	रि	स	नि	ध
ч	ध	नि	स	रि	ग	म	प	q	म	ग	रि	स	नि	ध	q

अब यंत्रको प्रकार कहू हूं ॥ तहां उंपरे उपरले कोठे प्रथमकोमें ॥ अंतर सौविरि मूर्छना ॥ १ ॥ दूसरामें अंतर—हरिणाश्वा मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरामें ॥ अंतर—कलोपनता मूर्छना ॥ ३ ॥ चोथामें । अंतर—सुद्धमध्या मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवामें । अंतर—मारगी मूर्छना ॥ ५ ॥ खहरामें ॥ अंतर—कमिं मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवामें । अंतर—हष्यका मूर्छना ॥ ७ ॥ इन भांति मध्यम ग्रामकी तिर्यक् कोठिक ॥ १६ ॥ सोला मूर्छना जांनिये ॥ इति मध्यम ग्रामकी अंतर मूर्छना संपूर्णम् ॥ श्रीगोदुग्धाधीशाय नमः ॥ अथ षड्ज ग्राम वा मध्यम ग्राम इन दोनोके चोहदे ॥ १४ ॥ काकली ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ इन दोन्यो करिकें जुक्त मूर्छ है ॥ ते काकलि अंतर—तद्वयोपेत मूर्छना कहावे हें तांको लक्षण लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें ॥ जब गांधार ॥ अरु शुद्ध निषाद ॥ इन दोनुनके स्थानमें ॥ अंतर गांधार ॥ अरु काकली निषाद होइ ॥ तब तद्वयोपेत मूर्छना जांनिये ॥ अथ षड्ज ग्रामकी काकली ॥१॥ अंतर ॥२॥ तद्वयोपेत मूर्छना सात ७ वीणांको यंत्रमें उदाहरण समजिकें लिख्यते ॥ ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ अथ पड्ज ब्रामको काको १ अंतर २॥ ॥ अथ तद्वयोपेत मूर्छना ७ उदाहरण ॥

9	२	3	8	ч	६	७	6	3	90	99	92	93	38	94	98	0
स	रि	ग	म	4	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	9
नि	स	रि	ग	म	q	ध	नि	नि	ध	Ч	म	ग	रि	स	नि	२
ध	नि	स	रि	ग	म	q	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	3
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	ч	म	ग	रि	स	नि	ध	प	8
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग्	रि	स	नि	ध	प	म	4
ग	म	Ч	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	Ч	म	ग	६
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	ч	म	ग	रि	७

अब यंत्रको प्रकार कह्हूं ॥ तहां उपरलेहि उपरले कोठेमें प्रथमकामें ॥ तद्द-योपेत उत्तरमंद्रा मूर्छना ॥ ३ ॥ दूमरामें तद्द्रयोपेत रजिन मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरामें ॥ तद्द्रयोपेत उत्तरायता मूर्छना ॥ ३ ॥ चाथामें ॥ तद्द्रयोपेत शुद्ध षड्जा मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांमें ॥ तद्द्रयोपेत मन्सिरिक्टता मूर्छना ॥ ५ ॥ छहटामें ॥ तद्द्रयोपेत अश्वकांता मूर्छना ॥ ६ ॥ सानवांमें तद्द्रयोपेत अभिरुद्गता मूर्छना ॥ ७ ॥ इति षड्ज यामकी काकली ॥ ३ ॥ अंतर ॥ २ ॥ तद्द्रयोपेत मूर्छना ॥ ७ ॥ उदाहरण संपूर्णम् ॥

॥ अथ मध्यम ग्रामकी काकली अंतर तहूरापेत मूर्छना ७ उदाहरण ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	9
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	घ	प	म	ग	२
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	घ	प	म	ग	रि	3
स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	म	नि	ध	प	म	ग	रि	स	8
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	भ	प	म	ग	रि	स	नि	ч
ध	नि	स	रि	ग	म	प	भ	भ	ч	म	ग	रि	स	नि	ध	ध्
प	ध	नि	स	रि	ग	म	प	प	म	ग	रि	म	नि	ध	प	७

अब यंत्रको प्रकार कहुहूं ॥ तहां उपरते कोठेमें प्रथमकोमें तद्वयोपत सावीरी मूर्छना ॥ १ ॥ दूसरोमं ॥ तद्वयोपत हरिणाश्वा मूर्छना ॥ २ ॥ तीसरोमें तद्व-योपत कलोपनता मूर्छना ॥ ३ ॥ चोधमें तद्वयोपत सुद्धमध्या मूर्छना ॥ ४ ॥ पांचवांमें ॥ तद्वयोपत मारगी मर्छना ॥ ५ ॥ छहटामें ॥ तद्वयोपत पौरवी मूर्छना ॥ ६ ॥ सातवांमें । तद्वयोपत हज्यका मूर्छना ॥ ७ ॥ इति मध्यम प्रामकी काकि ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ तद्वयोपत मूर्छना सात ७ को उदाहरण यंत्रमें समजिये संपूर्णम् ॥

अथ छप्पन मूर्छनानेंमं एक एक मूर्छनाके ॥ सात सात भेद होतहे ताकां प्रकार खिरूयते ॥ तहां जा मूर्छनाके सात भेद करिनें होय ता मूर्छनाके कमसो पथमादिक एक एक स्वर छोडीकें बाकीके स्वरनको उच्चार करिजे ॥ ओर जितनें स्वर छोडे तितनें कमसों अंतेमं पडिये ॥ यहां छह स्वर छोडिये ॥ अरु सातमों स्वर नहीं छोडिये ॥ तब पहले भेदसों ॥ छह भेद मिलिकें ॥ सात भेद होत है ॥ ऐसे छप्पन पद भेद मूर्छनानके तीनसे व्याण्णय ३९२ भेद होत है ॥

॥ अथ षड्ज ग्रामकी शुद्ध सात मूर्छनानमं पहली लिखि ज्यो उत्तरमंद्रा ताके सात भेद लिख्यते ॥

स	रि	ग	म	प	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	9
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	२
ग	म	प	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	m
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	प	म	8
ч	ध	नि	स	रि	ग	म	Ч	प	म	ग	रि	स	नि	ध	प	4
ध	नि	स	रि	ग	म	Ч	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध	छ
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	e

॥ अथ पड़ज यामकी शुद्ध सात मूर्छनानमं दूसरी रजनी ताक सात भेद लिख्यते ॥

नि	स	रि	ग	म	ч	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि	9
स	रि	ग	म	Ч	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स	2
रि	ग	म	q	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	प	म	ग	रि	3
ग	म	Ч	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग	8
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	ध	q	म	٧
4	ध	नि	स	रि	ग	म	प	q	म	ग	रि	स	नि	ध	प	६
ध	नि	स	रि	ग	म	Ч	ध	ध	Ч	म	ग	रि	स	नि	ध	૭

॥ अथ मध्यम श्रामकी सद्ध ७ ्र्छनानमें पहली सोविरि ताके सात भेद लिख्यते ॥

म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म्	ग	रि	स	नि	ध	Ч	म
प	ध	नि	स	रि	ग	म	Ч	प	म	ग	रि	स	नि	ध	q
ध	नि	स	रि	ग	म	Ч	ध	ध	प	म	ग	रि	स	नि	ध
नि	स	रि	ग	म	q	ध	नि	नि	ध	q	म	ग	रि	स	नि
स	रि	ग	म	Ч	ध	नि	स	स	नि	ध	प	म	ग	रि	स
रि	ग	म	प	ध	नि	स	रि	रि	स	नि	ध	Ч	म	ग	रि
ग	म	Ч	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग

॥ अथ मध्यम ग्रामकी शुद्ध ७ मूर्छनान ें दसरी हरिणाश्वा र्ताके सात भेद किन्द्यते ॥

ग	म	Ч	ध	नि	स	रि	ग	ग	रि	स	नि	ध	प	म	ग
म	प	ध	नि	स	रि	ग	म	म	ग	रि	स	नि	घ	4	म
	1	•	1	1	1		1	प							
								ध							
नि	स	रि	ग	म	प	ध	नि	नि	ध	प	म	ग	रि	स	नि
-							1	स		4	. He made as	_			
	1			1			7	रि			•			-	रि

तहां खाडवतांन षड्ज ग्रामकी ॥ सातों मूर्छनामें क्रमसों ॥ षड्ज ॥ १ ॥ रिषम ॥ २ ॥ पंचम ॥ ३ ॥ निषाद ये दूरि कीजिये ॥ तब अठाइस ॥ २८ ॥ खा- इवतांन होत है ॥ अरु मध्यम ग्रामकी सांतों मर्छनामें कमसों षड्ज ॥ १ ॥

रिषम । २ । गांधार । ३ । ये दूरि कीजिये ॥ तब एकईस २ १ खाडव तांन होत है ॥ ऐसे दो ग्रामकी मिलिके येगुणपचास ॥ ४९ ॥ खाडव तांन सुद्ध है ॥ और औडव तांन ॥ षड्ज ग्रामकी सात मूर्छनामें कमसों ॥ षड्ज पंचम । १ । गांधार-निषाद । २ । रिषभ पंचम । ३ । ये दरि कीजिय ॥ तब इकीस । २१ । औ-डव तांन होत है। अरु मध्यम बामकी ॥ सात मूर्छनामें क्रमसों रिषभ धैवत। १। गांधार निषाद।२। य दूरि कीजिये ॥ तब चोदह ।१४। औडव तान होते है ॥ ऐसे दोनु ग्रामकी मिछिके पेंतिस ॥३५॥ औडव तांन होत है ॥ ऐसे खाडवकी येगुण-पचास । ४९ । तांन औडवकी । ३५ । पेंतिस तांन ॥ ये दोन मिलिके सुद्ध तांन चोरासी । ८४ । जांनिये ॥ अथ चोरासि शुद्ध तांननके कमसों उदाहरण नाम लिख्यते ॥ तहां खाडवतान दोन्यो ग्रामनकी येगुणपचास । ४९ । तांन है ॥ तहां पड्ज ग्राममें खाडव तांन अठाइस । २८ । है ॥ अरु मध्यम ग्राममें खाडव तांन एकईस । २१ । तांन है ॥ ऐसं भेद यां खाडवके येगुणपचास । ४९। तांन हैं ॥ औडव तांन दोनों यामेंमें पंतिस । ३५ । तांन है ॥ तहां षड्ज याममें ॥ औडव तांन एकईस २१ हें ॥ अरु मध्यमयाममें औडव तांन चौदे हें । १४ । खाडव भेदें येगुणपचास । ४९ । औडव भेद पेंतिस । ३५ । ये दोनो भेद मिलिके ची-रासि । ८४ । भेद तांन होत हैं । अब इनको सुद्ध तांन कहत हैं ॥ तहां पहले षड्ज ग्रामकी अठाइस ।२८। तान खाडव हें ॥ तिनके कमसें नाम लिख्यते ॥ तहां पड्ज स्वरहीन छह स्वरकी ताननको सात भेद तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां पहली तांनको नाम अग्निष्टोम । १ । दूसरी तांनको नाम ॥ अत्यग्निष्टोम । २ । तीसरी तांनको नाम वाजपेय । ३ । चोथी तांनको नाम । षोडसी । ४ । पांचवी तांनको नाम । पुंडरीक । ५ । छटी तांनको नाम अश्वमेध । ६ । सातमी तांनको नाम राजसूय । ७ । इति षड्ज स्वरहीन स्वरकी तानके नाम संपूर्णम् ॥ अथ रिषभहीन स्वरकी तांनके सात भेद ठिख्यते ॥ तहां पहली तांनको नाम । स्व-ष्टकत । १ । दूसरी तांनको नाम बहुसवर्ण । २ । तीसरी तांनको नाम गोसव । ३ । चोथी तांनको नाम । महावृत । ४ । पांचमा तांनको नाम । विश्वजित । ५ । छहटि तांनको नाम ॥ ब्रह्मयज्ञ । ६ । सातमी तांनको नाम ॥ पाजापत्य ॥ ७ ॥ इति रिषभहीन छह स्वरकी तांनके नांग संपूर्णम् ॥ अथ पंचमहीन छह

स्वरकी तानके नाम लिख्यते ॥ अश्वकांता । १ । रथकांता । २ । विष्णुकांता । ३। सूर्यकांत । ४। गजकांत । ५। बलभूत । ६। नागयज्ञ । ७। अथ निषादहीन छह स्वरनकी तांनके नाम छिरूयते ॥ चातुर्मास्य । १ । संस्थारव्य । २ । शस्त्र । ३ । अकथ । ४ । सौत्रामणि । ५ । वित्रा । ६ । उद्धिद । ७ । इति षड्ज ग्रामकी अठाइस । २८ । तांनके नाम संपूर्णम् ॥ अथ मध्यम ग्राममं **पड्ज स्वरहीन** छह स्वरनकी तांनके सात भेद तिनको नाम लिख्यते ॥ सावित्रि । १। अर्ध सावित्रि । २ । सर्वतोभद्र । ३ । आदित्यायन । ४ । गवायन । ५ । सर्वायन । ६ । क्रोडपायन । ७ । इति षड्ज स्वरहीन छह स्वर तांन नाम मध्यम ग्राममें संपूर्णम् ॥ अथ रिषभहीन छह स्वरन तांनके नाम लिख्यते ॥ अग्निचित । १ । द्वादशाह । २ । उपांश । ३ । सोमाद्वय । ४ । अश्वप्रतिमहो । ५ । बहिं । ६ । अभ्युद्य । ७ । इति रिषभ स्वरहीन छह स्वर तांन तिनको भेद संपूर्णम् ॥ अथ गांधारहीन छह स्वरके तानके नाम छिल्यते ॥ खर्वस्वदक्षण । १ । दीक्षा । २ । सोमरव्या । ३ । समिदाव्हय । ४ । स्वाहाकार । ५ । तन-नपात । ६ । गादोहन । ७ । इति मध्यम यामके छह स्वरनकी तानके नाम संपूर्णम् ॥ इति दोनो ग्रामनकी खाडव तांन । ४९ । संपूर्णम् ॥ अथ पड्ज ग्राममें औडव तांन इकईस । २१ । तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां पहले षड्ज स्वर पंचम स्वरहीन पांच स्वरनकी तांनके भेद नाम लिख्यते ॥ इडा । १ । नरमेध । २ । येन । ३ । वज्र । ४ । इष । ५ । अंगिरा । ६ । कंक । ७ । अथ निषाद गांधारहीन पांच स्वरनकी तांनके नाम लिख्यते ॥ ज्योतिष्टोम । ३ । दशे । २ । नांदी । ३ । पौर्णामासी । ४ । हयप्रतियह । ५ । एति । ६ । सोरभ । ७ । अध रिषम पंचमहीन पांच स्वरनकी तांनके नाम लिख्यते ॥ सौभाग्यकत । १ । कारीरी । २ । शांतिकत । ३ । पृष्टिकत । ४ । वैततेय । ५ । उचाटन । ६ । बशीकरन। ७। इति षड्ज यामकी इकईस । २१। औडव तांन संपूर्णम् ॥ अध मध्यम ग्रामकी चोहदे। १४। औडव तांनके नाम लिख्यते ॥ तहां पहले रिषभ-स्वर ॥ धैवत स्वरहीन ॥ पांच स्वरकी तानके नाम लिख्यते ॥ त्रेलोकमोहन । १। बीर । २ । कंदर्भ बलसातन । ३ । संखचूड । ४ । गजछाय । ५ । रीद्रा । ६ । विष्णुविकम । ७ । अथ निषादगांधारहीन पांच स्वरनकी तांनके भेद नाम

लिख्यते ॥ भैरव । १ । कामद । २ । अवमृत । ३ । अष्टकपाल । ४ । स्वि-ष्टलत । ५ । वषट्कार । ६ । मोक्षदा । ७ । इति मध्यम ग्रामकी चोहदे । १४ । गांन औडव तिनके भेद नाम संपूर्णम् ॥ इति चोहोरासी ॥ ८४ ॥ तांनके नाम संपूर्णम् ॥ अथ षड्जग्रामके षड्जहीन खाडव शुद्ध तांननके यंत्र लिख्यते ॥ सो शुद्ध तांननके यंत्रमें उदाहरन जानिये ॥ ॥ श्री ॥

॥ अथ पड्ज ग्रामके पड्जहीन पाडव ो यंत्र लिख्यते ॥ १ ॥

नि	ध	प	म	ग	रि	0	उत्तरमंदा अग्नि सोमयज्ञमे.
ध	प	म	ग	रि	•	नि	रजनि अग्निष्टोमयज्ञमे गावनी.
ч	म	ग	रि	٥	नि	ध	उत्तरायता वाजपेय यज्ञमें गावनी.
म	ग	रि	0	नि	ध	Ч	सुद्ध षड्जा सोडसो यज्ञमें गाणु.
ग	रि	0	नि	ध	ч	म	मत्सरिक्टता पुंडरीक यज्ञमें.
रि	0	नि	ध	प	म	ग	अश्वकांता अश्वमेध यज्ञमें.
0	नि	ध	प	म	ग	रि	अभिरुद्गता राजसूय यज्ञमें.

॥ अथ पड़ज ग्रामके रिषभहीन पाडव सुद्ध तांन ॥ २ ॥

नि	ध	प	म	ग	0	स	उत्तरमंद्रा स्वषकर्म यज्ञमं ॰
घ	Ч	म	ग	0	स	नि	रजिन, बहु सुवर्ण यज्ञमें ॰
4	म	ग	0	स	नि	ध	उत्तरायता गोसव यज्ञमं०
म	ग	0	स	नि	ध	प	शुद्ध महाषड्जा महावन यज्ञमें ॰
ग	0	स	नि	ध	प	म	मत्सरिकता चकत यज्ञमं ॰
0	स	नि	ध	प	म	ग	अश्वकांता ब्रह्मयज्ञमं०
स	नि	ध	प	म	ग	•	अभिरुद्गता पाजापत्ययज्ञ •

॥ अथ षड्ज ग्रामके पंचमहीन पाडव शुद्ध तांन ॥ ३॥

नि	ध	0	म	ग	रि	स	उत्तरमंदा अश्वकांतयज्ञमं ०
ध	•	म	ग	रि	स	नि	रजनी रथकांत यज्ञमें गावनी
0	म	ग	रि	स	नि	ध	उत्तरायता मूर्छना विष्णुक्रांतयज्ञ०
म	ग	रि	स	नि	ध	0	सुद्ध षड्जा सूक्रांत यज्ञमें गाव०
ग	रि	स	नि	ध	0	म	मत्सरिक्ठता मूर्छना गजाकांत०
रि	स	नि	ध	0	म	ग	अश्वकांत बलभृत यज्ञमं गा०
स	नि	ध	0	म	ग	रि	अभिरुद्गता मूर्छना नागयज्ञ०

॥ अथ पड्ज श्रामके निषादहीन पाडव तान ॥ ४ ॥

_												
0	ध	Ч	म	ग	रि	स	उत्तरमंद्रा चातुर्मास्य यज्ञमे गा०					
ध	प	म	ग	रि	स	0	रजनी संस्थाख्य यज्ञमें गावनी.					
प	म	ग	रि	स		ध	ं उत्तरायता मूर्छना शास्त्र यज्ञ ०					
म	ग	रि	स	0	ध	प	सुद्ध षड्जानु कथ यज्ञमें गावनी.					
ग	रि	स	0	ध	Ч	म	मत्सरिकृता मूर्छना सौत्रामणि.					
रि	स	0	ध	प	म	ग	अश्वकांता चित्रायापमें गावनी.					
सं	•	ध	प	म	ग	रि	अभिरुद्गता उद्गिद यज्ञमें०					

॥ अथ मध्यम ग्रामक पड्जहीन षाडवतांन ॥ ५ ॥

ग	रि	•	नि	ध	q	म	सौविरि सावित्रि यज्ञमें गावनी.
रि	0	नि	ध	प	म	ग	हरिणाश्वा अर्द्ध सावित्रि यज्ञमे.
0	नि	ध	q	म	ग	रि	कलोपनता सर्वतोभद यज्ञमें.
नि	ध	प	म	ग	रि	0	सुद्ध मध्यादिव्यापन यज्ञमे गावनी.
ध	प	म	ग	रि	0	नि	मार्गी मूर्छनानागपक्षक यज्ञमे.
4	म	ग	रि	0	नि	ध	पौरवी मूर्छना सर्पानामयन यज्ञमें.
म	ग	रि	0	नि	घ	प	ह्प्यका मूर्छना कीणपायन यज्ञमें.

॥ अथ मध्यम ग्रामके रिषमहीन पाइन्तांन ॥ ६॥

-							
ग	0	स	नि	ध	प	म	सौविरि अग्निचित यज्ञमे गा०
•	स	नि	ध	प	म	ग	हरिणाश्वा द्वादशाह यज्ञमे०
स	नि	ध	q	म	ग		कलोपनता उपांशु यज्ञमें गाव॰
नि	ध	q	म	ग	0	स	शुद्धमध्या सोमाभिद यज्ञमें गाव॰
ध	q	म	ग	0	स	नि	मार्गी अन्वपतिग्रह यज्ञमें गा॰
ч	म	ग	0	स	नि	ध	पौरवी बर्न्हिरथ यज्ञमे गावनी
4	ग	•	स	नि	ध	q	हष्यका मूर्छना अभ्युदय यज्ञमे

॥ अथ मध्यम ग्रामके गांधारहीन षाडव ॥ ७ ॥

0	रि	स	नि	ध	प	म	सौवीरि सर्वस्व दक्षिण यज्ञमं ०
रि	स	नि	ध	Ч	म	0	हरिणाश्वा दीक्षा यज्ञमें गा०
स	नि	ध	q	म	0	रि	कलोपनता सोमारूय यज्ञमें गा०
नि	ध	प	म	•	रि	स	शुद्धमध्या मूर्छना समिदाव्हय यज्ञमें ०
ध	प	म	0	रि	स	नि	मार्गीपूर्छना स्वाहाकार यज्ञमं •
4	म	0	रि	स	नि	ध	पौरवी मूर्छना तनूनपात यज्ञमें ०
म	٥	रि	स	नि	ध	प	हष्यका गोदोह यज्ञमें गावनी ॰

॥ अथ षइज ग्रामके औडव शुद्ध तांन षड्ज पंचमहीन ॥ ८ ॥

			_	_			
नि	ध	٥	म	ग	रि	•	उतरमंदा मूर्छना इडा यज्ञमं ०
ध	0	म	ग	रि	0	नि	रजनि पुरुषमेध यज्ञेमें गावनी.
0	म	ग	रि	0	नि	ध	उत्तरायता श्येन यज्ञमें गावनी.
म	ग	रि	0	नि	ध	0	शुद्ध षड्जा वज्रयागर्ने गावनी.
ग	रि	0	नि	ध	0	म	. मत्सरिकता इषु यज्ञेमं गावनी.
रि	0	नि	ध	•	म	ग	अश्वकांता अंङ्गीरा यज्ञमें.
0	नि	ध	٥	म	ग	रि	अभिरुद्गता कङ्ग यज्ञमें.

॥ अथ पड्ज ग्रामके औडव तांन निषाद गांधारहीन ॥ ९ ॥

0	ध	प	म	0	रि	स	उत्तरमंद्राजोतिष्टोम यज्ञमें गावनी.
ध	4	म	٥	रि	स	0	रजनिमूर्छना दर्शयज्ञमें गावनी.
4	म	0	रि	स	0	ध	उत्तरायतानंदारूय यज्ञमें गावनी.
म	0	रि	स	0	ध	प	श्रुतिषड्जा पौर्ण मासी यज्ञमें गावनी.
0	रि	स	•	ध	4	म	मत्सरिकृता अश्वपतियह यज्ञमें गाव॰
रि	स	0	ध	प	म	0	अश्वक्रांतायहोरात्रि यज्ञेमं गावनी.
स	•	ध	प	म	0	रि	अभिरुद्गता सौरभ यज्ञमें गाव.

इति चोरासि तांनके लक्षण जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध चोरासी तानके गायवेको फल टिक्टि ते ॥ इन चोरासि तांनको संगीतशास्त्रके जानिवे वारे पंडित इनकों समिसकों । स्वरकों वीणामें
वा कंटमें अभ्यास करिकें ॥ शिवजिकी वा गोविंदजीकी स्तुतिमें पाडवऔडव
तानको जो कोई पुरुष ॥ शास्त्रके मतसों वरते तो पुरुष जाके नांमको जो तांन
हैं ॥ वाही जगेको जो तान हैं ॥ वाही जगेको सांगोपांग कीयेतें ॥ जो फल
होय सो फल पावे है ॥ यह भरत मतंग याज्ञवल्क्य मंत्रमें । आदिश्वर मुनिश्वरनको वचन है ॥ यातें इन तांनको ॥ गायवो सुनि समिसवो ॥ शास्त्रसों विचारिवो महा फलको दाता है ॥ आयुरदाको बढावणोवालो है ॥ ओर या संसारके विघनेको दूरि करत हैं ॥ या समान च्यारो पदारथ देवेको ॥ ओर यातें उत्तम
वस्त नही हैं ॥ यह वेदको मत हैं ॥ इति शुद्धतांननको गायवेको फल
संपूर्णम् ॥

अथ संगीत मीमांसाके मतसों कूट्तानन ने लक्षण लिख्यते ॥ येही मूर्छना कमसों कहे जे सात स्वर ते पस्ताररीति करिकें उछटे सुछटे होय ॥ तब उन मूर्छनान नें कूटतांन कहते हें ॥ सो कूटतांन एक एक मूर्छनामें ॥ अव रोह तांइ विस्तार कीये तें ॥ मूर्छना कमसहित पांच है ॥ जांके चालिस

मेद होत है ॥ इन भेदनको दोनु ग्रामनकी ॥ सुद्ध ॥ १ ॥ अंतर ॥ २ ॥ का-कली ॥ ३ ॥ तद्वयोपेत ॥ ४ ॥ मूर्छनानके छप्पन ॥ ५६ ॥ भेद है ओर एक मूर्छनामे ५०४० तान होत है वांको छप्पनसे गुणे तो पूर्ण कूटतांननके दोय लाख न्यायशी हजार दोसो चालीस ५०४०४५६ होत है ॥ अथ षाडवताननकी संख्या स्टिख्यते ॥ इन मूर्छनानमं ॥ अंतरकों एक एक स्वर दूरि कीये तें ॥ षाडवतांन होत हैं ॥ तिनक पस्तारकी रिविसों एक एक मुर्छनानमें ॥ सातसेंविस भेद होत है।। ७२०।। इन भेदनको शुद्ध मूर्छनाके चोहदे १४ भेदसों गुणें तो दस ह्यस्ट्रेसी भेद होत है १००८० ॥ अथ औडवतांनकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें अंतिके दायदाय स्वर दूरि कीये तो ॥ औडवतांन होत हैं ॥ तिनके पस्तार रितिसों ॥ एक एक मूर्छनामें एकसोविस १२० भेद होत हैं ॥ इन भेदनको सुद्ध मूर्छनाके चोहदे ॥ १४ ॥ भेदसो गुणे तो ॥ एक हजार छहसे ऐसि भेद होत हे ॥ १६८० ॥ ॥ अथ च्यार स्वरकी तांनकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें अंत्यके तीन तीन स्वर दूरि कीये तो ॥ चार स्व-रकी तांन होत है। तिनके। पस्तार रितिसों एक एक मूर्छनांपें चोविस। २४। भेद होत हैं। इन भेदनकों सुद्ध मूर्छनानके चोहदे १४ भेदनसों गुणे तो तिनसेछितिस । ३३६ । भेद होत है ॥ अथ तीन स्वरनकी तांनकी संख्या लिख्यते ॥ इन मुर्छनानमें अंतके च्यार च्यार स्वर दृरि कीये तो ॥ तीन स्वरकी तांन होत हैं ॥ तिनके पस्तार रितिसों एक एक मूर्छनामें छह भेद होत हैं ॥ ६ ॥ अथ दोय स्वरकी तांनकी संख्या लिख्यते । इन मूर्छनानेमं अंतके पांच स्वर दूरि कीये तो । दोय स्वरकी तांन होत हैं ॥ तिनके पस्तार रितिसों एक एक मूर्छनामें दोय दोय भेद होत हैं ॥ अथ एक स्वरनकी तानकी संख्या लिख्यते ॥ इन मूर्छनानमें अंतके छह छह स्वर दूरि कीयेतो ॥ एक स्वरकी तांन होत हैं ॥ तिनके पस्तार रितिसों एक एक मूर्छनामें ॥ एक भेद हात हैं ॥ ॥ इति ॥

अथ एक स्वरादिकनके कमसों नाम लिख्यते ॥ सात स्वरतां इ सातो तांनके नांम हे वाहां एक स्वरकी तांनको नाम आर्चिक सो ऋग्वेदसों उ-पजी हैं ॥ दोय स्वरकी तांनको नांम गाथिक ॥ सो यजुर्वेदसों उपजि हैं ॥ तीन स्वरकी तांनको नांम सामिक । सो सामवेदसों उपजि हैं ॥ च्यार स्वरकी तांनको

नांम स्वरांतर चतुस्वर ॥ सो अथर्वण वदसों उपजी हैं ॥ यातें तांको अथर्वण ह कहत है ॥ यह च्यारो नानसें राग पुरण नहीं होत हैं ॥ पांच स्वरनकी तानको नाम औडव ॥ ५ ॥ सा दोय वेदसों उपजी हैं ॥ ऋग्वेदसुं दूसरा यजुर्वेदसुं ॥ सो छह स्वरकी तांनको नाम षाडव । ६ । सो तीन वेदसीं उपजि हैं ॥ ऋ-ग्वेद्सुं यजुर्वेद्सुं सामवेद्सुं ॥ सो सात स्थरकी तांनको नाम संपूरण ॥ ७ ॥ सो च्यार वेद्सों उपजी हैं ॥ ऋग्वेद्सों यजुर्वेः सो सामवेदसों अथर्वण वेदसों । अथ चोदह मुर्छनाके पिछले एक स्वर दूरि कीये चाहदे। १४। कम पाडव तांनको होत हैं तिन कमनके शुद्ध काकछी ।। अंतर काकछी अंतर द्वयोपेत ।। इन भेदनसों संख्या लिख्यते । तहां चोदह मुर्छनामं उत्तरमंदा ॥ अरु-शुद्धमध्या मुर्छनामं । पिछलो एक स्वर दुरि कीयेसें। गांधारके मेलसों सुद्ध अरु अंतर। ये दोय दोय भेद है ॥ यातें दाय मूर्छनाके च्यार भेद हें ॥ अरु मत्सारिकता सौविरि-प ध नि इन दोनुनमें ।। पिछलो स्वर दूरि कीये तो ॥ निषादके मेलसीं सुद्ध अरु का-करी । ये दोय दोय भेद होत हैं । यातें दोय मूर्छनाके च्यारि भेद है।। ऐसे च्यार तो पहले भेद ॥ अरु च्यारु भेद मिलिकें च्यारी मूर्छनानके आठ भेद होत हे ॥ अब बाकीकी रहिरजनी। १। उत्तरायता। २। सुद्ध षड्जा। ३। अश्व-कांता । ४ । अभिरुद्गता ।५। हरिणाश्वा । ६ । कलोपनता ।७। मार्गि ।८। सौ-बिरी । ९ । हण्यका । १० । ये दस मूर्छना पिछलो । एक स्वर दूरि किये तो नि-षाद । १ । अरु गांधार । २ । इन स्वरनके मिलितें शुद्ध । १ । काकलि । २ । अंतर । ३ । काकिल अंतर तद्वयोपेत ॥ इन भेदनसों चोगुनिकीये तो चालिस ॥४०॥ भेद होत है। अब चालिस तो ये अरु आठ॥ पहले मिलिकें॥ अडतालिस । ४८ । भेद षाडव तांनके कम हें ॥ तवं सातसेविसकों अडतालिस गुणें तो ॥ चोतिस हजार पांचसेसाठ पस्तार ॥ ३४५६०॥ सो षाडव तांनके भेद होत हैं ॥ ॥ इति षाडव तांन संख्या संपर्णम् ॥

अथ औडव तानको भेद संख्या लिख्यंत ॥ तहां अश्व-श्वांता। १। हरिणाश्वा । २। ओर उत्तरायता। ३। ओर पौर्वी ॥ ४॥ ओर रजनि । ५। ओर मार्गि । ६। यह छह मूर्छना पिछले दोय दोय स्वर दूरि कीये तो गांधार। १। अरु निषाद। २। के मेळेतें शुद्ध। १। काकली । २ । अंतर । ३ । काकली । अंतर तद्वयोयेत । ४ । इन भदनसीं । चोगुणा कीय चोविस । २४ । भेद होत हे ॥ अब चोदह मूर्छनानमें ॥ बाकी रही उत्तरमंदा । १ । अभिरुद्धता । २ । कलोपनता । ३ । शुद्ध मध्या । ४ । ये चार मूर्छना पिछले दोय दोय स्वर दूरि कीये तो ॥ गांधारके मेलतें । सुद्ध । १। अंतर । २ । इन भदनसों गुणे कीये ॥ आठ भेद होत है । अरु सुद्ध पड्जा । १। मत्सरिक्ठता । २ । सौविरि । ३ । हृष्यका । ४ । ये च्यार मूर्छना पिछले दोय दोय स्वर दूरि कीये तो निषादके मेलतें ॥ सुद्ध । १ । अरु काकली । २ । इन भदनसों दूनि कीये ॥ आठ भेद होत हें ॥ तब चोविस तो पहले भेद ॥ और आठ गांधारके मेलके ॥ अरु आठ निषादके नेलके ॥ ये सब मिलिकें । औडव तांनके । कम चालिस होत हें ॥ अब औडव तांनके । एकसोबिस भेद ॥ चालिस गुणो कीये तो पस्तार भेदसों ॥ ओडव तांनके च्यार हजार आठसे भेद होत हें ॥ ४८००॥ ॥ इति औडव तांनके च्यार हजार आठसे भेद होत हें ॥ ४८००॥ ॥ इति औडव तांन शंक्या संपूर्णम् ॥

अथ च्यार सरनके तांनकी संख्या लिख्यते ॥ रजनी । १। मार्गी । २। ये दोय मूर्छनामे पिछले तीन स्वर दूरि कीयेते । निषाद । १ । गांधारके । २ । मेल तें सुद्ध । १ । काकिले । २। अंतर काकिली । ३ । अंतरतद्वयोपेत । ४ । इन मेदनसों चोगुनि कीये । ८ । आठ मेद होत हे ॥ अरु चोदह मूर्छनामें बाकी रही उत्तरमंद्रा । १। अश्वक्रांता । २। अश्विरुद्गता । ३ । हरिणाश्वा । ४ । कलोपनता । ५ । सुद्ध मध्या । ६ । ये छह मूर्छना पिछले तीन तीन स्वर दूरि किये तें गांधारमेल तें सुद्ध । १ । अंतर । २ । इन मेदनसों दूणो कीयें बारह मेद होत हें ॥ अरु उत्तरायता । १ । सुद्ध षड्जा । २ । मत्सिरकता । ३ । सीविरि । ४ । पीरवी । ५ । हष्यका । ६ । यह छह मूर्छना पिछले तीन तीन स्वर दूरि कीयेते ॥ निषादके मेलतें ॥ सुद्ध काकली । इन मेदनसों दुणो कीयेतो बारह मेद होत हें ॥ तब आठ मेद तो पहले ॥ अरु गांधारकें मेलतें बारह मेद । अरु निषादके मेलते बारह मेद ॥ ये सब मिलिकें बत्तीस मेद होत हें ॥ अब च्यार स्वरनके पस्तार रीतिसों चोविस मेद बनीसकु गुणे तो ॥ आडव सातसो आठसठ ॥ ७६८ ॥ मेद च्यार स्वरनकी तांनके पस्तारसों होत हें ॥ इति च्यार स्वरकों तांनकी संख्या संपूर्णभ् ॥

अथ तीन स्वरनके तांनकी संख्या लिख्यते ॥ तहां मत्सिरकता । १ । सीविरि । २ । ये दीय मूर्छनामं पिछले च्यार च्यार स्वर दुरि कियेते । निषाद । १ । गांधार । २ । हीन कियेतें इन दोनु मूर्छनाके एक एक भेद हैं ॥ ऐसे दोनुनके दोय भेद हैं । अरु । १४ । चोहदे मूर्छनामें बाकी रही उत्तरमंदा । १ । अश्वकांता । २ । अभिरुद्गता । ३ । हरिणाश्वा । ४ । कलोपनता । ५। सुद्ध मध्या । ६ । यह छह मूर्छना । पिछले च्यार स्वर दूरि कीयेतें । गांधारके मेलेतें । शुद्ध । १ । अंतर । २। इन भेदनकों दूणो कीये । बारह भेद । १२ । होत हैं ॥ अरु रजिन । १ । उत्तरायता । २ । सुद्ध पड्जा । ३ । मार्गी । ४ । पौरवी । ५ । न्हष्यका ये छह मूर्छना पिछले च्यार च्यार स्वर दूरि कियेतें निषादके मेलेतें ॥ शुद्ध । १ । काकली । २ । इन भेदनसों दूणें किये । बारह भेद होत हैं ॥ तब दोय भेद पहले ॥ अर गांधारके मेलेतें बारह । १२ । भेद । अर निषादके मेलेतें वारह । १२ । भेद ये सब मिलिकें छवीस भेद होत हैं ॥ अब तीन स्वरनके पस्तार रीतिसों छह भेद छवीस गुणे किये तो एकसो छपन । १५६ । तीन स्वरनकी तांनके पस्तार रीतिसों भेद होत हैं ॥ इति तीन स्वरनकी तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ दोय स्वरनकी तांनकी संख्या लिख्यते ॥ जहां अश्वकांता । १ । अभिरुद्गता । २ । हरिणाश्वा । ३ । कलोपनता । ४ । य च्यारि मूर्छना पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें । गांधारके मेलतें सुद्ध । १ । अंतर । २ । इन भेदनसों दूने कीये । आठ भेद होत हैं ॥ और रजनी उत्तरायता मार्गी पौर्री । ४ । यह च्यारि मूर्छना पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें निषादके मेलतें । सुद्ध । १ । अरु काकली । २ । इन भेदनसों दूने कीये । आठ भेद होत है । अरु उत्तर मंद्रा । १ । सुद्ध षड्जा । २ । मत्सरीकता । ३ । सौविरि । ४ । सुद्ध मध्या । ५ । इषिका । ६ । यह छह मूर्छना पिछले पांच पांच स्वर दूरिकीयतें गांधार । १ । निषादहीन है । यातें इन छह मूर्छनानके । सुद्ध छह भेद होत है ॥ तहा आठ तो गांधारके मेलके ॥ अरु आठ भेद निषादके मेलतें ॥ अरु छह भेद यह । मिलिकें वाइस । २२ । कम दोय स्वरनकी तांनके होतेहें ॥ अव दीय स्वरनकी तांनके पस्तार रीतिसों दोय भेदकी बाईस मुणे कियें । चंबालीस

॥ ४४ ॥ दोय स्वरनकी तांन पस्तारसों भेद होत हैं ॥ इति दोय स्वरन तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ एक स्वरनके तांनकी संख्या लिख्यते ॥ जब मूर्छनानमें पि-छले छह छह स्वर दूरि कीयेते चोदह मूर्छनानके प्रथम स्वर एक हि चोदह रहे हैं ॥ यातें एक स्वरनकी तांनका एक भेद हे । वांको चौदा मूर्छनानसों गुणें ते चोदह भेद हैं । १४ । इति एक स्वरकी तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ पुनरुक्तिताननकी संख्यालक्षण लिख्यते ॥ पुनरुक्तिकहिये ॥ एक रूप दोय तीनवेरे आवै । सो पुनरु कि जांनिये ॥ तहां उत्तर मंद्रा मूर्जनानके च्यार स्वर तें छेकें एक स्वरतांइकें पुनरुक्तिके भेद कहतेहैं ॥ जो षड्ज मध्या मुर्छनामें । पिछले तीन स्वरं दूरिकियेतें । गांधार स्वरनके मेल तें । सुद्ध । १ । अंतर । २ । ये चार स्वरके कमे होय हैं ॥ इन दोनु कमनमें ॥ एक तो सुद गांधारजत च्यार स्वरको कम हें ॥ ऐसे दसरो अंतर गांधारजत च्यार स्वरको कमहें ॥ ऐसें इन दोनुनके पस्तारिकयेतें ॥ चोविस चोविस भेद होत हैं ॥ दोनु मिलिके अडनालिस भेद है ॥ अरु यांही सुद्ध मध्यामें ॥ पिछले च्यार स्वर दूरि कीयेतें तीन स्वरको क्रम गांधारके मेल तें । सुद्ध अह अंतर ऐसे दोय भेदको हैं ॥ इन दानु तीन स्वरके कमनके पस्तार कीये तें छह छह भेद होत हैं ॥ ते दोनु मिलिकें बारह । १२ । भेद हैं । अरु याहि सुद्ध मध्यामें ॥ पांच स्वर पिछले दुरि कीयेतें ॥ दीय स्वरको कम गांधार । १। अरु निषाद्हीन हें यातें ॥ एक भेदको हैं ॥ ताके पस्तार कीयेतें दोय भेद हैं ॥ अरु यांहि सुद्ध मध्यामें पिछले छह स्वर दूरि कीयेतें ॥ एक स्वरको कम एक भेदको हे ॥ यांको पस्तार कीयेतें एक भेद हैं ॥ अब सुद्ध मध्या मूर्छनीमें ॥ **च्यार** स्वरके । अडताहीस । ४८ । तीन स्वरके बारह । १२ । दोय दोय स्वरको एक एक सब भेद मिलिकें तरेसटि । ६३ । होत हैं । य तरेसटि भेद उत्तरमंदाके च्यार स्वरके कमतें छेके ॥ एक स्वरके कमतांई ज्या नेसटि मेद तिनके पुनरुक्ति हैं ॥ इति उतरमंद्राके पुनरुक्ति तांनकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ रजिन मूर्छनाकें पांच स्वरकें कमतें लेकें एक-स्वर-के कमताई जे भेद तिनकी पुनकिक लिख्यते ॥ जो गार्गी मूर्छनामें

पिछले दोय स्वर दूरि कीयेतें ॥ पांच स्वरको ज्यो तांन कमसों निषाद ॥ १ ॥ गांधार । २ । के मेलेतें ॥ सुद्ध काकरी अंतरकाकरी अंतर द्वयोपेत ॥ इन भेदनसों च्यार प्रकारको हैं ॥ यां चार प्रकारके पांच स्वरनके क्रमतें प्रस्तार कियेतें ॥ एक एककें एकसोबीस भेद हें ॥ १२० ॥ यातें च्यारनके च्यारसें ऐसी । ४८० । भेद होतहें । अरु यांहि मार्गी मुर्छनानमें पिछले तीन स्वर दुरि कीयेतें ॥ च्यार स्वरनको ज्यो कमसों निषाद ॥ १ ॥ गांधारके मेलतें सुद्ध ॥१॥ काकली ॥ २ ॥ अंतर । ३ । काकली ॥ अंतर तर्द्वयोपेत । ४ । इन भेदनसों च्यार प्रकारको हैं। यह च्यार प्रकार च्यार स्वरनके क्रमसे प्रस्तार कीयेतें एक एककें चोइस भेद होतहें यातें च्यारनके छानव भेदहे । ९६ । अरु याहि मार्गी मूर्छनामें ॥ पिछले च्यारि स्वर दूरि कीयेतें तीन स्वरका जो कम जो निषादके मेर्टते सुद्ध । १ । काकरी । २ । इन भेदनसों दोय प्रकारको हैं ॥ यह दोय पकार तिनि स्वरनके कमकें। पस्तार कीयतें॥ एक एककें छह छह भेद होतहें ॥ यार्ते दोनु क्रमके बारह । १२ । भेदहे ॥ अरु यांहि मार्गी मुर्छनामें । पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें ॥ दोय स्वरको ज्यो कम सो निषादमें मेलतें सुद्ध । १ । काकली । २ । इन भेदनसों ॥ दोय प्रकारको हैं यह दोय प्रकार दोय स्वरनके कमके पकार कीयेतें ॥ एक एकके दोय दोय भेद होत हैं ॥ यातें दोन कमकें च्यारि भेद । ४ । होत हे ॥ अरु याही मार्गी मूर्छनामें पिछले छह स्वर दूरि कीयेते एक स्वरको ज्यो कम ॥ सो निषादरूपही हें दूसरे स्वरनको मेल-नहीं यांतें एक भेदको हैं ॥ यह एक भेद एक स्वरके कमको प्रस्तार कीयेतें एक भेद हैं ॥ अब पांच स्वरनके भेद च्यारसें ऐसी । ४८० । अरु च्यार स्वरनके भेद छानव । ९६ । तीन स्वरनके भेद । १२ । दोय स्वरनके भेद । ४ । च्यार एक स्वरको भेद् । १ । ये सब भेद मिलिकें ॥ पांचसें तरेणव । ५९३ । हं । ये मार्गी मुर्छनाके । पांचेसें तिरानव भेद रजनि मुर्छनाकें पांच स्वर कमत लेकें एक स्वरके कमतांई जे पांचसे तिरानवे भेद । ५९३ । तिनके पुनरुक्ति हैं ॥ ॥ इति रजनाकें पुनरुक्तितांनकी संख्या संपूर्णम्।।

अथ उत्तरायता ्र्जनाके छह स्वरके कमतें लेके एक स्व-रके कमताई जे भेद तिनके पुनरुक्ति लिख्यते ॥ जो गौरवी पूर्ज-

नान में विछलो एक स्वर दूरी कीयेवें छह स्वरको जो ऋम सो निषाद । १ । गांबार । २ । के मे उते । सुद्धा १ । काक ठी । २ । अंतर । ३ । काक्नी अंतर द्वयोगेत । ४ । इन भेरततीं च्यारि प्रकारको हं ॥ इह च्यारि पकार छह स्वरको जो कम तांके पस्तार कीयों एक एकके साततें बिस । ७२०। मेर होत हें यातें च्यारों कमनकें ॥ अठाइससें ऐसी । २८८०। भे; होत हैं। अरु यांही पौरवी मूर्छनानमें पिछछे दोई स्वर दूरि कीयेतें पांच स्वरको जो कर । सो निवार । १ । गांबार । २ । के मेडतें सुद्ध । १ । काकछि । २। अंगर । ३ । काकडी । आंरतद्वयोगेत । ४ । इन भेरसों च्यारि मकारको हैं ॥ यह च्यारि प्रकारको जो पांच स्वरको कम ताके प्रकार कीयेतें एक एकके एक तीविस भेद । १२० । होता है । या विचारों कमने के च्यारसें ऐसी भेद हैं ॥ ४८० ॥ अरु याँहि पीरवी मूर्जनाने विछिछ तीन स्वर दूरि की-ये तें। च्यार सारको जो का सो निवाइके मेउतें। सुद्ध। १। काकली। २। इन भेरके ॥ दोय प्रकारको हैं यह दोय प्रकारको जो च्यारि स्वरको कम ताक पस्तार कीये ते । एक एकके चोविस भेर हें ॥ याते दोने कर्नेक ॥ ४८ ॥ अडताबीत मेद हैं ॥ अरु याहीकी मूर्जनामें । निज्ञ हे च्यारि स्वर दूरि की-ये तें । तीन स्वरको जो कम से। निषाइके मेलतें सुद्ध । १ । काक ही । २ । इनके भेरनसों दोय प्रशारको है ॥ यह दोय प्रकारको जो तीन स्वरको कम ॥ ताकें प्रसार कीयेतें ॥ एक एककें छह भेद होत हैं ॥ यातें दोनुं कमनके बारह भेद हैं ॥ १२ ॥ अह यांहि पौरवी मूर्छनामें पिछले पांच स्वर दूरि कीयेतें दोय स्वरको जो कम । सो निषादके मेछ्यें शुद्ध । १ । काकछी । २ । ये भेद दीय प्रकारको हैं ॥ यह दीय प्रकारको जो दीय स्वरनको फम ताके प्र-स्तार कीयतें ॥ एक एककें दीय भेद होत हैं ॥ यतिं दीनु कमनकें च्यारि भेद हैं । ४ । अह यांहि पौरवी मूर्जनानं पिछडे छह स्वर दूरि कोयते ॥ एक स्वरको जो कम सी एक भेरको है ॥ यह एक भेरकों ज्यो एक स्वरकों कम ताको पस्तार कीय तें। एक भेर हैं ॥ १ ॥ अब पोरबी मूजेनानं एक छाइ स्वर कमके ॥ अठाइस ऐसी । २८८० । भेर हैं । अह पांच स्वर कमनके च्यारसे ऐसी ।४८०। भरे हैं। अरु ज्यारि स्वर कमनके अडवाडीस । ४८। भेद है।। तीन स्वर कमनके बारह में हैं । १२ । दोय सारन है। चारि। ४ । में हु॥ अङ एक स्वर कमको एक । ३ । में हे ये सब मेर निर्कें । चानी उत्तें वर्षा । ३४२५ । होत हैं । ये पीरवी मूर्जना है चोनी तें वर्षा से मेर निर्कें । ये पीरवी मूर्जना है चोनी तें वर्षा भेर जिर्कें पुनलक हैं ॥ इन निर्मे मूर्जना के पुनलक तां न निर्कें च्यारि हजार एक्यारेसि। ४०८१। ॥ इति उत्तरायता मूर्जना के पुनलकि तानकी संख्या संपूर्णम् ॥

अय क्रत्र अरु पुनरुक्ति तानहीन लिख्यते ॥ षाडव औडर । च्यारि स्वर । तीन स्वर । दोय स्वर । एक स्वर॥इन सब कूटगाननकी निठायके संख्या लिख्यते । तहां कम पुनहिक्त ॥ तांन सहित ॥ कूर तांननकी संख्या ॥ तीन लाज बाइस हजार पांचते बीयाती । ३२२५८२ । इत्रे कम संपूर्ण ॥ के जो तिनसे बागवमे । ३९२ । अह पाउव । १ । औडर । २ । चार स्वर । ३ । तीन स्वर । ४ । दोय स्वर । ५ । एक स्वर । ६ । तांइ पूरणके एकसोनियासी । १८२ । कम ये दोनु मिछिके पांचसेचोहोतर ॥५७४॥ कम है ॥ इनमें तीन दूरि कीयेतें॥ पांचेंसेंरकार १५७३। का हो। है ॥ ये पांचतेंरक इतर कमेंसे दूरि कीयेते कमहीन संख्या तीन छात याहस हमार म्यारह हो। है ॥ ३२२०१३ ॥ या कपहीन संख्यानें । इन तीनों मुर्जिनानके जे च्यारि हजार एकवासि । ४०८५ । पुनएकि तांन है तिनके दूरि कीयेंतें ॥ संपूर्ण ॥ १ ॥ षाडव । २ । औडव । ३ । च्यारि स्वर। ४ । तीन स्वर । ५ । दोय स्वर । ६ । एक स्वर । ७ । कूट तांननकी कमहीन संख्या भिछिकें तीन लाख सतरा हजार नवसे तीस । ३१७९३०। भेर होत है। यह पूर्ण । अपूर्ण कूट तांननकी संख्या जांनिये॥ इति क्रम अरु पुन-रुक्तितांनहीन संपूर्णम् ॥ संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव ।३। च्यारि स्वर ।४। तीन स्वर । ५ । दोय स्वर । ६ । एक स्वर । ७ । कूउनांवनकी संख्वा संपर्णम् ॥

अन संगीत पारिजात मतनां मुर्जना प्रकरण लिख्यते ॥ वहां एक मूर्जनातों संगीतिताकरके मनसां एकही तरहकी है । अह निकत मूर्जनानको संगीत पारिजानमें भेर हैं सो कहतहै । जब सुद्ध मूर्छना सात स्वरनमें ॥ एक वेर रिवम पूरन कवितें । अह दूसरी वेर रिवम कोमल की वि ॥ अरु तीसरि वर रिवम तीन की जियें । तब वेसुद्ध मूर्छना रिवमके तिन भेद सों इकविस। २१। भेद होत हैं। रिषम पूरणकी सात। ७। कोमल रिषभकी सात। ७। रिषभ तीव्रकी सात। ७। एसे एकविस। २३। भेद जांनियें ॥ ओर तीव्रतर रिषभसों मुर्छनाके भेद नही गिनिये ॥ ओर कोमल । १ । तीव ।२। तीवतर ।३। तीवतम । ४ । ऐसें च्यार प्रकारको गांधार तो िकत कीजिये ॥ अरु छह स्वर सुद्ध रा-खिये ॥ तब तिन मूर्छनानके भेद अठाईस । २८ । होतहें । तहां कोमल गांधारकें ॥ ७ ॥ सात ओर पूरण गांधारका । ३ । अति तीवतम गांधारके दोइ ॥ २ ॥ इन भेदनसों गांधारकी मूर्छना नही गिनिये। ओर तीव । १ । तीवतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यमके लगायेतें । अरु छह स्वर शुद्ध राखेतें ॥ एकविस । २१। भेद होत है तहां तीव्र मध्यमके । ७ । तीव्रतर मध्यमके । ७ । तीव्रतम मध्यमके । ७। ओर पुरव । १। कोमल । २। तीव । ३। धैवतके लगायेतें । छह स्वर शुद्ध राखेतें । इकविस । २१ । भेद होत है । ओर तीव्रतर धैवतसों मूर्छना नही गिनियें ॥ ओर कोमल । १। तीव । २। तीवतर । ३। तीवतम । ४। ऐसं च्यारि पकारको निषाद लगायेतें । छह स्वर शुद्ध राखेतें । अठाइस भेद होत हैं ॥ इहा पूर्व निषाद्सों । मूर्छना नही गिनिये । ५ । ऐसें एक एक स्वर तो विकत होनेसें छह स्वर शुद्ध होय तब इन मूर्छनानकी संख्या एकसो उगणिस होत हैं ॥११९॥ अथ दोय स्वर विकत होय । अरु पांच स्वर सुद्ध होय तांकी संख्या लिख्यते । जहां रिषम । १। गांधार । २ । विकत होय ओर बाकी स्वर पांच होय शुद्ध स्वर । ताके भेद एकसो बारह । ११२ । जांनियें ॥ इहां कोमल गांधारमें पूरव । १। कोमछ । २ । तीव । ३ । तीवतर । ४ । रिषभ जांनिये । ऐसेहि च्यारि प्रका-रको रिषम । तीव्र गांधारमे जांनिये ॥ ऐसोंहि तीव्रतर गांधारमें रिषम जांनिये । ऐसोहि रिषभ तीवतम गांधारमें जानिये ॥ ऐसेही धेवत निषाद विकत होय । बाकी स्वर पांच । ५ । सुद्ध होय तब एकसो बारह । ११२ । भेद जांनिये । जहां मध्यम रिषभ दोय विकत । बाकी स्वर सुद्ध होय ॥ तहां त्रेसटि भेद जांनिये । ६३ । तीन प्रकारको रिषभ पुरव । १ । कोमल । २ । तीव । ३ । जब तीव मध्यम । १ । तीवतर मध्यम । २ । तीव-तम मध्यम । ३ । में होय तब नेसटि । ६३ । भेद जांनिये ॥ रिषभ । १ । धैवत । २ । विकत होय । बाकी पांच स्वर शुद्ध होय । ५ । तांके वेसटि भेद जांनि- यें। ६३। यहां पूरव । १। कोमल । २। तीव । ३। रिषभ । ४। पूरव । १। कोमल । २ । धैवतमें होय । ओर रिषभ । १ । निषाद । २ । विकत होय बाकी पांच होय । तहां चोरासी भेद । ८४ । जांिनेय ॥ यहां पूरव । १ । कोम छ । २ । तीव रिषभ कोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ निषाद होय ॥ ओर गांधार ॥१॥ मध्यम ॥२॥ विऋत होय ॥ बाकी पांच स्वर सद्ध होय ॥ ताके एकसोपांच भेद होय ॥१०५॥ तहां कोमछ ॥१॥ तीव ॥२॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ अतितीव्रतम गांधारतीव्र ॥ १ ॥ तीव्रतर ॥ २ ॥ तीव्रतम मध्यममें होय जहां गांधार ॥ ३ ॥ धेवत ॥ २ ॥ विक्रत बाकी शुद्ध पांच ॥ ५ ॥ स्वर होय ॥ जहां चोरासि भेद जांनिये ॥ ८४ ॥ यहां कोमल ॥१॥ तीत्र ॥ २ ॥ तीत्रतर ॥ ३ ॥ तीत्रतम ॥ ४ ॥ गांधारपूरव ॥ १ ॥ कोमछ ॥ २ ॥ तीत्र ॥ ३ ॥ धेवत होय ॥ बाकी पांच ॥ ५ ॥ स्वर शुद्ध होय तहां एकसो-बारह ॥ ११२ ॥ भेद जांनिये ॥ इहां कोमछ ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥३॥ तीव्रतम् ॥ ४ ॥ गांधार कोमछ ॥ ३ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर् ॥ ३ ॥ तीव्रतम् ॥४॥ निषादमें होय ॥ जहां मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकत होय है ॥ अरु बाकी पांच ॥ ५ ॥ स्वर शुद्ध होय ॥ तहां त्रेसटि भेद जांनिये ॥ ६३ ॥ यहां तीव ॥ १॥ तीवतर ॥ २ ॥ तीवतम ॥ ३ ॥ मध्यम कोमल ॥ १ ॥ तीव ॥ २ ॥ तीवतर ॥३॥ तीवतम ॥ ४ ॥ निषाद्में होय ॥ जहां धेवत ॥ १ ॥ निषाद विकत होय बाकी पांच स्वर शुद्ध होय ॥ ५ ॥ तहां ॥ ११२ ॥ एकसोबारह भेद जानिये ॥ यहा पूरव ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ तीत्र ॥ ३ ॥ तीत्रतर ॥ ४ ॥ धैवतपूर्व ॥ १ ॥ तीत्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीव्रतम ॥ ४ ॥ निषादमें होत है ॥ अथ तीन विकत स्वर शुद्ध च्यार ॥ ४ ॥ स्वर तिनके भेद छिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ विकत होय बाकी शुद्ध ॥ ४ ॥ च्यारी होय ॥ तहां ॥ ४२० ॥ च्यारसें विस भेद जांनिये ॥ यहां पूरव ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ तीत्र ॥ ३ ॥ तीव्रतर ॥ ४ ॥ रिषम पूर्व ॥ १ ॥ तीव्र ॥ २ ॥ तीव्रतर ॥ ३ ॥ तीवतम ॥ ४ ॥ अतितीवतम गांधारमें होय ॥ सो गांधारतीव ॥ १ ॥ तीवतर । २ । तीव्रतम । ३ । मध्यम होय । जहां रिषभ । १ । गांधार । २ । धैवत । ३ । विकत होय । बाकी च्यार स्वर । ४ । सुद्ध होय । तहां तीनसेंचोतीस

मेद्। ३३४ । जांनिये । जहां पूर्व । १ । को नउ । २ । तीत्र । ३ । तीत्र तर । ४ । रिषमपूर्व । १ । तित्र । २ । तीत्र । ३ । तीत्रतम । ४ । गांधारमें होयसो गांधारपूर्व । १ । कोनउ । २ । तीत्र । ३ । धै । तो होत्र । जहां रिषभ । १ । गांधार । २ । निवाद । ३ । विका स्वर होय । बाकी च्यार स्वर । ४ । सुद्ध होय ॥ तहां च्यारसंअडवालीस । ४४८ । भेर जांनिये । यहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव । ३ । तीवतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । गांधारमें होयसो गांधार कोमल । १ । तीव । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादेमें होय । जहां रिगम । १ । म-ध्यम । २ । धैवत । ३ । विक्रत होय । बाकी च्यार स्वर । ४ । सुद्ध होय तहां एकसोनवैएसी भेद् । १८९ । जांनिये । इहां पूर्व । १ । कोमछ । २ । तीव । ३ । रिषभ तीव । १ । तीवतर । २ । तीवतम । ३ । मध्यम होयसो मध्यम पूर्व । १ । कोमछ । २ । तीव । ३ । धेवतमें होय । जहां रिषभ मध्यम ओर निषाद । विकत होय । बाकी शद्ध स्वर । ४ । च्यारि होय । तहां एक सोबां-नेव भेद । १९२ । जांनिये । यहां पूर्व ॥ १ ॥ कोमल । २ । तीव । ३ । तीवतर । ४ । तीवतम । ५ । मध्यममें होय । सो मध्यमकोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । निषाइमें होय । अथ रिषभ । १ । धैवत । २ । निषाइ । ३ । बाकी च्यार । ४ । स्वर शुद्ध होय ॥ तहां तीनसें छत्तिस भेद जांनिये । ३३६ । यहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीन । ३ । रिषभ । १ । पूर्व । २ । कोमछ । ३।तीवतर । ४। धैवतमें होय ॥ रो धैवत पूर्व । १। तीव । २। तीवतर । ३। तीव्रतम । ४ । निषाइमें होय ॥ अथ गांधार । १ । मध्यम । २ । निषाद । ३ । विकत होय बाकी च्यार स्वर सुद्ध होय ॥ तहां तिनसें पंथरा । ३१५ । जानिये ॥ इहां कोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । अति तीवतम । ५ । गांधार तीव । ९ । तीवतर । २ । तीवतम । ३ । मध्यम होय। सो मध्यन पूर्व । १ । क्रोन उ । २ । तीन । ३ । धैवतेमं होय। अथ गांधार । १ । मध्यम । २ । निषाद । ३ । विक्रत होय । बाकी । ४। ज्यार स्वर सुद्ध होय। तहां ज्यारोत वीस । ४२०। मेद् जांनिये ॥ इहां कोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ ।

अतितीत्रतम । ५ । गांचार तीत्र । १ । तीत्रतर । २ । तीत्रतम । ३ । मध्यममे होय सो मध्यनकोन्छ । १ । तीव । २ । तीवार । ३ । तीवान । ४ । च्यारि स्वर शुद्ध होय ॥ तहां च्यारतें अडनािलस । ४४८ । भेद जांनियें ॥ इहां कोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । गांधार पूर्व । १ । कोमल । २ । तीत्र । ३ । तीत्रतर । ४ । धैवतमें होय । धैवत पूर्व । १ । तीत्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषाइमें होय । अथ मध्यम । १ । धैवत । २ । निषाद । ३ । विकत स्वर होय बाकी । ४ । च्यार स्वर सुद्ध होय तहां तीनसें छहतीस भेद जांनियें। ३३६। इहां तीव । १। तीवतर । २। तीवतम । ३। मध्यम पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव । ३ । तीवतर । ४ । धैवतमें होय । सो धैवतपूर्व । १ । तीव । २ । तीवार । ३ । तीवान । ४ । निषाद्में होय॥ अथ च्यार स्वर विकृत होय ॥ तीन स्वर सद्ध होय जिनको भेद हय सो विशेष करेंकं िख्यते ॥ अथ रिषभ । १ । गांधार । २ । मध्यम । ३ । धैवत । ४ । विक्रत होय बाकी तीन सुद्ध होय तहां बारासें साटि भेद । १२६०। जांनिये। इहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । आतितीवतम । ५ । गांधारमें होय सो गांधारतीव । १ । तीवतर । २ । तीवतम । ३ । मध्यममें होय । सो मध्यमपूर्व । १ । कोमछ । २ । तीत्र । ३ । धैवतमें होय ॥ अथ रिषभ । १ । गांधार । २ । मध्यम । ३ । निषाद । ४ । विक्रत होय ॥ बाकी तीन स्वर सुद्ध होय ॥ तहां सोलासें ऐसी ॥ १६८० ॥ भेद हें ॥ इहां पूर्व । १ । कोमछ । २। तीव । ३। पूर्व । १। तीव । २। तीवतर । ३। तीवतम । ४ । अतितीवनम । ५। गांधारमें होय ॥ सो गांधारतीव । १। तीवतर । २। तीव-तम । ३ । मध्यममें होय । सो मध्यमकोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषाद्रें होय । अथ रिषम । १ । गांधार । २ । धैवत । ३ । निषाद । ४ । विकृत होय । बाकी तीन सुद्ध होय ॥ तहां सतरासं बांणव । १७९२ । भेद जांनियें ॥ इहां पूर्व । १ । कोमल । २ । तीव । ३ । तीव-तर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । गां-भारमें होय । सो गांधार पूर्व । १ । कोमछ । २ । तीन । ३ । तीनवर । ४ ।

धैवतमें होय । सो धैवत पूर्व । १ । तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीव्रतम । ४ । निषादमें होय ॥ अथ रिषभ । १ । मध्यम । २ । धैवत । ३ । निषाद । ४ । विक्रत होय सुद्ध स्वर तीन होय तहां । एक हजार आठ । १००८ । भेद जां-नियें ॥ तहां पूर्वकोमल । १। तीत्र । २। तीत्रतर । ३। तीत्रतम । ४। तीत्र । १। तीत्र-तर । २ । तीवतम । ३ । मध्यममें होय । सो मध्यमपुर्व । १ । कोमल । २ । तीत्र । ३ । तीत्रतर । ४ । धैवतमें होय सो धैवतपूर्व । ३ । तीत्र । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । निषादमं होय ॥ अथ गांधार । १ । मध्यम । २*। धैवत । ३ । निषाद । ४ । विकृत होय बाकी स्वर तीन सुद्ध होय । तहां सोलासंऐसी । १६८० । भेद जांनियें ॥ जहां कोमल । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । अति तीवतम । ५ । गांधारतीव । १ । तीवतर । २। तीव्रतम । ३। मध्यममें होय सो मध्यमपूर्व । १। कोमल । २। तीव्र । ३ । तीव्रतर । ४ । धैवतमें होय सो धैवतपूर्व । १। तीव्र । २ । तीव्रतर । ३ । तीवतम । ४ । निषादेमें होय । अथ पांच स्वर विकत होय ओर दोय स्वर सद्ध होय तांके भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ । १ । गांधार । २ । मध्यम । ३ । धैवत । ४ । निषाद । ५ । विकत होय । बाकी । २ । दोय स्वर शुद्ध होय तहां ॥ सइसतसें बिस भेद ।६७२०। जांनिये ॥ इहां पूर्व । १ । कोमल ।२। तीव । ३। तीवतर । ४ । रिषभपूर्व । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीवतम । ४ । अति-तीवतम । ५ । गांधारमें होय । सो गांधार तीव । १ । तीवतर । २ । तीवतम । ३ । धैवतमें होय ॥ सो धैवत पूर्व । १ । तीव । २ । तीवतर । ३ । तीव-तम । ४ । निषादमें होय ॥ औसं विकत मुर्छनानके भेद । शिवर्जा ब्रह्माजी भ-रतमुनींद्र मतंगमुनींद्र आदि सर्वे ऋषिश्वर कहत है ॥ तहां षडुमाममें संपूर्ण विकत मुर्छना सबनकी । अठारे हजार छहसे अडतासीर । १८६४८ । भेद होत है। या रितिसों मध्यम ग्राममें अरु गांधार ग्राममें । संपूर्ण विकत मुर्छना । एक एक ग्राममें अठारे हजार छहते अडतालीस । १८६४८ । भेद होत हैं तब तिनों ग्रामनकी मुर्छना । पचावन हजार नवसें चारीस । ५५९४० । संपूर्ण स्वरनकी विकत मूर्छना जांनिये ॥ ऐसेंहि इन मूर्छनानमें पिछलो एक स्वर दूरि कीये ते । एक एक माममें ॥ अठारे हजार छहर्से अडतालीस । १८६४८ । भेद

होत है ॥ अथ विकत स्वर षाडवनको भेदमें । एक एक स्वरतो विकत होय बाकी पांच स्वर शुद्ध होय ॥ तामें निषादहीन होय तब रिषम विक्रतके सोछे । १६ । गांधार विकत करि मध्यम विक्रतके । १८ । धेवतके । १८ । ये सब मिलिकें भेद । ७८ । निषादहीनके जांनिये । और धेवतहीन षाडवके विकत स्वर एक एक कीये चौरासी । ८४ । भेद जांनिये ॥ पंचमहीन षाडवके । एक-सो दोय भेद । १०२ । जांनिये । मध्यम षाडवके चौरासी । ८४ । भेद है । गांधारहीन षाडवके अठहतर ॥ ७८ ॥ भेद है । रिषभहीन षाडवके चौरासी भेद हैं । ऐसं एक स्वर विकत षाडवके पांचसें दस ॥ ५१० ॥ भेद जांनिये ॥

अथ दोय विकत स्वरनके पाडवके भेद लिख्यते॥ जहां रिषम॥१॥ गांधार ॥ २ ॥ षाडवमें विकत स्वर निषादहीन होय ॥ तहां छाण्णव ॥ ९६ ॥ भेह होत हैं ॥ रिषभ ॥१॥ मध्यम ॥२॥ विऋत होय तब ॥ निषादहीन षाडवके ॥ ५४ ॥ चोपन भेद हैं ॥ रिषभ ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विऋत होय तब नि-षादहीन षाडवके चोपन ॥ ५४ ॥ भेद हैं ॥ अरु गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥२ ॥ विकत होय तब निषादहीन पाडवके अरु गांधार ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ मध्यम धेवत विकत होय तब ॥ निषादहीन षाडवके चोपन भेद ॥ ५४ ॥ ह ये भेद निषादहीन षाडवके ॥ च्यारसे विस ॥ ४२०॥ जांनिये ॥ ऐसे धैवतहीन विकत स्वरनके च्यारसे अठचायसी ॥ ४८८ ॥ भेद जांनिये ॥ मध्यमहीन विकत स्वरनके च्यारसें सियासी भेद है ॥ ४८६ ॥ ऐसे धैवतहीन विकत स्वरनके च्यारसें अठचासी ॥ ४८८ ॥ भेद जांनिय ॥ गांधारहीन विकत स्वरनके च्यारसें दाया। ४०२ ॥ भेद हैं ॥ रिषभहीन विकतं स्वरनके च्यारसें ऐसी ॥ ४८० ॥ भेद है ॥ अथ तिन विकत स्वरनके बाकी तीन स्वर सुद्ध स्वर षाडवकी संख्या लिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ विऋत होय तहां ॥ निषाद्हीन षाडवके तीनसें साटि ॥ ३६० ॥ भेद जांनिये रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥२॥ धैवत ॥३॥ विकत होय बाकी निषादहीन षाडवके दोयसें अठचासी ॥ २८८ ॥ भेद हैं ॥ रिषभ ॥१॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत विकत होय ॥ तब नि-षाद्हीन षाडवके एकसो बासट भेद ॥१६२॥ है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥२॥

धैवत ॥ ३ ॥ विकत होय तब निषादहीन षाडवके दोयसें सत्तर ॥ २७० ॥ भेद है ॥ ऐसे तीन विकत स्वरके निषादहीन षाडवके एक हजार ॥ १००० ॥ भेद ह ॥ अरु धैवतहीन षाडवंके तेरासें बिस ॥ १३२०॥ भेद हैं ॥ पंचमहीन षाड-वके तीन हजार ॥ ३००० ॥ भेद है ॥ मध्यमहीन षाडवके तेरासे चवेचालीस ॥ १३४४ ॥ भेद है ॥ गांधारहीन षाडवके आठसें चोसटि ॥ ८६४ ॥ भेद है ॥ रिषमहीन षाडवके तेरासें बिस ॥ १३२० ॥ भेद है ॥ अथ च्यार स्वर विकत दोय स्वर सुद्ध षाडवकी संख्या छिख्यते ॥ रिषम ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ विक्रत होय तब निषाद पाडवके ॥ एक हजार ऐशी ॥ १०८० ॥ मेद है ॥ रिषम ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥३॥ निषाद ॥४॥ ये विकत होय ॥ तब धैवतहीन षाडवके चौदासें चालीस ॥ १४४०॥ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ विकत होय ॥ तब पंचमहीन पाडवके ॥ १०८ ॥ एकसों आठ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत होय तब पंचमहीन षाड-वके चौदासों चालीस ॥ १४४० ॥ भेद हें ॥ रिषम ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विऋत होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके पंधरासें छतीस ॥ १५३६ ॥ भेद है ॥ रिषभ ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद् ॥ ४ ॥ विक्रत होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके ॥ आठसें चोतिस ॥८३४॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धेवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत होय तब पंचमहीन षाडवके ॥ चोदासे चालीस ॥ १४४० ॥ भेद है ॥ ऐसें च्यार विकत स्वर होय ॥ तब पंचमहीन षाडवके ॥ त्रेसटसे साटि ॥ ६३६० ॥ भेद् जांनिये ॥ रिषम ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत होय ॥ तब मध्यमहीन षाडवके ग्यारासें बावंन ॥ ११५२ ॥ भेद हें ॥ रिषभ ॥ १॥ धैवत ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत होय तब षाडवके ॥ आठर्से अठचासी ॥ ८८८ ॥ भेद् है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत होय ॥ तब रिषभहीन षाडवके चोदासें चालीस ॥ १४४० ॥ भेद है ॥ अथ पांच स्वर विकत होय तब षाडवके भेद छिल्यते ॥ रिषम ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ निषाद ॥ ५ ॥

विकत होय तब पंचमहीन षाडवके सतावनसें साटि ॥ ५७६० ॥ भेद हे ॥ ऐसे षाडवके भेद मिलिकें इकतीस हजार पांच ॥ ३१००५ ॥ होय अब जो मूर्छना जा स्वर किरकें हीन होय ॥ ता स्वर किरकें हीनको मस्तार कीजिये ॥ यह षाडवकी रीतीमें तहां एकेक षाडवके मस्तारके सातसें बीस ॥ ७२० ॥ भेद होत है ॥ सो अवै सातसें विस ॥ ७२०॥ सो गुणेते इकवीस हजार ॥ पचाससो गुणे तें ॥ दोय कोटी तेइस लाख छपन हजार ॥ २२३५६००० ॥ भेद जांनियें ॥ ॥ इति विकत मूर्छनाके षाडव भेद संपूर्णम ॥

अथ शुद्ध मूर्छना विऋत मूर्छनाके औडव भेद लिख्यते॥ तहां मूर्छ-नामें ॥ कमतें दोय दोय स्वर छोडितें ॥ औडवके भेद जांनिये ॥ तहां सुद्ध औडवके पंचहतर ॥ ७५ ॥ भेद् जानियं ॥ तिनमें जब रिषभ विकत होय ॥ तब पूर्व ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ के भेदसीं एकसीं पचास ॥ १ ५० ॥ भेद जांनिये ॥ गांधार विकतसीं तीनसों भेद जांनिये ॥ ३००॥ मध्यम विकतसों दोडसै ॥ १५०॥ भेद जांनिये ॥ धैवत विकतसों दोडसै भेद जांनिये ॥ निषाद विकतसों तीनसें भेद जांनिये ॥ ३०० ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ बिकतसों च्यारसें ऐसी ॥ ४८० ॥ भेद जांनिये ॥ रिषम ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ विकत सो सत्ताईसर्से एक भेद जां-निये॥ २७०१ ॥ रिषम ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकत ॥ ३ ॥ सो ॥ २७० ॥ भेद है ॥ निषाद ॥ १ ॥ विकत ॥२॥ सो तीनसों साठी भेद जांनिये ॥ ३६० ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ विकत ॥ ३ ॥ सो चारसों पचास ॥ ४५० ॥ भेद जांनिये गांधार ॥ १ ॥ धैवत ॥ २ ॥ विकतसों ॥ ३६० ॥ भेद जांनिये ॥ गांधार ॥ १ ॥ निषाद ॥ २ ॥ विकतसौ ॥४८०॥ भेद जांनिये ॥ मध्यम ॥१॥ धैवत ॥ २ ॥ विकत ॥ ३ ॥ सो दोयसो सत्तर ॥ २७० ॥ भेद जानिये मध्यम ॥ १ ॥ निषाद् ॥ २ ॥ विकत ॥ ३ ॥ सो तीनसौ साठ भेद ॥ ३६० ॥ जांनिये धैवत ॥ १ ॥ निवाद ॥ २ ॥ विकत ॥ ३ ॥ स्रो चारसो ऐसी ॥ ४८० ॥ भेद जानिये ॥ अथ तीन स्वर विकत होय तहां औडवके छक्षण छिख्यते रिषम ॥१॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ विकत ॥ ४ ॥ सो नवसै वीस ॥ ९२० ॥ भेर् जांनिये रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ निषाद ॥ ३ ॥ विकत ॥ ४ ॥ सो

नवसे साठा ॥ ९६० ॥ भेद जांनिये ॥ रिषभ ॥ ३॥ मध्यम ॥ २॥ धैवत ॥ ३॥ विकतसो चारसों पांच ॥ ४०५ ॥ भेद जांनियें ॥ रिषभ ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ निषाद् ॥ ३ ॥ विकत ॥४॥ सो पांचसी चालीस भेद ॥५४०॥ जांनिये ॥ रिषभ ॥ ९॥ धैवत ॥ २॥ निषाद ॥ ३॥ विकत ॥ ४ ॥ सो सातसी वीस ॥ ७२०॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्मम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ विकत ॥ ४ ॥ सो पांचसौ सत्तर ॥ ५७० ॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ निषाद ॥ ३ ॥ वि-कत ॥ ४ ॥ सो नवसे वीस भेद जानिये ॥ ९२० ॥ गांधार ॥१॥ धैवत ॥२॥ निषाद् ॥ ३ ॥ विऋत ॥ ४ ॥ सो ॥ ९६० ॥ भेद जांनिये ॥ मध्यम ॥ १ ॥ ैं धेवत ॥ २ ॥ निषाद ॥ ३ ॥ विऋत ॥४॥ सो ॥ ७२०॥ भेद जांनिये ॥ अथ चार स्वर विकत औडवंक भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ धैवत ॥ ४ ॥ विकत ॥ ५ ॥ सो नवसै ॥ ९०० ॥ भेद जांनिये ॥ रिषभ ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ मध्यम ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत ॥ ५ ॥ सों बारासेंबीस ॥ १२२० ॥ भेद है ॥ रिषम ॥ १ ॥ गांधार ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत ॥ ५ ॥ सों सातसें बीस ॥ ७२० ॥ भेद है ॥ गांधार ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ धेवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ विकत ॥ ५ ॥ सों बारासेंबीस ॥ १२२० ॥ भेद जांनिये ॥ ऐर्से सब औडव तांननके भेद ॥ १७५०५॥ होत है ॥ इहां औडवर्में जा मूर्छनामें जो दोय स्वरहीन होय तेई दोय स्वरहीन होय तेई दोय स्वरनकी करिकें हीन । मूर्छनाको पस्तार कीजियं । तहां एक एक औडवतांनको पस्तारके । एकसोविस ॥ १२० ॥ भेद होत है । सो एकसोविससों । सतर हजार पांचसें ॥ १७५०५ ॥ पांचको गुणे तें ॥ विकतताननके सब मिलि ॥ २१००६०० ॥ भेद होत है ॥ इति मूर्छना प्रकरण संपूर्णम्॥

अथ प्रस्तारमें चिलित एकादिक स्वरनकी अंत्यमे आयवेकी संख्या लिख्यते ॥ एक स्वरके प्रस्तारमें ॥ एक स्वर एक बेर आवै ॥ दीय स्वरके प्रस्तारमें दीय स्वर एक बेर आवै ॥ तीन स्वरके प्रस्तारमें ॥ तीन स्वर दीय बेर आवै ॥ बोथे स्वरके प्रस्तारमें ॥ च्यार स्वर छह बेर आवे ॥ पांच स्वरके प्र-

स्तारमें पांच स्वर चोविस बेर आवे ॥ छह स्वरके पस्तारमें । छह स्वर एकसोः विस ॥ १२० ॥ बेर आवे ॥ सातवें स्वरके पस्तारमें । सातसे विस बेर आवे ॥ ७२० ॥ इति प्रस्तार संख्या संपूर्णम् ॥

अथ एक स्वरकी तानतें लेकें सात स्वरकी तांनतांई ॥ सात सात भेद होत हें तिनके ताननके पस्तारमें जितनें जितने भेद होत हें तिनकें भेदनकी पस्तारकमसों संख्या लिख्यतें ॥ एक तें लेके अरु सात तांई ॥ सात अंकनकी एक पंकि लिख्यते ॥ तां पंकिमें पहले अंक सों आगलो अंक गिन । जो गिनती आवै सां धिर दीजियें ॥ वागुनिमिनितिसों आगलो अंकगुनियें । फरवांसों आगलो गुनियंं । या रितिसों सातताइ गुनियें । जो जो संख्या आवै सो धर दीजिये । आगले सातवें कोटामें ज्यो गुणो अंक होय ॥ सो सातके अंकसों गुनि । ये जो अंक आवै ॥ सो सातवें कोटाकें बारह धिर देवो ॥ सो सात स्वरनकी कृटतांननकी संख्या जांनिये ॥ अवै एक स्वरकी तांनको । एक भेद जांनिये ॥ १ ॥ ओर दोय स्वरनकी तांनके । दोय भेद जांनिये ॥२॥ तीन स्वरनकी तांनके छह भेद जांनिये ॥ ३ ॥ ओर च्यार स्वरनकी तांनके चोविस भेद जांनिये ॥ ४ ॥ छह स्वरनकी तांनके । सातसे विस भेद ॥ ५०० ॥ जांनिये ॥ ६ ॥ सात सुरनकी तांनके ॥ पांच हजार चालिस भेद ॥ ५०० ॥ जांनिये ॥ ६ ॥ सात सुरनकी तांनके ॥ पांच हजार चालिस भेद ॥ ५०० ॥ जांनिये ॥ ७ ॥ इति एक स्वरकी तांनतें लेकें । सात स्वरनकी तांन तांइ भेद प्रस्तारकम संपूर्णम् ॥

अथ संको यंत्र लिख्यते ॥ अथ नष्ट उदिष्ट जांनिवेक अरथ संडमेरुको लक्षण लिख्यते ॥ ज्या मेरुमें सात पांति कीजिये ॥ तिन ऊपरकी पांति सात कोठाकी कीजिये ॥ अरु दूसरी पांति उपरली पंक्तिके ॥ बाई ओ-रके प्रथम कोठा छोडि कीजिये । इहां दूसरी पांति छह कोठा कीजीये है ॥ अरु तीसरी पांति दूसरी पांतिके बांईके प्रथमकोठा छोड कीजिये ॥ इहां तीसरी पांति पांच कोठा कीजे ॥ अरु चोथी पांति तीसरी पांतिके ॥ बाई ओरके प्रथम कोठा छोडि कीजिये ॥ इहां चोथी पांति च्यार कोठा कीजे ॥ अरु पांचमी चोथी

पांतीके बांई औरके ॥ पथम कोठाको छोडि कीजियै। इहां पांचमी पंकि तीन कोठा कीजिये ॥ अरु छह पंकि पांचवी पंक्तिके ॥

॥ अथ प्रस्तार ताननकी संख्या यंत्रम् ॥

9	२	3	8	ч	Ę	७	॥ खंडानि ॥
स	रि	ग	म	ч	ध	नि	॥ स्वरसप्तक ॥
9	२	Ę	२ ४	920	७२०	५०४०	॥ संख्यानि ॥

बांई ओरके पथम काठाका छोड कीजिये॥ इहां छटी पांति दोय कोठा कीजिये॥ अरु सातवि पंक्तिके छटि पंक्तिकं बाईं ओरके प्रथम कोठाकों छोडि कीजिये ॥ इहां सातवी पांति ॥ एक कोठा कीजे ॥ ऐसें सात पांति कीजिये ॥ तहां उप-रही पांतिके ।। सात कोठा है ॥ तिनमें पहले कोठामें एकको अंक लिखियें ॥ बाकी छह कोठामें बिंदु लिखियें ॥ इन कोठानमें ॥ ज्या तांनको ज्यानी चाहै ॥ ता तांनके जितनें स्वर होय ॥ तितनें गिनतिकें फल अथवा फुल धरिये ॥ तामें नष्ट उद्दृष्टको ग्यान होय ॥ ओर दूसरि पांतिके प्रथम कोठामें ॥ एकको अंक राखियें ॥ दूसरो कोठामें वा अंककों दूनो कर लिखिये ॥ अरु तीसरे कोठामें दूसरे कोठाके अंकको तीन गुनो कर धरिये ऐसेही चोथे कोठामें तीसरे कोठाके अंकको चोगुनो करि धरिये।। पांचेवं कोठामें चोथे कोठाको पांच गुणो धरिये॥ छहटे कोठामें पांचवे कोठाकें ॥ अंककों ॥ छह गुणो करि धरिये ॥ ऐसें दूसरी पांतिके कोठा धरिये॥ अब तीसरी पांति दूसरी पांतिके अंकसों भरिये सो कहे हैं॥ तीसरी पांतिके कोठा उपर दूसरी पांतिकों जो कोठा आवै ॥ ता कोठाके अंकको ॥ दुण् करि तीसरी पांतिकें कोठामें धरियें ॥ इहां तीसरी पांतिके प्रथम कोठाको उपरि ॥ दूसरी पांतिको दूसरी कोठा है ॥ तामें ज्यो दोयको अंक ताकों दूनो करियें ॥ तब च्यार होय सो चारको अंक तीसरी पांतिके पहले कोठामें लिखि-जिये ॥ ऐसेंहि तीसरीके बाकी च्यार कोठामें ॥ दूसरी पंक्तिके कोठांकें ॥ अंक दूनें करि धरिये ॥ ओर चोथी पांति कोठाके उपर जो दूसरी ॥ तिसरी पांतिके

कोठा ॥ तिनको जोडीकें ॥ चोथी पांतिके कोठामें धरि ये ॥ इहां चोथी पांतिके कोठाके उपर तीसरी पांतिको दूसरी कोठो 11 अरु तिसरो कोठा तिन दोनुनके ॥ अंक छहटे रह तिनको जोडे ते ॥ अठारहको | मेरुयंत्रम् ٥ अंक होय ॥ वह अठारहको 9 2 ६ ७२० 28 920 अंक चोथी पांतिके ॥ प्रथम कोठामें 8 92 86 280 1880 धरिये ॥ बाकीके कोठामें दूसरी तिसरी २१६० 76 ७२ 360 के ॥ अंक जोड धरिये ॥ अरु पांचवी पांतिके 98 860 २८८० कोठाके उपरको ॥ चोथी पांतिके कोठा ॥ अरु दूसरी ६०० ३६०० पांतिके कोठा तिनके अंक मिलाय पांचवी पांतिके कोठामें धरिये ॥ इहां ४३२० पांचवी पांतिके॥पहले कोठाके उपर चोथी पांतिके दूसरा कोठा हे ॥ तामें ॥७२॥ को अंक है ॥ अरु इसरी पांतिको चोथे कोठाको अंक चोवीसको है ॥ इन दोनुको मिलांयेतें ॥ छिनमें अंक होय ॥ सो पांचमी पांतिके ॥ प्रथम कोठाके धरिये असेंहि बाकी कोठा भरिये ॥ ओर छटि पांतिके कोठाके ॥ उपर पांचमी पांति कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके कोठा ॥ तिनके अंक मिलाय छटि पांतिके कोठा भरिये ॥ इहां छटि पांतिके कोठाके उपर पांचमी पांतीको ॥ दुसरा कोठामें अंक च्यारसे ऐसी ॥ ४८० ॥ अरु दूसरी पांतिको पांचमों कोठा जामें ॥ एकसो विसको आंक ॥ इन दोनुनको मिलायके ॥ छहसें ॥ ६०० ॥ को अंक छटि पांतिके पथम कोठामें धारियें ॥ ऐसेंहि यांको दूसरा कोठामें धरियें ॥ ओर सातमी पांतिके कोठाके ॥ उपर छटि पांति कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके कोठा मिलायकें जो अंक आवै ॥ सो सातमी पांतिके कोठामें धरियें ॥ इहां सातमी पांतिके कोठा उपर छटि पांतिको दूसरो कोठा ॥ अरु दूसरी पांतिके छटे कोठा तिनके अंक मिलायकं ॥ त्रेचालीसरें बीसको अंक है ॥ सातमी पांतिके कोठामें धरियें या रितिसों मेरुमें ॥ अंक धरिये सो खंड मेरु जांनिये ॥ इति मेरुलखन संपूर्णम् ॥

अथ सातों स्वरके तांनके विचार करिवेको मेरु तांकी सांतों पांति तिनको विचार लिख्यते ॥ एक स्वरको जो आठाप सो तांन कहिये ॥ तांकी जों पांति ॥ एक कोठाकी ॥ सो मेरुमें पहली पांति जांनिये तां कोठामें एकको अंक है ॥ सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ सों गिणतीके तांई छिख्यो है ॥ दोय स्वरकी जो तांन ॥ तांकी जो पांति दोय कोठाकी सो मेरुमें दूसरी पांति जांनिये ॥ ता पांतिमें पहले कोठाको एकको ज्यो अंक सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ अरु दूसरे कोठामें जो शून्य धरिजे सो दूसरे स्वरकी सह-नांणी है ॥ इहां एक स्वरकी तांन छोडिकें सूधें क्रमसों ॥ दोय स्वरनकी तांन सोले ॥ सात स्वर तांड जो तांन ॥ ताके अंतको जो स्वर तांकी सहनांणी ॥ अंतके कोठामें सुन्य दीजिये ॥ यह सब ठार शून्य अंतमें जानियें ॥ अरु तीन स्वरकी जो तांन ॥ ताकी जो पांति ॥ तीनकी बाकीसों मेरुमें तीसरी ॥ पांति जांनिये ताके पहले कोठामें च्यारको अंकसों पहले स्वरकी सहनांणी ॥ अरु दूसरे कोठामें ॥ दोय दोयको अंकसो दूसरे स्वरकी सहनांणी तीसरे कोठामें शुन्यसे तीसरेकी सहनांणी जांनिये ॥ अरु च्यार स्वरकी जो तान तांकी जो पांति च्यार कोठाकी सो मेरुमें चोहति पांति जांनिये ॥ ताके पथम कोठामें जो अठारको अंक ॥ सो पहले स्वरकी सहनांणी दूसरे कोठामें जो बारहको अंक ॥ १२ ॥ सो दूसरे स्वरकी सहनांणी ॥ तीसरे कोठामें जो छहटेको अंक सो नीसरे स्वरकी सहनांणी ॥ चोथे कोठामें जो शन्य सो ॥ चोथे स्वरकी सहनांणी जांनिये ॥ अरु पांच स्वरकी तांन ताकी जो पांति ॥ पांच कोठाकी जो मेरुमें पांचमी जां-निये ॥ ताके मथम कोठामें छण्णवको ॥ ९६ ॥ अंक है सो पहले स्वरकी सहतांणी जांनिये ॥ इसरे कोठामें बाहात्तरको ॥७२॥ को अंकसो इसरे स्वरकी सहनांणी तीसरे कोटामें अटतालीस को आंक ॥ ४८ ॥ सो तिसरे स्वरकी सह-नांणी ॥ चोथे कोठामें चोइसको ॥ २४ ॥ अंक सा चोथे स्वरकी सहनांणी ॥ पांचवें कोठामें शून्य सो पांचवें स्वरकी सहनांणी जांनिये अरु छह स्वरकी जो तान ताकी जो पांति छह कोठाकी सो मेरुमें छटी जांनिये ॥ ताके प्रथम कोठामें छहसेको ॥ ६०० ॥ अंक सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ दूसरे कोठामें च्यारसे ऐसीको ॥ ४८० ॥ अंक सो दूसरे स्वरकी सहनांणी ॥ तीसरे कोटार्मे

तीनसें साटिको ॥ ३६० ॥ अंक सो तीसरे स्वरकी सहनांणी ॥ चोथे कोठामें दोयसें चालिसको ॥ २४० ॥ अंक सी चोथे स्वरकी सहनांणी पांचवे
कोठामें एकसो बीसको ॥ १२० ॥ अंकसो पांचवां स्वरकी सहनांणी ॥ छटे
कोठामें शून्य सो छटे कोठेकी सहनांणी ॥ अरु सात स्वरकी जो तांन ताकी
जो पांति सात कोठाकी ॥ सो मेरुमें सातवी जांनिये ॥ ताके पहले कोठामें च्यार
हजार तीनसेंबीसको ॥ ४३२० ॥ सो पहले स्वरकी सहनांणी ॥ दूसरे
कोठामें छहतिसें ॥ ३६०० ॥ को अंक हे सो ॥ दूसरे स्वरकी सहनांणी तिसरे
कोठामें अठाइससें ऐसी ॥ २८८० ॥ को अंक सो तीन स्वरकी सहनांणी ॥
चोथे कोठामें एकीससें साटि ॥ २१६० ॥ को अंक हे सो ॥ चोथे स्वरकी सहनांणी ॥
चोथे कोठामें एकीससें साटि ॥ २१६० ॥ को अंक हे सो ॥ चोथे स्वरकी सहनांणी सहनांणी ॥ छटे कोठामें चादासें चालीसको अंक हे सो ॥ १४४० ॥ पांचवां स्वरकी सहनांणी ॥ छटे कोठामें सातसे बीसको अंक ॥ ७२० ॥ हे सो छटे स्वरकी सहनांणी ॥ सातवां कोठामें शून्य हे सो सातवां स्वरकी सहनांणी जांनिये ॥
॥ इति मेरुकी सातवी पांतिन ो विचार संपूर्णम् ॥

अथ संख्याप्रस्तार खंडमेरु नष्ट उदिष्ट इनको लक्षण लिख्यते ॥
तहां प्रथम संख्या ॥ या मेरुमें सातों पंक्तिनमें ॥ जो कोठानमें ॥ अंक धरे है ॥
सो आरोहकमसों जांनियें ॥ सो वह आरोहकम कहे तो एक स्वर छोडी आग्छे स्वरसों छीजिये ॥ जेसें ॥ स ॥ ग ॥ प ॥ नि ॥ यहां एक स्वर छोडि ॥
आगछे स्वरसों मिलि ॥ च्यार स्वरकों सूधों आरोह कमसों ॥ ओर कहूके
दोय स्वर छोडि ॥ आगछेसुं मिलि आरोहकम होत है ॥ जैसें ॥ स ॥ म ॥
नि ॥ यह दोय स्वरकों छोडि आगछे आगछेसों मिलि ॥ तीन स्वरसों मिलि
सुधो आरोहकम है ॥ ओर कहूके छगते स्वरकों ॥ आरोह कम होत है जेसें
॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ घ ॥ म ॥ प ॥ घ ॥ नि ॥ पहछे
तें स्वर छेकें च्यार स्वरनको सुधो आरोहकम है ॥ एँसेही पांच स्वरनको कम
है ॥ जेसें ॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ रि ग ॥ म प घ ग म ॥ प ॥ घ ॥ नि ॥
पहछे स्वर छिके पांच स्वरनको सुधो आरोह कम है ॥ आरोह कम स्वरको
सुधो ॥ आरोह कम तैंसे रागमें ॥ प ध रि ग म प ध नि ॥ ऐसेंहि तीन स्वरको
कम ॥ स रि ग ॥ रि ग म ॥ ग म प ॥ म प ध नि ॥ ऐसें जांनियें अब

दोय स्वरको कम ॥ स रि ॥ रि ग ॥ ग म ॥ म प ॥ प ध ॥ ध नि ॥ एक स्वरको कम ॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ ऐसें एक स्वरकी तांन लेकें सात सुरकी तांन ताई ॥ जो सात तांन तिनमें ॥ सुधो आरोह कम जांनियें ॥ या सुधेहि आरोहकमसो तांनको पस्तार चले है।। सो पस्तार जब तांनको आरोह कम आवे ॥ तहां तांइ करनो यातें मेरुकी पांतिनमें ॥ जितनें कोठाकी पांति होय ॥ ता पांतिमें तितनें ॥ स्वरकी तानके सूधे कमसों ॥ पहलो सुर दूसरो सुर ॥ तीसरो सुर चोथो सुर ॥ मेरुकी पांतिके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ ती-सरे ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ कोठामें जांनियें ॥ ता सुधेहि कमसों वा तांनके नष्ट उदिष्ट ॥ हिसाब र समझ लिजियें ॥ जैसें स रिगम ॥ या सुधे कमसों ॥ च्यार सुरकी तांन होय तो ॥ मेरुकी चोथी पंक्तिके ॥ च्यारो यां सुधे कमसों च्यार सुरकी तांनकी नांम होय तो ॥ मेरुकी चोथी पंक्तिके च्यार कोठानमें कमसों ॥ स ॥ ग ॥ प ॥ नि ॥ जांनिये ॥ ऐसेही ॥ म ॥ प ॥ घ ॥ नि ॥ या कम सुधेसों ॥ च्यार सुरकी तांन होय तो मेरुकी चोथी पांतिके ॥ च्यार कोठानमें कमसों ॥ म ॥ म ॥ घ ॥ नि ॥ जांनिये ॥ सो अब जा सूधे कमसों तान होय ॥ ता तानके जितनें स्वर होय ॥ मेरुमें उतनें कोठाकी जो पंक्ति ॥ तांके कोठानमें तांनको जो सुधो कम ॥ तांहि कमसों एक आदिक स्वर समझिये जेसें ॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ यह च्यार सुरकी तांनको ॥ सुधो आरोहकम होय तो मेरुके चोथी पंक्तिमें च्यार कोठानके पहले कोठामें षड्ज समझिये॥ १॥ ओर दूसरे कोटामें रिषभ समझिये ॥ २ ॥ भीसरे कोटामें गांधार समझिये ॥३॥ चोथे कोटामें मध्यम समझिये ॥ ४ ॥ या तांनके पस्तारमें जो तांनके ॥ अंतमे षड्ज आवे तो अठारे॥ १८॥ को अंक लीजिये॥ ओ जो तांन अंत गांधार स्वर होय तो ॥ छहको अंक समझिये ॥ ओर जो तांनके अंतभें मध्यम होय तो सून्य समझिये। अरु । म। प। ध। नि॥ यां सुधे कपसों च्यारि सुरकी तांनको पस्तार होय तो मेरुकी चोथी पंक्तिके कोठानमें । म । प । ध । नि । ये च्यारों स्वर कमसो । पहले । १। दूसरे । २ । तीसरे । ३। चेथि । ४ । कोठा-नमें समझिये। तब। म। प। ध। नि। या तांनके प्रस्तारमें। जो तांनके अंतर्ने मध्यम आवि तो अठारे । १८ । को अंक समझिये ॥ ओर जां तांनके

पंचम आवे तो बारह । १२ । को अंक समिक्सेय ॥ ओर जां तांनकी अंतमें धैवत आवे तो छह ।६। को अंक समझिये ॥ ओर जां तांनकी अंतमें ॥ निषाद आवे तो सून्य लीजिये ॥ ऐसेहि । स ग । प । नि । या च्यार स्वरकी तांनके पस्तारमें याहि कमसों जांनिये ॥ ऐसें सुधे आरोहकमसों तांनके पस्तार होय । यातें वहि कमसों स्वर समिक्षये। उनमें जो स्वर अंत आवे तासों अंक छीजिये॥ ऐसेंहि दो सुर आदिक तांननके पस्तारमें । मेरुकी दोय कोठाकी पांती आदि पंकिमें । सुधे आरोह कमसों वा तांनके स्वर समझिये । सो नष्ट उदिष्ट तांनको होय यांहि उन कोठानमें । नष्ट उदिष्ट समझावेको आंक धरे है ॥ अंक नष्टमं अथवा उद्दिष्टमं । तांनकं जितने स्वर होय । तीतने पांतिनसों । एक एक कोठाके अंक लेकरि नष्ट संख्या वा उद्दिष्टकी संख्या बनाये तहां नष्टको **उक्षण छिल्यते । जो पस्तारमें पूछे भेदकी संख्या सों पूछे भेदको** रूप बनावनो सो नष्ट जानिये ओर पूछे रूपसों पूछे रूपकी संख्या बनावनी। सो उद्दिष्ट जांनिये । अथ नष्ट उद्दिष्ट करवेके प्रकारको उदाहरण लिख्यते । तहां पथम उद्दिष्ट कहत है ॥ तांन के पस्तारमें जो भेद होय ॥ ताके अंतमें जो स्वर होय सो। अंतस्वर है ॥ सो। अंतस्वर सुधे तांनके ॥ आ-रोह कमसों मेरु पांतिके ज्या कोठोमें आवे। ता, कोठाको अंकजुदो लिखे है। ओर वो अंत स्वर छोडिये॥ अंतस्वर छोडिके पिछे। बाकी स्वर जित**नें** है ॥ तितनें जो अंतस्वर है । सो अंतस्वर सूधे ॥ आरोह कमसों । मेरुकी वा पांतिकी पहलें पांतिके जां कोठामें होय तां कोठामे अंक, जुदो, लिखिये॥ ओर वो अंतस्वर छोडि दीजिये ॥ ऐसे एक स्वर वांहि पांतिनके ॥ एक एक कोठाके ॥ अंक हेकें जोडीये जितनी गीणति आवै तितनों भेद जांनि-ये ॥ जैसें च्यार स्वरकी तांनमें ॥ अठारवी भेद । मंग ग स रि यह है ॥ च्यार स्वरकी तांन है। याते मेरुकी पांती लीजिये ॥ अब।म।ग।स। रि। यांमें। अंत्यस्वर रिषभ है।। सो या तांनको सुधो कम । स रि ग म हें । या सूधे कमसों वा तांनको । अंत्य रिषभ स्वर । मेरुकी चोथी पांतिके दूसरे कोठामें पायो । सो, तें, दूसरे कोठामें बारह को अंकसो जुदो लिखिये । ओर वा तांनकें अंतमें जब रिषम छोडि दिजीयें। तब। म ग। स रि। यामें सो,

रिषभ गये। म ग स । यह तीन स्वरकी तांन रही। या तांनमें अंत्य स्वरं पड्ज हैं ॥ यह तांन तीन स्वरकी है । यातें मेरुकी तीसरी पांि मांहि । अब तांनको अंत स्वर तो षड्ज हैं ॥ ओर या तांनको सुधो कम । स ग म । यह हैं। या सुधेक्रमसों वा तांनको अंत्य स्वर षड्ज सो मेरुके विसंर पांतिके। पथम कोटामें पायो । यातें वा कोटाकां । ज्यो च्यारिकां अंकसो जूदा लिखि-ये। ओर अंत्य स्वर जो पड़ज सों छोडि दिजियें । तब । म ग । ऐसी दोय स्वरकी तांन रही । तो दोय स्वरकी तांनहीं है । यांने मेरुकी दूसरी पांति वाही । तब । म ग । या तांनमं अंत्य स्वर गांधार है ॥ अरु वा तांनको सुधो कम य है। तो यां सुधें कमसों अंत्य स्वर ज्या गांधार सां महकी इसरी पांतिके। मथम कोठामें पायो ॥ यातें वा कोठामें जो एकको अंक सो जड़ो लिखिजे ॥ ओर अंत्य स्वर जो गांधार सों छोडि दिजिये ॥ तब म यह एक सुरकी तांन रही ॥ यामं मेरुकी पहली पांति पाई ॥ अब यह म एक स्वरकी तांनको अंत्य स्वर है ॥ ओर या तांनको सुधो स्वर ऋम ॥ म ॥ यही है ॥ यातें पहली पंक्तिके कोठामें जो एक सो जुदो लिखिजे ॥ सो वह मध्यम छोडि दिजिये ॥ अब कर्छुंभी बाकी नही रही ॥ अब जां जां तानके अंकसो जे जे अंक पाये ॥ ते ते अंक ॥ वा तांनके सुरके उपर लिखिये ॥ यहां ॥ म ॥ ग ॥ स ॥ रि॥ यह तांन है ॥ यांके रिषभसों बारहको अंक पायो सो रिषभके उपर छि-बिये ॥ ओर षड्ज जो च्यारको अंक पायो ॥ सो षड्ज उपर छिबिये ॥ ओर याके गांधारसों एकको अंक पायो ॥ सा गांधारके उपर ठिखिये ॥ ओर याके मध्यमसो जो ॥ एकको अंक पायो ॥ सो मध्यम उपर लिखिये ॥ म ॥ ग ॥ स ॥ रि ॥ अब इन अंकनको जोडीये ॥ तब ॥ १८ ॥ अठारकी संख्या होय ॥ तो यह तांन ॥ स ॥ रि ॥ ग ॥ म ॥ या तांनके पस्तारमें ॥ अठारे ॥ १८ ॥ भेद जांनिये ॥ ऐसेंहि एक स्वरादि तांनमं सब ठोर समझ लिजिये ॥,इति उदिष्ट संपूर्णम्॥

अथ नष्टको प्रकार लिख्यते ॥ जितने स्वरकी तांनके भेदके संख्याको रुप पुछवा वारो कोई पूछे तो । वा पूछि तांनके जितने स्वर होय । तितनें कोठानकी पांति मेरुमें लिजिये ॥ फेर वा तांनमें मेरुकी पहली पांतितांइ ।

गीनिये। जितनी पांति हाय तिनके एक एक अंक छिजिये सो वे अंक ऐसें सम-झो तैसी लिजिये ऐसें उन अंकनको जोड पूछि संख्या बनिजाय तो पिछे जो जो अंक जा जा पंकिमंसु लियो। तो तो अंकके तो तो पांतिके कोठामें। नष्ट जांनके सूधे कमसों । जो जो अंत्य स्वर आवे । सो अंत्य स्वर वा कमसों पहलो दूसरो तिसरो चोथो जितने नष्ट तांनके स्वर होय तितने स्वर उपर उपर वहि कमर्सों लिखिये ॥ सब सुर अंक प्रमान आय चुके, तब उपरले सुर लेकें ॥ नि-चले सुर तांई दाहिनें क्रमसों बांचिये । वहि रूप पूछे भेद संख्याको जांनिये । जैसें स । रि । ग । म । या च्यार सुरनकी तांन है ॥ अठारहकी संख्याको रूप पूछे, मेरुकी चोथी च्यार कोठाकी पांतितें लेकें ॥ पहली एक कोठाकी पांति-तांइ च्यार पांति लिखिये ॥ फेर उन च्यारी पांतिनसो ऐसे अंक लिखिजये ॥ िनसो अठारहकी संख्यानसें चोथी पांतिके दूसरे कोठामें बारहको अंक है, सो लिजिये। ओर तीसरी पांतिके। प्रथम कोठामें च्यारको अंक हे, सो छिजिये। फेर दूसरी पांतिके प्रथम कोठामें। एकको अंक है सो छिजिये। फेर पहली पांतिके प्रथम कोठामें एकको अंक है सो लिजिये। इन च्यारी अंकनके । १२ । ४ । १।१ । जोडी । १८ । अठारकी संख्या होत है सो इन अंकनसों इन अंकनके कोठानमें । नष्ट तांनके सुधे । आरोह कमसों । जे सुर आवे ते च्यार सुर बांथे उपरकों । पहले अंत्य स्वर फेर तीसरो फेर दूसरों फेर पहलो ऐसें लिखिये। तो पहले स्वर लेवेकी रीतिमें। जो स्वर चुके ताको तांनमें घटाय दीजियें । सो पकार लिखतहै यह चोथी पांतिके दूसरे कोठामें नष्ट तांनके सूधे कम स । रि । ग । म । या कमसो वा दूसरे कोठामें रिषभ आवे । सो रिषभ स्वर अंत्यको छिखिये । ओर वा नष्ट तांनके सुधे क्रममें रिषभ । टीप-दीजिये। तब सुधी ऋम। म। म। मा। ऐसी रह्यो अब मेरुकी तीसरी पांतिके मथम कोठामें च्यारको अंक है ॥ ओर वांहि कोठामें स । प । स । या सुधे कमसों पड्ज है सो । अंत्य स्वर पड्ज वा रिषभके बाई ओर लिखि दीजिये ॥ ओर स । ग । मा । या ऋममें पड्ज घटांय दीजिये । तब म । ग । ऐसी कम रह्यो । अवै मेरुकी पांतिके प्रथम कोठामें । एकको अंक है । बाकी कोठामें म । म । या सूधे कमसों गांधार है । सो । अंत्यस्वर गांधार षड्जके बाइ ।

ओर उपर लिखिये। अरु। म। ग। या कमसो गांधार घटाय दीजिये। तब म। ऐसो सुधो कम रहो। अवै मेरुकी पहली पांतिके कोठामें। एकको अंक है बाकी कोठामें। म। या सुधे कमसो मध्यम है सो। अंत्यस्वर मध्यम। गांधारकी बाइ ओर उपर लिखिये। अरु म या कममें मध्यम। घटाय दिजिये। तब संपूर्ण कम होय। चुक्यो सो लिखे स्वरको दाहिनें कमसें वांचिये। तब। म। ग। रि यही अठारवे भेदको रूप है॥ इति नष्ट संपूर्णम् ॥

अथ प्रस्तारको प्रकार लिख्यते ॥ ज्या तांनको प्रस्तार करनों होय ता तांनको सुधे कमसों स्वर लिखिये सो कम पांति भई। फेर सुधे आरोह कममें। जो पहलो स्वर होय सो अगले स्वरके निचे लिखनों। ओर उपरिल पांतिके दाहिनी ओरके अक्षर नीचे स्वरके दाहिनी ॥ ओर लिख देनें ॥ ओर उवेरे जो स्वर ॥ सो सुधे आरोह कमसों ॥ वा नीचले स्वरके बांई ओर लिख देनें ॥ ऐसेंहि तांनको आरोह होय ॥ तहां तांइ यह प्रकार करनों ॥ याही प्रकारको प्रस्तार कहत है ॥

॥ अथ एक आदिस्वरको प्रस्तार ॥

(१). (स) प्रथम स्वरको प्रस्तार-१. स (2×9) (स रि) दो स्वरका पद्धार-२. स रि रि स (सरिग) $(x \times x \times y)$ तीन रूरका प्रस्तार-६. स रिग सग रि रि संग रिग स ग स रि ग रिस

संगीतसार.

(&× 3 ×5×\$)	चार स्वरोंका प्रस्तार. २४	(सरिगम)					
स रिगम	रिसगम गसरिम	म गरि स					
स ग रि म	रिसमग गसमरि	म ग स रि					
स म रिग	रिगसम गरिसम	म रिस ग					
स रिम ग	रिगम संगरिम स	म रिग स					
स ग म रि	रिग स ग म स रि	म स ग रि					
स म ग रि	रिम स ग गम रिस	म स रिग					
(५x४×३×२×१)	पांच स्वरोंका प्रस्तार. १२०	(सरिगमप)					
	स						
स रिगम प	सगरिमप समगरिप	स प ग रि म					
स रिगपम	सगरिपम समगपरि	स प ग म रि					
स रिमप ग	सगपमरि समपगरि	स प रिगम					
स रिमगप	सगपरिम समपरिग	स प रिम ग					
स रिपम ग	सगमरिप समरिपग	स प म रि ग					
स रिपगम	सगमपरिं समरिगप	स प म ग रि					
	रि						
रिसगमप	रिगसम.प रिगसप रिगसपम रिगपस रिगपमस रिगपनस	रिपग स म					
रिसगपम	रिगसपम रिमगपस	रिपगमः स					
रिसम पग	रिगपमस रिगपनस	रिपत्तग न					

प्रथमस्यराध्याय-स्वरको प्रस्तार.

रि	₹	मं	ग	q	रि	ग	Ч	∗स	म	रि	म	4	स	ग	रि	Ф	स	म	ग
रि	स	प	म	ग	रि	ग	म	स	Ч	रि	म	स	Ч	ग	रि	Ч	म	स	ग
रि	स	4	ग	म	रि	ग	म	q	स	रि	म	स	ग	q	रि	4	म	गं	सं

ग

ग रिस म प	ग स रि म प	ग म स रिप	ग प स रि म
गरिसपम	ग स रि प म	गमसपरि	गपसमरि
गरिमपस	ग स प म रि	गमपसरि	गपरिसम
गरिमसप	गसपरिम	गमपरिस	गपरिमस
गरिपमस	ग स म रि प	गमरिपस	गपमरिस
गरिपत्तम	ग स म प रि	गमरिसप	गपमसरि

म

4	रि	ग	स	ф	म	ग	रि	स	q	į	म	स	ग	रि	Ч)	म	4	ग्	रि	स
					म											,					
म	रि	स	q	ग	म	ग	Ф	स	रि	:	म	स	q	ग	रि		म	प	रि	ग	स
					म											1					
					4																
4	रि	4	म	₹	म	ग	स	4	रि	!	म्	स	रि	ग	đ	9	म	q	स	ग्	रि

प

परिगमस पगरिस पमगरिस पसगरिम परिगसम पगरिसम पमगसरि पसगमरि

परिमस्तग । पग	समिरि पमसगरि	प स रिगम
r	स्तरिम पमस्रिग	
प रिसमग पग	मरिस पमरिसग	प स म रि ग
,	म स रि प म रिग स	

(६×५×४×३×२×१) छह स्वरांका प्रस्तार. ७२० (सरिगमपभ)

स

स रिगमप ध	स रिमगधय	सगरिमपध	स ग प म ध रि
स रिगमधप	सरिमगप्ध	त्ता ग्रिमध्य	स गपम रिध
स रिगधपम	स रिमण गध	सगरिधमप	स ग प ध रि म
स रिगधमप	स रिम प ध ग	स ग्रिध प म	सगपधम रि
स रिगप ध म	स रिमधगप	स गरिषमध	सगपरिधम
स रिगपमध	स रिमधपग	सगरिपधम	स ग प रि म ध
स रिपगमध	स रिधगपम	स ग म रि प ध	स ग ध रि प म
स रिपग ध म	स रिधगमप	सगमरिधप	स ग ध रि म प
स रिपधगम	स रिधपगम	सगमपरिध	स ग ध म रि प
स रिप ध म ग	स रिधपम ग	सगमपधरि	स ग ध म प रि
स रिपमधग	स रिधमपंग	सगमधपरि	स ग ध प रि म
स रिपम गध	स रिधमगप	स ग म ध रि प	स ग ध प म रि
स मारिगधप	स म प ध ग रि	सपरिगधम	स प म रि ग ध

समरिगपध	समप्यरिग	स प रि ग म ध	सपमरिघम
स म रिध प ग	स म प ग रि ध	सपरिधमग	स प म ग रि ध
स म रिध ग प	स म प ग ध रि	स प रिध ग म	स पमग घरि
स म रिप ग ध	स म प रि ग ध	स प रि म ग ध	स प म ध रि ग
स म रि प ध ग	समपरिधग	स प रिमध ग	सपमधगरि
स म ग रि प घ	समधपगरि	सपगधरिम	स प ध रि ग म
स म ग रिध प	स म ध प रिग	स प ग ध म रि	सपधरिमग
स म ग प रि ध	समधरिपग	स प ग रि म ध	स प ध म ग रि
स म ग प ध रि	समधरिगप	स प ग रि ध म	स प ध म रि ग
स म ग घ प रि	समधगरिप	सपगमधरि	स प ध ग रि म
स मगधिर प	समघगपरि	स प ग म रिध	स प ध ग म रि
स ध रिगम प	स घगम रिप	स थ म रिगप	स घ प म ग रि
स ध रिग प म	स ध ग म प रि	स ध म रिण्ग	स ध प न रिग
स ध रिप ग म	स ध ग रि म प	स धमपरिग	स च प रिम ग
स ध रिपम ग	स ध ग रि प म	स धमपगरि	स ध प रि ग म
स ध रिमगप	संघगपरिम	त धमगरिप	स ध प ग म रि
स ध रिम प ग	स धगपम रि	सधमगपरि '	स थ प ग रि म
	रि		

रिसगमपध रिसमगधप रिगसमपध रिगपमधस रिसगमधप रिसमगपध रिगसमधप रिगपमसध

रि सगधपम	रिसमणगध	रिगसधमप	रिगप घ सः म
रि सागधाम प	रिसमपधग	रिगसधपम	रिगपध म स
रिसगपधम	रिसमधगप	रिगसपमध	रिगपसधम
रिसगपमध	रिसमधपग	रिग सप थ म	रिगपसम् भ
रिसपगमध	रिसंधगपम	रिगम सपध	रिग ध स प म
रि सपगधम	रिसधगमप	रिगम सधप	रिग व साम प
रिसपधगम	रिसधपगम	रिगमप सध	रिगधमसाप
रि सपधमग	रि स थ प म ग	रिगमपध स	रिगधमप स
रि सपमधग	रि स ध म प ग	रिगमधपस	रिगधपस म
रि सपमगध	रि सध म ग प	रिगमधसप	रिगधपन स
रि म स ग ध प	रिमपधगस	रि प स ग ध म	रिपमसगद
रि म स ग प घ	रि म प ध स ग	रिप स ग म ध	रिपमसघग
रि म स ध प ग	रिमपगसध	रिपसधमग	रिपमगस घ
रिम सधगप	रिमपगधस	रिपसधगम	रिपमगध स
रि म स प ग ध	रिमपसगध	रिपसमगध	रिपमधः सग
रि म स प ध ग	रि म प स ध ग	रि प स म ध ग	रिपमधग स
रिमगसपध	रि मध प ग स	रिपगधसम	रिपधसगम
रिमगसधप	रि मध प स ग	रिपगधम स	रिपधसमग
रिमगपसध	रि मध स प ग	रिपग समध	रिपंघमंग स
रिःमःगःप ध स	रि म घ स ग प	रिंप ग स घ म	रिषाध मासाम

रिमगधापत	रिमध
रिमग घस प	रि म घ
रिधःसंगमप	रिधग
रिध स ग प म	रिधग
रिध साप ग म	रिधग
रि.धासपमग	रिध ग
रिघसमगप	रिधग
रिधसमपग	: रिधग

गसप गपसं म स प मपस समप सपम प स म पम स

रिपगम इस रिपगम सध रिधमसगप रिधमसपग रिधमपसग रिधमपगस रिधमगसप रिधमग प स रिपधगसम रिपधगम स रिधपमग स रिभएमस ग रिधपसमग रिधपसगम रिधपगम स रिधपगसम

ग

ग	रि	स	म	q	घ
ग	R	#	4	ध	4
ग	रि	स	ধ	q	म
म	रि	स	ध	म	प
ग	रि	स	9	भ	म
म्	रि	स	q	4	ध
ग	रि	4	स	4	ध
ग	रि	4	त	ধ	4
ग	रि	4	भ	स	4
ग	R	4	¥	4	#

गरिमसधप गरिमसपध गरिमणसध गरिमपधस गरिमधसप गरिमधपस गरिधसपम गरिधसमप ग रिध प म स

गसरिमपध गसरिमधप गसरिधमप गसरिधपम गसरिपमध गसरिपधम गसमरिपध गसमरिधप गसमपरिध ग समप भ रि

ग सपमध रि गसपमरिध गसपधरिम ग सपधम रि गसपरिधम गसपरिमध ग स ध रिप म गस्धरिमप गसधमरिप ग सध मप रि गरिपमधस गरिधमपस गसमधपरि ग सध परिम गरिपमसध गरिधमसप गसमघरिप ग सध प म रि ग्पमरिस्ध गमरिसधप गमपघसरि गपरिसधम गमरिसपध गमपधरिस गपरिसमध गपमरिधस गमरिधपस गमपसरिध गपरिधमस गपमसरिघ गमरिधसप गमपसधरि गपरिधसम ग प म स ध रि गपरिमसध ग प म ध रि स गमरिपसध गमपरिसध गमपरिधस गमरिपधस गपरिमधस गपमधसरि गमसरिपध गपधरिसम गमधपसरि गपसधरिम गमसरिधप गमधपरिस गपस्थमरि गपधरिमस गमसपरिध गमधरिपस गपसरिमध ग प ध म स रि गमधरिसप गमसपधरि गपधमरिस गपसरिधम गमसभपरि गमधसरिय गपधसरिम गपसमधरि गमसभि रिप ग मध स प रि गपसमरिध गपधसमरि गधरिसमप गधपमसरि गधसम रिप गधमरिसप गधरिसपम गधपमरिस ग ध स म प रि गधमरिपस गधरिपसम गधपरिमस गधसरिमप गधमपरिस गधरिपमस गधसरिएम गधपरिसम गधमपसरि गधरिमसप गधसपरिम गधमसरिप गधपसमंरि गधरिषपस गधमस वरि गधपसरिम गधसपमरि

म

म रिग स प ध	म रिसगधप	म ग रि स प घ	म ग प स ध रि
म रिग स ध प	म रिसगपध	म ग रि स ध प	म ग प स रि ध
म रि म ध प स	म रिसपगध	म ग रि ध स ष	म ग प ध रि स
म रिगध सप	म रिसपधग	म गरिध प स	म ग प ध स रि
म रिगप ध स	म रिस ध ग प	म ग रि प स ध	म ग प रि ध स
म रिगप संध	म रिस ध प,ग	म ग रिष घरा	म ग प रि स ध
म रिप ग स ध	म रिधगपस	म र स रि प ध	न ग ध रि प स
म रिपगध स	म रिधा सण	य भ सारिधिप	न ग ध रि स प
म रिप घ ग स	म रिधपग स	म र स्परिध	म ग ध स रि प
म रिप ध म ग	म रिध प म ग	म ग म प ध रि	म ग ध स प रि
म रिप स ध ग	म रिध स प ग	य गसधपरि	म गधप रि स
म रिप स ग ध	म रिध सगप	म ग स ध रि प	म गधपस रि
म स रिगध प	म स प ध ग रि	म प रि ग ध स	म प स रि ग ध
म स रिगप ध	म सपध रिग	म परिगस ध	म प स रि ध ग
म स रि घ प ग	म स प ग रि ध	म प रि ध स ग	म प स ग रि ध
म स रि भ ग प	म सपगधरि	म प रिध ग स	मपसगधरि
म स रिप ग ध	म स प रि ग घ	म पंरिस गध	मपसधरिग
म स रि प घ ग	म स प रि ध ग	म प रि स ध ग	मपस्थगरि
म संगरिप ध	म संध्यगरि	म प ग ध रि स	म प ध रि ग स

संगात तर.

न सगरिधप	म स ध प रि ग	मपगधसरि	म प ध रि स गं
म स ग रि प ध	म स ध रिप ग	म प ग रि स ध	म प ध स म रि
म स ग प ध रि	म स ध रिगप	म प ग रि ध स	मपथसरिग
-म सगपरिध	म सधगरिप	मपग स ध रि	म प ध ग रि स
म स ग ध रि प	म स ध ग प रि	म प ग स रि ध	म प ध ग स रि
म ध रि ग स प	मधगस रिप	म ध स रिगप	मधपसगरि
म ध रिगप स	म ध ग स प रि	म ध स रि प ग	म घ प स रि ग
म ध रि प ग स	म थ ग रि स प	म ध स प रिग	म ध प रि स ग
म ध रि प स ग	म ध ग रि प स	म ध स प ग रि	म ध प रि ग स
म ध रिस ग प	मधगपरिस	म भ स ग रि प	म ध प ग स रि
म ध रि स प ग	मधगपसरि	म ध स ग भ रि	मधपगरि स

4

प रिगम सध	प रिमगधन	प ग रि म म ध	प ग स म ध रि
प रिगम भ स	प रिम ग स भ	प ग रि म ध स	प ग स म रि ध
प रिगध सम	प रिम स ग ध	प ग रि ध म स	पगसधरिन
प रिगधन स	प रिम स ध ग	प ग रि घ स म	प ग स ध म रि
प रिग स भ म	प रिमध ग सं	प ग रि स म घ	प ग स रि भ म
प रिमसमध	प रिम ध स ग	प ग रि स घ म	प ग स रि ग भ
प रिश्लाम म	प रिधन सम	प ग भ रि स भ	प य भ रिश्व न

पगध्मसि पगध्सि पगध्सि समि पस्ति पस्ति
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग भ प स म ग रि भ प स म ग रि प स म ध रि ग प स ध रि ग म प स ध रि ग ग प स ध म ग रि प स ध म रि ग प स ध म रि म प स ध म रि म प स ध म रि म
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म ग रि भ प स म ध रि ग प स म ध ग रि प स म ध ग रि प स ध रि ग ग प स ध म रि ग
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म ग रि भ प स म थ रि ग प स म ध रि ग प स ध रि ग म प स ध रि ग ग प स ध रि ग ग प स ध रि ग ग प स ध म ग रि प स ध म रि ग
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म ग रि भ प स म ग ध रि प स म ध ग रि प स म ध रि ग म प स ध रि ग म प स ध रि म ग प स ध म ग रि
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म रि ध ग प स म ग दि भ प स म ध रि ग प स म ध रि ग प स ध रि ग म प स ध रि म ग
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म ग रि ध प स म ग ध रि प स म ध रि ग प स म ध ग रि प स ध रि ग म
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म रि ध ग प स म ग रि ध प स म ग ध रि प स म ध रि ग प स म ध ग रि
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म रि ध ग प स म ग रि ध प स म ग ध रि प स म ध रि ग
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म रि ध ग प स म ग रि ध प स म ग रि ध
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म रि ध ग प स म ग रि ध
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध प स म रि ध ग
प ग ध स रि म प ग ध स म रि स म रि ग ध
प ग ध स रि म प ग ध स म रि
प ग ध स रि म
प ग घ म स ।र
A
प ग ध म रि स
प ग ध रि म स

प ध रि स म ग	प ध ग रि स म	प ध म स ग रि	-	प ध स रिंग मं
प ध रिम ग स	प ध ग स रि म	प ध म ग रि स		प ध स ग म रि
प ध रि म स ग	प ध ग स म रि	प ध म ग स रि	1	प ध स ग रि म

ध

ध रिगमपस	ध रिमगसप	ध गरिमपस	ध ग प म स रि
ध रिगम सप	ध रिमगप स	ध ग रि म स प	ध ग प म रि स
भ रिग स प म	ध रिमपग स	ध ग रि स म प	ध ग प स रि म
ध रिगसमप	ध रिमप स ग	ध ग रि स प म	धगपसम रि
ध रिगपसम	ध रिम सगप	ध ग रि प म स	ध ग प रि स म
ध रिगपमस	ध रिम स प ग	ध ग रि प स म	ध ग प रि म स
ध रिपगम स	ध रिसगपम	ध ग म रि प स	ध ग स रि प म
ध रिपगसम	ध रिसगमप	ध ग म रि स प	ध ग स रि म प
ध रिप स ग म	ध रिसपगम	धगमपरिस	धगसमरिप
ध रिपसमग	ध रिसपमग	धगमपसरि	ध ग स म प रि
ध रिपमसग	ध रिसमपग	धगमसपरि	ध ग स प रि म
ध रिपमगस	ध रिसमगप	ध ग म स रि प	ध ग स प म रि
ध म रि ग स प	धमपसगरि	ध प रि ग स म	ध प म रि ग स
ध म रिगप स	ध म प स रि ग	धपरिगमस	धपमरिसग
ध म रि स प ग	ध म प ग रि स	धपरिसमग	ध प म ग रि स

ध म रि स ग प	धमपगसरि "	ध प रि स ग म	ध प म ग स रि
ध म रिप ग स	ध म प रि ग स	ध प रि म ग स	ध प म स रि ग
ध म रि प स ग	ध म प रि स ग	ध प रि म स ग	ध प म स ग रि
ध म ग रि प स	धमसपगरि	ध प ग स रि म	ध प स रि ग म
ध म ग रि स प	ध म स प रि ग	ध प ग स म रि	ध प स रि म ग
ध म ग प रि स	ध म स रिप ग	ध प ग रि म स	ध प स म ग रि
ध म ग प स रि	ध म स रिगप	ध प ग रि स म	ध प स म रि ग
ध म ग स प रि	धमसगरिप	ध प ग म स रि	ध प स ग रि म
ध म ग स रि प	धमसगपरि	ध प ग म रि स	ध प स ग म रि
ध स रिगमप	ध स ग म रि प	ध स म रि ग प	ध सपमगरि
ध स रिगपम	ध स ग म प रि	ध समिरि गरें	ध स प म रि ग
ध स रिपगम	ध स ग रि म प	ध समपरिग	ध स प रि म ग
ध स रि प म ग	ध स ग रि प म	ध स म प ग रि	ध सपरिगम
ध स रिमगप	ध स ग प रि म	ध समगरिप	ध सपगम रि
ध स रि म प ग	ध स ग प म रि	ध समगपरि	ध सपगरिम

(७×६×५×६×६×६) सात स्वरें। । प्रस्तार, ५०४० (स रिगम प घ नि)

स

स रिगम प ध नि । स ग रिम प ध नि । स ग म रिप ध नि स रिमग प ध नि स म रिगप ध नि स म ग रिप ध नि स रिम प ग ध नि स म रिष ग ध नि स म प रिग ध नि स रिम प ध ग नि समरिपधगनिंसमपरिधगनि स रिमप ध निग समिरिपधनिग समपरिधनिग स रिगम प निध सगरिगपनिध सगमरिपनिध सिरिमगप निध सिमरिगप निध सिमगरिप निध स रिम प ग नि ध स म रि प ग नि ध स म प रि ग नि ध स रिम प निगध स म रि प नि ग ध स म प रि नि ग ध स रिम प निध ग स म रिप निधग स म प रिनिधग स रिगमध व नि सगरिमधान निसगम रिधान नि स रिमगध प नि समरिगधपनि समगरिधपनि स रिमध ग प नि समिरिधगंष निसमधिरिगपनि स रिमधपगनि समरिध प ग नि समध रिप ग नि स रिम भ प निग स म रिध प निग स म ध रिप निग स रिगमध निप स गरिमध निप स गम रिध निप स रिमग ध निप स म रिग ध निप स म ग रिध निप

स रिमध ग निप स म रिध ग निप स मध रिग निप स रिमध निगप समिरिध निगप समिध रिनिगप स रिमध निपग स म रिध निपग स म ध रिनिपग स रिगम निप घ स ग रिम निप घ स ग म रिनिप ध स रिमग निपधंस म रिग निपधंस म ग रिनिपध स रिम निग प ध स म रिनिग प ध स म नि रिग प ध स रिम निप ग ध स म रिनिप ग ध स म नि रिप ग ध स रिम निपध गंस म रिनिपध गंस म निरिपध ग स रिगम निधप सगरिम निधप सगम रिनिधप स रिमग निधप समरिग निधप समग रिनिधप स रिम निगधप स म रिनिगधप स म निरिगधप स रिग निधगप समरिनिधगप समिनि रिधगप स रिम निध प गंस म रिनिध प गंस म नि रिध प ग स रिगप मध नि स ग रिप मध नि स ग प रि मध नि स रिपगमध नि सपरिगमध नि सपगरिमध नि स रिपम गध नि स प रिम गध नि स प म रिगध नि स रिपमध ग नि स प रिमध ग नि स प म रिध ग नि स रिपमध निग सपिरिमध निग सपम रिध निग स रिगप ध म नि स ग रिप ध म नि स ग प रि ध म नि स रिपगधम नि सपरिगधम नि सपगरिधम नि

स रिपध गम नि । स प रिध गम नि । स प ध रिगम नि स रिपध म ग नि । स प रिध म ग नि । स प ध रिम ग नि स प रिधम निग स प ध रिम निग स रिपध म निग स ग रिप ध निम स ग प रिध निम स रिगप ध निम स रिपगध निम सपरिगध निम सपगरिध निम स रिपध ग निम सपरिध ग निम सपध रिग निम स रिप ध निगम। स प रिध निगम। स प ध रिनिम ग स रिषध निमग सपरिध निमग सपध रिनिगम स रिगपम निध स गरिपम निध स गपरिम निध स रिपगम निध! सपरिगम निध! सपगरिम निध स रिपम ग निधः स प रिम ग निध स प म रिग निध स रिपम निगध स परिम निगध स पम रिनिगध स रिपम निधग सपरिम निधग सपम रिनिधग स रिगप निमध सगरिप निमध सगप रिनिमध स रिपग निमध सपरिग निमध सपगरिनिमध स रिप निगम ध । स प रिनिगम ध । स प नि रिगम ध स रिप निमगध सपरि निमगध सपनि रिमगध स रिप निमध ग सपरि निमध ग सप नि रिमध ग स रिगप निधम सगरिप निधम सगप रिनिधम स रिपग निधम। सपरिग निधम। सपगरिनिधम स रिप निग थ म । स प रिनिग ध म । स प नि रिग ध म # रिप निधगम स प रि नि ध ग म स प नि रि ध ग म स रिप निधम ग स प रिनिधम ग स प नि रिधम ग स रिग ध म प नि स ग रिध म प नि स ग ध रिम प नि स रिधगम प नि स ध रिगम प नि स ध ग रिम प नि स रिधम गप नि स ध रिम गप नि स ध म रिगप नि स रिधमप ग नि । स ध रिमप ग नि । स ध म रिप ग नि स रिधमप निग सधिरिमप निग सधमरिप निग स रिगध प म नि स ग रिध प म नि स ग ध रिप म नि स रिधगप म नि । स ध रिगप म नि । स ध ग रिप म नि स रिध प ग म नि स ध रिप ग म नि स ध प रिग म नि स रिध प म ग नि। स ध रिप म ग नि। स ध प रि न ग नि स रिध प म निग स ध रिप म निग स ध प रिम निग स रिगध प निम स गरिध प निम स गध रिप निम सारिधप निगम सधिरिप निगम सधिप रिनिगम स रिधप ग निम स ध रिप ग निम स ध प रिग निम स रिध प निगम। स ध रिप निगम। स ध प रिनिगम स रिध प निम ग स ध रिप निम ग स ध प रिनिम ग स रिगधन निपंस गरिधन निप्स गधरिन निप सारिधगम निपंस धरिगम निपंस धगरिम निप से रिधम गं निप सिध रिम ग निपं सधम रिग नि पं स रिधम निगप स ध रि म नि ग प स ध म रि नि ग प स रिधम निपग स ध रिम निप ग स ध म रिनिप ग स रिगध निम प स ग रिध निम प स ग ध रिनिम प स रिध ग नि म प स ध रिग नि म प स ध ग रि नि म प स रिध निगम प स ध रिनिगम प स ध नि रिगम प स रिध नि ग प स ध रि नि ग प स ध नि रि ग प प स रिध नि म प ग स ध रि नि म प ग स ध नि रि म प ग सगरिधनिपम सगधरिनिपम स रिगध निपम स रिध ग निप म स ध रिग निप म स ध ग रिनिप म स ध रि नि ग प म स ध नि रि ग प म स रिध निगपम स रिध निपगम। स ध रिनिपगम। स ध नि रिपगम स ध नि रिप य ग स ध रिनिप म ग स रिध निपम ग स रिग निम प ध स ग रिनिम प ध स ग नि रिम प ध स रिनिगम प ध स निरिगम पध स निगरिम पध स रि नि म ग प घ स नि रि म ग प घ स नि म रि ग प घ स रिनि म प ग ध स नि रिम प ग ध स नि म रिप ग ध स रिनि म प ध ग स नि रि म प ध ग स नि म रि प ध ग स रिग निपम घ स ग रिनिपम घ स ग नि रिपम ध स रिनिग प म ध स नि रिग प म ध स निग रिप म ध

स रि नि प ग म ध । स नि रि प ग म ध । स नि प रि ग म ध स रि नि प म ग ध स नि रि प म ग ध स नि प रि म ग ध स रि नि प म ध ग स नि रि प म ध ग स नि प रि म ध ग स रिग नि प ध म स ग रिनि प ध म स ग नि रिप ध म स रिनिग प ध म स नि रिग प ध म स निग रिप ध म स रिनिप ग ध म स निरिप ग ध म स निप रिग ध म स रिनि प ध ग म स नि रिप ध ग म स निप रिध ग म स रि नि प ध म ग ं स नि रि प ध म ग । स नि प रि ध म ग स रिग नि म ध प स ग रि नि म ध प । स ग नि रि म ध प स रिनिगमधप'स निरिगमधप स निगरिमधप स रिनि म गधप । स नि रिम गधप स नि म रिगधप स रि नि म ध ग प स नि रि म ध ग प स नि म रि ध ग प स रिनिमधपग स निरिमधपग स निम रिधपग स रिग निधम प'स गरिनिधम पांस गनि रिधम प स रिनिगधमप स निरिगधमप स निगरिधमप स रिनिधगमप सिनिरिधगमप सिनिधरिगमप स रिनिध म गप स निरिध म गप स निध रिम गप स रिनिधमप ग्रांस निरिधमप ग्रांस निधरिमप ग स रिग निध प म स ग रिनिध प म स ग नि रिध प म स रिनिगधपम । स निरिगधपम । स निगरिधपम

स रि. निधगपम। स निरिधगपम। स निधरिगपम स रिनिध प ग म स नि रिध प ग म निध रिप ग म स रिनिध प म ग स नि रिध प म ग स निध रिप म ग स ग म प रि थ नि । स ग म प ध रि नि । स ग म प थ नि रि समगपरिधनि। समगपधिरिनि। समगपधिनि रि समपगरिधनि समपगधरिनि ममपगधनिरि समप धरिग नि समप धगरिनि समप धगनि रि समप धरिनिग समप धनिरिग समप धनिगरि सगमपरिनिध सगमपनिरिध सगमपनिधरि स म ग प रि नि ध | स म ग प नि रि ध | स म ग प नि ध रि समपगरिनिधंसमपगनिरिधंसमपगनिधरि समपनिरिगध समपनिगरिध | समपनिगधि समपनि रिधगम पनिधरिग ममपनिधगरि सगमधरिप निस्ममधपरिनिसगमधपनिरि स म ग ध रिप नि स म ग ध प रिनि स म ग ध प नि रि समधगरिप निंसमधगप रिनि समधगप निर समधपरिगनि समधपगरिनि समधपगनि रि समधार रिनिग समधाप निरिग समधाप निगरि

सगमधिर निपंसगमधनिरिपंसगमधनिपरि समगध निपरि समगधरिनिप समगधनिरिप स म ध ग नि प रि समधगरिनिपंसमधगनिरिप स म ध नि रि ग प स म ध नि ग रि प स म ध नि ग प रि स म ध नि रि प ग स म ध नि प रि ग स म ध नि प ग रि सगम निपध रि स ग म नि रि प ध स ग म नि प रि ध स म ग नि रि प ध स म ग नि प रि ध स म ग नि प ध रि सम निगरिपध सम निगप रिध सम निगप धरि स म नि प ग ध रि समनिपरिगध समनिपगरिध स म नि प रि ध ग स म नि प ध रि ग स म नि प ध ग रि स ग म नि रि ध प । स ग म नि ध रि प । स ग म नि ध प रि स म ग नि रि ध प । स म ग नि ध रि प । स म ग नि ध प रि स म नि ग रि ध प स म नि ग ध रि प स म नि ग ध प रि स म नि ध रि ग प । स म नि ध ग रि प । स म नि ध ग प रि स म नि. ध रि प ग स म नि ध प रि ग स म नि ध प ग रि सगपमध निरि सगपम रिधिनि सगपम धरिनि सपगम रिधनि सपगम धरिनि सपगम धनि रि सपमगधनि रि सपमगरिध नि सपमगध रिनि सपमधिति निस्पमधगति निस्पमधगनि रि सपमधितिग सपमधिनिरिग सपमधिनिगरि सगपधरिम नि । सगपधमरि नि । सगपधम नि रि स प ग ध रि म नि । स प ग ध म रि नि । स प ग ध म नि रि स प ध ग रि म नि । स प ध ग म रि नि । स प ध ग म नि रि स प ध म रिग नि स प ध म ग रिनि स प ध म ग नि रि स प ध म रि नि ग स प ध म नि रि ग स प ध म नि ग रि सगप धरिनिमं सगप धनिरिमं सगप धनिमरि स प ग थ रि नि म स प ग थ नि रि म स प ग थ नि म रि स प थ ग रि नि म स प ध ग नि रि म स प ध ग नि म रि स प ध नि रि म ग स प ध नि म रि ग स प ध नि म ग रि स प ध नि रि ग म स प ध नि ग रि म स प ध नि ग म रि सगपम रिनिध सगपम निरिध सगपम निध रि स प ग म रि नि धं स प ग म नि रि धं स प ग म नि ध रि सपमगरिनिधं सपमगनिरिधं सपमगनिधरि स प म नि रि ग ध स प म नि ग रि ध स प म नि ग ध रि स प म नि रि ध ग स प म नि ध रि ग स प म नि ध ग रि सगप निरिमधं सगप निमरिधं सगप निमध रि सपग निरिमध सपग निमरिध सपग निमध रि स प निगरि मध स प निगम रिध स प निगम ध रि स प नि म रि ग ध स प नि म ग रि ध स प नि म ग ध रि स प नि म रि ध ग स प नि म ध रि ग स प नि म ध ग रि

सगप निरिधम । सगप निधरिम । सगप निधमरि स प ग नि रिध म । स प ग निध रिम स प ग नि ध म रि स प निगरिध म स प निगध रिम स प निगध म रि स प नि ध रि ग म स प नि ध ग रि म स प नि ध ग म रि स प नि ध रि म ग स प नि ध म रि ग स प नि ध म ग रि सगधमरिप निंसगधमपरि निंसगधमपनि रि सधगमरिपनि सधगमपरिनिं सधगमपनिरि सधमगरिप निसधमगपरि निसधमगप निरि सधमपरिगनि सधमपगरिनिः सधमपगनि रि सधमपरिनिग सधमपनिरिग सधमपनि गरि सगधपरिम निसगधपम रिनि! सगधपम निरि स ध ग प रि म नि स ध ग प म रि नि स ध ग प म नि रि सधपगरिम निसधपगम रिनिसधपगम निरि स ध प म रि ग नि ! स ध प म ग रि नि ! स ध प म ग नि रि स ध प म रि नि गंस ध प म नि रि ग स ध प म नि ग रि सगधपरिनिमःसगधपनिरिम'सगधपनिमरि ंस ध ग प रि नि म ं स ध ग प नि रि म ं स ध ग प नि म रि स ध प ग रि नि म स ध प ग नि रि म स ध प ग नि म रि स ध प नि रिगम स ध प निगरिम स ध प निगम रि सधपनि रिमग सधपनि मरिग सधपनि मगरि स ग ध म रि नि प स ग ध म नि रि प संग ध म नि प रि स ध ग म रि नि प स ध ग म नि रि प स ध ग म नि प रि स ध म ग रि नि प स ध म ग नि रि प स ध म ग नि प रि स ध म निरिगप स ध म निगरिप ं स ध म निगपरि स ध म नि रिप ग स ध म निप रिग स ध म निप ग रि स ग ध नि रि म प । स ग ध नि म रि प । स ग ध नि म प रि स ध ग नि रि म प स ध ग नि म रि प स ध ग नि म प रि स ध निगरिम प स ध निगम रिप स ध निगम परि स ध निम रिगप स ध निम गरिप स ध निम गप रि स ध निम रिप गंस ध निम प रिग स ध निम प ग रि स ग ध नि रिप म । स ग ध निप रिम । स ग ध निप म रि स ध ग नि रिप म स ध ग निप रिम स ध ग निप म रि स ध नि ग रि प म स ध नि ग प रि म स ध नि ग प म रि स ध नि प रि ग म ं स ध नि प ग रि म । स ध नि प ग म रि स ध नि प रि म ग स ध नि प म रि ग स ध नि प म ग रि स ग नि म रि प ध स ग नि म प रि ध स ग नि म प ध रि स निगम रिपध सिनिगम परिध सिनिगम पध रि स निमगरिपधं स निमगपरिधं स निमगपधरि स निमप रिगध स निमप गरिध स निमप गध रि स निमप रिधग स निमप धरिग स निमप धगरि

स ग निपरि मध 'स ग निपम रिध ! स ग निपम ध रि स निगपरिमध स निगपम रिध स निगपमध रि स निपगरिमध. स निपगम रिध । स निपगम ध रि स निपम रिगध स निपम गरिध। स निपम गध रि स निपम रिधग स निपम ध रिंग स निपम ध गरि स ग निपरिधम स ग निपध रिम स ग निपध म रि स निगप रिधम स निगप धरिम! स निगप धमरि स निपगरिधम स निपगधरिम। स निपगधमरि स निपधिरिगम | स निपधगरिम | स निपधगमि स नि प ध रि म ग । स नि प ध म रि ग । स नि प ध म ग रि स ग नि म रि थ प । स ग नि म थ रि प । स ग नि म ध प रि स निगम रिधप । स निगम थरिप । स निगम धपरि स निमगरिधप सिनिमगधरिप सिनिमगधपरि म निमध रिगप सिनिम भगरिप सिनिमध गपरि स निमध रिपग स निमध परिग स निमध पगरि स ग नि ध रि म प । त ग नि ध म रि प । स ग नि ध म प रि स निगधिर मप सिनगधिम रिप सि.निगधिम परि म निध गरिम प | स निध गम रिप | स निध गम ५ रि स निधम रिगप | स निधम गरिप | स निधम गप रि स निधम रिपग | स निधम प रिग | स निधम प ग रि

 स ग नि ध रि प म स ग नि ध प रि म

 स नि ग ध रि प म स नि ग ध प रि म स नि ग ध प म रि

 स नि ध ग रि प म स नि ध ग प रि म स नि ध ग प म रि

 स नि ध प रि ग म स नि ध प ग रि म स नि ध प ग म रि

 स नि ध प रि म ग स नि ध प म रि ग स नि ध प म ग रि

रि

 R
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1

रिसमधगपनि । रिममधगपनि रिमधनगपनि रिसमधपगनि रिममधपगनि रिमधसपगनि रिसमधपनिगरिमसधपनिगरिमधसपनिग रिसगमधनिप रिगसमधनिप रिगमसधनिप रिसमगधनिप रिमसगधनिप रिगमसधनिप रिसमधगनिप रिममधगनिप रिमधसगनिप रिसमधनिगप रिमसधनिगप रिमधसनिगप रिसमधनिपगं रिमसधनिपगं रिमधसनिपग रिसगम निपध रिगम म निपध रिगम स निपध रिसमग निपध रिममग निपध। रिमग स निपध रिसमनिग प घरिम म निग प घरिम निस ग प ध रिसम निपगध, रिमम निपगध रिमनिसपगध रिसम निपध गरिम म निपध गरिम निसपध ग रिसगम निध्य । रिगम म निध्य रिगम स निध्य रिसमगनिधप रिमसगनिधप रिमगसनिधप रिसम निगधप किम सनिगधप रिम निसगधप रिसम निधगप रिमस निधगप रिमनिस धगप रिसम निधपग | रिमस निधपग | रिमनिस धपग रिसगपमधनि रिगसपमधनि किगपसमधनि रिसपगमधनि | रिपसगमधनि | रिपगसमधनि

संगीतसार.

रिसपमगधनि | रिपसमगधनि | रिपमसगंधनि रिसपमधगनि | रिपसमधगनि | रिपमसधगनि रिसपमधनिग रिपसमधनिग रिपमसधनिग रिसगपधम निं रिगसपधम नि रिगपसधम नि रिसपगधम निःरिपसगधम नि.रिपगसधम नि रिसपधगम निरिपसधगम निरिपधसगम नि रिसपधमग नि | रिपसधमग नि : रिपधसमग नि रिसपधन निग रिपसधन निग रिपधसन निग रिसगप धनिम रिगसप धनिम रिगप स धनिम रिसपगधनिम। रिपसगधनिम। रिपगसधनिम रिसपधगनिम रिपसधगनिम रिपधसगनिम रिसप ध निगम रिप स धं निगम । रिप ध स निगम रिसप भ निमग रिप स भ निमग रिप भ स निमग रिसगपम निधिरिगसपम निधिरिगपसम निध रिसपगम निध रिपसगम निध रिपगसम निध रिसपमग निध रिपसमग निध रिपम सग निध रिसपम निगध रिपसम निगध रिपम स निगध रिसपम निधग रिपसम निधग रिपम स निधग रिसगप निमध रिगसप निमध रिगप स निमध रिसपग निमध रिपसग निमध रिपग स निमध

रिसप निगम ध रिप स निगम ध रिप निसगम ध रिसप निमगध। रिपस निमगध। रिपनिसमगध रिसप निमध गरिप स निमध गरिप निसमध ग रिसगपनिधम। रिगसपनिधम। रिगपसनिधम रिसपग निधम रिपसग निधम रिपग स निधम रिसप निगध म रिपस निगध म रिप निसगध म रिसप निधगम रिपस निधगम रिपनिस धगम रिसप निधम गरिप स निधम गरिप निसधम ग रिसगधमप निं रिगसधमप निः रिगधसमप नि रिसधगमप निं रिधसगमप निः रिधगसमप नि रिस ध म ग प नि | रिध स म ग प नि | रिध म स ग प नि रिस्थमपगनि रिधसमपगनि रिधमसपगनि रिस्थमपनिग रिधसमपनिग रिधमसपनिग रिसगधपम नि रिगसधपम नि रिगधसपम नि रिस्थिग प म नि | रिध स ग प म नि रिध ग स प म नि रिसधपगम नि | रिधसपगम नि रिधपसगम नि रिस ध प म ग नि । रिध स प म ग नि रिध प स म ग नि रिस ध प म निग | रिध स प म निग | रिध प स म निग रिता भ भ प निम रिग स भ प निम रिग भ स प निम रिस ध ग प निम | रिध स ग प निम | रिध ग स प निम रिस ध प ग नि म ! रिध स प ग नि म | रिध प स ग नि म रिसधपनिगमं रिधसपनिगम रिधपसनिगम रिसधप निमग रिधसप निमग रिधप स निमग रिसगधम निपंरिग सधम निपंरिगध सम निप रिस ध ग म नि प रिध स ग म नि प रिध ग स म नि प रिस ध म ग नि प रिध स म ग नि प रिध म स ग नि प रिस ध म निग पंरिध स म निग पंरिध म स निग प रिसधम निपगं रिधं सम निपगं रिधम स निपग रिसगधनिमप रिगसधनिमप रिगधसनिमप रिसंध गनिम पंरिध संगनिम पः रिध गस निम प रिस ध निगम प रिध स निगम प रिध निस गम प रिस ध निम ग प रिध स निम ग प । रिध निस म ग प रिस ध निम प गः रिध स निम प गां रिध निस म प ग रिसगधनिपम रिगसधनिपम रिगधसनिपम रिसधगनिपम रिधसगनिपम रिधगसनिपम रिस ध निगपम रिध स निगपम रिध निसगपम रिस ध निप ग म रिध स निप ग म रिध निस प ग म रिस ध निपम ग रिध स निपम ग रिध निस पम ग रिसग निमप ध रिगस निमप ध रिगनिस मप ध रिस निगम पध रिनिस गम पध रिनिगस म पध रिस निमगपध | रिनिसमगपध | रिनिमसगपध रिस निम प ग ध | रिनिस म प ग ध | रिनिम स प ग ध रिस निम प ध ग रिनिस म प ध ग रिनिम स प ध ग रिसगनिपमध रिगसनिपमध रिगनिसपमध रिस निगपमध रिनिसगपमध रिनिगसपमध रिस निपगमध रिनिसपगमध रिनिपसगमध रिस निपम गध रिनिस पम गध रिनिप सम गध रिस निपमधगरिनिसपमधगरिनिपसमधग रिसगनिपधम रिगसनिपधम रिगनिसपधम रिस निग प ध म रिनिस ग प ध म रिनिग स प ध म रिस निपगधम | रिनिसपगधम | रिनिपसगधम रिस निपधगम। रिनिसपधगम। रिनिपसधगम रिस निपध म ग रिनिस पध म ग रिनिप स ध म ग रिसग निमध परिगस निमध परिग निसमध प रिस निगमधप रिनिसगमधप रिनिगसमधप रिस निमगधप रिनिसमगधप रिनिम सगधप रिस निमध गप रिनिस मध गप रिनिस मध गप रिसनिमधपग रिनिसमधपग रिनिम सधपग रिसग निधमप रिगस निधमप रिगनिसधमप रिस निगधमप रिनिसगधमप रिनिगसधमप रिस निधगमप | रिनिस धगमप | रिनिध सगमप रिस निधमगप रिनिस धमगप रिनिधस मगप रिस निधमपग रिनिसधमपग रिनिधसमपग रिसग निधपम रिगस निधपम रिगनिस धपम रिस निगधपम रिनिस गधपम रिनिग स धपम रिस निधगपम। रिनिसधगपम। रिनिधसगपम रिस निधपगमं रिनिसधपगम। रिनिधसपगम रिस निध प म ग रिनिस ध प म ग रिनिध स पे म ग रिगमप स ध नि रिगमप ध स नि रिगमप ध नि स रिमगप सध नि रिमगप ध स नि रिमगप ध नि स रिमप ग स ध नि रिमप ग ध स नि रिमप ग ध नि स रिमप ध स ग नि रिमप ध ग स नि ; रिमप ध ग नि स रिमप ध स निग रिमप ध निस ग रिमप ध निग स रिगमपस निधिरिगमप निसधिरिगमप निधस रिमगप स निध रिमगप निसध रिमगप निध स रिमपगस निध रिमपग निस थ रिमपग निध स रिमप निसगध रिमप निगस ध रिमप निगध स रिमप निसधग रिमप निधस ग रिमप निध स रिगमधसपनि रिगमधपस नि रिगमधपनि स रिमगधसपनि रिमगधपसनि रिमगधपनि स रिमध ग स प नि । रिमध ग प स नि । रिमध ग प नि स रिमध प स ग नि रिमध प ग स नि रिमध प ग नि स रिमध प स निग रिमध प निस ग रिमध प निग स रिंग मध स निप रिगम ध नि स प रिगम ध निप सं रिमगध स निप रिमगध निसप रिमग ध निप सं रिमध ग स निप रिमध ग निस प रिमध ग निप स रिमध निसगप रिमध निगस प रिमध निगप स रिमध निसप गंरिमध निप सगिरिमध निप ग स रिगम निसपध रिगम निपसध रिगम निपध स रिमग निसप धरिमग निप सधरिमग निप ध स रिम निग सपध रिम निगप सध रिम निगप ध स रिम निप स ग ध रिम निप ग स ध रिम निप ग ध स रिम निप स भग रिम निप भ स ग रिम निप भ ग स रिगम निस ध प रिगम निध स प रिगम निध प स रिमग निसंघ परिमग निध सप। रिमग निध पंस रिम निग स ध प रिम निग ध स प रिम निग ध प स रिम निध स ग प िर म निध ग स प िर म निध ग प स रिम निध सपग रिम निध प सग रिम निध प ग स रिगपम सध निरिगपमध स निरिगपमध निस रिपगम सध निरिपगम ध स निरिपगम ध निस रिपमगस घनि | रिपमगधसनि | रिपमगधनिं सं रिपमधसगनि रिपमधगसनि रिपमधगनि स रिपमध स निगरिपमध निसगरिपमध निगस रिगप ध स म नि रिगप ध म स नि रिगप ध म नि स रिपगधसमिनि रिपगधमसनि रिपगधमिस रिपधगसमिनि रिपधगमसनि रिपधगमिस रिपध म स ग नि । रिपध म ग स नि । रिपध म ग नि स रिपधम स निग रिपधम निसग रिपधम निग स रिगपध स निम। रिगपध निसम। रिगपध निम स रिपगधसनिम। रिपगधनिसम। रिपगधनिस रिपध ग स निम | रिपध ग निस म | रिपध ग निम स रिपध निसगम। रिपध निगस म। रिपध निगम स रिपध निसमग रिपध निमसग रिपध निमम स रिगप म स निध | रिगप म निसध | रिगप म निध स रिपगम स निध रिपगम निस ध रिपगम निध स रिपमग स निध रिपमग निस ध रिपमग निध स रिपम निसगध रिपम निगस ध रिपम निगध स रिपम निसधग | रिपम निधस ग | रिपम निध गस रिगप निसमध रिगप निमसध रिगप निमध स रिपग निसमध | रिपग निमसध | रिपग निमध स रिप निग स म ध | रिप निगम स ध | रिप निगम ध स रिपनिम सगध रिपनि ग स ध रिप निमगध स रिप निम स ध ग रिप निम ध स ग रिप निमध ग रिगप निस्धम। रिगप निधसम। रिगप निधम स रिपग निसधम। रिपग निधसम। रिपग निधम स रिपनिगसधम। रिपनिगधसम। रिपनिगधम स रिप निध स ग म | रिप निध ग स म ! रिप निध ग म स रिप निध समग रिप निधम सग रिप निधम ग स रिगधन सपनि । रिगधन पसनि । रिगधन पनि स रिधगम सप नि रिधगम प स नि रिधगम प नि स रिधमगसपनि रिधमगपस नि रिधमगपनि स रिधमप सग नि रिधमप ग स नि रिधमप ग नि स रिधमप निसग रिधमप निगस रिधमपस निग रिगधपसमिनिरिगधपमसनिरिगधपमिस रिधगपसमनि रिधगपमसनि रिधग ष म निस रिधपगसमिनि रिधपगमत्ति। रिध प म म नि स रिधप म स ग नि | रिधप म ग स नि | रिधप म ग नि स रिध प म स निग रिध प म निस ग रिध प म निग स रिगध प स निम रिगध प निस म रिगध प निम स रिधगप स निम रिधगप निस म रिधगप निम स 14

रिध प ग स निम रिध प ग नि स म रिध प ग नि म स रिध प निस ग म रिध प निग स म रिध प निग म स रिधप निसमग रिधप निमसग रिधप निमम स रिगधम स निप रिगधम निस प रिगधम निप स रिधगम स निप रिधगम निसप रिधगम निप स रिधमगस निप रिधमग निस प रिधमग निपस रिधम निसगप रिधम निगसप रिधम निगप स रिधम निसप ग रिधम निप स ग रिधम निप ग स रिगध निसमप रिगध निमसप रिगध निमप स रिधगनिसमप रिधगनिम सप रिधगनिम पस रिधनिगसमपरिधनिमगसपरिधनिगमपः रिधनिम स गप रिधनिम गप स रिधनिम गप स रिध निम सपग रिध निम प सग रिध निपम ग स रिगधनिसपम। रिगधनिपसम। रिगधनिपम स रिधंग निस्पम रिधंग निपसम िरिधंग निप मंस रिधनिगसपम। रिधनिगपसम। रिधनिगपमस रिध निप स ग म रिध निप ग स म रिध निप ग भ स रिध निप स म गं रिध निप म स ग रिध निप म स रिग निम सप धारिण निभाष साधारिण निभाष स िरि नि गम स प धिरि नि गम प स धि रि नि गम प थ स

R	F	ने	4	ग	₹	9	ध	18	f	ने म	ग	ч	स	ध	िरि	F	1 4	ग	' प	घ	स
रि	F	ने	म	4	स	ग	ध	रि	F	1 म	4	ग	स	ध	रि	नि	4	प	ग्	ध	स
₹	F	ने	म	4	स	ध	म	रि	नि	म	4	ध	स	ग	रि	नि	म	4	ध	ग	स
रि	ग	f	ने	4	स	म्	ध	रि	म	नि	Ч	म	स	ध	रि	ग	नि	Ч	म	ध	स
रि	F	Ì	ग	4	स	म्	ध	रि	नि	ग	ч	$\tilde{\overline{q}}$	स	ध	रि	नि	ग	Ч	म	ध	स
रि	F	1	4	ग	स	म	ध	रि	नि	4	ग	4	स	ध	रि	नि	Ч	ग	म	ध	₹
रि	नि	1	4	म	स	ग	ध	रि	नि	Ч	म	ग	स	घ	रि	नि	Ч	म	ग	ध	स
रि	नि	,	Ŧ	म	स	ध	ग	रि	नि	Ч	म	ध	स	ग	रि	नि	4	म	ध	ग	स
रि	ग	f	ने	q	स	ध	4	रि	ग	नि	q	ध	स	म	रि	ग	नि	q	ध	म	स
रि	नि		T	q	स	ध	म	रि	नि	ग	Ч	ध	स	म	रि	नि	ग	Ф	ध	म	स
रि	नि	q	1	ग	स	ध	म	रि	नि	Ч	ग	ध	₹	म	रि	नि	Ч	ग	ध	म	स
रि	नि	9		ध	स	म	4	रि	नि	Ч	ध	ग	स	म	रि	नि	प	ध	ग	म	स
रि	नि	9		ध	स	4	म	रि	नि	q	ध	म	स	ग	रि	नि	ч	ध	म	ग	स
रि	ग	1	1	4	स	ध	q	रि	ग	नि	म	ध	स	q	रि	ग	नि	4	ध	Ф	स
रि	वि	3	ſ	म	स	ध	4	रि	नि	ग	म	ध	स	q	रि	नि	ग	म	ध	ч	स
रि	वि	Ą		म	स	ध	Ч	रि	नि	म	ग	ध	स	Ч	रि	नि	म	ग	ध	Ч	स
R	नि	4	'	ध	स	म्	q	रि	नि	म	ध	ग	स	q	रि	नि	म	ध	ग	q	स
							- 1	रि						1							
								रि													
								रि													

ग

 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1

गरिमप निधस। गमरिप निधस। गमपरिनिधस गरिसमधपनि गिसरिमधपनि गिसमरिधपनि गरिन सधपनि। गमरिसधपनि। गमसरिधपनि गरिमधसपनि गिमरिधसपनि गिमधरिसपनि गरिमध प स नि । ग म रिध प स नि । ग म ध रिप स नि गरिमधपनिस गर्मरिधपनिस गर्मधरिपनिस गरिसमधनिप गसरिमधनिप गसमरिधनिप गरिम स ध निप गमरिस ध निप गम स रिध निप गरिमधसनिप गमरिधसनिप गमधरिसनिप गरिमध निसप | गमरिध निसप | गमध रिनिसप गरिमध निप स गमरिध निप स गमध रिनिप स ग रि स म नि प ध । ग स रि म नि ध प । ग स म रि नि ध प गरिम स निपध गमरिस निपध गम स रिनिपध गरिम निसपध | गमरिनिसपध | गमनि रिसपध गरिम निपस ध । गमरिनिपस ध । गमनिरिपस ध गरिम निषध स गमरिनिषध स गम निरिषध स ग रिस म निधप । ग स रिम निधप । ग स म रिनिधप गरिम स निधप | गमरिस निधप | गमस रिनिधप गरिम निस्थप गमरिनिस्थप गमनिरिस्थप गरिम निधसप गमरिनिधसप गमनि रिधसप ग रिम निध प स | ग म रिनिध प स | ग म निः रिध प स गः रिसः प म ध निः ग स रिप म ध नि ग स प रिम ध निः गरिप समध नि। गपरि समध नि। गप सरिमध निः ग प रिम स ध नि ग प म रि स ध नि गरिपमस धनि गरिपमधसनि गपरिमधसनि गपमरिधसनि ग रिपमध निस गपरिमध निस गपम रिध निस गरिसपधमनि। गसरिपधमनि। गसपरिधमनि ग रिप स ध म नि । ग प रिस ध म नि । ग प स रिध म नि ग रिप ध स म नि । ग प रिध स म नि । ग प ध रि स म नि गरिषधमस निगिष रिधमस निगिषधि रिमस नि गरिषधम निसंगपरिधम निसंगपधरिम निस गरिसपध निमागस रिपध निमागस परिध निम गरिष सध निमागपरिसध निमागप सरिध निम गरिषध स निमागपरिध स निमागपध रिस निम गरिप ध निस म गपरिध निस म गप ध रिनिस म गरिषध निम स गपरिध निम स गपध रिनिम स गरिसपम निधागसरिपम निधागसपरिम निध गरिप स म निधागपरिस म निधागप स रिम निध ग रिषम स निध ग प रिम स निध ग प म रिस निध गरिषम निस्ध गपरिम निस्ध गपम रिनिस्ध

ग रिपम निधस। गपरिम निधस। गपम रिनिधस ग स रि प नि म ध गरिस पंति मध गरिष स निमध गिप रिस निमध गरिप निसमध। गपरिनिसमध गपरिनिमसध गरिप निम स ध गपरिनिमधस ग रिप नि म ध स ग स रिप निधम गरिसप निधम ग प रि स नि ध म ग प स रि नि ध म ग रिप स निध में ग प रि नि स ध म ं ग प नि रि स ध म गरिपनिसधम ग प रिनिध स म गरिप निधसम गपरिनिधमस ग रि प नि ध म स ग स रिधम प नि गरिस ध म प नि गधिर समपनि गरिध सम्म पनि गधरिमसपनि ग रि ध म स प नि गधिरमपस नि ग रिध म प स नि गधरिमपनिस ग रिध म प निस ग स रिध प म नि गाँरिकाध प म नि मधिर सपम नि ग रिध स प म नि गध रिप स म नि गरिश्विष समिन |गधरियमसनि|गधपरिमसनि गरिश्विष्य म स नि

गसपरिनिमध गपसरिनिमध गपनिरिसमध गपनिरिमसध गपनिरिमधस ग स प रि नि ध म ग प नि रिध स म ग प नि रिध म स गस धरिम प नि गध स रिमय नि गधमरिसम नि गधम रिपस नि गधमरिप निस गस ध रिपम नि गध स रिपम नि गधपरिसम नि

गरिधपम निस् । गधरिपम निस् । गधपरिम निस् गरिसधपनिमा गसरिधपनिमा गसधरिपनिम गरिध स प नि म । गध रि स प नि म । गध स रि प नि भ गरिध प स निम गिध रिप स निम गिध प रिस नि भ गरिधप निसम गधरिप निसम गधपरि निसभ ग रिध प नि म स । ग ध रिप नि म स । ग ध प रि नि म स ग रिस ध म नि प ग स रिधम निप ग स ध रिम निप गरिध समिनिप गिध रिसमिनिप गिध सिरिमिनिप ग रिधम स निप ग ध रिम स निप ग ध म रिस निप गरिधम निसप गधरिम निसप गधम रिनिसप ग रिधम निप स । गध रिम निप स । गध म रिनिप स ग रि स ध नि म प । ग स रि ध नि म प । ग स ध रि नि म प ग रिध स नि म प । ग ध रि स नि म प । ग ध स रि नि म प ग रिध निस म प । गध रिनिस म प । गध निरिस म प ग रि भ नि म स प । ग भ रि नि म स प । ग भ नि रि म स प गरिश्वनिमपस गिश्वरिनिमपस गिश्वनिरिमपस गरिस ध निपम । गसरिध निमप । गस ध रिनिमप ग रि भ स नि प म । ग भ रि स नि प म । ग भ स रि नि प म गरि भ नि स प म । ग भ रि नि स प म । ग भ नि रि स प म गरिधानि पत्तम। गधरिनि पत्तम। गधनि रिपत्तम

गैरिध निपम सागधिर निपम सागधिन रिपम सा गरिस निमपध । गसरिनिमपध ग स नि रिम प ध गरिनिसमपध गनिरिसमपध ग निस रिम प ध गरिनिमसपध ग नि रि म स प ध गनिमरिसपध गरिनिमपसध ग नि रिम प स ध ग निम रिप स'ध गरिनिम प ध स गनिरिमपभस ग निम रिपध स गरिसनिपमध ग स रि नि प म ध ग स नि रि'प म ध गरिनिसपमध ग नि रि स प म ध ग निसरिप मध गरिनि पसमध ग नि रि प स म भ ग नि प रि स म ध गरिनिपमसध ग निरिप म स घंग निपरिम स ध गरिनिपमधस गनिरिपमधस ग निपरिमध स गरिस निपधम ग स नि रिप भ म। ग स नि रिप ध म गरिनिसपधम ग नि रिस प ध म ग निस रिपध म गरिनिपसधम ग नि रिप स ध म ग निप रिस ध म गरिनिपधसम ग नि रिप ध स म ग निप रिध संम गरिनिपधमस ग नि रिपध म स ग निप रिध म स गिरिसनिमधप गसरिनिमधप ग स नि रिम ध प गरिनिसमधप ग नि रिस मध्य ग निंस रिम भ प गरिनिम सधपानि रिम सधपानिम रिस धप गिरिनिमधन सागनि रिमधन सागनि मिरिधन ला 90

गरिनिमधसप्रानिरिमधसप्रानिमरिधसंप ग स रि नि धं म प गरिसनिधमप ग स नि रिध म प गरिनिसधमप गनिरिसधमप गनिसरिधमप ग रि नि ध स म प ग निरिध समप ग निध रिसमप गरिनिधमसप ग निरिधम सप्ग निधरिम सप गरिनिधमपस ग नि रिधम प स गनिधरिमपस गरिसनिधपम ग स रि नि ध प म ग स नि रिध प म गरिनिसधपम गनिरिसधपम ग निस रिध प म गरिनिधसपम ग निरिध स प म। ग निध रिस प म गरिनिधपसम ग नि रिध प स म ग निध रिप स म गरिनिधपमस गनिरिधपमस गनिधरिपमस गसमपरिधनि ग स म प ध रि नि ग स म प ध नि रि ग म स प रिध नि । ग स प ध रिन । ग म स प ध नि रि ग म प स रि ध नि । ग म प स ध रि नि । ग म प स ध नि रि ग म प ध स रि नि । ग म प ध स नि रि गमपधरिसनि ग म प ध रि नि स । ग म.प ध नि रि स । ग म प ध नि स रि गंस म प रि नि ध । गंस म प नि रि ध । गंस म प नि ध रि ग म स प रि नि ध | ग म स प नि रि ध | ग म स प नि ध रि गमपसरिनिधागमपसनिरिधागमपसनिधरि गमप निरिस्धागमप निस्तिधागमप निस्धिर

ग	म	q	नि	रि	ध	स	ग	4	4	नि	ध	रि	स	ग	म	Ч	नि	ध	स	रि
ग	स	म	ध	रि	4	नि	ग	स	म	ध	q	रि	नि	ग	स	म	ध	q	नि	रि
ग	म	स	ध	रि	q	नि	ग	म	स	ध	q	रि	नि	ग	म	स	ध	Ч	नि	रि
ग	म	ध	स	रि	q	नि	ग	म	ধ	स	Ч	रि	नि	ग	म	ध	स	q	नि	रि
ग	म	ध	Ф	रि	स	नि	ग	म	ध	Ч	स	रि	नि	ग	म	ध	q	स	नि	रि
ग	म	ध	Ф	रि	नि	स	ग	म	ध	ч	नि	रि	स	ग	म	ध	Ч	नि	स	रि
ग	स	म	ध	रि	नि	Ч	ग	स	म	ध	नि	रि	q	ग	स	म	ध	नि	Ч	रि
ग	म	स	ध	रि	नि	Ч	ग	म	स	ध	नि	रि	q	ग	म	₹	ध	नि	Ч	रि
ग	म	ध	स	रि	नि	Ч	ग	म	ध	स	नि	रि	ч	ग	म	ध	स	नि	4	रि
ग	म	ध	नि	रि	स	Ч	ग	म	ध	नि	स	रि	Ч	ग	म	ध	नि	स	प	रि
						₹														
						Ч								1						
						ध														
						ध														
						ध														
						स								Ì						
			,			4	1													
														ł						
						प	1							1						
ग	म	नि	स	रि	ध	q	ग	म	नि	स	ध	रि	4	ग	म	नि	स	ध	q	रि
ग	म	नि	ध	रि	स	Ч	ग	म	नि	ध	स	रि	P	ग	म	नि	ध	स	4	रि

ग म निधरिप स ग म निधपरिस ग म निधप स रि ग.स.प म रिध नि ग स प म ध रिनि ग स प म ध नि रि ग प स म रिध नि ग प स म ध रिनि ग प स म ध नि रि ग प म स रिध नि । ग प म स ध रिनि । ग प म स ध नि रि ग..प मधि सिनिग प मधि सि निग प मधि सिनि रि ग प म ध रि नि स । ग प म ध नि रि स । ग प म ध नि स रि ग सपधरिम नि ग सपधम रिनि ग सपधम नि रि ग प स ध रिम नि ग प स ध म रिनि ग प स ध म नि रि ग प ध स रि म नि । ग प ध स म रि नि । ग प ध स म नि रि ग प ध म रि स नि । ग प ध म स रि नि । ग प ध म स नि रि ग प ध म रि नि स ग प ध म नि रि स ग प ध म नि स-रि ग स प ध रि नि म | ग स प ध नि रि म | ग स प ध नि म रि ग प स ध रि नि म । ग प स ध नि रि म । ग प स ध नि म रि ग प ध स रि नि म ग प ध स नि रि म ग प ध स नि म रि ग प ध नि रिस म ग प ध निस रिम ग प ध नि स म रि ग प ध नि रि म स ग प ध नि म रि स ग प ध नि म सःरि ग्रन्स प्रमिष्ट निधान सपमिनिधान सपमिन धारि ग-प-स-म रि नि ध ग प स म नि रि ध ग प स म नि धःरि ग्राच म स रिनिध गपम स निरिध गपम स निध रि गुप मानि रि स ध ग प म नि स रि ध ग प म नि स ध रि

गःपाम निरिध सागपम निध रिसोगपम निध सरि ग स प नि रि म ध ं ग स प नि म रि ध गसपनिमधरि ग प स नि रि म ध । ग प स नि म रि ध । ग प स नि म ध रि ग प नि स रि म ध ग प नि स म रि ध ग प निस म ध रि ग प निम रिस ध ग प निम स रिध ग प निंम स ध रि ग प निम रिध स ग प नि रिम ध स ग प नि म रि ध स गसपनिरिधम। गसपनिधरिम गसपनिधमरि ग प स-नि रिधम ग प स निध रिम ग प स निधम रि ग प नि स रिधम ग प नि स ध रिम ग प नि स ध म.रि ग प नि ध स रि म । ग प नि ध स म रि गपनिधरिसम ग-प-निधरिम स ग प नि ध म रि स । ग प नि ध म स रि ग स ध म प नि रि गसधमपरिनि ग स ध म रि प नि गधसमिरिपनि गधसमपरिनि गधसमपनि रि गःधमः स रिप नि । गधम स प रिनि । गधम स प नि रि गधमपस निरि गधमपरिसनि। गधमपसरिनि ग ध म प रि नि स गधम प नि रिस गधमप निसरि ग स ध प रिम नि ग स ध प म रिनि ग स ध प म नि रि गः ध सःप रिम नि । ग ध स प म रिनि । ग ध स प म नि रि गःध प स रिम नि । गधपसम रिनि । गधपसम निरि गःचःष म रिस नि | गधपम स रिनि | गधपम स नि रि

गधपम रिनिस । गधपम निरिस । गधपम निस रि गस ध प रिनिम। गस ध प नि रिम गसधानिमारि गधसपरिनिम गधसप निरिम गधसप निमरि गधपसरिनिम गधपस निरिमा गधपस निमरि गधपनि रिसम गधपनिसरिम। गधपनिसमरि गधपनि रिमस गधपनिमरिस गधपनिम सरि ग स ध म रि नि प ग स ध म नि रि प ग स ध म नि प रि गधसमि रिनिप गधसमिनि रिप गधसमिनि परि ग भ म स रिनिप ग ध म स नि रिप ग ध म स निप रि गधम निरिसप गधम निसरिप गधम निसपरि गधमनिरिपस गधम निपरिस गधम निपस रि गसधनिरिमप ग स ध नि म रि प ग स ध नि म प रि गधसनि रिमप गधसनिमरिप गधसनिमपरि ग ध नि स रि म प नि ध नि स म रि प न ध नि स म प रि गधनिम रिसप गधनिम सरिप गधनिम सपरि गधनिमरिपस गधनिमपरिस गधनिमपसरि ग स ध नि रि म प ग स ध नि म रि प ग स ध नि म प रि ग ध स नि रिपम। ग ध स निप रिम। ग ध स निपम रि गधनिसरिपम गधनिसपरिम गधनिसपमरि ंग ध निप रि स म । ग ध निप स रिम । ग ध निप स म रि

गंध निपरिम स । गंध निपम रिस । गंध निपम स रि ग स नि म रि प ध । ग स नि म प रि ध ग स नि म प ध रि ग निसम रिपध ग निसम परिध गनिसमपधरि ग निम स रिप ध ग निम स प रिध ग निम स प ध रि ग निम प रिस ध ग निम प स रिध ग निम य स ध रि ग निमप रिधस ग निमप धरिस ग निम प ध स रि ग स नि प रि म ध ग स नि प म रि ध ग स नि प म ध रि ग नि स प रि म ध । ग नि स प म रि ध । ग नि स प म ध रि ग निप स रिम ध ग निप स म रिध ग निपसमध रि ग निपम स रिध । ग निपम स ध रि ग निपम रिसध गनिपमरिधस गनिपमधरिस गिनिपमधस रि ग स निपधि रिम्। ग स निपध म रि ग स नि प रि ध म ग निसपधिर म। ग निसपधमिर गनिसपरिधम गनिपसरिधम ग निप स ध रिम | ग निप स ध म रि गिनिपधसरिम गिनिपधसमरि गनिपधरिसम ग निपध रिम संगनिप ध म रिसंग निप ध म संरि ग स नि म रि ध प । ग स नि म ध रि प । ग स नि म ध प रि ग निस म रिधप। ग निस म ध रिप। ग निस म ध प रि ग निम स रिधप गिनिम स ध रिप ग निम स ध प रि ग नि म भ रि प स । ग नि म भ प रि स । ग नि म भ प स रि

 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1
 1

म

म रि गं सं पं धं नि मं गं रि स पं धं नि मं गं स रि पं धं नि म रि स गं पं धं नि म स रि गं पं धं नि म स गं रि पं धं नि म रि स पं गं धं नि म स रि पं गं धं नि म स प रि गं धं नि म रि स पं धं गं नि म स रि पं धं नि म स प रि थं गं नि म रि स पं धं नि गं म स रि पं धं नि गं म स प रि थं नि गं म रि गं स प नि धं म गं रि स प नि धं म गं स रि पं नि धं म रि स गं प नि धं म स रि गं प नि धं म स गं रि प नि धं म रि स गं प नि धं म स रि गं प नि धं म स गं रि प नि धं

रिसपग निध । मसरिपग निध । मसपरिग निध म रिसप निगध म सरिप निगध म सपरिनिगध म रि स प नि ध ग | म स रि प नि ध ग | म स प रि नि ध ग म रिग स ध प नि । म ग रिस ध प नि । म ग स रिध प नि म स रिगध प नि म स ग रिध प नि म रिस ग ध प नि म रिस ध ग प नि म स रिध ग प नि म स ध रिग प नि म स रिध प ग नि म स ध रिप ग नि म रिस ध प ग नि म रिस ध प निग म स रिध प निग म स ध रिप निग म रिग स ध निप म ग रि स ध निप म ग स रिध निप म रिस ग ध निप म स रिग ध निप म स ग रि ध निप म रिस ध ग निप म स रिध ग निप म स ध रिग निप म रिस ध निगप म स रिध निगप म स ध रिनिगप म स ध रि नि प ग म रिस ध निप ग म स रिध निप ग म ग स रि नि प ध म रिग स निपध म ग रिस निपध म स ग रि नि प ध म रिस ग निपध म स रिग निपध म रिस निगप ध | म स रिनिगप ध | म स नि रिगप ध म रि स नि प ग ध | म स रि नि प ग ध | म स नि रि प ग ध म रि स नि प ध ग म स रि नि प ध ग म स नि रि प ध ग म रिग स निधप म ग रिस निधप म ग स रिनिधप म रिस ग निधप | म स रिग निधप | म स ग रिनिधप

संगीतसार.

म रिस निगधपमिस रिनिगधपमिस निरिगधप म रिस निधगप म स रि नि ध ग प म स नि रि ध ग प म रिस निध प ग म स रिनिध प ग म स नि रिध प ग म रिगप स ध नि म ग रिप स ध नि म गप रिस ध नि म रिपग स ध नि म प रिग स ध नि म प ग रि स ध नि म प रिस ग ध नि म प स रिग ध नि म रिप स ग ध नि म रिप स ध ग नि । म प रिस ध ग नि । म प स रिध ग नि म रिप स ध निग म प रिस ध निग म प स रिध निग म रिगप ध स नि म ग रिप ध स नि म गप रिध स नि म रिपग ध स नि म प रिगध स नि म प ग रिध स नि म रिपध ग स नि म प रिध ग स नि म प ध रिग स नि म रिप ध स ग नि म प रिध स ग नि म प ध रिस ग नि म रिपध स निगम परिध स निगम पध रिस निग म रिगप थ नि स म ग रिप थ नि स म ग प रि ध निं स म रिप ग ध नि स । म प रि ग ध नि स । म प ग रि ध नि सं म रिप ध ग नि स म प रिध ग नि स म प ध रिग नि स म रिप ध निग स | म प रिध निग स | म प ध रिनिंग स म रिप ध नि स ग म प रिध नि स ग म प ध रि नि संग म रिंग प स निध म ग रिप स निध म ग प रिस निध म रिपंग स निध म प रिंग स निध म पंग रिस निध म रिप स ग निध | म प रिस ग निध | म प स रिग निध म रिप स निगध म प रिस निगध म प स रिनिगध म रिप स निध ग म प रिस निध ग म प स रिनिध ग म रिगप निसंध म गरिप निसंध म गप रिनिसंध म रिपग निस्ध म परिग निस्ध म प ग रिनिस्ध म रिप निग स ध म प रिनिग स ध म प नि रिग स ध म रिप निस ग ध म प रिनिस ग ध म प निरिस ग ध म रिप नि स ध ग म प रि नि स ध ग म प नि रि स ध ग म रिगप निधस मगरिप निधस मगप रिनिधस म रिपग निध स म प रिग निध स म प ग रिनिध स म रिप निगध स | मप रिनिगध स | मप निरिगध स म रिप निध ग स म प रिनिध ग स म प नि रिध ग स म रिप निध स ग म प रि निध स ग म प नि रिध स ग म रिगध सप नि | मगरिध सप नि | मगध रिसप नि म रिध ग स प नि | म ध रिग स प नि | म ध ग रि स प नि म रिध स ग प नि | म ध रिस ग प नि | म ध स रिग प नि म रिध स प ग नि | मध रिस प ग नि | मध स रिप ग नि म रिध स प निग मध रिस प निग मध स रिप निग म रिगध प स नि | म ग रिध प स नि | म ग ध रिप स नि म रिध्गप स नि म ध रिगप स नि म ध ग रिप स नि

vuicīti v.

म रिध प ग स नि म ध रिप ग स नि । म ध प रिग स नि म रिध प स ग नि म ध रिप स ग नि म ध प रिस ग नि म रिध प स निग म ध रिप स निग म ध प रिस निग म ग ध रि प नि स म रिगधप निसंमगरिधप निस म रिधगप निसंमधिर गप निसंमधगरिप निस म रिध प ग नि स म ध रिप ग नि स म ध प रिग नि स म रिध प निग संमध रिप निग स मधपरिनिगस म रिध प निस ग म ध रिप निस ग म ध प रिनिस ग म रिगध स निप म गरिध स निप म गध रिस निप म रिध ग स निपंम ध रिग स निपंम ध ग रिस निप म रिध स ग निप म ध रिस ग निप म ध स रिग निप म रिध स निगप मध रिस निगप मध स रिनिगप म रिध स निपग मध रिस निपग मध स रिनिप ग म रिगध निसप म गरिध निसप मगधरिनिसप मधगरिनिसप म रिध ग निस प म ध रिग निस प म रिध निग सप मध रिनिग सप मध निरिग सप म रिध नि स ग प म ध रि नि स ग प म ध नि रि स ग प म रिध नि स प ग म ध रि नि स प ग म ध नि रि स प ग म रिगंध निप स म ग रिध निप स म ग ध रिनिप स म रिध ग निप स म ध रिग निप स म ध ग रिनिप स म रिध निगप स । मध रिनिगप स । मध निरिगप स मधि रिनिपगस मधिनि रिपगस म रिध नि प ग स म रिध नि प स ग मधिरिनिपसग मधिनिरिपसग म ग रि नि स प ध म रिग निस प ध म ग नि रि स प ध म रि नि ग स प ध म नि रि ग स प ध म नि ग रि स प ध म रिनि स ग प ध म नि रिस ग प ध म नि स रिग प ध म रि नि स प ग ध म नि रि स प ग ध म नि स रि प ग ध म रिनि स प ध ग म नि रिस प ध ग म नि स रिप ध ग म ग रिनिप स ध म ग नि रिप स ध म रिग निप स ध म रिनिग प स ध म निरिगप सध म निगरिप सध म रिनिप ग स ध म नि रिप ग स ध म निप रिग स ध म नि रिप स गध म निप रिस गध म रिनिप स ग ध म नि रिप स ध गः म निप रि स ध ग म रिनिप स ध ग म ग रि नि प ध स ं म ग नि रि प ध स म रिग निप ध स म रिनिग प ध स म नि रिगप ध स | म निगरिप ध स म रि नि प ग ध स म नि रि प ग ध स म नि प रि ग ध स म रिनिप ध स ग म नि रिप ध स ग म निप रिध स ग म रि नि प ध ग स म नि रि प ध ग स म नि प रि ध ग स म रिग नि स ध प म ग रिनि स ध प म ग नि रि स ध प म रिनि स गंध प म नि रिस गंध प म नि स रिग ध प म रि ज़ि स ग प ध | म नि रि स ग प ध | म नि स रि ग प ध म रि नि स ध ग प म नि रि स ध ग प म निस रिधगप म रि नि स ध प ग म नि रि स ध प ग म निस रिध प ग म ग नि रिध स प म ग रि नि ध स प म रिग निध स प म रि नि ग ध स प म नि रिगध सप म निगरिध स प म रिनिध गस प म नि रिध ग स प म निधरिग स प म रिनिध स ग प म निरिध सगप म निधरिस गप म रि नि ध स प ग म नि रिध स प ग म निधरिस प ग म रिग निध प स म ग रिनिध प स म ग नि रिध प स म रि नि ग ध प स म नि रिगधप स | म निगरिधप स म नि रिधगप स म निधरिगप स म रि नि ध ग प स म रि नि ध प ग स म नि रि ध प ग स म नि ध रि प ग स म रि नि ध प स ग म नि रि ध प स ग म नि ध रि प स ग म ग स प रि ध नि । म ग स प ध रि नि । म ग स प ध नि रि म स ग प रि ध नि | म स ग प ध रि नि | म स ग प ध नि रि म स प ग रि ध नि | म स प ग ध रि नि | म स प ग ध नि रि म स प ध रि ग नि म स प ध ग रि नि म स प ध ग रि म स प ध रि नि ग म स प ध नि रि ग म स प ध नि ग रि म ग स प रि नि ध म ग स प नि रि ध म ग स प नि ध रि म स म प रि नि ध म स म प नि रि ध म स ग म ,नि ध रि

म स प ग रि नि ध | म स प ग नि रि ध | म स प ग नि ध रि म स प नि रि ग ध म स प नि ग रि ध म स प नि ग ध रि म स प नि रि ध ग म स प नि ध रि ग म स प नि ध ग रि म ग स ध रिप नि म ग स ध प रिनि म ग स ध प नि रि म स ग ध रिप नि | म स ग ध प रि नि | म स ग ध प नि रि म स ध ग रिप नि म स ध ग प रिनि म स ध ग प नि रि म स ध प रि ग नि म स ध प ग रि नि म स ध प ग नि रि म स ध प रि नि ग म स ध प नि रि ग म स ध प नि ग रि म ग स ध रि नि प म ग स ध नि रि प म ग स ध नि प रि म स ग ध रि नि प म स ग ध नि रि प म स ग ध नि प रि म स ध ग रि नि प म स ध ग नि रि प म स ध ग नि प रि म स ध नि रिगप म स ध निगरिप म स ध निगप रि म स ध नि रिपग म स ध निप रिग म स ध निपग रि म ग स नि रि प थ | म ग स नि प रि ध म ग स नि प ध रि म स ग नि रि प ध म स ग नि प रि ध । म स ग नि प ध रि म स निगरिप ध म स निगप रिध म स निगप ध रि म स निंप रिगध म स निपग रिध म स निपग ध रि म स नि प रिध ग म स नि प ध रि ग म स नि प ध ग रि म ग स नि रि धं प म ग स नि ध रि प म ग स नि ध प रि म स ग नि रि ध प म स ग नि ध रि प म स ग नि ध प रि

म स निगरिधप | मस निगधरिप | मस निगधप रै म स नि ध रि ग प म स नि ध ग रि प म स नि ध ग प रि म स नि ध रि प ग म स नि ध प रि ग म स नि ध प ग रि मगप स रिध निमगप स ध रिनि मगप स ध निरि म प ग स रिध नि म प ग स ध रिनि म प ग स ध नि रि मंप स ग रिध नि । म प स ग ध रिन । म प स ग ध नि रि म प स ध रिग नि । म प स ध ग रि नि । म प स ध ग नि रि म पंस ध रिनिग म प स ध नि रिग म प स ध नि ग रि म ग प ध रि स नि | म ग प ध स रि नि | म ग प ध स नि रि म प ग ध स रि नि । म प ग ध स नि रि म प ग ध रि स नि म प ध ग रि स नि म प ध ग स रि नि म प ध ग स नि रि म प ध स रि ग नि म प ध स ग रि नि । म प ध स ग नि रि म प ध स नि रिग म प ध स निग रि म प ध स रि नि ग म ग प ध रि नि स | म ग प ध नि रि स | म ग प ध नि स रि म प ग ध रि नि स । म प ग ध नि रि स । म प ग ध नि स रि म प ध ग नि स रि म प ध ग रि नि स म प ध ग नि रि स म प् ध नि रि ग स म प ध नि ग रि स म प ध नि ग स रि म प ध नि रि स ग म प ध नि स रि ग म प ध नि स ग रि म ग प स रि नि ध म ग प स नि रि ध म ग प स नि ध रि म प ग स रि नि ध म प ग स नि रि ध म प ग स नि ध रि

म प स ग रि नि भ | म प स ग नि रि भ | म प स ग नि भ रि म प ्त नि रि ग ध | म प त नि ग रि ध | म प त , नि ग ध रि म प स नि रि ध ग म प स नि ध रि ग म प स , नि ध ग रि म ग प नि रि स ध म ग प नि स रि ध म ग प नि स ध रि म प ग नि रि स ध म प ग नि स रि ध म प ग नि स ध रि म प नि ग रि स ध म प नि ग स रि ध म प.नि ग स ध रि म•प नि स रि ग ध म प नि स ग रि ध म प नि स ग ध रि म प नि स रिध ग म प नि स ध रिग म प नि स ध ग रि मगप निरिध स मगप निध रिसं मगप निध स रि मैं पग नि रिध स म पग निध रिस म पग निध स रि म प नि ग रि ध स म प नि ग ध रि स म प नि ग ध स रि म प नि ध रि ग स | म प नि ध ग रि स | म प नि ध ग स रि म प नि ध रि स ग म प नि ध स रि ग म प नि ध स ग रि मगधसरिप निमगधसपरि निमगधस्प निरि मधगसरिप नि | मधगसप रिनि | मधगसप नि रि मध स ग रिप नि । मध स ग प रिनि । मध स ग प् नि रि मध सपरिग नि । मध सपगरि नि । मध सपग नि रि म भ त प रि नि ग म भ त प नि रि ग म भ त प नि ग रि मगधपरिसानि मगधपसरिनि मगुधपसनि रि मधगपरिसानि मधगपसरिनि मधगपत्ति (रि

15

मधपगरिस नि । मधपगस रिनि। मधपगस नि रि मधपसरिगनि । मधपसगरिनि । मधपसगनि रि मध प स रि नि ग मध प स नि रिग मध प स निगरि म ग ध प रि नि स म ग ध प नि रि स म ग ध प नि स रि मधगपरि निसंमधगपनि रिसंमधगपनि सरि मधपगरिनिस मधपगनि रिस मधपगनि स रि मधप नि रिग स मधप निगरि स मधप निग स रि मधप नि रिसग मधप निस रिगमधप निसगरि म ग ध स रि नि प मिं ग ध स नि रि प म ग ध स नि प रि मधगस रिनिप मधगस निरिप मधगस निपरि मध स गरिनिप मधं स गनिरिप मध स गनिपरि मध स नि रिगप मध स निगरिप मध स निगप रि मध स नि रिप ग मध स निप रिग मध स निप ग रि मग भ नि रिसप मग भ निस रिप मग भ निस प रि मधगनि रिसप मधगनि सरिप मधगनि सपरि मधनिगरिसपमधनिगसरिपमधनिगसपरि मधनिसरिगपमधनिसगरिपमधनिसगपरि मधनि सरिपगमधनि सपरिगमधनि सपगरि म ग ध नि रिप स म ग ध निप रि स म ग ध निप स रि मधगनिरिप संमधगनिप रिस्न मधगनिप सरि

मध निगरिप संमध निगप रिसंमध निगप संरि मधनिपरिगत्त। मधनिपगरिस मधनिपगसरि मधनिपरिसग मधनिपसरिग मधनिपसगरि म ग नि स रि प ध म ग नि स प रि ध म ग नि स प ध रि म निग स रिप ध म निग स प रिध म निग स प ध रि म नि स ग रि प ध म नि स ग प रि ध म नि स ग प ध रि म नि स प रि ग ध म नि स प ग रि ध म नि स प ग ध रि म नि स प रि ध ग म नि स प ध रि ग म नि स प ध ग रि म ग नि प रि स ध म ग नि प स रि ध म ग नि प स ध रि म निग प रिस ध म निग प स रिध म निग प स ध रि म निपगरिसध म निपगस रिध म निपगस ध रि म निप स रिगध म निप स ग रिध म निप स ग ध रि म निप स रिध ग म निप स ध रिग म निप स ध ग रि म ग नि प रि ध स म ग नि प ध रि स म ग नि प ध स रि म निगपरिध स म निगपध रिस म निगप ध स रि म निपगरिध स म निपगध रिस म निपगध स रि म निषधिर गस्म निषधगरिस मिनिषधगसि म निप ध रि स ग म निप ध स रिग म निप ध स ग रि म ग नि स रि ध प म ग नि स ध रि प म ग नि स ध प रि म निग स रि ध प मिनिग स ध रिप मिनिग स ध प रि में निं से में दि थे पा में निं सं मं धं दें पं म नि सं म ध पें दि में निंसी थे रिंगी वें में निंसी थ गरिंप म निंस थ गप रिं में निंसीं धंरिये गंमें निंसे धंपरिगंम निसंधंप गरि में गं नि धं रि सं पं मं गं नि धं स रि प म ग नि ध स प रि में निर्मे धें रिसंपं मं निर्मध सरिप म निगध सपरि में निंधं में रिसंपं में निंध गस रिप म निध गस परि में निंधें से रिगं पं मं निंधं सगरिप म निध सगप रि में निर्ध से रिपंग में निध सपरिग म निध सपग रि में गं निंधं रिपं सें मंगं निध परिस म ग निध प स रि में निर्मे धंरिप सं म निर्माध परिस म निराध प स रि में निर्धि में रिपर्स में निध गंप रिस म निध गप स रि में निर्धे पे रिगंसी म निर्धे प ग रिस म नि ध प ग स रि में निध पें रिसे गें में निध पस रिगम निध पस गरि

4

में हि में में से में नि प में हि में स भ नि प म म हि स भ नि में हि में में से भे नि प में हि स म भ नि प म स हि म भ नि में हि में से भे नि प में हि स म भ नि प म स हि म भ नि में हि में से भे नि प में हि स भ म नि प म स हि भ म नि में हि में से भे नि प म हि से भे नि म प म स हि भ म नि वं हैं गंग स निध | पगरिम स निध | पगम रिस निध वं रियंग स निध प म रिग स निध प म ग रिस निध वं हिं में संग निंध प म रिस ग नि ध प म सं रिग नि ध वं विसंस निगंध पमरिस निगध पमस रिनिगध वं हिं मं से निध ग प म रिस निध ग प म स रिनि ध ग वं रिंगमध स निं पगरिमध स नि पगम रिध स नि व रियंग ध स नि | प म रिग ध स नि | प म ग रि ध स नि वं रिमध ग स नि प म रिध ग स नि प म ध रिग स नि परिमधसगनि पमरिधसगनि पमधरिसगनि पंरिमधं स निग प म रिध स निग प म ध रिस निग पंरिगमं ध निस पगरिम ध निस पगम रिध निस प रिमंग ध नि स प म रिग ध नि स प म ग रि ध नि स पं रिमंध ग निस प म रिध ग निस प म घरिंग निस परिमंघ निग स प म रिध निग स प म घ रिनिग स परिमंघ निस्म पम रिध निस्म पमध रिनिस्म परिगम निसंघ पगरिय निसंघ पगम रिनिसंघ प रिमग निस्ध पमरिग निस्ध पमगरिनिस्थ परिमिनि गंस घं पमरिनिगस घ पमनि रिगस ध परिमंति संगध पमरिति सगध पमति रिसगध परिमंति संघग पमरिति संघग पमति रिसंघण

परिगम निधस । पगरिम निधस । पगम रिनिध स परिमग निध स पमरिग निध स पम ग रिनिध स परिम निगध स पम रिनिगध स पम निरिगध स परिम निधगस पमरिनिधगस पमनिरिधगस परिम निध स ग पम रिनिध स ग पम नि रिगध स परिगसमधनि पगरिसमधनि पगसरिमधनि परिसगमधनि पसरिगमधनि पसगरिमधनि परिसमगधनि पसरिमगधनि पसमरिगधनि परिसमधगनि पसरिमधगनि पसमरिधगनि परिसम्धनिग पसरिमधनिग पसमरिधनिग परिगस ध म नि प गरिसे ध म नि प गस रि ध म नि परिसगधमनि पसरिगधमनि पसगरिधमनि परिसधगमनि पसरिधगमनि पसधरिगमनि परिसधमगनि । पसरिधमगनि । पसधरिमगनि परिसधम निग पसरिधम निग पस धरिम निग परिग स ध नि म प ग रि स ध नि म प ग स रि ध नि म ष रिस ग ध निम प स रिग ध निम प स ग रिध निम परिसधगनिम पसरिधगनिम। पसधरिगनिम परिसंध निगम पसरिध निगम पसंध रिनिगम य रिस ध निम ग प स रिध निम ग प स ध रिनिम ग परिग स म नि घ । प ग रि स म नि घ । प ग स रि म नि घ पारिसागम निधापस रिगम निधापस गरिम निध परिसमग निध प स रिमग निध प स म रिग निध परिसमिनिगध पसिरमिनिगध पसमिरिनिगध परिसम निधग पसरिम निधग पसम रिनिधग परिगत्त निमध पगरित्त निमध पगत्त रिनिमध प रिस ग नि म ध प स रिग नि म ध प स ग रिनि म ध परिसानिगमधापसरिनिगमधापसनिरिगमध परिसानि गांध पसारिनि गगंध पसानि रिमगंध परिसानिमधगपसरिनिमधगपसनिरिमधग परिगत्त निधम पगरित्त निधम पगत्त रिनिधम परिसगनिधम पसरिगनिधम पसगरिनिधम परिसानिगधम। पसरिनिगधम। पसानिरिगधम परिस्त निधाम पसरिनिधाम पस्ति रिधाम परिस्नि भिम्म । पसरिनिधमग पसनि रिधम ग परिगधमसनि पगरिधमसनि पगधरिमसनि परिधगम स नि । पधरिगम स नि । पधगरिग स नि परिधमगत्ति | पधरिमगत्ति | पधमरिगत्ति परिधम सगनि पधि समागनि पधम रिसगनि परिधम स निग प भ रिम स निग प ध म रिस निग परिगधत्तम नि | पगरिधत्तम नि | पगधरित्तम लि परिधगः समनि पधरिगसमनि पधगरिसमनि परिध स गम नि पधिर स गम नि पध स रिगम नि परिध समग्निपधिर समग्निपध सरिमग्नि परिध समिनि ग पधि समिनि ग पधि सि रिमिनि ग परिगध स निम पगरिध स निम पगध रिस निम परिधगसनिम। पधरिगसनिम। पधगरिसनिम परिधसगनिम पधरिसगनिम पधसरिगनिम परिध स निगम। पधिर स निगम। पध स रिनिगम परिध स निमग पधिर स निमग पधि स रिनिमग परिगधन निसंपगरिधन निसंपगधरिम निस परिधगम निस्पिधित गम निस्पिधगरिम निस परिधमगनिस पधरिमगनिस पधमरिगनिस परिधम निगस पधरिम निगस पधम रिनिगस परिधम निसग पधरिम निसग पधम रिनिसग परिगधनिमस पगरिधनिमस पगधरिनिस स परिभगनि मस पभरिगनि मस पभगरि नि.म.स परिभानिगमस पभरिनिगमस पभनि,रि.गः,मः,स परिधनि ग स प धरिनि ग स प धनि ,रि, म ,ग ,स प रि भ नि म स ग प भ रि नि म स ग प भ नि रि म स ग परिगधनिसम। पगरिधनिसम। पगधरिनिसम प रिध ग निस म । प ध रिग निस म । प ध ग रिनिस म परिधनिगसम्पर्धितिगसम्पर्धनिरिगसम् परिधनिसगम। पधरिनिसगम। पधनि रिसगमैं परिधनिसमग पधिरिनिसमग पधिनि रिसमग परिग निम स घ पगरिनिम स घ पगनिरिम स ध परिनिगमस थंप निरिगम स थः प निगरिम स ध प रि नि म ग स ध प नि रि म ग स ध प नि म रि स ग ध प रि नि म स ग ध प नि रि म स ग ध प नि म रि स ग ध परिनिम स ध ग पिनि रिम स ध ग पिनि म रिस ध ग परिग निसमध पगरिनिसमध पगनिरिसमध परिनिगसमध पनिरिगसमध पनिगरिसमध परिनिसगमध पिनिरिसगमध पिनिसरिगमध परिनिसमगध पिनिरिसमगध पिनिसं रिमगध परिनिसमधगः पनिरिसमधगः पनिसिगिम ग परिग निसधम पगरिनिसधम पगनिरिसधम परिनिगसधम। पनिरिगसधम। पनिगरिसधम परिनिसगधमापनिरिसगधमापनिसरिगधम परिनिसधगम पिनिरिसधगम पिनिसरिधगम परिनिस्धमग पनि "रिस्धमग पनिस रिधमग

90

परिग निमध स । पगरि निमध स । पगिनि रिमध स परिनिगमधस्य निरिगमधस्य निगरिमधस परिनिमगधसः पनिरिमगधसः पनिमरिगधस परिनिमधगस पनिरिमधगस पनिमरिधगस परिनिमधसग। पनिरिमधसग। पनिमरिधसग परिग निधम सापगरि निधम सापग निरिधम स परिनिगधन सापिनिरिगधन सापिनिगरिधन स परिनिधगम संपनि रिधगम सःपनिधरिगम स परिनिधमगसंपनिरिधमगसंपनिधरिमगस परिनिधम सग पनि रिधम सग पनिधरिम सग परिग निध समापगरि निध समापग निरिध सम परिनिगधसम पिनिरिगधसम पिनिगरिधसम परिनिधगसम्पनिरिधगसम्पनिधरिगसम परिनिधसगम पनिरिधसगम पनिधरिसगम परिनिधसमगापिनिरिधसमगापिनिधरिसमग पगम सारिध नि | पगम साध रिनि ! पगम साध निरि पमग स रिध निपम ग स ध रिनिपम ग स ध नि रि प म स ग रि ध नि । प म स ग ध नि रि । प म स ग नि ध रि प म स ध रिग नि । प म स ध ग रि नि । प म स ध ग नि रि प म स ध रि नि ग प म स ध नि रि ग प म स ध नि ग रि पगम स रिनिध पग स निरिध पग म स निध रि पमगसरिनिध। पमगसनिरिध। पमगसनिधरि प म स ग रि नि ध | प म स ग नि रि ध | प म स ग नि ध रि प म स नि रिगध | प म स निगरिध | प म स निगध रि प म स नि रिधग । प म स निधिग । प म स निधगरि पगमधरिस नि।पगमधसरिनि।पगमधसिरि पमगधरिस निःपमगधसरिनिःपमगधसनिरि पमधगरिस निष्पमधगस रिनिष्पमधगस निरि प म ध स रिग नि प म घ स ग रिनि । प म ध स ग नि रि प म घ स रि नि ग प म घ स नि रि ग प म घ स नि ग रि पगमधिरिनिस पगमधिनि रिस पगमधिनि सिर प म ग ध रि नि स प म ग ध नि रि स प म ग ध नि स रि प म ध ग रि नि स | प म ध ग नि रि स | प म ध ग नि स रि पंमधनि रिगस पमधनिगरिस पमधनिगसरि प म ध नि रि स ग | प म ध नि स रि ग | प म ध नि स ग रि पगम निरिस ध । पगम निस रिध । पगम निस ध रि प म ग नि रि स ध | प म ग नि स रि ध | प म ग नि स ध रि प ग नि ग रि स ध | प म नि ग स रि ध | प म नि ग स ध रि प म नि स रि ग ध | प म नि स ग रि ध | प म नि स ग ध रि प्रमानिस् रिधग पमनिसधरिग पमनिसधगरि

संगीतसार.

पंगम निरिध संपगम निधरि स| पगम निभ स रि ब म ग नि रिघ संपम ग निघ रिस पम ग निघ स रि प म नि ग रि ध स | प म नि ग ध रि स | प म नि ग ध स रि प म नि ध रि ग स प म नि ध ग रि स प म नि ध ग स रि प म नि ध रि स ग प म नि ध स रि ग प म नि ध स ग रि प ग स म रि ध नि 'प ग स म ध रि नि | प ग स म ध नि रि प स ग म रि ध नि प स ग म ध रि नि प स ग म ध नि रि पसमगरिधनिषसमगधिरिनिषसमगधिनिरि पसमधिरगनिपसमधगरिनिपसमधगनिरि पसमधितिगापसमधिनिरगोपसमधिनिगरि प ग स ध रिम नि | प ग स ध म रि नि | प ग स ध म नि रि प स ग ध रिम नि प स ग ध म रिन प स ग ध म नि रि प स ध ग रिम नि प स ध ग म रिनि प स ध ग म नि रि प स ध म रिग नि । प स ध म ग रि नि । प स ध म ग नि रि प स ध म रि नि ग प स ध म नि रि ग प स ध म नि ग रि प ग स ध रि नि म प ग स ध नि रि म प ग स ध नि म रि प स ग ध रि नि म प स ग ध नि रि म प स ग ध नि म रि प स ध ग रि नि म । प स ध ग नि रि म । प स ध ग नि म रि प स ध नि रिगम प स ध निगरिम प स ध निगम रि **प**ंस भ निरिम गंप संध निम रिगंप संध निम गंरि

प ग स म रि नि ध । प ग स म नि रि ध । प ग स म नि ध रि प स ग म रि नि ध | प स ग म नि रि ध | प स ग म नि ध रि प स म ग रि नि ध प स म ग नि रि ध प स म ग नि ध रि पसम निरिगध पसम निगरिध पसम निगध रि पसम निरिधग पसम निधरिग पसम निधग हि पग स नि रिमध पग स निम रिध पग स निमध रि प स ग नि रि म ध प स ग नि म रि ध प स ग नि म ध रि प स निगरिम ध प स निगम रिध प स निगम ध रि प स नि म रि ग ध । प स नि म ग रि ध । प स नि म ग ध रि पंस निमरिध ग। पस निमध रिग। पस निमध गरि प ग स नि रिध म । प ग स निध रिम । प ग स निध म रि प स ग नि रिधम प स ग निध रिम प स ग निधम रि प स निगरिधम प स निगधरिम। प स निगधमरि प स नि ध रि ग म प स नि ध ग रि म प स नि ध ग म रि प स नि ध रि म ग प स नि ध म रि ग प स नि ध म ग रि पगधम रिस नि पगधम स रिनि पगधम स नि रि प ध ग म रिस नि प ध ग म स रिनि प ध ग म स नि रि प ध म ग रि स नि प ध म ग स रि नि प ध म ग स नि रि प ध म स रिग नि प ध म स ग रिनि प ध म स ग नि रि प ध म स रि नि ग प ध म स नि रि ग प ध म स नि ग रि पंगधसरिम निःप गधसम रिनःप गधसम निर प ध ग स रिम नि प ध ग स म रिनि प ध ग स म नि रि प-ध स ग रिम नि प ध स ग म रिनि प ध स ग म नि रि पध समगरिनि पध समगनि रि प-ध स म रिग नि प ध स म नि रि ग प ध स म नि ग रि प ध स म रि नि ग प गधसरिनिम पगधस निरिम पगधस निमरि पधगस रिनिम पधगस निरिम पधगस निमरि प ध स ग नि रि म। प ध स ग नि म रि प ध स ग रि नि म प ध स नि रिगम प य स निगरिम प ध स निगम रि पध स निमरिग पध स निमगरि प ध स नि रि म ग पगधमरिनिस पगधम निरिस पगधम निसरि पधगम निरिसापधगम निसरि प ध ग म रि नि स प ध म ग रि नि स पधमग निरिस पधमग निसरि पधमनिगरिसंपधमनिगसरि पाधमनि रिगस पधम निस रिग पधम निस गरि पःधाम निरिस ग पगधनिरिमस पगधनिमरिस पगधनिमसरि पधगनिमरिस पधगनिम स.रि पधगनि रिमस प ध निगरिम स प ध निगम रिस प ध निगम स रि पुष निम रिग स पध निमंग रिस पध निम ग स रि पर्ध निम रिस ग प ध निम स रिग प ध निम स ग रि

पगधनि रिसम। पगधनि सरिम। पगधनि समरि पधगनि रिसम। पधगनि सरिम। पधगनि समरि प ध नि ग रि स म प ध नि ग स रि म प ध नि ग स म रि प ध नि स रि ग म प ध नि स ग रि म प ध नि स ग म रि प ध नि स रि म ग प ध नि स म रि ग प ध नि स म ग रि प ग नि म रि स ध प ग नि म स रि ध प ग नि म स ध रि प निगम रिस धंप निगम स रिधंप निगम स ध रि प निमगरिस ध प निमगस रिध प निमगस ध रि प नि म स रि ग ध प नि म स ग रि ध प नि म स ग ध रि प नि म स रिध ग प नि म स ध रिग प नि म स ध ग रि पगनिसरिमध पगनिसमरिध पगनिसमधरि प निग स रिमध प निग स म रिधंप निग स म ध रि प नि स ग रि म ध प नि स ग म रि ध प नि स ग म ध रि प निसम रिगध प निसमग रिध प निसमगधरि प निसम रिधग प निसम ध रिगप निसम ध गरि पग निस रिधम पग निस ध रिम पग निस ध म रि प निग स रिधम प निग स ध रिम प निग स ध म रि प नि स ग रि ध म | प नि स ग ध रि म | प नि स ग ध म रि प निसंध रिगम प निसंध गरिम प निसंध गम रि प नि स ध रि म ग प नि स ध म रि ग प नि स ध म न रि प ग नि म रि ध स प ग नि म ध रि स प ग नि म ध स रि प निगम रिध स प निगम ध रिसंप निगम ध स रि प निमगरिध संप निमगध रिसंप निमगध स रि प निमध रिग संप निमध गरिस प निमध गस रि प निमध रिसग प निमध सरिग प निमध सगरि पग निध रिम स पग निध म रिस पग निध म स रि प निगध रिम स प निगध म रिस प निगध म स रि प निधारिम साप निधाम रिसाप निधाम सारि प निधम रिग स प निधम गरिस प निधम गस रि प निधम रिसग प निधम सरिग प निधम सगरि प ग नि ध रि स म प ग नि ध स रि म प ग नि ध स म रि प निगध रिसम प निगध स रिम प निगध स म रि प निधगरिसम। प निधगसरिम। प निधगस मरि प निध स रिगम। प निध स ग रिम। प निध स ग ब रि प निध स रिमग प निध स म रिग। प निध स म ग रि

ध

ध रिगम प स नि ध ग रिम प स नि ध ग म रिप स नि **ध रिग प स** नि ध म रिग प स नि ध म ग रिप स नि **ध रिग प ग स** नि ध म रिप ग स नि ध म प रिग स नि धरिमपसगनि। धमरिपसगनि धमपरिसगनि ध रिमप स निगंध म रिप स निगंध म प रिस निग धरिगमपनिसंधगरिमपनिसंधगमरिपनिस धारिम गप निसंधिम रिगप निसंधिम गरिप निस ध रिम प ग नि सं ध म रिप ग नि सं ध म प रिग नि स रिमप निगस ध मरिप निगस ध मप रिनिग स धरिमपनिसगंधमरिपनिसगंधमपरिनिसग ध रिगम सप नि धिगरिम सप नि धगम रिसप नि ध रिम ग स प नि ध म रिग स प नि ध म ग रि स प नि ध रिम स ग प नि ध म रिस ग प नि ध म स रिग प नि ंध मसरिप गनि धरिम सपगनि धमरिसपगनि ध रिम स प नि ग ध म रिस प नि ग ध म स रिप नि ग ध रिगम स निप धिगरिम स निप धिगम रिस निप ध रिमग स निप ध म रिग स निप ध म ग रिस निप ध रिम स ग निप ध म रिस ग निप ध म स रिग निप ध रिम स निगप ध म रिस निगप ध म स रिनिगप ध रिम स निपग ध म रिस निपग ध म स रिनिपग धगम रिनिप स धरिगम निपस धगरिम निपस ध रिमग निप स । ध म रिग निप स । ध म ग रिनिप स थ रिम निगप संधिम रिनिगप संधिम निरिगप स

संगीतसार.

ध रिम निप ग स । ध म रिनिप ग स । ध म नि रिप ग स धरिम निपस गाधम रिनिपस ग ध म नि रि प स ग धरिगमनिसपंधगरिमनिसप ध ग म रि नि स प ध रिमग निसप ध म रिग निसप ध म ग रिनिस प धिरिम निगसप धमरिनिगसप धमनि रिगसप ध रिम निस गप ध म रिनिस गप ध म निरिस गप धरिम निसपगंधम रिनिसपगंधम निरिसपग धरिगपमसनिधगरिपमसनिधगपरिमसनि धरिपगम स नि । धपरिगम स नि । धपगरिम स नि धरिपमगसनि धिपरिमगसनि धिपमरिगसनि धरिपम सगनि। धपरिम सगनि। धपम रिसगनि धरिपमसनिग धपरिमसनिग धपमरिसनिग ध रिगप स म नि । ध ग रिप स म नि । ध ग प रि स म नि ध रिपगसम नि ध प रिग स म नि ध प ग रिस म नि धरिप स ग म नि ध प रि स ग म नि । ध प स रि ग म नि धरिपसमग नि । धपरिसमग नि । धपस रिमग नि धरिप स म निग धपरि स म निग धप स रिम निग धरिगपस निमाध गरिपस निमाध गपरिस निम ध रिपग स निम ध प रिग स निम ध प ग रि स निम धरिप स ग नि म धिप रिस ग नि म धिप स रिग नि म

ध रिप स निगम। धपरिस निगम। धपस रिनिगम ध रिप स निम ग ध प रिस निम ग ध प स रिनिम ग धरिगपम निस्थिगरिपम निस्थिगपरिम निस ध रिपगम निसंध परिगम निसंध पगरिम निस ध रिपम ग नि संधिप रिमग निसंध प म रिग निस ध रिपम निग संधिप रिम निग संधिप म रिनिग स धरिपम निसग धपरिम निसग धपम रिनिसग ध रिगप निम संधगरिप निम संधगप रिनिम स धरिपगनिम संधपरिगनिम संधपगरिनिम स धरिप निगम स धपरि निगम संधिप निरिगम स धरिप निमग संधपरि निमग संधप निरिमग स धरिप निम स ग धपरि निम स ग धपनि रिम स ग ध रिगप निसम धगरिप निसम धगप रिनिसम ध रिप ग नि स म ध प रिग नि स म ध प ग रि नि स म ध रिप निग स म ध प रिनिग स म ध प रिनिग स म धरिप निसगम्धपरिनिसगम् धपनिरिसगम थ रिप निसमग्धिप रिनिसमग्धिप निरिसमग ध रिग स म प नि । ध ग रि स म प नि । ध ग स रि म प नि धि रिस गमप नि । धिस रिगमप नि । धिस गरिमप नि धरिसमगपनि। धसरिमगपनि। धसमरिगपनि

ध रिसमप ग नि । ध स रिमप ग नि । ध स म रिप ग नि ध रिसमप निग ध स रिमप निग ध स म रिप निग धरिग सपम निधिग रिसपम निधिग स रिपम नि ध रिसगपम निध स रिगपम निध स गरिपम नि ध रिसपगम निध्य सरिपगम निध सपरिगम नि ध रिसपमग निध स रिपमग निध स प रिमग नि धरिसपम निग धसरिपम निग धसपरिम निग धरिग सप निम धगरिसप निम धगसरिप निम ध रिस ग प नि मं ध स रिग प नि म ध स ग रिप नि म ध रिसप ग निम ध स रिप ग निम ध स प रिग निम ध रिसप निगम ध स रिप निगम ध स प रिनिगम ध रिसप निमगंध सरिप निमग ध सप रिनिमग धरिगसम निप धगरिसम निप धगस रिम निप धरिसगम निप्धसरिगम निपंधसगरिम निप ध रि स म ग नि प ध स रि म ग नि प ध स म रि ग नि प ध रि स म नि ग प ध स रि म नि ग प ध स म रि नि ग प ध रि स म नि प ग ध स रि म नि प ग ध स म रि नि प ग ध रिग स नि म प ध ग रि स नि म प ध ग स रि नि म प ध रि स ग नि म प ध स रि ग नि म प ध स ग रि नि म प ध रिसं निगमप ध स रिनिगमप ध स नि रिगमप ध रिस निम गप धिस रिनिम गप धिस नि रिम गप ध स रिनि म प ग ध स रिनि म प ग ध रिस निम प ग ध रिग स निपम ध ग रिस निपम ध ग स रिनिपम ध रिस ग निप म ध स रिग निप म ध स ग रिनिप म ध रिस निगपम ध स रिनिगपम ध स निरिगपम ध रिस निपगम ध स रिनिपगम ध स निरिपगम ध रिस निपम गांध स रिनिपम गांध स निरिपम ग ध रिग निगप संधगरि निगप संधगनि रिगप स ध रिनिगमप संधिनिरिगमप संधिनिगरिमप स ध रिनि म ग प स ध नि रिम ग प स ध नि म रिग प स ध रिनिम प ग स । ध नि रिम प ग स । ध निम रिप ग स ध रिनिम प स गांध नि रिम प स गांध निम रिप स ग धिरिग निपम संधिग रिनिपम संधिग निरिपम स ध रिनिग प म संध नि रिग प म संध निग रिप म स ध रिनिप ग म स ध नि रिप ग म स ध निप रिग म स ध रिनिप म ग स । ध नि रिप म ग स । ध निप रिम ग स ध रिनिपम सग ध निरिपम सग ध निपरिम सग धिरिग निपसम। धगरिनिपसम। धगनिरिपसम ध रिनिग प स म धिनि रिग प स म धिनिग रिप स म ध रिनिपग सम्धिनि रिपग सम्धिनिपरिग सम

ध रिनिप सगम। धनिरिप सगम। धनिप रिसगम ध रिनिप समग ध निरिप समग ध निप रिसमग ध रिग निम सप धगरिनिम सप धगनि रिम सप ध रिनिगम सपंध निरिगम सप्ध निगरिम सप ध रिनि म ग स प ध नि रि म ग स प ध नि म रि ग स प ध रिनिम सगप ध निरिम सगप ध निम रिस गप ध रिनिम सपग ध निरिम सपग ध निम रिसपग ध रिग निसमप धगरिनिसमप धगनि रिसमप ध रिनिग समपंध निरिग समपंध निगरिस मप ध रिनि सगमप यनि रिसगमप ध निसरिगमप ध रिनिसमगप धनिरिसमगप। धनिसरिमगप ध रिनि समपगंध निरिसमपगंध निसरिमपग ध रिग नि स प म ध ग रि नि स प म ध ग नि रि स प म धिरिनिगसपम धिनिरिगसपम धिनिगरिसपम ध रिनि सगपम ध निरिसगपम ध निसरिगपम ध रिनि स प ग म ध नि रिस प ग म ध नि स रिप ग म ध रिनिस प म ग ध नि रि स प म ग ध नि स रि प म ग ध ग म प रि स नि धगमपसरिनिधिगमपसनिरि ध म ग प रि स नि । ध म ग प स रि नि । ध म ग प स नि रि ध म प ग रि स नि । ध म प ग स रि नि । ध म प ग स नि रि ध म प स रि ग नि । ध म प स ग रि नि । ध म प स ग नि रि ध म प स रि नि ग ध म प स नि रि ग ध म प स नि ग रि ध ग म प रि नि स ध ग म प नि रि स ध ग म प नि स रि ध म ग प रि नि स ध म ग प नि रि स ध म ग प नि स रि ध म प ग रि नि सं ध म प ग नि रि सं ध म प ग नि स रि ध म प नि रि ग संध म प नि ग रि संध म प नि ग स रि ध म प नि रि स ग ध म प नि स रि ग ध म प नि स ग रि धगम स रिप निधगम स प रिनि धगम स प नि रि ध म ग स रि प नि ध म ग स प रि नि ध म ग स प नि रि ध म स ग रि प नि ध म स ग प रि नि ध म स ग प नि रि ध म स प रि ग नि ध म स प ग रि नि ध म स प ग नि रि ध म स प रि नि ग ध म स प नि रि ग ध म स प नि ग रि धगम स रिनिप धगम स निरिप धगम स निपरि ध म ग स रि नि प ध म ग स नि रि प ध म ग स नि प रि ध म स ग रि नि प ध म स ग नि रि प ध म स ग नि प रि ध म स नि रिगप ध म स निगरिप ध म स निगप रि ध म स नि रिप ग ध म स निप रिग ध म स निप ग रि धगम निरिप संधगम निपरि संधगम निप सरि ध म गं नि रिप स ध म ग निप रिस ध म ग निप स रि ध म निगरिप स | ध म निगप रिस | ध म निगप स रि ध म नि प रि ग स । ध म नि प ग रि स ! ध म नि प ग स रि ध म निप स रिग ध म निप स गरि ध म नि प रि स ग धगम निसरिप धगम निसपरि ध गम निरिस प ध म ग नि स रि प ध म ग नि स प रि ध म ग नि रि स प ध म नि ग रि स प । ध म नि ग स रि प ध म नि ग स प रि ध म नि स रि ग प ध म नि स ग रि प ध म नि स ग प रि ध म नि स रिप ग ध म नि स प रिग ध म नि स प ग रि धगपमरिस नि धगपम सरिनि । धगपम सनि रि ध प ग म रि स नि ध प ग म स रि नि ध प ग म स नि रि धंपमगरिस निधिपमगस रिनि ध प म ग स नि रि ध प म स रि ग नि । ध प म स ग रि नि । ध प म स ग नि रि ध प म स रि नि ग ध प म स नि रि ग ध प म स नि ग रि धगपसरिमनिधगपसमरिनि थगपसम निरि ध प ग स रि म नि ध प ग स म रिनि ध प ग स म निरि ध प स ग रि म नि ध प स ग म रिनि ध प स ग म नि रि धपसमरिगनि ध प स म ग रिनि ध प स म ग नि रि ध प स म रि नि ग ध प स म नि रि ग ध प स म नि ग रि धंगपसरिनिम थिगपसनिरिम धगपसनिगरि ध प ग स रि नि म ध प ग स नि रि म ध प ग स नि म रि थ प स गरि नि म थ प स ग नि रि म थ प स ग नि स रि

ध प स नि रिगम। ध प स निगरिन। ध प स निगम रि धाप सानि रिमग धाप सानिम रिगंध प सानिम गरि ध ग प म रि नि स ध ग प म नि रि स ध ग प म नि स रि धापाम रिनिस धापाम निरिस धापाम निसारि धाप गगरि निसंधाप गगनि रिसंधाप गगनि सरि धापम निरिग संधापम निगरि सः धापम निग स रि ध प म नि रि स ग ध प म नि स रि ग ध प म नि स ग रि धगपनि रिमस धगपनि मरिसंधगपनि मसरि ध प ग नि रि म स ध प ग नि म रि संध प ग नि म स रि ध प निगरिम स ध प निगम रिसंध प निगम स रि ध प नि म रि ग संध प नि म ग रि सः ध प नि म ग स रि ध प निम रिस गःध प निम स ६ गःध प निम स ग रि धगपनि रिसम्धगपनि रिसम्धगपनि समर ध प ग नि रि स म । ध प ग नि स रि म । ध प ग नि स म रि ध प निगरिस म ध प निगस रिम ध प निगम स रि भाषानि सारिगम। धापानि सागरिम। धापानि सागमारि ध प नि स रि म ग ध प निसम रिग । ध प निसम गरि ध ग स म प रिनि । ध ग स म प नि रि भगसमरिप नि भ सगम रिप नि | ध सगमप रिनि | ध सगमप निरि भ ताम गरि प् नि । ध स म ग प रि नि । ध स म ग प नि रि

ध स म प रिग नि ! ध स म पेंग रि नि ! ध स म प ग नि रि ध समपरि निग ध समप निरिग ध समप निगरि धगसपरिमनिधगसपमरिनिधगसपमनिरि ध स ग प रि म नि ध स ग प म रि नि ध स ग प म नि रि ध स प ग रि म नि ध स प ग म रि नि । ध स प ग म नि रि भ सपम रिगनि ध सपम गरिनि ध सपम गनिरि ध स प म रि नि ग ध स प म नि रि ग ध स प म नि ग रि धगसपरिनिम धगसपनि रिम धगसपनि मरि थ सगप रिनिम ध सगप निरिम ध सगप निम रि ध स प ग रि नि म । ध स प ग नि रि म ध स प ग नि म रि ध सप निरिगम ध सप निगरिम ध सप निगम रि ध सप निरिमग ध सप निमरिग ध सप निमगरि भ ग स म रि नि प ध ग स म नि रि प ध ग स म नि प रि ध स ग म रि नि पंध स ग म नि रि प ध स ग म नि प रि ध स म ग रि नि प ध स म ग नि रि प ध स म ग नि प रि ध स म नि रि ग प ध स म नि ग रि प ध स म नि ग प रि ध स म नि रिप ग ध स म निप रिग ध स म निप ग रि ध ग स नि रि म प थ ग स नि म रि प थ ग स नि म प रि ध स ग नि रि म प धि स ग नि म रि प धि स ग नि म प रि ध स निगरि म प ध स निगम रिप ध स निगम प रि

ध स निम रिगपंध स निम गरिप। ध स निम गप रि ध स निम रिप ग ध स नि म प रि गे ध स नि म प ग रि ध ग स नि रि प म ध ग स नि प रि म ध ग स नि प म रि ध स ग नि रिपम ध स ग नि प रि म ध स ग नि प म रि ध स नि ग प रि म ध स नि ग प म रि ध स निगरिपम ध स निपरिगम। ध स निपगरिम ध स निपगम रि ध स निपम रिग ध स निपम गरि ध स निपरिम ग ध ग नि म रि प स ध ग नि म प रि स : ध ग नि म प स रि ध निगम रिप सं ध निगम परिसंध निगम प स रि थ निमगपरिस्थिनिमगपस्रि ध निमगरिप स ध निमप रिग सं ध निमप गरिसं ध निमप गस रि ध निमप रिसग ध निमप सरिग ध निमप सगरि ध ग नि प रि म संध ग नि प म रि स ध ग नि प म स रि ध निगपरिम स ध निगपम रिसंध निगपम सरि भ निपगरिम संधिनिपगम रिसंध निपगम संरि ध निपम रिगस । ध निपम गरिस । ध निपम गस रि ध निपम रिस ग ध निपम स रिग ध निपम स ग रि ध ग नि प रि स म ध ग नि प स रि म ध ग नि प स म रि ध निगप रिसम ध निगप स रिम ध निगप स म रि ध निपगरिस म ध निपगस रिम ध निपगस म रि ध निप स रिगम। ध निप स ग रिम। ध निप स ग म रि ध निप स रिम ग ध निप स म रिग ध निप स म ग रि ध ग नि म रि स प ध ग नि म स रि प ध ग नि म स प रि ध निगम रिसप धिनिगम सरिप:ध निगम सपरि ध निमग रिसप धिनिमग सरिप धिनिमग सपरि ध निम स रिगप ध निम स ग रिप ध निम स ग प रि ध निम स रिप गंध निम स प रिग ध निम स प ग रि ध ग नि स रि म प थ ग नि स म रि प ध ग नि स म प रि ध निग स रिम प ध निग स म रिप ध निग स म प रि ध नि स गरिम पंध नि स गम रिप ध नि स गम प रि ध निसम रिगप ध निसम गरिप ध निसम गपरि ध निसम रिप ग ध निसम परिग ध निसम प गरि ध ग नि स रि प म ध ग नि स प रि म , ध ग नि स प म रि ध निग स रिपम ध निग स प रिमाध निग स प म रि ध नि स ग रि प म । ध नि स ग प रि म । ध नि स ग प म रि ध निसपरिगमं ध निसपगरिम ध निसपगमरि ध निसप रिमगंध निसप मरिगंध निसप मगरि

नि

निरिगम प ध स | निगरि म प ध स | निगम रिप ध स

निरिमगप ध स | निमरिगप ध स | निमगरिप ध स निरिमण गधस निमरिण गधस निमण रिगधस निरिमप ध ग स निम रिप ध ग स निम प रिध ग स निरिमप ध स ग निम रिप ध स ग निम प रिध स ग निरिगमपस्य निगरिगपस्य निगमरिपस्य निरिमगपसधानिमरिगपसधानिमगरिपसध निरिम प ग स ध निम रिप ग स ध निम प रिग स ध निरिमपसगध निमरिपसगध निमपरिसगध निरिम प स ध ग निम रिप स ध ग निम प रि स ध ग निरिगमध प स निगरिमध प स निगम रिध प स नि रिमगधपस निमरिगधपस निमगरिधपस नि रिमध ग प स निम रिध ग प स निम ध रिग प स निरिमधपगसः निमरिधपगसः निमधरिपगस निरिमध प स ग निम रिध प स ग निम ध रिप स ग निरिगमधस.प निगरिमधसप निगमरिधसप नि रिमग ध सप निमरिग ध सप निमग रिध सप निरिमध गसप ं निमरिध गसप ं निमध रिगसप निरिमधसग्दं निमरिधसगपं निमधरिसगप निरिमधसपग निमरिधसपग निमधरिसपग निरिगम सपध निगरिम सपध निगम रिसप ध

निरिमगसपधं निमरिंगसपधः निमगरिसपध निरिम सगप ध निम रिस गप ध निम स रिगप ध निरिम सपगध निमरिस पगध निम स रिप गध निरिम सपथग निमरिस पथगं निम स रिपधग नि रिगम सध्य निगरिम सध्य निगम रिस ध्य निरिमगसधप निमरिगसधप निमगरिसधप निरिम सगधप निमरिसगधप निम सरिगधप निरिम सधगप निमरिसधगप निमस रिधगप निरिमसधाग निमरिसधाग निमसरिधाग नि रिगपमधस निगरिपमधस निगपरिमधस नि रिपगमध सः निपरिगमध स निपगरिमध स निरिपमगधसः निपरिमगधसः निपमरिगधस नि रिप मं घग स[ं] निप रिम घग स**़ निप म रिघ**ग स निरिपमधसगं निपरिमधसगं निपमरिधसग निरिगप घम स_्निगरिप घम स_्निगप रिघम स नि रिपगधमसः निपरिगधमसः निपगरिधमस निरिपधगम स निपरिधगम स निपधरिगम स निरिपधमगस निपरिधमगस निपधरिमगस निरिपधमसग निपरिधमसग निपधरिमसग निरिग प ध स म निगरिप ध स म निगप रिध स म

निरिपगधसम। निपरिगधसम। निपगरिधसम निरिपधगसम निपरिधगसम। निपधरिगसम निरिपधसगम् निपरिधसगम् निपधरिसगम निरिपधसमगं निपरिधसमग् निपधरिसमग निरिगपमसध निगरिपमसध निगपरिमसध निरिपगमस थ निपरिगमस थ निपगरिमस ध निरिपमगस धनिपरिमगस धनिपमरिगस ध निरिपमसगध निपरिमसगध निपमरिसगध निरिपमसधग निपरिमसधग निपमरिसधग निरिगपसमधानिगरिपसमधानिगपरिसमध निरिप गस मध निपरिगस मधः निप गरिस मध निरिप स ग म ध निप रिस ग म ध निप स रिग म ध निरिप समगध निप रिसमगध निप स रिमगध निरिपसमधग निपरिसमधग निपसरिमधग निरिगप संघम, निगरिप संघम। निगप रिसंधम निरिपगसधमः निपरिगसधमः निपगरिसधम निरिप स ग ध म निप रिस ग ध म निप स रिग ध म निरिप स ध ग म, निप रिस ध ग म निप स रिध ग म निरिप स ध म ग निप रिस ध म ग निप स रिध म ग निरिगधम पस निगरिधम पस निगधरि म प स

नि रिधगमप संनिधिरिगमप संनिध गैरिमप सं निरिधमगपसं निधरिमगपस निधमरिगपस नि रिधमपगस निधरिमपगस निधमरिपगस निरिधमप सग निधिरिमप सग निधम रिप सग नि रिगधपम संनिगरिधपम संनिगधरिपम स नि रिधगपम संनिध रिगपम संनिध गरिपम स निरिध प ग म सं निध रिप ग म स निध प रिग म स नि रिध प म ग सं निध रिप म ग स निध प रिम ग स नि रिध प म स गं निध रिप म स गं निध प रिम स ग निरिगध प स मः निगरिध प स मः निगध रिप स म नि रिधगप सम निधरिगप सम निधगरिप सम नि रिध प ग स म निध रिप ग स म निध प रिग स म निरिध प स ग म निध रिप स ग म निध प रिस ग म निरिध प स म ग निध रिप स म ग निध प रिस म ग निरिगधमसप निगरिधमसप निगधरिमसप निरिधगमसप निधिरिगमसप निधगरिमसप निरिध ग स प : निध रिग स प निध म रिग स प नि रिधम सगप। निधि रिम सगप। निधम रिसगप निरिधम सपगानिध रिम सपगानिध म रिसपग निरिगध सम्पणिगरिध समप्निगध रिसमप

नि रिध ग स म प | निध रिग स म प | निध ग रिस म प निरिधसगमप निधरिसगमप निधसरिगमप रिधसमगप निधरिसमगप निधसरिगमप निरिधसमपगं निधरिसमपग निध स रिमप ग निरिगधसपम। निगरिधसपम। निगधरिसपम निरिधगसपम निधरिगसपम निधगरिसपम निरिधसगपम निधरिसगपम निधस रिगपम निरिध सपगम। निधि रिसपगम। निध सरिपगम नि रिध सपम गंनिध रिसपम गंनिध सरिपम ग निरिग समपधं निगरिसमपधं निगसरिमपध नि रिसगमपधं निसरिगमपधं निसगरिमपध नि रिसमगपधं निसरिमगपधं निसमरिगपध नि रिसमपगध | निसरिमपगध निसम रिपगध नि रिसमपधग निसरिमपधग निसमरिपधग नि रिग स प म ध निगरिसपमध निगसरिपमध नि रिसगपमध निसरिगपमध निसगरिपमध नि रिसपगमध। नि स रि प ग म ध निसपरिगमध नि रिसपमगध निसरिपमगध निसपरिमगध नि रिसपमधग निसरिपमधग निसपरिधमग ग स प ध म नि ग रि स प ध म नि ग स रि प ध म

23

संगीतसार.

नि	रि	स	ग	q	ध	म	नि	स	रि	ग	q	घ	म्	नि	स	ग	रि	q	ध	Ť
नि	रि	स	ф	ग्	ध	म	नि	स	रि	Ф	ग्	घ	म	नि	स	q	रि	η	घ	म
नि	रि	स	Ч	ध	ग	म	नि	स	रि	Ч	ध	η	म	नि	स	ф	रि	ध	ग	म
नि	रि	स	Ч	ध	म	ग	नि	स	रि	q	ध	म	ग	नि	स	ф	रि	ध	म	ग
नि	रि	ग	स	म	ध	q	नि	ग्	रि	स	IĮ.	ध	q	नि	ग	स	रि	म	ध	q
नि	रि	स	ग	म	ध	q	नि	स	रि	ग	म	भ	Ч	नि	स	η	रि	म	ध	Ч
नि	रि	स	म	ग	भ	ч	नि	स	रि	म	ग	ध	q	नि	स	म	रि	ग	ध	q
नि	रि	स	म	घ	ग	Ч	नि	स	रि	म	ध	ग	q	नि	स	म	रि	ध	ग	q
नि	रि	स	म	ध	q	ग	नि	स	रि	म्	भ	q	ग	नि	स	म	रि	ध	Ч	ग
नि	रि	ग	स	ध	म	q	नि	ग	रि	स	घ	म्	q	नि	ग	स	रि	ध	म	ф
नि	रि	स	ग	घ	म	q	नि	स	रि	ग	ध	म	q	नि	स	ग	रि	घ	Ą	ф
नि	रि	स	घ	ग	म	Ч	नि	स	रि	भ	ग	म	Ч	नि	स	घ	रि	ग	म	q
नि	रि	स	ध	म	ग	Ч	नि	स	रि	ध	म्	ग	Ч	नि	स	घ	रि	म	ग	q
नि	रि	स	ध	म	q	η	नि	स	रि	घ	म्	q	ग्	नि	स	ध	रि	म	Ч	ग
नि	रि	ग	स	ध	Ч	म	नि	ग्	रि	स	ध	4	म	नि	ग	स	रि	ध	q	म
नि	रि	स	ग	घ	Ч	म	नि	स	रि	η	ध	Ч	म	नि	स	ग	रि	ध	Ч	म
नि	रि	स	ध	ग	q	म	नि	स	रि	ध	ग	q	म	नि	स	ધ	रि	ग	Ф	म
नि	रि	स	ध	4	ग	म	नि	स	रि	ध	Ч	ग	म	नि	स	ध	रि	q	ग	म
नि	रि	स	ध	q	म	ग	नि	स	रि	ध	Ч	म	ग	नि	स	ध	रि	4	म	ग
नि	ग	4	Ч	रि	ध	स	नि	ग	म	q	ध	रि	स	नि.	ग	म	q	ध	स	रि

नि	4	ग	ч	रि	ध	स	नि	म	ग	q	ध	रि	स	नि	4	ग	ч	घ	स	रि
नि	म	Ч	ग	रि	ध	स	नि	म	q	ग	घ	रि	स	नि	म	q	ग	घ	स	fŧ
नि	म	Ч	ध	रि	ग	स	नि	4	q	घ	η	रि	स	नि	म	q	घ	ग	स	रि
नि	4	Ч	ध	रि	स	η	नि	म	q	ध	स	रि	ग	नि	म	q	घ	स	ग	रि
नि	ग	म	Ф	रि	स	घ	नि	ग	म	ф	स	रि	घ	नि	ग	म	ф	स	घ	रि
नि	щ	ग	q	रि	स	घ	नि	म	ग	q	स	रि	घ	नि	म	ग	Ч	स	घ	रि
नि	म	Ч	ग	रि	स	घ	नि	म	q	ग	स	रि	ध	नि	म	q	ग	स	ध	रि
नि	म	Ч	स	रि	ग	घ	नि	म	q	स	η	रि	घ	नि	म	Ŧ	स	ग	भ	रि
नि	म	Ч	स	रि	ध	ग	नि	4	Ч	स	घ	रि	ग	नि	म्	q	स	ध	ग	रि
नि	ग	म	ध	रि	q	स	नि	ग	म	ध	q	रि	स	नि	મ	म	घ	Ч	स	रि
नि	Ч	ग	ध	रि	Ч	स	नि	म	ग	ध	Ч	रि	स	नि	म	ग	घ	Ч	स	रि
नि	म	ध	ग	रि	q	स	नि	म	ध	ग	Ч	रि	स	नि	4	ध	ग	q	स	रि
नि	म	घ	Ч	रि	ग	स	नि	म	ध	Ч	ग	रि	स	नि	म	घ	Ч	ग	स	रि
नि	म	ध	q	रि	स	ग	नि	म	ध	Ч	स	रि	ग	नि	म	ध	Ч	स	ग	रि
नि	ग	म	घ	रि	स	Ч	নি	ग	म	घ	स	रि	Ч	नि	ग	म	ध	स	q	रि
नि	4	ग	ध	रि	स	Ч	नि	4	ग	घ	स	रि	Ч	नि	म	ग	घ	स	q	ft
नि	म	घ	η	रि	स	Ч	नि	म	ध	ग	स	रि	q	नि	म	ध	ग	स	प	रि
नि	म	ध	स	रि	ग	q	नि	म	घ	स	ग	रि	Ч	नि	म	ध	स	ग	Ч	रि
नि	म	ध	स	रि	Ч	ग	नि	म	घ	स	Ф	रि	ग	नि	म	ध	स	q	ग	रि
नि	ग	म	स	रि	Ч	ध	नि	ग	म	स्	Ч	रि	ध	नि	ग	म	स	Ч	ध	रि

निमग स रिपध | निमग स प रिध | निमग स प ध रि निम सगरिपध निम सगपरिध निमसगपधरि निम स प रिगध निम स प ग रिध निम स प ग ध रि निमसपधरिग निमसपरिधग निमसपधगरि निगम स रिधप निगम स ध रिप निगम स ध प रि निमग सरिध प निमग सध रिप निमग सध परि निम स गरिध पं निम स गध रिपं निम स गध प रि निमसधगरिप निमसधगपरि निमसधिरगप निमसधिरिपग निम स ध प रिगं निम स ध प ग रि निगपम रिधस निगपमधरिसं निगपमधसरि निपगम रिध संनिपगम ध रिसं निपगम ध स रि निपमगरिधस निपमगधरिस । निपमगध**स**रि निपमधरिग स निपमधगरिस निपमधगसरि निपमध रिसग निपमधसरिग निपमधसगरि निगपधरिम स निगपधम रिस निगपधम स रि निपगधिरम स निपगधम रिस निपगधम स रि निपधगरिम स निपधगमरिस निपधगमस रि निपधम रिग स निपधम गरिस निपधम ग स रि निपधम रिसग निपधम सरिग निपधम सगरि निगप धरिसम। निगप धसरिम। निगप धसमरि निपगधरिसम। निपगधसरिम। निपगधसमि निपधगरिसम। निपधगसरिम। निपधगसमरि निपधसरिगम। निपधसगरिम। निपधसगमरि निपध स रिमग निपध स म रिग निपध स म ग रि निगपम रिस धंनिगपम सरिधं निगपम सधिर निपगम रिसधः निपगम सरिधं निपगम सधिर निपमगरिस धंनिपमगसरिधं निपमगस धरि निपमसरिगधं निपमसगरिधः निपमसगधिर निपम स रिधग। निपम स ध रिग। निपम स ध ग रि निगप स रिमध निगप स म रिध निगप स म ध रि निपगस रिमधः निपगस म रिधः निपगस मधिर निपसगरिमधः निपसगमरिध निपसगमधरि निपसमिरिगधनिपसमगरिधनिपसमगधिर निपसमरिधगानिपसमधरिगानिपसमधगरि निगप सरिध मं निगप सध रिमः निगप सध मरि निपगस रिधम निपगस धरिम निपगस धमरि निपसगरिधम निपसगधरिम निपसगधमरि निपस्थरिगम् निपस्थगरिम निपस्थगम्रि निप स ध रिम ग निप स ध म रिग निप स ध म ग रि निगधम रिप स निगधमप रिस निगधमप स रि

निधगमरिप संनिधगमपरिसंनिधगमप सरि निधमगरिप संनिधमगपरिसंनिधमगप सरि निधमपरिग सं निधमपगरिसं निधमपग सरि निधमपरिसगं निधमपसरिगं निधमपसगरि निगधपरिम सं निगधपम रिस् निगधपम सरि निधगपरिम संनिधगपम रिस निधगपम सरि निधपगरिम संनिधपगमरिस निधपगम सरि निध प म रिग स निध प म ग रिस निध प म ग स रि निधपम रिसग निधपम सरिग निधपम सगरि निगधपरिसम निगधपसरिम निगधपसमि निधगपरिसमानिधगपसरिम् निधगपसमि निधपगरिसमं निधपगसरिम। निधपगसमि निध प स रिगम निध प स ग रिम निध प स ग म रि निध प स रिम ग निध प स म रिग निध प स म गरि निगधन रिसप निगधन सरिप निगधन सपरि निधगम रिसपं निधगम सरिपं निधगम सपरि निधमगरिसप निधमगसरिप निधमगसपरि निधम सरिगप निधम सगरिप निधम सगपरि निधम स रिपग निधम स प रिग निधम स प ग रि निगध स रिगप निगध स म रिप निगध स म प रि

नि	ध	ग	स	रि	म	Ч	नि	ध	ग	स	म	रि	q	नि	भ	ग	स	म	q	रि
नि	घ	स	ग	रि	म	प	नि	भ	स	ग	म	रि	q	नि	घ	स	ग	म	q	रि
नि	भ	स	म	रि	ग	4	नि	ध	स	म	ग	रि	प	नि	ध	स	म	ग	q	रि
नि	ध	स	म	रि	q	ग	नि	घ	स	म	Ч	रि	ग	नि	ध	स	म	Ч	ग	रि
नि	ग्	घ	स	रि	Ч	म	नि	ग	ध	स	q	रि	म	नि	ग	ध	स	q	म	रि
नि	ध	ग	स	रि	q	म	नि	घ	ग	स	Ф	रि	म	नि	भ	ग	स	q	म	रि
नि	ध	स	ग	रि	Ч	म	नि	ध	स	ग	Ч	रि	म्	नि	ध	स	ग	q	म	रि
नि	ध	स	q	रि	ग	म	नि	ध	स	q	ग	रि	म	नि	ध	स	Ч	ग	म	रि
नि	ध	स	q	रि	म	ग	नि	घ	स	Ч	म	रि	ग	नि	ध	स्र	Ч	म	ग	रि
नि	ग	स	म	रि	q	ध	नि	ग	स	म	Ч	रि	घ	नि	ग	स	म	q	ध	रि
नि	स	ग	म	रि	Ч	घ	नि	स	ग	म	Ч	रि	৸	नि	स	ग	म	q	ध	रि
नि				^	-	PT	Ð		**	**	rr	नि	भ	नि	स	п	T	u	ध	रि
	स	म	ग	रि	Ч	વ	1-1	41	4	*[Ч	17	4	' '	**	71	•1	1	•	• •
नि														नि						
नि	स	म	q	रि	η	ध	नि	स	म	Ч	η	रि	घ		स	म	Ч	ग	घ	रि
नि नि	स स	म म	q q	रि रि	ग ध	ध ग	नि नि	स स	म म	ч	ग घ	रि रि	ध ग	नि	स स	म म	ч ч	ग भ	ध ग	रि रि
नि नि नि	स स ग	म म स	ч ч	रि रि रि	ग ध म	ध ग ध	नि नि नि	स स ग	म म स	ч ч	ग ध म	रि रि रि	ध ग ध	नि नि	स स ग	म म स	ч ч	ग भ म	ध ग भ	ि रि रि
नि नि नि	स स ग स	म म स	ч ч ч	रि रि रि रि	ग ध म म	ध ग ध ध	नि नि नि	स स ग स	म म स ग	ч ч ч	ग ध म म	रि रि रि	ध ग ध ध	नि नि नि	स स ग स	म म स ग	ч ч ч	ग भ म	ध ग भ ध	रि रि रि
नि नि नि नि	स स ग स	म म स ग	ч ч ч	रि रि रि रि	ग ध्य म म	ध ग ध ध	日 日 日 日 日 日 日	स स ग स	म म स ग	ч ч ч ч	ग श्व म म	रि रि रि रि	घ ग घ घ	नि नि नि नि	स स ग स	म म स ग	ч ч ч ч	ग भ म म	भ ग भ भ भ	रि रि रि
नि नि <td>स स ग स स</td> <td>म म स ग प</td> <td>ч ч ч ч</td> <td>रि रि रि रि रि</td> <td>ग ध म म ग</td> <td>ध ग ध ध ध</td> <td>行 行 斤 斤 斤 斤 斤</td> <td>स स ग स स</td> <td>म म स ग प</td> <td>ч ч ч ч</td> <td>ग ね 中 中 ग</td> <td>रिरिरिरिरि</td> <td>ध भ ध ध ध</td> <td>नि नि नि</td> <td>स स ग स स</td> <td>म म स ग प</td> <td>प प प ग म</td> <td>ग ね 中 中 ग</td> <td>ध म भ ध ध</td> <td>तितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितिति<</td>	स स ग स स	म म स ग प	ч ч ч ч	रि रि रि रि रि	ग ध म म ग	ध ग ध ध ध	行 行 斤 斤 斤 斤 斤	स स ग स स	म म स ग प	ч ч ч ч	ग ね 中 中 ग	रिरिरिरिरि	ध भ ध ध ध	नि नि नि	स स ग स स	म म स ग प	प प प ग म	ग ね 中 中 ग	ध म भ ध ध	तितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितितिति<

नि	स	ग्	Ч	रि	ध	म	नि	स	ग	ф	ध	रि	म	नि	स	ग	q	ध	4	रे
नि	स	q	ग	रि	भ	म	नि	सं	Ч	ग	ध	रि	म	नि	स	q	ग	ध	म	रि
नि	स	q	ध	रि	η	म	नि	स	Ч	ध	ग	रि	म	नि	स	Ą	ध	ग	म	रि
नि	स	q	घ	रि	म	ग	नि	स	q	ध	म	रि	ग	नि	स	Ф	ध	म	ग	रि
नि	ग	स	म्	रि	ध	P	नि	ग	स	म	घ	रि	q	नि	ग	स	म	ध	q	रि
नि	स	ग	म	रि	ध	Ч	नि	स	ग	म	ध	रि	q	नि	स	ग	म	ध	Ч	रि
नि	स	म	ग	रि	ध	q	नि	स	म	ग	ध	रि	4	नि	स	म	ग	ध	q	रि
नि	स	म	ध	रि	ग	प	नि	स	म	ध	ग	रि	Ч	नि	स	Ħ	ध	ग	q	रि
' नि	स	म	व	रि	Ч	ग	नि	स	म	ध	Ч	रि	ग	नि	स	म	ध	q	ग	रि
नि	ग	स	ध	रि	म	q	नि	η	स	घ	म	रि	q	नि	ग	स	ध	म	q	रि
नि	स	ग	ध	रि	म	Ч	नि	स	ग	ध	म	रि	Ч	नि	स	ग	ध	म	4	रि
नि	स	ध	ग	रि	म	q	नि	स	ध	ग	म	रि	Ч	नि	स	ध	ग	म	q	रि
नि	स	ध	म	रि	η	4	नि	स	ध	म	ग	रि	4	नि	स	ध	म	ग	q	रि
नि	स	ध	म	रि	q	ग	नि	स	ध	म	q	रि	ग	नि	स	ब	म	q	ग	रि
नि	ग	स	ध	रि	q	म	नि	ग	स	ध	q	रि	4	नि	ग	स	ध	Ч	म	रि
नि	स	ग	ध	रि	q	म	नि	स	ग	ध	4	रि	म	नि	स	ग	ध	q	म	रि
नि	स	ध	ग	रि	q	म	नि	स	ध	ग	q	रि	म	नि	स	ध	ग	q	म	रि
नि	₹	ध	q	रि	ग	म	. नि	स	घ	Ч	ग	रि	4	नि	स	ध	Ч	ग	म	रि
नि	स	ध	q	रि	म	ग	नि	स	ध	Ч	म	रि	ग	नि	स	ध	4	म	ग	रि

॥ इति सात स्वरकी तानके प्रस्तारभेद संपूर्णम् ॥

साधारण प्रकरण ग्रामके विकत स्वर.

अथ साधारण प्रकरणको भेद लिख्यते ॥ तहां प्रामके विकतस्वरके पयोग सों कहूं तो विचित्रता दोहै ॥ ओर कहंके राग भावकी समता दीखेहें ॥ सो स्वर साधारणको फल हैं ॥ यातें साधारण कहत है ॥ सो साधारण दोय पकारको हैं ॥ पथम स्वर सा-धारण । १ । दूसरो जाति साधारण । २ । तहां स्वर साधारण च्यार प्रकारको है ॥ काकली साधारण । १ । दूसरी अंतर साधारण । २ । तीसरो पड्ज साधारण । ३ । चोथो मध्यम साधारण । ४ । अब च्यारुनकी साधारणता कहत हैं। साधारण कहिये॥ ओर स्वर-को स्वर समान जान्योपरे । तहां काकलीकी साधारणता कहतहों॥ तहां काकरी कहीय उपरहे पड्जकी दोय श्रुतिनको हेकें ॥ च्यार श्रुतिनको जो निषाद ॥ सो षड्ज स्वरके अर शुद्ध निषादके समान हें । यातें काक़ही पड्ज निषादको साधारण जांनिये ॥ अब अंतर स्वरकी साधारणता कहत हैं ॥ अंतर स्वर कहीये मध्यमकी दोय श्रुति लेकें च्यार श्रुतिको ज्यो गांधार ॥ सो शुद्ध गांधारके ॥ ओर शुद्ध मध्यमके वा विकत गांधार विकत मध्यमके समान हैं ॥ यातें अंतर कहिये च्यार श्रुतिको ॥ गांधार शुद्ध गांधारको ओर शुद्ध मध्यमको साधारण हैं ॥ अब काकरी स्वर ओर अन्तर स्वर इनके उच्चारणको पकार कहत हें पहले मध्यम ग्रामके षड्जको उच्चारण करिकें॥ अवरोह कमसों पड्ज ग्रामके ॥ काकली निषाद अर धैवतका उच्चार कीजे आगें अवरोह कमसों पंचमादिकनके उच्चार कीजे ॥ ऐसें सात स्वरकीजे सो होत हैं ॥ यातें या कममें शुद्ध निषाद लीजिये ॥ ॥ इति काकली स्वर संपूर्णम् ॥

अथ अंतर स्वरके उच्चारको प्रकार लिख्यते ॥ ऐसैही मध्यम प्रामके मध्यमको उच्चार करिके ॥ अवरोह कमसीं मध्यम प्रामके अंतर

गांधार अर रिषमको उच्चार कीजे ॥ आगें अवरोह कमसों मध्यम ग्रामके षड्ज छेकें । षड्ज ग्रामको पंचमतांई च्यार स्वरको उच्चार कीजे ॥ ऐसं सात स्वर होत हैं । योतें या कममें शुद्ध गांधार नही छीजे ॥ इति अंतर स्वर प्रयोग संपूर्णम् ॥

अथ काकली स्वर अंतर स्वरके प्रयोगकों दूसरो उचारको प्रस्तार लिख्यते ॥ तहां पथम मध्यम ग्रामके षड्ज कों उचार करी फेर अवरोह कमसों षड्ज ग्रामके काकली स्वरको उचार करी ॥ फेर आरोह कमसों मध्यम ग्रामके षड्जकों उचार कीजे ॥ आगें अवरोह कमसों षड्ज ग्रामकें निषाद आदिक छह स्वरको उचार कीजिये । ऐसें या अवरोहिमें सात स्वर होत हैं ॥ योतें या कममें शुद्ध निषाद होय हैं । योतें या कममें शुद्ध निषाद लीजिये ॥ इति दूसरो काकली स्वर प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ अंतर स्वरके उच्चारको प्रकार लिख्यत ॥ जहां मध्यम प्रामके मध्यम स्वरकों उच्चार करिके ॥ फेर अवरोह कमसों अंतर गांधारका उच्चार करिके ॥ फेर आरोह कमकों मध्यम प्रामके मध्यमकों उच्चार कीजिये यातं अवरोह कमसों मध्यम प्रामके शुद्ध गांधारतें लेकें पड्ज प्रामके पंचम तांई ॥ अवरोह कमसों छह स्वरको उच्चार कीजिये ॥ ऐसं अवरोहमें सात स्वर होत हैं ॥ यातें या कममें शुद्ध गांधार लीजिये ॥ इति दूसरो अंतर स्वर प्रयोग संपूर्णम् ॥

अब या काकली स्वर प्रयोगमें अन्तर स्वर प्रयोगमें ॥ औडव षाडव तान करिनी होय तो जो जो स्वरको छोड़े सों औडव षाडव तान होय ॥ सो सो स्वर आरोह कममें छोड़िकें ॥ यह रीति कीजिये ॥ ओर कोईक आचार्य इन दूसरे प्रयोगनको। आरोह कमसों हू कहत हैं। ओर सब ठोर काकली स्वरकों ओर अंतर स्वरको । यहि प्रयोग हैं । प्रयोग कहिये उचार करिवे कीरीति । यातें यह सूक्ष्म है ॥ इति काकली स्वर अंतर स्वर प्रयोग औडव षाडव कम विधान संपूर्णम् ॥

प्रथमस्वराध्याय-साधारण प्रकरण ग्रामके विकत स्वर. १८७

अथ पड्ज स्वर, साधारण स्वर, मध्यम स्वर, साधारण कहत है ॥ षड्ज ग्रामको निषाद स्वर मध्यम ग्रामके षड्जकी पहली॥ एक श्रुति लेकें अरु मध्यम ग्रामको मध्यम रिषभ जब षड्जकी पिछली एक श्रुति छे तब दोय श्रुतिको च्युत षड्ज केसिक निषादके ओर विकत रिषभके समान है ॥ यातें च्युत पड्जके निषाद रिषभको साधारण है ऐसेही मध्यम ग्रामकों गांधार जब मध्यमकी। पहली एक श्रुति छेहैं ओर मध्यम ग्रामको पंचम जब अपनी इसरी श्रुतिपे ठहरिकें ॥ मध्यमकी पिछली एक श्रुतिले तब दोय श्रुतिको च्युत मध्यम गांधार साधारणके । अरु शुद्ध मध्यमके वा विकत पंचमके समान है ॥ याते च्युत मध्यम उन तीनोनको साधारण है ॥ यह मध्यम साधारण मध्यम ग्राममें होत हैं । ये पड्ज मध्यम साधा-रण. केशिक कहावे हे ॥ ये दोन साधारण अति सुक्ष्म हैं । यातें कोइक उनको ग्राम साधारण कहत हैं। पडुज साधारणको पडुज ब्राम साधारण कहत है ॥ और मध्यम साधारणको ॥ मध्यम ब्राम साधारण कहत हैं ॥ ओर जाति साधारण एक प्रकारको हैं सो कह हैं ॥ जे रागकी जाति एक ग्रामकी भई हैं ॥ अरु एकही स्वरमें जि-नको अंस स्वर हैं ॥ उन जातिनमें जो रागको गांन हैं ॥ सो आप-समें समान हात है। यांनं, वा, ग्रामको अथवा ॥ अंस स्वरकों वा गानकों जाति साधारण जांनिये ॥ अरु कोइक मुनि, रागनको जीति साधारण कहत हैं ॥ इति जाति साधारण संपूर्णम् ॥

वर्णअलंकार प्रकरण.

अथ अलंकार कहिवेकों गानके वर्णके भेद कहतहै तहां वर्ण कहिये गांनमें जा स्वरको विस्तारको गानिकया हैं ॥ याहीकां वर्ण कहे हैं ॥ सो वर्ण च्यार प्रकारको हैं ॥ एक तो स्थाई । १ । दूसरो आरोही । २ । तीसरो अवरोही । ३ । चोथो संचारी । ४ ।

- स्थाई जो ठहरि ठहरिके एक एक स्वरको उच्चार सों स्थाई वर्ण जांनिये॥ उदाहरण शुद्ध मूर्छना कममें। स स स । रि रि रि । ग ग ग । म म म । प प प । ध ध ध । नि नि नि ॥ या रितिसुं ठहरि ठहरिकें एक स्वरकों जो उच्चारसा स्थाई जानिये। अथवा स । रि । ग । म । प । ध । नि । ऐसं एकवारिह ठहरिकें। स्वरकों उच्चार सो स्थाई हैं॥
- आरोही- स । रि । ग । म । प । ध । नि । या आरोह कमसों स्वरको जो विस्तार सो आरोही जांनिये॥
- अवरोही— नि । ध । प । म । ग । रि । स । या अवरोह कमसों जो स्वरको विस्तार सो अवरोही जांनिय ॥
- संचारी— स्थाई । आरोही । अवरोही । इन तीनों वर्णनके थोडे थोडे मिले तें भयो जो विस्तार । सो संचारी जांनिये ॥ उदाहरण सा सा । री री । गा गा । सा री गा । सा नि था । या रीतीसों तीनो वर्ण करिके । जो स्वर विस्तारको मिलाप होय । सो संचारि जांनिये ॥
- अब इन चारो वर्णनके अलंकार कहत हैं। तहां अलंकारको लक्षण लिख्यते॥ स्थीर कला करिके युक्त ज्यो स्थाई। आरोही। अवरोही। संचारी। वर्णनकी रचना सो अलंकार किहय। तहां साख्रमें कला किह है के एक आदि स्वरकी रचना॥ जो गीतको सोभायमान करे हैं। यातें अलंकार कहे हैं। वे अलंकार संगीत-रत्नाकरके मतमें मुख्य तरेसिट। ६३। स्थाई। आदि च्यार वर्णनमें। विभाग किर रहे हें। तहां प्रथम स्थाई वर्णनमें सात अलंकार हैं॥ तिनको लक्षण लिख्यते। इन तरेसिट। ६३। अलंकारमें ॥ जिन अलंकारकी कला किये। साख्रोक एक स्वर दोय स्वर। आदिकें उच्चारकी रचना। ताकों आदिमें ओर अंतमें। मूर्छनाको जो आदि स्वर सो स्थाई वर्ण होय। ते अलंकार स्थाई वर्णके जानिये॥

अथ स्थाई वर्णके सात अलंकारके नाम लिख्यते ॥ पसनादि । १। पसन्तांत । २। पसन्ताद्यंत । ३। पसन्तमध्य । ४। कमरेचित । ५। मस्तार ।६। मसाद ।७। इति स्थाई अलंकारके नाम संपूर्णम् ॥ अलंकारके लक्षण भेदनके अर्थ एक एक मूर्छनामे तार अथ इन मंद्र संज्ञा कहत है ॥ तहां अलंकारमें जा मूर्छनाके अलंकार तरसटि ॥ ६३ ॥ करनें होय ता मूर्छनामे जे प्रथम स्वर सा मंद जांनिये ॥ ओर वांहि मूर्छनाके आरोह कम करिके आगले स्वर तार जांनिय ।। मंद्रतारको उदाहरण सं । रि । ग । म । प । ध । नि । सं । या मुर्छनोमं प्रथम जो षड्ज सा मंद्र हे ॥ ओर आगलो आठवो जो षड्ज है सो तार है ॥ ऐस सब मूर्छनामे जांनिये ॥ अथवा मूर्छनांन पहलो पहलो स्वर मंद्र जांनिये ओर आगलो आगलो स्वर तार जांनिये। उदाहरण मंद्र सं। रिं। गं। मं। पं। धं। निं। मध्य स। रि। ग। म। प। ध। नि॥ तार ॥ सं। रि'। गं। मं। पं। र्ध । नि'॥ यहां पहलो षडज सो मंद्र जांनिये ओर तिसरो षड्ज तार जांनिये ॥ ओर पहलो रिषभ मंद्र जांनिये तिसरो ऋषभ तार जांनिये ॥ पहलो गांधार मंद्र जांनिये तिसरो गांधार तार जांनिये ॥ पहलो मध्यम मंद्र जांनिये ॥ तिसरो मध्यम तार जांनिये ॥ पहलो पंचम मंद्र जांनिये ॥ तिसरी पंचम तार जांनिये॥ पहलो धैवत मंद्र जांनिये॥ तिसरी धैवत तार जांनिये ॥ पहलो निषाद मंद्र जांनिये ॥ तिसरो निषाद तार जांनिये ॥ ऐसें सब मूर्छनानमें जांनिये ॥ अब मंद्रको दोय नाम और कहत हैं पसन अरु मुद्र ॥ यह दोय नाम मंद्रके है ॥ अरु मृदुको तारको एक संग उच्चार करें । सो प्लुत जांनिये ॥ ओर या प्लुतको नामही कहत है ॥ अब मंद्र तार प्लुत इनकी सहनाणी कहत है ॥ जहां अछितरें अनुस्वार होय सा मंद्र जांनिये ॥ ओर जहां अछितरे स्वरके माथे उभीलीक होय ॥ सो तार जांनिये ॥ ओर जो स्वर अनुस्वार या ठीक रहित होय सो मध्य जांनिये॥ ओर ज्यो स्वर तीन वेर उच्चार होय सो प्लुत जांनिये ॥ अथ मंद स्वरको उदाहरण ॥ सां यहां षड्जके माथेपे बिंदु हैं ॥ तामें मंद्र हैं ॥ अथ तार स्वरको उदाहरण छिष्यते ॥ सां जहां षड्जके माथेमें उभी छीक हैं ॥ यातें तार हैं ॥ अथ प्छुतको उदाहरण हैं ॥ सा सा सा यहां षड्जको तीन वेर उच्चार है ॥ यातें प्छुत हे ॥

- १ अथ स्थाई प्रथम प्रसन्नादि अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां स्थाई स्वरनके दोय मंद्र ओर एक तार ऐसे । तीन रूप होय सो प्रसन्नादि अलंकार जांनिये । उदाहरण । सां । सां । सां । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति प्रमन्नादि अलंकार संपूर्णम् ॥
- २ अथ प्रसन्नांत अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां स्थाई स्वरके तीन रूप होय । तहां पहलो तार होय ओर दूसरो तिसरा मंद्र होय सो प्रसन्नांत हे ॥ यथा । सो । सा । सां। ऐसें सब स्थाईनमें जांनिये ॥ इति प्रसन्नांत अलंकार संपूर्णम् ॥
- ३ अथ तिसरे प्रसन्ना गंतको लक्षण लिख्यते ॥ जहां स्थाई स्वरनके तीन रूप होय ॥ तहां पहलो तिसरो मंद्र रूप होय ॥ ओर दूसरो रूप तार होय । सा पसनाग्रंत जानिये । उदाहरण । सां । सां । सां । ऐसं सब स्थाईनमें जांनिय ॥ इति प्रसन्नाग्रंत मंपूर्णम् ॥
- ४ अथ चोथो प्रसन्न मध्यको लक्षण लिख्यंत ॥ जहां स्थाई स्वरनके तीन रूप होय । तहां पहलां तिसरां रूप तार होय ॥ ओर दूसरो रूप मंद्र होय ॥ सां पसन्न मध्य जांनिये । उदाहरण । सां । सां । सां ॥ ऐसें ही ओर स्थाई स्वरनमें जांनिये ॥ इति प्रसन्न मध्य संपूर्णम् ॥
- ५ अथ पांचवो कम रेचितको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाको आदि स्वर ज्यो स्थाई स्वर सो मूर्छनाके दूसरे स्वरके आदिमें और अंतमें होय । सो स्थाई स्वर मंद्र । तीन्यो कलानमें जांनिये ॥ ऐसें पहली कला कीजिये ॥ अरु मूर्छनाके तीसरे चोथे स्वरमें ॥ दोनु स्वर उच्चार करि ॥ इनके आदि अंतमें स्थाई स्वर उच्चार करिये यह दुसरी कला हैं । अरु आदिमें स्थाई स्वर करिकें । वा मूर्छनाकें

पांचवो छहटो सातवो स्वर संग कही ये। फेर पिछे स्थाई स्वर क-हीये। ऐसें तीसरी कला है। ईन तीन कलाको कम रेचित कहत हें। कला कहिये स्वरकी रचनाको खंड। उदाहरण। सां। री। सां। इति प्रथम कला। सां। ग। म। सां॥ इति द्वितीय कला। सां। प। ध। नी। सां॥ इति तृतीय॥ कला ऐसेहि सब स्थाईनमें जांनिये॥ इति कम रचित संपूर्णम्॥

६ अथ छहटो अलंकारका नाम प्रस्तार ताको लक्षण लिख्यते॥

जहां स्थाई स्वर दूसरे स्वरकी आदिमें होय। ओर अंतमें तार
स्थाई स्वर होय॥ एसें एक कटा यहां तिन्यो कटानिक आदिमें। स्थाई स्वर मंद्र जांनिये॥ अरु स्थाई स्वर कहीके॥ तिसरो
चोथो स्वर कहीये॥ फेर तार स्थाई स्वर कहीये॥ सो दूसरी कटा
ह। अरु स्थाई स्वर कही आगें पांचव छटवे सातवे स्वर कहीये॥

अरु पीछे तार स्थाई स्वर कहिये सो तिसरी कटा॥ ऐसें तीन
कटाको पस्तार नाम अलंकार कहिये। उदाहरण सां। री। सां।
सांग। म। सां। सां। पध। नी। सां। ऐसेहि सब स्थाईनमें
जांनिये॥ इति प्रस्तार संपूर्णम्॥

७ अथ सातवे अलंकार प्रमादको लक्षण लिख्यते ॥ जहां आदिमें स्थाई स्वर तार होय । फेर मूर्छनाको दूसरो स्वर होय ॥ तहां आगे मंद्र स्थाई स्वर होय एसं एक करा ॥ ओर तार स्थाई स्वर कहिकें । मूर्छनाके तीसरे चोथे स्वर दोनु कहीये ॥ आगे मंद्र स्थान स्वर कहनो । सो दूसरी करा ॥ अरु तार स्थाई होय । ता आगे मूर्छनाको पांचवो छहटो सातवो स्वर होय ॥ पिछे मंद्र स्थाई स्वर होय ॥ सो तिसरी करा ॥ इन तीन कराको प्रसाद अलंकार जां- निये ॥ सौ ॥ रि ॥ सां ॥ इति प्रथम करा सौ ॥ ग ॥ म ॥ सां ॥ इति द्वितीय करा ॥ सौ ॥ प ॥ ध ॥ नि ॥ सां ॥ इति वृतीय करा ऐसेंहि सब स्थाई स्वरमें जांनिये ॥ इति प्रसाद संपूर्णम् ॥

इति स्थाईगत अलंकार संपूर्णम् ॥

- अथ आरोही वर्णके बारह ॥ १२ ॥ अलंकारको नाम लिख्यते ॥ विस्तीर्ण ॥ १ ॥ निष्कर्ष ॥ २ ॥ बिंदु ॥ ३ ॥ अभ्युच्चय ॥ ४ ॥ हिसत ॥ ५ ॥ पेंखित ॥ ६ ॥ अक्षिप्त ॥ ७ ॥ संधिपच्छादन ॥ ८ ॥ उदीत ॥ ९ ॥ उदवा हित ॥ १० ॥ त्रिवर्ण ॥ ११ ॥ पृथगवेणी ॥ १२ ॥ इति आरोही अलंकारके नाम संपूर्णम् ॥
- 9 अथ विस्तीर्ण अलंकारको लक्षण लिख्यते॥ जहां मूर्छनामें अथवा संपूर्ण षाडव औडव ताननमें मूर्छनाको ज्यो आदि स्वर सो स्थाई स्वर। तातें लेके संपूर्ण होय सो सात स्वरतांई षाडव होय तो छह स्वरनतांई। औडव होय तो पांच स्वरनतांई ठहिर ठहिरके दीर्घ स्वरनको उच्चार कर नोहे। सो विस्तीर्ण नाम अलंकार जांनिये। उदाहरण। सा। री। गा। मा। पा। धा। नी॥ ऐसें सब ठोर ज्यो स्थाई स्वर होय तातें लेकें॥ जितनें आरोह कममें स्वर होई। तिनको उच्चार ऐसें कीजिये॥ इति विस्तीर्ण अलंकार लक्षण संपूर्णम्॥
- २ अथ निष्कर्ष अलंकारको लक्षण लिख्यते ।। जहां संपूर्ण षाडव औडव मूर्छनाके आदि स्वर जो स्थाई स्वर तातें लेकें संपूर्ण होय तो सात स्वरताई ॥ षाडव होय तो छह स्वरताई ॥ औडव होय तो पांच स्वरताई ॥ आरोह कम करिकें न्हस्व स्वरनको दो दो वार उच्चार होय ॥ सो निष्कर्ष अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स । रि रि । ग ग । म म । प प । ध ध । नि नि ॥ ऐसेहि सब ठोर मूर्छनाके आदि स्वरतें लेकें । आरोह कममें । जितनें स्वर ह तिनको उच्चार या रितिसों जांनिय ॥ इति निष्कर्ष अलंकार संपूर्णम् ॥
- ३ अथ तिसरो विंदु अलंकारको लक्षण लिख्यते ।। जहां मूर्छनाके आदि स्वरतें लेकें। आरोह कम करिकें। पहले स्वरकों तीन वेर कहिये ॥ दूसरे स्वरको एक वेर कहनो। ऐसेंही तीसरे स्वरको तीन वेर । चोथे स्वरको एक वेर । पांचवे स्वरको तीन वेर । छहटे स्वरको एक वेर । सातवें स्वरको तीन वेर उच्चार कीजिये । सो बिंदु अलंकार जांनिये। सा सा सा ति । गा गा गा म । पा पा पा ध ।

नी नी नी सा। ऐसी रितिसों आरोह क्रममें ज्यो स्वरको उच्चार होई॥सो बिंदु अलंकार जांनिये॥ इति बिंदु अलंकार संपूर्णम्॥

- ४ अथ अभ्युच्चय अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां आरोह कममें मूर्छनाके प्रथम स्वर किह ॥ दूसरे स्वर छोडि दिजिये ॥ अरु दूसरे स्वर किह चोथो छोडि पांचमां किह । छहटा छोडि । सातमों किहिये ॥ ऐसे मूर्छनामं जितनें स्वर होई । तिनमें एकेक उना स्वर कहेंनेंसे ॥ पुरे स्वर होई सो अभ्युच्चय अलंकार जांनिये । उदाहरण । स । ग । प । नि ॥ ऐसेंहि सब ठोर जांनिये । इति अभ्युच्चय अलंकार संपूर्णम ॥
- ५ अथ हिसत अलंकारकां लक्षण लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनाके स्वरनको ॥
 पहलो एक वेर ॥ दूसरो दोय वेर ॥ तीसरो तीन वेर ॥ चोथो च्यार
 वेर ॥ पांचवों पांच वेर ॥ छहटो छह वेर ॥ सातवो सात वेर ॥
 उच्चार कीजिये ॥ सो हिसत अलंकार जानिये ॥ उदाहरण । स ।
 रि रि । ग ग ग । म म म म । प प प प प । ध ध ध ध ध व नि नि नि नि नि नि नि नि । एसें सब मूर्छनानेमें जांनिय ॥ इति
 हिसत अलंकार संपूर्णम् ॥
- ६ अथ प्रसित अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले दोय स्वर किहये ॥ फेर दूसरे नार के स्वर मिलाय किहये ॥ फेर तीसंर चांथे मिलाय किहये ॥ पांचव छटे मिलाय किहये ॥ छटे सातंबं मिलाय किहये ॥ या रिनिसो आरोह होय ॥ सो पेंसित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि । रि ग । ग म । प ध । ध नि ॥ ऐसेंहि सब मूर्छनामें जांनिये आरोह कमसों ॥ इति प्रेंसित अलंकार संपूर्णम् ॥
- अथ आक्षिप्त अलंकार कहिये ॥ जहां मूर्छनाके स्वरनमें ॥ पहले नीसरे स्वर मिलाय कहिये ॥ तीसरे पांचवें मिलाय कहिये ॥ पांचवें सातवें मिलाय कहिये ॥ या रितिसों आरोह होय ॥ सो आक्षिप्त जांनिये ॥

उदाहरण ॥ स गा । ग पा । प नी ॥ ऐसेंहि ओर मूर्छनानमें जांनिये ॥ इति आक्षिप्त अलंकार संपूर्णम् ॥

- अथ संधिप्रच्छादनको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाक जितने स्वर होय ॥ तिनमें पहले तीन स्वर कहिये ॥ सो एकलो ॥ अरु तीसरो चोथो पांचमां मिलाय कहिये ॥ सो इसरी कला पांचें छटें सातंं मिलाय कहिये ॥ सो तिसरी कला ॥ या रिनिसों आरोह होय सो संधिपच्छादन जांनिये ॥ उदाहरण । स रिगा । ग म पा । प ध नी । ऐसेंहि सब मूर्छनानें जांनिये ॥ इति संधिप्रच्छादन संपूर्णम् ॥
- ९ अथ उद्गीत अलंकारको लक्षण लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनाके पथम स्वरको तीन वेर उच्चार किहये ॥ फर दूसरे तीमरे स्वरको एक वेर मिलाय किहये सो एक कला ॥ अर चोथ स्वरको तीन वेर उच्चार किर फेर पांचवो छटो स्वरको एक वेर मिलाय किहये ॥ सा दूसरी कला ॥ ऐसी दोय कलानसों आरोह होय सो उद्गीत जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स स स रि गा । म म म प धा ॥ यह षाडव ताननमें बहुत आवे हैं ॥ ऐसेहि सब टार जांनिये ॥ इति उद्गीत अलंकार संपूर्णम ॥
- 10 अथ उद्गहित अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां मूर्छनामं प्रथम स्वरको उच्चार करि दूसरे स्वरको गीन वर उच्चार कीजिये ॥ अर तीसरे स्वरको एक वर उच्चार कीजिये से एक कला ॥ ओर चोथे स्वर कही ॥ पांचवें स्वरको तीन वर उच्चार करि ॥ फर छटे स्वरको एक वेर उच्चार कीजिये ॥ या रितिसों आरोह होय । सो उद्घाहित अलंकार जांनिये उदाहरण। स रि रि गा। म प प प धा। यह पांडव ताननमें प्रसिद्ध हे ऐसेहि सब टोर जांनिये ॥ इति उद्घाहित अलंकार लक्षण संपूर्णम् ।
- ११ अथ त्रिवर्ण अलंकारको लक्षण लिख्यत ॥ जाम मूर्छनाक पहले दोय स्वरको उचार करि। तीसरे स्वरको तीन वेर उचार करे। सो एक कला है। फर चोधे पांचवे स्वर मिलाय कहिये। ओर

छटे स्वरको तीन वर मिलाय उच्चार कीजिये। ऐसि रितिसों आरोह कम होय सो त्रिवर्ण अलंकार जांनिये। उदाहरण। स रि ग ग गा। म प ध ध ॥ यह अलंकार षांडव तानमें प्रसिद्ध है ॥ इति जिवर्ण अलंकारको लक्ष्मण संपूर्णम् ॥

- १२ अथ पृथरवेणि अलंका रक्ता लखन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके जितनें स्वर होय तितनें स्वरमें जुदे जुदे कि किं तीन तीन वेर एक एक स्वरको उच्चार की जिये । या रितिनों आरोह होय सो पृथरवेणि अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रा स । रि रि रि । ग ग ग । म म म । प प प । घ घ घ घ । ति ति नि । यह पांडव तांनमें प्रसिद्ध हे । ऐसेंहि सब मूर्छना ताननमें जांनिये ॥ इति बारह आरोहि अलंकार संपूर्णम ॥
 - अथ अवरोहि अलंकारके नाम आरोहीके ही है ॥ ये बारह अलंकार अवरोहि कममों गीतादिकमें जांनिय । इनके कममों १२ बारह उदाहरण कहत ह ॥
- 9 अथ अवरोहि विस्तीर्णको लक्षण लिख्यते ॥ जब अवरोहि कमसा पढे तब अवरोहि विस्तार्ण जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नी । था। पा। मा। गा। रि। सा। ऐसेंहि सब ठोर जांनिय ॥ इति अवरोहि वि-स्तीर्ण लक्षण संपूर्णम् ॥
- अथ अवरोहि निष्कर्षको लक्षण लिख्यते ॥ जब अवरोहि कमसो पढिये । तब अवरोहि निष्कर्ष जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नि नि । ध ध ।
 प प । म म । ग ग । रि रि । स स । ऐसेंहि रितिसों जहां अवरोही
 होय । सो निष्कर्ष जांनिये ॥ इति अवरोहि निष्कर्षको लक्षण
 संपूर्णम् ॥
- ३ अथ अवरोहि विंदुको लक्षण लिख्यते ॥ जब अवरोह कमसों होय तब अवरोहि विंदु अलंकार जांनिये । उदाहरण । नी नी नी । ध । पा पा पा । म । गा गा गा । रि । सा सा सा । ऐसे विंदु अलं-कार जांनिये ॥ इति अवरोहि विंदु अलंकार संपूर्णम ॥

- ४ अथ अवरोहि अभ्युचयको लछन लिख्यते ॥ जब अवरोह कमसों होय ॥ तब अवरोहि अभ्युचय जांनिये । उदाहरण । नि । प । ग । स ॥ इति अवरोहि अभ्युचय अलंकार संपूर्णम ॥
- ५ अथ हिसितको लछन लिख्यते ॥ जहां अवरोह कमसों होय। सो अवरोहि हिसित जांनियं। उदाहरण ॥ नि नि नि नि नि नि नि नि । धधधधध। पपपप। मममम। गगग। रि रि। स॥ इति अवरोहि हिसित अलंकार संपूर्णम्॥
- ६ अथ अवरोहि प्रंक्तिको लक्षण लिख्यते ।। जां मूर्छनामें ॥ अवरोह कमसों होय ॥ मां अवरोही प्रंक्ति जांनिय ॥ उदाहरण॥ निध। धप। मग। गरि। रिम॥ इति अवरोहि प्रंक्ति अलंकार संपूर्णम् ॥
- अथ अवरोहि आक्षिप्तको लक्षण लिख्यंत ।। जहां अवरोह कमसो होय ॥ सो आक्षिप्त अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नी प । पा ग । गा स ॥ ऐसं या रितिसों अवरोह होय सो आक्षिप्त जांनिये ॥ इति अवरोहि आक्षिप्त अलंकार मंपूर्णम् ॥
- ८ अथ अवरोहि संधिप्रच्छादनको लक्षण लिख्यते ॥ जहां आरोहि संधिपच्छादन अवरोह कमसों होय ॥ सो अवरोहि संधि-पच्छादन जांनिये ॥ उदाहरण ॥ नि ध प । प म ग । ग रि स ॥ इति संधिप्रच्छादन अलंकार संपूर्णम् ॥
- ९ अथ अवरंगिह उद्गीतका लक्षण लिख्यते ॥ जहां अवरोहि उद्गीत अवरोहि कमसों होय ॥ सो अवरोहि उद्गीत जांनिये॥ उदाहरण॥ धप। ममम। गरि। ससस॥ इति अवरोहि उद्गीत अलंकार मंपूर्णम॥
- १० अथ अवरोहि उद्दाहितका लक्षण लिख्यते ॥ जहां आरोहि उद्दाहि-त अवरोह कमसों होय ॥ सो आरोहि उद्दाहित जांनिये ॥ उदा-हरण ॥ ध प प प म । ग रि रि रि स ॥ इति अवरोहि उद्दाहित अलंकार संपूर्णम् ॥

- 99 अथ अवरोहि त्रिवर्ण अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां आरोहि त्रिवर्ण । अवरोह कमसों होय ॥ सो अवरोहि त्रिवर्ण जांनिय । उदाहरण ॥ ध ध ध । प म । ग ग ग । रि स ॥ इति अवरोहि त्रिवर्ण अलंकार संपूर्णम् ॥
- १२ अथ अवरोहि पृथाविभिक्तो लछन लिख्यते ॥ जहां अवरोहि पृथग्वेणि । अवरोह कमसों होय सो अवरोहि पृथाविणि जांनियं । उदाहरण । नि नि नि । घ घ घ । प प प । म म म । ग
 ग ग । रि रि रि । स स स ॥ इति अवरोहि पृथाविणि अलंकार
 मंपूर्णम् ॥
- इति बारह अवरोहि अलंकारको उदाहरण लछन संपूर्णम ॥
 अथ तिसरा वर्ण जो संचारि ताके । अलंकार । २५ । पविसहे तिनके
 नाम लिख्यते । मंदादि । १ । मंद्रमध्य । २ । मंद्रांत । ३ ।
 पस्तार । ४ । प्रसाद । ५ । ब्यायृत । ६ । स्खिलन । ७ । परिवर्त
 । ८ । आक्षेप । ९ । विंदु । १० । उद्घाहित । ११ । ऊर्मि । १२ ।
 सम । १३ । पंख । १४ । निष्कू जित । १५ । श्येन । १६ । कम
 । १७ । उद्घटित । १८ । रंजित । १९ । सन्तिवृत्त प्रवृत्तक । २० ।
 वेणु । २१ । लल्लिस्वर । २२ । हुंकार । २३ । ल्हाद्मान । २४ ।
 अवलाकित । २५ ।
- 9 अथ प्रथम संचारी मंद्रादि अलंकारको लक्षण लिख्यते॥ तहां मूर्छनांक पहले च्यार स्वरनको आराह करि अवरोह कीजे। फेर पहले दोय स्वरको उच्चार करि। प्रथम स्वरको उच्चारकीजे॥ फेर दूसरे तीसरे स्वरको उच्चार कीजे॥ दूसरो स्वरको उच्चार कीजिये॥ फेर तीसरे चोथे स्वरको उच्चार कीजिये॥ सो एक कला हे॥ १॥ फेर मूर्छनांके दूसरे स्वर तें लेकें पांचवें स्वर ताई॥ आरोह करि अवरोह कीजिये॥ दूसरे स्वर तांई। प्रथम स्वर छोडि दिजिये। फेर दूसरे तीसरे स्वरकों उच्चार करके दूसरे स्वरका उच्चार कीजिये भेर तीसरे चोथे स्वरका उच्चार करि ॥ दसरो स्वरका उच्चार किरी । कर तीसरो चोथे स्वरको उच्चार

करि तीसरो स्वर कहिये ॥ फेर चोथे पांचवें स्वरको उच्चार कीजि-ये ॥ सो दूसरी कला ॥ २ ॥ फेर पहले दोय स्वर मूर्छनाके छोडि-कें ॥ तीसरे स्वर ते लेकें छह स्वर तांई। आरोह करि अवरोह कीजिये ॥ फर तीसर चोथे स्वर कहीकें तीसरो स्वर कहिये। फेर पांचवं स्वर कही । चांथां स्वर कहीये । तीसरो स्वर कहीये । फेर चोथो पांचवो स्वर कही चोथा स्वर कहीये । फेर पां-चवो छटो स्वर कहीये सो नीसरी करा । ३। फर मुर्छनांक चोथ स्वर ते लेकें सातवं स्वर तांई । आरोह करि अवरोह कीजे । फेर चोथे पांचवें स्वर कहिकें चोथे स्वर कहिये। फेर पांचवें छटे स्वर कहि । छटा पांचवां स्वर कहि । फर छटो सानवां स्वर कहिय सो चोथी कला । ४ । कर पांचवें स्वर ते लेकें । आठवें पडुज तांई। चार स्वरको आराह करि अवरोह कीजे। फेर पांचवें छटे स्वर कहि ॥ पांचवां स्वर कहिये । फेर छंट सानवं स्वर कहि ॥ छटो सातवों स्वर कहीय । फर सातवों आठवो स्वर कहीय । सा पांचवी कला । ५ । इहां दसरी कलोंने पहलों स्वर मुर्छनांका छोडि-य । ऐसे ही चौथी कलोमें तीन स्वर । पांचवी कलोमें च्यार स्वर । मूर्छनाके पहले छोडिये। यह कमहे इन कलानमें। स्थाई आरोहि स्वर होई ॥ इन तिनों वर्णनको मिलायेहे ॥ ऐसों संचार होय । सो मंद्राहि अलंकार जांनिय। उदाहरण। स रि गम। म ग रि स। स रिगरि। स रिगम। १। रिगमप। पमगरि। रिग मग। रिगमप। २। गमपध। धपमग। गमपम। ग म प ध । ३ । म प ध नि । निं ध प म । म प ध प । म प ध नि। ४। पथ निस। सनिधप। पध निध। पध निस । ५ । या रितिसों सब टोर संचारी जांनिये ॥ इति मंद्रादि अलं-कार संपूर्णम् ॥

२ अथ मंद्र मध्यम अलंकारका लखन लिख्यते॥जहां मूर्छनाके पहले। तीसरे, स्वरनको उच्चार करि दूसरो तीसरो स्वर कहिये फेर चोथे तीसरों कहिकें दूसरों नीसरों कहिये। फेर दूसरों तीसरों कहि दूसरों पहलों कि हमें। फेर पहले तें लेकें चोथों स्वर तांई आरोह की जिये सो एक कला। १। याहि रिनिसों दूसरी कलों पहलों स्वर छोडि दूसरे तें लेकें पांचवे स्वर नांई॥ च्यार स्वरकी अरु नीसरि कलों छंटे स्वर नांई। च्यार स्वरकी चोथी पांचमी कलाहूमें रचना होय। सो मंद्र मध्य अलंकार जांनिये॥ उदाहरण। सगरिग। मगरिग। रिगरिस। सिगम। १। रिमगम। पमगम। गमगिर। रिगरिस। सिगम। १। रिमगम। पमगम। गमगिर। रिगरिस। सिगम। १। पिमगम। पमगम। मपगिर। सिगम। १। सिगम। सिगम

३ अथ मन्द्रांत लखन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनांक पहले दूसरेको उचार दोय वेर होय ॥ फेर चोथे तीसरेको उचार होय । फेर चोथे तीसरेको उचार होय । फेर दूसरे तीसरेको उचार होय ॥ फेर दूसरे पहले स्वरको उचार होय । सा प्रथम कला हे । १। या रितिसों पांच कला होय ओर दूसरी तिसरी चोथी पांचमी कलामें । एक दोय तीन च्यार स्वर कमते छोडिये । सो मंद्रांत अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स । रि रि । ग ग । म ग । रि ग । रि स । १ । रि रि । ग ग । म म । प म । ग म । ग रि । २ । ग ग । म म । प प । ध प । म प । म ग । ३ । म म । प प । ध घ । नि घ । प ध । प म । ४ । प प । ध घ । नि नि । स नि । ध नि । ध प । प । ऐसेंहि सब टोर जांनिये ॥ इति मंद्रांत अलंकार संपूर्णम ॥

४ अथ प्रस्तार अलंकार लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनांक स्वरनेंमं वीचक दोय दोय स्वर छोडिंकं ॥ पहले चोथे दोय दोय स्वर मिलायंके पढिये ॥ पहले चोथेको जोग ॥ दूसरे पांचेंको जोग । तीसरे छटवेको जोग॥ चोथे सात्वेको जोग ॥ या रितिसों आरोह होय सो पस्तार जांनिये। उदाहरण। स। म। रि। प। म। घ। म। नि। प। स। ऐसें-हि सब ठोर जांनिये॥ इति प्रस्तार अलंकार संपूर्णम्॥

- ५ अथ प्रसाद अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले दोय स्वरकों तीन वेर उच्चार करि ॥ फेर तीसरे दूसरेको उच्चार करिये । या कमसों सात स्वरनको आरोह होय ॥ ओर छहजामें कला होय । सो पसाद। अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रि स रि स रि ग रि० । रि ग रि ग रि ग म ग० । ग म ग म ग म प म प म प म प म प म प० । प घ प घ प घ नि घ० । घ नि घ नि घ नि स नि ॥ या रितिसों सब ठोर जांनिये ॥ इति प्रसाद अलंकार संपूर्णम् ॥
- ६ अथ व्यावृत्त अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके वरनमें ।
 पहले तीसरे स्वरको ॥ दूसरे चोथे स्वरको जोग किह । पहले स्वरको चोथे स्वर तांई ॥ आरोह होय सो एक कला हे । या कमसों
 च्यार च्यार स्वरकी रचना करिये सो व्यावृत्त अलंकार जांनिये ।
 उदाहरण । स ग रि म । स रि ग म । रि म ग प । रि ग म प ।
 ग प म ध । ग म प ध । म ध प नि । म प ध नि । प नि ध स । प ध
 नि स ॥ इति व्यावृत्त अलंकार संपूर्णम् ॥
- अथ स्विलित अलंकार लिख्यंत ॥ जहां पहले तीसरे स्वरको ॥ अरु दूसरे चोथं स्वरको जोग किहकें चोथं दूसरे स्वरको अरु तीसरे पहले स्वरको जोग किहये। फेर पहले स्वर तें चोथं स्वर तांई ॥ आरोह किरये ॥ ऐसें च्यार च्यार स्वरकी रचना होय सो स्विलित अलंकार जांनिये। उदाहरण। सगरि म० मरि ग स० सि ग म० १ रि म ग प० प ग मरि० रि ग म प० २ ग प म ध० ध म प ग० ग म प ध० ३ म ध प नि० नि प ध म० म प ध नि० ४ प नि ध सं० स ध नि प० प ध नि स० ५ ऐसेंहि सब ठोर जांनिये॥
- अथ परिवर्त अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले तीसरे स्वरको उचार
 करि । चोथे दूसरे स्वर कही ये ॥ या रितिसों कला होय सो परि-

वर्त जांनिये। उदाहरण। सगमरि० रिमपग० गपध म० मध निप० पनिसध०। ऐसेंहि सब ठोर जांनिये॥

- ९ अथ आक्षेप अलंकारको लखन लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनाके स्वरनमें कमसों तीन तीन स्वरनकी कला होय सो आक्षेप अलंकार जांनिये। उदाहरण ॥ स रि ग० रि ग म० ग म प० म प ध० प ध नि० ध नि स० ॥ इति आक्षेप अलंकार मंपूर्णम ॥
- १० अथ विंदु अलंकार लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनांक स्वरनमें प्रथम स्वर दीर्घ हायकें । तीन वर उच्चार पांव । सो दूसरो स्वर न्हस्व होय ॥ तापाछे दीर्घ प्रथम स्वरको उच्चार करि । दीर्घ तीसरे स्वरको उच्चार किंग्य । या रितिसो बिंदु अलंकार जांनिय । उदाहरण । सा सा सा रि सा गा। री री री ग रि मा। भा गा गाम गा पा। मा मा मा प मा था। पा पा पा थ पा नि। धा धा धा नि धा सा । ऐसेंहि सब टोर जांनिये ॥ इति बिंदु अलंकार संपूर्णम् ॥
- 99 अथ उद्वाहित अलंकारको लखन लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनामे पहिले तीन स्वर उच्चार करिके अवरे।हका दुसरा स्वरलेके उच्चार कीजिये या रितिसो चार स्वरकी जा रचना होय सा उद्वाहित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स रिग रिग रिग मग। गम पम। म पैं धप। पधनि ध। धनि स नि। निस रिस।
- 1२ ऊर्मि अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहंटे दोय स्वरको उच्चार करि तीसरे स्वरको तीन वर उच्चार करिय । फर पहंटे चोथे स्वरको एक वर उच्चार करिये । या रितिसों कला होय । १ । सो ऊर्मि अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स म म स स म । १ । रि प प प रि प । २ । ग ध ध ध ग ध । ३ । म नि नि म नि । ४ । प स स स प स । ५ । ऐसे सब टोर जांनिये ॥ इति ऊर्मि अलंकार संपूर्णम् ॥
- 9 अथ सम अलंकार लिख्यते ॥ जहां प्रथम च्यार च्यार स्वरको आरोह करि अवरोह कीजे ॥ फेर च्यार स्वरनको आरोह कीजे ॥ ऐसें २६

कला होय ॥ सो सम अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स रि ग म । म ग रि स । स रि ग म । १ । रि ग म प । प म ग रि । रि ग म प । २ । ग म प ध । ध प म ग । ग म प ध । ३ । म प ध नि । नि ध प म । म प ध नि । ४ । प ध नि स । स नि ध प । प ध नि स । ५ । इति सम अलंकार संपूर्णम् ॥

- 18 अथ प्रेंसित अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले स्वर दाय दोय वेर उच्चार किर चोथे स्वरको उच्चार किर दोय दोय होय । ऐसें कला कीजिय ॥ सो पेंसित अलंकार जांनिये । उदाहरण । ससमम । १ । रि रि प प । २ । ग ग ध ध । ३ । म म नि नि । ४ । प प से स । प। ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति प्रेसित अलंकार संपूर्णम् ॥
- २५ अथ निष्कृजित अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले चोथे स्व-रको मिलायके । उच्चार दोय वेर होय ॥ फेर पहले तें लेकें चोथे स्वरतें आरोह होय ॥ ऐसें कमसों कला कीजिये ॥ सो निष्कृजित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स म । स म । स रि ग म । १ । रि प।रि प।रि ग म प।२।ग ध।ग ध।ग म प ध। ३ ।म नि।म नि।म प ध नि । ४ । प स । प स । प ध नि स । ५ । ऐसेंहि सब टोर जांनिये ॥ इति निष्कृजित अलंकार संपूर्णम् ॥
- १६ अथ श्येन अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाकं प्रथम स्वरसों मिलायके । दूसरे आदिक स्वरनको । जुदो जुदो उच्चार कीजिये । ऐसे कला होय । सो श्येन अलंकार जांनिये । उदाहरण ॥ स रि । स ग । स म । स प । स ध । स नि । स स ॥ ऐसे सब ठोर जांनिये ॥ इति श्येन अलंकार संपूर्णम ॥
- ३७ अथ कम अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाक स्वरनमं पहले दोय स्वर-नको उच्चार करि ॥ वाहि कमसो तीन स्वरनको उच्चार कीजिये। फेर वाहि कमसों च्यार स्वरनको उच्चार कीजिये॥ ऐसें कला होय सो कम अलंकार जांनिये॥ उदाहरण ॥ स रि रि ग ग म । १। रिगगम प । २। गमम प प ध । ३। म प प ध

ध नि । ४ । ५ ध ध ध नि नि स । ५ । ऐसेंहि सब ठोर जांनिय॥ इति कम अलंकार संपूर्णम् ॥

- १८ अथ उद्घटित अलंकार लिख्यते ॥ जहां मूर्छनाके पहले तीसरे स्वर मिलायके दोय वर कहिये ॥ फेर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय । सो उद्घटित अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स ग । स ग । स रि ग म । १। रि म । रि म । रि ग म प । २। ग प। ग प । ग म प घ । ३। म घ । म घ । म प म । ४। प नि । प नि । प घ नि म । प । ऐसं सबढोर जांनिये । इति उद्घटित अलंकार मंपूर्णम् ॥
- २० अथ सिन्नवृत्त प्रवृत्त अलंकार लिख्यते॥ जहां मूर्छनाके पहले स्वर ते लेकें तीसरे स्वरतांई। आरोह किर ॥ दूसरे स्वर ते लेकें चेथे स्वरतांई ॥ आरोह कीजिये॥ फेर तीसरे स्वर ते लेकें पहले स्वरतांई अवरोह किर दूसरे स्वर ते लेकें चेथे स्वरतांई आरोह कीजिये॥ ऐसें कला कीजिये॥ सो सिन्ववृत्त अलंकार जांनिये॥ उदाहरण॥ स रि ग रि ग म ग रि । स रि ग म । रि ग म ग । प प म । प प म । प प म । प प न प । प प न प । प प न प । प प न प । प प न प । प प न प । प प न प । प प न स । ऐसें सव ठोर जांनिये॥ इति सिन्ववृत्त अलंकारको कम दोय वेर कहि । ऐसें कला होय। सो पवृत्त अलंकार जांनिये॥ उदाहरण॥ स स रि रि । ग ग रि

रि। गगमम। गगरि रि। सस रि रि। गगम म। रि रिगग। ममगग। ममपप। ममगग। रिरिग ग। ममपप। गगमम। पपमम। पपधध। पपमम। गगमम। पपमम। पपधध। पपमम। गगमम। प पधध। ममपप। धधपप। धधिनि। धधिप। ममपप। धधिनि। पपधध। निनिधध। निनिस स। निनिधध। पपधध। निनिस स। ऐसंसब ठार जां-निये। इति प्रयुक्त अल्डेक्तार संपूर्णसा। याहीको प्रमोदकहते हैं।।

- २१ अथ वेणु अलंकारको लखन लिख्यंत ॥ जहां प्रथम स्वरको चाथे स्व-रको उच्चार करि तीसंग चाथे स्वरको उच्चार करिये ॥ फेर पहाँछ स्वर ते लेकें । चाथे स्वरतांई आरोह कीजिये ॥ ऐसे कला होय सा वणु अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ समगम सिगम। १। रिगम परिगम प। २। गधप धगम पध। ३। मनि धनि म पधनि। ४। पसनि सपधनि स। ५। ऐसं सब टार जांनिये ॥ इति वणु अलंकार संपूर्णम् ॥
- २२ अथ लित स्वर अलंकारको लक्कन लिक्यते ॥ जहां पहले स्वर चोथे स्वर तीसरे स्वरको दोय दोय वर उचार किर ॥ दूसरे पहले स्वरको उचार होय ॥ फेर पहले स्वर दे ले लेकें चोथे स्वर तांई अगरोह कीजिये ऐसें कला होय ॥ सो लित—स्वर अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ स स म म । ग ग रि स स रि ग रि । स रि ग म । रि रि प प । म म ग रि रि ग म ग । रि ग म प । ग ग ध ध । प प म ग ग म प म । ग म प ध । म म नि नि । ध ध प म । म प ध प । म प ध नि । प प स स । नि नि ध प । प ध नि ध । प ध नि स । ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति लिति स्वर अलं-कार संपूर्णम् ॥

- २३ अथ हुंकार अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले स्वरकों दोय वेर उच्चार करि पांचवे स्वरकों दोय दोय वेर उच्चार कीजिये ॥ ऐसें कमसों कला होय । सो हुंकार अलंकार जांनिये । उदाहरण । स स । प प । रि रि । ध ध । ग ग । नि नि । म म । स स । ऐसें मब टोर जांनिये ॥ इति हंकार अलंकार संपूर्णम् ॥
- २४ अथ ल्हाद्मान अलंकारको लखन लिख्यते ॥ जहां पहले स्वरको तीन वर उच्चार करि। चोथ स्वरको तीन वर उच्चार कीजिये॥ या क्रमसों कला होय सो ल्हाद्मान अलंकार जांनिये। उदाहरण। ससा। ममा। रिरिशि पिपपप। गगग॥ धधध। ममा। निनि नि। पपप। ससास। ऐसे सब ठोर जांनिये। इति ल्हाद्मान अलंकार मंपूर्णम्॥
- २५ अथ अवले। कित अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले तीसरे स्वरको उच्चार किर ॥ बांधे स्वरको दोय वेर उच्चार कीजिये। फेर दूसरे पहले स्वरको उच्चार कीजिये। उदाहरण। स ग म म रि स । रि म प प ग रि । ग प ध म ग । म ध नि नि प म । प नि स स ध प । ऐसे सब टोर जांनिये ॥ इति अवलो-कित अलंकार संपूर्णम् ॥
 - अथ गीतनमं गायवेक सात । ७ । अलंकारको नाम लिख्यते ॥ इंद्रनील । १ । महावज्र । २ । निर्दोष । ३ । सीर । ४ । को-किल । ५ । आवर्त । ६ । सदानंद । ७ ।
- ९ अथ प्रथम इन्द्रनीलको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले स्वर तें लेकें । चोथे स्वरतांई । आरोह किर तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार कीजिये । फेर दूसरे पहले स्वरको । उच्चार किर तीसरे दसरे स्वरको उच्चार कीजिये । फेर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह कीजिये । ऐसें कला होय । सों इंद्रनील अलंकार जांनिये । उदाहरण । स रि ग म । ग रि । स रि ग रि । स रि ग म । रि ग म प । ग रि ग स र

पम। गमपम। गमपध। मपधनि। धप। मपधप। मपधनि। पधनिस। निध। पधनिध। पधनिस। ऐसंसब ठोर जांनिये॥ इति इंद्रनील अलंकार संपूर्णम्॥

- २ अथ महावज्र अलंकारको लखन लिख्यते ॥ जहां पैहले दूसरे स्व-रको उच्चार किर ॥ फेर तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार किजिये ॥ अरु पहले दोय स्वर किहकें ॥ पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई । आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय ॥ सो महावज्य अलंकार जांनिये। उदाहरण। स रिगरि। स रिगसरिगम। १। रिगमग। रिग। रिगमप। २। गमपम। गम। गमपध। ३। मपधप। मप। मपधनि। ४। पधनिध। पध। पध निस। ५। ऐसें सब ठोर जांनिये॥ इति महावज्य अलंकार संपूर्णम्॥
- ३ अथ निर्दोष अलंकारको लछन लिख्यंत ॥ जहां पहले दाय स्वरको उच्चार किर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आराह कीजिये। ऐसें कला होय ॥ सो निर्दोष अलंकार जांनिये। उदाहरण ॥ स रि। स रि ग म। रिग। रिगमप॥ गम। गमपध। मप। मपधनि॥ पध। पधनि स॥ ऐसें सब ठोर जांनिये॥ इति निर्दोष अल-कारको लछन संपूर्णम॥
- ४ अथ सीर अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले दोय स्वरको दोय दोय वेर उच्चार किर ॥ फेर तीसरे स्वरकों उच्चार किर पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वर तांई आरोह कीजिये ॥ ऐसें कला होय सो सीर अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । स रि । स रि ग । स रि ग म ॥१॥ रि ग । रि ग म । रि ग म प ॥ २ ॥ ग म । ग म प । ग म प ध ॥ ३ ॥ म प । म प ध । म प ध नि ॥ ४ ॥ प ध । प ध नि । प ध नि स ॥ प ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति सीर अलंका-रको लखन संपूर्णम् ॥

- ५ अथ कोकिल अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहें तीन स्वरकों उच्चार किर फेर पहेंछे स्वर तें छेकें चोथे स्वर तोई आरोह किरये॥ ऐसें कला होय॥ सो कोकिल अलंकार जांनिय ॥ उदाहरण॥ स रि ग। स रि गम॥ १॥ रि गम। रि गमप॥ २॥ गमप। गमप॥ १॥ गमप॥ १॥ मपधीन ॥ प्राप्ति । पधीन स ॥ ५॥ ऐसें सब टार जांनिये॥ इति कोकिल अलंकारको लछन संपूर्णम्॥
- ६ अथ आवर्त अलंकारको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले दोय स्वरको उच्चार किर । फर तीसरे दूसरे स्वरको उच्चार किरये फेर पहले दोय स्वरको दोय वेर उच्चार किर ॥ पहले स्वर तें लेकें चोथे स्वरतांई आराह कीजिये ऐसें कला होय सा आवर्त अलंकार जांनिय । उदाहरण ॥ स रि ग रि। स रि स रि । स रि ग म ॥ १॥ रि ग म ग । रि ग रि ग । रि ग म प ॥ २ ॥ ग म प म । ग म ग म । ग म प ध ॥ ३॥ म प ध प । म प म प । म प ध नि ॥ ८॥ प ध नि ध । प ध प ध नि स ॥ प ॥ ऐसें सब ठोर जांनिये ॥ इति आवर्त अलंकार संपूर्णम् ॥
- अथ मदानंद अलंकारको लछन लिख्यंत ॥ जहां च्यार च्यार स्व-ग्कां कमसों आरोह हाय । ऐसं कला कीजिये ॥ सो सदानंद अलं-कार जांनिये । उदाहरण । स रि ग म । १ । रि ग म प । २ । ग म प ध । ३ । म प ध नि । ४ । प ध नि स । ५ । ऐसें सब ठोर जांनियं ॥ इति सदानंद अलंकार संपूर्णम् ॥
 - अथ रागनंक अंग पांच हं तिनके नाम लिख्यते ॥ जहां चक्राकार । १ । जव । २ । संख । ३ । पद्माकार । ४ । वारिद । ५ ।
- 9 अथ चक्राकार अलंकारको लक्षण लिख्यते ॥ जहां दूसरे स्वरकों च्यार वर उच्चार करि ॥ मथम स्वरको एक वेर उच्चार कीजियं ॥ फेर दूसरे स्वरको तीन वेर उच्चार कीजिये ॥ ऐसें कला होय ॥ सो चक्राकार अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण ॥ रि रि रि स रि रि रि

- २ अथ जब अलंकारको लक्षण लिख्यते॥ जहां सातो स्वरको उच्चार करि॥ अंतको एक एक स्वर छोडिके अवरेह कीजिये॥ ऐसें या कमसों पहले एक स्वर छेतें सात स्वरनेक एक एक स्वर छोडिये॥ सो जव अलंकार जांनिये॥ उदाहरण॥ स रिगमपधनि। स निधपमगरिस॥ सरिगमपधनि। धपमगरिस॥ सरिगमपधनि। धपमगरिस॥ सरिगमपभगरिस॥ सरिगमपमगरिस। स
- ३ अथ शंख अलंकारको लक्षण लिख्यंत ॥ जहां मूर्छनाके पिछले दीर्घ स्वरको दोय दोय वर उच्चार किर । वाके नीचले दोय स्वरको अवरोह कमसों उच्चार कीजिय ॥ या कमसों पहले स्वर तांई आव नो ऐसी रचना होय । सा शंख अलंकार जांनिये ॥ उदाहरण । सा सा नि धा नि वि ध प ॥ धा धा प म पा पा म ग ॥ मा मा ग रि ॥ गा गा रि स ॥ ऐसं सब टार जांनिय ॥ इति शंख अलंकार मंपूर्णम् ॥
- ४ अथ पद्माकार अलंकारको लक्षण लिख्यंत ॥ जहां पहले दाय स्वरकों उचार करि प्रथम एक स्वरका तीन वर उचार कीजिये ॥ फेर दूसरे स्वरनकों उचार करि॥ तीसरे स्वरकों दाय वर उचार कीजिये ॥ या कमसों कला हाय ॥ सा पद्माकार अलंकार जांनिये । उदाहरण । स रि स सस रि ग ग ॥ रि ग रि रि रि ग म म ॥ ग म ग ग ग म प प ॥ म प म म प य य ॥ प य प प प य नि नि ॥ य नि य य य नि स स ॥ ऐसें सब टोर जांनिये ॥ इति पद्माकार अलंकार संपूर्णम् ॥

प्रथमस्वराध्याय-वर्णअलंकार समाप्त-मेलके लखन व उदाहरण. २०९

५ अथ वारिद अलंकारकालक्षण लिख्यते ॥ जहां पहले स्वरको उचार करि ॥ पिछले स्वरको तीन वर उचार कीजिय ॥ ओर कमसों पिछलो एक एक स्वर छोडिके यह रिति कीजिय ॥ जहां तांई पहले स्वर पे आवै तहां तांई सा वारिद अलंकार जांनिय । उदाहरण । स नि नि । स घ घ घ । स प प प । स म म म स ग ग ग । स रि रि रि । स स स स । ऐसे सब ठोर जांनिये । इति वारिद अलंकार संपूर्णम् ॥ ॥

इति त्रेसटी मुख्य अलंकार ओर पांच रागोंकें अंगके मिलिंक अडसटि अलंकार संपूर्णम् ॥

कितंन हु राग अलंकार विना कहें है तोभी उन्हूंमें ये अलंकार साधिये स्वर ताल ओर तांनके लिये ॥ अरु राग तो तीन प्रकारके कहें हैं । यातेयह॥ अलंकार भी तीन प्रकारके जांनिय । ओर ये गिनके मेल अनंत हैं ॥ याते मेलके जोगसों अलंकार अनंत जांनिय ॥ इति अलंकार अधिकार संपूर्णम् ॥

अथ अनुपविलामके मतमां मेलको लक्षण लिख्यते ॥

वरितवमे जांक रागकी उत्पत्ति होय। सां स्वरको अनूप किहेंये। मूर्छना क्रमसों वा सुद्ध तांन वा कृट तांन कमसों आरोह अवरोह किर। स्वरनकी रचनासों मेल जांनिय ॥ सां मेल सुद्ध स्वरनसों होय ता मेल सुद्ध स्वर जांनिय ॥ अरु विकत स्वरन जांनिय ॥ तहां सुद्ध सातां स्वरसों भयो जो मेल सो संपूर्णम् जांनिय ॥ अरु सुद्ध लह स्वरनसों भयो जो मेल सो पाइव जांनिय ॥ अरु सुद्ध पांच स्वरनसों भयो जो मेल सो औडव जांनिय ॥ ऐसे सुद्ध मेलके तीन भेद जांनिय ॥ अरु विकतस्वरन मेल विकत स्वरनतें जांनिय ॥ तहां सुद्ध मेलके संपूर्ण षाइव ओडवके भेद लिख्यते ॥ तहां सुद्ध संपूर्ण मेलको एक भेद हैं ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ इति संपूर्ण सुद्ध मेल भेद संपूर्णम् ॥

अथ सुद्ध पाडव मेलके छह भेद हं तिनके भेद लिख्यते ॥ उदाहरण ॥ स गम प ध नि । १। स रि म प ध नि । २। स रि ग प ध नि । ३। स रि ग म ध नि । ४। स रि ग म प ध । ६। सि सुद्ध पांडव मेलके भेद संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध औडव मेलके पंधह भेद हं । १५। तिनके स्वरूप लिख्यते ॥ समपधिन । १। सिर पधिन । २। सिर गधिन । ३। सिर गधिन । ३। सिर गधिन । ३। सिर गधिन । ६। सगिधिन । ६। सगिधिन । ६। सगिधिन । ६। सगिधिन । १०। सिर गधिन । १०। सिर गधिन । १३। सिर गपिध । १२। सिर गपिन । १३। सिर गपिध । १४। सिर गपिध । १४। सिर गपिध । १४।

अथ विकत स्वरन मेंल तीन प्रकारको है। संपूर्ण । १। पाडव । २। ओडव । ३। ऐसे तहां जांमें रिषभ कोमल होय ॥ ऐसी जो संपूर्ण विकतस्वरन मेल ताको एक भेद है। उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि । १। यहां रिषभ कोमल हैं॥

अथ विकत स्वर पाडव मेलके पांच भद हे तिनके उदाहरण लिख्यते॥ सिरिसि रिम प घिन । १। सिरिसि रिग प घिन । २। सिरिसि रि गम घिन । ३। सिरिस रिगम पिन । ४। सिरिसि रिगप घिन । ५। इहां विकत स्वर जितायवेकों रिषभ हि दरी कीजे॥

अथ विका स्वर औडव मेलके भेद दस है तिनके उदाहरण लिख्यते॥
स रिस रिप ध नि। १। स रिस रिग ध नि। २। स रिस रिग म
नि। ३। स रिस रिग म प। ४। स रिस रिप ध नि। प। स रिस
रिम प नि। ६। स रिस रिम प ध। ७। म रिस रिग प नि। ८।
स रिस रिग प ध। ९। स रिस रिगम ध। १०। इति औडवमेल संपूर्णम्॥

अथ जा विकत स्वरन मेलमं तीव गांधार होय ता विकत स्वर मेलके भेद लिख्यते ॥ तहां संपूर्णको एक भेद हैं । उदाहरण । स रि ग म प ध नि ॥ इहां गांधार तीव जांनिये॥

अथ तीव्र गांधार विकतस्वर मेलंक कमसों एक एक स्वर दूरि कीये षड्ज विना दूरि किये पांच भेद षाडवके हैं। तिनके उदाहरण लिख्यते। स ग म प ध नि। १। स रि ग प ध नि। २। स रि ग म ध नि। ३। स रि ग म प नि। ४। स रि ग म प ध । ५। इन भेदनमें तीव्र गांधार विकत हैं। यातें दरि नहीं कीजे। अथ तीत्र गांधार विकत स्वर मेलके कमसों पड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीजिये ॥ आडवके छह मेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते। स रिगधनि। १। स रिगमनि । २। स रिगम प । ३। स रिगप नि। ४। स रिगप ध। ५। स रिगम ध। ६। इति तीत्र गांधार जुत विकत स्वर मेलके संपूर्ण पांडव ओड-व भेद संपूर्णम् ॥

अथ तीवतर मध्यम जुत विकत स्वर मेलक भेद लिख्यते ॥ जहां जांमें तीवतर मध्यम होय ॥ ऐसो जो विकत स्वर मेल सो संपूर्ण षांडव औडव है ॥ तहां संपूर्णको एक । १ । भेद है ॥ उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि ॥ इहां मध्यम तीवतर जांनिय ॥

अथ तीव्रतर मध्यम जुत विकत स्वरंके कमसों पड़ज विना एक एक स्वर दूरि किये तें पांच भेद पांडवंक हें तिनके उदाहरण छिख्यते॥ स ग म प ध नि । १। स रि म प ध नि । २। स रि ग प ध नि । ३। स रि ग म प नि । ४। स रि ग म प ध । ५।

अथ तीवतर मध्यम जुन विकत स्वर मेलक कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये तें। आडवेक दस भद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स म प ध नि । १। स रि ग ध नि । २। स रि ग म नि । ३। स रि ग म प । ४। स ग म ध नि । ५। स ग म प ध । ए। स रि म प नि । ८। स रि म प ध । ९। स रि म प नि । ८। स रि म प ध । ९। स रि म प वि । ८। स रि म प ध । ९। स रि म प ध । १०। इहां मध्यम तीवतर जांनिये॥ इति तीवतर मध्यम जुन विकत स्वर मेलके। संपूर्ण पाडव आडव भेद संपूर्णम्॥

अथ कोमल धैवत जुत विकत स्वर मेलके संपूर्ण पांडव ओडके भेद लिख्यते ॥ जामें धैवत स्वर कोमल होय ॥ ऐसो जो विकत स्वर मेल सो संपूर्ण एक भांतिको हे उदाहरण । स रि ग म प ध नि । १।

अथ कोमल धैवत जुत विकत स्वर मेलके कमसों पड्ज विन्र एक एक स्वर दूरि किये पांडवके पांच भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प घ नि । १ । स रि म प घ नि । २ । स रि ग प घ नि । ३ । स रि ग म घ नि । ४ । स रि ग म प घ । ५ । अथ धेवत जुत विकत स्वर मेलके कमसों षड़ज विना दांय दोय स्वर दृति किये। ओडवंक दम भद हैं तिनंक उदाहरण लिख्यते ॥ स में पध नि। १। स रिपध नि। २। स रिगप नि। ३। सगप ध नि । ४। सगम ध नि। ५। स रिगध नि। ६। स रिगध नि। ७। म रिगम ध। ८। स रिमप ध। ९। म गमप ध। १०। इति कांमल धेवत जुत विकत स्वर मेलके भेद संपूर्णम् ॥

अथ तीव्र निषाद जुन विकत स्वर मलेक संपूर्ण षांडव आडव भद लिक्बते ॥ जांमे निषाद तीव्र होय ॥ एसो जो विकत स्वर मेल सो संपूर्ण एक भांतिको है ॥ ताको उदाहरण ॥ स रिगम प घ नि । १ । इहां निषाद तीव्र जांनिय ॥

अथ तीव निषाद जुन विकत स्वर मेल्के कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दृश् िकिये षांडवें मेद पांच हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ सगमप ध नि । १। सरिमप ध नि । २। सरि गप ध नि । ३। सरिगमध नि । ४। सरिगमप नि । ५। इहां निषाद तीव जांनिये॥

अथ तीव निषाद जुन विकत स्वर में एकं कममों पड़ज विना दोय दोय स्वर दूर कीय आडवंक दस भेद हैं निनंक उदाहरण लिख्यते। स म प ध नि ।३।१। स रि प ध नि । ३ । २ । स रि ग ध नि । ३ । ३। स रि ग म नि ।३। ।।। स ग प ध नि । ३ । ६ । स ग म प नि । ३ । ६ । स ग म प नि । ३ । ६ । स ग म प नि । ३ । ७ । स रि म ध नि । ३ । ८ । स रि म प नि । ३ । ९ । स रि ग प नि । ३ । ९ । स रि ग प नि । ३ । ९ । स रि ग प नि । ३ । १ । इति तीव निषाद जुन विकत स्वर मेलकं भेद संपूर्णम् ॥

अथ दें। दें। स्वर जहां विक्रत होय अर पांच स्वर सुद्ध होय ॥ ऐसा जो विक्रत स्वर मेल तांक भेद लिख्यते ॥ जहां रिषभ कोमल होय ॥ ओर गांधार पूर्वसंज्ञक होय ॥ सो विक्रत स्वर मेल संपूर्णतो एक भांतिको हैं ॥ ताको उदाहरण ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ विकत स्वर मेलके कमसों षड़ज विना एक एक स्वर दूरि किये षांडवके भेद च्यार है तिनके उदाहरण लिख्यते । सरि सरि गरि पधनि । १। सरि सरि गरि मधनि । २ । सरि सरि गरि मपनि । ३ । सरि सरि गरि मपध । ४।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों पड्ज विना दोय दोय स्वर दूर कियेतें औडवके छह भेद हं ताक उदाहरण िख्यते । स रि स रि रि ग ध नि। १। सरिसरिरिगमनि। २। सरिस रिगमप। ३। सिरिसिरिगिथप। ४। सिरिसिरिगिनिप। ५। सिरिसि रिमधनि। ६। इन भेदनेमं रिषभ कं मिल है।। अह गांधार पूर्व है।।

अथ रिषभ कोमल होय । अह गांधार तीव होय । एसी जी विकत स्वर मेल सों संपूर्ण जो एक भांतिको है ॥ नाको उदाहरण हिस्व्यंत ॥ स रि ।२। ग ।३। मपधनि। १।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों पड़ज विना एक एक स्वर दुरि कीये षांडवंक च्यार मेर हैं तिनंक उदाहरण छिख्यते । स रि । २ । ग। ३। पथ नि। १। सारि। २। ग। ३। मथ नि। २। सारि। २। ग। ३। मप नि। ३। सरि। २। ग। ३। मप घ। ४।

अथ या विकत स्वर मेलकें कमसों षडज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवंक छह भेद तिनंक उदाहरण सिख्यते ॥ सिरि। २। ग। ३। घनि। १। सरि। २। ह ग। ३। म नि। २। स रि। २। ग। ३। म प। ३। स रि। २। ग। ३। गमप। ४। सरि। २। ग। ३। पघ। ५। सरि। २। ग। ३। म ध । ६ । इन भेदनेमं रिषभ तो कोमल हैं ॥ अरु गांधार तीव हैं ॥

अथ रिषभ तीवतर होय। अरु गांधार तीव होय। ऐसो जो विकत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण छिल्यते ॥ स रि । ५ । ग म पधनि। १।

अथ या विकत स्वर मेलंक कमसों पड़ज विना एक एक स्वर दूरि कीये षाडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते । स रि । ५। ग । १। प ध नि । १। स। रि। ५। ग। १। मधन। २। स रि। ५। ग। १। म पनि।३।सरि।५।ग।१। मपध ।४।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके छह भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि । ५ । ग । १ । ध नि । १ । स रि । ५ । ग । १ । म नि । २ । स रि । ५ । ग । १ । प नि । १ । स रि । ५ । ग । १ । प नि । १ । स रि । ५ । ग । १ । प । १ । स रि । ५ । ग । १ । द । इन भेदनमें रिषभ तो तीव्रतर जांनिये ॥ आर गांधार तीव्र जांनिये॥

अथ गांधार तीव होय अरु मध्यम तीव होय एसो जो विकत स्वर मेछ सो संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण छिख्यते॥ स रि ग म प ध नि । २।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीये तें षांडवके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यें ।। स ग म । २ । प ध नि । ३ । स रि ग म । २ । ध नि । २ । स रि ग म । २ । प नि । ३ । स रि ग म । २ । प ध । ४ ।

अथ या विकत स्वर मेलंक कमसा षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये तें औड वके छह भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स गम ध नि।१।स गम प नि।२। सगम प ध। ३। स रिगम प। ४। स रिगम नि। ५। स रिगम ध। ६। इन भेदनमें गांधार तीवतर जांनिये॥

अथ गांधार तीव्रतम होय अरु मध्यम तीव्रतर होय ऐसो जो विक्रत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्य-ते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये षाडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स गमपधनि। १। सरिगमधनि। २। सरिगमपनि। ३। स रिगमपध। ४।

अथ या विकत स्वर मेछके कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके छह भेद हैं तिनके उदाहरण छिल्यते ॥ स रिग। ३। म। २। नि। १। स रिग। ३। म। २। प। २। स ग म ध नि। ३। स गमपनि । ४ । सग। ३ । म। २ । पध। ५ । सरिगमध । ६। इन भेदनमें गांधार तो तीव्रतम जांनिये ॥ अरु मध्यम तीव्रतम जांनिये ॥

अथ मध्यम तीव्रतर होय अरु धैवत कोमल होय ॥ ऐसो जो विक्रत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म । ३ । प ध नि । १ ।

अथ या विकत स्वर मेलकें कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये तें षाडवकें च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते। सगम। ३। प ध नि । १। स रि म । ३। प ध नि । २। स रि गम। ३। ध नि । ३। स रि गम। ३। प ध । ४।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये तें औडवके छह भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ समप ध नि । १। सगम ध नि । २। सगमप ध । ३। सि रिम। ३। ध नि । ४। सि रिम। ३। प ध रि। ५। सि रिगमध । ६। इन भेदनमें मध्यम तीव्रतर जांनिये। ओर धैवत कोमल जांनिये॥

अथ कोमल धैवत हाय। आर निषाद तीव्र होय। एसो जो विकत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिकां हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि गमपध नि। १। अथ या विकत स्वरेक मेल सों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये तें षांडवके च्यार भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स गमपध नि । १। स रिमपध नि। २। स रिगपध नि। ३। स रिगमध नि। ४।

अथ या विकत स्वर मेठकें कमसों पड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीयेतें औडवके छह भेद तिनके उदाहरण छिष्ट्यते ॥ सम प ध नि । १। स रि प ध नि । २। स रि ग ध नि । ३। म ग प ध नि । ४। स ग म ध नि । ५। स नि म ध नि । ६। इन भेदनमें धैवत कोमछ जांनिये। ओर निषाद तीव जांनिये॥

अथ मध्यम तीव्रतर होय अरु निषाद तीव्र होय ऐसी जो विक्रत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥स रि ग म प ध नि । १।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीयेतें षांडवके च्यार भेद हैं ताके उदाहरण लिख्यते॥ स गम। २। प ध नि। १। स रिमप ध नि। २। स रिगमप नि। ३। स रिगमध नि। ४। अथ या विकत स्वर मेलेंकं कमसों पड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये तें। औडवके पांच भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते॥समप घ नि। १। सि म घ नि। २। सगम प नि। ५।

अथ यामें मध्यम तीवतर अरु निषाद तीवतर जांनिये। अथ जामें विकत तीन स्वर होय ओर च्यार सुद्ध स्वर हाय ता विकत स्वर मेळके भेद छिख्यते॥

अथ रिषभ स्वर कोमल होय अरु गांधार तीवतर होय अरु मध्यम तीवतर होय। ऐसी जो विकत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको हे ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प धिन । । । या विकत स्वर मेलके कमसों पड्ड विना एक एक स्वर दूर किये पांडवंक तीन भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म धिन । १। स रि ग म पिन । २। स रि ग म पिथ । ३।

अथ या विकत स्वर मेलकें कमसों पड़ज विना दाय दाय स्वर दूर कियेते औडवके सात भेद हैं निनके उदाहरण लिख्यते ॥ म रि ग प नि । १ । स रि ग म प ।२। स रि ग म नि । ३ । स रि ग प ध । ४ । स रि म प नि । ५ । स रि म प ध । ६ । स रि ग म ध । ७ । इन भेदनमें रिषभ कामल जांनिये । गांधार तीव जांनिये ॥ अरु मध्यम तीवतर जांनिये ॥

अथ तीत्र गांधार होय अरु मध्यम तीव्रतर होय धवत कोमछ होय। ऐसी जो विकत स्वर मेछ सो संपूर्ण तो एक भांतिको है। ताको उदाहरण छिख्यते॥ स रिगम पध नि। १।

अथ या विकत स्वरंमलंक कममों पड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीये षांडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ सगमप धनि । १। स रिमप धनि । २। सरिगमधनि । ३। सरिगमप ध। ४।

अथ या विकत स्वर मेलंक कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूर कीयेतें। औडवके छह भेद हें तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग ध नि । १। स रि ग प नि । २। स ग म ध नि । ३। स ग म प नि । ४। स रि ग प ध । ५। स रि ग म ध । ६। इन भेदनें तीव्र गांधार जानिये । तीव्रतर मध्यम जांनिये ॥ अरु धैवत कोमल जांनिये ॥

अथ तीवतर गांधार होय । अरु तीवतर मध्यम हाय । धैवत,

तामें कोमल होय ॥ ऐसो जो विकत स्वर मेल सी संपूर्ण ता एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों पड्ज विना एक एक स्वर दूर किये ते पांडवके तीन भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते॥ स रि गप भ नि । १ । स रि गम भ नि । २ । स रि गम प नि । ३ ।

अध्य या विकत स्वर मेलके कमसें। षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये तो औडवके तीन भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यंत । स ग म ध नि । १ । स ग म प ध । २ । स रि ग म ध । ३ । इन भेदनमें गांधार तीवतर मध्यम तीवतर जांनिये । अरु धैवत कोमल जांनिये ॥ अथ तीवतर मध्यम होय कोमल धैवत होय ॥ अरु पूर्व निषाद होय ऐसो जो विकत स्वर मेल सों! संपूर्ण तो एक भांतिकों ताको उदाहरण लिख्यते । स रि ग म प ध नि ॥ १ ॥

अथ या विकत स्वर मेलेतं कमसों एक एक स्वर दूर किये तं षाडवंके तीन भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध नि । ३ । स रि म प ध नि । २ । स रि ग म ध नि । ३ ।

अथ या विकत स्वर मेलतें कमसों पड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवंके तांनंक तीन भेद हें तिनंक उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । १ । स रि म ध नि । २ । स ग म ध नि । ३ । इनमें तीवतर मध्यम है अरु कोमल धैवत है पूर्व जांमें निषाद जांनिये ॥

अथ मध्यम अरु धेवत तीव्रतर होय अरु निषाद तीव्र होय ॥ ऐसां जो विक्रत स्वर मेळ सो संपूर्ण तो एक भांतिको हं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रिगम पथ नि । १ ।

अथ या विकत स्वरन मेंलकं कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कि-ये तें षांडव तांनके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १। स ग म प ध नि। २। स रि म प ध नि।३। स रि ग प ध नि। ४।

अथ या विकत स्वर मेलतें कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कियेते औडवंके छह भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स म प ध नि । ३। स रि ग म नि । २। स ग म ध नि । ३। स ग म प नि । ४। स रि म ध नि । ५ । स रि म प नि । ६ । इन भेदनमें धैवत स्वर मध्यम स्वर तीव्रतर जांनिये॥ अरु निषाद तीव्र जांनिये॥

अथ रिषभ कोमल पूर्व हो अरु मध्यम तीव्रतर होय धैवत कोमल होय ऐसी जो विकत स्वर मेल सों संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यते॥ स रिगम प ध नि । १।

अथ या विकत स्वर में स्वेक षड्ज विना एक एक स्वर दूर कीये षड्जके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण हिस्स्यते ॥ स रि म प ध नि । ३ । स रि ग प ध नि । २ । स रि ग म ध नि । ३ । स रि ग म प ध । ४ ।

अथ या विकत स्वर मेलकं कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये औडवके पांच भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि प ध नि । ३ । स रि ग ध नि । २ । स रि ग म ध । ३ । स रि म ध नि । ४ । स रि म प ध । ५ । इन भेदनमें रिषम कोमल पूर्व जांनिये मध्यम तीव्रतर जांनिये ॥ अरु । धेवत कोमल जांनिये ॥

अथ रिषभ तीवतर होय ॥ अरु गांधार तीवतम होय अरु धेवत कीमल होय तिनको एसी जो विकत स्वर मेल सा संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको उदाहरण लिख्यत ॥ स रि ग म प ध नि । १।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों पड्जं विना एक एक स्वर दूर कियेते पांडवके च्यार भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्येत ॥ स रि म प ध नि । १ । स रि ग म ध नि । २ । स रि ग प ध नि । ३ । स रि ग म प ध । ४ । या विकत स्वर मेलके कमसों पड्ज विना दोय दोय स्वर चटाये ते औ- डवके च्यार भेद हे तिनके उदाहरण लिख्येत ॥ स रि ग ध नि । १ । स रि म प ध । २ । स रि ग प ध । ३ । स रि ग म ध । ४ । इन भेदनें रिष्भ तीव्रतर जांनिये । गांधार तीव्रतम जांनिये । अरु धेवत कोमल जांनिये ॥

अथ चार स्वर तो विकत होय ॥ अरु तीन स्वर सुद्ध हो तहां गांधार-तीव होय । अरु मध्यम तीवतम होय धैवत निषाद तीवतर होय । ऐसो जो विकतस्वर मेळ सो संपूर्ण तो एक भांतिको हं ताको उदाहरण ळिख्यते॥ स रि ग म प ध नि । १ । अथ या विकतस्वर मेलकें कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कीयेते षांडवंक च्यार भेदेहें निनकं उदाहरण लिख्यते ॥ स ग म प ध नि । २ । स रि ग प ध नि । २ । स रि ग म ध नि । ३ । स रि ग म प नि । ४ ।

अथ या विकतस्वर मेलकें कमसो पड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि कीये औडवके छह भेद हैं तिनकें उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग ध नि । ३ । स रि ग प नि । २ । स ग म प नि । ३ । स ग म ध नि । ४ । स ग प ध नि । ५ । स रि ग म नि । ६ । इन भेदनेंमें गांधार तीव्र जांनिये मध्यम तीव्र-तर जांनिये । धेवन निषाद तीव्रतर जांनिये ॥

अथ अतिनीवनम गांधार होय अरु नीवनर मध्यम होय कांमल जांमें धैवन होय । अरु निपादपूर्व होय ॥ एसो जो विकतस्वर मेल सों संपूर्ण ना एक भांतिको हे नाको उदाहरण लिख्यन ॥ स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकतस्वर मेलके कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूर किये षांडवके दोय भेद हैं तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १। स रि ग म प नि । २।

अथ या विकतस्वर मेल के कमसों षड्ज विना दोय दोय स्वर दूरि किये तें औडवके दोय भेद हे तिनके उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म नि । १। स रि म ध नि । २। इन भेदनेमं अतितीव्र गांधार जांनिये तीव्रतर मध्यम जांनिये ॥ अरु कोमल धेवत जांनिये ॥ निषादपूर्व जांनिये ॥

अथ रिषम कोमल हाय अरु पूर्व गांधार होय मध्यम जांमं तीव्रतर हाय धैवत कोमल हाय पूर्व निषाद होय एसो जो विकतस्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको है ताको उदाहरण लिख्यत । स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकतस्वर मेलेतं कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कियेतं षांडवको एक भेद हं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । इनमें रिषभ कोमल होय पूर्व गांधार हाय मध्यम तीवतर जांनिये ॥ धैवत कोमल जांनिये ॥ अरु पूर्व निषाद जांनिये ॥

अथ रिषभ कोमल गांधार तीव्रतर कोमल-धेवत तीव्र निषाद जांनिये॥

ऐसो जो विकतस्वर मेल से। संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रिगम प घ नि । १ ।

अथ या विकतस्वर मेलके कमसी षड्ज विना एक एक स्वर दूरि कियेते षांडवको एक भेद हैं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । इनमें रिषभ कोमल जांनिये । अरु गांधार तीच्च जांनिये मध्यम तीव्रतर जांनिये ॥ धैवत कोमल जांनिये ॥ तीच निषाद जांनिये ॥

अथ रिषम कोमल गांधार—तीव्र मध्यम—तीव्रतर अरु धेवत तीव्रतर निषाद तीव्र होय । ऐसी जो विकरतस्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको उदाहरण लिख्यते । स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकतस्वर मेलके कमसो षड्ज विना एक एक स्वर दूर किये तें षांडवको एक भेद हे तिनको उदाहरण लिख्यत ॥ स रि ग म ध नि । १ । इन भेदनमें रिषभ कोमल जांनिये ॥ अरु गांधार तीव्र जांनिये ॥ मध्यम तीव्रतर जांनिये । २ । धैवत तीव्रतर जांनिये । निषाद तीव्र जांनिये ॥

अथ रिषभ तीव्रतर होय गांधार अतितीव्रतम होय अरु मध्यम तीव्र होय धैवत तीव्रतर होय निषाद तीव्र होय। ऐसा जो विक्रत स्वर मेल सो संपूर्ण तो एक भांतिको हैं ताको भेद लिख्यते॥ उदाहरण । स रि ग म प ध नि । १ ।

अथ या विकत स्वर मेलके कमसों षड्ज विना एक एक स्वर दूरि किये ते षांडवको एक भेद हैं ताको उदाहरण लिख्यते ॥ स रि ग म ध नि । १ । इन भेदनमें रिषभ तीव्रतर ॥ अरु गांधार अतितीव्रतम । मध्यम तीव्र होय । अरु धैवत तीव्रतर निषाद जांनिये ॥ इति मुद्ध विकत स्वर मेलसें संपूर्ण पांडव औडव भेद संपूर्णम् ॥

प्रथमस्वराध्याय जातिप्रकरण.

अथ जातिनके अंग तेरा हं तिनके नाम संगीत रत्नाकरके मतसों लिख्यते ॥ यह । १ । अंस । २ । तार । ३ । मंद्र । ४ । न्यास । ५ । अपन्यास । ६ । सन्यास । ७ । विन्यास । ८ । बहुत्व

- । ९। अल्पत्व । १०। अंतरमार्ग । ११। षांडव । १२। औडव । १३। इति जातिनके नाम संपूर्णम् ॥
- १ अथ प्रथम ग्रहको लुखन लिख्यते ॥ जा गीतके आदिमं स्वर हाय॥ जांसा गीतके आरंभ होय सो ग्रह जांनिय । सो ग्रह सातों स्वरनमे होत हैं ॥ यातें सात प्रकारको हैं । अरु जहां अंस स्वर कहां होय ॥ अरु ग्रह स्वर कहां होय । अथवा ग्रह कहां होय ॥ अंस नहीं कहां होय ॥ तहां ग्रहके कहेतें वा अंसके कहेतें ॥ ग्रह अंस य दोन्यु जांनिये ॥ इति ग्रह लुखन मंपूर्णम् ॥
- २ अथ अंस लखन लिख्यते ॥ जा स्वर गांनमं लोकानु रंजन करे। ओर संवा-दि स्वर ॥ अनुवादि स्वर ए जहांको पोषे हैं ॥ ओर रागनके प्रयोगम जो बहुत वेरको आवे जा स्वर सों तार स्वर वा मंद्र स्वरकी रचना होय ॥ जो स्वर मुख्य होय ॥ और स्वर जाके संवादि अनुवादि होय आप वाहि होय राजाके सीनाई ॥ ओर न्यास । १ । विन्यास । २ । अपन्यास । ३ । सन्यास । ४ । यह । ५ । इनको सहाय करे सो स्वर अंस जांनिये ॥ इति अंस लखन संपूर्णम् ॥
- ३ अथ तार लखन लिख्यते ॥ जहां मध्यम यामकी सप्तकमें जो अंस होय।

 षड्ज वा मध्यम तिनमें उचे च्यार च्यार स्वरनको आरोह करनो

 मध्यम यामकी षड्जतें मध्यम यामको पंचम तांई ॥ ओर मध्यम

 यामके मध्यम तें छेकें मध्यम यामके निषाद तांई । ऐसेहि ओर हू जो

 अंस होय । ता तें ऊचे ऊचे स्वरको छेणों । सो तार जानिये ॥ इति

 तार लखन संपूर्णम् ॥
- ४ अथ मंद्र लखन लिख्यते ।। मध्यम ग्राममं अंस जो षड्ज स्वर वा मध्यम स्वर तातें नीचे स्वरनेमं अवरोह करिकें । आयवो मध्यम ग्रामके षड्ज तें लेकें षड्ज ग्रामके षड्ज ताई वा मध्यम ग्रामके मध्य ते लेके षड्ज ग्रामके मध्यम ताई । सा मंद्र स्थान जांनिये । एसेंहि आर हूं जाम अंस होय । ता तें निचल निचले स्वरमें । आयवो सा हूं मंद्रस्थान जांनिये ।। इति मंद्रको लखन संपूर्णम ।।

- ५ अथ न्यास लखन लिख्यते ॥ जा स्वरमें गीत समाप्त होय सो स्वर न्यास जांनिये ॥ इति न्यास संपूर्णम ॥
- ६ अथ अपन्यास लिख्यते ॥ जो स्वर गीतके पथम षड्जमे जो आस्थाई भाग लोकीकमें जांको पीडावंथी कहत हैं । ताकी समाप्तमें जो स्वर आवे ताको अपन्यास जांनिये ॥ इति अपन्यास संपूर्णमे ॥
- ७ अथ सन्याम लाउन लिए प्रते ॥ जो स्वर गीतक प्रथम षड्ज जो पीडाबंधी तामें अंस होय ताको विवादि नहीं होय ॥ ओर अपन्यासको सहाय करतो होय । सा सन्यास जांनिये ॥ इति सन्यास संपूर्णम ॥
- ८ अथ विन्यास लछन लिख्यते ॥ जो स्वर पीडाबंधीमं अंसस्वरको विवादि निह होय ॥ ओर पीडाबंधीके पड़जमें अंतमें आवे सा विन्यास जानिये ॥ इति विन्यास संपूर्णम ॥
- ९ अथ बहुत्वको लछन लिख्यते ॥ बहुत्व कहते स्वरको वारंवार गानेकं जमावेको । वरतवो सा बहुत्वेह ॥ सा दोय प्रकारको हैं ॥ एक तो अभ्यास कहिये । नायवेमें पकाई तातें होत हैं ॥ ओर दुसरा अलं-वन कहिये ॥ स्वरको संपूर्ण उच्चार एक दाय वार तातें बहुत्व जांनि-ये ॥ इति बहुत्व मंपूर्णम् ॥
- १० अथ अल्पत्वको लछन लिख्यते॥ जो गायवेमं कूच थोडा स्वर लगात । अथवा स्वरके आंध उचारिवेतें। स्वरकी जो लघुताई सो अल्पत्व जांनिये॥ इति अल्पत्व संपूर्णम्॥
- 99 अथ अंतरमार्गको लछन लिख्यंत ॥ जो स्वर न्यास अपन्यास सन्यास विन्यास इनके स्थानको छोडिकं। वीचे वीचेक थोडे थोडे स्वर होय ॥ अरु अंसस्वर गृहस्वर सों मिले होय । और रागमें विचित्रता दिखा-वत होय ॥ ऐसें स्वरंक उच्चारकी जो रचना सो अंतरमार्ग जांनिये॥ इति अंतरमार्ग संपूर्णम ॥
- १२ अथ पांडव स्वर लछन लिख्यत ॥ छह स्वरन करिकें बांध्यो जो गीत ताही पांडव जांनिये ॥ इति पांडव संपूर्णम् ॥

१३ अथ औडव लखन लिख्यते ॥ पांच स्वरनको गीत सो ओडव जांनिये॥ इति ओडव संपूर्णम् ॥ इति तेग्ह जातिके अंग संपूर्णम् ॥ अथ ब्रह्माजीनं संगीतसारको मिथिकं अमृतस्त्रप अठाग्ह जाति राग-नकी उत्पन्न किर हें तिनको लखन लिख्यते ॥ तहां शुद्ध जाति राग किह सात हे मात तिनके नाम. पड्जादिक सात स्वर जांनिये। षांडवी। १। आर्षभी। २। गांधारी। ३। मध्यमा ।४। पंचमी। ५। धेवता। ६। नेषादि। ७। ए सुद्ध जाति विकतिस्व-रनके मेलतं विकति जाति होत है। नहां शुद्ध जातिको लखन कहते हें जिनके नाम कह हैं। न्यास स्वर। १। वा अपन्यास स्वर। २। वा अहस्वर। ३। वा अंस स्वर। ४। इनके नामसो होय। ओर जितने तार स्वर कहते हें॥ ऊचि समकको न्यास नहीं होय ओर जितने साता स्वर होय सो व जाति मुद्ध जांनिये॥ इति मुद्ध जाति मंपूर्णम्॥

अथ विकतिनको लखन लिख्यंत ॥ य मात सुद्ध जाति यहस्वर अंसस्वर आदिकके विकार ते विकत जाति होत हैं सो विकत जाति ग्यारह जांनियं तिनके नाम कहत हैं षड्ज किशिकी । ३ । षड्जोदीच्यवा । २ । षड्जोदीच्यवा । ३ । गांधारादीच्यवा । ४ । रक्त गांधारी । ५ । मध्यमोदीच्यवा । ६ । गांधार पंचमी । ७ । आंधी । ८ । नंद्यंति । ९ । कार्मारवी । १० । कोशिकी । ३३ । इति विकत जातिके नाम संपूर्णम् ॥

अथ ग्यारह विकत जातिनकी उत्पत्ति लिख्यंत ॥ षाडजी । १ । गां-धारी । २ । जातिक मेलतं षड्ज कैशिकि होय । १ । षाडजी ।२। मध्यमा । ३ । जातिके मेलतं षड्जमध्यमा होय । गांधारी । १ । पंचमी । २ । जातिके मेलतं । गांधारपंचमी होय । ३ । गांधारी । १ । आर्षभी । २ । जातिके मेलतं । आंधी होय । १ । षांडजी । १ । गांधारी । २ । धैवत जातिके मेलतं ॥ षड्जोदीच्यवा होय । ५ । नैषादी । १ । पंचमी । २ । आर्षभी । ३ । जातिके मेलतं कार्मारवी होय । ६ । गांधारी । २ । पंचमी । २ । आर्ष भी । ३ । जातिक मेलतें नंदयंती होय । ७ । गांधारी । १ । धैवती । २ । पाडजी । ३ । मध्यमा । ४ । जातिक मेलनें गांधारोदीच्यवा होय । ८ । गांधारी । १ । धेवती । २ । पंचमी । ३ । मध्यमा । ४ । जातिक मेलतें मध्यमोदीच्यवा होय । ९ । गांधारी । १ । नै-पादी । २ । पंचमी । ३ । मध्यमा । ४ । जातिक मेलतें रक्तगां-पारी होय । १० । पाडजी । १ । गांधारी । २ । मध्यमा । ३ । पंचमी । ४ । नेषादी । ५ । जातिक मेलतें कैशिकी हाय । ११ । ये ग्यारे विक्रत जाति कही है । अब ग्यारहतो विक्रति जाति अरु सात मुद्ध जाति मिलिक अठारह जाति होय हैं ॥ तिनमें सात जाति । पड्ज यामकी पाडजी । १ । आर्षभी । २ । धैवती । ३ । नेषादी । ४ पड्ज केशिकी । ५ । पड्जोदीच्यवा । ६ । पड्ज मध्यमा । ७ । ये पड्ज यामकी होत हैं ॥

अथ मध्यम यामकी जाति ग्याग्ह लिख्यंत ॥ गांधार्रा । ३ । रक्तगां-धारी । २ । गांधारोदीच्यवा । ३ । मध्यभा । ४ । मध्यमोदीच्य-वा । ५ । पचमी । ६ । गांधारपंचमी । ७ । आंधी । ८ । नंद-यंती । ९ । कार्मा रवि । ३० । केशिकी । ३१ । यह ग्यारह जाति मध्यम यामकी हैं ॥ इति मध्यम यामकी ग्यारह जाति नाम संपूर्णम् ॥ इति भुद्ध विकति मंकर जातिनकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥

अथ सातों सुद्ध जातिनमें प्रथम षाडजी जाति तिनकां लक्षण लिख्य-ते ॥ जा जातिमें निषाद । १ । रिषम । २ । ये दोनु स्वर विनां ओर स्वर सगछे अंस स्वर होय । गांधार पंचम ये न्यास अपन्यास होय । ओर षड्ज गांधारको । वा षड्ज धैवतको उच्चार होय ॥ अरु निषाद स्वर हीन होय । तव षाडव जांनिये ॥ ओर संपूर्णतो एक स्वरनमें होय तो निषाद काकछी जांनिये ॥ अरु गांधारका अंस स्वर जांनिये । अरु गांधारको उच्चार बार होय । उत्त- रायता मूर्छनामें होय ओर पड्ज स्वरमें न्यास हाय । अरु यह हू पड्जहीमें जांनिये । सो षाडजी जाति जांनिये ॥

अथ वा षाडजी जातिके गायंवको फल लिख्यते ॥ हाथी पांच हजार ।

1 ५००० । सुवरनके साजके । आजिबकासहित दीये तें सो

1 १०० । अश्वमेध कीयेतें कोटि । १ । कन्यादानके तथा योग्य
विवाह कीयेतें । ओर भली भांति जो फल होय ॥ इन दान कीयेतें । सो सब शिवपूजनमें षाडवी जातिके सुनवे गायवेमें फल होय

हे ॥ इति षाडजी जांतिको गायवेको फल संपूर्णम् ॥ याकी ताल
चंचतपुट, कलासह बारह मास । शुंगार सुद्ध विरह इन रसनमें गाईये ॥ इति षाडजी जाति लछन संपूर्णम् ॥

१. ॥ अथ षाडजी यंत्रमिद्मू ॥

सा	सा	सा	सा	पा	निध	पा	धनि	9
तं	•	भ	व	छ	ला ॰	0	ट०	1
री	गम	गा	गा	सा	रिग	धस	धा	२
न	य०	ना	•	म्बु	जा०	0 0	धि	
रिग	सा	री	गा	सा	सा	सा	सा	3
कं०	0	0	0	0	0	•	0	١٦
धा	धा	निध	निस	निध	पा	स्रो	स	8
न	ग	सू०	0 0	नु०	म	al	य	•
नी	धा	पा	धनि	री	गा	सा	गा	ų
के	٥	्छि <u> </u>	00	स	मु	0	द	,
सा	धा	धनि	पा	सा	सा	सा	सा	e
वं	0	00	٥	0	0	0	0	६
सा	सा	गा	सा	मा	मा	मा	मा	0
स	₹	स	क	त	ति	ल	क	
सा	. पस	मा	धनि	निध	पा	गा	रिग	
Ÿ_	• •	°_	का॰	नु ०	हे	q	0 0	۷

								خميسيس.
गा	गा	गा	गा	सा	सा	सा	सा	9
नं	0	0	0	٥	٥	0	0	<u> </u>
धां	सा	री	गरि	सा	मा	मा	मा	90
प	ज	मा	0 0	मि	का	0	म	
धा	नी	पा	धनि	री	गा	री	सा	99
दे	o	ह	00	ध	ना	0	न	1,,
रिग	सा	री	गा	सा	सा	सा	सा	93
छं ॰	0	0	0	0	0	0	0	

अथ आर्षभिजातिको लछन लिख्यत॥ जा जातिमें रिषभ धैवत निषाद ये अंसस्वर होय ओर षड्ज धैवत ताको संग उच्चार होय। अरु पांचवो स्वर दूर किये ते षांडव होय। वा षड्जहीन कियो सों षांडव होय। ओर षड्ज पंचम ये दोनु स्वर दूरि किये तें। औडव हाय तामें मूर्छना सुद्ध जांनिये। ओर ताल चंचतपुट रिषभ स्वर न्यास जांनिये॥ यांके अंसस्वर हें॥ सो हि अपन्यास स्वर हें॥ आठ कलाहें॥ अर चोसटि याकी॥ ६४॥ मात्रा हे वीर। १। रौद्र। २। अद्भूत रसमें गाईये सो आर्षभीजाति जांनिये॥ आर्षभी जातिते देसी आदि रागनीकी उतपनी होत हैं॥

अथ आर्षभिजाति गायवंकों फल कहेहं ॥ जां पयागतीर्थ प्रभासक्षेत्र श्रीपुष्कर ॥ इनमें जाय मनविकारमें दिसे बावरे वो तीर्थ प्रथहक जा तीर्थको तो किंकमें ॥ पिबवो कहतहें ॥ तहां अरु चतुर्थी कहिये ॥ सालगरामजी क्षेत्रमें ॥ अरु कपालमोचनतीर्थ तहां । इन तीर्थनकी सेवा किये जो फल होय सो फल शिवपूजनमें आर्षभी जातिके गायवे में होत हैं ॥ इति आर्षभी जातिको लखन वा फल संपूर्णम् ॥

२. ॥ अथ आर्षभी यंत्रमिदम् ॥

		गा ण			मा च			रिरि ०धि	9
1	री		निध	निध	गा	रिम	मा	पनि <i>र</i> ०	5
	क	म	न ॰	0 0	न्त	म०	म	₹ ०	

જ	गा	सा	पा	पा	धा	नी	धा	मा
٦	य	क्ष	0	0	म	₹	ज	म
8	री	री	गरि	सधं	गरि	री	धनि	नी
•	0	यं	0 0	o o	0 0	٥	जे०	म
u	मम	रिग	रिस	सस	सधं	गरि	मा	री
,	दिव्य	मि ॰	0 0	0 0	मा ०	0 0	व	म
દ્	सा	सध	गरि	रिप	री	री	पा	निध
9	म	0 0	णा०	οP	0	द	णि	म०
0	गरि	मा	मा	मा	रिग	रिग	रिस	रिस
	0 0	तं	•	Ç	0 0	<u>क</u> ॰	नि॰	ਲ॰
	गरि	गरि	सध	री	मग	नी	नी	पा
6	यं ॰	0 0	• •	0	म ०	म	व	भ

॥ इति आर्षभी जाति प्रस्तार यंत्र समाप्तम् ॥

अथ गांधारी जातिको लछन फल लिख्यते ॥ जा जातिमं रिषम धवत विना सिगर स्वर अंस होय ॥ अरु जांमं षड्ज पंचम अपन्यास होय ॥ रिषम गांधार कहू । २ । अपन्यास होय ॥ धेवत तं रिषमको अवरोह कीजिये ॥ ऐसें सिगरे स्वरनमें कीजिये ॥ अरु गांधार स्वर न्यास जांनिये ॥ अरु रिषम स्वरहीन कियेतो षांडव होय ॥ अरु रिषम धेवत दोय स्वर हीन कीये तो औडव होय ॥ यामं उत्तरायता मूर्छना जांनिये ॥ ओर यामं ताल । चंचत-पुट है । सेलिह कला हे । १६। एकसोअठाईस । १२८। जाकी मात्रा हें करुणा-रसमें गाईये ॥ याको गांधारी जाति जांनिये ॥ यासों वेलावली देसी । आदिक राग होते हें ।

याको गायवेको फल कहत हैं । श्रीगंगातीर्थमें बिल्वक पर्वतमें । नीलपर्वतमें । कुशावर्ततीर्थ । इन तीर्थनमें दस अश्वमेध कीयेतें जो फल हाय । सो शिवपूजनमें गांधारि जाति गायवेको फल होत हैं ॥ इति गांधारी जाति-को फल लखन संपूर्णम् ॥

संगीतसार.

३. ॥ गांधारि जाति यंत्र ॥

			-					
गा	गा	सा	नीं	सा	गा	गा	गा	9
y	•	0	0	तं	0	0	0	
गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निसं	२
₹	ज०	नि	व	धू०	0	मु०	ख॰	\
निध	पनि	मा	मपरि	गा	गा	गा	गा	3
वि॰	0 0	0	भ्र००	म	0	<u>दं</u>	0	
गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निसं	8
नि	शा०	म	य	व०	रो	0 0	रु०	"
निध	पनि	मा	मपरि	मा	गा	मा	सा	ч
त०	व ०	मु	ख००	वि	ला	o	स	,
गा	सा	गा	गा	गा	गम	गा	गा	E
व	पु	श्रा	रु	٥	म०	म	ल	٩
गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निस	9
मृ	दु०	कि	₹	ण०	0	0 0	0 0	
निध	पनि	मा	पमरि	गा	गा	गा	गा	
म०	मृ०	त	भ००	वं	•	٥	0	6
री	गा	मा	पध	री	गा	सा	सा	1
₹	ज	त	गि ॰	रि	शि	ख	₹	9
नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	
म	णि	श	क	ल	शं	0	ख	90
गा	गम	पा	पा	धप	मा	निध	निस'	1
व	₹०	यु	व	ति॰	दं	00	त०	33
निध	पानि	मा	मपरि	गा	गा	गां	गा	
ψ̈́ο	0 0	कि	नि००	भं	0	0	0	193
नी	नी	पा	नी	गा	मा	गा	सा	1.
म	ज	मा	٥	मि	म	ण	य	193
								Ι,

गा	सा	गा	गा	गा	गम	गा	गा	98
₹	ति	क	ल	ह	र०	व	तु	1,0
गा	पा	मा	मा	निध	निस	निध	पनि	24
दं	0	0	0	0 0	0 0	0 0	0 0	1,
मा	परिग	गा	गा	गा	गा	गा	गा	9 €
श	शि००	0	0	٥	नं	0	0	19

अथ मध्यम जातिको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषम गांधार मध्यम पंचम धेवत ये । अंस स्वर होय । अर ये हि अपन्यास होय ॥ और षड्ज स्वर अर मध्यम स्वर ये जामें बहुत होय । अरु गांधार थोरो होय अरु गांधार दूरि किये ते षांडव होय अरु निषाद गांधार दूर किये औडव होय हे ॥ जामें रिषमादिक मूर्छना होय । ताल जामें चंचतपुट होय । अर आठ जाकी कला होय । ८ । मात्रा चौसट होय । ६४ । और मध्यम स्वर-न्यास होय । सो जाति मध्यम जांनिये । या जातिम अंधाविल आदिक राग होते हैं ॥ योके सुनिवेको फल होते हैं ॥ जो छह शास्त्र च्यारो वेदनके अंग इनको श्रद्धासों सुनतें ॥ जो फल होय सो शिवपूजनमें मध्यमाके जातिके सुनतें होते हैं ॥ इति मध्यम जातिनके फल लछन मंपूर्णम ॥

४. ॥ अथ मध्यमा जाति यंत्रम् ॥

मा	मा	मा	मा	पा	धनि	नी	धप	q
पा	•	0	तु	भ	व०	मू	0 0	
मा	पम	मा	सा	मा	गा	री	री	2
र्ध	जा०	0	0	न	नं	•	٥	
पा	मा	रिम	गम	मा	मा	मा	मा	w
कि	री	ट०	0 0	•	0	0	0	۲
मा	निध	निस'	निध	पम	पध	मा	मा	8
म	णि ॰	द०	0 0	र्प ०	0 0	णं	0	
नीं	नीं	री	री	नीं	री	री	91	u
गौ	0	री		क	₹	प	٥	Т,

नीं	मप	मा	मा	सा	सा	सा	सा	8
छ	वां	٥	0	गु	छि	0	सु	_ ~
गा	नी	स्रो	ग्री	धप	सा	धनि	स्रो	0
ते	0	۰	٥	0 0	٥	जि॰	तं	
पा	स्रो	41	निधप	मा	मा	मा	मा	
सु	कि	₹	000	जं	0	٥	<u> </u>	6

अथ पंचमी जातिको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषभ पंचम अंस स्वर होय और जामें षड्ज गांधार मध्यम थोड होय ॥ अर रिषम पंचम निषाद अपन्यास होय। ओर निषाद गांधार दूर कीये ते औडव हे । और कछुक गांधार दूर कीये ते षाडव कहे हैं ॥ ये संपूर्ण होय तो गांधार । अर निषाद रिषम धेवत मिले होय । रिषमादिक मूर्छना होय । आठ ज्यामें कला होय चौसट जामें ।६४। मात्रा और ताल चंचतपुर सा पंचमी जाति जांनिय। याके सुनिवेको फल कहत हैं ॥ सा अस्वमध यज राजसूय यज्ञ गोंमध यज्ञ किये ते फल होय ॥ सो फल शिवपूजनमें पंचमी जातिके सुनेतें होय । १ । इति पंचमी जातिके लछन संपूर्णम् ॥

५. ॥ अथ पंचमी जाति ॥

पा	धनि	नी	नी	मा	नी	मा	TP	۹
ह	₹ 0	मू	0	र्घ	जा	۰	न	'
गा	गा	सा	सा	मां	मां	पां	पां	,
नं	म	हे	0	श	म	म	₹	
पां	पां	धां	नीं	नीं	नीं	गा	सा	3
q	ति	बा	٥	हु	स्तं	•	भ	٦
पा	मा	धा	नी	निध	पा	पा	पा	8
न	म	नं	٥	तं ॰	•	•	٥	ø
पा	पा	री'	री'	री'	री	री	₹1'	v
प	ण	मा	0	मि	g	₹	ष	٦,

मां	निंगी	सा	सध	नी	नी	नी	नी	E
मु	ख ०	Ч	ग्र ०	•	ਰ	0	क्षा	4
स्रो	सा	स्रो	मा	पा	पा	पा	पा	10
ह	र	मं	٥	, बि	का	0	Ч	
धा	मा	धा	नी	पा	पा	पा	पा	T
ति	म	जे	•	य	0	0	•	6

अथ धेवत जातिको लछन लिख्यते॥ जा जातिमें धैवत रिषम अंस होय ॥ ओर आरोहमें षड्ज पंचम नहीं होय । रिषम धैवत पंचम ये । अपन्यास होय ओर धैवतन्यासस्वर होय ॥ और कहुक रिषमको दूरि कीये ते औडव होय। ओर कहूक षड्ज पंचमको दूरि कीये तें औडव होय। ओर कहूक षड्ज पंचम ये दोनुं मिछे होय ॥ रिषमादिक जामें मूर्छना होय ताछ जामें चंचतपुट होय । बारह । १२ । जामें कछा हें ॥ छन्नव । ९६ । जामें मात्रा हें ॥ अर बिभत्स मयानक अर वीररस इनमें गाईये सो धैवत जाति जांनिये॥ या जातिमें हिंदो- छ आदिक राग होत हें । याके सुनवेंक महाफछ कहेहें ॥ जो फछ अग्निष्टोम याग ॥ ओर गोसवयज्ञ ॥ पुंडरीक यज्ञ ॥ ओर बहुसुवर्ण यज्ञ ॥ ओर अस्वमेध यज्ञ किये तें फछ होय ॥ सो फछ शिवपूजनमें धैवती सुने होय हे ॥ इति धैव-त जातिको फल लछन मंपूर्णम् ॥

६. ॥ अथ धैवती जातिको पलचकम् ॥

धा	धा	निध	पध	मा	मा	मा .	मा	9
त	रु	णा०	00	म	हें	0	त	'
धा	धा	निध	निस	सा	सा	सा	सा	2
म	णि	भू०	00	षि	ता	0	म	`
धन	धा	17	मध	धा	ानेध	धनि	धा	3
ल॰	शि	रो	0 0	Q	0 0	जं ०	0	
सा	सा	रिग	रिग	सा	रिग	सा	सा	8
<u>ਮ</u> ੁ	ज	गा	0 0	धि	पै०	0	क	

घां	धां	नीं	पां	धां	पां	मां	मां	
कुं	0	ड	ਲ	वि	ला	0	स	4
धां	पां	पां	मंधं	धां	निंधं	धंनिं	भां	c
क्र	त	शो	0 0	0	0 0	मं ॰		E
धा	धा	निसं	निसं	निध	पा	वा	पा	9
न	ग्	सू	0 0	नु	छ	0	क्ष्मी	
रिग	सा	सा	सा	नु नीं	नीं	नीं	नीं	
दे०	हा	0	0	र्ध	मि	٥	श्रि	6
सा	रिग	रिग	सा	नीं	सा	भा	भा	1.
त	श०	री ०	٥	0	٥	ŧ	٥	8
रीं	गंरिं	मंगं	मां	मां	मां	मां	मां	
प	ज	मा ०	•	मि	મૂ	0	त	90
नी	नी	धा	धा	पा	रिग	सा	रिग	
गी	٥	ता	•	प	हा०	0	₹०	99
पा	धा	सा	मा	धा	नी	धा	धा	0.5
q	रि	तु	<u> </u>	٥	0	ष्टं	0	93

अथ नेषादीको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें रिषभ गांधार निषाद अंस होय ॥ अरु षड्ज मध्यम पंचम धैवत बहुत होय ॥ और अंसही । अपन्यास होय ॥ निषाद जांमं न्यासस्वर होय । ओर गांधारादिक मूर्छना होय ॥ चंचतपुट ताल होय ॥ सोलह तामं कला होय । १६ । मात्रा तामं । १२८ । एकसोअठाईस होय ॥ ओर करुणारस भयानकरसमं गाईये ॥ सो नेषादि जाति जांनिये ॥ या जातितें देसी वेलावली राग ॥ आदिक सब होत हें । याके सुनिवेको फल कहत हें गुरु देव साधु बालण वा वृद्ध पुरुष अरु पूज्य इनकी भिल भांति कोमल मनसों ॥ दयाल शिवकी सेवा कीये तें जो फल होय ॥ सो फल शिवपूजनमें ॥ नेषादि जातिके सुनें तें होत हें ॥ इति नेषादि जातिको फल लखन समाप्तम् ॥

प्रथमस्वराध्याय-कातिप्रकरण.

७. ॥ अथ नैषादि जातिको यंत्र लिख्यते॥

नी	़, नी	नी	नी	सां	धा	नी	नी	3
तं	. •	सु	₹	वं	•	दि	त	
पा	. मा	सा	्धां	नीं	नीं	नीं	नीं	2
म	हि	ष	म	हा	0	सु	र	
सा	सा	गा	गा	नी	नी	धा	नी	3
4	ं थ	न	मु	मा	0	4	ं तिं	~
सी	स	धा	नी	नी	नी	नी	नी	8
भी	0	ग	यु	तं	0	Ö	o f4 <	,
" स ा	सा	गर	गा	मां	मां	मां	मा	١٩
ंगः	ग	सुः	त	का	0	मिः	नी	. }*
नी	पां	धां	पां	मां	# i	H İ	म्बं	8
[।] दि	٠ ٥٠	ब्य	वि	श	0	q .		1
(1)	ा गरि	स	. स	री	ग	नी	नी	· - is
सू नी	0	च	्क	शु	भ	न	ख	
नी.	नी	पा	धनि	नी	नी	नी	नी	
द	, o	र्प	ण०	कं	0	٥	•	1
सा	सा	गा	सा	मा	मा	मा	मा	9
अ	हि	मु	ख	म	णि	ख	चि	1
मां	чi.	मां	मां	नीं	धां	मां	मां	9
तो:	, 0	उउव	ਰ	नू	` o '	<u> </u>	· र	
भा	धा	नी	नी	री	गा	मां	मां	9.5
91	ं ल	0	भु	जं	ग	0	म	<u>'</u>
मां ।	ेमां	पां	धां	नीं	नीं	नीं	नीं	9 =
R	9	ं क	छि	. 0	तं	: 0	•	1
qi	_ 9i	नीं	नीं	री	री	री	री	9 5
	1		िमि	व			मि	d. 4

10		A		Δ-			-	
रा	मा	मा	मा	स	गा	सा	सा	98
श	₹	व	म	नि		दि	त	1.2
धा	मा	री	गा	सा	भा	नी	नी	9 4
पा	۰	द	यु	ग	Ϋ́	0	क	, ,
पा	मा	री	गा	नी	नी	नी	नी	9 &
ज	वि	ला	٥	सं	0	0	۰	14

अथ ग्यारह विकृति हं तिनमं प्रथम पड़जकेशिकी जाति ताको लछन लिख्यंत ॥ जा जातिमं पड़ज गांधार पंचम य अंश होय । अरु तिषम पंचम मध्यम थांड होय । धेवत निषाद जामं थांड होय ॥ अरु कहू-क बहूत होय गांधार ज्यामं न्यास हाय ॥ ओर पड़ज निषाद पंचम जामं अपन्यास हाय ॥ जामं चंचतपुट ताल हाय ॥ कला सोलह होय । मात्रा जामं एकसो अठाईस होय । १२८ । शृंगार हास्य करुणा रसमं गाईयं मा विकृति जाति पड्जकेशिकी जांनिये । या जातिमं गांधार—पंचम । १ । हिनदोल—देसी । २ । विलावली आदिकराग होयहं इति पड़जकेशिकी जानिको लछन संपूर्णम ।

८. ॥ अथ पडजंकशिकी यंत्रमिदम् ॥

۹	मा	मा	मग	गरि	पां	मां	मा	सा
Ľ	0	٥	• •	0 0	0	c	0	दे
2	सां	सां	सां	सां	मा	मा	मा	मा
\	٥	0	0	٥	٥	0	•	वं
3	रिम	री	भा	भा	पा	पा	धा	धा
₹	ल ॰	ति	शि	श	ल	क	स	अ
8	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	री	री
°	٥	۰	٥	0	٥	٥	0	कं
u	पा	पा	मा	मा	धनि	TP	धा	धा
,	•	٥	•	तिं	ग०	द	₹	द्वि
Ę	पा	чг	धा	धा	धनि	पा	धा	धा
9	0	•	0	तिं	म०	ण	पु	नि '

सा	सा	सा	मा	सा	सा	सा	सा	0
मु	0	ग्ध	0	मु	खां	0	ब् `	
धा	धा	पा	धा	धनि	धा	धा	धा	٥
रु	ह	दि	٥	व्य ०	कां	0	तिं	
सा	सा	सा	रिग	सा	रिग	धा	धा	९
ह	₹	मं	0 0	बु	दो०	•	<u>द</u> _	<u></u>
मा	धा	पा	पा	भा	धा	नी	नी	30
धि	नि	ना	0	दं	٥	0	•	1,0
री	री	गा	सा	सां	सां	सां	गां	99
अ	च	छ	व	₹	सू	٥	नु	
भां	रिंसं	रीं	संरिं	रीं	सां	सां	सां	9 2
दे	0 0	हा	0 0	र्ध	मि	0	श्रि	174
सा	सरि	री	सरि	री	सा	सा	सा	93
त	श०	री	0 0	ŧ	•	0	0	
मा	मा	मा	मा	निध	पध	मा	मा	98
म	ण	मा	٥	मि ॰	तम	हं	٥	
नी	नी	पा	पम	पा	पम	पध	रिग	1
अ	नु	4	म०	मु	ख॰	क॰	म०	94
गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	गा	10-
ਲਂ	٥	٥	٥	o	0	٥	0	198

अथ षडजोदीच्यवा जातिको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमं षड्ज मध्यम निषाद धैवत अंश होय ॥ और स्वर मिलेहु होय ॥ मंद्रा गांधार जामें बहुत होय और तार रिषम षड्ज बहुत होय और रिषमके गाये ते । षांडवहु होय है ॥ रिषम धैवत दूरि कीये तें औडव है ॥ अरु यामें मध्यम न्यास हें ॥ षडज धैवत जांमें पअन्यास हें ॥ गांधारादिक मूर्छना हें ओर चंचतपुट, तामें ताल हें बारहतामें कला हैं । ओर छाजव जामें, मात्रा हें शृंगारहास्य रसमें गाईये । सो विकति जाति षड्ज दीच्यवा जांनिये ॥ इति ॥

	9. 11	अथ रि	वेकति उ	नाति पड	जादिक	पयंत्रं ॥		ק
सा	सा	सा	सा	मां	मां	गां	गां	
श	٥	o	0	ले	0	0	0	, T
गा	मा	पा	मा	गा	मा	मा	धा	. 2
श	•	मू	¢	0	٥	۰	नु	. _
सा	सा	मा	गा	पा	पा	नी	धा	7 3
शे	0	ले	0	भ	म	0	नु	ी र
धा	नी	सा	सा	धा	नी	पा	मा	8
म	ज	य	٥	प	_ सं	•	ग	
गां	सा	सा	सा	सा	सा	सा	गां	ų
स	वि	ला	٥	स	ख	٥	ल	,
धा	धा	पा	धा	पा	नी	धा	धा	E
न	वि	ना	٥	٥	o	दं	٥	- हि
सा	गां	गां	गां	गां	गां	सा	सा	4
अ	٥	धि	0	क	٥	٥	0	
नी	धा	पा	भा	पा	धा	घा	धा ।	
<u> </u>	0,	खं	٥	٥	0	٥	दु	, 5
स	स्रो	मा	गा	पा	11	नी	धा	8
अ	धि	事	0	मु	खं	•	दु	ا و ا
धा	नी	सा'	स्रो	धा	नी	77	मा	30
न	य	नं	٥	न	मा	٥	मि	
1138	। सा	सा	सा	सा	सा	सा	गी	3 9
ादे ।	٥	वा	٥	सु	₹	0	থা '	73
थाः	ं भा	ग	धा	भा	मा	'मा	मां '	9 3
माल मा म	<u>व</u>	रु	<u>चि</u>	₹	0	٥	, р	4213

पान श्विष्यानिकानि जाति षष्ठम मध्यमाको छछन लिख्यते ॥" जी ॥वि-कानि कानिकां।सार्तोः स्वर अंस होय ॥ और परस्वर मिले हीय ॥ अंसे मिनिषीद जामें थोडो होय ॥ निमाद दूर किये षांडवं होय । असे मिनोदं 'गांधारि दूर कीयो औह के हिर्मि ॥ मध्यमादिक जामें मूर्छमा होय ॥ अरु बह्म मध्यम न्यास होय ॥ न्यान तो तो होय अरु बारह । १२। क्ला होय ॥ चंचतपुट तामें ताल होय अरु बारह । १२। क्ला होय ॥ मात्रा जामें छन्नव होय । ९६। सो विकति जाति पड्ज मध्यमा जांतिय ॥ इति विकति जातिनके लखन संपूर्णम् ॥

॥ १०. अथ विकृति जाति पडज मध्यमा यंत्रम् ॥

EK 17			4 4-3-4				***	
मा	गा	स्ग	पा	धप	मा	निध	निम	9
T	ज	नि ०	व	<u>ध</u> ्	0	मु०	ख॰	
मा	मा	स	रिग	मेग	निध	पध	पा	35
वि	ला	•	स०	र्ता०	0 0	٥٥	च	7.
मा	सा	स्री	गा	मा	मा	सा	सा	3
नं	•	•	•	•	0	0	•	
म	मगम	मा	मा	निध	पध	पम	गमम	8
牙	वि००	季	सि	न०	कु०	. मु॰	द००	- •
धा	पध	परि	रिग	गम	रिग	मध म	सा	ч
द	ू ल ॰	in o	न०	सं०	0 0	000	नि	
निध	सा	री	मंगम	मा	मा	मा	मा	६
भं०		٥	ه ه ه	٥	٥	٥		١ ٩
, मां	मां	मंगंमं	मधं	र्थेपं	पैंधे	पेमे	गंमंगं	9
का	۵	मि॰ ॰	ज	न०	न्॰	य०	न००	
धा	पध	परि	रिग	मग	रिंग	संधस	सा	6
₹	ू इ०	याः	भि॰	न०	٥٥	000	दि	
मा	मा	धिन	धंस	धप	मप	पा	पा	o.
<u> वं(नं)</u>	۵.	9 9	Q Q	0 0	0 0	O 37	•	
मां	मंगंमं	मां	निधं	पंधं	पंमगं	गां	मां	30
म	Mo o	मा	0 0	मि ॰	देव०	वं	•	
धा	पध	परि	'ारेग	मग	रिग	संधस	सा	3 3
<u>.</u>	मु॰	410	धि॰	वा०	0 0	000	सि	
निध	सा	री	मगम	मा	मा	मा	मा	9 2
- वं	1 T	٩		Q	0	0	0 ^	<u> </u>
		-			- I I			

अथ विकति जाति गांधारादिच्यवाकां लछन लिख्यंत ॥ जा विकित जातिमं षड्ज मध्यम अंस होय । ओर रिषम गांधार पंचम धैवत निषाद थोडं
होय ॥ अरु रिषमको दूरि कीये ते षांडव होय ॥ तव निषाद धेवत पंचम गांधार
थोडे होय ॥ अरु रिषम धैवत कामल होय ॥ जामं धैवतादिक मूर्छना होय ॥
अरु मध्यम न्यास होय ॥ षड्ज धेवत अपन्यास हाय चंचत्पृट तामं ताल होय
अरु सोला कला । १६ । होय ॥ अरु मात्रा तामं एकंसाअडाविस । १२८ ।
होय । सो विकति जाति गांधारोदिच्यवा जांनिये ॥ इति विकति जाति
गांधारोदिच्यवाको लछन संपूर्णम् ॥

११. ॥ अथ विकृति जाति गांधारोदिच्यवा यंत्रम् ॥

	-	_						
सा	सा	पा	मा	पा	धप	पा	मा	
सौ	٥	٥	٥	٥	0 0	•	٥	9
धा	पा	मा	मा	सा	सा	सा	सा	
म्य	0	٥	0.	Q	0	•	0	2
धा	नी	सा	सा	मा	मा	पा	पा	
गी	0	रा	٥	मु	खां	•	बु	3
नी	नी	नी	नी	मु नी	नी	नी	नी	
रु	ह	दि	0	व्य	ति	ल	क	8
मा	मा	धा	निस	नी	नी	नी	नी	
प	रि	चुं	0 0	बि	ना	0	र्चि	4
मा	पा	मा	परिग	गा	गा	सा	सा	
त	मृ	पा	000	इं	٥	0	0	६
गा	मग	पा	पध	मा	धनि	पा	पा	
म	वि ॰	क	सि ॰	त	हैं	0	म	9
री	गा	सा	सध	नी	नी	धा	धा	1
क	म	ल	नि०	भं	9	0	0	1 6
गा	रिग	सा	सनि	गा	रिग	सा	सा	
अ	ति ०	रु	चि०	₹	कां॰	٥	ति	1 3
		_				-		

सा	सा	सा	मा	मनि .	धनि	नी	नी	
न	ख	द	•	र्प ०	णा०	0	म	90
मा	पो	मां	पंरिंग	गा	गां	सा	स्रो	
ਰ	नि	के	000	तं	•	0	•	39
गा	सा	गा	सा	मां	पा	र्मा	पंरिगं	
म	न	सि	ज	श	री	₹	000	93
गो	मा	गा	सा	ग	गां	गां	सा	
ता	0	0	ड	नं	•	•	0	93
नी	नी	पा	र्भा	नी	गा	गो	गां	
प	ण	मा	0	मि	गा	•	· री	38
नी	नी	र्भा	पां	भा	पा	मां	पा	
च	₹	वा	यु	ग	म	नु	Ч	94
धा	पा	सा	मा	मा	मा	मां	मा	-i-
मं	0	۰	0	0	0	0	•	98

अथ विकृति जाति रक्त गांधारीको लछन लिख्यंत ॥ जा विकृति जातिमं पड्ज गांधार मध्यम पंचम निषाद ये पांच स्वर अंस होय ॥ षड्ज
अरु गांधार कोमल होय ॥ रिषभकों दूरि किये ते ॥ षांडव होय रिषभ धैवतको
दूरि किये तें औडव होय । सात स्वरमें होय ॥ जब निषाद धैवत बहुत होय ॥
अरु जामें रिषभादिक मूर्छना होय ॥ गांधार ज्यामें न्यास होय ॥ अरु मध्यम
अपन्यास होय ॥ जहां ताल चंचतपुट होय ॥ सोले । १६ । जामें कला होय ॥
अरु मात्रा जामें एकसो अठाइस । १२८ । होय । जाको शृंगार रससमें गाईये
सो विकृति जाति रक्त गांधारी जांनिये ॥

१२. ॥ रक्त गांधारी यंत्र ॥

पा	नी	सा	सा	गा	सा	पा	नी	
तं	•]	बा	0	छ	₹	ज	नी नि	1
स	स्रो	पा	qr	मा	मा	गा		2
क .	₹	ति	स्र	क	भू	0	ष	

मा	पी	भा	पा	मा	पा	धप	मग 🎏
र्ष	वि	भू	•	6	0	00	00 3
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा ' ४
नि	0	0	0	0	0	0	_ • •
धां	नीं	पां	मंपं	धां	नीं	qi	पां ।
10	0	0	00	0	0	С	٥١٩
मां	Чİ	मां	धंनि	पां	qi	पां	पां ।
0	0	0	00	0	0	0	0
री	गा	मा	षा	पा	पा	मा	पा
म	वा	मा	0	मि	गी	0	री
री	गां	मा	पो	पा	पा	म	पो हि
व	द	ना	0	₹	विं	0	0 1
पा	पा	पा	पा	पा	पा	पा	पा है
दं	0	•	•	0	0	0	•
र्म	मा	सा	सा	री	गृह	मह	मा १०
. मी	•	ति	क	ŧ	0	Q	RI ;
ग	ग	प	र्धर्म	र्धा	निथ	पा	41
0	0	0	00	•	0 0	0	04.11.31
गा	पा	र्मा	परिग	गी	गो	गा	गा , १५५
0	0	•	000	0	0	0	bl. bib. VE

भिश्व विकृति जाति कोशिकीको लछन लिख्यते॥ जां विकृति स्वरमें निषाद धेवत अंस होय तीन स्वर कोमल तब पंचम स्वर न्यांस हीयं अर्ह जबें गांधार न्यास होय तब दोय भुनिको निषाद अरु धेवन अंस होय ॥ अरु कोई- क मुनिश्वेद ऐसे कहें हैं ॥ मध्यम निषाद गांधार मध्यम न्यास होके हैं ॥ अरु तिषाद धेकी अंस हें ॥ ओर रिषम दूर किये ते षांडव होम ॥ अरु रिषम धेकत हूर किये कीडव हु जांनिये ॥ ओर जक सात स्वरनमें होय तब। रिषम धेके हो होय ॥ अरु निषाद पंचम बहोत होत है ॥ अंस स्वर परस्पर पिछे होयन॥

जामें गांधारादिक मूर्छना होय ॥ ओर गांधार पंचम न्यास होय ॥ रिषभ विना छह स्वर अपन्यास होय ॥ चंचतपुट तामें ताल होय ॥ बारह कला होय ॥ मात्रा जाकी छात्रव होय । षांडव जातिनके रसनमें गाईये ॥ सो विकत कैशिकी जांनिये ॥ इति विकति जाति केशिकी संपूर्णम ॥

१३. ॥ अथ विकति जाति केशिकीको यंत्र ॥

-		॥ अय		गात क	शिकाका	यत्र ॥		
वा	धनि	TP	' धनि	गा	गा	गा	गा	9
क	00	ली	0 0	ह	0	त	*0	1
पा	पा	मा	निध	निध	पा	पा	पा	२
का	0	म	त ०	नु ०	0	0	0	
) था	नी	स्त	सा	री	री	री	री	12
वि	0	भ्र	<u>म</u>	वि	ला	•	सं	3
सा	सा	सा	री	गा	मा	मा	मा	8
ति	ल	क	यु	तं	0	0	•	8
मां	धां	नीं	भां	मां	भां	मां	पां	14
मू	۰	र्धो	0	र्ध्व	बा	0	ल	1,
गा	री	सा	धनि	री	री	री	री	
सो	0	म	नि ॰	भं	0	o	۰	६
गा	री	सा	सा	भा	धा	मा	मा	0
मु	ख	क	म	ਰਂ	0	•	0	
गा	गा	गा	मा	मा	निधनि	नी	नी	
अ	स	म	٥	हा	000	ट	۰	6
गा	गा	नी	नी	ग्	गा	गा	गा	
क	स	रो	•	जं	•	0	•	8
ग	गां	नी	नी	निर्ध	प	प	परि	
<u>₹</u>	दि	सु	ख	इं ०	0	•	0	90
म	पां	मां	पां	पां	पां	म	मt	
म	ज्	मा	0	मि	लो	च	0	99
सा	र्मा	गा	निधनि	नी	नी .	म	गां	
न	वि	श	000	षं	•	•	0	9 2

अथ विक्रित जाति मध्यमादी च्यवाके लछन लिख्यते ॥ जा विक्रित जातिमें पंचम स्वर अंस होय ॥ ओर जामें सातों स्वर होय ॥ ओर रिषभ गांधार पंचम धैवत निषाद थोडे होय ॥ अरु रिषम धैवत कोमल होय जाम
मध्यम न्यास होय ॥ अरु षड्ज धैवत अपन्यास होय ॥ मध्यमादिक मूर्छना
होय ताल तामे चंचतपुट होय ॥ ओर सोलह कला होय । १६। ओर मात्रा तामें
एकसोअठाविस । १२८ । होय सो विक्रित जाति मध्यमोदी च्यवा जांनिये ॥
इति विक्रित जाति मध्यमोदी च्यवाको लछन संपूर्णम ॥

१४. ॥ विकृति जाति मध्यमादीच्यवा ॥

							Marie Street, or other Parkets	
पा	धनि	नी	नी	मा	qr	नी	7P	19
दे	0 0	हा	0	र्ध	*	0	Ч	
री	री	री	गा	सा	रिग	गा	3)[२
म	ति	कां	•	ति	म०	म	ल	
नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	3
म	म	लें	0	दु	कुं	0	द	1
नी	नी	भ्रप	मा	निध	निध	पा	पा	8
कु	मु	इ ०	नि	भं०	0 0	0	0	•
पा	पा	री	री	री	री	री	री	
चा	0	मी	•	क	रां	0	बु	4
मा	रिग	सा	सधं	नीं	नीं	नीं	नीं	६
रु	ह०	दि	0 0	0	व्य	कां	ति	1
मा	पा	नी	सा	पा	पा	गा	गा	10
प	व	₹	ग	ण	q	•	जि	
गा	पां	मां	निंधं	नीं	नीं	सा	सा	10
त	म	जे	0 0	यं	0	•	0	
पां	पां	मां	धंनिं	पां	पां	पां	पां	9
सु	रा	भि	६०	त	म	नि	स्र	Γ,
मां	पां	मां	रिग	गा	गा	गा	गा	90
4	नो	ज	00	व	·o	मं	बु	
							-	

गा	पा	मा	पा	नी	नी	नी	नी	امو
दो	•	द	धि	नि	ना	0	द	1 1
मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	93
म	ति	हा	000	सं	٥	٥	•	1,
गी	गो	गां	गा	म	निध	नी	4-	93
शि	वं	शां	٥	त	म ॰	सु	₹	114
नी	नी	भप	मा	निध	निध	पा	पा	98
च	मू	म०	थ	नं ॰	0 0	o	0	1,0
री'	ग	स्रो	स्रो	म	निधीन	नी	नी'	94
वं	٥	दे	0	त्र	लें। ००	क्य	•	1,2
नी'	नी	भ	पा	घ	पा	म	म†	9 6
न	त	च	₹	णं	0	0	0	198

अथ विक्रित जाित कार्मारविको लछन लिम्ब्यते ॥ जाि विक्रित जाितमें निषाद धेवत रिषम पंचम अंस हािय ॥ ओर गांधार मध्यम षड्ज बहुत हाेय ॥ ओर रागमें विचित्रताकां दिखाव हाेय ॥ गांधार अंत्य बहुत हाेय ॥ ओर अंत स्वर परस्पर मिले हाेय ॥ जाेमें पंचम स्वर न्यास हाेय ॥ अंस स्वरही अपन्यास हाेय ॥ धेवतािद्क मूर्छना हाेय ॥ चंचतपुट तामें ताल हाेय कला जांमें सालह हाेय ॥ १६ ॥ मात्रा तामें एकसाेअटाविस हाेय ॥ १२८ । सां विक्रित जाित कार्मारवी जांनिये ॥ इति विक्रित जाित कार्मारवीकाे लखन संपूर्णम ॥

१५. ॥ अथ विक्रति जाति कार्मारवीको यंत्र ॥

री	री	री	री	री	री	री	री	
तं	•	स्था	•	णु	ल	ति	त	
मा	गा	सा	गा	सा	नी	नी	नी	
वा	•	मां	٥	ग	स	0	क	२
नीं	मां -	नीं	मां	पां	पां	गा	गा	1,
म	ति	ते	۰	जः	म	स	<u> </u>	1 3

	गा	पा	मा	पा	नी	नी	नी	नी	8
	सो	•	धां	0	<u>शु</u> री'	कां	•	नि	0
Ī	री	गा	सा	नी'	₹)′	गां	री	मा	4
	फ	णि	प	नि	मु	खं	•	٥]_,
Ϊ	री	गा	री	सा	नी	धनि	पा	पा	6
	उ	रा	वि	पु	ल	सा०	0	ग	६
-	मां	प	मां	परिग	गां	गा	गा'	गा	v
	₹	नि	क	000	तं	•	0	0	
	री	री	गा	सम	मा	मा	पा	पा	6
	सि	त	Ϋ́	00	न	गं	٥	इ	
Ī	मा	पा	मा	गरिग	गा	गा	गा	गा	९
	म	ति	कां	000	तं	0	٥	0	
	धा	नी	पा	मा	धा	नी	सा	सा	70
	ष	٥	णमु	ख	वि	ना	0	द	
	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	99
	क	₹	प	۰	छ	वां	0	गु	
	मां	मां	धां	नीं	सनिनि	धा	पा	पा	9 2
	लि	वि	ला	0	स००.	की	0	स्र	17
Ī	मा	पा	मा	गरिग	गा	गा	गा	गा	3 3
	न	वि	ना	000	दं	0	٥	0	7 3
	नी	नी	पा	धनि	गा	गा	गा	गा	2 13
	म	ज	मा	0 0	मि	दे	0	व	9 8
Γ	सां	री'	गा	सा	नी'	नी	नी े	नी'	94
	य	٥	जो	0	4	वी	٥	<u>त</u>	1,
	नी	नी	धां	धा	पा	पा	पा	परि	9 6
	कं	0	٥	0		0	٥	٥	9 =

अथ विकात जाति गांधार पंचमी ताको लखन लिख्यते ॥ जा विकात जातिमें पंचम अंस होय ॥ अरु गांधार निषाद रिषभ धेवत मिले होय गांधार जामें न्यास होय ॥ रिषभ पंचम अपन्यास होय ॥ गांधारादिक जामें मूर्छना होय ॥ चंचनपुर तामें नाल होय सालह । १६ । तामें कला होय ॥ ओर मात्रा तामें एकसांअठाविस । १२८ । होय सा गांधार पंचमी विकृति जाति जांमिय ॥ इति विकृति जाति गांधार पंचमी ताको लखन संपूर्णम् ॥

१६. ॥ अथ विकृति जाति गांधार पंचमीको यंत्र ॥

		_						
पा	म्प	मध	नी	धप	मा	धा	नी	9
कां	00	0 0	0	0 0	٥	٥	٥	'
सनिनि	धा	पा	पा	पा	पा	पा	0	1,
000	0	तं	0	0	٥	•	•	२
धा	नी	सा	सा	मा	मा	11	पा	2
वा	•	म	¢	क	द	٥	श्	३
नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी	8
में	•	खा	0	ल	मा	o	न	8
नी	नी	धप	मा	निध	निध	पा	पा	y
क	म	ल०	नि	भं ॰	0 0	0	0	,
पा	पा	री	री	री	री	री	री	1
व	₹	सु	₹	भि	कु	सु	म	६
मा	रिग	सा	सध	नी	नी	नी	नी	0
मं	0 0	धा	0 0	धि	वा	٥	सि	
नी	नी	सा	रिंस	री'	री'	री'	री'	6
त	म	नो	0 0	গ	0	٥	•	
नी	गा	सा	निग	सा	नीं	नीं	नीं	९
न	ग	रा	0 0	ज	सू	0	नु	
नीं	मां	नीं	нi	पां	पां	गा	गा	90
₹	ति	रा	0	ग	र	भ	स	
गा	qţ	मां	पां	नीं	नीं	नीं	नीं	99
क	•	ली	0	कु	च	0	य	[' '

मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	9 2
ह	ली	लं	000	तं	0	٥	۰	,
नीं	नीं	qi	धां	नीं	गा	गा	गा	93
प	ण	मा	0	मि	द	0	वं	1 7
नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	नीं	9 ()
चं	•	द्रा	٥	र्घ	मं	۰	डि	98
, मां	मां	धां	नीं	सनिनि	धा	पा	पा	94
त	वि	ला	٥	सकी॰	ਰ	0	0	1,2
मा	पा	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	98
न	वि	ना	000	दं	•	0	o	119

अथ विक्रित जाित आंधिको लछन लिख्यते ॥ जाेमं निषाद रिषम गांधार पंचम अंस हाय ॥ अंर निषाद धेवत रिषम गांधार इनको पर-स्पर मेल हाेय ॥ अरु गीत जहां नांई समाप्त हाेय ॥ तहां नांई अंसनके क्रमसाे मिले हाेय ओर न्यास तें लेकें अंस स्वर नांई उलटाे उच्चार कीिजये ॥ जांमं गांधार न्यास हाेय अर अंस स्वर ही अपन्यास हाेय ॥ मध्यमादिक जामें मूर्छ-ना हाेय ॥ चंचतपुटतामें ताल हाेय ॥ सालह जामें । १६ । कला हाेय ॥ एक-साेअठाविस । १२८ । तिनेमं मात्रा हाेय साे विक्रित जाित आंधी जािनये ॥ इति विक्रित जाित आंधीकां लछन संपूर्णम् ॥ अथ यंत्र प्रस्तार-चक्रमिदं ॥

१७. ॥ अथ विकति जाति आंधीको यंत्र ॥

गा	री	री	री	री	री	री	री	
त	रु	मं	٥	दुः	कु	सु	म	
री	गा	री	गा	री	री	री	री	
ख	वि	त	ज	ट	٥	0	•	
री	री	गा	गा	री	री	मा	मा	7
त्रि	दि	<u>a</u>	न	दी	स	ति	ਰ	1 3
री	गा	सा	धनि	नीं	नीं	नीं	नीं	2
धी	٥	त	मु०	खं	•	٥	•	8

		0.		• • • •	•0'			_,
नीं	री	नीं	री	धंनिं	धंनिं	पां	Чİ	ابرا
न	ग	सू	0	नु ०	०प	ण	यं	
मां	Чİ	मां	रिग	गा	गा	गा	गा	
वे	0	द	नि ०	धिं	•	•	0	६
री	री	गा	सस	मा	मा	पा	पा	10
प	रि	ना	0 0	हि	तु	हि	न	
मां	पां	मां	रिग	गा	गा	गा	गा	6
शै	0	ਰ	गृ ०	हं	۰	0	۰	10
धां	नीं	गा	गा	गा	गा	गा	गा	9
अ	मृ	त	भ	वं	0	0	•	
पा	पा	मा	रिग	गा	गा	गा	गा	90
गु	σ.	₹	हि ०	तं	•	0	•	
नी	नी	नी	नी	री	री	री	री	99
त	म	व	नि	₹	वि	श	शि	111
री	री	गा	नी	सा	सा	नी	नी	92
ज्व	ल	न	ज	ਰ	q	व	न	
q †	पा	र्मा	रिर्ग	गां	गां	ग	ग	
ग	ग्	न	त ०	नुं मां	0	0	•	193
री'	री	गा	सम	मा	म	qt	प	9.0
श	₹	णं	0 0	व	जा	0	मि	38
म	मां	नी'	नी'	स	री'	ग	पो	
शु	भ	म	ति	क	त	नि	ल	94
रिग	ग	र्गा	गा	र्गा	ग	गां	गो	ac
यं ॰	٥	٥	0	0	0	•	0	9 €

अथ विकत जाति नंद्यंता गे लछन लिख्यते ॥ जा विकति जातिमें पंचम अंस होय ॥ अरु पंचम ग्रह स्वर होय ॥ अरु जब सात स्वरनमें होय ॥ तब मंद्र षड्ज बहुत होय ॥ अरु षड्ज दूर कीयेतें षांडव होय ॥ अरु गांधार न्यास होय ॥ मध्यम पंचम अपन्यास स्वर होय ॥ पंचमादिक उसको मूर्छना

होय ॥ अरु चंचतपुट तामे ताल होय ॥ ओर सोलह जाकी कला हाय अरु मात्रा तोमं एकसोअठाविस । १२८ । होय ॥ सो विक्रति जाति नंद्रयंती जां-निये ॥ इति विक्रति जाति नंद्रयंतीको लखन संपूर्णम ॥

१८.॥ अथ विकृति जाति नंद्यंती यंत्र॥

गा गा गा गा पा पा घप मा १ धा धा धा धा भा भा पा पा <t< th=""><th>-</th><th></th><th></th><th></th><th></th><th></th><th></th><th></th><th></th></t<>	-								
सा ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	गा	गा	गा	गा	पा	पा	धप	मा	1
० ०	सा	0	0	0	0	٥	• •	•	,
पां पा पा पा पा	धा	धा	भा	धा	धा	नी	सनिनि	धा	2
मंखं ०	٥	0	٥	0	•	•	000	0	
भा नीं मां पां गां गां गां गां यां वे	पां	पां	पां	पां	पां	पां	पां	पां	1 2
वे ० दां ० ग वे ० द १ मा री गा गा गा गा गा गा गा गा गा गा गा गा गा		0	•	0	0	٥	•	•	1 4
व ° दा ° ग व ° द मा री गा गा गा गा गा गा गा गा क र क म ल यो ° निं मा मा पा पा पा धा निध पा पा त मो र जा वि व॰ ° ° धा नी मा पा गा गा गा गा गा फिं तं ° ° ° ° ° ° ° ° गम पा पा पा मा मा गा गा गा गा हरं ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° धा नी मा पा गा गा गा गा गा गा भ व ह र क म ल गू मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा है ० ° ° ° ° ° ° ° री गा मा पा पम पा पा नी शि रों रों रों एां पा मां मां मां	धां	नीं	मां	पां	गां	गां	गां	गां	0
क र क म छ यो ० निं प्रामा मा पा पा पा पा निध पा पा पा त मो र जो वि व० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	वे	0	दां	•	ग	वे	0	द	l° l
क र क म ल यो ० नि मा मा पा पा पा धा निध पा पा त मो र जो नि व० ० ० धा नी मा पा गा गा गा गा गा जि तं ० ० ० ० ० ० ० ० गम पा पा पा मा मा गा गा गा हरं ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	मा	री	गा	गा	गा	गा	गा	गा	
त मो र जॉ वि व० ०० ०० धा नी मा पा गा td=""><td>क</td><td>₹</td><td>क</td><td>म</td><td>स्र</td><td>यो</td><td>٥</td><td>निं</td><td>1</td></td<>	क	₹	क	म	स्र	यो	٥	निं	1
पा नी मा पा गा गा गा गा गा जा जि तं ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	मा	मा	पा	पा	धा	निध	पा	पा	6
जि तं ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	त	मो	₹	जा	वि	व॰	0	•	٩
जि तं ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० । गम पा पा पा पा मा मा गा गा हुई ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	1	नी	मा	पा	गा	गा	गा	गा	1,0
हरं ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	র্জি	तं	0	۰	0	•	•	•	
हर ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०	गम	पा	पा	TP	मा	मा	गा	गा	
भ व ह र क म ल गृ १ मा १० री गा मा पा पप पप पा पा भा भा भा १० री री री री री पप पप मा td=""><td>हरं</td><td>0</td><td>0</td><td>0</td><td>•</td><td>0</td><td>•</td><td>•</td><td></td></t<>	हरं	0	0	0	•	0	•	•	
मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा	धा	नी	मा	पा	गा	गा	गा	गा	
मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा मा १००००००००००००००००००००००००००००००००००००	भ	व	ह	<u> </u>	क	म	छ	गू	1,
ह ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °		मा	मा	मा	मा	मा	मा		
शि वं शां ० तं० सं ० नि १११ रीं रीं रीं पां पां मां मां	हं	٥	0	0	٥	۰	0	٥	1,0
रीं रीं रीं पीं पीं मीं मी		गा	मा	41	पम	पा	पा	नी	9 9
रीं रीं रीं पी पी मां मां						सं	٥	नि	
		रीं	रीं	रीं	Чİ	q i	मां	मां	93
वे ० श न म पू • वें	वे	0	श	न	म	q	0.	र्वे	93

धां नीं सींनींने धां पां प									
भू प ००० ण ठा ० ठ ० ० ० ० ० ० ० ग ११ ११ ग<	धां	नीं	सनिंनिं	भां	чi	पां	Чİ	Чİ	92
धां नीं मां पां गां गां गां गां गां गां गां गां गां ग	भू		000	वा	ली				1,4
उ र ग ० श भा ० ग भा ग भा ग भा	धां	नीं	मां	पां	गां	गां	गां	गां	30
भा ० सु र शु भ पु शु १ </td <td>उ</td> <td>₹</td> <td>ग</td> <td>•</td> <td>श</td> <td>भा</td> <td>0</td> <td>ग</td> <td>10</td>	उ	₹	ग	•	श	भा	0	ग	10
भा ० सु र शु भ पृथु घा घा घा पा मा पा मा मा मा पा मा मा </td <td>गा</td> <td>ग</td> <td>पा</td> <td>पा</td> <td>धा</td> <td>मा</td> <td>गा</td> <td>मा</td> <td>34</td>	गा	ग	पा	पा	धा	मा	गा	मा	34
से गा मा पा पप =""><td>भा</td><td>0</td><td>सु</td><td>₹</td><td>ગુ</td><td>भ</td><td>पू</td><td><u>થુ</u></td><td></td></t<>	भा	0	सु	₹	ગુ	भ	पू	<u>થુ</u>	
ति गा मा पा पम पा पा नी १५ <t< td=""><td>धा</td><td>भा</td><td>नी</td><td>धा</td><td>पा</td><td>पा</td><td>पा</td><td>पा</td><td>9 8</td></t<>	धा	भा	नी	धा	पा	पा	पा	पा	9 8
अ च न्छ प ति० सु ० तु १९००	लं	•	0	٥	0	0	0	0	_
अ च न्ड प ति० मु ० नु रीं रीं रीं रीं पी पा	री	गा	मा	पा	पम	पा	17	नी	910
क र पं ं क जा ॰ म पा पा पा पा था मा मा मा मा छ वि छा ॰ स की ॰ छ नीं पां गां गंमं गां गां गां गां न वि नां ॰॰ दं ॰ ॰ ॰ रीं रीं गां गां मां मां मां मां मां स्फ टि क म णि र ज त नी पा नी मा नी था पा पा पा सि त न व दु कू ॰ छ सी सी थिन था पा पा पा पा पा क्षी ॰ रोद ॰ सा ॰ ॰ ग री री गा गा मा मा पा पा अ ज शि रः क पा ॰ छ रा री री गा मा रिग मा मा	अ	च		Ч	नि ॰	सु	0	नु	
क र पं ं क जा ं म पा पा पा पा था मा मा मा मा ल वि ला ं स की ं ल नीं पो गों गेंम गों गों गों गों न वि नों ं ॰ दं ॰ ॰ ॰ ॰ रीं रीं गों गों मों मों मों मों मों स्फ टि क म णि र ज त नी पा नी मा नी था पा पा पा सि त न व दु कू ॰ ल सो सो धनि था पा पा पा पा पा क्षी ॰ रोद ॰ सा ॰ ॰ ग मा पा मा पिंग गा गा सो सो र नि का ॰॰॰ शं ॰ ॰ ॰ री री गा गा मा मा पा पा अ ज शि रः क पा ॰ ल रा	रीं	रीं	रीं	रीं	чi	पां	पां	पां	9/
ति ति	क	7	Ϋ́	ပ	क	जा	0	म	
ल वि ला ० स की ० ल नी पां गां गं गां	पा	पा	पा	पा	भा	मा	मा	मा	90
न वि नं। ० १ ०	ਲ		ला	o	स	की	0	ਲ	1,3
न वि नं। ०० १ ००००००००००००००००००००००००००००००००००००	नीं	पां	गां	गंमं	गां	गां	गां	गां	2 0
स्फ टि क म णि र ज त नी पा नी मा नी मा नी मा प	न	वि	ना	0 0		0	0	•	
स्फ टिक म णि र ज त नी पा नी मा नी धा पा पा पा पा पा सि त न व दु कू ० ल सो सो धनि धा पा पा पा पा पा पा पा पा श्री ० रोद ० सा ० ० ग २३ मा पा मा पिंग गा गा सो सो रि २४ र नि का ००० शं ० ० ० ० री री गा गा मा मा पा पा २५ रा री गा गा मा मा पा पा २५ रा री री गा मा रिग मा मा २५ रा री री गा मा रिग मा मा २५	रीं	रीं	गां	गां	मां े	मां	मां	मां	2 3
सि त न व दु कू ० ल र सी सी धान धा पा	स्फ	टि	क	म	णि	₹	ज	त	
सि त न व दु कू ० ल सी सी धिनि धिन पा <td< td=""><td>नी</td><td>पा</td><td>नी</td><td>मा</td><td>नी</td><td>भा</td><td>पा</td><td>पा</td><td>2 2</td></td<>	नी	पा	नी	मा	नी	भा	पा	पा	2 2
क्षी ० रोद ० सा ० ० ग मा पा मा परिग गा गा गा सा सा २४ र नि का ००० शं ००० ००० री री गा गा मा मा पा पा २५ श री री गा मा रिग मा मा मा मा मा	सि	त	न	व	740	कू	0	ल	
क्षा ० राद ० सा ० ० ग मा पा मा परिग गा गा गा सा सा २४ र नि का ००० शं ० ० ० ० री री गा गा मा मा पा पा ० २५ री री री गा मा रिग मा मा मा मा	सी	स्रो	धानि	भा	पा	पा	पा	पा	2 2
र नि का ००० १ ००० ०००० १ री री गा गा मा मा पा पा १ १ अ ज शि र: क पा ० छ २ री री री गा मा रिग मा मा मा	क्षी	٥	राद	o	सा	0	0	ग	114
र नि का ००० श ००० ००० री री गा गा मा मा पा पा १ अ ज शि र: क पा ० ल री री री गा मा रिग मा मा	मा	पा	मा	परिग	गा	गा	स्रो	स्त	20
अ ज शि रः क पा ० छ रिप री री री गा मा रिग मा मा	₹	नि	का	000	शं	0	0	0	10
री री री गा मा रिग मा मा	री	री	गा	गा	मा	मा	पा	पा	
. 128	अ	ज	शि	₹:	क	पा	0	ल	_ २५
पृथुभा ० ० ज <u>ा</u> नं ० रिष्	री	री	री	गा	मा	रिग	मा	मा	125
	ą	થુ	भा	С	0	ज ॰	नं	0	र६

संगीतसार.

मा नी पा नी गा गा गा गा वं ० दे ० सु ख दं ० मा मा पा पा धा धनि निध मा २८ ह र दे ० ह म० म० छ धा धा सा नी धा नी पा पा म धु सू ० द नं ० सु री री री री मा पा धा मा ते ० जो ० धि कं ० सु नी नी नी नी धा पा मा मा ग ति यो ० ० ० ० ० मा परिग गा गा गा गा गा गा गा									
वं ० दे ० सु ख दं ० भा	नी	पा	नी	गा	गा	गा	गा	२७	
ह र दे ० ह म० म० छ २८ घा धा सा नी धा नी पा पा म धु सू ० द नं ० सु री री री री मा पा धा मा ते ० जो ० धि कं ० सु नी नी नी नी धा पा मा मा ग ति यो ० ० ० ० ० मा परिग गा गा गा गा गा गा	वं	0	दे	•	सु		दं	•	
ह र दे ० ह म० म० छ । धा था सा नी धा नी पा पा २९ म धु सू ० द नं ० सु री री री री मा पा धा मा ३० त ० जो ० धि कं ० सु नी नी नी नी धा पा मा मा ३९ मा परिग गा गा गा गा गा गा गा	मा	मा	पा	पा	धा	धनि	निध	मा	10/
म धु सू ० द नं ० सु २९ री' री' री' री' मा पा <	ह	₹	दे	0	ह	म०	म०	ल	1,0
म ध स ० द नं ० स १ री' री' री' री' मा प	धा	धा	सा	नी	धा	नी	TP	पा	20
ते ॰ जो ॰ धि कं ॰ सु ३º नी नी नी नी धा पा मा मा ग ति यो ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ मा परिंग गा गा गा गा गा गा	म	धु	सू	0	द	नं	0	सु	1,
त ॰ जा ॰ धि क ॰ सु नी नी नी भी पा मा मा । ग ति यो ॰ ॰ ॰ ॰ ॰ मा परिंग गा गा गा गा गा गा गा	री'	री'	री	री	मा	पा	धा	मा	3.0
ग ति यो ० ० ० ० ० १ ३१ मा परिंग गा गा गा गा गा गा _{3 २}	ते	٥	जो	0	धि	कं	0	सु	130
मा परिंग गा गा गा गा गा गा _{3 २}	नी	नी	नी	नी	धा	पा	मा	मा	
13 4	ग	ति	यो	0	o	0	•	•	२।
० ००० मिं ० ० ० ० ।	मा	परिग	गा	गा	गा	गा	गा	गा	2 2
	٥	000	नि	c	0	٥	0	٥	1 3 3

॥ जाति तालिका ॥

गस्बराः	त्रयमस्यराज्याय-जातित्रकरण.
: औडवद्रेग	त्रित्व मानुक्य स्थानीय व विश्व मानुक्य सम्बन्धित
षाडवद्विषस्यराः औडवद्वो	ははっっっとははははいっちょりはは
मूछेनाः	उत्तरायता कुद्धषड्ञा प्रार्था कले।पनता अभिरुद्धता अभ्यकान्ता भरसराकुता प्रार्था हारिणाभ्या हारिणाभ्या हारिणाभ्या हारिणाभ्या
अपन्यासाः	गप रिधान स्वप् स्वप् स्वर्गिम् स्वर्गिम् स्वप् स्वर्ध
न्यासाः	गु) न स न प स न स स स म म गु, ल प स स प्रोज़
अंशाः	सगमपथ रिधान सगमपथ सरिमपथ रिप सगानि सगानि समधानि सम सगमपथनि प् प् ए
जातिनामानि	पाइजी अर्षभी मध्यमा पश्चमी पश्चमी धेवती नेपादी पड्जोहीचनी पड्जोहीच्या पड्जोहीच्या पड्जोहीच्या पड्जाहीच्या पड्जाहीच्या पह्जाहीच्या सध्माहीच्या सध्माहीच्या सध्माही
जातिसंख्या	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्रथमस्वराध्याय-गीतिप्रकरण.

अथ सात शुद्ध जातिनमं ताल । १ । कला । २ । रस । ३ । इनको प्रमाण लिख्यते ॥ जहां ताल नहीं कसो तहां चंचतपुर आदि पांच । ५ । मार्गी ताल एक कला । १ । दिकला । २ । चतुष्कला । ३ । जांनिये ॥ इन जातिनमं जे कला लिखी है ते दक्षिण मार्ग । १ । जांनिय ॥ अंतर वार्तिक मार्गमं लिखी कलानसों दुणी । २ । जांनिये ॥ चित्र मार्गमं लिखी कलानसों चौगुणी जांनिये ॥ अर इन जातिनक राग विकति जाति है ते जो जाति, जा रसमं कही ताही, रसमें गाईये ॥ सा ये जाति श्रीमहाद्वजीके स्तृतिक पदनमं गांव सो पांचे स्वरनसो गुरुनसो सास्त्रसों संगीत विधान जांनिके ॥ इन जातिनकों शिवजीकी स्तृति पदनमें गांवे ॥ वह गायनवारों वा सुनिवेवारों दोन्हु ब्रह्महत्यादिक पापन सों छुटै जो रिगवेद । १ । यजुवेद । २ । सामवद । ३ । उनके स्वर सहित पाठ किये तें जो फल होय सो फल इन जातिनके पढवे तें सुनव गायव तें वा याकी चरचा किये तें वा इनके लखन विचार कियेते । यह जाति वद समान जांनिये ॥ ॥ इति सात सुद्ध जाित प्रमाण मंपूर्णम् ॥

अथ पांडजी आदिक सात सुद्ध जातिनके कपालनकी उत्पन्ति लछन लिख्यते ॥ शिवजीनें भरतादि मुनीकां संगीतशास्त्र पढायवेकां प्रथम तांडव नृत्य कीनो तब पांडजी । आदिक सात सुद्ध जातिनकां अलाप कीनो, तो, शिवजीकां परम आनंद भयो तब शिवजीके शिसमें जो, चंद्रमा, तांनें, अमृतकी बूंद शिवजीके गलेमें जो कंठमाला, तांपं, पडी तब व हंडमालामें, ज मस्तक हेट, संजीवन भये कें जातिनके राग हर्ष सों गावत भये सा उन कपालनके गांय जो, गीत तिनको, तीन नाम कपालनके हे ॥ ओर जातिनतें उत्पन्न भये जो रागनी, तिनके सरूप न्यारे न्यारे ॥ नीन गीतनमें गांय जाय, तें, कपाल गीत कहिये। जैसें मनुष्यनके स्वरूप भेद मुख्य देखवेतें पहचोनें ऐसेंहि कपालसो रागके भेदसरूप जांनिये ॥

अथ प्रथम पांडजी जातिके कपालनको लखन लिख्यते ॥ जांकपालमें यह अंस पड्ज स्वर होय, पड्ज स्वरही अपन्यास होय अरु गांधार न्यास होय अरु निषाद धैवत पंचम रिषम थोडे होय ॥ ओर कहुक रिषम दूर कीय पांडव होय हें ॥ मध्यम गांधारको बहुत उच्यार होय जामें बारह कला होय ॥ सां गीतको नाम षांडजी कपाल जांनिये ॥ इति पांडजी कपाल लखन संपूर्णम्॥

अथ आर्षभी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां रिषम अंस स्वर अरु अपन्यास स्वर होय ॥ ओर मध्यम स्वर न्यास होय ॥ अरु निषाद धैवत थोडे होय ॥ अरु षांडवमं स्वर थोडे होय ॥ आठजाकी कला होय सो गीत आर्षभी कपाल जांनिय ॥ इति आर्षभी कपाल गीतको लछन संपूर्णम ॥

अथ आर्षभी कपाल पर लिख्यते ॥ झण्टुं झण्टुं ॥१॥ खट्टाङ्गधरं ॥२॥ दंष्ट्राकरालं ॥३॥ तडितसदशिजहुं ॥४॥ उं उं न्हों मैं हो हो हो हो ॥ ५॥ हो हो हो ऐं हो हो हो हो ॥ ६॥ वर सुरिभ कुसुम चार्चितगात्रं ॥ ७॥ कपालहस्तं ॥ ८॥ नमामिदंवं ॥ ९॥ इति आर्षभी कपाल पर संपूर्णम् ॥

अथ गांधारी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वरमं यह होय अरु अंस होय न्यास होय अपन्यास होय जामे धेवत बहुत होय ॥ अरु षड्ज रिषम गांधार थोडे होय ॥ अरु रिषम पंचम दूर किये औडव होय अर जांमें आठ कला होय ॥ सो गीत गांधारी कपाल जांनिय ॥ इति गांधार कपाल गीतको लछन संपूर्णम् ॥

अथ गांधारी कपाल पद लिख्यते ॥ चलत रंग भंगुरं ॥ १ ॥ अनेकरेणु ॥ २ ॥ पिजरं सुरासुरे: ॥ ३ ॥ सुसंवितं ॥ ४ ॥ पुनातु जान्हवी ॥ ५ ॥ जलं मां ॥ ६ ॥ विंदुभिः ॥ इति गांधारी कपाल पद संपूर्णम् ॥ अथ मध्यमा कपाल गीतको लक्षन लिख्यते ॥ जहां अंस मह

न्यास अपन्यास मध्यम होय ॥ अरु निषाद पंचम रिषम गांधार ये थोडे होय ॥ ओर जोमें, नो, कला होय । सो गीत मध्यमा कपाल जांनिये ॥ इति मध्यमा कपाल गीतको लक्छन मंपूर्णम् ॥

अथ मध्यमा कपाल पद लिख्यंत ॥ शूछ कपाछ ॥ १ ॥ पाणि त्रिपुरिवनाशि ॥ २ ॥ शशाङ्कधारिणं ॥ ३ ॥ त्रिनयन त्रिशूछं ॥ ४ ॥ सतत मुमया सहितं ॥ ५ ॥ तं वरदं है है है है ॥ ६ ॥ है है है है है ॥ ७ ॥ है है है है है ॥ ८ ॥ स्तामि महादेवं ॥ ९ ॥ इति मध्यमा कपाल पद संपूर्णम् ॥

अथ पंचमी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां रिषभमें बह अंस न्यास होय ॥ अरु निषाद धेवत षड्ज गांधार मध्यम य थोड होय ॥ ओर ज्योंने आढ कला होय ॥ सी गीत पंचमी कपाल जांनिय ॥ इति पंचमी कपाल गीतको लछन संपूर्णम् ॥

अथ पंचमी कपाल पद लिख्यंत ॥ जय विषमनयन ॥ १ ॥ मदन-तनु दहन ॥ २ ॥ वर वृषभगमन ॥ ३ ॥ त्रिपुरदहन ॥ ४ ॥ नत सकल-भवन ॥ ५ ॥ सित कमलवद्ग ॥६॥ भव में भय हरण ॥ ७ ॥ भवशरणं॥ ८ ॥ इति पंचमी कपाल पद संपूर्णम् ॥

अथ धेवती कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां रिषम गांधार थोंडे होय ॥ अरु येहि अपन्यास होय ॥ मध्यम जांमें बहुत होय ॥ अरु येहि अंस होय धैवतेमें यह स्वर, न्यास स्वर होय ॥ अरु आठ ज्यांमें कला होय ॥ कहूंके रिषम दूरि किये तें षांडव होय ॥ सां गीत धैवती कपाल जांनिये ॥ इति धेवती कपाल गीतको लछन संपूर्णम् ॥

अथ धैवती कपाल पद लिख्यते ॥ अग्न ज्वालाशि ॥ १ ॥ खाव-लि ॥ २ ॥ मांस शोणित ॥ ३ ॥ माजिनि ॥ ४ ॥ सर्वाहारिणि ॥ ५॥ निर्मासे ॥६॥ चर्ममुंडे ॥ ७ ॥ नमास्तुते ॥ ८ ॥ इति धैवती कपाल पद संपूर्णम् ॥

अथ नैषादी कपाल गीतको लछन लिख्यते ॥ जहां ग्रह अंस न्यास अपन्यास षड्जमें हो ॥ अर रिषम गांधार थोडे होय ॥ निषाद धैवत पंचम बहुत होय ॥ अरु आठ जामें कला हाय सा गीत नैषादी कपाल जांनिये॥ इति नैषादी कपाल गीतको लछन संपूर्णम् ॥ अथ नैषादी कपाल पद लिख्यते ॥ सरसगजचर्मपटं ॥ १ ॥ भीम भुजंगमानद्धजटं ॥२॥ कह कह हुंक्रत विक्रत मुखं ॥ ३ ॥ नम तं शिवं हरमजितं ॥ ४ ॥ चंद्ररुंडमजेयम् ॥ ५ ॥ कपाल मंडित मुकुटं ॥ ६ ॥ कामद्र्षविध्वंस करं ॥ ७ ॥ नम तं हरं परमशिवं ॥ ८ ॥ इति नेषादी कपाल पद संपूर्णम ॥

अथ कंबलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पहले कंबल ॥ १ ॥ अ॰ व-तर ॥ २ ॥ नाम नाग राजांने शिवजीके कानके कुंडल होय वेकों शिवजीको प्रसन्न करिवेकों पंचमी सुद्ध जातिके स्वरनको थोंड बहुत करिकें गीतमें शिवजीको गुणानुवाद गाय तब शिवजि पसन्न होयके कंबल ॥ अरु अ॰वतर दोनु कानके कुंडल करिके काननमें पहरे ॥ तब तें कंबल नाम नाग राजांने गाय जे गीत तिनकों नाम कंबलके गीत कहत हैं ॥ जहां ग्रह अंस अपन्यास पंचम होय ॥ अरु जांमें रिषभ बहात होय ओर षड्जमें न्यास होय ॥ अरु म-ध्यम गांधार थोडों होय पंचमी जातितें उपज्यों होय ॥ सो गीत कंबल जांनिये ॥ या कंबल गीतके भेद पंचमी जातिकें जे स्वर, तिनकों कमतें कहुं थोडे बहुत किये तें ॥ अनेक कंबल गीतके भेद होत हैं ॥ सो ब्रह्माजी वा शिवजि वा भरत मतंगादिक मुनी॰वर कहत हैं ॥

अथ कंवल गीतके गाईवेकों वा सुनिवेकों वा जांनिवेकों फल लिख्यते ॥ शिवजी वे कंवलगीत सुनिके राजी भये ॥ कंवल वा अश्वतर दोनु नाग राजाको काननके कुंडल दिये ॥ अरु यह कही शुद्ध विकृति जातिनके कपाल कंवल गीत तुम गाये ॥ तातें प्रसन्न होयकें तुमको मे वर दान कीयो हैं ॥ जो कोई नरनारी इनको गांव सुनें इनके मार्गमें सुकृताके उपर प्रसन्न होयकें सकल मनोरथ पूर्ण करु यह कही ॥ याते इन गीतनको विचारिये ताको फल सुद्ध जातिनसों जांनिये ॥ इति कंवल गीतकी उत्पत्ति लक्छन संपूर्णम् ॥

अथ जातिनको वरताव गीतनमं होय हं यातं गीतको लछन लिख्यते ॥ च्यार वर्ण कहिये, स्थाई ॥ ३ ॥ आरोही ॥ २ ॥ अवरोही ॥ ३ ॥ संचारी ॥ ४ ॥ ये वरन अरु इनके अलंकार त्रेसिट । ६३ । तिन करिकें जुक अरु विलंबित । १ । मध्य । २ । द्रुत । ३ । ये तीनों लयनको लिये शब्द ॥ राम । ऋष्ण । शिव । आदि जामें होय ऐसों जो स्वरनको मस्तार ॥ सो

आरोह अवरोह करिकें रिचये।। ताकें गाइवेकी जो कीया सो गीत जांनिये।। सो गीत च्यार प्रकारको हे।। मागधी । १। अर्धमागधी । २। संभाविता । ३। पृथुला । ४। ये च्यार हें।।

अथ प्रथम मागधी गीतको लछन लिख्यते ॥ जामं तीन किंटा होय तहां पहली कलामें विलंबित लय ॥ सो एकसंगगावनो ॥ ओर दुसरी कलामें मध्यम लय किंद्रिये ॥ विलंबित लयको आधो समय सो मध्यम लय जांनिये ॥ ता मध्यम लय सों पहली कलामें गायो जो शब्द सो दूसरे सब्द सिंहित गाईये ॥ ऐसों दोय सब्द गाईये ॥ एक तो पहली कलाको ओर दुसरो शब्द ओर लगावनों ॥ अरु तीसरी कलामें दुत लय किंद्रिये ॥ मध्यम लयको आधो समयको दुतल्य जांनिये ॥ वा दुत लयसों पहली कला दुसरी कलामें गाये जे दोय सब्द ते तीसरी सब्द सिंहत गावनें ॥ ऐसें तीसरी सब्द दुसरी कलामें गावनें दोय सब्द तो पहली दोय कलानकें लेनें ॥ तीसरी कलाको ओर सब्द लगावनों ॥ ऐसें कलानमें गायवेके शब्दनकी रीति जांनिये अरु स्वरनकी रीति जा जातिमें गावनी होय ता जातीकी लेना ऐसी गीतको मागधी गीत जांनिये ॥ इति मागधी गीति लखन संपूर्णम् ॥

मागा दे०		माधा वं ०	धनि दे०	धनि वं ०	सनि धा रु० इं	
	रिग देवं	रिग रुदं	मग वं ०	रिसा दे०		

अथ अर्ध मागधीको लछन लिख्यते ॥ जा जातिमें तीन कठा होय॥ तहां पहली कठामें विलंबित लय सों एक शब्द गाईये ॥ अरु दूसरी कलामें पहली कलामें गायो जो शब्द ॥ ताको पिछलो आधो गायकें । ओर एक शब्द गाईये ऐसें वम् , सब्द मध्यम लयसों गाईये । अरु तीसरी कलामें दुसरी कलामें गायो जो दुसरो शब्द ताको पिछलो आधो गायके एक ओर सब्द गाईये ॥ ऐसें वम् , शब्द दुतलय सों गाईये । ऐसें गायवेकी रिति जा गीतमें होय सो अर्ध मागधी जांनिये ॥ इति अर्ध मागधीके लछन संपूर्णम् ॥

मा	री	गा	सा
दे	°	वं	•
सा	सा	धा	नी
वं	रु	इं	°
पा	धा	पा	मा
इं	वं	दे	°

अथ संभाविता को लखन लिख्यते ॥ जा, गीतमें कलाके जितने स्वर होय ॥ तिन स्वरनमें कोई कोईक स्वर सब्दके ॥ अक्षरनमें लगाईके गाईये ॥ ओर कोई काई स्वर विना अक्षरके भये तिनमें उच्चार कीजिये ॥ ऐसें गाय-वेकी रिति होय, सो, संभाविता गीत जांनिये ॥ इति संभाविता गीत लखन संपूर्णम् ॥

मा दे	मा	मा	मा
<u></u>	٥	वं	0
धा डे	सा	भा	नी
,	वं 	₹ 	इं
पा	निध	मा	मा
रु	दं०	वं	<u> </u>

॥ इति संभाविता गीति जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ प्रथुला गीतको लछन लिख्यते ॥ जाके शब्दनमे गुरु अक्षर होय ॥ ओर कहूंक गुरु अक्षरके स्थान दोय छघु होय ॥ ऐसें सुद्ध असुद्धन सों जहां कछा गाईये ॥ सो प्रथुछा गीत जांनिये ॥ इति प्रथुला गीति संपूर्णम् ॥

मा	गा	री	गा
सु	र	न	त
सा	धनि	धा	धा
ह	<i>र</i> ०	प	द

संगीतसार.

धा	सा	धा	नि
यु	ग	ਲं	°
पा	निधप	मा	मा
प	ण ० ०	म	त

अथ पहले कही जे च्यार मागधि आदिक गीत तिनके दुसरे कला लक्षन भरतादि मुनिनें कहे सो कहत हैं॥

अथ मागधी गीतको दुसरो लछन लिख्यते ॥ जहां चंचतपुट ता-लके पहले जो दोय गुरु तिनमे एक एक गुरु सो चित्र मार्गमें चंचतपुट तालको निर्वाह कीजीये ॥ अथवा एक एक गुरु सो छह छह मात्रा लगावनी ॥ तब एक गुरुकी दोय मात्रा ॥ अरु छह मात्रा ओर मीलायदीजिये ॥ ऐसें आठ मात्रा होय । ऊन आठो मात्रानमें दक्षीण मार्ग सों ध्वकादिक आठ मात्रा वर-तिकें एक कला चंचतपुट तालको ॥ सरूप बांधिके ॥ जब कोऊ जाति गाईये तब वह तालके खंड करिकें गायवेकी जो रीति ॥ सो मागधी जाति जांनिये ॥ इति मागधी गीतिको लछन संपूर्णम् ॥

अथ अर्ध मागधी गीतको दुसरा लछन लिख्यते ॥ जहां चंचत-पुट तालको तीसरो अंग जो लघुता सों तीन मात्रा ओर मिलायकें च्यार मात्रा कीजिये ॥ अरु ऊन च्यार मात्रानमें धिवका ॥ १ ॥ सार्पणी ॥ २ ॥ ये दोनु मात्रा अरु पताका ॥ ७ ॥ पतिता ॥ ८ ॥ ये दोय पिछली मात्रा वरतीकें एक कला चंचतपुट तालको ॥ आधो सरूप बांधिकें जब जाति गाईये ॥ अथवा चंचतपुटको चोथो ॥ अंगप्लुत तीन मात्राको तासो नौ । ९ । मात्रा ओर मीलाईये । बारह । १२ । मात्रा कीजीये ॥ अरु उन बारह मात्रानमें ॥ धुव-कादिक आठ कला कमसों वरतीयं आठ मात्रामें ॥ अरु बाकीकी च्यार मात्रानमें पिछली दोय मात्रा पताका अरु पतिता ये दोय वेर वरतिये ॥ तहां पताका । १ । पतिता । २ । पताका । ३ । पतिता । ४ । या रीतीसों च्यारो मात्रा पूर्ण कीजिये ॥ ऐसें एक कला चंचतपुट तालको टेडो रूप बांधिये ॥ जब कोउ जाति गाइये ॥ तब ताल खंड करिकें गावे की जो रीती सों अर्ध मागधी गीति जांनिये ॥ इति अर्ध मागधी गीतिको लछन संपूर्णम् ॥ ये दोनो गीत

यां रीतीसों पांचो मार्गी तालमें जांनिये॥ अथ संभाविता गीतिको दूसरो ल्लान लिख्यते॥ जहां कला चंचतपुर तालकी मात्रामें बहात गुरु अक्षर राखिकं॥ तहां दिकल चंचतपुरकी सोलह मात्रा होत हैं तिनमें आठ गुरु राखिये॥ ऐसें कार्तिक मार्गमें दिकल चंचतपुर ताल बांधिकें जा कोऊ जाति गाईये॥ सो वह गाईवकी रीती सों संभाविता जांनिये॥ इति संभाविता गीतको लखन संपूर्णम्॥

अथ पृथुला गीतका दूसरो लछन लिख्यत ॥ जहां चतुष्कल चंच-तपुट तालकी मात्रानमें ॥ लघु अक्षर राखिकं । तहां चतुष्कल चंचतपुट तालकी बत्तीस मात्रा हैं ॥ तिनमें बत्तीस लघु अक्षर राखिये ॥ ऐसें चतुष्कल चंचतपुट ताल बांधिके दक्षिण मार्गमें जो कोऊ जाति गाईये ॥ सोवह गाईवेकी रीतीसों पृथुला गीत जांनिये ॥ इति पृथुला गीतको दूसरो लखन मंपूर्णम् ॥

॥ जामें गांधार तीव होय कोमल धेवत मेल ॥ ॥ षांडव ॥										
9	3	٦ .	સ	8	ч		9			
स		स	स	स	स					
रि		ग	रि	रि	रि					
ग		म	ग	ग	ग					
म		Ч	प	म	प					
प		ध	घ	ध	घ					
नी		नि	नि	नि	नि					

॥ औडव ॥

ર	3	3	8	8	ч		स
स	स	स	स	स	स		रि
ग	रि	रि	ग	रि	रि		ग
Ч	ग	ग	म	4	ग		म
ध	ध	.ध	म	म	ध	•	प
नि	नि	नि	ध	घ	ध		धनि

॥ संपूण	॥ संपूर्णम् ॥ ॥ षांडव ॥					॥ औडव ॥			
स	9	२	સ		0	۰	۰		
ग	स	स	स		3	२	3		
म	रि	ग	रि		स	स	स		
4	ग	म	ग		रि	ग	रि		
q	4	q	Ч		ग	ग	Ч		
ध	ध	ध	ध		ध	म	ध		
नी	नी	नी	नि		नि	नि	नि		

	॥ धैवत कोमल औडव ॥										
8			9	3	8	ч	६				
स	स		स	स	स	स	स				
ग	रि		रि	ग	रि	रि	रि				
म	ग .		ग	म	म	म	ग				
ग	प		4	ध	ध	ध	ध				
नि	नि		नि	नि	नि	नि	नि				

॥ जामें रिषभ कोमल तिवतर मध्यम ॥

3	२	3	8	ч	६	9	
स	स	स	स	स	स	स	म
। म	रि	रि	ग	ग्	ग	रि	धि
प	म	ग	म	म	े प	ग	नृ
ध	ध	मं	ध	Ч	म	प ध	च
नि	नि	ध	नि	घ	घ	धनि	पं

	॥ जामें कोमलधैवत संपूर्णम् ॥											
l	w	स	臣	Ħ	þr.	-	च	급				
; 	ď	भ	年	ᆔ	ㅠ	অ	Œ	5 -6				
,	6	म	¢r	म	5-	घ	Œ	्स '				

॥ रिषभकोमल तीवतर मध्यम ॥									
9	3	3		9		9			
स	स	स		स		स			
रि	रि	रि		रि		रि			
म	ग	4		ग		म			
ध	म	Ч		म		प			
नि -	ध	ध		पधनि		धनि			

॥ षांडव	11	॥ औ	डव ॥		
२	३	9	२	3	
स	स	स	स	. स	
रि	रि	रि	रि	रि	
प	ग	म	प	ग	
म	म	ध	ध	ध	
धनि	धनि	नि	नि	नि	

संपूर्ण	षांडव	Γ	औडव		
9	9	२		9	
। स	स	स		स	
रि	रि	रि		रि	
ग	ग	ग		म	
म	Ч	प		ध	***************************************
Ч	ध	ध		नि	
धनि	नि	नि	·	0	

॥ गीतमं रिषभकोमल धेवतकोमल पूर्वनिषाद ॥ ॥ मध्यम तीवतर धेवतकोमल निषाद तीवतर ॥

स१		9	२	3	₹ 9
रि		स	स	स	रि
ग		ग	रि	रि	ग
म		म	ग	ग	н
प		प	म	म	4
ध		ध	प	प	ម
नि	_	नि	धनि	ध	नि

	॥ धेवत कोमल निषाद तीवतर ॥										
9	ર્	3	***************************************	औ	र्ड	व					
स	स	स		3	२	3					
ग्	रि	रि		स	स	₹					
म	ग	ग्		ग	रि	ग					
4	म	म		म	ग	म					
ध	ध	प		ध	म	Ч					
नि	नि	ध		नि	ध	ध					

॥ मध्यम संपूर्णम् ॥										
स १	9	२	3	3	२	३				
रि	स	स	स	o	0	0				
ग	ग	रि	रि	स	स	स				
म	म	ग .	ग	ग	रि	ग				
प	प	म	म	म	ग	म				
ध	ध	घ	Ч	ध	म	ध				
नि	नि	नि	नि	नि	ध	प				

॥ प्रथमस्वराध्याय समाप्त ॥

संगीतसार.

अद्भ व विक्रतस्वर. विख्य व व विक्रतस्वर. विक्रय व व विक्रय व व विक्रय व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	٠,					=	॥ ठाउन व विकास स्वर्धन ॥	स्वर्यत्र =				4
मध्ये मध्यम संगीतरस्ताकर स्पार्शिक्त देशी ठरूप कोमंट नांव नुंद्धिक्षान क्रमीत स्पार्थिक प्रवास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्पार्थिक स्वास स्	-					नेकत स्वर	9		गुद्ध व विद्		मुख्य व गोण स्वर	शुद्ध व ।वछत स्वरः
पड़्ज मध्यम संगीतस्ताकर रागावियोध. सागात-पार ताम ताम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम सागात पार वाम वाम सागात पार वाम वाम वाम वाम वाम वाम वाम वाम वाम वाम		शुक्त र	, 0			431CL (1)		- -	TO THE	10		
पहुल मस्यम संपारित्तांक, शास्त्रोक हे केशिक्त हे हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त हे केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक्त है केशिक है के	(1)			-	भागाविद्य	ांच.	संगीत-पा	गरजान.	अंद	المالم ما الما		THE
सगीतदूषण. सगीतदूषण. प्रश्निक्ष में क्ष्मीतक्षे प्रक्षिति	<u>•</u>		मध्यम	संगामिकर	शास्त्रोक	देशी लक्ष्य	क्रोमल			कर्नाटक		111111111111111111111111111111111111111
स् स स र अच्युत क्वाक्ली अप काक्ली वित्त कर निवास कि काक्ली कि काक्ली अप काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि काक्ली कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि				भंगीतद्वपण. १९ केशिकी		, श्वदृष्ट्यानिष.				४ षट्यु धे. ५ऋ शिल्नि.		१५ तीव्र निषाद.
सिपाद निपाद निपाद निपाद निपाद निपाद निपाद निपाद (शांप) । स्पाद महिना निपाद निपाद (शांप) । स्पाद महिना निपाद निपाद (शांप) । स्पाद महिना निपाद निपाद (शांप) । स्पाद महिना निपाद निपाद (शांप) । स्पाद महिना निपाद निपाद । स्पाद महिना निपाद निपाद । स्पाद महिना निपाद निपाद । स्पाद महिना निपाद निपाद । स्पाद मिला निपाद । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान । स्पाद मिलान निपाद । स्पाद मिलान मिल	-			निवाद	F.	93 क. जि.			-	। इ. काकर्ला	६२ नि.(नीब)	१६ नीवतर निवाद
स स र अच्युत पड्ड पड्ड पड्ड प (सुड स.) र त्र त्रावतम क्षा पड्ड पड्ड पड्ड प (सुड स.) ते स्त (गुड़) क्स (गुड़) क्	~			१२ काकर्ला नियाद	• काकला नि.	भ स्थित नि				नियाद.	ĺ	
सि सि र अच्छात (स) १ सूर्व मि. १ स्त (गुद्ध) १ स्त (गुद्ध) १ सि (गुद्ध	6			ir.	च्युत पड्ज मट म	१५ मुद्ध पड्ज	(मृदु स.)	२२ नाबतम नि.				
पड्डप पड्डप प्रकासका क्या के प्रकासका के प्रकासका के क्या के प्रकासका के प्रकास के प्रकासका का का का का का का का का का का का का क	>	t	T.	र अच्युत	(म)			J	भ स (गृद्ध)	स (गुद्र)		म
रि रि क्ष्मेल (री) क्ष्मेल ग. क्ष्मेल ग. क्ष्मेल ग. क्षेत्र ग.		;	;	500			१ पूर्व रि.					र आतिकोमलक्रपम
ति ति ति ति ति ति ति ति	5 -1	,					4				ः रि. (क्.	ः क्रामत्र ऋषम
रि रि क्ष्पम (री) 3 पूर्व गां. 3 पूर्व गां. <th>w</th> <th></th> <th></th> <th></th> <th></th> <th></th> <th>२ क्रामल रि.</th> <th></th> <th>े कामल ।र.</th> <th></th> <th>(E SEC)</th> <th>अत्र स्वम</th>	w						२ क्रामल रि.		े कामल ।र.		(E SEC)	अत्र स्वम
मुला क्ष्मेत क्ष्मेत प्रनीव रि. क्ष्मेत प्रनीव रि. क्ष्मेत प्रापं म म (म) रण्येश्व. रि. इ. नीव रि. क्ष्मेत गां प्रापं प्रापं म म (मीवतर) प्रवाप रि.	,	¢	(Þ	३ चतुःश्रुति			3 पूर्व गां.			े गुद्ध रि.		
म म (ग) २ पंचश्रु. रि. ६ नोवतर रि. र कोमळ गां. र गुद्ध गां. एक्टर) म प्रिक्रात गां. ३ पट्श्रु. रि. ७ नीव गां. प्रपट्शु. रि. प्रपट्शु. रि. गां. तीवतम प्रसाधाः गां. प्रसाधाः गां. प्रसाधाः गां.	1	<u> </u>	-	ऋतम		9 चतु. रि.	४ क्रोमल	५ नीव रि.	!	3 चनुःश्रात रि.	३ गि (नीब) (शापे)	४ तीव्र ऋषभ
 रिश्रमुति गाँ, र साधारण ३ वट्श्रु. रि. (साधारण गांधार (तीवतम) गाँ.) तीव गाँ. र साधार गाँ. 	, -	la la			(#)	र पंचश्र, रि. (जीवतर)		६ नोबनर रि.	४ कोमल गां.	४ धुद्ध गां.	र ग (कोमल (कुर)	५ क्रोमल गांधार.
(साथारण गांधार (तीवतम) ७ तावगा. गां.) तीव गां. र साधाः गां.	-			रत्रिश्रति गाँ	र साधारण					५ बहुश्रु. नि		६ तीव्र गांधार.
	6.			(साधारण गां.)	गांधार नीव्र गां.			6 तांब गा.		६ साधा गां		r

प्रधानस्वराध्याय-शद्ध व विकृत स्वर यंत्र. २६७

	2	गथमर	वराध	ध्याय-	-સુદ્ધ	व ।व	कृत	स्वर	पत्र.		२
) उ तीव्रतर् गांधार्.		८ कोमल मध्यम.		र तीत्र मध्यम	ì	30 d	११ अति कोमल धे.	9	(শুরু ঘরন) (কী০)	१३ तीघ थेवत.	१४ कोमल नियाद.
नार मार्		६ म (को.) (छंट.)		७ म (ती.) (शापे)		b 0		(ध. (को.) (छेट.)		१० ध (नी.) (शापे)	 भ नि.(को.) अंत्रे
अनर गां. भिया (भ		. गुद्र मध्यम		९ प्रति मध्यम		३० प (गुद्ध)			११ गुद्ध येट	१२ चतुःश्रुति धैवत	१३ गुद्ध नि.
		६ कोमल म, ट गुद्र मध्यम,		७ तीव्र म.		ं प (गुद्ध)		र कोमल धे.		१० तीव थे.	११ कोमछ
८ तीव्रतर् गां. ५ तांत्र गां.	्रतीवनम् गाः	३० आति नी- वनम गांधार	११ तींब म	१२ नीव्रतर मध्यम	१३ तीव्रतम मध्यम					१८ तीव्र घ.	१६ नित्रतर
	(मृदु मध्यम) ९ तीवनम गां.		arager engraphisms		(मृदु पंचम)		१ ४ पूर्व धेवत	१५ क्रामल धवत	१६ पूर्व नि.	^९ ७ कोम ल नि.	
५ अंतर गाँ. (तीबतर गां.)	मुद्र मध्यम (७ पर्यु. गां. (तीव्रतम.)		८ पट्श्रु. म. (तीव्रतम म.)						१० चतुःश्रुति धवत	११ पंचयुति
.गां. ३ अंतर गां. गं.) तीवनर गां. (३	र मृदु मध्यम ह मृदु मध्यम ((गांधारभेद्)	(#)			५ मृदु पं. (मध्यमभेदः)	(д)			(a)		(F)
, चतुःश्रु.गां. अंतर गां.)	६ च्युत मध्यम	6 अच्युत मध्यम			८ त्रिश्रुति पंचम	९ चतुःश्रुति पंचम			१० चतुःश्रीत धवत.		
		þr			ь				অ		(<u> </u>
		Ħ				ם			ष्ट		CIE
6.6	2.6	m	> 5	30	900	2	200	26	3	3.5	١

संगीतसार.

॥ रागोंसं नाम मिले हुवे मुख्य २३ मेल ॥

¥.	मेलके नाम.	मेलक <u>ी</u> कमसंख्या	कितनें वि- रुत स्वर्					स्वर					मेलमें अंतरभृत होनेवाले राग.
			सच			ĺ				}		_	
•	मुसारी	9	गुद्ध	स	रि		ग		प	ध		नि	
3	रवगुप्ति	4	१ वि०		रि	अं.	ग	ì	प	ध		नि	रवगुप्ति इ०
3	सामवराङी	98	,,	स	रि		ग	ਸ ਸ	प	ध	का.	ांने	सामवराली, वसंतव- राडी इ०
8	तोडीं	*2	२ वि॰	स	रि	सः.	ग	म	प	ध	के.	नि	नोडां,हुमनीनोडां इ०
4	नादरामकी	88	,,	स	रि	सा.	ग	म	प	ध	편.	स	नादराम्की इ॰
Ę	भेरव	40	,,	स	रि	अं.	ग	म	प	ध	क	ान	भेरव, पोरविका इ०
৩	वसंत	43	,,	स	रि	अं.	ग	म	प	ध	का.	नि	वमंत, टक्क, हिजेज, हिंदोल ह०
6	वसंतमेर्वा	40	,,	स	रि	मृ.	म	म	q	ध	事.	नि	वसंतभैरवी,मारवी इ०
•	मालवगोड	80	,,	स	रि	म्.	म	1	प	ध	ਸ ਸ	.स	मालवगोड, भ्रद्धगोडी,
		1	l "							1	٦		, चैत्तीगोडी, पूर्वी, प-
										-			, हाडा, देवगांधार, गी-
			{							Ì			डिकिया, क्रंजी, य-
				i	Ì								हुटी, रामकिया, पा-
								1					वक, आसावरी ,पंच-
	1			İ				ĺ					म, बंगाल, गुद्धलाले-
				į				1					ता, गुर्जरी, परज,वि-
													गृद्धगाँड इ०
	1		1						Ì				
	000		į i							ती. तर			
3 0	रातिगोड	< A	,,	स	रि		ग	म	प	ध	कें.	र्नि	र्गातगोड इ०
]								गु. नि.			
				1	नी. तर					1			
99	आभीरनाट	६१	३ वि०	1 ``	रि	सा.	ग	म	प	ध	편.	स	आभीरनाट इ०
				,	ती.तर	1							
1 4	हम्मीर	90	"	स	रि	편.	म		प	ध	푸.	स	हम्मीर, विहंगड, के-
				Ì				नी.तम					दार्इ०
7.5	ग्रुद्धवराटी	9 64	"	स	रि	सा.	ग		प	ध	편.	स	वराटी.
• •	रामकी	200			_	_		ती.तम					
	(देशकार)	400	"	स	रि	편.	म	ਸ	प	ध	¥.	स	ललित, जैताश्री, त्रि-
	(41414)			İ									वणी, देशी, ललित
94	श्रीराग		- A.	_	ती.			_		तीव	~~		(विभासभेद्,)
, ,		3 3	र वि०	स	रि	सा.	ग	म	प	ध	书.	ान	श्रीराग, मालवर्श्वा, ध-
			1										न्याशी, भेरवी, धव-
													लाधनाश्री, मेवाडी,
					an}								सेंधवी (सिधोडा) इ०
9 6	कल्याण	308		स	ती. तर	1				-		_	
7		•	"		रि ती. तर	τı.	*1	मृ. प	ч	्ध	편.	स	कल्याण इ०
90	कांबोदी	240		-	_	3 1	ग			नी. तर	-	۵	
- 1			. 77]	21 1	17	अ.	-11	म	4 /	4	₽1.	न	कांबोद, देवकी इ•

प्रथमस्वराध्याय-रागोंसे नाम मिले हुवे मुख्य २३ मेल. २६९

		(14)	1 11	गामा	मल दु	भ छ	400	1 74	नल ॥	
में मेलके नाम.	मेलकी कममंख्या.	िकतनं वि- रुत स्वर्	•			∓q <i>1</i>				मेलमें अंतरभृत होनेवाले राग.
				नां नग	į			नी. तर		
१ ८ महारि	9 6 2	४ वि•	म	रि	ਸ਼. ਸ	ਸ	प	ध	ਸੂ. ਸ	मह्यारि, नटमह्यारि, पूर्वगोड, भूपाळी, गोंड, शंकराभरण, नटनारायण,नारायण गोंड, कदार, (दु- मरा), साळंकनाट, वेळावळी, मध्यमादि, सावेरी, सोराष्ट्री इ॰
	1	i	i	नी.नम		! :	1	नां.नम		
⁹ ९ सामंत	૨ ૪५	***	स		अं. ग	म	प			सामंत इ०
२० कर्णाटगोड	२५९	77	म		ਸੂ, ਸ	ਸ	प	ती. ध	ें के. नि	कर्णाटगोड, अड्डाण, नागध्वनि, विशुद्ध्यं- गाल, वर्णनाट, तुरु- फ्कतोडी इ०
	i			•	t h	1		र्ना, तर्	•	
२ १ देशास्त्री	. २६४	••	म	,,	"	Ħ	्प	· ध ती.तम	, मृ. म :	देशाक्षी इ०
^{२२} युद्धनाटी	. ३६७	97	स	" ਗੀਰਮ	,, र्ना.नम		्प	ध	"	गुद्धनाट इ०
२३ सारंग	988	५ वि	स	गा.गर रि	1	मृ.प	प		١,,	सारंग इ०

॥ श्रीमहृक्ष्यसंगीतम्-द्विसप्ततिमेलसमर्थनम् ॥ चतुर्देडिप्रकाशिकायाम्

दिसप्तिमेलकानां निर्माता व्यंकटेश्वरः ।
स्वकीयं ग्रंथके बृते स्पष्टं तत्मृष्टिकारणम् ॥
ननु दिसप्तिमेंला भवता परिकल्पिताः ।
पसिद्धाः पुनरेतेषु मेला कितिचिदेव हि ॥
दृश्यन्ते नतु सर्वेऽपि तेन तत्कल्पनं वृथा ।
कल्पनागौरवन्यायादिति चेदिदमुच्यते ॥
अनंताः खलु भेदास्ते देशस्था अपि मानवाः ।
तेषु सांगीतिकरुचावचसंगीतकोविदः ॥
ये कल्पयिष्यमाणाश्च कल्प्यमानाश्च कल्पिताः ॥
अस्मदादिभिरज्ञाता ये च शास्त्रिकगोचराः ॥
ये च देशीयरागास्तदानसामान्यमेलकाः ।
संग्रहीतुं स्मुचीता एते मेलां दिसप्तातः ।
ततस्त्वेतेषु वैय्यर्थ्यशंका किंकारणं भवेतु ॥

संगीतसार.

कर्नाटकी मेलके यंत्र.

***************************************		गुद्भमध्यम-	म्दरम्थान.	प्रतिमध्यम-		
चक.	क्रमसंख्या.	मूलक.		मृलक.	कमसंख्या.	चक्र.
4 40.	4	ਸੋਲ.	रिगघनि	मेल.		
	(9	कनकांगी	શુ. શુ. શુ.	सालग	30)
	। २	रन्नांगी	,, , , गु. के.	जलार्णव	36	
	3	गानमूर्ति	,, ,, यु. का.	झालवरार्ळा	35) ७ व <u>ं</u> .
9 හි. ∢	*	वनर्स्पान	,, ,, च. के.	नवनीत	70	े उ व.
	4	मानवनी	", च. का.	पावनी	79	
4	Ę Ę	नानरूपिणी	,, ,, ष. का.	रघुभिय	2.5	j
	, ,	सेनापनि	ग्र.सा. ग्र. ग्र.	गवांभोधि	83)
	1 6	हनुमत्तोडी	,, ,, गु. के.	भवप्रिय	88	
		धेन्क	,, ,, यु. का.	शुभपंत्वराळी	४५	
२ रें.	1 90	नार्टकोंभय	", च के.	षड्विधमार्गिणी	४६	े दें वें,
	1 22	कोकिलीभय	,, ,, च. का.	सुवर्णांगा	80	
	92	रूपवनी	,, ,, प. का.	दिव्यमाण	γc	j
	93	गायकांत्रेय	યુ. ઝં. યુ. યૂ.	धवलांबरा	85)
	98	बकुळाभरण	", गु. के.	नामनारायणी	40	
•	94	मायामालवगीळ	,, ,, श्.का.	कामवर्धनी	49	' l
à ₹.	98	चक्रवाक	,, ,, च. के.	रामधिय	५२	े ९ वें.
	90	मूर्यकांत	,, ,, च. का.	गमनश्रम	43	'
	15	हाटकांचरी	., ,, ष.का.	विश्वंभरी	48	
	(35	झंकारध्वनि	च. सा. शु. शु.	 श्यामलांगी	44	· 1
	२०	नटभैरवी	", " शु. के.	पण्मुख[भय	५६	11
*.1	29	कीरवाणी	", " यु. का.	सिहेंद्रमध्यमा	40	
જ ઘેં.	२२	बरहर्गाप्रय	,, ,, च. के.	हेमवर्ना	45	} १० व
	23	गौरीमनाहारि	,, ,, च. का.	धर्मवर्ना	45	
	2 *	वरुणिय	,, ,, ष.का.	नीतिमती	۶, ٥	J
	(२५	माररंजनी	च. अं. शु. ्यु.	कांतामणि	૬૧	h
	३६	चारकंशी	,, ,, शु. के.	रिषभिय	६२	
.	20	सरसांगी	" " गु. का.		€ 3	१ १ १ वे
५ वें.	1 20	हरिकांबोधां	" " च. के.	वाचस्पति	48	1119
	२९	धीरशंकराभरण	,, " च. का.	मेचकल्याणी	६५	
	0€	नागानंदिनी	,, ,, घ. का.	चित्रांबरी	६६]
	(39	यागि्रय	ष. अं. गु. गु.	मुचरित्र	६७	1
	32	रागवर्धनी	,, ,, यु. के.	ज्योतिष्मती	66	
~	3 3	गांगेयभूषणी	,, ,, गु. का.	धातुवर्धनी	69	92 8
६ वें.	38	वागधीश्वरी	,, ,, च. के.	नासिकाभृषणी	90	1 346
	34	शूलिनी	,, ,, च. का.		9	
	3 &	चलनाट	,, ,, प. का.	र्रासिकांत्रय	७२	IJ

Poona Gayan Samaj.

AN APPEAL.

The Samaj was established in 1874 with marginally noted

I.—Establishing schools for regular instruction in Music, or aiding the formation of such schools.

II.--Affording opportunities for occasional lectures in Music.

III.—Encouraging the revival of the study of singing and popularizing of old Sauskrit works on Music.

IV.—Adopting measures to reduce Indian Music to writing.

V.—Awarding prizes for special skill in vocal or metrumental Music.

VI.—Holding periodical meetings for musical entertainments in view to the gradual development of a taste for the Art and to afford additional means of special recreation and amusement.

VII, -Holding annual concerts as the Samaj's means and circumstances would permit,

VIII, -- Devising and adopting any other means for the encouragement of Indian Music in general,

objects and its work has been mainly educational. It is giving gratuitous instruction to the music classes attached to three aided institutions in all about 1000 pupils as an accomplishment in addition to their regular studies and the direction in which its work has been carried on has been in editing text books on music, and old standard works like the "Sangitsar." Musical meetings and concerts, Prize giving ceremonies &c., have been periodically held. In this age of institutions a Society like the Samaj can carry on its work without adequate funds. These are badly wanted, to

secure its permanency. There is a crying need for a building to accommodate special music classes, a library and a museum in which the Society can be permanently housed. To equip the institution so as to make it lasting and effective for accomplishing the above objects a sum of Rs. 75000 in all is required. It is earnestly requested that all lovers of music and the generous public will come forward to help the cause in a handsome manner.

The payment of a donation of Rs. 100 or more will entitle the donor to be enrolled as a Life-member.

It is requested that donations may be paid to the undersigned or into the Indian Specie Bank Limited Bombay or its Branch at Poona

The Poona Gayan Samaj, No. 12 Shanwar Peth, Poona, 25th June 1910. B. T. SAHASRABUDDHE,

Honorary Secretary,

Poona Gayan Samaj.

पूना गायनसमाज.

अपील.

समाज सन् १८७४ ई. मे स्थापित हुई। इसके उद्देश मार्जिनमें दिए

- (१) संगीत पाठशालाशाको भिन्नस्थानीमं स्थापित करना, अथवा ऐस पाठशालोक स्थाप-नमं सहायता देना ।
- (२) समय समयप्र संगीतिवषयक व्याख्या-नोंका प्रबन्ध करना।
- (३) संगीतंक अध्ययनमं लोगोंक उत्साहको बढाना और पाचीन संस्कृत संगीत प्रम्थाका प्रचार करना।
 - (४) हिंदी संगीतको लिखनका प्रयत्न करना।
- (५) गाने या बजानेमं जो लोग विशेषरूपसे प्रवीण है, ऊनको पुरस्कार देना ।
- (६) समय समयपर गानेबाजिके जलमें करना जिसमें, लोगोंकी हवि रस और ज्यादा होके लोगोंके विनोद और मनोरंजनकी साधन हो।
- (७) प्रतिवर्ष संगीत उत्सवका मनाना, यदि समाजकी साम्पनिक दशा और अवस्था इसके अनुकूल हो।
- (८) और भारतीय संगीतकं प्रचारार्थ अन्य साधनीका अवलम्बन करना ।

हुए हैं यह तीन पाठशालाओं १००० विद्यार्थिओकों मुफ्तमं संगीतसम्बन्धनी शिक्षा देती है। साथ ही साथ समाज संगीतकी टेक्स्ट बुक्स् (Text Pooks) और पाचीन यन्थोकों प्रकाशित करती रही, ओर समय समय पर जलसं वंगेरह कराती रही है।

आजकल जब चारो तरफ सभा, समाजें काम कर रहीं हैं, इस समाजका विना काफी फन्ड (Fand) के काम करना असंभव्य है। रुपयेकी बडी अवश्यकता है।

समाजको स्थाय (Permanent) बनानेक छिए एक समाज मन्दिर की, जिसमें संगीतके पढानेका विशेष पबन्ध होसके, एक पुस्तकालयकी, ओर एक म्युजियम (Museum) की सख्त जरुरत है । उपयुक्त उद्देशोंको सफल करनेके लिए ७५००० रुपया चाहिए । अतएव निवेदन है कि संगीतरसिक और उदार सर्वसाधारण उदाररूपसें इस कार्य्यमें सहायता करने की रूपा करें।

१०० रुपये देनेवाछे सज्जन जीवनभरके छिए सभासद होगें।

यह पार्थना है कि जो सज्जन लोग सहायतामें दान दें उसे वे यह तो निम्न लिखितके पास या इन्डियन स्पिसी बैंक लिमिटेड बम्बई (Indian Specie Bank Limited Fort Bombay) या इसकी पूनाकी शाखाके पतेसें भेजें।

पूना गायनसमाज, नंबर १२ शनवार पेठ, पूना-२५ जून १९१०. बळवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी, सेकेटरी, गायनसमाज, पूना.

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

◆0◆0◆

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

ΒY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon Secretary Gayan Samaj, Poona.

PART II

WADYADHYAYA.

(Instruments & Instrumental Music.)

(All Rights Reserved Registered under Act AXV of 1867,)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10=8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

पूना गायन समाज.

संगीतसार ७ माग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवक्रत.

पकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी संकेटरी, गायन समाज, पुणें

माग २ रा.

वाद्याध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार इ. स. १८६७ का आक्ट २५ के अनुसार प्रकाशककर्ताने आपने स्वाधीन रखा है.

पूना ' आर्थभूषण ' शेसमें छपा.

संपूर्ण प्रन्थका मूल्य रु. १०॥, और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

द्वितीय वाद्याध्याय-मूचिपत्र.

विषयक्रम.	पृष्ठ.	विषयक्रमः	पृ ष्ठ .
बानोंका वर्णन, भेद और लग्नन	9	आरंभ विधा शुक्त बाद्यको भेद्	आर संडनको
च्यारी बाजेनके नाम	9	नाल विचार	
रुद्रवीणा और उसमें द्वताको स्थान	. ર	मत्तकांकिला, नक्ली, किन्नरी	, अलापिनी
वीणा बजायवे वारंक लक्ष्म	. 8	वाणाके बजायवेके लछन प्रव	
वीणा मीमेका चाहे ताको लछन	. ,	वीणांम राग बजायवेका प्रकार	
बाजा बजायवेको लहन	٠ ٩	चंगाल, भेरव, वराटा,गुजरी, वर	ांत,धन्नासा,
वीणा बजायवेम वीणाधारको लछन 🕠	. 4	देशी, देमाय्य गग बजायवे	
वीणाके भेद्	. ٤	भाषांग राग, भूपाळी, प्रथम मं	नर्गा, कामो-
बह्मवीणीका रहन		द्कं बजायवेका प्रकार	४1
नुबर नाम गंधर्वक बजायवेकी वीणाको	1	क्रियांग राग, रामकार्ल, गाँडकरि	ने देवकृतिको
नाम तंबूर ताको लखन 🐽	. ۶ ا	यजायवेका प्रकार	४२
म्बरमंडल वीणाको लखन	. હ	उपांग राग, भैरवी, छायानट, रा	
स्वरमंडल मत्तको किलाक मतमा लखन	. ૭	गोंड, कर्नाट, तुरुष्क गोंड,	
गवण हम्नवीणाका लखन	. =	उपनायवेको प्रकार	
पिनाकी वीणाका लखन	. =	पिनाकी वीणाको लखन	
किन्नरी वीणाको लखन	. <	निसंक वीणाको लछन	
दंडी वीणाको लखन	. •	अनबद्व, यन और मुप्ति बाजांक	
च्यार्गे बाजेन्का उत्पांच		भेद्	•
	90	मृदंगके। लंछन, पाठाछर, आकार	
	. 39	यव वारको लखन	
	93	मृद्ंगको भेद हुड्का, होल, घडा,	
	314	ब्ह्या, कुड़वा, रुजा, डमरु, कर	
वाद्यायमें कृष्टिवेक वस्तृ हे तिनके नाम		घन बाजक भेद, कांस्य ताल, घं	
	. 90	जयघंटा इत्यादि	
	9 =		
दाहिने हातकी नव व्यापारके नाम और लक्ष	4	स्रीपर वंसीके भेद, नाम, लछन	
•	70	मुषिर वंभीक स्वरनके भेद	
मिले दोऊ हातनके तरह व्यापारके नाम लचन		बमी बजायवे वारके गुण ओर ल बंमीम राग उपजायवेको प्रकार	
नकुलि, चित्रा, विपंची, मत्तकोकिल धीण		मालवश्री, तोडी,चंगाल,भेग्व	
लंडन	२२	धनासरी, देशी, देशाख्य इत्य	
बीणाके करण	. 73		
बीणाके बजायवंको पुष्टि करिवेके चौति		मुरलीको भेद 🔐 🔐 .	305
	२३	शृंग, संस, सुनाग, नागसरको ह	
	२७	प्रिका, स्वर सागर, रणसिंगको	लछन ११२
गीतिवना वीणा बजायवेके दस भेद अ		चारों बाजेनके गुणदोष	33x
	२८	ब्रजायवे वारेके लंखन	994
बीणाकी पात कला विधीको लङन	२९	हातनके दस गुण	»، په ۱۶ مند مند مند مند مند مند مند مند مند مند

द्वितीय वाचाध्याय.

वाजांका वर्णन, भेद और लछन.

अथ बाजनको जा अध्यायमं वर्णन कीजिये ॥ सो वाद्याध्याय है ॥ तामें अनेक बाजेनके भेद हैं ॥ तहां प्रसिद्ध च्यार बाजे हे ॥ तिनके नाम हेकें श्रीशिवजीको नमस्कार करे हैं ॥ वे शिवजी अपनी माया करिकें ॥ या संसारको तत्त्व कहतं विस्तार कियो । अवनद्धः । कहिये, मायासां जगतकां बांध्योहें । ओर शिवजी तो आप आनंद्यन हैं। यातें ब्रह्मस्वरूप ज्या, शिवजी तिनकों। सुषिर कहिये । अपने हिरदेके भितरि ध्यान करूं हूं । अरु नमस्कार करूं हूं । जा शिवजिकी कृपा तें । संस्कृत । १ । प्राकृत । २ । अरु देवभासा । अनेक पकारकी पगट होय है ॥ ओर तीन गण हैं सतोगण । १ । रजोगण । २ । तमोगुण । ३ । तिन करिकें संसारके । उतपत्ति । पालन, संहार, करवेवाले हैं । ऐसो जो शिवजी तिनकी स्तुति करूं हूं ॥ अब शिवजीने जो संगीतसास्र पगट कीयो । सो संगीत श्रीगोविंदजीनें श्रीवृंदावनमें । राधा आदि गोपिनके वसिकरि-वेकों ॥ मुरछीमें गायो यातें परब्रह्म श्रीकृष्णजी भगवानको । नमस्कार करूं हूं ॥ जे श्रीजीनटवन भेसजों ॥ समानद्धः । कहिये भिलेभांत जुक्त हैं घन । कहिय मेच सरिखे स्यामसुंदर हैं। वेद जिनके सरूपकों गावें हैं ॥ ओर तत कहतें संपूर्ण जग-तमें व्याप्त हैं। कहिये सुनिये योग्य जिनको नाम हैं। ओर मुरछीकों बजाव हैं। एसें श्रीकृष्णजीको नमस्कार करे हैं ॥ या मंगलाचरनमें च्यारों मुख्य बाजेनको नाम कसी हैं ॥ जा वस्तुमें हात या डंका या पोंनकें संजोगतें तोड पगट होय सो बाजो कहिये ॥ सो बाजो नादको कारन हें ता बाजेनके च्यार प्रकार हें ॥

अथ च्यारों बाजेनके नाम लिख्यते ॥ पहले बाजेनको नाम तत कहत हैं ओर दूसरे बाजेको नाम । अवनद्ध कहे हैं याको लोकीकमें बितत कहे हैं ॥ तीसरे बाजेको नाम घन कहे हैं ॥ चोथे बाजेको नाम सुषिर कहे हैं । या च्यार मकारके बाजे हैं ॥ तिनमें तत बाजो । १ । सुषिर: । २ । इनतें गीत उपजत है अवनदः बाजे तें गीतमें सुंद्रता उपजतहें ॥ ओर घन बाजे तो गीतको प्रमान जान्यो जात हैं ॥ यातें गीतकें ॥ १ ॥ च्यार । ४ । प्रकारके बाजे कहे हैं ॥

अथ च्यारो वाजनको लखन लिख्यते॥ पथम बाजो। तत। ताको लखन लिख्यते॥ नांत वा लोहके तार जा बाजेमें बांधेजात है उन तारनंमें सात सुर । १। ७। बाईस श्रुति। १।२२। इकविस मूर्छना । १।२१। तांन, अलंकार, जातिसह गीत पगट होतहें॥ ता बाजेको नाम। तत, कहिये। १।

अथ दूसरे बाजेको नाम सुषिर । २ । ताको लखन लिख्यंत ॥ बांस वा पीतलकी भोंगलीमें छेद करि मुखके पोंनसों बजाईये ॥ तामें सात सुर पगट कीजिये ॥ उनसों राग गाईयं ॥ ताको नाम सुषिर बाजो कहिये । २ ।

तीसरा बाजो अवनद्ध ताका लछन लिख्यते ॥ याको लौकि-कमें बितत । कहे हैं । जो बाजो भीतिरिसों पाहोहोई ॥ अर याको मुख चामडेसों मढौ होय ॥ अरु वो चीमके या ताडनसों ध्वनी उतपन्न होय ता बाजेको नाम अवनद्धः । कहिये । ३ ।

अथ चोथो बाजा घन ताको लखन लिख्यत ॥ जो गीतादिकमें॥ पमान जानिवेकों सात धातुको ताल करि दोनोंनकों आपसमें बजाईये॥ वो गीतको पमान बतावे या बाजेको नाम घन कहिये॥

प्रथम तत वाजेको भेद लिख्यंत ॥ तत वाजेको मुख्य वीणा कही हैं सो वह वीणा आठ प्रकारका हैं प्रथम रुद्रवीणा । १ । दूसरी ब्रह्मवीणा । २ । तीसरी तौंबुरीवीणा । ३ । वाथी स्वरमंडलवीणा । ४ । पांचवी पिनाकीवीणा । ५ । छटवी किचरिवीणा । ६ । याको लौकिकों सारंगी कहत हैं ॥ अरु सातवी दंडीवीणा।७। आठवी रावणवीणा हैं ।८। याको लौकिकों रबाब कहतेहैं ॥

इन आठो भेदनमं प्रथम रुद्रवीणा मुख्य हें ॥ यातें वीणाको सरूप कहेहें ॥ ठौकीकरीति शास्त्ररीति करिके जुत तहां । वीणाको दंड बारह मूठीको प्रभानसों कीजिये ॥ सो वा दंडको तीन मूठीबायें तरफसों छोडिकें वामें मेरु

विधान कीजिये ॥ सो मेरु दोय आंगुलको उंचो राखिये ॥ आंरवांही दंडमें मरुके सनमुख मेरुसो एक तिलमात्रा उंचो कही राखिय ॥ लौकिकमें तारोंको आसरो जो कांठ नाको नाम मेरु हैं वे मेरु ओर कही दोन्यो च्यार आंगुल उंचे कीजिय ॥ वा कर्हमें ॥ एक एक जबके प्रमानसों ॥ तारोनको राखवेक आकार करनें ॥ सों कनसों चढतें उतरतें करनें पहले आंकां ॥ सों दूसरो आंका उंचा करनो या भांति। ४। च्यार प्रकार करेने ये आंकां ऐसे होय॥ जो तारके बजायवेमें सुखकारी होय वह जो कहेहें ॥ ताको दंडके मुखपें लगावें ताको लोकीकमें घोडची कहत हैं। फेर वां मेरुसों एक आंगुल नीचो ओर कहीते दोय मूठी उंचो ॥ दोय तुंबा लगावनें ॥ अर दंड ॥ और तुंबा ईनके बीचमें चुनकण लगावनं ॥ अरु महके बांई और उपरकों मोरनी स्थान कीर्जिथ ॥ वा मोरनीके आश्रमसों मेरु ओर कहीके बीचमें च्यार तार कीजिय ।। ऊनतारांभें सानों स्वरकी सिद्धि कीजिय । ऊन तारांभं प्रथम जो तार तामें । षड्ज रिवम गांधार मध्यन ये च्यार स्वर राखिये ॥ और दूसरे तारमें पंचम धेवत निषाद य तीन स्वर राखिये ॥ और बाकीके तीसरे चोथे तार मंद्रध्वनियुक्त कीजिये ॥ तहां तीसरे तारमं पड्ज । १ । रिषम । २ । गांधार । ३ । मध्यम । ४ । ये च्यारी स्वर मंद्रध्वनिसी राखिये ॥ और चीथे तारमें पंचम । ३ । धेवत । २ । निषाद । ३ । ये स्वर मधुरध्वनि जानिये ॥ अरु दंडके दाहिनी तीन तार और लगाईय ॥ स्वरनंक सहाय करिवेकों व तीनों तार श्रुतिनको बतावे हैं ॥ सो वह तीनों तार पहरे तारते ॥ आठवें आठवें अंस तें मेटि हाय ॥ ओर तारनंतं पहुंछ तार आठवं अंस करिके मोटो होय ॥ पहलेसों दूसरों तार ॥ आठवें अंस करि मोटो होय ॥ दूसरेसों तीसरो तार आठवे अंस करि मोटो होय । अरु उन तारोंनेमें संदरध्वनीके लिये ॥ ओरांकी अथवा पक्के बांसकी छालिकी ॥ अथवा रेसमी डोराकी जीवा लगाना ॥ याको लौकिकमं जवारि कहत हैं ॥ सो जीवा बाधडचें धरि वा तारकें बिचि लगाय दीजीये ॥ सा जीवा तारकां ढाला करिकें तारमें मधुर ध्वनि करे हैं ॥ अरु वा दंडमें मामसों सारि जमाये ॥ षडुज आदि सातों स्वरनकी सिद्धि करिवकों ॥ जितनें जितनें । स्थानेमं स्वर सिद्ध होय तहां तहां सारि

राखिये ॥ ऐसां ठछन जामें हाय सो रुद्रवीणा जानिये ॥ सो यह रुद्रवीणा शिवजीकों अति प्यारी हैं । यातें याको रुद्रवीणा नाम हें ॥ सदा सर्वदा सब समेमें सिगरनको सुख करि हें ॥

अथ रुद्रवीणामं जहां जहां एसी द्वताको स्थान हो सो लिख्यते ॥ जो वीणाको दंडनाम तो शिवजीको वासो हें ॥ तांत-नमं श्रीपार्वतीजीको वासो हें ॥ अरु ककुभमं श्रीविष्णु भगवानको वासो हें ॥ अरु पत्रिकामं श्रीखक्षमीको वासो हें ॥ अरु तूंबानमें श्रीख्रसाजीको वासो हें ॥ अरु नामीनमें श्रीग्वावादिनीको वासो हें ॥ अरु मोरानमं श्रीवासुकी नागराजाको वासो हें ॥ अरु जीवामं विपाधीश चंद्रमाको वासो हें ॥ ओर मोरनीमें नवग्रह देवताको वासो हें ॥ अरु मेरूमें सिगरे सिगरे देवतानको स्थान हें । सर्व देवता-मिय विणा हें । यांते वीणा सर्वमंगला कहिये ॥

अथ वीणा वजायंववारेके लखन लिख्यते ॥ भछे सुंदर जाके नेत्र होय ॥ और सरछ होय ॥ और सुद्ध होय बड़ों जुक वारों होय ॥ जाकों आसन बेठियों हढ होय । सो घणी वेर बेठिवेकी शक्ति होय ॥ ओर । राग । १। रागांग । २ । भाषांग । ३ । कियांग । ४ । उपांग । ५ । उनमंदन तिगरे जानि ववारों होय । श्रुति । १ । जाति । २ । स्वर । ३ । यह । ४ । मोक्ष । ५ । इनमें घणों विचक्ष होय ॥ ओर जाकों स्वरूप सुंदर होय । देखतें हैं मनोहर होय ॥ आछे जाके हातें कि नख होय ॥ ओर सावधान होय ताकों खेद नहीं व्यापे ॥ ऐसी होय गायनमें प्रवीन होय ॥ ओर सब रागनके मेलनको जाने ॥ जाकी अंगुली राग बजायवेमें सरल होय । एसी वीणा बजायवेवारो पुरुष चाहिये ॥ इति वीणा बजायवेवारेकों लखन संपूर्णम् ॥

अथ वीणा मी खेकी चाह ताकी लछन लिख्यंत ॥ जा पुरुषमें बजाय-वेवारेके गुन होय ॥ और जाका चित शुद्ध होय ॥ धरम करमें सावधान होय गुरुको देवताको जाने ॥ ऐसी पुरुष होय । ताको वीणा बजायवेमें शिष्य करि-उपदेस दीजिये ॥

अथ खोटे शिष्यके लछन कहत हैं ॥ जो गुरुसें कपट राखे । गुरुके गुण देखि आपके हियेमें दाह उपजे ॥ और सद्गुरुके गुण तो नहीं कहें । अवगुणको बार बार पगट करे ॥ नाकों खोटो शिष्य कहे हैं । ऐसे पुरुषकों वीणा विद्या नहीं सिखाये ॥ सिखाइय तें गुरुको अपजस होय ॥ सदगती नहीं होय । इति विणाक बारेमें बुरे शिष्यकों लखन संपूर्णम ॥

अथ बाजा बजायंवको लखन लिख्यते ॥ दाहिनं हातकी पहली आंगुरी अंगुठाके पासिकीको नाम तर्जनी हैं ॥ तासों जो बीणा बजायंवें
वार कीया होय सो क्षमा जांनिये ॥ या क्षमाहिको नामनि जानिये । १ ।
याहि निविकी कियासों तारको बजायवा सो चात जानिये ॥ दाहिनें हातिकी
बीचिकी आंगुरी मध्यमा तासों जो तारको बजायवे सो मध्यमा जांनिये । २ ।
सो घातको स्थान जहां जहां बीणामें षड्जादिक स्रारनकी सारि है तहां
जांनिये ॥ यह अवनद्ध बीणामें चात विचार हैं ॥ ओर जा बीणामें स्वरनकी सा
रिन होय सो अनिबद्ध बीणा जांनिये । ता अनिबद्ध बीणामें आपकी बुद्धि
सां स्वरनको स्थान समझिके घात स्थान जानिये ॥ यह प्रकारको जा तारमें
राग बीणामें बजाईये, ताको जांनिये ॥ ओर बांको सहाय करिवेकों पासको जो
तार ताकी दाहिनें हातकी चढी अंगुरीसों बजाइये ॥ तालकी गितसों ताल
जांनिये ॥

अथ वीणा वजायवेमं वीणा धारको लखन लिख्यते ॥ जब स्वरनकां आरोह करनें होय, तब ॥ बाँय हात चढी आंगूरी साँ तार दाबिये ॥ ओर स्वरनके अवरोहमें । बांयें हातकी पहली आंगुलिसों तार दाबिये ॥ जो स्वर रागमें चाहिये । ता स्वरनके स्थानको तार दाबिये । सो यह रुद्रवीणामें स्वरमें जेसी गमक चाहिये तैसी गमक राखणा ॥ ऐसें प्रकारसों जो वीणा बजावे तासों श्रीलक्ष्मीनारायणजी पसन होय हैं जो स्वर दाहिने हातसों एकवार तारसों ताडन करिके ॥ ओर वांहीकी ध्वनिमें दुसरो स्वर दिखावनों सो अनुस्वर जांनिये ॥ जहां गीत प्रबंध छंदमें जितनें गृह छघु अक्षर होय ॥ तितनेवार वीणाके तारकों ताडन कि जिये ॥ जहां केवल, गंकार होय तहां अनुस्वर जांनिये । जहां कोऊं रागमें क्ष्मा घात की जिये । कोऊ रागमें मध्यम घात की जिये ॥ यह प्रकार सिगरि वी गा बजायवेमें एक रिती जांनिये यह पंडित कहे हें ॥ इति वीणा बजायवेकों लखन संपूर्णम् ॥

अथ या वीणाके भेद ॥ नकुठी वीणा ॥ या रुद्रवीणामें दोय तार लगाइये तब याको नाम, नकुठी जांनिये ॥ १ ॥ या रुद्रवीणाके तीन तार लागें तब नितंत्रि जांनिये ॥ २ ॥ या रुद्रवीणाके जब च्यार तार लागें तब राजधानी जांनिये ॥ ३ ॥ या रुद्रवीणाके पांच तार लागें तब विपंची वीणा जांनिये ॥ ४ ॥ या रुद्रवीणाके जब छ तार लगाये तब सार्वरी वीणा जांनिये ॥ ४ ॥ या रुद्रवीणाके जब सात तार लागे तब परिवादिनी जांनिये ॥ ६ ॥ इन छ वीणाके बजाय-विका पकार पहले कहाँ। हं सो जांनिये ॥ इति रुद्रवीणाके लछन भेद संपूर्णेम् ॥

अथ ब्रह्मवीणाको लळन लिख्यते ॥ यही हर्द्वीणाको जो काटहीके, तोंवानसों, रिचये ॥ तब याको ब्रह्मवीणा कहत हैं ॥ सा ब्रह्मवीणांके नीचले भाग कछुइक हर्द्वीणांते चोंडो कीजीये ॥ ओर दीर्घपणो हर्द्वीणा जितना जानिये ॥ और स्वरनकी सारि हर्द्वीणाकीसी जांनिये ॥ या ब्रह्मवीणामें सात तार लगाने ॥ तहां दोय तार पहले लेहिके होय । व पड्ज स्वरके स्थाने राखिये ॥ ओर इन दोऊ तारनेते ॥ आठवें वाटासों पृष्ट तीसरा पांचवें तार लेहिकी कीजिये ॥ ओर चोथो छटवें तार सात धानुको कीजिये ॥ सो तीसरे पांचवें तारसों आठ वांटासों मोटो होय ॥ ओर एक सातवों तार स्वरके सहारेकों राखिये ॥ वा नहीं राखियं याको नेम नहीं ॥ याहुकों हद्द्वीणाकी नाई बजाईये ॥ ओर स्वरनमें बहुत गमक लिजिये इति ब्रह्म-वीणाको लखन संपूर्णम् ॥

अथ तुंगर नाम गंधर्वके बजायंवकी वीणाको नाम तंबूर ताको लखन लिख्यते ॥ याको लौकिकमें तंबूरा कहत हैं ॥ यह तंबुरा काठका कीजिये ॥ एक ओर आधो तोंबा लगायवाको काठकी पतरी पटुलासों मटिये ॥ वांहां तार लोहकी लगाइयं तीन वा च्यार, तहां एक तार स्वरके सहारेको राखिये बाकीके तार एक स्वरमें मीलाईके ॥ याकी धुनिमें मिलिकें गान कीजिये । यह तंबूरा दोय प्रकारका हैं । एक निबद्ध ॥ १ ॥ दुसरा अनिबद्ध ॥ २ ॥ तहां जा तंबूरामें राग वरतीवेकों स्वरके स्थानमें तार बांधिये ॥ ओर ऊन तारको

बंधनसों राग वरितये ॥ सां निबद्ध तंबूरा जांनिये । याको छोकिकमें सितार कहे हैं ॥ ओर जहां तांतिके बंधन नहीं कीजिये ॥ सां अनिबद्ध जांनिये ॥ याकी धुनिमें मिलिकरि राग गाईयं ॥ या तंबूरवीणाका दीर्घपणां ॥ रुद्रवीणाकों सोर्घपणां ॥ रुद्रवीणाकों सोर्घपणां ॥ रुद्रवीणाकों सोर्घपणां ॥ रुद्रवीणाकों सोर्घपणां ॥ रुद्रवीणाकों सोर्घपणां ॥ तहां निबद्ध तंबूरामें । स्वरनके स्थानसों डांडीमें तात राखि बांधिये ओर दोय मूठी डांडीकी ओरकी ॥ तोंबा ऊपरकी पटुछी छोडिके ॥ तारके आसरेसों बिचमें घोडच राखिये ॥ ओर जैसो तार सुखसों बजायवेमें आवे तैसे घोडच राखिये ॥ ऐसे तो निबद्ध तंबूरा जांनिये ॥ आर जहां सात, वा पांच, वा च्यार तार होय डांडीमें स्वरके स्थानकमें ॥ तांतिकें बंधन नहीं होय ॥ ओर सब रीति निबद्ध तंबूरा जांनिये ॥ गायवेमें स्वरकी सहाय करें ॥ सो अनिबद्ध तंबूरा जांनिये ॥

अथ स्वर मंडल वीणाको लछन लिख्यंत ॥ या वीणामं स्वर मंडल रचिंय हैं ॥ स्वर मंडल कहतं स्वरकी संप्रककी लीजिये ॥ सो या वीणामें एक एक आंगुली लेकं अंतरसों पड्जादिक स्वरनकी तोलसों तारां राखिये ॥ मंद्र स्थानके पड्जमं लेकें ॥ मध्यम स्थानके पड्ज तांड ॥ आठ तार होय । ते स्वर जमायवेके लिये । कमसों चाटि वाधि कीजिये ॥ ऐसें जैसें आरोह कमसों । ऊन तारनमं पड्जादिक स्वर विनादाने पगट नहीं होय ॥ ओर यह स्वर मंडलवीणाको ॥ छोटे बंडे तार राखिवेके लिये ॥ पांचकोण कीजिये ॥ ऐसें हि मध्य स्थानके पड्जादिक सात स्वरनके ॥ ओर तार स्थानके पड्जादिक सात स्वरनके ॥ ओर तार स्थानके पड्जादिक सात स्वरनके ॥ ओर तार स्थानके पड्जादिक सात स्वरनके ॥ ओर तार हे ते धुनिकी विचित्रताके लिये कछु कमसों पतरे मोटे कीजिये इहां मंद्र स्थानके निचलेनिचले तार मोटे कीजिये ॥ उपरलेउपरले तार ऊंचे स्वरके फ्रारे कीजिये ॥ या स्वर मंडल वीणाके बजायवेमें ॥ एक हातमें काठको बजायवेको स्वरसाधन लेके तारनको ताडन कीजिये ॥ तब यासों चाहले राग गाईये ॥ या वीणामें आरोह वा अवरोहमें बाय हातमें काठको जंत्र लेके तारकों छुवायके ॥ दाहिनें हातकी मध्यम अंगूलसों तारनको ताडन कीजिये तब स्वरनमें गमक ऊपजे हैं।

अथ स्वरमंडल मत्तकोकिलाके मतसों लखन लिख्यते ॥ जहां स्वरमंडलके सात तार ॥ सूधे वीणाकीसह, स्वरमंडलमें लगाईये ॥ तब

यांको, मत्तकोकिलावीणा जांनिये ॥ सो या, मत्त कोकिलावीणामें तार अष्ट धातुके लगाईये । ऊन तारनके बांइ ओरको जीवारी राखिये ॥ ओर घोडचके बा-हिरि, औंडव तारनमें । गमकको स्थान जांनिये ॥ ओर स्वरके कंपकी किया दाहिनें हातकी आंगूरीसों तारनमें कीजिये ॥ इति स्वरमंडल मत्तकोकिलाको लखन संपूर्णम् ॥

रावण हस्तवीणा जो वीणा, साग, अरु काठकी बनाईये॥ ताकी सागकी तो डांडी होय॥ अरु काठको पेट होय॥ तूंबाकी जग्मे सौ ठंबो होय। सागके उपर काठको मेरुस्थान कीजिये॥ ता मेरुमें तारांके छिये खुंटी रा- खिये॥ वे तार तांतिक कीजिये॥ उन तारनको अग्रभाग काठके तूंबाके किटमें बांधिये॥ ऐसें तीन तार वा च्यार तार छगाइये॥ ओर घोडाके पूछके बाछकी कमानसों पिनाकी वीणाकी सिनाइ। घरषण किर बजाइये॥ इति रावणहस्त- वीणाको छछन संपूर्णम्॥ याको ठौकीकमें सारंगी कहत हैं॥ ऐसेंहि ओर तत बाजेके भेदसें जांनिये॥ यह तत बाजेको छछन संगीत पारिजातमें कहें हैं॥

अथ पिनाकीको लखन लिख्यते ॥ यह वीणा जो ॥ आगं वीणा कही ॥ ताके आध प्रमानसों दीर्घ कीजिये ॥ या पिनाकी वीणामं तीन वा च्यार तार कीजिये तिनमें ॥ मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ स्थानकी रचना जैसें चाहिये तेसें कीजिये ॥ ओर घोडा़के पूछके बालकी कमानसों ॥ ऊन तारनसों मंद मंद घर्षण कीजिये ॥ तब वामें धुनि होत है ॥ तारके पकड़िवें लिये ॥ कमानके घोडांके बालनमें मोम लगाइये ॥ नारेलके काठकी ॥ अथवा कांसिको पिनाकी वीणामें पेट कीजिये ॥ ओर पड्जादिक स्वरके रचायवेमें ॥ बांये हातकी आंगुरीसों तार दाविये ॥ घोडांके बालकी कमानसों गीतके अछर प्रमान लघु गुरु जेसे जीनें पढ़ें तैसें जाईये ॥ इति पिनाकीको लखन संपूर्णम् ॥

अथ किन्नरी वीणाको लखन वा भेद लिख्यते ॥ जो रुद्रवीणा-की सितर होय ॥ तीन तूंबा तामें लगे होय । सो किन्नरी वीणा जांनिये ॥ तहां किन्नरी वीणामें दोय तार एक स्वरकें राखिये ॥ ऊन दोऊ तारनको मेरु सूधो ऊंचो बारह आंगुलको कीजिये ॥ सो वा मेरुमें सात आंगुलको तार एक मो- रडीके सहारेसो न्यारो ओर बांधिये ॥ ओर पहले दोनु तारनको कहीमें सूधो एक गेहूं प्रमान अंतर राखिये ॥ ओर हूं दोय वा तीन तार स्वरके सहारेकों न्यारे लगाईये ॥ रागके बजायवेमें दोनु तार एक संगी बजाईये ॥ और स्वरनके विकाने वारे बायें हाथसों उन दोनुं तारनकों सारिकें उपर दाबिये ॥ तब स्वरनको प्रकास होय ॥ इति किन्नरीबीणाका लखन संपूर्णम् ॥

अथ दंडीवीणाको लछन लिख्यंत ॥ जहां वीणांके प्रमाण दंड कर-वे दंडके वांइतरफ तूंवा एक लगाइये ओर तारके सहारेकों मेरु नहीं की-जिये ॥ तूंवामें जो दंडकां अग्रमूल गयो हं ॥ ताहीमें तार बांधिये ॥ सो वे तार तीन कीजिये ॥ दंडके जियनीतरफ तूंवाके सनमुख कहींमें तारनकों बांधिये सो दंडीवीणा जांनिये ॥ तहां दंडीवीणा दोय प्रकारकी हें ॥ एकतो अनिबद्ध । १ । दूसरी निबद्ध । २ । तहां आनिबद्ध तो स्वरके सहारेकी जांनिये ॥ ओर जां स्वरनके सहारे स्थानसों डांडीमें ॥ तांतिके बंधन राखिके सारि राखिये ॥ तहां काठके दकसों बजाइये तब षड्ज आदि जुदे जुदे स्वर पगट होय ॥ जब स्वर वरितवेकों तारको ताडन कीजिये ॥ तब गमकके लिये ॥ छातिको तूंबासों आघात कीजिये ॥ जेसें पाटस्वरसें ॥ अनुरंजन होय ॥ ऐसें कीजिये ॥ इति दंडवीणाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ सर्व सिंगारशास्त्रमं अनुसारसें। राजरिषिसारंगदेव। अनुष्टुप चक्रवर-तीके मतसें। तत। १। बितत। २। सुषिर । ३। घन। ४। सो इन च्यारों बाजेनके च्यार प्रकारहें तिनके छछन छिल्यते॥ शुष्क । १। गीतानुग । २। नृत्यानुग। ३। गीतनृत्य। ४। इयानुग। ५। अब शुष्कको छछन कहेंहें जो ये च्यारों बाजे॥ विना गीत विना नृत्य कानके अनुरंजनांको ताछकी गांनमं बजाइये। सो शुष्क जांनिये॥ याको नाम गोष्टा है। १। ये च्यारा बाजे गीतके संग बजे जहां गीत नहीं होय। सो नृत्यानुग जांनिये॥ जहां च्यारों बाजे गांन नृत्यके संग बजे सो गीत नृत्य द्वयानुग जांनिये॥

अथ च्यारो बाजेनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ जा समयमं दक्षपजा-पतिनें यज्ञ रच्यो तहां श्रीशिवजीकी पिया जो सती तानें अपनें पिताके मुखसों श्रीशिवजीकी निंदा सानिके सतीनं पिताके ऊपर दह त्याग कीयो । तब श्रीशिव- जीनें प्यारिसतीके वियोगतें । कोपसों दक्षके यज्ञ विध्वंस कियो ॥ तोभी शिव-जीके मनको संताप गयो नहीं तब शिवजीने मनकी प्रसन्तताके लिये ॥ चार पकारके बाजे उपजाये ॥ नंदिकेश्वर । १ । स्वातिगण । २ । तुंबूरगंधर्व । ३ । नारदम्नि । ४ । इन च्यारोंसो च्यारो बाजे बजवाये ॥ आप शिवजी गांन कियो तब श्रीशिवजी परमानंद पाये । तब यह अज्ञा करी ॥ जो इन च्यारों बाजनको गीतनृत्य संग मंगठीक कारिजमें ॥ जो कोई पुरुष रचे रचाय ताके सकल मंगल कारिज सिद्धि होयगे ॥ यह वरदान दीयोहें यातें राजाके राज-तिलकमें । १ । दिग्विजयकी यात्रामें । २ । सालगिरह आदिसिगरे उछवमें ओर सब मंगलीक कारीजमें । जनेऊ विवाह आदिक उछाहमें ॥ जी कोइ भुकंप आदि उत्पातकी शांति करिवमें । वा संभ्रम आनंदमें जुद्दमें सरविकि हर्षवधायवेको । नाटकमें वीररस रीद रसमें। ये च्यारों बाजे बजाइये ॥ ोटे मोटे मंगल का-रिजमें। जो बाजे मिले सो बजाइये ॥ इन बाजे बजायवेकों प्रयोजन कहे हैं ॥ जो नाटकमें नृत्य करिवेवारे । गायवेवारे पुरुष बाजेके संग मिलिकें नृत्य गांन करे तब ऊंनको वेदना नहीं होय । चित उछाह पावे सकल दुख दूरि होय ॥ ओर बाजेके संग जो गीत नृत्य होय तहां ॥ गीत नृत्यकी कसरी जानी नही पडे घणों सुख उपजावे ॥ इति च्यारों दाजेनकी उत्पत्ति लछन संपूर्णम् ॥

अथ च्यारां बाजेनके भेद लिख्यते ॥ तहां प्रथम तत बाजेके भेद लिख्यते ॥ तत बाजेके मुख्य बीणा कही हैं ॥ सो वह बीणा दाय प्रकारकी हैं सो जांनिये ॥ एक श्रुति बीणा । १ । दूती स्वर बीणा । २ । सी श्रुति बी-णाको टळन स्वराध्यायमें कहों हैं ॥

अथ सर्वमत अनुसारसों सारंगदेव राजिष्टः । अनुष्टुप् चक्रवर्ती आदिक ब्रह्मरिषिनके मतसों तत वाजेके भेद लिख्यते ॥ तहां मुख्य रुद्धवीणाहे ॥ एकतंत्री । १ । नकुळी । २ । त्रितंत्री । ३ । चित्रावीणा । ४ । विषंची । ५ । मत्तको ... किछ । ६ । आछापिनी । ७ । किन्नरी । ८ । पिनाकी । ९ । निशङ्कवीणा । १० । यह भेद दस जांनिये ॥

तहां तत वाजेमें मुख्य हड़वीणा हे सो संगीत पारिजातके मतसों पहले कही हैं अबतो हड़वीणाके दोय भेद हैं तिनके स्वरूप लखन लिख्यते॥

तहां पथम भेद सुद्ध मेलके वीणा दूसरो भेद । मध्य मेल वीणा । २। इन दोऊनको लखन लिख्यते ॥ जा वीणाके ऊपरके तारनमें मंद्र । १ । मध्य । २ । तार ।३। इन तीनों स्थानको षड्ज समान पहलें राखिये । सो सुद्ध मेहा नामकी एदबीणा जांनिये ॥ जहां पंचन वा मध्यम इन दोऊमें । एक स्वर मुख्य होय ॥ सो मध्यमेळा नाम रुद्रवीणा जांनिये । २ । तहां सुद्ध मे-लाके दोय भेद हैं ॥ अखिल राग मेला । ३ । राग मेला । २ । यही दोनों भेद ॥ मध्य मेला वीणाके जांनिये । तहां मध्य मेलाको प्रथम भेद् ॥ अखिल राग मेला मध्य भेला । १ । राग भेला मध्य गेला । २ । अब इनके लखन कहे हैं ॥ जा वीणामं मंद्र मध्य तार ॥ इन तीना स्थानककी सप्तक तीन होयः ॥ सो सद भेला अखिल भेला जांनिये ॥ यह त्रसाजी कहे हैं ॥ जा बीणामें मध्य स्थान ॥ तार स्थानंग स्वरनको मेरा एक एक रागको न्यारो होय। सो सुद्ध मेला वीणा एक राग मेहा जांनिये॥ आछे कारीगरसों वीणा सुंदर बनाईये ॥ वाके उपर च्यार तार लगाइये। दाहिनी तरफ ओर तीन तार न्यारे छगाइये । तहां ऊपरछे च्यारां तारनमें पहछे तारनमें अनुमंद पड्ज राखिये । दूसरे नारमं अनुभंद पंचम राखिये । तीसरे तारमं मंद षड्ज राखिये ॥ चोथे तारमं मंद्र मध्य राखिये ॥ दाहिनी तर क्रके तीन तारमें ॥ पहले तारमं मध्य यामको पड्ज राखिये ॥ दुसेर नारमें मंद्र । १ । पंचन । २ । राखिये । तीसरे नारमें मंद्र । १ । पहन । २ । राबिये । इन तीनों तारनको नाम श्रुतिस्थान जांनिये ॥

अय सारि, धरेबको प्रकार लिख्यते ॥ अनुभंद षड्जके तारमें । जहां रिषम सुद्ध, तहां पहली सारि राखिये ॥ वाही तारमें जहां गांधार सुक्ष होय तहां दूसरी सारि राखिये । २ । वही तारमें साधारण गांधारके स्थानकमें तीसरी सारि राखिये । ३ । लबु मध्यमके स्थानके वही तारमें चोथी सारि राखिये । ४ । वही तारमें सुद्ध मध्यमके स्थानमें पांचमी सारि राखिये । ५ । वही तारमें लबु पंचमके स्थानके वही छटवी सारि राखिये । ६ । यह पहले तारके स्वरनको विचार जांनिये ॥

अब इन छह सारिनसां दुनरे तारमें छह स्वर होत हैं॥ दुतरे तारमें

पहली सारिपें सुद्ध धैवत । १ । दुसरे तारमें दूसरी सारिपें सुद्ध निषाद । २ । दूसरे तारमें तीसरी सारिपें केशिक निषाद । ३ । दूसरे तारमें चोथी सारिपें लघु पड्ज । ४ । दूसरे तारपें पांचमी सारिपं सुद्ध पड्ज । ५ । दूसरे तारपें छटवी सारिपें सुद्ध रिषम । ६ । ऐसं अनुमंद्र पंचम जुत ॥ दूजे तारपें छटवी सारिसें ये स्वर जांनिये ॥ यहां मंद्र । १ । षड्ज । २ । जुत तीसरे तारमें छह सारिसों छह स्वर कहे हें ॥ तीजे तारमें पहली सारिमें । सुद्ध रिषम । १ । तीजे तारमें दूजी सारिमें सुद्ध गांधार तीजे तारमें तीसरी सा-रिमें साधारण गांधार । तीजे तारमें चोथी सारिमें लघु पंचम । ऐसे जांनिये ॥ सारिमें सुद्ध पंचम । ऐसे जांनिये ॥

अब मंद्र मध्यम जुत चीथे तारमें छह सारिनिसों छह स्वर कहे हें ॥ चीथे तारमें पहली सारिमें छघु पंचम । १ । चीथे तारमें दूजी सारिमें सुद्ध पंचम । २ । चीथे तारमें दूजी सारिमें सुद्ध पंचम । २ । चीथें तारमें तीसरी सारिमें सुद्ध धैवत । ३ । चीथे तारमें चीथी सारिमें सुद्ध निवाद । ४ । चीथे तारमें पांचवी सारिमें केशिक निवाद ॥ चीथे तारमें छटवी सारिमें लघु षड्ज ॥ ऐसें च्यारों तारको विचार जांनिये ॥ ये छह सारिसों च्यार तारमें जे स्वर कहें ते श्रीशिवजीनं कहे हैं । सो वीणामें ऐसें स्वरकों रचिये । कोऊ ओर तरे करे तो प्रमान नहीं है । यह श्रीशिवजीकी आज्ञा है । इहां मंद्र । १ । अनुमंद्र । २ । मध्य । ३ । तार । ४ । स्वरन कहे हें ॥ सो एक एक श्रुतिके घंट वधे तें जांनिये वामें दोस नहीं हैं । यासों ये सारि मध्यमसां तारमें ॥ तारसों आतितारमें ॥ जैसें जहां चाहिये तैसें तहां सारि राखिये ॥ इहां च्यारों तारमें ॥ षड्ज । १ । पंचम । २ । षड्ज । ३ । मध्यम । ४ । ये संवादी स्वर राखिये ॥ ऐसें सा-रिनमें परस्पर संवादि जांनिये ॥

अव मध्यम स्थानकी सारिनमें चोथे तारपें जो स्वर सोहि स्वर जांनिये ॥ इहा अंतर गांधार । १ । काकठी निवाद । २ । इन दोनु स्वरनकी सारि नहीं कही ॥ यातें छचु षड्जमें ॥ एक श्रुति घाटि बजायके काकठी निवाद कीजिये ॥ अरु छचु मध्यम एक श्रुति घाटि बजाइकें अंतर गांधार कीजिये ॥ इनकी न्यारि सारि कीये तें सारि संकीर्ण होय ॥ जासों बजायवो वनें नहीं ॥ यासों न्यारी नहीं करी ॥ यासों छषु षड्ज ॥ १ ॥ छषु पंचम ॥ २ ॥ इन दोनुनकी सारि एक श्रुति निचि सर-कायकें बजावें तब काकछी निषाद ॥ १ ॥ अंतर गांधार ॥ २ ॥ ये दोनु होत हैं ॥ जेसें ओर स्वरनमें चढी उतरी धुनिसों चढे उतरे स्वरको भेद जांनिये ॥ तहां रिषम । १ । धेवत । २ । च्यार श्रुतिके होय ॥ अरु मध्यम पांच श्रुतिको होय तहां । ऐसें सारिनिकों उंची निचि सरकायकें बजाइये ॥ ऐसें सुद्ध मेछ वीणा जांनिये ॥

अब या सुद्ध मेल विशाक च्यार भेद हैं ॥ तिनमें पहलो भेद करों ॥ अब मुद्ध मेल विशाकों ॥ दूसरों भेद कहनहै ॥ जा सुद्ध मेल विशाकों ॥ उपरले च्यार तारनमें पहलों तार ॥ अनुमंद्र षड़ज जुत कीजिये ॥ १ ॥ दूसरों तार अनुमंद्र मध्यम जुत कीजिये ॥ २ ॥ तीजों तार अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ ३ ॥ वोयों तार अनुमंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ ४ ॥ पहले तारके छटवों सारिनमें कममों सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध गांवार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ मुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ १ ॥ दूजे तारनके छटवों सारिनमें कमसों। सुद्ध रिषम ॥१॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ चोथे तारके छटवों सारिनमें कमसों। सुद्ध धेवत ।१। सुद्ध निषाद ।२। कैशिक निषाद ।३। लघु पड्ज ।४। सुद्ध पड्ज ।५। सुद्ध मध्यम । ६ । ये स्वर जांनिये ॥ यामेदमें पड्जजुत तारनके स्वरनमें तीन श्रुतिकों पंचम ॥ ओर च्यार श्रुतिकों मध्यम जांनिये ॥ सो ये स्वर परस्पर मिले नहीं। जाको जे स्वर समानश्रुतिकों होय ॥ सो संवादि स्वर मिले यांते दोनु स्वर पड्जों नहि लीजिये ॥

अब सुद्ध मेल विणाको तिसरो भेद कहे हैं ॥ सुद्ध मेल विणाके उपरके च्यारों तारनमें । पहलो तार अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ १ ॥ दूजो तार अनुमंद्र मध्यम जुत कीजिये ॥ १ ॥ तीजो तार अनुमंद्र षड्ज जुत कीजिये ॥ १ ॥ चोथो तार दूजो तारनकी नांइ ॥ अनुमंद्र मध्यम जुत कीजिये ॥ १ ॥ जहां पहले तारके छटवो सारिमें कमसों सुद्ध रि-

षभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । टघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । टघु पंचम । ६ । ये स्वर जांनिये ॥ दूजो तारके छटवो सारिनमें कमसों। टघु पंचम । १ । सुद्ध पंचम । २ । सुद्ध धेवत । ३ । सुद्ध पंचम । १ । सुद्ध पंचम । २ । सुद्ध धेवत । ३ । सुद्ध विषय । १ । सुद्ध पह्जा । ६ । ये स्वर जांनिये । १ । तीजे तारनके छटवो सारिनमें कमसों । सुद्ध रिषम । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । टघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । टघु पंचम । ६ । ये स्वर जांनिये । ३ । चोथो तारनके छटवो सारिनमें कमसों ॥ टघु पंचम । १ । सुद्ध मध्यम । २ । सुद्ध धेवत । ३ । सुद्ध निषाद । ४ । केशिक निषाद । ५ । सुद्ध पड्या । ६ । ये स्वर जांनिये । १ । या भेदमें च्यार श्रुतिको मध्यम ॥ तीन श्रुतिको पंचम जांनिये ॥ ये दोनु स्वर अनुमंद्र पड्ज जुत तारके स्वरनमें नहीं कहे हैं । सो घाटि बांधि श्रुतितें संवादी नहीं हैं ॥ यातें ये दोनु स्वर आपसोंमं मिले नही ॥ यातें मध्यम पंचम षड्जके तारमें नहीं टिजीये ॥

अव सुद्ध मेल वीणांक चोथों भेद कहे हें ॥ जा सुद्ध मेल वीणांक जिपरके च्यारें। तारेंमें पहलों तार अनुमंद्र षड़ज जुन कीजिये ॥ दुजों तार मंद्र पंचम जुन कीजिये ॥ तीजों तार अनुमंद्र षड़ज जुन कीजिये ॥ चोथों तार मंद्र पंचम जुन कीजिये ॥ जहां पहले तारके छटवों सारिनमें कमसों । सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध मध्यम ॥ ५ ॥ लघु पंचम ॥ ६ ॥ ये जांनिये ॥ दूजे तारके छटवों सारिनमें कमसों ॥ सुद्ध धैवत ॥ १ ॥ सुद्ध निषाद ॥ २ ॥ केशिक निषाद ॥ ३ ॥ लघु षड्ज ॥ ४ ॥ सुद्ध पड्ज ॥ ५ ॥ सुद्ध रिषम ॥ ६ ॥ ये जांनिये । या दुजे तारके स्वरनमें सुद्ध षड्ज ॥ ५ ॥ सुद्ध रिषम ॥ ६ ॥ ये जांनिये । या दुजे तारके स्वरनमें सुद्ध षड्ज ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध गांधार ॥ २ ॥ साधारण गांधार ॥ ३ ॥ लघु मध्यम ॥ ४ ॥ सुद्ध पंचम ॥ ६ ॥ ये जांनिये ॥ १ ॥ चोथो तारके छटवों सारिनमें कमसों ॥ सुद्ध धैवत ॥ १ ॥ सुद्ध निष्म ॥ १ ॥ सुद्ध धैवत ॥ १ ॥ सुद्ध निष्म ॥ १ ॥ सुद्ध पड्ज ॥ ४ ॥ सुद्ध पड्ज ॥ ४ ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ या मेदमें मंद्र पंचम जुन तिनके स्वरनमें सुद्ध रिषम ॥ ६ ॥ ये स्वर जांनिये ॥ या मेदमें मंद्र पंचम जुन तिनके स्वरनमें

सुद्ध पड्ज ॥ १ ॥ सुद्ध रिषम ॥ २ ॥ ये दोऊ स्वर प्रयोगमें नही लीजिये ॥ ४ ॥ इति सुद्ध मेल वीणाके च्यार भेद संपूर्णम् ॥

अथ मध्य मेल वीणाको लखन लिख्यते ॥ या मध्य मेल वीणामें ॥ सुद्ध मेल वीणाकी सिनाई । उपर च्यार तार कीजिये ॥ जिन च्यारों तारनमें पहलो तार अनुभंद पंचम जुत कीजिये॥ दुजो तार मंद्र पड्ज जुत कीजिये ॥ तीसरी तार अनुमंद्र पंचम जुत कीजिये ॥ चौथो तार मध्यम षड्ज जुत कीजिये ॥ ओर दिहनी औरके तीन तारनमें ॥ पहले तारमें मध्यम यामको षड्ज राखिये ॥ दूसरेमें मंद्र पंचम राखिये ॥ तीसरे तारेंग मंद्र षड्ज राखिये । ये तीनो तार श्रुतिके स्थानमें जांनिये।। या मध्य मेल वीणामें ॥ ऊपरछे पहले ॥ दूसरे । तीसरे । तारनमें बरोबर श्रुतिके षड्ज स्वर । ओर रिषभ स्वर । ओर हूं स्वर होय ॥ तब अनुमंद्र मध्यम पंचम जुत तारके ॥ सुद्ध षड्ज ॥ १ ॥ सुद्ध रिषभ ॥ २ ॥ पयोगमें नही छीजिये ॥ यह मध्य मेल बीणामें ॥ ऐसें तारके स्वर जांनिये इहां पंचम जुतकी पहले तारकी । छटवो सारिनमें कमसों । सुद्ध धैवत । १ । सुद्ध निषाद । २ । कैशिक निषाद । ३ । लघु पड्ज । ४ । सुद्ध पड्ज । ५ । सुद्ध रिषभ । ६ । ये जांनिये । १ । इहां पंचम जुत तारके छटवो सारिनमें । सुद्ध षड्ज । सुद्ध निषाद नही छी-जिये ॥ षड्ज जुत दूजे तारके छटवो सारिनमें कमसों सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । उचु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । लघु पंचम । ६ । ये जांनिये । १ । मुदपंचम जुत तीजे तारके छटवो सारि-नमें कमसों ॥ सुद्ध धैवत । १ । सुद्ध निषाद । २ । कैशिक निषाद । ३ । छघु षड्ज । ४ । सुद्ध षड्ज । ५ । सुद्ध रिषभ । ६ । या तीसरे तारकेहूं सुद्ध षड्ज । १ । सुद्ध रिषभ । २ । नहीं लीजिये । मंद्र षड्ज जुत चोथे तारके छटवो सारिनमें कमसों ॥ सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । छघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । छघु पंचम । ६ । ये जां-निये ॥ ऐसें प्रथम मध्य मेल बीणाके च्यारों तारनमें स्वर जांनिये ॥ यह पहिलो भेद हे सो कहे हैं ॥

या मध्य मेल बीणाको दूसरो भेद कहे हैं॥ जा मध्य मेल

वीणामें च्यारों तारनमें पहलो तार मंद्रमध्य जुत कीजिये। १। दूसरो तार मंद्र षड्ज जुत कीजिये । २ । तीसरो तार मंद्रमध्य जुत कीजिये । ३ । चोथो तार मंद्र षड्ज जुत कीजिये । ४ । इहां मध्यम जुत तारके स्वरनमें मध्यम चार श्रुतिकों जांनिये ॥ ओर पंचम तीन श्रुतिकों । मध्यम पंचम दोऊ । पड्ज जुत तारनमें नही छीजिये ॥ ओर यासके तीनो तारके । स्वरनकी बराबर श्रुति जांनिये ॥ तहां पहले तारकी छटवो सारिनमें कमसों लघु पंचम । १ । सुद्ध पंचम । २ । सुद्ध धेवत । ३ । सुद्ध निषाद । ४ । केशिक निषाद । ५ । सुद्ध षड्ज ये जांनिये ॥ दूजे तारके छटवो सारिनमें कमसों । सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । छघु पंचम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । लघु मध्यम । ६ । ये जांनिये । १ । यां दूजे तारके सारीनके स्वरमें सुद्ध मध्यम । १ । लघु पंचम नहीं लीजिये ॥ तीजे तारके छटवो सारिनमें क्रमसों ॥ लघु पंचम । १ । सुद्ध पंचम । २ । सुद्ध धैवत । ३ । सुद्ध निषाद । ४ । केशिक निषाद । ५ । मुद्ध षड्ज । ६ । ये जांनिये । १ । चोथे तारके छटवो सारि-नमें कमसों सुद्ध रिषभ । १ । सुद्ध गांधार । २ । साधारण गांधार । ३ । उघु मध्यम । ४ । सुद्ध मध्यम । ५ । छघु पंचम । ६ । य जांनिये । या चोथे तारके सारिनके स्वरनमें । सुद्ध मध्यम । १ । छघु पंचम । २ । ये दो़ऊ दूर नहीं कीजिये। यातें इहां छटवो स्वर छीजिये ॥ यह दूसरो भेद जांनिये ॥ इहां मंद मध्य तार नाद्की उतपत्ति वीणामें सरीर वीणामेसों विपरित जांनिये॥ इति रुद्रवीणाके भेद सुद्धमेल वीणा । १ । मध्यमेल वीणा । २ । तिनके भेद लछन संपूर्णम् ॥

अथ वाद्याध्यायमं जे जे कहिवेके बस्तुहे तिनके अनुक्रमसों नाम लिख्यते ॥ जहां तत बाजेके बजायवेकी रिति । १ । अनेक प्रकारके करसा-रण। २ । सुषिर वाद्य । ३ । सुषिर वाद्यको पाट । ४ । पाटछर । ५ । पाटछरकी रचना । ६ । पाटाछरके अनुस्वार । ७ । बाजेके संबंधि ॥ अबंध खंड । ८ । मृदंग वाद्य । ९ । मृदंग बजायवे बारेके भेद । १० । इनके गुणदोस । ११ । इनको वृंद लछन । १२ । हुडुका आदि बाजेनको अपने अपने पाटाछरके अनुस्वार बजायवो । १३ । घन बाजेको स्वरूप बजायवेवारेके गुणदोस । १४ । बजायवे-बारेके थाथके गुणदोष । १५ । इतनी वस्तु वाद्याध्यायमें जांनिये ॥

अछे एकतंत्री वीणाकं प्रमाण करिवेको पहले माप कहे हैं ॥ इहां बाजेके मापवेमें ॥ अंगुठाके थोरु प्रमान तो अंगुला जांनिये ॥ ऐसें बारह आंगुलको विलसति एक जांनिये ॥ ऐसी दोय विलसतीको एक हात जांनिये ॥ या रितिसों सब बाजेके मापवेकी विधि जांनिये ॥

अथ एकतंत्री वीणाको लखन लिख्यते ॥ अब जामें ॥ गांठि छेद फांट बांक नहीं होय । ओर चिकनों सुद्धों खैरको वा ओर कोई पाको काठ होय ताको दंड गोल कीजिये। वा दंड तीन हात लंबो कीजिये। एक विलसतीकी परिधि कीजिये। दंड माहि सों पोलो कीजिये तहां दोऊ तरफके मोहरामें। डेड आंगुल माये या माफिक पोलो कीजिये ॥ विचमें कनिष्ठ आंगुलि मावे। ऐसें तीन छेद करिये। अथवा अंगुठाके पासकी आंगुरी मावे। ऐसें दोय छेद कीजिये ॥ वा दंडके निचले भागमें । शंकुकी जाय डचोड आंगुलको चोडो खे-रको । वा सारको ककुभ लगाइये ॥ ओर तिरछो लंबी आठ आंगलको ककुभ होय । सो ककुभको मध्य ॥ बांया दाहिनो एक एक आंगुल छोडीकें काछवाकी पीठकी सीनाई ढालुं कीजे ता मध्यमं पट्की जमायवेकों एक छिद्र कीजिये बादमें जोनिके आकार एक छिद्र कीजिये। वा छेदमें मावें ऐसे एक काठकी कील लगाइये । वा कीलमें दोय आंगुलकी चोडी आठ आंगुल लंबी पटुली अष्ट धा-तुकी बनायकें । ककुभके मध्यमें बाहरी ओर लगाइये । वा ककुभको मध्य निचो होय । कक्भके नीचं दोय छोटी दंडी लगाइये । फर आठ आंगुलको लंबो गोल उपरको भाग तीन आंगुलको मोटा ॥ सुंदर जांको होय ॥ जाको मध्य काछवाकी पीठकी तरह ढालु होय ऐसी जाको उपरको भाग होय जाको निचलो भाग ॥ ऐसो होय जो दंडके मुखमें बेठे ऐसी एक काठकी कील करीकें ककुभमें लगाइ दंडमें लगाइये ऐसो दंडमें ककुभ लगायके ॥ वा दंडके ऊपर नीचकों ॥ वांटो सतरे सतरे आंगुर छोडिके नीचेंको दोय छेद कीजिये ॥ एक सूतसां । तहां एक छेद तो ककुभकी तरफ होय ॥ एक छेद परिधकी तरफ होय ॥ तहां दो बङा तांति पहरे छेक्में डास्किं दुसरे छेदमें काढि लीजिये। फेर वां तांतको उत्तर-

टिकें । थोरिसी बाहर राखि । फेर वा छेदमें डारिकें पहले छेदमें काढि लीजिये । ऐसें तांत घालिये। आठ आंगुलके ऊंचे पक्षे दोय तुंबा लीजिये। तिनको गला बारह आंगलाको ऊंचो होय ॥ ओर अडतालीस आंगलको उंचो पेट होय । ऐर्से तूंबा दोय गोल होय ॥ सो वा दंडके लगाइये । तहां तूंबाके वृत्त स्थानमें कंटके निचें। तीन आंगुलकी चोडी बीचमें जाके छिद्र होय नीचेंको जाको मुख होय ॥ ऐसी नाभि लगाइये । ओर नारेलीको ट्रक दोऊ तुंबाके भीतर धरि-के वामें दोऊ छेदकी दोऊ तांत लगाइये । नारेलीके टुकके नीचे छोटीसी कील दोवडा । तांनके फदामें । देक वह कील फिरिये । ऐसी फेरीये जेसी तूंबाकी नाभि दंडसो गांटी चिपें हाले नहीं याको चिबुक कहतहें ॥ ऐसं तूंबा दोऊ दंडमें गांठ लगाइये ॥ ओर रेसमको अथवा भिहि सुतको डोरो एकले क-रिकें ॥ दोहरी तांनको नाग पासमें बांधिकें ॥ जेसें तुंबा गाठे रहें ॥ ऐसें तुंबा-के उपरे दंडमं गाठी डोरी ॥ अरु नागपास रुपटये ॥ वह या नागपासके लपेटवेमें वीणाके दंडके अंतमें दाबिये ॥ फेर ककुभको दंडमें तांतसों गाठो बांधिये ॥ फेर पके बांसकी छाठीकी दोय आंगुछ छंबी ॥ एक जो ममान चेंडि जीवा पट्छी तारके बिचमें लगाइये ॥ याको लेकिकमें जीवारि कहे हें । या जीवारीसों तारकी मधुर धुंनि होय हैं ॥ अथवा रेसमके डोराकी जीवारी कीजिये ॥ ओर पके बांसकी छाठ ठंबी बारह आंगुछ अरु चढी आंगुछके नख पमान चोडी ॥ तुंबाके निचे तीन ॥ आंगुल निचें दंडमें लपेटिये ॥ यासें मंद्रस्थानको भेद जान्यो परे। या भांति सास्त्रकी रीतिसों जो वीणा होय सो एकतंत्री जानिये ॥ ओर सब वीणा या वीणाको भेद हैं ॥ यातें या वीणा मुख्य पक्टित हैं ॥ याते दरसन परसनतें । धरम । अरथ । काम । मोक्ष । ये च्यारों पावत हैं । ओर बसहत्यादिकनें आदि छेयर सिगरे पापतें वोह पुरुष छुटत हैं । या वीणाके दंडारिकके देवता पहले रुद्वीणामें कहेहें सो जानि लीजिये ॥

अथ या वीणा घारिवकी विधि कहे हैं ॥ नीचेकों दोउ तुंबा होय॥ ओर नीचेंको वीणाको मुख रहे ओर ऊपरको तार रहें। याके मोराके स्थानको बांये कंधांपें राखे। ककुभको दाहिणें पावकी एडीपें राखिये॥ बांये हातकी चटी। आंगुरीकी पिछिपें किन्नका राखिये॥ याको सारण तें सारह कहे हैं॥

ओर चटीआंगुलीके पासकी आंगुलीकी कीयासों हू सारणां कहेहें ॥ ओर मध्य-आंगुरीकों कळूइक टेडी करि अंगुटाके पासकी आंगुरीके ॥ अग्रसों मीलायकें ॥ अपनी छातीके पास वीणा दाबिकें राखिये । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । की सिद्धिके वास्ते ॥ दाहिणे हातसों तारके नीचे ऊपर ताडन कीजिये ॥

अथ कम्रिकामका लछन लिख्यते ॥ जीवातें एक विलस्तिभरि-तार छोडिके स्वरकी सिद्धिके अरथ तार दाबि ताडन कीजिये ॥ यह किया अपनि छाति तांइ कीजिये छातिसां ऊपर नहीं कीजिये ॥ या कियाको नाम कम्रिका हे सो यहि सारणा च्यार प्रकारकी है ॥ उत्क्षिप्ता । १ । सनि-विष्टा । २ । उभयी । ३ । कंपिता । ४ । यह च्यार प्रकारकी जानिये ॥

अथ इन च्यारनको लछन लिख्यते ॥ जहां वीणाके तारकों दा-विकें भेर आंगूली उठालिकें ओर स्वरकी तार दाविये ॥ सो उत्क्षिप्ता सारणा जांनिये । १ । जहां वीणाके तारके हलवेंसी अंगुली लगाय ॥ ओर ठोर अ-गुरी चलाइये । सो सन्निविष्टा सारणा जांनिये । २ । जहां वीणाके तारकों दाबि आंगुली उठालिकें ओर जगो तारकों हलवे आंगूली लगाइये ॥ सो उभयी सारणा जांनिये ॥ तारकों स्थानमें दाविकें कंपायवेकी किया जो आंगुरी-में कीजिये ॥ सो किष्ठकासारणा जांनिये ॥ इति च्यार प्रतिहरो सार-णाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ दाहिनें हातकी नव व्यापार हैं तिनको नाम लखन लिख्यते ॥
जहां विचित्त आंगुरी अंगुरा पासकी ॥ अंगुत्तीके ऊपर लगाईके अंगुरा पासकी
अंगुत्तीसों तार बजाइये सो घात जानिये । १ । अंगुराके पासकी अकेलि अंगुत्तीसों तार बजाइये सो पात जानिये । २ । अंगुराके पास आंगुत्तीकें अयसों भीतिर ओर तार बजाइये सो संलेख जांनिये । ३ । बिचली आंगुत्तीसों भीतिर सों तार बजाइये ॥ सो उल्लेख जांनिये । ४ । बिचली आंगुरीसों बारली ओर तार बजाइये सो अवलेख जांनिये । ५ । ओर मुनीश्वर जुदि तरहको संलेख अवलेख कहतहें । जहां च्यार आंगुरीसों तार बजाइये । सों संलेख हें । अरु जीन अंगुरीसों तार बजाइये सो उल्लेख हें । दोय आंगुरीसों तार बजाइये सों इल्लेख हें । दोय आंगुरीसों तार बजाइये सों इल्लेख हें । दोय आंगुरीसों तार बजाइये सों इल्लेख हें । सों संलेख हें । अर्थवा आंगुरीसों भीतरली तरफ तार इसे । सों

संखेख हैं। बारली ओर तार बजाइये। सों अवलेख हें संलेख। उल्लेख। अवलेख। एहू भेद जांनिये तारकों च्यारों आंगुलीसों कमसों सिताबि ताडन कीजिये सो अमर जानिये। ६। बीचलि आंगुलि चटी आंगुलिके पासकी इन दोऊनसों बारली। ओरको तार बजाइये। सों संधित जांनिये। ७। तारके पास अंगुठा पासकी आंगुली लगाइकें चढी आंगुरीके पासकी अंगुरीसों तार बारली ओर बजाइये। सों लिक जांनिये। ८। कमसों सिताबि च्यारों आंगुरीके नखसों तार बजाइये। सों नखकर्तरी जानिये। ९।

अथ बांये हातके दोय व्यापार लिख्यते ॥ जहां स्वरके कंपमें बांये हातकी आंगुरी तारसों लगायकें ॥ इन उन सरकाइये। सो स्फुरिन जांनिये ॥ १ ॥ जहां बार बार बांये हानकी आंगुरी नारसों वसिये सो खसिन जांनिये ॥ २ ॥

अथ मिले दोउ हातनके तेरह व्यापार हं तिनके नाम लखन लिख्यते ॥ दाहिनें हातके अंगुठा तारसों लगाय ओर दाहिनें हातके च्यार नखसों क्रमसों तार बजाइये बांये हातकी चढी। आंगुरीसों तार दाबिये। सो घोष जांनिये। १। दाहिनें हातकी चढी आंगुरीके पासकी आंगुरीको नख तारके नीचे लगाइ बांये हातकी बिचली आंग्रीसों उपरंत तार बजाइये सो रेफ जांनिये ।२। या कियामें रकार पगटे । दाहिनें हातकी चटी आंगुरीके पासकी आंग्रीसों छुटो तार बजायेंक बांये हातके अंगुठाके पासकी आंग्रीसों जो तार दाबिये । तब गंकार होय । सो बिंदु जांनिये ।३। जहां दोनू हातकी च्यारों आं-गुरीसों तार सितावि क्रमसों बजाइये । सो कर्तरि जांनिये । ४ । जहां दाहिनें हातकी च्यारों आंग्रीसों तार बजाइये ॥ ओर बांये हातकी आंग्रीसों दाबि-वेकी सारणासों तारको ताडन कीजिये । सो अर्धकर्तरी जांनिये । ५ । जहां बांये हातसों तार दाबि बांये हातकी आंग्री सरकाइये । दाहिनें हातके ॥ अंगृष्ठाके पासकी आंग्रीसों तार बजाइये ॥ सो निष्कोट जांनिये ।६। जहां बांये हातसों तार दाबिके फेर बांये हातकी आंग्री उठाछिकें तारकों ओर जाय दाबिये बीचमें दाहिनें हातके च्यारों नखनसों कमसों तार बजाइये ॥ सो स्विछित जां-निये। ७। जहां बांये हातके । अंगुठाके पासकी आंगुरीसों तार दाविकें

दांहिणे हातके । अंगूठा मों अरु अंगूठा पासकी आंगूरीसों तार विचिकें उपरको खिचि छोडिये सो शुक्रवक्त जांनिये । ८ । जहां दाहिणें हातसां तारके
बजायवेमें भ्रमण कीजिये ॥ अरु बांये हातसों स्वर कंपिकिया कीजिये सो
मूर्छना जांनिये । ९ । जहां उछटे दांहिनें हातसों तार बजायके बांये हातकी
अंगुठा पासकी अंगुरी तारमें छगाइये । सो तछहस्त जांनिये । १० ।
जहां तार दाहिनें हातसों बजायकें । बांये हातके अंगुठा अर चटी
अंगुछीसों तार पकड छीजिये ॥ सो अर्धचंद्र जांनिये । ११ । जहां दाहिनें
हातकी च्यारों आंगुरी मिछायकें तार बजाइये । बांये हातकी चटी आंगुरी
अंगुठा पासकी आंगुरी तारमें छगाइये ॥ सो पसार जांनिये । १२ । जहां
दांहिनें हातके ॥ अंगुठाकी अंगुरी कछुक संकोच करिकें तार बजाइये । बांये
हातकी चटी आंगुरी ओर अंगुठा तारसों छगाइये॥ सो कुहर जांनिये
। १३ । इति दोन्यो हातनके तार बजायवेक तेरह व्यापार संपूर्णम् ॥

होय । १ । तारके नीचले भागमं कर्तरी होय । २ । निस्कोटिक । ३ । तल हस्त । ४ । ये होय सां उपरां वाद्यक जांनिये । ९ । जामं सिगरे चोवीस न्यापार किजिय कमसों । सांपक्षिरुत जांनिये । १ ० । इति बजायवेके दस भेद संपूर्णम् ॥

या बाजेके दोय प्रकार है। सकछ । १। निष्कछ। २। यह दोय जांनिये जो तारके दाहिणी तरफ तें छेकें जिवातांईं दाहिणें हातसों तार बजा-इये। बांये हातकी अंगुठा पासकी आंगुरी विना । ओर अंगुरीसों स्वरनको प्रकास की जिये। सो सकछ जांनिये। १। जहां निषादस्वरके स्थानतें बांय हातसों दाबिकें॥ दाहिनें हातसों बजावत अवरोह क्रमसों निचे निचे स्वरनको प्रकास करि सो निष्कछ जांनिये। २। ऐसे अभ्यास किये तें बजायवो आवे॥

अब गीतप्रबंध आदि वीणामें पगट करिवेकी रीत कहें हैं ॥ बारह आंगुलंकी बांसकी मुरली कीजिये ॥ तहां एक अंगुरको अग्रभाग छोडिकें एक एक
आंगुलके आंतरे ॥ सात छेदन कीजिये ॥ अरु ऊपरले भागमें ॥ एक ओर छेद
न्यारो बजायवेको कीजिये ॥ जब वा मुरलीकों बजाय कमसों सात छेदसों मूंदे
तब जो सात स्वर होय ॥ उनके उनमानसों वीणामें पहली सप्तक जांनिये ॥
दूसरी सप्तक या मंद्र सप्तकसों दूणी जांनिये ॥ मध्य सप्तकसों दूणी तार सप्तक
जांनिये ॥ इन सप्तकनमें विकत सुद्ध स्वर मूर्छना तांन आदि भेद समिश्लिक
गीतादिक रचना रिचये ॥ इति एकतंत्री वीणाको लेखन संपूर्णम् ॥

अथ नकुलि आदि वीणाको लछन.

नकुलि वीणा-या वीणामें दोय तार छगाइये सें। नकुली होय ॥ १ ॥ चित्रा-या वीणामें सात तार छगाइयेते चित्रा होय ॥ २ ॥ विपंची-या वीणामें नव तार छगाये ते विपंची होय ॥ ३ ॥ मत्तकोकिला-(स्वरमंडछ) या वीणामें इकवीस तार छगाये तें मिन-कोकिला होय ॥ ४ ॥

इह इकवीस तारनमें कमसों तीन सप्तक कीजिये। यह मत्तकोकिटा सिगरि बीणामें उतम जांनिये॥ याको नाम स्वरमंडल हैं॥

द्वितीय वाद्याध्याय-वाजोंका वर्णन, भेद और लछन.

अथ इन वीणाके करण लिख्यते॥

जामें दुरंग जुत अणु आदिक अछिरनकुं करवेको तोल होय सो करण जांनिये॥ सो करण छह पकारको हे॥ जहां मत्तकोिकला ओर विषंची आदि वीणा॥ या सब वीणा एक संग बजाइये तब रूपकरण होत हें॥ तहां मुख्य वीणामें गुरु आछिर बजाइये॥ तो विषंची आदि वीणामें गुरु अछिरकी तोलसुं दोय लघु बजाइये॥ जो मुख्य वीणांक एक लघु बजाइये॥ तो विषंची आदिविणामें दोय हत बजाइये॥ ऐसें अछिरनकी तोल जामें होय॥ सो रूपकरण जांनिये॥ १॥

या रूपकरणकी रिति वीणा न्यारीन्यारी बजाईये ॥ जुदो जुदो अछिरनको तोल करवो सो कृतप्रतिकृत जानिये ॥ २ ॥

जहां रूपकरण विपरित ॥ कीजिये । सो मत्तकोकिलामें दोय लघुं बजाइये ॥ विषंची आदिकमें गुरू बजाइये ॥ ऐसेंहि मत्तकोकिलामें ॥ दोय द्वत विषंची आदिकमें एक लघु ॥ ऐसें विपरिति करि उच्चार कीजिये ॥ सो प्रतिभेद जांनिये ॥ ३ ॥

जहां विदारी कहिये गीतको प्रथम खंड ॥ आधो मत्तकोिकलामें बजाइये ॥ आधो विषंची आदि वीणामें वरितये ॥ ऐसें एक गीत दोय जगा वरितये ॥ सो रूपशेष जांनिये ॥ ४ ॥

. जहां मत्तन्ति किलादि मुख्य वीणामें विलंबीत लय कीजीये ॥ ओर विपंची आदि वीणामें ॥ द्रत लय एक संग वरतिये ॥ ओर वडी वीणा छोटि वीणाको ताल भंग नहीं होय ॥ सो ओच जांनिये ॥ ५ ॥

जहां अंस स्वरके ओर संवादि स्वरके बीचले स्वर बडी वीणा छोटि वीणाकी ॥ एक तारमें पगट कीजिये ॥ सो प्रतिशुष्क करण जांनिये ॥ ६ ॥ इति छह करण संपूर्णम् ॥

अथ वीणाके नहाहिदेहों पुष्टि करिवेके ताई चोतिस धातुको नाम लिख्यते ॥ ने ताइनवें उपने ने स्वर ते धातु नांनिये सो धातु च्यार्

मकारको हैं।। विंस्तार । १ । करण । २ । अविद्ध । ३ । व्यंजन । ४ । ये च्यार जांनिये । तहां विस्तारके च्यार भेद हें । विस्तारज । १ । संघातज ।२। समवायज । ३। अनुबंध । ४। तहां संघातज च्यार प्रकारको हें । द्विरुत्तर । १ । द्वीरधर । २ । अधरायत्तरांतक । ३ । उत्तराद्यधरान्तक । ४ । समवायज आठ प्रकारको हैं । त्रिरुत्तर । १ । त्रिरधर । २ । द्विरुत्त-राधरोधरान्त । ३ । उत्तरादिद्विरधर । ४ । अधरादिद्विरधर । ५ । मध्योत्तरद्विरधर । ६ । मध्याधर । ७ । द्विरुत्तर । ८ । तारमें तीन वेर ताडन कीयेतें ॥ जो स्वर होय ॥ सो समवायज धातु हैं । ताके यह भेद जहां एक जातिके न्यारि जातिके स्वर बंध भेद मिले सों अनुबंध धात जानिये॥ ऐसें चोदहें प्रकारको विस्तारज धातु जांनिये । करण धातुकें ॥ ५ ॥ पांच भेदहें । रचित । १ । उच्चय । २ । नीरटनर । ३ । उरद्वापद । ४ । अनुबंध । ५ । यह जांनिये ॥ आविद्वधातुके । ५ । पांच भेदहें, क्षेप । १ । प्छुत । २ । तिपात ।३। अतिकीर्ण । ४ । अनुबंधक । ५ । यह भेद जांनिये ॥ अथ व्यंजन धातुके दस भेद हैं ॥ पुष्प । १ । कल । २ । तल । ३ । बिंदू । ४ । रेफ । ५ । अनिस्वनित । ६ । निष्कोटि । ७ । उन्मष्ट । ८ । अवमुष्ट । ९ । अनिबंध । १ ० । ये दस भेद जांनिये ॥ ऐसें चोविस धातु जांनिये ॥ २४ ॥

अथ इन धातुनको लछन लिख्यते ॥ जहां ध्वनिकों विस्तार करिकें मंद्रस्थानमें भेद दिखायवो जो एकवार ताडनकी जलदी जो जुदेजुदे स्वर सुनि-वेबारेको एकसें जानें परें सों विस्तारज धातु जांनिये ॥ सो या विस्तारज धातुमें स्वरको एक ताडन जांनिये ॥

अथ संधातक धातुको लछन ताके भेद कहे हें ॥ जहां तारकृ दोय वेर ताडन कीये सों स्वरसंधान जांनिये ॥१॥ जहां मंद्रस्थानके स्वरकों दोय बार उच्चार कीजिये सो धातु दिरुत्तर जांनिये ॥ २ ॥ जहां तारस्थानके स्वरकों दोय वार उच्चार होय ॥ अरु दोय बार ताडन होय ॥ सो दिरधर जांनिये ॥३॥ जहां तार स्वर पथम दोय बार उच्चार कीजिये । सो अधरा युत्तरान्तक जांनिये ॥ ४ ॥ जहां पहले मंद्रस्थानको दोय वेर लीजिये ॥ अंतमें तार स्थानको स्वर दीय वेर लीजिये ॥ अंतमें तार स्थानको स्वर दीय वेर लीजिये ॥ अंतमें तार स्थानको स्वर

अथ समवायज धातुको लछन लिख्यते ॥ जहां स्वरमें तीन बार तारको ताइन कीजिये ॥ अथवा तीन वेर मुखसों उच्चार कीजिये सो समवायज धात जांनिये ॥ तांके आठ भेद हैं ॥ जहां स्वरनमें मंद्रस्थानके स्वर तीन वेर ताडन कीजिये। वा उच्चारन कीजिये सो त्रिरुत्तर धातु जांनिये॥ १॥ जहां तीन वेर स्वरकों ताइन कीजिये । वा उच्चार कीजिये सो त्रिरधर जांनिये ॥ २ ॥ जहां मंद्र-स्थानको स्वर दोय वेर उचार कीजिये ॥ वा ताडन कीजिये । तार स्वर दोय वेर अंतमं कीजिये ॥ सो द्विरुत्तराधरान्त जांनिये ॥ ३ ॥ जहां तारस्थानको स्वर दोय वेर ताडन उचार करि मंद्र स्वरकों उचार कीजिये । सो द्विरधरोत्तरान्त जांनिये ॥ ४ ॥ जहां तार स्वरकों एक वर ताडन करि वा उच्चार करि दोय वेर मंद्र स्वरकों उचार कीजिये। सा उत्तरादिद्विरधर जांनिये॥ ५॥ जहां मंद्र स्वरकों एक वेर ताडन वा उच्चार किर तार स्वरकों दाय वेरि उच्चार कीजिये सो अधरादि दिरुत्तर जांनिय ॥ ६ ॥ जहां तार स्वरकों ताडन वा उच्चार दोय वेर करि बिचमें मंद्रस्थानके स्वरकों एक वर ताडन वा उच्चारन कीजिये ॥ सो मध्योत्तरद्विरधर जांनिये ॥ ७ ॥ जहां मंद्रस्थानके स्वरकों एक वेर ताडन उचार करि तार स्थानको उचार कीजिये ॥ अंतमं मंद्रस्थानके फेर उचार कीजिये । सो अधरमध्यद्विरुत्तर जांनिये ॥ ८ ॥ इति समवायज धातुके आठ भेद संपूर्णम्॥

अथ अनुबंध धातुको लछन लिख्यते ॥ जहां स्वरको इन धातु तिनोंनके लछन सों मिल्यो ताइन वा उच्चार कीजिय ॥ ऐसं अपनि जातिके स्वर । अपनि जातिनके स्वरनको मिलाप होय सो अनुबंध जांनिये ॥ १ ॥ इति वि-स्तार धातुके चोदह भेद संपूर्णम् ॥

अथ कर्ण धातुको लखन लिख्यते ॥ जहां गुरु अक्षर थोरे होय ॥ लघु अक्षर घणो होय सो कर्ण धातु जांनिये ॥ सो या कर्णके पांच भेद हैं ॥ जहां दोय लघु अंतमं ॥ एक गुरु वीणामें बजाइये । सो रिभित धातु जां- निये ॥ १ ॥ इहां च्यार लघु एक गुरु जांनिये सो उच्चय धातु जांनिये ॥ २ ॥ जहां छह लघु एक गुरु बजाइये । सो निरित जांनिये ॥ ३ ॥ जहां आठ लघु एक गुरु होय सो नहाद जांनिये ॥ ४ ॥ जहां करण धातुके यह च्यार भेद हैं ॥

तामें दोय तीन च्यार भेद मिले सो करणको अनुबंध जांनिये॥ ५॥ इति करण धातु भेद संपूर्णम्॥

अथ आविद्ध धातुको लक्छन लिख्यते ॥ जहां गुरु अक्षर घणो होष लघु थोरो होय । सो आविद्ध धातु जांनिये ॥ अथवा गुरु अक्षर नहीं होय सो आविद्ध धातु जांनिये ॥ याके पांच भेद कहे हैं। जहां एक लघु दोय गुरु बजाइये सो क्षेप जांनिये । १। जहां एक लघु, गुरु, लघु, बजाइये। सो प्लुत जांनिये। २। जहां दोय लघु दोय गुरु होय सो अतिपात जांनिये। ३। जहां च्यार लघु, च्यार गुरु होय सो अतिकीर्ण जांनिये। ४। जहां आविद्धके यह च्यारनमें दोय वा तीन वा च्यार भद मिलें। सो आविद्ध धातुको भेद। अनुबंध जांनिये। ५। अथवा दोय लघुको भद्द ताको जो क्षेप । १। तीन लघुको प्लुत । २। च्यार लघुको अतिपात । ३। नय लघुको अतिकीर्ण । ४। ऐसें च्यारों भेद कोऊ आचार्य कहेहें ॥ इति आविद्ध धातुके भद्द संपूर्णम् ॥

अथ व्यंजन धातुको भेद लिख्यते ॥ अंगुटा आंगुरीसों स्वरको बजायवो । सों व्यंजन धातु जांनिये ॥

अथ व्यंजन धातुको भेद लिख्यतं ॥ जहां एक तारमें दोय वेर अंगुठासों ॥ एक वेर चटी आंगुरीसों स्वर बजांईये ॥ सो पुष्प जांनिये । १ । जहां दोय तारमें एक वेर दोनु हातके अंगुठासों न्यारे न्यारे स्वर बजाइये सो करू जांनिये । २ । जहां बांये हातके अंगुठासों तार दाबिके दाहिनें हातके अंगुठासों बजांइये । सो तल जांनिये । ३ । जहां एक तारमें गाढो ताडन करे सों भारी नाद होय सो बिंदु जांनिये । ४ । जहां कमसों च्यारों आंगुरीसों एक स्वर एक तारमें बजाइये सो रेफ जांनिये । ८ । जहां कमसों च्यारों आंगुरीसों एक स्वर एक तारमें बजाइये सो रेफ जांनिये । ५। जहां बांये हातके अंगुठासों तार दाबिकें दाहिणें हातसों अंगुठासों निचलों स्वर बजाइये सो निस्वनित जानिये। ६। जहां बांये हातके अंगुठानें तार दाबिकें निचले भाग दाबी तारकों ताडन कीजिये ॥ सो निष्कोटित जांनिये । ७। जहां मधुर धुनि जुत स्वर । अंगुठाके पास की आंगुरीसों बजाइये । सो उनमृष्ट जांनिये । ८। जहां दोनु हातनकी चटी आंगुरीसों दोनु हातके अंगुठासों अवरोह कमसों तीन्यो तारमें । तीनो स्थानकको एक स्वर बजाइये । सो अवमृष्ट जांनिये । ९ । जहां व्यंजनके नव भेद हैं।

तिनमें दोय तीन च्यार पांच ऐसें भेदसों छेकें नव भेद तांइ मिछें सो अनुबंध जांनिये ॥ ऐसेंहि जाहां आंनु धातुके दोय तीन भेद मिछे सोहूं अनुबंध जांनिये । १० । य च्योतिस धातु च्यारों प्रकारके बाजेनमें कीजिये ॥ अपनें अपनें वृत्तीमें अपनें स्थान रचिये ॥ इति चातीस धातु भेद संपूर्णम् ॥

अथ चोतीस धातु वृत्तिमं वरितयेसो वृत्तिको लछन लिख्यते ॥ जहां वाद्य । १ । गीत । २ । इन दोनूनमं कोउ मुख जांनि परे कोऊ सा-धारण जांनिपरें । कियाकी चतुराइसां न्यून अधिक जांनि परे सो वृत्ति जांनिये। सो वृत्तिके तीन भेद हें । चित्रा । १ । वृत्ति । २ । दक्षिणा । ३ । ये जांनिये। जहां बाजो मुख जांनि परें सो साधारण जांनिपरें । सो चित्रा वृत्ति जांनिये । १ । जहां गीत । १ । वाद्य । २ । बराबर होय सो वृत्ति नामको दूसरो भेद वृत्तिवृत्त जांनिये । २ । जहां गीत मुख्य होय । वाद्य साधारण होय सो दक्षिणावृत्ति जांनिये । ३ । कोनु मुनीश्वर वृत्तिनमे । कमसों द्रुत । १ । लघु चित्रामें मध्य लय वृत्तमें । २ । विलंबित लय । ३ । दक्षिणामें ऐसे समा जांनिये ॥ चित्रामें । १ । स्रोतोगता निवृत्तमें । २ । गोपूछा यित दक्षिणामें ऐसे समा जांनिये ॥ चित्रामें । १ । स्रोतोगता निवृत्तमें । २ । गोपूछा यित दक्षिणामें । ३ । ऐसें इन तीनों वृत्तिनमें । मागधी । १ । संभाविता । २ । पृथुला । ३ । य गीत ऐसों तत्व अनुगत ओघ । वार्तिक । १ । चित्र मार्ग । २ । दक्षिणा मार्ग । ३ । ये तीन मार्ग । अनागत ग्रह । १ । समग्रह । २ । अतीत ग्रह । ३ । ये रिति तिनों वृत्तिमें कमसों कहत हें ॥ इति वृत्ति लछन संपूर्णम् ॥

अब वृत्तिनमें तत्व ओर बाजोको प्रकार कह्योहें। तांक तीन भेदहें सो लिख्यते॥ जहां गीतके संग बजाईये सा बाजो तीन प्रकारको हैं। तत्व। १। अनुगत। २। ओघ। ३। ये जांनिये जहां द्वत आदि लघु। १। वंचित पुट। २। आदि तालकी समाप्त। ३। समाकी इक जाति। ४। मान्गधी आदि गीति। ५। एक कल आदि दिकल चतुस्कल तालके भेद। ६। इन गीतकी सामग्री जा बाजेमें पगट दिखावत गीतमें। मिलाप बजाइये सा तत्व बाजो जांनिये। १। जहां बाजेमें कछुइक गीतकी सामग्री पगट करिये कछु नहीं कीजिये॥ जेसें वालको विराम गीत वाश्यमें बराबर होय॥ विश्राम न्यारो होय॥ जेसें गीतमें विलंबीत लय होय वाश्यमें ब्रतलय होयसो ताल भर दीजिये।

ऐसें गीतके पीछे वाद्य चले सो अनुगत वाद्य जांनिये। २। जहां गीतकी सामग्री नहीं दिखांवें आपनी चतुराइसों गीतके तालसों निर्वाह करिसें। सुनिवे वारो न्यारो बाजो नहीं जाने सों ओघ वाद्य जांनिये। ३। जो इकइस तारको वीणामें विस्तारसों धातुको बजाइ वासों एक तंत्रि वीणामें धातुको संक्षेपसों बजाइये॥ ऐसें दोय नंत्री तीन तंत्री पांच तंत्री॥ सात तंत्री नव तंत्री। वीणामें तारकें माफिक बजाइये॥ ऐसेंहि वंशि बजायवेमें। वा अलगे सहनाइ। आदि मुखके बजायवे बाजेनमें जांनिये॥ सो गीतानुग वाद्य जांनिये॥

अथ गीतिवना वीणा बजायंवेक दस भेदहं तिनके नाम शुष्क वाद्य हे तिनके लछन लिख्यंत ॥ आस्रवण ॥ १ ॥ आरंभविधि ॥ २ ॥ चक-पाणि ॥ ३ ॥ संखोटना ॥ ४ ॥ परिचहना ॥ ५ ॥ मार्गासारित ॥ ६ ॥ लीला-छत ॥ ७ ॥ एक कल आसारित ॥ ८ ॥ दिकल आसारित ॥ ९ ॥ तिकल आसारित ॥ १ ॥ तिकल आसारित ॥ १ ॥ यह दस भेद जांनिय ॥ तहां विस्तार धातुके चोदह भेद हैं ॥ तिनमें दोय दोय भेदको पयोग सात वर कीजिय ॥ प्रथम दुसरो ॥ १ ॥ तीसरो चोथो ॥ २ ॥ पांचवों छटो ॥ ३ ॥ सातवों आढवों ॥ ४ ॥ नवमों दसमों ॥ ५ ॥ ग्यारमो बारमों ॥ ६ ॥ तेरमें चोदमों ॥ ७ ॥ ऐसे कीजिय । सो शुष्कवाद्य आस्रवण जांनिय ॥ १ ॥ अब देवनातं, वरदान पायवेके अरथ अपने स्वामितें सकल मनोरथ पायवेके अरथ आस्तवीणा सुस्क वाद्यमें कहेहें ॥

अथवा नाम तीन खंडकी रचना करिवेकों प्रकार ब्रह्म कुल मंडन मुनीश्वर श्रीविशाखिलके मतमां कहेहें मो लिख्यते ॥ जहां विस्तार धातुके भेद स्वरकों गुरु छघु अक्षरनें प्रयोग कीजिये द्वृत आदिक, लयनसों भुवा हैं ॥ तहां पहछे खंडमें पहछो ॥ १ ॥ दुसरो ॥ २ ॥ ग्यारमों ॥ १९ ॥ चोदमों ॥ १८ ॥ पंदरमों ॥ १५ ॥ चोविसवों ॥ २८ ॥ ये अक्षिर मुरु होय ॥ ओर अठारह छघु होय ॥ ऐसें चोइस अक्षिरको प्रथम खंड रिये । ऐसेंहि चोइस अक्षिरको दुसरो खंड रिये । तीसरे खंडकी रचनामें तीसरो ॥ ३ ॥ आठवों ॥ ८ ॥ पंदरवों ॥ १५ ॥ ये तीन अक्षर गुरु होय ॥ बारह । १२ ॥ खंड होय ॥ ऐसें पंघर अक्षिरनको तीसरो खंड रिवेये ॥ १ ॥ ऐसें तीन खंडकी भवा जानिये यह वीणामें गावे सुने सों मन चाही सिद्धि पावे ॥

अब क्षेप्पद्ती पातकला विधिको लखन कहे हैं।। तहां कोनु धुवामें बाइस कला कहे हैं ॥ कोन् ध्वामें अठाइस ॥ २८ ॥ कला कहे हैं कोऊ ध्वामें बत्तीस कला कहे हैं इन तीन भेदमें तालको प्रकार कहे हैं ॥ जहां बाइस कला होय तहां ताल पातिवाधि कहे हैं। जो पहले विना ताल गीतको आरंभ करि पहली ॥ १ ॥ दुसरी ॥ २ ॥ तीसरी ॥ ३ ॥ कलों संगत कहिये । सन्दविना तालकी किया कीजिये । चोथी॥ ४ ॥ पांचमी ॥ ५ ॥ छटमी ॥ ६ ॥ कलोमें सब्द सहित तालकी किया कीजिये । ओर तालकी बरा-बर गीतको उच्चार करि। सातई॥७॥ आठई ॥८॥ कलामें विना शब्दकी तालकी किया कीजिये । नवमी ॥ ९ ॥ दसमी ॥ १० ॥ कलोमें सहित तालकी किया कीजिये । ओर ग्यारह ॥ ११ ॥ कलोंमं कियाउपरांति गीतको आरंभ करि सन्दिवना तालकी किया कीजिये । बारह ॥ १२ ॥ कलोमं सन्द सहित तालकी किया कीजिये । बारह ॥ १२ ॥ कलाको प्रथम खंड कीजिय ॥ १ ॥ दुसरो संडमें छह ॥ ६ ॥ कला कीजिय सां छहतालो जा पर्पितापुत्र ताल ॥ ताके एक एक तालों एक एक कला कीजिय ॥ एमें छहों तालानमें एक षट्पिता-पुत्रताल पुरन होय ॥ ताके नि ॥ १ ॥ स ॥ २ ॥ ता ॥ ३ ॥ स ॥ ४ ॥ नि ॥ ५ ॥ स ॥ ६ ॥ सा इसरा खंड जांनिय ॥ २ ॥ तीसरे खंडमे च्यार कला कीजिये। तिनमें चोतालोको चंचतपुर ताल ताके एक एक तालेमें एक एक कला कीजिय ॥ ऐसें च्यार कलामें एक चंचतपुट पुरन होय ॥ या चंचतपुटमें च्यार ताल हैं तिनके। स॥ १ ॥ ता ॥ २ ॥ स ॥ ३ ॥ ता ॥ ४ ॥ याके ये अक्षिर रहें ॥ सो तिसरो खंड जांनिये ॥ १ ॥ ऐसें बाइस कलाकी ध्रवाको विचार जांनिये ॥ अंबं अठाविस ॥ २८ ॥ कलाकी नालको धुवाको विचार कहे हैं ॥ जहां पहलो खंड बारह कलाको कीजिये ॥ नामें नीन कला विना सब्दकी नालकी कियासों होय ॥ तीन कला सन्द्जुत कियासों होय ॥ ओर दोय कला विना सब्दकी कियासों होय॥ दोय कला सब्दज्त कियासों होय। एक कला सब्द विना किया सों होय ॥ अर एक कला सब्दजुत किया सों होय सी ॥ ऐसे बारह कलाको प्रथम खंड होय । १ । दूजे खंडमें बारह कला होय ॥ सो द्विकत्कक पट्रिपतापुत्रके बारह नालनमें कीनिये । इन बारह कलानमें

दूनो षट्पितापुत्र ताल पुरो होय ताके । अक्षर । नी । १ । म । र । ता । ३ । स । ४ । नि । प । ता । ६ । नि । ७ । स । ८ । ता । ९ । म । १० । नि । ११ । स । १२ । यह वारह जांनिये ॥ ऐसें वारह कलाको दूसरो खंड जांनिये । २ । तीसरें खंडमें च्यार कला होय ॥ सो एक कला ची-तालो चंवतपुटके चार तालमें लीजिये ॥ इन च्यार कलामें चीतालो चंवतपुट पूरन होय ॥ ताके अक्षर । स । १ । ता । २ । स । ३ । ता । ४ । यह जांनिये ॥ ऐसें च्यार कलाको तीसरो खंड कहीये । ३ । ऐसें अठाविस ध्रुविकाको । २८ । विचार जांनिये ॥ अवे बचीस कलाकी ॥ ध्रुविकाको विचार कहेहें ॥ तहां पहले खंडकी दूसरे खंडकी वारह वारह कला कीजिये ॥ सो दोउ खंड अठाइस । २८ । कलामें पहले दुसरे खंड कहते सों जांनिये । २ । तीसरे खंडमें आठ कला होय ॥ सो दिकल चंवतपुटके ॥ आठ तालनमें लीजिये । नि । १ । स । २ । नि । ३ । ता । ४ । स । ५ । म । ६ । नि । ७ । प । ८ । ऐसें आठ ताल दिकल चंवतपुट पूरो होय ॥ ताके अक्षर जांनिये ॥ ऐसें तीसरी खंड जांनिये ॥ ऐसें वचीस कलाकी ध्रुविकाको विचार जांनिये ॥

अथ ध्रुवीकाकी विदारि कहे हैं ॥ विदारि कहतें गीतको प्रथम खंड ताको लछन लिख्यते ॥ जहां विदारिक न्यारि होय ॥ तहांइ बाइस कलामें । सातकला नई इनहीसो रचिय ॥ तहां पहले खंडकी बाएह कलामें ॥ पहली तीन कलाकी एक कला कीजिय ॥ ताउपरांत तीन कलाकी एक कला दूसरी कीजिय ॥ फेर दोय कलाकी एक कला तीसरी कीजिय । फेर दोय कलाकी एक कला चोथी कीजिय ॥ फेर दोय कलाकी एक कला छिट कीजिय ॥ केर तीसरे खंडकी छटवी कला है ॥ ताकी एक कला छिट कीजिय ॥ फेर तीसरे खंडकी च्यार कला है ॥ तिनकी एक कला सातवी कीजिय ॥ ऐसें सात कलाकी एक विदारि होत है ॥ सो गीतको प्रथम खंड है ॥ याको ली-किकमें पीडाबंधन कहेहें ॥ सो याके तीन प्रकार है ॥ इहां दोय खंडकी जो अठारह कला है । तिनमें दिकल चंचतपुरसों अउ कलाकी एक कला दूसरी कीजिये।

बार्कीकी दोय कला विना सब्दकी किया। सों लीजिय सो तीसरी कला कीजिये॥ ओर तीसरी खंडकी चंचतपुट जुत च्यार कलानकी एक कला चोथो कीजिये ॥ सो च्यार कलाकी विदारि जांनिये। १। अवे दूसरो बिदारिको भेद कहेहें ॥ जो तीनों संडकी बाइस कलाहे तिनमें । द्विकल चंचतपृटसं आठ कलाकी एक कला पहली कीजिये । फेर दिकल चंचतपुरसों आठ कलाकी एक कला इसरी कीजिये । बाकीकी छह कला पर्पितापुत्र तालसों लेकें उनकी एक कला तीसरी की-जिये ॥ सो यह तीन कलाकि विदारि जांनिये ॥ अवे तीसरी विदारिको भेद कहेहें ॥ नीसर भेड़में पहले खंडकी बारह कलोतं तीन कला विना सब्दकी कियासों ओर तीन कला तालसों अरु दोय कला विना सन्दकी कियासों ॥ ओर दाय कला सन्दकी ओर एक कला विना सन्दकी कियासी एक कला शब्दकी कियासों । इन बारह कलाकी ॥ एक कला पहली कीजिये ओर दुजे खंडकी छह करा षर्पितापुत्र तारुसों होक उनकी एक कहा दसरी कीजिये ॥ ओर तीसर खंडकी च्यार कला एक कला चंचतपृरसी लेके उनहीकी एक कला दूसरी कीजिय ॥ ओर तीसरे खंडकी च्यार कला चंचतपुरंसों लेके उन-हीकी एक कला तीमरी कीजिये ॥ ऐसों तीन खंडकी तीन कला कीजिये ॥ सा तीसरी विदारिको भेद जांनिये । ३ । ऐसी भांत विदारिजुत तीन खंडकी भ्रवा जहां कीजिय ॥ सो शुष्क वाद्य आस्त वीणा जांनिये ॥ इति आस्त वीणा भेद संपूर्णम् ॥

अथ आरंभविधि शुष्क वाद्यको भेद लिख्यते ॥ जहां विस्तारज धातके चेरदह भेद । आरोह अवरोहसों वरतिये। एक एक भेदकों आरोह अवरोह करिके बीचमें । तल धातु । १ । रिभित धातु । २ । ऱ्हाद् धातु ।३। ये तीन धातु वरतिय ॥ ऐसं कमसों चोदह भेद कीजिये । पीछे करण धातुके भेद रिभिस्तको दोय नीनवार वरतीये ॥ फेर ऐसे विस्तार धातुको पयोग की-जिये ॥ यह रीतिसों ता उपरांत करण धातुके बाकी दूसरे भेदेसों ॥ जे भेद या रीतीसों वरतिये ॥ सा आरंभ विधि जांनिये ॥

आरंभविधिकी धुवा कहेहें ॥ जामें पहले आठ । ८ । गुरु अक्षर होय ॥ बारह । १२ । लघु होय । पांच । ५ । गुरु होय । ऐसे पचीस अक्षरको आदि सोड की जिये। १। जहां आठ। ८। लघु एक । १। गुरु होय न्यार । ४। लघु । १। एक गुरु फर । ४। च्यार लघु ॥ एक । १। गुरु होय ॥ ऐसें उगनीस अछरनको दूजो खंड की जिये। २। जहां आठ लघु होय एक गुरु होय । अंतमें ऐसें नव अछिरनको तीसरो खंड की जिये। ३। ऐसें तीन खंडकी ध्रुवा जांनिये॥ तांहां पहले खंडमें इकइसके अछिरेपें विश्राम की जिये। दूसरे खंडमें चोदह अछिरेपें विश्राम की जिये। २। तीसरे खंडकी पीछले गुरुपें विश्राम की जिये॥ ३॥ यहां पहले खंडमें बारह कला। १। दूसरे खंडमें छह कला। २। तीसरे खंडमें च्यारह कला। ३। ये जांनिये॥

अब इन खंडनको ताल विचार कहें ।। तहां पहले खंडमें पहली तीन कला सब्द्सहित कियाज़त की जिये ॥ अरु एक कला विना सब्द्की कियासों की जिये ॥ फर दोय कला सब्द्सहित कियासों की जिये ॥ फर दोय कला सब्द्सहित कियासों की जिये ॥ फर दोय कला सब्द्सहित कियासों की जिये ॥ फर दोय कला सब्द्सहित कियासों की जिये ॥ फर दोय कला सब्द्दिना कियासों की जिये ॥ ऐसें बारह कला प्रथम खंडसें जांनिये । १ । दूसरे खंडकी छहकलासों पर् तालो जो पर्पितापुत्र ताल ताक एक एक ताल ली जिये । ऐसें एक ताल पर्पितापुत्र छह कलामें पूरन की जिये ॥ ऐसें दूसरो खंड जांनिये । २ । ती सरे खंडमें च्यार कला हे । सो चोताले चंचतपुरके । एक एक ताल सो एक एक कला ली जिये ॥ ऐसें च्यार कला हे । सो इहां पर्पितापुत्रकों चंचतपुरके अक्षर जांनिये ॥ इति शुष्कबाजेमें आरंभ-विधि धुवालखन संपूर्णम् ॥

अथ वक्त्रपाणि शुष्कवायको लखन लिख्यत ॥ जहां वीणा बजा-यवेमें करणधातु आविद्ध धातुके भेद तो बहुत वरितये । अरु व्यंजनधातुके भेद् थोरे होय ओर विस्तारधातुके भेद जहां निह लीजिये ॥ सो वक्त्रभाणि जांनिये ॥ या वक्त्रपाणि मुख पितमुख । २ । ये दोनु तालके अंग कीजिये ॥ अथवा पवृत । १ । एक वर्णीक । २ । कीजिये ॥ अवे ध्वा कहते हें ॥ जहां पहली पांच गुरु होय ॥ फेर छह लघु होय ॥ फेर छह गुरु होय ॥ ओर दोय लघु होय ॥ ओर गुरु च्यार होय ॥ ओर लघु तीन होय ॥ ओर गुरु आठ होय । यह लघुके अंतमें होय ॥ इनकी चोइस कला कीजिये। वक्त्रपाणिकी ध्रुवा जांनिये॥ जो इहां चोइस कला कीजिये। तहां पहली आठ कलामें दिकलचंचतपुट तालके आठ ताल कीजिये॥ आठ तालनसों आठ कला कीजिये॥ यह तालको प्रथम अंग मुख्य जांनिये॥ १॥ ऐसेंह दुजी आठ कलामें कीजिये॥ ऐसेंही तीसरी आठ कलामें कीजिये॥ दिकल चंचतपुटकी तीन वेर आवृत्ति करि। वाके तिनु खंडकी चोइस कला कीजिये॥ अबे प्रतिमुख कहे हें॥ इहां पहली पट्कलामें पट्पितापुत्र ताल कीजिये॥ ओर दूसरी लह कलामें चोथी लह कलामें पट्पितापुत्र ताल कीजिये॥ असे च्यार वेर पट्पितापुत्र तालकी आवृत करे। ताके चोइस तालनकों चारों खंडकी चोइस कला कीजिये। यह प्रतिमुख नाम तालको दूसरे। अंग हं॥ ओर याकी जब विदारि कीजिये। तब दिकल चंचतपुटके। आठ तालनसों आठ कला लेकं। एक मात्रा कीजिये। ऐसी तीन मानवासों चोइस कलाकी एक विदारि जांनिये॥ इति वकत्रपाणि संपूर्णम्॥

अथ संखोटनाको लछन लिम्यंत ॥ जहां अंगूरासों तार दाबिके ॥ अंगूरा पासकी आंगूरीसों तारको ताडन किर ॥ बिंदु गमकजुत वादि संवादि स्वर मिटाइकें । अनुवादि स्वर दिखायकें । थोरसे विवादि स्वर बजाइये ॥ फेर उनहीं स्वरनमें विस्तार धातुके भेद ॥ ओर धातुनके भेदसों मिटे बजाय ॥ ऐसें दोय तीन वेर ॥ फेर फेर जुदे जुदे धानोकों दोय वर बजावे ॥ ओर धातू ह रचे सो संखोटनां जांनिये ॥ अवें ध्रुवा कहे हैं ॥ प्रथम दोय गुरु होय ॥ आर छपु होय ॥ एक गुरु होय ॥ ऐसें सताइस अछिरनकी ध्रुवा हाय सों संखोटना-की ध्रुवा जांनिये ॥ इहां अटारह कटा कीजिये ॥ तहां पहलो खंड छह कटा-को कीजिये ॥ तहां पट्पितापुत्रके छह तालसों छह कटा कीजिये । ऐसें एक पट्पितापुत्रके बारह ताल कीजिये ॥ ऐसं दूसरे खंडमें एक दिकट पट्पितापुत्रके बारह ताल कीजिये ॥ ऐसं दूसरे खंडमें एक दिकट पट्पितापुत्र जांनिये ॥ २ । ऐसें अटारह । १८ । कलाके दोय खंड जांनिये ॥ अथवा अटारह कलाको तीन खंड रचिये ॥ एक एक खंडमें छह कला कीजिये । उन छह कलामें एक कला पट्पितापुत्र जांनिये ॥ इति शुष्क वार संखोटना संपूर्णम् ॥

अथ शुष्क वाद्य परिषट्टनाको लछन लिख्यते ॥ जहां व्यंजन धातुके दस भेदसों मिलकर करणधातुके पांच भेदसों मिलेहातकी चतुराइसों सुंदरतासों बजावे ॥ तामें आरोह बहुत होय । अवरोह थोरो होय ॥ सो परिष्ट्रनां जांनिये ॥ अब ध्रवा कहे हैं ॥ जहां आठ प्रथम गुरुअक्षर होय ॥ चोइस लघु होय ॥ दोय गुरु होय ॥ सोलह लघु होय । एक गुरु होय ॥ सो ध्रुवा परिषटना जांनिये । यह इकावन अछिरनकी हैं ॥ इहां ध्रुवाकी अठाइस कला कीजिये ॥ तहां पहले खंडकी दस कला होय । सो पांच तालको संपक्षे हाक ताल दोय वेर लेकें । वोक दस तालनसों । पहले खंडकी दस कला लीजिये ॥ अोर दूसरे खंडकी बारह कला कीजिये सो दिकल संपक्षेष्टाके बारह तालसों दूसरे खंडकी वारह कला कीजिये सो दिकल संपक्षेष्टाके बारह तालसों दूसरे खंडकी बारह कला कीजिये ॥ ऐसें दोय खंडकी ध्रुवा कीजिये ॥ अथवा या ध्रुवाकी अठारह ॥ १८ ॥ कला कीजिये तहां पहले खंडकी छह कला एक कला संपक्षेष्टाके तालके छह तालसों लीजिये ॥ ऐसें पहले खंड की जंड जांनिये ॥ दूसरे खंडमें बारह कलासों दिकल संपक्षेष्टाके तालके बारह कलासों लीजिये ॥ ऐसें पहले खंड किलाये ॥ इतिये खंड कीजिये ॥ इति परिघट्टना लखन संपूर्णम् ॥

अथ मार्ग सारिताको लछन लिख्यते ॥ तहां विस्तार । १ । करण । २ । आविद्ध । ३ । इन धातुनके भेद कल धातु । १ । तल धातु । २ । सों मिलायकें कमसों वरितये ॥ अथवा करण धातुक पांच भेद कल । १ । तल । २ । धातुसों मिलायकें कमसों वरितये ॥ सो मार्ग सारिता जांनिये ॥ अथ यांकि ध्रवा कहेहें । जामें पहले च्यार गृह होय ॥ फेर आठ लघु होय ॥ फेर आठ लघु होय ॥ फेर आठ लघु होय ॥ एक अंतमें गृह होय ॥ सो तेइस अक्षिरको खंड होय ॥ सो मथम ॥ खंड जांनिये ॥ ऐसे दूसरों तीसरो खंड कीजिये ॥ ऐसें तीन खंडकी ध्रवा होत है अब याको ताल विचार कहे हें ॥ जहां तीनों खंडमें सीलह सोलह कला कीजिये ॥ तहां पहली च्यार कला चंवतपुटके च्यार तालसों लीजिये ॥ फेर छह कला पट्पितापुत्रके छह तालसों लीजिये ॥ ऐसें अठारह कला पथम खंड-की । जांनिये ॥ याहि रितिसों दूसरे तीसरे खंडकी कला अठारह । १८ । रिविये ॥ इति मार्ग सारिता शुष्क वाद्य संपूर्णम् ॥

. अथ लीलाकतको लछन लिख्यंत ॥ जहां पड्ज प्रामकी पाड्जी जातिके अंस स्वरमें। वार्तिक । १ । मार्गसों। २ । जो अभि सृत नामको गीत कहाहें सों ओर मध्यम प्रामकी मध्यमा जातिके अंस स्वरनमें वार्तिक मार्गसों ॥ पिरमृत नामको जो गीत कहाो सो ओर तालाध्यायमें मार्ग लयसों दूनें लयमें कहाो जो लयांतर नामको गीतसों। यह तीन गीत वीणामें सुंदरता सों वरतिये॥ अनु रंजनके अरथ सो लीलाकत शुष्क वाद्यको लखन जांनिये॥ याके ध्रवा होय हे॥ अर्थजुत पदनकी। १ । विना अरथ पदनकी । २ । इहां वीणामें लिलाकतकी ध्रवा तालसों बजाईये। ७ ।

अय तीन आसारित शुष्क वाद्यको लखन लिख्यते ॥ तहां चंचत-पुट ताल एक पट्पितापुत्र ताल दोय वरतिये ॥ सो किनिष्ठासारित होय ॥ सो कनिष्ठासारित दूनि लयसों दूनो मार्गमें लीजिये ॥ तब लयांतर नाम आसारित होय । १ । जहां द्विकल पर्पितापुत्र ताल तीनवेर वरतिये । सो मध्यम आसारित होय । सो द्विकल पट्पितापुत्रकी एक आवृतमें बारह कला हैं ॥ सो बारह कलाको खंड जांनिये ॥ तहां पहले खंडमें तीन कला नही कीजिये ॥ तब दूसरो मध्यमा सारित होय । २ । जहां चतुष्कल षट्पितापुत्रकी तीन आ-वृति कीजिये । सो जेष्टा सारित होय ॥ तहां चतुष्कल पर्पितापुत्रकी एक आवृतमें चोईस कला होय सो । चोइस कलाको एक खंड जांनिये । जहां पहले खंडमें सात । ७ । कठा नही लीजिये । तब जेष्टा सारित होय । ३ । तीनों आसारितके तीन तीन भेद हे ॥ यथाक्षर । १ । द्विसंख्यांत । २ । त्रिसंख्यांत । ३ । एक वेस्के उच्चार सों वरतिये । सो अक्षर । १ । दोय वेरके उच्चार सों वरतिये सो द्विसंख्यांत । २ । तीन वेरके उच्चारसों वरतिये सो त्रिसंख्यांत ।३। ऐसें तीन भेद एक एक आसारितके जांनिये ॥ तहां यथाक्षर चित्रा । १ । वृत्ति । २ । दक्षिणा । ३ । इन तीनों वृत्तमें वरतिये । सो द्विसंख्या वृत्ति । १ । दक्षिणा। २। में वरतियेसो अरु त्रिंसंख्यांत दक्षिणा वृत्तिमें बरतिथे। ३। च्यारों मार्गनमें यथाक्षर वरतिये। वार्तिक। १। दक्षिणा। २। मार्गमें। द्वि-संख्यांत वरतिये । २ । दक्षिणा मार्गमें त्रिसंख्यांत वरतिये । ये तीनों आसा-रितकी आवृत स्थाई । १ । आरोहि । २ । अवरोहि । ३ । संचारी । ४ ।

इन च्यारों वरनजुत नेसिट । ६३ । अलंकारजुत तत्वादि तीनों बाजेनसों तीनों वृत्तिसों करण धातुके भेदनमें सुंदर रीतिसों वीणामें बजाइये तब तीनों आसारित होय ॥ इति दस शुष्क वाद्य लछन संपूर्णम् ॥

यह मत्तकोकिलाको जो बजायवेको प्रकार हैं। सोहि नकुछि आदि वीणामें बजाइये ॥ इति नकुली वीणामें बजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ आलापिनि वीणाको लछन लिख्यते ॥ आलापिनि वीणाको दंड पहिल वीणासोकिर ॥ लंबो नव मूठिको कीजिय ॥ तामें परिघ दोय आंगुलिकी होय दोय आंगुलको लंबो ॥ आर्थ आंगुलको चोडो ककुम लगाईये ककुमके आर्थ मागेमें विना पटुली होय ॥ जांके कीला काठको होय सा दंड लगाइये ॥ और वा दंडको कीला काठको च्यार आंगुलको लंबो होय बीचमें मोठो होय ॥ या वीणाके तुंबा बारह आंगुलको ऊंचा होय ॥ मुखको विस्तार च्यार आंगुलको होय हांति दांतकी नामि होय या दंडमें उपर निचेंके भागसों पोणा दोय दोय मूठी छोडिकें तूंबा लगाइये ॥ इहां तूंबा दांनुको गाठी तांतसों बांधिये ती तार लगाइये ॥ दंड खेरकी लकडीको दस मूठि प्रमाण कहतहें ॥ इहां तूंबा बांधिवें को कठोर रेसमकी अथवा सूतकी हूं करत हैं । कोउ मूनि ऐसें कहतहें ॥ सि-गरे वीणानके दंड रक्तचंदनकी लकरीके कीजिये ॥

अथ वीणाके वजायंवको प्रकार लिख्यते ॥ छातिके पास तूंबा राखिकें ॥ बांये हांतकों अंगूठा दंडेपें राखियें। बांये हातकी अंगूठा पासकी आंगुलीसों तार दाबि दाहिणें हातसों बजावना बिंदु धातुकी कियासों ॥ वा मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानमें । निबद्ध । १ । अनिबद्ध । २ । गीत गाइये ॥ इति आलापिनी लछन संपूर्णम् ॥

अथ किन्नरी वीणाको लछन लिख्यते ॥ किन्नरी वीणा दोय प्रकारकी हैं एक तो लघु । १ । दूसरी बृहत । २ । अथ लघु वीणाको लछन कहे हैं बांसको दंड तीन विलिस्त । अरु पांच आंगुल लंबो होय । और पांच आंगुली मावे ऐसो मोटो होय ॥ ओर या दंडमें बावर काठको ककुम कीजिये । ककुम पांच आंगुल लंबो ॥ आठ आंगुल चोडो कीजिये । या ककुममें सारे च्यार आंगुल लेवे । दोय आंगुल चोडो बीचमें काछवाके पिठनाई उंची लोहकी

पट्ली लगाइये ॥ ओर गीधके हाड्डीकी भोंगली चटि आंगुली समान मोटि चौदे पांसकी भोंगली कीजिये ॥ गीधकी पांस नहीं मिले तो लोहकी अथवा कांसिकी चोदह भोंगली करि ॥ सो चोदह भोंगली दंडकी पीडमें ॥ दोय सप्तकके चोदह स्वरनके स्थान मोमके वस्त्रसुं चोपि दीजिये ॥ तहां दुसरी सप्तकको निषाद जहां सुद्ध होय ॥ तहां पहली सारि राखिये ॥ धैवतकी सारि वांसें। एक आंगुल उपर राखिये। वासों उपरांत पंचम तें लेकें षड्ज ^तांई। पांच सारि पहले अंगुलसों कछू कछू वधाय वधाय राखिये ॥ ऐसें दोय आंगुलके आंतरे रिषभ राखिये । रिषभसों तीन आंगुलको आंतरे षड्ज राखिये । ऐसें दुसरी सप्तक रचिये ॥ अबं निषाद्तें टेकें षड्ज तांइ । पहली सप्तककी सात सारि । तीन आंगुलतं वधनी कछ कछ ऐसे राखिये । जेसे पहली सप्तकके षइजकों ॥ अरु रिषभकों च्यारे आंगुलको अंतर होय ॥ ऐसें रचिये । इहां एक तुंबा दंड ककुभकें संधिमें नीचं बांधिये ॥ यातें कछुइक बड़ो दूसरी तुंबा तीसरी चोथी सारिके बीचमें दंडके नीचे छेद करि तांत बांधिये ॥ तहां तांतके अग्रभागमें लोहकी टिकडीमें ॥ छेद करि तांतकों अग्रपोहिकें तांतके अग्रमें गाठि दीजिये । सो टिकडी तूंबाके गरमें अटकायकें तांत दंडमें खेंचि दीजिये । तब तुंबा गाढो होय ॥ ऐसं तुंबा लगाइये ॥ ओर मेरुके ठिकाणे तीरकीसी फोय सरिसों कील बनाय ठोकिये तहां हातिके बालकीसी मोटि मोटि लोहकी तांति ककभें बांधिके वा फोयमें धरिकें। एक वा मेरुके उपर ढीलि पटिके कंठमें लपेटिकें फेर वा खंटीको इतनी मरोडीये। जेसें वा तारमें दाय सप्तकके स्वर वरतिवेमें आवे । यह एक तारकी छोटि किन्नरी जांनिये । याको नाम लघ किन्नरी वीणा है। १ | इहां बांये हातकी तीन आंग्रीनसों स्वरके स्थान तार दाबिकें दाहिणें हातसों अंगुठा पासकी अंगुरीसों बजाइये ॥ याहि वीणामें तीन तुंबा लगाइये। तांतको तार तीन बांधिये काठके जबसों बजाइये॥ तब याको बृहत किन्नरी जांनिये ॥ इति किन्नरी वीणाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ देसी बाजेके किन्नरीके तीन भेद हैं तिनके लछन लि-रूपते ॥ लघु । १ । मध्य । २ । बृहत । ३ । इन तीनुनको लछन लिख्यते ॥ जाके तूस उतारिकें छह जब बराबर आडे धरिये ॥ इतीने प्रमान आंगुल एक होय ऐसे पचास आंगुलको दंड होय । वामें छह आंगुलकी परिघ कीजिये यह अंगुल चोडो छह आंगुल लंबो । अयदंडमें लगाइये । अयके दंडके मध्यमें च्यार आंगुल लंबो होय। दो आंगुल चोडो ककुभ लगाइये। वा छह आंगुलके अग्रमें ॥ कछ्वांक पीठकी तरह बीचमें उंची लोहकी पटुली लगाइये ॥ वीणांके मस्तकतें दोय आंगुल नीचें एक आरपार छेद करि तहां ढिलि खुटि राखिये । वासों ककुभ बांधिये ककुभसों उंचो शिरके नीचे एक मेढ बांधिये ॥ फेर वामें जेसें जहां चाहिये ॥ तैसें स्वरके स्थान मोमसों चोदह सारि राखिये ॥ अथवा तेरह सारि राखिये ॥ ओर पहलीकी सिनांई तूंबा तीन लगाइये बजायवेको लोहको अथवा तांतिको तार लगाइये ॥ अनुक्रमसों दोऊ सप्तकके स्वर लगाइये ॥ ऐसें बृहत किन्नरी जांनिये ॥ १ ॥ ओर मध्यमा किन्नरीको तियालीस । ४३ । आंगुलको दंह कीजिये ॥ दीय जो घाटि छह आंगुलकी परिव कीजिये ॥ सांडेतीन आंगुलकों लंबो कक्भको अग्र कीजिये॥ इहां दंड सीरके मध्यमें, तीसरे अंगुलमें तीहांही घाटकी तीन अंगुलको ककुभ कीजिये ॥ ओर दंडक अंतमें एक आंगुल छोडिकें मेढ लगाइये ॥ फेर वहां स्वरनके ठि-कानें । सारि राखिये, पहलिकीसि, तार बांधिकें दान सप्तकके स्वर वरतिये । एसें मध्यम किन्नरी वीणा जांनिये। २। ओर छघु किन्नरी वीणामें पेतीस आंगुलका दंड करिये । तीन आंगुलको लंबा चेहो ककुभको अय कीजिये । पहली वीणाकी तरह ककुमेंमें ठोकि दीजिये । ओर पहली रितिसों स्वरके स्थानमें सारि राचिये तूंबा बांधिय छोहके तार छगायके स्वर बजाइये॥ किन्नरी वीणाक अनेक भेद हैं। उन सबनमें पचास अंगुलतें वधती तीस आंगुलतें घाटि दंड लंबो नहीं कीजिये ॥ सास्त्रके प्रमान दंड नहीं करे तो । अनुरंजनकी धुनि नहि होत हैं ॥ ३ ॥ इति तीन प्रकारकी किन्नरी वीणा संपूर्णम् ॥

अथ वीणानमें राग वजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ तहां मध्यमादि रागनिके, आलापनिकी, च्यार स्थान कहत हें ॥ पहली सप्तकको मंद्र मध्य स्वर स्थाई कीजिये । १। अथवा, चढी मध्यम स्वर स्थाई होय ॥ फर आरोह कमसों पंचम स्वरसों लेके, मध्यम प्रामके षड्ज ताई ॥ धैवत छोडिकें तीन स्वरकों आरोह कींनिये ॥ फेर मध्यम स्थानके पड्जतं छेके अवरोह कमसों, पहली सप्तकके, मध्यम स्वर तांई उच्चार कीजिये । इहां धैवत स्वर लीजिये तो रागबी-गरे नहि। अरु जो नहि लिये, तोहु, राग बिगरे नहि। ऐसे अवरोह करि मध्यम स्वरमें आवे । तब मध्यमादि रागनिको पहलो स्थान होय । फेर आरोह कमसों । फेर पंचम निषादको उच्चार करि । फेर अवरोह कमसों निषाद धैवत पंचमको उच्चार करि मध्यम स्वरमें आवे तब दूसरो स्वरस्थान जांनिये। २। फेर पंचमतें छेकें मध्यमकी सप्तकके छेकें गांधारतांई ॥ आरोह करिये ॥ ओर मध्यमर्सो गांधारतो अवरोह क्रमसों पहले मध्यममें आवे तब तीसरी स्वर-स्थान जांनिये । ३ । ओर पंचमतें छेकें मध्यमकी सप्तककें मध्यमतें अवरोह कमसों पहले मध्यममें आवतमें चोथो स्वरस्थान जांनिये। ४। इन च्यारों स्वर स्थानमें आरोहमें ॥ धेवत छोडि दीजिये । अरु अवरोहमें धेवत लीजिये ॥ अथवा नहि लीजिये। इहां दूसरो तीसरो चोथो स्थान वरतिकें पंचम निषाद षड्ज स्वरकों आरोह कमसों उच्चार करि अवरोह कमसों या षड्जर्ते मध्यम स्वरमें आवनो सब ठोर । इहा सब रागनके, वरतावमें जहां जो स्वर नहि होय॥ तहां अवरोह कममें वा स्वरकों छोडिकें यातें आगलो स्वर लीजिये ऐसें कमसों आरोह कीजिय ॥ ओर अवरोहमें छोटे स्वर लीजिये अथवा नहि लीजिये । यह रिति सब रागनमें जांनिये ॥ इति मध्यमादि रागनिके बजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ बंगाल राग बजायंवको लछन लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई करि । अवरोह कमसों गांधारपें आवे । फेर गांधारतें निषादतांई आरोह करे । फेर निषाद तांई अवरोह करि स्थाई स्वरनमें आवें । फेर निषादतांई आरोह करि निषादतें । अवरोह कमसों स्थाईमें आवे तब बंगाल राग उपजे ॥ इति कंगालके उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ भैरव रागके बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाई करिके अवरोह कमसों स्थाईन । तीसरे चोथे स्वर तांई जायकं । फर बाहातें स्थाई तांई आरोह कीजिये ॥ फर स्थाई तें अवरोह कमसों तीसरे स्व-सको उच्चार करि, स्थाईकों उच्चार कीजिये तब भैरव राग उपजे। वीणामें भैर- वको स्थाई मंद्र निषाद हें ॥ इति भैरव रागके उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ वराटी रागंक उपजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाई कीजिये। फर अवरोह कमसों पंचमको उच्चार करि धैवततें लेकें मध्यमकी सप्तकके गांधार होय ॥ आरोह करि मध्यमकी सप्तकके रिषभको ओर पहली सप्तकके निषादकों दोय वर उच्चार कीजिये ॥ फर धैवतकों उच्चार कीजिये ॥ कर धैवतकों उच्चार कीजिये ॥ तब वराटी राग उपजे। वीणामें वराटिको स्थाई रिषभ है ॥ इति वराटी रागंक उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ गुर्जरी रागके उपजायंवको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानके रिषभको स्थाई करि तास्थाईतें नीचले षड्जकी निषादतांई ॥ अव-रोह करि, फेर रिषभ तें लेकें मध्यम तांई आराह कीजिये ॥ फेर या मध्यमतें लेकें, निषादतांई, अवरोह कीजिये ॥ फेर निषादतें, अवरोह कमसों रिषभ तांई उच्चार कीजिये तब गुर्जरी रागको यह स्वर उत्तरगांधारमें जांनिये ॥ इति गुर्जरी रागको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ वसंत रागके। प्रकार लिख्यंत ॥ जहां मध्यम ग्रामके पड्जकों स्थाइ करिकें । अवरोहमें पड्जतें तीसरो स्वर धैवतको उच्चार कीजिये ॥ फर तातें नीचलें पंचमको उच्चार कीजिये । फर मध्यम स्थानके रिषभेतें लेकें मध्यम ताई आरोह करि । या मध्यमतें रिषभ ताई । अवरोह कीजिये । फर पड्ज स्वरमें न्यास कीजिये । तब वसंत राग उपजे । ओर वीणामें वसंतको ग्रहस्वर रिषभेहें ॥ इति वसंत रागके प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ धन्नासि राग बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानको षड्ज स्वर करिकें ओर मध्यम स्थानके गांधार । १ । मध्यमको ।२। उच्चार कीजिये फेर रिषम । १ । गांधार । २ । को उच्चार किर मध्यम । १ । पंचमको उच्चार कीजिये । फेर पंचमतें होके ओर रिषम छोडिकें पहली सप्त-कके निषाद तांई । अवरोह किर यह स्वरमें ॥ पीछे मध्यम स्थानके गांधार । १ । मध्यम । २ । को उच्चार किर फेर गांधारकों उच्चार कीजिये ॥ फेर

मह स्वरं षड्ज हे ताको उचार कीजिये ॥ तब धनाश्री राग उपजे । वीणामें धनाश्रीको स्वर पंचम हे ॥ इति धन्नासि रागको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ देशी रागके उपजवको प्रकार लिख्यते ॥ जहां रिषम स्वर मध्यम स्थानको स्थाइ होय ओर गांधारको उच्चार करि ॥ एक छिन विलंब करि फंचमको कंप कीजिये आंदोलनामें गमक सों फेर मध्यम । १ । गांधारको । २ । उच्चार कीजिये फेर यह रवरों निचले दोय स्वरकों अवरोह करि ॥ फेर आरोह करि । फेर आरोह कममें गांधारको उच्चार कीजिये ॥ फेर रिषममें उच्चार कीजिये तब देसी राग हो । ओर गांधार स्वरमें देसी रागकों यह स्वर कहे हैं ॥ इति देशी रागको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ देसाख्य रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानको गांधार स्थाइ होय । फेर अवरोह कमसों निषाइ उच्चार किर ॥ या निषाइतें पंचमतांई आरोह करे फेर पंचमतें निषाइ तांई अवरोह किर मध्यम स्थानके पड्ज तांई उच्चार किर गांधारमें न्यास कीजिये तब देसाख्य राग उपजे । या देसाख्य रागको वीणामें मध्यम स्वर यह हैं ॥ इति देसाख्य राग प्रकार संपूर्णम् ॥

याहि कमसों ओरहु रागनके स्थाइ स्वर देखिकें ग्रह अंस न्यास वर-तिये। तब ये रागके न्यारे पकार पगटे होत हैं। इति रागांग रागनके बजा-यवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ भाषांग रागनके बजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ तहां प्रथम (डॉबकी) भूपाली ताको प्रकार कहे हें । जहां पध्यम स्थानको षड्ज स्वर मह करिकं ॥ आरोह कमसों रिषमको उच्चार कीजिये । फर पहली सप्तकके धैव-तको उच्चार करि एक छिन विलंब करि मध्यम स्थानके मध्यमको उच्चार कीजिये । पीछे पहालि सप्तकके धैवत पंचमको वा मध्यम स्थानके रिषम पड्ज अवरोह करि ताइ धैवतको वा रिषमको उच्चार कीजिये । फर स्थाइ मध्यममें न्यास कीजिये । तब भूपाली राग उपजे । भूपाली रागमें मध्यम स्थानकों मध्यम स्थानकों मध्यम स्थानकों प्रकार स्थाइ जांनिये । इति भूपाली रागको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ प्रथम मंजरीको प्रकार लिरूयते ॥ जहां मंद्रस्थानको पंचय

स्थाइ होय । या पंचनसों छेकें मध्यम स्थानको मध्यम तांई आरोह कीजिये । या मध्यमतें अवरोहमें रिषभको विछंब करि । षड्जको कंप करि पंचम तांई । अवरोह करि पंचममें विश्वाम कीजिये । तब प्रथम मंजरी उपजे याको वीणामें स्थाइमें मंद्र गांधार जांनिये ॥ इति प्रथम मंजरीको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ कामंदिका प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्वर स्थाइ करि । तासों पहलों स्वर पंचम ताको आंदोलना मार्गमें कंप कीजिये । फेर धैवतसों . लेकें मध्यम स्थानके रिषमस्वर तांई वा गांधारतांई आरोह करि । या गांधारतें पहलि सप्तकके मध्यनतांई । अवरोह करि मध्यममें विश्वाम कीजिये तब कामोद होय । या कामोदको मध्यम स्वर यह है । यह कामोदका प्रकार हैं । इति कामोदको प्रकार संपूर्णम् ॥

ऐसो रितीसों पकार भाषांग राग जांनिये । इति भाषांग राग प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ कियांग रागनको लछन लिख्यते ॥ राम कित । राम किल जहां मध्यम स्थानको पड्ज स्वर ग्रह किर । या पड्जेतं छेकें मध्यम स्थान तांई वा गांधारतांई ॥ आरोह किरकें फेर मध्यम स्वरकों विछंब किर या मध्यमतें । अवरोहमें गांधार । १ । रिषम । २ । को थोरो उच्चार किर पड्जेमें न्यास कीजिये ॥ तब रामकिल उपजे ॥ इति रामकिल प्रकार संपूर्भम् ॥

अथ गोडकृति रागके बरतिवेको प्रकार िल्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई करि ॥ अवरोह क्रममां षड्जकों उच्चार करि या पड्जतें गांधार ताई अवरोह करि पंचमको उच्चार कीजिये। या पंचमतं षड्जतांई अवरोह करि या षड्जतें गांधार तांई आरोह करि या गांधारकों पंचम कंप करिकें मध्यममें न्यास कीजिये॥ तब गोडकृति राग उपजे। या गोडकृतिको वीणामें स्थाई पंचम हें॥ इति गोडकृति रागके प्रकार संपूर्णम्॥

अथ देवछिति रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्थानकों पहुज स्वर ग्रह करि पहली सप्तकके निषादको उच्चार करि पहुजको उच्चार कीजिये ॥ पीछे मध्यम स्थानकें गांधारमें मध्यमको उच्चार करि ॥ पंचम स्वर कंपाय ॥ मध्यमको उच्चार करि ॥ पंकर

रिषमको कंप करि गांधार बजाय ॥ पड्जमं न्यास कीजिये ॥ तब देवस्रति राग उपजे ॥ वीणामें देवस्रतिको मध्यम स्वर न्यास कीजिये ॥ इति देवस्रतिको पकार संपूर्णम् ॥ ऐसं कियांग राग अनुक्रमसों वरितये ॥ इति कियांग रागि संपूर्णम् ॥

अथ उपांग रागको प्रकार लिख्यते॥ तहां प्रथम भैरवी कहे हैं॥ जहां धैवत स्थाई किर अवरोह कमसों पंचमको उच्चार किर मध्यम सों धैवत तांई उच्चार किर या धैवतसों मध्यम तांई अवरोह किर उच्चार कीजिये॥ फेर पहली सप्तककें धैवतसों लेकें मध्यम स्थानके पड्ज-तांई आरोह किर । या पड्जसों मंद्र सप्तककें गांधार तांई अवरोह किर मध्यमकों उच्चार कीजिये फेर धैवतकों कंपाय निषाद । १ । पड्ज । २ । को उच्चार किरिये। निषादकों फेर उच्चार कीजिये॥ फेर धैवत पंचमको उच्चार किर मध्यममें न्यास कीजिये तब भैरवी होय। या भैरवीको वीणामें गांधार स्वर स्थाई है॥ इति भैरवीको प्रकार संपूर्णम्॥

अथ छायानहको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मंद्रस्थानकों षड्ज यह किर या पड्ज तें मध्यम स्थानके पड्ज ॥ तांई आरोह किर । या मध्यम स्थानके पड्जतें पहेंछे पड्ज तांई अवरोह कीजिये ॥ फेर पड्ज । आरोह कमसों पंचममें आवे या पंचमको विलंब किर धैवतकों उच्चार किर ॥ धैवतसों अवरोह कमसों पड्जमें आवे ॥ तब छायानह उपजे ॥ इति छायानह प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ बहुली रामकीको प्रकार लिख्यते ॥ तहां मध्यम स्थानकों पड्ज ग्रह किर । रिषम । १ । गांधार । २ । को उच्चार किर ॥ फर पंचम धैवतकों उच्चार किर ॥ इन दोनुको अवरोह कीजिये ॥ फर गांधार तें पड्जतांई । अवरोह कीजिये ॥ फर मध्यम गांधार स्वरकों अवरोह किर । फर मध्यम स्वरकों कंप किर पंचम स्वरकों उच्चार किर पड्जमें न्यास कीजिये ॥ तब बहुली रामकी उपजे ॥ इति बहुली रामकीको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ मह्रार राग उपजायवेको प्रकार-लक्ष्म लिख्यते ॥ तहां धैवत स्वर स्थाई करि निवाद स्वरमें विलंब होये ॥ ओर धैवततें अवरोह कममें ॥ धैवतको पंचाको उच्चार किर मध्यम स्वर छोडिकें गांधार स्वरकों उच्चार कीजिये। एक छिन विलंब किर फेर गांधारतें लेकें ॥ मध्यम स्वर छोडि मध्यम स्थानके षड्ज तांई अवरोह किर । एक छिन विलंब कीजिये। फेर निचिले निषादकों थोडो उच्चार किर फेर धैवतसों लेकें । मध्यम स्थानके षड्ज तांई ॥ अवरोह किर धैवतकों उच्चार किर धैवतमें न्यास कीजिये ॥ तब महार राग उपजे ॥ या राग वीणामें पंचम स्वर स्थाई जांनिये ॥ इति मह्रार राग प्रकार संपूर्णम ॥

अथ गौड कर्णाट उपजायवेको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई होय ॥ ओर मध्यम स्थानके षड्जतें लेकें मंद्रस्थानके मध्यम ताई अवरोह करि ॥ केर पहली सप्तककें धेवनकों उच्चार करि । या मंद्र-स्थानसों लेकें मध्यम स्थानके रिषम ताई आरोह करि । कर मध्यम स्थानके मध्यमकों उच्चार करि ॥ मध्यमकी सप्तकके गांधारकों विलंब करि ॥ मध्यम स्थानके षड्जमें न्यास कीजिये ॥ तब गौड कर्णाट राग उपजे ॥ याको वीणामें स्थाई स्वर पंचम हं ॥ इति गौड कर्णाट प्रकार संपूर्णम ॥

अथ तुरुष्क गोंडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ तहां निषाद स्वर मह
करि । मध्यम स्थानके षड्जको उच्चार करिये । फेर आरोह कमसों मध्यम
स्थानके रिषम गांधारकों उच्चार करि मंद्र निषाद मध्यम स्थानके षड्जकों
उच्चार कीजिये ॥ या षड्जतें पहले मध्यम तांई अवरोह करि ॥ मंद्र रिषमकों
उच्चार करि मंद्र मध्यमकों उच्चार कीजिये ॥ फेर मंद्र पंचमकों उच्चार
करि धैवतकों उच्चार कीजिये । फेर मध्यम स्थानकें षड्जकों उच्चार करि ।
गंद्र निषादमें न्यास कीजिये ॥ तब तुरुष्क गौड राग उपजे ॥ याको नाम
मालवी कहे हैं । याको बीणामें स्थाई स्वर पंचम हैं ॥ इति गौड तुरुष्क राग
उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अय द्राविड गौडको उपजायवेको प्रकार समग्र लिख्यते ॥ जहां मंद्र निवाद मह करि मध्यम स्थानके षड्जको उच्चार करि ॥ रिषमको छोडिकं गं.धारते छेकें पंचम तांई आरोह कीजिये ॥ या पंचम स्वरतें गांधार तांई अवरोह करि । रितमकों कंप कीजिये ॥ फेर मध्यम स्थानके षड्जकों उच्चार करि ॥ मंद्र निषादमें उचार करिये । तब दाविड गीड राग उपजे ॥ याकी सालक हू कीऊ कहत है । या रागकों स्थाई पंचम हैं ॥ इति दाविड गौड रागको प्रकार संपूर्णम् ॥ ऐसें ओर उपांग राग जांनिये ॥ इति उपांग राग प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ देसी रागनमें ललित राग बजायवेको प्रकार लिख्यते॥ जहां धैवत स्वर स्थाई करि । या धैवतमें मंद्र मध्यमताई अवरोह करि मंद्र रिष-भकों उच्चार कीजिये ॥ फेर गांधारकों उच्चार करि ॥ मंद्र पंचमको उच्चार कीजिथे ॥ फेर धैवतमें विलंब करि फेर पंचको थोरो उचार करि ॥ फेर पंचमको मध्यमको उच्चार करि॥ पंचमको विलंब कीजिये ॥ फेर गांधारका उच्चार करि ॥ अवरेाह कमसों ॥ रिषभ षड्जकों उच्चार करि कंपजुत गांधारेमें न्यास कीजिये ॥ तब ललित राग उपजे । या रागके वीणामें गांधार स्वर स्थाई है ॥ इति ललित राग प्रकार संपूर्णम् ॥

ऐसें यह कितनें हु राग बुद्धिविलास किरवेकों कहे हैं ॥ या रि-तसीं जांनिये ॥ किनरीवीणा जो ग्रहस्वर होय तामें अंस स्वरको विचार करि न्यास स्वरपर्यंत आलाप कीजिये । जैसें राग पगट होय तैसें आरोह कर्में स्वर वरतिय । इहां किन्नरि आदि वीणामें जो जो स्थानके जे जे स्वरसीं राग प्रगट होय वहि स्वर उन स्थानकके वंसी आदि पोंनक वाजे हैं तिनमें वरतिये। जब राग पगट होय ॥ इति किन्नरी वीणामें राग वरतिवेको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ पिनाकी बीणाको लखन लिख्यते ॥ तहां पिनाकी बीणाको दंड धनुसकें आकार कीजिये ॥ सो चाठिस आंगुलको लंबो कीजिये ॥ ओर दंड चोडावमें उपर नीचे पतलो होय । मध्यम चोडो सवादोय आंगुल कीजिये । ओर वा दंडके निचले भागमें । एक आंगुलके प्रमान अग्रमिहि कीजिये उपरहे भागमें सवा आंगुलके प्रमान अग्रमिहि कीर्जिये ॥ यह अग्रको नीचलो भाग अधर शिखा ऊपरको आयको भाग उपर शिखा जांनिये ॥ इन दोन अयर्ने एक आंगुलके दीर्घ पोणा पोणा आंगुलकी जिनके घुंमी होये। ऐसें दोय मुहरा उनमें लगाइये । उन दोनु मुहरा लगाये पीछे पाँणा दोय दोय आंगुलको उपरले नीचले छेदको विस्तार जानिये। इन दोन् छेदनमें सुंदर बजायवे लायक तांतको तार बांधिये । ओर या दंडके नीचे पहलीकीसिनाई तुंबा बांधिये । या वीणाको

क्यानसो बजाईये। सो कमानको प्रमाण कहे हैं। बजायवेकी कमानको दंड। इकईस आंगुलको लीजिय ओर या कमानकी मूठिमें विस्तार तीन आंगुलको जांनिये। निचलो अग्र एक आंगुलको प्रमान छो। डिकें। या बजायवेकी कमानमें घोडाकी पूछके बाल बांधिय। या नाकी पित्रीणाको नीचलो तूंबा दोय पातनमें राखिये। वाकी आधार सिखाधरतिमें राखिये। उपरलो तूंबा कांधेपे राखिये। बांई कांखिमें तूंबाको दाबि। बांये हांतसों स्वरके स्थान तार दाबिकें। दाहिनें हातमें। या कमान लेकें योकें घोडांके बाल तांतिपें रगडीये। तब स्वर उपजे। इहां स्वरनके स्थानकमें राल लगाईके पड्जादि स्वरतें स्वरनकों रचाईये। इति पिनाकी वीणाको लक्छन मंपूर्णम्।।

अथ निसंक वीणाको लछन लिख्यते ॥ जहां वीणाके ज्यार हात-की लंबि तांति लेकें पाको एक छोर वीणाके कहांके निचे बांधिये । फेर उपरले भागमें । मेरुके ठिकाणेके काठमें डोड हात तांति बजायवेके बांधिये ॥ ओर वीणाके दंडके बिचमें ओर काठ लगायकें ॥ वह डोड हातकी बाकीजो तांत ताको अम्र बांधिये वा काठको प्रमान । डोड हातको जांनिये ॥ सो काठ बांई जांध पिंडीके संधिमें दाबिके वीणाको निचलो भाग धरतींमें राखिये ॥ ऐसें वीणा धारण करि बांथे हातसों स्वरनकें स्थान तार दाबिकें पिनाकी वीणाकी सीनांई दाहिनें हातमें कमान लेकें बजाईये तहां स्वर दाविवेकों बांये हातमे चांमकां दसता पहिरवा सों स्वरके तारस्थन दाविये ॥ ऐसें जहां होय सो निसंक वीणा जांनिये । तब या निसंक वीणामें मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थाननके स्वर जुदे जुदे पगट होय हैं ॥ इति निसंक वीणाको लछन संपूर्णम् ॥

इहां शास्त्रकी रीत किहहें। सो यह तत वाद्य श्रोतानकों अनुरंजन करें जैतें आछो स्वर निकसे तैसें आपनी वुद्धिसों विचारिये। यहां मुख्य भेद वीणाके कहेंहें॥ इनकी रितिसों। ओरहुं अनेक वीणांके भेद जांनिये॥

॥ श्लोक ॥ यो वीणावादनं वित्ति तत्वतः श्रुतिजातिवित् ।

ताल पात कलाभिज्ञः सोक्कशान्मोक्षमृच्छति ॥ १ ॥ अर्थ इनको कहेहें ॥ जो पुरुष वीणा बजाय जानें। ओर बाइस श्रुति- नकी जातिकों तत्व जानें चंचतपुर ताल । आदिनकी सन्दसहित किया । ओर विना सन्दकी ितयाकों जानें । से। बिना पिश्विनही मुक्ति पावे ॥ इति तत बाजेको लखन संपूर्णम् ॥

अथ आनवद्ध वाजेको नाम लिख्यते ॥ पटह यांकों हो किकमें ढोल कहतहें । १ । हुडका । २ । करटा । ३ । मईछ । ४ । त्रिप्ती । ५ । डमरू । ६ । रुंजा । ७ । काहुडा । ८ । सेलुका । ९ । घड । १० । डकुटी । ११ । तुका । १२ । ढमस । १३ । दुंडुमि । १४ । निसाणकी । १५ । मेरी । १६ । ऐसं बाजे अनेक ओरहु यारीतिके जांतिने ॥ इन बाजेनके चर्मसों मुख मंढे जात हें । योतं इनकों आनवद्ध कहें ॥ इति आनवद्ध बाजेके नाम लक्छन संपूर्णम् ॥

अथ घन बाजेके नाम लिख्यते ॥ ताल । १ । कांस्य ताल । २ । घंटा । ३ । जयवंटा । ४ । पटकन्ना । ५ । एतें ओरहूं घन बाजेंके भेद जांनिये ॥ इति घन बाजेके भेद लखन संपूर्णम् ॥

अथ सुषिर बाजेके नाम लिख्यंत ॥ वंसी । १ । मुहरि । २ । पाविका । ३ । पावक । ४ । मुरली । ५ । तितिरी । ६ । संख । ७ । काहल । ८ । संग । ९ । ऐसे ओरहं सुषिर बाजे अनेक होतेहं ॥ इति सुषिर बाजेके नाम संपूर्णम् ॥

अथ च्यार प्रकारको बाजेकी क्रियाभेदें लिम्ब्यंत ॥ एकहस्त । १ । दिहस्त । २ । कुहूपा घातज । ३ । गोलकाहनत । ४ । धनुराघषे संभव । ५ । हूत्कार जांनित । ६ । बहु रंगीक । ७ । ये जांनिय ॥

अथ इन भेदनको लखन लिख्यते ।। विवाहमें। १ । परिक्षामें । २ । उत्सावमें । ३ । दानकर्ममें । ४ । जहां ओरहूं उछाह होय । मंगलिक सगरे काममें । जो बाजो एक हातसों बजे सों एकहस्त जांनिये । १ । जो दोय हातसों मृदंगादिक बाजेसों दिहस्त जांनिये । २ । जो काठके डंका सों बजाइये । नगारासों कुडया घात जांनिये । ३ । जो गोलक कहिये । काठको जवात सो बजाइये । सो सारंगी आदिक धनुराघर्ष संभव जांनिये । ४ । जो पाजो मुखके योनिसों बजाइये ॥ सो मूरिछ आदिक भूतकार जांनिये । ५ । जो

ताल झांझिबाजे आपसमें बजाइय। सो बहु रंगीक जांनिये। ६। इति वाद्य भेद् लखन कहेहे ॥

प्रथम पटहके दीय भेद हैं ॥ देसी । १ । मार्गी । २ । जहां मार्गिको **उछन** छिख्यते ॥ जाको विस्तारमें पारिध अठाइस अंगुलकी लंबी होये ॥ ओर मध्य देस साठि आंगुलको हाय ॥ तहां दाहिणें मुख विस्तारमें ॥ साडेग्यारह आंगुल होय ॥ बांये मुख विस्तारमें साडिद्स आंगुल होय ॥ ये दोऊ मुख गोल कीजिये ॥ नहां दाहिणं मुखरें लोहको दंड कडा हासिलिके ठिकाण पेहराईये ॥ ओर बांई तरफ मुखपें काठकी हांसिकी पेहराईये ॥ सो बांई तर-फकी काठकी हासिछि छह वरखको छडो मारनो होय ताके घोधडाकीनसासी वा शालर्सी लपेटिये ॥ ऐसे जेवर करवाइये मुख पहराईये ॥ या बांये ओर बांये कमलपमें । सात छेद करि तें च्यारों तरफमें । तिनमें मिहि होरा सात रेसमके बांधि उनमें कलस सात । ७ । छोटे छोटे च्यार आंगुल लंबे सोनेके तथा दावेके तथा पीतलके वा लेहिके बांधिये ॥ फेर तीन आंगुलकी चेहिी लेहिकी पिट आछि लंबि बनाये । वह हासिटि जाग ॥ या वास्ते ढोलकी राविके वास्ते ढोलकी उपर च्यारों तरफ लपेटिये ॥ फर चोपद पसूको चाम जबरो मोटो लेकें वी मुख मडिये सो बांये मुखको कंबल लेाहकी पटि जवर होये तेसें मिहिये ॥ फेर दाहिणें मुखपें । सुक्ष्म चांमसों मिहिये । बाकी जो बांई तरफकी तरह मर्डिय फेर दांहिणी हांसिलिमें छेद करि । झबर डोरी डाबीके । बांई हां-सिटिके छेद्में काढिये ॥ फेर वांहि डोराकुं छेकें कलसाल गाय दांहिनि हासिटि-के उपर करि छेदनमें गाढि बांधि दीजिये। ये कलसा चढाविये उतारिवेकों काम कहेहें ॥ इनिह कलसांसीं पड्जादि स्वर जानें पर हैं ॥ याको डोरीसीं वांधिगरेमें लटकाय बजायवे याको लौकिकमें ढोल कहते हैं ॥ इति मारगी पटइ लखन संपूर्णम् ॥

· अथ देसी पटहको लछन लिख्यते ॥ इचोड हातको लंबो होय सात आंगुलको दांहिनों मुख होय । साठि छह आंगुलको बायो मुख होय । ओर पस्के आछे चांम होय तासों मढे ॥ ओर मारगी ढोलकी तरह बनाइमे । मारगी । १ । देसी । २ । ढोल दोनू खेरके काठके की जिये । मा

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ४९

देसी ढोल जेसा बडा अथवा छोटो ढोल आपनी इछामों कीजिय । जैसी चांह तैसी कीजिय । मारगी । १ । देसी । २ । पटहके । ३ । भेद हैं । उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३ । जो सास्त्रमं कहां सो प्रमानसों उत्तम जांनिये । १ । या प्रमानसों बारह घाटि होय । सो मध्यम जांनिये । २ । या प्रमानसों बारह घाटि होय । सो मध्यम जांनिये । २ । या प्रमानसों छटे वांट घाटिसों अधम जांनिये । ३ । अथ ढोलके पाठाछर लिख्यते ॥ क । ख । ग । घ । ट । ट । ट । ढ । ण । त । थ । द । ध । न । र । ह । यह सोले अछिर हें ॥ इनमं बजायवेमं बोल रिचये । किण । खण । जिण । घण । टण । ठण । तण । थण । दण । घण । हण । या भांतिसों इन सोलहें अछिरसों अनेकपाटि कीजिये । याको इंकासों बजावे सो कहे हैं ॥ अठारह आंगुल लंबो ॥ अग्रजाको पतरो होय पीठजाको चढतो होय ॥ ऐसों दंड उतार चढावकों किर वांके पकरवेकी टोरसों मोमको कपडो लगाइये ॥ तहां हातसां पकिर बजाइये ॥ पटहको बजावे तब । पद्मासन किर बेंट । दोनु जांघनें ढोलकों रिवये । इंकासों बजावे । राजसभामें सबटोर मंगलकारिजमें बजावे ॥ इति पटह लखन संपूर्णम ॥

अथ पाठाछर सोंलह कहे तिनके उलंटपलटे ते अनक पाट होत है ॥ तहां श्रीशिवजीके पांचा मुखतं पाट उपने हे तिनके नाम भेद लिख्यते ॥

प्रथम सद्योजात मुखसों नागवंधन पाट भयो । १ । वामदेव मुखसों स्वस्तिक नाम भयो । २ । अद्योरा मुखसों अलग्न नाम भयो । ३ । तत्पुरुषसों शुद्धि नाम भयो । ४ । इशाना मुखसों । समस्विलत नाम भयो । ५ । यह पांचों पाट सिगरे पाटनमें मुख्य हे । इन पांचा पाटनके देवता कहे हैं । पहलीको देवता । ब्रह्मा । १ । विष्णु । २ । शिव। ३ । सूर्य । ४ । चंद्र। ५ । ये अनुकरमसों पांचो पाटके देवता जांनिये ।

अथ नागबंधनके सात भेद कहे हैं ।। टनगिन गिननगि। याको नाम नागबंध है । १ । ननगिड गिडद्गि । याको नाम पवन हैं । २ । गिड गिडद्ग्थ । याको नामण कहें । ३ । किटतत । याको नाम एक सर हें । ४ । नखु नखु । याको नाम द्विसर हैं । ५ । खिरतिकट । याको नाम संचार हैं ।६। थोंगि थोंगि। याको नाम विक्षेप हैं । ७ । इति नागबंधन भेद संपूर्णम् ॥

- अथ दूसरो स्वस्तिक के भेद लिख्यते ॥ ततिक हिन । याको नाम स्वस्तिक कहे हैं । १ । थो हंता । याको नाम विलकोहल । २ । थोंथों गोंगों । याको नाम कुंडलि विक्षेप । ३ । थोंगिन थोंगिन थोंगिन । याको नाम फुल विक्षेप । ४ । थोंगिनतत्ता । याको नाम संचारिविल्खी । ५ । किटथोंथों गिनखें खें । याको नाम खण्ड नागवंध । ६ । टकु । झेंझें । याको नाम प्रक हैं । ७ । इति स्वस्तिक के सात भेद संपूर्णम् ॥
- अथ अलंभके सात भेद लिख्यते ॥ नन गिडगिड दगिदा । याको नाम अलंभ हैं । १ । दग्थरिक दग्थरिक । याको नाम उत्सार हैं । २ । तिक धिकि तिक धिकि । याको नाम विश्राम कहे हैं । ३ । टगुनगृ टगुटगृ । याको नाम विषमखली । ४ । खिरितृ खिरितृ । याको नाम सरी । ५ । खिरि खिरि । याको नाम स्पृरी । ६ । नरिकत्थरिक । याको नाम स्पृरण । ७ । इति अलंभके सात भेद संपूर्णम् ॥
- अथ शुद्धिके सात भेद लिल्यंत ।। दिरिगिड गिडदिगिदा । याको नाम शुद्धि । १ । टटकुटट । याको नाम स्वरस्फुरण । २ । ननगिन खरिखिर । याको नाम उच्छल । ३ । देखें देखें खे । याको नाम वलत । ४ । थों गिनगि थों गिनगि । याको नाम अवट । ५ । तत्ता । याको नाम तकार । ६ । धिधि याको नाम पाणिक्यवली । ७ । इति शुद्धिके सात भेद संपूर्णम् ॥
- अथ समस्वितिके सात भेद लिख्यते ॥ तझें तझें झें । याकी नाम सम-स्विति । १ । गिरिग्ड गिरिग्ड । याको नाम विकट । २ । कण कणिक । याको नाम सहस । ३ । धिधि किटकी । याको नाम विलित । ४ । दिगिनगि दिगिनगि । याको नाम अडुखली । ५ । धरकट धरकट । याको नाम अनुछल्ला । ६ । दोनकट दोनकट । याको नाम खुन्त । ७ । इति शिवजीके पांची मुखके सात भेद हैं ॥ तिनके पंतिस भेदके हस्तपाठ संपूर्णम् ॥
- अथ नंदिकेश्वरके मुखसों निकसं च्यार पाठाक्षर तिनके नाम लेक्यते ॥ कोणाहव । १ । संभात । २ । विषम । ३ । अर्धसम । ४ ।

द्वितीय वाधाध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ५१

य च्यार जांनिये ॥ खुंखुंधिर खुंखुंधिर कर गिड कर गिड ॥ याको नाम कंगणाहत । १ । जहां चटी अंगुरी अंगुठासों बाकी अंगुरी छो। डिकें बाजो डंकासों अक्षर बजाईये सां कोणाहत जांनिये ॥ दरगिड दरगिड गिरि-गिडद दाणांकिट मटटकु ॥ याको नाम संभ्रांत । २ । दन्हें दन्हें खुंखुं दन्हें ततिक ततिक । याको नाम विषम । ३ । जहां पंजांक कंपसों ओर आंगुरीकी चालक कंपसों । अक्षरके अनुसार बजावे । सो विषम जांनिय । ३ । ददगिद गिगिरिकिटदगि थों थों गिदथोंगिद । याको नाम अर्थ सम । ४ । जहां कछूइक अंगको कंप लीजिये । सक्छूक विनां कंपसों मूधी आंगुरीसों अक्षर अनुसार बजाइये । सो अर्थ सम जांनिय ॥ इति नंदिकेश्वरके मुखां च्यारों हस्तपाठ मंपूर्णम् ॥

॥ हस्तपाठ २१ ॥

- १ उत्फुल्ल कन्हे कन्हे जो नखनसों अक्षर बजाईयं ॥ सो उत्फुल जांनिये । १ ।
- २ खलक दांगिड गिड गिदा । जहां अंगुठा फलाय सुकचुंचं गमककी मुदासों या न्यारि न्यारी अंगुठासों अक्षर अनुसार बजाईये। सो खलक जांनिये।२।
- ३ पाण्यन्तरिकुट्टक दगिडदां खिरक्रदां खिरक खिरक्रदां खिरखिरदां गिडदां। जहां दाहिणे हाथके अंगुटा पासकी अंगुरी अंगुटा इन दोनुनसों अक्षर बजाइये ओर बांये हातसों रेफ गमककी मुदासों कम ब्यूतकमसों बजाइये। सो पाण्यन्तरिक्टक जांनिये। ३।
- ४ दंडहरून दातरिकिटदां खरिखरिदां। जहां पताका मुदासें। एक उपरकों ताडन कर फेर दोय वार रेफ मुदासों ताडन करि सों दंडहस्त जांनिये। ४ ।
- ५ पिंडहस्त थरिकिटझें थरिकिटझें जहां बजायवेमें पहलें दोनु हातकी किया कीजिये॥ पिछं एक हा।सों अक्षरको निवहि कीजिये। सो पिंड-हस्त जांनिये। ५।
- ६ युगहस्त देंदें दांदां । जहां रेफकी मुदासों दोनु हातसों उपरको ताडन कीजिय ॥ जैसें पाठाक्षर बनें । अक्षिरके अनुसार बजावे । सो युगहस्त जांनिये । ६ ।

- ७ ऊर्द्धहस्त दरगिड दांदां। जहां दाहिणें हातकी हेतेलीसों उपरकों घात कीजिये। सो ऊर्द्धहस्त जांनिये। ७।
- ८ स्थूलहत खुंखुंदरखुंखुंद. जहां ऊर्ज्वहस्तकी मुद्रासों दोय वर वाजेके मुडा दोऊ बजाइये । फर तलहस्तसों एक वेर बजाईये सो स्थूलहस्त जांनिये । ८ ।
- अर्घार्घपाणि खुंदा खुंदा । जहां अर्द्धहस्तकी मुदासों दोनु हातसों बजाइये ।
 सो अर्घार्घपाणि जांनिये । ९ ।
- २० पार्श्वपाणि थरिगड दागिड दिगड । जहां नखके अग्रभागसों बजा-इये । सो पार्श्वपाणि जांनिये । २० ।
- ९१ अर्थपाणि दगिड दगिड दरगिड दरगिड । जहां एक हाथके अग्र सों बजा-इये । सा अर्थपाणि जांनिय । ११ ।
- 1२ कर्तरी टिरि टिरि टिरि किटथों दिगिदां तिरि टिरि किटझेंझे तिकिट। जहां बाये हाथकी चलती अंगुरीसों अक्षरके अनुसार बजाइये। सो कर्तरी जांनिये। १२।
- 3 ३ समकर्तरी झिनकिट कनकिट किटझेंथों दिगिद तिरिटि तिरिटिकि । जहां दोनु हातकी चलति अंगुरीसों बजाइये । सो समकर्तरी जांनिये । 3 ३।
- १४ विषमकर्तरी टिरि टिरि थों दिगिद टिरि टिरि किद । जहां एक हातकी चलती अंगुरीसों बजाईये दुसरे हातसों साधारण ताडन कीजिये । सो विषमकर्तरी जांनिये । १४ ।
- **१५ समपाणि** दां गिड गिड दांदां। जहां दानु हातकी अंगुरी अगुठा मिलायकें बजाइये। सी समपाणि जांनिये। १५।
- 9.६ विषमपाणि दांदां गिड गिड दांदां । जहां दोनु हाथकी अंगुरी अंगुठासों उलटो बजाइये । कोइ अंगुरीसों कबहूं कोऊ ऐसें कमविना बजाइये । सो विषमपाणि जांनिये । १६ ।
- १७ पाणिहस्त तरिगड दरिगड। जहां दोनु हातकी न्यारी न्यारी वा अंगु-रीसों एक संग बजाइये। सो पाणिहस्त जांनिये। १७।

द्वितीय वाधाध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ५३

- १८ नागवंधक तत गिडिकिट। जहां दाहिनें हातसों बांये पुठ बजाइये बांये हातसों मृदंग आदिककों दाहिणें पुठ बजाइये ॥ ऐसे अकेले हातसों बजाइये अथवा मृदंग आदिककी एक एक पुठमें दोऊ हातसों पाठाछर बजाइये। से। नागवंधक जांनिये। १८।
- १९ अवघट ततिगड गिड द्गिटन गिनगिननिग । जहां मृदंग आदि वाद्यको पुडीको हतेलीसों ताडन किर अंगुठा अंगुरीसों बजाइये । एकही हात-सों बजाइये सो अवघट जांनिये । १९ ।
- २० स्वस्तिक तिकट तिकटनिक । जहां दोऊ हानसों अंगुरी समेटी बजावे । सो स्वस्तिकके छछन जांनिये । २० ।
- २१ समग्र तिकट किटतक । जहां एक संग दोऊ हातनसों मृदंगके पुडाकों ताडन कीजिये ॥ अथवा हतेन्छीसों बजाइये ॥ अंगुठा आंगुरी नहीं लगाइये सो समग्र जांनिये ।२१। इति इकवीस हस्तपाठ संपूर्णम्॥

॥ अथ मोलह हस्तक लिख्यते ॥

- 9 उह्छोल झेथां झेथां थांथां झें ॥ जहां दाहिणें हातकी बीचली अंगुरी अंगु-ठासों मृदंगको दाहिणें पुट ताडन कीजिये ॥ अथवा पहले अंगठा छुवा फर सब अंगुरीसों ताडन कीजिये । सो दक्षिण हस्त देई दक्षिण हातसों दाहिनें हातकी अंगूरी नहीं लगाइये ॥ आर दाहिणें हातकी अंगुरीनसों बजाये ॥ ओर बांयों हात उछलसो चले । सो उल्लोल जांनिय । १ ।
- २ पाण्यन्तर नखें नखें नखें तखें खेंखें नखें नखें नखें खेंखेंखें दखें खुंद खुंद ॥ जहां दाहिणे हाथके अंगुठासों दाहिणे हात पुडाको ठोकिये । बांये हातमें बाये पुडामें तरत कीजिये । सो पाण्यन्तर जांनिये । २ ।
- ३ निर्घोष नखि थोंथों दिगिदा ॥ जहां मृदंगके पुडाको कि न्यारो बजाइये अथवा डंकासों बजाइये । सो निर्घोष जांनिये । ३ ।
- ४ खण्डकर्तरी दां खुखुदां २ खुखुग थोंटझेंदें झेंदों गिथोंट ॥ जहां दाहिणे हातकी चटि अंगुरीसों बजाइये । अरु बांये हाथके अंगुटासों गति साधिये । सो खण्डकर्तरी जांनिये । ४ ।

- ५ दंइहस्त खुखुणं खुखुणं झेंद्रझेंद्र टिरिटिरि ॥ जहां दाहिणे हानकी अंगुरी लगाय । अंगुठासों ताडन कीजिये। बांये हातसों गुंकारधुत धुनि काढिये। सी दंडहस्त जांनिये । ५ ।
- ६ समन् एक रह तरिकट धिकिट तिकथिक टेंहेंटहेंत्र ॥ जहां अंगुरीसों नखसों मुदंग ताडन करि । पाठाछर समान कीजिये । सो समन् लानिये । ६।
- अबिंदु देंदिगि देंदिगि गिरिगिड ॥ जहां बांये हातसों वायों पुट सब्दसहित दाबिकें दाहिनें हातके अंगुटा पासकी अंगुरीसों । दाहिनें पुटको ताडन कीजिये। तब अनुस्वारकों गंकार होय। सो बिंदु जांनिये। ७।
- ८ यमलहस्त कुंद कुंद झेंद्र झेंहें झेहें ॥ जहां बांये हातसों पुडा दाबिकें दाहिणें हातसों । ककतरको सो सब्द रचिय । सो यमलहस्त जांनिये । ८ ।
- ९ रिचित देदें थांथां देदें नखझें । नह न हटें ॥ जहां बाजेकी धुनिके चढा-यदेंभें वंधा फरकायकें अंगुठासों अंगुठा पासकी अंगुरीसों गाढो ताडन कीजिये । सो रेचित जांनिये । ९ ।
- १० भ्रमर खेखेणं खुंखुणं खु ३ णं झेंद्र २ णह करें झें ॥ जहां हाथकी अंगुरीसों थोरि संकोचिय । ऊभी अंगुरीसों मधुर धुनिकें छिय । ताडन कीजिय । सो भ्रमर जांनिय । ३०।
- ११ वियद्विलास तणे ३ तिर झोंझों दि ३ त्रां ॥ जहां अर्थार्थपाणिकी रितिसों दोऊ हातके अंगुटासों ॥ ओर अंगुटा पासकी अंगुरीसों दोऊ मृदंगसों पुडा एक संग बजाइये ॥ विचित्र गतिसों बजाइये सो विधिविष्ठास जांनिये । ११ ।
- १२ अर्धकर्तरी दोखंखं ३ यह घेट ३ झेहं धिगिगि धेंटे ॥ जहां दाहिले हातकी अंगुडा पासकी अंगुरी ओर बीचकी अंगुरी । ओर चटी पासकी अंगुरीकों इनकों बहोत सुधी करि तिनी अंगुरीनसों एक संग ताइन करें। सो अर्धकर्तरी जांनिये । १२ ।
- १३ अलग खुंखं २ नखें झेंहिंग २ थोटें ॥ जहां दोऊ हातनकी अंगु-रीसों पहले दोऊ पुड़ा स्पर्श करिकें । फरु बजाव सो अलग जानिये। १३।

द्वितीय वाधाध्याय-अनवद्भवाजे पटह, हाल, मृदंगकी वर्णन. ५५

१४ रेफ हनथों झेंझें दं २ झेंद्र झेंहेंद्र ॥ जहां कांधा ऊंचा करि दोऊ हाथनकी सब अंगुरीसों बजाइये तालमें । सा रेफ जांनिये । १४ । १५ समपाणि ननिंग २ देगि थों गिनह २ झें ॥ जहां समपाणिकी रीतिसों छटी अंगुरी कर बजावें बहुत वेर लगी सो समपाणि जांनिये । १५ । १६ परिवृत्तहरूतक झें थें ४ गिणना ३ ॥ जहां दोऊ पुडकों एक धुनिमें मिलायकें बजाइये सा । परिवृत्तहरूतक जांनिये । १६ । इति मोलह हरूतक

॥ अथ अष्टावप(ठहस्तक लिख्यंत ॥

लखन मंपूर्णम् ॥

- १ तलप्रहार दे थों दें धिकिट किट झें थितिरि। जहां बांये हातसां बायों पुर बीचमें पहले दाबि फेर सिताविसीं बायों हातमों ताडन करे। सो तलप्रहार जांनिये। १।
- भ प्रहर झेदां थां गिदिगिद । २ । किट थां थां । जहां हत रिसों ताडन करि अंगुठा सीं बजाइये । सी पहर जांनिय । २ ।
- **६ विक्रित खुंखुं** दरि । दां थोंगि थोंगि । जहां नगरेमें अंगुटायासकी आंगुरीत. चांम दाबिकें दाहिणें हातसों बजाइये । सों विक्रित जांनिये । ३ ।
- ४ गुरुगुंजित थुकर । ४ । थोंरागिडिदा । २ । विकि थेंांटें । ४ । जहां दाहिणे हातके अंगुटा ओर चिट आंगुरीके पासकी अंगुरीसों । दाहिनो पुडा कमसों सितावि बजावे जैसें । २ । सब्द होय । अरु बांये हातसों टहरि बजावे । सो गुरुगुंजित जांनिये । ४ ।
- ५ अर्धसंच प्रपंच खें खें दरि । २ । खें खेंट । २ । जहां । वामपगमें नितंब कंपन करि दाहिणों हात उछाछि बजाइये । सो अर्धसंच प्रपंच जांनिये । ५ ।
- ६ त्रिसंच खेंद खें खें दखेंद । ६ । जहां पीठको फरकाय कंबा हिलावे । बांये हाथके अंगुठांतें गति साधिये । सो त्रिसंच जांनिये । ६ ।
- ७ विषमहस्तक खेंदं धरि । २ । थें। दिगिधरिखें । ४ । खरकट । २ । जहां विषमहातसों वांयेकी जगो दाहिणे हाथ ॥ दाहिणेकी जगो । बांये हातसों उलटो मृदंग ओर वाद्य धरिकें हातकी बजायवेकी चतुराइ दिखायवेकों बजाइये । से। विषमहस्तक जांनिये । ७ ।

- अभ्यस्तक खणिणखिङ्ग । २ । तिकिधिकित्त । जहां हातकी चलाकीसीं विना पाठाछर कानलो मनोहर धुनि होय । सो अभ्यस्तक जांनिये । ८ । ये आठ विना पाटाछरके हस्तपाठ हैं ॥ सो अभ्यास करि सीखे तब आवे ॥ यातें अष्टाव पाठहस्त कहत हैं ॥ इति अष्टावपाठहस्तक संपूर्णम् ॥ अथ अलग पाठ दोय लिख्यते संच ॥ थुकर । २ । गिणणं । २ । जहां अंगुरीकं आधे अग्रमां बजाइये। सो संच जानिये। १ । बिछूरित झेंद्र । २ । झांगरि गिडिदा निगरि गिडनम् । जहां संच हस्तकी रीतिसों । अंगुरीनके अग्रसां अरु अंगुठासों कमसो सितावि बजाइये । सो विछूरित जांनिये । २ । इति दोय अलग पाठ संपूर्णम् ॥
- अथ दोय चित्रपाट लिख्यते अमर ॥ दं थं दें झेंद्र । ४ । खुंखुंधरि । १ । द्थोंगिं । १ । कुंजित खुंखुंधरि । २ । धरिगिगिड । २ । दन्हें । २ । खुंखुं दन्हें । २ । गिरिगिडिद । २ । दत्थोंगि थोंगि । २ । जहां तल महार हस्त विल तलहस्तकके भेदसों भिले तहां कुंजित जांनिये ॥ २ ॥ ओर अमर हस्तकके भेद सों मिले दोय चित्रपाट जांनिये ॥ २ ॥ इति अठायसी हस्तक-पाठ संपूर्णम् ॥

अथ पटह । १ । हुडुका । २ । आदिकके पाठाछर बजावे तें कंप करिये । ताको नाम संच हे । सो पांच प्रकारको जांनिये ॥

कंधेको । १ । ऊहणीके उपर भागको । २ । अंगुठाको । ३ । पहुचा-को । ४ । बांथे पगको । ५ । ये संच कहाँवं । जहां अंगुठाको । १ । पऊचे । २ । कंप होय सो श्रेष्ठ पाठकों वरतिवे बारो हैं ॥

जहां कंधे । १ । भुजाकों उपरको कंप होय सो मध्यम पाट वरतिवे वारो हैं । जहां बांये चरनको कंप होय सो पाट वरतिवे वारो है सो अधम है ॥ इति संचनके भेद संपूर्णम् ॥

अथ बारह पाट विन्यास भेद ताको नाम लछन लिख्यते ॥ जहां नाना प्रकारके पाट आपनी बुधिसों रचिये तहां यह कीजिये। जहां पहले खंडके आदि मध्य अंतमें देंकार घणो आवे अरु दूसरे खंडमें ऐसेंहि देंकार आवे सो वोल्लावणी जांनिये। १।

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध वाजे पटह, ढाल, मृदंगको वर्णन. ५७

जहां पाठाछरको समूह न्यारे न्यारे अछिरको होय। तहां देंकारादिकको प्रयोग कीजिये। सो चल्लावणी जांनिये। २।

जहां बांये हातसों तरुहस्तकी रीति कीजिये ॥ दाहिनें हातसों उताव-रुसों । अंगुली सकोडी बजाइये । सो उडुव जांनिये । ३ ।

जहां स्वस्तिक इस्तकी रितिसों बजाईये ॥ जामें खेंाकार घणीं देरसें । सो कृचुम्बिणी जांनिये । ४ ।

जहां कनतें वा एक संग दोनु हातसों वर्ण पाठाछर गहरी धुनिसों वर-तिये। सो चारुस्रविणका जांनिये॥ यह चारुस्रविणका सुद्ध पाठसों होय। सो शुद्धा। १। ओर नाना प्रकारके पाठसों होय। सो चित्रा। २। ऐसे दोय भेद चारुश्रविणकाके जांनिये। ५।

जहां डंका वा अंगुरीकी किनारसों विना लगाये ॥ पुडासों बजाय मधुर धुनि काढिये । सो अलग्न जांनिय । ६ ।

जहां समपाणि हस्तक । १ । कर्तरीहस्तक । २ । दोनु मिलाय बजाई । सो परिस्नवणिका जांनिये । ७ ।

जहां दोनु हातनसों एक संग पुडाकों नाडन की जिये । सो समपहार जांनिये । ८ ।

जहां डंकाके ताडनसों पाठाक्षर वरतिये। सो कुडुपवारणा जांनिये। ९। जहां हातसीं पाठाक्षर वरतिये। सो करवारणा जांनिये। १०।

जहां दोनु हातनसों बजावें । तहां दाहिनें हातसों कोमल बजावे बांये हातसों तीक्षन बजावे । सो दंडहस्त जांनिये । ११ ।

जहां एक हातसों वा दोऊ हातसों गहिर धुनिसों निरंतर पाठाक्षर विना विश्राम बजाइये। सो घनरव जांनिये॥ १२॥ इति बारह पाठ विन्यास नाम-लक्छन संपूर्णम्॥

अथ तेरह ब जायवेमं गमककी रचनाहे तिनके नाम-लजन

जहां बजायवेमें कांधो पहुचामेंकी अंगुरी इनकों कंपकरि उहिर उप-जामे। बो वक्की जांनिये। १। जहां पहले जो पाठ कहे तिनकों। आधो वा एक मिलायते जो पाठ बजाइये। सो विल्ल पाठ जांनिये। २।

जहां वोल्लावणीको प्रथम खड झें कारजुत । तालनी वर्द्ध रीतिसौं बजावें। सो धत्ता जांनिये । ३ ।

जहां अनेक बाजनके पाठाछर मिलाय । सबके जोगसीं जो पाठाछर होय । सो भेद जांनिये । ४ ।

जहां आदि । १ । मध्य । २ । अंत्यमं । ३ । अनेक दाजेनको पाठ कमसों मिलाइये । सो झडप्पणी जांनिये । ५ ।

जहां पाठके अछिर बार बार जांनिपरे। सो अनुस्रवणिका जांनिये। ६।

जहां दोय वा च्यार वा आठ वा सोछह खंड रिच पाठ वरिनये ॥ सो हस्त हैं वांके च्यार भेद हैं ॥ जहां चंचतपुट आदि ताछ वरिनये । सो चपुरस्न हैं । १ । जहां चंचतपुट ताछ वरितये ॥ सो ज्यस्त हैं । २ । जहां भिछे ताछ वरितये । सो मिश्र हैं । ३ । जहां खंड ताछ वरितये । सो खण्ड है ऐसे च्यार भेदको होय । सो हस्त जांनिये । ७ ।

जहां आधो वा चोथाई वा आठमों भाग कहि । २ । संपूर्ण पाठ वर-तिये ॥ अखंड तालमें । सो जोडणी जांनिये । ८ ।

जहां तिन खंड रिचये ॥ सो प्रथम खंड एक गुना । १ । दुसरी खंड दुगुनों । २ । तिसरो खंड तीगुनों । ३ । ऐतं किर तीन खंडने वरिशये । सो तिगुणा हें । सो तीन प्रकारकी है ॥ जहां तीनों खंड रिच पहले दोय खंड फेर रिचये सो प्रसाद्य जांनिये । १ । जहां तीन खंड रिच । प्रथम खंड रिचये । सो दूसरो भेद जांनिये । २ । जहां तीन खंड रिच । मध्यम खंड रिचये । सो तीसरो भेद है । ३ । जहां तीनो खंड रिच । दूसरो खंड दोय वार रिचये । सो चोथो भेद हैं । ४ । जहां तिनो खंड रिच वेर रिचये । फेर दूसरो खंड रिचये । सो पांचवों भेद हैं । ४ । जहां तीनो खंड रिच फेर पहले दोय खंड रिचये । आह दूसरो खंड रिचये । सो छो भेद हें । ६ । जहां पहले दोय खंड रिचये । अह दूसरो खंड रिचये । सो छो भेद हें । ६ । जहां पहले दोय खंड रिचये । धी सातवों भेद । ७ ।

द्वितीय वायाध्याय-अनवद्ध वाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ५९ जहां तीनो संड रिच । फेर तीसरें संड दोय वेर रिच ॥ दूसरो संड रिच । सो आठमें भेद हैं । ८ । ऐसें तीन प्रकार त्रिगुणा आठ प्रकारके हैं । ९ ।

जहां हस्तराठ मिटायकें। हातनके सब्दसों वरतिये। सो पंच-इस्त जानिये। १०।

जहां अदे पाणि आदिके पाणिहस्तकी रितिसों पाठाछर होय। सो पंचपाणि जांनिये। ११।

, जहां कर्तरी हरतककी तरह पाठाछरकों थोरो थोरो अंस मिलाइये। सो पंचकर्तरी जांनिये। १२।

जहां चंद्रनाकिति तरह। मात्रा घटि वधि होथे। सो चंद्रकला ताल जानिये। १३।

ये तेरह वाद्य रचना हुडक्कार्ने होत हैं । ओर हूं अपनी बुद्धिसी रिचये ॥ इति तेरह वाद्य संपूर्णम् ॥

अथ वायके प्रकार वजायवेमं प्रांध तियालीस हं तिनको नाम-लछन लिख्यते॥ सब प्रबंधनमें दंकार आदि वर्ण कीजिये॥ सा सुंदर अछिर वा उसों वरतिये सोअछिर सुनतिह । सुनिवेवारेकों आनंद होय॥

- 9 यति गर्मयो गक्क्योरें गर्दगयों गक्क्योरें गर्दगथों गक्क्योरें। जहां वाद्य खंड अनेक विराम कहिये। सम लगायके बजाये। सो यति जांनिये॥ १॥
- २ ओता तक्यों रेगड तक्यों रेगडयों रेगड्तक्धिक् थोंगटे । जहां बहुत देंकार हाय ॥ हतेलिकी ताडन बहुत होय । ऐसेंपाठाछर कीजे । सो ओता जांनिये। कोइक आचारिजके मतसों याको देंकार नहि लीजिये॥ २॥
- ३ गजर तड्दग्यों गक्कथों हरघटेंथों हटें। जहां आदिमें एक ताली तालसों। पाठालर वरतिये। फेर ओर तालसों वरतिये। सो गजर जांनिये॥३॥
- ४ रिगोणि टेथांटेगें थोधिप्तोङ्घिहट॥ तक्कर्यदृडरद् गडक्धिक गद्उद्धिक तकगद्उ-ङ्कथों गतक्धिक् धिक् कुधिटेंगेंनथों थोंग थोंगक्कथों। जहां तीन खंड शुद्ध पाठके होय॥ ओर खंड कूट कहिये। सो संकरिण पाठ जांनिये। उन शुद्ध कूट ताडनकों गजरि धुनित बजाइये। सो रिगोणी जांनिये॥४॥

- ५ किवित गडदक् दिगनदं दिगनथोंग धिकां तकाधितक देहें। कद गदक्द-रिक । २। कथरीकुं। जहां पहलो खंड छोटो शुद्ध पाठनसों रिचये । अथवा सुधे अञ्चरनसों ऐसो एक कीजिये॥ऐसें खंडके उदमाह । १। ध्रुव ।२। को अंतरा कीजिये। जहां उदमाहके अंतमें॥ अथवा आधे उदमाहमें तालकों पूरन कीजिये। सो कवित जांनिये॥ ५॥
- ५ पद तिकट धिकिट धिधिकिट धिक्किटगांङ्चिकतक धिक्यां तिकट धिधिकिट धि-किगग धिधिकिट विक्किगुङा गिधिधिग किडगुडागिधिं गथों । जहां उदमा-हिनपाठ थोरो हांय ॥ ओर ध्रुवा चिण बडी निह होय अथवा पाठाछर सुं कीजिये ॥ अंतमें पाठाछर छोडिये सो पद होय । अथवा मबंधके विचेमं यित बजायकें पाठाछरसों छोडिये । सो पद जांनिये ॥ ६ ॥
- अमेलापक थोंगरें गड्दम्रथोंगरें। जहां एकताली तालक द्वतमांनमें ॥ ओर नृत्यके आरंभें वरावर वांयेलि बाजेक बजायवेमें। छोटो बाजा बजायवेको खंड वार वार अभ्यास कीजिये। प्रबंध पूरन करिवेकेलिये। सो मेला-पक जांनिये॥ ०॥
- ८ उपशम टेंथोंको थोटरे थोंहरो थाथे थेंटि । जहां एक खंड सुद्धादिकपाठ-नसों । वा शुद्ध । अछिरनसों छघु प्रमान कोंमछ धुनिसों । कोमछ अछिरनसों नृत्येमें वरितये । सो उपशम जानिये॥ ८॥
- ९ उद्याह तेटें है तेटें तकतेटे । जहां वाद्य प्रबंधकों प्रथम खंड ढकाको शुद्ध पाठाछरनसों रिचये । सो खंड प्रबंध पूरन होय तहांतांई एक वर तथा दोय वर वरतिये । सो उद्याह जांनिये ॥ ९ ॥
- १० प्रहरण कथोंगक थोंगत्थोंगटथोंगक थाग थोंगथोंक कथोंगक थोंकट थोंगक्योंकट थोंगक । गड्दकाधिक थोंगक । टोंग दंथोंह । दिङ्निकुकुधित्थों हिंधके धिटें। जहां ध्रुवामें वा अभोगमें कूट किहेंथे । अनेक
 पाठनसों उंची धृनिजुत खंड कीजिये। सो खंड एक दोय वेर । अनेक
 पाठ एक ताली आदि तालसों वरितये । ओर ठोर तो इला होय तब
 कीजिये । अरु नृत्यमें अवस्य कीजिये। सो पहरण जांनिये॥ १०॥

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध वाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ६१

- ११ बत्सक गड्दग्दंदंगड्दिक्थकट तकधिकट तिक्धिकक्। खिंड खंखनख खिदक् झेंखखनख खिदक्तदक धिकक कागणनग थोंगदिहिकि थोग-दिहिकि तक धिकथोंगटे गडक् तकिथक थोंगटें। झक झिखिल्खनखनख-खित न्हें खखनखझें खन खरिच तुडि हिदिहि। कथोंगक्। तकिथक तक्करे घटथथोंगक थोंगकटें। जहां उद्याहको खंड रिचये आगें शुद्ध पाठसों वा कूटपाठसों वा शुद्ध अछिरनसों खंड रिचये। ये दोनु खंड दोय वर वरितकें। फर पहले खंड पहले वरित। दूसरो खंडकों आधी पाटअछिर वरितये। छोटिकें फर वाद्यकी भरतीसों खंड पूरो कीजिये। सो वत्सक जांनिये॥ ११॥
- १२ च्छण्डम उर्गुरेंद गुरे दम्रयों हटहटहें याहथों तकथों तकथों धिकथों तक-धिविथोंथों थेटेटेथों तथोंट। जहां कूट अछिर अथवा शुद्ध अछिरनसों खंड रिव वरतिये। फर छोडिये जो वाद्यकी भरतीसों खंडकों प्रमान साधिये। सो च्छण्डण जांनिये॥ १२॥
- १३ तुडुक टें दंदगित थोंगेट थिकतः तथतटे हक्थें।टे गिथिकतटथों गणनिगथोंगतक थिकथोंगेट । तहां उदमाह ध्रुवा आभोगें छोटो खंड पाठाछरकों वरतिये ॥ अथवा ध्रुवका आभोग वरितके । फेर उदमाह वरितये । सो तुडुक जांनिये ॥ १३॥
- 18 मलप गड्दक् तिद्धिं हथें हिरं वैटं गणनगतक धिकक थौं हटें हैं थोदगक्।
 तक तहिषक थोकथोहक थो ३ हटे डिं खिखरिखिखिखरथेंटें हैं थोहगक्। दिहं कटदहं कटगड्द गथिरकटं २ थिरिकटनक ३ ततक धिधिक
 थोऽथोंदें। जहां उदब्राह एक वर वा दोय वर वरितये। ओर धुवका
 एक ठोरबार वार वरितये। जहां व्यापक पाठाछर हाय। थेटें। इन अछरनसों खंड बनाय वरितये। यति निरंतर होय। सो मलप जांनिये॥ १४॥
- ३५ मलपांग जहां मलप वरतिकें। ओर मलपको एक खंड थोंटें। अक्षरकों वर-तिये। सो मलपांग जांनिये॥ १५॥
- १६ मलपपाट जहां विषम खंड कहतं घाटि बांधि खंडराचि मिलपकीसीनाई वरितये। स्रो मलपपाट जांकिये॥ १६॥

- १७ छेद जहां सितावीसितावी हतेलीसों छप रीतिसों रहि राहिके वाध बजाईमे । ताल तटें नहि । सो छेद जांनिये ॥ १७॥
- १८ रूपक जहां दोय वार वा एक वेर उदमाहके पाठाछर मिलाय उचार की-जिये। बीचमें लय छोडि। फेर पाठाक्षर जोडीये। दंश्वतजीये। कीजिये। सो स्वाक जांनिये॥ १८॥
- १९ अंतर जहां बाजेने तालसहित गीतकों कम की जिये। सो अंतर जांनिये॥१९॥
- २० अंतरपाट जहां निबद्ध कहिये ताल छंदजुत गीत बजाये । फेर यांके पाठा-क्षर बजाइये । सो अंतरपाट जांनिये ॥ २० ॥
- २१ खोज जहां हातकी चलाकी सों को मल गहरि धुनिसों पाठाक्षर वरितये । सो खोज जांनिये ॥ २१ ॥
- २२ खंडयति जहां पाठाक्षरकों खंड रचि यतीकी सीनाई वेरवेर वरितये । जहां तांइ प्रबंध संपूर्ण होय । सो खंडयित जांनिये ॥ २२ ॥
- २६ अवयाति जहां ताल हे अंति विश्वान हैं। टें टें । ऐते अझरनसों होय। ऐसी जो पाठाक्षरको खंड। यतिकी रितसों वेरवेर वरतिये। सो अवयित जानिये॥ २३॥
- २४ खंडपाट जहां बाजेंने पाटाक्षरके समुहके अक्षर खंड न्यारे न्यारे करि वर-तिये। सो खंडपाट जांनिये॥ २४॥
- २५ खंडछेद जहां पाठाक्षरके खंड छोटे छोटे खंड करिके प्रबंधनमें वरितये। अव दूसरो खंड कहे हैं। सो खंडेंछेद जांनिये॥ २५॥
- २६ खंडभेद जहां पाठाक्षरके खंडके छोटे छोटे खंडकरि जुदे जुदे वरतिये दूसरी वर मिलाय नहीं । फेर खंडनको मिलाय करि । एक खंड वरतिये । सो खंडछेदकों मथम खंड जांनिये । सो खंडभेद जांनिये ॥ २६ ॥
- २७ संडक जहां खंड बजाइवेमें एक खंडके अनेक खंड न्यारे न्यारे करि चतुराई . सों वरतिये। सो खंडक जांनिये॥ २७॥
- २८ खंडहुस्तु जहां श्रोतो गता यतिमें पाठाक्षरके खंड वरतिये। सो खंडहुस्त जानिये॥ २८॥

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ६३

- २९ सम जहां गीत नृत्यके समान प्रबंधकों पाठाक्षर तालके यति सहित बजा-इये। सो सम जांनिये॥ २९॥
- ३० पाटवाद्य जहां कवल पाठाक्षरहिसो पवंधकों निरवाहकरि ताल भरिये। सो पाटवाद्य जांनिये॥ ३०॥
- ३१ ध्रुवक जहां अनेक बाजेनमें वेरवेर बीचे बीचमें बजाइये। अनुरंजनकें वास्ते जो खंड रचिये। सो ध्रुवक जांनिये॥ ३१॥
- ३२ अंग जहां तत खिट इन पाठाक्षर विनां केवल । देंदें टेंटें झेंझें । इन पाठाक्षर सों ताल पूरन कीजिये । सो अंग जांनिये ॥ ३२ ॥
- ३३ तालवाय जहां झें से अक्षरमें चंचनपुर ताल सें चासिट कलाको खंड वरतिये। सो तालवाय जांनिये॥ ३३॥
- ३४ विताल जहां प्रवंधकी आदि । १ । मध्य । २ । अंत्य । ३ । इनमें विताल कहिये । तालकी विकत । जेतें गुरुके स्थान दोय लघु करि पूरिये अथवा दोय लघु एक गुरुकों पूरिये । को विताल जांनिये ॥ ३४ ॥
- ३५ खलक जहां अंगुठा फेलायके सीधी अंगुरीनसों। कमतें पताक हस्तकी रीति सों पाठाक्षर वरतिये। सो खलक जांनिये॥ ३५॥
- **६६ समुदाय** जहां सब बाजेनेनें। एक संग सब पाठाक्षर बजाइये। सो समु-दाय जांनिये॥ ३६॥
- ३७ जोडनी जहां कहे जे। अनेक पाटाक्षर तिन सबनके एक एकटक छेनें वो पाटाक्षरको खंड रचि जुदे जुदे उनके तालनसों वरतिये। सो जोडनी जांनिये॥ ३७॥
- ३८ उडव जहां लयसहित तालमें लय छोडिकें तालमें पाठाक्षर वरति चमत्कार दिखावें सो उडव जांनिये॥ ३८॥
- **३९ तलपाट** जहां मलपपाटकी रितिसों दोय च्यार पाठाक्षर मिउाय पबंधके अनुस्वार कीजिये । सो तलपाट जांनिये ॥ ३९ ॥
- ४० उद्वविशी जहां घोटें। इन अक्षरनसों वा अपनें पाट अक्षरनसों आदि अंतर्में देंकार छगाइये। विलंबित लयमें खंड रचिये। सो उद्ववणी जांनिये॥४०॥
- ४१ तुंडक जहां प्रबंध गीतकें आदि। १। मध्य । २। अंत्य । ३। में

बाजेकों एक देस किहये। गहरी धुनि वा तीछानि धुनिसों। हातकी चलाकीसो खंड बजाइये। सो नुंडक जांनिये॥ ४१॥ ४२ अंगपाट जहां सधे मुधे बाठाक्षरनकों खंड बार बार वरतिये। सो

४२ अंगपाट जहां सूधे सूधे पाठाक्षरनकों खंड बार बार वरितये। सी अंगपाट जांनिये॥ ४२॥

४६ पैसार जहां अनेक बाजेनमें एक खंडके जुदे जुदे खंड करि वे खंड न्यारे न्यारे बाजेनमें वरतिये । सब बाजेनमे एक तालकों निर्वाह कीजिये । सी पैसार जांनिय ॥ ४३ ॥

एमं नियालीस वाद्य प्रबंध जांनिये। इहां रिति दिखायवेभेंकों तिया-लीस वाद्य प्रबंध कहें हैं सो वाद्य प्रबंधको भेर तो अपार हें। या रितिसों। ऑरहूं समझिये। तहां पाठ भेर। १। वाद्य रचना । २। वाद्य प्रबंध। ३। ये प्रवह बाजे कहे हैं। ते मृदंगादिक सब अन्य बाजनमं जानि लीजिये॥ इति तियालीस वाद्य प्रबंध नाम लक्छन संपूर्णम्॥

अथ मृदंगको लखन लिख्यते ॥ जहां नुंदर विजेसारके काठ अथवा लेरको काठ । अथवा रक्त वंदनको काठ । वणो आछो सुद्ध जवर फाट गांठ सलहीन सुंदर काठ लीजिये । पीछं चतुर कार गर होय । तापास मृदंग बनाइये । मृदंगको मध्य सांडइकईस आंगुल मोटो कीजिये ॥ ओर लंबो बारह मृद्ध पमान कीजिये । यह मृदंगको पमान हें ॥ दाहिणे भाग चोदह आंगुलको मोटो कीजिये । बांयो भाग किम संतरह आंगुलको कीजिये ॥ ओर दोय लोहके अथवा काठके कडा । दोऊ मुखें चढाईये । दोय कलामें । एक यव अंगुलके अंतरसों वीस वीस छेद रालिये । पीछ दोऊ मुख चांमसों मिढिके वह चांम कडासों लेपेटि गाढो दढ कीजिये । फेर कडाके छेदमें चांमकी डोरि डारि दोंन तरफसों सुखिके । चांम दढ कीजिये । कैरें वामें धुनि उपजे । पीछे तीन चांमके ढारेसों । पहले चांमके डोरानकों । गोमूजिकाके आकार ग्रंथिके । ऐसो गाढो कीजिये । जासों दोऊ मुखके चांम ढीले नहीं होय । तहां दाहिनें मृदंगके मुखकों चांम हैं । तामें छह अंगुल पमान गोलाकार लोह चुरकी स्याई जमाइये । सो धुनि पिछ न होय ॥ ओर वांये मुखके चांम जब बजावनों होय । तब गहूंके चूनकी छह ॥ आंगुलकी पूरिके आकार मोछ चूनकों पांनिसों सानिकें डगाइये

द्वितीय बाद्याध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, होल, मृदंगको वर्णन. ६५

तब मेचकीसि गंभीर धुनि होय ॥ ऐसे या मृदंगमें और एक रेसमी वस्तकों । अथवा सूतको रंगीन वस्त्र घणां मोछको मिछायको कंठमें नांखि । अरु दाहिनी कांखिमें काढिये । मृदंगमें दुनो छपेटिकें । फंकाके आसरेसों कमर किसये । जैसें बजायंव वारा सुखसां आपकी मृदंग आप बजाय छे सो या मृदंगके तीन भेद हें । मृदंग । १ । मुरझ । २ । मरदछ । ३ । इन तीनोंनको मृदंग कहत ह । या मृदंगके मध्यमें ॥ ब्रह्माजीको वास हं । बांये मुखमें श्रीविष्णुको वास हें दाहिनें मुखमें श्रीविष्णुको वास हें दाहिनें मुखमें श्रीशिवजीको वास हें । मृदंगके काठमें वा तांतिमें वा कडामें तेतीस कोटि देवताको वास हें । यातं याको नाम सर्व मंगछ हें । जो कोऊ सदा मंगछीक मृदंगको दरसन करे । मृदंगको निसदिन धुनि अथवा पाठाछर सहित । उचार गीत नृत्यादिकमें । सुनें सुनाय ताके खोटे सुपन खोटे सकुन विरे समूह । रोग आदि अरिष्टके सिगरे भये दूरि होइ । जो पुरुष या मृदंगके गुन रचना जानें । तिनको मनोरथ देव सफछ करे ॥

अथ या मृदंगके पाठाछर लिख्यंत ॥ तहां दाहिणें मुखमें।त। १। धि। २। थो। ३। ठें। ४। ने। ५। हें। ६। दे। ७। वे सात अछर जांनिये। ओर बांये मुखमें। ठ। १। ट। २। ल्हा। ३। द। ४। ध। ५। छा। ६। यह छह अछर जांनिये॥ ओर पटहके ककारसों आदि छेकें सी- लह पाठाछर जांनिये॥ इहा। त १। धि। २।थो। ३। डे। ४। न हि दें॥ इन केवल सुद्ध कहे हें॥ इनमें मात्रासहित वा मात्राहित ॥ आपसमें मिले अथवा जुदे जुदे व्यापक सोलह अछर ककारादिकनसों मिलाइये पहछे अछर सात तब कूटसंज्ञक होत हें। कटे। १। खटे। २। गटे। ३। घटे। ४। एसे जांनिये॥ इन अछरनको जों पंडित होय सो आछे कविताके। अछितरे एकांतमें वह बनाय सुंदर लयमें तालजुत गांवे सो कवितकार वादक जांनिये॥

अथ प्रसिद्ध पाठाछर लिख्यते ॥ तहां दिधगनथो यह तांनकी समा-मर्मे ॥ छय पूरिवेकों यह अछर आगेंको दीजिये ॥

अथ अकारादि स्वरनके उदाहरण लिख्यते ॥ जग। १। झग । २। दंकु । ३। थढड । ४। णड । ५। तत । ६। थां। ७। दंदां। ८। धरां। ९। नग। १०। ननिग। ११। किट । १२। किड । १६। किण । १४। किट। १५। गिझि। १६। ढिंढिं कुं। १७। दिगि। १८। धिगि । १९। रिट। २०। कुकु। २१। कुंदरिक। २२। तुतु। २३।का २४। झे। २५। थे। २६। थो। २७। थों। २८। थै। २९। थैय। ३०।

अथ अकारादि स्वरके प्रति उदाहरण लिख्यते ॥ झक । १ । तक । २ । धिक । ३ । नक । ४ । तुड । ५ । नड । ६ । किटदे । ७ । थैय । ८ । किरंट । ९ । वल । १० । धल । ११ । धीहं । १२ । किट । १३ । किडि । १४ । गिड । १५ । धिमि । १६ । इगु । १७ । ऐसं हि ओरनके पाठाछर जांनिये ॥

जो कोई हस्तकसों मृदंग बजाइये ॥ तहां अंगुठासों चिट आंगुरी वा चिट आंगुरीके पासकी अंगुरी अनामिकासों धुनिकों दाबि रचना रचिये। तब तः ॥ १ ॥ अछर होय । याकी पिठिमें हातकी हतेछि छगाइये । मुखकें बीचमें टेडि अंगुरिनसों ताडम कीाजिये तब थि॥ २॥ सब्द होय। ओर जहां चिट अंगुरिनसों चांमसों स्पर्श करि। अंगुठा पासकी दोऊ अंगुरीसों। छटवो ताडन कीजिये। तव। थो ॥ ३ ॥ सब्द होय। या मृदंगके मुखके कीनारेकी ओर नखकें छोटे घाटसों ताडन कीजिये । स्याहि छोडिकें । तव । नः ॥ ४ ॥ सब्द होय ॥ यह च्यार वरन । त ॥ १ ॥ धि थो न ॥ ४ ॥ दुने बजाइये । वा चोगने षजाइये । इहां ज्या वर्गको प्रथम अछर जा रितसों बजाये । ताहि रितसों वर्गको दूसरो अछर बजाइये ॥ जहां कटि जो कनिष्टा पासकी अना-मिका दोऊ अंगुरीसों मृदंगके किनार पताका रितीसों। ताडन कीजिये तब कि:॥१॥ यह सब्द होय । इन दोऊ अंगुरीनसों सिखरकी नांड बजाइये । तव टः ॥ २ ॥ यह सन्द होय । ओर थकार पहले सन्द कीजिये । तब थाकेट ऐसें सन्द होय। अब इनको पस्तार कहे हैं॥ थिकट धिकिट ।२। थोंकिट ।३। निकट। ४। तथकिर । ५ । विद्धिकिर । ६ । थोंथोंकिर । ७ । नंनाकिर । ८ । तत्ताथ-किट किटकिट । ९ । धिव्हिधिकिट किटकिट । १० । थोंथों थोंथों किटकिट किकिनं नां नं किट किट किट। ११। ततत्ततथिकट किटकिट किट। १२। थिकिट थिकट किटकिट किटकिट। १३। ऐसें ओर हूं जांनिये। जहां हातको गोल करि चटि

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध वाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ६७

अंगुरीसों मृदंगके मुलको चाम छूपकें ताडन कीजिये॥ तब कूं। १। यह सब्द होय॥ जहां हातकी मूठिकों॥ घसतो ताडन कीजिये। तब र। २। यह सब्द होय॥ जहां अंगुरी छीदि छिदीसों पताकाकी तरह ताडन कीजिये। तब कर्तरी गमक होय॥ जहां जहां लयकी अंतमें दोय हातसों। तब थों। ३। यह सब्द होय॥ ओर कर्तरीके प्रमान विना सिगरे अछिर अपनी बुद्धिसों उपजाइये॥ ओर दाहिणे हातके सहारेसों बांये हातसें ताडन कीजिये तब थों। ४। यह सब्द होय॥ अवे पाठाछरको उदाहरन कहेहें। कुंदरिकुं। १। थिकिड-गिडि। २। खेंगिडगिडगिड। ३। विकिड-गिडि। २। थोंगिडगिडगिड। ३। तंगीडगिडगिड। ४। जंगजगथो। ५। दिगिदिगिदां। ६। तग तग तग तग। ०। ऐसें जांनिये॥ अनेक प्रकारके ग्रंथ अदिक होय तहां भये विस्तार तं नहीं लिखे हें॥ अपनि बुद्धिसों उदाहरण छिखे हें तासों सूक्ष्म दृष्टि करिकें समझिथे॥

अथ मृदंग बजायवे वारको लछन कहे हैं।। मृदंग बजायवेवारो बुद्धिवान होय। १। अथवा सिररेमें पराक्रम होय। जाकी मधुर धुनि होय। २। धीरो होय। ३। लंबी भुजावारो होय । ४। जो वणी वेरतांई आसन दृढ राखे। ५। सास्त्रमें जो जो हस्तक कहे हैं। तिनकुं जांनीवेवारो होय। ६। पाठाछरकों रचायवेवारो होय। ७। श्रुति ताल अथवा तालके दस माणमें महा मिवण होय येलोग जो गीत गावे तामें अनुकूल होय। मृदंग बजायवेंमें महाविचक्षण होय। सत्पृहसको भक्त होय। ऐसो चाहिजे॥

जामे ये गुन नहीं होय ॥ सो मृदंग बजायवेवारी नहि लीजिये ॥ तहां मृदंग बजायवेवारेको च्यार भेद कहे हैं ॥ वादिक । १ । मुखरी । २ । मितमुखरी । ३ । गीतानुग । ४ । इन च्यारोंनकों लखन कहे हैं । जो बाजेकी चर्चामें अपनु मत पृष्टिकर बुद्धिसों दूसरेको मत खंडन करे सो बजायवे बारो वादी जांनिये । १ । जो चर्चामें वादीके मतकों अनुसार बजायके । अपने मतके बाजेमं रस दिखावे सों बजायवेवारो मुखरी जांनिये । २ । जो चर्चामें दोडि वादीके मतकों खंडन करि नई सास्त्रकी रीतिसों गीतआदिककों निर्वाह कारे सो मतिमुखरी जांनिये । ३ । जो चर्चामें दोडि वादिके मतसों । ओर आपना

पितष्ठाके लिये। वादीनकों मानभंग करिवेकों अनेक प्रकारसों नये नये वाद्य करि दिखावे गीत नृत्यकों सम छोडि नहीं ताल सहित होय। सो गीतानुग जांनिये॥ इति मृदंग बजायवेवारोके च्यारी भेद लखन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंग बजायवेवारेकी रीतिमें च्यारांनके लखन अनुक्रमसां लिख्यते॥ जहां चर्चा होय तहां पहले बाटनामको बाजमें बजाइये। सो बाटन किहये॥ मृदंगके विना चून लगाये॥ ताल विनाहि जो अजमायेवकी हडड हडड ऐसें धुनि होय सो बाटन जांनिये॥ यासों मृदंगकी सुद्ध । १ । असुद्धता। २ । जांनि परे। जो मृदंग सुद्ध होय तो ॥ चून लगाय बाजेकों वरताव की जिये। १ । असुद्ध होय तो मृदंगको शुद्ध की जिये। २ । ऐसें सुद्ध—असुद्धता देखे। हातकी सचावटके लीये॥ ऐसेंहि मृदंगमें चाट वा झांझ या रीतिसों धुनि दोऊ मुखमें रचिये वासों हातकी सुद्ध—असुद्धता जांनि परे॥ ऐसें हातकी असुद्धता जांनि॥ फेर चून लगायकें॥ दाहिणें मुखके कडासों ठोकिकें स्वर ठिकाणें लायकें बांये मुखमें गहगधो ऐसें धुनि बजाइये॥ ओर गिडदां ऐसें धुनि दाहिणे मुखमें बजाइये॥ पिछे मध्य लयसों चाहते तालमें दोऊ मुखमें गितसों धुनि बजाइये॥ तहां पहले विलंबित लयमें। १ । दूसरो मध्य लयमें। २ । तीसरो दुत लयमें। ३ । एक तालहीको वरितवो । ऐसेंहि तहां विलंबित लयकी समाप्तमें॥ एक थोंकार लेकें तालको मान पूरन की जिये। यासों मृदंग बजायवेंके हातनके अभ्यासकी परपाटी जांनिये॥

अव गीत नृत्यमें बाजेके जमायवेको नाम स्थापन हैं ताको लिछन लिख्यते॥ जो आलापकी रीतिसों॥ मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनो स्थाननमें शुद्ध होष ॥ काननको प्रियलगे ऐसें दोऊ हातसों बजावेकी जो मधुरी धुनि ॥ सो स्थापन जांनिये। ऐसे स्थापन करि टाकणि वादन करिये ता टाकणि । १ । वादन । २ । के लछन कहें हैं ॥ जहां आरंभ समाप्तिके बीचमें। थोंकार बहुत होय ॥ ओर चतुरस्र चंचतपुट ताल । १ । कहिये याकों मिश्र । षट्पितापुत्र देसी मार्गी ताल । इनमेंसों कोऊ जहां एक तालमें अनुरंजन सहित बजाइये। सो टाकणी । १ । वाद । २ । जांनिये ॥

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ६९

अब या टाकणि वाद्यके दोऊ भेद हैं एक सरा। १। दुसरी घोडा। २। अब इनकों छछन कहे हैं ॥ जहां जो अष्ट कलादि ताल होय ताकि कलानमें कंप किर पस्तारकी रीतिसों कलानमें पहली ध्रुवाकों वाद्य खंड कीजिये। एक संग एक वार करे। सो एकसरा टाकणि जांनिये ऐसे एक वार। १। दोय वेर। २। तीन वेर। ३। च्यार वेर। ४। किये तें। शुद्ध अभ्यास होय तहां कला कंप जुत वाद्य खंडकों। उदाहरण कहे हैं। तद्धितांटें। १। तत धिधिथों थोंटें टें। २। तततिधि धिधि थोंथों थोंटे टें। ३। तततिधि धि धि धो थो थो थो टेटेटेटे। ४। याको अप वहनी कहे हैं॥ यह कला कंप जुत वाद्य खंड चंचतपुटकों जांनिये॥

अन एक सर टाकणीको वाद्य खंड कहे हैं ॥ तकधिकट तकधिकट धिकटतक तकधिकट तकतक धिकट तथिकटतक धिकट में आठ वाद्य खंड आठ कलानके जांनिये। ये आठो कला एक वेर एक संग वरतिये। तब एक सरा टाकणी जांनिये॥ १॥ ओर एक संग आठों कला कमसों दोय वेर वर-तिये। तब जोडा टाकणी जांनिये॥

अवें वाद्यको लखन कहे हैं ॥ जहां तालकी जितनी कला होय । तितनी कला खंड होय से। वह खंड पहले तो संपूरण वरितये ॥ फेर एक एक कला दोय दोय वेर वरित पूरण कीजिये सो वाद्य जांनिये ॥ योगं दोय वेर खंड ऐसें बरितये दंदं टीरीटीरी टिद्दिक इदगडें ॥ थिरिक थिरटंक णगणथ रिग गणगण्यिरि । दत्थिरि गडगद दत्थिरि गडगद । दत्थिरि दत्थिरि । तर्गड्द कथिरि ॥ तकट तक ॥ इहां चंचतपुट धिकट हें । ताकी सोलह कलासों सोलह कलाकों ॥ एक वाद्य खंड रच्यो ॥ या वाद्य खंडको प्रथम तो एक संगपूरन कीजिये ॥ दूसरी वेर यांकी एक एक कला दोय दोय वेर किहकें खंड पूरन कीजिये ॥ तब यह वाद्य नामकों बजायवो होय ॥ यह वाद्य एक वेर बजाइये ॥ तो एक सरां वाद्य जांनिये ॥ ऐसें हि याको दोय वेर बजाइये । तब घोडा वादन जांनिये ॥ ये टाकणी वाद जो रचे ॥ ताको वादी बजाइवेवारो जांनिये ॥ इहां जाटनआदि जे बजायवेके प्रकार कहे ॥ तिनके पाटा छरनमें तकार लीजिये । यांते जाट आदि वादनमें ॥ दिगिदिगिये वरतीलीजिये जहां जां खंड दुतलयमें वरितये ।

सो त्राटन वादन जांनिये ॥ यारीतिसों ओर सीगरेवाद प्रकार जांनिये ॥ इति वाद्यको लखन संपूर्णम् ॥

जो नृत्य । १ । गीत । २ । प्रवंध । ३ । इनकों बाजेनमें रचायकें निर्वाह करे । ओर गुरुमुखसों पढके साम्र होय ता रीतिसे बाजेके तोड जोडकों जानें ॥ ओर सभानमें कोऊ को भय नहील्यावे ॥ अपनी विद्यानें । प्रवीण और चतुर जो नट्वा । अथवा भगतण जा प्रविनके बाजेके संग दूनी दूनों नृत्य करे । नृत्यमें आनंद रचावे ॥ सो बजाय बेबारो मुखरी जांनिये । २ । बजायवेमें चतुर होय । गायवेको अभ्यास जामें थोरो होय । सो प्रतिमुखरी जांनिये । ३ । जो सुद्ध । १ । सालांग । २ । सागनीके जातिनके सूधे बाजेके भेदनको बजावेके । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानक कोमल । १ । कठीन । २ । अछरनको जे संगीनतमें होय ॥ तैसों वरन ध्रुवा । १ । आभोग । २ । ताल । ३ । गमकनमें तिनों लयमें तिछरि मधुरि धुनिसों संगीत शास्त्रकी मर्यादासों गीतको निर्वाह करे ॥ ओर आरंभमें तकार राखे ॥ ओर याका समाप्तमेभी थोंकार राखे ॥ सो बजा-यवेबारो गीतानुग जांनिये ॥ इति च्यारी प्रकारको मृदंग बजायवे-बारेको लखन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंग बजायवेबारेका समूहकी लछन लिख्यते ॥ जहां ऐसें मृदंग बजायवेबारे नृत्यकी पृष्ठताके लिये। दोय। अथवा। तीन। अथवा। च्यार। उत्तम ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ किनिष्ठ ॥ ३ ॥ मृदंगकी रचनाको राालिये। सो माईलिक मृदंग जांनिये ॥ इति मृदंगका वृंदक लछन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंगको भेद हुडुकाहै ताको लखन लिख्यते ॥ जो लंबो अठाइस आंगुलको दूसरी चोवीस आंगुलको आछे काठको छोटो तबला दोय बना-इये ॥ तहां निचेकी परिषि गोल आकार कीजिये । दोऊ मुखकी तरफ सात सात उतार चढाव राखिये ॥ इनके मुखमें चढायवेकों जवरको उछेलिके अथवा काठके ॥ दोय सवा आंगुलके मोठे कडा कीजिये उनको नरम चामसों लपेटि गाढे करिकें । दोऊ मुखपें चढाइये । मृदंगकी सिनाइ । दोऊ मुख चामसों मढिये । ऊन दोऊ कडानमें डोरा बांधिवेके छह छह छेद होय तिनमें डोरा राखिये। मृदंगकी तरह

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ७१

बांधिये ऊहां आगें पिछेके भागमें दोय दोय काठके टूककी आंगल जामें लगाइये। ओर दोय च्यारी काठके टूकी । सुंदर बनाइकें । बांधिवेकी डोरिमें लगाइये । जासों स्वर ऊची नीची होय । याके धारन करिवेकों रेसमके कपडाकी दो बडा चोडी तीन आंगुलकी दोऊ तबलानके बीचमें बांधि गलेमें पहरे । आर बत्तीस बत्तीस डोर दोऊ तबलानके कडामें बांधिकें वा डोरेमें छह छह आंगुलकी चोडी रेसमी कपडाकी दोवडा पटि झोबडा तबलाकी मुखकी पटिवाके कंधापें पहरिये ओर बडे तबलाकी मुखकी पटि दाहिणे कंघापें पहारिये ॥ तब छोटे तबलाकों मुख बांई ओर-कों आवें बड़े तबलाको मुख दाहिणे ओरकों आवें । तहां दोऊ तबलाकी पेंदी फेटाके सहारेसो गांठि बांधिये हलेनही ऐसें कीजिये। तहां बंडे तबलाके मुखमें लोहचुरकी स्थाई दीजिये। यातें दाहिणें हातसों मृदंगके दाहिणे मुखके पाठाछरजुत बजाइये । ओर छोटे तबलाके ऊपर । गेहुंको चुन लगाय वामें हातसों मुदंगके । बांये मुखकी सिनाई पाठालर जुत बजाइये । याको अधिष्ठाता माता सात हैं। ताको नाम छिल्यते ॥ ब्राह्मी ॥ १ ॥ माहे-श्वरीश्रीव ॥ २ ॥ कौमारी ॥ ३ ॥ वैष्णवी तथा ॥ ४ ॥ वाराही ॥ ५ ॥ चैव इंदाणी ॥ ६ ॥ चामुंडा सप्तमा ॥ ७ ॥ तरः ॥ १ ॥ इन श्लोकनसुं सार्तो मातानके नाम जांनिये ॥ इन तबलानके पाठाछरमें । बि । नि । हि । दे । ये अछर नही लीजिये इहां देंकार पाठाछरनमें समझिये यह तबला जानिये॥ इति हडुका संपूर्णम् ॥

अथ करटा कहते ढालकों भेद ह ताको लखन लिख्यंत ॥ विजे सार काठ चोविस आंगुल लंबो ॥ अथवा ऐकीस आंगुल लंबो कीजिये ॥ वीचको पिंड चोथाई आंगूल ढालु कीजिये ताकों मोटो-पणों चालिस आंगुलको कीजिये। ताको नाम परिघ कहे हैं ॥ तहा वांके दोऊ मुखपें मढावकी रीतिसों तीन तीन तांतके तार बांधिये ॥ फेर दोऊ मुखपें गाढे दोय वेलके वा काठके वा लोहके कडा । दोऊ मुखपें पहराइये । वह कडा दोऊ कोमल चामसों गाठे मढिये । ऊन दोऊ कडानमें । चोदह चोदह छेद कीजिये । फेर वांके मुख दोऊ आछि चामसों ढोलकी सिनाइ मडिये। उद्युत उन चोदह

छेदके बिचिबचको एक एक छेद छोडिकें। बांधिवेकों चामका डोरा गरिकेंडु बांधिये। वाकी जो खाली छेद हें। तिनमें पतरे चामको डोरा डारि । उन डोरानसों पहले छेदके। दोय दोय बंधनमें छके आकार बांधिये। चढाव उता-रसों। यह ढोलको भेद करटा बाजो जांनिय। याके दोऊ कडाके पास चोडी चामकी पिट तीन आंगुल चोडी ताके दोऊ अग्र कडाके पास करटामें। बांधिकें गरेमें पहिरे। डंकासों बजाइये। अथवा कमरमें बांधिकें बजाइये। याको देवता चामुंडा माता जांनिये। या करटाके बांये मुखमें। टिरीकी ये अक्षर बजाइये। कटिरि ये दाहिणे मुखमें बजाइये॥ इति करटा लछन संपूर्णम् ॥

अथ घडाको लछन लिख्यते ॥ जाको बडो पेट होय कंठ जाको लंबो होय मुख जाको गैं। छ संकोच होय । घडा याको लेहिको होय रंगीन होय । ताको मुख चामसों मिंढ कडा लगावे । याकों मृदंगकीनाई बजाइये । जे मृदंगके पाठा छर हें । तेहि पाठा छर घडाके जांनिये ॥ इति घडाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ घडसको लछन लिख्यते ॥ याको लोकिकमें डिमडिमा कहे हैं ॥ तहां हुडुका सिनाई दोय तबला करे । तबलाके पिदामें ॥ एक एक छेद करे ॥ तहां दाहिणे हातके तबलाकों चामकी झिलिमिहि तासों मिढिये ॥ बांये हातसों तबला मोटेसे चामसों ढीलो मिढिये । वा चामके किनारेमें डोर बांधि नीचे पीदिके । छेदमें काढिकें बांये हातकें अंगु-ठामें वा डोरको अय बांधिके । बांये हातसों बांयो तबला बजाइये । तब अंगु-रिसों बजाबते । अंगुठासों डोरिकों खेंचिये । तब बांये तबलामें गोंकार निकस । याको लोकिकमें गुटक सब्द कहे हें । ओर दाहिणे हातसों हुडुकाके दाहिणे तबलाकी सिनाई बजाइये । तहां दाहिणे हातकी मध्य अंगुरी अंगुठासों बजाइये ॥ दाहिणे हातसों रगडतो या तबलामं गोंकार निकसेहें ऐसें यह यडक जांनिये ॥ इति घडसको लखन संपूर्णम् ॥

अथ ढवसको लछन लिख्यते ॥ विजेसारकों काठ चोवीस अंगुलको ढंबो कीजिये मोटो गुण चालिस अंगुलको होय । याको परिघ को हैं। याके बारह बारह अंगुल चोडो दोऊ मुख कीजिये। ऊन दोऊ

द्वितीय वाद्याध्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ७३

मुखमें कडा चामसों मिं । उनमें सात सात छेद किर दोऊ मुखें चढाइये वे दोऊ मुख चामसों मिं । वांके छेदनमें गाढोडोरा राखिये। ऐसीं जो बाजो होय सो ढवस जांनिये। याको करटाकी सिनाइ पहर बजाइये॥ बांये मुख बांये हातसों बजाइये॥ दाहिणे मुख दाहिणे हात पतरी बांसकी फाडलेके बजाय। यामें पाठाक्षर। टट जांनिये॥ इति ढवस लखन संपूर्णम्॥

अथ ढकाको लछन लिख्यत ॥ जेसें ढवस कीजिये । ऐसें ढका रिचये ॥ परंतु या ढकाके दोऊ मुख । तेरह तेरह आंगुल चोडा कीजिये । वांको बांये हातसों काठमें लेकें । दाहिणे हातसों डंडुकासों बजाईये ॥ याको धौसा कहतहें । बाके । टेटे । पाठ वरनेहं ॥ इति ढकाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ कुडुवाको लछन लिख्यते ॥ विजय सारको काठ । इकइस आंगुल हंबो कीजिये ताके सात सात आंगुलके चोडे दोय मुल कीजिये ॥ इहां उतार चढावको काठको आकार नहीं राखिये ॥ सिगरो काठ बराबरा राखिये ऊनके दोऊ मुखें वेलको दोय कडा चढाइये ॥ दोऊ मुख चामसों मढिये । ऊन दोऊ कडामें ॥ सात सात छेद कीजिये ॥ तिनमें चामको डोरा डारीके गाढो बांधिये ॥ बा दोऊ मुख डंकासों बजाइये । यामें के । पाठाछर जांनिये । इहां देंकार नहीं लीजिये । इनको देवता क्षेत्रपाल है ॥ इति कुडुवाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ रंजाको लछन लिख्यते ॥ विजय सारको काठ ॥ अठारह अठा-रह आंगुलको लीजिये ॥ वांके दोऊ मुख ग्यारह ग्यारह चोडे कीजिये । उनमें कडा चढायं ॥ चामसां मिंढिये । तहां बांथे मुखकी । ओर दोय कडा कीजिये ॥ एक कडा मुखके पासं बराबर की निये ॥ दूजो कडा मुखतें च्यार अंगुल आंतरे लगावे । ऊन कडानको तांतिसों जालिदार कर बांधिये ॥ जाके कडामें सात सात छेद करि । पहले बांधि तैसेंही बांधिये पीछे वामें एक पोंण हातकी तीन आंगुल चोडी पिट बांधिकें । कांखिमें लेकें बजावें । श्रीमहादेवजीको गणभंगी याकी देवताहें ॥ ओर महामुनि राजश्री मतंगजीनें याके वरन कहे हें । क । १ । त । २ । दा । ३ । ट । ४ । न । ५ । मा । ६ । र । ७ । ख । ८ । ओर कोऊ आकार्य अछिर कहे हें । क । १ । र । २ । ग । ३ । घ । ४ । द । ५ । न । ६ । ख । ७ । हो । ८ । जो वंध्यो वाजो होय सो कर्कस जांनिये ॥ इति रुंजा ो लछन संपूर्णम् ॥

अथ डमरुको लछन लिख्यते ॥ एक विलस्त काठ लंबो लेकें। आठ-आठ आंगुलके चोडो दोऊ मुख कीजिये बिचमें पतरो कीजिये ॥ याके दोऊ मुख चामसां मिढिये ॥ वा चामके बंधेजके डोरा बिचमें बांधीये ॥ इहां बिचमें पकरिके डोरानकों दाबि दाहिणे हातके डंकासो बजाइये। दोऊ मुखमें सों डमरु जांनिये। यामें ड पाठाक्षर हें ॥ ओर कोऊ आचारीजके मतसों। कर खट। ये च्यारि वरन कहे हें ॥ इति डमरुको लछन संपूर्णम् ॥

अथ करचकको लखन लिख्यते ॥ यांको छौकीकमें दायरा । १ । अथवा खंजि कहेहें ॥ दस आंगुलको मोटो च्यारि आंगुलको लंबो ॥ एक गोल चकके आकार बनाइये ॥ यांको बिचमें पोलो आरपार कीजिये । एक आंगुलको दल रहें ऐसी पोलो कीजिये । ताको एक मुख चामसों मिढिये ॥ बजायते वर चामको पांणीसों भीजाय । बांये हातसों वांटो दाबि दाहिने हातसों बजाईये । वामें । डवक । यह पाठाक्षर होत हें । इति करचकको लखन संपूर्णम् ॥

अथ रवावको लछन लिख्यते ॥ यह रवाव एक हातको लंबो कटहके काठको कीजिये ॥ तहां एक काठको आधे तूंबाके आकार कठोता दंडाके आगलेको लगाइये कठोता चामसों मिटिये । ओर कठोताकी सनमुखकोर पं सात छेद करि सात तांति बांधि दंडाके अग्र भागमें। खूंटी टीली गाटिके सातों तांतिनंक अग्र बांधिये । ऊन सातों तातिनमें । षड्जादि सातो स्वर कमसों राखिये । हा तिदांतिके टूकसों तांति वजाइये । वांये हातसों महे चामकों बजाइये । यामें मृदंगकेसे पाठाछर जांनिये । इहां कोऊ आचारिज पहले च्यारि तारमें मध्यम । १ । पंचम । २ । धेवत । ३ । निषाद । ४ । यह च्यारि स्वर पिछले तीन तांतनमें । षड्ज । १ । रिषम । २ । गांधार । ३। यह तीनो भेद कमसों कहेहें ॥ इति रवाबको लछन संपूर्णम् ॥

अथ दुंदुभिको लछन लिख्यते ।। याकों लौकिकमें नगारो कहतहें ॥ तांबेके वा लोहके वा अष्ट धातुके दोय बडे बडे । अथवा छोटे ।

द्वितीय वाद्याय-अनवद्ध बाजे पटह, ढोल, मृदंगको वर्णन. ७५

कटोराके आकार कराइये उनकीपेदिमें । एक एक छेद कीजिये। तहां छोटो होयसो मादी अर बडो होयसो नर जांनिये। तहां मादीको मुख बारिक। चाममें राठ लगाय मिटिये। वा चाम छेद करिकें डोरा चामके लगाई। नीचें पेदिमें एक चामकी एडी धिर वामें डोरा सिगरे बांधिये। याको बजावतीवेर आगिकी आंचसों वा सूरजकी आंचसों तपाय बजाइये काठके दोय डंकातें दोनु हातसों बजाइये। याको लौकिकमें कुंडकुंडी कहत हैं। इहां ज्यो नर होई ताको मुख मोटे चामसों मिटिये। पहले मादीकी सिनाई। खालके तसमानसो गाढे कीजिये। ओर काठको मोटो डंकासों बजाइये। तहां जाताके समय ताल नही बजाइये। जहां जुद्धमें जाइये। तहां जुदेजुदे बजा-ईये। जहां उछवादिक वा विवाहादिकमें। दोऊ मृदंगके पाठाछर जुत मिलाकें बजाइये। दोऊ जब मिले तब नोबत कहे हैं। नगारे बंडेकी बडी धुनि होत ह। छोटीकी छोटी धुनी होत हैं। इनकों चोडे लंबे बनावना होय। सो अपनी इच्छासां बनाइये। जेसी चाहे होय तेसी तरहके नगारा बनाइये। यह देवतानके मंदिर वा सिगर उछवमें बजाइये॥ इति दुंदुभिको लखन संपूर्णम् ॥

अथ डंकाको लछन लिख्यते ॥ जहां एक विलस्तको लंबो लेकें काट । बीचमें पतलोकिर पोलो कीजिये ॥ मुख आठ आठ आंगुल चोडो कीजिये ॥ तहां आंध आंगुलको ,पिंड किहये ॥ किनारी राखिये ॥ ओर दोऊ मुखमें च्यारि च्यारि तांबेकी कील राखिये । तहां दोयतो मुखके ऊपरकों दोय नीचेकों । तहां ऊपरके अग्रभागमें दोय तांति बांधिकें मुखके उपर दोय दोय तांत बांधिये । दोय तांत उनके कीलें उपरके अग्रभागमें बांधिये । दोय तांत नीचेके अग्रभागमें बांधिये । उन तांतके काटतें बीचमें दोऊ एकसी कत्रण कीजिये ॥ तब तांतनमें मधुर धुनि होय । वह दोऊ मुख चामसों हुडुकाकी तर हैं मिलिये ॥ ओर बारह आंगुलको डंका लेकें बजाइये । बांये हातमें हातिदांत कोंट्क लेकें ऊन तांतनको बजाइये । तालके अनुसार योमें हुडुकाकी सिनांई पाठाछर जांनिये ॥ इति डंकाको लखन संपूर्णम् ॥

अथ मण्डिडकाको लखन लिख्यते ॥ जहां सोहले आंगुलको लंबो काठ लेकें ॥ ओर डंकाकी सिनाई विचमं पतलो करि ॥ आठ आठ आंगुलकें चोडे दोऊ मुख करि च्यारि तांबेकी किल इंका कीनांई लगाय उनके ऊपर नीचें दोय दोय तांति बांधिये वे दोऊ मुख चामसों मिढिये। ऊन तांतनके दोय तांत-नको छला बांधिये। वे दोऊ छला बांये हातके ॥ अंगुठा चिट आंगुरि ॥ आदि तीन अंगुरीसों पकरिकें। बांये हातके अंगुठा पासकी आंगुरी सें। कीनारेके ऊपर चाम दाबिके दाहिनें हातसों बजाइये॥ अथवा बांये हातके पहुचामें दोऊ छलानको पहरिकें बांये अंगुठा अरु चिट आदि दोय आंगुरीसों किनारेके चाम दाबिकें बांये हातकी मध्य आंगुरीसों वा अंगुठा पासकी आंगुरीसों सहारो देकें दाहिणें हातसों। अथवा इंकासों बजाइये। यह बाजो श्रीभवानी माताजीकी पूजामें। अथवा स्तोत्र गावनमें बजाइये। यह बाजो श्रीभवानी माताजीकी पूजामें। अथवा स्तोत्र गावनमें बजाइये। यासों माताजी पसन्न होत हैं॥ इति मण्डिडकाको लखन संपूर्णम्॥

अथ डक्कलीको लखन लिख्यते ॥ जहां नवम अंगुलको वृषभको सिंग। अथवा हार्तिकों दांत। अथवा कांसेकी नव आंगुलकी भेंगली लीजिये। जाके मुख च्यारि च्यारि आंगुलको दोऊ चोडे कीजिये। भिंढाकी खालसों दोऊ मुख मिंढिये। ऊन दोऊ मुखमें कासेके वा तांबेके। वा लोहके कड़ा दोय लगाइये। दोऊ कड़ामें पांच पांच छेद राखिये। ऊन छेदनमें चामके तस मां डारिकें। करड़ो नही ढिलो नहीं ऐसो बांधिये। बीचमें सब होराके ऊपरि एक डोरा बांधिये। कमरबंधाकी तरहसों। तहां बिचके डोरापें चटी पासकी आंगुरी राखिकें। बीचली अंगुटा पासकी आंगुरी राखिकें। मुखके कड़ापें राखिकें। अंगुटासों ऊपरके मुखके सहारेसे॥ लगायो जो चामको छला ताको खेंचिकें दाहिणें हातसों बजाइये। यामें टंटतंतं। ये पाठाछर जांनिये॥ इति डक्कलिको लखन संपूर्णम्॥

अथ सेळुकाको लछन लिख्यते ॥ जहां छविस आंगुलको लंबो विजयसारको काठ लीजिये॥ ओर तीस आंगुलको मोटो कीजिये॥ ताको पोलो करि। वाके दस दस आंगुलके चोडे मुख कीजिये। दोऊ मुख कोमल छालसों मिटिये। अंगुठा पासकी आंगुरीमें। मोठे वेलके दोय कहा लगाइये॥ ऊंन दीऊ कहामें छह छह छेद कीजिये। ऊंन छेदनमें छालके होरा बांधि गाठो बांधिये। तहां बांथे मुखके चामसों लगाइये। एक तांति कहासों बांधिये। बांये

मुखको बांये हातसों बजाइये। दाहिणे हातमें डंका छेकें दाहिणे मुख बजाइय तहां बांये मुखमें झें। पाठाक्षर ओर दाहिनें मुखमें। धिं। पाठाक्षर होय हैं॥ इति सेख्नुकाको लछन संपूर्णम्॥

अथ झल्लरीको लछन लिस्यते ॥ जहां पचीस टका भार तांबेकी बारह आंगुलकी लंबी । अठारह आंगुल चोडी गोल कोठी कीजिये ॥ बराबरकी करे । योमें उतार चढाव नहीं कीजिये । ओर वाके कंठमें बराबर दोय छेद की-जिये । तामें डोरा पोयकें । गांठी देकें बांये हातके अंगुठामें राखियें । वांको मुख चमासों मढि डोरासों जवर बांधिये ॥ दाहिणे हातसें डंका लेकें बजाइये ॥ इति झल्लरीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ त्रिवलिको लछन लिख्यते ॥ एक हातको लंबो काठ लेकें। बीचमें पतरो कीजिये। जेसें मुठिमें आवे। वांके दोऊ मुख सात सात आंगुलके कीजिये। चोडो। ऊनसों चामसें मिंढिके। ऊन दोऊ मुखपें सात सात छेदके दोय लोहके कडा चढाइये। ऊन छेदनेंभें। चामक डोरा बांधिये ॥ फेर ऊन डोराकों दाबिके बीचमें गाठो बांधिये ॥ फेर बांये एक डोरा जवरकर बांधिकें कांधोपें पहरिये। वाकों दोऊ हातसों बजाइये॥ या निवली बाजेमें ॥ तं। दों। दों। द। यह पाठाक्षर जांनिये। याकी देवता निपुरादेवीहे ॥ इति त्रिवलीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ धोंसा दुंदुभिको भेद हे तिनको लखन लिख्यते ॥ आंमके काठको बड़ो नगारो बनाइये। तांके भीतर कोसेकी दाल तांतसों बांधिये। यांके मुख ऊपरज नहीं लगांवे। मुख चामसों मिंढिये। पीछे छालके डोरासों गाढो खेंचि बांधिये॥ पिछे काठके दोय बड़े भारि डंकासों दोऊ हातसों बजा-इये। यांमें गें पाठाक्षर हैं। यांमें मेघ गरजेकी धुनि होत हैं। मंगलमे विजयमें देवतानके मंदिरमें बजाइये॥ इति दुंदुभिको भेद-लखन संपूर्णम् ॥

अथ भेरीको लखन लिख्यते ॥ तांबेको तीन विलस्ति लंबो ढोल कीजिये। वांके दोय मुख चोविस अंगुलके चोडे कीजिये। ऊनमें काठके वा लोहके वा चामके तातंक दोय कडा लगाइये। दोऊ मुख आछी जवर चामसों मढिये। ऊन कडामें छेद करि छालके तसमासों ढोलकी सिनाई बाधिये बीचमें चोडो तीम आंगुलके चामकी पिट बांधी गरेमें पहरिके ॥ दाहिणे मुख हंकासों बजाइये । बांये मुख बाये हातसों बजाइये ॥ तब बडी गंभीर धुनि होय । ता धुनि सुनते वेरीनके समूहकी छाति फटे । याको ट पाठाक्षर हैं ॥ याको लौकिक-में आरबी बाजा कहावे हैं ॥ इति भेरीको लखन संपूर्णम् ॥

अथ निशानको लछन लिख्यते ॥ कांसेको अथवा लोहको अथवा तांबेको एक मुखकों । तीन हातको लंबो । जवको आकार ऊचो लंबो नगारो कीजिये तांमें कासेकी छोटि कटोरी झांझ उनमाहि धरिये । उपरको मुख भेंसाकी मोटि चामसों मिटिये । बांये मुख चामसों कडा चढाय वा कडाके छेदमें चामके तसमां बांधि गाटो कीजिये । पीछे हातमें मोटो डंका काठको लेकें । बडे जोरसो बजाइये ॥ यामें ढंढं पाठाक्षर होय । या नगारेकी धूनिसों संयाममें कायरकी छाति फाटे । सूरिबरकों उछाह करे रोमांच करे ॥ इति निशानको लछन संपूर्णम् ॥

अथ निशानको भेद तंबकी होत हैं। ताको लखन लिख्यते॥ जो निशानको प्रमानमें। वा धुनिमें कछुइक घाटि होय॥ ओर तरहके निसानकीसि होयसो तंबकी जांनिये॥ इति तंबकीको लखन संपूर्णम्॥

इहां जो काठ वा चाम लीजिये ॥ सो घणों श्रेष्ठ काष्ठ छेद आदि फांट रहित घणो सिचक्कण उत्तम होय सो निरिवकार काष्ठ लीजिये ॥ ऐसेंहि उत्तम निरिवकार चाम लीजिये । यामें बडे गुन हें तीन जगतमें व्याप्त हैं ऐसो अनिबद्ध बाजोहै ॥ इति अनवद्ध बाजेको भेद-लछन संपूर्णम् ॥

॥ घनबाजोंके भेद ॥

अथ घनवाजेके भेद्—लछन लिख्यते ॥ तहां मथम तालको लछन लिख्यते । यह घन वाद्य कांसेको होत हैं । तासों कांसेकों अग्निमे सुद्ध किर ॥ पुल कांसोंके करिवांके दोय ताल बनाईये । अठाईस आंगुलके चोडे मुख नीचेकों झारिलिये होय । पेंदिमें आंगुल विस्तार ढालुपेंदि राखिये । नाभिके आकार वा नाभिमें चोथाई गुंजा ममान डोरा पोइवेको छेद कीजिये । तालसों ते आडेजव बराबर राखिये उंचे डेड आंगुल नाभि संधि बनाईये । गोल आकार कीजिये ॥ ऐसें ऊंनकी धुनि कांनकों प्यारि लगे तैसी कीजिये। वा तालनके छेदमें एक मिहिने तीन डोराकी बनाय । बाके दोन तालनमें पोय गाढि दीजिये। इनमें जो छोटो मादी ताल होय सो ताकी डोर दाहिणें हातसों अंगठा पासकी अंगुरीमें लपेटिये। बांये हातमें सुधा ताल राखिये ओर जो बड़ो ताल होय। सो तांकि डोर दाहिनें हातकी अंगूटा पासकी अंगुरीमें छपेटि । नरको मुख निचेको राखि बांये हातके तालपं दाहिणं हातको ताल। अण्। १ । द्वत । २ । द्वतविराम । ३ । छष् । ४ । छष्विराम । ५ । गुरु । ६ । प्छुत । ७। इन सातों अंगके प्रमाणसों मार्गी देसी तालनमें बजाइये। इन दोऊमें जाकी लघ धनि होय सो मादी हैं। याको देवता श्रीपार्वती माता हैं। अरु जो बड़ो ताल ताकी बडी धनि होय सो नर हैं। ताको देवता श्रीशिवजीहें। इहां बांये हातसों पार्वतीजिको ताल लीजिये। दाहिणे हातसों शिवजीको ताल लीजिये तब अश्वमेध यज्ञ कीयेतें फल होय । सो सुनिवेवारेको होय । ये नवरसमें बजाइये । इनको देवता गंधर्वराजातुंबर हैं । शिवको ताल बाये हातसों लिये। अरु पार्वती ताल दाहिनें हातमें लिये तो। महापातकी होय नरकमें वास करे ॥ तासों सास्रकी रीतिसों शुद्ध गुरुकी संपदायसों ताल वरतिये । तब सब पातक मिटत हैं। सिगरे देवता पितृमुनिस्वर वरदानदेकें मनोरथ सफल करत हैं। इति ताल लखन संपूर्णम् ॥

अथ कांस्य ताल किहिये झांझ ताको लछन लिख्यते ॥ जेसें कमलिके पत्रके प्रमाण । तेरह आंगुलके चोडे । लंबे गोल आकार दोय ताल
कीजिये । बीचमें दोय आंगुलके प्रमान । गोल एक अंगुलकी गहरि नाभि कीजिये । ताके बीचमें पहले तालकी सीनांई छेद करि डोरा बांधिकें तालकी
तरह बजाइये । यामें । उनकट पाठाछर हें । यह श्रीभगवानके भजनमें मुख्य
हैं । याको अपनें हातसों भगवानके भक्तजन बजायकें भजन करें तब श्रीराधाकृष्ण भगवान प्रसन्न होयकें ॥ च्यारों पदारथ देत हैं या तालके देवता नारद
जांनिये ॥ इति कांस्य तालको झांझको लछन संपूर्णम् ॥

अथ घंटाको लखन लिख्यते ॥ जहां कांस्यकी घंटा आठ आंगुल उत्ती कीजिये। तांके उपर पिंड छेदजुत आठ आंगुलको राखिये। मुख चोडो

गोल आकार च्यार आंगुलको कीजिये। वांके मूलें एकदंडी पीतलकी मूठींनें मावे इतनी पिंडके छिद्रमें लगाइये। वा दंडीके ऊपर कमलके फूलको आकार किर गरुडजीकी मूर्ति वा हनुमानजीकी मूर्ति। वा अपनें इष्टकी मूर्ति वा रुचि होय तेसी राखिये। वा दंडके नीचले भागमें। एक कुंदा किर वामें लोहको आकडा डारि वा आकडामें डेड आंगुलको। एक आंगुलको मोटो लोहको। लोलक डारिये। पीछे वा दंडकाकों दंड बांये हातसों पकडीकें बजाइये। जहा अपनें इष्ट देवकों पूजनें होय। तहा समयमें स्नान ॥ १ ॥ आरती ॥ २ ॥ भोग ॥ ३ ॥ उत्थापन ॥ ४ ॥ शयन ॥ ५ ॥ आदि मंगल समयमें घंटा बजावे। सो यह घंटा श्रीविष्णु भगवानके पूजनमें मुख्य हैं। जो शालिग्रामजीकी पूजा करिये तब राखिये। या सों विष्णु भगवान् बहोत पसन्न होयहें च्यारि पदा-रथके वरदान देत हैं यासो घंटा विना पूजा नहीं कीजिये ॥ इति घंटाको लखन संपूर्णम् ॥

अथ क्षुद्रघंटाको लछन लिख्यते ॥ याको नाम लौकिकमें घुंघरा कहतहें ॥ जहां कांसिकें दोय पृट । झारिवेकी गुटलीमावे । इतने लीजिये ॥ पीछे दोय पुटनकें बीचमें लोह कोणां वा पाथर कांकरो घालि दोय पुटनको आपसमें आवें तामें छोडीये वांके ऊपर डोरा पोयवेको एक नाका लगाय दीजिये ॥ सो याको नाम लौकिकमें घुंघरा कहत हें ॥ ये दस बिस तीस एक डोरामें पोयकें ॥ नृत्य करती वर दोऊ पायनमें बांधिकें । तालनमें नाचिये अथवा कमरमें बांधिके नाचिये । इनमें झुंण झुंण सब्द निकलतेहैं । सो घुंघरा जांनिये ॥ इति घंटिका कहिये घुंघरा ताको लछन संपूर्णम् ॥

अथ जयघंटाको लछन लिख्यते ॥ या जयघंटाको नाम लौकिकम झालिर कहतहें सो ताके दोय भेदहें। जो घडिघडिके प्रमानेषें। तास बजावे सो बडेके आकार कांसेकी वा अष्टधातुकी। मोटि होय सो घडी बजायवेकी घर घोर महाघंटा जांनिये॥ सो याको पृथ्वीपतिमहाराज मनावे। ऊत्तरायनमें। पृष्यार्कमें। हस्तार्क योगमें॥ जब सुतके रसीकों बांधीके लटकावे तब घडी एक पूरि होय॥ तब इंका एक दीजिये। या रीतिसों आठ पहर राति दिनको प्रमान जांनिये। याको घटि पल जांनिये। १। ओर जो फूल

कांसिकी एक हात प्रमान ॥ ठंबी गोली चोडी तथा लीक कीजिये। मोटि सवाजव आटो होय ताको प्रमान । अथवा आपकी इछा होय जितनी। मोटो बनावे ताकी कौरमें दोय बराबर छेद किर । एक आंगुलके आंतरेसूं। तामें होरा पोयकें। वामें हातमें। वा अंगुलमें गराकों राखे। दाहिणे हातमें काठको इंका राखिकें बजावे तब तामें। टंटंटं। पाठाछर होत हैं। यह श्रीभग-वानको प्यारि हैं याकों आरितके समें देवताके मंदिरमें बजाइये॥ पातसमये सं-ध्यामें। याकी झालर कहत हैं। याकी धूनिसों भूत पेत पिशाच डाकिनी आदि। दुष्ट उपदव रोग दोष सब मिटत हैं॥ झालरि छोटि मोटि। अपनी इछासों चाहो जैसी बनावे॥ इति जयघंटाके दोय भेद संपूर्णम्॥

अथ कम्राट कहिये काठकी पाटि बजायेवेकी ताको लखन लिख्यंत ॥ जहां खेरकी लकडीकी वा टोसबांसकी दोय दोय आंगुलकी चोडी बारह बारह आंगुलकी लंबी । बिचमें इल्ला होय तैसी मोटि राखिये । दोनु अम कल्लूइक पतरो होय । ऐसो च्यारि खंपाट किये । इनमें दोय दोय खंपाट दोऊ हातमें लीजिये । तहां एक पाटतो अंगुटा अंगुटाके पासकी अंगुरीकी संधिके बिचमें पहरिये ॥ जेसे आंगं पिछे बरेबर नीकसी रहें ॥ ओर दुसरी खपाट बीचरी आंगुरीमें अंगुटा पासकी । अंगुरीके संधिमें लीजिये ॥ ऐसे दोऊ हातनमें । च्यारों खपाट लीजिये पीछे उनकी ढीलीसि करि पहुचांके कंपसों आपसमें बजावे बामें । किटकिट । यह पाटाक्षर हैं ॥ कोऊक आचारिज ऐसे कहत हैं । दोऊ हातकी कपाट । नीचे ऊपर मिलायकें हातकी हतरेके रगडेसों आपसमें सब्द मनोहर होत हैं । इति कम्राट लखन संपूर्णम् ॥

अथ सक्ति वाद्य कहिये। किरिकेट्ट तालको लछन लिख्यते॥ कांसिकी वा लोहकी सर्पके आकार विचमें॥आंगुल आंगूलके अंतरसों कंचि ऊंचि लीक आधे जवपमान कीजिये। वांको हिरदेके संगके आकार किरविरि जामें होय ऐसो लोहके इंकासो उन लीकनके ऊपरि आडो तिरछो रगिडिये। तव। किरिकेट। यह पाठाछर होय हैं॥ याको देवता कुवेर हैं। यह बाजो ग्यारह । ११। हदको प्यारो हैं॥ सो याके बजायों शिवजि पसन होय हैं॥ इति सिक वाद्यको लछन संपूर्णम्॥ अथ पट वाद्यको लखन लिरूयते ॥ जहां वेतके काठका चीकुट वसीस आंगुलको वा तीस आंगुलको कीजिये ॥ एक हातको चोडी कीजिये ॥ वा पाटाके ऊपर नीचें दोय बंधक कीजिये ऊंन बंधनकमें छोहकी एक पतिरकोर छोटिछोटि कडीदार बजाइये ॥ माकों गोडोके ऊपर धरिकें । याकी छोटि छोटि कडिनकी पांति ॥ जो छोहकी कोरमें हे तिमकों अंगुरीनमें राख लगाई बजाइये । यामें करटा । पाठाछर हैं । याके देवता सात रुपेश्वर कहत हैं ॥ इति पट वाद्यको लखन—भेद संपूर्णम् ॥

अथ घटको लखन लिख्यते ॥ जहां घडा खापरको छेकें वांके मुख-कों हानसों बनावे वांको मुख चामसों नहीं मढे होय । सी घडा इनकोरी बाजेमें जांनिये । यांको देवता प्रजापित सूद कहत हैं सो जांनिये ॥ इति घटको लखन संपूर्णम् ॥

अथ जलजंत्रको लखन लिख्यते ॥ वाईस । २२ । कटेरि कांसेकी अथवा विणीकी कटोरि बाईस । २२ । छीजिये । सो पूरनजंत्रजलवाद्य जांनिये । यांमं पनद्रे । १५ । कटोरि होय सो । मध्यमं जलजंत्रजांनिये । इहां पात्र पहले सों लेकें सब अनुक्रमसों ऊंवे ऊंवे राखिये । ऊतमें जल भरिये । सो जलस्वरेक अनुसारतें घटि विश्व कीजिये । ऊत कटोरीनमें वीगांके अथवा मुरलीके । अथवा कंठके अनुस्वर शुद्ध विकत षड्जादि सात स्वर राखिये । फेर वीणाकी सीनाई राग उपजे । एक एक बिलसतेक दोय हंका दोऊ हाथमें लेकें । चतुर इष्टगुनी रागनी उपजे । अर्थने चतुराईसोंजे होयतेसेंही बजावे । या जलजंत्रमें स्वरकों दावि वो जलजुा कटोरिके किनारेके छुयेतें होत हैं एसेंहि यामें । आंदोलन । १ । मीडन । २ । आदिक स्वरनके वरतावे । साख-की रितिसों गुरु मुखसों जांनिये ॥ यांको छौकिकमें जलतरंग कहे हैं ॥ इति जलजंत्रलखन संपूर्णम् ॥

अथ कल्पतरु ते लखन लिख्यते ॥ जहां दंडमें सात घंटा लगायकें कुंदा बजावे । ऊंन घंटामें पकरिवेकी डांडी नही होय ॥ ओर जा घंटाकें कपर लगायघडी बनाइये । सो श्रीविष्णुभगवान ॥ १ ॥ ओर शिवजी-महाराज ॥ २ ॥ ओर महाशक्तिजी ॥ ३ ॥ विघन हरता गणेशजी

॥ ४ ॥ ओर श्रीमत्यक्ष सूर्यनाराणजी ॥ ५ ॥ यह पांचो देवता । इनके मंदिरनके छताके कहामें बांधि दीजिये। निचेको लोलक बाजतीतरफ छ- दक्ती रहें । सो दरसन करिवेबारे । मभूको दरसन करेते वा घंटाके दाहिणे हात लगाये बजावे। ता घंटाके नादसों सिगरे उपद्रव मिटे । यह मंदिरनमें सर्वत्र राखिये। याको महा पुण्य हें कल्पवृक्षकी सिनांइ कांमनादेहें ॥ इति कल्पतरुको छछन संपूर्णम् ॥

अथ काठके तालको लछन शिल्यते ॥ जहां मृदंग बाजे तहां कर ताल बाजे । काठकी वा कांसीकी बनावे । ग्यारह । ११ । आंगुलकी प्रमान यत्न करिकें तिथे रालिके बजाइये । मनकों सुख उपजावे ॥ इति काठके ताल-को लछन संपूर्णम् ॥

॥ सुषिर-वंसीके भेद ॥

अथ सुषिर बाजेको नाम लिख्यते ॥ वंस । १ । पावा । २ । पाविका । ३ । मुरु । ४ । मधुकरि । ५ । काहरु । ६ । तुंझिकिनी । ७ । चुका । ८ । सींग । ९ । शंख । १० । सुनांदी । ११ । नागसर । १२ । मुखबीणा । १३ । चका । १४ । चंग । १५ । पत्रिका । १६ । स्वरसागर । १७ । ये सुषिर बाजे जांनिये ॥

तहां प्रथम वंस बाजेको नाम लिख्यते ॥ घणों सुंदर सरल बांसकों वाखरेको वा हाति दांतको । वा रक्तचंदनको । वा श्रीचंदनको । वा लेहिके । वा कांसीको । वा ह्योको वा सुररनको वंशी बनाईये । सो गोल आकार सचि- कन सूबी नीजिये । एक चटी आंगुरी वांके भीतर आवे । इतनी पोलि सीगरी किंजिये । वाको उपरको मुख मूबो राखिये । सो सास्रोक्त प्रमानसों लंबी । अठारह आंगुल । १८ । कीजिये । ताके उपरके भागें । दोय आंगुल वा तीन आंगुल वा च्यार आंगुल छोडिके । बजायवेको एक आंगुलको प्रमान । एक छेद कीजिये । सो छेद चोक्टे कीजिये । वा चोक्टे छेदको नाम मुखरंघ कहिये । या मुखरंघतें एक आंगुल जगों छोडि । दाहिणें ओर एक छेद गोल कीजिये । याको नाम नादरंघ जानिये । चिरमीके प्रमानसों

लीजिये। फेर वा गोल छेद्कें। आंगें तीन आंगुल वा च्यार आंगुल छोडि। एक एक अंगुलके अंतरसें। सात छेद गोल आकार मानतामें चिरमी वा डांडिके बेर बीचमाही आवे। ऐसें छेद कीजिये। ये छेद सातों स्वरनके जांनिये॥

ओर एक आठमों छेद धुनिको कारन हैं ॥ सो मुखरंधके पासको जांनिये। नवम मुखरंध हैं । एसें जा वंसीमें नव छेद होय । सो वंसी एक वीर नाम जांनिये। तव मुखरंध। १ । धुनि कारण रंध याके पासके इन दोनूनमें बीचमें। एक एक अंगुल जगोंके वधायवेतें चोदह वंसीके मेद ओर होत हैं ॥ तिनके नाम—लखन लिख्यते ॥

जहां मुखरंध। १। नादरंध। २। इन दोऊनके बिचमें दोय आंगुलको अंतर होय ताको नाम उमापतिहें। यां वंसीका प्रमान उगनीस आंगुल लंबी होत हैं। १।

जहां मुखरंध । १ । नादरंध । २ । या दोनुनके बीचमें तीन आंगुलको अंतर होय सों त्रिपुरुष जांनिये । याको प्रमान वीस आंगुल जांनिये । २ ।

जहां मुखरंध । १ । नादरंध । २ । इन दोनुनके बीचमें च्यार आंगु-लका अंतर होय सो चतुरमुख जांनिय । याको इकाविस आंगुलको प्रमान जांनिये ।३।

जहां मुखरंध नादरंधके बीचमें पांच आंगुलके अंतर हाय । सा पंचवक जानिये । याका प्रमान बाईस आंगुल जानिये । ४ ।

जहां मुखरंध नादरंधके बीचमें छह अंगुलको अंतर होय सों षण्मुख जानिये। याको प्रमान तेवीस आंगुलको जानिये। ५।

जहां मुखरंध नादरंधकं बीचमें सात आंगुलको अंतर होय सो मुनिराज जानिये। याको प्रमान चोविस आंगुलको जानिये। ६।

जहां मुखरंध नाद्रंधके बीचमें आठ आंगुलको अंतर होय सी वसु जानिये। याको ममान पचीस अंगुलको जांनिये। ७।

जहां मुखरंध नादरंधकं बीचमें नव अंगुलको अंतर होय सो नाथेंद्र जानिये। याको ममान बीस आंगुलको जानिये। ८।

जहां मुखरंध नादरंधके बीचमें दस आंगुलको अंतर होय सो महानंद जानिये। याकी पमान सतावीस आंगुलको जानिये। ९। जहां मुखरंध नादरंधके बीचमें एकादस आंगुटको अंतर होय सा रुद्र जांनिये। याको प्रमान अठाइस आंगुटको जांनिये। १०।

जहां मुखरंध नादरंधके बीचमें बारह आंगुठको अंतर होय सा आदित्य जांनिये । याको प्रमान गुगतीस आंगुठको जांनिये । ११ ।

जहां मुखरंघ नादरंघके बीचमें चाेदह आंगुठका अंतर होय सा मन् जांनिये। याको प्रमान इकतीस आंगुठका जांनिये। १२।

जहां मुखरंध नादरंधके बीचमें सोलह अंगुलको अंतर होय सो कलानिधि जानिये । याको प्रमान तीस आंगुलको जांनिये । १३ ।

जहां मुखरंध नाद्रंधके बीचेमें अठारह आंगुलको अंतर होय सो अन्वर्थ जांनिये। याको प्रमान पेंतीस आंगुलको जांनिये। १४। यह चोदह भेद जांनिये। १४। यह चादह भेद तो यह ओर पहलो एकवीर ऐसें मिलिकें। पनदरह भेद वंसीके जांनिये॥

ओर कांऊ आचारिज वंसीका प्रमान वीस आंगुलको कहत हैं ॥
ताको नाम सुरुभवंसि जांनिये। १। कोंऊ मुनिराज । बत्तीस आंगुलके
प्रमान वंसी कहत हैं। ताको नाम श्रुतिनिधि कहत हैं। या बत्तीस अंगुलकी
वंसीमें अतिमंद्र धुनि होत हैं। यांत याको यहण कोंऊ करे हैं। कोंऊ नहीं
करे हैं। ओर च्यार आंगुल तीस आंगुल एक आंगुल जिनको अंतर
होय सो वंसीमें अतितार धुनि होत हैं यांतें ऊनहूको कोंऊ कोंऊ अंगीकार करे॥

अवें नव आंगुलके अंतर तें लेकें अठारह अंगुलके अंतर तांई। सात वंसीके भेद हें ॥ तिनके उलटी रीतिसों षड्जादिक सात स्वरनकी उत-पत्ति कहे हैं ॥

तहां अन्वर्थ नाम पीछलोपं तीस अंगुलकी वंसी तामं नादरंध खुलो राखिये मुखरंधमें। पवन पूरन कीजिये। बाकीके सात नीचले स्वरनके छेद दोऊ हातकी अंगुरीनसों मूंदी दीजिये। तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको षड्ज जांनिये। ऐसेंहि नेतिस अंगुलको वंस कलानिधि तामें सातों छेद मूंदेसों जो धुनि होय सों मंद्रस्थानको रिषम जांनिये॥ एसेंहि इकतीस अंगुलको वंसको नाम मनु हैं। तामें सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको गांधार जांनिये॥ ओर जो गुणतीस अंगुलको वंस आदित्य है। यातें सातें छेद मूंदिय। तब जो धुनि होय सों मंद्रस्थानको मध्यम जांनिये। एसेंहि अठाईस अंगुलको वंस रुद्र हैं ॥ तामें सातों छेद मूंदिये। तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको पंचम जांनिये॥

ओर सताइस अंगुलको वंस महानंद हैं ॥ तार्ने सातमीं छेद मूंदियेतें ॥ तब जो धुनि होय सो मंदस्थानको धैवत जांनिये ॥

ओर छविस अंगुलको वंस नाथेंद्र हैं ॥ तामें सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सो मंदस्थानको निवाद जांनिये ॥

ओर पर्चास अंगुलको वंस वसु हैं ॥ तार्में सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सा मध्यस्थानको षड्ज जांनिये ॥

ओर चोविस अंगुलको वंस मुनिराज हैं। नामें सातों छेद मूंदिये नव जो धुनि होय सो मध्यमस्थानको रिषभ जांनिये॥

एसें हि तहस बाहस इकइस वीस उगनीस। अंगुलके बंसनको नाम वण्मुल। २३। पंचवक्त । २२। चतुर्मुल। २९। तिपुरुष। २०। उमापित । १९। इनमें सातों छेर्मों दियेते कमसों मध्यमस्थानके गांधार । १। मध्यम । २। पंचम। ३। धेवत । ४। निषाद ये स्वर होत हैं। ओर अठारह अंगुलको वंस एकवीर हैं। तामें सातों छेद मूंदियेतें। जो धुनि होय सी तारस्थानको षड्ज जांनिये। इन पनदरह वंसनीमें। पिछलो दोय दोय खोलिकें पांच छेर्में मूंदिकें बजावे तब दूसरे दूसरे स्वरकी उत्तपत्ति होय ऐसेंहि तीन छेद खोलिकें। च्यारि छेद मूंदिकं। तीसरे तीसरे स्वर होत हैं। ऐसे च्यारि खोले तीन मूंदे। तब चोथे चोथे स्वर होत हैं ऐसें पांच छेद मूंदे तब पंचम स्वर होत हैं ऐसें छह छह खोले। एक मूंदे तब छेट छेटे स्वर होत हैं। ऐसे सातों छेद खोलिकें ऊभी छेद मूंदे नहीं। तब सातमें स्वर होत हैं। ऐसें अन्वर्ध नाम पेंतिस आंगुलके वंसमें दोय रंध पिछले खोले तब मंद्रस्थानको रिषम। तीन छेद खोले गांधार च्यारि खोले। मध्यमें पांच खोले। पंचममें छह खोले। धेवतमें सात खोले। निषादमें मंद्रस्थानके स्वर होत हैं।

एसंहि कलानिधिमें। गांधार आदिकें। मनुमें मध्यमादिक । आदित्यमें पंत्रमादिक । रुद्रमें धेवतादिक महानंद्रमें निषादादिक नाधेंद्रमें मध्यमस्थानके
बहुजादिक स्वर होत हैं। दोय आदिक छेद खोले। तब छह स्वर होत हैं।
ओर वसुमें। १। मुनिराज। २। षण्मुख । ३। पंत्रवक । ४। चतुर्मुख। ५।
त्रिपुरुष । ६। उमापति। ७। इन सातोंनमें दोय छेद आदिक छेद खोले तें।
मध्यमस्थानके रिषमादिक गांधारादि। मध्यमादि । धेवतादि । निषादादि।
तारस्थानके षड्जादिक छह स्वर जांनिये। ऐसेहि एक वीरमें दोय आदिक छेद
खोले ते तारस्थानके रिषमादिक छह स्वर जांनिये। इन सगरे बंसके भेदनमें।
नाद्रंध खुल्यो राखिके सातों स्वरनके छेद मूंदे। तब पहलो स्वर पिछलेतें॥
आठमो उपजत हैं। यह रीति भरतादिक अनुप्टुप् चक्रवर्ती आदि राजरिष।
साङ्येष विसाखिल हनुमान आदि मुनीजन कहत हैं।। इति पनदरे भेद

अथ वंसीके स्वरनको भेद लिख्यते ॥ जहां जो स्वरके छेदसीं अंगुरी दूरि ऊंचि उठाइये स्वर अपनी जितनी श्रुति होय । तितनी श्रुतिकों जांनिये । जो अंगुरी छेदसीं दूरि नहीं कीजिये । थोरोसी अंगुरीकों कंप करि। कर अंगुरी चाहीय राखिये । तब एक श्रुतिहीन स्वर होय । जहां आंधो छेद खोलिये । आंधो मूंदि राखिये । तहां दोय श्रुतिहीन स्वर होय । ओर जहां आधो छेद खोलि आंधो छेद मूंदि कंप कीजिये । तहां तीन श्रुतिहीन रहे हैं । यह रीति च्यार श्रुतिके स्वरकी कहीहें यही रीति तीन श्रुतिके दोय श्रुतिके स्वरमें जांनिये ॥

इहां कोऊ आचारिज ओर पकारसों सात स्वर कहे हैं। जहां बांयो हात रहें। तहां दाहिणें हात। ओर जहां दाहिनो हात रहे। तहां बांयो हात राखिये। ऊन दोऊ हातनकी अंगुरीनके अमके छेद मूंदिवेकों नीचेको बांके कीजिये। दोऊ हातनके अंगुरा वंस पकरिवेकों वंसके निचें लगाइये। जेसें दोऊ हातनके बीचमें वंस आवे। तब अर्थचंद्र हस्तक ॥ १॥ नागफण हस्तक ॥ २ ॥ ये दोऊ जानिये॥

ये दोऊ इस्तक वंसमें मुख्य कहत हैं। तहां सातों छेदनमें। पह्जा

॥ १ ॥ रिषम ॥ २ ॥ गांधार ॥ ३ ॥ के पिछले तीन छेद बांये हातकी चिटि अंगुरी पासकी आंगुरी अनामिका । तासों ओर बीचली अंगुरी मध्यमासों । अंगुठा पासकी आंगुरी तर्जनीसों । इन तीनों अंगुरीसों तीनों स्वरके छेद मूंदिये । ओर दाहिने हातकी चटी अंगुरी आदिकें च्यारों अंगुरीसों । मध्यम ॥ १ ॥ पंचम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ यह च्यार छेद मूंदिये । ऐसें वंसधारण कीजिये या रीतिसों वंसधारण करि बजाइये ॥

अवें या वंसमें मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनों स्थाननकी रचना कहत हें । या रीतिसों वंसकों धारणकरिकें । साधारण रीतिसों मुख राखि । बजायवेको छेद जो मुखरंध्र तामें पान भरिये । तब मध्य सप्तकके स्वर होत हें । जहां मुखसों आधो मुखरंध दाबी मुखकों संकोच । बछसों पोंन भरिये । तब तारस्थानके स्वर होत हें । याको नाम टीप कहत हैं । यह मध्य-स्थानकी दून हैं यातें मध्यमस्थान सों दूनों जांनिये ॥ २ ॥

जहां मुखरंभके निकट राखि मुख ढीलो करि मंद् पोंन भरिये। तब मंद्रस्थानके स्वर होत हैं। याको नाम गंभीर कहत हैं। यातें मध्यस्थानसें आधो जांनिये। तारस्स्थानतें चाथे वाटो जांनिये॥ ऐसें मुखके पोंनकी जुक्तिसों गुरु संमदाय अनुसारसों तीनों स्थानक बुद्धिसों रचिये॥

अथ मुख पांनके भेदसां स्वरके पांच प्रकार लिख्यते ॥ जहां जो तीछन ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ शीघता ॥ ३ ॥ सिथिलता ॥ ४ ॥ पूर-नता ॥ ५ ॥ अपूर्णता ॥ ६ ॥ ऐसे मुख पांनक भेदसों स्वरनके अनेक भेद हैं । तामें मुख्य पांच भेद पसिद्ध हैं । कंपित ॥ १ ॥ विलत ॥ २ ॥ मुक्त ॥ ३ ॥ अर्थमुक्त ॥ ४ ॥ निपीडित ॥ ५ ॥ ये पांचोके नाम जांनिये। अब इन पांचोको खछन कहत हैं । तहां स्थाइ आदिक वरन च्यारी प्रसन्नादिक ॥ ४ ॥ अलंकार तरेसिट ॥ ६३ ॥ ओर सगिर गमक विकत स्वर रचायवेकों अंगुरीके चलनसों स्वरकों कंप कीजिये। सो कंपित स्वर जांनिये ॥ १ ॥ जहां संचारि वर्ण एक ॥ १ ॥ वरितवेकों स्वरके छेदेपें। अंगुरीकों टेडी सूधी दाहिने बाई । स्वरमें रंग रंग उपजायवेकों रगडीये। सो विलत जांनिये । जहां शुद्ध स्वर दिखाय-वेकों स्वर छेद कंपके अंगुरी ऊंच उठाइये सो मुक्त जांनिये ॥ ३ ॥ जहां आधी

छेद खोिलिके। आधा छेद मूंदिके विकतस्वर दिखायवेको स्वरकी आधी धुनि रोकीये सो अर्धमुक्त जांनिये॥ ४॥ जहां अंगुरीसों संपूर्ण छेद गाढा मृंदिये। अथवा धुनि जमायवेकों सातों छेद मूंदि वंस बजाइये। सो निपीडित जांनिये। ॥ ५॥ इति मुख पोंनके भेद्गों पांच भेद लखन मंपूर्णम्॥

अथ वंसीनिमं मुख्य श्रीमहाराज राजेंद्र अनेक यज्ञरचित दानेंद्र श्रीकीर्तिधर राजरिषिके मतमां मंद्र । १ । मध्य । २ । तार इन तीनों स्थानक के जुदे । २ । ओर तीनों स्थानक के सों मिलायत यंस कहे हें तिनके भेद लिख्यते ॥ जहां षण्मुख । १ । मुनिराज । २ । वसु । ३ । ये तीनों वंस तारस्थानके हें । इनमें तारस्थानके स्वरनकों वरताय जांनिये । ३ । नाथेंद्र । १ । महानंद्र । २ । कद्र । ३ । ये तीनों वंस मध्यस्थानके स्वर जांनिये । २ । आदित्य । १ । त्रयोदस । २ । इन दोऊ वंसमें । मंद्रस्थानके स्वर जांनिये । ३ । मनुनाम वंसमें । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थाननके स्वर जांनिये ॥

यति मनुनाम वंस । सर्व समय पुरुषस्त्य हैं ॥ पुरुष जो नारायण नाक समान हैं। ऐसे नयवंस कीर्तिधरजी प्रमाण करिकें सास्त्रमें लिखे हैं। इनहीं वंसनीमें स्थाई आदि वरन । १ । प्रसन्नादि अलंकार । २ । प्रस्तारादि धातु । ३ । आश्रवणादि सुस्कवाद्य । ४ । ये बजायवेकी रचना कीर्जिय । इहां कें। क आचारिज वंसेक प्रमान भेद कहें हैं। नहां एक वीर वंसेतें लेकें। आदित्य वंस नांइ बारह । १२ । वंसेमें पांच जब आंडे प्रमानकों एक अंगुल लीजिये । ओर मनुवंस । १ । कलानिधि । २ । अष्टादशांगुल । ३ । इन नीनोंमें। सांडपांच । ५॥ । जब प्रमान आंगुलीकी लीजिये ॥

एकवीरवंस चोदह अंगुलको लंबो लीजिय। वांके आदि अंतमं। डचोड डचोड ॥ १॥ ॥ अंगुल छोडिये। आंर बजायवेको मुखरंध एक अंगुल प्रमान कीजिये। बांसां एक अंगुल अंतरसों आडे तीन जब प्रमान गोल एक छद कीजिये। नाके ऊपरांत डेड आंगुल वंसको अंत्य भाग छोडिकं पड्जादिक सान स्वरनंक सात छेद कीजिये। वे छेद तीन तीन जबके प्रमानसों। आडेतीन जब प्रमान गोल कीजिये। यह एकवीर । वंसको प्रमान जांनिये। १। उमापतिवंसको प्रमान । पेंाणिदोय जव । १॥। । अधिक पनदर । १५ । अंगुलको दंड होय स्वरनके छेदके अंतर सवातीन जवको कीजिये । ओर एकवीर वंसकीसीनाई जांनिये । २ ।

त्रिपुरुषवंसको प्रमांन दोय जव अधिक । सतरे । १७ । अंगुलको कीजिये । स्वर छेदके अंतर च्यारि जवकं प्रमांन राखिये । बाकी रीत एकवीरकीसीनांइ जांनिये ।३।

चतुर्मु तवंसको प्रमांन आधे जव घाटि उगनीस । १९ । आंगुलको होय । आदि अंत भागनं पोणिं दोय दोय आंगुल राखिये । बाकी किया पहले वंसकीमी-नाई जांनिय । ४ ।

पंचवक्रवंसको प्रमांन। एक जबके तीन आठवा अंसघाटि। बाइस आंगुलको कीजिये। आदि अंतमें अढाई अढाई आंगुल छाडिये। स्वरके छदको अंतर। एक जबके तीन अष्टांस अधिक च्यारच्यार जबको कीजिये। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये। ५।

षणमुखको प्रमाण पोण जव अधिक चौबिस।२४। अंगुलको है। नादरंध एक सुर छेद सात। ७। सवातीन जव आडे प्रमान गोल कीजिये॥ ओर इन छंदनको अंतर जवको एकको सालह । १६। अंस घाटि पांच जवको जानिय । बाकी रीति पंचवक्रकीसि जानिये॥ ६॥

मुनिदंड । भान डोड जब अधिक विस अंगुलको है । आर आरो छेदनमें तीन अथवा अर्धपाद अधिक तीन जबको प्रमांन जांनिय । साडेपांच । ५॥। यवको इन छेदोमें अंतर जांनिय । बाकी पहली रीति जानिय । ७।

वसुको प्रमान एक जब अधिक अठाइस । २८ । आंगुल हे बजाय-वेको छेद एक जब अधिक एक अंगुल हैं ॥ आठो छेदनको अंतर एक अंगु-लको । एक जब आधिक जांनिये । बाकी पहली रिति हैं । ८ ।

नाथंद्रको पमाण चाथाइ जनको अधिक तीस आंगुलको है । आदि अंत्य भागमें पोणेतीन तीन अंगुल छोडिये । आठो छेदनको अंतर सवा अंगुलको है । बाकी रिति पहली कीसिनांइ । ९ ।

महानंदको प्रमांन एक जवको तीन सोलह अंस अधिक वतीस अंगुल हें आदि अंत्य भाग तीन तीन अंगुल छोडिय। बजायवेको छेद एक अंगुलको ॥ आठों छेदकों अंतर कछुइक अधिक सवा अंगुलको है । बाकी रीति पहलीकीसिनांइ है ॥ १० ॥

रुद्रंडको प्रमान आधे जब अधिक सवा चांतिस अंगुलको हैं। आहो छेदको अंतर डचोड डचोड अंगुलको हैं।। ओर चटी अंगुलीक बिचलीक बीचिल पौरवामावे छेद स्वरकों विस्तार कीजिये। बाकी पहली रीति। ११।

आदित्यको प्रमान आधे जव अधिक सेंतीस अंगुलको हैं । आठो छेदको अंतर पोणिदोय दोय अंगुलको बाकी रिति रुद्रदंडकी जांनिये । १२।

मनुदंडको प्रमांन एक जब अधिक एक जबके पांचवा अंस अधिक सवागुणतात्मिस आंगुलको । आदि अंत भाग पोणे तीन तीन अंगुल बजायवेको छेद कछू घाटि मवाअंगुलको आठो छेदनको प्रमांन सांडेतीन तीन जबको । ओर आठा छेदनको अंतर चांथाइ जब घाटि दोय दांय अंगु-लको । बाकी रीतिआदित्य वंसकी जांनिये । १३ ।

कलानिधिको प्रमांन । एक जवंक तीन अष्टमांश अधिक पाणे-चंवालीस आंगुल हैं । आदि अंत्य भागमें तीन तीन आंगुल छोडिये ॥ आठा छेदको अंतर । सवाजव अधिक दोय अंगुलको हैं बाकी रिति मनुवंसकीसि जांनिये । १४।

अष्टादशांगुलको प्रमान एक जबके पांच बतीसमं अंस अधिक पांणे-अंडतालिस ॥ ४०॥॥ आंगुलको हं। आठो छेदनको अंतर अठाईस अठाईस आंगुलको लीजिये। कछू अधिक बाकी रीति कलानिधि कीसि जांनिये॥१५॥ इहां तरह ॥ १३॥ आंगुल पनदरह ॥ १५॥ आंगुल सतरह ॥ १०॥ आंगु-लेक वंस नहीं कीजिये॥

एसं पनद्रह वंसको विचार आचारिज कहत हैं। इन वंसनमें मधुर धुनि अनुरंजन रागको वरितवो होत हैं और जो छिछनहीन वंसि होय हैं। और देसी रितिसों कोऊ अपनी बुद्धिसों रचेसा वंस गुणीनके कामको नहीं ॥ इहां दोऊ आचारिज कहें हैं ॥ तेरह ॥ १३ ॥ आंगुछ ॥ १ ॥ पनद्रह ॥ १५ ॥ आंगुछ ॥ २ ॥ सतरह ॥ १७ ॥ आंगुछ ॥ ३ ॥ नाद्रंध मुखरंधके बीच अंतर होय । ते वंस त्रयोद्स ॥ १३ ॥ पनद्रह ॥ १५ ॥ सतरह ॥ १७ ॥ कहिये ॥

तहां त्रयोद्सको नाम विश्वमूर्ति हैं। याको प्रमान पांच जव अधिक

चंवालीस ॥ ४४ ॥ आंगुलको हं ॥ आठो छेदको विस्तार सांडेतीन तीन जवको हैं । आठो छेदनको अंतर दोय दोय आंगुलको हैं । बाकीकी रीति आदित्यवंसकी जांनिये ॥ 3 ॥

पंचदमको प्रमान एक जव ॥ और एक जवके पांच बतीसमें अंस अधिक बयासी आंगुलको हैं। तहां आदि अंत्य भागमें तीन तीन आंगुल छोडिये आठो छेदनको अंतर डचोड जव अधिक आंगुल दोयको हैं। या रीति मनुवंसकी जांनिये॥ २॥

समद्रस वंसको प्रमाण एक जवंक सातवत्तीसंमें अंस अधिक पोणे-छियाछीस आंगुलको है। आठो छेदनको अंतर दोय जब अधिक दोय आंगु-लको है। बाकी रीति कलानिधिकीसि जांनिये॥ ३॥ ऐसं तीन वंस रागकी धुनि उपजावत हैं। तो तीन आर प्रथम कह सो पनद्रह ॥ १५॥ ऐसे सब मिलिकें अठारह वंस जांनिये॥

अथ सारंगेदव ऋषि अपनी बुद्धिसों वंसनीक ठछन कहेहें। सां िल्क्यते॥ तहां अंगुलको प्रमान विना तुसके आंड जब छह बराबर एक आंगुल जांनिये। आंर आठां छंदको विस्तार चटी आंगुलीको अग्रभाग मांवेसो छंद गोल कीजिये॥ बांको टेडो अथवा अणिभिल होयतो। सुद्ध स्वर उपजे नहीं तहां एक वीर वंसको प्रमाण है सो छह ॥ ६॥ जबके प्रमान चोदह अंगुल होय। आदि अंन भागमें दोय दाय आंगुल छोडिये। बजायवेके छेदको विस्तार। चोकूटो एक आंगुलताके नीचे। एक अंगुल जाय छोडि। बराबर नादरंध्र कीजिये। नादरंधको विस्तार एक जबके लवे अंस अधिक। आधे आंगुलको होय। ता आगें सात स्वरके सात रंध्र कीजिये। तिनें सातों स्वर उपजे। आठो छेदनको अंतर। आवे आधे आंगुलको कीजिये। ओर या वंसकी पोलि चटि अंगुलीके विचलो वा भीतर। आवे एसो पोलो वंस लीजिये। या पोलकी वंसकीको नाम खानि कहे हें। योमें स्वर पहलेकी सिनाइ होय हैं॥

याही वंसमें । नादरंध ॥ १ ॥ मुखरंध ॥ २ ॥ इन दोऊनके विचमें । एक एक अंगुल अधिक करि कमसों चादह अंगुल तांई । वधावे . तब उमापति आदि वंसस्ं छेकं मनुवंस तांई। तेरह वंस जांनिये। उमापति वंसको पनदरह अंगुछको प्रमान हें। बाकी रीति एक वीरकीसी हे॥ १॥

त्रिपुरुषको प्रमाण आधे जव अधिक सांडेसीलह ॥ १६॥ ॥ आंगुलको हं आठो छेरनको अंतर सांडेतीन जवको हं बाकी रीति पहली हे ॥ २ ॥

चतुर्मुख वंसको प्रमाण सांडेअठारह आंगुलको हैं। आठो छेदनको अंतर सवाच्यारि जवको है। बाकी रीति पहली हैं॥ ३॥

पंचवक वंसकी प्रभान दीय जब अधिक बीस अंगुल हैं। आठी छेद-नकी अंगर पांच जबकी है। बाकी रीति पहली हैं॥ ४॥

पण्मुख वंसको पमाण आधे जब अधिक बाईस अंगुलको हैं। आहो छेदनको अंतर पांच जबको हैं। बाकी रीति पहलीकीसी जांनिय ॥ ५ ॥

मुनिवंसको प्रमाण साडेनेईस आंगुलको हैं। आठो छेदनको अंतर एक अंगुलको कहत हैं। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये॥ ६॥

वसुको प्रमाण च्यार जव अधिक पचीस ॥ २५ ॥ अंगुलको हैं । आठों छेदनको अंतर सात जब प्रमाण हैं । बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ ७ ॥

नाथंद्रको पमाण सन्वासताइस आंगुलको हैं। आठों छेदको अंतर सभा १। अंगुलको हैं छेदको विस्तार चटी आंगुली मावे । बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये॥ ८॥

महानंदकी प्रमाण तीस आंगुलको हैं। आठो छेदको अंतर डेड अंगु-लहें। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये॥ ९॥

रुद्रको प्रमाण सर्वोतित्त ॥ ३३। ॥ अंगुलको हैं । आठो छेद्रनको अंतर पोणीदोय अंगुलको । बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ १० ॥

आदित्यको प्रमाण एक अंगुलको हैं। आठोंअंस अधिक पेंतिस आंगुलको हैं आठ छेदनको अंतर । अष्टमांस चाटि दोय अंगुलको हैं। बाकी रीति रुद्रकीसि हैं । १ ।

विश्वमूर्तिको प्रमान एक अंगुलके सोलहों अंस घाटि। साडेसत्तीस । ३७॥। आंगुलको हं। आठों छेदनको अंतर। अंगुलीक सोलहो अंस अधिक दोय दोय अंगुलको हं। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये। १२। मनुवंसको प्रमाण पोणीइकतालिस अंगुलको हैं। आदिअंत्य भागमें अठाईस अठाईस अंगुल छोडिये। आठों छेदनको अंतर सवादाय अंगुलको हैं। बाकीकी रीति पहली कीसि जांनिये। १३। यह एकवीर पंसादिक चोदह वंस। सारंग देवराज रिषिनें कहे हैं॥

अशाको वंस च्यार । पंचदस । १ । कछानिधि । २ । समब्स । ३ । अष्टादस । ४ । ये अतिमंद्र धुनि कहे हैं । यांतें बजायवेमें थारे ठीजिये । ओर एकवीर । १ । उमापित । २ । त्रिपुरुष । ३ । ये तीन वंस अतितार धुनी कहे हैं ॥ यांतें दूनही छीजिये । ऐसें चतुर्मुख आदि मनुवंस ताई । ग्यारह वंस मना-हर हें । ते बजायवेमें छीजिये । इहां दूसरे प्रकार विना तूसके आंड सांडेच्यारि जवको । एक अंगुछ प्रमान जांनिये । एकवीर आदिक वंसको प्रमाण सम-झिये । ओर रीति पहछीकीनाई समिसिये । तहां एकवीरके नाद्रंघ ॥ १ ॥ मुखरंघ ॥ २ ॥ इन दोऊको अंतर एक अंगुछको हें । या अंतरमें एक एक अंगुछ अनुक्रमसों अधिक करि बाईस अंगुछ ताई वधायकें बाइस वंस होत हैं। परंतु बजायवेको जोगता चतुर्मुख आदिक मनुवंस ताई ग्यारह ॥ १ ॥ वंस मुख्य जांनिये ॥

इन वंसनमें। पहले वंस । सातों छेद मूंदियेक बजाइये। आगेको वंस सातों छेद मूंदिके बजाइये तब पहले वंसतें। आगिले वंसकी आधि-मात्रा अधिक धुनि होय हें। ऐसें पहले पहले वंसनिके एक आदि अनुक्रमसों छेद खोलिकें बजायेतें। आगले वंसनिके छेद मूंदियेतें वे धुनि मिले। जेसें एक-वीर वंसको। एक छेद खोलि बजावे। ओर उमापितके साति छेद मूंदि बजावे। तब उमापितकी। अरुणक वीरीकी एक धुनि होय। एकवीरके दोय आदिक सात ताई छेद खोलि बजाइये। त्रिपुर आदिक वंस ताई आगले वंसके सातों छेद मूंदि बजाइये। तब एकवीर त्रिपुरुष आदिककी एक धुनि होय हैं ऐसें सिगरे वंसनिमें स्वरके मिलाय जांनिये। इहां जो जो छेद जा जा स्वरको हैं। सो सो छेद चढे वा ऊतरे। ताही ताही स्वरमें मिलत हैं। यह श्रीहनुमानजीको मत हैं। जो छेद विना प्रमानको होय सो अपने अपने स्वरकी धुनिमें नहीं मिले॥

अथ पहलो वंस सात छेद मूंदि बजाइये ॥ ओर आगिला वंस सात छेद मूंदि बजाइये । तब पहले वंसतें आगिले वंसकी धुनि एक मात्रा अधिक होय सो भेद लखन लिख्यते ॥ इहां विना तुसके आडे छह जनको एक अंगु-लको प्रमान हें । एकवीरको प्रमान सवाबारह अंगुलको हें । आदि अंत भागमें । आधे जब अधिक दोय दोय अंगुल छोडिकें मुखरंधको विस्तार एक अंगुलको हें । आहों छेदनको विस्तार आधे अंगुलको आहो छेदको अंतर दोय प्रमान हें । ओर नादरंध मुखरंध इन दोऊनको अंतर एकवीरमें एक अंगुलको हें । इहां एक एक अंगुल वधाये तें उमापति । आदिक वंस होत हें ॥ १ ॥

उमापतिको प्रमाण सर्वातरह ॥ १३। ॥ अंगुलको है । बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ २ ॥

ओर त्रिपुरुषको प्रमाण । सवाचाद्द ॥ १४। ॥ अंगुलको हं बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ३ ॥

चतुर्मुखको प्रमाण पेंनो जब अधिक सांडे पनदरह ॥ १५॥ ॥ अंगुलको हैं ॥ आर आठों छेदनका अंतर सवादोय जब हैं बाकीकी रीति एकवीर-कीसि जांनिये ॥ ४ ॥

पंचवकत्रका प्रमाण पाँना जब अधिक सवासतरे ॥ १७। ॥ अंगुलकां हैं। ओर आठों छेदको अंतर एक जबका सालह अंस अधिक पोनोतीन जब प्रमाण हैं। बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये॥ ५॥

पण्मुखकी प्रमाण एक जवकी आठमीं अंस घाटि डेडजब अधिक उग-नीस अंगुलको हैं। आठी छेदकी अंतर पोनी जब अधिक आधे अंगुलको हैं। बाकीकी रीति पहलिकीसि जांनिये॥ ६॥

मुनिको प्रमाण एक जवके पांच बत्तीसवे अंस अधिक पोनो जव अधिक इकविस ॥ २१ ॥ अंगुलको हैं । आठो छेदनको अंतर । एक जवके ग्यारह बनीसवे अंस अधिक पोण अंगुलको हैं । बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ ७ ॥

वसुको प्रमाण आठवें एक अंस घाटि एक जव अधिक पोणा चोइस ॥२३॥॥ आंगुलको हैं। ओर आठो छेदको विस्तार सवा दोय जवको हैं। आठो छेदनको अंतर आठवें अंस अधिक एक जव अधिक पोना अंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये॥ ८॥

नाथंद्रको प्रमाण सवा जव अधिक छवीस ॥ २६ ॥ आंगुलको हैं। आठो छेदनको अंतर । आठवो अंगुलको अंस अधिक एक अंगुल हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिय ॥ ९ ॥

महानंदको प्रमाण । एक जबको आठवो अंस अधिक सांडेबाइस ॥ २२॥ ॥ आंगुल आठो छेदको अंतर एक जबके तीन आठवे अंस अधिक सवा अंगुल हैं । बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १०॥

रुद्रको पमाण एक जब अधिक अंगुल इकतीस ॥ ३१ ॥ को हैं। आठो छेदनको अंतर सांडे तीन यव पमान हैं। आठो छेदको अंस डेड डेड आंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक वीर कीसि जांनिये॥ ११॥

आदित्यको प्रमाण एक जबके बतीसवे अंस अधिक एक जब अधिक चोतीस ॥ ३४ ॥ अंगुलको हैं । आठो छेदनको अंतर । एक जबके चोध तीसवे अंस अधिक पोने दोय दोय अंगुलको हैं । बाकीकी रीति एक वीर-कीसि जांनिये ॥ १२ ॥

विश्वमूर्तिको मनाण पाँना जब अधिक सततीस ॥ ३७ ॥ आंगुलको हैं । आठो छेदनको अंतर एक जबके तीन आठवे अंस अधिक दोय दोय अंगुलको हैं । बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १३ ॥

नवमको प्रमाण एक जवके पांच अष्टमांस अधिक चंवाछीस ॥ ४४ ॥ अंगुलको हैं। ओर आदि अंत्य भागमें। अटाईस अटाईस अंगुल छोडिये। आटा छेदनको अंतर एक जवके तीन बतीसवे अंस अधिक पोणीतीन २॥। आंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १४ ॥ ऐसे यह चेदह वंस रिचये। ता पहले पहले वंस तें। अगलो अगलो वंस । एक मात्रा अधिक धुनिको होत हैं। यतिं सारंग देवनें यह रीति कही हैं। इहां सब वंसमें जेसें चढी आंगुरीको बीच पर वां पोंचे । इतनी पोली बीचकीसि लीजिये। सो वंसी वंसवा जांनिये। ओर चटी आंगुरीके अग्र मावे। इतनी पोलिको मार्गी वंस जांनिये। बाकीकी रीति दोऊ वंसनकी समान हैं। तहां एकवीर ॥ १ ॥

छेद खोलिके। आधा छेद मूंदिके विकतस्वर दिखायवेको स्वरकी आधी धुनि रोकीये सा अर्थमुक्त जांनिये॥ ४॥ जहां अंगुरीसों संपूर्ण छेद गाढा मूंदिये। अथवा धुनि जमायवेकों सातों छेद मूंदि वंस बजाइये। सो निपीडित जांनिये। ॥ ५॥ इति मुख पांनके भेदसों पांच भेद लखन संपूर्णम्।।

अथ वंसीनिमं मुख्य श्रीमहाराज राजंद्र अनेक यज्ञरचित दानंद्र श्रीकीर्तिधर राजिरिपिके मतसों मंद्र । १ । मध्य । २ । तार इन तीनों स्थानकके जुंद्र । २ । आंर तीनों स्थानकके सों मिलायत वंस कहे हें तिनके भेद लिख्यते ॥ जहां षण्मुख । १ । मुनिराज । २ । वमु । ३ । ये तीनों वंस तारस्थानक है । इनमें तारस्थानक स्वरनकों वस्ताव जांनिय । १ । नाथंद्र । १ । महानंद् । २ । रुद्र । ३ । ये तीनों वंस मध्यस्थानके स्वर जांनिय । २ । आदित्य । १ । त्रयोदस । २ । इन दोऊ वंसमें । मंद्रस्थानके स्वर जांनिय । ३ । मनुनाम वंसमें । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थाननक स्वर जांनिय ॥

यातं मनु नाम वंस । सर्व समय पुरुषक्तप हें ॥ पुरुष जो नारायण ताके समान हें । ऐसे नववंस कीर्तिधर्णी प्रमाण करिकें सास्त्रमें लिखे हैं। इनहीं वंसनीमें स्थाई आदि वरन । १ । प्रसन्नादि अलंकार । २ । प्रस्तारादि धानु । ३ । आश्रवणादि सुस्कवाद्य । ४ । य बजायवंकी रचना कीजिये । इहां कांऊ आचारिज वंसेक प्रमान मेद कहे हैं । तहां एक वीर वंसेतें लेकें। आदित्य वंस तांइ बारह । १२ । वंसेमें पांच जब आडे प्रमानकों एक अंगुल लीजिये । ओर मनुवंस । १ । कलानिधि । २ । अष्टादशांगुल । ३ । इन तीनोंमें। सांडेपांच । ५॥ । जब प्रमांन आंगुलीकी लीजिये ॥

एकवीरवंस चोदह अंगुलको लंगो लीजिय। वांके आदि अंतमें। डचोड डचोड ॥ १॥ ॥ अंगुल छोडिये। ओर बजायवेको मुखरंध एक अंगुल प्रमान कीजिये। यांसां एक अंगुल अंतरसां आडे तीन जब प्रमांन गोल एक छेद कीजिये। ताके ऊपरांत डेड आंगुल वंसको अंत्य भाग छोडिकें षड्जादिक सात स्वरनके सात छेद कीजिये। वे छेद तीन तीन जबके प्रमांनसां। आडेतीन जब प्रमान गोल कीजिये। यह एकवीर। वंसको प्रमांन जांनिये। १। उमापतिवंसको । प्रमान । पोणिदोय जव । १॥ । अधिक पनदर । १५ । अंगुलको दंड होय स्वरनके छेदके अंतर सवातीन जवको कीजिये । ओर एकवीर वंसकीसीनाई जांनिये । २ ।

त्रिपुरुषवंसको प्रमान दाय जव अधिक । सतरे । १७ । अंगुलको कीजिये । स्वर छेदके अंतर च्यारि जवके प्रमान राखिये । बाकी रीत एकवीरकीसीनांइ जांनिये ।३।

चतुर्मृ (वंसको प्रमांन आधे जव घाटि उगनीस। १९। आंगुलको होय। आदि अंत भागेंन पोणि दोय दोय आंगुल रात्विये। बाकी किया पहले वंसकीसी-नाई जांनिये। ४।

पंचवक्रवंसको प्रमांन। एक जबके तीन आठवा अंसघाटि। बाइस आंगुलको कीजिये। आदि अंतमें अढाई अढाई आंगुल छाडिये। स्वरके छेदको अंतर। एक जबके तीन अष्टांस अधिक च्यारच्यार जबको कीजिये। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये। ५।

पण्मुखको प्रमाण पोण जब अधिक चोबिस।२४। अंगुटको हैं। नाद्रंध्र एक सुर छेद सात। ७। सवातीन जब आडे प्रमान गोल कीजिये॥ ओर इन छेदनको अंतर जबको एकको सोलह । १६। अंस घाटि पांच जबको जानिये। बाकी रीति पंचवककीसि जांनिये॥ ६॥

मुनिदंडनो प्रमान डोड जब अधिक विस अंगुलको हैं। ओर आठो छेदनमें तीन अथवा अर्धपाद अधिक तीन जबको प्रमान जांनिय। साडेपांच । ५॥। यवको इन छेदोमें अंतर जांनिय। बाकी पहली रीति जानिये। ७।

वसुको प्रमान एक जब अधिक अठाइस। २८। आंगुल हे बजाय-वेको छेद एक जब अधिक एक अंगुल हैं ॥ आठो छेदनको अंतर एक अंगु-लको। एक जब आधिक जांनिये। बाकी पहली रिति हैं। ८।

नाथंद्रको प्रमाण चोथाइ जनको अधिक तीस आंगुलको है । आदि अंत्य भागमें पोणेतीन तीन अंगुल छोडिये । आठो छेदनको अंतर सवा अंगुलको हैं । बाकी रिति पहली कीसिनांइ । ९ ।

महानंदको प्रमांन एक जनको तीन सोलह अंस अधिक बतीस अंगुल हें आदि अंत्य भाग तीन तीन अंगुल छोडिये। बजायवेको छेद एक अंगुलको ॥ आठों छेदकों अंतर कछूइक अधिक सवा अंगुलको हैं। बाकी रीति पहलीकीसिनांइ हैं ॥ १० ॥

रुद्रदंडको प्रमान आधे जब अधिक सवा चोतिस अंगुलको हैं। आठो छेदको अंतर डचोड डचोड अंगुलको हैं॥ ओर चटी अंगुलीके बिचलीक बीचिल पौरवामावे छेद स्वरकों विस्तार कीजिये। बाकी पहली रीति। ११।

आदित्यको प्रमान आधे जव अधिक सेंतीस अंगुलको हैं । आठो छेदको अंतर पोणिदोय दोय अंगुलको बाकी रिति रुद्रदंडकी जांनिये । १२।

मनुदंडको प्रमांन एक जब अधिक एक जबके पांचवा अंस अधिक सवागुणतालिस आंगुलको । आदि अंत भाग पोणे तीन तीन अंगुल बजायवेको छंद कछू घाटि सवाअंगुलको आठो छेदनको प्रमांन सांडेतीन तीन जबको । ओर आठा छेदनको अंतर चोथाइ जब घाटि दाय दाय अंगु-लको । बाकी रीतिआदित्य वंसकी जांनिय । १३ ।

कलानिधिको प्रमांन । एक जवंक तीन अष्टमांश अधिक पोण-चंवालीस आंगुल हैं । आदि अंत्य भागमें तीन तीन आंगुल छोडिये ॥ आठो छेदको अंतर । सवाजव अधिक दोय अंगुलको हैं बाकी रिति मनुवंसकीसि जांनिये । १४।

अष्टादशांगुलको प्रमान एक जबके पांच बतीसमें अंस अधिक पोणे-अडतालिस ॥ ४०॥॥ ॥ आंगुलको हं । आठो छेदनको अंतर अठाईस अठाईस आंगुलको लीजिये । कछू अधिक बाकी रीति कलानिधि कीसि जांनिये ॥१५॥ इहां तेरह ॥ १३॥ आंगुल पनइरह ॥ १५॥ आंगुल सतरह ॥ १७॥ आंगु-लेके वंस नहीं कीजिये ॥

एसं पनदरह वंसको विचार आचारिज कहत हैं। इन वंसनमें मधुर धुनि अनुरंजन रागको वरितवो होत हैं ओर जो छिछनहीन वंसि होय हैं। ओर देसी रितिसों कोऊ अपनी बुद्धिसों रचेसो वंस गुणीनके कामको नहीं ॥ इहां रोऊ आचारिज कहे हैं ॥ तेरह ॥ १३ ॥ आंगुछ ॥ १ ॥ पनदरह ॥ १५ ॥ आंगुछ ॥ २ ॥ सतरह ॥ १० ॥ आंगुछ ॥ ३ ॥ नादरंघ मुखरंघके बीच अंतर होय । ते वंस नयोदस ॥ १३ ॥ पनदरह ॥ १५ ॥ सतरह ॥ १० ॥ कहिये ॥ तहां नयोदसको नाम विश्वमार्ति हैं। याको प्रमान पांच जव अधिक

चंबालीस ॥ ४४ ॥ आंगुलको हं ॥ आठा छंदको विस्तार सांडतीन तीन जबको हं । आठा छंदनको अंतर दोय दोय आंगुलको हं । बाकीकी रीति आदित्यवंसकी जांनिये ॥ १ ॥

पंचदमको प्रमान एक जव ॥ आर एक जवक पांच बतीसमें अंस अधिक बयासी आंगुलको हैं। तहां आदि अंत्य भागमें तीन तीन आंगुल छोडिये आठो लेदनको अंतर इचोड जव अधिक आंगुल दोयको हैं। या रीति मनुवंसकी जांनिये॥ २॥

समद्रम वंसको प्रमाण एक जबके सानवनी समें अंस अधिक पोणे-छियालीस आंगुलको है। आठा छेदनको अंतर दोय जब अधिक दोय आंगु-लको है। बाकी रीति कलानिधिकीसि जांनिय ॥ ३ ॥ एसं तीन वंस रागकी धुनि उपजावत हैं। तो तीन ओर प्रथम कहे माँ पनदरह ॥ १५ ॥ ऐसे सब मिलिकें अठारह वंस जांनिय ॥

अथ सारंगेंदव ऋषि अपनी वृद्धिसों वंसनीके लखन कहेंहें । सो लिख्यते ॥ तहां अंगुलको प्रमान विना तुमके आंड जव छह बरावर एक आंगुल जांनिये । ओर आटो छंदको विस्तार चटी आंगुलीको अग्रभाग मांवसो छेद गोल कीजिये ॥ बांको टंडो अथवा अणित होयतो । मुद्ध स्वर उपज नहीं तहां एक वीर वंसको प्रमाण है मो छह ॥ ६ ॥ जवक प्रमान चांदह अंगुल होय । आदि अंत भागमें दोय दाय आंगुल छोडिये । बजायंवके छंदको विस्तार । चांकूटो एक आंगुलताके नीचे । एक अंगुल जाय छोडि । बराबर नादरंध कीजिय । नादरंधको विस्तार एक जवक लंग अस अधिक । आधे आंगुलको होय । ता आगे मात स्वरंक सात रंध कीजिय । तिनेभे सातों स्वर उपजे । आटो छंदनको अंतर । आधे आंगुलको कीजिय । जोर या वंसकी पालि चटि अंगुलीके विचलो वा भीतर । आवे ऐसो पोलो वंस लीजिये । या पोलकी वंसकीको नाम खानि कहे हें । यामें स्वर पहलेकी सिनाइ होय है ॥

याही वंसमें । नादरंध ॥ १ ॥ मुखरंध ॥ २ ॥ इन दोऊनंके बिचमें । एक एक अंगुल अधिक करि क्रमसों चोदह अंगुल तांई । वधावे तब उमापति आदि वंससूं छेकें मनुवंस तांई। तरह वंस जांनिय। उमापित वंसको पनदरह अंगुलको पमान हें। बाकी रीति एक वीरकीसी है॥ १॥

त्रिपुरुषको प्रमाण आधे जव अधिक सांडमालह ॥ १६॥ ॥ आंगुलको हैं आठो छेउनको अंतर सांडतीन जवको हैं बाकी रीति पहली है ॥ २ ॥

चतुर्मुख वंसको प्रमाण सांडअठारह आंगुलको हैं । आठो छद्नको अंतर सवाच्यारि जवको है । बाकी रीति पहली है ॥ ३ ॥

पंचवक वंसकी प्रमान दीय जब अधिक वीस अंगुल हैं। आठी छेद-नकी अंतर पांच जबकी है। बाकी रीति पहली हैं॥ ४॥

षणमुख वंसको प्रमाण आवे जब अधिक बाईस अंगुलको हैं। आटो छद्नको अंतर पांच जबको हैं। बाकी रीति पहलीकीसी जांनिय ॥ ५॥

मुनिवंसको प्रमाण सांडेंनईम आंगुलको है। आठा छेदनको अंतर एक अंगुलको कहत है। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये॥ ६॥

वसुको प्रमाण च्यार जव अधिक पत्तीम ॥ २५ ॥ अंगुलको हैं। आठों छेदनको अंतर सात जब प्रमाण हैं। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ ७ ॥

नाथंद्रको प्रमाण सञ्चासताइस आंगुलको है। आठों छेदको अंतर सना १। अंगुलको है छेदको बिस्तार चटी आंगुली माव । बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनियं॥ ८॥

महानंदकं(प्रमाण तीस आंगुलको है। आठो छेदको अंतर डेड अंगु-लंह । बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिय ॥ ९ ॥

रुद्को प्रमाण सर्वातिस ॥ ३३। ॥ अंगुलको है । आठा छेदनको अंतर पोणीदोय अंगुलको । बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ १० ॥

आदित्यको प्रमाण एक अंगुलको है। आठोंअंस अधिक पंतित आंगुलको है आठ छेदनको अंतर । अष्टमांस बाटि दोय अंगुलको हैं । बाकी रीति रुद्रकीसि हैं । १ ।

विश्वमृतिंको प्रमान एक अंगुलके मोलहों अंस वाटि। सांडेसत्तीस । ३०॥। आंगुलको हैं। आठों छेदनको अंतर। अंगुलीक सोलहों अंस अधिक दोय दोय अंगुलको हैं। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये। १२। मनुवंसकी प्रमाण पाणीइकतालिस अंगुलको है । आदिअंत्य भागमें अठाईस अठाईस अंगुल छोडिये । आटों छेदनको अंतर सवादाय अंगु उकी हैं । बाकीकी रीति पहली कीसि जांनिये । १३ । यह एकवीर पंसादिक चोदह वंस । सारंग देवराज रिषिनें कहे हैं ॥

आगिके वंस च्यार । पंचर्म । १ । कलानिधि । २ । समद्स । ३ । अष्टाद्स । ४ । ये अतिमंद्र धुनि कहे हें । यांने बजायवेमें थारे लीजिये । ओर एकवीर । १ । उमापित । २ । त्रिपुरुष । ३ । ये तीन वंस अतितार धुनी कहे हें ॥ यांने दृनहीं लीजिये । ऐमें चतुर्मुख आदि मनुवंस ताई । ग्यारह वंस मनो-हर हें । ते बजायवेमें लीजिये । इहां दूसरे प्रकार विना तूसके आंड सांडच्यारि जवको । एक अंगुल प्रमान जांनिये । एकवीर आदिक वंसको प्रमाण सम-क्षिये । ओर रीति पहलीकीनाई समझिय । तहां एकवीरके नाद्रंथ ॥ १ ॥ मुखरंध ॥ २ ॥ इन दोऊको अंतर एक अंगुलको हें । या अंतरमें एक एक अंगुल अनुक्रमसों अधिक किर बाईस अंगुल ताई वधायकें बाइस वंस होत हैं। परंतु बजायवेको जोगतो चतुर्मुख आदिक मनुवंस ताई ग्यारह ॥ १ १ ॥ वंस मुख्य जांनिये ॥

इन वंसनमें । पहांट वंस । सानों छंद मूंदियंके बजाइये । आंगकां वंस सानों छंद मूंदिके बजाइये तब पहांट वंसने । आगिले वंसकी आधिमात्रा अधिक धुनि होय हैं । ऐसे पहांट पहांट वंसनिक एक आदि अनुक्रमसों छंद खोलिकें बजायें । आगले वंसनिक छंद मृंदियें वे धुनि मिले । जेसे एक-बीर वंसको । एक छंद खोलि बजावे । ओर उमापतिके साति छंद मूंदि बजावे । तब उमापतिकी । अरुणक वीरीकी एक धुनि होय । एकवीरके दोय आदिक सात ताई छंद खोलि बजाइये । तिपुर आदिक वंस ताई आगले वंसके सानों छंद मूंदि बजाइये । तब एकवीर तिपुरुष आदिककी एक धुनि होय हैं ऐसें सिगरे वंसनिमें स्वरके मिलाय जांनिये । इहां जो जो छंद जा जा स्वरको हैं । सो सो छंद चढे वा ऊतरे । ताही ताही स्वरमें मिलन हैं । यह श्रीहनुमानजिकों मत हैं । जो छंद विना प्रमानको होय सो अपने अपने स्वरकी धुनिमें नहीं मिले ॥

अथ पहलां वंस सात छेद मूंदि बजाइये ॥ ओर आगिलो वंस सात छेद मूंदि बजाइये । तब पहले वंसतें आगिले वंसकी धुनि एक मात्रा अधिक होय सो भेद लखन लिख्यते ॥ इहां विना तुसके आडे छह जवको एक अंगु-लको पमान हैं । एकवीरको पमान सवाबारह अंगुलको हैं । आदि अंत भागमें । आधे जब अधिक दोय दोय अंगुल छोडिकें मुखरंधको विस्तार एक अंगुलको हैं । आठों छेदनको विस्तार आधे अंगुलको आठो छेदको अंतर दोय पमान हैं । ओर नादरंध मुखरंध इन दोऊनको अंतर एकवीरमें एक अंगुलको हैं । इहां एक एक अंगुल वधाये तें उमापति । आदिक वंस होत हैं ॥ १ ॥

उमापतिको पमाण सर्वातरह ॥ १३। ॥ अंगुलको हैं । बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ २ ॥

ओर त्रिपुरुषको प्रमाण । सवाचाद्ह ॥ १४। ॥ अंगुलको हं बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ३ ॥

चतुर्मुखको प्रमाण पानो जब अधिक सांडे पनद्रह ॥ १५॥ ॥ अंगुलको हैं ॥ आर आठों छेद्नको अंतर सवादाय जब हैं बाकीकी रीति एकवीर-कीस जांनिये ॥ ४ ॥

पंचवकत्रको प्रमाण पेनि जब अधिक सवासतरे ॥ १७। ॥ अंगुलको हैं । ओर आठों छेदको अंतर एक जबको सोलह अंस अधिक पोनोबीन जब प्रमाण हैं ! बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ५ ॥

षण्मुखको प्रभाण एक जबको आठमाँ अंस घाटि डेडजब अधिक उग-नीस अंगुलको हैं। आठो छेदको अंतर पाना जब अधिक आधे अंगुलको हैं। बाकीकी रीति पहलिकीसि जांनिये॥ ६॥

मुनिको प्रमाण एक जबके पांच बत्तीसवे अंस अधिक पोनो जब अधिक इकाविस ॥ २१ ॥ अंगुलको हैं । आठो छेदनको अंतर । एक जबके ग्यारह बनीसवे अंस अधिक पोण अंगुलको हैं । बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ ७ ॥

वसुको प्रमाण आठवं एक अंस घाटि एक जव अधिक पोणा चेाइस ॥ २३॥। ॥ आंगुलको हैं। ओर आठो छेदको विस्तार सवा दोय जवको हैं। आठो छेदनको अंतर आठवें अंस अधिक एक जब अधिक पोना अंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिय ॥ ८ ॥

नाथंद्रको प्रमाण सवा जब अधिक छवीस ॥ २६ ॥ आंगुलको हैं। आठो छेदनको अंतर । आठवो अंगुलको अंस अधिक एक अंगुल हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ ९ ॥

महानंदको प्रमाण । एक जवका आठवो अंस अधिक सांडेबाइस ॥ २२॥ ॥ आंगुल आठो छेदको अंतर एक जवके तीन आठवे अंस अधिक सवा अंगुल हैं । बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १०॥

स्रद्भको प्रमाण एक जब अधिक अंगुल इकतीस ॥ ३१ ॥ को हैं। आठो छेदनको अंतर सांडे तीन यब प्रमान हैं। आठो छेदको अंस डेड डेड आंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक बीर कीसि जांनिये ॥ ११॥

आदित्यको प्रमाण एक जबके बनीसवे अंस अधिक एक जब अधिक चोतीस ॥ ३४ ॥ अंगुलको हैं । आठो छेदनको अंतर । एक जबके चोब तीसवे अंस अधिक पोने दोय दोय अंगुलको हैं । बाकीकी रीति एक वीर-कीसि जांनिये ॥ १२ ॥

विश्वमृतिंको प्रमाण पाँना जव अधिक सततीस ॥ ३७॥ आंगुलको हैं। आठो छेदनको अंतर एक जबके तीन आठवे अंस अधिक दोय दोय अंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये॥ १३॥

नवमको प्रमाण एक जवके पांच अष्टमांस अधिक चंवालीस ॥ ४४ ॥ अंगुलको हैं। ओर आदि अंत्य भागमें। अटाईस अटाईस अंगुल छोडिये। आटो छेदनको अंतर एक जवके तीन बतीसवे अंस अधिक पोणीतीन २॥। आंगुलको हैं। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १४ ॥ ऐसे यह चोदह वंस रचिये। ता पहले पहले वंस तें। अगलो अगलो वंस । एक मात्रा अधिक धुनिको होत हैं। यांतें सारंग देवनें यह रीति कही हैं। इहां सब वंसमें जेसें चढी आंगुरीको बीच पर वां पोंचे । इतनी पोली बीचकीसि लीजिये। सो वंसी वंसवा जांनिये। ओर चटी आंगुरीके अग्र मावे। इतनी पोलिको मार्गी वंस जांनिये। बाकीकी रीति दोऊ वंसनकी समान हें। तहां एकवीर ॥ १ ॥

- रामकरि ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज ग्रह स्वर होय । या षड्जकों दोय वर उच्चार कीजिये । फेर आधो षड्ज करि रिषमकों उच्चार करिये । फेर गांधारकों विलंब करि । रिषमकों द्वृतवेगसों उच्चार करि । फेर आधे षड्जमें ठहरे । फेर संपूर्णको षड्जकों कंप करि । फेर रिषमसों द्वृतवेगसों उच्चार करि । फेर गांधारको लघु उच्चार करि । षड्जमें न्यास कीजिये । तब रामकरिको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें दूसरो स्वर ग्रह जांनिये ॥ इति रामकरिको प्रकार मंपूर्णम् ॥
- गौडकिरि ॥ जहां पड्ज स्वर यह करि । गांधार रिषम आधो पड्ज दुतवेगसों वरित फेर निषादकों उच्चार करि । आधे पड्जमें विराम कीजिये । फेर निषादको उच्चार करि गांधारकों छघु करि । फेर रिषमकों गांधार दोउ छघु कीजिये । फेर रिषमको दुतवेगसों उच्चार करि पड्जमें न्यास कीजिये । तब गौडकरिको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें रिषम स्वर याको यह है ॥ इति गौडकरिको प्रकार संपूर्णम् ॥ देवकरि ॥ जहां धैवत स्थाई करि पंचमकों यह करि उच्चार करिये । फेर निषादकों उच्चार करि । फेर निषादकों
 - निषाद मध्यमस्थानके पड्जकों उच्चार करि । फेर निषादकों गमक करि । धैवतकों कंप कीजिये । फेर निषादें छेकें मध्यम ताई । अवरोह कमसों मध्यम ताई च्यारि स्वरकों उच्चार करि पंचममें विश्राम कीजिये । तब देवकरीको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें याको गांधार यह स्वर हें ॥ इति देवकरिको प्रकार संपूर्णम् ॥

॥ इति कियाङ्गानि ॥

भैरवी ॥ जहां धैवत स्वर ग्रह किर मध्यमस्थानके षड्जसों । धैवत तांई अव-रोह किर । विलंब कीजिये । फेर धैवत । १ । निषाद । २ । या दोन्योको उच्चार किर । धैवतको उच्चार कीजिये । फेर पंच-मंकं गमकसों उच्चार किर । धैवत न्यास कीजिये । तब भैरवी रागको स्वस्थान जांनिये । याको वंसीमें ग्रह स्वर गांधार हैं ॥ इति भैरवीको प्रकार संपूर्णम् ॥ छायानट ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज स्थाइ करि । नीचले धैवतको उच्चार करि । निषादको कंप करी । षड्जमें विलंब कीजिये । फर निषादको लघु उच्चार करि । दोय तीन वेरी षड्जमें गमक कीजिये । फर आधे निषादको उच्चार करि फर मध्यमस्थानको कंप करि पंचमकों बजायकें । या पंचममें विलंब करि फर मध्यमस्थानके निषादकों द्वत उच्चार करि । फर मध्यमस्थानके निषादकों द्वत उच्चार करि । फर मध्यमस्थानके पंचमकों दीर्घ करि । ओर मध्यम स्वरकों लघु कंप करि षड्जमें न्यास कीजिये । सो छायानटको प्रथम स्थान जांनिये । वंसीमें याकों गांधार ग्रह हं । छायानटको पड्ज ग्रह स्वरके स्थान गांधार कीजिये ॥ इति छायानटको प्रकार संपूर्णम् ॥

सालगनट ॥ निषाद आदिकं स्थानकमं रिषभादिक ठीजियं । तब छाषा-नटको सालगनट कहे हें । इहां छायानटमं षड्जकी गिनतीसों जोस्वर ठीजिये। सा सालगनटमं गांधार स्वरकी गिणतीसों ठीजिये। ऐसें छायानटमं षड्जसों जो जो स्वर जा जा गीणतिको रच्यो होय। तसेंही सालगनटमं गांधार स्वरसों। ता ता गिणतीको स्वर वाही कमसों रचि॥ सालगनटको रिषभ स्वस्थान कीजिये॥ इति सालगनटको प्रकार संपूर्णम्॥

चिन्धमरामकरि ॥ जहां मध्यम स्वर यह करिकें। दुतवेगसों उच्चार कीजिये।
फेर षड़जेमें विलंब करि । या षड्जेतें मध्यमतांई । क्रमसों अवरोह
मध्यमेंमें विश्राम कीजिये ॥ तब चिन्धमरामकरि रागको स्वस्थान
पंचम जांनिये । वंसीमें याको यह स्वर रिषमेहें ॥ इति चिन्धमरामकरिको प्रकार संपूर्णम् ॥

ाटरामकरि ॥ जहां रिषभ स्वर यह होय । अरु दोयवेर तीनवेर मध्यमकी गमक किर फेर विलंबसों । मध्यमकों दीर्घ किर । फेर रिषभ गांधार आधो रिषभ दुतवेगसों उच्चार किर । विलंब कीजिये । फेर रिषभ गांधारको उच्चार किर । रिषभकों उच्चार कीजिये । फेर धैवतकी । एकवेर गमक किर । निषादकों बजावे । रिषभमें न्यास कीजिये ।

- द्वितीय वाद्याध्याय—वंसीमं राग उपजायंवको प्रकार. १०७ सो नाटरामकरिको पथम षड्ज स्वस्थान जांनिये॥ इति नाटराम-करिको प्रकार संपूर्णम्॥
- मल्हार ॥ जहां धैवत स्वर यह करि निषाद्कों एकवेर गमक करि ॥ फेर निषाद्कों मध्यमस्थानके षड्जको दोय वर उच्चार कीजिये ॥ फेर धैवतकों उच्चार करि पंचमकों वरित फेर निषाद्कों उच्चार करि । धैवतमें उच्चार कीजिये सो मल्हारको स्वस्थान जांनिये। वंसीमें याको रिषम यह स्वर हें ॥ इति मल्हार रागको प्रकार संपूर्णम् ॥
- कर्णाट गोड ॥ जहां मध्यमस्थानके षड्जको यह करि । निचलोनिषाद दुत-वेगसों उच्चार करि । षड्जको झुलायके रिषभको उच्चार करि । गांधारमें गमक कीजिये । फेर पड्जको निषादको उच्चार करि । षड्जमें न्यास कीजिये । सो प्रथम स्वस्थान कर्णाट गौडको जांनिये । इन कर्णाटक गोडको वंसीमें यह गांधार कहे हैं ॥ इति कर्णाट गोडको प्रकार संपूर्णम् ॥
- देसवाल गोड ॥ जहां मध्यमस्थानक पड्जको ग्रह करि । मध्यमस्थानके मध्यम गांधारकों अवरोहसों उच्चार करि । पड्जको उच्चार कीजिये । केर षड्जको पिछलो आधो स्वर वरित । पहलो आधो पड्ज केर वरितये । पिछे षड्जमें न्यास कीजिये । सो दसवाल गोंडको पथम स्वस्थान जांनिये । वंसीमें याको गांधार ग्रह कहे हैं ॥ इति दसवाल गोंडको प्रकार गोंडको प्रकार संपूर्णम् ॥
- द्राविड गोड ॥ जहां पहिल समकके निषादकों यह करि । या निषादमें मध्यमस्थानके गांधारतांई आरोह कीजिये । फेर कळूक विलंब किर या गांधारतं निषादतांई अवरोह किर निषादमें विश्राम कीजिये। सो दाविड गोडको पथम स्थान जांनिये। ओर लौकीकमें याको सालग गोड कहे हैं ॥ वंसीमें याको यह स्वर रिषम हैं ॥ इति द्राविड गोडको प्रकार संपूर्णम्॥

॥ इति उपाङ्गनि ॥

- कैशिक ॥ जहां पंचम स्वर ग्रह रिषभ धैवतकों उच्चारण कीजिये । फेर निषा-दकों वरित मध्यकों वरितयं । पिछे निषादको वरितये ॥ धैवतकों विलंबसों उच्चारण करि । कंपजुत पंचममें न्यास कीजिये ॥ सो कैशिकको स्वस्थान प्रथम होय । वंसीमें याको गांधार ग्रह स्वरहें ॥ इति केशिक रागको प्रकार संपूर्णम् ॥
- लित ॥ जहां मध्यमस्थानको षड़ज ग्रह करि । दुतवेगसों उच्चारण करिके । रिषभको उच्चारण होय ॥ केर रिषभ गांधारको उच्चारण करिकें । निचलेनिषाद धेवतकों द्वतवेगसों उच्चारण करिकें रिषभकों दोय वेर तीन वेर गमक करि । षड़जेमें न्यास कीजिय सो लिति रागको प्रथम स्वस्थान जांनिय ॥ सो इणरोस्थान वंसीनेमें याको गांधार ग्रह स्वर हें ॥ इति लिलित रागको प्रकार संपूर्णम् ॥
- श्रीराग ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज यह करि । निचलेनिषादको स्थाई रूपसों उच्चार करि । मध्यमस्थानके रिषम मध्यमकों उच्चारण कीजिये । फर रिषमकों निषादकों बोलिके । रिषममें विलंब करि निषादमें न्यास कीजिये । अथवा षड्जमें न्यास कीजिये । सो श्री-रागको प्रथमकों स्वस्थान जांनिये । मो इनरोस्थान वंसीनमें याको गांधार यह है ॥ इति श्रीरागको प्रकार संपूर्णम ॥

जा रागको।। जा जा यह स्वर वंसीमें हाय। सो यह टिछनमें समिश्रये। जेसें वंसीमें जिन रागनके जे रिषमादिक यह स्वर कहे हैं। तेहि रिषमादिक टिछनहूमें जांनिये।। ओर जा रागके वरितवेमें। यहादि जा स्वर । पांच। ५। वा छह। ६। वा सात। ७। वा स्वर कहे हैं। सो तेही स्वर वंसीमें टीजिये। इहां आलापकी रीतिसों स्वस्थान कहे हें। ये स्वस्थान कहूं च्यारि स्वर सो हैं। कहू घाटि वधी स्वरसोहें। सो निनरो दोष नहीं कहते हैं।। ज्या रागके वरितवेमें तारस्थानके जो स्वर स्थाई राग उंचो उठे। सो स्वर ओर मंद्रस्थानकमें जा स्वरतांई राग उतरे। इन दोउ स्वरनके विचले जितने स्वर होय। ते यह स्वर। ओर स्वर। य दोऊ स्वर ज्यो स्थाई स्वरसों बने सो स्थाई स्वर होत है सो वांहां राग संपूरन जांनिये॥ ओर राग षांडव औडव राग।

एसों तीन प्रकारकी होत हैं। योतं स्वस्थाननमें जो जो स्वर घटि होय तो तो रागाध्यायके हिसाबसों। जो रागकी उतपति होय। ता रागनको स्वर सच करिकें छीजिये। जो स्वर यहां स्थाई बनसके। सो स्वर स्थाई कीजिये। इहां बजायवेको मारग दिखायवेमें छियेतें। राग कहे हैं॥ ओर बाकीनकी राग हे ते॥ याही अनुक्रम रीतिसों समझ छीजिये॥ इति बंसीको प्रकरण संपूर्णम्॥

अथ मुरलीको भेद लिख्यते ॥ अथ पथन पावामुरलीको भेद है ताको छछन लिख्यते ॥ जो नाथेंद्र वंसीकीसीनांई नव । ९ । अंगुलीनको वंस होय। आर स्वरके पृष्ट । आरा अथवा बांसके पानतों छोटिकें ॥ लौकिक रीतिसों बजाव कोई मनुष्य सें। ताको छछन बुद्धिवान पृत्रष होयसो वंस पावा जांनिय ॥ इति पावामुरलीको भेद हे ताको छछन संपूर्णम् ॥

अथ पाविका मुरलीकां भेद ह ताको लखन लिख्यते ॥ जहां बारह । १२ । आंगुडको दीरव हाय ॥ अह अंगुडा प्रपाण मोटो हाय ओर चटी अंगुडीनकी उपरली परमी मात्रे । ऐसी तरहको पेलो बांस लीजिये ॥ तामें बजायवेको एक छेद कीजिये ॥ ओर स्वरनं वासे पांच । ५ । छेद कीजिये सो ताको लखन है सो बुद्धिवान् पुरुष पांविका कहत हैं । सो याके बजायेतें ॥ प्रथमतो । यम । १ । दूसरो । सर्प । २ । तीसरो । यक्ष । ३ । चाथो पिसाच । ४ । यह च्यारों वंस होय तैसें अनेक रीतिसों बजाईये सो वह वंस पांविकाको भेद हैं । ताको लखन जांनिये ॥ इति पांविका मुरलीको लखन संपूर्णम् ॥

अथ मारगी मुरलीको लखन लिख्यते ॥ जहां दोय हातसीं कळू इक वधतो बांस होय । तामें बजायवेको एक मुखरंधू होय । ओर स्वरनके लिये छेद च्यारि कीजिये । सा वहि मारगी मुरली बुद्धिशन् पुरुष हो सा जांनिये । यापें नाद सुंदर होत हैं ॥ इति मारगी मुरलीको लखन संपूर्णम् ॥

अथ मधुकरी मुरलीकां लखन लिल्यते ॥ जहां काठकी अथवा सीसीनकी एक पूंगी लंबी अठाईस आंगुलकी कीजिये। वामें तुंबीके बाजाके आकार बजाइवेको छेद कि।जिये। या बजायवेके छेदसों। च्यारि अंगुल जगो छोड़ा दीजिये॥ पीछे सात स्वरनंक सात छेद कीजिये पीछे जहां मुखरंघ। सात। ७। स्वरनंक छेद। इनके बीचकी जगोंमें निचली तर-फकी मधुर मधुर धुनिकें लिये। एक छेद कीजिये। ता छेदनेमें। एक जो प्रमान माटि च्यारि अंगुलकी लंबी तांबेकी निल लगावे ता नलीके मुख उपर हातिदांतकी वा सिंपकी गोल चकी लगावे वा छेदमें झाडकी अथवा नरसालंक पानकी चंबली केल आकार बनाय। दुवमें भिजोय। उन छेदमें लगावे। फर वंसी कीनाई बजावे। ताको पंडितजन मधुकरी कहते हैं॥ सो वह मुरलीको भेद जांनिये॥ इति मधुकरी मुरलीको लखन संपूर्णम्॥

अथ कहला मुर्ला ह ताको जो भेद ताको लखत लिख्यते॥
तांबेकी अथवा कोकी अथवा सोनंकी तीन हातकी लंबी भोंगडी कीजिये।
सां वाहींमें चढाव उतारसों पोलि कीजिये। धतूरके फूलको आकार वांको मुख
कीजिये। ओर अंत्य भागमें मुंद्रतांक अरथ । एक कटोरीसों लगाईये।
तीन कटोरीनंक बीचमें। पवनके निकालनंक वासंत छेदन कीजिये सो राखिये।
वांके मुखमें मुख लगायों पवन भरिये। तब हृहू सब्द होत है॥ हातींके सब्द
सरिसो विवाह आदि सीगर मंगलीक कारिजमें॥ इणीनें बजाइये याकों लोंकीकमें भूपाडो कहत हैं॥ इति काहला मुरलीको लखन संपूर्णम्॥

अथ तुण्डिकिनी मुरलीका भेद है ताको लछन लिख्यते ॥ जहाँ दोय हातकी लंबी तांबेकी वा सोने—क्षेपकी काहालिक आकार भांगली करि बजावे। सो पंडितजन है सो तुण्डिकिनी कहे हैं। याको लौकिकमें तित्तरी कहत हैं। सो तित्तरीहसो। प्रथम जन्मोत्सवमें विवाहादिकनमें दोय दोय बजाइये ॥ ओर कोऊ आचारिज याके दोय जुरेजुरे भेर कहत हैं। सो वह बजावती वेर जोडिकिं बजाइये। सो यह भेर तुण्डिकिनीका समिक्षिये। लौकिकमें तुण्डिकिनीको तित्तरीही कहत हैं। इति तुण्डिकिनी मुरलोको लछन संपूर्णम् ॥

अथ चुकाको लछन लिख्यते ॥ तुण्डिकनीकीसिनाई च्यारि हातकी लंबी भोंगली कीजिये। सो चुकाको बुद्धिवान् पुरुष लछन कहे हैं ॥ इति चुकाको लछन संपूर्णम् ॥ अथ शृङ्गको लखन लिख्यते ॥ जहां भैंसाको सिंग लेकें । उपरसों सिकण करिकें आगाने ओर पाछानें । सुंदर सवारिये । ओर वांको मुख गोल कीजिये । ओर वांके निचानें । वृषभकों सिंग लेकें वही सिंगको आठ अंगुलको टूक लंबो लीजिये । सो वहिनें धतुराका फूलकें आकार बनाय । धुनिकें लिये लगावे । सो वांको अग्र भाग दोय । २ । अंगुलको अथवा । ३ । अंगुलको कांटिकें बजायवेको छेद बनाय करिकें । तूतू सब्द मुखसों पुरुष बजावे । यह सिंग गोवर्धन लीलाके समय । गवाल बाल गहरी उंची धुनिसों बजावे । ताको नाम बुद्धिवान वीवेकी पुरुष शृंगी कहत है । सो यह शृंगीनके लखन समझिये ॥ इति शृङ्गको लखन संपूर्णम् ॥

अथ संसको लखन लिख्यते ॥ जहां संख ग्यारह अंगुलको लंबो होय। अंार सुद्ध जाकी नामि मितरसों संवारि होय । वहां तांबेको अथवा रूपेको वा सोनाको । यह तीन धातूको माँगलीके आकार सीखर लगाइये जीमें संखको मुल आंबे सा सिखर लगाइये । तल सीखरके मुख ऊपर आधे आंगुलके प्रमान छेद कीजिये ॥ सीखरके मितर । एक उडद मावे । ऐसो छेद कीजिये ॥ सो संखकों दोनू हातमें लेकें । हुंमुं थो दिग दिग । इन पाटाल्लरसों बजाइये ॥ सो संख मंगलीक कारिजमें । श्रीनारायणकी पूजनमें वा आरितमें तो यह दोन्यु काममें तो मुख्य संखकी धृनि कीजिये ॥ या संखके बजायते । भृत । ३। मेत । २ । पिशाच्च । ३ । ब्रह्मराक्षस । ४ । राक्षस । ५ । सिकोतिरी । ६ । षट् प्रकारका छल छिद्द मिटजाय हें ॥ जैसें भगवानकी पूजनमें संख होय ॥ ता संखके संखोदकरें । अनेक उपद्व मिटे तैसें संखकी धृनि तें ॥ सर्व विघन मिटजात हें ॥ इति संखको लखन संपूर्णम् ॥

सुनारि ॥ जहां रक्त चंदनके काठको एक हात लंबो पोलो बांसके आकार एक भोंगली कीाजिये। ताको मुख धनुरांक फूल समान कीजिये। वांको एक विलिस्तिको ऊपरलो भाग छोटि ॥ एक एक अंगुठांके अंतरसुं छोडी। जाडी बोरको बीज मावे। या प्रमाण गोल आठ छेद कीाजिये॥ वांके मुखमें च्यारि च्यारि अंगुलको लंबो देवनाल कीजिये॥ मिहि नरसलकी च्यारि अंगुल

लंबी भागली कीजिये ॥ ता भागलीके मुख ऊपरि हातिदांतकी । वा काटकी गोल चकी लगावे॥ फेर वा भोंगलीके मुखमें। एक नर-सलको कलस लगावे। वह कलस मुखमें लेके पवन भरिये। ओर बांये हातकी तीन अंगुलीसों। प्रथम तो निषाद ॥ १ ॥ दितीय धैवत ॥ २ ॥ तृतीय पंचम ॥ ३ ॥ यह तीन उपरहे कमसों । तीन स्वर मृंदिये । दाहिने हातनकी तीन अंगुठीसों । पथम तो मध्यम ॥ 3 ॥ दितीय गांधार ॥ २ ॥ तृतीय रिषभ ॥ ३ ॥ यह तीन स्वर मूंदिये तें । इहां उपरलो छेद एक नादरंध्र हैं । सो धुनिकें लिये खुल्यो राखिये ॥ ओर नीचलो एक छेद षड्जको उच्चारको खुल्यो राखिये। बीचके छह छेद मृंदिये दोऊ हातनकी चटी अंगुरी खोलि राखिये ॥ तहां दाहिण हातकी तीसरी अंगुरी उठायेसों । रिषभ गांधार स्वर पगट होय । ओर दाहिनें हातकी बीचली अंगुली उठाये तें । गांधार ओर दाहिनें हातकी पहली अंगृली तर्जनि उठा-येतें । सो वीणासुं मध्यम पगट होय हें ॥ ऐसें बांये हातकी तीसरी अंगुरी उठाये तें ॥ वहिसों पंचम स्वर पगट होय हैं ॥ ओर बांये हातकी बीचली अंगुरी उठायेतें ॥ सा वहि अंगुली सो धैवत पगट होय हैं ॥ ओर बांये हातकी पहली अंग्री तर्जनी उठायेतें ॥ सोहि अंग्रीसों निषाद स्वर पगटता पणांकों पाप्ति होत भये हैं ॥ ऐसें कमसों दोऊ हातनकी । अंगुरीतें रिषभादिक छह । ६ । स्वर होत हैं ॥ इहां स्वर बुलायवंभें जा छेदमें जो स्वर गहरी बोले तहां वा स्वर बोले तो दूसरी। उंची अंगुलीहंसी नहीं उठावामं आवे। जहां ऊंची दूसरी अंगुरी उठायेतें स्वर हलको होजात हैं। तहां अंगुरीकों ढीलीसी राखिये ॥ या रीतिसों कोई पुरुष सुनारीकों बजावे ॥ एसें जो बाजो सां सुनारि बाजो जांनिये ॥ इति समाहिती लछन संपूर्णम् ॥

नागसर ॥ एक छंबि जाकी नाटि होय ॥ ऐसो एक तुंबा टीजिये ॥ वा तुंबाकी पॅदिमें छेद करिकं। दोय नरसटकी मुरटी बनाय ॥ तुंबाके छेद्में मोमसों जमाय दीजिये ॥ पिछे वा तुंबाके मुखमें ॥ अपनु मुख लगाय बजावे । सो विह बाजाको बुद्धिवान् पुरुष नागसर कहा हैं ॥ इन नागसरकों लेकिकमें पुंगी कहत हैं । लेकिकमें पुंगी नाम पसिद्ध हैं । या पुंगीनसो सर्प देवता बहोत पसन होय हैं । इन पुंगीनकी आवाज सुणा करिकें सर्प देवता बिह नृत्य करवा लगजाय । सो सर्प तो पुंगी सो राजी होय हे । ओर बाजेनसों नहीं होय हैं । सो या कारण सर्पको वसकरणों होय तो पुंगी बजाइये । सो वस होवे ॥ या रीतिसों नागसरको लखन जांनिये ॥ इति नायाहरू को लखन संपूर्णम् ॥

- मुखवीणा ॥ जहां नरसल एक विलस्त मनाण लेकें । भूर्जपत्रसु लेपेटिये । सी इसका नाम लीकीकमें बुद्धिवान् पुरुष मुखवीणा कहत हैं । इहां मुखकी पवनसों सब्द होत है सी जांनिये ॥
- चंग ।। जहां छोहको तिश्लके आकार करि विचके माहि पतछो कीजिये। च्यारि अंगुछकी छोहकी सछाई आडि कीजिये। छंबी सछाई पांच अंगुछकी सुधि कीजिये तहां मुखमें छेवेकों अग्रभाग कछू पतछो टेडोसो कीजिये। ओर मुखतें बाहिर रहे। सो कछूइक मोटो। सूधो कीजिये। याके अग्रमें स्वरहसो घटि विव करिवेकों मोम छगावे। पीछं याको अग्र दोऊ दांतनके चोकामें दाविकें जीनिसों पाठाछर करतें। मुखके बाहिर। जो सछाईको भाग हं॥ ताको अंगुछीसों पाठाछर अनुसार ताडन करे तब बजत हं। सो छौकीकमें मुहचंग जांनिये॥ सास्त्रमें याको चंग कहत हैं॥ इति चंगकों लखन संपूर्णम्॥
- पत्रिका। जहां जबकी गहरी नहीं । अढाई । २॥ । अंगुहकी हंबी, एकें । १ । अंगुहकी चोडी पाति हीजिये । अथवा केवहके पानकी पांति बनाय । दांतनमें राखि जिभि हगाय । पाठा हर सों बजावे । सो पखे- कहत सीनाई सबद होत हैं । याको होकीकमें पाति बुद्धिवान पुरुष कहत है सो जानिये ॥ इति पत्रिकाको लखन संपूर्णम् ॥

स्वरसागर ॥ जहां एक । १ । हातको छंवो । आधे हातको चोडो च्यारि । १४ । आंगुछको मोटो । काठको पाटा वनाय । पोछो कीजिये । वांके दाहिनें ओर डयोड हातको छंवो ॥ दोय पाटानामके वंसी छगावनी उन दोउ मुरछीनके बीच दोय आंगुछको आंतरा राखिके । वंसी छगाइये । फेर उहां नरसछको हुक । एक खेरकी भेंगछीके । मुख उपर मोमसों जमाय । वह खेरकी भेंगछी दोऊ मुरछीके उपर छगाईये । उन पाटा दोऊ वंसीमें स्वरके वरितवेकों चोईस । २४ । छेद कीजिये । उन छदनसों । सुद्ध । १ । विकृत । २ । स्वर वरितये । तहां दाहिणें हातसों उन छदनको मुंदिये । ओर बांये हातसों दाबिके सरीरकी मरोडसों । पवनसों पूरण कीजिये। सो स्वरसागर जांनिये। याको छौकीकमें नरसछ कहतहें ॥ इति स्वरसागरको छछन संपूर्णम् ॥

वकी रणसिंग ।। जहां तीन हातकी लंबी भेंगली तांबेकी वा पीतलकी कीजि-ये । बीचमें तीन आंटा कीजिये। यामें षड्ज पंचम । इन दोऊ स्वरको वरतांवे होत हैं । यामें तारस्थानके स्वर सदा होत हैं । यांको लौकी-कमें रणसींग कहत हैं ॥ इति वकी रणसिंगको लखन संपूर्णम् ॥

यहां स्रिपरवाद्यको लछन ॥ सास्तकी मर्यादासों कहेहें। लौकीक रीतिमें ॥ जेसे पसिद्ध तैसें चतुराइसों कीजिये ॥ इति सुपिरवाद्यको लछन संपूर्णम् ॥

अथ च्यारो बाजोंके दस गुण हं तिनको नाम लिख्यते ॥ रिक । १ । विरक्त । २ । मधुर । ३ । अक्षर सम । ४ । सुद्ध । ५ । कल । ६ । घन । ७ । स्फुटमहार । ८ । सुभर । ९ । विघुष्ट । १० । यह दस नाम जांनिये॥ १ रिक्त ॥ जहां जांकी धुनि कानकों प्यारि लगे सो रिक हे । १ ।

२ विरक्त ॥ जो बाजो ओर बाजेके संग बजे। अरु अपनि रस दिखावे। सो विरक्त हें। २।

३ मधुर ॥ जाकी धुनि गंभीर सो मधुर हैं । ३ ।

। अक्षर सम ।। आठ पकारको है। तहां गीतके गुरु छघु अक्षरके अनुसार। जो बाजो मुखसों बजाइये। सो अक्षर सम जांनिये। ४।

9 जो गीतको आरंभ समाप्त इन दोऊनको । निरवाह करे । सो अंग-सम जांनिये। १।

२ जो तालको लीये गीतको निरवाह करे । सो तालसम जानिये । २ । ३ जो यतिके समान बाजे सो यतिसम जांनिये। ३।

४ जो बाजो द्रत । १ । मध्य । २ । विलंबित । ३ । यह तीनों तालके लय दिखाय बजावे सो लयसम जांनिये। ४।

५ जहां गीतको न्यास स्वर होय तहां वाजेहमे विश्राम करे।सो बाजे न्यास स्वर जांनिये। ५।

६ जो गीतको अपन्यास स्वरके कहिये । पिडा बंधिको न्यास स्वर ताको दिखाय सो बाजो अपन्यास समझिये। ६।

७ जो बाजो गीतके आरंभमं कहे। सो समपाणि। १ । अव पाणि। २। उपरि पाणि । ३ । ए तीन हस्तक वाद्य प्रबंध बाजो सहित बजावे । सो समपाणि बाजो जांनिये। ७।

८ ऐसे आठ प्रकारको सम जांनिये । ८ ।

- ५ सुद्ध ॥ जो बाजो सास्त्रकी रीति । वा छौकीक रीतिसों बने । सो सुद जांनिये । ५ ।
- ६ कल ।। जो बाजो गीतके अनुसारसों बजे अज्ञारादि अछिर विनाही ऊन अक्षरनकी नकलसों। अनुरंजन करे सो कल जांनिये। ६।
- ७ घन ।। जो धुनिकी गंभीरतासों दूरि दूरि सुन्योंपरे सो घन जांनिये । ७ ।
- ८ स्फूटप्रहार ।। जाको ताडन पगट जानिपरे । सो स्फूटपहार जानिये । ८ ।
- ९ सुभर ।। जाकी गुंजारसों कंठकी । धुनि रुचि होय ॥ जो मनोहर लगे । सो सुभर जांनिये। ९।
- १० विघुष्ट ।। जो बजायवेमें वा सुनिवेमं । उदासीनताको दूरी करे । मनरंजन करे । सो विघुष्ट जांनिये ॥ १० ॥ इति वाद्यके दस गुणके नाम-लछन संपूर्णम्॥

अथ बजायवे वारेके लछन लिख्यते ।। जहां हातसों वा इंकासों बाजेको ताडन करि। बजावे । याके यति। १। ताल। २। लय । ३। जानं जाके हातमें दस । १०। गुण होय । जेसी जहां बाजेकी काम होय । तहां तैसोहि बजावे । बाजेकी धुनि स्वरकी या विना स्वरकी पहिचानं । गायवेबोरके गीतकी कसरिको पगट करे नहीं ॥ ओर आरंभकी संपूरण किया जानं । गीत नृत्यको भद जानं सिगरे बाजेके भेदमं पवीण होय ॥ संगीतसास्त्रंक जानिवे-बारो होय । सो पुरुष मुख्य बजायवेबारो जांनिये ॥ इति बजायवेबारेका लखन संपूर्णम् ॥

अथ हातन के दस गुण लिख्यते ॥ जहां हात बाजे बजाये वेके लायक सुंदर को मल होय । ३ । हात दढ होय । २ । हात स्वेद रहित होय । ३ । सिक होय । ४ । नखिज सका गाढे होय । ५ । हात में आलस नहीं होय ।६। हातकी अंगुली अनेक प्रकारकी रीतिसों चलती होय । ७ । हातन में पसेव नहीं आवे । ८ । घणी बेरताई वाजिंत्र बजावे तो हु हॉर नहीं । ९ । जहां जैसा वाजित्र बजायवेवारो ताडन चिहये तैसो हि करें । १० । ऐसे दस गुणजुत बजायवेवारो ताडन चिहये तैसो हि करें । १० । ऐसे दस गुणजुत बजायवे वारेको हात चाहिये । ओर अपनी बुद्धिमों जैसो जहां चिहये सा की जिये । इन च्यारों बाजेन के भेद अपार हें परंतु भरत हनुमान आदि आचारिज नें इतनें ही बाजे मुख्यकरि वर्णन करे हें । ओर जो कोऊ पुरुष बुद्धिवान् होय । सो इन रीति सों ॥ ओरहूं बाजेनका प्रकार जा नें ॥ यह च्यारों बाजनके समूहके देवता सुनिवे सुनायवेवारे के आनंद करो ॥ इति संगति सारे वाद्याध्याय संपूर्णम् ॥

॥ द्वितीय वाद्याध्याय समाप्त ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRYTAP SINHA DEO OF JAIPUR

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHI D

BY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon. Secretary Guyan Samaj, Poona.

PART III NARATANADHYAYA.

(Art of Duncing Expression and Dramatic acting)

(All Rights Reserved - Registered under Act XXV of 1867.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10-8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS'BY NATESH APPAJI DRAVID.

पूना गायन समाज.

संगीतसार ७ माग.

जयपुराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवक्रत.

पकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी मेकेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ३ रह.

नर्तनाध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार इ. स. १८६७ का आक्ट २५ के अनुसार प्रकाशककर्ताने आपने स्वाधीन रखा है.

पुना ' आर्यभूषण ' प्रेममे छपा.

संपूर्ण प्रन्थका मृत्य रु. १०॥, और प्रन्थेक भागका मृत्य रु. २.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

तृतीय नर्तनाध्याय-मृचिपत्र.

विषयक्रम	ys.	विषयक्रमः	ष्ट्रष्ठ.
नास्यको लछन	4	उनप्हन करनके नाम-लङन	43
नृत्यको लङ्ग	ą.	आचित लाहडी भेद	42
लास्यको लङन	3	देमी म्थानकको नाम-लछन.	40
नृत्यकरिवे वारके भेद ६ और लखन	r	बेठिवेक नव म्थानक	५८
नृत्य भृमिको लङ्ग	4	सोयवेके छह स्थानकको लछन	49
पात्र और पात्रके शंगार	દ્	िचरनकी गाँतको नाम चारि ताको नाम लछर	न ६०
आचारिजको लखन		भूभि चारिक पाडम नाम-लछन	ક્
संप्रदायको लखन	٠,	आकाम चारिके पोडम नाम लहन	દ ૧
युद्ध पद्धतिको लछन	c	देशि भूगिचारि पांतिसको नाम लखन.	६ ૩
पेरुणी बहुरुशका लखन	•	द्सि आकास चारि उगर्णामको नाम लछन	१ ६६
आचार्याद्नैनको गुणनिर्णय	•	अंगहारको नाम छछन	६७
नृत्यकरिवे वारको, मभापताको और		चत्रस्र तालमें वर्गतंबको सोलह अंगहार	६८
सभाको गुण	90	च्यम्य तालके प्रमानमं मोलह अंगहारको	
अभिनय मन्तुकक प्रकार	90	नाम लछन	90
दशाककी चेष्टा, नृत्यमें अंगुळा, अंगुटा		रचिकको नाम ठछन	७३
ं और हातके भेद	95	दम भामे मंडलको लहन	93
दोक हातनके मिले. १३ हम्मक तिनक		दम आकास मंडलको लछन	38
नाम और लखन	13	काहल मुनिक मतमा वर्तनाक नाम लखन	७६
नृत्यके हस्तकको लछन	95	चालकको नाम लङ्ग	96
हृद्यके, पांसुके, कटिके और चरणके भंत	f, `	लाम्य मार्गिके बाग्ह भेद निनके नाम लखन	a < 3
नाम और लड़न	99	महाराज असोक मलके मनसी दास लास्या	
ग्रीवाके, भुजाके, उद्रक्, जांघके, पिंडिके	5,	गक मतर्नास अंग तिनको नाम लखन.	
पहुचाके ओर गोडाके भद्, नाम	,		~
और लडन	٠, ٩	नृत्यमें अंगके विकार बतायवेको विकत	د ۹
दृष्टिनके भेद और लङ्ग	રપુ	चेष्टाको लङ्ग	٠,
भोंहके नेत्रके, पलकनके, पृतरीके नामिक	T-	देवता, देत्य, राक्षम, ममुद्र, नदि आदिके	
के, मुसनासिकाके, अधरके, दांतनव	ह.	म्ब्ह्य जनायवको लङ्ग	50
जीभके, मुसके और चित्रक मे	द	नृत्यके आभिनय कहिये पदार्थको जना-	
नाम और लेखन	२९	इया ताको नाम लखन	4.8
एडिके, टकांणाके, हातके, अंगुरीक, चरण	ाके,	गममंडल नृत्यको लङन	48
अंगुरीनके, पगथलीके भेद, नाम और	r	जहां नृत्य कीजियेता महलको लछन	९७
लक्ष्म	34	,, ,, ,, महलमे बेटिवेके	
मुसके चेषाको नाम और लछन और	•	म्थानक	30
ँ हातनके प्रकार 🔐 \cdots 🔐	રૂ ૭	रंगभूमी ओर नाट्यपात्रको लछन	50
हस्तकके वीस कर्म नाम-लछन	36	नृत्यके आदिमे श्रीगणेशजीके पाठाक्षर	
हात चलायवेके चोदह स्थानको नाम-लङ	न. ३९	रूप प्रबंध	96
च्यारि करनके नाम-लक्षन	3 5	सातको लछन और उनके अनुक्रमसौं	
नृत्य करनके १०८ भेद	¥0	पाठाक्षर	900
•		***	

तृतीय नर्तनाध्याय.

नाट्यको, नटको, नृत्यको, रंगभृभीको लखन.

अथ संगीतमारे नृत्याध्याय लिख्यंत ॥ तहां गीत । १ । वार्जित्र । २ । को फलरूप परम आनंदको उपाय जो नृत्य । ओर नृत्यके अंग वरनन करिवेको । पथम अपने इष्टदेव । संगीतसास्त्रके करता । श्रीपरम शिवजी है ॥ तिनकों नमस्कार करिकं यह जगत जिनके। आंगक कहिये ॥ सरीरकी चेष्टासीं पगट भयोहें । ओर वेद पुराण स्मृति महाभारत । उपपुराणादिक । तंत्र आदिक सकल संस्कृत पाकत भाषा सुहर सन्द्समूह जिनको वाचक कहिय । सो वचन बोलिबोहें । ओर सूर्यनारायण । चंद्रना देवता । सर्वत्र तारा आदिक जोतिचक जिनको आचार्य कहिये आभूषणहें । ओर सान्विक कहिये आप शिवजीमहाराज सतोगुणरूपहें। ऐसं जो शिवजी निनको । साष्टांग दंडवन करतहें । व शिवजी हमारि बुद्धि निर्मल करो । श्रीभरत मतेंग हनुमान कोहल आदि सकल मुनीश्वर संगीत रत्नमाला पक्षधर मिश्र संगीत पारिजातक अशोकमल राज-ऋषि सारंगदेव, ब्रह्मऋषि अनुष्टुप् चक्रवर्ती कल्लिनाथ आदि संगीत आचारिजके मतसीं नृत्याध्याय कहतहैं ॥ सो त्रिविध तापकों हर सर्व सुख करे । ऐसी जो नृत्य, ताके भेद लक्षण समस्त सामिय हस्तक आदि सरीरचेष्टा भाव आदि मनकी चेष्टा कटाक्ष आदि ग्यानइंदियनकी चेष्टा । आर जयजय इत्यादि वाणिकी चेष्टा आदि सब कमसों छछन छिल्यंते । तहां नाटचेवर् श्रीशिवजी पायकें। भरतमुनीनें श्रीशिवजीके आगेरख्यो। तब श्रीशिवजी पसन होय । अपने तंडु नामा गणसी रचवायके । तांडव भरतकों दियो । और पारवतीजीकों रचायवेके लास्यनामा नृत्य दियो । साधा-रण नृत्य ब्रह्माजीसों भरतजीनें पायोहें । वाहीसमें तांडव नृत्य मनुष्यलोकमें आयो । वहि समें बाणासरकी बेटी उषादेवीनें श्रीपार्वतीजीसों लास्य सिखिकें । द्वारिकामें जय श्रीकृष्ण भगवानकी महाराणीनको सिखायो । ऊंन महाराणीनसीं सब देसनकी स्त्रीनमें पगट भयो । गानवेद च्यारों वेदनको सार हे धर्म अर्थ काम मोक्ष । यह च्यारों पदारथ देतहे । उछाह सुख बढावत हे ॥

सो यह नाटच तीन पकारकोहे ॥ नाटच । १ । नृत्य । २ । नर्तन ।३। यह तीन जांनिये ॥ अथ इनको रचिवेको समय छिख्यते ॥ यज्ञ । १ । यज्ञति छक । २ । जात्रा । ३ । देवयात्रा । ४ । विवाह । ५ । प्योरको संगम । ६ । नगरमवेश । ७ । गृहमवेश । ८ । पुत्रजन्म । ९ । आदि मंगठीक कारिजमें । १० ।

नाटचको लछन ॥ जामें रस मुख्य होय । अभिनय कहियेमें मन सरीरकी चेष्टासुं रस उपजावे सो नाटच जांनिये॥ या नाटचको वर्णन कहेहें ॥

अभिनयको लखन ॥ जो विभाव आदिक भावनको पगट करि नृत्य देखिवेबारेकों सुख उपजावे। ऐसी जो नटकी चेष्टा सों अभिनय जांनिये॥ यह अभिनय च्यार प्रकारको हैं। जहां सरीरके हात पग। आदि अंगकी चेष्टा कीजिये। सो आंगीक वचनसों जो पगट कीजिये। सो कवितावाचिक । हार-मुकुटकुंडल आदि आभूषणकंडोरोधारि। सो आहार्य । ओर अश्रुपात रोमांच आदिकसों मनकें सुखदु:खको जताईवो सो सान्विक ये च्यारि जांनिये॥ या अभिनयकी कर्तव्यता दोय प्रकारकी हे। लोक धमं। १। नाटच धमं। २। तहां लोक धमींके दोय भेद हें॥ जो मनकी बातकों पगट करे सो चित्तवृत्य-पिका। १। जो चेष्टासों कमल आदि वस्तुकों बनावे सो बाह्य वस्तु अनुकरणी। २। अब नाटच धमींके दोय भेद हें॥ जहां हात पावकी चेष्टासों प्रगट करिवो लोकों प्रसिखहें। जैसे हातके चलायवेमें कारिजनकी समस्या करिवो सो लोकायत्त स्वभाव। २। इति नाट्यको लखन संपूर्णम् ॥

नृत्यको लखन ॥ जहां नृत्यमें शरीरकी चेष्टासों भाव बताव सीं नृत्य जानिये ॥ इति नृत्य लखन जानिये ॥ अब नृत्यको लखन कहेहें । जहां नृत्यमें भाव नहीं बताईये । केवल हात पांव गतिके अनुसार चलाइये । सी नर्त जानिये ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-नाट्यको, नटको, नृत्यको, रंगभूमीको लछन. 🤏

तांडवके लाउन ॥ जहां नाटकमें रावण हिरण्यकश्यप आदिकी नक-लमें । उनको उद्धतपणों जताइवेकों उद्धत चेष्टा कीजिये । सो तांडव नृत्य जांनिये ॥

लास्यको लखन ॥ जो नृत्य सकुमार अंगसो कामदेव उपजावे । सो टास्य जांनिये । सो यांके तीन भेद हैं ॥

१ विषम ॥ जहां टेडो बांको वरितये। चेटिकं सास्त्र पढिकं नटकों भ्रमण होय । यांही रीतिसों टेडे बांके भाव बताईये । सी विषम । १ ।

२ विकट।। जहां बेडोल रूप होय। बेडोल चेष्टा होय। सो विकट । २।

३ लघु ॥ जहां चेष्टा चितवाचितवी होय। सो लघु। ३। ये तीन जांनिये॥ इति लास्य लखन जांनिये। तहां च्यारि अभिनयमें वाचक। १। आहार्य। २। सात्विक। ३। ये तीन काव्य नाटकमें हे आंगीक अभिनय। १। नृत्यमें हे ताके भेद कहे हैं। जहां नाम प्रकारसों। हातको उठायवे।। सो शाखा। १। जहां पहले भये रामकृष्ण आदि अवतारनके जतायवेकी चेष्टा। सो अंकूर। २। जो आंगे होनेहारे कलंकी आदि अवतारनकी धर्मस्थापन आदि चेष्टा। सों मुचि। ३। यह तीन भेद हैं॥ इति लास्यको लखन संपूर्णम् ॥

अंग-प्रत्यांग भेद ॥ मस्तक । १ । हात । २ । वक्ष । ३ । पासुं । ४ । कटी । ५ । पग । ६ । यह पडांग मनुष्यके जांनिये । कोऊ मुनिश्वर कांधेकों अंग सातवों कहे हें स्कंध । १ । ये अंग जांनिये । यीवा । १ । भुजा । २ । पिंठ । ३ । उदर । ४ । जांघ । ५ । पिंड । ६ । यह छह पत्यंग जांनिये । कोऊ पगु या गोडा पत्यंग कहे हें । ये पत्यंग जांनिये । २ । दृष्टी । १ । भेंह । २ । पछक । ३ । नेत्र । ४ । क्योछ । ५ । नासिका । ६ । छछाट । ७ । अधर । ८ । द्वांत । ९ । जीम । १० । चिबुक । ११ । मुख । १२ । यह समस्त उपांग जांनिये । एडी । १ । ढकुणा । २ । आंगुरी । ३ । हतेली । ४ । पग । ५ । पगथली । ६ । इत्यादि पगके उपांग जांनिये । मुखराग कहिये मुखको तेज, सो, यह जांनिये स्थानक । १ । चार्य । २ । करणा । ३ । मंइल । ४ । अंगहार । ५ । यह नृत्यके पांच अंग हैं ॥

॥ अथांगप्रत्यांगके भेद् ॥

मस्तक	ग्रीवा	दृष्टि	ललाट	एडी	स्थानक	वेश्या	9
हात	भुजा	भांह	अधर	ढकुणा	चार्य	नट	२
वक्ष	पीठ	पलक	दांन	अंगुरी	करण	भगत	3
पांसु	उद्रग	नेत्र	जिभ	हतेली	मंडल	नटवा	8
कटि	जांव	कपोल	चिवुक	पगथली	अंगहार	चारण	ч
पग	पिंडि	नासिक	मुख	हातक उपांग	अंगके उपांग	वैनाछिक	Ę

नृत्य करिवे वारेको छह भेद् ॥ वेश्या । १ । नट । २ । भगत । ३ । नटवा । ४ । चारण । ५ । वैनालिक । ६ । कहिये । भाट आदि कोलाहर ये जांनिय ॥

वेश्याको लछन ॥ तरुण । १ । महारूपवंती । २ । सुकुमार कहीय । नाजुक । ३ । सोडस वरसकी । ४ । सुंदर कुचवारि । ५ । चित जाको रसमय । ६ । धीट होय । ७ । संगीत सास्त्रमें प्रवीन होय । ८ । सो स्त्री प्रवीन होय सो नृत्येमं लीजिये । सो अनेक देम भाषा संस्कृत पाकृत संगीत सास्त्रमें प्रवीन होय । हावभाव कटाक्षेमं प्रवीन होय वा चतुर होय सो वेश्या जांनिये ॥ १ ॥

नट ॥ नवरसनको पगट दिखाव । एसो पुरुष नट कहाव ॥ २ ॥ नटवा भगत ॥ जो पुरुष नाचो गाव । सो भगत नटवा जांनिये ॥ ३।४॥ चारण ॥ जो पुरुष कणगती वा वुंघराइनकों निकें बजावे गीत कह जाणे ॥ हास्यवचन कहे भटो जाको कंठ होय । सो चारण जांनिये ॥ ५ ॥

वैतालिक ॥ जो पुरुष नृत्यमें चरनकों धरिवो हास्य सुभावको बजायवो पाठाछरको वरितवो तासकी गित इनमें चतुर होय । ओर नृत्यकी रचनामें बोध करे । सो वैतालिक हे ॥६॥ जाको आंग घणो नमें सीसा उतारे पद्यां उठाले । सब्गकी धार वा थाली उपर नृत्य करे मुखसों मोती पावे । ऐसो ओर अनेक कम रचे । सो कोलाहर जांनिये ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-नाट्यको, नटको, नृत्यको, रंगभूमीको लखन. ५

नृत्य मंदिर ॥ जहां महेलकी भित सुपेद निरमल रननकी वा पाषा-णकी होय ! मण्यासों जडीत होय । जामें सुंदर झरोका होय । अनेक रंगेक चहर वा बिछायत आछि होय ॥ फूडकी रचना होय । रत्नको खंमा होय । जहा पनानको काम होय । जहां ओक रंगके काम होय । नानामकारकी सुगंध होय । छहां ऋतुमें सुलकारि होय बडो विसाल होय । ऐसी मंदिरमें नृत्य कीजिये ॥ इति नृत्य मंदिर लखन संपूर्णम् ॥

सभा लाइन ॥ जहां सभाकी बेठक ऐसी होय । जामें पंडित वैद्य वेद-पाठि । किविश्वर जोतिसी वर्मशास्त्री लौकीक बातकों प्रवीन तैसे जे पुरुष । ते श्री-महाराजके दाहिने तरक बेठे और श्रीमहाराजके बांई तरक । म्रबीर तेंग त्याग प्रवीत । सास्त्रों निपुण । ऐसी क्षत्रिय तहां बैठावे और श्रीमहाराजके पुरोहित आदि पूजनीक जन आनें अपने स्थानक बेठे । खबास आदि और हू शेर कवी ठांडे रहें । आंगेंका नृत्य कारिके सपूह सन्मुख हायके नृत्यविद्या रचे । ऐसी सभा हाय ताको बीचमें ऊंचे आसनमें श्रीमहाराज विराजे सो पंडित सभा जांनिये ॥

सभापति लाउन ॥ महादानि। १। गुगजा। २। धार। ३। पात्राञ्जात्रकों विवेकी । ४। शृं गारसों मगन। ५.। गुगबाही । ६। सर्व कलावें प्रवीन कौतुकी कोमल पिय वचन बोले सन्यवादि। संगीत सास्त्रतें गंभीर होय सब लोकनंक मनकों राजि करे। ऐसे सकल गुग संयुक्त श्रीमहाराज सदा चिरंजीव रहो ॥

नृत्यके रंगभूभीकी प्रथम पूजाविधि ॥ तहां शुभ दिनमें श्रेष्ठ लग्नमें श्रीगणेश । १ । सग्स्वती । २ । भग्नती । ३ । ब्रह्मा । ४ । विष्णु । ५ । महेश्वर । ६ । रंगभूमीके देवता । ७ । इंद्राणी । ८ । हनुमान । ९ । भैरव । १० । आदि ताल । ११ । वीणा । १२ । मृदंग । १३ । बाजे वाट्यके नायकसों । आचारिज कन्या । इनकों चंदनादि चर्चन तांबूल फूल माला वसन कुंडल हारादिक आभूशणसों पूजिये । ओर नृत्यके स्थानक दोय स्तंभ बराबरके गाढीकें उनके ऊपर एक आडो सुंदर काठ राखिय मूहिमें आवें ऐसीं दंडके आकार कीजिये । वा दंडिकाको हातसों पकरिकें जो कोऊ नट आचारजों नृत्यमें ठाडो रहे ताल । १ । लय । २ । भीत । ३ । आदिक बस्तुकों रवे । सो रंगभूमि जांनिये ॥

पात्र ॥ या रंगभूमिं जो नृत्य गुणी करें। सो पात्र कहिये ॥ याके तीन भेद हें ॥ मुग्या ॥ १॥ मध्या ॥ २ ॥ मीढा ॥ ३ ॥ इनको छछन कहेहें। जहां अधर स्तन ये पृष्ट होय । वामें चेष्टाकी वासना होय । सो प्रथम योवन जांनिये ॥ १ ॥ जहां जंवा ॥ १ ॥ किट ॥ २ ॥ ये पृष्ट होय । कुच किन होय । सो दूसरो योवन जांनिये ॥ २ ॥ जहां योवन अवस्थरयातें उनमत्त होय । घरमें धन संपत्ति होय । कामदेवकी वासना होय । राति निपुण होय । सो तीसरो योवन जांनिये ॥ ३ ॥ यः तीन योवन कहें । सो सोछह वरसकी अवस्था होय सो मुग्ध पात्र ॥ १ ॥ चोवीस बरसकी अवस्था होय सो मध्यम पात्र ॥ २ ॥ व तीस बरसकी अवस्था होय सो प्रेंद तीन अवस्था होय सो प्रेंद जानिये ॥ इहां वश्या या नट बाछक छीजिये। वृद्ध नहीं छीजिये। इहां नृत्य करिवे वारेके । सुंदरता आदि सर्व गुण प्रसिद्ध हें ते पात्र छीजिये ॥

पात्रके गुणदोष ॥ अवे नृत्यको छछन कहे हैं जो पात्र कोगछ ताछ ॥ १ ॥ छय ॥ २ ॥ जुत ॥ ३ ॥ वाद्य ॥ ४ ॥ गानसों कोमछ अंगकी चेष्टासीं नृत्य करे सा नृत्य उत्तम जांनिये ॥ आर पात्रमें कुरूपता आदिक भेद प्रसिद्ध हे । कुरूपता ॥ १ ॥ मृच्छना ॥ २ ॥ कर्कस वचन ॥ ३ ॥ जो सरीरकी चेष्टा सुंदर कही हैं । ते नहीं होय । ऐसे अनक दोष हैं ते दोष जा पात्रमें होय तें नहीं छीजिये ॥

अथ पात्र गृण लिख्यते ॥ सरीर मनोहर होय । रूप भेष्ठ होय । कान नेत्र विशाल होय । अधरकी अरुनता । दांतनकी बराबर समता । कंठ संखके आकार होय । भूजा वेलके आकार होय । नितंब जाके पुष्ट होय उंचे होय । कांति मधुरता धीरज उदारता घाटता । गौरवर्ण श्यामवर्ण । ऐसे ओर विद्या संगीतमें पवीणता आदि अनंत गुण हैं । यह जामें गुण नही होय सो दोष जांनिये ॥ इति पात्रके गुणदोष संपूर्णम् ॥

पात्रके शृंगार ॥ जाके श्याम सविक्ठत छंबे केसके समूहके अग्रभागमें गाठि दीजिये सो गाठि पीडों लटकित रहे ॥ अथवा गाठके अग्रभागमें भूलनकों गुछा रहें अथवा मोतिनकी छिर सों गुहीं फूलजुन वेणी पीडें होया॥

तृतीय नर्तनाध्याय-नाट्यको, नटको, नृत्यको, रंगभूमीको लखन. अ

ओर अलक दोनू कपोलनें छुटे होय लिलाटें केसर कस्तूरा आदि सुगंधकों तिलक होय। नेत्रनमें अंजन काजले होय। काननें कुंडल होय। अथवा ताल पत्रक सिरसी ठाडी होय दांतनकी पांतिमें लाल वा श्याम मिसि लगाइ होय। वा पानविडी चवायवो होय कपोलनमें कस्तुरिको चित्र। कंठनमें मोतिनकी माला। हातनें जडाउके सुवर्णके कंकन। अंगुलीं माणिक निल हीराकी जडित सुव-णंकी मुद्दिका शरीरमें ॥ अर्गजाको अंगराग। पायनमें चोरासी चुंचर आदि बाजेनके गहणा। कटिमें कुद्रचंटिका होय। ओर नानापकारके अनेक वरनके यथायोग्य। जो देसकों पहराव होय सो तैसें वस्त्र पहरिये। श्यामवर्ण गौरवर्णको। जेसो चाहिज तैसो आभूषण वस्त्र पहरिये॥ इति पात्र शृंगारके लखन संपूर्णम्॥

आचारिजको लछन ॥ स्वरूपवान् होय ॥ १ ॥ नृत्य भेदके तत्वकों जाने ॥ २ ॥ तालनके यह मोक्षमें चतुर ॥ ३ ॥ गमक ॥ ४ ॥ रागकों घटाना या वधाना जाने ॥ ५ ॥ च्यारि प्रकारके बाजे बजायवी जाने ॥ ६ ॥ तालनकी लय ॥ ७ ॥ यित ॥ ८ ॥ पाठाछर ॥ ९ ॥ वाद्यभवंध ॥ १० ॥ वीणा आदिक रचना जाने ॥ ११ ॥ पात्र जो नृत्य करिवे बारे ताके हद्यकी बात जाने ॥ १२ ॥ पात्रकों भाव बतायवेगं चतुर ॥ १३ ॥ नृत्यके दोय गुणको समझे ॥ १४ ॥ छंद प्रबंधके गायवेमें निपुण ॥ १५ ॥ सभाके जन तिनके मनकों जाने ॥ १६ ॥ सभापितकों रिझाय जाने ॥ १० ॥ और संगीतशास्त्र वा ओर सर्व शास्त्रमें प्रवीन होय ॥ १८ ॥ पवित्र होय विद्या क्षमाशील होय ॥ १९ ॥ सदा पसन्त मूर्ति होय ॥ २० ॥ पहले आचारजन जो नृत्यगानकों संगदाय चलया आवे । ताही संपदाय सों नृत्य गान रचे ॥ २१ ॥ ऐसो होय सो आचारज उपाध्याय जानिये ॥ इति आचारिजके लछन संपूर्णम् ॥

संप्रदायको लखन ॥ जहां गायन वाद्य मृदंग आदि बजायवेतें गुरुमुखसीं सीखेसीं प्रवीन भये। ऐसें स्त्रीपुरुष बजायवेवारे बत्तीस होय ॥ दोय पुरुष ताल वारे झांजवारे दोय करतालवारे छह वंसी बजायवेवारे चतुर पुरुष । उनमें दोनू वंसी वारेको सहाय करे । सो वे चारि वंसी मधुर धुनिसों बजायें । दोय मुख्य गाय वेवारे होय । आठ गाइवे वारे ऊनकों

स्वर साधे। दोय स्वी गायवेवारी मुख्य होय उन स्वीके सहाय करिवेकी। आठ स्वी गाइवे बारी होय। इन संपदायि लोकनके मन माफिक नृत्य करिवे- बारो एक पुरुष ओर एक स्वी होय। ए सीगरे समाजके नर नारी स्वरूष होय चित्रविचित्र वस्त्र आभूषण व चंदन माला आदि शुंगार कीये होय सिगरे हर्ष करिकें संयुक्त होय एक मन होय स्वरमें मिलिकें गीत॥ १॥ नृत्य॥ २॥ बाद्य॥ ३॥ कर या समूहको उत्तरमें संपदाय कहे हैं। याहीकों कृटिल नाम कहे हैं। या समूहनें। आधो समूह मध्यम संपदाय हें मध्यम समूहनें। जो घाटि समूह। सो कनिष्ठ संपदाय जांनिये। या रीति संपदायकी हैं॥ इति संप्रदायको लक्षन मंपूर्णम्॥

शुद्ध पद्धतिको लखन ॥ जा सभामं नृत्य करिवेकी राति । सो सुद्ध पद्मति हे मो कहे हैं। जहां संगीत जांनिववारे पुरुषके आचारिज रंगभूमिमें प्रथम आइके टाडो होय । ओर गायंव बजायंववार समाजि । अपने अपने स्थानमें सावधान हाय स्थित हायक । वीणा आदिक च्यारी बाजेनका एक स्वरमें मिलायके । एक गतिमें मिलावे । संग कंठसों आकारको स्वर मिलावे सी याको नाम गजर पबंध हैं। फर रंगभूमिमें एक ओर परदा छगाय, ताके भितरि. नाचवेवारे अंगुलीमें फूल लेकें ठाडो रहे। फेर समाजि पुरुष इष्ट देव। श्रीगणेशजी ॥ १ ॥ दुर्गा ॥ २ ॥ सूर्य ॥ ३ ॥ शिव ॥ ४ ॥ विष्णु ॥ ५ ॥ आदि देवतानकी स्तुति प्रबंध गावे ॥ तब परदाके दूरी नृत्य करिवेवारो रंगभूमिमें आवे। तब समाजी छोग प्रवेशके प्रबंधकों गावे। जब नृत्य करिवेवारो पुरुष विघ्न दूरि करिवेकों देवतानके पसन्न करिवेकों । रंगभूमीके बीच पुष्पांजिति डारे। तब बसाजी पसन्त होतहं । ताउपरांत नृत्यंके गायवेवजायवेक समाज-सों यथायोग्य नृत्य करे ताउपरांत पबंध छंदसों नृत्य कीजिये । फेर एलादिक पर्वथसों रस भाव बताईके। साधारण रीतिसों नाटच ॥ १ ॥ नृत्य ॥ २ ॥ नर्तन ॥ ३ ॥ यह त्रिविध नर्त राचिके विश्राम कीजिये ये नर्त रचिवेकी पद्यकी रीति जांनिये ॥ कोऊ मन ऐसें कहतहे सो प्रथम आरंभमें । समहस्तकके पाठाछरसीं बाजा बजाइये । समपाठनसीं बाजेबजे। तब रंगभूमिर्ने प्रवेस कीजिये। ओर कोऊ मतसें भीत न्यारी गाईये । बाजी न्यारी बजाईये । ऐसे मत हैं ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-नाट्यको, नटको, नृत्यको, रंगभूमीको लछन. ९

अथ नृत्य करिवेवारे स्त्री वा पुरुषकों गोडली कहे हैं । यह कर्णाट देशमें प्रसिद्धहं बाको लछन लिख्यते ॥ जहां नृत्यमें सब वाद्य प्रबंध। जिनमें संदर कविता ऐसे पबंध छंद मुखसों। गानकरत हानसों कोऊ बाजो बजावत जो स्त्री वा पुरुष । तालसों नृत्य करे सो नृत्य करिवेवारो । गोडली जांनिये । सो गोडली नृत्य कारोको नृत्य विधिहें ताकों लखन कहतहें ॥ जहां कर-नाट देसके पहराव पहरे गाइव बजायववारे हाय ॥ फेर प्रथम कीसीनाई एकतालि तालें बाजा बजावे नृत्य करिवेवारी पथम कोसीनाई रंगभूमिमें पुष्पांजलि डार । नाचिववारा अपने दाहिणेबांये ॥ अंगको दिखाय दिखाय चमन्कारसां नत्य करे एकतालिताल वा निसारताल इनसों वाद्य प्रबंध । ओर छंद प्रबंधकी लय नानापकारकी वरतिये। तहां प्रबंधनमं । उद्याह ॥ १ ॥ मलापक ॥ २ ॥ ध्व ॥ ३ ॥ आभोग ॥ ४ ॥ सास्त्ररीति समिक्कें वरतिये ओर ध्व मंठ पतिमंठ आदि सात सालग मूड पबंध दुतलयसो उनेमं कह तालसों वरतिये। ओर जहां नांडव नृत्य रचिये । सो विलंबितलय लीजिये । ओर प्रबंधाध्यायमें एकतालीतालसां रूपक कहेहें ॥ तिनको वरतिकें । अनेक प्रकारके आलाप करिकं । अनेक भेद वाद्यादिकनके रचिकं विश्वाम कीजिय । सा गांडली विधि जांनिये ॥ इति शुद्धपद्धितको लखन संपूर्णम् ॥

परुणिको लखन ॥ पेरुणी कहीये बहुरूप वा आदि नृत्य करिवेवारे । जाके सरीरमें भरम आदिक। खेतडंगलग्यो होय। ओर माथेमें चोटी वधी होय। बाकी माथेमें सवारकी इहीय चरननमे घणे घुंघरा होय। ओर पांची अंगनको चेष्टामें चतुर होय। ताल लय नृत्य कला गाईवे बजायवेमें चतुर होय। सर्व सभाको अनुरंजन करे ॥ ऐसा जो नृत्य करिवेवारी पुरुष सां पेरुणी जांनिये ॥ ओर नानापकारके सोंग बनाइवेमें नकल करिवेमें चतुर होय। सो नृत्य करिवेवारी पेरुणी जांनिये ॥ इति पेरु-णीको लखन संपूर्णम् ॥

आचारिज आदिनको गुणनिर्णय ॥ जाको गाइवो बजाइवो नार्वावो सुद संपदायसों आवे । सो आचारीजको गुण हे ॥ १ ॥

नटको गुण ॥ जो सरीरके मनके भाव उत्तरपत्तर बतावे उंचोनीचो तत्य गान करे। ओर नकल स्वांगके भेद जांने सो नटको गुण हे॥ २॥ नृत्य करिवेवारेको गुण ॥ जो मार्गि तालनमें मार्गि राग गाइक नृत्य करिजानें । सो नृत्य करिवेवारेको गुण हे ॥ ३ ॥

वैतालिक भाटकवीश्वरको गुण ।। जो सीगरे देसनकी भाषा समझे सबकी रीति बतावे चतुर होय । सो वैतालिक भाटकवीश्वरको गुण हे ॥ ४ ॥

चारणको गुण ॥ जो आछे घुंगरा बजाय जाने । विकट नृत्यंमं चतुर होय । सर्व रागमें प्रवीन होय हास्यवचनतं सबको प्रसन्न करे । सो चारणको गुण हे ॥ ५ ॥

सभापतीको गुण ॥ जं काहुकी निंदा साची, वा झूटि, वा विरोधमें वा हासीमें, कबहु नहीं करे । सर्व धर्मकमें छोकरीतिमें चतुराइमें प्रविन होय । जिनके हृदयमें द्या होय । उदार होंय । परउपकारी होय । सत्यवादि होय । रिसक होय । ऐसे सभामें बेठिवेवारे पुरुषनमें गुण चाहिये ॥ जो दाता होय सब सास्त्रकी छौकिकिकी बात समझे । द्यावान् होय सेवकनकी अपराधकों समझे गुणगंभीर होय । धीर होय । सो सभापतीको गुण हे ॥ ६ ॥

सभाको गुण ॥ राजगुरु पुरोहित कवीश्वर वैद्य । जोतसी । सकुनी धर्मसास्त्री । सास्त्री । मंत्रसास्त्री । पंडित ब्राह्मण । मंत्री ओदायत । ओर प्रधान सभासत । सेवक । खवास । सरवत्र उमराव अनेक सुभट । तरवार बहाइर । मंत्री अनेक प्रतिष्ठित धनपात्र । सैन्यांके प्रधान । लोक आदिक सभामें विराजमान । सों सभाको गुण हे ॥ ७ ॥ इति आचारिज आदि सिगरेनके गुण संपूर्णम् ॥

अभिनय ॥ आंगीक ॥ १ ॥ वाचिक ॥ २ ॥ आचार्य ॥ ३ ॥ सात्विक ॥ ४ ॥ यह च्यारि प्रकारके अभिनय कहिये । भावको बताइवी हे । तहां सरीरके अंगसों भावको बताइये । सो वो आंगीक अभिनय हैं ॥

सरीरके अंगमें। प्रथम अंग मस्तक वासो भाव बताइवो ताको भेद-लछन लिख्यते॥ भूत ॥ १ ॥ विधूत ॥ २ ॥ आधूत ॥ ३ ॥ अवधूत ॥ ४ ॥ कंपित ॥ ५ ॥ आकंपित ॥ ६ ॥ उद्वाहित ॥ ७ ॥ परिवाहित ॥ ८ ॥ अंचीत ॥ ९ ॥ निहंचित ॥ १० ॥ परावृत्त ॥ ११ ॥ उत्क्षिप्त ॥ १२ ॥ अधोमुल ॥ १३ ॥ लोलित ॥ १४ ॥ ये चतुर्दश जांनिये॥

तृतीय नर्तनाध्याय-अभिनय, अंग, मस्तकके भाव ओर लखन. ११

- 9 धूत ।। जो बांई ओर दाहिनी ओर टेडो मस्तक कीजिय । सो धूत सिर मस्तककी चेष्टा ॥ १ ॥ खेदमें या रंजमें हे ॥ १ ॥
- २ विधूत ॥ जहां उतावलसों माथो तिरछो झुलावे । सो विधूत सीर सीत पीडामें हे ॥ २ ॥
- इ आधृत ॥ एक वेर माथो उपरको वा दोऊ ओरको चलाइये । सो आधृत नाट नृत्यमें हे ॥ ३ ॥
- ४ अवधूत ॥ एक वेरि उंचो मुख करि सूधो करे सो । अवधूत सिर आचारिजमें हे ॥ ४ ॥
- ५ कंपित ॥ सीत व्याधि मूच्छी मोह जहां उपर नीचंकुं वेरवेर माथो हलाय कंपावे । सो कंपितमिव संदेह वातमें हें ॥ ५ ॥
- ६ आकंपित ॥ हरवें हरवें उपर तें तिरछे मस्तक बतावे । सो आकं-पित कहिवेमें पूछवेमें हें ॥ ६ ॥
- ७ उदवाहित ॥ एकदम सिर उपर उठाके इस कार्यमें समर्थ है । ऐसे अभिमानका प्रयोग जिसमें किया जाय उसको उदवाहित कहे है ॥ ७ ॥
- ८ परिवाहित ॥ दाहिनें बांये कांधे पें सीर नमाय चले सो परिवाहित सीर स्त्रीनकी लीलांमें होय हे ॥ ८ ॥
- ९ अंचित ॥ जहां एक ओरके कंठको ऊंचीको । एक ओरको सिर सुकतो रहे । सो अंचित ॥ ९ ॥
- १० निहंचित ॥ ठाज चिंतासों कम हे दोऊ कांधे ऊंचे करि सिर नीचो करिये सो निहंचित सीर स्त्रीके विठासमें हे ॥ १० ॥
- १३ परावृत्त ॥ पीछेको मस्तक करि देखिवो सो परावृत्त सिर जो पीछे
 पुरुष होय ताके देखिवेमें वा पूछवेमें होय वा छेनें मांगीवेमें होय ॥ ११ ॥
- 3 र उत्क्षित ।। एक वेर मस्तक ऊंची करि ऊपरकों देखिये। सी उत्क्षित्र सीर रूप देखिवेमें हे । सूरज तारा चंद्र आकासमें हैं ॥ १२॥
 - १३ अधोमुख ॥ ऊंचो सिर करि जो रहे। सो अधोमुख सिर हे॥ १३ ॥
- १४ लोलित ॥ च्यारों दिसामें मस्तककों झूढावे । सो लोलित सीर व्याधि मुखा भूत लगे जब होय हैं ॥ १४ ॥ इति चोदह प्रकारके सीरभेद संपूर्णम् ॥

अथ च्यारि मीरके प्रकार लिख्यते ॥ माथेकों तीरछो ऊंचो करे नीचो करे सो तिर्यंग उतोच्यत ॥ १ ॥ कांधेपर सीर राखिये सो स्कंधानत ॥ २ ॥ जहां दोनूं कंधे माथेमों छगाय माथो बतावे सो आरात्रिक ॥ ३ ॥ सहज स्वभावसोंहि मस्तक राखे सो सम ॥ ४ ॥ इति च्यारि सीरके प्रकार मंपूर्णम् ॥

॥ अथ दशाककी चेष्टाको लखन लिख्यते ॥

१ यहनाम हस्त ॥ जहां हात फेलाय अंगुरी लंबी करि मिलायके । सत्रके मुख उपर ताइन करिवेको हस्तक राखिये। सो यहनाम हस्त जांनिये ॥ १॥

२ पताक नाम हस्त ॥ जहां हतेली च्यारों अंगुली फेलाय अंगुठाके पासकी पहली अंगुलीकी जोडमें अंगुठा कोंडके लगावे। सो पताक नाम हस्त॥ २॥

३ त्रिपताक हस्त ॥ याही पताकमें तीसरी अंगुली कोंडिये। सी त्रिपताक हस्त ॥ ३ ॥

४ अर्थचंद्र हस्त ॥ जहां पताकमें अंगुठा केंाडसके नही बांई आर को लंबो अंगुठा राखिये। सो अर्थचंद्र हस्त ॥ ४ ॥

५ कर्तरी मुख हरूत ॥ जहां पनाकमं तीसरी अंगुरी सकार पहली अंगुरी बीचली अंगुरीकी पीठपर चढाइये । सो कर्तरीमुख हस्त ॥ ५ ॥

६ आराल हस्त ।। जहां हातके फेलाय अंगुरी च्यारि सुधि राखिये। तहां अंगुटा पासकी अंगुरी धनुषके आकार टेडि करि वांकी जोडमें अंगुटाकोंड तल लगाइये। बाकी तीन आंगुरी अयमें कळूडक टेडि होय। सो आराल हस्त ॥ ६ ॥

अप्रष्टी ॥ जहां च्यारें। अंगुठीको कोंडके उनको अग्र हतेलीमें मिलाय हातकी मूठि बांधे । बीचली अंगुरीके उपरि अंगुठाकों जवर राखिये । सो मुष्टी ॥ ७ ॥

८ शिखर ॥ जहां मूठीमें अंगुठा उपरको छंबो कीजिये। सो शिखर ॥८॥

९ कपित्थ ॥ जहां मूठीमें अंगुठा पासकी अंगुरीकों अग्र । अंगुठाके अग्रसों लगाई सेल कीजिये। सो कपित्थ ॥ ९ ॥

- १० खटका मुख ॥ जहां किपत्थिमें तीसरी आंगुरी चटी आंगुरी जुदी जुदी उपरकों सूधि करि कछूइक टेडि कीजिये। सो खटका मुख ॥ १० ॥
- ११ शुक्कतुण्ड ॥ जहां अराल हस्तेमं पहली बीचली अंगुली दोन् अंगुरी घनी टेडी कीजिये । सो शुक्रतुण्ड ॥ ११ ॥
- १२ पद्मकोश ॥ जहां कमलके फूलके आकार अंगुटा अंगुरी कीजिये। सो पद्मकोश ॥ १२ ॥
- १३ अलपह्रव ॥ जहां पांची अंगुरीकी राय बांइ ओरके अंगुरीनसें दाहिणी ओरके पासुमें लाइ हथेलिमें ओरकों नमाय टेडी कीजिये। सो अल-पहन ॥ १३ ॥
- 18 सुचि मुख ॥ जहां खटका मुख हस्तमं । तर्जनी अंगुठासों टेडी करि नहीं छगाइये । सुवि छंबी तर्जनी कीजिये । सो सुचि मुख ॥ १४ ॥
- १५ सर्पाशिर ॥ जहां पांचा अंगुरी मिलाय सूधि करि । सर्पके फणीके आकार टेडी कर नमाइये । सो सर्पशिर ॥ १५ ॥
- १६ चतुर ॥ जहां बिचली अंगुरीके बीचेंमें पर वाके अंगुठाको अग्र लगाइ चटी अंगुरी उपरकों सूधी कीजिये। सो चतुर ॥ १६ ॥
- १७ मृगशीर्ष ॥ जहां मुधे हातकी अंगुरी मिलाय। अग्रमें टेडी कीजिये। चरी अंगुरी अंगुठा लंबे सुधे कीजिये। सो मृगशीर्ष ॥ १७॥
- १८ हंसवस्त्र ॥ जहां अंगुटा ओर अंगुटा पासकी दोय अंगुरी यह नीनों मिलाइये बाकी दोय अंगुरी जुदी उपरकों कीजिये। सो हंसवक्त्र ॥ १८ ॥
- १९ हंस पक्ष ।। जहां अंगुटा संकोच पहारि तीन अंगुरी जोडमें नमाय मुंबी कीजिये। ओर चटी अंगुरी उपरकों सुधि कीजिये। सो हंस पक्ष ॥ १९॥
- २० भ्रमर् ॥ जहां अंगुटा बीचटी अंगुटीकों अग्र मिलायकें । बाकी अंगुरी जुदी कीजिय । सो भ्रमर ॥ २० ॥
- २१ मुकुल ॥ जहां पांचा अंगुरी लंबी कर उनके अय कलिकी सिनाई मिलावे । स्रो मुकुल ॥ २१ ॥
- २२ ऊर्णनाम ॥ जहां पांची अंगुली नमाय ऊनके अग्र मिलाइये । सी ऊर्णनाम ॥ २२ ॥

२३ संदंश ।। जहां अंगुठा अंगुठा पासकी । अंगुरी इनके अमभाग मिलाय । लंबी कीजिये।ताकी अंगुरी न्यारी न्यारी लंबी रहे । सो संदंश ॥२३॥

२४ ताम्रचुड ॥ जहां अंगुरी अंगुठा अरु बीचली अंगुरीके अम मिलाय पहली अंगुरी उपर टोडिटाडी कीजिये । बाकी दोय अंगुरी नीचे राखिये। सो ताम्रचुड ॥ २४ ॥

२५ कांगुल ॥ जहां चटीके पासकी अंगुरी टेडी की जिये । वाकी चटी अंगुरी उपर की जिये । ओर अंगुटा अंगुटा पासकी दोय अंगुरी न्यारि न्यारि लंबी उंची की जिये । सो कांगुल ॥ २५ ॥

२६ गोकर्ण ॥ जहां अंगुठा पासकी अंगुरीकी पीठ ऊपर अंगुठा अग्र लगाइये। च्यारों अंगुरी लगाइकें कानके आकार उंची मिलाय कीजिये। सो गोकर्ण ॥ २६ ॥ इति छविमको हस्तक नाम-लखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ दोऊ हातनके मिले तेरह हस्तक होत है विनको नाम लखन लिख्यते ॥

शंजालि ॥ जहां दोऊ हातकी अंगुरी कर वरावर मिलावे । सो अंजालि
 है ॥ यह नमस्कारमें होत हैं ॥ १ ॥

२ कपोत ॥ जहां दोनू हात अंजलीकी सिनाई पास पास राखिये । आपसमें हातको अंतरो अंगुल एक वा दाय अंगुलको होय । सो कपोत बडे पुरुषके बतलायवेमें होत हैं। या कपोतको नामकोऊक आचारिज कूर्म कहत हैं ॥२॥

३ कर्कट ।। जहां दोऊ हातकी अंगुरी आपसमें बाहर भीतर मिलाय कडकाइये । सो कर्कट आलस मोडीमें या संख बजायवेमें होत हैं ॥ ३ ॥

४ स्वस्तिक ॥ जहां पहुचामें पहुचा राखि दोऊ हात तिरछे छातिपे राखि । सो स्वस्तिक परस्तीनके व्यवहारमें बतलायवेमें होत हैं ॥ ४ ॥

५ दोल ।। जहां कांधे ढीले करके दोऊ हातनकी अंगुरी न्यारी न्यारी हंबी कर उपरकों । अथवा नीचेंकों लटकाय दोऊ हात झुलाइये। सो दोल ॥ यह राजा वा सिद्ध मुनीश्वर वा मलङ्गके सहज चलवेमें होत हैं । स्वीके आलिंगनमें स्वीके हास्य होसमें भी होत है ॥ ५ ॥

- ६ पुष्पपुट ॥ जहां दोऊ हातकी अंगुरी नमाय एक ओर हात मिलावे। ऐसे अंगुरीकी तरह कीजिये। सो पृष्पपुट यह सूर्यनारायणके अर्घ्यदानमें वा पृष्पांजलिमें। वा पितृ कारजमें तर्पणमें। विनयमें वा राजानसों बोलिवेमें होत हैं॥ ६॥
- अ उत्संग ॥ जहां पुहुचामं पुहुचा छगाई । दोनू हातनसों दोनू भुजा एक करिये । दाहिनें हातसों बांई भुजा बांयसों दाहिमी भुजा । सो उत्संग ॥ यह स्त्रिक प्रयोगमें । वा कोधमें होत है ॥ ७ ॥
- ८ खटका वर्धमान ॥ जहां दोन् हातनमें खटका मुखहस्तकर दोन् हातोमें हैं। साम्हे कीजिये। अथवा पहुचिषे पहुचि राखि स्वस्तिककी रीतिसों कीजिये। सो खटका वर्धमान यह प्रमाण सत्य बोटिवेमें होय॥ ८॥
- ९ गजदंत ॥ जहां दोनू हात सुधे कर कांधेके पास लगाइये । दोनू हातकी अंगुरीवर सरपके फणकी सिनाई । आगंको टेडी कीजिये । सो गजदंत यह विवाहमें कन्या वरकों ल्याइये । वा खंभकों पकडवेमें पीछेके कांधेके । वा सुलेवेमें सहारो राखे । ओर वृक्ष उखारिवेमें होय ॥ ९ ॥
- १० अविहत्थ ।। जहां दोनू हातनके शुकतुंड हस्त करि उनकों आधं करि छातिकें सनमुख राखि नीचेंकों चलाइये । सो अविहत्थ यह दुवरी देहकी नस अथवा भृके पुरुषके दिखायवेमें वा भयंकरनके दिखायवेमें होय हैं ॥ १० ॥
- 99 निषध ॥ जहां बांये हातमें मुकुछ हस्त करि वा मुकुछ हस्तकों दाहिनें हातकों कपित्थ करि पकरिये । सा निषध यह गंभीरता गर्व सूर वीरता धीरजमें होय ॥ 99 ॥
- १२ मकर ॥ जहां दोऊ हात तले उपर राखे अंगुठा कनिष्ठा अंगुरी उप-रकों उंचि राखिये । सो मकर यह सिंध वा वंगरा देखिवेमें ओर । नदीके तीर मगर मच्छ बतायवेमें होय ॥ १२ ॥
- १३ वर्धमान ॥ जहां दोऊ हातनमें हात होय । हंसपक्षकरि आधे स्वस्तिक कीनाई छाति सनमुख चलाइये । सो वर्धमान ॥ यह कीवारि उधारिवेमें । मांग केस वारवेमें । अनके वीणवेमें होयहें सो जांनिये ॥ १३ ॥ इति तेरह मंयुतहस्तक संपूर्णम् ॥

अथ राम कुतुहलको गीतोपरिषद नृत्य निर्णयके मतसीं च्यारि हस्त लिख्यते ॥ जहां मुकटबा पाघ बतायवेको माथेपें पताक हस्तक धारिये। सो किरीट ॥ १ ॥ जहां ताम्रचूडक हस्तक दोऊ हातनेमें हात सांखलके आकार मिलाइये। सां शृंखलाकार ॥ २ ॥ जहां दोऊ हातनेमें अर्धचंद्र किरि तिरली हतेलि दोन्यु हातकी मिलावे। सो दर्डर ॥ ३ ॥ जहां एक हातकी मूठीपर दूसरे हातकी मूठि राखिये। सो यागमुष्टिक जांनिये ॥ ४ ॥ इति च्यारि हस्तक संपूर्णम् ॥

अथ नृत्य हस्तक लिख्यंत ॥ जहां अभिनय कहतं भाव बतायवां ताके सहारे देवेवारे च्यारि करन कहते ।। जहां चटी अंगुरीसों वो लेकं सिगरे अंगुरी फीराय या कमसों होय। सो व्यावृत हस्तक ॥१॥ जहां व्यावृत हस्तक निचेंको करिये चटि। आंगुरीसों बाहिरि। सो परिवृत हस्तक ॥ २ ॥ जहां अंगुठातें लेकं पांचो अंगुरीनकी भ्रांति होय। सो उद्देष्टित हस्तक ॥ ३ ॥ जहां उद्देष्टित हस्तक ॥ ३ ॥ जहां उद्देष्टित हस्तककां आधी कीजियं। सो अपविष्टित हस्तक ॥ ४ ॥ इति कर-हस्तक लखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ नृत्यके हस्तकको लछन॥

१ चतुरस्र ॥ जहां छातिसों आठ आंगुलंक अंतर दोऊ हात करि उनेमें खटका मुख हस्तक कीजिय । सो चतुरस्र ॥ १ ॥

२ उद्धृत ॥ जहां दोऊ हात छातिके सनमुख राखि उनमें हस्तपक्षक कीजिये । तोमें एक हात निचेंको चलाइये । एक छातिषें ल्याइये । सा उद्धृत ॥२॥

३ तलमुख ॥ जहां दोऊ हातनमें हंसपक्ष हस्तक रिच । आसांसासां राखें । फेर ऊनको इतें उत चलाइये । सो तलमुख ॥ ३ ॥

४ स्वस्तिक ॥ जहां दोऊ हातके पहुचापे पहुचा राखि हातनमें हंसपक्ष हस्तक करि दोऊ कांधेपे राखिये । सो स्वस्तिक ॥ ४ ॥

५ विप्रकीर्ण ॥ जहां दोऊ हातनसों हंसपकरित कालस्वस्तिक करि छोडिये । सो विप्रकीर्ण ॥ ५ ॥

६ अराल ॥ जहां छातिपं आंग एक हातेपं आराल कीजिये दोऊ हात दाहिनी बांइ तरफ तिरछे लगाइ छातिपं लेंआवे। सो अराल ॥ ६॥

तृतीय नर्तनाध्याय-अभिनय, हस्तकके भाव ओर लखन. १७

- ७ आविद्धवक ॥ जहां कुंणीके कांधेके विलाससां फरकायंकं हतेली आधी करि छातिपास राखिये । सो आविद्धवक ॥ ७ ॥
- ५ सुचिमुख ॥ जहां दोऊ हातमें सर्पसिर हस्तक करि चढि आंगुरी पसारिये फेर दोऊ बांही तिरिछ फेलाइये । सो साचिमुख ॥ ८ ॥
- ९ रेचित ॥ जहां दोऊ हातमें हंसपक्षहस्तक करि वेगसे श्रमाय बांये दाहिनें तिरछ पसारिये । सो रेचित ॥ ९ ॥
- १० अर्धरेचित ॥ जहां दाहिनें हातमें हंसपक्ष करि फिराय पसारिय । बांये हातमें चत्रस्नहस्तक करि छाति सनमुख राखिये । सो अर्थरेचित ॥ १०॥
- ११ नितंब ॥ जहां दोऊ हातनमें पताकहस्तक करि। दोन्यों कांधेपे राखि भ्रमावन कटिपें ल्यावे। सो नितंब ॥ ११ ॥
- १२ पह्नव ।। जहां दोऊ हातनमें आधे त्रिपताकहस्तक रचि । माथेकी बराबर ऊंचे करि दोन्यो पहुचा मिलावे । सो पहन ॥ १२ ॥
- १३ केश बंध ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक करि कांधेषें राखिये अमावत कटिताई ल्याईकें। फेर कटिसों अमावत माथेतांई उंचे कीजिये । सो केश बंध ॥ १३॥
- १४ उत्तान वंचित करण।। जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक करि उठाउतें कांधे तांइ फीरावत तिरछे करि कांधेपे राखिये। सो उत्तान वंचित करण।। १४॥
- ३५ लता हस्त ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक रचि । पांसुकी बराबर राखि भ्रमायकें । तिरछे पसारिकें राखिये । सो लता हस्त ॥ १५ ॥
- १६ करि हस्त ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक करि । एक हात पांसुपास राखि भ्रमायकें तिरछो पसारिये। ओर एक हात भ्रमाय कानोंपें राखिये खटकामुख कीजिये। वा त्रिपताक हस्तक राखिये। सो करि हस्त ॥ १६ ॥
- १७ पक्ष वंचित ॥ जहां दोऊ हातनमं त्रिपताक हस्तक राचि अंगुठा पासकी आंगुरीकों अग्र कटिसों छगाइये । सो पक्ष वंचित ॥ १७ ॥

१८ पक्षप्रद्योत ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक अथवा पताक हस्तक रचिकें । भ्रमाय कटिकें पास हस्तसों साह्ने राखिये । सो पक्षपद्योत ॥ १८ ॥

१९ दंडपक्ष ॥ जहां दोऊ हातमें हंसपक्ष हस्तक राचि छातिकेपास राखिके । फिराय भुजा पसारिये । सो दंडपक्ष ॥ १९ ॥

२० गरुडपक्ष ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक रचिकें कटिके उपर अधी राखिये । दोऊं कुंहणी कछूइक टेडी कीजिये । सी गरुडपक्ष ॥ २० ॥

२१ ऊर्ध्वमंडलिन ॥ जहां दोऊ हातनमें पताक। वा त्रिपताक हंसपक्ष हस्तक रचि । ललाट सनमुख राखिये । फेर भ्रमाय पांसुं पीछे राखिये । सो ऊर्ध्वमण्डलिन ॥ २१ ॥

२२ पार्श्वमंडलिन ॥ जहां दोऊ हातनेमं पताक वा त्रिपताक हस्त राचि । भ्रमाय कांधेपे राखिये भ्रमायकें पासुपं राखिये । सो पार्श्वमंडलिन ॥ २२ ॥

२३ उरोमण्डलिन ॥ जहां दोनृ हात भ्रमायकं स्तनकेपास सूधे राखिये । सो उरोमण्डलिन ॥ २३ ॥

२४ पार्श्वार्धमण्डल ॥ जहां दोनू हातनमं अलपल्लवाये हतेलीकी सिनाई भ्रमाय छातीके दाहिनी बांई ओर उदरके पास राखिये। सो पार्श्वाधमण्डल ॥ २४ ॥

२५ मुष्टिक स्वस्ति । जहां दोनू हातनमें खट्का मुख हस्तक रिव पहुचासों पहुचा मिलाय स्वस्तिककी रीतीसों । छाति बराबर राखिये । सो मुष्टिक स्वस्तिक ॥ २५ ॥

२६ निलिनी पद्मकोश ॥ जहां दोनू हातनमें पद्मकोश हस्तक करि उल्लेखेलुटे फिरावत दोनू मिलाय। गोडापास राखिये। सो निलिनी पद्मकोश ॥२६॥

२७ अलपम्म ॥ जहां दोनू हातनमें पद्मकोश हस्तक राचि उपरको दोनु हात पसारि कछू भ्रमाइये । मनोहर छगे ऐसें । सो अलपद्म ॥ २७ ॥

२८ उल्बण ॥ जहां दोनू हातनमें पद्महस्तक राचि कंधेपें राखि अंगुरी हात भ्रमायतक राखिये । सो उल्बण ॥ २८ ॥

२९ विलित ॥ जहां दोनू हातनमें स्वस्तिक हस्तक रिच दोन्यु पहुचा मिलाय माथेपें भ्रमाइये । सो विलित ॥ २९ ॥ ३• लिलित ॥ जहां दोनू हातनेषे । अलपछ्य हस्तक राचि पीछे मिलाय सिरपें राखिये । सो लिलित ॥ ३० ॥

॥ विशेष हस्तक ॥

॥ अथ नृत्यके हस्तनमें विशेष हस्तकको नाम लिख्यते ॥

निकुंच हस्तक ॥ जहां दोनू हातनमें पताकहस्तक रिच या पताकमें अंगुठा बीचली आंगुलीके मूलमें लगाइये । तरजनीमें नहीं लगावे । सो निकुंच हस्तक यह वेद पढिवेमें सारके ढीलपणेमें होय । सो युतहस्त ॥ १ ॥

द्विशिखर हस्तक ॥ जहां दोनू हातनमें शिखरहस्तक रचि दोनू हात मिलाइये । सो दिशिखर हस्तक सोवेमें स्त्री अंगुरी चटकावे । कडका मोडे तहां होय । याहीको संयुतहस्त कहत हें ॥ २ ॥

वरदाभय हस्तक ॥ जहां न्यारे दाहिने हातमें वरदानकी मुद्रा रिच ओर बांये हातमें अभयदानकी मुद्रा रिच ओर बांये हातमें संयुगत । दोन् हातन बीचेतें टेडेकर कटिये न्यारे न्यारे राखिये । सो वरदाभय हस्तक ॥ ३ ॥ इति विशेष हस्तकको नाम—लछन संपूर्णम् ॥

अथ हृद्यके पांच भेद हे तिनको नाम-लछन लिख्यते ॥ जहां चतुरस्र नाम स्थानकों ऊंचो ह (य कीजिये। सुंदरता जुतसो सम हृद्य। यह सुभावके जतायवें होय। सो चतुरस्र ॥ १ ॥ जहां हृद्य सिथिलता लिये भितकों दाविये सो आभुम्न हृद्यमें गर्वहर्षमें । सोक रोगमें होय ॥ २ ॥ जहां पीठको निमाय हृद्य ऊंचो उठाइये। सो निर्भुम्न हृद्य । मानमं । सत्यमें । आचरजेमें । बोलिवेमें गर्वस हृषमें । अंग मोडीवेमें चिंतामें होय ॥ ३ ॥ जहां हृद्यमें कंप कीजिये। सो प्रकंपितहृद्य । श्वास कास । तिचकी रोयमें खेदमें होय ॥ ४ ॥ जहां कंप विना हृद्य ऊंचो कीजिये। सो उद्दाहित हृद्य । उवासीमें ऊंचो देखवेमें स्वास-हेवेमें होय ॥ ५ ॥ इति हृद्यके पांच भेद संपूर्णम् ॥

अथ पांच भेद पासूके नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां पासू अपने स्वभावसों रहे सुंदरता जुगतसों सो विवर्त ॥ १ ॥ सम पार्श्व सुखसों बेठवेमें सुचित तामें होय ॥ जहां पीठको वासो भ्रमाय पासुरी भ्रमावे । सो अपसृत ॥ २ ॥ जहां पासूको टेडी भ्रमाइये । सो प्रसारित ॥ ३ ॥ जहां पासुरि उपर नीचे फेलाइये ।

सो नत ये हर्ष मंगलमें होय ॥ ४ ॥ जहां कंधा किट सकोरिकें पासू भ्रमाइये । सो ऊचत जतभयमें नीचे होवेमें होय ॥ ५ ॥ इति पांच भेद पासूके नाम-लखन संपूर्णम् ॥

अथ किटके भेद पांच ह तिनके नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां सुरि मिलाय कमरमें कंप कीजिये सो कंपिता। कूबरो वा मनोमारग चले तब होय ॥ १ ॥ जहां पासूनको धीरो अमायकें धीरे धीरे किट उंची कीजिये। सो उद्घाहित। स्रोकी लीलागित चलवेमें होय वा पृष्टतर नारिके चलिवेमें होय ॥ २ ॥ जहां तिरछो मुख किर देखिवेमें किटकों फिरावे सो छिना। जोर काढिवेमें संभ्रममें होय ॥ ३ ॥ जहां पीछे फिर देखिवेमें किट घणी फिराइये सो विवृता। यह पीछे फीर तें होय ॥ ४ ॥ जहां च्यारों तरफ किट फिराये। सो रेचिता। जहां गोड मंडलीसों फीरवा होय नहां होय ॥ ५ ॥ किटि-भेद पांचके नाम—लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ चरणके भेद ॥

१ सम चरन ॥ जहां सहज सुभावसो चरन भूमि उपर राखिये। सां सम चरन । १ ।

२ अंचित चर्न ॥ जहां पृथ्वीमें सम चरन राखि। एडी उंची कीजिये। सो अंचित चरन । २ ।

३ कुंचित चरन ॥ जहां चरनकी अंगुरीसों सो साकोरि बीचमें चरन टेढो करि पृथ्वीपें राखिये । सो कुंचित चरन । ३ ।

४ सचि चरन ॥ जहां बांयो चरन सहज सोभावसों पृथ्वीसों राखि दाहिणे पायकों अंगुठा खेचोंकरि । दाहिना पाय पृथ्वीपें राखिये । सो सुचि चरन । ४ ।

५ अग्रतल संचरन ॥ जहां एडी खेंचाकरि अंगुठांपें । लाय । अंगुरी सकोरि चरन राखिये । सा अग्रतल संचरन । ५ ।

६ उद्घट्टित ॥ जहां अंगुरी एडी करिके धरतीपे टेकिये । एक दोय बार । सो उद्घटित । ६ ।

- ७ त्राटित चरन ॥ जहां पृथ्वीमें एडि टेकी । अंगुरी अंगुठा धरतीने । एक दोय वेर जोरसों पटकीये । क्रोध गर्वमं होय । सो त्राटित चरन । ७ ।
- ८ घटितंत्संघ ।। जहां एडी टेकी अग्रभागसों ताडन कीजिये । अग्र-भाग टेकि एडी टेकी अंगुरीसी ताडिये। यह दोऊ ऋम एक वेर होय। सा वटितोत्संघ । ८ ।
- ९ घट्टित ॥ जहां एडीसों भृमि दावि चरनको अग्रभाग हलाय भिममं धरे। सो घट्टित। ९।
- १० मर्दित चरन ।। जहां तिरछो चरन करि भूमिमें राखिये। सो मर्दित चरन। १०।
- ११ अग्रग चरन ॥ जहां सितावी सितावी आगं चलिये । यह ठोकरमं होय। सो अग्रग चरन। ११।
- १२ पार्ष्णिम चरन ॥ जहां एडीसों पीछो पांव ऊठावे। सो पार्ष्णिम चरन । १२ ।
- १३ पार्श्वग चरन ।। जहां बांई आर दाहिनी ओर बगलाऊ चलिये । सो पार्श्वग चरन । १३ । इति तरह चरनके लछन संपूर्णम् ॥

अथ कांधेके पांच भेदकी लखन लिख्यते ॥ जहां मूठीको पकार हाय। जहां कांधेको जोर दे ऊंचो करि। सो मष्टिस्कंध। १। जहां भालके बचायवेमें दोऊ कंधा ऊंचा कीजिये। सो कुंतस्कंध। २। सो यह भेद एक । १ । जहां सुधो ऊंचे। करि कानकी । ओर कीजिये । सो कर्ण लग्न स्कंध । ३ । जहां हर्षमें गर्वमें कांधे ऊंचे कीजिये सो छित स्कंध । ४ । जहां द्खमें कंधे संको-चिके सा स्नस्त स्कंध । ५ । जहां मदसों कांधा हलावे।सा लोलित स्कंध । ६ । इति कांधेके पांच भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीवाके नव भेदके नाम लिख्यते ॥

- १ सम श्रीवा ॥ जहां मीवा सहज सुभाव मीवा जप ध्यानमें राखे । सो सम ग्रीवा। १।
- २ निवृत्त श्रीवा ॥ जहां श्रीवा गुरुदेव पियनके सन्मुख होवे । सो निवृत्त ग्रीवा। २।

३ विलिता श्रीवा ।। जहां श्रीवा दाहिने बांई ओरको श्रामा फेरिये। सो विलिता श्रीवा । ३ ।

४ रचिता श्रीवा ॥ जहां श्रीवा कंप करि भ्रमावे। सो रेचिता श्रीवा। ४। ५ कुंचित श्रीवा ॥ जहां श्रीवा सकारिय भावसों। अथवा भयसों। सो अंचित श्रीवा । ५।

६ त्र्यस्ता ॥ जहां ग्रीवा खेदसों । अथवा कांधेषें भार धरेतें । अथवा पासुंके देखिवेमं तिराछि झुके । सो त्र्यस्ता । ६ ।

७ अंचिता ॥ जहां ग्रीवा केस सुवारिवेमें दूरिकी वस्तु देखिवेमें हला-यंके पीछेको झुलावे । सो अंचिता । ७ ।

नता ॥ जहां ग्रीवा आभूषण पहरवेमें । अथवा कंठावलम्बनमे
 दीनतामें । आगेको झुलाइये । सो नता । ८ ।

९ उन्नता ।। जहां ग्रीवा आभूषण मोति आदि वस्तुके देखिवेमें ऊंची कीजिये । सो उन्नता । ९ । इति श्रीवाके नव भेद मंपूर्णम् ।।

॥ अथ भुजाके सालह भेद नाम लिख्यंत ॥

9 ऊर्ध्वबाहु ॥ जहां चंद्र आदि उंची वस्तु दिखायवेमें उंची भुजा होय । सो ऊर्ध्वबाहु । १ ।

२ अथामुख ॥ जहां नीचा माथो करि भुजा नीचा भूमिमं लगाइये । सरीर दोनू भुजापें दीजिये । सो अधोमुख । २ ।

३ तिर्यम ।। जहां तिरछं बाहु पसारिये । सा तिर्यम । ३ ।

४ अपविद्ध ।। जहां मंडल गतिसें छातिक सामुह दानू भुजा कीजिये । सो अपविद्ध । ४ ।

५ प्रसारित ॥ जहां दूरके वस्तु छेवेमें भुजा पसारिये। सो पसारित । ५।

६ अंचित ॥ जहां भुजा छातिको माथेपें त्याय फेर छातिपें त्यावे । सो अंचित । ६ ।

७ मंडल गति ।। जहां भुजा नाकके । आसपास सर्वत्र भ्रमाइये । सो मंडल गति । ७ ।

८ स्वस्तिक बाहु ॥ जहां पासासों जुदे दोनू भुज सकोरि राखिये । सो स्वस्तिक बाहु । ८ ।

९ उद्वेष्टित ॥ जहां दोनु भूजानके पहचा लपेटिये । सो उद्वेष्टित । ९ ।

- १० पृष्ठानुनारि ॥ जहां दोनू भुजा पिठिपें लीजिये । सो पृष्ठानु-सारि । १० ।
 - ११ आविद्ध ॥ जहां दोऊ भुजा छातिमें सकोरिये। सो आविद्ध । ११।
- १२ कुंचित ॥ जहां कुहणी सकोरि खड़ तरवार पकडवेमें । भोजनमें जलपानमें भुजा उठाईये । सो कुंचित । १२ ।
- १३ नम्रबाहु ॥ जहां मुकुट घाट आदि धारिवेमें । केस सवारिवेमें कछू-इक टेडी भुजा नमाइये । सो नम्रवाहु । १३ ।
- १४ सरल ।। जहां पासूये उंचि नीचि भुजा सुधी चलाइये । अभि-मानमें । वा भूमिकी वस्तु दिखायवेमें । सा सरल । १४ ।
 - १५ आंदोलित ।। जहां मार्ग चालिवेमें भुजा फैलाइये । सो आंदोलित । १५।
- १६ उत्सारित ।। जहां कोऊ लोगनकी भीड दूरि करिवेकों भुजाकी चेष्टा कीजिये । सो उत्सारित । १६ ।

एसा भुजानके अनेक भेद हैं तिनमें यह साठे मुख्य जानिये॥ इति भुजाके सोलह भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ उदर्के च्यारि भेद हैं ताको नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां उवासी हांसि । निस्वास रोदनमें उदरकी चेष्टा । सो क्षाम । १ । जहां भूत्वसों परिश्रमसों आतुरतासो उदर भीतरकों पेठें । सो खछ । २ । जहां दूरसों वा घणों भोजन कीयो होय तासों । वा रोंगसों ऊपरकों उदर फुछे । सो पूर्ण । ३ । जहां स्थास रोगसों उदर उंचो नीचो होय । सो रिक्त पूर्ण । ४ । इति उदरके च्यारि भेद संपूर्णम् ॥

ऐसेंही उदरके च्यारि भेद हैं। सोहि नामभेद पेटकें जांनिये॥ इति पेटके भेद संपूर्णम्॥

॥ अथ जांघके पांच भेद हैं। तिनके नाम-लछन लिख्यते॥ जहां आयवेमें जायवेमें जांच कंपाय उंची नीचि कीजिये। सो कंपित नुऊ। १। जहां चितिमें स्वीनकी जंघा आपसमें लगत चले। सो विलि। २। जहां भयसों दुससों चांयके रोगसों जांच वधेसों। सो स्तन्ध । ३। जहां ताड ने नृत्येमें अथवा जोड काडिवेमें। चरणकी अंगुरीटक एडी ऊंची करि जंघासों मिलावे । सो उद्दर्तित । ४। जहां युद्धादिक अभसें जांच उपर एडी न्याइये। सो निवर्तित । ५। इति जांच के पांच भेद नाम लिखन संपूर्णम् ॥

- ॥ अथ पिंडिके दस भेद ह ताके नाम-लछन लिक्यते ॥
- १ क्षिता ॥ जहां तांडव नृत्येमं । अथवा जोर काडिवेमें पिंडि बाहिरि ओर चलावे । सो क्षिप्ता । १ ।
 - २ नता ॥ जहां गोडा नीचो करि पिंडि नमाइये । सो नता । २ ।
- ३ उद्घाहिता ॥ जहां वेग चिवेसों टाढी पिंडी होय । सो उद्घा-हिता । ३ ।
- ४ आवर्तित ॥ जहां दाहिनी चरन बांइ ओर बायों चरन दाहिनी ओर राखिये । पिंडि उपर पिंडि राखिये । सो आवर्तित । ४ ।
- ५ परिवर्तना ॥ जहां पीछेको उलटी चलवेते । पिंडि पिछेको झूके । सो परिवर्तना ॥ ५ ।
- ६ बहिर्गता ।। जहां दोऊ पींडि बांइ दाहिनी ओर बगलाऊ फेलाय नृत्य कीजिये । सो बहिर्गता । ६ ।
 - ७ कंपिता ॥ जहां चूंवरा बजायवेको पींडी कंपाइये। सो कंपिता। ७।
- ८ तिरश्चीना ॥ जहां बेठकमें तीरछी पींडी धरतीसो लागाइये । सो तिरश्चीना । ८ ।
- ९ परावृत्ता ॥ जहां धरतीमें गोडाटेक पींडि पिछेको कीजिये । सी देवकारज ओर पितृकारजमें होय । सी परावृत्ता । ९ ।
- १० निसृत्ता ॥ जहां नृत्यमं आगेंको पिंडि पसारिये। सो निसृता। १०। इति पिंडीके दस भेद संपूर्णम् ॥

अथ पहुचाके पांच भेद हे ताके नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां दांन देवेमें वा काह्की सहाय करिवेमें। पहुचाकी चेष्टा कीजिये। सो निकुंच । १। जहां पहुचा सकोर नीचो कीजिये। आगे विधवेमें। सो अकुंचित। २। तृतीय नर्तनाध्याय-अभिनय, गोडा, दृष्टीके भेद और लखन. २५ जहां काहूके बुठायवेमें । पहुचाकी चेष्टा कीजिये। सो चठ। ३। जहां खड्ग छूरि फीरायवेमें। पहुचा चठाइये। सो अभित। ४। जहां पुस्तकके पत्र छेवमें। वा दांन छेवमें। सुवे पहुचा कीजिये। सो सम। ५। इति पहुचाके पांच भेद संपूर्णम्।।

॥ अथ गोडाके सात भेद ह ताको नाम-लखन लिल्यते ॥

१ संहत जानु ॥ जहां गांडामं गांडा मिलायकें लाज रखके बेठक कीजिये । सो संहत जानु । १ ।

२ कुंचित जानु॥ जहां वेठवेभें जांच पिंडि मिले। सो कुंचित जानु। २। ३ अर्ध कुंचित जानु।। जहां कटिको नमाय बैठकमें उंची गोड १ की जियं। सो अर्थ कुंचीत जानु। ३।

४ नता जानु ।। जहां नमस्कारमें देवताके प्रणाममें गोडा धरतीपे लगावे । सो नता जानु । ४ ।

५ उन्नत जानु ।। जहां परवत आदि ऊंचे स्थान चढिवेमें वा बेटकमें छातिकी बरावर गेडा रहे । सो उन्नत जानु । ५ ।

६ विवृत जानु ।। जहां हातिके चिंढवेमें दोन्यू गोडा न्यारे न्यारे बांइतरफ होय । सो विवृत जानु । ६ ।

७ सम जानु ॥ जहां सहज सुभावसों वेठिवेमें ठाडे होनेंमें गोडा रहें। सो सम जानु । ७ । इति गोडाके सात भेद-लखन संपूर्णम् ॥

अथ दृष्टिनको लछन लिख्यते ॥ जहां दृष्टि भेद अनेक हें ॥ इनको श्रीब्रह्माजीनें आदंख्य मुनिश्वरादिकने पार नहीं पायो । सो मनुष्यतो कहातें पार पावे तेहु ते श्रीसिवजीके मसादसों भरत मतंग आदि आचारिजके मतसों शृंगारादि रस दृष्टि ठेरति आदि स्थाईभाव दृष्टि, संचारि भाव दृष्टि, ऐसे सब दृष्टि छतिसहें तिनके नाम—उछन लिख्यते ॥

9 चित्त ॥ जहां शृंगारादि आठों रसनकी दृष्टिको छछन कह हैं। तिनके तीन भेद हैं। जहां मसन्तता सहित । सो चित्त । १।

२ स्यामा ॥ जहां कुटीलतासों मलिन होय । सो स्यामा । २ । ३ स्वेत स्याम ॥ जहां अभिमान आहंकारसों उद्धत होय । सो स्वेत स्याम ।३। १ कान्ता दृष्टि ।। जहां कटाक्षको छछन कहे हें । जा नेत्रमें पुतरी भूमाइये । मनोरथके अनुसारसों जाके कटाक्ष हैं । जहां हर्ष पसन्ततासों भेंहि नचाय कटाक्षसों कामदेव वधायवेको फूछी दृष्ट होय । सो कान्ता दृष्टि । १ ।

२ हास्या दृष्टि ।। जहां कळूइक पलक सकोरि । नेत्रकी पुतरी नचाय दृष्टि कीजिये । सो हास्या दृष्टि । २ ।

३ करुणा दृष्टि ॥ जहां उपरले पलक डापि अश्रुपातजुत दृष्टि । नासि-कांके अग्रेपे लगाइये । सो करुणा दृष्टि । ३ ।

४ रौद्रि दृष्टि ॥ जहां भेंह टेढी चढाय आंखे काढि । इकटक छाछ पुतरिसों देखें । सो रौदि दृष्टि । ४ ।

५ वीर दृष्टि ।। जहां देदीप्यमान झलझलाटसों प्रकासितसों ले गंभिरता लीये निचले पूतरिसों देखि । सो वीर दृष्टि । ५ ।

६ भयानक दृष्टि ।। जहां चंचलपुतिर निकलिसी आंव दोनु पलक खुले होय । चकततासों चोकेंसे ठहर रहे । ढांकिवेमें भोंय न्यारा परे । सो भयानक दृष्टि । ६ ।

७ वीभत्स दृष्टि ।। जहां दोन् पलक चंचलताइसों झुकी आवे ओर पूतरी चंचल होय ओर नेत्रनके कोपानमें उद्देग दिखायके संकृचित होय। सो वीभत्स दृष्टि । ७ ।

८ अद्भुत दृष्टि ।। जहां पसन्तता लीये स्वेत वरन । निरमल पूर्तारे बाहिर भीतर चलत होय। कछुइक पलकनक आंख संकृचित होय। कीयेनमें आछि रज झलकावे चंचल विसाल जो दृष्टि। सो चोरनके भयमें कंपमें होय। सो अद्भुत दृष्टि। ८। इति दृष्टिनको लछन संपूर्णम् ।।

॥ अथ स्थाई भावकी आठ दृष्टीको लछन लिख्यते ॥

9 स्त्रिग्धा दृष्टि ॥ जहां सचिकनता लिये धरिको प्रकास सुंदर भोंहकी चेष्टा अभिलाप भरवो कटाक्ष लिये जो दृष्टि ॥ सो स्त्रिग्धा दृष्टि ॥ १ ॥

२ हृष्टा दृष्टि ॥ जहां कपोल पुष्ट करि पूतरि हर्षसों भीतरी होय । पलकन मिटे होय मंद मुसिकानके आकार दृष्टि । सो हृष्टा दृष्टि ॥ २ ॥ ३ दिन दृष्टि ॥ जहां पलक आधो मुंदे होय । पूतरी कछुइक ऊपरि होय । सो दीन दृष्टि ॥ ३ ॥

४ कुद्धा दृष्टि ।। जहां दोनू पलक फटसें दिसें पूर्विर चंचल होय । रुखादिये टेडी होय । सो कुद्धा दृष्टि ॥ ४ ॥

प हमा हिष्टि ॥ जहां पराक्रमको प्रकासक रीति खुठी दृष्टि होय । जहां थिर पूर्तिर होय । सो दृषा दृष्टि ॥ ५ ॥

६ भयान्विता दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक खोलीकें चंचलपूत्रीसों चकीत
 होय । सो भयान्विता दृष्टि ॥ ६ ॥

७ जुगुप्सता दृष्टि ॥ जहां पलक मिले होय । पगट नहीं देखे । सो जुगुप्सता दृष्टि ॥ ७ ॥

८ विस्मिता दृष्टि ॥ जहां प्रकाससों पूतिर बाहिर आवे समान रहे । सो विस्मित दृष्टि ॥ ८ ॥ इति स्थाई भावकी दृष्टीके लिखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ व्यभिचारि दृष्टि वीस ह तिनके नाम-लछन लिख्यते ॥

१ शून्य दृष्टि ॥ जहां पलक खोलि इकटक पूतिरसों देखे । सूनीसी जांनि परे चिंतामें हाय । सो शुन्य दृष्टि ॥ १ ॥

२ मिलिना दृष्टि ॥ जहां पूर्वारे आछितरे पलक डापि देखिये । सो मिलिना दृष्टि ॥ २ ॥

३ श्रांत दृष्टि ॥ जहां आलस भरि पूतरीसों पलक डापि देखिये । सो श्रांत दृष्टि ॥ ३ ॥

४ लजिता दृष्टि ॥ जहां निचि पूतिरसों पलक नमाय आधी आंख मुंदे नीचेको देखिये । एसी लाजभिर । सो लजिता दृष्टि ॥ ४ ॥

५ शंकिता दृष्टि ॥ जहां पूतिर तिरिष्ठि करि नेत्र चतुराय देखिये । सो शंकिता दृष्टि ॥ ५ ॥

६ मुकुला दृष्टि ॥ जेसी पूतिर कर कोइ पलक मिलाय देखिये । सो मुकुला दृष्टि ॥ ६ ॥

७ अर्धमुकुला दृष्टि ॥ जहां कछुइक पलक मिलायवेमें पसन पूतरीसों रेखिये । सो अर्धमुकुला दृष्टि ॥ ७ ॥ ८ उलान दृष्टि ॥ जहां भोंह पलक नीचे करि । सिथिल पूर्वरिसीं देखिये । सो ग्लान दृष्टि ॥ ८ ॥

९ जिद्म दृष्टि ॥ जहां कछुइक पलक संकोच टेढेपणोसों। तिरिछ पूर्तरि चढाइ देखिये। सो जिद्म दृष्टि ॥ ९ ॥

१० कुंचिता दृष्टि ॥ जहां पलक पूर्तीर संकोच करि देखिये । सो कंचिता दृष्टि ॥ १० ॥

११ वितार्कता दृष्टि ॥ जहां दानू पलक अमाय नीचेको प्रकास करि । प्रसन्न पूतिरसों देखिये । सां वितर्किता दृष्टि ॥ ११ ॥

१२ अभितप्ता दृष्टि ॥ जहां उत्पतिके दुखसों नेत्रको गोला सिथल करि । आलसकी पुतरीसों देखिये । सो अभितप्ता दृष्टि ॥ १२ ॥

१३ विषण्णा दृष्टि ॥ जहां कोय मिलाय पलक खोले फेलाय पूनरी सों देखिये। सो विषण्णा दृष्टि ॥ १३ ॥

१४ लिलिता दृष्टि॥ जहां मंद्रमुसिकान करि॥ भुकृटि नचाय । मधुराइ सों होये संकोच देखिये। सो लिलता दृष्टि ॥ १४ ॥

१५ आकेकरा दृष्टि ॥ जहां प्रसन्नतासों पत्रक संकोच इकटक । पूतरी भ्रमाय देखिये । सो आकेकरा दृष्टि ॥ १५ ॥

१६ विकाशा दृष्टि ॥ जहां दोनू पढ़क खोल चंचल पूनरी सों देखिये । सो विकाशा दृष्टि ॥ १६ ॥

१७ विश्रांता दृष्टि ॥ जहां नेत्रको मध्यभाग फेलाय । निश्रय पूर्विसों देखिये । सो विश्रांता दृष्टि ॥ १७ ॥

१८ विष्लुता दृष्टि ॥ जहां उपरहो पहक उठाय । सितावि पूतरी भ्रमाय देखिये । मृत्युचिंता पीडादिकमें होय । सो विष्हुता दृष्टि ॥ १८ ॥

१९ त्रस्ता दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक खोल पूर्वारे कंपजुत फेलाय देखिये । सो त्रस्ता दृष्टि ॥ १९ ॥

२० मदिरा दृष्टि ॥ जहां मद्यपान कीये सो छकी दृष्टि होय । सा मदिरा दृष्टि हे । ताके तीन भेदे हें ॥ जहां कीये फेलाय घुमति पूतिरसों । सो उत्तम मिदरा दृष्टि । १ । जहां पलक कछुइक सकोरिकें पूतिर भ्रमाय देखिये । सो तृतीय नर्तनाध्याय-अभिनय, भोंहक, नेत्रक भेद ओर लछन. २९

मध्यमा मिद्रा दृष्टि । २ । जहां पूर्तार नीचि करि पलक मिलाय देखिये । सो अधमा मिद्रा दृष्टि । ३ । ये तीन मिद्रा दृष्टि जांनिये ॥ २० ॥ ये सब छतीस दृष्टि रिति दिखायवेमेंको किहये । ऐसे या रितिसों अनेक दृष्टिके भेद हें ॥ इति छतीस दृष्टिके नाम संपूर्णम् ॥

॥ अथ पक्षधर मिश्रके मतसों आठ प्रकार देखिवाके ताके नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां सिताविसों संश्रमसां देखिये। सो अठोकित दरसन ॥ १ ॥ जहां समान पूतिरसों मधुर देखिये। सो सम दरसन ॥ २ ॥ जहां चल- बिचल पूतिरसों देखिये। सो अस्त दरसन ॥ ३ ॥ जहां दाहिने वामंकों झुकके देखिये। सो प्रताकीत दरसन ॥ ४ ॥ जहां नखपकारसों नेत्र करिकें देखिये। सो वलोकीत दरसन ॥ ५ ॥ जहां उपरकों नेत्र करि ऊंची वस्तु देखिये। सो उल्लोकीत दरसन ॥ ६ ॥ जहां काहूके रूपकी नकल कर देखिये। सो अनु- वृतक दरसन ॥ ७ ॥ जहां नीचेकों देखिये। सो अवलोकीत दरसन ॥ ८ ॥ इति देखिये। सो अवलोकीत दरसन ॥ ८ ॥ इति देखिये। सो अवलोकीत दरसन ॥ ८ ॥ इति देखिये अउत् भेद-लल्लन संपूर्णम् ॥

- ॥ अथ भंहके मात भेद हे ताको नाम-लछन लिख्यते ॥
- १ भ्रुकुटी सहजा॥ जहां भोंह अपने सहज स्वभावसों रहे। सो भृकृटी सहजा॥ १॥
 - २ पतिता ॥ जहां भेंह नीची कीजिये । सो पतिता ॥ २ ॥
 - 🕆 ३ उत्क्षिमा ॥ जहां भोंह उंचि उठाइये । सो उत्क्षिप्ता ॥ ३ ॥
 - ४ रेचिता ॥ जहां एक भोंहके पात उठाइये । सा रेचिता ॥ ४ ॥
 - ५ निकुंचिता ॥ जहां भोंह कोमलतासों संकोचिय। सो निकृंचिता ॥ ५॥
 - ६ भ्रुकुटि ॥ जहां संपूरन भोंह उंचि कोधेमें चढाइये । सो भ्रुकृटि ॥६॥
- ७ चतुरा ॥ जहां भोंह कछूइक कंप करि मंदतासों दिखाइये । सो चतुरा ॥ ७ ॥ इति भोंहके सात भेद—लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ नेत्रके पलकनके नव भेद लिख्यते ॥

🤋 पृसृत ॥ जहां हर्षमें अचरजमें पत्नक फेलावे । सो पृसृत ॥ 🤊 ॥ 🦈

२ कुंचित ॥ जहां कुरुपवानकु देखिये । पलक सकीरिये । सो कुंचित ॥ २ ॥

३ उन्मेषित ॥ जहां कोधसां दोऊ पलक न्यारे न्यारे राखिये । सो उन्मेषित ॥ ३ ॥

- ४ निमेषत ॥ जहां कोधमें दोऊ पलक भ्रमाइये । सो निमेषित ॥ ४ ॥
- ५ विवर्तित ॥ जहां कमसों दोऊ पलक क्रकाइये । सो विवर्तित ॥ ५ ॥
- ६ स्फुरित ॥ जहां इरसासों दोऊ पलकनसों । ऊंचि निची चेष्टा कीजिये । सो स्फुरित ॥ ६ ॥
- ७ पिहित ॥ जहां नेत्रकी पिडासों पलक मिलाय संकोचिये। सी पिहित ॥ ७ ॥
- ८ विचालित ॥ जहां उपरके पलकसों निचले पलकको नाइन कीजिये। सो विचालित ॥ ८ ॥
- ९ सम ।। जहां दोनु पलक सहज सुभावसीं रहे। सो सम ॥ ९ ॥
 इति दोऊ नेत्रके पलकनके नव भेद संपूर्णम् ।।

॥ अथ पूतरिके नाम-लछन लिख्यते ॥

- १ भ्रमण ॥ जहां पलकनेक भितरि गोल आकार भ्रमाइये । सो विररोद्ररसमें । सो भ्रमण ॥ १ ॥
- २ वलन ॥ जहां पृत्रिको तिर्छो गमन होय । राँद्वीररसमें । सा वलन ॥ २ ॥
 - ३ पात ॥ जहां पूर्वार निचेकों राखिय । करुणारसमें । सा पात ॥ ३॥
 - ४ चलन ॥ जहां पूतरिको कंप होय भयानक रसमें। सो चलन ॥ ४ ॥
 - ५ प्रवेश ॥ जहां दोऊ पलकमें पतिर पेठे बीभत्सरसमें । सो प्रवेश ॥५॥
 - ६ विवर्त ॥ जहां पूर्तिसों कटाक्ष कीजिये । इस्य रसमें । सो विवर्त ॥६॥
- ७ समुद्धर्त ॥ जहां पूर्वार ऊंची उठाइये । वीररस रीदरसमें । सी समुद्धर्त ॥ ७ ॥
- ८ निष्काम ॥ जहां पूर्तीर बाहरकी ओर आवे शृंगाररसमें । सो निष्काम ॥ ८ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-कपोलनके, नासिकाके भेद और लखन. ३१

९ प्राकृत ॥ जहां पूति सहज स्वभावसों रहें अद्भुत रसमें । सो पाकृत ॥ ९ ॥ ऐसें पूतिरके भेद जांनिये ॥ इति पूतिरिके भेद—लखन संपूर्णम् ॥

॥ अय कपोलनके भेदनके नाम-लछन लिख्यते ॥

- १ कुंचित ॥ जहां छाजसों क्योछ संक्रोचिये। सो कुंचित ॥ १ ॥
- २ रोमांचित ।; जहां सितज्वरसों वा भयसों कपोलमें रोमांच होय । सो रोमांचित ॥ २ ॥

३ कंपित ॥ जहां कपोछ कोधसों बोलिवेमें कंपावे। सो कंपित ॥ ३ ॥ ४ फुळ ॥ जहां कपोछ रोगमें वा हर्षमें ऊंचे होय । सो फुछ ॥ ४ ॥

५ सम ॥ जहां मुखसों कपोल सहज स्वभावमें रहें। सा सम ॥ ५ ॥

६ क्षाम ॥ जहां कष्टसो कपोल वटेदिये । सो क्षाम ॥ ६ ॥

९ पूरण ॥ जहां गर्वसों वा उच्छाहसों पृष्ट कपोछ होय । से। पूरण ॥ ७ ॥ ऐसे कपोछके साम्बकी रीतिसों भेद जांनिये ॥ इति कपोछनके भेद-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ नासिकाके भेदनके नाम-लछन लिख्यते ॥

१ स्वाभावकी नासिका ॥ जहां नासिका सहज स्वभावसों रहें । सो स्वाभावकी नासिका । १ ।

२ नता ॥ जहां नासिका गहरो स्वास करि मंदतासों नमाइये। सो नता । २ ।

३ मंदा ॥ जहां नासिका मंद्र स्वाससों उच्छाहमें वा चिंतामें सिथिल कीजिये। सो मंदा। ३।

४ विक्रष्टा ॥ जहां रोगमें नासिका पुलाय पृष्ट कीजिये। सो विक्रष्टा ।४।

५ विकूणिता ॥ जहां इरषा हासीसों नासिकाकी चेष्टा कीजिये । सो विकूणिता । ५ ।

६ आरुष्टा ॥ जहां फूल अंतर आदिके सुगंधके सुंगिवेमं नासिकाकी वेष्टा होय । सो आरुष्टा । ६ । इति नासिकाके भेद-लक्षन संपूर्णम् ॥

॥ अथ मुखनासिकाके स्वासभेदनके नाम-लछन लिख्यते ॥

१ स्वस्थ ॥ जहां सहज स्वभावसों स्वास कास । सो स्वस्थ । १ ।

२ चल ॥ जहां सोक चिंता परिश्रम उत्कंटामें गहरो तांतो स्वास आवे । सो चल । २ ।

३ विमुक्त ॥ जहां स्वास प्राणायाम आदिमें घणीवर रोकी छोडिये। सो विमुक्त । ३ ।

४ प्रवृद्ध ॥ जहां स्वास काम क्षइरोगके कारणसं । सब्द करको स्वास आवे । सो पवृद्ध । ४ ।

५ उह्नासित ॥ जहां नासिकासों सुगंधछेवेमें मंद्रस्वास लीजिये। सो उल्लासित ॥ ५।

६ निरस्त ॥ जहां दुःख खेद रोगसों ॥ एक वेर सब्दजुत स्वास कीजिये । सो निरस्त ॥ याका ठौकीकमें निस्वास कहे हैं । ६ ।

७ स्विलित ॥ जहां रोगमें पाणबाधामें । अतिदुःखसीं खासि आवे । सो स्विलित । ७ ।

८ पृमृत ॥ जो निदामें सोवतें मुखसों बंड सब्दजुत स्वास होय । सो पृसृत ॥ याको लौकीकमें ठोरिवा कहत हें । ८ ।

९ विस्मित ॥ जहां चितामें । अचरजमें । सहजही स्वास आवे । सो विस्मित । ९ ।

एसं सुरतनमं हिंदोलोक हिलवेमें । पर्वतके चिढवेमें । सस्त चलायवेमें । फुल अतर सुंगिवेमें । स्त्रीके नस्त क्षत लगीवेमें । पश्चात्तापमं । निस्वास आदि जाति लीजिये ॥ इति स्वासके नव भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ अधर भेदके नाम-लद्धन लिख्यते ॥

९ विवर्तित ।। जहां अवर बाहरको निकासिये । सो विवर्तित । १ ।

२ विकासी ।। जहां अपने प्रिय प्यारेके मिलापमें वा हर्षमें उत्तम पुर-पनके हास्यमें कछूइक मंद मुसिकानजुतसो अधरकी चेष्टा । सो विकासी । २।

३ संदृष्टक ॥ जहां कोधसों वा कर्मविकारसों अधर दांतनसों दाबिये।

४ आयत ॥ जहां मंद्र मुसिकानिमें उपरकों होटसों निचलो अधर लगाइये । वा थोडा दाबि दाहिने फेलाइये । सो आयत । ४ ।

- ५ विमृष्ट ॥ जहां फरकवेसीं वा सिथलतासीं अवरके अंतरभाग चलाइये । सो विमृष्ट । ५ ।
- ६ कॅपित ॥ जहां सीतज्वर भय कोधजमें । अधर निच ऊपर कंप करिकं चलाइये । सा कंपित । ६ ।
- ७ उद्धृत ॥ जहां काहूके अपमानमं वा हासीमें निचले अधरसीं उपरलो होट उठाई नासीकासीं लगाइये । सो उद्धृत । ७ ।
- ८ विनिगृहित ॥ जहां कोध आदिक सोंक दुःखमें दोऊ होट मुखभीतर लीजिये । सो विनिगृहित । ८ ।
- ९ समुद्ग ॥ जहां मुलकी पीत देवेमं । अथवा चुंबन करिवमें दोऊ औं ठक तिके आकार मिलावे । सां समुद्ग । ९ ।
- १० रचित ॥ जहां कोथमें वा स्त्रीनक रोदनमें। तिरछे आंठ सकोर वेष्टा कीजिये। सो रेचित । १०। इत्यादि एसें परस्पर चुंबनादि भेद जानिये॥ सास्त्रकी रीतिनसो जानिये॥ इति दमविध अधरके भेद संपूर्णम्॥
 - ॥ अय दांतनके आठ भेद हे तिनको नाम-लेखन लिख्यते ॥
- १ कुट्टन ॥ जहां सीतभयेरोग वृद्ध अवस्थामें दांतसों दांत छग तब सब्द होय । सो कट्टन । १ ।
- २ खंडन ॥ जहां जप पढिवेमें बोलिवोमें भोजन करिवेमें दांतसों दांत मिलाई न्यारो कीजिय । सो खंडन । २ ।
- ३ छिन्न ॥ जहां राग सीतभय तांबूल भक्षणमें दोऊ दांतकी पांति घाटी मिलावे । सो छिन्न । ३ ।
- ४ चुकित ॥ जहां उवासीमें दोउ दांतनकी पांति न्यारि न्यारि होय। सो चुकित । ४ ।
 - ५ ग्रहण ।। जहां दांतनेमं तृण छेकं जीभिसों चांट । सो ग्रहण । ५ ।
- ६ सम ।। जहां दोऊ दांतनकी पांति सहज स्वभावसों राखिये । सो सम । ६ ।
 - ७ दृष्ट ।। जहां कोधसों दांतकी पंक्तिमें अधर दाबिये । सो दृष्ट । ७ ।

८ निष्कर्षण ॥ जहां वांदरके चिडायवेमें दांतनकी चेष्टा कीजिये । सो निष्कर्षण । ८ । इति दांतके आठ भेद-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ जिभके छह भेद लिख्यते ॥

१ ऋज्वी ॥ जहां मुख खोछिकें जिभ फेलाइये । सो ऋज्वी । १ ।

२ सृक्कानुग ।। जहां कोष वा भोजनमें स्वादमें होतके पांत जिभसों चाटिये। सो सृकानुग । २ ।

३ वका ॥ जहां मुख खोलि जीभ लंबी फेलाय । अग्रभागमें टेडि कीजिये । श्रीनृसिंगअवतारकी लीलामें । सो वका । ३ ।

४ उन्नता ॥ जहां उवासी आदिमें मुख खोलि उपरको जिभ उंचि कीजिये । नाकके अग्रभागें । सो उन्नता । ४ ।

५ लोल । जहां बालकीडामें वा चतुराइ करण माहिनेई सो मुख स्वोलि भितर जिभि भीराव । सो लोल । ५ ।

६ लेहिनी ॥ जहां दांत होट जिभिसों चाटिये । सो लेहिनी । ६ । इति जिभके छह भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ चिबुकके आठ भद हे तिनके नाम-लछन लिख्यते ॥

१ व्यादीर्ण ॥ जहां उवासी आलससों चिबुक लंबो कीजिये । सो व्यादीर्ण । १ ।

२ श्वसित ॥ जहां अद्भुत रसमं आधे आंगुल टोडी निचेको लीजिये । स्रो श्वसित । २ ।

३ वक ॥ जहां यह भूत पेत पिशाचके अवस्थामें ठोडी टेडी कीजिये। सो वक । ३ ।

४ संहत ।। जहां मुख मुदि निश्चल ठोडी कीजिये । सो संहत । ४ ।

५ चलेसंहत ॥ जहां स्नीनके मुखवुंबनमें ठोडीकी वेष्टा होय । सा चलसंहत । ५ ।

६ स्फुरित ॥ जहां सित अमणमें ठोडी चंचल होय । सो स्फुरित । ६।

७ चलित ॥ जहां वानिके धंवनमें वा कोधमें अथवा क्षोममें। जो ठोडीकी चलाय मानगित होय। सो चलित। ७।

तृतीय नर्तनाध्याय-चिवुकके, मुखके, एडीके भेद ओर लछन. ३५

८ लोल ॥ जहां पानवीडा आदिके वस्त चवणमें । ठोडीकी चेष्टा होय। सो लोल । ८ । इति चिबुकके आठ भेद-लखन संपूर्णम् ॥

- ॥ अथ मुखके छह भेद हे ताको नाम-लछन लिख्यते ॥
- १ व्याभुम ॥ जहां मुखके छेदबांको चिंतामें विस्तार होय । सो व्याभुम । १ ।
 - २ भुम्न ॥ जहां लाजसों निचो मुख होय । सो भुन्न । २ ।
- ३ उद्दाहि ॥ जहां गर्ववालाके अनादरमें मुखचेष्टा होय । सो उद्दाहि । ३ ।
- ४ विधूत ॥ जहां काहूको नहीं करिवेमें । तिरछो मुख झुलाइये । सो . विधूत । ४ ।
- ५ विवृत ॥ जहां हांसि आदिमें होट न्यारे करि मुख खोलिये। सो विवृत । ५ ।
- ६ विनिवृत ॥ जहां रासमं इरषामें । काहूसें मुख करिये । सो विनिवृत । ६ ।

ऐसे मुखके भेद अनेक चेष्टानसों अनेक प्रकारके होयहें ॥ इति मुखके छह भेद—लखन संपूर्णम् ॥

- ॥ अथ एडीके सात भेद हे तिनके नाम-लछन लिख्यते ॥
 - १ उत्किमा ।। जहां एडि उठायके दिखावे । सो उत्किमा । १ ।
- २ पतितोत्क्षिमा ॥ जहां नृत्यमें चरनकी चलाकी करि है। सो पतितो-
 - 3 पतिता ॥ जहां एडी निचि करि पटकीये । सो पतिता । ३ ।
 - ४ अंतर्गता ॥ जहां एडी सकोरिये। सो अंतर्गता । ४ ।
 - ५ बहिर्गता ॥ जहां एडी बाहिर मिलावे । सो बहिर्गता । ५ ।
 - ६ मिथोयुक्ता ॥ जहां दोनु एडी भिले । सो मिथोयुका । ६ ।
 - ७ वियुक्ता ॥ जहां दोनु एडी न्यारि न्यारि होय । सो वियुक्ता । ७ ।
- ८ अंगुलिसंगता ॥ जहां एक पगकी एडी दूसरे पगकी एडी अंगुरीसों रुगाइये । सो अंगुलिसंगता । ८ । इति एडीके आठ भेद-लछन संपूर्णम् ॥

शय स्थानकनमं टिकोणांके पांच भेद होत हैं ताके नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां एक पगको टकाणा । दूसरे पगके अंगुठासों लगावे । सो अंगुष्ठ संश्विष्ठ । १ । जहां टकाणा पगनके भीतर आवे । सो अंतरयात । २ । जहां पगसों टकाणा बाहिर रहे । सो बहिर्गत । ३ । जहां दोऊ पांवके टकाणा मिलावे । सो मिथायुक्ता । ४ । जहां दोऊ पावनके टकाणा मिलावे । सो वियुक्त । ५ । इति टकोणाको भेद—लखन संपूर्णम् ॥

- ॥ अथ हातकी अंगुरीके सात भेद ह ताको नाम-लछन लिख्यते ॥
 - १ संहता ॥ जहां आंगुछी आपसमें मिल । सा संहता ॥ १ ॥
 - २ वियुता ॥ जहां आंगुली न्यारि न्यारि होय । सो वियुता ॥ २ ॥
 - ३ वका ॥ जहां आंगुली बांकी होय । सो वका ॥ ३ ॥
 - ४ वलिता ॥ जहां आंगुली भ्रमावे । सो वलिता ॥ ४ ॥
 - ५ पतिता ॥ जहां आंगुरी सिथर कीजिये । सो पतिता ॥ ५ ॥
 - ६ कुंचन्मूला ।। जहां आंगुलीकी जड टेडी कीाजिये । सो कुंच-न्मूला ॥ ६ ॥
- ७ प्रसृता ॥ जहां आंगुली सुधि लंबी कीजिये। सो पसृता ॥ ७ ॥ इति हातकी अंगुरीके भेद-लखन संपूर्णभ् ॥

अथ चरनकी अंगुरीके पांच भेद हं ताको नाम-लछन लिख्यते ॥ जहां विद्यांत किलकी चिंतहामें पांचकी अंगुरी नीची चलावे । सां अधिक्षिमा ॥ १ ॥ जहां नवाढा स्त्रीकं चरनकी अंगुरी ऊपरकों रहे । सो उतिक्षिमा ॥ २ ॥ जहां नास भयसों अंगुरी संकोचिय । सो कुंचिता ॥ ३ ॥ जहां सुधि लंबी अंगुरी कीजिये । सो पसारिता ॥ ४ ॥ जहां अंगुठा सहीत पांचो अंगुरी मिलावे । सो संलग्न ॥ ५ ॥ ऐसें याहि रीतिसों एडी पांच भेद अंगुठा को जांनिये ॥ इति चरन अंगुरीके भेद-लछन संपूर्णम् ॥

श्वास्त्र विष्यति ।। अथ पगथलिकं छह भेद हे ताको नाम-लछन लिख्यते ॥ जहां पगथलीको अग्रभाग नीचो धरतीपें पटके । सो पतिताग्र ॥ १ ॥ जहां पगथलीको अग्रभाग उठावे । सो उधृताग्र ॥ २ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-पगथली, मुखराग, हातनके भेद ओर लछन. ३७

जहां पगथली भूमिमें टेकीये। सां भूमिलग्न ॥ ३ ॥
जहां पगथली बीचसों चोकी कीजिये। सो कुंचिन्मध्या ॥ ४ ॥
जहां पगथली तिरली किर । बगलाउ धरिये। सो तिरश्रीन ॥ ५ ॥
जहां सर्व पगथलीकां उंची उठावे। सो उधृत ॥ ६ ॥ इति पगथलीके छह भेद-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ मुखराग कहिये मुखकी चेष्टा ताको नाम-लछन लिख्यते ॥ जहां मनकी शृंगार आदिक रसकी वासना मुखकी चेष्टा करि जताइये। सो मुखराग जांनिये। ताको चार भेद हें॥

जहां सहज सुभावसों मुखकी चेष्टा होय । सो स्वाभाविक मुखराग । १ । जहां शृंगार हास्य अद्भुत रस जतायवेकों प्रसन्त मुखकी चेष्टा होय । सो प्रसन्त । २ ।

जहां रीद अर्भुत रस जतायवेकों मुखमें दीखें। सो रक । ३ । जहां बीभत्स भयानक रस जतायवेकों मुखमें श्यामता दिखे। सो श्याम । ४ । इति मुखरागके च्यारी भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ हातनके प्रकार पनद्रह है तिनको नाम-लछन लिख्यते ॥

१ उत्तान ॥ जहां हातकी हतेली ऊपरकों हाय । सा उत्तान ॥ १ ॥

२ अधस्तल ॥ जहां हतेली नीची होय । सो अधस्तल ॥ २ ॥

३ पार्श्वस्तल ॥ जहां हतेली जीमीवत ऊदाहिनी हाय । सो पार्थ-स्तल ॥ ३ ॥

४ अग्रस्तल ॥ जहां हतेली सहायकों । ओट आगेको कीजिये । सी अगस्तल ॥ ४ ॥

५ स्वसंमुख तल ॥ जहां हतेली मुख सन्मुखकी जिये। सो स्वसंमुख तल ॥ ५ ॥

६ ऊर्ध्वमुख ॥ जहां हातको अयउपरको ऊंचो होय । सो ऊर्ध-मुख ॥ ६ ॥

७ अधोमुख ।। जहां हातको अग्रभाग नीचो होय । सो अधोमुख ॥७॥ ८ पराङ्मुख ॥ जहां हातको अग्रआगें कीजिये । सो पराङ्मुख ॥८॥

- ९ पार्श्वमुख ॥ जहां हातको अग्र चलाऊ होय । सो पार्श्वमुख ॥९॥ १० संमुख ॥ जहां हातको मुखकं सन्मुख होय आवे । सो
- संमुख ॥ १०॥
 - ११ ऊर्ध्वम ॥ जहां सिगरो हात ऊपरको चलाइये। सो ऊर्ध्वम ॥११॥
- १२ अधागत ॥ जहां सिगरी हात नीचेकों चलाइये। सी अधोगत ॥ १२ ॥
- १३ पार्श्वगत ॥ जहां सिगरो हात बगलाउ तिरछो चलावे। सो पार्श्वगत ॥ १३ ॥
- १४ अग्रगोचर ॥ जहां सिगरो हात आगेको जोरसीं चलावे। सो अग्रगोचर ॥ १४ ॥
- १५ मुख्गत ॥ जहां सिगरो हात सनमुख कीजिये । सो मुख्गत ॥ १५ ॥ इति हातनके पनद्रह प्रकारके लखन संपूर्णम् ॥ ॥ अथ हस्तकके वीस कर्म हैं । ताके नाम—लखन लिख्यते ॥
 - 9 धूनन ॥ जहां हातको कंप होय । सो धूनन ॥ 9 ॥
 - २ श्लेष ॥ जहां हात दूसरे हातसों मिलावे । सो श्लेष ॥ २ ॥
 - ३ विश्लेष ॥ जहां दोनू हात मिलाय न्यारं कीजिये। सो विश्लेष ॥३॥
 - ४ क्षेप ॥ जहां हात चलाइये । सो क्षेप ॥ ४ ॥
 - ५ रक्षण ॥ जहां हातसों रक्षा कीजिये । सो रक्षण ॥ ५ ॥
 - ६ मोक्षण ॥ जहां हातसां छोडिवेकी मुद्रा कीजिये। सो मोक्षण ॥६॥
 - ७ परिग्रह ।। जहां टेवेकी चेष्टा होय । सो परिग्रह ॥ ७ ॥
 - ८ निश्रह ॥ जहां काहूको दंडके देवेकी चेष्टा कीजिये। सो निश्रह ॥८॥
 - ९ उत्छष्ट ॥ जहां चढाइकी चेष्टा होय । सो उत्कृष्ट ॥ ९ ॥
 - १० आरुष्ट ॥ जहां हात पेंचिये । सो आरुष्ट ॥ १० ॥
- 99 विक्रष्ट ॥ जहां हातसों डाटि भागवेकी किया होय । सी विक्रष्ट ॥ 99 ॥
 - १२ ताडम ।। जहां हातसें ताडन कीजिये। सो ताडम ॥ १२ ॥

१३ तोलन ॥ जहां हातसों वस्तु अजमावेकी चेष्टा होयः। सो तोलन ॥१३॥
१४ छेदन ॥ जहां काढिवेकी किया होय । सो छेदन ॥ १४ ॥
१५ भेदन ॥ जहां न्यारो करवेको प्रयोग होय । सो भेदन ॥ १५ ॥
१६ स्फोटन ॥ जहां फिरिवेकी रीति दिखावे । सो स्फोटन ॥ १६ ॥
१७ मोटन ॥ जहां अंग मोडीवेकी चेष्टा होय । सो मोटन ॥ १०॥
१८ विसर्जन ॥ जहां काहूको विदा करिवेकी मुदा होय । सो विसर्जन ॥ १८ ॥

१९ आव्हान ॥ जहां बुटायवेकी चेष्टा कीजिये । सो आव्हान ॥१९॥ २० तर्जन ॥ जो काहूको डरकायवेकी चेष्टा कीजिये। सो तर्जन ॥२०॥ इति हातनके वीस कर्म-लखन संपूर्णम् ॥

अथ हात चलायवंके चौदह स्थानको नाम—लछन सम्यक प्रकार करिके लिख्यते ॥ दाहिनि बाह एक ॥१॥ आगें दो ॥२॥ पीछो तीन ॥३॥ ऊप-रको च्यार ॥ ४ ॥ निचा पांच ॥ ५ ॥ माथा छह ॥ ६ ॥ छठाट सात ॥ ७ ॥ कर्ण आठ ॥८॥ स्कंध नऊ ॥ ९ ॥ छाति दस ॥ १० ॥ नाभि ग्यारा ॥ ११ ॥ कमर बारा ॥ १२ ॥ जांच तेरह ॥ १३ ॥ ऊठ चौदह ॥ १४ ॥ ए चौदह स्थानक हात चठायवंके जांनिये ॥ इति हात स्थानकके चौदह भेद संपूर्णम् ॥

अथ च्यारि करनके नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां प्रथम कर-नको लछन कहे हैं ॥ जहां अभिनय किहये भाव बताइवो । ताके लिये हातमें किया रूप चेष्टा होय । सो करन जांनिये ॥ याके च्यार भेद हैं ॥ आवेष्टित ॥ १ ॥ उद्देष्टित ॥ २ ॥ व्यावर्तित ॥ ३ ॥ परिवर्तित ॥ ४ ॥ ये च्यार जांनिये ॥

जहां पासूकी बराबर तिरछो हात राखि अंगुठाके पासकी तर्जनी आदि च्यारें। अंगुरी मुठी हस्तककी नाइ एक एक अंगुरी कमसों हतेरिके समूह नमाय हतेरिसें। लगाइये ॥ ऊन च्यारों अंगुरीससों हतेरीसों ऐसें मीलावत छाति ताई हात चलाइये । सो करन आवेष्टित हैं ॥ १ ॥

जहां छाति सास यामें जो भावेष्टित करनेमें हातमें वा हातकी तर्जनी॥ आदिक च्यारों अंगुरी अनुक्रमसों एक एक अंगुरी बाहिर निकासित हातकों छातिके पास बराबर ल्याइये। सो करन उद्देष्टित हें॥ २॥

जहां करन आवेष्टितिकनाई पासुकी बराबर छाति सनमुख तिरछो हात राखि चटी अंगुरी आदिक च्यारों अंगुरी कमसों एक एक पहले की सिनाई हतेरिसों मिलावत छातिपें सो ल्यावे। सो करनव्यावर्तित ॥ ३ ॥

जहां छातिषें जो व्यावर्तित करनको हात है वा हातकी चटी अंगुरी आदि च्यार अंगुरी अनुक्रमसों एक एक अंगुरी हतिरिसों वा दर दाटित उद्देष्टित करनकी सिनाई छातिषें ते हात पासूकी बराबर ल्यावे सो करनपरिवर्तित जांनिये॥ इति च्यारों करनके नाम—लखन संपूर्णम्॥

अथ नृत्य करनको लखन लिख्यते ॥ जहां नृत्यमं विलाससों रस वधाइवेकों हात चरण आदि अंगनकी किया कीजिय। सो नृत्य करन जांनिये ॥ सो ये करन भरतमुनीश्वरके मतसों एकसोआउ ॥ १०८ ॥ हे तिनको नाम लिख्यते ॥

॥ अय नृत्य करनके १०८ भेद लिख्यते ॥

ÿ	तलपुष्पपुट	12	अंचित	२३	विक्षिप्ताक्षिप्त
२	ही न	93	अपविद्	₹8	निकुंचित
3	वर्तित	38	समनख	ર્ષ	धूर्णित
8	वलितोरु	74	उन्मत्त	२६	उर्ध्वजानु
ч	मंड लस्वास्तिक	38	स्वस्तिकरेचित	२७	अधरेचित
६	वक्षस्वस्तिक	90	निकृटक	२८	मत्तही
· \(\psi\)	आक्षिप्ररेचित	96	अर्धनिकृदक	२९	अर्धमत्तही
	अर्धस्वस्तिक	98	करीछिन	३०	रेचकनिकुद्दक
8	दिकस्वास्तिक	२०	कटीसम	39	उ लिता
90	पृष्ठस्वस्तिक	२१	भुजंगत्रासित	32	वित
19	स्वस्तिक	२२	आरात	33	दंडपक्ष

तृतीय नर्तनाध्याय-मृत्य करनक १०८ भेद. ॥ अथ मृत्य करनके १०८ भेद लिख्यते ॥

38	पादापविद्धक	५३	ल्लाट तिल क	७२	पार्थ्वजानु
३५	नूपुर	48	पार्श्वनिकृद्दक	७३	गृधावितनक
३६	भ्रमर	५५	चक्रमंडल	७४	सुचि
3,2	গ্রি স	५६	उरामंडल	७५	अर्धसुचि
36	भुजंगत्रस्तरेचित	५७	आवर्न	७६	सुचिविद्य
- 3	भुजंगांचित	46	कुंचित	७७	हारिणप्लुत
8 °	दंडरंचित	प९	दोलापाद	96	परिवृत्त
83	चतुंर	६०	विवृत्त	७९	दंडपाद्
82	कटिभ्रांत	६१	विनिवृत्त	60	मयूरलाउत
8 ३	व्यंसि त	६२	पार्श्वकांत	< 9	में खोटित
88	क्रांन	६३	निशुंभित	८२	सनत
84	वेशाखरचित	६४	विद्युद्धांत	८३	सर्पित
४६	वृश्चिक	६५	अतिकांत	< 8	करिहस्त
80	वृश्विककुद्दित	६६	विक्षिप्त	८५	मसर्पित
86	वृश्चिकरेचित	६७	विवर्तित	८६	अपकांत
४९	स्तावृश्चिक	६८	गजकीडित	60	नितंब
40	आक्षिप्त	६९	गंडसूचि	66	स्खारित
49	अर्गेल	90	गरुडप्लुत	69	सिंहविकीडित
पर	तलविलासीत	७१	तलसं स् फोटित	९०	सिंहाकर्भित

11	अथ	नत्य	करनके	9	06	भेद	लिख्यते	11	
----	----	------	-------	---	----	-----	---------	----	--

९१	अवहित्थ	९७	उद्धृत	903	उद्घृदित
९३	निवेश	९८	विष्णुक्रांत	908	शकटास्य
९३	एलकाक्रीडित	९९	हो छित	904	उरुद्धृत
98	जनित	900	मदस्खलित	१०६	वृषभक्रीडित
९५	आपसृत	309	संभ्रांत	900	नागापसर्पित
९६	तलसंघदित	907	विष्कंभ	906	गंगावतरण

१ तलपुष्पपुट ॥ जहां नृत्य करिवेकें समयमें दोक चरन बराबर राखि दोनू हातनको छता करहस्तक राचि ॥ चतुरस्र अंगुछ स्थानकसों ठाडो होय पिछे नृत्य करिवेकों द्विरदग नाम चारिसों ॥ दाहिनों पाव दाहिनी ओर निकासे । ओर व्यावृत करणसों दाहिनों हात छातिषें त दाहिनी ओर ल्याइये ॥ ऐसें हि बांयो चरन बांई । ओर निकासि परिवर्त करनसों बांयो हात छातिनें उठाई बांई ओर ल्याई फेर दोनू हात छाति ऊपर ल्याइकें अंजिछ राचिय ॥ ओर दोनू चरनके अग्रभागसों चिछये । सो तलपुष्पपुट है ॥ जहां ओर कोऊ करन पिछे तलपुष्पपुट करनों होय ॥ तब वा करनके मिलते हस्तककी किया लीजिये ॥ जो हस्तककी किया नहीं मिलेसो नहीं लीजिये ॥ यह रीति सिगरे करनमें जांनिये ॥ १ ॥

२ लीन ॥ ज़हां दोऊ हातनको मंडल हस्तक रिच। फर छातिपं अंगुली रिच ग्रीवा सुधि करि दोऊ कांधे सकोरिये। सो लीन ॥ २ ॥

३ वर्तित ॥ जहां दोऊ हात निचे छटकाय दाहिनों चरन आगें धरि दोऊ हात फिरावे । सो वर्तित ॥ ३ ॥

४ विलितोरु ॥ जहां छातिके बराबर हात राखि व्यावृत करन दाहिनेमें पाँरेवार्तित करन बांयेमें राचि आक्षिप्त चरणमें हाते फिराय शुकतुंड हस्तक निचे कर राखिये। सो विलितोरु ॥ ४ ॥

५ मंडलस्वस्तिक ॥ जहां दोऊ हात सुधे करि गोल आकार फिराय छाति ऊपर स्वस्तिक हस्तक राचिये। सो मंडलस्वस्तिक ॥ ५ ॥

६ वक्षस्वस्तिक ॥ जहां चतुरस्रक्रसों दोऊ हात छातिषें राखिकें। फर रेचित हस्तक सों दाहिनी बांई ओर चलाय। फेर व्यावृत करण सों दोऊ हात छातिषें निचे दोऊ चरनमें स्वस्तिक राचि ठाडो होय। सो वक्षस्वस्तिक ॥ ६॥

७ आक्षितरचित॥ जहां बांयो हात छातिसों बांई ओर चलावे दाहिनों हात दाहिनी ओर चलावे टेडो कीजिये। सो आक्षिप्तरेचित॥ ७॥

८ अर्थस्वस्तिक ॥ जहां दाहिणे हातमें करिहस्तक बांये हातमे शुकतुंड हस्तक रचि कटिके मरोडे । सो अर्थस्वस्थिक ॥ ८ ॥

९ दिकस्वस्तिक ॥ जहां आगे पिछे दोऊ पांसूनपें सितावि हात पाव-नको एकसंग स्वस्तिक रचिये। सो दिकस्वस्तिक ॥ ९ ॥

१० पृष्ठस्वस्तिक ॥ जहां व्यावृत करणसों दोऊ हात फिराय पिठपें स्वस्तिक रचिय । ताके समिह चरनको स्वस्तिक रचिय । सो पृष्ठस्वस्तिक ॥१०॥

११ स्वस्तिक ।। जहां बांयो हात दाहिनों चरण निचे होय स्वस्ति-कके आकार कीजिये। सो स्वस्तिक ॥ ११ ॥

१२ अंचित ॥ जहां दोऊ हातमें करहस्तक छातिषें राचि दाहिनों हात व्यावृत करनसों बांयो हात परिवर्तकरनसों नासिकाके निकट आवे। सो अंचित ॥ १२ ॥

१३ अपविद्ध ॥ जहां जंघा पिठकी ओर दाहिने हातसों शुकतुंडक हस्तकं नीचो पाडिये ओर बांये हातसों खटकामुख हस्तक कीजिये। सो अपविद्ध ॥ १३ ॥

१४ समनख ॥ जहां सूधो सरीर करि दोऊ हात लटकाय दोऊ चर-नके परस्पर नखकों मिलाय ठाडो रहे । सो समनख ॥ १४ ॥

१५ उन्मत्त ॥ जहां विद्धाचारिसों अचिंत नाम चरन करि कमसों दोऊ हात बगलाऊ चलाइये । सो उन्मत्त ॥ १५ ॥

१६ स्वस्तिकरेचित ॥ जहां दोऊ हात व्यावृतकरन करिके आपसमें पहुचोपें राखि स्वस्तिक कीजिये फेर कमसों चलाइये। सो स्वस्तिकोरेचित ॥ १६॥ १७ निकुट्टक ॥ जहां दोऊ हानमें अर्चिन हस्तक रचि। कांधेपें राखिये। चरन सकोरिये। सो निकुटक ॥ १७॥

१८ अर्धनिकुट्टक ॥ जहां एक हातकों अचिंत हस्तक एक कांधेपें रचि । एक चरन सकोरिये । सो अर्थनिकृटक ॥ १८ ॥

१९ कटी छिन्न ॥ जहां पासूभ्रभाय मंडल स्थानक करि कटि मरोटी ॥ एक हातकों माथे पे पहन हस्तक की जिये ॥ एसे हात सों की जिये ॥ एसे दोय तीन वार करे । सो कटी छिन्न ॥ १९ ॥

२० कटीसम ॥ जहां दोऊ चरन सकोरि दोऊ हात छातिर्व नामिर्व राखिये दाहिणीयासों मुख नमाइये । सो कटीसम ॥ २० ॥

२१ भुजंगत्रासित ॥ जहां हातमं खटकामुख रचि ऊंवी करि सकोरिय ॥ दाहिणो हात ऊंची निची सुधी कीजिय । सी भुजंगत्रासित ॥ २१ ॥

२२ आलात ॥ जहां आलातचारि करि नितंबेषं दाहिण हातको चतुरस्र हस्तक रिचकें ॥ आर बांये चरनको गोडा उचा करि । बांये हातको चतुरस्र-हात बांये नितेषं राखिये । सो आलात ॥ २२ ॥

२३ विक्षिप्ताक्षिप्त ॥ जहां हात पांव उछाल धरिये । सो विक्षिप्ताक्षिप्त ॥ २३ ॥

२४ निकुंचित ॥ जहां वृश्विक चरन रिचके बांयो हान पासूंमे सकोर नासिकाके अयमें दाहिनं हातकों पताक्र हस्तक नासिकापे सकोरिये । सो निकुंचित ॥ २४ ॥

२५ धूणित ॥ जहां दाहिनों हात मस्तक घुमाय दोऊ चरणमें घूमायकें नमाइये । सो धूणित ॥ २५ ॥

२६ उर्ध्वजानु ॥ जहां दाहिणं पांव संकोचि ॥ बांयो पाव आगें राखि व्यावृत करनसों दोऊ हान चलावे । सो उर्ध्वजानु ॥ २६ ॥

२७ अर्धरेचित ॥ जहां मंडलस्थान रचि छातिषें खटकामुख हस्तक ाखि दुसरे हातसों सूचिमुख हस्तक रचि चरन चलाय पांसू नमाइये। सो अर्धरेचित ॥ २७॥ २८ मत्तल्ली ॥ जहां उद्देष्टित करनसों दोऊ हात चलाय दोऊ चरन घूमाइये ॥ फेर सरिकवेकों अपविद्ध हस्तक रचि फेर ऐसही कीजिये । सो मत्तली॥ २८॥

२९ अर्धमत्तस्त्री ॥ जहां पांव खडसों चलाय बांयो हात उछाल दाहिनों हात कटियें राखे । सो अर्धमत्तली ॥ २९ ॥

३० रचकिनकुट्टक ॥ जहां दाहिणों हात चलाय दाहिणें पांव चलाइये ॥ जहां बांयो हात चलाय बांयो पाव सरकाइये । सो रेचकिनकुटक ॥३०॥

३१ लिलिता ॥ जहां दोऊ हात फीराय बांये हातमें खटकामुख रिचये ! ओर अंग सुंदर होय । सो लिलिता ॥ ३१ ॥

३२ विलित ।। जहां पीठकों बांयो मुख मरोरि । हार्तमें सुचिमुख हस्तक रचिय । सा विलित ॥ ३२ ॥

३३ दंडपक्ष ॥ जहां ऊर्घ्व जानुस्थानक करि हातनमें लताकरिहस्तक कीजिय । सो दंडपक्ष ॥ ३३ ॥

३४ पादापविद्धक ॥ जहां दोऊ हात खटकामुख रचि नाभिषे उछटे राखिये चरनमें सुचिपद रचि । दुसरे चरन ऐसं कीजिये । सो पादापविद्धक ॥३४॥

३५ नृपुर ॥ जहां करि यिवानमाय पताक हस्तक रचिके पिठको फिराय चरन मराडीय । सो नुपुर ॥ ३५ ॥

३६ अमर ॥ जहां बांयो हात चलाय अमावे । कटि मरांड चरनको स्वस्तिक रचि । सो अमर ॥ ३६ ॥

३७ छिन्न ॥ जहां दोऊ हानमें त्रिपताक रचि व्यावर्तन परिवर्तन य दोऊ करन कीजिये वैशाखस्थानक करि कटि मरोडीये । सो छिन्न ॥ ३० ॥

३८ भुजंगत्रस्तरचित ॥ जहां भुजंग त्रस्त करण करि दोऊ हात वाम । पांसूंपें राखि चलाय भ्रमाय ऊंचे कीजिये । सां भुजंगत्रस्त-रेचित ॥ ३८ ॥

३९ भुजंगांचित ॥ जहां बांये हातसों छता कर हस्तक रचि दाहिनें हातमें अचिंत हस्तक रचि नितंबेंपें राखे पीछे भुजंग त्रस्त करन करे। सो भुजंगांचित ॥ ३९ ॥ ४० दंडरेचित ॥ जहां दंडपाद नामकी चारि रचि । दोऊ हातनमें दंडपक्ष हस्तक रचिये । सो दंडरेचित ॥ ४० ॥

४१ चतुर ॥ जहां दोनु हाथ छातींपे राखिये हातसों अलपछव दाहिणें हाथसों चतुर हस्तक रचि एक चरण आगें चलाइये । सो चतुर ॥ ४१ ॥

४२ कटिश्रांत ॥ जहां बांयो चरण चलाइये वाके पास दाहिणे चरण सूचि कटि श्रमावे। फर दोनु हाथमें श्रमर हस्तक रचिकें व्यावर्त परिवर्तक करन करिये॥ पछे वैष्णव स्थानक सों स्थित होय। सो कटिश्रांत ॥ ४२॥

४३ ब्यंसित ॥ जहां आलीढ स्थान राचि छातिषें दोनु हात उपर नीचे उलटे सुधे भ्रमावे । सो ब्यंसित ॥ ४३ ॥

४४ क्रांत ॥ जहां अतिकांत चारीसों चरन आगें चलाइ पांवको वेसी सकोरिय । फेर व्यावृत करनसों चलाइ खट्कामुख रचिये एसेंहि रचाये हात चरननकी चेष्टा करे । सो कांत ॥ ४४ ॥

४५ वेशाखरेचित ॥ जहां हात चरन कटि ग्रिवा भ्रमावे वैशाख स्थानक रचिये । मो वैशाखरेचित ॥ ४५॥

४६ वृश्चिक ॥ जहां दोनु हातनमं करि हस्तक रचि पिछकों चलाइये वीछूके डंककी पितिसों ओर चरन वृश्चिक रचि पीठ आगेको नमाइये। सो वृश्चिक ॥ ४६ ॥

४७ वृश्चिककुद्दित ॥ जहां वश्चिक चरन रचि दोनु भुजा माथेपे उंचि कारि ॥ अलपद्म हस्तक रचिय । सां वृश्चिककुद्दित ॥ ४७ ॥

४८ वृश्चिकरंचित ॥ जहां दोनु चरन वृश्चिक रचि दोनु हातनको स्वस्तिक रचि फेर बांये दाहिनें हात चलावे । सो वृश्चिकरेचित ॥ ४८ ॥

४९ लतावृश्चिक ॥ जहां वृश्चिकरेचित चरन रचि बांयो हाथको ॥ लता कर हस्तक होय । सो लतावृश्चिक ॥ ४९ ॥

५० आक्षिप्त ॥ जहां आक्षिप्त नाम चारि होय जहां हात छातिषें ल्याय खटकामुख वा चतुईस्तक रचिये । सो आक्षिप्त ॥ ५० ॥

५१ अर्गल ॥ जहां पिठकी ओर तें अर्ध ताल ताई चरन चलावे । ऐसें आगेंकी चलाई ताल ताई हात चलावे । सो अर्गल ॥ ५१ ॥ ५२ तलविलासीत ॥ जहां आंगुरी अग्रतल उपरको दिखाय करि बगलाउ पाय चलावे । सो तलविलासीत ॥ ५२ ॥

५३ ललाटितलक ॥ जहां वृश्विक चरन रिच पायके अंगुठासीं लीलाटको छूवें । सो ललाटितलक ॥ ५३ ॥

५४ पार्श्वनिकुट्टक ॥ जहां नेऊ हातनमें स्वस्तिक राचि ॥ फेर सूधे हात किर ॥ एक हात पासूपे राखि । दूसरो हात छटकावे पांवसकारे । सो पार्थ- निकृदक ॥ ५४ ॥

५५ चक्रमंडल ॥ जहां आर्दित चारिसों दोल हस्तक रचि चक्रकीसिनाई गोल भ्रेम सिगरे अंगसों नृत्य करे । सो चक्रमंडल ॥ ५५ ॥

५६ उरें।मंडल ॥ जहां स्थितवर्त चारिकों बांधिके छातिके और पास मंडल हस्तक हातनमें रच । सा उरोमंडल ॥ ५६ ॥

५७ आवर्त ॥ जहां चाष गति चारि राचि उद्देष्टित । आवेष्टित । करनसों दोला हस्तकर राचिये । सो आवर्त ॥ ५७ ॥

५८ कुंचित ॥ जहां दाहिनों हात सूधो बोई पासूपे रे। खि फेरि ऊंची किर अलपदा हस्तक रिच बांयो पाय सकोरि अग्रभागसां चले। सो कुंचित ॥५८॥

५.९ दं लापाद् ।। जहां ऊर्ध्वजानु चारि दोलापादचारि चरनमें रिच हातनमें दोलाहस्तक रिचये । सा दोलापाद ॥ ५९ ॥

६० विवृत्त ॥ जहां हात पावन छालि पिठकों वासी भ्रमावे बांयो दाहिनो हात व्यावृत परिवर्तन करनसों चलाइये । सो विवृत्त ॥ ६० ॥

६१ विनिवृत्त ॥ जहां सूचि चारि रचि पिठिकों वासों भ्रमाय दोऊ हात बगलाउ चलाइये । सां विनिवृत्त ॥ ६१ ॥

६२ पार्श्वकांत ॥ जहां पार्श्वकांत चारि रचि दोऊ हात पांवक अनु-सार चलाइये । सो पार्श्वकांत ॥ ६२ ॥

६३ निशुंभित ॥ जहां दोऊ चरन सकोरि हद्य ऊंचो करि। हातमें खटकामुख हस्तक रचि बीचकी अंगुरीसों छछाट छुवे। सो निशुंभित ॥६३॥

६४ विद्युद्धांत ॥ जहां चरन पिछेकोंकर भ्रमावे । मंडलाकार मस्तक भ्रमावे । सा विद्युद्धांत ॥ ६४ ॥ ६५ अतिकांत ॥ जहां अतिकांत चारि चरन आगे सरकाइये ॥ जहां इस्तकनकां चलाइवा होय । सो अतिकांत ॥ ६५ ॥

६६ विक्षिप्त ॥ जहां पांसू पिट आगे हात पाव । एक मार्गमें एक संग चलाइये । सो विक्षिप्त ॥ ६६ ॥

६७ विवर्तित ॥ जहां एक हान एक चरन धरतिषे पटिक वांसा पिटको भ्रमावे ॥ दूसरे हातसां बाहिर चठावे । सा विवर्तित ॥ ६७ ॥

६८ गजकीडित ॥ जहां दोला पादचारि रचि अर करिहस्तक रचि किया कीजिये। सा गजकीडित ॥ ६८ ॥

६९ गंडमचि ॥ जहां मृचि चरन रचि पासूरी नमाये॥ छातिमं दाहिणां हात खटकामुख राचि बांये हातसों करोल्टमं अलपल्लव राचिये दोऊ हातमं लता रेचित हस्तक राचि वृश्चिक पाद चारमों छाति ऊची कीजिये। सा गंडमूचि ॥६९॥

७० गरुडप्लुन ॥ जहां वेटीकं सदश हातोंका फेटाना ओर पांव विछुकं समान हर्यका भाग उटा हुआ एता जिसमें भाव हो उसकी गरुडप्टुन कहते है ॥ ७० ॥

७१ तलसंस्फोटित ॥ जहां दंड पादचारी वा अतिकांत चारी सें। चारको अम्र सिताविसों उठाय । धरितमें पटिकिये । वा हिसमें दोऊ हातनसों ताल दीजिय । सा तलसंस्फोटित ॥ ७१ ॥

७२ पार्श्वजानु ॥ जहां एक चरन मम राखि वाके ऊपर दूसरा चरन धरि । अर्थचंद्र हस्तक वामें हातसों कटिपें राखि । दाहिनें हातसों मुष्टिहस्तक छातिपें राखि । सा पार्श्वजानु ॥ ७२ ॥

७३ गृधावलिनक ॥ जहां पिठपें पाव पसारि अंगुठा मां भूमिछइ दोऊ बाह पसारिये । सो गृधावलिनक ॥ ७३ ॥

% सुचि ॥ जहां एक चरन सकोरि उटाइ भूमिमें अधर राखि एक इातको खटकामुख छातिषं करे । दूसरे हातमं अलपद्म हस्तक माथेपं होय । सो सुचि ॥ ७४ ॥

७५ अर्धसुचि ॥ जहां एक चरन सकोचि भूमिमें अधर राखि । एक हातकों खटकामुख वा अलपदा छाति वा माथेपें राखे । सो अर्धसुचि ॥ ७५ ॥ ७६ सुचिविद्ध ॥ जहां पक्षवाचित हस्तक कटियं राखे खटकामुख हस्तक छातियं रचि । एक चरनकां मुचिपाद दुसरं चरनकी एडीयं राखे । सी मृचि-विद्ध ॥ ७६ ॥

७७ **हारिणप्लुत** ॥ जहां हरिणप्लुत धारिण करि दोऊ हातनमें खटकामुख दोलाहम्तक रिचये । सो हारिणप्लुत ॥ ७७ ॥

७८ परिवृत्त ॥ जहां बद्धभाम चारिसों सृचिपाद रचि भ्रमाव दोऊ हातने उरुमंडल हस्तक रचे । सो परिवृत्त ॥ ७८ ॥

७९ दंडपाद ॥ जहां नूपुरपाद वा दंडपाद चारिसों रहिके दंडकी मीनाई हात राखे । सां दंडपाद ॥ ७९ ॥

८० मयूरलित ॥ जहां देऊ हात चलाय जांच फलाय वृश्चिकपाद सकोरिकं पिठको वासो भ्रमाव । सो मयुरलित ॥ ८०॥

८१ प्रेंखोलित ॥ जहां एक चरनसों दोला पादचारि रचि । दुसरो चरन उछाल पीठको वासो भ्रमाव । सो प्रेंखोलित ॥ ८१ ॥

८२ सनत ॥ जहां मृगप्लुतचारि रचि । दांऊ चरनकां स्वस्तिक रचि दांऊ हातनमां दोल रचिये । सा सनत ॥ ८२ ॥

८३ मर्पित ॥ जहां एक चरन सकार आगेंकों चलावे दृसरे चरनको अग्र वांको करे । उंहां पांसृमं हातनको चलावे । सी सर्पित ॥ ८३ ॥

८४ करिहरूत ॥ जहां बांय हातमें खटकामुख छाति में रिच दाहिनें हातमें त्रिपताक हस्तक रिच । अंचित चरन अगे सरकावे । सां करिहस्त ॥८४॥

८५ प्रमर्पित ॥ जहां एक हात चलाय चरनसों मिलाय । पृथ्वीकां विसत धीरे धीरे चले दूसरे हातमें लता हस्तक रचे । सो पसर्पित ॥ ८५ ॥

८६ अपक्रांत ॥ जहां वद्ध । १ । अपक्रांत । २ । ये दोऊ चारि रिच एक हातमें खटकामुख दूसरे हात व्यावृत चरनमों चलाय छातिरें ल्यांवे जंघ। भ्रमावे । सो अपक्रांत ॥ ८६ ॥

८७ नितंब ॥ जहां दोऊ हातनकां पताक हस्तक रचि माश्चेंप राखि परवृत करनसों कांधेपें ल्याई । फेर ऊन हाथकेमुख मिलाय छाति सनमुख करि नितंबपे राखे । सो नितंब ॥ ८७ ॥

- ८८ स्विलित ॥ जहां दाला पादचारि रचि दोऊ हान हंसपक्षक हस्तसों बुमावे । सो स्विलित ॥ ८८ ॥
- ८९ मिंहविकीडित ॥ जहां आलात चारी । सां चेषटकी सीनाई चलाय हातकों सहारों दीजिये । सां सिंहविकीडित ॥ ८९ ॥
- ९० सिंहाकार्षित ॥ जहां पिठिपं चरन धरि दोऊ हातमं निकृंचित हस्तक रच । एसं वरवर करे । सो सिंहाकर्षित ॥ ९० ॥
- ९१ अवहित्थ ॥ जहां जनिताचारि रचि दोऊ हातको खटकामुख छातिषं राखि । धीरे धीरे नीचेको सरकारतपता हस्तक कीजिय । सो अव-हित्थ ॥ ९१ ॥
- ९२ निवंश ॥ जहां दोऊ हात छातिषं राखि छाति टेडी करे। मंडल-स्थानकसां स्थित होय । सो निवंश ॥ ९२ ॥
- ९३ एलकाकीडित ॥ जहां एलाकिडाचारि दोऊ हातमें देखा खटकामुख रचि देहको मोड नमावे । सो एलाकाकीडित ॥ ९३ ॥
- ९४ जनित ॥ जहां जनिताचारि रचि एक हानमें। मुष्टि छातिषें। दुसरे हातसें। छताकरि हस्तक होय। मा जनित ॥ ९४ ॥
- ९५ आपमृत ॥ जहां एक चरनमं आक्षिमचारि रचि हानकों साहारो लगाय दाहिणें पासूं नमाय टेडी कीजिय । सो आपमृत ॥ ६५ ॥
- ९६ तलसंघट्टित ॥ जहां दोला पादचारि रचि दोऊ हातकी हतेली जोर फेरवायो हात कटिपें ल्यावे बांईओर चलावे । सो तलसंघटित ॥ ९६ ॥
- ९७ उद्धृत ॥ जहां उद्धृतचारि रचि दोऊ हात चरनेषं ल्याय सितावी सकोरिये । सो उद्धृत ॥ ९७ ॥
- ९८ विष्णुक्रांत ॥ जहां चरन आगे धरिवेकों उठाय सकोचिये । दोऊ हात रेचक हस्तकसों चलाइये । सो विष्णुकांत ॥ ९८ ॥
- ९९ लोलित ॥ जहां एक हातमें रचित हस्तक दुसरे हातमें अलपछव रचि छातिषें राखे । दोऊ पांसू ओर माथो हलावे वैष्णवस्थानक होय । सी लोखित ॥ ९९ ॥

१०० मदस्स्वित ॥ जहां दोऊ चरनमें स्वस्तिक रचि आगें सरकाइये सिर घुमाय दोऊ हातसों दोला हस्तकसों दुलावे । सो मदस्खलित ॥ १०० ॥

१०१ संभ्रांत ॥ जहां अविद्यचारि रचि दोऊ हातनमें । अलपहस्तक रचि व्यावृत परिवृत करनसों जंघोंषे राखे । सो संभ्रांत ॥ १०१ ॥

१०२ विष्कंभ ॥ जहां बाये ओर सरिक दाहिनें ओर हातसों सुचिमुख रिच बांये चरनका साहारे दे वा यो हात छातिषें राखि फेर दाहिनों चरनसु चिखर हस्तक रिच । दाहिनें हातको अलपल्लव रिच छातिषें राखे बांयो अंग पहलीकी सीनाई रहे। एसें वेरवेर चेष्टा करें। सो विष्कंभ ॥ १०२ ॥

१०३ उदघद्वित ॥ जहां सकटास्यनाम नारि रचि । एक हात पावके सहारं दीजिये । दूसरे हातमं खटकामुख रचि छातिपं राखे । सा उद्घटित ॥ १०३ ॥

१०४ शकटारूय ।। जहां उद्घटित पाद रिच पांसूं नमाय दोऊ हात ताल देवेकी चलाइये । सी शकटास्य ॥ १०४ ॥

ं १०५ उरुद्धृत्त ॥ जहां उरुद्धृत्त चारि रचि दोऊ जांघेषे दोऊ हातनेक अराल हस्तक रचि खटकामुख हस्तक रचिये । सो उरुद्धृत्त ॥ १०५ ॥

१०६ वृषभकीडित ॥ जहां आलात चारि रचि दोऊ हात रेचत हस्तक रचि व्यावृत करनसों चलाई फर सकोचि कांधेषें राखि पीछे अलपदा हस्तक रचिये। सो वृषभकीडित ॥ १०६ ॥

१०७ नागापमार्पत ।। जहां दोऊ हातनमं रेचित हस्तक रचि माथो हलावे । दोऊ चरननमं स्वस्तिक रचि चलिवेकों सरकावे । सो नागापसार्पत ॥१००॥

१०८ गंगावतरण ॥ जहां एक चरन वेरवेर उछाछि । आंगकों निचेको चलाइये । दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्त रचि ऊंचे नीचे चलाइये माथा निचा कीजिये । सो गंगावतरण ॥ १०८ ॥ करनहें तीनमें घणी जगा बांयो हात छातिपें दोय दाहिनें हातसों चारि करन आंवष्टित आदिक रचिये यह रीति जांनिये ॥

गति कहिये ।। वाहि स्थान है जिनके अनुक्रमसों प्रयोगसें अथवा उत्तरे प्रयोगसें आनंद होत है तिनमें करण रचे ते । करण अनंत हैं ॥ इन करणका पार नहीं आवे तोभि अंगहारनमें इतने करण होत हैं ॥ याते करणके भेद एकसोआठ हे तिनको अनुक्रमसों स्वरूप कहे हें। इति एकसाआठ ॥ १०८॥ करन नाम-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ उतप्लुत करनके नाम-लछन लिख्यते॥

- १ अंचित् ॥ जहां समपादस्थान राचि सुधो उछले। सो अंचित करन । १।
- २ एकचरणांचित ॥ जहां एक पांवसों ठहर उछछे। सो एक-चरणांचित। २।
 - ३ भेरवांचित ॥ जहां एक पाव जंघांपे धरि उछा छ। सो भैरवांचित । ३।
- ४ दंडप्रणामांचित ॥ जो अंचित करनसों उछल लाठिकि सिनाई उछल धरिपें खंड । सो दंडपणामांचित । ४ ।
- ५ कर्तिर अंचित ॥ जें। चरन स्वस्तिककरि रचि उछले । सो कर्तिर अंचित । ५ ।
- ६ अलग ॥ जो यीवा नीचि कर उछले धरतिषे उछल गिरती बाद कुकुट आसन रचे । सो अलग । ६ ।
- ७ कूर्मालग ॥ जो श्रीवा निाचि करि उछलं धरतिषे पटती बाद कूर्मा-सन बांधे । सो कुर्मालग । ७
- ८ ऊर्ध्वालग ।। जो निचि नाडी करि उछारी धरतिषे पडित बाद सम-पाद स्थानकसों उंचो होय । सो ऊर्ध्वालग । ८ ।
- ९ अंतरालग ॥ जो अलगकी सिनाई उछल पडती बाद धरती उपर छाति लगाय माथेसो कटि मिलावे । सो अंतरालग । ९ ।
- १० लोहडी लुंठीत ॥ जो समपाद स्थानक रिच वासों भ्रमाय उछि । तिरछो पडे । सो लोहडी लुंठीत । १० ।
- 19 कर्तरी लोहडी ॥ जो स्वस्तिक चरन रिच वासों फिराय उछाँछ तिरछो पडे । सा कर्तरी लाहडी । 19 ।
- १२ एक पाद लोहडी ।। जो एक पादसों उहिर लोहडी रिचये । सो एक पाद लोहडी । १२ ।
- १३ दर्पसरन ॥ जो वैष्णव स्थान रचि उछल पांसूक बल गिरं। सा दर्पसरन । १३ ।

तृतीय नर्तनाध्याय-उतप्लुत करनके नाम और लखन. ५३

१४ जलश्यन ॥ जो वेष्णव स्थानसी उछल जलशायि आसन कीजिये। सो जलशयन । १४ ।

१५ नागबंध ॥ जो वैष्णव स्थानसी उछल नागबंध आसन रच । सी नागबंध । १५ ।

१६ कपालचूर्ण ॥ जो समपाद स्थानसों रिच धरित ऊपरि कपाल टेक उल्लेटिकं ठाडो होय । सा कपालचूर्ण । १६ ।

१७ नतपृष्ठ ॥ जो कपालचूर्णकी रीतिसों उलटि छाति उंचि कीजिये । सा नतपृष्ठ । १७ ।

१८ मत्स्यकरन ॥ जो उछल बीचमें बांई पासू सें। मछि तरह पटकी धरतिपें गिरे। सो मत्स्यकरन । १८ ।

१९ करस्पर्शन ॥ जो अलग करन रचि हात उलट राखे। सां करस्पर्शन । १९ ।

२० एणप्लुत ॥ जो उछल आकासमें सूचिचारि रचि गीरतिवर उचछूं आसन करे । सो एणप्लुत । २० ।

२१ तिर्यकरण ।। जो तिरछा चरनसां ठहरे । उछि तिरछ हि चरनसो ठाडो हाय । सो तिर्यकरण । २१ ।

२२ तिर्यगांचित ।। जो समपाद स्थानक रिच तिरछो उलटिकें तिरछं चरनसों ठाडो होय । सो तिर्यगांचित । २२ ।

२३ सूच्यन्त ।। जो एक चरन वाइस चरके अंतिमें चरन सूचि वा हस्त-सूचि रचिये । सो सूच्यन्त । २३ ।

२४ तिर्यकस्वस्तिक ॥ जो तिरछो स्वस्तिक चरन रचि उछछिवेमं तिर्यकस्वस्तिक रचि भूमिमें परे। सा तिर्यकस्वस्तिक । २४ ।

२५ **बाह्य श्रमिर ॥** जो दाहिनें चरनसों ठहरे बायों पांव धरि ॥ चरनसों दाहिनी टांगेमें लपेटे । सो बाह्य श्रमिर । २५ ।

२६ अंतभ्रमिर ॥ जो बांये पावमें दाहिणों पांव लेपंट । सो अंत-भ्रमिर । २६ । २७ छन्नभ्रमिर ॥ जो त्रिविकमाकार धारिस्थान रिच । बांयो पावसों फिरे । सो छन्नभ्रमिर । २७ ।

२८ तिरिप भ्रमरि ॥ जो स्वस्तिक पाद रचि तिरछो भ्रमें । सो तिरिप भ्रमरि । २८ ।

२९ अलग भ्रमिर ॥ जो वैष्णव स्थानक रिच । बांये चरनसों ठहरि तिरछो भरें । सो अठग भनिर । २९ ।

३० चक भ्रमिर ॥ जो अर्धसूचि चकाकार भ्रमें।सो चक भ्रमिर। ३०। ३१ उचित भ्रमिर ॥ जो समपाद स्थानक रचि।तिरछो देह भ्रमावे। सा उचित भ्रमिर । ३१।

३२ शिरा भ्रमिर ॥ जो शीरको धरतिषे टिकाव उंचे करि माथेके जोरसों तीन वर भ्रमें । सो शिरा भ्रमिर । ३२ ।

३३ दिग्श्रमिर ॥ जो माथेके बट ठहरि माथेसों । एक एक वेर करि हात हलाय च्यारों दिसानमें हात जोडे । सो दिग्श्रमिर । ३३ ।

३४ समपादांचित ॥ जो सम पादक स्थानक रिच ठहरि उछितिकं कंधेंके बल ठहरि पांव हलाय । कांधेके बलसों फिरे । सो समपादांचित । ३४ ।

३५ श्रांत पादांचित ॥ जहां दाहिणों पाद फिराय बांइ जंघाये कटि उछाछि । कंधेके बल धरतिषें ठहरि पांव हलाइकें अमण करें । सा आंत पादांचित । ३५ ।

३६ स्कंधश्रांत ॥ जहां उकडू बेठि उछिछ कंधेषे धरति टेक फेर दोऊ हात धरतिषे छगाय । पाय उपरकों सूध करि च्यारों ओर हातके जोरसों फिरे। सो स्कंधश्रांत । ३६ ।

यह पसिद्ध करन छितस कहे हैं। ऐसे ओरहू करन अनेक हे सो बुद्धि सो जाण छीजिये॥ इति उतप्लुत करनके छितस भेद संपूर्णम्॥

॥ अथ अंचित लोहडी भेद लिख्यंत ॥

१ लंका दाहाचित ॥ जो अंचित करन करि देहकां मरोड ऊकडू आसन करिसो धरतिपें ठहरे । सां लंका दाहाचित । १ ।

२ कर्तरी कांचित ।। जो अंचित करन करि स्वस्तिक पाद सों ठाडो होय । सो कर्तरी कांचित । २ । ३ यवधांचित ॥ जो गजदंत हस्तक रचि अंचित करन । रच सो यव-भांचित । ३ ।

४ क्षेत्रांचित ॥ जहां उकडू बेठि । अंचित करन करि । फेर उकडू बेठ । सो क्षेत्रांचित । ४ ।

५ स्कंधाचित ॥ जहां अंचित करन करि उछि कंधे टिकाई । पांव तिरछे हलावे । सो स्कंधाचित । ५ ।

६ विचित्र लोहडी ॥ जो लोहडी करनमें वककी सिनाई गाल आकार सरीरकों भ्रमावे । सो विचित्र लोहडी । ६ ।

७ बाहुबंधा लोहडी ॥ जो या विचित्र लोहडी दोनू हातमें एकदंनहस्तक रचे । सो बाहुबंधा लोहडी । ७ ।

८ समकर्तरी लाहडी ॥ जो लोहडी करनके आदिमें। समपाद स्थानक अंतिमें स्वस्तिकपाद स्थानक होय । सो समकर्तरी लोहडी । ८ ।

९ चतुर्मुम् लोहडी ॥ जो लोहडी करन रचे च्यारों ओरकों करे । सो चतुर्मुख लोहडी । ९ । इति अंचित लोहडी भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्थानकनको नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां अंगनको देडो सूथा रोखियो निहचल होय । सी स्थानक जानिये। अब याके भेद कहे हैं॥

१ वैष्णवस्थानक ॥ जहां एक पांव सम राखि दूसरो पाव अढाई । विलस्तके अंतरसों पिंडि नेमाय तिरलां राखे । सुंदरतालिये होय । सो वैष्णव-स्थानक । याके। श्रीविष्णु भगवान देवता हैं । १ ।

२ समपादस्थानक ॥ जहां एक विलस्तके । अंतरसों दोऊ चरन सूंधे राखिये । सोभासों हात कांधेपें धरिये हात बराबर राखे । सो समपादस्थानक ॥ याको देवता श्रीब्रह्मा हैं । २ ।

३ वैखार ।। जहां सांडेतीन विलस्तके अंतरसों दोऊ चरन तिरछे रहे । ओर हातहू इतनेंही अंतरसों राखिये । सो वैखार । ३ ।

४ मंडलस्थानक ॥ जहां एक विलस्तके अंतर दोन पाय तिरछो राखिये। गोडांके बराबर कठिनतासों। सो मंडलस्थानक। ४। . ५ अलिटस्थानक ॥ जहां बांया चरन सम दाहिनों चरन पांच विल-स्तके अंतर आगें पसारिये अथवा तिरछों पसारिये । सो अलिटस्थानक ॥ याको देवता रूइ हें । ५ ।

६ प्रत्यालीढ ।। जहां दाहिनों चरन राखि बांया पग पांच विलस्तकें अंतर आगें पसारिय । वा तिरछो पसार । सां पत्यालीढ । ६ । ए छहो स्थानक पुरसके नृत्यमें कीर्जिय ॥ इति पुरुषके छह स्थानक संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्त्रीनंक स्थानकका नाम-लछन लिख्यते ॥

9 आयत स्थानक ॥ जहां वांया चरन एक विलस्तके अंतर तिरछां राखे दाहिनों चरन सम राखे । प्रसन्न मुख छाति उंची दाहिणें हात कटिपें राखे बांये हातमें लताहस्तक रचिय । मो आयात स्थानक कहिये । १ ।

२ अवहित्थस्थानक ।। जहां बांया चरन सम राखि दाहिनों पांव विलस्तके अंतर तिरछा राखी । बाकी रीति आयात स्थानक किसी कीजिये । मो अवहित्थस्थानक । २ ।

३ अश्वकांत ॥ जहां एक चरन सम राखे । दूसरा चरन पांवके एडी बराबर राखे । अथवा एक विल्ह्तके अंतर सूचि पाद रचि । सो अश्वकांत । ३ ।

४ स्थानगतागत ॥ जहां एक पांव चलिवेको । उठाइ आगं धरे नहीं वेसैंहि राखे । सो स्थानगतागत । ४ ।

५ विलित स्थानक ॥ जहां सरीर टेडो करें । दोनू चरन धरि । एक पांवकी चटि अंगुरीसों धरतीकों छुवे । दूसरे चरनके अंगुटासों धरति छूवे । सो विलित स्थानक । ५ ।

६ मोटित स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि दूसरे पांवको अग्रभागकों राखे। दोऊ हातनमें कृमीहस्तक रचि ऊंचे करे। सो मोटित स्थानक। ६।

७ विनिवर्तित ॥ जहां मोटिन म्थानक रचि पीठकी ओर अंगर्सों मोडी नमावे । सो विनिवर्तित । ७ ।

८ प्रोनक स्थानक ॥ जहां सरीर सूधा करि दोऊ चरनकी अंगुरीके जोरसों उंचा होय । सो पोनक स्थानक । ८ । यह स्थानक उंचे फल फुल तोडीवेमें उंचि वस्तु लेवेमें जांनिये ॥ इति स्थानक आठ स्थानकको नाम-लक्ष्म संपूर्णम् ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-दंसी स्थानकको नाम और लछन. ५७

- ॥ अथ देसी स्थानकका नाम-लछन लिख्यते ॥
- १ स्वस्तिक स्थानक ॥ जहां टकोणोंप स्वस्तिक पाद रचि । दोऊ पांवकी चटी अंगुरी मिलाइये । सो स्वस्तिक स्थानक । १ ।
- २ वर्द्धमान स्थानक ॥ जहां दोऊ चरन तिरछे करि । एडी सों एडी . मिलावे । सो वर्द्धमान स्थानक । २ ।
- ३ नंद्यावर्त स्थानक ।। जहां वर्जमान रिच दोऊ एडीके विचमें छह अंगुटको अंतर होय। सो नंद्यावर्त स्थानक । ३ ।
- ४ एकपाद स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि वांके गोडांपें दूसरे पांव उछटो राखे । सा एकपाद स्थानक । ४ ।
- ५ चतुरस्र स्थानक । जहां नंद्यावर्त स्थानक रिच दांऊ एडीनको डेड विलस्तिको अंतर होय । सा चतुरस्र स्थानक । ५ ।
- ६ समसूचि स्थानक ॥ जहां एडी चरन गांडे । धरतिपें तिरछे पसा-रिय । सां समसूचि स्थानक । ६ ।
- ७ विषमसृचि स्थानक ॥ जहां दोऊ चरन सूचि खटकामुख रचि । एक संग एक चरन । एक आगें एक पिछे पसारिये । सो विषमसुचि स्थानक । ७ ।
 - ८ खंडसूचि ॥ जहां समसूचिमें एक चरन सकेरिये । सो खंडसूचि ।८।
- ९ ब्रह्म स्थानक ॥ एक चरन सम राखि दूसरे चरन सकोरि गोडा पास ल्यावे । सो ब्रह्म स्थानक । ९ ।
- १० वेष्णव स्थानक ॥ जहां एक पाद सम राखिये दूसरो चरन सकोरिये पांव पसारिये । सो वैष्णव स्थानक । १० ।
- ११ गरुड स्थानक ॥ जहां बांयो चरन सकोरि दाहिनें पांवको गोडा धरतीसों लगावें । सो गरुड स्थानक । ११ ।
- १२ शैव स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि । दूसरे चरन सकोरि गोडापें राखे । सो शैव स्थानक । १२ ।
- १३ कूर्मासन स्थानक ॥ जहां दाहिनें पांवको गोडा टकोणा धर-तीसों छगाय बांयो चरन सम राखिये । सो कुर्मासन स्थानक । १३ ।

१४ नामवंधन ॥ जहां बेठिवेके बांई जांघपें दाहिनी पिंडी धरे। सी नागवंधन । १४ ।

१५ वृषभामन स्थानक ॥ जहां दोऊ गोडा धरतीसों लगाय पाँव नितंबसों लागे । सो वृषभासन स्थानक । १५ ।

१६ संहत स्थानक ॥ जहां सरीर समान राखि दोऊ चरनके अंगु-ठासों अंगुठा कृणा मिलाइये । सो संहत स्थानक । १६ ।

१७ समपाद स्थानक ।। जहां सूधी उभी होय दोऊ चरननके बीच एक विलसत अंतर होय । सो समपाद स्थानक । १७ ।

१८ पृष्ठोत्तान तल स्थानक ॥ जहां एक पांव पिछे अंगुरीनके जोरसों सूधो धरि आगें दूसरो पांव सम राखि । सो पृष्ठोत्तान तल स्थानक । १८ ।

१९ पार्ष्णिविद्ध स्थानक ॥ जहां एक चरन आगें राखि वांके अंगु-ठासों दूसरे चरनकी एडी मिलाय घरे । सो पार्ष्णिविद्ध स्थानक । १९ ।

२० पार्ष्णिपार्श्वगत स्थानक ।। जहां एक चरन सम राखि वांके तलवांके बरोबर दूसरे चरनकी एडी राखे । सो पार्ष्णिपार्श्वगत स्थानक । २० ।

२१ एक पार्श्वगत स्थानक ॥ जहां एक पांव सम राखि। जाके आर्गे दूसरे पांव कछूक बाहिरो राखे। सो एक पार्श्वगत स्थानक । २१।

२२ एक जानुगत स्थानक ॥ जहां एक पांव सम राखि दूसरे पांव च्यारि अंगुलके अंतरमें राखिये । वांको गोडा सकोरिये । सो एक जानुगत स्थानक । २२ ।

२३ परावृत्त स्थानक ॥ जहां दोऊ पांव तिरछे धरि । एक पांवके अंगुठासों । दूसरे चरनकी चटी अंगुरी मिलावे । सो परावृत्त स्थानक । २३ । इति देसी तेइस स्थानक नाम—लखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ बेठिवेके नव स्थानक लिख्यते ॥

9 स्वस्थ आसन ॥ जहां छाति ऊंचि करि जंघापें दोऊ हात राखि अकुंचित पाद करि फेलाय बेठिये । सो स्वस्थ आसन । १ ।

२ मदालस बेठिक ॥ जहां एक चरन संकोचि । दूसरे चरन कछूक पत्तारिये पासूकी तरफ । सो मदालस बेठिक । २ । ३ क्रांत बेठिक ॥ जहां दोऊ हात चिबुकपें लगाय कांधेपें माथो राखिये । नेत्र कळूडक ढापे । सो क्रांत बेठिक । ३ ।

४ विष्कंभत ।। जहां दोऊ बाहु पसारि जांघ निचें धरि दोऊ चरन अकुंचित करि नेत्र मूंदि बेठे । सो विष्कंभत ॥ यह ध्यानकी बेठक है । ४ ।

५ उत्कट बाठिक ।। जहां दोऊ पांव बरोबर धरतिपें लगाय कटिके जोरसीं बेठे । सो उत्कट ॥ ये बेठकके ध्यान संध्यावंदन जपादिकमें वा भोजनमें होय । ५ ।

६ श्रस्तालम विकि ॥ जहां दोऊ हात धरितपें डारि । सरीर नेत्र आलसमें होय । सो श्रस्तालस विकि । ६ ।

७ जानुगत बेठिक ॥ जहां दोऊ गोडा धरतीपें लगाय बिज्ये । सो जानुगत बेठिक ॥ यह होम देवार्चना दीनयाचनामे होय । ७ ।

८ मुक्तजानु बिठिक ॥ जहां एक गोडा उंची राखिये । एक गोडा धरतीसें नमाइये । सो मुक्तजानु बेठिक । ८ ।

९ विमुक्त ।। जहां सोक चिंतामें धरतिषे हात पांव फेलाइ परे । सो विमुक्त । ९ । इति नव बैठक संपूर्णम् ॥

॥ अथ सीयवेके छह स्थानकको लछन लिख्यते ॥

9 आकुंचित शयन ॥ जहां सीतकी ऋतुमें सरीर संकोचके पेटसीं गोडा लगाय सोवे । सो आकुंचित शयन । १ ।

२ सम शयन ॥ जहां ऊपरकों मुख राखि तिरछे हात फेलाय । सो सम शयन । २ ।

३ प्रसारित शयन ।। जहां एक हानसों निकया लगाय सुखस पांव पसारि सोवे । सो पसारित शयन । ३ ।

४ विवर्तत शयन ॥ जहां सस्तके लागिवेसों । अथवा रोगपीडासों उंचो सोवे । सो विवर्तत शयन । ४ ।

५ उद्वाहित शयन ॥ जहां कोहणी धरतीर्प टेक्नि कंबिं माथो राखि टियोडो सीवे । सो उद्वाहित शयन । ५ ।

६ नत शयन ॥ जहां कछूइक पिंडि पसारि हात फेटाइ सिथट सोवे ।

सो नत शयन ॥ खेद भूल आलसमें होवे । ६। इति शयन स्थानको छह भेद-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ चरनकी गतिको नाम चारि ताको नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां एक संग चरन । १ । पिंडि । २ । जंघा । ३ । कटि । ४ । इनको हलाइवो चलाइवो आदि ज्यो कर्म नृत्यमें होय । ताको चारिको कारन ज्यायाम हैं । सो च्यारि प्रकारको हैं ॥

जहां एक चरनसों नृत्यकी रचना साधे। सो च्यारि व्यायाम एक।१। दोय चरनसों नृत्यकी रचना साधे। सो कटन। २। ऐसें तीन करन कीजिये। सो खंड व्यायाम। ३। त्र्यस्त्र तालमें तीन खंड सों चतुरस्र तालमें च्यारि खंड। सो मंडल व्यायाम जांनिये। ४।

अथ च्यारांके नाम-लछन लिख्यते ॥ या चारिके दोय भेद हैं ॥ भूमिचारि । आकासचारि । तहां भूमिचारिके सोछह भेद कहेहें ॥

- १ समपादचारि ॥ जहां समपाद स्थानकसों दोऊ चरन । वा चरनके नख बरोबर राखे । तो समपादचारि । १ ।
- २ स्थितावर्ताचारि ॥ जहां एक चरन धरि दूसरे वांके आगें ल्याय बांई ओर धरिये । फेर थिर चरन उठाय । दूसरे चरनकी बरोबर राखिये । सो स्थितावर्ताचारि । २ ।

३ शकटास्यचारि ॥ जहां चरनंक अग्रभागसों चलत देह मरोडीये । हात पसार मिलावे । सो शकटास्यचारि । ३ ।

४ विच्यवाचारि ॥ जहां बरोबरि पांव धरि उछिट चरनके अग्रसों ठाडो होय । सो विच्यवाचारि । ४ ।

५ अध्यर्धिकाचारि ॥ जहां दोऊ पांव सवा हातके अंतरसों बांये दाहिनें चलावे । सो अध्यर्धिकाचारि । ५ ।

६ चापगितिचारि ॥ जहां एक विरुक्ति आगेंको जाय ततकाल पाछो आवे कछुक कृदिकें दाहिनों बांयों पग वेगवेगसें आगें पिछे चलांवे । सो चापगितचारि । ६ ।

७ एलकाकीडिताचारि ॥ जहां चाषचारि कछूइक कृदि करि

- ८ समोसरितमत्तस्त्रीचारि ॥ जहां एक चरनके पीछे दूसरे चरन आगले तलवाके जोर राखिये जांघ दोऊ मिले जब आगें पिछे चलिये। सो समोसरितमत्तिलीचारि । ८।
- ९ मत्तस्त्रीचारि ॥ जहां जांघ दोऊ मिले चरन तिरछ जाय घुमत चले गिरत परत । सो मत्तसीचारि । ९ ।
- १० उद्धिताचारि ॥ जहां एक पांव सम राखिये दूसरे पांवको आगलो तलवा वांहि पांवके आगें पिछे चलिये । सो उद्दिताचारि । १० ।
- ११ स्यन्दिताचारि ॥ जहां बांया पांव सम ठाडो राखिये । दाहिणों पांव पांच तर अंतर तिरछो पसारिये । सो स्यन्दिताचारि । ११ ।
- १२ अपस्यंदिताचारि ॥ जहां दोऊ पग पसारिके दाहिणों पग ठाडो कीजिये । बांयो पसारिये ॥ अथवा बांयो ठाडो कीजिये ॥ दाहिणों पसारिये । सा अपस्यंदिताचारि । १२ ।
- **१३ बद्धाचारि ।।** जहां दोऊ जंघा मिछि करि फर फिरावे पांवके आगरे तलवाको जोरसें फिरावे । सो बद्धाचारि । १३ ।
- १४ जनिताचारि ॥ जहां बांयो हात मुष्टिक हस्तक केरि छाति उपर राखिये । दाहिणें हात जैसे सोभा होय तेसें राखिये ॥ पांवके आगछे चरन चित्रये । सो जनिताचारि । १४ ।
- १५ उरुद्वृत्ताचारि ॥ जहां दोऊ चरनकों आगें पिछे राखिकें । एक पांवके अग्रसों दूसरे चरनकी एडीसों चले । सो उरुद्वृत्ताचारि । १५ ।
- १६ उत्संदिताचारि ॥ जहां चिट अंगुरीके भागसों अंगुठाके भागसों चरण हलावे । से। उत्संदिताचारि । १६ । इति भूमिचारिके नाम षांडश लखन संपूर्णम् ॥
 - ॥ अथ आकासचारिके पाडस नाम-लक्चन लिख्यंत ॥
- 3 अतिकांताचारि ॥ जहां एक चरण सम राखिकें । दूसरे पग कछूक उठाय पसारिये ॥ च्यारि कृदि ठाडो होय । सो अतिकांताचारी । १ ।

२ अपक्रांताचारि ॥ जहां पहले बद्धाचारि कीजिये पीछे एक पाद उठाइये । कछुक बांको करि । दाहिनें ओर धरतिये राखिये । सो अप-कांताचारि । २ ।

३ पार्श्वकांताचारि ॥ जहां दाहिनों वांयो पग चूतडपर्यंत उठाय बांको धरि धरतिपे राखिये । सो पार्श्वकांताचारि । ३ ।

४ मृगप्लुताचारि ॥ जहां चरण बांको करि कछुइक कूदि धरितपें राखिये। दूसरो चरण ऐसेंहि राखिये। सो हरिणप्लुताचारि वा मृगप्लुताचारि।४।

५ ऊर्ध्वजानुचारि ॥ जहां बांका चरण छाति बरोबर गोडा राखिये । दूसरो चरण थिर ठाडो राखिये । सो ऊर्ध्वजानुचारि । ५ ।

६ अलाताचारि ॥ जहां एक चरण पसारि दूसरे पगको तलवा ऊपर करि आगें राखे । सो अलाताचारि । ६ ।

७ सूचिचारि॥ जहां चरण बांको करि ऊंचो करि पसारिये। सो सूचिचारि। ७।

८ नूपुरपादिकाचारि ॥ जहां चरण बांको करि । एडी पिछेको लगाय । आगले तलवाके अग्रभाग धरतिर्पे राखिये । सो नूपुरपादिकाचारि । ८ ।

९ दोलापादचारि ॥ जहां चरण बांको करि । ऊछलायमें झुलाइये । दसरे चरणमें । एही कीडा कीजिये । सो दोलापादचारि । ९ ।

१० दंडपादचारि ॥ जहां एक चरण सम राखिये। दूसरे चरण आगले तलवाके जोर राखिये। वेगसें पसारियं सनमुख होय । सा दंडपादचारि । १० ।

११ विद्यद्भांताचारि ॥ जहां एक पाय धरतिर्पं राखे दूसरे चरण पसार । आगें माथेपर राखिकें । अमाय धरतिर्पे राखे । सो विद्यद्भांताचारि । ११ ।

१२ अमिरिचारि ॥ जहां चरण पहले आर्गे राखिये ॥ पिछे पगके तलवाके जोर फिरे । सो अमिरिचारि । १२ ।

१३ भुजंगत्रासिताचारि ॥ जहां एक पगकी एडीपर दूसरे पगकों आगिछे तछवा राखिये जांघपर हात फिराइये । सो भुजंगत्रासिताचारि । १३ ।

१४ आक्षिप्ताचारि ॥ जहां दाहिनो चरण बांयो चरणके पास लाइये ॥ हात लताहस्तक कीजिये । सो आक्षिप्ताचारि । १४ । १५ आविद्धाचारि॥ जहां चरण बांयो सम राखिकें ॥ दाहिनो पग बांये पगके उपर तिरछो करि पसारि। वहां फिराइ धरतिपे डारिये। सो आविद्धाचारि। १५।

१६ उद्धृताचारि ॥ जहां आविद्ध चरण कीजिये दूसरे चरणके घूंटे पर राखिये कछूक कुदि कर भविर किर चरण तहांको तहां राखिये ॥ इति भांति दूसिर ओरह् करिये । सो उद्धृताचारि । १६ । इति भूमि—आकास-चारिके नाम—लछन संपूर्णम् ॥

सोलह भूमिकी सोलह आकासकी मिलिक बतीस चारि जांनिये ॥ यह बतीस मारगी चारि हें ऐसें हि देसी भूमिचारि पांतिस तिनको नाम-लछन लिख्यते॥

- १ रथचकाचारि ॥ जहां चतुरस्र स्थानक रिच दोऊ चरणमें लाइकें॥
 आगें वा पिछे पसारिये । सो रथचकाचारि । १ ।
- २ परावृत्ततलाचारि ॥ जहां दोऊ चरणके तलवा ऊंचे करि बाहिरकों पग पसारे । सो परावृत्ततलाचारि । २ ।
- ३ नूपुरविद्धाचारि ॥ जहां दोऊ पावनको स्वस्तिक रचि पांवको अग्र-भाग वा एडी न्यारि कीजिये । सो नूपुरविद्धाचारि । ३ ।
- ४ तिर्यङ्मुखाचारि ।। जहां वर्धमान स्थानक रचि दोऊ पांव तिरछे वेगसें सरकावे । सो तिर्यङ्मुखाचारि । ४ ।
- ५ मरालाचारि ॥ जहां नंद्यावर्तक स्थानक रचि दोऊ पांवकी एडीवा अग्रभाग चलाइ आगें पसारिये । सो मरालाचारि । ५ ।
- ६ करिहस्ताचारि ॥ जहां हंसस्थानक रचि दोऊ तिरछे पावनसों धर-तीपे थिसे । सो करिहस्ताचारि । ६ ।
- ७ ुन्लीरिकाचारि॥ जहां नंद्यावर्तक स्थानक रचि तिरछे चरन चलावे। सो कुलीरिकाचारि। ७।
- ८ विश्विष्टाचारि ॥ जहां पार्श्वविद्ध स्थानक रचि दोऊ पांव जुदे जुदे चलावे । सो विश्विष्टाचारि । ८ ।

- ९ कातराचारि ।। जहां नंद्यावर्तक स्थानक रचि । दोऊ पांव पीछेको चलावे । सो कातराचारि । ९ ।
- १० पार्ष्णिरेचिताचारि ॥ जहां पार्श्वगत स्थानक रचि एडी न्यारि कीजिये । सो पार्ष्णिरेचिताचारि । १० ।
- ११ ऊरुताडिताचारि ॥ जहां एक पांवसों ठाडो होयके दूसरी पांव ऊंचो करि । फर धरतिके पावसों कृदि धरतिको पांव उछाछि । या पांवसों दूसरे पांवकी जांच छुवे । फेर धरतिषे टेकिये । सो ऊरुताडिताचारि । ११ ।
- १२ उरुविणिचारि ॥ जहां दोऊ पावनके स्वस्तिक रचि । फेर तिरछे चरन करि धरतींपें धिसं दोऊ जंघा मिलावे । सो उरुवेणिचारि । १२ ।
- १३ तलोट्धृताचारि ॥ जहां अंगुरीके जोरसों सितावि दोऊ पांव चलावे । सो तलोट्धृताचारि । १३ ।
- १४ हरिणत्रासिकाचारि ॥ जहां दांऊ चरन तिरछे मिलाई उछा-लिये। फर वेसेंहि धरतिपें ठाडो रहें। सो हरिणत्रासिकाचारि। १४।
- १५ अर्धमंडालिकाचारि ॥ जहां दोऊ पांव मिलाई । धरतिके एक चरन । बाहीर सरकाइ । धरतिपें विसि पहले हातनमें ल्यावे । ऐसेंहि दुसरो चरन कीजिये । सा अर्धमंडलिकाचारि । १५ ।
- १६ तिर्यक्कुंचिताचारि ॥ जहां दोऊ पांव धरि एक पांव संकोचि तिरछो चलावे । एसेंहि दूसरो पांव करे । एसें दोय तीन वार कीजिये । सो तिर्य-क्कुंचिताचारि । १६ ।
- भ १७ मदालसाचारि ॥ जहां मतवोरकी सिनाई । एसें तेंडे चरन धरे । सो मदालसाचारि । १७ ।
- १८ तिर्यक्रसंचारिताचारि ॥ जहां एक पांव संकोचि उछाल वलावे। दूसरे पांव तलवाके जोरसों तिरछो चलावे। सो तिर्यक्संचारिताचारि । १८ ।
- १९ कुंचिताचारि ॥ जहां दोऊ पांव संकोचि । एक एक पांव उछारि उछारि आगें धरिये । सो कुंचिताचारि । १९ ।
- २० स्तंभक्रीडनिकाचारि ॥ जहां एक पांव तिरछो पसारि यांकी पांसूके । दूसरे चरनको तलुवा लगावे । सो स्तंभक्रीडनिकाचारी । २० ।

तृतीय नर्तनाध्याय-देसी भूमिचारिके नाम और लखन. ६५

२१ लंधित जंधिकाचारि ॥ जहां खंड सूचि स्थानक रचि । एक पांव तिताव खेंचि । दूसरे पांवसों वा चरनसों उलंबे । सो लंबित जंबिकाचारि । २१ ।

२२ स्फुरिताचारि ॥ जहां दोऊ चरनेमं एक चरनके तलवासों धरित छुट । दूसरे वरन आगेंको येग चलावे । सो स्फुरिताचारि । २२ ।

२३ अपकुंचिताचारि ॥ जहां दोऊ पांव सकोरि पिछेको चलावे । सो अपकुंचिताचारि । २३ ।

२४ संधद्धिताचारि ॥ जहां विषमसूचि स्थानक रचि उछलीके दोऊ पांव भिराय : धरतीपं धरे । सो संघदिताचारि । २४ ।

२५ खुत्ताचारि ॥ जहां चरनके अग्रसों । धरितको ताइन करि चले । सा खुत्ताचारि । २५ ।

२६ स्वस्तिकाचारि ॥ जहां दोऊ चरन मरोडी बांये दाहिने मिलाय। स्वस्तिकके आकार रचे । से। स्वस्तिकाचारि । २६ ।

२७ तलद्शिनि ॥ जहां पांवकी अंगुरी स्थानपर रखके थोड़ा तिरिछ करिक अलग करे ओर पीछेके भूमीको स्पर्श करे । सो तलदर्शिनि । २७ ।

२८ पुराटिकाचारि॥ जहां दोऊ पग धरि उछिछपगसों पगको ताइन कीजिये। फेर ठाडो होय। मो पुराटिकाचारि। २८।

२९ अर्धपुराटिकाचारि ॥ जहां एक पांव उछारि उछारि उपरि रास्ति वा पगसों दूसरे पांवको उछालिताडन कीजिये । सो अर्धपुराटिकाचारि । २९ ।

३० सारिकाचारि ॥ जहां एक पगसीं ठाडो होय । दूसरे पग आर्गेको चढावे । सा सारिकाचारि । ३० ।

३१ स्फुरिकाचारि ॥ जहां दोऊ पग अनुक्रमसों आंगे पिछे चलावे । सो स्पुरिकाचारि । ३१ ।

३२ निकुट्टिकाचारि ॥ जहां चरनका अग्रभाग बांको करि चाले । सा निकुटिकाचारि । ३२ ।

३३ लताक्षेपाचारि ॥ जहां एक चरन पिछे चलाय । फेर आगेंको चलाय । धरतिर्पं ताडन करे । सो लताक्षेपाचारि । ३३ । ३४ उड्डुस्खिलितिकाचारि ॥ जहां एक पांव तिरछो करि । उपरको चडाइये । सो उड्डस्खिलिकाचारि । ३४ ।

३५ समस्खितिकाचारि॥ जहां दोऊ पांव तिरछे आगे पिछे धरितपे उछलते । एक संग धरितपें चलाइये । सो समस्खिलितिकाचारि । ३५। इति पेतिस देसी भूमिचारिके नाम संपूर्णम् ॥

॥ अथ देसिआकासचारिउगणीस ताको नाम-लछन लिख्यते ॥

- १ विद्युद्धांताचारि ॥ जहां एक पांव धरतिथे राखि । दूसरे पग आगे-को पसारि माथेथे फिराय । भूमिपर राखिये । सो विद्युद्धांताचारि । १ ।
- २ पुरः क्षेपाचारि ॥ जहां एक पग बांको करि उंची उछाछ वेग पसार भिमपर धरिये । सो पुरः क्षेपाचारि । २ ।
- ३ विक्षेपाचारि ॥ जहां बारबार चरनकों आगें पसरि सकोरिये । सी विक्षेपाचारि । ३ ।
- ४ हरिणा जुताचारि ॥ जहां दोऊ पग पसारि छूटि पग मिलाइ धरित वें होय । सो हरिणा जुताचारि । ४ ।
- ५ अपक्षेपाचारि ॥ जहां एक पांव उठाइ । जंघापें धरि नितंबताई घढावे । सी अपक्षेपाचारि । ५ ।
- ६ डमरिचारि ॥ जहां पांव टेडो करि बांई दाहिनि ओर फिराय अपनें स्थानकपें राखिये । सो डमरिचारि । ६ ।
- ७ दंडपादाचारि ॥ जहां स्वस्तिक चरन रिच । फर खोछि बांयों दाहिनों उंचो निचो पग फिराय स्थानपे राखे । सो दंडपादाचारि । ७ ।
- ८ अंधिताडिताचारि ॥ जहां दोनु पांव पसारि उछिछ आकासकी बोर पांवके तछवा करि धरतींपें ठाडो होय । सो अंधिताडिताचारि । ८ ।
- ९ जंघालंघनिकाचारि ॥ जहां एक पांव सकोरि उछि दूसरे पांवको वा पगको उठावे । सो जंघालंघनिकाचारि । ९ ।
- १० अलाताचारि ।। जहां दोऊ पांव पिछेको स्वस्तिक रचि कृदि एडीके जोरसों ठाडो होय । सो अलाता चारि । १० ।

तृतीय नर्तनाध्याय-देसिआकासचारिके उगणीस नाम और लछन.६७

- 99 जंघावर्ताचारि ॥ जहां एक पांवकों भीतरकी ओर भ्रमाय । दूसरे गोडोंपें तलवा धर फेर वाहि ओर भ्रमावे । सो जंघावर्ताचारि । ११ ।
- १२ वेष्टनचारि ॥ जहां एक पावसों दूसरे पांव लपेटिये । सो वेष्टन-चारि । १२ ।
- १३ उद्देष्टनचारि ॥ जहां एक पांव दूसरे पांवमें लपेटि पिछेको पसारिये । सो उद्देष्टनचारि । १३ ।
- १४ उत्क्षेपा चारि ॥ जहां एक पांव सकोरि दूसरे पांवके उपर धरिये । सो उत्क्षेपाचारि । १४ ।
- १५ पृष्ठोतक्षेपाचारि ॥ जहां एक पांव सकोरि पीछेके चलाय दूसरे पावमें राखे । सो पृष्ठोतक्षेपाचारि । १५ ।
- १६ सूचिचारि ॥ जहां एक पांव दूसरे पांवके उपर राखि । पीछेके ओर पसारिये । सो सूचिचारि । १६ ।
- १७ विद्धाचारि ॥ जहां दोऊ पांवकों स्वस्तिक रिच । खोछि एक पांव झूटाइय । सो विद्धाचारि । १७ ।
- १८ प्रावृताचारि ॥ जहां सुंदरतासीं सरीरको मरोर । सो पावृता-चारि । १८ ।
- १९ उल्लोलचारि॥ जहां दोऊ चरनमें उल्लाल रिच। च्यारो तरफ भ्रमावे। सो उल्लोलचारि । १९ । इति उगणिस आकासचारिके नाम-लछन संपूर्णम् ॥

॥ ऐसें छियासी । ८६ । मार्गी देसी जांनिये ॥

अथ अंगहारको नाम—लछन लिख्यते ॥ जो ये अंगहार श्रीशिव-जीके अंगमे रहेहें । यातें इनको नाम अंगहार हें । नृत्य आदिकमें विलास-जुत अंगनको मीरिवो उंचो निचो करिवो । सो अंगहार हें । ये रंगभूमीमें महा सुभ फल देत हैं । असुभकों दूरि करत हैं । यातें अंगहार नृत्यमें अवस्य रचि । एक सभापतीको सभाके सिगरे लोगनकों वा नगरदेसकों आनंदके दाता हैं । तहां अंगहार कहिवेकों करनके समूहनके नाम कहे हैं । दोय करनको नाम मात्कों । १ । तीन करनको नाम कलापा । २ । च्यारि करनको नाम खंड । ३ । पांच करनको नाम संघात । ४ । ओर कोऊ आचारिज दोऊ करनको कलापा तीन करनको खंड च्यारि करनको संघात कहत हैं । यहां सब अंग-हारके करनमें एक गुरु अछिरकी एक कला जांनिये ॥

॥ अथ चतुरस्र तालमं वरतिवकों सोलह अंगहार हं तिनको नाम-लखन लिख्यते ॥

- 9 स्थिर हस्त ॥ जहां दां इहात पसारि फर उठाइ स्वस्तिक रिवये फेर समपाद स्थानकसों । फेर एक वामों हात उठाइ उंचो कीजिये । फेर पत्यालीढ स्थानक रिच । फेर निकृदक रिच । फेर उठदवर्तक रिच आक्षिमके कर करि नितंब हस्तक रिचये हस्तक किट छिन रिचये । अंगहारके अंतिम स्थिर हस्तक रिचये । सो अंगहारको नाम स्थिर हस्त हे ॥ १ ॥
- २ अंगहारपर्यस्त ॥ जहां तलपुष्पपुर अपविद्ध वर्तिन निकृदक् ऊरु-धृत आक्षिप्त उरोमंडल नितहस्तक करि । हस्तक कटिछिन्न । ए दस करन होय । सो अंगहारपर्यस्त ॥ २ ॥
- ३ अंगसूचिविद्ध ।। जहां पहले अलपल्लव नामक करन कीज । पीछे सूचि आक्षिप्त आवर्त । निकुद्दक ऊरुद्र्यृत । आक्षिप्त उरोमंडल कि हस्त कटि-छिन । ए करन कमसों रिचये । सो अंगसूचिविद्ध ॥ ३ ॥
- ४ अपराजित ॥ जहां पहले दंडक चरन रचि विक्षिप्त आक्षिप्त करिये पासु साथ ल्याइये । दाय वर निकृदक करन करिये । पीछे आक्षिप्त उरोमंडल करिहस्तक छिन करिये । सो अंगहार अपराजित ॥ ४ ॥
- ५ वैशाखरंचित ।। जहां सरीर भ्रमाय वैशाखरेचित रचि । आपविद्ध इस्तक रचि फेर नूपुर भुजंगत्रासित उन्मतलीन ऊरुद्यृत उरोमंडल करिहस्तक कटिछिन कीजिये । सो वैशाखरेचित ॥ ५ ॥
- ६ पार्श्वस्वस्तिक ॥ जहां दिगस्वस्तिक करि दोऊ पांसूके अर्धनिकृटक करन करि पीछे हातेंपं खेची पिंडिपें न्यावे । फेर ऊरुद्धृत आक्षिप्त नितंब करि-हस्तक कटिछिन्न करन कीजिये । सो पार्श्वस्वस्तिक अंगहार ॥ ६ ॥
 - ७ भ्रमर ॥ जहां पहले नुपुर करन करि आक्षिप्त करन की।जिये । ताहि

तृतीय नर्तनाध्याय—चतुरस्र मालह अंगहारके नाम और लछन. ६९ पछि छित्र सूचि नितंब करि उरोमंडल कटिछित्र य करन कीजिये । सो भ्रमर नाम अंगहार ॥ ७ ॥

- ८ आक्षिप्तक ॥ जहां नूपुर विक्षिप्त रचि । अलातक आक्षिप्त उरोमंडल नितंब करिहस्तक कटिछिच करन कीजिये । सो आक्षिप्तक अंगहार ॥ ८ ॥
- ९ परिच्छिन्न ॥ जहां पहली समपाद स्थानक करिये। ना पीछे परि छिन्न आविद्ध चरन कीजियं। भ्रमरी तांकें पीछे अतिकांत करन वाम सूचि भुजंग त्रासित करि हस्तक कटि छिन्न य करन कीजिये। सा परिच्छिन अंगहार ॥ ९ ॥
- ५० अंगहार मद्विलिमित ॥ जहां दोऊ हातनसों दोला हस्तक रिच भ्रमायके मिलाय स्वस्तिक की ने । फर विलिग रेचित हस्तक रिच फर संरचित रिच निकुद्दक करन करि ॥ पिछे उरुद्धृत करि हस्त कटी छिन्न ये करन की जिये । सो अंगहार मद्विलिसित ॥ १० ॥
- 19 अंगहार आलीढ ॥ जहां एक हातमें आलीढ हस्तक ॥ दूसरे हातमें व्यंसन हस्तक रचि । कंधेपें दोऊ हात रारंग पीछे वा वेणवेमें नूपुर करन रचि दाहिने पांवसों आक्षिप्त कीजे ॥ पीछे उर्गमंडल हस्तक कीजिये । सो अंगहार आलीढ ॥ १ ॥
- १२ अंगहार आच्छुरित ॥ जहां नूपुर करन करि पीठको वांसो भ्रमाय फेर व्यंसित करन करि वांसो फिरावनों फेर अला सूचि करि हस्तकी छिन्नें करन कीजिये। सो अंगहार आच्छुरित ॥ १२ ॥
- १३ अंगहार पार्श्व व्छेद।। जहां वृश्विक ककुटक रिचये ऊर्ध्वजानु रिच। पिछे नूपुर करन कीजिये ॥ फर आक्षिप्त स्वस्थिक किर वासो भ्रमावे ॥ पीछे उरो- मंडल नितंब किर ॥ हस्तक किट छिन ये करन कीजिये। सो अंगहार पार्श्वच्छेद ॥ १३ ॥
- 18 अंगहार अपसर्पित ॥ जहां अपकांत पाद रिच व्यंवसित हस्तक रिच ॥ पछे उद्देष्टित करन कीज । पीछे अर्थसूचि रिच ॥ पछे विक्षिप्त कटि छिन्न मुष्टिक हस्तक हस्त आक्षिप्त पीछे कटि छिन्नहस्त ये करन कीजिये। सो अंगहार अपसर्पित ॥ १४ ॥

१५ अंगहार मत्ताकी है।। जहां वांसो भ्रमावे पीछे नूपुर करन की जिये पीछे भुजंगत्रासित वैशाखरेचित आक्षिप्त की जे। फेर मृगप्छुत करि॥ फेर एक एक फेरि खाय उरोमंडल नितंब करि॥ हस्त कटि छिन्न ये करन की जिये। सो अंगहार मत्ताकी ह॥ १५॥

१६ अंगहार विद्यद्भांतः ॥ जहां पहले बांये हात पांवमें अर्धसूचि दाहिनें हात पांवमें विद्युद्भांत ॥ कर दाहिनें हात पांवमें अर्धसूचि वामें हात पांवमें विद्युद्भांत ॥ कर बांये हात पांवमों छिन्न अपकांत दोऊ रचि कर तल-वृश्विक रचि किट छिन्न रचिये । सो अंगहार विद्युद्भांत ॥ १६ ॥ इति चतुरस्र तालनके प्रमानसों सोलह अंगहार संपूर्णम् ॥ ॥ अथ व्यस्त तालके प्रमानमें सोलह अंगहारको नाम-लछन लिख्यते ॥

१ विष्कंभापसृत ॥ जहां कृदृत अर्धनिकृदृत दोऊ पांसूपे रिच ॥ पीछे भुजंगत्रासित करि हात रेचित करि । फीराय पताक दिखावे ॥ फेर उरोमंडल छता करि कटि छिन्न ये । करन कीजिये । से विष्कंभापसृत ॥ १ ॥

२ मत्तस्वित ।। जहां मनली नाम करन करि दाहिनों हात फीराय भितर ले आइये ता पीछे कांधे उपर कांधे अलप्रक्षव कींजे। पीछे निहंचित अपविद्ध खलित करि हस्त कटि छिन्न ये करन कींजिये। सो अंगहार मत्त-स्वलित ॥ २ ॥

३ गतिमंडल ॥ जहां मंडल स्थानक रचि स्वस्तिक हस्तक कीजे ॥ फेर नुपुर पाद रचि उन्मत उदय घटिल कीजिये । पीछे मतली आक्षिप्त उरोमंडल कटि छिच करन कीजिये । सो अंगहार गतिमंडल ॥ ३ ॥

४ अपविद्ध ॥ जहां अगविद्ध करन रचि सूचिविद्ध करन कीजिये ॥ फर दोऊ हात उद्देष्टित करन करि वासो भ्रमावे फर उरोमंडल हस्तक रचि कटि छिन्न करन कीजिये । सो अंगहार अपविद्ध ॥ ४ ॥

५ विष्कंभ ॥ जहां निकृदक करन निकुंचित पाद रचि अंचित पाद रचिये फेर ऊरुद्धृत अर्ध निकृदक भुजंग त्रासित रचि दोऊ हातमें उद्देष्टित करन कीजिये । सो अंगहार विष्कंभ ॥ ५ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-ज्यस्रतालके सोलह अंगहारके नाम और लखन. ७१

- ६ उद्घृद्धित ॥ जहां दोऊ हातको उद्देष्टित करनसों फिराय बाहर कीजिये फेर अपविद्ध करनसों छातियें ल्यावे दोऊ चरनमें निकुद्दक करन कीजिये पीछे उरोमंडल हस्तक रचि बांइ पासूंगें हात राखि नितंब करि छिन्नये करन कीजिये। सो अंगहार उद्घृदित ॥ ६ ॥
- 9 आक्षितरेचित ॥ जहां हात पांवनमें रिचक स्वस्तिक रिचकसों भ्रमावें हात पगनको उछि निचि पीठ रेचकी भ्रमावे पीछे उद्वृत आक्षिप्त उरो- मंडल ये करन कीजिये। सो आक्षिप्तरेचित ॥ ७ ॥
- ८ रेचित ॥ जहां हात १ग भ्रमाय पसारिये। ओर पांसू नमाय भ्रमावे ॥ केर यहि रीति करे पीछे सरीर भ्रमाय रेचित करन उरोमंडल कटि छिन्न करन कीजिये। सो अंगहार रेचित ॥ ८ ॥
- ९ अर्धानिकुट्टक ॥ जहां दोऊ चरनमें नूपुर करन रिच हात पग देग पसारिये ॥ एक वार फेर वासो अमाय करि हस्त कटि छिन एक हस्तक कीजे। सो अर्धनिकृटक ॥ ९ ॥
- १० वृश्चिकापमृत ।। जहांमें वृश्चिक करन रचि छता हस्तक रचिये फेर होऊ हात उद्देष्टित करनसों फिराय नितंबेंगे राखि नितंब करन कीजे। फेर करि हस्त कटि छिन्न ये करन कीजिये। सो अंगहार वृश्चिकापसृत ॥ १०॥
- ११ अलात ॥ जहां दोऊ हातेमें दोय वर स्वस्तिक रिच हात पसा-रिये। फेर लिन करन ऊर्ध्व जानु निकुंचित अर्थ सूचि विक्षिप्त उद्धृत आक्षिप्त पीछे करि हस्तक कटि छिन्नें करन कीजिये। सो अंगहार अलात ॥ ११ ॥
- १२ परावृत्त ॥ जहां दाहिनें अंगसों शकटास्य करन रचि फेर अठात भ्रमर करन करि कपोलें हातकों निकृद्दत करन कीजिये । पीछे करिहस्तक कटिछिन्न रचि सरीरकों ऊंचो निचो करिये । सो अंगहार परावृत्त ॥ १२ ॥
- १३ परिवर्तक रेचित ॥ जहां पहले माथे उपर दोऊ हातको स्वस्तिक रिच फेर उपरकों चलाइकें भ्रमावत दाहिनें हात सरीर बांये जांघ बराबर ल्यावे कर भ्रमावत उठाय बराबर ल्यावे लगाहस्तक रेचे फेर वृश्विक करन रेचित करिहस्तक भुजंगत्रासित आक्षिप्त स्वस्तिक रिचये। दूसरी वेर ऐसें किया

कीजिये। पीछे करिहस्तक कटिछिन्न कीजिये। सो अंगहार परिवर्तक रेचित॥ १३॥

१४ उद्धृत्तक ॥ जहां नूपुर करन रिच फेर भुजंगांचित गृधाविष्टिक विक्षिप्त उद्धृतके । ए करन दोऊ अंगसों रिचये । फेर एक अंगसों ऊरुधृत नितंबक तलवृथ्विक कटिछिच ए करन कीजिये । सो अंगहार उद्धृत्तक ॥१४॥

१५ संभ्रांत ॥ जहां एडं बावरकी सिनाई पग धरिकें उन पगनमें दोनु हात लगायवां सुचीपाद रचि आगें सरकावे ता पीछे दाहिनें हात खट्का-मुख वा मुष्टिहस्तकसों छातिपें गखे बांयो हात लताहस्तकसों छातिपें राखे। पीछे आक्षिप्त करन कीजिये। फर दोनु पांवनमें स्वस्तिक बांधि। पीछे नितंब-हस्तक उरोमंडल गंगावतरण कटिछिन ये करन कीजे। सो अंगहार संभ्रांत ॥ १५॥

१६ अंगहार स्वस्ति करेचित ॥ जहां दोनु हात पगरेचित चलाय बांये दाहिनें हात पांवनसों एक एक वर वृश्विक करन रचि फर बांये दाहिनें हात पगनसों निकुटत करन रचि फर लताकरहस्तक कटिछिन्नक रचिये । सो अंगहार स्वस्तिकरेचित ॥ १६॥

यह त्र्यस्न तालनके वरितवेमें सोलह अंगहार जांनिये ॥ ऐसें सोलह पहले चतुरस्न तालके । सोलह त्र्यस्न तालके ये बनीस अंगहार च्यारि प्रकारके बाजे सिहत गीतकी आदिमें नाटक करनाके आरंभमें रिचये । तो महाफल पाइये-इनही अंगहारनमें पहले कहे जे करन ते रिच अंगहार विना दूजो करन रचे रचावे । सो महा फल पावे ॥ इति बतिस अंगहारको लखन संपूर्णम् ॥

अथ रचिकको नाम—लछन लिख्यते ॥ सो वह रेचक च्यार हैं । पादरेचक । १ । हस्तरेचक । २ । किटरेचक । ३ । ग्रीवारेचक । ४ । ए च्यारि जांनिये ॥ यांका जुदाजुदा भेद कहूहूं ॥ जहां एडी अंगुठाके अग्रकी उठाय बाहिर भीतर गित हाय । सो पादरेचक । १ । जहां दोऊ हातमें हंसपक्षक हस्तक रचि च्यारों ओर कमसों एक एक हात बाहिर भितर भ्रमावे । सो हस्त-रिचक । २ । जहां किटिकों च्यारों ओर भ्रमावे सो । किटरेचक । ३ । जहां हातके अंगुठा अंगुरीक फेलाय तिरछे भ्रमावे ग्रीवा विलाससों हलावे सो ग्रीवारेचक

तृतीय नर्तनाध्याय-दम भूमिमंडलको भेद और लखन. ७३ । ४ । ए च्यारों रेचक अंगहारनमें वरितये ॥ इति रेचक लखन-नाम मंपूर्णम् ॥

अथ दस भूमिमंडलको लछन लिख्यते ।। जहां चरणके रचनामें पहेल मंडल रचिय । सो मंडल जांनिये । सो वांके दोय भेद हें । एक तो भूमिमंडल दूसरो नभमंडल । तहां भूमिमंडल तो शस्त्रके चलाइवेमें जांनिये । पराकममें आकासमंडल जांनिये । तामें भूमिमंडलके दस भेद हें । ताके नाम—राखन लिख्यते ॥

3 अमरमंडल ॥ जहां दाहिणें पांवमें जनित रचि । बांयो चरन चलावे। फेर दाहिनें पांवमें शकटास्य चारि रचि बांयो पांव चलावे। फेर दाहिणे पांव धाकटास्य रचि बांयो पा तिरछे चलावे। फेर दाहिनों पांव अमर करि बांयो पांव चलावे। सो अमरमंडल ॥ १ ॥

२ आस्कान्दितमंडल ।। जहां दाहिनो पांव अपर करिकें बांयो पांवमं अद्वित दाहिनेमें शकटास्य रचि उद्भृत होय वामें आर्चित कर दाहिनेमें अमावे रेचित वलावे। कर शकटास्य बांयेमें कीजिये। कर बांये पांवसों धरतीको ताडन कीजिये। सो आस्कंदितमंडल ॥ २ ॥

३ आवर्तमंडल ॥ जहां उद्धृत रिच जिनता चारि होय । समोसिरित मत्तली चारि । दाहिनें पांवमें क्रमसें कीजिये । फेर बांये पांवमें शकटास्य उद्धृत । दोय वेर चाषगांते कीजिये । फेर दाहिनें संकंदित करिके चलाइवो बांयेमें शकटास्य । फेर दोय वेर अमर दाहिनें पांवमें रिच । बांये पांवमें चाषगित चारि होय । सो आवर्तमंडल ॥ ३ ॥

४ शन्तरास्यमंडल ॥ जहां दाहिनं पांवमं जनितस्थितावर्ता शकरास्य एलकाकीडित । फर शकरास्य ये चारि रचिये । बांये पांवमें ये स्कंदित करिके चलाइवा । ओर शकरास्य कीजिये । जहां तांई मंडल पूरन होय तहां तांई । सो शकरास्यमंडल ॥ ४ ॥

५ अड्डितमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें उद्घटित चारि रचि अवर्तन करिके भ्रमाय चलावे ॥ बांये पांवमें शकटास्य रचि ॥ दाहिने पांवमें पृछापसर्पिता

चारि होय ॥ बांयेमें भ्रमर दाहिनों पांव चलाइ धरतिमें ताडन कीाजिये । सो अड्डितमंडल ॥ ५ ॥

६ समोसरितमंडल ॥ जहां समपादक स्थानक रिच दोऊ हात फेला-इके किटिंगें राखे ॥ फेर दाहिनों बांयो पांव कमसों फिराय ॥ आगे बांयो पग पसारे ॥ याहि रीतिसों च्यारों तरफ सभामें कीजिये ॥ फेर एक वेर गोलआकार भ्रमें । सो समोसरितमंडल ॥ ६ ॥

७ अध्यर्धमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमं जिनता चारि करि चलावे ॥ और बांये पांवमं च्यार भेदकी अद्वित ॥ चारि करि दाहिने पांवमं शकटास्य करे ॥ ऐसे च्यारो तरफ करि गोलाकार भ्रमण करे । सो अध्यर्धमंडल ॥ ७ ॥

८ एलकाक्रीडितमंडल ॥ जहां दोऊ चरण धरतिषे लगाय सूचि विद कीाजिये ॥ फेर एलाक्रीडित सूचि बद्ध वेरवेर कीाजिये ॥ फेर भ्रमर सूचि विद्ध रिच ॥ फेर आक्षिप्त रिच ॥ च्यारों तरफ भ्रमण करे ॥ सो एलकाक्रीडित-मंडल ॥ ८ ॥

९ पिष्टकुट्टकमंडल ।। जहां दाहिनें पांवमें सूचि बायेंमें अपकांत चारि होय ॥ ओर दोऊ पांवनमें अनेकवार भुजंगत्रासित रचि च्यारों तरफ गोलाकार श्रमावे । सो पिष्टकुटकमंडल ॥ ९ ॥

१० चाषगतिमंडल ॥ जहां दोऊ पांवमें चाष गति चारि रिचये ॥ फेर च्यारों तरफ गोलाकार भ्रमण करवावणों ॥ सो चाषगतिमंडल संज्ञा जांनिये ॥ १०॥ इति दस भूमिमंडलके नाम-लक्छन संपूर्णम् ॥

॥ अथ आकासमंडल दस हे तिनको नाम-लछन लिख्यते ॥

9 अतिकांतमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें ॥ जनिता शकटास्य चारि होय ॥ बांये पांवमें अलातचारि होय ॥ दाहिनें पार्श्वकांत बांयेमें सूचि भ्रमर-दाहिनेमें उद्धृत ॥ बांयेमें अलातचारि ॥ फेर दोऊ पांवमें छिन्न करन रिच ॥ ओर बांयो अंग बाहरि तरफ भ्रमावे ॥ बांये पांवमें अतिकांत दाहिनेमें दंडपिक्षक चारि होय । सो अतिकांतमंडल ॥ १ ॥

२ दंडपादमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें जनिता दंडपाद ॥ सूचि चारि रचि बांये पांवमें अपर दाहिनेमें उद्धृत बांयेमें अलातचारिमें पार्श्वकांत भुजंग त्रासित रिच ॥ बांयेमें अतिकांत फेर दाहिनेमं दंडपाद सूचि कर बांयेमें भ्रमर कीजिये । सो दंडपादमंडरु ॥ २ ॥

३ क्रांतमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें सूचि बांये पांवमें अपकांत ॥ फेर दाहिनेमें सूचि ॥ बांये पांवमें अपकांत एसें बारबार कीजिये । सो क्रांतमंडल ॥३॥

४ लिलितसंचरमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें ऊर्ध्वजानु सूचि॥ बांये पांवमें पार्थ्वकांत ॥ दाहिणे सूचि ॥ बांयेमें अपकांत ॥ दाहिने पार्थ्वकांत ॥ बांये चरनमें कांत ॥ फर दोऊ पांवनमें छिन्न करन रचि बांये पांवसो बाहिरि भ्रमरी रचिये। सो लिलितसंचरमंडल ॥ ४ ॥

५. सूचिविद्धमंडल ।। जहां दाहिनें पांवेमें सूचि भ्रमर पार्श्वकांत रचे ॥ बांये पांवमें अपकांत दाहिनेमें सूचि ॥ बांयेमें अपकांत दाहिनेमें पार्श्वकांत होय। सो सूचिविद्धमंडल ॥ ५ ॥

६ वामविद्वमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें सूचि अपकांत ॥ दाहिनेंमें दंडपाद बांये हस्त वा अपर ॥ दाहिनें पांवमें पार्श्वकांत रचि दाहिने हात उठावे ॥ दाहिने पांवमें दंडपाद उरुद्धृत ॥ बांये पांवमें सूचि अपर अलात रचि ॥ दाहिने पांवमें पार्श्वकांत बांयमें अतिकांत । सो वामविद्वमंडल ॥ ६ ॥

७ विचित्रमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें उरुद्धृत जनित विच्यव ॥ ओर समस्थितावर्त ॥ व्यावृत करनके भेद्सों कीजिये ॥ बांये पांवमें स्यंदित ॥ दाहिनें पावमें पार्थकांत ॥ बांये पावमें भुजंगत्रासित ॥ दाहिने पांवमें अतिकांत बांयेमें अपकांत होय । सो विचित्रमंडल ॥ ७ ॥

८ विहृतमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें विच्यव अमर करि ॥ बांये पांवमें स्यंदित रचे ॥ दाहिने पांवमें पार्श्वकांत ॥ बांये पांवमें स्यंदित ॥ दाहिनेमें उद्धृत ॥ बांयेमें अलात दाहिणेमें सूचि ॥ बांयेमें पार्श्वकांत ॥ दाहिनें पांवमें आक्षिप्त रचि भुजंगत्रासित होय ॥ बांये पांवमें अतिकांत होय ॥ सो विहृतमंडल ॥ ८ ॥

९ अलातमंडल ॥ जहां बांये पांवसों सूचि ॥ दाहिनें पांवसों अमरी रचि भुजंगत्रासिताचारि रचे ॥ बांयेमें अलातचारि ॥ एसें इनचारिनको छह बेर अथवा सात बेर कीजिये ॥ फेर गोलमंडलाकार च्यारों तरफ अमण करे ॥ दाहिने पांवमें अपक्रांत बांये पांवमें अतिकांता अमरी रचे । सो अलातमंडल ॥९॥

१० लितिमंडल ॥ दाहिने पांवमं सूचि ॥ बांये पांवमं अपकांत ॥ दाहिनें पांवमें पार्थकांत ॥ अथवा मुजंगत्रासित ॥ बांये पांवमें अतिकांत वा उरु-द्यृत ॥ फेर दाहिणें पांवनें अलातक फेर बांये पांवनें पार्थकांत सूचि ॥ फेर दाहिने पावनमें अपकांत ॥ बांये पांवनें अतिकांत होय । सो छाठितपंउल जांनिये ॥ १० ॥ इति आकासमंडल दस ताके नाम-लछन संपूर्णम् ॥

रिसेंहि दोउ पांवनमें च्यारिनके उलट पलट वरतवेसी अनेक मंडल होत हैं ॥ जहां जेसी मंडल रिचवा होय तेसी रिचये ॥ इति मंडल प्रकरण मंपूर्णम् ॥

॥ अथ कोहल मुनिके मतसों वर्तनांक नाम-लंबन लिख्यते ॥

- १ पताकवर्तना ॥ जहां पताक हस्तक रचि पहुचा तांई हात दाहिनों बांयो भ्रमावे । सा पताकवर्तना । १ ।
- २ आरालवर्तना ॥ जहां अवेष्टन करनसों तर्जिन आदि अंगुरी मूंदि छातिर्पे हात लगावे फेर चटी अंगुरी आदि अंगुरी मुंदिके उद्देष्टित करनसों छातिर्पे ल्याय अराल हस्तक रचे । सा आरालवर्तना । २ ।
- ३ शुक्रतुंडवर्तना ॥ जहां शुक्रतुंड हस्तक रचि छातिषे ल्याय उभी कीजिये । सो शुक्रतुंडवर्तना । ३ ।
- ४ अलपल्लववर्तना ॥ जहां उद्देष्टित करनसों चिट अंगुरी आदि च्यारो अंगुरी मुंदिये। व्यावर्त करनसों तर्जनि आदि अंगुरी खोलिकें अलपल्लव रचे। सो अलपल्लववर्तना। ४।
- ५ खटकामुखवर्तना ॥ जहां खटकामुख हस्तक रिच । नामि उपर दोळ हात राखे पहुचा तांई बांइ दाहिनि ओर भ्रमावे । सो खटकामुखवर्तना । ५ ।
- ६ मकरवर्तना ॥ जहां करहस्तक रिच । सन्मुख होके दाहिनें फिरावे । सो मकरवर्तना । ६ ।
- ७ ऊर्ध्ववर्तना ॥ जहां नृत्यके हस्तक करि । उपरहे कानिको चलावे। सो ऊर्ध्ववर्तना । ७ ।
- ८ आविद्धवर्तना ॥ जहां आविद्ध हस्तक रचि । दोऊ भुजा फिरावे । फेर आविद्ध हस्तक रचे । सो आविद्धवर्तना । ८ ।

तृतीय नर्तनाध्याय-कोहल मुनिके मतसों वर्तनाके नाम और लछन. ७७

- ९ नितंबवर्तना ॥ जहां नितंबपे ढिटी अंगुरी करि । दोऊ हात बांये दाहिनें भ्रमावे । फेर कंधापें चलाय नितंबमें ल्यावे । सो नितंबवर्तना । ९ ।
- १० रेचितवर्तना ॥ जहां स्वस्तिक रिचये । फर हात जुदे जुदे करि हंसपक्ष हस्तक रिच । सितावि भ्रमावे सो रेचित । सो रेचितवर्तना । १० ।
- ११ केशबंधवर्तना ॥ जहां माथेपं केशबंध हस्तक रिच चतुराइसीं माथो नीचो ल्यावे । सो केशबंधवर्तना । ११ ।
- १२ फालवर्तना ॥ जहां ऊर्ध्व मंडल हस्तक रिच भ्रमावे। सो फाल-वर्तना । १२ ।
- १३ कक्षवर्तना ।। जहां पार्श्वमंडल हस्तक रचि दोनो हातको पांसूपे भ्रमावे । सो कक्षवर्तना । १३ ।
- १४ उरोवर्तना ॥ जहां उरोमंडल हस्तक रिच छातिषे भ्रमावे । सी उरोवर्तना । १४ ।
- १५ खड़वर्तना ॥ जहां एक हातकी मूटि बांधि सकोरिये । दूसरे हातमें खटका मुख करि उंचो कीजिये । सो खड्गवर्तना । १५ ।
- १६ पद्मवर्तना ॥ जहां दांऊ हानने निलिन पद्मकों हस्तक राचि भ्रमाव । सो पद्मवर्तना । १६ ।
- १७ दंडवर्तना ॥ जहां दंडपक्ष हस्तक रचि दोऊ हात भ्रमावे । सो दंडवर्तना । १७ ।
- १८ पह्नववर्तना ॥ जहां दोऊ हातनमें पहन हस्तक रिच ॥ विलाससों भ्रमावे। सो पहनवर्तना । १८ ।
- १९ अर्धमंडलवर्तना ॥ जहां उर ओर हस्त पार्श्व मंडल हस्तक रचि भ्रमावे । सो अर्धमंडलवर्तना । १९ ।
- २० वितिवर्तना ॥ जहां विति हस्तक रिच सुंद्रतासों भ्रमावे । सो वितिवर्तना । २० ।
- २१ घातवर्तना ।। जहां उद्देष्टित करनसों छातिषें हात ल्याय कांधेसों उठाये ॥ फेर कंधेकी बराबर आविद्ध हस्तक रिव अंगुरीनकों मरोडीके । अलपद्म रिचये । सो घातवर्तना । २१ ।

२२ लिलिनवर्तना ॥ जहां लिलिन हस्तक रिच भ्रमावे । सो लिलिन-वर्तना । २२ ।

२३ गात्रवर्तना ॥ जहां अलपछव हस्त रिच सिगरे सरीरेषे अमावे । फेर अपविद्ध हस्तक ओधों रचे । सा गात्रवर्तना । २३ ।

२४ प्रतिवर्तना ॥ जहां अलपछत्र हस्तक रचि सरीर उछटि रीतसो भ्रमावे । सो प्रतिवर्तना । २४ ।

यह चोविस वर्तना है ॥ इहां सात वर्तना ओर कहत है ॥ शिरस्थवर्तना ॥ १ ॥ तिल्लकवर्तना ॥ २ ॥ नागवंधवर्तना ॥ ३ ॥ सिंहमुखवर्तना ॥ ४ ॥ वैष्णववर्तना ॥ ५ ॥ कलसवर्तना ॥ ७ ॥

यह साननेक नामनमें जे शिरस्थ आदि सात हस्तक हैं। तिनकों रिचकें भ्रमावे। तब ये सान वर्तना होत है।। इति हनुमानजीके मनसों वर्तनाके नाम-लछन मंपूर्णम्।।

॥ अथ चालकको नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां नृत्यमें नृत्य करिववारो अथवा स्त्री अनेक रचनासों भुजानको चलावे मनोहरताइलिये । सो चालक जांनिये । यो चालक अनेक प्रकारको हे तिनमें मुख्य इक्यावन ॥ ५१ ॥ कहत हे ॥ तिनको नाम—लक्छन लिख्यते ॥

9 विश्लिष्टवर्तित ॥ जहां दोऊ हाननको स्वस्तिक छातिषे रचि एक हात तिरछो चलावे ॥ दूसरो हात पांसूपे राखि । माथेकों नीचा करि वा उंचो करि हलावे । सो चालक विश्लिष्टवर्तित ॥ १ ॥

२ वपथुव्यंजक ॥ जहां स्वस्तिक रचि एक हात तिरछो करि नाभिषे ल्यावे फेर दोऊ हात सुंदरतासों । सब अंगनेषे चलावे सी चालक । वेपथुव्यंजक ॥ २ ॥

३ अपविद्ध ॥ जहां नामि कंठको बांये दाहिनं ओर गोल मंडला-कार भ्रमावे । सो चालक अपविद्ध ॥ ३ ॥

४ लग्हिचकसंदर ॥ जहां एक हस्तक तिरछो नाभिषं धिर फेर नाभी तरफ ल्याय । आंदोलन कर्णसों बाहिर पसारिये । फेर माथेषे दोनों हातसों विलाससों भ्रमण करे । सो चालक लहिरचकसुंदर ॥ ४ ॥

५ वर्तनास्वस्तिका ॥ जहां एक हात पासूपें राखि । दूसरे हातसों फिराय छूवे दूसरे हातसों स्वस्तिक रीतिसों मिछावे । सो ऐसे विछाससों वेर वेर करे । सो चालक वर्तनास्वस्तिका ॥ ५ ॥

- ६ संमुखीरथांग ॥ जहां बांये दाहिने हात करि तिरछे फेलाय भ्रमावे । फेर दोऊ कुहिणीया पासूर्वे धिर पहलेकि सिनाइ सुंदर भ्रमावे । सो चालक संमुखीरथांग ॥ ६ ॥
- ७ पुरोदंड भ्रम ॥ जहां एक हातकी मृटि रिच बाहिर भितरि । दूसरे हातकी चलाईके भ्रमाव । सो चालक पुरोदंड भ्रम ॥ ७ ॥
- ८ त्रिभंगी वर्ण मरक ॥ जहां च्यारों ओर दोऊ हात मिलाय वा च्यारों ओर न्यारा हात विलाससों भ्रमावे । सो गालक त्रिभंगी वर्ण सरक ॥ ८ ॥
- ९ दोल ॥ जहां निर्चे उपर हातके अत्रभाग करि तिरछे लोटवेकी रीतिसों भ्रमावे । सो चालक दाल ॥ ९ ॥
- १० नीराजित ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रचि । बाहिर काढिके पीछे तिरछेसो मंडल आकार भ्रमाय माथापं दाहिणें बांयो फिरावे । सो चालक नीराजित ॥ १० ॥
- 99 वामदक्ष विलासित ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रिच । बाई दाहिनें ओर लेटिनो भ्रमावे । सो चालक वामदक्ष विलासित ॥ ११ ॥
- १२ वर्तनाभरण ॥ जहांके हात कानेषें धरि दूसरे हात उद्देष्टित कर-नसों चलावे । सो चालक वर्तनाभरण ॥ १२ ॥
- १३ स्वस्तिकाश्लेष चालयन ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रिच कांधेकी ओर भ्रमावे । सो चालक स्वस्तिकाश्लेष चालयन ॥ १३ ॥
- १४ मिथोसंवीक्ष्य बाह्य ॥ जहां एक हात कांधेसें सिरपे सूबी जाय फेर अपनि पासूपें ल्यायके अमावे। ऐसें दूसरे हातकी किया करे। सो चालक मिथोसंवीक्ष्य बाह्य ॥ १४ ॥
- १५ मौली रेचित ॥ जहां एक हात कमरें धरे । दूसरो हात आर्गे फेलाय फेर माथे तांई दोऊ हात भ्रमावे फेर पहले ठिकानें लीजिये । सो चालक मौली रेचित ॥ १५ ॥

१६ मणिबंधासिकर्ष ॥ जहां दोऊ हात संग उठाय कांधेपें हलावे । दोऊ हातनकी कुहनी मिलावे । फेर एक हातकी लीलासों मुष्टि रिच बाहिर वा भितर भ्रमावे । दूसरो हात उंचो करे । सा चालक मणिबंधासिकर्ष ॥ १६ ॥

१७ अंसवर्तनक ॥ जहां पोहोचा मिणवंध कांध फिराय । ऊंचे होऊ हात करि माथो नमाय ऊपरकों हात भ्रमावे एक संग । अथवा कमसों। सो चालक अंसवर्तनक ॥ १७॥

१८ आदिकूर्मावतार ॥ जहां दोऊ हातनकों स्वस्तिक रिच । माथेके बांई दाहिनी ओर ऊपर नि.चे मंडलाकार भ्रमांव । फेर दोऊ हातनकों वर्तना-स्वस्तिक रिच । दोऊ पांसूगों मंडलाकार भ्रमांव । फेर दोऊ हात मंडलाकार छानिपें भ्रमांव । सो चालक आदिकूर्मावतार ॥ १८ ॥

१९ कलविंक्विशोद ॥ जहां माथेके ऊपर दोऊ हात आकासमें भ्रमावे । फेर पासूपें ल्याय निचे ऊपर भ्रमावे । सो कलविंक्विनोद ॥ १९ ॥

२० मंडलाय ॥ जहां एक हातकी मुठि छातिषें लगावे । दूसरे हात वाहिकी उपर बांयो दाहिनां भ्रमावे पांसू पास ल्यायकें । फेर चरननेषें ल्यावे । सो मंडलाय ॥ २० ॥

२१ चतुष्पत्राब्ज ॥ जहां ऐसें दूसरे हातकी किया कीजिये। सो धत्ष्पत्राब्ज ॥ २१ ॥

२२ वालव्यंजनचालन ॥ जहां दोऊ हातनके पहुचा कंधेरें धरि हात चौरकी सिनाइ हटाई नीचेकों गोट मंडलाकार भ्रमाय ल्यावे । सो वालव्यंजन-चालन ॥ २२ ॥

२३ विरुधवंधन ॥ जहां एक हातमें त्रिकोण हस्तक रिच आगें बांयो दाहिनों भ्रमावे । फेर मंडलाकार भ्रमावे । सो विरुधवंधन ॥ २३ ॥

२४ शृंगाटक वंधन ।। जहां त्रिकोण हस्तक रिव उपरतें भ्रमाय नीतो ल्यावे नीचेतें उंचो ल्यावे । सो शृंगाटक वंधन ॥ २४ ॥

२५ कुंडलीचारक ॥ जहां हात बांया दाहिनों गतागत ी रीतिसीं स्थारों तरफ भ्रमावे । सो कुंडलीचारक ॥ २५ ॥

२६ धनुराकर्षण ॥ जहां दोऊ हातको स्वस्तिक रिव । फेर सिता-

वीके एक हात पासूंके सनमुख राखि । दूसरो हात कानेपें जाय खटका मुख रचे । सो धनुराकर्षण ॥ २६ ॥

२७ द्वारदाम विलास ॥ जहां दोऊ भुजा कंधेपें धरि पासूपें ल्यावे । सो द्वारदाम विलास ॥ २७ ॥

२८ समप्रकंष्टवलन ॥ जहां दोऊ हातके पहुंचा बरोबर भ्रमावे। सो समप्रकोष्टवलन ॥ २८ ॥

२९ मुरुजाडंबर ॥ जहां दोऊ हातनके पहुंचा मिलाय तिरछे फेलाय कम-रपें ल्यावें बांये दाहिनें ल्याय मृदंग बजायवेकेसे आकार रचे । सो मुरुजाडंबर ॥२९॥

३० तिर्यग्गतस्वस्तिकाय ॥ जहां दोऊ हात पासूपें फेलाय अंजलिकी सि-नाइ मिलाय । फेर स्वस्तिक रचि छातिपें ल्यावे। सो तिर्यग्गतस्वस्तिकाय ॥३०॥

३१ देवोपहारक ॥ जहां दोऊ हातनमें अरालहस्तक रचि दोऊ पासूपें न्याय सूधे पसारिये । पासूं हलावे वा हात हलावे कुहनिसों मिलावे । सो देवोपहारक ॥ ३१ ॥

३२ अलातचक ॥ जहां एक हात चक्रहस्तक रचि । बाहिर भितर उलटो हलांवे दूसरे हातमें थिटाहस्तकसों गोल फिरावे। सो अलातचक ॥ ३२ ॥

३३ साधारण ॥ जहां दोऊ हात कटिपें धरि । तिरछे चलाय । फेर मंडलाकार भीतर फेलाय । अथवा एक हात भीतर एक हात बाहिर । ऐसें भ्रमावे । सो साधारण ॥ ३३ ॥

३४ उरभ्रसंबाध ॥ जहां दोऊ हातनको छातिषे स्वस्तिक रचि वेगि बाहिरकों चलावे । फेर सनमुख हात करि छातिषे ल्यावे । सो उरभ्रसंबाध ॥३४॥

३५ मणिबंधगतागत ॥ जहां एक हातके पहुचापें दूसरो हात धरि मंडलाकार वाहि भितर भ्रमावे । सो मणिबंधगतागत ॥ ३५ ॥

३६ तार्क्यपक्षविलासक ॥ जहां दोऊ हातनको मरोडि स्वस्तिक रचि । सिताविसें खोलि दोऊ पासुंपें भ्रमावे । सो तार्क्षपक्षविलासक ॥ ३६ ॥

३७धनुर्वह्रीविनामक ॥ जहां दोऊ हात ऊपरकों निचेंकों कांधे सूधे अयसें। राखि । मंडलाकार भ्रमाय एक हात माथेपें दूसरो हात कटिपें राखि । एक ओरकी पासूकों झुलावे । सो धनुर्वलीविनामक ॥ ३७ ॥ ३८ तिर्यकतांडवचालन ॥ जहां एक हात ऊंचो करि । दूसरो हात तिरछो नाभिषे राखि पांसूषे ल्यावे । सो तिर्यकतांडवचालन ॥ ३८ ॥

३९ व्यस्तोत्प्लुतनिर्वतक ॥ दोऊ हात पासूर्वे चलाय । उनकी कुहिन उपर सनमुख अयभाग । धरतिर्वे चलावे । सो व्यस्तोत्प्लुतनिर्वतक ॥ ३९ ॥

४० मंडलाभरण ॥ जहां दोऊ हात छातिके आगे मंडलाकार भ्रमावे पीछे दोऊ पांसूपें ल्याय झुलावे । सो मंडलाभरण ॥ ४० ॥

४१ शरसंधान ॥ जहां एक हात उलटो विलाससों पांसूके पास श्रेमें । दूसरो हात खटका मुख हस्तकसों । माथेके पास जाय । जहां हातके पास सूधी आवे । सो शरसंधान ॥ ४१ ॥

४२ पर्यायगजदंत ॥ जहां एक हात तिरछो भ्रमाय दूसरा हात पसारे। ऐसे दूसरो हात तिरछो भ्रमाय पहलो हात पसारे। ऐसे दोऊ हातकी रचना होय। सो पर्यायगजदंत ॥ ४२ ॥

४३ स्वस्तिक त्रिकोण ॥ जहां दोऊ हातको स्वस्तिक छातिपें रचि फेर खाछे । दोऊ हात सकोरि बांये कंधेपे ल्यावे । सो स्वस्तिक त्रिकोण ॥ ४३ ॥

४४ रथनेमि ॥ जहां दोऊ हातनमें आदि मध्य अंत्यमें स्वस्तिक रचि तिरछे फेलाय रथचकके आकार करि भ्रमावे । सो रथनेमि ॥ ४४ ॥

४५ लतावेष्टित ॥ जहां दोऊ हात बाहर भितरि लपेटि फेर खोलि पासूपें ल्याय भ्रमभवे । सो लतावेष्टित ॥ ४५ ॥

४६ कर्णयुग्मप्रकीर्ण ।। जहां दोऊ हातनके पास हात राखि भ्रमावत पासूर्षे ल्याय अपने सनमुख कीजिये । सी कर्णयुग्मप्रकीर्ण ॥ ४६ ॥

४७ अनंगागमोटित ॥ जहां दोऊ हात मंडलाकार रिच । कांधेकी बराबर भ्रमाय माथेपें ल्यावे देखिवेवारेकों सुख उपजावे । सो अनंगाग-मोटित ॥ ४७ ॥

४८ अष्टबंधविहार ॥ जहां दोऊ हातनकों स्वस्तिक रचि खोछि पासूपें भ्रमांवें। फर स्वस्तिक रचि माथेपें ल्याय। फेर खोछि जुदे जुदे हात भ्रमांवे। सो चालक अष्टबंधविहार ॥ ४८ ॥ ४९ अंसपर्यायनिर्गत ॥ जहां दोऊ हान छातिषे अमाय मंडलाकार रिच कंधेकी बराबर लेजाय फेर छातिषे ल्याय उद्देष्टित करनसों कांधेपर कटिकी तरफ ल्याव । सो अंसपर्यायनिर्गत ॥ ४९ ॥

५० नवरत्नमुख ॥ जहां विश्विष्ट आदिक नव अथवा दस चालक रिच । फेर दोऊ हात माथेतांइ ऊंचे उठावे पिछे छातिषें स्वस्तिक रिच पिछे उलटि धरतिके सनमुख कीजिये । फेर मंडलाकार गोल भ्रमाय तिरछे पसारे । फेर आविद्ध अपविद्ध हस्तक रिच झलावे । सो नवरत्नमुख ॥ ५० ॥

५१ कर्रचकरत्न ।। जहां दोऊ हात पासुपें ल्याय कळ्क चलाय फेर कमरपें ल्याय स्वस्तिक रचि माथेपें ल्याय वालव्यंजन चालककी कियासों । माथके बांये दाहिने हलावे । फर धरतिके सनमुख वर्तना स्वस्तिक रचे फेर मंडलाकार करि ऊपरकों चलाय स्वस्तिक बांधि नीचेकों ल्यावे। फेर एक हात नितंबेंपे राखि दूसरे हातसों रथचककीनाई रचि भ्रमाय विलाससों दोऊ हात झुछावे। फेर सरछ उतारी रचि। फेर सुधे फेछावे। फेर उद्देष्टित पसारित नम्नत हस्तकसों कंधेपें पास भ्रमावे । फेर एक एक हात ऊंचो उठाय गोलमंडलाकार भ्रमावे । फेर एक एक हात सनमुख ल्याय माथेसों कटितांई ल्याय स्वस्तिक रचे । फेर द्रुतवेगसों बांयों दाहिनों भ्रमावे । फेर बाहिर भितर चक्रके आकार भ्रमाय । फेर दोऊ कहणीको स्वस्तिक रचि । ओधे हात भ्रमावे । अथवा इतवेगसों सुधे हात करि आगें पीछे दोऊ पासुपें भ्रमावे । एक एक हात भ्रमाय स्वस्तिक रचे । फेर ऊपरकों निचेकों अग्रभाग करि तिरछे फेलावे। सो कररेचक-रत्न चालक जांनिये ॥ जहां कररेचकरत्न चालक रचिये । तहां देवता ॥ १ ॥ मुनिश्वर ॥ २ ॥ विद्याधर ॥ ३ ॥ आदि सिगरे आवे याको देखि पसन होयकें वरदान देतहे। ऐसेहि अनेक चालक हें ॥ इति इक्यावन चालकको नाम-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ लास्यमार्गीके बारह भेदहें तिनके नाम-लक्चन लिख्यते ॥

9 उन्मादावस्थाप्रलाप ॥ जहां नृत्य करिवे वारि स्त्री कामदेवसों जाको अंग तप्त होय ॥ अति विहवल होयके विरह अवस्था जनायवेकों पाकत भाषासों गाथा पढे ॥ गाथामयण थुको बतावि दाहे । महसिदाये कुरंगलो बणाये सहबक्कह संगवंचिदाये। सरण युग्न दला अजीवण अस । १। याको अरथ नायका सित्तिं कहे हे। हे सित्ति कामदेव नृप कोप किर मुजको सतावें हें । यातें में दूखी हूं मृगनेंनी हो पितम कहा गयोहो। सो अब मेरो जीय वो कमल फूले तहां तांइ हैं ॥ इहां नाईकांको व्यंग अर्थ जो जेसें बनें तेसें सूर्योदय पहले नाइककों ले आव। याको कामात्रतासों उन्माद आवस्थामलाप कहेहें ॥ १॥

२ आसीत ॥ ऐसें पाळतवानी विरहकी पढिके नृत्य देखिवेवारे पुरुंपनको विरह बधावे ॥ सो स्थिन पाठ ठास्यको अंग जानिये ॥ १ ॥ जहां नृत्य करिवे-वारि स्त्रीखंडिता नाइकाकी नकठ करि । चिंता सोकमें उकठाय वचनविठास नहीं करे । उदास होय हैं ॥ ऐसें संस्कृत भाषाके आर्या पढें ॥ आर्या ॥ पसरित दिनमणि तेजसी ॥ विगठिततमिस प्रकाश्यते नभित ॥ अपनीताधररागं ॥ पश्य वयस्य समागतं रमणं ॥ १ ॥ एसें भावके अनेक श्ठोक कबित दोहा पढे । सो आसीत ॥ २ ॥

३ सेधव ॥ जहां नृत्य करिवेबारि स्त्री मुर्खनकी नकछ करि । सास्त्रकी भाषा विना पंजाबकी रीति करे । वा पंजाबकी भाषा बोछे नृत्य करे । सो सेधव ॥ ३ ॥

४ पुष्पमंडिला ॥ जहां स्त्रीनको गाइवो बजाइवो ॥ नृत्य अति विचित्र मनोहर होय । तहां मन बचन कायकी चेष्टा नही कीजिये । सा पुष्पमंडिला ॥४॥

५ प्रच्छेदक ॥ जहां नृत्य करिवेवारी स्त्री वासकसज्जा नाइकाकी नकल किर । चंद्रमाको उदय देखि त्रास होय ताको अपराध करि आवें ॥ तासों कलह करिवेको भाव दिखावे । सा पच्छेदक ॥ ५ ॥

६ सेषपद ॥ इहां वीणा आदि तत बाजे मृदंग आदिक अनबद्ध सुषिर बाजे घन बाजे ॥ इन च्यारों बाजेनसों मिले गायवेवारे गांवें ऐसे नृत्य करे। सो सेषपद ॥ ६ ॥

७ विमूढ ॥ जहां नृत्य करवेवारी स्त्री नानापकारको अरथजुत मिले भाव जुत ॥ श्लेष अलंकारसों पूरव पक्ष समाधानसहित वचन करे ॥ आर्या ॥ पमलतां अंकुरिता मम हदये रमणजलधरो मुद्तिः ॥ संचितरचनदिहचने फलपाप्ते नैव वचने रुद्ति नेतु ॥ १ ॥ ये श्लोक पढिके रस उपजावे । सो विमूढ ॥ ७ ॥ याको अरथ यह नायका सिवसों कहे हैं जो पीतम रूपि मेरे हियेमं स्नेहलता उलिहतासों बचनरूपी जलसो पोषन करे हैं। संगमरूप फूल पाइवेको। यहां व्यंग यह नाइका सिवसों कहे हैं। सो नायकको मेरेपास ले आव ॥ इति शूल हास्य संपूर्णम् ॥

- ८ मूत्रमूढ ॥ जहां नृत्य करिबेबारि स्त्री रमणिक सुंद्र अछरकी रचना सों बहुत भावसों अलंकार सहित छंद पढे ॥ दोहा ॥ भय आनंदसों पियमिलन बाते कहत बनाय ॥ अंग मरोडे अभिलाप जों तनकपुलक रस चाय ॥ १ ॥ ऐसें श्लोक कबित दोहा पढे ॥ इति मूत्रमूढ ॥ ८ ॥
- ९ वैभाविक ॥ जहां नृत्य करिवे वारि स्त्री उत्कंटिता नायकाकी नकल प्रेम-जुत पतिकों देखि कामदेवसों पीडित होय। अनेक भाव दिखावे ॥ देहा ॥ नभ लाली चालीनिसा चटकाली धुनि कीन ॥ रित पालि आलि आजन आये वनमालीन ॥ १ ॥ एसें मतलबको दोहा छंद कबित पढे ॥ इति वैभाविक ॥ ९ ॥
- १० चित्रयद् ॥ जहां नृत्य करिवेवारी स्त्री चित्र दरसनकी नकल करि । अपनें पितकों चित्र देखि कामदेवसों पीडित होय मनमें खेद करे ॥ दोहा ॥ पीतमचित्र बतायितय बात कहत करि फेर ॥ हियो उमगी असु वाढये बाल बिरानो बर ॥ १ ॥ ऐसें मतलबके श्लोक छंद भाषा करे । सो चित्रमद ॥ १०॥

उक्तप्रत्युक्त ॥ जहां नृत्य करिवेवारे स्त्री । रूठे पतिके मनायवेकी नकल करि । पसन्न करिवेकों जो बातके वचन कहे । नानापकारके अरथनसीं संयुक्त गीत कहें । सा उक्तपत्युक्त ॥

११ व्यंगयुक्त ॥ श्लोक ॥ प्राप्तो वसंतसमये ॥ ममपानिभग्य रोषंपरित्यज ॥ भजस्व मिप प्रसादं । उत्तंग पीवर पयोधर भूमिधारा । सां संधि भोपि निह रक्षतु मीहसेमं ॥ १ ॥ याको अरथ । ऐसें मतलबके श्लोक दोहा कबित आदि पिढये । या श्लोकको अरथ मानवती स्त्रीकों नायक मनावे हें ॥ से। यह वसंत रितु आयो हें ॥ याकें पतग्यामानकी संधी नही । यातें कोध छोडि मोसो पीति करें ॥ तेरे पृष्ट कुचनकों सेवन कीयो चाहत हें सो चाकरि करत करत मेरि रक्षण क्यों नहीं करतेहें । ऐसें यह व्यंगयुक्त ऐसें श्लोक दोहा कबित पढे ॥ ११ ॥

१२ उत्तमोत्तम ॥ जहां नृत्य करिबेबारी स्त्री सुंद्र रसके भरे वचन करेहें । ऐसे अनेक हावभावसों मनोहर अनेक चेष्टाजुत नृत्य करे । सो उत्तमो-त्तम ॥ श्लोक ॥ सहस्रमवलोकनं विहित भाति भालिंगनं । सरोषमणिभाषणं सजललोचनं एदनं ॥ १२ ॥ इति वारह मार्गी लास्यके अंग संपूर्णम् ॥

॥ अथ महाराज असोकमलके मतसों देसी लास्यांगके सेततीस अंग तिनको नाम-लंबन लिख्यते ॥

- 9 लास्यांगचालि ॥ जहां भुजा कि जांघ चरन ॥ इनको एक संग चिल होय सुंदर तालकी गतिमें लिल्यो होय। मधुर बिलासजुत कोमल तीन प्रकार-को है ॥ निपट सितावि निपट मंद निह होय । सो लास्यांगचालि ॥ १ ॥
- २ चालिवट ॥ जहां भुजा कटि जांघ पांवनको एक संग चित्रवा सिता-विसों होय । देखिवेवारेकें मनकों राजिकरे । सो चालिवट ॥ २ ॥
- ३ तूक ।। जहां करनफूल आदि आभूषणजुत कानको चलाइवा होय । सितावि गरिसों अथवा मंद गतिसों भाव बताव । सो तुक ॥ ३ ॥
- ४ मन ॥ जहां शृंगाररससों भरवोको उत्तम गूण कजलके । सो गुण सूक्ष्म होय । परंतु जानिवेमें बडो होय । द्वृत आदि कोई एक लय होय । सो मन ॥ ४ ॥
- ५ लीढ ॥ जहां कोमल । १ । मधुर । २ । विलासजुत । ३ । तिरछो । ४ । भुजा एक वेर चलावे मनकों विसकरे । सुंदर श्रेष्ठ गीतकों गावे । आनंद उपजावे । सो लीढ ॥ ५ ॥
- ६ उराकण ॥ जहां दोऊ कांधे कुच एक संग वा न्यारे न्यारे तालकी गातिसों चलावे आगें पिछे ऊपर निचे । च्यारों ओरको भाव दरसावे । मंद लयसों वोसी पलयसों नृत्य होय । सो उरोकण ॥ ६ ॥
- ७ ढिल्लाई ॥ जहां स्त्री नृत्यमें अंगनको कछू कछू सुंदरता दिखाय चलावे हावभावसों रिझावे लीलासों नृत्य करे विलास करे । सो ढिल्लाई ॥ ७ ॥
- ८ त्रिकली ॥ जहां चारिमें अथवा स्थानकमें तालकी लयसों सरीरकों कंप करे । वा कंपसों देखिवेवारेको आनंद बढावे । सो त्रिकली ॥ ८ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-असो नमलके मतसे लास्यांगके अंगके नाम. ८७

- ९ कितु ॥ जहां नृत्यमें भुजा कुच कटिकों तालकी लयसों चलावे । सो कितु ॥ ९ ॥
- १० देसीकार ॥ जहां सुंदर भठी संपदायसों गोडी आदिक जेसी देस होय । ता देस रितिसों मिल्यो नृत्य कीनिये । सो देसीकार ॥ १० ॥
- 99 निजायत ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री सुंदरतासों हात चलाइकें दृष्टी करे । ता दृष्टीसों सभाके जनकों वसि करे दृष्टीसों भाव बतावे । सो निजायत ॥ 99 ॥
- १२ उल्लाससंग ।। जहां तालसो सितावि अनेक रसके भरे । अंगनिक उछालिवेसों । दोय गुनों तीन गुनों देहकों स्वरूप उपजावे देखिवेवारेके मनकों वसिकरे । सो उल्लाससंग ॥ १२ ॥
- १३ थासक ॥ जहां सुंदरतासों कुचें हात धरिकें भाव बतावे। सो थासक ॥ १३ ॥
- १४ भाव ॥ जहां गीत नृत्यके अनुसार गावे । त्यसों मिल्यो नृत्य होय । मधुर विलाससों नृत्य होय । सो भाव ॥ १४ ॥
- १५ सुपहारूय ॥ जहां चारि आदि नृत्येक अंग रचि चरन आदि सरीरके अंगनकों चलाय रस उपजावे वार्जित्र गीतकों संग छोडे नहीं। सो सुपहारूय ॥ १५ ॥
- १६ संघतलय ॥ जहां नृत्यमें नृत्यकों संकोचके ओर लयकों लेकें नृत्य करे । अचिरज उपजावे । सो संघतलय ॥ १६ ॥
- १७ ढाल ॥ जहां नृत्यमें जेसें मंद मंद हाल तलकके पत्रमें जलिद बुं हले । या तरह अंगको मनोहरतासों लहरावे । सो ढाल ॥ १७ ॥
- १८ छदा ॥ जहां सुंदर भोंह करि नेत्रके कोयेसों भाव रिव । चंचलता किर देखे । सो छदा ॥ १८ ॥
- १९ अंगहार ॥ जहां नृत्यमें सिरर सुंदरतासों नमाय नाभितें उपर कोंदे नाभितें नीचेके चरन आदि अंग धनुषकी तरह टेडो किर । तालसो मिलि नृत्य करे सुंदर भाव बतावे । सो अंगहार ॥ १९ ॥

२० लंघित ॥ जहां नृत्यमें बाजेनकी गति तिनके खंड लांघि लांघि ठहरि ठहरि नृत्य करे । सो लांघित ॥ २० ॥

२१ विहस ॥ जहां नृत्यमें मंद मुसुकानि करि मनकों हरें । सो विहस ॥ २१ ॥

२२ नीकी ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री नृत्य गीत वाद्य ताल लय । इनसों मिलिकें सावधानिसों नृत्य करे । सो नीकी ॥ २२ ॥

२३ नमनिका ॥ जहां नृत्यमें विना खेद सहजसों स्थानक स्थानकमें अंगको नमावे। कठिन नृत्यके भेद साथे। सो नमनिका ॥ २३ ॥

२४ संका ॥ जहां धीटपनेंसों अंग चलाय दिखाय पांसू हलावे । देखि-वेवारे लोगनके मनकों टगीवेकों अंग विलाससो ढाके । सो संका ॥ २४ ॥

२५ वितड ॥ जहां स्वभावसों सुंदर जे चारि करनके स्थानक आदि नृत्यके अंग तिन तिनको कठिनताई वरते । सो वितड ॥ २५ ॥

२६ गीतवाद्यता ॥ जहां मनमें गीतके अक्षर बाजेकी स्वयकी अनु-सार नृत्य करे । सो गीतवाद्यता ॥ २६ ॥

२७ निर्वन ॥ जहां वाद्यमें प्रबंधके अक्षरके अनुसार नृत्य होय । ओर हस्तक च्यारिनके करनसों मंडलाकार फिरे । सो मनोहरता रचे । सो निर्वन ॥ २७ ॥

२८ थरहर ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री चरनको कंपाय भुजाकों हलाय विलास दिखावे । सो थरहर ॥ २८ ॥

२९ स्थापना ॥ जहां नृत्य कर धरतीपें सुंदरतासों ठाडी होय । सुंदर मुखेंप चमत्कार दिखावे । मनोहरतासों अंग राखे । सो स्थापना ॥ २९ ॥

३० सौष्टव ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री सुंदरतासों च्यार अंगनको चमकाय सरिर निचो करें । अथवा महाराजनकी जेसी रुचि होय । तेसें सरिर निचो कर नृत्य करे । सो सौष्टव ॥ ३० ॥

३१ स्नुवा ॥ जहां मंद्रोंनसों जेसें दीपककी जोति हाले ऐसें नृत्य करिवेवारि स्त्री अपनें अंगकों हलाय नृत्य करे । सो स्नुवा ॥ ३१ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-असोकमलके मतसें लास्यांगके अंगके नाम. ८९

३२ मसृणत ॥ जहां नृत्य करिवेमें मुग्धा स्त्री रसभरि स्नेहजुत दृष्टिसों इस्तक रचे । सो मसृणत ॥ ३२ ॥

३३ उपार ॥ जहां नृत्यक रचे । अंग मथम कीयेतेंही अंग आगें रचे तालके पयोगसों सुंदर होय । सो उपार ॥ ३३ ॥

३४ अंगानंग ।। जहां नृत्यके अंगहार करण आदिक मिलाय । तांडव नत्यको उन्मत्त प्रयोग कीजिये । सो अंगानंग ॥ ३४ ॥

३५ अभिनय ।। जहां नृत्यमें भाव बतायवेको हात आदि अंगनसों हस्तक करन आदि रचि भाव बतावे । सो अभिनय ॥ ३५ ॥

३६ कोमलिका ।। जहां नत्य करिवेवारी स्त्रीके अंगनकी कियासों चितकी कोमलताजुत अनुराग जामों परे । सो कोमलिका ॥ ३६ ॥

३७ मुखरी ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री शृंगार आदि रसभरे कवन कही नृत्य करे । सो मुखरी ॥ ३७ ॥

ऐसें देसीलास्यके ओर अनेक भेद है। सो सास्रके अनुसार बुद्धिबलसों समित्रये ॥ इति सेततीस अंगदेसीनको लास्यको लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ नृत्यमं अंगके विकार बतायवेको विकत चेष्टाको लखन लिख्यते ॥

जहां एक पांव संकोचे । एक पांवसों चले सो खोडे सुरसनकी नक्कल जांनिये ॥ १ ॥

जहां किट बांकि किर चले । सो कुबडेकी नकल ॥ २ ॥
जहां पेटकों नटवाय चले । सो बडे पेट दूंदवारेकी नकल ॥ ३ ॥
जहां छातिकों फेलाय दिखावे । सो कुचहीनकी नकल ॥ ४ ॥
जहां कंठकी समस्या करे । सो कंठहीनकी नकल ॥ ५ ॥
जहां दांतको बतावे । सो बडे दांतवारेकी नकल ॥ ६ ॥
जहां होट लंबो किर । सो बडे होटवारेकी नकल ॥ ७ ॥
जहां गाल फुलावे । सो फुलेगाल वा बडो गालकी नकल ॥ ८ ॥
जहां नाक द्वावे । सो बेठे नाककी नकल ॥ ९ ॥
जहां एक नेत्र मृदे सों कांणेकी । दोऊ नेत्र मृदे सो अंधेकी नकल ॥ १ ॥

जहां वचन नहीं बोछे। सो गुंगेकी नकछ ॥ ११ ॥
जहां कान दबावे। सो बहरेकी नकछ ॥ १२ ॥
जहां माथेकों दबाय बतावे। सो विनामाथेके आदमीकी नकछ ॥१३॥
जहां स्वेत। १। पीत। २। छाछ। ३। हारो। ४। स्याम। ५।
आदि रंगनकी चेष्टा उन रंगनकी वस्तुसु बतावे। सो रंग रंगकी नकछ ॥ १४॥
जहां फछ फूछ छाडू पेढा आदि सब वस्त बताविन होय। तहां वांहिके

जहां फल फूल लाडू पेढा आदि सब वस्त बतावाने होय । तहाँ वाहिके आकार हातकी चेष्टा कीजिये । ऐसें सिगरे नकल जांनिये । जहां वस्त्र संकोचि दिखावे । सो रजस्वला स्त्रीकी नकल ॥ १५ ॥

ऐसं संयोगवियोगकी चेष्टा कीजिये। सो नकल ॥ १६ ॥
जहां छातिषें हात लगाय मांथेषें ल्यावे। सो पंडितकी नकल ॥ १७ ॥
जहां छातिषें हात धरि वाहिकी चेष्टा करे। सो मुरखकी नकल ॥१८॥
जहां एसें भले बुरे जो संसारके पदारथतें सिगरे ऐसें चेष्टानसों बतावे
॥ १९ ॥ इति विकत चेष्टाको लखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ देवता, दैत्य, राक्षस, समुद्र, निद आदि सबनके स्वरूप जतायवेकों लेखन लिख्यते ॥

जहां दोऊ हातके पताक हस्तक रचि सूधे करि छातिपें ल्यावे । सो तेतीस कोट देवतानकी पार्थनाकी चेष्टा जांनिये ॥ १ ॥

जहां बांये हातकों पताक रचि कानपें उछटो धरे। दाहिनें हातको पताक किटिपें सूधो करे आप मुख नमावे । सो वरदाभय नाम श्रीविष्णुभगवानकी मार्थना जांनिये ॥ २ ॥

जहां पताक हस्तक रिच कंपजुत उपरकों उठावे। सा पीतांबरकी चेष्टा ॥ एसें मुरली बजायवेकी चेष्टासों सुदर्शन चक्रकी चेष्टासों गोपीनके समूह-की चेष्टासों रासमंडलकी चेष्टासों श्रीकृष्णभगवान जांनिये श्रीकृष्णकी चेष्टासों छातिपें हात लगावे। तब श्रीलक्ष्मीकी चेष्टा जांनिये ॥ ३ ॥

जहां हल धारनकी चेष्टा । सो बलराम जांनिये ॥ ४ ॥

समुद्रमें सेतु बांधिवेकी वा राक्षस मारवेकी चेष्टा । सो श्रीरामअवतार जांनिये ॥ ५ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-देवता, दैत्य, आदि स्वरूप जतायवेको लखनः ९१

जहां विना अंग धनुख खेचिवेकी चेष्टा । सो कामदेव ॥ ६ ॥ जहां पताक हस्तक छातीपे दिखावे सो दानदेवेकी चेष्टा । सो कल्पवृक्ष जांनिये ॥ ७ ॥

जहां दोऊ हातके अलपछव हस्तक रचि संमुख करे। सो कामधेनुकी चेष्टा ॥ ८ ॥

जहां पुष्पपुट हस्तक रिच ऊधी करे। सी चिंतामणिकी चेष्टा ॥ ९ ॥
जहां दोऊ हात पताक रिच मुख पास राखे। सी वैकुंठकी चेष्टा ॥ १०॥
जहां पाणायामकी कियासों नाभिको छूवे । अथवा वेदपाठ अथवा
ग्यान मुद्रा दिखावे। सी ब्रह्माजीकी चेष्टा ॥ ११ ॥

जहां तु तुंबास्थानक कछू बांको आकार होय । सा कछपि वीणासों कछपी वीणाकी नकरु दिखावे । सा सरस्वतीकी चेष्टा ॥ १२ ॥

जहां चतुरस्र हस्तक रचि किन्नरी उठावे ॥ अथवा अर्धचंद्र हस्तक रचि माथेपें दिखावे । सो श्रीशिवजीकी चेष्टा ॥ १३ ॥

जहां दोऊ हात सुचि मुखहस्तक रचि ॥ दोऊ हात मिलावे । सो श्री-पार्वतीकी चेष्टा ॥ १४ ॥

जहां बांये हातको पताक हस्तक रचि दाहिनें हातपें राखे विलासजुत उपर दिखावे । सो श्रीगणेसजीकी चेष्टा ॥ १५ ॥

जहां दोऊ हातनमें पताक रचि । सिंगके आकार करि दिखावे । सो नंदिके-

जहां माथेके उपर एक हातकी मुठि रचि । च्यारि अंगुल उंचि राखे ताके दाहिनि ओर हात भारे उंचि । दूसरे हातकी मुठि रचे । सो हनुमानकी चेष्टा ॥ १७ ॥

जहां हाति चढिवेकी किया रचे छत्रचामरको स्वरूप दिखावे। सो इंद्रकी चेष्टा ॥ १८ ॥

जहां पताक हस्तक रिच ऊपरकों चलावे। सो अग्निकी चेष्टा ॥ १९ ॥ जहां मुखेंप वस्त्र आडो करके कूर दृष्टि दिखावे ॥ एक हातमें पताक हस्तक रिचे हलावे। सो यमराजकी चेष्टा ॥ २० ॥ जहां मुख मकरी मगर मछ अथवा राक्षसका दिखावे । सी निरित दिगुपालकी चेष्टा ॥ २१ ॥

जहां पासि जल हातकी कियासी बतावे। सो वरुणकी चेष्टा ॥ २२ ॥ जहां पताक हस्तक रचिनीचो करि हलावे। सो वायुकी चेष्टा ॥ २३ ॥ जहां दोऊ हातकी अंगुठी पासकी अंगुरी मिलाय भयंकर मुदासों दिखावे। सो भीमसेनकी चेष्टा ॥ २४ ॥

जहां दोऊ हातनमें हंसपक्षहस्तक रचि फेलाय दिखावे। सो धनवानकी वा कुबेरकी चेष्टा ॥ २५ ॥

जहां शिवको स्वरूप दिखावे । सो ईशानकी चेष्टा ॥ २६ ॥ जहां शिव स्वरूप दिखावे । सो आठ वसुकी चेष्टा ॥ २७ ॥

जहां मंडलके आकार हात आकासकी तरफ फिरावे। सो सूरजकी चेष्टा॥ २८॥

जहां अर्थचंद्र करि दिखावे । सा चंद्रमाकी चेष्टा ॥ २९ ॥
जहां पताक हस्तक रचि नीचे तें ऊपरकों चलावे। सो मंगलकी चेष्टा ॥३०॥
जहां ग्यान मुद्रा करिके सुधो हात छातिषें धरे। सो बुधकी चेष्टा ॥३०॥
जहां दोऊ हातकी अंजलि रचे । सो गुरुकी चेष्टा ॥ ३२ ॥
जहां सूचि मुख हस्तक रचि ऊपरकों दिखावें। सो शुक्रकी चेष्टा ॥३३॥
जहां पताक हस्तक रचि तिरछो करि दिखावे। सो शनिश्चरकी चेष्टा ॥३४॥
जहां पताक हस्तक रचि तिरछो करि दिखावे। सो राहुकी चेष्टा ॥३४॥
जहां माथो दूरि करिवेकी किया दिखावे। सो राहुकी चेष्टा ॥ ३५ ॥
जहां बिना माथेके सरीरकी चेष्टा दिखावे। सो केतुकी चेष्टा ॥ ३६ ॥
जहां मुखके ओर पास सब मकरिकें जाले दिखावे । मकरी कीनाई
मुखकों एक संग एसें करे । सो सब राक्षसनकी चेष्टा ॥ ३७ ॥

जहां राक्षसकी चेष्टा रचि मकरिके सूधे ठाजे रचि उंची छाति दिखावे अथवा दंस मुखको भाव बतावे। सो रावणकी चेष्टा ॥ ३८ ॥

जहां राक्षसकी चेष्टा करि कोइक असुभ िक्रया । अथवा निदाकी नकल दिखावे । सो कुंभकरनकी चेष्टा ॥ ३९ ॥

तृतीय नर्तनाध्याय-देवता, दैत्य आदि स्वरूप जताये को लछन. ९३

जहां राक्षसकी चेष्टा करि छत्र चामर दिखावे । सो विभीषणकी चेष्टा ॥ ४० ॥

जहां सूचि मुख हस्तक रचि भ्रमावे । अथवा सुवरनंक वीयनकी नकछ करे अथवा पताक हस्तक ल्यावे । सो छंकाकी चेष्टा ॥ ४१ ॥

जहां पापकर्म व खोटो कर्म होय । सो दैन्यकी चेष्टा ॥ ४२ ॥

जहां छत्र चामरि आदि राजचिन्ह । अथवा नवीन आभिमान आदि गुण दिखावे । सो राजा दुर्योधन आदिकनकी चेष्टा जांनिये ॥ ४३ ॥

जहां हसीवो गाइवो रोइवो । माथो हात पग हलाइवो आदि लोक-रीतिसों । अचिरजकी किया करि दिखावे । सो वेताल भूत पेत पीसाच डाकिनी साकिनी आदिककी चेष्टा ॥ ४४ ॥

जहां माथेपें जतावे भूतकों गोला दिखावे । अथवा ध्यानमुदा दिखावे । सो सिद्धनकी चेष्टा ॥ ४५ ॥

जहां होटको हलायवेकी पोथि वाचीवेकी किया करे । सो पंडितकी वेष्टा ॥ ४६ ॥

जहां वीणा आदि बाजेनको दिखावे। सां कलावंत आदि सब गायवे-वारेकी चेष्टा॥ ४७॥

जहां वीणादि बाजो दिखाय ऊपरकों हात करे। सो गंधर्व किन्नरकी चेष्टा ॥ ४८ ॥

जहां ऊपरकों हात कीजिये । सो स्वर्गकी चेष्टा ॥ ४९ ॥
जहां पताक हस्तक रचि धरतिषें लगावे । सो भूमिकी चेष्टा ॥ ५० ॥
जहां पताक हस्तक रचि उपर भ्रमावे । सो समुद्रकी चेष्टा ॥ ५९ ॥
जहां पद्मकोश हस्तक रचि । ओधो करि माथेषें फिरावे । दूसरे हातको
पताक रचि । बांयो दाहिनों फेरे । सो वृक्षकी चेष्टा ॥ ५२ ॥

जहां एक हातको हस्तक रचि ऊंचो करे दूसरो हात लता कीनाई लेपेटे। सो लताकी चेष्टा ॥ ५३ ॥

> जहां सुचि मुख हस्तक रचि भ्रमावे । सो क्षेत्रकी चेष्टा ॥ ५४ ॥ जहां सूचिमुख हस्तक रचि ओंधो दिखावे।सो पातालकी चेष्टा ॥ ५५ ॥

जहां दोऊ हातको पताक रिच ऊपरकों उठावे । सो पर्वतकी चेष्टा ॥५६॥ जहां पताक रिच पिछेकों चलावे । सो नदीकी चेष्टा ॥ ५७ ॥ ऐसे जो जो संसारमें प्रसिद्ध वस्त हैं तिनकी चेष्टानसों पहचानिये ॥ इति चेष्टाप्रकरणको नाम-लछन संपूर्णम् ॥

अथ नृत्यके अभिनय कहिये पदारथको जताइवो ताको नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां पीति दुख आदि मनकों भाव पगट कीजिये। सी भाव जांनिये॥ भाव तीन पकारको है॥ श्रेष्ठ । १ । मध्यम । २ । कनिष्ठ । ३ ।

जहां मुखपें सरीरपें चमक दिखावे भिंछ दृष्टसों देखे । सो रूपा पसन्तता आदिक श्रेष्ठ भाव जांनिये । १ ।

जहां आपको स्वरूप विगारे नहीं । बहात प्रसन्ततासों दिखावे नहीं । साधारण स्वभावकी दृष्ट करे । सा सहज सुभाव आदिक मध्य भाव जांनिये । २ ।

जहां नेत्र मिलावे नहीं मुखेंप संकोचि दिखावे माथों फेरी है। तहां अपराध आदिक कनिष्ठ भाव जांनिये। ३।

जहां कानमें तर्जनि अंगुरी धरे ऋर दृष्टीसों टेडो देखे। पासूंकी वोर माथो नमावे। सो नहीं मानवेकी चेष्टा। ४।

जहां भोंह चलाय नेत्र कळूक संकोच देखे कपोलपं हात लगावे। सो पेलेको मतलब करवेकी चेष्टा। ५।

जहां दोऊ हातमें पताक हस्तक रचि । माथेपें राखि मुख फेरि सुधि दृष्टी देखे । सो सुंदर रूपकी चेष्टा । ६ ।

जहां नेत्र संकोचि नासिका फूछाय उपरकों स्वास छ । सो सुगंधछेवेकी चेष्टा । ७ । ऐसेंहि शब्द स्पर्श रूप रसकी चेष्टा जांनिये ॥

जहां अनेक पकारके फूल बतावे। सो वसंतऋतुकी चेष्टा। १। जहां विंजना परेंब घामलूको बाजिवो बतावे। सो ग्रीष्मऋतुकी चेष्टा। २। जहां मेघ बिजली खद्योत कहनें निगनु बतावे। सो वर्षाकी चेष्टा। ३। जहां हात सिर दृष्टी निर्मल फूलेकाम कमल बतावे। सो शरद्की चेष्टा। ४। जहां सित पाले जमेंकी चेष्टा। सो हेमंतऋतुकी चेष्टा। ४।

तृतीय नर्तनाध्याय-नृत्यके अभिनयके नाम और लखन. ९५

जहां पत सरपोंनकी चेष्टा । सो शिशिरऋतुकी चेष्टा । ६ । ऐसे चेष्टानसों ऋतु जांनिये ॥

जहां गहरो श्वास अंग कंप होय होटनसों दांतसों दाबे छाछ छाछ नेत्र काढे। सो कोधकी चेष्टा। १।

जहां ठोडी होट कांपे नेत्रमें आंसू आवे माथा हलावे भींह चढावे अंगुली चटवावे काहूंसें बोले नही ॥ आछो आभूषण वसन चंदन अत्तर अर्गजा फूल माली दूर करे । सो यह स्त्रीनके ईषामें अथवा मानमें चेष्टा होय । २ ।

जहां गहरो स्वास निस्वास भरे निचे मुख करि धरतीपं देखे ॥ ओर काहूकी ओर देखे नहीं । सो महाकष्टकी चेष्टा । ३ ।

जहां माथेमें अपनें हातसों ताडन करे रोदन करे पछतावमें धरतींपें बार वार परे हात पांव पटके। सो स्त्रीके वियोगकी चेष्टा। ४।

जहां संभ्रम अडवडाटमें सस्त्रके चित्रवेसों उद्देग । सों पुरुषके भयकी चेष्टा । ५ ।

जहां धीरज उतावल चंचल नेत्र सरीरके कंपसों आसपास देखिवे। सों त्राससों चिसली परिवेंसों कहके सरिरसों लपटवेमेंसो स्त्रीनकी चेष्टा। ६।

एसं अभिनय दो पकारके हैं ॥ पुरुषको । १ । स्त्रीको । २ ।

जहां धीरज मधुरता सुंदरतासहित पुरुषकों अभिनय जांनिये । १ । कायरता मधुरता सुकुमारताजुत स्त्रीको अभिनय जांनिये । २ ।

जहां सरीरकों कंप नेत्रकों भ्रमावे आकासको देखिवो चरनको सिथल धरिवो उलटे बचन कहिवो । सो स्त्रीनकी चेष्टा जांनिये ॥

ऐसें नाटकको जांनिवेवारो पुरुष यथायोग्य समिसिकें अभिनयसां चेष्टा करे ऐसें हंस । १ । सारस । २ । मोर । ३ । सुक । ४ । आदि पिक्षिनकी नगरमाम वन जल थल आदि स्थानककी अश्व । १ । ऊंट । २ । शेर । ३ । सिंह । ४ । मेसा । ५ । आदि पसूकी देव यक्ष राक्षस पिसाच भूत मनुष्य आदिकी जे देवता पत्यक्ष नहीं होय । तिनकी चेष्टा नमस्कार आदिसें जांनिये। तिन देवतानकी प्रतिमा प्रगटतहें । तिनको पूजा धूप दीप आदिसों जांनिये।

जहां ठाजसों अंगको संकोचि संकोचि सरिरकों वस्नकों ढांकिवो पूंघट

लेवो निचेकों दृष्ट ऐसे चेष्टा कीजिये। सो कुलांगना ॥ जहां कुलीन स्नीकी चेष्टा होय। १।

जहां अनेक आभूषण वस्त्र नानापकारके होय ठाज नही होय । अंग उचाडि दिखावे सब ठोर ठाज छोड विचरे । सो वेश्याकी चेष्टा । २ ।

जहां खेदनिखासचिंत हियेमें संतापकोधसहित वचन आभूषण वसन दूरि करवो रोदन करिवो । इत्यादिक चेष्टा सो वियोगमें कलहांतरिता जांनिये । ऐसं पोषतिपतिका जांनिये ॥

जहां नानापकारके शयनादि सुखसेज। जेसो जहां चाहिये तैसो स्वरूपभाव दिखावे। वासक सजा स्वाधिन पतिका आदि यथायोग्य नायकान-की चेष्टा कीजिये। ऐसेंहि यथायोग्य नायककी चेष्टा कीजिये।

अथ रासमंडल नृत्यको लछन लिख्यते ।। जहां, अनेक नृत्य करिवे-वारी स्त्री होय अनेक आभूषण अनेक वस्त्र पहर होय । रात्रि समें चंद्रमाको प्रकास सुंदर वन अनेक बाजे अनेक राग अनेक कंठ धुनि मिलाय गाइये । वाह जोड नृत्य कीजिये । देवता मनुष्य गंधर्व जाके देखिवेसों गति फूले सर्व राजी होय। वाहवाह करे । सो रासमंडल नृत्य हैं ॥ यह वृंदावनमें श्रीकृष्ण भगवान गोपीनके संग रच्यो हैं । ऐसो रागसाम प्रजाको होय सो करे । सो पूर्ण ब्रह्म श्रीभग-वानसों यह रास बन्यो ओर काहूसों बनें नहीं यह सब नृत्यमें मुख्य हैं ॥

जहां धुपद प्रबंध छंट दोहा किवत आदि भाषामें जो रस होय। सो नकल किर सब नृत्यनमें देखावे। ऐसे श्रीद्वारावितमें श्रीकृष्ण भगवानके प्रसन्न होयवेकों नटनकेने श्रीकृष्ण भगवानकी जन्म चेष्टासों लेके बाललीला लक्षमीला रासमंडल आदि वृंदावन लीला। कंसवध आदि मथुराकी लीला। सालह हजार। १६०००। पटराणी आदिकनके विवाह। दैत्यनको वध आदि राजकाज गृहस्ताश्रम। धर्म। १। कर्म। २। काम। ३। यज्ञ। ४। दान। ५। वृत। ६। नियम। ७। आदि द्वारावतीकी लीला। इंद्रकोजीत भगवान पारिजात ल्याये सत्यभामाको प्रसन्न किर। इत्यादिक लीला भगवानकों प्रसन्न करिवेकों नटननें रचिसों श्रीभगवान अपनि लीला सर्वत्र देखि आदमीं मम होयकें। नटनको अनेक द्वय दिने॥

ऐसे फेर नटनको काहू ठोर जाचिवो नहीं । ओर यह वरदान दानिदयों जो देवतान इष्टकी । श्रीराम कृष्ण नरिसंह वामन आदि अवतारकी सीताजी पारवर्ताजीकी । सिद्ध पुरुषनकी । महाराजानकी धरमात्मा ब्राह्मणनकी मुनी-नकी जो कोऊ सुद्ध भावसों । ईश्वरभाव करिकें उनके सांग उनकी नकर करे करावे देखे दिखावे तिनको । धर्म । १ । अरथ । २ । काम । ३ । मोक्ष । ४ । च्यारों पदारथ पावेगें । उनें सर्व देवता मसन रहेगें । यह वरदान दीयो । योतें देवतानको श्रेष्ठ भरे ब्राह्मण आदि मनुष्यनेकं । नाटच रिचये । यह भरतादी मुनिश्वर कहेहें । यह श्रीशिवजीकी आज्ञाहें ॥

॥ जहां नृत्य कीजिय ता महलको लखन लिख्यते ॥

प्रथम सास्त्ररितिसों महल बनाय ॥ वास्तुपूजा होमदान ब्राह्मणभोजन गोदान आदि करि । तहां दें ऊक दिन तांई गाइनको वासो कीजिये । ता पीछे फेर ब्राह्मणभोजन होमदान वास्तुपूजन करि । नाटच कराइवेकों मंडल रिचये ॥

जहां बेठिवेके स्थानक अनेक प्रकारको रचे । जहां चतुर पुरुषनकी सभा रचाय । अपने प्रधान मंत्री सुसाहब पुराहित पंडित आदि सकछ सभा पुरुषनके संग सभापतिमहाराज आयकें सभामें विराजे डोडीके दरोगा आदि सुवरनकी छिंड हातमें राखि रहें । सभाकी रछण करिवेकों सख्यारि सुभट सभामंदिरके च्यारों ओरकों चोकी देवेकों राखिये । तब नृत्यकों आरंभ करावे ॥

तहां दोय मृदंग च्यारि गर्षि वावरे। एक पुरुष लीला अवतारकथाको पूछ-वेवारो । ताको नाम परिहासक दोय पुरुष ताल धारि । एक पुरुष तंबुरा बजावे । ओर यथायोग्य यथारूचि सब वाजे बजायवेवारे राखिये । याको नाम नाटच-मंडल जांनिये ॥ फेर जो नाटचको करता होय । सो सभापात्रको सिगरे बाजे बजायवेवारेको तिनपर रंगभूमि करिये नृत्य करिवेको बिचमें चोक होय तामें आवे फेर इष्टदेवताकी स्तुति करे । फेर रंगभूमिकी दुष्ट दृष्टि आदि विघ्न दूरि करिवेको रक्षामंत्र जपे । ओर श्रीगणेशजीकी स्तुति प्रथम पढे । इष्टदेवतानके मंगलाचरनके श्लोकनकों राग तालजुत गान करे ता समें ओर गाइ-वेवारे पाठाक्षरनसों प्रबंध छंद गान कर पढे ॥

नुरय रूपी वृक्षके अनेक पकारके चरनभेदहे। सो नृत्यवृक्षके मूल जानिये।

कटिके भेदेहें । से नृत्यवृक्षके मध्यभाग जांनिये । अनेक प्रकारके हस्तक हैं । सो नृत्यवृक्षके शाखा जांनिये । ओर भोंह नेत्र ग्रीवा भुजा आदिक अंग हे । सो नृत्यवृक्षके पान हैं । हावभाव कटाक्ष मंदिमुसकीन सुंदरता हैं । सो नृत्य-वृक्षके फूल हैं पाछे याके देखिवेसें जो ब्रह्मानंद होतेहें । सो नृत्यवृक्षके फल हैं ॥

या फलके स्वाद लेवे वार समामें विवेकी पुरुष है। उनको या फलको स्वाद होतहें। या स्वादतें विवेकी पुरुष संसारके दुखकों दूरि करत हैं। यातें या नृत्यकों चतुर पुरुष विचारसास्रके अनुसारतें रचे। फेर वा रंगभूमिमें। एक तरफ मंडपके परदा लगायवाके भीतर रामकृष्णादि अवतारनकी रचना रचिके चतुर पुरुष रंगभूमि आप सभाकों चेष्टा दिखावे। उहां हस्तक कठन स्थानक भीतर अंगहार आदि नृत्यकी सब सामग्री वरते जो। अवतारनकी लीला वेद पुराननमें प्रसिद्ध हो ते लीला। ओर परिहासक या पूलिवेवारों पुरुष जेसें जेसें सभाके प्रसन्न करिवेकों कथा पूले तेसें तेसें जो छंद कवितनसों पूलि बातनको उत्तर देके कथाके अनुसार नृत्य करिये॥

तहां प्रथम नृत्यकी आदिमं श्रीगणेमजीके पाठाक्षर रूप प्रबंध कहाहि। ताको उदाहरण लिख्यते ॥ झेझेझेकीत कुनटरी कयो सिंदुर चिंच शुंड भ्रमयन थिरकु थथिरकु कुंदरीकथो । हानों पादो चित्रं चलयन् धिरिगीडा धिरिटिडदां धिरिगीडदां। विद्यारंभे विद्यंहर न्किट धौकीण किणगकु कुंदां। यस्तं देवा नमामि सिरसा हतहत कुकु तहतहतह कुकु विद्यारंभे हरतु विद्यं ततधल तथलोंग धलधल धिमिथों किटिकिटिकिटिकिटिकणथों। ततिधिमि। नग-थिर झिणकीट झेझें तिद्दां झिणकीट। तिद्वां तदितां डेथिरिकिंड डिडधों किनुगद गिकनु दगथों। ततिधिमि नगयिर। किणकीट झेझें। तिद्दां झिणकिट तिद्वां तिद्वां हेथिरि किंडें गिडधों। किडदिक उद्गथों ॥ इति गणेशसब्द संपूर्णम् ॥

ऐसी रीतिसों नृत्यके आरंभें गणेसजीके प्रबंध पढिये ओर यथायोग्य सास्त्रके अनुसार कीजिये। जहां ताल पूरन होय। सो मांन जांनिये। सो मांन मेंथों ऐसो सब्द कहिये। छातिषें दोऊ हातनको सिखर इस्तक रिच। जहां यह सन्दकिये। या सिखर हस्तकमें लिन अंगुरी जुिंद किर रुगपद सन्द किहिये। कुचें उधे पताक हस्तक रिच । धिटकु यह सन्द कहें । ओर दोऊ हातनके पताक हस्तक रिच निचे किर टईणइ। यह सन्द कीजिये। दोनु हातके पट्का मुख रिच । एक हात बांई पांस्पें राखि दूसरो हात धनुष खेचिकेकी रीतिसों। कानके पास ल्यावे। तता। यह सन्द होय। एक हातकों पताक हस्तक अपनें सन्मुख फेलाय था सबद कहें। बांई दाहिनी तरफ हात चलाय। दांदां। सन्द कहें कांधेकी बरोबर कुहणी फेलाय पताक रिच । धलां सन्द कहें । तहां आधे पताक हस्तक रिच फिर ल्यायें । नट किटिकिट कणां सन्द कहें। पताक हस्तक नि धोपिर गिडिसन्द कहें। जहां किटिनता पद दिगिटिंग सन्द कहें। दोऊ किटिसें पताक हस्तक किर । गेट । सन्द कहें। जहां मुख बराबर मुकर हस्तक। कुकु शब्द कहें। जहां पांवको अंगुटा ऊटाइ कुं शब्द कहें । माथे बराबर तिरछे उंचे दोय पताक रिच थेथे। सन्द कहें। उद्रेपें दोऊ सिखर हस्तक रिच टाडो होय नृत्यकों विश्राम करे॥

इहां जी जातिमें जो जो अक्षर कहां। सो ताही रीतिमें वे अक्षर किहिंग वाकी रीति अक्षर अपनी इच्छासों शास्त्र अनुसार वरतिये ॥ जेसें थिकिङ्गि थोङ्गि तकतकत्तकधिक ताहं किट धिम। ए अक्षर अपनी इच्छासों यथायोग्य वरतिये। जो हस्तक आदिक अंगनकों आरंभ करे। सो हद्यंगम । १ । स्वैर । २ । अभिमुख । ३ । कर्णस्थ खटकामुख । ४ । कूर्मप्रसाद । ५ । वक्षोज । ६ । मान । ७ । यह सात जांनिये ॥

॥ अथ सातको लछन लिख्यते ॥

जहां सभाके मन हरवेकी चेष्टा करे। सो हदयंगम। १। जहां स्वाधान-न्की चेष्टा करे सो स्वेर। २। जहां सनमुख होयवेकों बतावे। सो अभिमुख । ३। जहां खटकामुख हस्तक रचे। सो कर्णस्थ खटकामुख। ४। जहां कुहणी फेलावे। सो कुहणीको कूर्भपसाद। ५। जहां छातिषें कुचके आकार हात राखे। सो वक्षोज। ६। जहां तालकी समाप्त होय। सो मान। ७। अथ इन सातोंनके अनुक्रमसों पाठाक्षर लिख्यते॥ जग जगथे। या धिमि। किट नग। १। जग जगथे धिमिथों नग धिमि। २। किटनम किणकिणकिण नग- ङ्थी । ३ । तत थाथा धिमि ।४। तत धिमि धूनकिटिकिटि ।५। तकथांग थरि कुकु कुकुदां । ६ । दिगि हिगिदांदां दिगिदा दिगि । ७ । किट किरंग किण णनगनगथा । ८। नग धिमि किणिकण । नग तता ।९। धिधिमि धिमि किटदां किटदां । १० । ककुथरि नग देंदें कुंण किट । ११ । दांकिड नग ताहां तत्थ-रिकुं। १२ । थारिकृ थरि किकिदां किकिदां । १३ । धिमि तकदां । १४ । नकधिमि । १५ । धि गिणथों । १६ । इति हृदयंगम । नग धिमि तक। जग किट। १। नग धिमि तक डेंडें। २। ङनकीटटतक डेंडें। ३। तहां तक तक ताहं। ४ । किण तक । ५ । धिमिताहं। ६ । तहां किण तक तक । ७ । धिमि नगगे धिमि किट । ८ । किट धिमि करतक घलांग । ९ । घलांग घलांग । १० । दिगि धिगि तगरि गधिगि । ११ । तथलां धिमि तथलां । १२ । तकथल । १३ । धिमि तकथरं तक कुकुधि किततकु । १४ । धरत धुकुकुत धरां । १५ । नक धिमि कुकुङणकीट । १६। तक धिध गिणथों । १७। इति स्वैरं ॥ थाधिमितग । १। तक घिमिकिट। २ । तग तथलां । ३ । कुकुधिधिं । ४ । धिंधिनिक्ट । ५ । तकुतादिदां । ६ । ककुकुंदकुं । ७ । थरिकुं दकुनग झेंझें । ८ । झेंनगरे । ९ । तकुं तत कुक्धिमि क्दरिक् । १०। कक् कुंदरिक् । ११। घरु धरांग । १२ । तक घलांग । १३ । मगतगर्थों । १४ । इति अभिमुख । ३ । अनामत ग्रह । निद्धिमिकिट । तग तगथे । ३ । तग तग धिमिकिट सगगधिमि किटगत । तमथें । २ । तत धिमिकिट ततनमनग । ३ । ताधिमि किटतग तगतग तग । ४। कुंद्रि कुकुकृत क तक धिमि । ५। तग तग धिमि । किट किट किट । ६। तक थ रि । कुकृतक तकदां । ७ । नक्थरि कुकुधिमि किट ।८। नगथरि किट । कुकुदां। ९। तरि कु कु किट नग। १०। दांथरिदां दांथरि। ११। धिमि नकु-नक डिणिकिट । १२ । किङ् गिङ् दार्थार दांदां । १३ । तकु कुकुतकु नगदा । १४ । तम नमदां धिमि । १५ । किट नम किण धिमिणा थोंहे । १६ । इति करणस्थ खटकामुख संपूर्णम् ॥

॥ तृतीय नर्तनाध्याय समाप्त ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

--

COMPILED BY

H. H. MAHABAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon, Secretary Gayan Samaj, Poona,

PART IV.

PRAKIRNADHYAYA.

(Explaining miscellaneous and technical musical terms &c)

(All Rights Reserved : Registered under Act XXV of 1867.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10-8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

पूना गायन रमाज.

संगीतसार ७ माग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवछत.

पकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी सेकेटरी, गायनसमाज, पुणें.

माग ४ था.

प्रकीर्णाध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार इ. स. १८६७ का आक्ट २५ के अनुसार प्रकाशककर्ताने आपने स्वाधीन रखा है.

पूना ' आर्यभूषण ' श्रेसमें छपा.

संपूर्ण ग्रन्थका मृत्य रु. १०॥, और प्रत्येक भागका मृत्य रु. २. १९१०.

श्रीराधागोविंद संगोतसार.

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय-र्विषत्र.

वागेयकारको लखन गंधर्वराजको लखन ओर भेद गायवेमें श्रेष्ठ पुरुषको लखन	2 2 2 3 3 3
राग गायवेमें श्रेष्ठ पुरुषको लखन	3 3 3
राग गायवेमें श्रेष्ठ पुरुषको लखन	8
	૪
गायवेवारेके कंठकी धुनीके भेद	t.e
गायवेवारेके बत्तीस दोष ओर उनके भेद	4
आठ दृष्ट ध्वनीके नाम	و
राग गायवेमें शरीर नाम पूर्वजन्म संस्कार विशेष शक्ति है ताको	
लछन और दोष	U
गमकको नाम ओर छछन	6
बीणा बजायवेमें गमक ओर घर्षणको लक्चन ··· ··· ···	9
	3
	8
	u
च्यावित स्वर, स्वरकर्ष, स्वरनेम्न, स्वरहत, हताहत, हतोत्तराहत, तिरिप	
	ļų
	१६
महस्थानको लछन	१७
	१७
	१७
	ž o
	३ २
	32
	3 3
	33
वृंदेके गुण	3 8
बाजेनके समृद्दको नाम ओर उनके प्रकार	24

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय.

सर्व प्रंथ अनुसार शार्ङ्गदेव राजर्षिके मतसीं प्रकीर्णाध्याय लिख्यते.

प्रकीर्ण ॥ जहां देसीराग ॥ 3 ॥ मार्गीराग ॥ २ ॥ इन दोऊनको भकीर्ण छछन कहतेहें । सो भकीर्ण कहिये ॥

मातु ॥ भाषा ॥ पर्वध ॥ गान ॥ आदि इनके गुन देशकों जांनिकें रागरचना करिवो या संगीतशास्त्रमें। संस्कृत पाकृत देश भाषा रूप जो वाणी ताको नाम मातु कहे हैं॥

धातु ॥ इन वाणीनमें गायवे जांग्य जो प्रवंशादि रचना ताको नाम भातु कहे हैं ॥

मातुकार ॥ जो कोऊ पुरुष भाषा । आदि वानिमं प्रबंध रिच गावे । ताको नाम मातुकार जांनिये ॥ या मातुकको नाम वागेयकार कहे हैं ॥

अथ वांगयकारको लाउन जिल्यां ॥ जो पुरुष व्याकरण। आठ॥ ८॥ अडारे॥ १८॥ कोश अडारे॥ १८॥ पुरान महाभारत पिंगल। आदि सर्व छंदके यंथ तीन छंदों न्यारि न्यारि जाने॥ ओर उपमा आदि अलंकार॥ १२०॥ अरथके ओर सब्दके । अलंकार यमकादिक। तिनमें पकीण होय। सिंगार आदि नवरसनके यंथ अरु भावध्वनिरसाभास भाषा विरोध्यास आदि धूनि अलंकार आदि नायके नायका भेदकों जानें ओर गौड आदि जा देसको राग होय ता देसकी भाषा चलगत व्यापारकों जानें। ओर संस्कृत ॥ १॥ पाल्लत॥ २॥ अरमंस ॥ ३॥ सूरसेनी ॥ ४॥ मागधी ॥ ५॥ पैसाची॥ ६॥ आदि सर्व देशभाषानें निपुण होय। ओर शास्त्र संमदायनें जे कहि। चोसटी कला तिनको जानिवेवारो होय। ओर नृत्य॥ १॥ गीत॥ २॥ बाद्य ॥ ३॥ ये पंडित जनसों मिल अद्वासों गुरु आश्रय करिकें पढियो होय

और सरीरके जो चक्रषट ॥ १ ॥ इंडा ॥ २ ॥ पिंगला ॥ ३ ॥ सुषुन्ना ॥ ४ ॥ आदि नाडीको ग्यान होय । ओर उय । १ । ताल । २ । की कला जानत होय ओर अनेककी कहत वचन बोलिवेकी रीति । उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३ । जेसो परुष होय ताको तेसो हि सन्मान करि बोलिवो । ओर अपनि बुद्धिसी नविन उक्ति जिक्त विचारे जो शास्त्रसों मिलति होय । जामें कंठ धूनि मधुर होय । ओर देसी रागनक गायवेकी रीति जानें पिय वचन सबसों बोले चाले ओर काहुसों राग द्वेष नहीं करे। जाके चित्तमें घणी दया होय। ओर जो आप पबंध करे । तामें ओर काहुकी युक्ति नहीं छे। ओर जो कदाचित पहिलेकी युक्ति बनायवेमें आवे तो वो काव्यको नहीं लीजिये। जो परायकी युक्ति ले तो वह काव्य उच्चिष्ट होत हैं।। ओर परायेचितके। सुख । १ । दुःख । २ । ग्यान । ३ अग्यान । ४ । कों आपिह पहचानिये ओर पहले जो धनि स्वर । भरत । १ । मतंग । २ । हनुमान । ३ । सारंगदेव । ४ । आदिनकों यंथकी रीति समझिकें।। दुत । १ । मध्य । २ । विलंबित । ३ । गीतकी रीति जानें ओर मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकी गमकको अभ्यास होय रागनके अनेक पकारके आछाप जाने जाको सुंदर स्वरूप होय ऐसी गुण जा पुरुषमें होय ताको उत्तम वागयकार जानिये ॥

अथ मध्यम वागेयकारको लखन लिख्यते ॥ जो पुरुष मबंध । १ । छंद । २ । सुद्ध करे ओर उनमें भाषा सिथल घरे । अथवा मबंध । १ । छंद । २ । भाषा । ३ । इनके रिचेमें मिविण होय ॥ परंतु किहेवेमें सिथल होय ॥ आि तरह निह उच्चार करे । सो मध्यम वागेयकार जांनिये ॥

अथ अधम वागेयकारको लखन लिख्यते ॥ जो पुरुष मबंध 'छंदकी रचना सिथल करे ओर मबंध छंदकी भाषा सुंदर करे। सो बागेयकार अधम जांनिये ॥

ऐसे संगीतशास्त्रके सिगरे मतको पढिके विचार कहें । सो पमान जांनिये ॥

अथ गंधर्वराज लखन लिख्यते ॥ जो पुरुष मार्गीराग । १ । देसीराग

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय-गंधर्वराज और गायवेवारेके भेद-लछन. ३। २। इनकें गाइवेकी रीति ॥ समय भेद जाणें। सो गंधर्व कहिये ॥ इति गंधर्वराज लछन संपूर्णम् ॥

अथ गंधर्वराजको भेद स्वरादि है ताको लखन लिख्यते ॥ जो पुरुष मागीराग जानत होय ॥ ओर देसीरागनको नहि जाने । सो पुरुषस्वरादि जानिय ॥ इति स्वरादि लखन संपूर्णम् ॥

अय रागके गायंवमं श्रेष्टपुरुषको लछन लिख्यते ॥ जाके कंठकी धनि मनोहर होय । जो राग होय ता रागको नाइकें पगट दिखायदे ॥ ओर गीतके आरंभतें छेकें ॥ गीतके समाप्त तांई ॥ ताल । १ । लय । २ । इन दोउनको निर्वाह करे । ओर ग्रामराग । १ । उपराग । २ । भाषाराग । ३ । विभाषाराग । ४ । अंतरभाषा । ५ । रागांग । ६ । भाषांग । ७ । कियांग । ८ । उपांग । ९ । ये नवपकारक रागनकों जाने । ओर प्रबंधनके भेद तिनको गायजाने । ओर तरह तरहको एकाकार भेदाकार जो आछाप ताके तत्वकों जाने । ओर मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानके गमकनमें जाको अभ्यास होय । उय जाकी ट्रेंट नहीं कंठ आधिन होय । अंशस्वर । १। वादी । २ । विवादि । ३ । संवादि । ४ । विकृत । ५ । कोमल । ६ । तिव स्वरको ग्यान होय । ओर भेर करिवेमें समर्थ होय ओर सुद्ध । १। छायालग । २ । संकीरन । रागनकी जुदिजुदि रीति दरसान । संनूरन जो बोलिवेकी रीति हे तिनकों जाने । स्थाई । १ । आरोहि । २ । अवरोहि । ३ । संचारी । ४ । स्वरनके स्वरूप जुदेजुदे दिखावे । ओर गायनके देष हैं । ते जामें नहि होय । ऐसं सर्व दोष रहित होय आपने गायवेके धर्ममं सावधान होय । इष्ट-देवको भजन करे जाकी लय सुने तें अनुरंजन होय । सब वाणि सुघड होय । जाको हिरदो साचा होय गायनेकी संपदाय जो शास्त्रमं कहि । ता संपदायसों गावे । सो गायवेवारी गायक उत्तम जांनिये । ये गुग कहे तासीं कछूडक हीन गुग जा गायवेवारेमें होय । कोइ दोष गाइवेको नहि होय । सो गायवेवारी मध्यम जांनिये । और जाने गुग तो थोरे होय । ओर दोष बहुत होय । सो गायवेवारो अवन जांनिये ॥ इति उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३। गायवेवारेके लछन संपूर्णम् ॥

अथ गायवेवारेके पांच भेद लिख्यते ॥ शिक्षाचार । १ । अनुकार । २ । रिसक । ३ । रंजक । ४ । भावक । ५ । यह पांच भेद जांनिये । तहां भथम शिक्षाचारको छछन कहेहें ॥ जो राग सिखायवेमें चतुर होय । सो शिक्षाचार जांनिये । १ । जो राग पहछकी नकछ देखिकें गावे । आप समझे नहीं । सो अनुकार जांनिये । २ । आर जो अपनें रसके छिये गावे । ओरके रिझवेणी इछा निह राखे । सो रिसक जांनिये । ३ । ओर जो गाइवेवारो सुनिवेवारेनकों अनुरंजन करे । सो रंजक जांनिये । ४ । और जो गीतके गाइवेमें जनको चमल्कार दिखाव । अनुरंजन करे रस उपजाव । सो भावक जांनिये । ५ । इति गायवेवारके पांच भेद-लछन मंपूर्णम् ॥

अथ गायवेवारेके तीन भेद लिख्यते ॥ एकछ । १ । यमछ । २ । वृंद । ३ । यह तीन भेद जांनिये ॥ जो अकेलोहि गावे । अरु रागमें रस उप-जावे सुनिवेवारेको मन विस करे । सो गायनवारो एकल जांनिये । १ । जो दूसरे गायवेवारेके सहारेसों गावे । दूसरेविना जाको गायो जाय नही । सो यमल जांनिये । २ । जो तीन च्यारि गायवेवारेकी साहारासों गावे । सो गायवेवारों वृंद जांनिये । ३ । यह गायवेवारेके तीन भेद हं ॥ मास्त्रकी रितिसों सो बुद्धिवान् पुरुष वा पंडित राजासाहेब गायवेवारेकी परीक्षा लेवे । सो संसारके मांहि गांन हि पदारथ हे ॥ इति गायवेवारेके तीन भेद संपूर्णम् ॥

अथ गायवेवारि स्त्री गायन कहावे ताको लछन लिख्यते ॥ जो कोऊ स्त्री राग गायवा जाने । सुंदर जांको रूप होय । योवन जांकी अवस्था हाय । जांके कंठकी धुनि मधुर होय । रस भावमें चतुर होय । चतुर मुखकी प्यारि होय । सो स्त्री गायवेवारी जांनिय ॥ जो पुरुष गायवेवारी हे ताके जितनें भेद हे । तितनें भेद गाइवेवारी स्त्रीकं जांनिय ॥ इति गायवेवारी स्त्रीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ गायवेवारेके कंठकी धुनिके च्यारि भेद लिख्यते॥ खाङगछ । १। नारहटक । २। बोम्बक । ३। मिश्रक । ४। जा गाइवेवारेकी सरिरकी कफकी प्रकृति होय। ताके कंठकी धुनि मधुर होत हैं। सो मंद्र । १। मध्य । २। स्थानमें निकें गाइये। सो खाङ्गल जांनिये। १। याको आडिल कहें हैं॥ ना गाइवेवरिकी सिरिरमें पितकी परुति होय । अरु कंठकी धुनि सूक्ष्म होय मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकमें निकें गावे । सो नारहृद्दक जांनिये। २ ! जा गायवेवारेकी सिरिरमें वायूकी परुति होय । अरु कंठकी धुनि रूखि होय खरखिर होय । चणी ऊंचि धुनि होय । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकमें गावे । सो बोम्बक जांनिये । ३ । ओर जा गायवेवारेनमें खाङ्गछ । १ । नारहृद्दक । २ । बोम्बक । ३ । इन तीनोंनके गुण मिछे। सो मिश्रक जांनिये। ४ । इति गायवेवारके कंठकी धुनिक च्यारि भेद संपूर्णम् ॥

अथ गायंवेवारके वर्तास । ३२ । दोष जांनिये ॥ संदृष्ट । १ । उद्घृष्ट । २ । सूत्कारी । ३ । भीत । ४ । शंकीत । ५ । कंषित । ६ । करालि । ७ । किषिल । ८ । काक । ९ । विताल । १० । करम । ११ । उद्घ । १२ । झोंबक । १३ । तुंबकी । १४ । वकी । १५ । फुलगल । १६ । मसारिणा । १७ । निमीलक । १८ । अपस्वर । १९ । विरस । २० । अव्यक्त । २१ । मिश्रक । २२ । अनवधानक । २३ । स्थानश्रष्ट । २४ । अनुनासिक । २५ । विमल । २६ । चालक । २० । आंदोल । २८ । एक- दृष्टि । २९ । ऊर्ध्वगामी । ३० । पाद्प । ३१ । सावक । ३२ । ये बनीस गाय-वेवारेके दोष बुद्धिवान् समजिये ॥ इति गायंववारेके बनीस दोष संपूर्णम् ॥

॥ अथ गायवेवारके बत्तीस दोषके भेद ताको लखन लिख्यते ॥

- 9 जो दांति जिभिकें गावे ॥ सो संदष्ट जांनिये ॥ १ ॥
- २ जाको सब्द विरस होय ॥ सो उद्घृष्ट जांनिये ॥ २ ॥
- ३ जो गावतें सीसाडो करे ॥ सो मृत्कारी जांनिये ॥ ३ ॥
- ४ जो भयसों गावे ॥ सो भीत जांनिये ॥ ४ ॥
- ५ जो शंका करि जलदी गावे ॥ सो शंकीत जांनिये ॥ ५ ॥
- ६ जो सब्दको सरीरको कंपाय गावे ॥ सो कंपित जांनिये ॥ ६ ॥
- जो ऊपरको मुख करिके गावे ॥ सो करालि जांनिये ॥ ৩ ॥
- ८ जो स्वरनमें घटि वधि श्रुति करिके गावे ॥ सो कपिर जांनिये ॥८॥
- ९ जो काकस्वरसों गावे ॥ सो काक स्वरी नांनिये ॥ ९ ॥

संगीतसार.

- ९० जो गायवेवारोको लयको ग्यान नहीं होय ॥ सो विताल जांनिये ॥ ९०॥
- ११ जो कांचेपें माथा राखि गावे ॥ सो करभ जांनिये ॥ ११ ॥
- १२ जो बकराके सिनाई भेंभायके गावे॥ सो उद्वड जांनिये॥ १२॥
- १३ याको अधम जांनिये ॥ जो भारुमें मुखमें गरमें ॥ स्टोट पाणीके मुख वांको करि गावे ॥ सा झोंबक जांनिये ॥ १३ ॥
 - १४ जो तूंबासों मुख करि गावे ॥ सो तुंबकी जांनिये ॥ १४ ॥
 - १५ जो बांकी गरदन करि गांव ॥ सो वकी जांनिये ॥ १५ ॥
 - १६ जो गार फुराय गावे ॥ सो फुह्नगर जांनिये ॥ १६ ॥
 - १७ जो मुख पसारिकें गावे ॥ सो पसारिणा जांनिये ॥ १७ ॥
 - १८ जो आंखे मुंदि गावे ॥ सो निमीलक जांनिये ॥ १८ ॥
- १९ जो स्वरको स्वरूप छोडिके विना समजि गावे ॥ सो अपस्वर जानिये ॥ १९ ॥
 - २० जाके गायवेंमें अनुरंजन नहीं होय ॥ सो विरस जांनिये ॥ २० ॥
- २१ जाके गायवेमें गीतके अक्षर समजे जाय नहीं ॥ सो अव्यक्त
- २२ जाके गायवेमें ॥ ओर रागमें राग मिले शुद्ध राग जान्यों जाय नही ॥ सो मिश्रक जांनिये ॥ २२ ॥
- २३ जो गायवेवारो स्थाई। १। आरोही। २। अवरोहि। ३। संचारि। ४। इनको ठीक नहीं राखे॥ सो अनवधानक जांनिये॥ २३॥
- २४ जो गायवेमें मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनो स्थानकको नही वरित सके ॥ सो स्थानभ्रष्ट जांनिये ॥ २४ ॥
- २५ जो नांकके स्वरसों गावे ॥ सो अनुनासिक जांनिये ॥ छीकीकर्में याको अछा नहीं कहे हें ॥ २५ ॥
 - २६ जो गायवेमें चित ओर ठोर राखे ॥ सो विमल जांनिये ॥ २६ ॥
 - २७ जो हात चलाय हलाय गावे ॥ सो चालक जांनिये ॥ २७ ॥
 - २८ जो माथो हलाय हलाय गावे ॥ सो आंदोल जांनिये ॥ २८ ॥

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय-राग गायवेमें शरीर नाम संस्कार ताको लखन. ७

२९ याको छौकीकमें निचक कहे हें ॥ एकदृष्टि रखा गावे ॥ सो एक-

३० जो मुखतें उचाकै उचिक गावे ॥ सो ऊर्ध्वगामी जांनिये ॥ ३० ॥ ३१ जो ताल रागको विनाजानेहि गावे ॥ सो पादप जांनिये ॥ ३१ ॥ ३२ जो गीतके अर्थकों नही जांनें विना अर्थ जाने गावे ॥ सो सावक जांनिये ॥ ३२ ॥ इति बचीस दोष मंपूर्णम् ॥

अथ आठ दुष्ट ध्वनिके आठ नाम लिख्यते ॥ रक्ष ॥ १ ॥ स्फुटित ॥ २ ॥ निसार ॥ ३ ॥ काकोली ॥ ४ ॥ केटि ॥ ५ ॥ केणी ॥ ६ ॥ कश ॥ ७ ॥ भम ॥ ८ ॥ ये आठ जांनिये ॥ जा गाइवेमें चिकनों पणों नहीं होय । सो रक्ष जांनिये ॥ १॥ जो खुल्यो ध्विन नहीं होय । सो स्फुटित जांनिये ॥ २ ॥ जो खोलि धुनि होय । सो निसार जांनिये ॥ ३ ॥ जो कागकीसी धुनि होय । सो काकोली जांनिये ॥ ४ ॥ जो धुनि मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनो स्थानमें नहीं होय । जोमें गुण नहीं होय । सो केटि जांनिये ॥ ५ ॥ जो धुनि बेंद कष्टसों । मंद्र ॥ १ ॥ तार ॥ २ ॥ स्थानमें होय । सो केणी जांनिये ॥ ६ ॥ जो धुनि अति सूक्ष्म होय । सो कश जांनिये ॥ ७ ॥ जो गद्मकीसी ऊंडिंसी धुनि रसहीन होय । सो मम जांनिये ॥ ८ ॥ इति धुनिके आठ दुष्ट भेद संपूर्णम् ॥

अथ राग गायवेमं शरीर नाम पूर्वजन्म संस्कार विशेष शक्ति हैं ताको लखन लिख्यते ॥

जाके कंठकी धुनिमें । विना सिख्या सहजिहसों सुंदर राग वरतें । सिखे तो कहा किहवों अत्यंत सुंदर होय यह जो धुनिकों गुण सो शारीर नाम शिक जांनिये । १ । अब शारीर शिक्तिके गुण कहतें हैं जो गाइवेमें इछा माफिक । तार । १ । मंद्र । २ । यह दोय जांनिये । अनुरनन होय ॥ अनुरनन कहत हैं । गंकार । १ । मधुरता । २ । अनुरंजन । ३ । गंभीरता । ४ । मृदुता । ५ । जाके सुनिवेकी इच्छा रहें । ये गुणजुत शारीर शिक्ति हैं ॥ ताको सुशारीर कहत हैं । यह सुशारीर पूर्वजन्म विद्या अभ्यास करिये । या तपस्या करिकें या दीनहीन वावे ब्राह्मण सुपात्र । वा तीरध्येमें ।

वा संक्रांति । आदि पंच पर्विमं । भूमि सुवर्ण आदि दृव्यके दान सन्मान करिकें देवेतें ॥ अथवा श्रीमहादेवजीकी पूर्ण भिक्तते । इतनें काम करियेते । महाभाग्य-वान् श्रीमंत होय । सो सुशारीर पावे । वाको भन्ने कुन्नें जन्म होय ॥ दाता भोका सर्व गुणयुक्त आयुरदा होय । आरोग्य होय । सो सुशारीर वारो जांनिये ॥ इति शारीर शक्ति—लन्न संपूर्णम् ॥

अथ शारीर शक्तिके पांच दोष लिख्यते ॥ जब या शरीर शक्तिमें। गंकार नहीं होय। १। सचिकनताहीन होय। २। अनुरंजनहीन होय। ३। खोखि धुनि होय। ४। स्वर गोल बधे नहीं। ५। कागकी सिनाई धुनि कठोर होय। ६। काहूसो स्वर मिले नहीं। ७। सूक्ष्म होय अथवा अति कर्कश होय। सो कुसारीर जांनिये॥ इति शारीर शक्तिके दोष संपूर्णम्॥

॥ अथ गमकको नाम-लछन लिख्यते॥

जो मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनों स्थान नमें । षड्जादिक स्वरनको कंप कीजिये । ओर जा कंपसों सुनिवेवारेके चिनमें सुख उपजे । सो कंप गमक जांनिये । ता गमकके पनधरह ॥ १५ ॥ भेद हैं ॥ तिरिप ॥ १ ॥ स्फुरित ॥ २ ॥ कंपित ॥ ३ ॥ छीन ॥ ४ ॥ आंदोलित ॥ ५ ॥ विलि ॥ ६ ॥ त्रिभिन्न ॥ ७ ॥ कुरुला ॥ ८ ॥ आहत ॥ ९ ॥ उल्लासित ॥ १० ॥ प्रावित ॥ ११ ॥ गुंकित ॥ १२ ॥ मुद्दित ॥ १३ ॥ नामित ॥१४॥ मिश्रित ॥१५॥ इन पनधरेहें भेदकों लखन कहत हैं ॥

3 गमक तिरिप ॥ जो कंप छोटे डमरुके धुनिकें कंपकी सिनाई होय । ओर दुत्वेगको चोथे वांटेसो लीजिये । सो गमक तिरिप जांनिये । 9 ।

२ गमक स्फुरित ॥ या गमककों जब दुतवेगके तीसरे वांटेसों लीजिये। तब गमक स्फुरित जांनिये । २ ।

३ गमक कंपित ॥ याहि गमककों जब द्रुतवेगके आधे बांटेसी डीजिये। सी गमक कंपित जांनिये। ३।

४ गमक लीन ॥ या गमककों जब संपूर्ण दुतवेगसीं बीजिये। सी गमक बीन जानिये। ४। **५ गमक आंदोलित ॥** या गमककों छघु वेगसों जब छीजिये। सी गमक आंदोलित जांनिये। ५।

६ गमक विल्ठि ॥ या गमकको जब तरह तरहकी वक्रताजुत लघु वेगसों लीजिये । सो गमक विल्ठ जांनिये । ६ ।

७ गमक त्रिभिन्न ।। यह गमक मध्य । १ । मंद्र । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकनमें विश्राम नहीं । ओरं गाढी धुनिसों होय । सो गमक त्रिभिन्न जांनिये । ७ ।

८ गमक कुरुला ।। या गमककों तरह तरहकी वक्रताजुत लघुवेगसों लीजिये । परंतु गांठे डोरके सिनाई लीजिये । ओर उन गांठिनमें कंठकी धुनि कोमल कीजिये । सो गमक कुरुला जांनिये । ८ ।

९ गमक आहत ॥ जो स्वरकों कंप आरोहमें ॥ स्वरकें अंतको मिछिकें ॥ फेर अपने स्वरमें आवे । सो गमक आहत जांनिये । ९ ।

१० गमक उल्लासित ॥ जो कंप आरोहमें आगते सिगरे । स्वरनमें होयके अपमें स्वरमें आवे । सा गमक उल्लासित जांनिये । १० ।

११ गमक प्लावित ॥ जो कंपप्लुत वेग करिकें लीजिये। ओर आरोह-में सिगरे स्वरनमें होयके॥ अपनें स्वरमें आवे। सो गमक ष्टावित जांनिये। ११।

१२ गमक गुंफित ॥ जे। कंप गाइवेमें । सुंदर हुंकारमें छीजिये । ओर गंभीर होय । सो गमक गुंफित जांनिये । १२ ।

१३ गमक मुद्रित ॥ जो कंप मुखमूंदिकें लीजिये । सुनिवेमें सुंदर होय। सो गमक मुद्रित जांनिये । १३ ।

१४ गमक नामित ॥ जो कंपपें स्वरकों नमायकें लीजिये । सो गमक नामित जानिये । १४ ।

१५ गमक मिश्रित ॥ इन गमकनमें दोय गमक वा तीन गमक मिले होय। तब बह मनक मिश्रित जांनिये। १५। ता मिश्र गमकके अनेक भेदहें। ते आगें स्थापनमें कहेंगे॥

9 अथ प्रतिहत आदि गमकके भेद हैं । तिनके नाम-छछन छिरूपते ॥ षड्ज आदि सात स्वरनके बजायवेमें वीणांके तारमें दोय बार आंगुलिके ताडनतें। जो गहरो शब्द होय। सो मितहत जांनिये॥ परंतु वह दोय वार ताडन ऐसे कीजिये। पहली वांमें हातकी अंगुलीसों वीणाको तार दाबिकें ॥ दाहिणें हातकी आंगुरीसों एकवार वीणांको तार बजाइये। ताके संगही बांये हाथकी अंगुरीकों। तार ऐसों कळूक उछालिये। जेसें पहले स्वरकों कळूइक श्रवण होय। फेर वाही जगा बांये हातसों। तत्काल तार दाबिकें वाही दाहिणें हातसों तारकों दूसरो ताडन करनों। ऐसे दोय वर ताडनतें। जोविणामें स्वरकों शब्द होय। सो प्रतिहत गमक जांनिये। १।

२ अब आहतको छछन कहतहें ॥ जो वीणांके बजायवेमें । एक स्वर बजाइये वांके आगेको स्वर वा तीसरो । अथवा पहलो स्वरको स्पर्श करे हाथकी चलाकीसों । फेरफेर तार दांबे नही । सो आहत जांनिय । २ ।

३ अब अनुहतको ठछन कहेहें ॥ वीणांको एकवार बांये हातके नखसों वीणांको तार दाबिके दाहिनें हातसों ताडन कीजिये । फेर अंगुरीकों उछाछे नही ॥ ओर बांये हातको नखकों कछूक ढीछो करिकें । पहछे स्वरकों भाव दिखावे। बांये हातके नखको गाढो दाबिये । दांये हातसों ताडन कीजिये । तब हुंकार धुनि होय । सो अनुहत जांनिये । ३ ।

४ अब आहितिको छछन कहत हैं ॥ अनुहतमें जेसें पहले बांये हातके नखसों तार दाबिकें तांतको ताडन करि । बांयो हात ढिलो करि घणी सिताविसों फेर गाढो दाबिये । दाहिनें हातसों दूसरो ताडन नहीं कीजिये । तब हुंकार रूप जो पहलो सब्द । सो आहिति जांनिये । ४ ।

५ अब पीडाको ठछन कहेहें ॥ जो विणामें पहले दोऊ स्वरके स्थानक बांये हातकी अंगुरीके अयसों मध्यमसों गाढो दाबिकें । दांहिनें हातसों ताडन करे । आगलो स्वर दिखावे । बांये हातकी अंगुरीसों आगले स्वरसों तत्काल उठाये । पहले स्वरपें राखिणी तब जो पहले स्वरको दरसन होय । सो पीडा जांनिये । ५ ।

६ अब आंदोलन ललन कहतहें ॥ जहां बांये हातसों तार थोडो दाबि। इाहिणें हातसों ताडन करि। बांये हातसो कमसों गाढो दाबिये। फेर कमसों ढीलो करि पहले राख्यो जेसो राखिये। सो आंदोलन जांनिये। यांको झुला यवो कहतेहें। ६।

७ अब आकर्षणको छछन कहेहें ॥ बांये हातसों तार ढीछो दाबिकें ताडन कीजिय । फेर बांये हातसों गाढो दाबिये । सो धुनि आकर्षण जांनिये ॥ याहिको नाम विकर्षण कहत हैं । ७ ।

८ अब गमक नामयमकको छछन कहतहें ॥ बांये हातसों तार ढी छो करि दाबि। दाहिनें हातसों गाढो ताडन करि। बांये हातसों गाढो दाबिये। फेर जलदी कमसों ढी छो की जिये। ऐसें दोय तीन च्यारि बार की जिये। जांतांइ तारमें गंकार रहें। सो धुनि गमक नामयमक जांनिये। ८।

९ अब कंपको छछन कहतहें ॥ बांये हातसों तार दाबि । दाहिनं हातसों ताडन करि । बांये हातकों तनक तनक ढीछो अरु गाढो करनों तार हाछति हाछति जो धुनि होय । सो कंप जांनिये । ९ ।

१० अब घर्षणको छछन कहे हैं ॥ जो तानें बांये हातसों दाहिनें हातसों ताडन करि जो धुनि होय ताको पहले स्वरसों वा आगिले स्वरसों थोडो लगावे । सो घर्षण जांनिये। कलावंत या घर्षणको मींड कहतहें। १०।

99 अब मुद्दाको छछन कहतहें ॥ जो बांये हातसों आगछे स्वरकी जाय दाबि । दाहिनें हातसों ताडन करि आगछे स्वरसों सुनावे । फेर दूसर स्वरकों सुनावे । पहछे स्वरकों स्थापन करनें। सो मुद्दा जांनिये । ११ ।

१२ अब स्पर्शको छछन कहेहें ॥ जहां पहले स्वरके बजायवेमें । सिता-वीसों आगले स्वरकों स्पर्श किर । फेर पहले स्वरकों स्थापन कीजिये । सो स्पर्श जांनिये । १२ ।

१३ अब निमनता कहि स्वरको नीचो करिवो ताको छछन कहे हैं।। जो तांरको बांये हातसों दाबिकें। दाहिनें हातसों ताडन करि अरु बांये हातसों। ऐसो गाढो दाबिये। जासों तंत्रीकी धुनि नीचिसी बोछे। सो निमनता जांनिये। १३।

१४ अब प्लुतको छछन कहे हैं ॥ जहां बांये हातसों वीणाको तार

दाबिकें दाहिनें हातसों गाढे। ताडन करि । अति सितावीकोंसो सातें स्वरकों दिखायदे। फर वांहि स्वरपें बांयो हात राखे। सो प्छत जांनिये। १४।

१५ अब द्वतको लछन कहे हैं ॥ जो सिताविसों पहलो स्वर बजायकें वांसो मिलतोहि । अति सिताविसों दूसरो स्वर बजाइये ॥ जंसें सुनि-वेवारो एक वारके बजाये तें । दोऊ स्वर सुने । सो द्वृत जांनिये । १५ ।

१६ अब परताको छछन कहे हैं ॥ जो षड्ज आदि स्वरकी सारिमें तार देखिकें आगछे स्वरसों दिखायवो चमत्कारसों ऐसेहि रिषम आदिक स्वरनकी सारिमें । गांधार आदि स्वरको दिखायवो । सो परता जांनिये । १६ ।

१७ अब उच्चताको लछन कहे हैं ॥ जो षड्ज आदिक स्वरनकी सारिमें तार घणों खेंचिकें । गांधार आदिक स्वरकों दिखायवो । ऐसे पहले स्वर तीसरे स्वरकों दिखायवो । सो उच्चता जांनिये । १७ ।

१८ अब निजताको छछन कहे हैं ॥ जो निजता दोय प्रकारकी हैं । परता निजता ॥ १ ॥ उच्चता निजता ॥ २ ॥ तहां जो पड्ज आदि स्वरकी सारिमें तार खेंचिकें । आगछे रिषम आदिक स्वरकों दिखायकें हरुवे हरुवे तारकों ढीलो करि । फेर पहले षड्जादिक स्वरकों दिखायवों । सो परता निजता जांनिये ॥ ओर पड्जादिक स्वरकी सारिमें । घणों तार खेंचिकें तीसरे गांधा-रादि स्वरकों दिखायके । फेर धीरे धीरे तारकों ढीलो करिकें । षड्ज आदि पहले स्वर पड्ज आदिकों दिखायवों । सो उच्चता निजता जांनिये । १८ ।

१९ और ये दोऊ निजता एक ताडनमें जांनिये ॥ जो बांये हातसों तार दाविकें । दाहिनें हातसों ऐसो ताडन कीजिये । जेसो तार खेंचिकें रिषमा-दिक वा गांधारादिक स्वर दिखायकें । षड्जादिक स्वरनको दिखायको बने ऐसो एक ताडनमें कही । ओर कोइक आचार्य या निजतामें । दोय ताडन कहत हैं । सो या रीतिसों जो षड्जादिकनकी सारिमें तार खेंचिकें । दाहिनें हातसों ताडन करि । रिषम आदिक गांधार आदिक स्वर । दूसरे तीसरे दिखावनें । फर दाहिनें हातसों दूसरो ताडन करि । षड्ज आदि स्वर दिखावें । बा रीतिसों दोय ताडन करि । दूसरे स्वरतें पहले स्वरकों दिखावनों । सो परता निजता ओर तीसरे स्वरत पहले स्वरकों दिखावनों । सो उच्चता निजता । १९ ।

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय-स्वरके आघात गमकको नाम-लज्जन. १३

२० अब समको उछन कहे हैं ॥ जो ठहरि ठहरिकें सातों स्वरकों बजा-यवो । सो सम जांनिये । २० । इति बजायवेमें आघात गमकके वीस भेद संपूर्णम् ॥

अथ मृदुस्थान कठिन स्थानको लछन लिख्यते ॥ जो मंद्रस्थान तें कछूक चढतो स्थान हैं । सो मृदुस्थान जांनिये । १ । ऐसें तारस्थानतें कछूइक नीचो स्थान कठिन जांनिये ॥ इति मृदुस्थान कठिन स्थानको लछन संपूर्णम् ॥

अथ बीस तो स्वरकें आघात गमक पतिहत आदिक ॥ ओर दोय मृष्टु मंद्र ओर कठिन तारस्थान तिनके जनायवेकें तांई षड्जादिक सात स्वरनमें सहनानीको प्रकार छिख्यते ॥

- १ अब पितहतकी सहनानी जो षड्जादिक स्वर लिखिकें विसर्ग दीजिये। विसर्ग कहिये। आगें दोय बिंदु। सो पितहत्तकी सहनानी हें॥ जैसे-सः
- २ ओर ऐसेंहि सहनानी एक विसर्ग होय। सो आहतकी जांनिये॥ जसे-स.
 - ३ जहां विसर्ग नहीं होय । सी अनुहतकी सहनाणी हे ॥ जेसे-स
 - ४ जहां रेषासहित बिंद् नीचे होय। सो आहितकी सहनाणी हे ॥ जेसे-स
 - ५ जहां आगें दोय लीकहै। सो पीडाकी सहनाणी हैं॥ जेसे-स ॥
- ६ ओर जहां आगेंकों गुरुकी सहनानी कीजिये। ओर छघु कीजिये। सी अंदोछकी सहनानी हैं॥ जेसे-सऽ।
- ७ जहां आगेंकों आधे गुरुकी सहनानि होय। सो आकर्षणकी सह-नानी हैं॥ जेसें-स>
- ८ जहां ऊपरको गुरुकी सहनानी तिरछी होय । सो गमक नाम यमककी सहनानी हैं ॥ जेसं—स
 - ९ जहां आगें एक गुरु होय । सो कंपकी सहनानी है ॥ जैसे-सऽ
 - १० जहां आधो छघु आगें होय। सो घर्षणकी सहनानी हें॥ जेसें-स
 - ११ जाके तिरछो आधो छघु होय। सो मुदाकी सहनानी हैं॥ जेसें-स
- १२ जहां निचेंकों आढि छकीर कहतें। तिरछो छघु होय। सो स्पर्शकी सहनानी ह॥ जेसें-स

१३ जहां ऊपर आधो अनुस्वार होय । सो निम्नताकी सहनानी हें ॥ जेसें-सं

१४ जहां निचें अणु होवे । सो प्लुतकी सहनानी हं ॥ जेसें-सु

१५ जहां आंगेकों अणु होय। सो दुत गमककी सहनानी हैं॥ जेसें-स

१६ जाकें निचेकों शृंखला कहते । बेडीकी सहनानी होय । सो परता-की सहनानी हैं ॥ जेसें-स

१७ जहां निचेंकि गुरुकी सहनानी होय । सो उचताकी सहनानी हैं ॥ जेसें-सु

१८ जहां निचेंकों आडी गुरुकी सहनानी होय । सो परतानिजताकी सहनानी हैं ॥ जेसें-स

१९ ओर बिंदुसहित आंडे गुरुकी सहनानी होय । सो उचता-निजताकी सहनानी हैं ॥ जेसें-सं

२० जहां निचेंकों बिंदुसहित गुरु होय । सो समकी सहनानी हें । जेस-मू

२१ जहां आगें बिंदु होय। सो मृदुस्थानकी सहनानी हें ॥ जेसें-स॰ २२ जहां उपर बिंदु होय। सो मंद्रस्थानकी सहनानी हें ॥ जेसें-सं

२३ जहां उपर बिंदु दोय होय । सो कठिनस्थानकी सहनानी हे ॥ जेतें-सं

२४ जहां उपर उभी छीक होय। सो तारस्थानकी सहनानी हे ॥ जेसें-से ऐसी तेरहें अनेक बजायवेके कियानसों। जो स्वरमें चिमतकार छीजिये। गुंकार होय। सो गमकहें ॥ रागमें गमक किये तें अनुरंजन होतहें। यातें इनको गमक कहतहें ॥ अथवा स्वरको न्यारो रूप होय। सो कैवल्यताको छछन कहें हैं ॥ दाहिनें हातकी अंगुछीमें नाखूंन पहरीकें जो वीणाके तारको बजावे। ओर बांये हातसों कछूभी किया नहीं करे। तब अतिनिश्चछ कंप-रहित। जो स्वरकी धुनि। सो स्वरको कैवल्य जांनिये॥ या नाखूंनको सास्त्रमें अंगुल्य त्राण कहेंहें ॥ अबें हुंकारको छछन कहेहें ॥ जो तारके दाबिवेकी कियासों स्वरमें हुंकारकी तरह दिसें। सो स्वर हुंकत जांनिये॥

चतुर्थं प्रकीर्णाध्याय-स्वरके अघात गमकको नाम-लछन. १५

अथ एक स्फालन संभवन स्वरको लखन लिख्यते॥ जो बांये हातसों वीणाके तार दाबिके। दाहिनें हातसों एकवार ताडन किर वा गंकारमें बांये हातकी चलाखीसों बहुत स्वरनको बिचमें दिखावे। फेर वाहिस्थान बांइ हातकी अंगुरी राखी पहले स्वरकों दिखायवे। सो स्वर एक स्फालन संभव जांनिये॥

अथ सरिरमें जे। हुंक्टत स्वर ताको लछन कहे हैं।। जा हदयसों गडी लगाय मुखमूंदिकें हुंकार कीजिये। तब जो सब्द होय। सो सारिर हुंक्टत स्वर जांनिये॥

अथ च्यावितस्वरको लखन लिख्यते ॥ जो ऊंचे स्थानमें उठिकें नीचेंकों आवे। फेर निचें जायकें फेर उठे उपरतें नीचें जायकें बीचके दोय च्यार स्वरनको दरसावो होय। सो च्यावितस्वर जांनिये॥ इहां अवरोह कमसों स्वरको दरसायवो होय हैं ॥ यातें या स्वर च्यावित होतहें ॥ ऐसेंहि मुख उठा-यकें धुनि कीजिये ॥ फेर कमसों धुनि कहतहें ॥ मुख नीचेंको छाति तांइ छे-जाय तब जो धुनिमें अवरोह कमसों स्वर होय॥ ते सारि च्यावित स्वरहें ॥ इति ॥

अथ स्वरकर्ष लछन लिख्यते ॥ जब एक जंगी बांये हातसों दाबिकें। दाहिनें हातसों एकवार ताडन करि सिगरे स्वरनकों चमत्कारसों दरसावें सो स्वर-कर्ष जांनिये ॥ इति ॥

अथ स्टाइंट्रको लाइन कहेहैं।। जो स्वरकी धुनि करि आंगुरीसों सुंदर तरह दवावणी ॥ जेसें दबतो स्वर काननको प्यारो लगे । सो स्वरनेम्न जांनिये॥ इति ॥

अथ स्वरहतको लछन लिख्यते ॥ जो स्वरकी धुनि करि। आंगुरीसों आधिक धुनि रोकी देखिये । सो स्वरहत जांनिये ॥ इति ॥

अथ हताहतको लछन लिख्यते ॥ जो बांये हातसीं तार दाबि। दाहिनें हातसीं एकवार ताडन करे। बांये हातकी चलाकीसों दोय स्वर दिखावे। सो हताहत जांनिये॥ इति॥

अथ हतोचराहतको लछन लिरूयते ॥ जब पहले स्वरकी धुनि

करे । बांये हातकी चलाकीसों आगलो स्वर दिखाये । फेर पहिले स्वरसों दिखावे । सो हतोत्तराहत जांनिये ॥ इति ॥

अथ तिरिपनाम गमकको काल प्रमाण कहेहें।। जो द्रुत अक्षरको समयहें। अठाइस लघु अछिरको उच्चार काल ताकी चाथाई कालसों द्रुत-वेग लीजिये। तब तिरिप गमक होय। सुनिवेक समय भेदसों अनेक प्रकारको, तिरिप हैं। सो तिरिपके भेद तिरिप आदि गमकनमें पहले कहेहें।।

अब द्विराहतको लखन कहेहें ॥ जो स्वरकों लंबो करिवेकें लिये। एक ठोर वीणांके तारमें दोय वार ताडन कीजिये। तब गहरो स्वर होय। सो द्विराहत जांनिये॥ इति॥

अथ ढालुको लखन कहेंहं ॥ जो वीणाके तारको ताडन करे । बांये हातकी अंगुरी दोय स्वरमें सितावी सितावी फेरिये। तब जो दोय स्वरको चढतो उतरती स्वर होय । सो ढालु जांनिये ॥ सो ढालु आरोह कममें । ओर एक अवरोह कममें होत हैं । ऐसें ढालुके भेद दोय जांनिये ॥ इति ॥

अथ सुढालु लछन लिख्यंत ॥ जहां वीणाके तारको ताडन करि । बांये हातकी अंगुरी तीन स्वरमें चढती उतरती सितावी सितावी फेरिये । तब जो तीन स्वरको चढतो उतरतो सब्द। सो सुढालु जांनिये ॥ यह सुढालुहू आरोह अवरोह कमसों दोय प्रकारको हैं ॥

अब अनाहतको लछन कहे हैं ॥ जहां एक ठोर तारकों ताडन करी वा स्वरको दिखावें वांहिके गंकारमें बांये हातसों ओर ठोर सितावी दाबि ओर स्वरको जो दिखायवो । सो दूसरो अनाहत जांनिये ॥ याही अनाहतकों सांच स्वर कहे हैं ॥ कींऊ पंडित पहले स्वरकों तो सांच कहे हैं ॥ दूसरे स्वरकों अनाहत कहे हैं ॥ इति ॥

अथ मुद्राको लखन लिख्यते ॥ जो स्वरकों ताडन करिकें । बांये हातकी अंगुरीसों कमतें रोकिये । सो गुंफीतको एकदेस मुद्रा जांनिये ॥ इति ॥

अथ स्वस्थानको लखन लिख्यते ॥ जो स्वर पहिल श्रुतिपें उि पिछिल श्रुतिपें जायकें । फेर पहिल श्रुतिपें आवे । सो स्वस्थान जांनिये ॥ इति ॥ अथ ग्रहस्थानको लखन लिख्यते ॥ जो स्वर पिछिछि श्रुतिपें उठिकें पहिल श्रुतिपें जायकें फेरं पिछिछी श्रुतिपें आवे । सो ग्रहस्थान जांनिये॥ इति घात गमक लखन सहनाणी स्वर बजायंवके भेद संपूर्णम् ॥

अथ मिश्र गमक के भेद है ॥ ते स्थाय जो रागखंड तिनमें होतहें वेर राग-खंड के गमक हें तिनको वाग कहतहें । तहां वागको छछन कहवेको स्थाय । जो रागखंड तिनको छछन छिख्यते ॥ जहां रागखंड किहये । न्यास स्वर ॥ १ ॥ विन्यास स्वर ॥ २ ॥ अपन्यास स्वर ॥ ३ ॥ संन्यास स्वर ॥ ४ ॥ इन च्यारें स्वरनमें कोईक स्वरें विश्राम पावे ॥ अंसआदि स्वरकों समूहसों रागखंड हें । वाहको नाम स्थाय जांनिये । या स्थायमें जे गमक होय तिनकों वाग कहत हें ॥ जहां स्थायके भेद च्यार हें ॥ असंकीर्ण ॥ १॥ गुणकृतभेद ॥ २॥ षत्मसिद्धा ॥ ३॥ संकीर्ण ॥ ४ ॥

अवें असंकीर्ण स्थापके भेद दस हैं ॥ तिनको नाम कहे हैं। सब्द स्थाप ॥१॥ ढाल स्थाप ॥ २ ॥ लवनी स्थाप ॥ ३ ॥ वहनी स्थाप ॥ ४ ॥ वाद्यशब्द स्थाप ॥ ५ ॥ जंत्र स्थाप ॥ ६ ॥ छाया स्थाप ॥ ७ ॥ स्वरलंघित स्थाप ॥ ८ ॥ मेरित स्थाप ॥९॥ तीक्ष्ण स्थाप ॥१०॥ यह दस स्थाप ऐसें कीजिये ॥ इति ॥

अथ असंकीर्णकं स्थापनके लछन लिख्यते ॥ तहां सन्द स्थापको लछन कहे हैं ॥ जा स्वरकी धुनिमें पहलो रागखंड छोडिये । और दूसरो राग खंड लीजिये । ता स्वरकों जो समूह । सो सन्द स्थाप जांनिये ॥ १ ॥

अब ढाल स्थापको लखन कहे हैं ॥ जा रागखंडमें गोल मोती तरह स्वरकी झुलत रहनें टेडी सुधि होय । मनकों आनंद करे । सो रागखंड ढाल स्थाप जानिये ॥ २ ॥

अब ठवनी स्थापको ठछन कहे हें ॥ जो स्वरनमें नमायवेतें अति-कोमछ ढाछ होय । सो वहनी हें ॥ वह वहनीसों मिछे स्वर। जा रागखंडमें होय । सो रागखंड छवनी स्थाप जांनिये ॥ ३ ॥

अब वहनी स्थापको लछन कहे हैं ॥ जा रागखंडमें आरोहि वर्णमें ओर अवरोहि वर्णमें अथवा संचारि वर्णमें जो स्वरनको कंप । सो वहनी हैं ॥ ऐसें कंपजुब आरोहि । अवरोहि संचारि वर्ण रागखंडमें होय । सो वहनी स्थाप जांनिये ॥ सो वहनी दोय प्रकारकी हैं ॥ गीतके प्रबंधके आरोहि । संचारि वर्णमें कंप होय । सो गीत वहनी कहिये ओर आलापके आरोहि अवरोहि संचारि वरनमें कंप होय । सो आलाप वहनी जांनिये ॥ १ ॥

अब वहनी फेर दोय पकारकी हैं ॥ जो धीरा धीरा आरोहि आदि वर्णमें कंप लीजिये । सो स्थिरावहनी जांनिये ॥ २ ॥ ओर जो आरोहि अवरोहि आदि वर्णमें । घणी उतावलसों कंप लीजिये । सो वेगावहनी जांनिये ॥ सो वहनी फेर तीन । ३ । पकारकी हैं ॥

तहां जो मंद्रस्थानकें स्वरमें कंप लीजिये। सो ह्यावहनी जांनिये। १। जो मध्यस्थानके स्वरकों कंपमें कंठ कीजिये। सो कंठया जांनिये। २। जो तारस्थानके स्वरनकों कपालिस्थानमें कंप लीजिये। सो शिरस्या जांनिये। ३।

जो वहनी दोय प्रकारकीहें। जा कंपमें स्वर निचेंकों कंठ तेसें जानेपडे। सो कंप खुत्तावहनि जांनिये। १।

और जा कंपमें स्वर उपरकों चडतेसें जोनेपडे। सो उत्फुलावहनी जांनिये।२। और जो विलनाम गमक पहले पनदरह गमकनमें बहोत कहोहें। सो विलगमक हुं वहनीकी नाई बहोत प्रकारको जांनिये। ३।

जो जो राग खंडमें वहनी कंप होय। सो राग खंडवहनी जांनिये। ४। अथ वायसब्द स्थापको लखन लिख्यते॥ जो रागमें मिले विणा आदि बाजेनके शब्द। कुणकुण धिमिधिमि। इत्यादिक सर्व शब्द रागमें लीन होय। सो राग खंडवाद्य शब्द स्थापना जांनिये। ५।

अवं जंत्रस्थापको लछन लिख्यते ॥ जे राग खंड आछी तरह वणी-वर वीणादिक जंत्रमें वरते जाय । कंठसों थोडे वरतेजाय ते यंत्र स्थाप नांनिये। ६।

अब छायास्थापको लछन कहेहें ॥ तहां छायाको काकु कहते । धुनिकों उतारिवेतें चढावेतें जो विकार होय । सो काकु जांनिये ॥ सो काकु छइ प्रकारकी हैं ॥ तहां सुद्धस्वरकी जे ॥ श्रुति कहि तिनकी विक्रतस्वरमें घटीवे विधेवेतें जो ओर स्वरकी ओर स्वरमें एकसी धुनि जानि होय । सो स्वर काकु कहिये ॥ जेसें पड्जकी च्यार श्रुतिमें । पहली दोय श्रुति काकिलिनिषाद होतें । वह दोय श्रुतिको निषाद जब काकली होयकें ॥ षड्जकी पहली दोय

श्रुति छेतहें ॥ तव वह च्यार श्रुतिकों काकछिनिषाद ॥ षड्जसों जान्यों जायहें ॥ सो यह स्वर काकु जांनिय । १ । एमें ओर स्वरनमें देखियेहें ॥

जहां रागकी धुंनिमें अनेक रागकीहि छाया होय। सो राग काकु जांनिये। २।

जहां रागकी धुंनिमें आपेनं रागकी छाया होय। कहूक ओर राग कीसी छाया होय। सो अन्य राग काकुं जांनिये। ३।

जहां रागकी धुंनिमें रागके देसकी भाषा वा रागके देसके भेस । वा रागके देसकी नकलसों घणो सुख उपजे। सो देस काकु जांनिये। ४।

जहां रागकी धुंनिमें क्षेत्र किह्ये। सरीरसों अनेक सिरिरेहं स्ती। १। पुरुषके। तिन अनेक सरीरमें कोमलता। १। कठिनता। २। बालक। ३। तरुण। ४। वृद्धा। ५। इन भेदतें एकही रागके गायवेमें। रुचि। १। अरुचि। २। रंजन। ३। रुखाई। ४। जानी जातहें। सो क्षेत्र काकु जांनिये। ५।

जहां रागकी धुंनि कंठके गाइवेसों वीणामें अथवा मुरलीमें ओर अनेक तार वा फूकके। सब बाजेनमें गावनेंसों चितकों घणों आनंद करे। सी जंत्र काकृ जांनिये। ६।

ए छह प्रकारके काकुस्थाप जांनिये ॥ ये छह प्रकारके काकु जिन राग खंडनमें होय तें । रागखंडछायास्थाप जांनिये । ७ ।

इन भेदनको जा संगीत ग्रंथकों पढिकें गीतवाद्यकों विना गुरु विचारे यह मारग पावते नहीं । सास्त्रके करता भरतादिक हनुमान मतंगादिक कहेहें ॥

जहां रागखंडके स्वरनमें बीचबीचके स्वर छोडिकें। स्वरनकों उच्चार होय। सो रागखंडस्वरछंचितस्थाप जांनिये।८।

जहां रागखंडके स्वरनकों आहे तिरछे नीचेऊंचे करिकें उच्चार कीजिये । सो रागखंडपेरितस्थाप जांनिये । ९ ।

जा रागलंडमें तारस्थानके स्वरको संपूरन श्रुति छेकें तीक्ष्ण उच्चार करिये। सो रागलंडतीक्ष्णस्थाप जांनिये। १०। इति असंकीर्ण दशस्थापनके नाम-लखन संपूर्णम्॥

अथ स्थापनके गुणाकृत तेतीस नाम लिख्यते ॥ भजनस्थाप

। १। स्थापनास्थाप । २। गतिस्थाप । ३। नादस्थाप । ४। ध्वनिस्थाप । ५। रागछविस्थाप । ६। रिक्तस्थाप । ७। धृतशब्दस्थाप । ८। भृतस्थाप । ९। रागअंशस्थाप । १०। रागावधानस्थाप । ११। अपस्थानस्थाप । १२। निकृतस्थाप । १३। करुणास्थाप । १४। विविधत्वस्थाप । १५। गावस्थाप । १६।
उपशमस्थाप । १०। काण्डारणास्थाप । १८। निर्जवनान्वितस्थाप । १९।
गाढस्थाप । २०। छछितगाढस्थाप । २१। छछितस्थाप । २२ । छछितस्थाप । २२ । छितस्थाप । २६। स्थिप्धस्थाप । २०। चोक्षस्थाप । २८। उचितस्थाप । २९। सुदेशस्थाप । ३०।
आपिक्षितस्थाप । ३१। घोषस्थाप । ३२। स्वरस्थाप । ३३। इति तितीस
प्रसिद्धस्थापके नाम संपूर्णम् ॥

॥ अथ इन तेतीस स्थापके भेद लिख्यते ॥

3 जा रागखंडमें कंप आदि गमकनसों रागको गमकको अतिशय किहये चमत्कारकी वृद्धि होय। सो भजन किहये ॥ यह भजन जा रागखंडमें होय। सो भजनस्थाप जांनिये। 3।

२ जहां शब्दंक सबपद्में अंतर्के स्वरकों ठहराय ठहरायकें करत जो उच्चार करिये । सो स्थापना कहिये ॥ स्थापना जुत जो राग खंड । सो स्थापनास्थाप जांनिये । २ ।

३ अथ गतिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी गति मत्तवारे हाथीकीसिनांई विलास लिये होय । सो गतिस्थाप जांनिये । ३ ।

४ अवे नादस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको नाद मधुरतालिये होय कांनको प्यारा लगे । सो नादस्थाप जांनिये । ४ ।

५ अथ ध्वनिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडको घणें दीर्घ स्वरकों उच्चारसों वरताव कीजिये । सो ध्वनिस्थाप जांनिये । ५ ।

६ अथ छविस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरकी कोमल-तासों अनुरंजन घणों होय । सो छविस्थाप जांनिये । ६ ।

9 अथ रक्तिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनमें जमायवेर्ते अनुरंजन होय । सो राक्तिस्थाप जांनिये । ७ ।

८ अथ धृतशब्दस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरकों एक छिन वरतायवेतें राग बनें । सो धृतशब्दस्थाप जांनिये । ८ ।

९ अथ भृतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें गहरिधुंनिसों स्वरके भरिवेमें अनुरंजन होय । सो भृतस्थाप जांनिये । ९ ।

१० अथ रागांशस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें । ओर रागके अंश कहिये ॥ स्वरसमूहको खंड सोभाके लिये । वा अनुरंजनकेलिये वरितये । सो अंश कहिये ॥ ता अंशके छह । ६ । भेदहें ॥ कार्यांश । १ । कारणांश ।२। सजातिअंश । ३ । सदृशांश । ४ । विसदृशांश । ५ । मध्यस्थांश । ६ ।

अथ छह अंशनको लछन लिख्यते ॥ तहां कार्यांशको लछन लिख्यते ॥ जो राग जा रागको उपजो होय । सो उपजो रागनसों कारिज जांनिये ॥ उपजायवेवारेकी राग कारण जांनिये ॥ तहां कारण राग अनुरंजनके अरथ कारज रागको अंश लीजिये । सो कार्यांश जांनिये । १ । जैसे भैरव कारण रागमं । कारिज राग भैरवीको अंश लेतहें । १ ।

अब कारणांशको लछन लिख्यते ।। जहां कारिज रागमें कारण रागको अंशसेश रंजनकेतांई लीजिये । सो कारणांश जांनिये । २ । जेसें राम कृत कारज रागमें कारणराग कोलाहल रागको अंश लेतहै । २ ।

अथ सजातिअंशको लछन लिख्यते ॥ जे जे राग एक जातिसीं उपजे ते ते राग आपसमें सजाति दावकहें । सो सजातिअंश जांनिये । ३ ।

दुसरे सजाति परांशको अंश लीजिये । सो सजातिअंश जांनिये ॥ जेसें गोडराग कर्णाटराग सजातीयहें । तेसें गौडमें कान्हडेको अंशहें । ४ ।

अथ सदशांशको लखन लिख्यते ॥ जिन रागनको स्वरसमूह समान होय ते राग सदश कहिये।

जहां सदश रागमें सदशांशको अंश लीजिये। सा सदशांश जांनिये॥ जेसें सुद्ध नद्दा तहां राग सुद्ध वराटी राग यें दोऊ सदश है॥ यहां सुद्ध नद्दामें सुद्ध वराटिको अंश लेतहें॥

अथ विसदृशांशको लखन लिख्यते ॥ जिन रागनके स्वरसमूह न्यारे न्यारे होय ते वे राग विसदृश जांनिये ॥ तहां विसदृश रागमें दुसरे वि-

सदश रागको अंश लीजिये। सो विसदशांश जांनिये॥ जेसें वेलावली राग ॥१॥ गुर्जरीराग ॥ २ ॥ ये दोऊ वीसदशहं ॥ इहां वेलावलीमं गुर्जरीको वा गुर्जरीमें वेलावलीको अंश लेतहै । ५ ।

अथ मध्यस्थांशको लखन लिख्यते ॥ जिन रागनको स्वरसमूह कछूइक तो न्यारो होय। कछूइक समान होय। ते वे राग मध्यस्थ कहिये ॥ सो मध्य मध्य रागमें दुसरे मध्यस्थ रागको अंश लीजिये। सो मध्यस्थांश जांनिये॥ जेसें नटाराग अरु देसाखराग ये दोऊ मध्यस्थेहं ॥ इहां नटामें देसाखमें नटको अंश लेतेहं। ६। ऐसं छह लखन अंश समझिये ॥ ऐसेंहि छह होय। इन अंशनमें कोई अंशमं कोई अंशकां अंश आवे। सो सम अंशांश कहिये॥ जा रागखंडमें अंश आवे। सो रागअंशस्थाप जांनिये। ५०।

- ११ अथ रागावधानर्स्थापको लक्छन लिख्यते।। जा रागखंडमें निश्चय मन लगायतें रागकों स्वरूप समझिये। सो रागावधानस्थाप जांनिये। ११।
- 1२ अथ अपस्थानस्थापको लक्ष्यते॥ जहां मंद्र । १। मध्य । २। तार । ३ । स्थानमें परिश्रम विनाहि । सहजसों रागकी मिलती धुंनि होय । सो तो स्वस्थान धुनि कहिये॥ ओर ना स्थानमें परिश्रमसों रागकी मिलती धुनि कीजिये। सो अपस्थान धुंनिहें॥ यह अपस्थान धुनि जा रागखंडमें होय । सो अपस्थानस्थाप जांनिये। १२ ।
- १३ अथ निकृतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरकों वोडजोडसो उचार कीजिये। वणी चतुराईसों राग वरत्यो जाय। सो निकृत-स्थाप जांनिये। १३।
- १४ अथ करुणास्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनमें उच्चारसों करुणा रसकी उतपत्ति होय । सो करुणास्थाप जांनिये । १४ ।
- १५ अथ विविधत्वस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें अनेक पकारके स्वरनकी मरोडसें अनेक रवना पगट होय।सो विविधत्व जांनिये । १५ ।
- १६ अथ गात्रस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें आपनें सरीरकी निपट ऊंचि धुंनिसों कपालिस्वरनको उच्चार कीयेतें राग बनें आछो होय । सो गात्रस्थाप जांनिये । १६ ।

१७ अथ उपशमस्थापको लछन लिख्यते॥ जा रागखंडमें स्वरनको सुक्ष्म उच्चार कीयेतें राग बनें। सो उपशमस्थाप जांनिये। १७।

१८ अथ कांडारणास्थापको लछन लिख्यते ।। जा रागलंडमें मध्यम-स्थानके वा तारस्थानके स्वरनको सितावि उच्चार कीयेतें राग बनें । सो कांडा-रणास्थाप जांनिये । १८ ।

१९ अथ निर्जवनान्वितस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें सरस्र । १ । कोमरु । २ । स्वर होय । उन स्वरनको कमतें सूक्षिम सूक्षिम उच्चार कीयेतें राग बनें । सो निर्जवनान्वितस्थाप जांनिये । १९ ।

२० अथ गाढस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागसंडमें स्वरनको सिथल उचार कीजिये। केर उनहीं स्वरनको अनुरंजनके लिये। तीक्षणतासों गाढो उचार कीजिये। सा गाढस्थाप जांनिये। २०।

२१ अथ लिलिगाढस्थापको लछन लिख्यते ।। जा रागखंडमें पहले स्वरनको सिथल उच्चार करि फर उनहीं स्वरनको गाढो उच्चार कीजिये । अनुरंजनके लिये । सा लिलिगाढस्थाप जांनिये । २१ ।

२२ अथ लिलिस्थापको लछन लिख्यते।। जा रागखंडमें स्वरनको सिथल उचार करि गाढो उचार कीजिये। परंतु बीचमें विलास नये नये उपजे। सो लिलिस्थाप जांनिये। २२।

२३ अथ लुलितस्थापको लखन लिख्यते ।। जा रागखंडमें स्वरनकी कोमलतासों झुलिन कीजिये । चमत्कारके लिये । सो लुलितस्थाप जांनिये । २३ ।

२४ अथ समस्थापको लछन लिख्यते ।। जा रागखंडमें स्वरनकों समान वेगसों उच्चार कीजिये दुतविलंबित वेगसों उच्चार नही कीजिये । सो समस्थाप जानिये । २४ ।

२५ अथ कोमलस्थापको लखन लिख्यते ।। जा रागलंडमें जहां जेसो वेग चाहिजे । तेसें वेगसों स्वरनको उच्चार करि। सो कोमलस्थाप जांनिये । २५।

२६ अथ प्रमृतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागलंडमें स्वरकों विस्तारसों उच्चार अनुरंजनके वास्ते कीजिये । सो प्रमृतस्थाप जांनिये । २६ । २७ अथ स्निम्धस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागलंडमें स्वरनको जेसें रूख्योपनों दूरहो । ता रीतिसों संभारके स्वरनकों उच्चार कीजिये । सो सिम्धस्थाप जांनिये । २७ ।

२८ अथ चोक्षस्थापको लखन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमं स्वरनकों उज्ज्वल कहिये । खुलतो उच्चार कीजिये । सा चोक्षस्थाप जांनिये । २८ ।

२९ अथ उचितस्थापको लक्षन लिख्यंत ।। जा रागखंडमं स्वरनको रागसों मिलतो उच्चार होय । घटि विध निह होय । सो उचितस्थाप जांनिये । २९ ।

३० अथ सुदेशस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमं स्वरनको उचार चतुर पुरुषके मतको अनुरंजन कर अजाण नही समझे । सा सुदेश-स्थाप जांनिये । ३० ।

३१ अथ आपेक्षितस्थापकं ला ला लिख्यंत ॥ जहां राग वरतवेकों पहले स्थापमें जा स्थापके स्वर लीजिय । सा आपेक्षितस्थाप जांनिय । ३१ ।

३२ अथ घोषस्थापको लखन लिख्यंत ॥ जो वहनी नाम कंपमें मधुर और सचिकन ढाल कसो हैं। सो ढाल वहनीको स्थापन छोडिकें ओर ठाँरैं मंद्र धुनिसों होय तब याको घोष कहत हैं। सो घोष जो रागखंडमें होय। सो घोषस्थाप जांनिये। ३२।

३३ अथ स्वरस्थापको लक्ष्म तिरूपंत ।। जा रागखंडमें मंद्रस्थानके स्वरनकों उच्चार गंभीरमें मधुरता धुनिसों की जिये। सो स्वरस्थाप जांनिय । ३३। इति ततीस संकीर्ण गुणाक्टत भेद स्थापके लक्ष्म संपूर्णम् ॥

अथ स्थापनकं भेद बीस प्रसिद्ध हं तिनको नाम—लछन लिख्यते॥
वहन्त स्थाप। १। अक्षरा डंबर स्थाप। २। उल्लासित स्थाप। ३।
तरंगित स्थाप। ४। अलंबित स्थाप। ५। अवस्खिलत स्थाप। ६। स्नाटित
स्थाप। ७। समिविष्टक स्थाप। ८। उत्मिविष्ट स्थाप। ९। निःसरण स्थाप
। १०। भ्रामित स्थाप। ११। दीर्घकंपित स्थाप। १२। प्रतिग्रह्मोल्लासित
स्थाप। १३। अलंब विलंबक स्थाप। १४। नोटित प्रतिष्ट स्थाप। १५।
पसृताकुंचित स्थाप। १६। स्थिर स्थाप। १७। रचित स्थाप। १८। क्षिप्त
स्थाप। १९। सूक्ष्मांत स्थाप। २०। यह वीस नाम जांनिये॥

अब इनके लखन लिख्यते ॥ तत्र आदिमें वहन्त स्थापको लखन ठिरूयते ॥ जा रागखंडमें स्वरनंक कंपमें उच्चार कीजिये । सो वहन्त स्थाप जांनिये ॥ १ ॥

अथ अक्षरा डंबर स्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागलंडमें स्वरन-कें चमत्कारसों अक्षरनमं कविता । इको चमत्कार घणों होय । सो अक्षरा डंबर स्थाप जांनिये ॥ २ ॥

अथ उल्लामित स्थापको लखन लिख्यंत ॥ जा रागसंडमं स्वरको वेग करिकें। उपरका चढतो उच्चार कीजिये। सो उल्लासित स्थाप जांनिये ॥३॥

अथ तरंगित स्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें श्रीगंगाजी-के तरंगकी सिनाई स्वरनको छछनको उचार होय। सा तरंगित स्थाप जांनिये ॥ १ ॥

अथ अलंबित स्थापको लखन लिख्यंत ॥ जैसे जलको आधी भरे कुंभको जल झलके । तैसे जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार घटके जलकी सिनाई झलकतो होय । सा अलंबिन स्थाप जांनिये ॥ ५ ॥

अथ अवस्विति स्थापको लक्षन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मंद्रस्थानमें वेगसों अवरोहकं स्वरनको उच्चार होय । सा अवस्खित स्थाप जांनिये ॥ ६ ॥

अथ स्नाटित स्थापको लछन लिख्यत ॥ जा रागसंडमें स्वरकों तांडके उच्चार कीजिये अनुरंजनके लिये । सी स्नाटित स्थाप जांनिये ॥ ७ ॥

अथ संप्रविष्ट स्थापको लक्षन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें एक छिन स्वर ठहरिकें तारस्थानकों छुइकें फिर मंद्रस्थानमें आवे । ओर अवरोहमें गहरि धनि छिये होय । सा संप्रविष्ट स्थाप जांनिये ॥ ८ ॥

अथ उत्प्रविष्ट स्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वर एक छिन टहरिकें तारस्थानमें पहुंचे । अरु आरोहि वर्णमें होय । सो उत्पविष्ट स्थाप जांनिये ॥ ९ ॥

> अथ निःसरण स्थापको लछन लिख्यते ॥ जारागलंडमें मंद्रस्थान-8

के स्वर तारस्थानकों छूवे। अरु तारस्थानको मंद्रस्थानकों छूवे। या रीतिसों अपने स्थानकों स्वर निकसे। सो निःसरण स्थाप जांनिये॥ १०॥

अथ भ्रामित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको च्यारां तरह हलाय भ्रमण करिके उच्चार कीजिये। सो भ्रामित स्थाप जांनिये॥११॥

अथ दीर्घ कंपित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागलंडमें दीर्घ कंपसों स्वरनको उच्चार होय । सा दीर्घ कंपित स्थाप जांनिये ॥ १२ ॥

अथ प्रतिगृह्योह्णासित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागलंडमें स्वरनकों एक वेर उच्चार करिकें। फेर खोलिकें स्वरनकों उच्चार कीजिये। सो प्रतिगृह्योह्णासित स्थाप जांनिये॥ १३॥

अथ अलंब विलंबक स्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको दुतवेगसां उठायकें विलंबित वेगसां उतारिये। अनुरंजनके अरथ जैसे बालकनके खेलिवेकी दडी उछले। ऐसें स्वरनको वरितयं। सो अलंब विलंबक जांनिये॥ १४॥

अथ त्रोटित प्रतिष्ट स्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें तार-स्थान । १ । मंद्रस्थान । २ । में पहले तारस्थानके स्वरनको उच्चार करि । दूसरे स्वरको मंद्रस्थानमें उच्चार कीजिये । अनुरंजनके लिये । सो त्रोटित प्रतिष्ट स्थाप जांनिये ॥ १५ ॥

अथ प्रसृताकुंचित स्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी धुनि पहले तो विस्तारसों लीजिये। ओर पीछे तें संकोच करि दीजिये। सो मसृताकुंचित स्थाप जांनिये॥ १६॥

अथ स्थिर स्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्थाई बर्णके स्वरको कंप होय । सो स्थिर स्थाप जांनिये ॥ १७॥

अथ स्थायुक स्थापको नाम रचित या स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें एक एक स्वरनको अथवा दोय दोय स्वरनको अथवा तीन तीन स्वरनको ठहराय ठहरायकें उच्चार कीजिये । सो स्थायुक रचित स्थाप जांनिये ॥ १८ ॥ अथ क्षिप्त स्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उपर-कों चढतो चढतो होय । सो क्षिप्त स्थाप जांनिये ॥ १९ ॥

अथ सक्ष्मांत स्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार पहले तो घणी धुनिसों कीजिये अरु पीछे ते रागके विश्राममें सूक्ष्म धुनिसों स्वर लीजिये। सो सूक्ष्मांत स्थाप जांनिये ॥ २०॥ इति प्रसिद्ध संकीर्ण वीस स्थापके भेद—लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ संकीर्ण स्थापनके गुणकत तेतीस नाम लिख्यंत ॥

प्रकृतिस्थ शब्द स्थाप । १ । कला स्थाप । २ । आक्रमण स्थाप । ३ । घटना स्थाप । ४ । सुखद स्थाप । ५ । चिलत स्थाप । ६ । जीवस्वर स्थाप । ७ । वद्वित स्थाप । ६ । जीवस्वर स्थाप । ७ । वद्वित स्थाप । १० । अवघट स्थाप । ११ । प्लुत स्थाप । १२ । रागेष्ट स्थाप । १३ । अपस्वराभास स्थाप । १४ । बद्धः स्थाप । १५ । कलरव स्थाप । १६ । छांदस स्थाप । १० । सुकराभास स्थाप । १८ । संहित स्थाप । १९ । छवु स्थाप । २० । अंतर स्थाप । २१ । वक्त स्थाप । २२ । दीप्त स्थाप । २३ । पसन्ता स्थाप । २४ । पसन्तावृदु स्थाप । २५ । गुरु स्थाप । २६ । न्हस्व स्थाप । २० । स्तोकस्वर स्थाप ।२८। दीर्घ स्थाप । २९ । साधारण स्थाप ।३० । निराधार स्थाप ।३१। दुष्कराभास स्थाप । ३२ । मिश्र स्थाप । ३३ ।

अथ इन तेति। सके लाउन कहतहै।। तहां मथम मलातिस्थ शब्द-स्थापको लाउन लिख्यते॥ जा रागखंडमें स्वरनकी धुंनिसों सहजही स्वरनको उच्चारतें अनुरंजन होय। सो मलातिस्थ शब्दस्थाप जांनिये। १।

अथ कलास्थापकां लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको सुक्षिम धुनिसों उच्चार कीजिये। सो कलास्थाप जांनिये। २।

अथ आक्रमणस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें बल करिवेसों स्वरनको उच्चार कियेसों राग बनें। सो आक्रमणस्थाप जांनिय । ३।

अथ घटनास्थापको लछन लिख्यते ।। जा रागलंडमें स्वरनको बनायकें उच्चार कीजिये। जेसें कारीगर भाठा ईट खवारिके भीतमें चुंणे ऐसें स्वरनकों वरतिये। सो घटनास्थाप जांनिये। ४।

अथ सुख्दस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार अत्यंतसुख उपजावे । जहां तांनको जिव होय । सो सुखदस्थाप जांनिये । ५ ।

अथ चिलितस्थापकां लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उचार हो कहिये कमकमसों उचार होय । यांको जक कहे हैं । सो चिलि-स्थाप जांनिये । ६ ।

अथ जीवस्वरस्थापको लछन लिख्यत ।। जा रागखंडमें अंसस्वर मुख्य होय । सो जीवस्वरस्थाप जांनिये । ७ ।

अथ वेद्ध्विनस्थापको लछन लिम्ब्येत ॥ जा रागखंडमें सामवेद्की-सिनांई प्रमानसों स्वरनको उच्चार होय । सामवेद्कीसि धुंनि जांनिजाय । सा वेद्ध्विनस्थाप जांनिय । ८ ।

अथ घनत्वस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको गहरि ध्वनिसों उच्चार कीजिये । सो गुंकारजुत स्वरनकों पासपेंस उच्चार होय । सो घनत्वस्थाप जांनिये । ९ ।

अथ शिथिलस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमं जैसं स्वर कह तैसे स्वरनकों सिथलज उच्चार कीजिये । सा शिथिलस्थाप जांनिये। १०।

अथ अवघटस्थापको लछन लिम्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको जो गायवेमें कष्टसा बनें। सो अवघटस्थाप जांनिये। ११।

अथ प्लुतस्थापको लछन लिम्ब्यंत ॥ जा रागखंडमं गायवेमं स्वरको अत्यंत विलंबसों उच्चार होय । सो प्लुतस्थाप जांनिये । १२ ।

अथ रागष्टस्थापको लक्छन लिम्ब्यंत ॥ जा रागखंडमं रागकी सुरत बनायवेवारी स्वर होय । आर कोऊ रागखंडमं राग बनावनों होय । तब वा रागखंडके स्वरन लीजिये तो रागसिद्ध होय ऐसे रागकी जमाके स्वर बारा जो रागखंड। सो रागष्टस्थाप जांनिये। १३।

अथ अपस्वराभासस्थापका लक्ष्यते ॥ जा रागखंडमें गायवेमें कोईक सुद्ध स्वरको उच्चार विगडे नहीं । परंतु विगडेको सो भ्रमि आवे । सो अपस्वराभासस्थाप जांनिये । १४ । अथ बद्धःस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मधुरध्विन वणी बांधिये। सो बद्धःस्थाप जांनिये। १५।

अथ कलरवस्थापको लखन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें रागनकी कल कहिये । मधुर गंभीर ध्वनीको उच्चार होय । सो कलरवस्थाप जांनिये । १६।

अथ छांदसस्थापको लछन लिख्यते ।। जा रागखंडमें अनेक तरहके रीवीसों स्वरनको उच्चार होय चतुरमुखको प्यारो होय । सो छांदस-स्थाप जांनिये । १७ ।

अथ सुकराभामस्थापको लछन लिख्यत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार सुंनिवेमें सुधो लगे। अरु वरतिवेमें सीखवेमें महा कठिन होय । सो सुकराभासस्थाप जांनिये । १८ ।

अथ संहितस्थापको लछन लिख्यंत ।। जा रागखंडमें तारस्थानको स्वर मंद्रस्थानमें घंटाके नादकीमिनांई आवे। सो संहितस्थाप जांनिय । १९।

अथ लघुस्थापको लछन लिम्बंत ॥ जा रागखंडमें लघुकालसों स्वरनको उचार होय ध्रवका अरु आभोगमें मो ध्रविका तो गीतकी गतीकी पीडा बंधिहें । अरुसमाप्तको बोल होय मो आभोग । नहा लघुकालसों उचार कीजिय । सो लघुस्थाप जांनिय । २० ।

अथ अंतरस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमं स्वरनको अंतर-सा उचार होय ठहर ठहरकें । सो अंतरस्थार जांनिय । २१ ।

अथ वक्रस्थापको लखन लिख्यत ॥ जा रागखंडमें बांके बांके स्वरन-को उच्चार होय । सा वक्रस्थाप जांनिये । २२ ।

अथ दीप्तम्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागसंडमें स्वरनको तार-स्थानमें उच्चार होय । सो वरनावे रागको बने । सो दीप्तस्थाप जांनिये । २३ ।

अथ प्रसन्नास्थापको लक्छन लिख्यते ।। जा रागखंडमं मधुर कोमल धुंनिसों सब स्थानकमं स्वरनको उच्चार होय। सो प्रसन्नस्थाप जांनिये। २४।

अथ प्रसन्नमृदुस्थापको लक्छन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मंदर्थानमं अतिकोमल धुंनिसों स्वरनको उच्चार तारस्थानमें उंची ध्वनीसों उच्चार होय। सो प्रसन्मृदुस्थाप जांनिये। २५।

अथ गुरुस्थापको लछन लिख्यते ।। जा रागलंडमें स्वरनको उच्चार भारी धुनिसों कीजिये । जैसें गंकार घणी वेरतांई रहे। सो गुरुस्थाप जांनिये ।२६।

अथ -हस्वस्थापको लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको एक मात्रासों उच्चार होय । सो -हस्वस्थाप जांनिये । २७ ।

अथ स्ताकस्वरस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें दोय स्यारि स्वरनको उच्चार होय । कंपके बलसों राग भिर दीजिये । से। स्तोकस्वर-स्थाप जांनिये । २८ ।

अथ दीर्घस्थापकां लखन लिख्यते ॥ जा रागखंडमं स्वरनको दोय मात्रासों उच्चार कीजिय । सो दीर्घस्थाप जांनिय । २९ ।

अथ माधारणस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें पूर्व-जन्मके पून्यतें वा अभ्यासंतें नयासां स्वरको उच्चार करि । चमत्कार दिखावे । सां साधारणस्थाप जांनिये ॥ या रागखंडमें स्वरनको उच्चार ओर रागके समान-सां होय अनेक रागनमें स्वर होय । जो स्वरसमृह होय । वही स्वरसमृह ता रागखंडमें होय । ३०।

अथ निराधारम्थापको लछन लिम्ब्यते ॥ जा रागखंडमें वहनी आदि कंपविनाहि म्वरनका उच्चार अनुरंजन करे । सा निराधारस्थाप जांनिये । ३१।

अथ दुष्कराभासस्थापको लछन लिख्यते॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार सुनिवेमें कठिन होय। वरतेवेमें सिखवेमें मुगम होय। सो दुष्कराभास-स्थाप जांनिये। ३२।

अथ मिश्रस्थापको लछन लिम्बते ।। जा रागखंडमें दोय तीन वा च्यार स्थापको लछन होय । सा मिश्रस्थाप जांनिये । ३३ । याके भेद अनंतहें । सो बडी आयुरदावार याको समझतेहं ॥ यह भरतादिक मुनीनें कहेहें ॥ इति स्थापनकेछनवे ९६ भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ आलापके लछन लिख्यते ॥

जहां रागके स्वरको रूप मगट करिवेकों विना तालस्वरनेक समूहमें। राग वरतिये। सो आलाप जांनिये। सो आलाप दोय मकारकोहें॥ रागआलाप , १। रूपआलाप। २। तहां मथम रागआलापको लखन कहेहें॥ जो राग वरितवेकों प्रबंध आदिके न्वरनकों कमसों छोडिके सास्त्रोक्त स्वर समूहमें राग वरितये । सा रागालाप जांनिये । सो रागआलाप मुखचाल आदि च्यारि स्वरनमें विश्राम पायकें च्यार प्रकारकों होतहें ॥

अवे विश्रामकं च्यारि स्वर हैं। तिनकों ठछन कहें हैं। जा स्वरमें राग बेठायवेके वरितये।। जामें राग स्थित होय। सो स्थाईस्वर जांनिये।। तहां जो राग
ओडव अथवा षाडव होय। तो जा स्वरको कियो होय। मा गिणतीमें गिण ठीजिये।। ऐसें एक स्वर हीन होयतें:। मा एक स्वर छीन छीजिये।। दोय स्वर हीन
होयतां दोय स्वर छीन छीजिय।। ऐमें आरोह कममों जा स्वर चाथों। आवे।
सोह्चर्घ स्वर जांनिये।। जेसें कोई ओडव रागमें षड़ज स्वर स्थाई होय ओर
रिषम गांधार नहीं होय। तो तहां आरोह कममें रिषम गांधारह गिन छीजिय।।
जेसें गिनंत षड्ज स्वरतें चाथों मध्यम स्वर होतहे। सा मध्यम द्वर्घस्वर
जांनिये।। जेसें सब ठोर ओडवरागमें समझिय।। जहां द्वर्घस्वरकं बीचछे स्वर
अरु निचछे स्वरमें सा कंप गमक जांनियं। २। के छहरि छेकें स्थाइपें विश्राम
कीजिये। द्वर्घस्वरमें कंप नहीं कीजियं। सो विश्राम मुख चाछक जांनिये।
सो पहलो स्वस्थान कहें।। १॥

जहां द्वयर्धस्वरहूं में कंप गमककी लहरि लीजिये। द्वयर्ध स्वरके निचले स्वरनहूं कंप ॥ १ ॥ गमक ॥ २ ॥ गमककी लहरि जांनिये ॥ पीछे स्थाइमें विश्राम कीजिये। सो द्वितीय न्यास जांनिये ॥ यह दूसरे स्वस्थानहे ॥ २ ॥

ओर स्थाइस्वर कंपसों आरोह कममें आठवों जो स्वर । सो द्विगुणस्वर जांनिये ॥ इहांहूं ओडव ॥ १ ॥ षाडव ॥ २ ॥ के हीनस्वर गिनतीमें गिन लीजिये ॥ पहले लिखिहें जेसी तरह जांनिये ॥ तहां चांथे आठवें स्वरके बीचके स्वर पांचमें छटमें सातमें स्वरको नाम द्वर्च्धस्थिति स्वर जांनिये ॥ इन द्वर्च्धस्थिति स्वरनमें कंप ॥ १ ॥ गमक ॥ २ ॥ की लहरी लेकें स्थाई-स्वरनमें विश्राम कीजिये । सो कटियन्मास जांनिये ॥ यह तीसरा स्वस्थानहें ॥ ३॥

ओर जहां द्विगुणस्वरमें ओर अर्धस्थित स्वरनमें कंप गमककी उहिर छेकें स्थाइस्वरनमें विश्राम कीजिये ॥ यह चोथो स्वस्थान हैं ॥ ऐसें च्यारि मकारके विश्राम रिचवेतं राग वरितवेकां । रागआलाप च्यारि प्रकारको जांनिये ॥ इति रागालापके च्यारि भेद संपूर्णम् ॥

अथ रागालापको प्रयोजन लिख्यते ॥ इहां रागालापमें तो राग पगट होतहं ॥ ओर जहां प्रबंधादिकमें रागके खंड कहे हैं । तहां कोऊ ओर रागके खंडसों भेद नहीं जान्यों पडेहें ॥ तार्ते मुनिवेवारेकों संदेह दूरिवेकों पहले रागालाप कीजिये । तव रागको वरतावेमें । पगटरूप जानेंहें ॥ पबंधादिकके रागखंडमें संदेह नहीं हायहें ॥ जैसें बडे महाराजकी सभामें सिगरे लाग वसन आभूषण पहरिकें हाजर होतहें ॥ तहां कोऊ पहली आवे । कोऊ पीछे आवे जहां राजमंडिके लोक एक वस्त्र गहना तो सबके एकसेहें ॥ यातें पोसाकसें तो मुख्य पहचान्यों जाय नहीं । तब वाको स्वरूप देखिये । सो अवस्था । अथवा हसनि बोलनी नत्रकी चेष्टा। काहृक मूछिविनाहं । काहृकी करि मूछिहं । तमें छोटि बिड हं । अथवा काहू पुरुषनकी धोरि मृछ हें ॥ ऐसे अंगअंगकी सहनानितें पिछानतहें । तसें रागालापसों । एकके स्वरूपको निश्चय होत हें ॥ तासों रागालापकहों हे ॥ इति रागालापयांजन मंपूर्णम् ॥

॥ अथ रागालापमं रागको निश्चय होतहं ॥ यह बातपुष्टि करिवकों रूपकालापको लखन लिम्यत ॥

जहां पबंधकी तरहको स्वरसमूह रचिकें वा स्वरसमूहमें पबंधके तालसों रागको वरताव कीजिय। सा रूपकालाप जांनिये। सा वह रूपकालाप दोय प्रकारको हैं। सा एकतो प्रतिग्रहणिका। १। दुसरा भंजनी। २। ऐसें दोय प्रकारका जांनिये॥

अथ प्रतिष्रहाणिकाको लछन लिख्यंत ॥ जहां पहंछ रागकों खंड वरितवेकों राग पगट किर जनायंवेकों । रागालापको खंडस्वरसमूहमं वरितकें । फेर प्रबंधमें खंडमें राग वरितवेकों प्रबंधकी चालसों न्यास । ३ । संन्यास । २ । विन्यास । ३ । अपन्यास । ४ । रचनासों स्वरसमूहमें रूपक-आलापकों खंड वरितयं । सां रूपक आलाप प्रतियहणिका जांनिये ॥

अथ भंजनी नामक रूपक आलापके दोय भेदहें ॥ स्थापक भंजनी । १ । रूपकभंजनी । २ । तिनको लखन लिख्यते । तहां स्थापक भंजनिको लखन कहेहें ॥ तहां रूपके प्रमानसों प्रबंधके अनुसार न्यास । १ । विन्यास । २।

संन्यास । ३ । अपन्यास । ४ । जुन स्वरसमूहमें प्रबंधके एक खंडको अनेक प्रकार सुंदर रीतिसों वरताव कीजिये । सो रूपक आछापस्थाप भंजनी जांनिये ॥

अवे याके अवाडि क्राकमंजनीको ठछन कहतेहैं ॥ जहां संपूर्ण प्रबंधकी रीतिसों न्यास । १ । विन्यास । २ । संन्यास । ३ । अपन्यास । ४ । जुत स्वरसमूहमें प्रबंधको वरताव कीजिये एक दोयवार । ओरहू रागनकी रागमें कंप गमक कहेहें तिनको दिखायकें ओर रागसों भेद प्रकास करनों । ऐसे प्रबंधके सिगरे खंडनको वरताव करि संदेह दूरि कीजिये । सो क्रपक मंजनी जांनिये ॥ इति सात प्रकारके आलाप-भेद संपूर्णम् ॥

अथ भूरिमंग मनोहर आलापको लक्छन लिख्यते ॥ जहां स्थाई । १। आरोहि । २ । अवरोहि । ३ । संवारि । ४ । च्यारों वर्ण अलंकार जामें होय । ओर अनेक भांतिके गमक जामें होय ॥ ऐसें स्वरसमूहमें जो रागको वरताव कीजिय । सा भूरिभंग मनोहर आलाप जांनिये ॥ जैसें कोऊ मनोहर स्वी अपनें प्यारेके विस करिवेकां । अपनें कुच उदरादिक अंग दिखाय दिखाय हावभाव कटाक्षनसों वसी करतहें तेसेंही यह आलाप गमक आदि करतव्यसों। सुनिवेवारेनके मनकों विस करतहें ॥ इति भूरिभंग मनोहर आलाप—लक्छन संपूर्णम् ॥

अथ वृंदको लछन लिख्यते ॥ जहां गाइवेवारे बजाइवेवारे महाचतुर होय आपसमें मिलिकें सास्त्रकी रीतिसों गान वाद्य नृत्य करे । सुनिवेवारेनके चितकों आनंद उपजावे । ऐसें पुरुषनको सुंदर होय । सो वृंद जांनिये ॥ सो वृंद तीन प्रकारको हैं ॥ उत्तम । १ । मध्यम । २ । कनिष्ठ । ३ ।

अवे उत्तम वृंद्को लछन कहे हैं ॥ जहां मुख्य गायवेवारे ॥४॥ च्यारि होय ॥ उनके स्वर रचायवेकों ॥८॥ आठ गायवेवारेक समान होय । ओर वा गानके पृष्ट करिवेकों वा राग गायवेवारि सुंदर चतुर नायका ॥१२॥ बारा होय । ऐसें स्त्री ॥१॥ पुरुष ॥२॥ मिलिकं ॥२४॥ चोविस गायवेवारे होय । ओर बाजेनमं उनके गायवेके अनुसार स्वरमें मिलाय बजावे ॥ ऐसें च्यारि ॥ ४ ॥ मुरलि बजायवेवारे पुरुष होय ॥ च्यारि मृदंग बजायवेवारे पुरुष होय । मृदंगकी परन बजायवेवारे प्रवीन ऐसें आठ ॥ ८ ॥ बजायवेवारे होय । तब गायवेवारे बजायवेवारे मिलिकें ॥ ३२ ॥ बन्तीस स्त्रीपुरुषको समूह होय । सो उत्तम कृंद जांनिये ॥

अबे मध्यम वृंदको लखन लिख्यत ॥ जहां उत्तम वृंदसों आधा समूह होय दोय मुख्य गायवेवारे। चार स्वर रचायवेवारे॥४॥ ऐसें॥६॥ छह पुरुष होय। गायवेवारी स्त्री ॥ ६ ॥ छह होय। दोय वंसीवार होय। दोय मृदंगवारे मिलिकें ॥ १६ ॥ सोलह स्त्रीपुरुषको समूह होय। सो मध्यम वृंद जांनिये॥

अथ किनिष्ठ वृंदको लक्छन कहे हैं।। जा वृंद्रेम मुख्य एक गायवेवारो है उपस्वरके रचायवेवारे तीन होय। च्यारि गायवेवारी स्त्री होय। मुरलीवारे मृदंगवारे दोय होय। सां किनिष्ठ वृंद जांनिये॥

अथ महाराजके जनावनमें संगीत वरतवमें लिये। स्त्रीके वृंद कहे हैं॥ तहां उत्तम स्त्रीवृंदको लखन कहे हैं॥ उत्तम वृंदमें गायवेवारि स्त्री बारह॥ १२॥ कहि है तहां दोय॥ २॥ तो महाचतुर गायवेवारी मुख्य स्त्री होय। उनको स्वर रचायवेवारि स्त्री दस ॥ १०॥ होय। ओर वंसीवारि स्त्री दोय॥ २॥ होय। मृदंगवारी स्त्री दोय॥ २॥ होय। इहां पुरुष नहीं छीजिये यह गायवेवारि स्त्री॥ १६॥ को वृंद उत्तम जांनिये॥

अथ मध्यम स्त्रीवृंदको लछन लिख्यंत ॥ जहां मुख्य गायवेवारि स्त्री एक होय । स्वर रचाइंववारि ॥ ४ ॥ वंसी बजायवेवारि ॥ ४ ॥ मृदंग बजाय-वेवारि ॥ १ ॥ यह स्त्रीवृंद मध्यम जांनिये ॥

अबे किनष्ठ वृंदको लछन लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्त्रीवृंदको घटतो समाज होय । सा किनष्ठ वृंद जांनिये ॥ अबें किनष्ठको हीन कहे है ॥ इति वृंद-लछन संपूर्णम् ॥

अथ वृंदके छह गुण हें तिनके नाम मुख्यानुवृत्ति । १ । मिछन । २ । ताछ लीलानुवर्तन । ३ । मिथ स्त्रुटित निर्वाह । ४ । तिस्थान व्याप्ति शक्तिता । ५ । शब्दसादृश्य । ६ । यह छह वृंदक गुण हें । इनको छछन कहे हें ॥ जो मुख्य गायवेवारा होय । ताकी मर्यादासों सब गावें । यह मुख्यानुवृत्ति जानिये ॥ १ ॥ गायवेवारे सिगरेनके स्वर एक स्वरमें लीन होय । सो मिलन जानिये ॥ २ ॥ तालके वरतिवेकी रीतिसों ताल देनों । जामें राग बिगडे नहीं । सो ताल लीलानुवर्तन जानिये ॥ ३ ॥ गायवेमें जाको स्वास कटे । ताको दूसरे गाय-वेवारो साथि ले । तृट्योसो जान्यो नही पड़े । ओर आरंभसों विश्राम ताई

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय-बाजेन े समृहको नाम ओर उनके प्रकार, ३५

एकसी धुनि रहे। से पिथस्तुटित निर्वाह जांनिये ॥ ४ ॥ गायवेवारेनकी कंठकी धुनि मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनों स्थानमें विना परिश्रम पहुंचे । सो त्रिस्थान व्याप्त शक्ति जांनिये ॥ सब गायवेवारेको गाइवेमें कंठके संग उच्चार होय । न्यारो न्यारो कंठ पहचान्यो नही जाय । सो शब्द-सादृश्य जांनिये ॥

अथ बाजेनके समूहको नाम कुतप जांनिये ॥ को तीन पकारको हैं ॥ तांतिके वाजेको समूह जासों ततकुतप जांनिये ॥ १ ॥ मृदंग आदि चामके मढे बाजेको समूह अवनद्धकुतप जांनिये ॥ २ ॥ मूरठीआदि फूकके बाजेको समूह मुषिर कुतप ॥ ३ ॥ तहां ततबाजेको नाम कहे हैं ॥ वीणा ॥ १ ॥ घोषवती वीणा ॥ २ ॥ चित्रा वीणा ॥ ३ ॥ विपंची वीणा ॥ ४ ॥ परिवादिनी वीणा ॥ ५ ॥ वहां वीणा ॥ ६ ॥ कुञ्जिका वीणा ॥ ७ ॥ जेष्ठा वीणा ॥ ८ ॥ नकुछेष्ठी वीणा ॥ ९ ॥ याको छौकीकमें कान्हून कहे हें ॥ किञरि वीणा ॥ १० ॥ जया वीणा ॥ १० ॥ कुमांवीणा ॥ १२ ॥ पिनािक वीणा ॥ १३ ॥ हस्तिका वीणा ॥ १४ ॥ शत तंत्रिका वीणा ॥ १५ ॥ औदंबरी वीणा ॥ १६ ॥ पर्कणं वीणा ॥ १० ॥ पोणा वीणा ॥ १८ ॥ रावणहस्त वीणा ॥ १९ ॥ याको छौकीकमें रबाव कहे हें ॥ सारंगी वीणा ॥ २० ॥ आखपनी वीणा ॥ २० ॥ ओरहंको वीणाके भेद हें । ते तत बाजेके समूहको नाम ततकुतप जांनिये ॥ ऐसं हि अवनवद्ध ॥ १ ॥ कुतप ॥ २ ॥ सुषिर कृतप ॥ ३ ॥ के भेद जांनिये ॥ सो वाद्याध्यायमें कहे हें ॥

॥ इति प्रकीर्णाध्याय संपूर्णम् ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SIARA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

 ${\bf PFTDLTSUPD}$

PY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon, Secretary Gagun Samaj, Pouna,

PART V. PRABANDHADHYAYA.

(Rule of a supervise of Songs & .)

(All Rights Reserved Regeleved sinder Act XXV of 1867.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10=8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BRUSHAMA' PRESS BY NATESH APPAM DRAVID.

पूना गायन समाज.



जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवऋत.

पकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी

मेकेटरी, गायनसमाज, पुणे.

भाग ५ वह

प्रवंधाध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार इ. स. १८६७ का आक्ट २५ के अनुसार प्रकाशककर्तान आपने स्वाधीन रखा है.

पना ' आयम्पण ' प्रममें छपा.

मंपूर्ण ग्रन्थका मूल्य रु. १०॥. और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

पंचम प्रवंधाध्याय-सूचिपत्र.

विषयक्रम.						पृष्ठ
प्रबंध आदिक छंदमें मुख्य ग	ोतहै ताको	लछन	•••	•••	•••	;
मार्गि गान ओर गांधर्व गान	r	•••	•••	• •	•••	1
खंड धातु आदिको विचार	•••	•••	•••	•••	•••	;
प्रबंधके छह अंग तिनके नार	म ओर लछ	न	•••	•••	***	7
प्रबंधकी पांच जाति तिनके	नाम ओर र	ट इंग	•••	•••	•••	7
सुइस्थ प्रबंधको लछन ओर	काव्यके भे	द	•••	•••		;
प्रबंधके गण, अछरनको सुण	ा, दोष, मात्र	τ	•••	•••	•••	7
वर्णके आठ गणनको नाम,	र छन ओर है	वता	•••	•••	•••	۶
अकारादि अक्षरनके आठ व	र्ग तिनके न	ाम, लङ	न आंर द	वता.	•••	
प्रबंधमें नव अक्षर नहि ली	जेये तिनको	क्रम	•••	•••	•••	•
पद वाक्य अर्थ इनके १६ दं	ोष	•••	•••	•••	•••	\{
वाक्यदोष १६	• •••	•••	•••	•••	•••	٤
अर्थदोष १५	• •••	•••	***	•••	•••	ş
रसदोष	•••	•••	•••	•••	***	8
सूडपबंधके आठ भेद तिनक	ो नाम ओर	लछन	•••	•••	•••	8
एलाप्रवंधके लछन नाम देव	ाता	•••	•••	***	•••	१
एलाप्रबंधमें दश प्राण	• •••	•••	•••	•••	•••	१
एलाके भेद लछन		•••	•••	•••	•••	१
६६ बाणगणको जंत्र		•••	•••	•••	•••	8
रीतिके लछन	••	***	•••	•••	•••	१
पार्वतीजीकृत मात्रा एलाक	ो लछन	• • •	•••	•••	***	2
रिबेलेखा, कामलेखा, वाण	हेखा, चंद्रले	खाको ल	छ न	•••	•••	=
नं दिकेश्वरके मतसों मात्रा	एलाको लह	ब्रन	•••	•••	•••	a a
मतंगारि मतसां एलाके भे	•••	•••	•••	•••	•••	२
कर्भएकाको छछन	• •••	•••	•••	•••	•••	=
देशएलाके नाम, लछन 🕠	• •••	•••	•••	•••	•••	2
कर्णाटी, लाटी, गौडी, आं	धी, द्राविडी	एलाको	लछन	• • •	•••	=
सोमेश्वरके मतसों गीतको	साधारण वि	मेथि	•••	•••	•••	२
गीतप्रबंधको लछन 🕠	• • • •	•••	•••	•••	• • •	2

पंचम प्रबंधाध्याय.

गीतके भेंद्र, गांधर्व गान व मार्गी गानको लछन.

प्रथम श्री शिवजीकों नमस्कार करे हैं ॥ स्वर । १ । राग । २ । ताल । ३ । वाद्य । ४ । प्रकीर्ण । ५ । आदिक गीतकी सामग्री जिनके अनु-महर्ते ॥ अह अग्यानि तेन्रह सहजर्मे पावे जगतमें प्रतिष्ठावान् होय ॥ ऐसं श्रीशिवजी श्रीपार्वतीजी श्रीगणेसजी आदिक गणजुत हमारे विव्रक समूहका दूरि करो हम ऊंनके चरण गरविंदको नमस्कार करते हैं ॥

॥ अथ प्रबंध आदिक छंदमें मुख्य गीत हैं ताको लखन लिख्यते ॥
जहां श्रोता के चितकों अनुरंजन करे । सो षड्जादि सात स्वरनको कम
उपकमसों राज्य रीतिसों समूहसों गीत जांनिये ॥ ता गीतके दोय भेद हैं ॥ गांधर्व
गान । १ । मार्गी गान । २ । यह दोय जांनिये ॥ इनको लखन लिख्यते ॥

जो अनादि कालसों ब्रह्मा शिव भरत हनुमान । आदि मुनि संपदायसों पसिद्ध । ओर नारद तुंबरादिक गंधर्व जाको वरताव करे च्यारि पदारथको दाता ऐसो जो गान । सो गांधर्व गान जांनिये॥ १ ॥

जो होकीकमें जनरंजनके लिये। बहेबडे नायक कंबल अश्वतर आदिक वरताव कियो । अपनें गुणलक्कनसों मिल्यो ऐसें जो मार्गी देसी रागनको रचिवो । सो मार्गी गान जांनिये॥ २॥

॥ तहां गांधर्व गानको विस्तार आलापरूप प्रथम कह्यो हैं ॥

अबे गानके दोय पकार हैं ॥ निबद्ध । १ । अनिबद्ध । २ । यह दोय गानके भेद जांनिये ॥ जामें धातु कहते । प्रबंधके उद्याह आदि खंड वरतावके होत हैं ॥ अंगस्वर कहिये आदि छह आछाप आदि रीनिसों कीजिये ॥ ऐसी जो पबंध छेद। आदि रचनाको जो गाइवो। सो निबद्ध हैं। १।

जामें आलापकी रीति होय छंद प्रबंध रचना नहीं होय । सो गान

अनिबद्ध हैं। सो यह अनिबद्ध रागाध्यासमें । १ प्रकीर्णाध्यासमें । २। आलापको प्रकार कथो हैं। सो अनिबद्ध जांनिये ॥ तह। निबद्ध भेद। ३। तीन हैं ॥ प्रथम प्रबंध । १। दितीय बस्तु । २। तृतीय र विवद्ध भेद । ३। सह बुद्धिन वान पुरुष निबद्धके भेद जान लीजिये ॥ इति निबद्धके तीन भेद संपूर्णम् ॥

अथ प्रथम निबद्धको भेद प्रबंध है ताको लखन लिख्यते॥ ताको कहिवेको धातु । १ । अंगको । २ । उछन लिख्यते ॥

तहां प्रबंधको जो खड सो भागू कहिये ॥ सो खड च्यारि प्रकारको है ॥ उद्याह । १ । मेटापक । २ । ध्रव । ३ । आभोग । १ । यह च्यारि जांनिये ॥ अब इन च्यारानको टिछन कहे हैं ॥

जो पबधंक आरंभको पहिन्हा भाग होय । र ा पीडाबंबी नामको पहले। खंड उदयाह जांनिय ॥ १ ॥ यह पश्चम धातु हें ॥

जो उदयाह वृव तीसरा खड इनंक मिलापके १२ लिय । बीचमें दूसरी खड रचिय । सो मेलापक जांनिय ॥ २ ॥ यह दसरा धार् ह । ।

प्रबंधमं जो खंड अपन्य प्रतिये॥ जांक वन्तांव विना प्रवेश न चंडत-भयो जानि पडे। सो खंड ध्रव जांनिये॥ ३ ॥ यह तीसरी धातुँ है॥

जा प्रवंधको पिछलो खंड होय । जामें इष्टरेवको वा कवीश्वरको नाम आवे । प्रवंध पूरो होय । आगें ओर खंडकी इच्छा नहीं होय । सो आमोग जानिये ॥ ४ ॥ यह चोथो धातु हैं ॥

ટ

S

ہ ر

20%

२५ २६

25

२९ २९

30

इहां धुवलंड । १ । आभोगलंड । २ । इन दोक्रम बीचमें एक अंतरा नामको लंड ओर होत हैं । सो पांचमें धात हैं । सो अंतरा । १ । सालगा । १ । सूड । ३ । रूपकभेदेमें मिस हैं । सो स्दर्कमें की जिये ॥ ४ ॥ मबंधमें नहीं की जिये । ५ । जेसे देहमें वात । १ । पित । २ । क्रम । ३ । ये तीन भात हैं । तेसं प्रवंधमें उद्याह । १ । मेलापक । २ । ध्रव । ३ । आभोग । अंति ऐसे च्यारि धातु जांनिये ॥ तहां प्रथमक तीन भेद हैं ॥

जहां मेलापक खंड नहीं होय । सी तीन धार्मकी पर्वध जानिये । किं। जहां च्यारों धातु संपूर्ण होय । सी च्यार धातुको प्रवंध जानिये । २।

पंचम प्रवंधाध्याय-खंड, धातु, शृंगागादि नवरसको विचार. ३

जहां मेलापक और आभोग य नहीं होय । केवल उदयाह और धुव होय तहां दोय धातुको प्रबंध जांनिय । ३ । ऐसे तीन प्रकारको प्रबंध जांनिय ॥

अथ प्रबंधके अंग छह तिनक नाम—लछन लिख्यते ॥ स्वर। १। बिरुद् । २ । पद । ३ । तेनक । ४ । पाट । ५ । ताल । ६ । ये छह प्रबंध रूप पुरुषके अंग जांनिये ॥ तेन । १ । पट । २ । यह दोय प्रबंध पुरुषक नेत्र हैं ॥ पाट । १ । बिरुद् । २ । यह दोऊ प्रबंध पुरुषके हात हैं ॥ स्वर । १ । तान । २ । यह दोय प्रबंध पुरुषके गांव हैं ॥

श्रवें इन अंगनेंक लाउन करें हैं ॥ तहां पड़ज आदि सात स्वरनेंक स्थानमें उच्चारमहिदे । १ । जो सारि गम पाधानि । १ । यह सात अछिरतें स्वर जांनिय । १ ।

जहां दान । ते । बढाई । २ । मन्द्राई । ३ । शूर वीरता । ४ । जो प्रसिद्ध पंडिताई आदि गुणसें नाम होय । से बिरुद्द जांनिय । २ ।

जो कुल । १ । जाति । २ । अग्रस्था । ३ । आदि जनायवेकों सन्द । मो पद जानिये । ३ ।

जो तत्वकं माहि ॐ सां महाआदि वाक्यं ह ॥ ॐ तत्सत् ॥ या रीतिसों बसको जो बतायवो हैं । या रीतिसों स्वर वरितवेको तननारानिरी या रीतिसों अछिरको समूइसों तेन जांनिये ॥ यह तेन शब्द मंगलको दाता है ॥ बसस्वरूप है । ४ ।

जे मृदंग । १ । वीणा । २ । मुरली । ३ । जलतरंग । ४ । आदि बार्श्वेमं तकधिनिथोम इत्यादि अछिर वरतिये । सो पाट जांनिये । ५ ।

जो चंचतपुर आदि वालनके भेद हैं। सो वाल जांनिये। ६। इति भारतुर्थंग ललन संपूर्णम् ॥

यह उद्याह आदि । ४ । धातुस्वर आदिक । ६ । छह अंग जहां शिकीक रीतिसों रिवर्ष । सो प्रबंध जांनिये ॥

अथ प्रबंधकी पांच जाति हैं तिनके नाम-लछन लिख्यते॥ मिर्दिनी। १। आनंदिनी। २। दीपनी। ३। भावनी। ४। तारावली। ५। ॥ यह पांच जाति हैं तिनके लखन कहे हैं ॥
जहां मबंधमें छहो अंग होय । ताकी जाति मेदिनी जांनिये । १ ।
जहां पांच होय । सो आनंदिनी जांनिये । २ ।
जहां च्यार होय । सो दीपनी जांनिये । ३ ।
जहां तीन होय । सो भावनी जांनिये । ४ ।
जहां दोय होय । सो तारावली जांनिये । ५ ।

जहां दोऊ आचारिज इन पांचों जातिनके न्यारे नाम कहे हैं ॥ श्रुति ॥ १ ॥ नीति ॥ २ ॥ सेना ॥ ३ ॥ सेन ॥ ४ ॥ कविता ॥ ५ ॥ इति चंपूपें पांच जातिके नाम—लछन संपूर्णम् ॥

अवें परंधके दोय भेद हैं ॥ अनिर्युक्त ॥ १ ॥ धूियुंक्त ॥ २ ॥ जहां छंद तालका नियम नहीं होय ॥ अनेक छंद ॥ १ ॥ ताल ॥ २ ॥ लीजिये । सो अनिर्युक्त जांनिये । १ ।

जहां एक ताल एक छंदको नियम होय । सो निर्युक्त जांनिये । २ । फेर या पबंधके तीन भेद हें ॥ सूडस्थ । १ । आलिसंश्रय । २ । विमकीर्ण । ३ । इन तीनों भेदके लखन कहे हें ॥

॥ अथ प्रथम सुडस्थ प्रबंधको लछन लिख्यते ॥

जहां शृंगार आदि नवरस । १ । रसाभास । २ । भावाभास । ३ । भावोपद । ४ । भावंसंधि । ५ । भाव शांति । ६ । भाव सबलत्व । ७ । ओर रसवत् । ८ । ऊर्जस्वी । ९ । भय । १० । समाहित । ११ । ये रस अलंकार उपमादिक अलंकार । १२ । मसादादिक गुण । १३ । यम अनुमास आदि शब्द अलंकार । १४ । गौडी वैद्भी आदि रीति । १५ । सहित शब्द अर्थको समृह । सो काव्य जांनिये ॥ सो काव्यके सूनिवेतें तत्काल श्रोतानकों सुख होते हैं ॥

ऐसो जो काव्य कोऊ किव करे। ताको लाभ ॥ १ ॥ जस ॥ २ ॥ प्रतिष्ठा ॥ ३ ॥ धर्म ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ५ ॥ काम ॥ ६ ॥ मोक्ष ॥ ७ ॥ इष्ट वस्तुकी पाप्ति ॥ ८ ॥ अनिष्टको प्ररित्याग ॥ ९ ॥ ज्ञानकी पाप्ति ॥ १० ॥ लोकमें पूजा ॥ ११ ॥ बहुमान ॥ १२ ॥ ऐसें घर्णे फल पावे ॥

या काष्यके कारण पूर्वजन्मको संस्कार देवताको वरदान । गुरु ब्राह्मण साधुके सन्भानतें रूपा। आदिक ॥ व्याकरण ! १। अमरकोश । २ । छंद । ३ । पिंगल काव्य । ४ ।

इनको गुरु संपदायसां पढिवे(19) साम्त्रनको वर वेर विचारिवा सुनिवो सुनाइवो । २ । पढिवे। पढाइवा आदिकतं अन्यास करिये । ३ ।

ये काव्यके तीन कारण जांनिय ॥ इतना समिक्षकें कविता बनावे । सो किवता प्रमान होब हे ॥ सो ऐसें पढियेसों कविता कीजिये। सो कविता भारती किहे । सो भारती च्यारि प्रकारकी हे ॥ संस्कृत । १। पाकृत । २ । पैसाची । ३ । मागधी । ४ । यह ज्यारि हे ॥

जो वाणी बंसाकरणसों शुद्ध । सो देववाणी । सो संस्कृत जांनिये। १ । जो किन्नरनकी वाणी संस्कृतके समान हैं ॥ जो सरस्वतीकी बाल-अवस्थाकी वाणी । सो पाकृत जांनिये । २ ।

जो पिशाच । १ । भूत । २ । पेत । ३ । निशाचर । ४ । इनकी वाणी सो । पैसाची हे । ३ ।

जो मागध देशकी अथवा ब्रामीन जनकी भाषा। सो मागधी जांनिये। ४। इन च्यारों भाषामें मुख्य भाषा संस्कृत हैं ॥ याके तीन भेद हैं ॥ वचनीका रूप संस्कृत होय। सो गद्य जांनिये। १। छंद्बंध संस्कृत होय। सो पद्य जांनिये। २। बचनिका पद्य मिले होय। सो मिश्र जांनिये। ३।

जहां अनेक देशकी भाषा हैं। सो आपभूषण वाणी जांनिये॥ यह अपभ्रंश हे पारुत हे॥

जो वचनिका रूप काव्य । सी अनिबद्ध हैं । जो छंद्रूप काव्य । सी निबद्ध हैं ॥ ऐसें काव्यके दोय भेद जांनिये ॥ सी काव्य तीन प्रकारको है ॥ उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३ ।

जहां अर्थतें पद्य अर्थ मुख्य होय। सो काव्य उत्तम जांनिये। १। जहां अर्थ अरु व्यंग्य समान होय। सो काव्य मध्यम जांनिये। २। जहां अर्थतें व्यंग्य अर्थ उदासीन होय। सो काव्य अथम जांनिये। ३।

जहां शब्द शक्तिसों । १ । छक्षणसों । २ । ब्यंजनसों । ३ । जे तीन अर्थ ब्यंजन शब्दके होत हैं तिनकों नाम बाच्य । १ । छक्ष्य । २ । ब्यंग्य ।३। जांनिये ॥ यह इनके अनेक भेद हैं । सो साहित्य शास्त्रसों जांनिये ॥ इति सूडस्थ प्रबंधमें काव्य छछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ प्रबंधके गण अछरनको गुणदोष मात्रा लिख्यते ॥

जहां मात्रा गण पांच जांनिये ॥ टगण । १ । ठगण । २ । डगण । ३ । ढगण । ४ । णगण । ५ । तहां टगण छह मात्राको । ६ । ठगण पांच मात्राको । ५ । डगण चार मात्राको । ४ । ढगण तीन मात्राको । ३ । णगण दोम मात्राको । २ । इहां छघुकी एक मात्रा है ॥ अथ टग्णके भेद एक । १ । ठगणके भेद आठ । ८ । डगणके भेद पांच । ५ । ढगणके भेद तीन । ३ । णगणके भेद दोय । २ ।

अथ तेरह भेदंके नाम लिख्यते ॥ हर । १ । शिश । २ । सूर्य । ३ । शिक । ४ । शेष । ५ । आहि । ६ । कमल । ७ । ब्रह्मा । ८ । किल । ९ । चंद्र । १० । धुव । ११ । कर्म । १२ । सालियर । १३ । यह तेरह भेद जांनिये ॥ यह रगण आदि पांचों गणनके नाम है ॥ नगण । १ । पगण । २ । चगण । ३ । नगण । ४ । डगण । ५ । यह कमसों नय । ऐसेंही पांच कल तीन कल दोय कल । इन गणनके भेद नाम पिंगलसों समझिये । इहां कल्मात्राको नाम हैं । यह पांच मात्रा गणसों गाथा रूपहा कहिये । दोहा । इन आदि केंकें जे पिंगलक छंद हैं । ते यथा योग्य रचिये । इन छंदनेमें कहुंक गुरु अक्षर एकार अथवा ओकार आदिक गुरु आय परे तामें गुरु उच्चार किये छंद निगत होय तो । इन गुरु अक्षरनको सितावि हलकी जिभसों लघु अक्षरकी सिनाई लघु किर पढिये ताको दोष नही है ॥ यह पिंगल नागकी आज्ञा हैं ॥ । अथ वर्णके आठ गणनको नाम—लखन विचारफल लिख्यते ॥

जहां तीन गुरु अछर होय। सो मगण हें ॥ राधाजी ॥ १ ॥ जहां आदिमें एक लघु पीछे दोय गुरुको यगण है ॥ भवानी ॥ २ ॥ जहां आदि अंतमें गुरु होय। बीचमें एक लघु होय। सो रगण हें ॥ भारती ॥ ३ ॥

पंचम प्रबंधाध्याय-गणके देवता, आकारादि अक्षरके वर्ग. ७

आदिमें दोय छवु होय। अंतर्भ एक गुरु होय। सो सगण हैं॥ शिवजी॥ ४॥

जहां आदिमें दोय गुरु होय। अंतमें एक लघु होय। सो तगण हैं ॥ श्रीनाथ॥ ५॥

जहां आदि अंतमें छचु होय । बीचमें एक गुरु होय । सो जगण हैं ॥ मुरारी ॥ ६ ॥

जहां आदि एक गुरु होय। अंतमें दोय छघु होय। सो भगण हैं॥ राघव॥ ७॥

जहां तीन अक्षर लघु होय। सो नगण हैं॥ तपन ॥ ८॥ ऐसें ये आठ गण जांनिये ॥

अथ आठों गणनकं देवता । १ । पूछ । २ । शतु । ३ । भृत्य । ४ । उपसी । ५ । मित्रता । ६ । इनके भेद छिल्यते ॥ म गणको देवता । पृथ्वी । छक्षी प्राप्ति फलहे । १ । य गणको देवता । जल । सुखलाभ फलहें ।२। र गणको देवता । असि । मृत्यु फलहे । ३ । र गणको देवता । वायु । परदेस गमन फलहे । ४ । त गणको देवता । आकाश । शून्य फलहे । ५ । स गणको देवता । सुरज । रोग फल हे । ६ । भ गणको देवता । चंद्रमा । जस फलहे । ७ । न गणको देवता । स्वर्ग । आयु वृद्ध फलहे । ८ । यह आठो गण उद्याह ॥ १ ॥ भ्रव ॥ २ ॥ आभोग ॥ ३ ॥ इन तीनों नके आदिमें । एकठोरसों भ गण च्यार हे । भ गण ॥ १ ॥ न गण ॥ २ ॥ य गण ॥ ३ ॥ म गण ॥ ४॥ सो लीजिये । स गण ॥ ४ ॥ यह गण नही लीजिये ॥

अथ प्रबंधके आदिमें दोय गण लीजिये। ताके विचार लिख्यते ॥ मगण ॥ १ ॥ न गण ॥ २ ॥ ये दोनो आपसमें मित्र हैं ॥ भ गण ॥ १ ॥ य गण ॥ २ ॥ यह दोनों सेवकहें ॥ अवें इनको फल कहे हैं ॥

जहां मित्रगण दोय । सो मंगलको देत हैं ॥ १ ॥ जहां दोय सेवक होय । तहां कारिज सिद्ध हैं ॥ २ ॥ जहां दोय उदासीन होय । तहां रोग करत हैं ॥ ३ ॥ जहां दोय शत्रु होय । तहां स्वामीको कष्ट करे हें ॥ ४ ॥
ओर जहां प्रथम मित्र । १। सेवक । २। दोनु मिले । तहां विजय होत हें ॥
जहां प्रथम सेवक ॥ १ ॥ मित्र दोनु मिले तब कारिज सिद्ध हें ॥ २ ॥
जहां मित्र उदासीन ॥ २ ॥ दोनु मिले तहां कष्ट होत हें ॥ ३ ॥
जहां उदासीन ॥ १ ॥ मित्र ॥ २ ॥ दोनु मीलि मिले । तहां दुःख
होत हैं ॥ ४ ॥

जहां मित्र ॥१॥ शत्रु ॥ २ ॥ दोनु मिछे। तहां अंगमें पीडा होय हैं ॥५॥ जहां शत्रु मित्र दोनु मिछे। तहां सिद्ध नहीं होत हे ॥ ६ ॥ जहां भृत्य ॥ १ ॥ उदासीन ॥ २ ॥ दोनु मिछे। तहां हानि करे ॥ ७ ॥ जहां उदासीन ॥ १ ॥ भृत्य ॥ २ ॥ दोनु मिछे। तहां विपदा करे ॥८॥ जहां उदासीन ॥ १ ॥ शत्रु ॥ २ ॥ दोनु मिछे। तहां वेग करे ॥ ९ ॥ जहां शत्रु ॥ १ ॥ उदासीन ॥२॥ दोनु मिछे। तहां नास करे ॥१०॥ जहां भृत्य ॥ १ ॥ शत्रु ॥२॥ दोनु मिछे। तहां पणों भृत्य करे ॥११॥ जहां शत्रु ॥ १ ॥ भृत्य ॥२॥ दोनु मिछे। तहां वरको क्षय करे ॥१२॥ जहां शत्रु ॥ १ ॥ भृत्य ॥२॥ दोनु मिछे। तहां वरको क्षय करे ॥१२॥ इति दोय गणको विचार संपूर्णम् ॥

अथ अकारादि अक्षरनके आठ वर्ग तिनके नाम—लछन देवता फल लिख्यते॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऋ छ छ ए ऐ ओ औ अं अः। १ । क ख ग घ छ । २ । च छ ज झ म । ३ । ट ठ ड ढ ण । ४ । त थ द घ न । ५ । प फ ब भ म । ६ । य र छ व । ७ । श ष स । ८ । ह । कंठस्थान । ळ । दंतस्थान । क्ष । कंठस्थान । मर्धास्थान॥ तत्र मथम अ वर्णको देवता चंद्रमा हे । सो आयुवृद्धि करे हे ॥ १ ॥ क वर्गको देवता मंगछ हे । सो राज तेज वधावत हे ॥ २ ॥ च वर्गको देवता मंगछ हे । सो जस करे हे ॥ ३ ॥ ट वर्गको देवता गुरु हे । सो सौभाग्य करे हे ॥ ४ ॥ त वर्गको देवता भृगु हे । सो सुंदर वस्तु करे हे ॥ ५ ॥ प वर्गको देवता सिनश्वर हे । सो व्याधि करे हे ॥ ६ ॥ य वर्गको देवता सूर्य हे । सो मृत्यु करे हे ॥ ७ ॥ स वर्गको देवता राहु हे । सो शून्य फल करे हे ॥ ८ ॥ ऐसें वर्गके फल वीत गीत पबंधकी आदिमें रिचये । ओर किवत श्लोक आदि-

छंद गीत पबंधकी आदिमें। ह॥ १ ॥ ज ॥ २ ॥ घ ॥ ३ ॥ उ ॥ ४ ॥ घ ॥ ५ ॥ घ ॥ २ ॥ उ ॥ ७ ॥ ज ॥ १० ॥ ज ॥ १० ॥ ज ॥ १० ॥ ज ॥ १० ॥ ज ॥ ११ ॥ वह तेरह अक्षरही नहि लीजिये ॥

अथ श्रीमहादेवजीनं अक्षर सहरनको न्यारी न्यारी फल कसी हे सी लिख्यते॥

जहां अकारादि सोलह स्वर हैं ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऋ ऌ ॡ ए ऐ ओं ओं अं अः इनको मंगल फल हे ॥ क कीर्ति ॥ १ ॥ ख दुःख ॥ २ ॥ ग श्रामलाभ ॥ ३ ॥ व रिपुको भय करे ॥ ४ ॥ ङ लक्ष्मी होय ॥ ५ ॥ च अश्वलाभ ॥ ६ ॥ छ राज्यलाभ ॥ ७ ॥ ज स्त्रीकष्ट ॥ ८ ॥ झः ञः यह दोनु निजसरीरको कष्ट करे ॥९।१०॥ ट गोलाम ॥११॥ ट भय करे ॥१२॥ ड सोक करे ॥ १३ ॥ ढ स्वर्णकी पाप्ति करे ॥ १४ ॥ ण रत्नलाभ ॥ १५ ॥ तः रूपको लाभ ॥ १६ ॥ थ घने धनको लाभ ॥ १७ ॥ द कल्याण करे ॥ १८ ॥ ध महा आपद करे ॥ १९ ॥ न नास करे ॥ २० ॥ प विद्याराभ करे ॥ २१ ॥ फः भोग करे ॥ २२ ॥ ब महा भय करे ॥ २३ ॥ भः वि-ख्यात करे ॥ २४ ॥ मः मृत्यु करे ॥ २५ ॥ यः राज्य ते मृत्यु करे ॥ २६ ॥ रः शत्रुसों भय करे ॥ २७ ॥ तः पुत्रताम करे ॥ २८ ॥ वः धनताम करे ॥ २९ ॥ शः शून्य फल करे ॥ ३० ॥ ष शत्रूसों विग्रह करावे ॥ ३१ ॥ सः क्षत्रिसों मिलावे ॥ ३२ ॥ हः जसकरे ॥ ३३ ॥ क्षः शुभ करे ॥ श्री ॥ १ ॥ लक्ष्मी ॥ २ ॥ रित ॥ ३ ॥ शोभन ॥ ४ ॥ इन च्यारोंके नाम आवे तहां अक्षय शम जांनिये ॥ जैसें नमो नारायणाय नमः शिवाय नमः रामाय नमः कृष्णाय नम: ॥ ऐसें आवे जहां लीजिये ॥ हरिके नाममें हकार श्रेष्ठ हें ॥ हरि ॥१॥ हंस ॥ २ ॥ हिरण्य ॥ ३ ॥ हरहर ॥ ४ ॥ जयके नाममें जकार श्रेष्ठ हैं । जैसें जान्हविकों जाय करे ॥ ऐसें देव ॥ १ ॥ मंगल ॥ २ ॥ वाचक शब्देमं जो कोऊ अशुभ अक्षर आवे । सो शुभ जांनिये ॥

> अथ प्रबंधमं नव अक्षर नहीं लीजिये तिनको कम लिख्यते ॥ जहां गीतप्रबंधके पिडाबंधिकी आदिमें । न । १ । ग । २ । र । ३ ।

यह तीन अक्षर नहीं लीजिये ॥ गीतप्रबंधके अंतरामें । स । १ । त । २ । छ । ३ । ए तीन नहीं लीजिये । ऐसं नव अक्षर नहीं लीजिये ॥ उद्याहकी आ-दिमें दकार । १ । अंतरामें आदिमें मकार । २ । आभोगें मकार । ३ । ए तीनों जगों तीन अक्षर लीजिये । सो शुभकल होय ॥ यह विचार महाराजनकी स्तुति पशंसामें कीजिये ॥ इति श्रीशिवजीके कहे वर्णविचार गुणदोष संपूर्णम् ॥

अथ पद वाक्य अर्थ। ३। इनके सोलह दोष हैं ते दूर किर किविता की जिये। सो नाम लिख्यते ॥ तहां मथम पददोष कहत हैं ॥ असाध। १। अम्प्रका। २। कष्ट। ३। अमर्प्य। ४। अन्यार्थ। ५। अपुष्टक। ६। अस्समर्थ। ७। अपतीत। ८। क्वेश। ९। गूढ। १०। नेयार्थ। ११। सांदिग्ध। १२। विरुद्ध। १३। अपयोजक। १४। देसको शब्द। १५। प्रामशब्द। १६। इति पददोष नाम संपूर्णम्॥

अथ वाक्यदोष नाम लिख्यते ॥ शब्दहीन । १ । कमभ्रष्ट । २ । विसंधि । ३ । पुनरुक्ति । ४ । ब्याकीर्ण । ५ । काब्यसंकीर्ण । ६ । अपदवाक्य-गर्भित । ७। भिन्निलिंग । ८। भिन्न । ९। वचन । १ ०। न्यूनोपम । १ १। अधिकोपम । १ २ । छंदमंग । १३ । यतिभंग । १४ । असरीर । १५ । रीतिहीन । १६ । इति वाक्यदेश नाम संपूर्णम् ॥

अथ अर्थदेष नाम लिख्यते॥ आप्पार्थ। १। व्यर्थ। २। एकार्थ। ३। सतसंशय। ४। अपक्रम। ५। खिच ।६। अतिमात्र। ७। पुरुष। ८। विरस। ९। हीनोपम। १०। अधिकोपम। ११। असतवृक्षोपम। १२। अपसिद्धोपम। १३। अलंकारहीन। १४। असलील। १५। इति अर्थदोष नाम संपूर्णम्॥

अथ रसदोष लिख्यते ॥ व्यभिचारीभाव अपरादिरसस्था इति आदि । इनको शब्द सो कहिवो ॥ अनुभाव विभाव । इनको कष्टसों प्रकाश विभाव । १ । अनुभाव । २ । संचारि । ३ । इनको विपरितयहण करिवो । थोरोवर्नन चहिये । जहां अधिक वर्नन न करिवो । विना समाप्तके ठिकाणें । विना समज वाक्यको प्रन करिवो जो जायगा वर्नन करिवकी होय ॥ तहां वर्नन नही करे ॥ जहां नही वर्नन चाहिजे ॥ तहां वर्नन करे मुख्य वस्तु ब्रोहिट वरनियो । कामदेवके

नाम मगटछेवो । ८ । ये आठ रसदोषहे सो नहीं लीजिये ॥ इति रसदोष . नाम संपूर्णम् ॥

जो इतनें दोषनको समजजो गुण है। जिनको समझे तिनकी कविता ममाण होत है॥

॥ अथ सूडप्रबंधके आठ भेद हे तिनको नाम अरु लखन लिख्यते ॥

एला, करण; ढेंकि, वर्तिनी, झोंबड, लंभ, रास, एकताली । ये आठ भेद है । इन भेदनसों सूंडपबंधके आठ भेद जांनिये ॥

अथ एलाभबंधको ललन लिल्यते ॥ तहां प्रथम एलोमं तीन चरन कीजिये ॥ इन तीनों चरनमं प्रथम चरनके दो खंड लीजिये । वे दोऊ खंड अनु पाप्तनुत कीजिये ॥ अरु दोऊ खंडके अखीरकी रचना न्यारि न्यारि होय। सो एक गांनमं दोऊ खंड गाइये ॥ यह दोय खंडको प्रथम चरन हे । ताको नाम काम जांनिये ॥

ता उपरांत दूसरो चरन आठापके गमकसों पूरन की जिये ॥ बहुत अखीर नहीं की जिये ॥ अकारिके स्वर वरितवेसों दूसरो चरन पूरन किर रिचये ॥ या दूसरो चरनको नाम मन्मथवत जांनिये ॥

ता उपरांत तीसरे चरनमें तीन खंड कीजिये॥ उन तीनों खंडनको नाम पह्नव हे॥ इन तीनोनमें पहले दोय खंड विलंबित लयसों गाइये॥ अरु याको तीसरो खंड द्वत लयसों गाइये॥ इन तीनो खंडको नाम कमसों कांत। १। जित। २। मत्त। ३। यह तीनो जांनिये॥ इन तीनो खंडको तीसरो चरन होत हे। याको नाम पह्नव हे॥ ये तीन मात्र चरन एक गांनमें गाइये। तब इन तीन चरनको उद्याह खंड एक होत हे। सो उद्याह एलामबंधको प्रथम धातु जांनिये॥ १॥

ता उपरांत दूसरो चरन जो होय ता रे ऐसिह उद्याहकी नाई तीन चरन किर । प्रथम चरनके दोय खंड अनुभास जुत एक गानमें गाइये । सो एक पद । १ । दूसरो चरन अकारिमें स्वरनकी गमक तो रचिये । २ । तीसरे चरनमें तीन खंड पहुन नामके किर । ३ । पहुछे दोय खंड दिछंबित छमें गाईये । ४ ।

तीसरो खंड दुतलयमें गाइये। ५। इन पांचा पदनको नाम क्रमसों। विकारिणः, मांधातृ, सुमती, शोभी, सुशोभी। यह पांच जांनिये ॥ ऐसे पांच खंड तीन चरनमें होय॥

उन तीन चरनको एला प्रवंधको दूसरो पद जांनिये ॥ ऐसे एलाके दोय पदमं दस लघुपद होत हे ॥ पथम पद पांचोको अरु दूसरो पद पांचवो । यह दूसरो पद हूं एक गांनमं गाइये। यह दूसरो एलाको पद उद्याहमें जांनिये ॥ २ ॥

या उपरांत एला प्रबंधको तीसरो पद कीजिये॥ या पदके दोय चरन रिच प्रथम चरनके दोय खंड पहिलिकीसिनाई। अनुपासजुत एक गांनमें गाइये। सो एक पद॥ १॥ फेर दूसरो चरन अकारिमें स्वरनके गर्मकसों रिचये। या दूसरे चरनके अंतिमें संबोधन अर्थसों देवताको अथवा राजाको नाम धरिये। जैसे हे राम हे रुव्ण हे युधिष्ठिर हे विक्रम हे भोजराज। ये संबोधन अरथमें देवता वा राजाके नाम हे। सो ऐसे नाम धरिये अपनी रुचिसों ऐसो दूसरो चरन होय॥ २॥

पहले गांनसां दूसरे गानमें गाइये। इन दोऊ चरन नाम कमसों। गीतक ॥ १ ॥ उचित ॥ २ ॥ यह दोय जांनिये। इन दोऊ पदको एक पद होय। सो एक पबंधको तीसरा पद होय। ऐसें तीन पदके बारह पद होतहे । ते बारह उद्याहमें जांनिये जे आचारिज एठा पबंधके मेठापक धातु नही मानेहें। उद्याह ॥ १ ॥ ध्रुव ॥ २ ॥ आभोग ॥ ३ ॥ इन तीन धातुको मानेहें ॥

तिनके मतमें तो एठाके तीनों पद उद्याहमें गावेहें। ओर जे आचा-रिज मेठापक धातु एठा प्रबंधमें ठेतहैं। तिनके मतमें एठाके दोय पद पहछे तीसरे पदके प्रथम पद गीतक नामको। ऐसें यह ग्यारह खंड उद्याहमें ठेतहें। ओर तीसरे पदको दुसरो खंड उचित नामको मेठापक धातुमें ठीजिये॥

यह महाराजाधिराज राज सोमेश्वर देव कहत हैं । सो सारंगदेव आदि देव अनुष्टुप चक्रवर्ती आदि संगीतके कर्ता सोमेश्वर आदि मतपर पुराणा मानत आये हैं । सो एला प्रबंधमें उद्घाह ॥ १ ॥ मेलापक ॥ २ ॥ यह दोऊ धातु जांनिये । ऐसें तीन पाद रचिकें ताउपरांत एक चरन कीजिये । तामें तीन खंड राच प्रथम दोय खंड मध्य लयसों एक गांनमें गाइये ॥ २ ॥ ओर तीन खंड

विलंबित स्वयसों पहले गानसों दुसरे गांनमें गाइये । ऐसे तीन खंड कीजिये । इन तीनों खंडनमें काहू एक खंडमें इष्ट देवताको वा राजाको नाम राखिये ॥

इन तीनों खंडको कमसों नाम विचित्र ॥१॥ वासव ॥ २ ॥ मृदु॥ ३ ॥ यह तीन जांनिये। इन तीन खंडको एक पद होय। सो एठा मबंधको ध्रुव पद होयहे। याहीको ध्रुव धातु तीसरो कहतहे ॥ ३ ॥ ता उपरांत एक पद होय। सो या पदमें सो एठा मबंध बनायवेवारो कवी १ वर होय। सो आपनें नामकी छापधुनि। आपनें इष्ट देवसों वा आपनें स्वामीराजासों आपनें मतकी रुचिकी विनति करे। जैसे मनोरथ होय तैसो रचे। या पदको नाम सुचित्र हे। या पदको नाम आभीग कहतहे। यह मबंधको चोथो धातु आभीग जांनिये॥

ऐसे एठा प्रबंधमें प्रथम उद्याह धातु ॥ १ ॥ मेठापक धातु ॥ २ ॥ भुव धातु ॥ ३ ॥ आभाग धातु ॥ ४ ॥ सास्त्रोक्तरीति गृहसंपदायसों समिशकें रचे तब देवता प्रसन्न प्रबंध होय वरदान देत है मनोरथ पूरन करत है ॥

या प्रबंधको बनाइवो गाइवो महाकिटिनहै प्रमुक्ते पूरन अनुमहसों होत है। यामं तहां उद्माहके ग्यारहपद ॥ ११ ॥ मेठापकको एक पद ॥ १ ॥ ध्रुवके तीन पद ॥ ३ ॥ आमोगको एक पद ॥ १ ॥ एसें सब मिठके सोछह पद हात हैं। इनको दोय वार गाइ ध्रुवके पहले खंडमें विश्राम किजिये। ओर याका आरंभ तालकें अतित मह किहिये। पहले ताल लगायकें। अथवा अनागत किहिये॥ पहले प्रबंधको उच्चार करे पीछे तालको आरंभ ऐसी रीतिसों एला प्रबंधमें तालकों मह कीजिये। यह भरत मतंग हनुमान आदि संगीतशास्त्रके करता कहे है। या एलों खंडताल ॥ १ ॥ दितीयताल ॥ २ ॥ कंकालताल ॥ ३ ॥ प्रतिताल ॥ ४ ॥ इन च्यारों तालनमें जो इछा होय सो एकताल राखियें। ओर या एला प्रबंधके अक्षरनमें इष्ट देवको वा राजाको। दान महिमा ॥ १ ॥ सौभाग्य महिमा ॥ २ ॥ शूरवीरता ॥ ३ ॥ धीरजता ॥ ४ ॥ आदिगुणहे तिनको वरणनही कीजिये। यह निर्युक्त नामको एला प्रबंधहे ॥

यह एला प्रबंध सिगरे प्रबंधको राजाहे। यांके अनेक भेदहें तिनमें कोऊ कोऊ भेद मतंगादि मुनिराजके मतसों कहेगे ॥ इति एला प्रबंधको सामान्य लखन संपूर्णम् ॥ अथ एला प्रबंधके नाम देवता । १ । ओर उद्ग्राहमें । मेलापक । २ । ध्रुव ॥ ३ ॥ आभोग ॥ ४ ॥ इन च्यारो धातुनके मिलिके सोलह पद हैं तिनके नाम देवता लिख्यते ॥

जहां एला शब्दमें । अकार इकार लकार यह तीन अक्षर हे तिनमें अकारके स्वामी विष्णु ॥ १ ॥ इकारके स्वामी कामदेव ॥ २ ॥ लकारकी स्वामी लक्ष्मी ॥ ३ ॥ ऐसं तीन अक्षरनके तीन देवता हैं । ये तीन देवता एला प्रबंधके जांनिय । औरनके सोलो पदनकों ऋपसो नाम कहतहें । काम ॥ १॥ मन्मथवत ॥ २ ॥ कांत ॥३॥ जित ॥४॥ मत्त (मित्र) ॥५॥ विकारिणः ॥६॥ मांधातृ ॥ ७ ॥ सुमति ॥ ८ ॥ शोभि ॥ ९ ॥ सुशोभि ॥ १० ॥ गीतक ॥११॥ यह ग्यारह नाम उद्याह धातुके कमसों ग्यारह पदनके जांनिये। ओर अद्भुत ॥ १२ ॥ यह मेलापक धातुके जांनिये । मेलापकमें एकहि पद होत है। याको नाम कोऊक उटित कहत है। ऐसें विचित्र ॥ १३ ॥ वासव ॥१४॥ मुद् ॥ १५ ॥ यह तीन नाम धुनि धातुके तीनों खंडके जांनिये । अरु सुचित्र ॥ १६ ॥ यह नाम आभोग धातुको पद हैं । यहां आभोगको एकही पद है । अवें इन पदनके देवता कहत हैं । पद्मालया ॥१॥ पत्रिणी ॥२॥ रंजनी ॥ ३ ॥ सुमुखी ॥ ४ ॥ शर्ची ॥ ५ ॥ वरेण्या ॥ ६ ॥ वायुवेगा ॥ ७ ॥ वेदिनी ॥ ८ ॥ मोहिनी ॥ ९ ॥ जया ॥ १० ॥ गौरी ॥ ११ ॥ ब्राह्मी ॥ १२ ॥ मातंगी ॥ १३ ॥ चंडिका ॥ १४ ॥ विजया ॥ १५ ॥ चामुंडा ॥ १६ ॥ ये सोले देवता कमसों सोलह पद्के जांनिये ॥ इति पदनके नाम देवता संपूर्णम् ॥

अथ एला प्रबंधके सातवे पद मांधातृतें लेकें सोलहवे पद सुचित्रता पद सदनमें दश पाणहें तिनके नाम-लक्छन लिख्यते ॥ समान ॥ १ ॥ मधुर ॥ २ ॥ सांद्र ॥ ३ ॥ कांत ॥ ४ ॥ दीप्त ॥ ५ ॥ समाहित ॥ ६ ॥ अग्राम्य ॥ ७ ॥ सुकुमार ॥ ८ ॥ पसन्त ॥ ९ ॥ ओजस्वी ॥ १० ॥ यह दस प्राणनके नाम जांनिये ॥

अवे इनके उछन ठिक्यते ॥ जहां ध्वनि ॥ १ ॥ अर अक्षर ॥ २ ॥ यह दोऊ निपट थोरे होय । सो पाण समान नाम जांनिये ॥ १ ॥ जहां थोडी ध्वनिसों स्वरनको उच्चार करि अल्प मूर्छना कहिये। जो तांनके पहले स्वरको उच्चार करि। आरोह कमसों वा अवरोह कमसों बीचके स्वरनको सितावि अतिसूक्ष्म उच्चार करि। पिछले स्वरको उच्चार कीयेतें अल्प मूर्छना होत है। या अल्प मूर्छनासों स्वरनको उच्चार होय। सो मधुर पाण जांनिये॥ २॥

जहां अक्षर बहुत होय ओर गाइवेके स्वरकों थोडे होय । यातें गाइ-वेमं थोरि धुनिसों बहुत अक्षर आवे । ओर उन स्वरनको पेठाबताय स्थानमें होय । सो सांद्र प्राण जांनिये ॥ ३ ॥

जहां सुंदर मधुर धुनिसों स्वरनमें अक्षरनको उच्चार कीजिये। सो कांत प्राण जांनिये॥ ४॥

जिहां तारस्थानके स्वरनमं अथवा गहरि ध्वनिके स्वरनमें अक्षर वर-तिये। तीव्रतासों। सो दीप्त पाण जांनिये॥ ५॥

जहां स्थाइ वर्णके स्वरमें ठहराय गमक वरतिये। कहु कहु गमक जूत अक्षर जूत अक्षर बहु वरतिये गमक अक्षर एक रूपकर वरतिये। सो समाहित पाण जांनिये।। ६।।

जहां पदके अंग जे पद तिनके अक्षर जे होय । तिनके पहले पहले पदके दोयं दोय वा तीन तीन अक्षर आगले आगले पदकी आदिमें कहि कहि आगले आगले पदको उच्चार होय । ऐसेंहि उन पहले पदनके अंत अक्षरनके जे स्वर होय । तिनको आगले आगले पदनके स्वरनकी आदिमें उच्चार करि । आगले पदनके स्वरको उच्चार होय । या रीतिसों अक्षरनकी ओर अक्षरनके स्वरनकी रचना होय । जैसें रामचंद्र ॥ १ ॥ इन् दोक पदनमें पहला पद रामचंद्रहे ताके अंतमें दोय अक्षर तो चंद्र यह । ओर तीन अक्षरमें चंद्र यह तो रामचंद्र पहले कहिये ॥ फेरचंद्र रामचंद्र यह दोय वा तीन अक्षर कहि रूष्णचंद्र पदको उच्चार कीजिये । फेर रूष्णचंद्र पदके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर । ओर तीन अक्षर रूष्णचंद्रके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर । ओर तीन अक्षर रूष्णचंद्रके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर । ओर तीन अक्षर रूष्णचंद्रके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर । ओर तीन अक्षर रूष्णचंद्रके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर । ओर तीन अक्षर रूष्णचंद्रके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर । ओर तीन अक्षर रूष्णचंद्रको उच्चार करि । आगलो जो पद होय । माको उच्चार कीजिये । या रीतिसों पदनमें । अक्षरकी आवृति जांनिये ॥

ऐसेंहि इन पदनके अंत दोय अक्षर वा तीन अक्षरमें जो स्वर षड्जा-दिक स्वर होय । ताको दूसरीवेर अक्षरविना आकारिसों उच्चार करि वा स रि आदिक अक्षरसों उच्चार करि । आगछे पदके स्वर अक्षरविना उच्चार कीजिये । सो स्वरावृत्ति जांनिये ॥

ऐसं अक्षरनकी ओर अक्षरनके स्वरनकी जुदि जुदि रचना होय। सी अग्राम्य पाण जांनिये॥ ७॥

जहां अक्षर ओर स्वर ॥ २ ॥ स्वरनकी तांन ॥ ३ ॥ ये कोमल होय । सो सुकुमार पाण जांनिये ॥ ८ ॥

जहां अक्षरनके स्वरनकी विलंबित लयसों पगटता गंभीरता दिखे। ओर स्वरध्वनिसों भरे होय। सो पसन्त पाण जांनिये॥ ९॥

जहां अनेक छोटे छोटे राम रूष्णादि शब्दनको एक बडो शब्द होय। और स्वरनमें पहले पाणके गमक आदि दोय वा च्यारि वा अनेक गुण होय। सो ओजस्वि पाण जांनिये॥ १०॥

इन दश पाणनको लिल समिति जो कोई सुनें सुनावे तिन दोऊनको धर्म ॥ १ ॥ अर्थ ॥ २ ॥ काम ॥ ३ ॥ मोक्ष ॥ ४ ॥ की पाप्ति होत है ॥ ११ ॥ ये दश ॥ १० ॥ पाण एला प्रबंधके से लिह ॥ १६ ॥ पदमें जैसे होतहे । सो प्रकार कहतहै ॥

तहां एलाके पहले चरनके दूसरो खंड मन्मथवत । ओर एलाके पहले खंडको तीसरो खंड कांत । एलाके दूसरे खंडको तीसरो खंड सुमित । इनको उनके मधुमित इनको उनके मधुर पाणहें ॥

ओर एलाके पथम खंडको चोथो खंड जितने नाम । ओर एलाके दुसरे खंडके नाम शोभि । इन दोऊनको सांद्र पाणहे ॥

ओर एलाके मथम खंडको पांचवो खंड मत। एलाके दूसरे खंडको पांचवो खंड सुशोभि । इन दोऊनको कांत माणहे ॥

ऐसे एलाके पहले खंडको मथम खंडको पहलो खंड काम । एलाके दूसरे खंडको पहलो खंड विकारिणा । एलाके तीसरे खंडको पहलो खंड गीतक । इन तीनो खंडनको दीप्त पाणहे ॥ ऐसी उद्याहके सोलह खंडनमें पांच माण वरतेहें। ओर एलाके तीसरे खंडको। दुसरो खंड उचित तामें समाहित माणहे॥

ऐसे एलाके धुवके विचित्र ॥ १ ॥ वासव ॥ २ ॥ मृदु ॥ ३ ॥ ये तीन खंडहे । तिनेमें कनसों अधान्य ॥ १ ॥ सुकृतार ॥ २ ॥ पसन ॥ ३ ॥ ये तीन पाण होत हैं ॥

एलाके आमे। गको सुनित्र नान एक खंडहे । तानें ओजस्वी पाण है । या रीतिसों सोलह पद एला प्रबंधके हैं । तिनमें कहि रीतिसों दश पाण जांनिये । ओर एलाके पहले दोय चरन तीसरे चरनको पहले खंड एक गांनमें गोंवनो जा गांनमें पहल एलाके पांच खंड जाय होय । ताही गांनमें दूसरे चरनको पांच खंड गावनों । ओर तीसरे चरनको जैसे पहले चरनके पहले खंड गाये तैसे गावनो ॥

ऐसे ग्यारह खंड उद्याहमें गाय। तीसरे चरनको दूसरो खंड ओर गांनमें गांवे तो सो दूसरे खंडमें मेठापक जांनिये ॥ ऐसे धुवके तीन खंडमें पहले दोय खंड मध्य लयतों एक गांनमें गांवे। अह तीसरे खंड विलंबित लयसों न्यारे गांनमें गावनों। ऐसे एलाके सोलह खंडको या रीतिसों गांन कीजिये ॥ इति एला प्रबंधके दश प्राण नाम—लळन संपूर्णम्॥

अथ एलाके भेद-लाइन लिल्पते ॥ गण ॥ १ ॥ मात्रा ॥ २ ॥ वर्णे ॥ ३ ॥ देश ॥ ४ ॥ इन च्यार भेदसों एला प्रवंव च्यारि प्रकारको जांनिये ॥ तहीं गणके दोय भेद हैं जो छह मात्रासों लेके दोय मात्रातांई छगण ॥ १ ॥ प्रगण ॥ २ ॥ चगण ॥ ३ ॥ तगण ॥ ४ ॥ दगण ॥ भा ये पांचगण गणमात्रा जांनिये । ओर मगण ॥ १ ॥ यगण ॥ २ ॥ सगण ॥ ४ ॥ तगण ॥ ५ ॥ जगण ॥ ४ ॥ जगण ॥ ४ ॥ जगण ॥ ४ ॥ जगण ॥ ४ ॥ च्यां मणकहें हैं ॥

सो मात्रा गण ॥ १ ॥ वर्ण गण ॥ २ ॥ ये दोऊ पथन कहेहें ॥ तहां वर्ण गगनके छंदमें जो एठापबंध रिचये । सो गण एठा जांनिये ॥ १ ॥

जो मात्राके छंद दोहा चोपाई गाथा आर्या इत्यादिकनेमं रचिये। सो

मात्रा एठा जांनिये॥ २॥ ओर वर्णके दोय भेदहें। गुरु ॥ १ ॥ छघु ॥ २॥ जहां छघुके ऊपरके होय। अथवा आगें दोय विसर्ग होय। अथवा व्यंजन अक्षर होय। अथवा दित्त अक्षर होय। अथवा दित्त अक्षर होय। अथवा दित्त अक्षर होय। अथवा दित्त अक्षर आगें होय। सो छघु अक्षर गुरु अक्षर जांनिये॥ पदकी अंतको छघु अक्षर गुरु जांनिये॥ दोय मात्राको अक्षर गुरु जांनिये॥ एक मात्राको अक्षर छघु जांनिये॥ छिलनमें सूधी छकीरको छघु जांनिये॥

लकार ककार मिले तक ॥ ३ ॥ सकार ककार मिले सक ॥२॥ पकार रकार मिले म ॥ ३ ॥ हकार रकार मिले न्ह ॥ ४ ॥ ये द्वित्त अक्षर लघुके आगें होय तब वह लघु गुरु जांनिये ॥ अरु लघु मानिये ॥ जहां जैसी उचार चिहेये । तहां तैसी गुरु लघु जांनिये ॥ इन च्यारतें ओर कोई मिले अक्षर लघुके आगे होय ता वह लघु गुरुही मानिये लघु नहीं उचार कीजिये ॥

ओर पद्की अंत्यमें एँ ऊं न्हीं हें ये च्यार अक्षर पाक्टत गाथा आदि छंदेंमें लघु जांनिये ये अक्षर गुरुहें । परंतु पाक्टत पदके अंतमेंभी काम पडे तो लघुभि जांनिये । ओर अपभंश भाषाके श्लोकके पदके मध्यमें हुं हुं एँ ओं श । ये पंच अक्षर गुरुहें परंतु काम पडे तो लघुभी मानिये ॥ ऐसं गुरु लघु वर्णके छंदेंमें जो एला मबंध । सो वर्ण एला जांनिये ॥

ओर गौड महाराष्ट्र देसदेसकी भाषामें एठा होय। सो देसी एठा जांनिये भ तहां अर्वित गणको छछन कहेहें ॥ तहां दोय गुरुको गण। १। दोय छघु एक गुरुको गण। २। एक गुरु एक छघुको गण। ३। तीन छघुको गण। ४। ये च्यारि मात्रागण तीन रितगण कहिये। सो निश्चेय जांनिये।

॥ अथ आठ कामगणको यंत्र ॥

8222	॥ऽऽ२	SISZ	111 2 8	SSIY	॥ऽ।६	ऽ॥७	1111 6
तीन गुरु	दोय लघु दोय गुरु	ल १ गु २	छ ३ गु १	गु २ छ १	ल ३ गु १	गु १ छ २	लघु ४

पंचम प्रबंधाध्याय-काव्यके भेद ओर प्रबंधके गण.

॥ अथ सोलह बाणगणको जंत्र ॥

9	-	3	8	ч	६	اً ق	6
5555	11555	siss	III s s	ssls	sIIs	IIII s	SSII
गुरु ४	ल २ गु ३	गु ३ छ १	छ ३ गु २	गु ३ छ १	गु २ छ २	ल ४ गु १	हरगुर
Q	90	99	92	93	18	94	98
_ 5551	11551	5151	III s I	5511	sssII	s III	11111
गु ३ छ १	ल ३ गु २	गु २ छ २	छ ४ गु १	गु २ ल २	गु ३ छ २	ल ३ गु १	छ ५

य सोलह बाण गण जांनिये ॥ रित गण । १ । काम गण । २ । बाण गण । ३ । यह तीनों मात्रा गण जांनिये ॥ तहां गणपलाके तीन भेद हें ॥ शुद्धा । १ । संकीणं । २ । विकृत । ३ । ये तीन जांनिये ॥ तहां शुद्धके च्यारि भेद हें ॥ नादावती । १ । हंसावती । २ । नंदावती । ३ । भदावती । ४ । तहां इन च्यारों एलानमें च्यारि वृत्त हें । कैसिकी । १ । आरभटी । २ । सात्वती । ३ भारती । ४ । यह जांनिये ॥ च्यारि रीति हें । पांचाली । १ । लाटी । २ । गौडी । ३ । वेदभी । ४ । यह च्यारि जांनिये ॥

तहां केशिकी आदि वृत्ति । ४ । पांचाली आदि । ४ । पीति इनको लखन कमसों कहत हैं ॥ च्यारि पदारथ साधिवेको मन बचन कायककी चेष्टा सो वृत्ति कहावे हैं । १ ।

जहां सुकुमार अरथको वर्णन कीजिये। सो कैशिकी वृत्ति हैं। १। जहां बहुत उद्धतपनेसों अरथकों वर्णन कीजिये। सो नाम आरभटी है।२। जहां भौढ अरथ गंभीरतासों वर्णन कीजिये। सो सात्वती हैं। ३। जहां मृदुतासों अरथको वर्णन कीजिये। सो भारती वृत्ति हैं। ४।

अथ च्यारि रीतिके लछन लिख्यते ॥ जहां सुंदर पदनकी रचना रीति हैं। सो जहां छंद मुबंधमें दोय तीन पदको मिलाप होय। ओर पांच सात पदको मिलाप होय। सो पांचाली रीति हैं। १। जहां अनुपास लिये। पदनको दोय तीनको मिलाप कहूं कहूं होय। अथवा कहूं कहूं नहीं होय। सो लाटि रीति हैं। २। जहां सुंदर पांच सात पदको मिलाप होय। सो पद कोमल होय। जिनको अरथ सुखसों होय। सो गौडी रीति हैं। ३। जहां दोय तीन पदको मिलाप होय। अर सुखसों पदनको अर्थ जान्या जाय। पद कोमल होय। सो वैदर्भी रीति हैं। ४।

अथ इन च्यारों गणनके लछन लिख्यते ॥ इन च्यारां एला प्रबंधनमें पहले चरनको पहलो काम नाम जो पद । ताको दोय खंडनमें गणको नेम हैं। ओर ठोर पदमें अपनि रूचिगण गण धरिये ॥

अथ प्रथम नादावतीको लछन लिख्यते॥ जहां पहल चरनके पहले काम नाम पदके दोय खंडमें पांच भ गण होय ॥ आगं एक न गण होय । राग टक्क । २ । गाइये । ताल मंठ होय । सो नादावती जांनिये ॥ यह नादावती ऋग्वेदमें उपजी हैं । ब्राह्मणवर्ण हैं । श्वेत रंग हैं । कैशिकी वृत्ति हैं । पांचाली रीति हैं । सरस्वती माता याकी स्वामिनी हैं । याको शृंगारमें गाइये । याको गायेतें सरस्वती वरदान देत हैं ॥

अथ हंसावतीको लखन लिख्यते ॥ जहां पहले चरनके पहले काम पदके दोय खंडमें पांच र गण होय ऽ।ऽ आगें एक स गण होय ॥ऽ ताल दितीय नामको होय । हिंदोल रागमें गाइये । सो हंसावती जांनिये ॥ यह क्षत्रिय वर्ण हैं । यजुर्वेदसों उपजि हे । लाल रंग हे । आरभटी वृत्ति हैं । लाटी रीति हैं । याकी चंडिका देवता हैं । रीद रसमें गाइये । याके गायेते चंडिका वरदान देत हैं ॥

अथ नंदावतीको लछन लिख्यते ।। जहां पहले बरनके पहले काम नाम पदके दोय खंडमें पांच त गण होय ऽऽ। अंतमें एक ज गण होय । ऽ । सो नंदावती हैं ॥ याको मालवंकस रागमें प्रतितालसों गाइये । यह सामवेद तें उपजी हैं । वैश्य वर्ण हैं । धोरो रंग हैं । ओर सावती वृत्ति हैं । गौडी रीति हैं । याकी इंदाणी देवता हैं । याके गाये तें इंदाणी वरदान देत हैं ॥

अथ भद्रावतीको लखन लिख्यते ॥ जहां पहले चरनके पहले काम नाम पदके दोय खंडमें पांच म गण होय। अंतमें एक य गण होय। सो भद्रावती हैं॥ याकों ककुभ रागमें कंकाल तालसों गाईये ॥ यह अथर्वणवेदसों उपजीहें। शूद्र वर्णहे । स्याम रंगहें। भारती वृत्तिहें। वैदभीं रीतिहे। बीभत्स रसमेंहें। याकी वाराही देवताहै । याके गायेतें वाराही देवी वरदान देतहें ॥

इन च्यारोंनके संकीर्ण भेद अनेकहें ॥ ते प्रसिद्ध नहीं हैं ॥ अपनी बुद्धी-सों इन च्यारों एछापबंधसें दोयके छछन अथवा तीनके छछन वा च्यारिक छछनसों संकीर्ण भेद जांनिये ॥

अथ विकतगणके तीन भर्हं तिनको नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां पहले चरनके पहले काम नाम परके दोऊ खंडमें जे भ गण आहि पांच गण कहेहें तिनमें गणके गुरु लघु अक्षरके उलट पलटतें । विकता नाम एला प्रबंध होत हैं । तहां एक गणके उलट पलटतें । वासवी । १ । दोय गणके उलट पलटतें । संगत । २ । तीन गणनके उलट पलटतें । तेता । ३ । एसें च्यार गणतें । चतुरा । ४ । पांच गण उलट पलटतें । वाण संज्ञा । ५ । ये पांच भेद होतहें ॥

तहां पांची गणमं पथम । ३। वा दुसरी । २। वा तीसरी । ३। वा चोथी । ४ । वा पांचमों । ५ । एक एक गणके विकारसों वासवीके पांच भेदहें ॥

तहां मथम गण विकारसीं रामा । १ । ऐसें दुसरे गणसीं मनोरमा । २। तीसरे गणसीं उन्तता । ३ । चीथी गणसीं । शांतिसंज्ञा । ४ । पांचवे गणसीं । नागरा । ५ । ये पांच जांनिये ॥

जहां पांची गणमें दीय दीय गणमें दीय दीय गणके एक संग विकार-सों। संगता एठा हैं। १। ताके दस भेद हैं।। सी कहूं रमणीया । १। विषमा। २। समा। ३। ठक्ष्मी । ४। कीमुदि । ५। कामीत्सवा । ६। नंदिनी। ७। गौरी। ८। सौम्या। ९। रतिदेहा। १०। ये दस जांनिये॥

जहां पांची गणनमें तीन तीन गणनके एक संगविकारके तेता ताके कमसों दस भेद होत हैं ॥ मंगला । १ । रितिमंगला । २ । कलिका । ३ । तनु-मध्या । ४ । वीरश्री । ५ । जयमंगला । ६ । विजया । १ । रतनमाला । ८ । गुरुमध्या । ९ । रितिमभा । १० । यह दस जांनिये ॥

जहां इन पांची गणमं च्यारि च्यारि गणके एक संगविकार होय। सो

कनसों चतुरा हैं ॥ ताके पांच भेद हैं ॥ उत्सविषया ॥ १ ॥ महानंदा ॥ २ ॥ मलहरि ॥ ३ ॥ जया ॥ ४ ॥ कुतुमावती ॥ ५ ॥ यह पांच भेद जांनिये ॥

जहां पांच गण एक संगविकार होय। सो बाणाएला हे ॥ ताको पार्वतीपिया एक भेद हैं। ऐसं विकृत इकतीस भेद हैं॥ इहां गणको विकार गणके गुरु लघु अक्षर उलटपलट कीजिये॥ तब होत हैं॥

ऐसं भ गणमें एक गुरु दीय लघु है ॥ ऽ इनमें पहले लघु बीचमें गुरु अंतम लघु ऐसें कीजियें ॥ तब यह विकारसों । ज गण होत हैं ॥ ऐसें यामें पहले दीय लघु अंगें एक गुरु ऐसी विकार करे । तब स गण होत हैं ॥ ऐसें जो गगमें गुरु लघु होय । तहां विकार होत हैं ॥ जो गगमें सब गुरु अक्षर होय । अथवा गगमें सब अक्षर लघु होय । तहां गगमें विकार नहीं होय । जेसं म गणमें तीनो गुरु हैं । न गणमें तीन लघु हैं । तातें इन दोनू गणमें विकार नहीं होत हैं । यह जांनिये ॥

यह पांचो गण एठाके इकतीस भेद हैं। सो नादावतीमं ॥ १ ॥ हंसा-वतीमं दोय ॥ २ ॥ नंदावतीमें तीन ॥ ३ ॥ इन तीनों एठानमें होत हैं। यातें यह भेद तरेण्णव ॥ ९३ ॥ जांनिय ॥

ओर भदावती नाम चोथो एठामें म गण हैं। सो ताके तीनो अक्षर गुरु हैं। तासों वामें विकार नहीं। यातें भदावतीके भेद इकतीस नहीं छेत है। ओर नादावती ॥ १ ॥ हंसावती ॥ २ ॥ नंदावती ॥ ३ ॥ इन तीन एठामें वासवि संग ताके पांच पांच भेद ओर हैं। सो भिछिकें पनदरह भेद होत हैं ॥

तहां नादावतीमें दोय भगणके विकार तें संगता होय। तहां दोय भगणके स्थान दोय ज गण कीजिये। तब सावित्री ॥ १ ॥ उनहीं दोय भगणके स्थानिकारसों सगण कीजिये। तब पावनी ॥ २ ॥ जहां दोय भगणके स्थान पथम भगणके विकारमें ज गण कीजिये। दूसरे भगणके स्थान सगण कीजिये। ऐसें दोय जुदेजुदे न्यारे गण कीयेंतें। ए तीन भेद संगता केहें॥

ऐसं नादावतीमें एक भ गणके विकारतें वासवी होय । तहां भ गणक स्थान त गण होय । तव सावित्री ॥ १ ॥ अरु भ गणके स्थान स गण होय । तब

पावनी ॥ २ ॥ ए दोय भेद वासवीमें होय । सो संगता वासवीके मिलिकें नादावतीमें पांच भेद हैं ॥

ओर हंसावतीमें दोय र गणके विकारतें संगता होय। तहां दोऊ र गणके स्थान त गण कियेतें व्योगजा ॥ १ ॥ ओर दोऊ गणस्थान य गण कियेतें वारुणी ॥ २ ॥ ओर दोऊ र गणमेंके स्थान य गण कीयेतें व्योमजा वारुणी ॥ ३ ॥ ए तीन भेद स गणके है ॥

ओर एक गण विकारतें वासिव होय तहां र गणके स्थान त गण कियेतें व्योमजा ॥ १ ॥ ओर र गणके स्थान यह कियेतें वारुणी ॥ २ ॥ ए दोय भेद वासिवके हें ॥ ऐसें हंसावितमें पांच भेद हें ॥ ओर नंदावितमें दोय त गणके विकार तें संगता होय । तहां दोय गणके स्थान र गण कियेतें विन्हिजा ॥ १ ॥ दोय त गणके स्थान दोय य गण कियेतें विन्हि वारुणी ॥ २ ॥ एक त गणके विकार तें वासिवी ॥ ३ ॥ यह तीन भेद संगताके हें ॥

तहां त गणके स्थान र गण कियतें वन्हिजा ॥ १ ॥ त गणके स्थान प गण कियतें वारुणी ॥ २ ॥ ये दोय भेद वासवीके हे ॥ ऐसें नंदावतीमें संगता वासवीके पांच भेद हें ॥ इन तीनोके मिछिके पनदरह ॥ १५ ॥ भेद छिन्नव ॥९६॥ भेद पहले सब मिछिकें एकसो आठ ॥ १०८ ॥ भेद होत है। सो जांनिये ॥

॥ अथ पार्वतीजी क्रतमात्रा एलाको लखन लिख्यते ॥

तहां एला प्रबंधके पांच पर्नको जो पहलो पर तामें दूसरे एलाके पर्में वा तीसरेमें मात्रा गण होय तब मात्रेला जांनिये ॥ याके च्यार ॥ ४ ॥ भेर् हे ॥ रतिलेखा ॥ १ ॥ कामलेखा ॥ २ ॥ बाणलेखा ॥ ३ ॥ चंद्रलेखा ॥ ४ ॥ यह च्यारि जांनिये ॥

जहां एठा प्रबंधके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चरनमें ग्यारह ग्यारह मात्रा होय । ओर तीसरे चरनमें दस मात्रा होय । ऐसे तीनों चरनकी बत्तीस मात्रा होय । तहां पहले चरनकी ग्यारह मात्रा । च्यार रितगण हे तिनमें पहल ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ अथवा पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चोथं ॥ ४ ॥ इण तीन गणनसों ग्यारह मात्रा पूरि कीजिये । एसेंहि दूसरे चरनकी ग्यारह मात्रा पूरी कीजिये ॥

ओर तीसरे चरनकी दस मात्राहे सो च्यार त गणहे ॥ पहँछे ॥ १ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ अथवा दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ गणनसों पूरिये । सो रतिलेखा नाम एला जांनिये ॥ १ ॥

जहां एठाके पहले दूसरे चरनमें बाईस बाईस मात्रा होय। तीसरे चरनमें बीस मात्रा होय। सो ऐसं तीनो चरनमें चोसिट मात्रा तहां पहले चरनकी बाइस मात्राहें। सो काम गण आठ कहेहें। तिनमें पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथ ॥ ४ ॥ गणसों पूरिय। ऐसेंहि दूसरे चरनकी बाइस मात्रा पूरिये। ओर तीसरे चरनकी बीस मात्रा हैं। सो काम गणमें पहले ॥, १ ॥ दूसरो ॥ २ ॥ सातवो ॥ ७ ॥ आठवो ॥ ८ ॥ इण गणनसों पूरिये। सो कामंलेखा जांनिये ॥ २ ॥

अथ बाणलेखाको लछन लिख्यते ॥ तहां एलाके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चरनमें तेतीस तेतीस मात्रा होय। तीसरे चरनमें तीस मात्रा होय। ऐसें तीनों चरनमें छिन्नव मात्रा होय॥

तहां पहले चरनमें कि तेतिस मात्रा तो बाण गण सोलह कहें। तीनों में सीसरो ॥ ३ ॥ चोथो ॥ ४ ॥ पांचवो ॥ ५ ॥ छटो ॥ ६ ॥ सोलहो ॥ १६॥ इन गणसो पूरिये। ऐसें दूसरे चरनकी मात्रा पूरन की जिये। तीसरे चरनकी तीस मात्रा काम गणमें। पथम ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरो ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ इन गणनसों पूरिये। सो बाणलेखा जांनिये॥ ३ ॥

अथ चंद्रलेखाको लछन लिख्यते॥ जहां एठाके पहले॥ १॥ दूसरे॥ २॥ चरनमें चंमालिस चंमालिस ॥ ४४॥ मात्राहे। तिसरे चरनमें चालिस मात्रा ऐसें तीनो चरनमें मात्रा एकसोअठाइस ॥ १२८॥ कीजिये॥

जहां पहंछ चरनमें चंमालिस मात्रासों रितगण च्यारि ॥ ४ ॥ कामगण आठि ॥ ८ ॥ बाणगण सोलह ॥ १६ ॥ इनमें जो जो गणके लिये सो चंमालिस मात्रा जांनिये । होयसो गण लीजिये ॥ एसेंहि दूसरे चरनमें मात्रा पूरवेको गण लीजिये । एसेंहि तीसरें चरनकी चालिस मात्रा पूरवेकों गण लीजिये । सो चंद्र-लेखा जांनिये ॥ ४ ॥ इति चंद्रलेखा संपूर्णम् ॥

अथ नंदिके स्वरके मतसों मात्रा एलाको लखन लिख्यते ॥ सो षह एला पांच प्रकारकी हे ॥ इंदुमित । १ । ज्योति । २ । स्मृति । ३ । अंतर्मे नभस्मृति । ३ । वसुमिति । ४ । जहां एठाके तीनो चरनमें पांच छ गण अरु एक तीन मात्राको गण होय । सो इंदुमिति । १ । जहां तीनो चरनमें प गण नाम पांच मात्राके गण होय । आगं एक च्यारि मात्राको च गण होय । सो ज्योतिस्मृति । २ । जहां तीनों चरनमें बीचबीचमं तीन तीन च गण होय । एक एक पांच मात्राको गण होय । चरनकी आदि अंतमें छ गण छ मात्राको होय । सो नभस्मृति । ३ । जहां दोय मात्राको द गण पांच मात्राको प गण । च्यारि मात्राको च गण । आगे पांच मात्राके तीन गण । ओर छ गण छह मात्राको तीन मात्राको त गण । ए तीनों चरनमें होय । सो वसुमिति । ४। इति नंदिकेश्वरके मतसों एला च्यारि संपूर्णम् ॥

अथ अर्जुनके मतसों नादावती । १ । हंसावती । २ । नंदावती । ३ । भदावती । ४ । यह मात्रामाहि होत हैं । सो इनको मात्रारीतिसों छछन छिख्यते ॥

भहां नादावतीके पहले चरनके कामनी पदमें तेइस । २३ । लघु होय । तहां त गण च्यारि च्यारि मात्राके पांच होय अंतमें तीन लघू। सो नादावती मात्रा एला । १ ।

जहां एगुण तीस छघु होय तिनमें मात्राके तीन तीन गण आठ अंतमें एक छघु ताआगें तीन छघु। सो हंसावती। २।

जहां गुण तीस लघु होय तिनमें तीन तीन मात्राके आढ गण एक लघु अंतमें आगें च्यारि लघु । सो नंदावती । ३ ।

जहां पेंतिस मात्रा होय। तहां आठ च गण होय तीन छघु होय। सो भद्रावती जांनिये। ४।

इन च्यारो एलामें एक मात्रा । १ । दोय मात्रा । २ । तीन मात्रा । ३ । च्यारि मात्रा । ४ । पांच मात्रा । ५ । अधिक होय ए च्यारों एला विचित्र मात्रा जांनिये । यह अर्जुन कहतहे ॥

॥ अथ मतंगादि मतसों एलाके भेद लिख्यते ॥

जहां रित छेखादिक च्यारि एछानके तीनों पदमें ३२ बतीस । १ । ६४ चोसिट । २ । ९६ छिन्नव । ३ । १२८ इकसोअठाइस । ४ । क्रमसों छघु होय तब क्रमसों ये च्यारि नाम च्यारि एछानकेहें । नंदिनी । १ । चित्रिणी । २ । चित्रा । ३ । विचित्रा । ४ । ये मांनिये ओर इहा रित छेखा कामछेखामें रित छेखाके प्रथम चरनमें दस । १० । तीसरेमें मात्रा ग्यारह । ११ । एसें कामछेखाके प्रथम चरनमें बीस । २० । तीसरेमें बाइस । २२ । ये दोय भेदहें ॥ ऐसें बीस मात्रा एछा जांनिये ॥

इन मात्रा एलानमें तीनों चरनके दोय दोष खंडके काम । १ । विकारी । २ । गीतक । ३ । पदनमें मात्रा संख्या वा गणनकी संख्या समिक्षये । आगें अपनि रुचीसों मात्रा गण रिचकें तिनों पद पूरन कीजिये ॥ इति बीस मात्रा एला संपूर्णम् ॥

॥ अथ वर्ण एलाको लछन लिख्यंत ॥

जहां तिनों चरनको पहले दोब खंडके काम । १ । विकारि । २ । गीतक । ३ । पदनमें छह छह गुरु अक्षरनके एक एक खंड की जिये । ऐसें. दोऊ खंडनके बारह अक्षरको एक पद होय । सो वर्ण एला मधुकरीहें ॥ छह छह अक्षरनके दोऊ खंडमें क्रमसों एक एक अक्षर वधायके एगुणतीस अक्षर ताईं वधावते । तब वर्ण एलाके चोईस भेद होतहें । १ ।

तहां प्रथम कहि जो मधुकरि सो छह अक्षरकीहे। १। या मधुकरिकं संडमें एगुणतीस तांइ। एक एक अक्षर वधावेतं सु। १। स्वरा। २। करिणी। ३। सुरसा। ४। प्रभंजनी। ५। मदनवती। ६। अशिनि। ०। प्रभाविनि। ८। माछती। ६। क्षष्टिता। १०। भोगवती। ११। कुसुमवती। १२। कांतमती। १३। कुमदिनी। १४। कळिका। १५। कमछा। १६। विमछ। १७। निल्मी। १८। कांछिदि। १९। विपृष्ठा। २०। विष्ठाता। २१। विशाला। २२। सरला। २३। तरला। २४।

इन वरन इलोमें कंठताल । १ । द्वितीयताल । २ । कंकालताल । ३ । प्रतिताल । ४ । इन च्यारि तालेमें दोऊ एकताल रिचये। राग चाहोसी गावी । इहां रामको भेद नहीं है ॥

इहां मतंग मुनिनें यतिनके भेदसों वर्ण । एलानके सात भेद कहेहें ॥ रमणी । १ । चंदिका । २ । लक्ष्मी । ३ । पद्मिनी । ४ । रंजनी । ५ । मालती

पंचम प्रवंधाध्याय-देश पलाके नाम, लछन ओर भेद. २७

। ६ । मोहिनी । ७ । ये सात जांनिये ॥ मधुकरि आदि वर्ण एलामें यतीनके भेदक समझिये ॥ यबि कहिये पदनको विश्राम करिकें ॥ इति वर्ण एला लखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ देश एलाके नाम-लछन लिख्यते॥

तहां करनाट। १। लाट। २। गौड। ३। आंध्र। ४। द्राविड। ५। इन देसनकी भाषा करिकें जो एला प्रबंध रचेहे। सो देस एलाहें। सो ताके पांच भेदहें॥ करनाटी। १। लाटी। २। गौडी। ३। आंध्री। ४। द्राविडी। ५। ये जानिये ॥ मंठ द्वितीय। २। कंकाल। ३। प्रतिताल। ४। इनमें सों एक कोऊ तालसों वरितये॥

जहां जो करनाट भाषामें नादावती आदि च्यारि एठा रचि । इनके वा तीन च्यारि आदि । १ । मध्य । २ । अंतमें अनुपास कीजिय । ओर सब ठक्षण पहछे । आदि नादावतीको होय । सो करनाटी जांनिये ॥ यह पथम भेदहे । १ । यह नादावती आदि करनाटी च्यारि भेदके छह प्रकारहे । तामें पथम कह्यों हे ॥

अवे दूसरो प्रकार कहेहें ॥ जहां नादावती एठाके पहले दो चरनकी आदिमें अनुपास होय । ओर दोय काम गण । आगें एक रित गण होय । ओर तीसरे चरनमें मध्यम अनुपास होय । ओर च्यारि काम गण । आगें एक रित गण होय । सो सुरेखा जांनिये ॥ यह ब्रह्माके पूर्व मुखसों भइहे । याको शिवजी देवताहे । ९।

जहां हंसावतीके पहले दोय चरनमें च्यारि च्यारि काम गण होय । अरु पहले चरनकी आदिमं दूसरे चरनके मध्यम अनुमास होय । तीसरे चरनमें आदि अंत्य मध्यमें अनुमास होय । आठ काम गण होय । सो हंसावती काम लेखाहे । यह ब्रह्माके दक्षिण मुखसों भई । यह गणके सावित्री देवताहे । २ ।

जहां नंदावतीके तीनों चरनमें आदि अंतमें अनुपास होय। ओर तीनों पदमें च्यारि च्यारि म गण होय। सो नंदावती स्वर टेखिका (सुटेखा) हे। यह ब्रह्माजीक पश्चिम मुखसों भइहे। यह गणके गायत्री देवताहे। ३।

जहां भदावतीके पहले दोय चरनमें छह काम गण आगें एक बाणगण होय। ओर तीसरे पदमें आठ काम गण होय। तीन चरनमें आदि मध्य अत अनुपास होय । सो भद्रावती भद्रलेखाहै। यह ब्रह्माके उत्तर मुखसों भईहै। गांधर्व याको देवतागणको स्वामीहे । ४ । यह करनाटिके दूसरे भेदके नादावती आदिक च्यार प्रकारकीहे॥

॥ अब तीसरे भेदको प्रस्तार लिख्यते ॥

जहां नादावती आदिक च्यारों एलानके तीनों चरनमें पांच पांच काम गण होय। आगे एक एक रित गण आगे एक एक काम गण ये च्यारों एला छंद जाति जांनिये। ३।

अथ कर्नाटीको चोथो भेद लिख्यते ॥ नादावती आदि च्यारी एठानके तीनों चरनमें कहे कामगण रितगण संख्यासों घाटि वा बाधि गण होय । तब च्यारों एठाष्टठाभस जांनिये ॥

॥ अबे कर्नाटीको पांचवो भेद लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि च्यारों एलानके तीनों चरनमें पहले चरनके वा पहले दोय चरनके वा तीनों चरनके अंतमें चरनके पूरन करिवेकों । ओर कोइ काम गण आदिकसों पद रचिये। सो पांचवों भेदहे ॥

॥ अथ कर्नाटीको छटो भेद लिख्यते॥

जहां नादावती आदि च्यारों एछानके तीसरे तीसरे चरनमें वा तीसरे चरनकी बरोबरी एक अधिक शिखा पद नामको राचिये। ओर मेछापक ध्रुव आभागमें नादावती आदिकके सब ठोर पहछेकी सिनाई होय । सो कर्नाटी एछाका छटो भेदहे॥ इति कर्णाटी देश एछाके छह भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ लाटी एलाको लछन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि च्यारो एलामें अनुमास अधिक होय । शृंगार-रस वर्णन होय । लाट देसकी भाषामें होय । सो लाट देस पंजाबको वाम है । लाहोर वगेहरकी भाषासों लाटि एला जांनिये ॥ इति लाटी एलाके लक्षन संपूर्णम् ॥

॥ अथ गौडी एलाको लछन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि एलामें गमक । १ । अनुपास होय । ओर एक रसको वरताव होय । सो गौडी जांनिये ॥ इति गौडीके लखन संपूर्णम् ॥

॥ अथ आंध्री एलाको लखन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि एलानमें अनेक मकारके गमक । १ । रागांग आदि सब शृंगार आदिरस इष्ट देवताकी मिक्तनको वर्णन होय। तैलंगी माषामें होय । सो आंधि एला जांनिये । इति आंधि एला संपूर्णम् ॥

॥ अथ द्राविडी एलाको लखन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि एठामें घणी भक्तिभावकों वर्णन होय। रसजामे ही पृष्ट होय। गमक आंधिके गुण सिगरे होय। दाविडी भाषामें होय। अनुपास नही। सो दाविडी एठा जांनिये॥ इति द्वाविडी एठा संपूर्णम्॥

इन लाटि आदि एलानके भेदमें जे नादावती आदि च्यारि । ४ । एलाहे तिनमें तीसरे तीसरे चरनके समान एक एक चरन अधिक रचिये। तब ये छंद-स्वती एला कहावे॥ जहां नादावती आदि एलानमें पहले दोय चरन अनुपासविना होय तीसरे चरनमें अनुपास होय । ओर तीसरे चरनके प्रमान चोथो चरन ओर होय । ओर धुव आभोग अनुपास संजुत होय । इन च्यारों चरनमें च्यारि च्यारि होय । ओर रीति । १ । वृत्त । २ । देवता । ३ । राग । ४ । इनको जहां नेम नहि मंठ आदि च्यारि ताल होय । सो वस्तु एला जांनिये ॥

ऐसे पांचों देश एलानके चालिस चालिस भेद होतहे सो ॥ २००॥ ते भेद भिलिकें देसी एला कहेहैं ॥ ओर सुद्ध एला चारि ॥ ४ ॥ विकत ॥ ९३ ॥ नेणवमें प्रकारांतरके विकत ॥ १५ ॥ मात्रा ॥ २० ॥ करण एला ॥ २४॥ चोइस ये मिलि सब तीनसें छपन ॥ ३५६ ॥ भेद एला प्रबंधके होत हे ॥ ओर संकीण एलाके भेद अनंत कोटि तिनके लिलन कोऊ मुनिस्वरनें कहे नहीं या लिखेभी नहीं । यह एला सब प्रबंधनमें श्रेष्ठ हें । याकी महिमा ब्रह्मके समान हें ॥ इति एला प्रबंधके लिलन संपूर्णम् ॥

॥ अथ सोमेश्वरके मतसों गीतको साधारण विधि लिख्यते ॥

जहां उद्याह पूर्वभाग होय । ओर दूसरो भाग मेलापक होय । तीसरो भाग ध्रुव होय । चोथो भाग आभोग कींजिये ॥ जहां उद्याहसों रागको आरंभ अह मेलापकसों उद्याहको अरु ध्रुवको मेलापक हे । ओर ध्रुवसों बार बार ये राग वरती स्थिर कीजिये। ओर आभोगसों राग परिपूर्ण कीजिये। यह सब गीतनमें साधारण विधि जांनिये॥ इति साधारण विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ गीतप्रवंधको लखन लिख्यते ॥

जहां अनुमाससिहत वो पद होय । एक पद अकारिके स्वरनके गमकर्सो होय । आगे अक्षरको पद होय । इन च्यारों पदनको प्रथम पद होय । ओर दूसरे पदनमें ही च्यारों पद कीजिये ये दोय पद उद्याहमें होय । ओर गीतके तिसरे पदमें दोय पद रिच पहलो पद अनुमासजुत कीजिये । ओर दूसरो पद गमकजुत स्वरनके आलापसो कीजिये । ता उपरांत गण । १ । वर्ण । २ । मात्रा । ३ । विना तीन पदको ध्रव रिचये । ता उपरांत गातके नामजुत आभोग कीजिये । ऐसे गीत रिच उद्याहतें आभोगताईं दोय वर गाइये । ध्रवमें त्याग कीजिये ऐसे गीत प्रबंध गाइये ॥

अथ नादावती आदि एलाको लछन लिख्यते ॥ तहां भ गण पांच। ५। नगण एक । १। जिनमें होय। ऐसे पद एक रिच आगे ऐसेहि । इन गणसों पद अनुयुक्त दूसरो पद कीजिये। ऐसें दोय दोय पदके तीन चरन होय। सो एक पद जांनिये। ओर ध्रुव। १। आभोग । २। इनकी रचना प्रथमकी है। सो नादावती एला प्रबंध जांनिये॥

॥ अथ नादावतीको उदाहरण राजिष सोमेश्वरको मतसो लिख्यते ॥ यौवन भूषित गोप वधू मुख पद्म मधुकर ॥ श्यामल विग्रह कांति विनिर्जित

नयनज्ञलघर ॥ १ ॥ इति प्रथम पद ॥

देवकीनंदन केसरि संचय पिंजर वसन ॥ केलि लसत्कमला नयनांबुज विश्रम भवन ॥ १ ॥ इति द्वितीय पद ॥

स्मरे सरोरुह सुंदर वक्र सुनंदन म प्नुतज ॥ गोकुल पालक कालियगर्दन तर्जित तद्भुज ॥ १ ॥ इति तृतीय पद ॥

अथ ॥ ध्रव भूम्याद्विपक्रतितसमय दिल पुंडरीकनयन ॥ १ ॥ कौस्तुभ मणि मरिचि कर भासुर वरद पाहि पुरंदर ॥ २ ॥

मंद्र गीत तुस्वावहति रुद्परमकुतुम सरजनन ॥ विमोहित निखिल भुवन उत्पत्ति स्थिति कारण मभो नारायण ॥ ३ ॥ इति भुव संपूर्णम् ॥ इति ध्रुव आभाग सोमेश्वर देव विरचितं एठा नादावती इति आभाग । इति नादावती टंक राग चंचत्पुट ताल देवता आदि पहले कहे हैं ॥ १ ॥

अथ हंसावती एलाके लछन लिख्यंत ॥ तहां पांच र गण ॥ ५ ॥ अंतमें एक स गण ॥ १॥ कीजिये। सो एक पद। ये सोहि अनुमास संजुत दुसरो पद इनही गणसों होय। ऐसें दोय दोय पदनके तीन पद जहां होय। सो हंसावती एला प्रबंध जांनिये॥

अथ हंसावतीको उदाहरण लिख्यते ॥ रौदकालान । लोधूतखड्ग प्रभा शोभिता इति जांनिते । १ । तुरकरि कराकार कल्पतरु साखानिभ राजते कम-लायते । २ । निजितो नुरश्मी भानुप्रभाव प्रमाणशिखिरुद्यत्सधाकीर्तिविविधधारिता दिगंतरसाखि पद्म्धिरपुमंडल दिग्वधुगीयमाना दत्मसरधृतदैत्यवनिता मुखाम्भोज चंद्रोद्य कीर्ति सुधारस बिसागर जगदेकवीर आह श्रीनारायण । इति ध्रुव सोमे-श्वरविरचिता एला हंसावती । इति आभोग राग हिंदोल ताल द्वितीय रस्नदेवता आदि पहली कहे हें सो जांनिये ॥ इति हंसावतीको उदाहरण संपूर्णम् ॥

॥ अथ नंदावतीको लछन उदाहरण लिख्यते ॥

जहां पांच त गण एक ज गणको एक पद होय । इन गणसों दूसरो पद अनुपासजुत कीजिये । ऐसं दाय दाय पद होय । सा नंदावती है ॥ उदाहरण कुंडली द मिल्यो वामके शनि दिर शीड संतुष्ट गीर्वाण ॥

॥ इति पंचम प्रवंधाध्याय संपूर्णम् ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon. Secretary, Gayan Samaj, Poona.

PART VI: TALADHYAYA,

(All rights reserved.)
Registered under Act XXV of 1867.

Price of the complete Work in seven parts Rs. 15.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

1912.

पूना-गायनरमाज.

संगीतसार ७ माग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई । तापसिंह देवछत.

पकाशकः

- लवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी सेकेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ६ वा तालाध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार इ. स. १८६७ का आक्ट २५ के अनुसार प्रकाशककर्ताने आपने स्वाधीन रखा है.

पूना ' आर्यभूषण ' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण सात अध्यायका मूल्य रु. १५, और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २॥.

श्रीराधागोविंद संगाद्धार.

षष्टो तालाध्याय-सूचिपत्र.

विषयक्रमः					पृष्ठ.
वचिनका	• • •				१ '
तालके दस प्राण	* • •	•••	• • •		÷
प्रथम पाण काल ताको लक्षण	***		• • •		2
दूसरो प्राण मार्ग ,, ,,			•••		ą
तीसरो प्राण किया ,, ,,	• • •	• • •			3
चौथे प्राण अंग ,, ,,	• • •		•••		8
पांचमो प्राण ग्रह ,, ,,	• • •			• • •	१०
छटवो प्राण जाति ,, ,,	••		•••		? 0
सातमो पाण कला ,, ,,	• • •				22
आठमो पाण लय ,, ,,	• • •	•••	•••	• • •	११
नवमो प्राण यति ,, ,,			•••		१२
दसमो प्राण प्रस्तार " "	•••	•••			१३
मार्गीको लक्षण	•••	•••	• • •		83
चंचत्पृट तालकी उत्पत्ति	•••		• • •		? 3
चाचपुर तालकी उत्पत्ति	•••	• • •	• • •	• • •	84
षट्पितापुत्र तालकी उत्पत्ति		• • •		• • •	१५
संपकेष्टाक तालकी उत्पत्ति	•••	• • •	• • •		१६
उद्धर तालकी उत्पत्ति	• • •	• • •			१६
मार्गी तालनके च्यारों मार्गमें वरत	गव <mark>लक्षण—धुव १</mark> र्ग	चेत्र २ वा	र्तिक ३ दक्षिण	١	१६
संगीत पारिजातकसों पांची माग					१८
द्विकल चंचत्पुटको लक्षण			•••		१८
चतुष्कल चंचत्पृटको लक्षण			• • •		१८
अष्टकल चंचल्पुटको लक्षण	•••		***		१८
द्विकल चाचपुरको लक्षण	• • •		• • •		१९
चतुष्कल चाचपुरको लक्षण	•••	• • •		• • •	१९
अष्टकल चाचपुरको लक्षण	•••	• • •	1	• • •	१९
अष्टकल षर्पितापुत्रको लक्षण	• • •	• • •			१९
तालनके जंत्र	•••	• • •	• • •	•••	२०
षट्पितापुत्रको जंत्र षट्तालो	•••	• • •		• • •	२५
द्विकल ँ,, ,, ,,	•••	• • •		• • •	२६
चतुष्कलं,, ,, ,,		•••	•••	• • •	२६

संपक्षेष्टाकको जंत्र	२८ २९
जिल्ला इ.स.च्या	२९
द्विकल ,, ,,	• -
चतुष्कल ,, ,,	२९
अष्टकल ,, ,,	३०
उद्धर तालको जंत्र	३१
चतुष्कल ,, ,, ,,	32
अष्टकल ,, ,, ,,	३२
चंचत्पुट ताल एककल जंत्र	३३
द्विकल चंचत्पुटको जंत्र	३५
चतुष्कल चंचत्पुटको जंत्र	३५
एकंकल चाचपुरको जंत्र	३६
द्विकल चाचपुरको जंत्र	३७
चतुष्कल चाचपुरको जंत्र	३७
एक कल षट्पिता पुत्र तालको जंत्र	३८
द्दिकल ,, ,, ,,	30
चतुष्कल ,, ,, ,,	३९
एककल संपर्केष्टाकको जंत्र	y o
द्विकल ,, ,,	y.
चतुष्कल ,, ,,	४१
एककल उद्धटको जंत्र	४२
Gara	४२
चताक्रज	४२
चाचपुट तालको प्रथम भेद	
	४३
	४३
,, ,, तींसरो भेद	84
देशी तालनको लक्षण	85
गीतनको लक्षण	४८
देशी तालनकी उत्पत्ति नाम	40
चित्रताल चौतालो	48
एकतालि ताल (कंद्कार्य)	42
कंटुकार्य ताल चोतालो	43
कंटुकार्य ताल पट्ताली	48
रास ताल सात तालो	44
लघुशेखर नाल आठ तालो	५६

करुणा ताल आठ ताली	•••	•			46
सानिपात या पिंड मंठताल षट् तालो	• • •	•••	• • •		६०
सर्व ताल सात तालो	•••	• • •	•••		६२
पंचम ताल तितालो	•••	•••	•••		६३
द्वितीय ताल दोय ताली	•••	•••	•••	•••	६४
आदि ताल तितालो	• • •	•••	•••	• • •	६४
चतुर्थ ताल तितालो	• • •	•••	•••	• • •	£ ,3
सप्तम ताल तितालो	•••	•••	•••	•••	६६
अष्टम ताल तितालो	•••	• • •	• • •		६७
निःशंकलीला ताल पंचतालो		••	• • •	• • •	६७
चंद्रकला ताल सात तालो	••••	• • •	•••		६८
ब्रह्म ताल दशतालो	• • •	• • •	• • •		७०
इडावन ताल पंच ताला	••••	•••	• • •		७१
चतुस्ताल चौतालो		• • •	•••		७२
कुंभक ताल चोदह ताला		• •			७३
लक्ष्मी ताल अठारह तालों	•••		• • •		७५
कुंडनांची ताल बारह तालो	•••				96
अर्जुन ताल दशताली	•••	• • •			60
कुल ताल पंदरह ताली	• • •	•••	•••	• • •	८२
रच्चा ताल दोय तालो	• • •	•••	• • •		८४
सिन ताल आठ तालो	•••	•••	•••		64
सिंहविक्रम ताल आठ ताली		• • •	• • •		20
महासनि ताल चोदह ताली	• • •	• • •	• • •		66
ग्रह ताल चोतालो		• • •	•••		९१
सम ताल तितालो			• • •		९२
संचय ताल चोतालो	• • •				९२
सिंहनंदन ताल इकईस ताली	•••	•••	••••		९३
अष्टतालिका ताल आठ ताली	•••	• • •	• • •	• • •	90
पृथ्वीकुंडली ताल .तियालिस तालो		•••	•••		९८
लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालिस ताले	t	•••			१०५
पातालकुंडली ताल गुनचालिस तालो	•••				१११
इंद्रलोक कुंडली ताल चवालिस ताली					११७
बह्मांड कुंडली ताल छतीस तालो					१२४
आहिमेष ताल आठ तालो	•••	• • •			१३०
अहिगति ताल सात तालो	• • •				१३१

४ र चिपत्र.

हेमाचल ताल आठ तालो	•••		•••	१३३
विष्णु ताल चोबीस तालो		• • •		१३५
पक्षिराज ताल आठ तालो		•••		१३९
गाऊगी ताल चोतालो		• • •		१४०
झोंबड ताल तिताली		•••		१४१
नील झोंबडी ताल तितालो	* * *	• • •		१४२
चक्रताल चाेदह ताला	•••	•••		१४३
त्रिकुंडव ताल चोदह तालो				१४५
स्वर्णमेरु ताल सेतीस तालो			• • •	१४८
शंख ताल दश तालो	•••			१५४
दुसरी शंख ताल ग्यारह ताली				१५५
संयोग ताल चोदह तालो		• • •		१५८
त्रिवर्तक ताल पट्तालो	• • •	•••		१६०
नारायण ताल षट्ताली	•••			१६२
विष्णु ताल चातालो		•••	• • •	१६३
गद्य ताल तितालो		• • •	• • •	१६४
नर्तक ताल चोतालो		• • •	•••	१६५
द्र्पण ताल तिताली	• • •			१६६
मन्मथ ताल षट्तालो	•••		• • •	१६७
रति ताल चोतालो		•••		१६८
सिंह ताल चोतालो				१६९
वीरविक्रम ताल चोतालो	•••		• • •	१७०
रंग ताल पांच तालो			••••	१७१
श्रीरंग ताल पंच तालो	•••			१७२
मत्यंग ताल पंच तालो	• • •	•••		૧૭૪
चतुरस्र ताल तितालो		•••		१७५
त्रिभिन्न ताल तितालो	• • •	•••	•••	१७६
हं बनु ताल पंच तालो	••	•••	•••	१७७
तुरंगलीला ताल चाताला	•••	••••	•••	१७८
श्रमलीला ताल आठ तालो	• • •	•••	•••	१७९
कंदर्प ताल पंच तालो	•••	•••	• • •	१८१
वर्णभिन्न ताल चोतालो	• •	•••	• / •	१८२
कोकिला प्रियताल तितालो	* * *	•••	•••	१८३
निशंक लीलाताल चोताला		• • •	•••	१८४
जयताल सात तालो	•••		•••	१८४
जयताल सात ताला	***	• • •	•••	101

पूय ताल सात तालो	••••			• • •	१८७
रातिताल चाताला	•••	• • •			१८८
विष्णुमत रतिताल आठ त	तालो	• • •	• • •		१८९
चबरीताल तिताली	•••	• • •	•••	•••	१९१
कंकालताल चोताली	• • •	• • •	• • •	•••	१९२
मछताल षर्ताली	•••	•••	• • •		१९३
रंगाभरणनाल पंचताली	• • •	• • •		• • •	१९४
जयमंगलताल चोताली	****	• • •			१९६
विजयानंद ताल पंचतालो	• • •	• • •	• • •	• • •	१९७
राज विद्याधरताल तिताली	T	• • •			१९८
अमंगताल देाय ताली	• • •		• • •	•••	१९८
रायवंक ताल पंचताली	•••	• • •	• • •	• • •	१९९
प्रतापशेखर ताल तितालो	•••	• • •	•••	•••	२००
वसंत ताल षट्तालो	•••	•••	• • •	• • •	२०१
गजझंपक ताल चोतालो	•••		• • •		२०३
चतुर्मुख ताल चोतालो	•••	•••	• • •		२०४
मदन ताल तिताला	•••	•••		• • •	२०५
रमण ताल तिताली ़	•••	•••	•••		२०५
तार ताल चेातालो	• • •				२०६
पार्वती लोचन ताल नोता	लो	•••		•••	२०७
मृगांक ताल तिताला	•••	• • •	• • •	• • •	२०९
राजमार्तंड ताल तितालो		• • •	• • •		२१०
कलाध्वनि ताल पंचतालो	•••	• • •	• • •	• • •	२११
सरस्वाति कंडाभरण ताल	षट्तालो			•••	२१२
द्वंद्व ताल सात तालो	•••	•••	•••	• • •	२१४
चित्रपुट ताल पट्तालो	•••	• • •	• • •	•••	२१५
गौरी ताल पंचताली	•••	****		•••	२१७
सारस ताल पंचताली		•••	•••	•••	२१८
स्कंद ताल सात तालो	• • •	•••		• • •	२१९
उत्सव ताल तितालो	• • •	•••	• • •		२२०
भग ताल सात तालो	•••	•••	• • •		२२१
विलोकित ताल चोतालो	•••	• • •	• • •	• • •	२२२
पद्मा ताल चोतालो	• • •	• • •	• • •	• • •	२२४
रंगप्रदीप ताल पंचतालो	•••	•••	•••	••••	२२५
सुदर्शन ताल सात तालो	• • •	•••	•••		२२६

•				
सुदेवत्स ताल पंचताली	•••		•••	२२७
राज ताल सात तालो	•••	• • •	• • •	२२९
रित ताल सात तालो	•••	• • •	• • •	२३०
त्रिवर्त ताल तितालो	***	•••	• • •	२३१
अमंग ताल पंचतालो	• • •	• • •	• • •	२३२
अंपक ताल (ध्रुव १) तिताली	•••		• • •	२३४
कमला ताल (ध्रुव २) षट्ताला	•••	• • •	• • •	२३५
उन्साह ताल (ध्रुव ३) तिताला	• • •	• • •	***	२३६
व्रजमंगल ताल (ध्रुव ४) षट्ताला	•••		• • •	२३७
विक्रम ताल (ध्रुव ५) पंचताली		•••	•••	२३९
मधुर ताल (ध्रुव ६) षट्ताली	• • •	•••		२४०
निर्मल ताल (ध्रुव ७) सातताला	• • •		• • •	२४१
भीम ताल (ध्रुव ८) सात ताला	• • •	• • •	• • •	२४३
कामोद ताल (ध्रव ९) सात ताल	t	• • •		२४४
चंद्रशेखर ताल (ध्रुव १०) सात र	ताला	• • •	• • •	२४६
उमार्ण ताल (ध्रुव ११) सात ताल	ग	•••	••	२४७
कुंतल ताल (धुव १२) सात ताल	हो	•••	• • •	२४९
कीडा ताल (ध्रुव १३) षट्ताली	• • •	• • •		२५०
तिलक ताल (ध्रुव १४) षट्ताल	Ť	•••	• • •	२५१
विजय ताल (ध्रुव १५) सात ता	लो		• • •	२५३
वज्र ताल (ध्रुव १६) पंचताली	•••	• • •	• • •	२५४
विजय ताल (मंठ १) पंचताली	•••	•••	•••	२५५
प्रथम ताल (मंठ २) तितालो		• • •	• • • •	२५७
चक ताल (मंठ ३) चोतालो	• • •	• • •		२५८ २५९
धनंजय ताल (मंठ ४) चोताला	• • •	•••	• • •	
विराम ताल (मंठ ५) षट्तालो	• • •	• • •	• • •	२६०
सालग ताल(मंठ ६) षट्तालो	•••	• •	• • •	२६२
सारस ताल (मंठ ७) आठ ताले	·	• • •	• • •	२६३
कील ताल (मंठ ८) षट्ताली	•••			२६५
पंडि ताल (मंठ ९) एक ताले	ī	• • •	• • •	२६६
राविताल (मंठ १०) नोतालो		• • •	• •	२६७
विचार ताल (मंठ ११) पंचताल	ठा —े	•••	• • •	२६८
श्रीमंठ ताल (मंठ १२) आठ त	ાલા	• • •	•••	२७० २७१
रंगमंड ताल (मंड १३) सात त	ાલા	• • •	•••	२७१
षण्मंठ ताल (मंठ १४) आठ त	ાાલા …	•••	• • •	२०२

जयप्रिय ताल (मंठ १५) तितालो	••	•••	• • •	२७४
गीवाण ताल (मंठ १६) पंचतालो		• • •	• • •	२७५
कमल ताल (मंठ १७) दशतालो		• • •	• • •	२७७
चित्र ताल (मंड १८) चोतालो	•••	•••	• • •	२७८
तारप्रति ताल (मंठ १९) चोतालो		•••	••••	२७९
विशाल ताल (मंठ २०) सात तालो		•••	• • •	२८०
कल्याण ताल (मंठ २१) सात ताले	T			२८२
वह्नभ ताल (मंड २२) तितालो			• • •	२८३
वर्ण ताल (मंठ २३) सात तालो			•••	२८४
पुनर्भू ताल (मंठ २४) सात तालो	••••	•••		२८६
मुद्रित ताल (मंठ २५) आठ तालो				२८७
कराल ताल (मंड २६) षट्ताला				२८९
श्रीरंग ताल (मंठ २७) षट्ताले	•••		• • •	२९०
गंभीर ताल (मंठ २८) दोय तालो	•••		•••	२९१
गमार ताल (मठ २०) राग साला				२९२
भिन्न ताल (मंठ २९) नोताली				२९४
क्रिंग ताल (मंट ३०) तिताली	•••			२९५
पंचधात ताल (मंठ ३१) पंचताली	•••	,		२९६
प्रेम ताल (मंठ ३२) पंचताली	••••	•••		२९७
सत्य ताल (मंठ ३३) पंचताली		•••		२९८
प्रिय ताल (मंठ ३४) तितालो		4		२९९
वारिमंठ ताल (मंठ ३५) षट्ताली		• • •	•••	३०१
संकीर्ण ताल (मंठ ३६) पचीस ताल	ਮ ਜੀ	•••		३०५
रूपक ताल (सूडादिक ३) दोय ता	(O)	• • •	• • •	३०५
झंपक ताल (सूडादिक ४) तिताली	• • •	• • •		३०६
त्रिपुट ताल (सूडादिक ५) तितालो			• • •	३०७
आठताली ताल (सूडादिक ६) चौत	ાલા 	****		३०८
एकताली ताल (सूडादिक ७) एक	ताला	• • •	•••	
मादिरिप्फ ताल चोईस ताला	• • •	• • •	• • •	३०९ ३१३
नादिरिष्फ ताल चौईस ताली	• • •	• • •	• • •	• •
भादिरिष्फ ताल चोईस ताली	• • •	•••	• • •	३१७
यादिरिष्फ ताल चोईस तालो		• • •		३२१
सादिरिप्फ ताल चौईस तालो		****	• • •	३२५
रादिरिप्फ ताल चौईस ताला		• • •	•••	३२९
जादिरिष्फ ताल चौईस तालो		. • •		३३३
तादिरिष्फ माल चौईस तालो			• • •	३३७
• • •				

दंती ताल सतरा तालो		• • •	• • •	•••		३४१	
\		• • •	•••	•••		३४४	
सूर्य ताल (नवयह १)	सालातालो			•••		३४६	
चंद्र ताल (नवग्रह २)			•••	***		३४९	
मगल ताल (नवग्रह ३)	बारा ताली	ī	•••	•••	• • •	३५१	
बुध ताल (नेवग्रह ४) ब	गरा तालो	•••	•••	•••		३५३	
बृहस्पति ताल (नवग्रह प	.) बारा ता	लो	•••		• • •		
शुक्र ताल (नवग्रह ६)			•••	•••			
शनिश्चर ताल (नवग्रह ५) बारा त	ाली	•••	•••		३६०	
राहु ताल (नग्रवह ८)			•••		• • •	३६३	
केतु ताल (नवग्रह ९) ग	यारह तालो	í	•••	:			
विजय ताल दशतालो	• • •	• • •	• • •			३६७	
कामधेनु ताल चोतालो		• • •	•••	•••	• • •	३६९	
पुष्पबाण ताल चोईस तालो		•••	•••	****	• • •		
प्रतापशेखर ताल चोताली	• • •	•••	•••	•••	• • •	३७४	
-			•••			३७५	
	•••	•••	• • •	•••	• • •	२७७	
	देशी ताल		• • •		• • •	३७८	
अणुआदि सातो अंगनके प्र	स्तारको ल	क्षण	•••			३७९	
द्रुतको पस्तार		•••	• • •	• • •	• • •	३७९	
9	_		• • •		• • •	३८०	
अणुआदि सातो अंगनप्रस्तार भेदकी संख्या				• • •	• • •	३८१	
		• • •	••••			३८२	
नष्ट विचार	• • •	•••	•••	• • •		३८३	
उद्दिष्टको लक्षण		•••	• • •	•••		२८३	
षट्पस्तार. अणुआदि सात	अंगनके र	तात मेरुको	लक्षण	• • •		३८४	
द्वत मेरुको लक्षण	• • •	• • •	• • •	•••		३८५	
खंड मेरु यंत्र तालो	•••	•••	• • •	•••		३८७	
द्विरामको लक्षण	••••	• • •	• • •	• • •		३८८	
लघु मेरको लक्षण	•••	• • •	•••			३८९	
लविराम मेरुको लक्षण	•••	• • •	• • •	• • •		390	
गुरु मेरुको लक्षण	••••		• • •	• • •		399	
प्लुत मेरुको लक्षण	•••	•••	• • • •	• •		399	
षष्ठो तालाध्याय समाप्त.							
तालानुक्रम	• • •	•••	• • •	• • •		३९३	
• •							

षष्टो तालाध्याय.

॥ अथ तालाध्याय लिख्यते ॥

नानामार्गे लयो यत्र यतीनां स्यात्कलानिधौ। तं दक्षिणं शिवं नौमि चित्रं वृत्तिमयं धुवम् ॥ १ ॥

अथ तालाध्यायकी वचनिका लिख्यते॥ मथम गान । मगटभयो सो तो ब्रह्म ॥ माया विना ब्रह्म पहीचान्यो जात नहीं यातें तालक्तप माया पगट करि । ताल कहिये ॥ तारवेवाले शिवजी कहिये । लालसा रूप पार्वतीजी । लाल साजो कीयो चाहेसो । तालमें पभूको गान करे । या ताल साथ करे नाय अरु दोऊ हातकी ताल लगी तब शब्दभयो । सो शब्दरूप पगट होय करिके । सबनके कानमें ज्ञानरूप धन्यो ॥ अरु अलक्ष हे । याको निर्मुण स्वरूप धरिके सगुणभयो तार्ते ताल लिये । राग गान किये तो निर्गुणब्रह्मं सगुणरूप धन्यो है । यासों याको काल कहत हैं। सो अरु माया ब्रह्मसां चारि वस्तु पाइये। धर्म 191 अर्था २ । काम । ३ । मोक्ष । ४ । अरु गीत । १ । नृत्य । २ । नाटच । ३ । वाद्य ये सब तालकी जातिके अनुसारमें लेकें करिये । बाहिर निकर्से ऐसी न करिये । सुर असुर स्थावर जंगम ये । सब तालकी गतिमें हें ॥ तार्ते ताल विना गान नही । गान विना ताल नही यातें ताल मुख्यतें कहेहें । सो यह ताल माया हैं। जैसें मायाके अनेक भेद हैं। ऐसें तालके अनेक भेद हैं। जैसें ब्रह्म एकरूप हें। ऐसें रागको स्वरतो एकरूप हैं। अइ राग अनेक पकारके हैं। ऐसें ब्रह्म चैतन्यतो एकरूप हें। अरु स्थावर जंगम हैं। अलक्ष-व्याप रह्यों हैं ऐसं ही राग श्रवणमात्र हैं। अरु देखिवेमें नहीं आवें। यातें ब्रह्म-रूप हैं ॥ तैसें गानको स्वर तो एकरूपही हैं । अरु ताल मायारूप हैं । राग बसरूप हैं ॥ जो दोनू हातनको अंतर रहें ताही ताई अकाल रहे हैं ॥ अरु जो दोन् हात मिलिकें शब्द उलित होय । सो काल कहिये ॥ अठनो देही जो हात नाही मिल्यो। तालभी नाही मिल्यो। जहां ताई अकाल हे। अरु जब इनको संयोग होयकें । शब्द भयो तब ताकों ताल कहिये । सो वह ताल हें यह जांनिये ॥

॥ अथ तालके दुस प्राणनके नाम लिख्यते ॥

प्रथम पाण काल । १ । दूजो पाण मार्ग । २ । तीजो पाण किया । ३ । चेथो पाण अंग । ४ । पांचमें पाण यह । ५ । छटवो पाण जाति । ६ । सातमों पाण कला । ७ । आठमें पाण लय । ८ । नवमें पाण यति । ९ । दसमों पाण पस्तार । १० ।

अथ प्रथम प्राण काल ताको लछन लिख्यंत ॥ तहां गिनतें हेकें। ब्रह्माके दीन ताई जो काल ता कालको लखन लिख्यते॥ जा कालमें कमलको एक पत्र बड़ी सिताविसों कांटा करिकें विधिये। सो काल-लक्छन कहिये ॥ वे आठ क्षण होय । तब एक उव होय । ओर आठ उवकी एक काष्ठा होय । आठ काष्ठाको एक निमेष होय । अरु आठ निमेषनकी एक कला होय । दोय कठाको एक चनर्भाग होय ॥ वाहीको त्रिट कहेहें ॥ ओर दोय चतुर्भाग अथवा दोय नुटीको एक बिंबार्ध (बिंदु) होय । वाको अणु कहेहें । ओर वाहीको अणुदुत कहे हैं ॥ दोय आधे बिंदनको एक बिंद होत हैं ताको इत कहे हैं । ओर दोय बिंदनको एक छच् होय हैं। दोय छच्को एक गृह होय हैं। तीन छच्को एक प्लुत होय हैं। ओर दस लघुको एक पल होत हैं। साठी पलकी एक षटी होय हैं। ओर साठी घटीको एक दीन होय हैं ॥ ओर तीस ३० दिनको एक महिनों होत हैं। ओर बारह महिनाको एक १ बरस होय हैं। ओर पुराणकी रीतिसों तियादीस लाख वीस हजार ४३,२०,००० वरसनकी एक युग चोकडी होय हैं। हजार युग चोकडीको ब्रह्माको एक दिन होय हैं। सो तासीं कल्प कहे हैं। अरु तीस ब्रह्माके दीनको एक ब्रह्ममास होत है। बारह ब्रह्ममासको एक बसवर्ष होय । सो १०० बसवर्ष बसामीकी आयुर्दा होत हैं । ताको बस-कल्प कहे हें ॥ इति काललक्षण संपूर्णम् ॥ इति प्रथम प्राण काल संपूर्णम् ॥

अथ दूसरो प्राण मार्ग ताको लखन लिख्यते ॥ तालनमं चारि मार्ग हें ॥ एक तो ध्रुव । १ । दूसरो चित्र । २ । तीसरो वार्तिक । ३ । चोथो दक्षिण । ४ । तहां ध्रुवमं तो एक मात्रा कला होय । १ । ओर चित्रमं दोय मात्रा कला होय । २ । ओर वार्तिकमं च्यार मात्रा कला होय । ३ । ओर दक्षिणमं आठ मात्रा कला होय । ४ । ये तो संगीत रत्नाकरके मतसा कहेहें ॥ और शास्त्रमें यह मार्ग भी कहेई ॥ पहले तो दक्षिण । १ । दूसरी वार्तिक । २ । तीसरो चित्र । ३ । चोथो ध्रव । ४ । पांचवो चित्रतर । ५ । अरु छटवो चित्रतम । ६ ।

तहां दक्षिण मार्गमें आठ कला हैं ॥ वें आठुनके नाम लिख्यते ॥ मथम धुनिका । १ । दूसरी सार्पणी । २ । तीसरी रूष्णा । ३ । चोथी पद्मिनी । ४ । पांचमी विसर्जिता । ५ । छटवी विक्षिष्ता । ६ । सातमी पताका । ७ । आठमी पतिता । ८ ।

अरु दूसरो मार्ग वार्तिक तामं चारि कला हैं ॥ एक तो ध्रुविका । १ । दूसरो सर्पिणी । २ । तिसरी पताका । ३ । चोथी पतिता । ४ ।

तासरो मार्गिचित्र तामें दोय कला है ॥ प्रथम ध्रुविका । १। दूसरी पितता । २। अथ चोथो मार्ग ध्रुव तामें कलाष्टक ध्रुविका नाम एक कला है । १ । अथ पांचमों मार्ग चित्रतर तामें आधी कला है ॥ ताको प्रमाण एक द्रुत हैं । १। अथ छटमों मार्ग चित्रतम तामें पाव कला है ॥ ताको प्रमाण अणु हैं ॥ ऐसें छह मार्ग हैं ॥

कोईक ऐसं कहत हं ॥ मथम दक्षिण ॥ १ ॥ दुसरो वार्तिक ॥ २ ॥ तीसरो चित्र ॥ ३ ॥ चोथो चित्रतर ॥ ४ ॥ पांचमों चित्रतम ॥ ५ ॥ छटवो अतिचित्रतम ॥ ६ ॥ तिनको छछन कहत हैं ॥

तहां दक्षिण मार्गमें आधो अणु कला हैं ॥ याको प्रमाण चतुर्भाग हैं ॥ अथ दूसरो मार्ग वार्तिक तामें त्रुटिकला हैं ॥ याको प्रमाण आधो चतुर्भाग हैं ॥

अय तीसरो मार्ग चित्र तामें तुटि कला हैं ॥ ताको प्रमाण तुटीको अर्ध हैं ॥ अथ चोथो मार्ग चित्रतर तामें घर्षण कला हैं ॥ सो अनुत्रुटीको अर्ध हैं ॥ अथ पांचमों मार्ग चित्रतम ॥ तामें अनुवर्षण कला हैं । सो घर्षणको अर्ध हैं ॥

अथ छटो मार्ग अतिचित्रतम तामें स्वरकता हैं ॥ याको प्रमाण अनु-घर्षणको अर्घ हैं ॥ इति द्वितीय मार्गप्राण संपूर्णम् ॥

अथ तालको तीसरो प्राण किया ताको लखन लिख्यते ॥ तालकी

किया दोय प्रकारकी हैं। प्रथम निशब्द ॥१॥ दूसरी सशब्द ॥२॥ तहां जामें शब्द नहीं होय। सो निशब्द कहिये॥ ओर जामें शब्द होय। सो सशब्द कहिये॥

तहां प्रथम निशन्द किया पांच मकारकी हें ॥ प्रथम आवाप ॥ १ ॥ दूसरी निष्काम ॥ २ ॥ तीसरी क्षेप ॥ ३ ॥ चोथी विश्लेप ॥ ४ ॥ पांचमीं प्रवेशक ॥ ५ ॥ ऐसें पांच प्रकारकी हें ॥ अरु सशन्द चार प्रकारकी हें ॥ प्रथम ध्रव ॥ १ ॥ दूसरी शंपा ॥२॥ तीसरी ताल ॥३॥ चोथी सन्त्रिपात ॥४॥

ऐसें निशब्दाके आवाप आदि चार भेद हे तिनको छछन छिल्यते ॥ जहां उंचो सूधो हात करि अंगुरीनको संकोचिये । सो आवाप जांनिये ॥ ओर छोकीकमें बांई । ओर तीरछो हातको चछावे तो आवाप हें ॥ १ ॥ इति आवाप संपूर्णम् ॥

ओर हातके नीचेकी ओर अंगुरीनको चलावे । सो निष्काम कहिये॥ ओर लौकीकमें उपरली ओर हातको चलावे तो निष्काम कहिये ॥ २ ॥ इति निष्काम संपूर्णम् ॥

सूधो ात करि दाहिनी पांसुकी ओर अंगुरीनको पसारनो । ताही क्षेप कहे हैं । ओर दाहिनी ओर हातको चळायवो तो विक्षेप कहे हैं ॥ ३ ॥ इति क्षेप विक्षेप संपूर्णम् ॥

हातको नीचेकी ओरको जो अंगुरीनको संकोरिवो । सो प्रवेशक हैं ॥ ओर ठौकीकमें नीचेकों हातको चलायवो । सो प्रवेशक हैं ॥ ४॥ इति प्रवेशक संपूर्णम् ॥

अथ शब्दिकियाके ध्रुव आदि च्यार भेदनके लछन लिख्यते ॥ जहां तालिदे उंचे हातसों चुटकी बजायकें हातकों ऊंचे डारनो । सो ध्रुव कहिये । ओर दाहिनें हातसों ताल दीजिये । ताको नाम शंपा है । ओर बांये हातके वालसों ताल कहेहें । ओर दोऊ हातके वालसों सन्तिपात कहेहें । इन चारों भेदनकों पातकला कहेहें ॥ इति तृतीय कियाप्राण संपूर्णम् ॥

अथ तालको चोथो प्राण अंग ताको लखन लिख्यते ॥ तहां तालके सात अंग हें ॥ पथम अणु । १ । दूसरो द्वत । २ । तीसरो विरामद्रुत ।३। चोथो लघु ।४। पांचमों विरामलघु ।५। छटमों गुरु ।६। सातमों प्युत ।७। तहां प्रथम अंग अणु ताको लछन लिख्यते ॥ यह तो अण्को चिन्ह हैं ॥ "

अथ अणूको शब्द लिख्यते ॥ तिय शब्द तालके वरतवेकी चच-कारमें वा अछरोटीमें कहीये तुहें अणूको तिय नाम हैं। या अणूकी पाव मात्रा हैं। याकी पवनतें उत्पत्ति हैं। चंद्रमा याको देवता हैं। ओर तीतरकी बोलीसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको घात अतिसूक्ष्म है। याके बजायवेमें दोऊ हातको अंतर हेढ अंगुल होय ॥ १ ॥

अथ तालको दूसरो अंग द्रुत ताको चिन्ह लिख्यते ॥ योतो द्रुतको चिन्ह हैं ॥ ०

अथ द्वृतको शब्द लिख्यते ॥ ते यह शब्द तालके वरितवेकी चच-कारमें वा अछरोटीमें कहीये । ते यह द्वृतको नाम हैं । या द्वृतकी आधी मात्रा हैं याकी जलसों उत्पत्ति हैं । शिव देवता हैं । चिडायाकी बोलीसों द्वृत उच्चार जांनिये ॥ याको सूक्ष्म घात हैं । याके बजायवेमें दोऊ हातको अतर तीन अंगुलको जांनिये ॥ २ ॥

अथ तालको तीसरो अंग विरामद्रुत ताको चिन्ह लिख्यते ॥ यह तो याको चिन्ह हैं ॥ े, े

अथ विरामद्भुतको शब्द लिख्यते ॥ तिते यह शब्द तालके वरतवकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहत हैं ॥ तिते यह द्वतिवरामको नाम हैं। या द्वतिवराम-की तीन मात्रा हैं। या द्वतिवरामको द विरामहूं कहत हैं । याकी जल अरु पोनकें मिलायतं उत्पत्ति हैं। स्वामी कार्तिकेय याके देवता हैं। बगुलाके बोलसों द्वत विरामको उच्चार जांनिये ॥ याको घात पावघाति पूर्ण हैं। यातें घात सूक्ष्म हैं। याके बजायवेमं दोनू हातनको अंतर साडिच्यारि अंगुलकोहें ॥ ३ ॥

अथ तालको चोथो अंग लघु ताको लछन लिख्यते ॥ यहतो याको चिन्हहें।

अथ लघूको शब्दार्थ लिख्यते ॥ थेई ॥ यह शब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहिये ॥ तुहें । थेई । यह लघूको नामहे । या लघूकी संपूर्ण मात्राहें । याकी अभी^त उत्पत्तिहे । भवानी यांकी देवताहें। अरु नीलकंटकी बोठीसों याको उच्चार जांनिये । ओर याको वात पूर्ण है । याके बजायवेमें दोनू हातनको अंतर छह अंगुठको जांनिये ॥ ४ ॥

अथ तालको पांचमों अंग लघुविराम ताको लछन लिख्यते ॥ यहतो याको चिन्हहें ो, र्र

अथ लघुविरानको शब्द लिख्यते ॥ तिष्पर्तु यह शब्द तालके वर-तवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें किहये। तुये। ति थिई यह लघु विरामको नामहें॥ याकी सवा मात्राहें। कोइक याकी डेडमात्रा कहेहें ॥ याको नाम लविराम-हूंहै। याकी अग्नि ओर जलके मिलापेतें उत्पत्ति होतेहें। याको बृहस्पति देवताहें। कोकिलके उच्चारसों याको उच्चार जांनिये॥ याको घात डेड पूर्णहें। याके बजायवेमें दोनू हातनको अंतर नो। ९। अंगुलको जांनिये॥ ५॥

अथ तालको छटवा अंग गुरु ताको चिन्ह लिख्यते ॥ यहतो याको चिन्हहे ॥ ऽ

अथ गुरुको शब्द लिख्यते ॥ थे ई तित तत । यह शब्द तालके वर-तवेकी चचकारमं वा अछरोटीमंं कहिये तुये । थे ई तित तत । यह गुरुको नामहें । या गुरुकी दोय मात्राहें । याकी आकाससों उत्पत्तिहें । याके शिव पार्वती देवता हैं । ओर कागलाके बोलसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको घात पूर्ण करि दाहिनी तरफ हात चलावे तो याके बजायवेमें दोऊ हातनको अंतर बारह अंगुलको जांनिये ॥ ६ ॥

अथ तालको सातमों अंग प्लुत ताको चिन्ह लिख्यते ॥ यह तो याको चिन्ह हैं , ३ ॥ अथ प्लुतको शब्द लिख्यते ॥ थे ई तित तत थे ई थे ई। यह सब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहिये। तुथे थे ई तित तत थे ई थे ई। यह प्लुतको नाम हैं। या प्लुतकी तीन मात्रा हैं। याकी पृथ्वीतें उत्पत्ति है। याके ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवता हैं ॥ ओर कुकडाकी बोलिसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको पूर्ण घात करिकें गोल हात फेरि करिकें दाहिनी तरफ आडो हात चलावे तो याके बजायवेमं दोऊ हातको अंतर। अठारह। १८। अंगुलको कहते हैं। ७।

अथ सातों अंगके नाम लिख्यते॥ तहां प्रथम अंग अणु ताको नाम लिख्यते॥ अणुद्रुत । १ । अर्धचंद्र । २ । करज । ३ । अर्धवेंद्र । ४ । अर्ध-द्रुत । ५ । अणु । ६ । अंकुस । ७ । धनुख । ८ । ये आठ अणुके नाम हें॥

अथ तालकों दूसरा अंग द्वृत ताके नाम लिख्यते ॥ बिंदु एक । १। व्यंजन दूसरा । २ ! सन्य तीसरा । ३ । द्वृत चोथो । ४ । अर्धमात्रक पांचमों । ५ । सुदत छटो । ६ । आकास सातमों । ७ । उत्तर आठवो । ८ । ख नवमों । ९ । कृप दसमों । १० । वलय ग्यारमों । ११ । यह द्वृतके नाम हैं ॥

अथ तालको तिसरो अंग द विराम ताके नाम लिख्यते ॥ दुत-विराम एक ॥ १ ॥ द विराम दोय ॥ २ ॥ ओर जितनें दुतके नाम हैं तिनमें विरामपद लगे तब द विरामके नाम होतहै ॥ जैसें दुतविराम या नाममें दुतपदसों विरामपद लगायंके द विरामके नाम होत हैं ॥

अथ तालको चोथो अंग लघु ताक नाम लिख्यते ॥ प्रथम व्यापक । १ । दूसरो सरल । २ । तीसरो सरल । ३ । चोथो शर । ४ । पांचमों दंड । ५ । छटो ल । ६ । सातमों मेरु । ७ । आठमों लघु । ८ । ओर वाके जितनें नाम हैं तितनें लघुको नाम हैं । सो जांनिये ॥

अथ तास्त्रको पांचमों अंग ल विराम ताके नाम लिरूयते ॥ मथम स्रघुविराम । १ । दूसरो स्र विराम । २ । अरु स्रघुके जितनें नाम हें तिनमें विरामपद स्रगायकें ल विरामके नाम जांनिये ॥ जैसें स्रघुविराम ये नाम हें स्रघु पदसों विरामपद स्रगायकें स्र विरामके नाम हें । ५ ।

अथ तालको छटो अंग गुरु ताके नाम लिख्यते ॥ प्रथम नाम दीर्घ। १। दूसरो वक । २। तीसरो द्विमात्री । ३। चोथो पूज्य। ४। पांचवो गोप्पकल । ५। छटवो केयूर । ६। सातमों नूपुर। ७। आठमों हार । ८। नवमो मातटंक । ९। दसमो कंकन । १०। ग्यारमों गुरु । ११। और गुरु पूज्य के ज्यो नाम हो तेहूं गुरुके नाम जांनिये । ६।

अथ तालको सातमों अंग प्लुत ताके नाम लिख्यते ॥ मथम त्रिमात्र । १ । दूसरो सामज । २ । तीसरो सुंगी । ३ । चोथो दीम । ४ । पांचमों प्लुत । ५ । छटवो छघु । ६ । सातमों अंग । ७ । आठमों सामोद्भव । ८ । नवमों तारस्थान । ९ । सो जांनिये ॥

अथ सातों अंगनके घात लिख्यंत ॥ तहां पथम अनुदुतको अतिसूक्ष्म घात जांनिये। अरुदुतको सूक्ष्म घात जांनिये। ओर द विरामको डोड सूक्ष्म
घात जांनिये। लघुको पूरन घात जांनिये ओर ल विरामको डोड पूरन घात
जांनिये। गुरूको पूरन घात करि नीचंकर हातको झालो दीजिये। सो
दूसरो पूरनहें। ऐसे दो पूरन घात गुरुके हें। ओर प्लुतको पूरन घात करि।
बांये हातके ओरपास दांये हातको फिरावेतो। यह दूसरो पूरनहें ओर पीछे नीचे
करतो दाहिनें हातको झालोहे। सो तीसरो पूरनहें। ऐस तीन पूरन प्लुतकेहें॥

अथ बजायवेमें सातों में अंतर लिख्यते ॥ दोऊ हातनसों बाजो बजाइये ताको । ओर हातको जो अंतर ताको प्रमान अनुदूतमें डेड अंगुलको अंतर जांनिये ॥ ओर दुतमें तीन अंगुलको अंतर जांनिये ॥ द विराममें साडिच्यारि अंगुलको अंतर जांनिये ॥ लघुके बजायवेमें छह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ स्व विराममें साडिच्यारि अंगुलको अंतर जांनिये ॥ लघुके बजायवेमें छह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ स्व विरामके बजायवेमें नो अंगुलको अंतर जांनिये ॥ गुरुके बजायवेमें बारह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ प्लतको बजायवेमें अठारह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ इति बजायवेमें सातों अंगनके अंतर संपूर्णम् ॥

अथ लघु सुरकी मात्राको लछन लिख्यते ॥ जाकालमें पांच लघु अछरनको उचार होय सो कालगात्रा जांनिये ॥ यहां एक मात्रासों लघु जांनिये ॥ ओर ऐसी दोय मात्रानसों गुरु जांनिये ॥ ऐसी तीन मात्रासों प्लुत जांनिये ॥ आधि मात्राको द्वृत जांनिये ॥ अर पावमात्राको अणु जांनिये ॥ पोणमात्राको द्वृतिराम जांनिये ॥ ओर डेड मात्राको ल विराम जांनिये ॥ दुतविराममें एक दुत ओर एक अणु जांनिये ॥ ल विराममें एक लघु एक द्वृत जांनिये ॥ जब दृविरामको चिन्ह करनों होय तब दुतके उपर एक रेखा दीजिये ॥ जैसे े, े ओर जब ल विरामको चिन्ह बनावनो होय तब लघुके उपर एक मात्रा दीजिये ॥ जैसे ो, र्वियो दृविराम ल विरामके चिन्ह लिखेहे ॥ ऐसे सातों अंगनको कालको प्रमाण विचारिये । ओर ल विराम दृविराम हूंको विचार कीजिये ॥

षष्ठो तालाध्याय-तालके प्राण अंग,देवता,उत्पत्ति,जानवरकी बोली. ९

		तालके सात	अंग, देवत	ग, उत्पत्ति,	आनवरकी	तालके सात अंग, देवता, उत्पत्ति, जानवरकी बोली, मात्रा, अंतर, सहनाणी	ा, अंतर, सह	नाणी.	
	नाम	देवता	उत्पत्ति	जानवरकी बोटी	मात्रा	वात	अंबर	सहनाशी	<u> </u>
6	अनुद्रत	चंद्रमा	पवन	वीतर	चोथाई	आतिसृक्ष्म	हातसों अंगुल डेड	,	तिय
n	12°	शिव	ब	चिडियो	आधि	स्ट इस्ट	अंगुल ३	o	, lu
m	द विराम	स्वामि कार्तिकेय	उतावे जल	ब ब्रुडिंग ब	m	डोड, सृक्ष्म	अंगुल ४॥	٠٥ (٥٠)	तिते
20	ुव अ	मुख	आग्न	नीलकंठ अथवा चाष	<i>σ</i> -	पूर्ण	अंगुत ह		हें इंदे
5	ल विराम	₩.,	बट, आध	कोयल	१। अथवा १॥	डेंड पूर्ण	अंगुल ९	7.	क्र
w	E,	शिव, गौरी	आकृशि	काग	n	पूर्ण घात करिके हात आडो	अंगुल १२	S	थेई तित तत
9	म्ब	ब्रह्मा, विष्णु, महेश	पृथ्वी	मुरगो (कुकडो)	m	पूर्ण, गोल हान फोर करिके दा- हिनी तरफ आ- डो हात चलावे.	अंगुत्त १८	w w	थई तित तत थेई थेई

अथ तालको पांचमों प्राण यह ताको लखन लिख्यते ॥ तालको जो पारंभ ताको यह कहे हैं ॥ सो यह च्यार पकारको हैं ॥ पथम सम । १ । दूसरो अतीत । २ । तीसरो अनागत । ३ । चोथो विषम । ४ ।

अथ च्यारों ग्रहको लखन लिख्यते ॥ जहां ताल अर गीतको एक तालमें पारंभ होय । सो समग्रह जांनिये ॥ याको नाम समपाणि कहते हैं ॥

ओर जहां गीतको पारंभ पहले होय अर तालको पारंभ पिछे होय । सो अतीतमह जांनिये ॥ याको अवपाणि कहे हैं ॥

जहां पहले तो तालको पारंभ होय ओर पीछे गीतको पारंभ होय। सो अनागतग्रह जांनिये॥ याकों उपरिपाणि कहत हैं॥

ओर जहां गीत अर तालके आदि अंतका नम नही होय उघडिवेमें पहले ताल देल्यो पीछो गीत गाल्यो अथवा तालके साथ पहले गीत गाल्यो। कछू यामें अटकाव नही। यह विषम प्रहमेंहे कछू यामें दोऊ तरहको अटकाव नही। सी विषमप्रह जांनिये॥ ऐसे च्यार प्रहके लखन कहे हैं ॥ इति तालको पांचमों प्राण यह संपूर्णम्॥

अथ तालको छटवो प्राण जाति ताको लछन लिख्यते ॥ जहां तालको स्वरूपसों जाति कहिये। सो पांच प्रकारकी हैं। प्रथम चतुरस्र। १। दुसरी न्यस्र। २। तीसरि खंड। ३। चोथि मिश्र। ४। पांचमी संकीर्ण। ५। ऐसें पांच प्रकारकी कहीहें॥

तहां चतुरस्र जो तालंहं। सो च्यारि वर्णकोहें॥ ओर त्र्यस्र जो तालंहे। सो तीन वर्णकेहें॥ खंड जातिको तालहे। सो पांच वर्णकोहें॥ अर मिश्रजातिको तालंहे। सो सात वर्णकोहें॥

ओर संकीर्ण जातिको ताछहे। सो नोवर्णकोहें। इन जातिनके वर्णकोहें। वेसेंहि मात्रा जांनिये॥ कमसूं दूनि जांनिये॥ प्रयोगके अनुसार तहां चतुरस्र जो ब्राह्मण हें अर न्यस्र क्षत्री हें। खंड वैश्यहें। अर मिश्र शुद्द जातिहं। संकीर्णताछ जेहें। वे संकीर्ण जाति जांनिये॥ इति छटवो प्राण जाति संपूर्णम्॥

अथ तालको सातमों प्राण कला ताको लखन लिख्यते॥ सो

वे कला मात्राहे। ते आठ पकारकी हैं ॥ पथम ध्रुविका । ३। दुसरी सर्पिणी । २। तीसरी रूप्णा । ३। चोथी पद्मिनी । ४। पांचमी विसर्जिता । ५। छटवी विक्षिप्ता । ६ । सातमी पताका । ७। आठवी पतिता । ८।

तहां सब्द करिकें सहित जो मात्रा । सो ध्रुविका जांनिये ॥
ओर जामें बांई ओर हातको चठावनों होय । सो सिंपणी कहिये ॥
जाको दाहिनी ओर हात होय । सो छण्णा जांनिये ॥
ओर जांको निचे करे तो संचार होय । सो पिंधनी जांनिये ॥
ओर बाहीरकों जाको संचार होय । सो विसर्जिता जांनिये ॥
जामं हातपसारि अंगुरिनको संकोचिये । सो विक्षिप्ता जांनिये ॥
ओर जामं उपरिको हातको चठावनों होय । सो पताका जांनिये ॥
जामं हातको नीचेंकूं पटकीये । सो पतिता जांनिये ॥
तहां छघुमात्रामें तो ध्रुविका जांनिये ॥
और गुहमें । ध्रुविका ओर पतिता जांनिये ॥

अरु छचुमें ॥ ध्रुविका । सिंभणी । छ्वा ये जांनिये ॥ इन तीनको शब्दजुत कियामें प्रयोग हैं ॥ निशब्द कियामें प्रयोग नही ॥ इति तालको सातमों प्राण कला संपूर्णम् ॥

अथ तालको आठमां प्राण लय ताको लखन लिख्यते ॥ किया किहिये तालको शब्द । अथ तिह शब्द किया तालको उपरांत जो विश्राम हैं । सो लय जांनिये ॥ लय तीन प्रकारको हैं ॥ प्रथम द्वत । १ । दूसरो मध्य । २ । तीसरो विलंबित । ३ ।

जहां बहुत सिताविसों लयको विश्राम होय। सो दूत जांनिये॥ तातें दूनो विश्राम होय। सो मध्य लय जांनिये॥ ओर मध्यसों जाको दूनो विश्राम होय। सो विलंबित लय जांनिये॥ इति तालको आठमों प्राण लय ताको लछन संपूर्णम्॥

अथ द्वृत मध्य चिलंबितको प्रमाण लिख्यते ॥ वेरके बरोबर तो दतलय जांनिये ॥ ओर आवरके बरोबर मध्य लय जांनिये ॥ धील वेलीकी

बरोबर विलंबित जांनिये ॥ ये शीघ मध्य मंद जांनिये ॥ ऐसे इनको तालनमें विचार जांनिये ॥ इति द्वृत मध्य विलंबितको प्रमाण-लखन संपूर्णम् ॥

अथ तालको नवौ प्राण यति ताको लछन लिख्यते ॥ तालके लयको जो नियम ताको यति कहे हैं ॥ यति पांच प्रकारकी हैं । तहां प्रथमतो समा । १ । दूसरी स्रोतो गता । २ । तीसरी मृदंग । ३ । चोथो पिपीलिका । ४ । पांचवी गोपुच्छा । ५ ।

अथ प्रथम समाको लछन लिख्यते ॥ जा मितमें आहिमें मध्यमें ओर अंतमें दुतलयही होय । अथवा तीनो ओर मध्य लय होय । अथवा विलंबितही तीनो ठोर लय होय । ये तीन पकार समाको हैं ॥ इति समाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ स्रोतोगताके लछन लिख्यंत ॥ स्रोतोगता तीन प्रकारकी हे ॥ जहां आदि मध्य अंतमें विलंबित मध्य दुत ये लय होय । सो प्रश्वम स्रोतो-गताको भेद जांनिये ॥ जहां तीनो ठिकानें दुत चिर मध्यम लय होय । सो भेद स्रोतोगताको दूसरो जांनिये ॥ जहां आदि मध्य अंतमें मध्यम दुतलय आवे । सो भेद स्रोतोगताको तीसरो जांनिये ॥ इति स्रोतोगता—लछन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंगकी तीन भेद लिख्यते ॥ जहां आदि मध्य अंतमें दुत चिरदुत ये लय होय । सो मृदंगाको प्रथम भेद जांनिये ॥

अरु जहां आदि मध्य अंतमें दतमे मध्य द्वत स्वय होय । सो मृदंगाको दूसरो भेद जांनिये ॥

जहां आदि मध्य अंतमें चिर मध्यम होय। सो मृदंगाको तीसरो भेद जांनिये॥

अथ पिपीलिका नाम चोथी याति ताके तीन भेद लिख्यते ॥ जहां आदि मध्य अंतमें चिरद्रुत चिर ये छय होय । सो पिपीलिकाको प्रथम : भेद जांनिये ॥

अरु जहां आदि मध्य अंतमें मध्यम, द्वृत, मध्यम, ये लय होय । सो पिपीलिकाको दुसरो भेद जांनिये ॥ जहां आदि मध्य अंतमें चिर मध्यम चिर ये लय होय। सो पिपी-लिकाको तीसरो भेद जांनिये॥ ३॥

अथ गोपुच्छा नाम पांचई यति ताके भेद लिख्यते ॥ जहां आदि मध्य अंतमें द्रुत मध्यम चिर ये लय होय। सो गोपुच्छाको पथम भेद जांनिये। १।

जहां आदि मध्य अंतमें मध्यम चिर द्वृत ये तथ होय । सो गोपुच्छाको दूसरो भेद जांनिये । २ ।

जहां आदि मध्य अंतमें दुत चिर मध्यम होय । सो गोपुच्छाको तीसरो भेद जांनिये । ३ । इति यति नाम नवां प्राण संपूर्णम् ॥

अथ तालको दसवो प्राण प्रस्तार ताको लछन लिख्यते ॥ अनु-दुतादिकनको पंक्ति रीतिसो लिखिये । सो पस्तार जांनिये ॥ सो पस्तार संख्या नष्ट उद्दिष्ट अणु आदि सातो अंगनंक खंड पस्तार साधिवेकों सातो मेरुनकी खानां उनमें अंक भरिवेको प्रकार देसी तालके आगे निरूपण करेगे ॥

अव प्रथम मार्गीको लछन कहत हैं ॥ अथ मार्ग तालनकी उत्पत्ति—लछन लिख्यते ॥ तिनमें मुख्य पांच ताल है ॥ प्रथम चंचतपुट । १ । इसरो चाचपुट । २ । तीसरो षट् पितापुत्र । ३ । चोथो संपक्षेष्टाक । ४ । पांचबो उद्धट । ५ ।

(१) प्रथम चंचतपुट तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें भरत मुनिके आगें तांडव नृत्यमें मार्ग तालमें मुख्य चंचतपुट नाम ताल वरत्यो। सो याको स्वरूप चोकुंटो है ॥ यांकी जाति ब्राह्मण ॥ यांके तीन भेद हे ॥ तहां प्रथम यथाक्षरसो तो एक कल जांनिये। १। दूसरो दिकल जांनिये। २। तीसरो चतुष्कल जांनिये। ३।

अथ चंचतपुरको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके वरतवेमें आदि तो गुरु दोय होय ओर लघु एक होय ओर प्लुत एक होय । सो यह ताल शिवजीके सद्योजात नाम प्रथम मुखतें उत्पत्ति भयो श्वेतजाको वर्ण हे आठ जाकी मात्रा है ॥ ऐसो जो ताल ताहि चंचतपुर जांनिये ॥ इति चंचतपुर ताल संपूर्णम् ॥

चंचतपुर ताल ,

वाउ	अक्षरताट मात्रा	चचकार	प्रमुख	समस्या
१. पथम	गत तालकी मात्रा ३१७	थेई विततत	ज कि २ क	प्यम गुरू अक्षरकी सहनाणी ता पीछे जो अंक है सो ताल जांनिये. ताल पीछे दोय लीक है सो मात्रा दीय है. मात्रा दुसरीके नीचे विदी है सी तालके हातके नीचे करीके डो झालो है.
२. दसरी	र. दूसरी मात्रा ३८	थेई तित तत	तकथ रि	पथम गुरू अक्षरकी सहनाणी ता पीछे जो अंक हैसो तास जांनिये. तास पीछे दोय सिक है सो मात्रा दोय है. दुसरीके मात्रा नीचे विदी है सो तास देके हात नीचे नीचे करियो झासो है.
३. तीसरी	लबु तालकी मात्रा ३	્ક ફેક	लुक	पथम एषु अक्षरकी सहनाणी ता पीछे अंक है सो ताल जांनिये. ताल पीछे एक लीक है सो एक मात्रा जांनिये.
8. चोधी	8. चोथी प्लुत तालकी मात्रा ३४	थेई तित तित थेई थेई थेई	त कुक थरिक रुंद क क	मध्यम प्लुत अक्षरकी सहनाणी तापीछे अंक है सो ताट जांनिये. ताट पछि तीन टीक है सो मात्रा तीन जांनिये. तीसरी मात्राके नीचे विदी है सो झाटो है ओर कुंडाटो गोटही सो दाहिने हातको बांये हातकी परिक्रमा एक कीजे पछि झाटो हातको झाटो उपरिही मान है.

षष्ठो तालाध्याय-चाचपुट षट् पितापुत्र संपक्षेष्टाक ओर उद्धट ताल. १५

ओर परमलु इनहीं के अक्षर मिलाके जाति परंने बिटाय लेतहैं या समझनेके लिये यह अक्षर लियेहैं। परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करती वेर पगमें वा मुखमें वा पखावजमें ये अक्षर उघटीये॥ इति यथाक्षर चंचतपुट ताल उत्पत्ति—लक्षण संपूर्णम् ॥

(२) अथ चाचपुट तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने अपने वामदेव नाम मुखसों वरितके चाचपुट नाम ताल उत्पन्न कियो । अथ चाचपुटको स्वरूप लिखे है ॥ या चाचपुट तालमें प्रथम गुरु होय ओर दो लघु होय । चोथो गुरु होय यह जाको प्रमाण होय । आर वामदेव नाम मुखतें जािक उत्पत्ति है । पीरो जाको रंग है । छह जाकी मात्रा है । ओर या तालको स्वरूप तिकुंटो है । याकी जाित क्षत्रिय याके तीन भेद है । तहां प्रथम यथाक्षरसों तो एक कल जांिनये ॥ १ ॥ दूसरो दिकल जांिनये ॥ २ ॥ तीसरो चतुष्कल जांिनये ॥ ३ ॥ ऐसो जो ताल तािह चाचपुट जांिनये ॥ इति चाचपुट संपूर्णम् ॥

ओर परमलु इनहीं को अक्षर मिलायके जाति परन बिटाय लेतहैं। या समझ-नेके लिये। यह अक्षर लिखेहै। परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करित वेर पगमें वा मुखमेंभी वा पखावजमें यह अक्षर उघटिये॥ इति यथाक्षर चाचपुट तालकी उत्पत्ति—लल्लन संपूर्णम्॥

(३) अथ पट पितापुत्रकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने अपने अघार नाम मुखरें वरितके पट पितापुत्र नाम ताल उत्पन्न कियो । अथ पट पितापुत्रको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें एक प्लत होय अरु एक लघु होय दोय गुरु होय एक लघु होय । ओर एक प्लत होय यह जाको ममाणहे । ओर अघोर नाम मुखरें जाकी उत्पत्ति है श्याम जाको रंग है अरु बारह जाकी मात्रा है या तालको स्वरूप तिकुंटो है । याकी जाति क्षत्रिय है । याके तीन भेद है । तहां प्रथम यथाक्षरसों तो एक कल जांनिये ॥ १ ॥ दुसरो दिकल जांनिये ॥ तीसरो चतुष्कल जांनिये ॥ ३ ॥ ऐसो जो ताल ताहि पट पितापुत्र जांनिये ॥ इति पट पितापुत्र ताल संपूर्णम् ॥

ओर परमलु इनहीं के अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेतहै या समझनेके लिये । यह अक्षर लिये है । परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करित

वर । पगनमें वा मुखमें वा पखावजमें ये अक्षर उचटिय ॥ इति यथाक्षर पट् पितापुत्रकी उत्पत्ति—लछन संपूर्णम् ॥

(४) अथ संपंक्र द्याक तालकी उत्पत्ति लिख्यते।। शिवजीने तांडव नृत्यमें प्रथम प्लुत अपने ईशान नाम मुखरें मार्गतालें वरितके। वाको संपंक्र-ष्टाक नामकीनो। अथ संपक्तेष्टाकको स्वरूप लिख्यते ॥ या संपक्तेष्टाकतालमें प्रथम प्लुत है। फेर तीन गुरु हैं। एक प्लुत है। ओर ईशान नाम मुखरें उत्पन्न भयोहै। लाल जाको रंग है। ओर बारह जाकी मात्रा है। या तालको स्वरूप तिकुंटो है। याकी जाति क्षत्रिय है। तीन याके भेद है। तहां प्रथम यथाक्षरसीं एक कल जानिये। १। दूसरो दिकल जानिये। २। तीसरो चतुष्कल जानिये। ३। ऐसो जो ताल तादि संपक्तेष्टाक जानिये॥ इति संपक्तेष्टाक ताल संपूर्णम्॥

ओर परमलु इनहीकी अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेत है। या समझनेके लिये। यह अक्षर लिखे है। परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करती वेर। पगनमं वा मुखमं वा पखावजमें ये अक्षर उघटिये॥ इति संप्रेकेष्टाक तालकी उत्पत्ति—लल्ल संपूर्णम्॥

(५) अथ उद्धट तालकी उत्पत्ति लिख्यंत ॥ शिवजींनं तांडव नृत्यंमं अपने तत्पुरुष नाम मुखसें मार्गताल वरितके वांको उद्धटनाम तालकीनो । अथ उद्धट तालको स्वरूप लिख्यते ॥ या उद्धटतालमें तीन गुरु अक्षर होय । ओर तत्पुरुषनाम मुखसों जाकी उत्पत्ति है अरु बहुत जाके वर्ण है । छह जाकी मात्रा है । ओर या बालको स्वरूप तिकुंटो है । याकी जाति क्षत्रिय है । बीन याके मेद है । तहां मथम यथाक्षरसों तो एक कल जांनिये । १ । दूसरो दिकल जांनिये । २ । बीसरो चतुष्कल जांनिये ।३। ऐसो जो ताल ताहि उद्धट जांनिये ॥ इति उद्धट ताल संपूर्णम् ॥

ओर परमलु इनहीं के अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेत है। या समझनेक लीये यह अक्षर लिखे हैं। परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा ृत्य करित वेर पगनमें वा मुखमें वा पखावजमें यह अक्षर उघिये॥ इति यथाक्षर उद्धट तालकी उत्पत्ति—लक्षन संपूर्णम्॥

अथ मार्गी तालनके च्यारों मार्गमें वरताव लखन लिख्यते ॥

षष्ठां तालाध्याय-ध्रुव, चित्र, वार्तिक, दक्षिणमार्गके ताल. १७

धुव। १। चित्र। २। वार्तिक। ३। दक्षिण। ४। इन चारों मार्गमें जा तालकी जितनी मात्रा होय। सो मात्रा कमसों पथम ध्रुव मार्गमें एक वेर। १। दूसरो चित्र मार्गमें दोय वेर। २। तीसरो वार्तिक मार्गमें चार वेर। ३। चोथो दक्षण मार्गमें आठ वेर। ४। वरितये तैसे चंचतपुटकी आठ कला है। दोय गुरु अक्षरकी चार कला है। एक लघु अक्षरकी एक कला एक प्लुत अक्षरकी तीन कला ऐसं इन आठ कलानके आठ पाठाक्षर रचि। एक वर उचार करे। सो ध्रुवमार्ग जांनिये॥ अथ उदाहरण लिख्यते॥ तिक। किण-कुकु जग जग—टउणडके। संतरि कुटकु। किडि किडि टिंटिं। तथ दिधि नतथों॥ इति ध्रुवमार्ग चंचतपुटको लखन संपूर्णम्॥

जहां तालकी कलाके पाछाक्षर चोगुने करिके वरितये। सां वार्तिकमार्ग जांनिये॥ अथ उदाहरण लिख्यते॥ था धिमि तत्त धिमि धिमित्ता धिमि ता। धलांग धलांग त्तग चा धलांग। किकीरिकि कुद्रीकी तत धल ताहं ताहं। धिमित्ता किट धिविकरगथों झगनग तगथों। तगथों तगथों किट धिमि किरट। तग धिमि तित्थां धिमि धिमि तत्था तत्था। थोंगणि थों थों। नकधि थोंगणथोंग॥ इति वार्तिकमार्ग चंचतपुट संपूर्णम्॥

अथ दक्षिणमार्ग चंचतपुट लिख्यंत ॥ जहां तालकी कलाके पाठा-क्षर आठ गुणा करि वरितये से दिक्षणमार्ग जांनिये ॥ अथ उदाहरण लिख्यते ॥ किट किण किड दगथों किडदग किडदग किडदगथों। तग तग जग नग नग जग तगथों। कुकु थिर थिरि किटदा थिमि थिमि थिमि तत थिमि तत थिरि थिरि थिरि थिरिथों। तीथिमि थिकितां तत किथिकिथि। थितां थिथितां थिथितथिथों। थाथै तथथै तत-थिमि। तदिदांदां। तदिदितदांदां थिथगणथों। किटिकण किणटगथों। कुकुथिर किडदग किडदग किडदगथों। तगतग जगतजग ततथों। कुकु थिर थिर किटदां थिमि थि मि ततिधिमि तत्तथिरि थरिथरिथों । तांधिमिधिकितां ततिधि दांदां । तदितिदिदां दांधिध-गणथों । इति दक्षिणमार्ग चंचतपुट संपूर्णम् ॥ इति चतुर्विधमार्ग चंचतपुट संपूर्णम् ॥

एसेही चाचपुर षर् पितापुत्र संपक्तेष्टाक उद्धर । इन तालेमें गुरु लघु प्लुत अक्षरनकी जितनी कला हाय तितने पाटाक्षर रचि अनुक्रमसां एक दो च्यार आठ वार वरतिकें च्यारों मार्ग कीजिये ॥ इति मार्गी तालनकी ध्रव । १ । चित्र । २ । वार्तिक । ३ । दक्षिण । ४ । मार्ग लखन संपूर्णम् ॥

अथ संगीत पारिजातकसों पांचों मार्गी तालनके दिकल चतुकिल भेद लिख्यते ॥ जहां तालनकी कला दूसरी वरित दोय तालके प्रमाण
एक ताल कीजिय । सो दिकल जांनिये ॥ सो यहां प्रथम चंचतपुटको उदाहरण
लिख्यते । या दिकल चंचतपुटकी सोलह मात्रा है । सो सोलह पाटाक्षर रिच
एक दो च्यार आठ वारह वरित च्यारों मार्ग साधिये । अथ चंचतपुटको पाटाक्षर
लिख्यते ॥ तगरुगतकाकुंद्री । कुनकथिर थिर कुकुतकथिर । थौंगिणकें जगजगिधिनथिर । तत थिर थिर थिर थिनि थिरनक । थिनि थिनि थिनि थिर थिनिथिपिन
थिष गणथां ॥ इति दिकल चंचतपुटको लिखन संपूर्णम् ॥

अथ चतुष्कल चंचतपुरको लछन लिख्यते ॥ जहां पांचों मार्ग तालनकी कला चागुनी किर च्यारि तालनके प्रमाण एक ताल कीजिय । सो चतुष्कल जांनिय ॥ तहां चतुष्कल चंचतपुरको पाटाक्षर लिख्यते ॥ था धिमि तत धिमि धिमिथां । धिमिथां धलांगत गतधलांग । किरगिकि कुंद्रीकी ततधलां । हंतांहं धिमितां किर धिम किण थोंड । गनगतगथां तगथों । किर धिमि किरिर तगिधिम तत्था धिमि तत्था । तत्था तत्थाथों गिणथों थों । नकधि गणथों ॥ इति चतुष्कल चंचतपुरको ताल संपूर्णम् ॥

या चुन्कल चंचनपुरकी बनीस मात्रा है। सो बनीस पाटाक्षर रचिके एक दोय च्यार आठ बर वरितके च्यारो मार्ग साधिये। ऐसेंही चाचपुर आदि च्यारों तालके भेद जंत्रसो समझिये॥ इति चतुष्कल चंचतपुर तालको भेद संपूर्णम्॥

अथ अष्टकल चंचतपुरको लक्ष्म लिख्यते ॥ जहां तालकी कला आठ गुनी करि आठ तालके ममाण एक ताल वरितये सो अष्टकल जांनिये ॥ अष्टकल चंचतपुरके पाटाक्षर लिख्यते ॥ किटकणिकडगद्थों । किडद्ग किडद्ग किड-द्गथों । तग तग जग तग नग जग तग थों । कुकु थिर थिर किटदां । धिमि धिमि धिमि तत । थिर थिर थिर थिर थिर थिरों। तां धिमि धिकतां। तत धि किधि धितां धितां।

धित धितातांधि धित थिथों।था थै तथ थै तथ धिभि तिध दांदां।तिद दिद दांदां धिष गणथों।किट किण किड दगथों।किड दगकिड गदिकड दगथों।तग नग जग तनग जग तगथों।कुकु थिर थिर किटदां।धिमि धिमि धिमि तत धिमि तत धिर थिर थिर थिर थिर थिर धिमि विम विवा धिम तत धिमि ति धिमि विवा धिम ति धिमि विक्तां।ति धिकितां।वित धिकितां।धितां धित धितां तांधि धि तथिथों।था थे तथ थ तत धिमि तदाहि दांत।दि दि तदांदां दाधि गणथों॥ इति अष्टकल चंचतपुटक पाठाक्षर संपूर्णम्॥

अथ द्विकल चाचपुटके भेद लिख्यते ॥ या दिकल चाचपुटकी तालनकी कला चोगुनी करि च्यारि तालनके प्रमाण एक ताल की जिये सो चतु- किल्ल जांनिये ॥ तहां चतुक्कल चंचरपुटको पाटाक्षर लिख्यते ॥ था धिमि तत धिमि धिमि था। धिमिथाधलांग तग तग धलांग। किटरिक कुंद्रिकि तत धल ताहं ताहं धिमि तां। किट धिष किणथों। डग नग तगथों। तगथों तगथों किटि धिमि किरिट तग धिमि तत्था। विमि चिमि तत्था तत्था। तत्थाथों। गिणथों। थोंनकधि गणथों ॥ इति दिकल चाचपुटके भेद-लखन संपूर्णम् ॥

या दिकल चाचपुटकी बारह मात्रा है सो बारह मात्रा रिच एक दोय आठ वेर अनुक्रमसां वरितये च्यारी मार्ग साधिये ॥ इति द्विकल चाचपुटको लखन संपूर्णम् ॥

अथ चतुष्कल चाचपुरको लछन लिख्यते ॥ या चतुष्कल चाच-पुरकी चोविस मात्रा ह । चोविस पाराक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वेर वरतिये च्यारों मार्ग साधिये ॥ इति चतुष्कल चाचपुरको लछन संपूर्णम् ॥

अथ अष्टकल चाचपुटको लछन लिख्यते ॥ चाचपुटके अष्टकल ॥ १ ॥ पोडशकल ॥ २ ॥ ये दोय भेद होय हं । अष्टकल चाचपुटकी अडतालिस मात्रा है सो अडतालिस पाटाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वेर वरित च्यारों मार्ग साधिये ॥ इति अष्ट कल चाचपुटको लछनं संपूर्णम् ॥

या सोलह कल चाचपुटकी छण्णो मात्रा ह । सो छण्णो पाटाक्षर रचि एक दोय चार आठ वेर वरितके चारों मार्ग साधिये॥ इति षोडश चाच-पुटको भेद संपूर्णम् ॥

अथ अष्टकल पद पितापुत्रको लछन लिख्यते ॥ द्विकल चतुष्कल अष्टकल पट पितापुत्रकी जितनी कला होय तितने पाठाक्षर रचि एक दोय चार वेर वरित चारो मार्ग साधिये ॥ इति अष्टकल पट पितापुत्रको लछन संपूर्णम् ॥

संगीतसार.

द्विकल चंचतपुट ताल.

पाटाक्षर नाम परमछु	अक्षरताल मात्रा सहनाणी.	समस्या
तग तगक कुद्री	ु गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंक हे
कुंनक थरी थरि कुकु	ऽ ऽ १॥। ०	सों ताल
तक थरिथों गिणकें जग	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंक हे
जधिमि थरि	ऽऽ२	सों ताल
तत थरि थरि थरि धिमि ।	लघु २	उघुकी सहनाणी अंक है।
थरिनक धिम	ऽऽ३	सों ताल
धिमि धिमि थरि धिमि	प्छुत २	प्टुतकी सहनाणी अंक हे
धिमि धिधगणथों	ेऽ	सों तास्र

अथ चतुष्कल चंचतपुट ताल जंत्र.

पाटाक्षर नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा	समस्या
थां धिसे तत धिमि धिमि थां धिम थां घलांग घलांग तग तग घलांग	गुरु ४ ऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंक हे सों ताल
किटरीकि कुंदरीकी तत धल तांहं तांहं धिमि तां किटधधिकेणथों डगनग		गुरुकी सहनाणी अंक हे सों ताल

षष्ठो तालाध्याय-चतुष्कल, अष्टकल, चचतपुट तालको जत्र. २१

पाटाक्षरको नाम परमलु	अक्षरताल मात्रा	समस्या
तगत्थो तगत्थो तगत्थो किटधिमि किरिट तग धिमि तत्थाधिधिमि धि	लघु ४	ठघुकी सहनाणी अंकहै सों ताल
तत्थातत्थाथो गिणथोथो नक धधिगणथों	प्लुत ४ डेडेडेडे४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सों ताल

अथ अष्टकल चंचतपुट ताल जंत्र.

पाटाक्षरको नाम परमछु	, अक्षर ताल मात्रा सह- नाणी	समस्या
किटाकिण किडदगथों कि- डद्ग किडगकिडदगथों जग नग जग तग नजग तगथों कुकु थरि थरि किटद् धिमि धिमि तत धिमिततथ	गुरु ८ - ऽऽऽऽऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थरिथो ता धिमिधिकीतां तत धिकिधिधिता धि- तां धितधितांता धिमि ताधिमितिधथों	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
तगत्थो तगत्थो तगत्थो किटधिधिमि किरि तग धिमि तत्थाधिधिमि धि	1 111111111 4	उघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
धिकितां तत धिकिधिधि ताधिथि ताधितिधितां ताधिधिधित धिथाथा थो तथै तत धिमितिद दांदां तदित दादादिध गणथों		प्नुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

चाचपुट ताल चोतालो.

	ु ज	(<u>ja</u>	the le	जुर्भ स
समस्या	प्रथम र्विकी सहनाणी ताके आगे अंक है सो ताल है ता पीछे दीय ट्रिक है सो मात्रा दोय आर दुसरी मात्राके नीचे विदी है साताल इके दाहिना हातको नीचेके झाछो देणों।	मथम ट्यूकी सहनाणी ता पीछे दूसरो अंक है सी ताल है ता पीछे हिक है सी एक गाता है।	प्रथम उचूकी सहनाणी ता पांछे अंक है सा ताल है पीछे तीक है सा मात्रा है।	प्यम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल है पीछे जो लीक है सो दीय मात्रा हे दूसरी मात्राके नीचे विदी है सो दाहिना हातसों तालके हात नीचे करे वो झाला है झाला उपरही मान है।
प्रमखे	तत्था तत्र नत्था	क क दल्या	तक पक्यों	धिता कोकिण जग व क कित्था
व्यकार	थेई तित तत	char	्रेम १मन	थेई तित तत
अक्षर ताल मात्रा	गुरु ताल मात्रा ऽ१९	हचु ताह मात्रा २	उच्च ताल मात्रा ३	गुरु ताउ मात्रा ९४९
वाल	3. प्रथम	. इस	३. तीसरी	8. चोर्थी

षष्ठो तालाध्याय-द्विकल, चतुष्कल, अष्टकल, चाचपुटको जंत्र. २३ अथ द्विकल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षरको नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई २ तिततत दोय वार कहिये	गुरु २ ऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अं क हे सो ताल
थेई २ दोय वार कहिये	लघु २ ॥ २	उघुकी सहनाणी अंक ह सो ताल
थेई २ दाय वार कहिये	ਲਬੂ ੨ ॥ ३	उपुकी सहनाणी अंक ह सो नाउ
थेई तिततत २ दोय वार कहिये	गरु २ ऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंक ह सो ताल

अथ चतुष्कल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षरको नाम परमङु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४ च्यार	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंक
वार कहिये	ऽऽऽऽ १	हे सो ताल
थेई ४ च्यार बार	लघु ४	उघुकी सहनाणी अंक
कहिये	॥॥ २	हे सो ताल
थेई ४ च्यार वार	लघु ४	उपुकी सहनाणी अंक
कहिये	॥॥ ३	हे सो वाल
थेई तिततत ४ च्यार	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंक
वार कहिये	ऽऽऽऽ ४	हे सो ताल

संगीतसार.

अथ अष्टकल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षरको नाम परमङू	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे
आठबार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ १	सो नाल
थेई ८	ह्य ८	लघुकी सहनाणी अंकहे।
आठबार कहिये	॥॥॥॥ २	सो ताल
थेई ८	स्रष् ८	लघुकी सहनाणी अंकहे
आठबार कहिये	॥॥॥॥ ३	सो ताल
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे
आठवार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ ४	सो ताल

1	22112	
	7	
(marnage	ライグニシー
•		<u>بر</u>

ताउ	अक्षर ताढ मात्रा	व वकार	प्रमुख	समस्या
9. पथम	प्लुत ताल मात्रा ३१॥	थई तित तत थई थई १	भ भूभ सक्तिक इस्	मथम दीर्घकी सहनाणी ताके आगे अंक हे सोताल हे ता पीछे लीक हे सी मात्रातीन हे तीसरी विदी मात्राके हाथको झालोगोल कुंडालो हे सी परिक्रमा वा हाथकी दाहिणे सो करे वा झालो,झालो उपर मान।
२. दुसरी	छचु ताछ मात्रा २	थेई IIII २	धूंथ डिक	मथम छघुकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सी ताल पीछे तीक हे सी मात्रा।
३. तीसरी	गुरु ताल मात्रा ८३९	थेई तित तत ३	थूंमथ–डिथा	ना
8. चोथी	गुरु ताल मात्रा ऽ४९	थेई तित तत ४	तथु झझन झनन थरिर	पथम गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सो ताल पीछे लीक हे सो मात्रा दुसरी लीक है विंदी हे सी तालके हाथको नीचे करेवा झालो है।
५. पांचमी	ठघु ताल मात्रा ५	थहें ५	ता थं	मथम लघुकी सहनाणी ता पीछे अंक हं सा ताल ता पाछ लाक ह सी मात्रा है।
६. छरमी	प्लुत ताल मात्रा ३६	थेई तित तत थेई थेई ६	थांगिके जक्ति ट किटिकजे	पथम प्लुतकी सहनाणीं ता पीछे अक हे सातालता पाछ ठाक हैं सा मात्रा हे गोल कुंडाला हें सो ड्राहिणा हाथसी बांयेकी परकमा कर विद्रों हे सो हाथको नीचेको झाठों हे झाला उपरही मान है।

अथ द्विकल षद् पितापुत्रको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई २	प्लुत २	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽेऽ १	सो ताल
थेई २	ह ष २	लघुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	॥ २	सो ताल
थेई तिततत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽ ऽ ३	सो ताल
थेई तिततत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽऽ ४	सो ताल
थेई २	ह्य २	उघुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	॥ ५	सो ताल
थेई तितनन थेई थेई २	प्छुत २	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	३ ३ ६	सो ताल

अथ चतुष्कल पद पितापुत्र-लछन लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई	प्छुत ४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
४ च्यार बार कहिये	डेडेडेडे १	सो ताल
थेई ४ च्यार नार	लघु ४	लघुकी सहनाणी अंकहे
कहिये	॥॥ २	सो ताल

षष्ठो तालाध्याय-अष्टकल, षद् पितापुत्र, संपक्वेष्टाके जंत्र. २७

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४ च्यार	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
बार कहिये	ऽऽऽऽ ३	सी ताल
थेई तिततत ४ च्यार	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
बार कहिये	ऽऽऽऽ ४	सो ताल
थेई ४ च्यार बार	ह्य ४	उपुकी सहनाणी अंकहे
कहिये	॥॥ ५	सो ताल
थेई तिततत ४ च्यार	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
बार कहिये	ऽऽऽऽ ६	सो ताछ

अथ अष्टकल, षट् पितापुत्र-लछन लिख्यते.

314 31340, 18 11413 100 110 110 110			
पाठाक्षर नाम परमञ्ज	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या	
थेई तिततत थेई थेई ८	प्छुत ८	प्लुतकी सहनाणी अंकहे	
आठ बार कहिये	डेडेडेडेडेडेडेडे	सो ताल	
थेई ८ आठ बार कहिये	लघु ८ ॥॥॥॥ २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल	
थेई तिततत ८ आठ	गुरू ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे	
बार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ ३	सो ताल	
थेई तिततत ८ आठ	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे	
बार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ ४	सो ताल	
थेई ८ आठ बार कहिये	हबु ८ ॥॥॥॥ ५	उघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल	
थेई तिततत थेई थेई ८	प्छुत ८	प्लुतकी सहनाणी अंकहे	
आठ बार कहिये	३३३३३३३६	स्रो ताल	

चौताला.
ा जंग न
संप्रकेष्टाकक

समस्य किन्ने ज	हिनाणा पा पाछ था जुम ह था पान निन मात्रा है कुंडालो हात परिकमा विदी है इ झाला पेही मान ।	नीचे विदी है सी हात	अक ह सा वाल ह पाल नीचे विदी है सी हातको	पथम दीर्घकी सहनाणी आगे अंक है सा ताल है ता पाछ लाक सी मात्रा — मो लीक है नीचे विंदी है सी हातको नीचेको झालो है सी मात्रा — सो लीक है नीचे विंदी है से बात है नाल प	प्रथम प्लुतका सहनाणा ता आग अक ह पा पाल ह पात ट्रीक है सो मात्रा मात्रा नीचे विदी है सी हातको झालो कुडालो है परिक्रमा है नीचेको हातको झालो है झाला उपर मा
प्रमञ्	तथा किराकी ताज गजमरगत कनकथिरिरिवे	तस्थरि थोक कुटी दीटी	किटि थुम थुझन्का ममकुट	नन्धरिर	सिद्ध तम क्राम रिगिक झझजा किटिनकी कि- स्था
चचकार	धेई तित तत ध ई ध ई	थे इं तिन तत	थ ई तित तत	थे ई तित तत	ध ई ति तत थ ई थे ई
अक्षर ताल मात्रा	गुरु ताल मात्रा ३ ॥॥	गुरु ताल मात्रा ऽ२।८	गुरु ताल मात्रा ऽ३।८	गुरु ताल मात्रा ३४८।	प्छत ताछ मात्रा ३५॥॥
ताउ	१. पथम	ज्यस्	३. तीसरी	8. बाथी	्र पांचमी

पष्ठो तालाध्याय-दिकल, चतुष्कल, अष्टकल आदिको जंत्र. २९ अथ दिकल संपक्षेष्टाकको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	• समस्या
थेई तिततत थेई थेई २	प्लुत २	प्छुतकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽऽ १	सो ताल
थेई तिततत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽऽ २	सो ताल
थेई तिततत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽऽ ३	सो ताल
थेई तिततत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽऽ ४	सो ताल
थई तिततत थेई थेई २	प्लुत २	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
दोयवार कहिये	ऽऽ ५	सो ताल

अथ चतुष्कल संपक्वेष्टाकको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई ४	प्लुत ४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	डेडेडेडे	सो ताल
थेई तिततत ४	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ २	सो ताल
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ३	सो ताल

पाठाक्षर नाम परमछु .	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंक्ड्रे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ ४	तो ताल
थेईं तिततत थेई थेई ४	प्छुत ४	प्लुतकी रहिन्सणां अंकहे
च्यार वार कहिये	डेडेडेडे ५	सो ताल

अथ अष्टकल संपक्षेष्टाके जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमछु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	त्तमस्या
थेई तिततत थेई थेई ८	प्छुत ८	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
आठ वार कहिये	३३३३३३३३	सो ताल
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे
आठ वार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ २	सो ताल
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अं कहे
आठ वार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽ ३	सो ताल
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे
आठ वार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ ४	सो ताल
थेई तिततत थेई थेई ८	प्लुत ८	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
आठ वार कहिये	डेडेडेडेडेडेडेडे	सो ताल

जहां दिकल चतुष्कल अष्टकल संपक्तेष्टाकके कला मस्तार पाटाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वार वरतिकें च्यारों मार्ग ताधिये ॥ इति अष्टकल संपक्तेष्टाके जं० भे० संपूर्णम् ॥

पटो तालाध्याय-उद्धट तालको जंत्र तितालो.

70	न्धा तालाष्याय—उद्धट तालको जत्र तितालो.			
तमस्या	पथम तो गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंकहे सो तालहे ता पीछे दोय टीकहे सी मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विदी हे सों हाथको नीचों सालो हैं	पथम तो गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंकहे सो तालहें ता पीछे दोय टीकहें सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विदी हे सो हाथको नीचो झालो हैं	पथम तो गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंकहे सो ताछहे ता पीछे दोय ठीक हे सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विद्यी हे सो हाथको नीचो झाछो हैं गोल कुंडालो हे सो हाथको दाहिणों थापपें परिकमा करि हाथको नीचो झालो कीजिये झाला ऊपर मान हें	
प्रमङ	थोरिक सकुक कज गनगन कुक	जक्त कक क्क ज्या क	जककत स्थारिक ड न न के हे	
न्वकार	थेई तित तत	थेई तित तत २	थेई तित तत	
अक्षर वाड मात्रा	गुरु ताल मात्रा ऽ१।९	गुरु ताल मात्रा ऽ२। े	गुरु ताल मात्रा ऽ३।े	
<u> </u>	3. मथम	. वसरी	३. तीत्तरी	

उद्धर तालको मंत्र तितालो.

संगीतसार.

अथ चतुष्कल उद्धटको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमञ्ज	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ १	सो ताल
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ २	• सो ताल
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ ३	सो ताल

अथ अष्टकल उद्धटको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे
आठ वार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ १	सो ताछ
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे
आठ वार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ २	सो ताल
थेई तिततत ८	गुरु ८	गुरुकी सहनाणी अंकहें
आठ वार कहिये	ऽऽऽऽऽऽऽऽ ३	सो ताल

इहां दिकल चतुष्कल अष्टकल उद्धटकी कलानके प्रमान पाठाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वेर वरतिके च्यारो मार्ग साधिये॥ इति अष्टकल उद्धटकें जंत्र संपूर्णम् ॥

षष्ठो तालाध्याय-सारंगदेवके मतसों मार्गी तालनके भेद. ३३

इहां पांचों मार्गी तालनमें सब ठोर ध्रुव चित्र वार्तिक दक्षिण ॥ इन च्यारों मार्गीमें ॥ एककल दिकल चतुष्कल अटकल ये च्यारों भेद कमसों जांनिये ॥ ऐसेही दिकल चतुष्कल अटकल भेदनको दुने चौगुने आठ गुने पमानसों च्यारों मार्ग कीजिये ॥ ऐसें अपनी बुद्धिसों शास्त्र पमानसों सम- सिकें मार्गी तालनके अनेक भेद जांनिये ॥ इति संगीत पारिजातकें मतसों मार्गी ताल संपूर्णम् ॥

अथ सारंगदेव महाराज ऋषीके मतसों चंचतपुट आदि पांचों मार्गी तालनके द्विकलादि भेदके ध्रुव आदि च्यार मार्ग वरतिवेको लछन लिख्यते ॥ चंचतपट ताल एककल

4 4/35 /11/5 / 14/6/5.		
पाठाक्षर नाम परमङु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ सं १	सा ताल
थेई तिततत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श २	सो ताल
थेई १	लघु १	लघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। ता ३	सो ताल
थेई तिततत थेई थेई 3	प्छुत १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	3 श ४	सो ताल
थेई तिततत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श १	सो ताल
थेई तिततत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ ता २	सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । श ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई	प्छुत १	प्छुतकी सहनाणी अंकहे
१ एक बार कहिये	डे ता ४	सो ताछ
थेई तिततत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽता १	सो ताल
थेई तिततत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽश २	सो ताल
थेई १	लघु १	लघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। ता ३	सो ताल
थेई तिततत थेई थेई १	प्लुत १	प्छुतकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	े श ४	सो तास्र

इहां यथाक्षर चंचतपुटमें गुरु छघु प्छुत अक्षरके सं श ता श ये चार अक्षर अनुक्रमसों जांनिये ॥ अथवा ता श ता श जांनिये ॥

तहां सकार तो संपातकी संज्ञा है। तकार पातकी संज्ञा है॥ ओर विंदिसहित सकार सन्तिपात जांनिये॥

ओर श ता श ता इन चारों अक्षरसों चंचतपुरके गुरु छघु प्लुत काहू काहू गीतिमें वरितये ॥ इहां सकारको संपात है । तकारको तालपात है । सो काहू काहू गीतीमें स ता श इन अक्षरसों चंचतपुर तालके अक्षर वरितये। इहां कमसों तकारसों ताल सकारसों संपात ये रीति जांनिये ॥ इति एककल चंचतपुर संपूर्णम् ॥

षष्टो तालाध्याय-सारंगदेवके मतसां मार्गी तालनके भेद. ३५ अथ द्विकल चंचतपुटको जंत्र.

इहां तालके गुरु लघु अक्षर दुने कीजिये । सो दिकल भेद जांनिये ॥

पाठाक्षर नाम परमळु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समम्या.
थेई तिततत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽ ऽ निश १	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽनिता २	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽशम ३	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ नि सं ४	सो ताल

इहां द्विकलमें एक गुरु अक्षरकी एक मात्रा जांनिये ॥ तहां दाय गुरनमें एक गुरुसों शब्दजुत कियाका पात कहिये एक गुरुसों असब्द कियाको कला कहिये इनसो वरितये निः अक्षरसों निस् कामक असशब्दिकया ओर संअक्षरसों संपात-किया ताअक्षरसों तालपात किया प अक्षरसो प्रवेशक अशब्द कियाकमसो जहां जहां आवे तहां नहां वरितये. पहलेकी सिनाई समिक्षये इति द्विकल चंचतपुट संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल चंचतपुरको जंत्र.

	The second secon	
पाडाक्षर नाम परमळु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽआनि विश १	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ आनि विता २	स्रो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ आशविष ३	सो ताल

पाठाक्षर नामं परमळु.	अक्षर ताल माचा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविसं ४	सो ताल

इति चतुष्कल चंचतपुरको जंत्र संपूर्णम् . अथ एककल चाचपुरको जंत्र.

	THE RESERVE AND ADDRESS OF THE PERSON NAMED IN	
पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर नाल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ?	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श ा	सो ताल
थेई १	ह्यु १	लघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। ता २	सो ताल
थेई १	हवु १	लघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। श ३	सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ ता ४	सो ताल
थेई नित तत १	गुरु १	गरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ ता ५	स्रो तास्र
थेई १	ह्य १	लघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। श ६	सो ताल
थेई १	छ पु १ । ता ७	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अकहे
एक बार कहिये	ऽ श ८	सो नाल

इति एककल चाचपुट संपूर्णम्.

षष्ठे। तालाध्याय-सारंगदेवके मतसों मार्गी तालनके भेद. ३७ अथ द्विकल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ निश १	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ ताश २	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ निसं ३	सो ताल

इन अक्षरमें निस्काम अशब्द किया सकारसों संपात तकारसों तालपात ऐसे जांनिये इति द्विकल चाचपुट संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल चाचपुट तालको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविश १	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविश २	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविश ३	सो ताल

या चतुष्कल चाचपुटको पहलेकी सिनाई अक्षर समझिये ॥ इति चतुष्कल चाचपुटको जंत्र संपूर्णम्.

संगीतसार.

अथ एककल पट् पितापुत्र तालको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत थेई थेई १	प्छुत १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	े सं १	स्रो ताल
थेई १	लघु १	उघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। ता २	सी ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श ३	सो ताल
थेई तित तत १	गुरु '।	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽता ४	सो ताल
थेई १	ह्यु १	छघुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	। श ५	सा ताल
थेई तित तत थेई थेई १	प्लुत १	प्छुतकी सहनाणी अकहे
एक बार कहिये	ऽता ६	सो ताछ

इति एककल पट् पितापुत्र संपूर्णम्. अथ द्विकल पट् पितापुत्र तालको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽ ऽ निप्र १	स्रो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽ ऽ ताश २	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽनिता ३	सो ताल

षष्टी तालाध्याय-सारगदेवके मतसीं मार्गी तालनके भेद. ३९

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ निश ४	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽताम ५ ः	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहानाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ निसं ६	सो ताल

पहलेकी सीनाई अक्षर समाझिये इति षट् पितापुत्र द्विकल संपूर्णम् . अथ चतुष्कल पट् पितापुत्रको जंत्र.

पाटाक्षर नाम परमलु.	अक्षर नाल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविम १	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आताविशं २	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविता ३	सो मात्रा
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविशं ४	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आतावित्र ५	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ अःनिविसं ६	सो ताल

पहलीकी सीनाई अक्षर समिसये इति चतुष्कल पट् पितापुत्रको ताल संपूर्णम्.

संगीतसार.

अथ एककल संपक्वेष्टाकको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमळु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत थेई थेई १	द विराम १	द विरामकी सहनाणी
एक बार कहिये	र्िता १	अंकहे सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श २	सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ ता ३	सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श ४	सो ताल
थेई तित तत थेई थेई १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	विराम ⁵ ता ५	सा ताल

इति एककल संपक्तेष्टाकको जंत्र संपूर्णम्.

अथ द्विकल संपक्वेष्टाकको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर नाळ मात्रा सहनाणी,	समम्या.
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽनि प्र १	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	लघुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽता श २	सो ताल
थेई तित तत २	गुरु २	लघुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽनिता३	सो ताल

पष्टो तालाध्याय-द्विकल, चतुष्कल, अष्टकल आदिको जंत्र. ४१

 पाटाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ नि श ४	सो ताल
 थई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिं।	ऽऽताम ५	स्रोतात्र
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
टोय बार कहिये	ऽऽ नि सं ६	सा ताल

पर्छेकी तिनाई अग्नर जांतिये॥ इति दिक्ठ संरक्षेटाककी जंत्र संरूपेन्. अथ चतुष्कल संप्रकेष्टाकको जंत्र.

पाठाक्षर नान परनलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविम १	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंहहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आताविश २	स्रो ताल
थेई तित तत ४	गुह ४	गुरुकी सहनागी अंहहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविता ३	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविश ४	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंके हे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आताविम ५	सो ताल
थई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनागी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनितिसं ६	सो ताल

इति संपंक्षाक चतुष्कल तालको जंत्र संपूर्णस्

अथ एककल उद्धटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ नि १	सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽश २	सो ताल
थेई तित तत १	गुरु १	गुरुकी सहनाणी अंकहे
एक बार कहिये	ऽ श ३	सा ताछ

इति एककल उद्धटको जंत्र संपूर्णम् . अथ द्विकल उद्धटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या,
थेई ातन तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽऽ निश १	सो नास
थेई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोय बार कहिये	ऽ ऽ ताश २	सो ताल
थई तित तत २	गुरु २	गुरुकी सहनाणी अंकहे
दोष बार कहिये	ऽऽनिसं ३	स्रो तास्र

इति द्विकल उद्धटको जंत्र संपूर्णम्. अथ चतुष्कल उद्धटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा स्नाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽआनिविश १	सो ताल
थेई तित तन ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आताविश २	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ आनिविस ३	सो ताल

पहेलेकी सिनाई जांनिये. इति चुष्कल उद्धट जंत्र संपूर्णम्.

षष्टो तालाध्याय-चाचपुटको प्रथम ओर दूसरी भेद.

चाचपुट तालको प्रथम भेद.

पाठाक्षर नाम परमहु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या,
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १	स्रो ताउ
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ २	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सह नाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ३	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ४	सो ताल
थई तित तत ४	गु ^र ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ५	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुःकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ६	सो ताल

इति चाचपुट तालको पथम भेद संपूर्णम्.

चाचपुटको दूसरो भेद.

पाठाक्षर नाम परमळु.	अक्षर ताल मात्रा सत्नाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुज़्की सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ २	सो ताठ
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ३	सो ताल

पाडाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित ता ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ४	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ५	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ६	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ७	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ८	सो ताल
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुहकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ <i>९</i>	सो नाल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुशी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १०	सो दाल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ११	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुम्की सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १२	सो वाछ

इति चाचपुटको द्सरो भेद संपूर्णम्.

पष्टो तालाध्याय-चाचपुटको तीसरो भेद. अथ चाचपुटको तीसरो भेद.

पाठाक्षर नाम परमछु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुहकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये .	ऽऽऽऽ २	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ३	सो ताल
थई तित तत ४	गुरु ४	गुहकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ४	सो ताल
थई तित तत ४	गुरु ४	गुल्की सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ५	सो ताछ
थेई तिततत ४	गुरु ४	गुम्की सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ६	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ७	सो ताल
थई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ८	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ९	सो ताल

पाठाक्षर नाम परमळु.	अक्षर ताल मान्ना सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १०	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ ११	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार वार कहिये	ऽऽऽऽ १२	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १३	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १४	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंक्हे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १५	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १६	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	८८८८ १७	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १८	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ १९	सो ताछ

पाडाक्षर नाम परमळु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या,
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार काहिये	ऽऽऽऽ <u>;</u> २०	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ २१	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ २२	सो ताल
थेई नित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिये	ऽऽऽऽ २३	सो ताल
थेई तित तत ४	गुरु ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे
च्यार बार कहिय	ऽऽऽऽ २४	सो ताल

इति चाचपुटको तीसरो भेद संपूर्णम्.

इहां मार्ग तालनमें चंचतपुट तालके च्यारो गुरु आदिके अक्षरनमें दिकल चतुष्कल रचिये तब पहले भागमें । चट्टी आगुलीसों ॥ दुसरे भागमें अनापिका अंगुलीसों । तीसरे भागमे मध्यम अंगलीसों । चोथे भागमे तर्जनी अंगुलीसों कलानकी समस्या कीजिये । ओर चाचपुटके दिकलादिक भेदके तीन भागोंके किनिष्टका अनामिका तर्जनी इतनी अंगलूसों कलाकी समस्या कीजिये ॥ इहां मध्यमा अंगुली नहीं लीजिये । ओर षट् पिता पुत्रके दिकलादिक भेदके छहो भागनमें किनिष्टका ॥ १ ॥ अनामिका मध्यमा तर्जनी ॥ २ ॥ फेर किनिष्टका ॥ ३ ॥ फेर तर्जनी इन अंगुनिसों कलानकी समस्या । छहो भागनमें कमसों कीजिये ॥ इहां उद्धट ताल संपक्षेष्टाक ताल दिकलादिक भेदके गुरुअक्षर आदिके भागमें चाचपुटकी सिनाई बीचली मध्यमा अंगुली बीना अंगुलीसों उद्ध-

टमं ओर षट् पिता पुत्रकी सिनाई किनिष्टका ॥ १ ॥ अनामिका ॥ १ ॥ मध्यमा ॥ ३ ॥ तर्जनी ॥ ४ ॥ फेर किनिष्टका फेर तर्जनी इन अंगुरीनसों संपंक्षष्टाक तालमें कलानकी समस्या जांनिये ॥ ओर पातमें अंगुरीनको भिचार नहीं कीजि-ये ॥ इति च्यारो, पांचो मार्गी तालनके च्यारों मार्गीनमें द्विकला-दिक भेदवर्णन संपूर्णम् ॥

अथ मार्गी तालनके उद्धटको प्रकार लिख्यते ॥ वाद्याध्यायमें कहे जें प्रमाण वासों कांसेके ताल बनायके जों कोऊ पुरुष गांववें कहिये। शुष्क वाद्य ॥ १ ॥ आरितादिगीत ॥ २ ॥ षाड्जी आदिजाति छह छह तरहके माम राग ॥ ४ ॥ इनकों गांवें रचें ओर संपूर्ण । संगीत सास्त्रकें भेदकों गुरु मुखसों विचारकें अभ्यास करें । सो हातके ताल लेके मार्गीताल प्रवंपादिक गायवेवारे पुरुषकों सहाय करे । तासों गायवेवारेंको मन चूके नाही ऐसें बजावें । यह गान् विद्याको जज्ञको फलहे । सो जो असूद गांवे वा बजावे तो श्रीतानको फल नहीं होय तासों शुद समझिके शुद्ध गांवे ॥ १ ॥ इति मार्गी तालनके शुद्ध उद्धटको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ देशी तालनको लखन लिख्यते ॥ अनुदूत आदिक सातौ अंगन करिके भूव मार्गसों पंडितोंने जे ताल कहे हैं उनको देशी ताल कहे हैं ॥

अथ परिवरतनको लछन लिख्यंते ॥ मार्ग तालकी चोथाई अथवा आठवे भाग आदिकं जो देशी तालनों फेर फेर वरतिये सो परिवरतना जांनिये॥

अथ पित्वरतनाको लछन लिख्यते ॥ जहां तालको विश्राम होय ऐसी जो कालकिया नाम समयकी तोलकों मान कहे हैं ॥ इति मान॰

अथ गीतनको लखन लिख्यते ॥ ये शास्त्रमे कहे मार्गताल वा देशी ताल जिनमें वरितये ते देवतानकी स्तुति गीतक्तर कहिहे। सो वह गीत चोदहौंहैं ॥ १४ ॥ तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां मथमतो मद्रक ॥ १ ॥ दूसरो अपरांतक ॥ २ ॥ तीसरो उल्लोप्य ॥ ३ ॥ चोथो मकर्या ॥ ४ ॥ पांचवो वेणक ॥ ५ ॥ छटो रिवन्द ॥ ६ ॥ सातवो कोत्तर ॥ १ ॥ ऐसे सात तो ये गीत हे ॥ अरु सात ओर गीत हे ॥ तिनके नाम लिख्यते ॥ मथन छन्दक ॥ १ ॥ दूसरो आसारिता ॥ २ ॥ तीसरो वर्धमानक ॥ ३ ॥ चोथो पाणिका ॥ ४ ॥ पांचवी ऋचा ॥ ५ ॥

छटि गाथा ॥ ६ ॥ सातवी सामानि ॥ ७ ॥ ऐसे ये दोन् मिलिके चौदह गीत हैं ॥ १४ ॥ ऐसे ये चौदह गीत ब्रह्मा विष्णु आदि देवतानकी स्तुतिमें पयोग किये। तो धर्म अर्थ काम मोक्ष मिले या लिये ब्रह्माजीने कहे हैं ॥ तहां देसी ताल लघु गुरु प्लतनकी मात्रा करिके प्रमान कियो है ॥ तहां या लघु अक्षरको उचार जितने कालमें होय । सो काल लघुकी मात्रा जांनिये ॥ तैसी दोय मात्रा गुरुकी हैं ॥ ओर तैसी तीन मात्रा प्लुतकी है ॥ ओर कहूं देशी तालमे अधिक हुंगात्रा कहे हे ॥ तहां तालनमेंसों यति मात्र लेलीजिये इन देशी तालके लेवेमें । ओर छोडवेमें लवको मुख्य जांनिये ॥ यातं इत गृह प्लत ये मुख्य नही ओर जहां देशी तालनमें द्वत आवे तहां भी लघु करिके स्थान जांनिये ॥ ओर लेवो छोडवो अपनी इच्छासो द्वतादिकनमें जांनिये॥ ये ताल संगीत रूप शरीरके पाण कहे हे ॥ यासों सब जतन करिके गीत आदिकमें ताल विचार मुख्य हे ॥ यहां सब तालनकी आदिमें लघु जांनिये ॥ कितनेह तालनको रूप समान हैं नाम जुदे हैं ॥ ताको रण कहत हें ॥ सो सुनो यहां उन तालनको मान जुदे जुदे है ॥ ओर रूप एकही है ॥ प्रमाण भेद्सें नाम भेद है॥ जो मान एक होय तो नामहू एक होय ॥ यातें जुदो नाममें जुदो नाम कारण हैं ॥ यातें भरत मुनिनें जुदों मानसों जुदे नाम करे हैं ॥ ओर कितनें उन तालनमें अंतमें विराम होय सो उन तालन-में संदेह करे हें के कहां वांको सरूप हैं ॥ ओर कहां विराम हैं ॥ ओर कोंन काल है ॥ ओर कोंन किया है ॥ तहां समाधान कहत हैं ॥ यह ताल ओर पहले यातें या तालको सरूप नहीं यह गीत पर्वधादिकके आधीन हैं॥ यातें याको काल पमाण नहीं याके किया हुवी नहीं है ॥ यह अकिय शिवरूप हैं ॥ यातें या ताल शिवजीकी सिनाई अनादि सिद्ध है।। परंतु गीत नृत्यमें द्वत अथवा लघु अंतमे कीजिये है ॥ ओर जो कोऊ देशी ताल जा तालमें वरत्यो होय ता तालको जो विराम ताको अर्ध वा देशी तालमें विराम जांनिये॥ ओर जो जासुं उत्पन्न भयो सो वांको अर्थ छेत हे ॥ ओर गुरुप्छुतादिक वर्ण मार्ग तालनमें सें बेंचीके देशी तालनमें राखे हैं ॥ ओर जो लघु दुतादिक खंड मार्ग ताल-नके खंडनमे ताल जांनिये ॥ यह पुराणी महामुनि कहत हैं ॥ यहां पस्तार रीति करिके द्वतमें उघु आदिनकी रचनासों एक एक तालकें अनेक अनेक भेद है ॥

अब देशी तालके भेद कहत है ॥ जहां मार्गी ताल चंचतपुट आदिकहें तिनके लघु गुरु आदिकें अंगनसों ॥ अथवा लघु गुरु आदिक अंगनके अणु । १ । द्रुत । २ । द विराम । ३ । ल विराम । ४ । इनमें जो जहां जैसो चाहिये तैसो तहां रचिये देशी नृत्य ॥ अरु देशी रागनके देशी मबंधनमें लोकानुरंजनकें लिये रचे जे ताल ते देशी ताल जांनिये ॥ जैसे मार्गी तालनमें अपनी बुद्धिसों लोकानुरंजनके लिये सूरनकों घाटि वाधि करिकें मुनिश्वरोनें देशी ताल रचे हें ॥ ऐसेही मार्गी एला आदि प्रबंधसो घाटि वाधि प्रमाणके देशी ताल होत है तैसेही मार्गी तालकें लघु । १ । गुरु । २ । प्लुत । ३ । इन तीनो अंगनको घाटि विधि कियेतें अथवा इन लघु आदि अंगनके स्थानकमें इनकें प्रमाणसों । अणु । १ । द्रुत । २ । द विराम । ३ । ल विराम । ४ । इनके रचवेसों मार्गी तालनसों नई रचनाके ताल अनेक होत है तिनमें जितने ताल शास्त्रमें प्रसिद्ध भरत वा मतंग आचारीज मुनीस्वरननें वरतेहें ॥ ते सब देशी तालनको अनुक्रमसों न्यारो त्यारो ललन कहे हैं ॥ इनके अनुसारसों जंत्र जांनिये ॥

अथ देशी तालनकी उत्पत्ति नाम लिख्यते ॥ शिवजीने गीत छंद प्रबंध आदिक गान रचनानमें वरतिवके उन मार्ग तालनमेंसों देशी ताल उत्पन्न कीयो तहां प्रथम सातों अंगनके जुदे जुदे तालनके लखन लिख्यते ॥

तहां प्रथम चित्रताल ताको लछन लिखिय ॥ जा तालमें अणु दुतकों वरितवो होय । ओर कोऊ अंग नहीं आवे । सो ताल चित्रताल जांनिये॥ या तालमें च्यार अनुदूत हें॥ 🎍 🗸 योमें दोऊ हाथको अंतर आंगुल देडको राखणो आंगुल देड प्रमाण होरा हाथमें राखिके साधिये। अब इन तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें सातो अंगनमेंसों दुसरो अंग दुत लेके वांसो चित्र ताल उत्पन्न कियो॥

चित्र ताल चौतालं

समस्या.	पथम अणुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सी ताल है ताल आगे आही सीकहे सी चीथाई मात्रा	अणुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालह आडी टीकहै सो चोथाई मात्रा	अणुद्रतकी सहनाणी ताके आगे अंकहै सो ताछहै तालके आगे आदी टीकहै सो चार्थाई मात्रा है	अणुद्रतकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तास्आगे ठीक है सो मात्रांप विश्वाम विश्वामपें मानहें.
प्सिलु.	प्रथम तालके परमन्तु त	दूसरी तालके परमङ् धि	तीसरी ताडके परमङ्	चोथी तालके परमन्तु न
चचकार.	ववकार ति	चचकार ति	च च कार ति	च च का र ति
महनाणी ताल मात्रा.	अ पृष्ठ ८५ ।	अणुद्रत	अपुत्र १३ १	원 본 20 전 1
नाल.	e e	w.	m·	∞

अथ एकताली तालको टछन लिख्यते ॥ जा तालमें द्रुतही वरतिये ॥ ओर अंग नही आवे सो एकताली ताल ताल कहतहे ॥ यामें दोऊ हाथको अतर जांनिये ॥ यामें च्यार दुतहें ०००० इति एकताली ताल-पाहीका कंटुकार्थ अंगुल तीनको राखणी सी डोरी हाथमें राखिक साधिये डोर अंगुल तीनकी ॥

२ एकतालि ताल (कंद्रकार्य).

			3000	-		-		
1	प्यम अनुद्रकी सहनाणी ताक आग अकह सा पाल ह पालम आगे टीकहे सा चोथाई मात्रा है	नाणी ताके आगे 3	लिक ह सा नाथाइ भात्र	प्यम अनुदूषका तर्गाणा । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	प्रथम अनुद्रतकी सहनाए	टीकहे सी मात्रा	प्रथम अनुदुतका सहनाणा पाक जान निर्णाम है.	
परमञ्ज.	प्यम् ताउके	दसरी तालके	परमन्त्र धिग	तीसरा तालक परमञ्जासम	मेर्गा मानक	प्रमन्त्र नग	पांचवी तालके परमल थों	29
चचकार्.	चचकार	चचकार	म	चचकार	7	व व के ति ति ४	चचकार कि	1 10
	अनु ताल	भाता ८१-	मात्रा ८२-	अनु ताल	मात्रा ०३-	अनु ताल मात्रा ८४-	अनु ताल	-\^ k h
न ज	0	:	'n	6	i d	20	5	

र दूसरी कंटुकार्य ताल चातालो.

नाल.	सहनाणी नाल मात्रा.	च चकार.	परमछे.	समस्या.
~·	द्रत ताल	विकार	प्रथम तालके	पथम दुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल हे तालके आगे
	मात्रा ० ३ ==	ते १	परमन्तु तग धिग	लीक आडीहे सो मात्रा आधी हे
.~	द्वत ताल	चचकार	दूसरी तालके	पथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो नालहे नालके आगे
	मात्रा ० २ ==	ते २	परमन्त्र धिम धिम	ह्यिकहे सा मात्रा आधी हे
m	द्वत ताल	वसकार	तीसरी तालके	पथम दुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालेहे ता आगे लीक
	मात्रा ०३ ==	ते अ	परमन्त्र तग तग	हे सो आधी मात्रा हे
20	द्रुत ताल मात्रा ०४ =	विकार	नेथी तालके परमदु थों थों	पथम दुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सी तात्नहे आगे तिक हे सी आधी मात्रा हे

नाउ ताउ अथ कंटुकार्य तालकी उत्पत्ति लिल्यते ॥ शिवजीनें उन सातों अंगनसों तीसरो अंग द विराम लेके वांसो कंटुकार्य । उत्पन्न कियो॥अथ कंटुकार्य तालको लखन लिल्यते ॥ जा वालमें द विराम वरतिये ओर अंग नही आवे सो कंटुकार्य । यामे दोऊ हाथको अंतर अंगुल तीनको राखणों सो डोर हाथमें राखिके साधिये डोर अंगुल तीनकी ॥

संगीतसार.

आंतिये ॥ या तालमें छह द विराम वरतहें । २०२००। इति कंटुकार्यं। ३। यामें दोऊ हाथको अंतर ॥ अंगुल साढा-च्यारिको रासवणो सो साढाच्यार अंगुल प्रमाण राखि होरो साधिये ॥ इति कंटुकार्यं तीसरो संपूर्णम् ॥

३ तीसरो कंटुकार्य षट्तालो.

1 0 0 m	सहनाणी ताल मात्रा. द विराम ताल द विराम ताल मात्रा ेर ≡ द विराम ताल द विराम ताल मात्रा ेर ≡ मात्रा ेर ≡	चचकार. वचकार तत चचकार तत तत तत	परमहु. प्रथम तालके परमुद्ध तगत दूसरी तालके परमुद्ध थिगित तीसरी तालके वरमुद्ध थिगित	तोक आगे अंकहे सी ठीकहे सो मात्रा पीणहे ति ताके आगे अंकहे र सी मात्रा पीणहें ताके आगे अंकहे सी मात्रा पीणहें
1	द् विराम ताछ	चचकार	चाथी तालके	सहनाणा ताक आग अकह सा तालह प
	मात्रा े४ ≡	तत	परमत् तककु	निकेहे सो पोण मात्रोहें
	द विराम ताछ	चचकार	पांचवी तालके	सहनाणी ताक आगे अकह सा ताल
	मात्रा ेेेें ≡	तत	परमलु तककु	ह हेसी मात्रा पीण हैं
	द विराम ताल मात्रा े६ ≡	चचकार तत्त	छटी तालके परमङ्ग थाँ	प्रथम द्विरामकी सहनाणा ताक आग अकह सा नाल है। आगे तीन लीकहै सी पोण मात्रा है याके विश्वामपर मान है.

अथ आदि तासकी उत्पत्ति सिल्यते ॥ शिवजीनें उन सातों अंगनमेंसों चोथो अंग समुके वांसों आदि तास्र उत्पन्त कीयो।॥ अथ आदि वासको सखन सिल्यते॥ जा वासमें सात सब आवें। ओर अंग नहीं आवें। सो आदि वास जांनिये॥ याहीको रासतास्र कहत है॥ या वासमें सात सबुही वरते हें॥ इति आदि वास ॥ यामें दोऊ हाथकों अंतर अंगुस छह कहे हैं सो अंगुस साडाछह प्रमाण डोरो सेके साधिये॥

8 चीयों रासताल यह सात तालों हे.

याको आदि ताल कहे हैं.

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार,	परमखे.	समस्या,
	स्बु तास	चचकार	प्रथम तालके पर-	पथम उपुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सी तालहे लीकहे सी
	मात्रा । १	शहे १	मन्न तत थि गि	मात्रा एक १
4	हबू ताल	चचकार	दूसरी तालके पर-	पथम उपुकी सहनाणी ताके आंगे अंकहे सो तात्वहे आगे त्रीक
	मात्रा ।२।	शहे २	मन्ज धिगि तग	हे सो मात्रा
er	उषु ताउ	चनकार	तीसरी तालके	प्रथम ट्युकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सी ताद्यहे आगे टीक
	मात्रा ।३।	शेई ३	परमकु नगथों	हे सी मात्रा
29	त्रषु ताल	च चकार	चाथीतालके पर-	प्रथम लघुकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सी तालहे आगे लीक
	माना ।४।	शर्डे ४	मन्न जग जग	हे सी माना.

8 चोथो रासताल यह सात तालो हे.

संगीतसार.

		(1-11	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
समस्या.	मथम त्यमुकी सहनाणी ता आगे अंक हे सो तात हे	प्रथम उचुकी सहनाणी ता आगे अंक हे सो तात्र हे	मथम उचुकी सहनाणी ता आगे अंक हे सो ताल ता
	आगे अंक हे सी मात्रा	आगे तीक हे सो मात्रा	आगे लीक हे सो मात्रा.
परमेलु.	गांचवी तालके	छटी तालके	सातवी तालके
	परमङु नगथों	परमङु तजधिमि	परमन्तु घिमिथों
चचकार,	चचकार	निकार	चनकार
	शेई ५	धेई ६	शहे ७
सहनाणी	त्रवृ तात	छघु ताल	छषु ताल
ताल मात्रा.	माता। ५।	मात्रा । ६ ।	मात्रा। ७।
ताल.	. 5*	. uši	9

५ लघुशेषर ताल आठ तालो.

अथ त्रवृशेखर तालकी उत्पाति तिरूपते ॥ शिवजीने उन सातो अंगनमेंसों पांचवी अंग त विराम तेके वासों त्रवृशेखर नाम ताल उत्पन्न कीयो ॥ त्रवृशेखरको त्रत्यन तिरूपते ॥ जा तालमें त विरामही वरतें ओर अंग नाहे आंवें सो त्रवृशेखर नाम वाल जांनिये ॥ या तालमें आठ त विराम हे ो ो ो ो ो ो हित त्रवृशेखर तात । ५ । यामें दोऊ हाथको अंतर अंगुल नवको राखनो । सो नो अंगुलको डोरो हाथमें राखिके साधिये ॥

अथ पांचवी लघुशेखर ताल आठ तालो जंत्र ॥ ८॥

ताल.	ल विराम ता. मा.	चचकार.	परमछु.	समस्या.
9.	=======================================	तथङ्	तत थिमि थिमि	प्रथम स विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तास्हे ता आगे डचोड सिकहे सो डचोड मात्राहे.
જં	- IS 1	तथई	था धिमि धिमि	पथम स विरामकी सहनाणी ता आंग अंकहें सो तास्हे ता आंग डयोड सिकहे सो डयोड मात्राहें.
m	ار <u>عا</u> ==	तथङ्	तम थिमि थिमि	हनाणी इयोड
သံ	= <u>8</u>	तथङ्	तम नम जम	मथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे इचोड लीकहे सो इचोड मानाहे.
نو	ار <u>کر</u> ا	तथङ्	नग तग जग	। सहनाणी सो डयोड
w°] el =	तथेई	जग नग नग	ा सहना सो डयोड
9.	1 9 1	त्यहे	नग थिगि तग	प्रथम स विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तास्हे ता आगे इयोड सिकहे सो डयोड मात्रहे.
v] cl=	तथह	धिमणथाँ	पथम छ विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो ताछहै ता आगे इयोड टीकहै सी डयोड मात्रहै.
याम	टोऊ हातको अंत	द्वातको अंतर ने अंगजको		

याम दाऊ हातका अंतर ना अगुलका राखणा सो नां अगुलको डारो हातमे राखिक साधिये.

करणा ताल आठ तालो.

अथ करुणा तालकी उत्पत्ति लिख्यते। शिवजीने उनसातों अंगनमेसों छटवो अंग गुरु हेके वांसों करुणा ताल उत्पन्त कियो करुणा तालको लक्षण लिख्यते. जातालमें गुरु आवे और अंगनही आवे सो करुणा ताल जानिये. या करुणा तालमें आठ गुरु बरते है ऽऽऽऽऽऽऽ इति करुणा ताल ६ यामें दो हातको अंतर बारह अंगुलकी डोरी हातमें राखि साधिये.

छटो करुणा ताल आठ तालो.

	सुगातसार.		
समस्या.	प्रथम दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो ताल आगे दोय ठीकहै सो मात्राहै चिंदी हातको झालेहै.	प्रथम दीरघकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताछहै आगे ठीक दोयहै सो मात्राहै बिंदी हातको झाछहै.	दारघकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे लीक मात्रा विंदी हातको। सालो नीचेकोहै.
प्रमिलु.	. कुक थिर कुक प्र थिर	थेई तित तत तम नग घिमिथों	थरि थरि थरि
चचकार.	ोई तिन तत ॥ १ ॥	थेई तित तत	थेई तित तत
सहनाणी तालमात्रा.	दीरघ ताल मात्रा विदी हातको झालो	दीरघ ताल मात्रा विदी हातको झाले	नापका उर्गा दीरघ ताल मात्रा विदी झालो नीचेको
ताल.	.	ni	m*

d-		dho.		
रीरघकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्राहे विदी हे सो हातको झालो नीचेकोहे.	दीरवर्का सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे लीकहे सा मात्राहे विंदी हे सो हातको झालो नीचेकोहे.	पथम दीरवकी सहनाणी आगे अंक्ष्हें सो तालहें लीकहें सो मात्राहें विंदी हातकों झालों नीचेकोहें.	दीरवकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीकहे सो मात्राहे विदी हातको झालो है नीचेकोहै.	दीरवकी सहनाणी आगे अंकहै सी तालहै डीकहें सो मात्राहै विदी हातको झालोहै झाला उपर मान है.
किट थारे किट थॉ	था थिमि थिमि किट	तत थिमि थिमि किट	नथा ननथा	तत ध धिगणथाँ
थेहे तित तत	थेई विव वव	थेहे तित तत	थेई तित तत	थेहे तित तत
	दीरव ताल मात्रा विदी हातकाझाटो ऽ५॥०	द्रीरघ ताल मात्रा विद्री हातको झाला ऽह्र॥०	दीरच वाल मा. विदी हातको झाले ऽ ७॥०	दीरघ ताल मा. दिंदी हातका झाले ऽ८॥•
	بخ	w	9°	v

सिन्निपात या पिंड मंठ पर तालो.

शिवजीनें उन सार्तों अंगनमेंसों सातवों अंग प्लुत होके पिंड मंठ ताल उत्पन्न कियो. अथ पिंड मंठ तालको लखन जिल्यते, जो तालमें प्लुतही आवे ओर अंग नहीं आवे सो पिंड मंठ ताल जानिये. या तालमें छह प्लुतहैं 33333 इति पिंड मंठ ७ याको सिनेपातभी कहेहैं यामें दोऊ हातकों अंतर अंगुल अठरहको राखनों अठार अंगुलकी डोरी हातमें राखि साधिये.

=
षट् ताला
कहि
म्ख
तिं ब
याको
सन्निपात
सातवा

नाल.	महनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	प्रमुखे.	समस्या.
<i>-</i> :	प्लुत ताल मात्रा गोल कुंडाला हातको परि- क्रमा विदी झालो झालोभ मान ेऽ भा।०	थेई नित तत थेई थेई.	तत धिमि धिमि नग थाँग	प्टुतकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तारहे आगे तीन ठीकहै सो मात्राहे गोठ कुंडाटो हातकी परिक्रमाहै विंदी नीचेको झाटो है
n:	प्लुत ताल भात्रा गो. कुं हातकी परिकेमा विदी झाले झालेषे मान हे शा	थेई तित तत थेई थेई.	तम तग तग तग कुंद्री कुंकुंद्यों	प्नुतकी सहनाणी ता आगे अंक है सी ताहह आगे तीन हीकहै सी मात्राहे गोल कुंडाली हातकी परिक्रमाहै विदी नीचेको झाली है

m	प्लुत ताल भात्रा गोल कुंडाला हातका झालो झालपे मान डे शा।०	थेई तित तत थेई थेई.	धिमि किर थरि थरि होंदा थरि	प्टुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल हे आगे लीकहे सो मात्रा है गोल कुंडालो हातकी परिक्रमाहै विंदी हातको नीचेको
20	प्टुत ताल मात्रा गोल कुंडालो हातकां झालो झालोप मान ऽ ४॥।०	थेई पित तत थेई थेई.	ताहं कुकु ति तिद दा	प्लुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल है आगे लीकहे सो मात्रा है गोल कुंडालो हातकी परिक्रमाहे सो निचेको झालो है
نح	प्लुत वासमाना गोस्र कुंडासा हातको झासो झासपे मान डे प्राा०	थेई तित तत थेई थेई.	नक धिधितगथों धिमि तग	प्टुतकी सहनाणी आगे अंकहैं सो ताल है आगे ठीकहैं सो मात्राहै गोल कुंडालो हातकी परिकमोहै विदी झालो हातको नीचेको
w	खुत ताल मात्रा गांछ कुंडालो हातकी परिक्रमा विदी हातको झा छो झालापे मान ऽ ६॥।०	थेई तित तत थेई थेई.	हों दों दों धधि पथों	प्लुतकी सहनाणी आगे अंकहे सा तालेहे आगे त्लीकहे सो मात्राहे गोत कुंडातो हातकी परिकमा है दाहिने हातको बांये हातमें फर नीचका झालो दीजिय झाला परही मान है

सर्व ताल सात तालो.

जा ताटमें पथम एक अणु होय दूसरो द्रुत होय तीसरो द विराम होय चोथो उचु होय पांचवो ट विराम होय छटो गुरु होय सात-वोस्प्तुत होय या रीतिसों सातों अंगनके सात ताट जांमे होय सो सर्व ताट जांनिये अथ सर्व ताटको टछन टिस्थिते प्री ोऽडे अथ सर्व तासकी उत्पत्ति सिस्यते. शिवजीनें उन मार्ग तासनमेंसों विचारिकें गीत, नृत्य, वाद्य, नाटचमें, वरतवेको अणु आदिक सातों अंगनसों कम करिके देशी तास्त उत्पन्न किनो वांको सर्व तास नाम तास्त धरयो अथ सर्व तासको सर्छन सिस्यते. अथ पाठाक्षर छिल्पते त े जग॰ तत् े तकथो तत्रकथो ो तो थोताकथो ऽ धधि कर तकथो डे इति सर्व ताछ.

सर्व ताल सात तालो ॥ ७ ॥

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	प्रमञ्जु.	समस्या.
٠.	अनुद्रुत ८१ –	चचकार ति १ तालके परमन्त्र	तालके परमन्न	पथम अनुदुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालह आग लोकहं सो मात्राहे
نه	द्रुत तालमात्रा ०२ =	चचकारते २	तालके परमलु जग	पथम दुनकी सहनाणी आगे अंकहे सो नातहे लीकहे सो आधि मात्रा
m	द्विराम ताल मात्रा े३ ≡	चचकार तत ३	तालके परमल	मथम द विरामकी सहनाणी अकह सो ताछहे छीकह सो मात्रा
20	छबुताल्यात्रा	चवकार थड़	तालके परमतु तक्यां	स्युकी सहनाणी अंकहे सो तालहे सीकहे सो मात्रा
يم	ह्यविराम ताह मात्रा रिशा =	चचकार तथइ	तालक परमलु ततकथों	छ विरामकी सहनाणी अकहे सी तालहे लीकहे सी मात्राहे

w	गुरु तालमात्रा ऽ ६॥०	चचकार थेई तित तत	तालके ताके	परमन्तु तक्थों	पथम गु ह	गुरुकी सहनाण हाथको झालो	KE .	अंकह सो तालह	सो न		लिकहे	₩	मात्रा	विदे
9.	प्टुत तालमात्रा े आ॰	चचकार थेई तित तत थेईथेई	तालके धिधिकट	परमद्ध तकथा	मथम प्लेतकी सहन कुंडासो हाथकी	दुतकी अ हाथ		ाणी अंकहे सो ताले गरिकमा विंदी हाथके	सो त	गाउहे थको	वी स	सो ालो	कहे सो मात्रा ो झालापे मानहे	गोल

पंचम ताल तितालो.

अथ पंचमतालकी उत्पानि लिख्यते. शिवर्जीनें उन मार्गतालमें विचारिकें गीत नत्य बाद्य नाट्यमें बरतिवको अणुद्रुत लेकें देशी ताल उत्पन्न किर बांको पंचम नाम कीनों अथ पंचम तालको ल्लन लिख्यते. जा तालमें एक अणु होय अर दाय द्रुत होय या छंदसों गीतादिकमें सख दख उपजावें सी पंचम ताल जांतिये ये ताल तितालोहे अथ पंचम तालको सरूप लिख्यते ००० या छंद्सों गीतादिकमें सुख दुख उपजावें सो पंचम ताल जांनिये ये ताल तितालोहे अथ पंचम तालको सरूप लिल्यते अथ पाठाक्षर त॰ गण॰

पंचम ताल तितालो ३.

नाल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	प्रमङ्	समस्य .
ن	अनु. तालभात्रा '१-	चचकार ति	तालके परमन्तु त	प्रथम अणुदुतकी सहनाणी अंकहे सो ताछह आग छीकहे सी मात्राहे
n'	द्रित तालमात्रा ° २ =	चचकार ते	तालक परमदु गण	दुतकी सहनाणी अंकहे सी ताछहे सीकहे सी मात्राहे
m	डुत तालमात्रा ०३ ≅	चचकार ने	तालक परमन्त्रथा	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकह सो ताछहे छीकहे सो मात्राहे मात्रापे विरामपे मानहे

संगीतसार.

निसो देशी तात उत्पन्न कीये याको द्वितीय तात नाम कियो अथ द्वितीय तालको लक्षण लिल्यते. जा तालनम दीय दुत होय और गीतनत्य आदिमें रस नुपजावे, सो द्वितीय ताल जानिये. ये ताल दुतालो हें अथ द्वितीय तालको सरूप लिल्यते०० अथ द्वितीय तालकी उत्पति लिस्च्यते. शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिके गीत, नृत्य, नारचमे वरतिवेको द्वतकी आवृ-पाठाक्षर जग० जग इति हि. ता.

द्वितीय ताल दोय तालो.

द्वितीय ताल जंत्र दोय तालो २.

नाल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	प्रमुखे.	समस्या.
<u>۔</u>	द्रुत ताल मात्रा ० १—	चचकार ते	लंग	सो तावहे टीव
~	हुत ताल मात्रा ०२ =	चचकार ते	जग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकह सो तालहे लीकह सो मात्रा मात्रापे विश्राम विश्रामपे मानहे

अथ आदि ताल तितालो.

अथ आदितासकी उत्पत्ति सिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तास्त्रमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेको द्रुत हुषु सेके देशी तास्त उत्पन्न करिवेको आदि तास्त्र नाम कीनो अथ आदि तासको सर्छन सिख्यते ॥ जा तासमें प्रथम दोय द्रुत होय ओर एक सबु होय या रीतिसो तीन तासमें होय । सो आदि तास जांनिये ॥ ये तास्त तितासो हे आदि तासको स्वरूप लिल्यते ००। अथ पाठाक्षर जग० जग० थो इ० आदि० ता० स०

13
E
<u> </u>
E
C
b.
F

_		अक्षर ताल मात्रा			
	नाल.	सहनाणी.	चचकार.	प्रमञ्	ममस्या,
٠	σ	बुत ताह	म म म म म	मथम तालके	TARE THE SECTION OF SERVICE SERVICES SE
	:	मात्रा		प्रमुख जग	6 5
	c	द्रुत ताल	वजसार मे	दुसरी तालके	
	٠	मात्रा		प्रमुख जग	वे कीच वेद्या। ११ वेक्क राजामवेष
	'n	द्रैत ताल	जनकार वेर	तीसरी नालके	प्रथम उचकी सहनाणी अंकहे सी तालहे लीकहे सी
`	÷	मात्रा		परमन्त्र तकथो	पे मानहे

विचारिके गीत नृत्य वाद्यमें वरतिवेकों अणु ओर तास हिल्यते ॥ जा ताहमें एक अणु होय ओर ॥ ये तास तितासो हे ॥ अथ चतुर्थ तासको स्वरूप चतुर्थ ताल तितालो. अथ चतुर्थ तालकी उत्पत्ति निरुयते ॥ शिवजीनं उनमार्ग तालनमें । द्वत लेके देशी ताल उत्पन्न किर्र वाको चतुर्थ नाम ताल कीनो अथ चतुर्थ एक द्वत होय या छंदसों गीतादिकनमे सुख उपजविंसो चतुर्थ ताल जानिये ॥ निरुव्यते ॥ ० ० अथ पाठाक्षर त ० त ० थों इति चतुर्थ ताल संपूर्णम् ॥

नाळ.	अक्षर ताल मात्रा महनाणी.	चचकार.	प्रमङ्घे.	समस्या,	
σ	अनु ताल मात्रा	चचकार	मथम तालक	प्रथम अणुद्रतकी सहनाणी आगे अंक हे सो ताल हे लीक हे	
:	16,	ति ३	प्रमन्त्र त	सो मात्रा बोथाई	9

संगीतसार

4			
चतुर्थ ताल तिताली.	स्था स्थापना स्थापना सह	म्यम जयुद्धारम् स्ति मा	
D	प्रसिद्ध.	दुसरी तालक परमञ्जू त	तीसरी तालके प्रमन्त्र थो
	च चकार.	चनकार ति २	चचकार ते ३
	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	अनु ताल मात्रा ८२ =	द्रुत ताल भाता
	नाल.	a-	m

विराम डेके देशी ताल मृत्यन करि वांको सप्तम ताल नाम किनो अथ सप्तम तालको लक्षण लिल्यते॥ जा तालमें एक अणु हाय कौर दोय द विराम होय या रीतीसो तालनमें गीतादिकमें मुख उपजांवें सा सप्तम ताल जांनिये॥ ये ताल तितालों हे॥ अथ सप्तम सप्तम तालकी उत्तरित हिरुषते॥ शिवजीने उनमार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नारचें म्रातिको अणु द तालको सत्तप लिख्यते॥ ०। ८०० अथ पाठाक्षर लि॰ तंघलांथो इति समम ताल संपूर्णम्॥ सप्तम ताल तिताली.

	मार्ग अनुस्तिकी महनाणी आगे अंक हे सी ताल है	म्थन जुड़ुशाना तिक हे सी मात्रा	पथम अनुदुतका तहा। ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।	ठीक हे सी मात्रा हे मात्राप विश्वाम
समम्	प्रमिलुः	वरमञ्जूष	प्रमन्तु घताँ २	यो ३
	चचकार.	चचकार ति १	चचकार तत २	चचकार तत ३
	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	अनु ताल मात्रा - १ -	द विराम ताल मात्रा [े] २ =	द् विराम ताल मात्रा े ३ ≡
	ताल.	·	n.	mi

षष्टो तालाध्याय-अष्टम ओर निःशंकलीला ताल.

अणु सम्र होके देशी तास्त्रमें उत्पन्न करि बांको अष्टम नाम किनों अष्टम तास्त्रको सक्षण सिंह्यते॥ जा तास्त्रमें एक द विराम होय और एक अणु होय एक सम्र होय, या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें सो अष्टम तास्त्र जांनिये॥ ये तास्त्र तितासों हे॥ अथ अष्टम तास्त्रको सरूप सिंह्यते ०।े > अथ पाठाक्षर सि॰। ध सा तत कथो इति अष्टम तास्त्र संपूर्णम्॥ अथ अष्टम तालकी उत्पत्ति छिल्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नात्य वरतिवेको द विराम

अष्टम ताल तितालो.

अष्टम ताल तितालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	पत्मलु.	समस्या.
نه	द् विरामताछ	चचकर तत	मथम ताउके	प्रथम द विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सो वाछहे
	मात्रा े ३ ≡	॥ १ ॥	प्रमङ्ग धरा	लेकहे सो मात्रा लीक वीन आडी
n'	अणु ताल	चचकार ति	दूसरी तालके	प्रथम अणुद्रतकी सहनाणी अंकहे सो तात्रहे
	मात्रा ५२ —	॥ २ ॥	परमञ्जू त	छीक आईहि सी मात्रा
m	त्रषु ताल	चनकार थेई	तीसरी तालके	पथम छघुकी सहनाणी अंकहे सो ताछहे छिकहे
	मात्रा। ३।	॥ ३ ॥	परमञ्ज तकथों	सो मात्रा मात्र विश्वाम विश्वामेष मान

निःशंकलीला ताल पंचताला.

अथ निःशंकरीता तालकी उत्पानि तिरुष्यते ॥ शिवजीने उनमार्ग तालनेमं विचारिके गीत नृत्य व.घ नाट्येने वरतिवेको बर् पितापुत्रकी जातिसों ओर चंचतपुरसों प्लत गुरु सबु सेके देशी तास उत्पन्न किर वांकों निःशंकरीं सास नाम किनों ॥ अथ निःशंकरीं सासकों सखन सिरुयते ॥ जा तासमें दीय प्लुत होय दीय गुरु होय एक सबु होय या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजारे सा ताल निःशंकलीला ताल जांनिये॥ येताल पंचतालोहें॥अथ निःशंकलीला तालको सरूप लिल्यते॥ ४८ ऽऽ। पाठा- 🦨 अर छि॰ धिकतां तांधि मिऽेथ किट थडिगथा डेत किट किटडत किट कीडथो १ इति निःशंकलीला ताल.

/ (i)						
सर एठ विक्या पावि निन्दु किट योडनया था किट विक्या ताल पंचताली ५.	समस्या.		प्रथम प्लुतकी सहनाणा अकह सा तालह लाकह सा भाग। गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी हाथको झालो	हाथको झाले	ाहनाणी अकह सा तालह ल विंदी हाथको झालो े	प्रथम गुरुकी सहनाणा अकह सा तालह लाकह पा गाता मात्रों विश्वाम विश्वामेंपै मान
। इस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्त	परमञ्ज.	परमन्त्र धिक तां तां तां धिम	प्रमद्ध श्रुक्टि थडिंग था	परमद्ध त क्रिट क्रिट	परमद्ध त क्रिटकी	थाँ
٥ ١ ١ ١ ١	चचकार.	प्लुत ताल विचकार थई मात्रा ३१॥० तित तत थेईथेई	प्तुत ताल चिक्कार शह मात्रा ३२॥।० तित तत थईथई	चचकार थेई तित तत	चचकार धेई तित तत ४	चचकार थेई तित तत ॥५॥
विकेश याचि	अक्षर नाल मात्रा सहनाणी.	प्लुत ताल मात्रा ३१॥।०	प्टुत तास मात्रा ऽ२॥।०	गुरु ताल मात्रा ऽ३॥०	मुरु ताल मात्रा ऽश्व॥०	गुरु ताल व मात्रा ऽ५॥।० ति
0 <u>0</u> •	ताल.	<i>-</i>	'n	m	20	نح
~	-				manufacture .	A

उद्धर षर् पितापुत्र चंचतपुरमेंसों गुरु प्टुत रुघु हेके देशीतार उत्पन्न करि वांकों चंद्रकरा तारु नामिकनों ॥ अथ चंद्रकरा तारुको उछन सिर्ध्यते ॥ जामें तीन गुरु होय तीन प्टुत होय एक रुघु होय या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें सो चंद्रकरा तारु चंद्रकला ताल सात ताला. अथ चंद्रकला तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उनमागै तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेको

सक्त सिक्स है १८९३ डे अकिट किट सिक्स किट सिक्स किट पिक तो तो

भानिय	॥ ये सात वाट्य	हि ॥ अथ चदः	कटातास्टका संस्त्प	जॉनिये ॥ ये सात तालाह ॥ अथ चट्कलातालका संख्य लिख्यत ६५६५ १ प्राप्त । वर्ष पाकट । कट पाकट । कट पिक पा पा
तः धिम	धिक तांतांतां	'धिम धिक तां	तांतां विमयो डी	ति धिम धिक तो तो तो ति थिम थिक तो तो तो थिमथो इति चंद्रकला तालकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥
			चंद्रकल	चंद्रकला ताल सात तालो.
नाल.	अक्षर नाल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	प्मिछे.	समस्या.
	गुरु ताल	चचकार थेड़े	चचकार धेई पथम तालके पर-	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सा तालहे लीकहे सा मात्रा
	मात्रा	तित तत १	तित तत १ मछु तक्किट किट १	विंदी हाथको झालो
n'	गुरु ताल	चचकार थेई	थेई दूसरी तालके पर-	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो नालहे लीकहे सा मात्रा
	मात्रा	तित तत २	र मन्न तिकट किट र	विंदी हाथको झालो
m	गुरु ताल मात्रा	cho	तीसरी तालके पर- मलु तक्रिट किट ३	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताउहे जीकहे सो मात्रा विंदी हाथको झाठो
∞.	्रदुत ताल	चचकार थेई	तालके परमन्नु धि-	पथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे जीकहे सो मात्रा
	मात्रा	तित तत ४	क तांतांतांधिम ४	गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा
s.	प्लुत ताल	चचकार थेई	गालके परमत्नु धि-	प्रथम प्टुतकी सहनाणी अंकहे तो ताहहे हिक्हे सो मात्रा
	मात्रा	तित तत ५	क तांतांतां थिम ५	गोह कुंडाहो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झाहो
w	प्टुन ताल	थेई तित तन	तालके परमदु धि-	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लिकहे सो मात्रा
	मात्रा	थेई थेई ६	क तांतांतां धिम ६	गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
9.	हबु ताह	चनकार	तात्रके परमद्ध	पथम उपुकी सहनाणी अंकहे सा ताल हे लीकहे सा मात्रा
	मात्रा	थहं ७	धो ७	गोल कुंडालो मात्रोंप विश्वाम विश्वामपे मान

बह्मताल द्श ताले.

बाठ नामिकनों।। अथ ब्रह्मतास्को स्छन सिरुपते॥ जामें मथम समु होय दूसरो द्रुत होय ओर तींसरो समु होय फिर दीय द्रत होय फिर एक समु होय तीन द्रुत होय फिर एक समु होय तेसे रीतसों द्रुत समु मिलि जामें दश तास होय। सा ब्रह्मतास्न जानिये॥ यह दश तासो है॥ याको प्रबंधनमें गीत गान नृत्य नार्य वाद्यनमें बरतित है॥ अथ ब्रह्मतासको पाराक्षर सिरुपते॥ अथ ब्रह्मतासकी उत्पात्ति सिरुयते॥शिवजीने देशी तास्त्रनें वरतिवेको मार्गतास्त्रां द्वत समु हेके उत्पन्नकरि वांको बहा-धिमि॰ तथरिकी। थरि॰ थरि॰ थिमि थरि। कुकु॰ धधि॰ गण॰ थो २ कुंदरिकि। कुकु॰ कुंदरिकी। दां॰ दां॰ दां धिमि धिमि । धिमि । या । उत्हिक । केणं झगनग ऽतग । धिमि नग धिमि नग तग नग । यिथि गणधो । ४ 10100101000। उदाहरण तत धिम क्टिट धिमिथो । तग० तग० थिमि तग । नग० धिमि० गण० थो । १ । तथारिक इति ब्रह्मताल संपूर्णम् ॥

अथ ब्रह्मतालको जंत्र दश ताली है १०.

न न	अक्षर तालमात्रा सहनाणी. लघु ताल मात्रा ११। हुत ताल मात्रा ०२ =	्बचकार. चचकार धोई १ चचकार ते २	न्तमञ्जुः तताधम तथारिक कुद्गिक डेडक किट०धिमि कुकु- किण विषयो तथारिक	ममस्या. पथम उपुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे आगे ठीक हे सी मात्रा हे पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे ता आगे ठीकहे सी मात्राहे
	मात्रा ।३।	थेई ३	कुंद्रिक झगनग	विषर्भ ता भाग

	त्र प्रमुख्य का प	तग थिरदां विभि धिमि तगथिर दा धि तगतग तत कुकु धिमि	आगे टीकहे भी मात्रहे ता पथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताटेंह ता आगे टीकहे सो मात्रहे पथम ट्युकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताटेंह ता आगे टीकहे सी मात्रा पथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताटेह
	म म म म म म म म म म म म म म म म म म म	तग थिरदां धिमि धिमि तगथिर दा धि तगतग तत कुकु थिमि	पथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालेंहे ता आगे लीकहे सो मात्रोहे पथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालेंह ता आगे लीकहे सी मात्रा पथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालेहे
0 H 0 H 0 H 0 H 0 H 0 H 0 H 0 H 0 H 0 H	ते ५ व व कार व व कार व व कार	धिमि तगथिर दा धि तगतग तत कुकु धिमि	आगे टीकहे सो मात्राहे पथम टापुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताटेह ता आगे टीकहे सी मात्रा पथम दुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताटेह
ज्ञ । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	म सम्बद्धाः शक्के हि सम्बद्धाः	धिमि तगथिर दा धि तगतग तत कुकु धिमि	पथम छघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तार्छह ता आगे टीकहे सी मात्रा पथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तार्छह
0 प्राप्त प्र प्राप्त प्राप प्राप्त प्राप च प्राप च प्राप च प्राप च प च प्राप च प च प च प च प च प च प च प च प च प च	धेई ६ वचकार	धि तगतग तत कुकु धिमि	आगे टीकहे सी मात्रा पथम दुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताटहे
	चचकार	तत कुकु धिमि	पथम दुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे
े प्रा	9	नग	ता आग लाक मात्रा
1 70	चवकार	धिधि धिध धि	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता
	ज ए	र्धाध	आगे हीक मात्रा
0 0 0	चचकार	गण गण गण	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सा तालहे ता
11 % 0	मे ०	मेवा	आगे टीक मात्रा
उच्च तालमात्रा	चचकार	यो यो या	प्रथम उचुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सी ताछहे ता आगे
106	थेई १०	त्त्रं	त्रीकहे सो मात्रा हे मात्रांप विश्राम

इडावांन ताल पंचताली. अथ इडावांन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उनमार्ग तालनमेंसों विचाारक गीत, नृत्य, वाद्य, नाटचमें वरतिवेकों हुत लघु लेके देशी ताल उत्पत्त करि वांको इडावांन ताल नाम किनों ॥ अथ इडावांन तालको लखन लिल्पते ॥ जामें एक हुत

होय एक उचु होय फेर दीय द्रुन होय फेर एक उचु होय या रितिसा गीतादिकमें सुख उपजांवें सो इडावांन ताल जांनिये ॥ ये पंचतालोहें ॥ अथ इडावांन तालको सक्तप लिख्यते ॥ ० ० अथ पाठाक्षर नग नग घिमि जग जग घिमिथों इडावांन ताल संपूर्णम् ॥ अथ इडावांन ताल जंत्र पंचताली ५.

Ĩ	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		-		• 1
नमस्या,	मथम दतकी सहनाणी अंकहे सी तालहें लीकहे सी मात्रा आधिहें	प्थम स्वकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सी मात्राहे	प्रथम द्रतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा	पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सी नालहे आगे लीकहे सी मात्रा	म्थम टघुकी सहनाणी अकह सा तालह लाकह सा मात्रा मात्राप विश्राम विश्रामपे मान
प्रमलु.	परमङ्ग थिमिनग थरि किणतिथे १	क्रिटि नग तग थिमि नग थारे तत कुकथों गा २	तगडगथरिन कंघधि ३	धिमि नग नम दागण ४	नगथो विभिधो थ रिथोक्किणशोथो ५
चचकार.	चचकार ते 9	चचकार थेई २	चचकार ते ३	वचकार	चचकार थेई ५
अह्मर ताल मात्रा भइनाणी	मात्री	ल्खु ताल मात्रा	द्वत ताल मात्रा	द्रुत ताल मात्रा	हबु ताल मात्रा
.ताल.	6	u,	m	∞	نح

चतुस्ताल चातालो.

अथ चतुस्तालकी उत्पत्ति जिल्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमेंसों विचारिक गीन, नृत्य, वाद्य, नाट्यमें वर्तिवेकों दुत उष् हेकें देशी ताल उत्पन्न करि वांको चतुस्ताल नामिकना ।। अथ चनुस्तालको तछन लिख्यते ॥ जामे तीन द्रुत होय और एक

र जानिये ॥ ये चीनाहोहै॥ अथ चन्स्ताहको सुरूप हिष्यते ॥	=
स्य = य	था ॰ थरि ॰ विभि॰ थिरिथा
は可能	० थरि
उपजाव सो ताल चनुरनात	थरि था॥॥ था
व सो न	थरि थ
ा उपजा	० नक्त ० १
म् अस्थ	थरि
ोतादिकमे	0
होय या गीतिसा गी	ठाक्षर कु
र या गी	अथ पा
लुष होर	0 0 0

पथम उचुकी सहनाणी अंकहे सी तालहे लीकहे सी एक मात्रा मात्रों विश्राम विश्रामप मात.	त्रषु ताल मात्रा । ४ ।	थरि था	(S) Thur	∞
पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो आधी मात्राहे	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	नक	(IC	m
पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सो तात्रहे तीकहे सो आधी मात्राह	द्रुत ताल मात्रा ॰ २ ==	थारि	ДC	ni
पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सी तालहे लिकहे सी आधी मात्राहे	द्रुत ताल मात्रा ० १ ==	 8 9 8 9	/tc	<i></i>
ममस्या,	सहनाणी. अस्पर ताल मात्रा.	प्रमुखे.	चचकार.	नाल.
भाषापुरम्भ गुष्तं उपजाव क्षा पाल चनुक्तालं जातिय ॥ यं स्वितिहां। अथ चनुस्तालका सुरूप लिख्यते ॥ १ कु कु ० थिरि ० नक् ० थिरि था।।१॥ था ० थिरि ० थिमि० थिरिथा ॥२॥ था० घघि०मण०थों है।।३॥ इ० चतुस्ताल जंत्र चातालो.	डपणाव पा पा नक ० थरिथा। चतु	ग्यादक पूर्व कुकु थित्र	हान ना नाम्या । अथ पाठाक्षर	c o

कुंभक ताल चोद्ह तालो.

अणुद्धत द विराम लघु ल विरामनकी कम उतकमसों आवृति तें देशीताल उत्पन्न करि ॥ वांको कुंभक ताल नामकिनों ॥ अथ कुंभक ताल लखन जामें पांच द्वत होय फेर एक अणु होय एक द विराम होय ओर एक लघु होय फेर एक द्वत होय एक अणु होय अथ कुंभक तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमंसो विचारिके गीत, नृत्य, वाद्य, नारचमें फेर एक द्विराम होय एक जुवू होय एक द्वत होय ओर एक छ विराम होय॥ या रीतिसों जानिये॥ यह 'चोद्ह तास्राह ॥ अथ कुंभकतास्का सह्तप सिक्यते॥ ००००० ८०।००।० ो याकी परमसु सिक्यते॥ जग• जग० नग० तग० जग० त ७ धर्स े तगर्थो। जग० त ७ धर्स े तक्यों। जग०तनक्यां त्यांय चेत्रह तासे हें।।

अथ कुंभकताल जंत्र चोद्ह तालो.

LOUIS							char	
	मनस्या:	प्थम दुतकी सहनाणी अंकहे सो ताटहे टीक मात्रा आधी	अथ द्रतकी सहनाणी अंकहं सो तात्रहे तीकहे सोमात्रा आधी	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तात्रहे टीकहे सो मात्रा आधी	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सी ताउहे टीकहे सी मात्रा आधी	दुतकी सहनाणी अंकह सा नाल्ह लीकहे सो मात्रा आधी	अणुदुतकी सहनाणी अंकहे सा तालहे लीक हे सी मात्रा चीथाई.	
The second secon	सहनाणा. अक्षर नाल मात्रा.	द्धत ताल मात्रा इत ताल मात्रा ० २ =		द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रुत ताल भाता	द्रुत ताल मात्रा ० ५ ==	अणुद्रुत तालमात्रा ८ ६ –	
The state of the s	प्रमिछे.	जग	जम	돼	तग	जग	tr	
	च चकार.	(IC (IC		i de	/hc	ite	(E	
	नाल.	9.	n	mi	20	34	w	

			कुंभक बाल चीक्ह तालों.
9	तेतत	धलें	द्विराम ताल्पात्रा प्रथम द विरापको सहनाणी अकृह सा तीलहे लाक्ह सा मीत्री े ७ ≡ तीन चोथाई
v	थ	तमधौ	उचु ताल मात्रा । ८ ।
مه	/IC	जन	उचु ताल मात्रा दुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे टिकिहे सो मात्रा आधी
. 0 6	ति	tr	अणु ताउ मात्रा अणुद्रनकी सहनाणी अंकहे सो नाउहे ठीकहे सो मात्रा चोथाई
99.	तेवत	धलों	र्वि ताल मात्रा दित्यमकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा तीन चोथाई
8.	स्र	त क थीं	हचु ताल माना टचुकी सहनाणी अंकहे सी तालहे छिकहे सो माना एक । १२ ।
93.	/IC	जग	द्रुत नाल मात्रा ० १३ == द्रुतकी सहनाणी अंकरे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
30 6	तत थड़	तनक थों	लिंबि० ताउ मात्रा हा विरामकी सहनाणी अंकहें सी ताछहे जीकहें सी मात्रा डेड ो १४।=

लक्ष्मी ताल अठारह ताला. अथ स्थीतालकी उत्पत्ति सिस्यते ॥ शिवजीने उन मार्ग तालनमेता विवारिके गीत नृत्य वाद्य नार्यमे वरतिवेको ओर उत्सव

🗸 त 🗸 थारि॰ थारिकु े तग॰ दां थिमि। जग॰जग॰ घट्टां े जग॰ घट्टां े तग घिमि। घाघि॰ गण॰थों इो इ॰ स्टक्ष्मीता॰ संपूर्णम्॥ मुख उपजावेंको देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको त्रश्मीताल नाम किनों ॥ अथ त्रश्मीतालको लखन लिख्यते ॥ जामें पथम

लक्ष्मीताल अठारह ताला.

नाल.	च्चकार.	प्रमिलु.	महनाणों. अक्षर नाल मात्रा.	मुमस्या.
6.	/IC	hr	द्रित ताल मात्रा ० १ ==	प्रथम दुतकी सहनाणी आगं अकह सा तादह ताल आग आडी टीकहे सो आधी मात्रा
n	AC	hr	० ५ = =	पथम दुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आग आही लीकहे सो आधी मात्रा
	्रेस (अ	तकु थारि	उच्च ताल मात्रा पर	पथम त्युका सहनाणा ता आग अकह पा पाटह पाट गार एक लिकहे सी एक मात्रा
20	कि	lt .	अणुद्रुत ताल मात्रा प	प्रथम अणुद्रुतका सहनाणा ता आग अकह पा पाल जान त्रीक आदी सो चाथाई मात्रा
نح	ति	ि	अणुद्धततालमात्रा प	प्रथम अणुदुतका सहनाणा वा आग अकल्या पाट जात टीक आडी सी चाथाई मात्रा

ळक्भीताल अडारह तालो.	पथम द्रुतकी महनाणी आगे अंकहे सो ताल ताल आगे त्रीक आदी मा आधी मात्रा	पथम द विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सो नाल आगे आही टीक तीन सा चाथाइ मात्रा	पथम दुतकी सहनाणी आगे अंकहे सी ताल्हे ताल आगे लीक आडी सी आधी मात्रा	पथम टघुकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताछहे तास आगे तीक मात्रा एक	पथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सी ताछहे आगे ठीक सो मात्रा आधी	पथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताछहे नाछ आगे लीक मात्रा आधी	प्रथम द विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सा ताछहे ताछ आगे टीक सी मात्रा नीन चौथाई	प्रथम द्रुनकी सहनाणी आगे अंकहे सो नालहे नाल आगे लीक मो मात्रा आधी	मथम र विरामकी सहनाणी ना आगे अंकहे सो नाछहे आगे आदी ठीक सो मात्रा तीन चौथाई
लक्ष्म	डुन नात्र मात्रा	द्वि॰ नाल्मात्रा े ७ ≡	द्रत ताल मात्रा ० ८ ==	उद्ध ताल मात्रा । ९ ।	डुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	द्मवि॰ तालमाना े १२ ≡	द्वत ताल मात्रा ० १३ =	्रिवि॰ ताल मात्रा े १४ =
ļ	थरि	थरिक	पम	द्राधिमि	त्रम	जग	धलां	जग	धलाः
-	, lc	नत	(च	ख इंड	/IC	,l c	वत	,hc	तत
	w	9.	v	نه	90.	93.	3.5	33.	% %

लक्ष्मी ताल अठारह ताली.	नमम्या.	म्लाम सहसाणी आगे अंकह मा नालहे वाल	अगि टीक सी मात्रा अगि टीक सी मात्रा टीक मा अग्रे अंकडे सा नाव्हें वा	प्रथम दुनका सहनाया या जान नगर स	प्राम इनकी सहनाणी ता आगे अंकह सो तालह त	आगे होक मात्रा आयी	प्रथम त विश्वमिक। तहराजा भाग हेड.
लक्ष्मी त	महनाणां.	अक्षर नाज मात्रा.	त्रमु ताल मात्र।	द्रन नाल मात्रा	11 25	1 9 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	डवि॰ ताल मात्रा । ३८।=
	-	प्रमल्.	तम धिमि	121.	8	गवा	थां
	-	चचकार.	्ड इंड		lc	, t c	तथेड
		नाल.	يخ		w	3.	36.

अथ कुंडनांची तालकी उत्पनि लिल्पेते ॥ शिवजीने उन मागै नालनमंसों विचारिकें गीन मृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेको

कुंडनांचीताल बाराह ताले।

द्रुत तयु त विराम तेकें देशी ताल उत्पन किर वाको कुंडनांची ताल नाम कीनांयाको लोकिकमें कुरनांची कहेह ॥ अथ कुंडनांचीको तछन लिक्यने ॥ जा तालमें एक द्वन होय एक तयु होय एक त विराम होय ओर एक दुन होय एक हुन होय पर एक तिराम होय ऐसे राम होय एक तयु होय केर एक दुन होय एक तयु होय किर एक त विराम होय एक दुन होय ओर एक त विराम होय ऐसे द्रुत लघु ल विराम लेके बारह ताल होयेहँ सो नाल कुंडनांची जानिये॥ अथ कुंडनांचीका सरूप लिक्यते विरामिति। । किट कुथरि। तम नम धलो नम थिमि। इति कंडनांची ताल संपूर्णम्॥ त • त्यथा । थारिकुद्रिति

a'
तालो
बारह
ताल
कुडनांची
अय

कुंडनांची ताल बारह तालो १२.

संगीतसार.

							T		7
ममस्या	Tall the rate of the state of t	प्रथम तयुका सहनाणा अकह सा पाल आग लाकर सो एक मात्रा	क्षा न निरामकी महनाणी अंकहे सी ताल लीकहेसी	प्रथम ल । नरा मन । हेड मात्रा	म्लाम स्वकी महनाणी अंकहे सी ताल आगे दीय	प्रथम सुनित्ता तर्ता । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	जिस्सा क्ष्य स्थापि अंकहे सो तालहे लिकहे	म्बर्भ कि	सी डंड मात्रा पात्रा पत्रा । १०००
ਸਤਜਾਹੀ	अस्य ताल मात्रा.	छचु ताल मात्रा		स्वाव व ताल भात्र।		#	99 ==	लिवि॰ ताल मात्रा	1 20 1
	प्रमिलु.	धिमि तग	Ī	थ थरि धधि	-	101		;ţ	র
	चचकार.	95	ř	त थेडे		/h	-		तथङ्
	नाल.	0	<i>;</i>	o o			· -		5

अर्जुन ताल द्श ताली.

अथ अजुन तालकी उत्पत्ति सिल्पते ॥ शिवजीने उन मार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेको द्रुत तबु रू विराम होके देशी ताल उत्पन्न करि वांको अर्जुन ताल नामिकनों अथ अर्जुन तालको तछन लिल्पते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय ओर एक लघु होय किर एक द्रुत होय किर एक तबु होय ओर तीन द्रुत होय एक तबु होय एक द्रुत होय एक छ विराम होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सा अर्जुन ताल जांनिये ॥ ये ताल द्रुस तालो हे ॥ अथ अर्जुन तालको सह्तप लिल्यते ॥ ०।०।०००।० रे ॥ अंथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकीकमें परमन्दु कहनहे नग०तकथों । जग०तकथों । जम जग जग नक्थों। जग तातक्थों ो ॥ इति अजुन तास संपूर्ण ॥

नाल.	मचका(.	प्रमिष्टु.	सहनार्णा. अक्षर नालमात्रा.	समस्याः
 	Λυ	ने	द्भृत ताल मात्रा • १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सी तालहे लीक मात्रा आधी
نه ا	र्देश	तकथों	लबु ताल मात्रा । २ ।	मथम उघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक माना एक
m	Ac	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	पथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
သ	शहे	तकथों	उच्च ताल मात्रा । ४ ।	प्यम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा एक
ا ا	Ac	जग	उत ताल मात्रा	प्रथम दुनकी सहनाणी अंकहे सो तात्टहे तीक मात्रा आधी
w	ιbc	जग	द्भत ताल मात्रा ० ६ ==	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
9.	, htt	जग	द्भृत ताल मात्रा ० ७ ==	प्रथम दुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल्हे लीक मात्रा आधी
v	थिङ्	तक थाँ	उच्च ताल मात्रा	मथम उघुकी सहनाणी अंकहे सो तात्रहे लीक मात्रा एक

संगीतसार

ताल. चचकार. परमहु. अक्षम नाल मात्रा. 3. ते जमा ० ९ = मधम हाविरामकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी प्रथम हाविराम ताल्य मात्रा मधम लिशाम विश्राम प्रथम विश्राम प्राप्त मात्रा हेड						
कार. प्रमुढे. ज्या तत्क थीं	ममस्या.		प्यम द्रतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आया	FE IEIL THE STATE OF	हिनाणा अकह सा तालह लाक नाना	मात्रापे विश्राम विश्रामपे मान.
हार. जुरे तिति के	सहनाणी. अध्यय ताल मात्रा	21/21	द्रुत ताल मात्रा	0	ट्यवराम ताल मात्रा	106 1
नारु. चयकार. 3. ते	प्रमुख.		F	- -	;	ततक थाँ
न । ५०	चचकार.		A	C		तथंड
	माछ		•	<u>ښ</u>		90.

अथ अर्जुन ताल जंत्र लिख्यते॥ यह दश तालो हे ॥

कुलताल पंद्रह ताली.

तमु होके उत्तरि सूधेकरिव उनसों देशी ताल उत्पन्न किरि॥ वांको कुल ताल नामिकनों॥अथ कुल नालको लखन लिख्यते॥ मथम एक हुत होय एक तमु होय फेर एक हुन होय एक तमु होय फेर एक हुन होय एक तमु होय अरु तीन हुत होय फेर एक तमु होय फेर चार हुत होय एक तमु होय ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे सो कुलताल जांनिये॥ यह ताल पंदरह तालोहें॥ अथ कुलतालको सक्त लिख्यते ०।०।०।०००।०००। अथ पाठाक्षर लिख्यते जग्न तक्यों। नग्न अथ कुछतासकी उत्पति छिल्यते॥ शिवजीनं उन मार्ग तैन्डनमेंसी विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नार्यमं वरतिवेकों दुत तक्थों। तग० तक्थों। जग० तग० तक्थों। जग० जग० नग० जग० नग० तक्थों। इति कुलताल संपूर्णम्।।

॥ कुलताल पंदरह तालो १५॥

ममस्या.	पथम दुतकी सहनाणी अंकह सी ताल लीकहे सो मात्रा आधी
सहनार्णा. अक्षर नाल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० 1 =
प्रमुखे.	जग
चचकार.	/hc
नाल.	-

				•
लपुकी सहनाणी अंकहे सो ताज लोकहे मो मात्रा एक		वक्षा	or T	
	ज्य ताल मात्रा	11041	भुद्ध	0
दुनमा प्रवेगाणा अकह सा ताल लाकह सां मात्रा आधी	11 ~			
	दुत ताल मात्रा	नग	/lc	oi
उपका पहनाणा अकह सा ताल लोकह सो मात्रा आधी	 			
distribution of the state of th	द्रेत ताल मात्रा	तग	ί ι	v
दुनस्। पश्नाणा अकह सा तांत लाकह सा मात्रा आधा	9 0			
	द्रुत ताल मात्रा	ल	عا،	9
लघुकी सहनाणी अंकह सो ताल लीकह सो मात्रा एक	उद्य ताल माना । ०० ।	तकथाँ	(2) Fro	wi
	0			
दुनकी सहनाणी अंकह मो ताल लीकहे मो मात्रा आधी	। ताल म	त्र	/IC	نح
ं १५। तहुनाणा अकह सी तील लाकह सा मात्रा एक	- - -			
	छबु ताल मात्रा	तकथाँ	थेड	20
द्राक्त प्रत्याचा अकह सा वाल लोकह सा मात्रा आधा	 m'			
	द्रुत ताल मात्रा	नग	ΛC	m
उपुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक	ल्बु ताल मात्रा । २ ।	तकथों	્રક જ	ο.

संगीतसार.

÷
<u>s</u>
C
9
5
कुलताल

		The state of the s	aratul	ममस्या
नाल.	चचकार.	प्रमञ्जु.	अश्वर ताल मात्रा.	
6	(ID	जग	द्भत ताल मात्रा ० ११ ==	पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
~	ΛU	जग	द्रुत ताल मात्रा	दुतकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा आधी
	. At	F	। वाल म	द्रुतक़ी सहनाणी अंकहे सो वाल लीकहे सा मात्रा आधी
m	-	-	1 6 0	THE A STATE OF THE PARTY OF THE
20	No	त्य	दुत ताल मात्रा ०१४ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सा ताल लाकह सा भाग जाया
نح	्रेड इंडर इंडर	तक्यों	हमु ताल मात्रा । १५ ।	दुतकी सहनाणी अंकहे सा ताल लाकह सा भाग ९भ मात्रापे विश्राम विश्रामपे मान.
_				

रचा ताल दोय तालो.

अथ रचा तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमंत्ती विचारिके गीत नृत्य वाद्य नार्घमं वरतिवेको लघु द विराम लेके देशी ताल उत्पन्त किरि वृक्षि ताल किर्मे एक लघु होष किराम लेके देशी ताल उत्पन्त किरि वृक्षि ताल किर्मे । अथ रचा तालको लख्ये । यह ताल देगि ताल होप ॥ यह ताल देगि तालो है॥ अथ होष और एक द विराम होप ॥ या रीतितों गीतादिक्षं मुख उपजांवें। तो रचा ताल जांनिये ॥ यह ताल देगि तालो है॥ अथ रचा तालको स्वा ताल संपूर्णे ॥

रमा ताल हाय ताला.

A 	٦	डा ताल ———
समस्या,	पथम उचुकी सहनाणी अंकहे सा ताल लीकहे सी मात्रा एक	पथम द विरामकी सहनाणी अंकहे तो ताल लीकहे तो मात्रा तीन चोथाई मात्रापें विश्वाम विश्वामपें मान.
सहनार्णा. अक्षर ताळ मात्रा.	उपु ताल मात्रा	द्विं ताल मात्रा े २ ≡
प्रमुखे.	तकथों	धलां
चचकार.	्त्र भूक	तत
ताल.	<i>-</i> :	n'

मित्रिताल आउ तालो.

अथ सिनितासकी उत्पत्ति सिरुपंति।। शिवजीनें उन मार्गतास्त्रनें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको कुत सब सेके देशी तास्त उत्पन्त किरि वांको सिनितास नाम कीनों।। अथ सिनितासको सखन सिरुपते।। जा तासमें तीन द्रुत होय और एक सबु होय फेर दोय द्रुग होय दोय सबु होय।। या रीतिसों गीतादिकमें मुख उपजावें। सो सिन्तास जानिये।। ये तास आठ तासो हे।। अथ सिनितासको सरूर सिरुपते ०००। ००।। अथ पाठाछर सिरुपते। जग० तम० नकथों। जा० नग॰ तक्यों। तक्यों। इति सन्नितास संपूर्णम् ॥

सिन्नताल आउ तालो.

समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंकह सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ =
प्रमिखे.	जग
बचकार.	ite
नाल.	<i>-</i> :

1	: 8 =
-	आठ
-	नताल
_	V

ŧ

सिंहविकम ताल आठ तालो.

उद्धर चंचत्पुर तालसों गुरु लघु प्लुत लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांको सिंहविकम ताल नामकिनों ॥ अथ सिंहविकम तालको लखन लिख्यते ॥ जामै तीन गुरु होय एक लघु होय एक प्लुत होय भिर एक लघु होय ओर एक गुरु होय भिर एक प्लुत होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें। सो सिंहविक्तम ताल जांनिये ॥ यह आठ तालों हे ॥ अथ सिंहविक्रम तालको सक्त्प लिख्यते ऽऽऽ। ऽ।ऽऽअथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहीको लोकीकमें परमतु कहते हे ॥ ता ता थोंकिटऽ अथ सिंहविकम तासकी उत्पात्ती सिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतासनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको िषिषिनकर्थोंकिट ऽ धिधिकिटाधिधिकिट ऽ थों गा। थिथिमि धिधिमि भिमिथों ऽ तार्थों। ततथरि तार्थु ऽ तिक तिक धिधि तगथों ऽ शत सिंहविकम ताल संपूर्णम् ॥

सिंहविकम ताल आठ तालो.

ममस्या.	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विदी	/hC	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विदी सालो हातको
सहनार्णा. अक्षर नाळ मात्रा	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।े	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।
प्रमत्तु.	ताताथों किट	धिधिनकथा <u>ं</u> किट	धिधिकेटधि धिकट
चचकार.	थेई तिततत	थेई तिततत	थेई तिततत
नाल.	6	o.	m

संगीतसार.

ċ	
अपित ताका	
ताल थ	
वक्रम	
HE	

			1 Total	समस्या
A 10	म्बन्धार.	ष्रमञ्जू.	अक्षर ताल मात्रा	
			1	ELL TELL THE TELL TO THE TELL THE
-	0	थ्रोंगा	लघु ताल भाता	त्युकी सहनाणी अके हैं सी वाड लाक नाना उम
»			×	न्त्र महत्राती अंक हे मी तान टीक मात्रा तीन गोल कुंडाला
3	तिततत	बिधिमि धिर्घि ति जिमिधों	भिधिमि थिथि एउत ताल भाग स्व शिमिश्रां (डे ५ ॥)	हाथकी परिक्रमा विदी झालो
:	यह यह	1 1 1 1 1 1		THE THE PARTY OF T
	शुरु	नायाँ	त्रुव तात्र भागा	उचुकी सहनाणां अके हैं सी ताल लाक गांगा भ
ė	-		9-	्र र र र र र सम्बन्धित आसी
	केंग्रे नित्रमत	ततथरितार्थ	मुरुताल भात्रा	गुरुकी सहनाणां अक ह सा वाल लाक गांग राग गां
) .		2		न्यमकी महनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडाली
_	थेई तिततत	ताकृतांकांध	प्लेत ताल	हाथिक परिक्रमा विदी झाली.
v	थेड़े थेड़े	धितगयो	(3 0 = 1	
			•	

महासन्निताल चोद्ह ताली.

अथ महासिचितालकी उत्पत्ति लिल्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विवारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिषेकी द्वुत तमु लेके देशी ताल उत्पच्न किरि वांको महासिचिताल नाम किनो ॥ अथ महासिचितालको लखन लिल्यते॥ जामें मथम तीन कुत और दोय लघु होय फेर एक द्वुत होय एक लघु होय एक द्वुत होय फेर एक लघुहोय और एक द्वुत ओर चार लघुहोय ॥ या सृतिसो गीतादिकमें सुख कपजावे। सो महासिचिताल जांनिये॥ यह ताल चेादहतालो हे॥ अथ महासिचितालको सरूप लिल्यते॥

०००॥०।०।।॥ जग० तग० नग० तकथों। तकथों। जग० तकथो। तग० तकथों। नग० तकथों। तकथों। तकथों। तकथों। टूतकथों। इति महा सन्नितास्य संपूर्णम्॥

महा सन्निताल चोद्ह तालो, १४.

	1	,	1		7		
समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीक मात्रा आधी	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा आधी	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा आधी	उपुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सा ताल लीक मात्रा आधी	उपुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकसी मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंकहे सी वात ठीकसो मात्रा एक
सहनाणी अक्षर तास्त्र मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुत ताल मात्रा ॰ २ =	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	उच्च ताल मात्र । ४ ।	द्भत ताल मात्रा ० ५ =	छचुताल मात्रा । ६ ।	अधुताल मात्रा । ७ ।
पग्मलु.	जग	तग	नग	तकथों	लम	तकथों	नकथों
चचकार.	(IC	/ tc	/IC	थिङ्	ίτο	थिङ्	थुङ्
ताल.	9.	ai	m	∞.	تو	w	9.

महा सिष्नताल चोद्द तालो, १४.

भेई तक्यों उद्गेताल मात्रा भेई तक्यों । ९ । भेई तक्यों । ९ । भेई तक्यों । ९ । भेई तक्यों । १९ । भेई तक्यों । १९ । भेई तक्यों । १९ ।

षष्ठो तालाध्याय-त्रहताल चोतालो और समताल तितालो.

अथ महतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटचमें बरतिवेको गुरु प्लुत लेके गुरु दोय मात्राको प्लुत तीन मात्राको देशी ताल उत्पत्न किरि वाको घहताल नाम किनो ॥ अथ घहतालको तक्षेण लिल्यते ॥ जा तालमें एक गुरु और दोय प्लुत और एक गुरु होय या रितीसो गीतादिकमें मुख उपजांवे सो घहताल जानिये॥ यह चोतालोहे ॥ अथ घहतालोका सरूप लिल्यते ऽेऽऽ याके परमजु लिल्यते ॥ तत्था थातकऽधिमिथिमि थिधिनक ताथों ऽ धिधिकधि विकधिक ताथों ऽ धिधिकत ताथों ऽ॥ ये चोतालोहे ॥

महताल चोतालो.

अथ महताल चोताला, ४.

1	1	1	1	<u> </u>
समस्या,	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोष विदी झालो	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो वाल ठीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झाले	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल ठीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	हे सो ताउ डीकहे गपे विश्राम विश्राम
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरुताल मात्रा ऽ १ ।	त्दुत ताल मात्रा (ऽ र ॥८)	प्लुत ताल मात्रा (ें ३ ॥८)	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।े
पग्मेळु.	तत्था थातक	थिमिथिमि धिधिनक ताथों	धिधिकधि धिकधिक ताथों	विधिकत ताथों
चचकार.	थेई विततत	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत
ताल.	<i>-</i>	o.	m	30

समताल तितालो.

अथ तमतालको सक्त लिल्यते ऽ ऽ। अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकीकमें परमलू कहतहे ॥ थाकिन किनकिन ऽ हेकुकु टेहेऽ अथ समतालकी उत्पाति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मामैतालमेंसों विचारिकं गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों गुरु लघु लेके गुरु दीय मात्राको छघु एक मात्राको देशी ताल उत्पन्न करि वाको समताल नाम किनों॥ अथ समतालको ढछन लिल्यते॥ जा तालमें दीय गुरु होय ओर एक उचु होय या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सी समताल जांनिये ॥ ये ताल तितालीहे ॥ यारे ॥ इति समताल संपूर्णम् ॥

समताल नितालो, ३.

ग्चयताल चाताला.

अथ संवयतासकी उत्पत्ति सिष्धते ॥ शिवजीनं उन मागैतास्त्रमेंसो विचारिकं गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेको दुत सम्बु सेकें । द्रुत आधि मात्राको जांनिये । समु एक मात्राको जांनिये । देशी तास उत्पन्त करि वाको संवयतास नाम किनो ॥ अथ संचयतालको लक्षण लिख्यत ॥ जा तालमें एक द्रुत होय ओर तीन लघु होय या रितीसों गीतादिकमें सुख उपजांचें । सा संचयताछ जांनिये ॥ ये ताल चोतालो हे ॥ अथ संचयतालको स्वरूप लिल्यते ०॥। अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ थै॰ थारिथों । वाहं । तकथों । इति संचयताल संपूर्णम् ॥

संचयताल चोताला. ४.

			७ जार	।सहगद
समस्या.	पथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधि	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	पथम उघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मान	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मान.
महनाणी अक्षर नाल मात्रा.	द्रत ताल मात्रा ० ३ ==	अपु ताल मात्रा । २ ।	लघुताल मात्रा । ३ ।	लघुतालमात्रा । ४ ।
प्रमञ्जे.	<i>ে</i> ন	थारथॉ	ताहं	तकथों
च चकार,	/IC	्ड इं	প্ৰ	ু ক
ताल.	<i>-</i>	n'	m	30

सिंहनंदनताल इकईम नालो.

अथ सिंहनंदनरालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गताजनमेंसो विचारिकं गीत नृत्य नादय वाद्यमें संगीतके ग वरतिवेको चंचत्पुरकी जानिसों देशी नाल उत्पन्न कारिके वाकी सिंहनंदन नाम किनो ॥ अथ सिंहनंदनको लखन चार अंग वरतिवेको

होय । और

सिंहनंदनताल होतहें ॥ ताको स्वरूप लिल्यते ऽऽ। रे।ऽ००ऽऽ। रे।ऽ।। ना ।- 🍴 📙 अथ पाठाक्षर लिल्यते॥ ततथिर थरिकिट ऽनगधिम थोंगा। तगिषिमि नगिधिमि धिमितग् रेतता। कुकुथिरि थरिधिषि ऽदां उद्गे कुदक्टि कुंद्रिथु ऽ तहां मथमाँ आवापक वाई । ओर कोई हाथ चहावनी ॥ १॥ दूसरी विक्षेपक दाहिनी । ओरको हाथ चहावनी ॥ २ ॥ तीसरी निक्रा मिक्स िस्थिते ॥ आकी आहिमें दीय गुरु होय। और उचु होय। चोथी प्लुत होय। पांचवी उचु होय। छटो गुरु होय आगे दीय द्वेत होय। ताउपरीति दीय गुरु होय। फेर एक उचु होय। ताउपरांत बारवी प्लुत होय। तेरवी उचु चोदवी प्लुत होय पंद्रवी गुरु होय। फेर सीखवी समबी उचु होय। ओर फेर च्यार उचुनसी च्यार निशब्द िक्या थारिक थारिक ऽ तगिधिमि । ताहे ताहे ततथारि डे ताहे । नगिधिमि नगनग झें डे धिकटत तिकटत ड तगथिरि । तकथों निश्चेब्द किया आवापक –। विशेषक ।– निष्कामक | प्रवेशक |

सिंहनंद्रनताल इकईस तालो, २१.

सिंहनंदन ताल इकाईस तालो. २१	समस्या.	प्रथम प्लुत ताके आगे अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन	प्रथम सबु ताके आगे अंकहे सो तास सिक मात्रा एक	मात्रा व	मथम द्वत ताके आगे अंकहे सी ताल आही लीक दोय अगरि मन्त	प्रथम दुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल आडी लीक दोय आधि मान	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक दोय मात्रा विदी शालो	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो दोय मात्रा विद्रिहे सो झालो
सिंहनंदन	सहनाणी अस्पर ताल मात्रा.	ने जुत ताल मात्रा (३ ४ ॥े)	उच्च ताल मात्रा - ५	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	HF.	द्रुत ताल मात्रा ०८ =	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।े	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।
	प्रमुखे.	तगाधीमे नगाधीमे प्लुत ताल मात्रा धिमितग	तना	कुक्यरिथारिधाध गुरु ऽ	-	वां	कुर्किट कुर्रिक	थरिकु थरिकु
	चचकार.	थेई विततत थेई थेई	्र चुड	थेई तिवतत	/IC	/to	थेई विततत	थेई विततत
	नाल.	ဆ်	ا نو	w	9.	vi	انه	0

संगीतसार.

सिंहनंदनताल इकइस ताला, राः	समस्या,	म्लाम जनम्ही महनाणी आगे अंकहे सी ताल आगे	प्यम लोकहे सी एक मात्रा	पश्म त्यतकी महनाणी ता आगे अंकहे सो ताल लोकह	सी मात्रा तीन गोल कुंडाली हाथकी परिक्रमा विदी झाली	प्रथम उचुकी सहनाणी आग अकह सा वाल लाकर	सी मात्रा एक कर्म तक है सी		नाना तान कुटान होता होता होय	मधम गुरुका सहनामा जर्मर भागा भाग मधम	विशे साला	प्रथम तव आगे अंकहें सो ताल आगे लिंक एक मात्रा		प्रथम छघु अकह सा ताल लाक ह सा भाता एक		निशब्द दाहिणो हाथकों बाई तरफ चलावणो	
सिहनंदनता	सहनाणी अध्यर ताल मात्रा.	316316	- 40 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10 - 10	TEIU ETE ETT	(a) 36 (a) (b) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c) (c	लघ ताल मात्रा	1 93 -	हिंदी त	(a) x1 &	गुरु ताल मात्रा	(=) hb s	उचु ताल मात्रा	- - -	छचु ताल मात्रा	- 96 -	आवापक	26
	प्रमङ्		तगधिमि	-	ताह ताह ततथार		ताह	तगधिमि नगनग	भुभ	विकिटत	तिकटत	तगथार		1682	F 1		T
	चचकार		शह		थेई तिततत शहें थेडे	-	शहे	थेई तिततत	थेई थेई		थाइ तिततत	थेडे		H	জু	1	জ ন
	# F	416.	99.		9.5.	Ì	9		∞ ~		يخ	us o			2		ب <u>ٰ</u> —

सिंहनंदन इकर्झ तालो, २१.

 चचकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	समस्या.
थिङ	1	विक्षेपक १९	निशब्ददाहिणों हाथकों दाहणी तरफ चलावणों
100	-	निष्कामक २०	निशब्ददाहिणों हाथकों उपरन चलावणों
शह	-1	प्रवेशक २१	निशब्ददाहिणां हाथकों नीचेको चलावणो.

अष्टतालिका ताल आठ तालो, ८.

तछनं लिख्यते ॥ जामें एक अणु होय ओर एक द्वत होय एक दविराम होय एक त्वपु होय ओर एक त विराम होय एक गुरु होय एक प्लुत होय एक त्वपु होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें मुख उपजांवें । सो अष्टतालिका ताल जांनिये ॥ ये ताल आठ तालो हे ॥ अथ अष्टतालिका तालको सरूप लिख्यते ं ेा उं। अथ पाठाक्षर लिख्यते थि जिक्ट∘ धिकिटे अथ अष्टता हिका तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेकों चंचलुटआदिकें गांची तालनसों सातों अंगलेकें देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको अष्टतालिका ताल नामिकेंनों॥ अथ अष्टतालिका तालको तक्यों। तक तक्यों रे तातक तक्यों ऽ तांथिमि तांधिमि ताथों डे थिमियों। इति अष्टतात्तिका ताल संपूर्णम् ॥

अष्टतालिका ताल आठ तालो, ८.

समस्या,	अणुदुतकी सहनाणी अंकहे सो तात तीकहे सो गात्रा नेष्याहे	èlbik itili
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	अणु ताल माना	 -
परमेलु.	ब्य	
चचकार.	(FC	
ताल.	6-	

अष्टतालिका ताल आठ तालो, ८.

			みにいいた	ગ્રહ્માણમાં લાહ ગાઉ લાહા :
ताल.	चचकार.	प्रमिद्धे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	
'n	حار،	किट	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा आधी
m	वत	धिक्ट	द्वि.ताल मात्रा े ३ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो पोण मात्रा
∞ ∞	हुं हैं इंटर	तकथों	उचु ताल मात्रा । ४ ।	उचकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
نو	तथहं	तक तकथों	त्ववि.तात्र मात्रा ो ५ । =	टिवरामकी सहनाणी अंक हे सो तात टीक हे सी डेड मात्रा
w	थेई विववत	तातक तकथों	मुरुताल मात्रा ऽ ६ ॥	गुरकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय
9.	थेई तिततत थेई थेई	तांधिमि तांधिमि ताथॉ	प्टुत ताल मात्रा (हे जुला हाले	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
v	शिक्	धिमियों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्राप विश्वाम विश्वामपे मान,

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीम तालो, ४३. अथ पृथ्वीकुंडली तालकी उत्पत्ति हिल्यते ॥ शिवजीन उन मागैतालनके विचारीक गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें

जग्मेल कहतेहैं ॥थरियों घिमिथकु ५ नकधिधि घिमथों ५ ताहं।थोंथों थोंगिण किणथों ५ नकधिमिथरिदां ५ दांधिमिथरिदां ५ थरिदां थारिदां ५ ताहं। थाडुगु डुगुडुगु डुगुडुगु दुगुडुगु ६ ताहं। डुगुडुगु दांदां ५ ततघल घलघल तथलां ५ नककिण किरिट ५ ताहं। ताहं। वतथा। घिघिघिमि। थोंथों। तना।तग० जग० नग० ता० ताहं। ताहं। नककिण तकथों ५ घिमिधिमितकथों ५ ताहं।थरिकु श्वरिक्क थरिकु े ताहं। किरथरि तदिदां ऽ ताहं। थाया धलांग धलांग डेतगथल घलांग धलांग डेताहं। ताहं। ताहं। तथरिथ। तथरिकु त्मु होय तमुकी एक मात्रा। एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। ताआणे प्लुन होय प्लुन ही तीत्र मात्रा। फेर एक गुरु होय गुरुकी उच्च लघुकी एक मात्रा। एक प्लुत प्लुतकी तीन मात्रा। फेर तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा। ओर एक लघु ओर एक प्लुत और एक द्रोय मात्रा। ओर दोय तषु होय तषुकी एक मात्रा। और च्यार अशब्द जामें अशब्द के तषु की एक मात्रा। तहा प्रथम आवापक । दुसरो खुकी एक मात्रा।एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। फिर एक खबु होय खबुकी एक मात्रा।फिर दीय प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा। च्यार जामे छघु होष छघुकी एक मात्रा। एक गुरु होष गुरुकी दाय मात्रा। ओर अशब्दके च्यारि छघु होष छघुकी एक करि॥ वाको पृथ्नीकुंडली नाम किनों॥ अथ पृथ्नीकुंडलीको लछन लिल्पते॥ जामें पथम दीय गुरु गुरुकी दीय मात्रा। एक ओर दीय गुरु हीय गुरुकी दीय मात्रा।एक उबु हीय उबुकी एक मात्रा।एक प्लुत हीय प्लुतकी तीन मात्रा।फेर एक उबु हीय मात्रा। तहा पथम आवापक। १। दुसरो विक्षेपक। २। तीसरो निष्कापक होय। ३। चोथो प्रवेशक। ४। ऐसो जो वाल विक्षेपक। तीसरी निष्कामक। चोथो पवेशक। फेर च्यार जामें द्रुग होय द्रुगकी आधि मात्रा। ओर दोय उचु होय उचुकी एक मात्रा। बर्तिकेंको चंचलुट आदि पांच मार्ग तालनके द्विकलादि भेरनसों दुगुनिमात्राको मार्गताल ताहि द्विकल कहिये चोगुनी मात्राको मागंताल ताहि चतुष्कल कहिये गुरु दोष मात्राको लघु एक मात्राको प्लेत तीन मात्राको लेके देशी ताल उपपत्र भारियों ऽ तांधिमि । तगांधिमि । धधिगण । गणयों । इति संपूर्णम् ॥

			पृथ्वाङ्	पृथ्वाकुडला ताल ।तथालाच ताला, ४२.
ताल.	च चक्रा.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
9.	थेई तिततत	थारेथों धिमि थकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
o.	थेई तिततत	नक्रधिधि धिग थों	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको झालो
m	थेई	ताहं	ठचु ताल मात्रा । ३ ।	टचुकी सहनाणी अंक हे सी ताट टीक हे सी मात्रा एक
20	थेड़े निततत थेई थेई	थोंथों थोंगिण किणथों	प्टुत ताल मात्रा (३ ४ ।४)	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
نو	थेई विवतत	नक्विमि थ <i>ि</i> द्	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ु	सहनाणी अंक हे सो नाउ ठीक हे सो मात्रा विंदी हाथको झाटो
w	थेई तिवतत	दांधिमि थरिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।े	पहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा विंदी हे सो हाथको झालो
9.	थेई तिवतत	थरिदां थरिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।े	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी सो हाथको झालो
v	Char (B)	ताहं	उपु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

30	,
ताला.	
तियालीम	
ो ताल	ı
. C	
पृथ्वी	

			1296152 R	धा ताळात्रयालास ताला, ४३
ताल.	चचकार,	परमछु.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	समस्या
نه	थेई तिततत थेई थेई	थाडुगु डुगुडुगु डुगुडुगु	प्लुत ताल मात्रा हे १ ॥ े	पथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी हाथको झालो
30.	थङ्	ताहं	त्रवृ ताल मात्रा । १० ।	ो नालं लीक है
93.	थेई तिततत	इगुदुगु दोंदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हे सो हाथका झालो
33.	थेई तिततत थेई थेई	तत्वल घलघल तथलां	दुत नाउ । ं ३ १२	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विदी हाथको झालो
er 67	थेई निततत	नककिण किरिंट	गुरु ताल मात्रा ऽ १३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सां मात्रा दोय विदी हाथको झालो
\$0 ₽	প্র নিজ	ताहं	ट्यु ताल मात्रा । १४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
ร ^ำ สา	ें इंट्र	ताहं	उषु ताल मात्रा । १५ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
w	्राष्ट्र इंडर	ततथा	त्रषु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक -। निशन्द आवापकदाहिणो हाथको बाई तरफ चलावणो

	,		पृथ्वीकुंडली ताल	पृथ्विक्टिकी ताल तियालीस ताली, ४३:
नाल.	चचकार.	प्रमञ्जु.	सहनार्णा अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
3.	শুক্ত মে	धिधिधिमि	उषु ताल मात्रा ल	ताउ ठाक ह सा भात्रा हैणो हाथको दाहाणी तर
36.	हुन इस्	थॉथों	त्रमुताल मात्रा । १८।	त्रघुकी सहनाणा अक ह सा वाल लाक ह पा भाग एक - निशाब्दनिष्कामकदाहिणी हाथको उपरन चलावणी
9,6	(9) (9)	त्यन	उच् ताल माता ल	त्यपुका सहनाणा अक ह ता पाल लाक ह ता गांग ६४ [निशब्दप्रवेशकदाहिणी हाथको नीचेको चलावणी
ů,	/IC	तम	क्रुत ताल मात्रा	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा आधी
23.	/IC	जग	द्रत ताल मात्रा ० २१ =	पथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा आधी
4.	/IC	नग	द्रुत ताल मात्रा ० २२ ==	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सी ताल हीकहे सी मात्रा आधी
8	Ac	तम	द्रुत ताल मात्रा ० २३ ==	द्रतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
38	थड़े	ताहं	उच्च ताल मात्रा । २४ ।	मथम उपुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा एक

धुर्ध्वकुंडली ताल तियालीस तालो. ४३.	समस्या,	पथम तघुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहें सी मात्रा एक	पथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दीय विदीहे सी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दीय दिदी हे सो हाथको झालो	उचुकी सहनाणी अंकहे सा ताल लीकहे सो मात्रा एक	पथम प्लेतकी सहनाणी अंकहे सो नाल लीकहे सो मात्रा तीन विंदीहे सी हाथको झालो गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा	ों सहनाणी अंकहे सो त	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो नाल लीकहे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	प्रथम त्युकी सहनाणी अंकहे सो तात तीकहे सो मात्रा एक
पृथ्वक्रिडली	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उच्च ताल मात्रा । २५ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ।े	गुरु ताल मात्रा ऽ २७ ।े	उच्च ताल मात्रा । २८ ।	प्लुत ताल मात्रा (डेर ।।े)	उद्ग ताल मात्रा । ३० ।	मुरु ताल मात्रा ऽ ३१ ।	उद्घे ताल मात्रा । ३२
	प्तमुखे.	ताहं	नककिण तकथों	धिमिधिमि तक्थों	नाह-	थारिकु थारिकु थारिकु	नाह.	किटथारि तदिदां	ताहं
	चचकार.	यु	थेई तिततत	थेई तिततत	हु। इस्	थेई तिततत थेई थेई	्ट इंड	थेई तिततत	शुरु
	ताल.	3.	w	3.6	36.	38.	o.	3 9.	33.

			पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस ताली.	लीस तालो, ४३.
Kilk	मुख्यार	प्रमल.		समस्या.
-	* 144.5	9	असर वाळ गात्रा.	ि के अंच के सन किन के मो मात्रा तीन
že,	थेई तितवत	धाधा धलंग	ताल मात्रा मध्य	
es.	थेई थेह	धलांग	(3 33 10)	वदा हाथका
20	थेई तिततत शेई थेई	त्राधत धलांग धलांग	प्लुत ताल मात्रा (३ ३४ ।े)	-
3	्ट्र इंड	ताहं	उच्च ताल मात्रा । ३५ ।	सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
wi	্ন ক	ताहं	उद्य ताल मात्रा । ३६ ।	। सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
m,	्छ नेक	ताहं	त्रमु ताल मात्रा । ३७ ।	। सहनाणी अंक हे सी नाउ ठीक हे सो मात्रा एक
N.	18	नथारिथ	छषु ताल मात्रा । ३८ ।	सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे र
· m	थेई तिततत	तथारिकु थरिथों	मुरु ताल मात्रा मुरुकी ऽ ३९ ।	सहनाणीं अकह सा ताल लोकह सा भाना हाथको झालो
00	शु	तांधिमि	तम् ताउ मात्रा तम्	उचुकी सहनाणा अकह सा ताल लाकह पा गाना ६५ —। निशब्दआवाषकदाहिणौं हाथकी बाई तरफ चलावणी

षृथ्वीकुंडली ताल तियालीस तालो ४३.

ताल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर् नाल मात्रा.	समस्या,
. 29	थेड्	तगधिमि	छचु ताल मात्रा । ४१ ।	स्युकी सहनाणी अंकहे सो तास लीकहे सा मात्रा एक ।-निशन्दविश्लेपकदाहिणों हाथको दाहिणी त्रफ चरावनो
ر مر	थिङ्	धधिगण	हवू ताल मात्रा । ४२ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा न निशब्दनिष्कामकदाहिणों हाथको उपरन चलावनो
m* 30	हुं इंड	थों थों	उद्घ ताल मात्रा । ४३ ।	टचुकी सहनाणी अंकहे सो ताट टीकहे सो मात्रा एक _ निशब्दमवेशकदाहिणों हाथको नीचेको चटावनो मात्राषे विश्राम विश्रामणे मान.

लघुप्यवीकंडली ताल गुनचालिस ताली ३९.

जांनिये ॥ इन द्विकल चतुष्कल भेद्ते ॥ गुरु दीय मात्राको लघुँ एक मात्राको लेके देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको लघुपृथ्नी-अथ उच्पृथ्वीकुंडलीकी उत्पाति लिल्पते॥ शिवजीन् उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेको कुंडली नाम किनों ॥ यह ताल गुनचालिस ताली है ॥ अथ लघुपृथ्वीकुंडलीको लछन लिल्यते ॥ पथम जामें तीन गुरु होय एक मात्रा जांनिये ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा जांनिये ॥ जैगमे दीय तत्तु होय । तत्तुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फैर वंचत्पुट आदिकें पांची तालनकी द्रुति मात्रा होय तब द्विकल भेर जांनिये ॥ ओर उन मानसों चोगुनी मात्रा होय तब चतुष्कछ गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ओर तीन छषु होय । छषुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ओर दाय उचु होय । उचुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ एक उचु होय । उचुकी

संगीतसार

तीन गुरु होष । गुरुकी दीय मात्रा जानिये ॥ ओर दाये उघु होय । उघुकी एक मात्रा जानिये ॥ फर तीन गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा जांनिये॥ एक तबु होय। तबुकी एक मात्रा जांनिये॥ फर च्यार गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये॥ एक गाँच गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ऐसी जो ताल ताहि अधुण्यीकुंडली जांनिये ॥ यह पिंगल किकरि पृथ्वी-उचु होय। तघकी एक मात्रा जांनिये॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा जांनिये॥ फेर एक उचु होय। तघुकी एक मित्रा जांनिये ॥ ओर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ फेर एक उघु होय । उघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ ओर कुंडसी है ॥ यह तास्य गुनचासिस तास्रो है ॥ अथ समुपृथ्यीकुंडसीको सधन सिर्स्यते ऽऽऽ॥।ऽ॥ऽ।ऽ॥ऽऽ॥ ऽऽऽ।ऽऽऽ।ऽ।ऽऽऽ।ऽऽऽऽअथ पाठाक्षर लिल्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हैं॥ थरिकिट थरिकिटऽ वत्थिरि थरिकट ऽ किटथरि तत्थरि ऽ ताकिट । ताकिट । ताकिट । तत्तिकट थोंगा ऽ ताहं । ताहं । ताकिट ताकिट ऽ ताकिट । ततकिट थोंमा ऽ ताहं । थोंमा । थोंकिट थोंथों ऽ ताकिट ततकिट ऽ ततकिट ताकिट ऽ तत्था । ताहं । तततत तत्था ऽ धुमु धुमु धुमुक्टि ऽ तगधिमि धिमिधिमि ऽ धिधिक्टि । धुगुदां धुगुदां ऽ धुगुद्दां धुगुद्दां ऽ धाधिगिन गिनथों ऽ धाधिगिन गिनथों ऽ ताहं। उजगज मजगज ऽ मटाकेट । मटाकेट किटाकेट ऽ किटिकट तिककिट ऽ धिधिकिट थोंथों ऽ थोंगा। तगथिमि धिमिधिमि ऽ तगतग घिमिधिमि ऽ ताधिमि तगधिमि ऽ तक्यों थोंगा ऽ धिधिगिन थोंथों ऽ इति त्रघुप्थीकुंडली तात्र संपूर्णम् ॥

अथ लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
a	315 Page	थरिकट	गुरु ताल मात्रा	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा दीय
	त्र ।वववव	थारिकिट	5 9 15	बिदीहे सी हाथकी झाली

पष्ठो तालाध्याय-लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो. १०७

	0 E	समस्या. मथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लोकहे सो माजा है सो हाथको झालो है सो हाथको झालो है सो माजा हुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा तुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा तुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा जुककी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा लेकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा लेकुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माजा	न न न न न न न न न न न न न न न न न न न	गरमहु. श्रीसिकट वाकिट वाहिं वाहं	धुई तिववव धुई तिववव धुई तिववव धुई तिववव	[
विहिं। १ तमुका सहनाणा अक ह सा ताल	लघ नाल मात्रा	लघुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा एक	0	ताह	in S	જં
	उ मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा		- ,			
नाहें। ' , जम्म सहनाणां अक ह सा ताउ ठीक हे सो मात्रा		सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा	वाल	ताहं	रहा जि	0.
. थेई ताहं एषु पाल भाता अपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा तह्म ताल मात्रा						
. थेई ताहं उच्च ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा । ८ । तम् ताल मात्रा । ८ । तम् ताल मात्रा । ८ । तम् ताल मात्रा		बेदी हाथको झालो		थोंगा		·.
. थेई ताहं उप । अर्ड ताहं उप ताल मात्रा त्यक्की सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	. योगा ८ ७ । विदी हाथको झालो	सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा	पाछ	त्ताकट	शहे निततत	9
. थेई तिततत योंगा ऽ ७ ।े विदेश हाथको झालो अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा अर्थ हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विदेश हाथको झालो लेक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विदेश हो सात्रा सहा एक विदेश हो सात्रा सहा सहा सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विदेश हो सात्रा सात्रा एक विदेश हो सात्रा सात्रा एक विदेश हो सात्रा सात्रा एक विदेश हो सात्रा सात्रा एक विदेश हो सात्रा सात्रा एक विदेश हो सात्रा सात्रा हो है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से सात्रा सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है है से साल सात्रा है से साल साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल साल सात्रा है से साल सात्रा है से साल साल साल साल साल साल साल साल साल साल	थेई तिततत योगा ऽ ७ ।े विद्री हाथको झाले		-			
धेई तितत्त तर्तिकट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा हे भी मात्रा छोई तर्ति ताहं छुद्र ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक	थेई तिततत ततिकट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा थेई तिततत थोंगा ऽ ७ ।े	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा	न व	ताकिट	थुड़े	w
थहें ताकिट त वचु ताल मात्रा लच्चिमी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक तितितत त योंगा ऽ ७ । विदेश सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा थेहें ताहं लच्च ताल मात्रा लच्चकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक हैं है से ताल लीक हे सो मात्रा एक लच्च ताल मात्रा लच्च ताल मात्रा लच्च ताल मात्रा है सो ताल लीक हे सो मात्रा एक लच्च ताल मात्रा है है सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	थेई तितत्त्त यॉगा ऽ ७ । स्विधिक सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक तित्तित्त यॉगा ऽ ७ ।		-			
भेई तितत्त्व ताकिट ताकि मात्रा त्विक्की सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक ताकि ताकि नात्रा प्रकार के से ताल ताकि हो सो मात्रा है से ताल नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से मात्रा एक नाहर है से नात्रा है से मात्रा एक ने से नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा नात्रा है से नात्रा से नात्रा है से नात्रा है से नात्रा से नात्रा है से नात्रा से नात	थेई ताकिट तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा तह मात्रा है सी तह सी मात्रा है सी तह सी मात्रा है सी तह सी मात्रा है सी तह सी मात्रा है भी मात्रा है सी तह सी मात्रा है सी तह सी मात्रा है सी नात्रा है सी मात्रा ह	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे मो मात्रा	माञ	ताकिट	थिङ्	نح
थोई ताकिट प उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक प्रेहे ताकिट प लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक प्रेहे वह जुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक प्रेहे वह लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा ताल निक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा ताल निक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा ताल निक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा ट्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ट्रा लघु ताल मात्रा ट्रा	थेई ताकिट लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक सिक्तित्वत सांकिट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक सिक्तित्वत थोंगा ८ ७ ।े सिन्ति हाथको झालो	तह्माणा अक ह ता वाक ठाक ह सा मात्रा	- 20 -	, + 11,	ř	· •
थहें ताकिट ताकिट ने प्र । उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक लिये हैं तितत्त प्र । हे । इसे सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक योगा ऽ ७ । विद्य ताल मात्रा लिये हो सी ताल लीक हे सी मात्रा एक विद्य ताल मात्रा लिये हो सी ताल लीक हे सी मात्रा एक विद्य ताल मात्रा लिये हो सी ताल लीक हे सी मात्रा एक ने लाह मात्रा लिये हो सी ताल लीक हे सी मात्रा एक ने लाह मात्रा ने लिये हो सी ताल लीक हे सी मात्रा एक ने लिये हो सी मात्रा एक ने सी मात्रा सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी	थहें ताकिट लघु ताल मात्रा त्वकृति सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट में मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा एक विकेष्ट सो मात्रा है सो ताल लिक हे सो नाल लिक हे सो मात्रा है सो नाल विकेष्ट सो मात्रा है सो नाल विकेष्ट सो मात्रा है सो नाल विक्रिक सो मात्रा है सो नाल नाल सो नाल नाल सो	4 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	नाउ	नाकिय	9,6	8
थेई ताकिट उपु ताल मात्रा तपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ताकिट ताकिट ने प्रे । अपूर्व ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विदेश तितत स्थाना उप्त ने सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक स्थेई तितत स्थाना उप्त ने सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विदेश हो सात्रा ने स्थे सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ने लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ने लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ने लघु ताल मात्रा ने ने लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ने लघु ताल मात्रा ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने	थेई ताकिट लबु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक विदेश ताकिट गुरु ताल मात्रा कुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक विदेश ताल मात्रा उपहें तिततत थोंगा उउ। ।	हे सी हाथको झालो	w	तत्यरि		÷
थेई ताकिट 3 १ । हचुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक थेई ताकिट उचु ताळ मात्रा उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत वांगा ऽ ७ । विदी हाथको झाठो थेई ताहि उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक थेई ताहि । ६ । थेई ताहि । ८ । थेई ताहि । ८ । छचुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक लेह सो मात्रा एक	थहें ताकिट ताकिट । ४ । उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक विदेश ताकिट विदेश से मात्रा एक विदेश ताकिट विदेश सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक विदेश ताकिट विदेश सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक विदेश ताकिट विदेश सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा उधेहें तिततत थोंगा ऽ ७ । विदेश हाथको हाछो	सहनाणी अंक हे सो नाउ ठीक हे सो मात्रा दोय	वील	िकटथारि	शेर्ट निततत	r
थेई तितत्त किटथीर उ शे तितत्त के के सी ताल सीना दीय थेई ताकिट उ १ । उवकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी माना एक थेई ताकिट गुरु ताल माना उवकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी माना एक थेई तिततत गुरु ताल माना उपकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी माना एक थेई ता के । प्रकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी माना एक अई ता ह । <td>थह तितत्त तत्तिक त्राकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय निया के ताकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक लिक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक निया के ताकिट थह तितत्त के विके तिक्त ता के निक्की सहनाणी अंक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक योंगा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक लिक हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक विके हे सो नाल लीक हे सो नाल लीक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक विके हे सो नाल लीक हे सो मात्रा है से नाल के हे सो नाल लीक है सो नाल लीक लीक लीक लीक है सो नाल लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक है सो नाल लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक ली</td> <th></th> <td>~</td> <td>थरिक्ट</td> <td>1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1</td> <td>÷</td>	थह तितत्त तत्तिक त्राकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय निया के ताकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक लिक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक निया के ताकिट थह तितत्त के विके तिक्त ता के निक्की सहनाणी अंक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक योंगा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक लिक हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो मात्रा एक विके हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक विके हे सो नाल लीक हे सो नाल लीक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा एक विके हे सो नाल लीक हे सो मात्रा है से नाल के हे सो नाल लीक है सो नाल लीक लीक लीक लीक है सो नाल लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक है सो नाल लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक लीक ली		~	थरिक्ट	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	÷
थहे पिततत प्रिकेट २ १ । पुरकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय के ताकिट थहे ताकिट त्याकिट उच्च ताल मात्रा त्वकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थहे ताकिट ताकिट पुरकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थहे तिततत ताकिट गुरु ताल मात्रा लवुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थहे ताकिट गुरु ताल मात्रा जुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थहे ताकिट गुरु ताल मात्रा जुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थहे ताह मात्रा उच्च ताल मात्रा तहकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक अहे ताह मात्रा ताह मात्रा ताह मात्रा उच्च ताल मात्रा ताह मात्रा ताह सात्रा उच्च ताल मात्रा ताह मात्रा ताह सात्रा उच्च ताल मात्रा ताह मात्रा ताह सात्रा	थहे तिततत किटथि गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा दोय थहे तिततत ताकिट उ १ । े हे सो हाथको झाछो हे सो हाथको झाछो थहे ताकिट उ १ । े हे सो हाथको झाछो तितक ठीक हे सो मात्रा एक थहे ताकिट उ व ताल मात्रा उ व के हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक थहे तितत ततिकट गुरु ताल मात्रा उ व के हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक थहे तितत योगा उ । े किकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक	मात्रा	गुरु ताल मात्रा	नत्यरि	शहे निततत	n
थहे तिततत प्रिकिट ऽ २ । े विद्येत सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोय विद्येत ताकिट प्रिकिट ३२ । े हे सी हाथको झाले प्रिकिट साल मात्रा दोय के हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा देय के ताकिट प्रिकिट ताकि मात्रा देव पर मात्रा तक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक विद्ये तिततत प्रिक्त ताकिट मात्रा मात्रा के हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक विद्ये तिततत प्रिक्त ताकिट मात्रा मात्रा के हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक विद्ये तिततत प्रिक्त ताकिट मात्रा मात्रा के हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक विद्ये ताल मात्रा हे सो मात्रा एक विद्ये ताल मात्रा हे से सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक विद्ये ताल मात्रा हे से मात्रा एक ने ताकि मात्रा एक मात्रा हे सो मात्रा एक मात्रा हे से मात्रा एक ने ताकि मात्रा ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने ने	थेई तिततत तरथिर गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोष थेई तिततत कार्यिक ताले मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट गुरु ताल मात्रा जुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तितत गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तितत गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तितत गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा थेई तितत गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा		अक्षर ताल मात्रा.	99		
थेई तिततत तथिरि । अस्तर ताल मात्रा प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल टीकहे सो मात्रा दो विदे तिततत वर्गिकेट । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	थेई तिततत तत्थिरि जुर ताल मात्रा प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोय थेई तिततत बहुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट उ र । । हे सो हाथको झाले थेई ताकिट ताकिट छेई ताकिट ताकिट ताकिट थेई ताकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक थेई ताकिट गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक थेई तितकिट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक थेई तितकिट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा थेई तितकिट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा	HHEZI	सहनाणी	प्रमल.	च च कर्	k
भ्रम्हे तित्तत्त तत्यिर गुरु ताळ मात्रा प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा दो प्रथ है तित्तत्त तत्यिर ऽ २ । हे से सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा देप हे ताकिट विद्या तत्त्यिर ऽ ३ । हे से हाथको झाले हे सो मात्रा देप हे से ताकिट ट वचु ताळ मात्रा छोई तित्तत्त तत्तिकट गुरु ताळ मात्रा छोई तित्तत्त ततिकट गुरु ताळ मात्रा ठ छुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ततिकट गुरु ताळ मात्रा उच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ततिकट गुरु ताळ मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा उच्चे ताळ मात्रा उच्चे ताळ मात्रा उच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा उच्चे ताळ मात्रा ट । ८ । हच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा ट । ८ । हच्चे ताळ मात्रा टच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा ट । ८ । ८ । हच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा वच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा वच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा वच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा वच्चे ताळ मात्रा वच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे ताळ मात्रा वच्चे सहनाणी अंक हे सो ताळ टीक हे सो मात्रा एक वच्चे साळ मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हो सो वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हे सो मात्रा वच्चे हो सो वच्चे हो सो वच्चे हो सो वच्चे सो वच्चे हो सो वच्चे हो सो वच्चे सो व	ब्रम्ह तिततत सहताणी समस्ता. समस्ता. थेई तिततत वाकिट २ १ । प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय के से ताल लीक हे सो मात्रा दोय के हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट लेख ताल मात्रा ताकिट ताकिट ताकिट ताकिट ताकिट मात्रा लेखकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट न ५ । ताकिट न ५ । लेखकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक थेई तिततत ताकिट न ६ । न ६ । न ६ । न ६ । न ६ । न १	ताल थुन बालात ताला	ショかっちゃんのシ			

			ल घुष्यीकुंडल	लेखुर्थकीकुँडली ताल गुनचालीस ताली ३९.
ताल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	मस्या,
0	थेई तिततत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
99.	्ड इंड	ताकिट	स्यु ताल मात्रा । ११ ।	टचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
9 	थेई तिततत	तत्तिकट थांगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको झालो
e.	(A)	ताहं	डघु ताल मात्रा । १३ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक ह सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
30 50	शुरु	थॉगा	उच्च ताल मात्रा । १४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
ئې	थेई तिततत	थोंकिर थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।	गुरकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हार्थको झालो
w	थेई तिततत	ताकिट ततकिट	मुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय बिंदी हाथको झाले।
96	थइ तिततत	तत्तिकट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १७ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय बिदी हाथको झालो

षष्ठो तालाध्याय-लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो. १०९

38.	समस्या	सो ताल लीक हे सी मात्रा एक	गंल ठीक हे सो मात्रा	सी ताउ ठीक हें सी मात्रा दीय हे सी झाटो	हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको शालो	हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दोय बिंदी हाथको शालो	सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	हे सो ताउ ठिक हे सो मात्रा दीय बिंदी हाथको झालो	हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
लघुष्टयोक्टेडली ताल गुनचालीस तालो ३९.		उ मात्रा ट्रम्कि सहनाणी अंक हे	उ मात्रा उ । उ ।	उ मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक है । । ।	मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक ।े	मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक । ।	स मात्रा स्थित सहनाणी अंक हे सी	मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक ।े	मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक ।े
ख	सहन अक्षर ताल	न्धु तान । १८	म्बर्ध ताम्ड । १९	गुरु ताल ऽ २०	गुरु ताल ऽ २९	मुरु ताल ऽ २२	हिष् तास । २३	गुरु ताल ऽ २४	गुरु ताल ऽ २५
	परमछु.	वत्था	ताहं	ततत्व तत्था	धुमध्म धुम किट किट	तगधिमि धिमि धिमि	ह्मिह्मिह <u>्</u>	धगुदां धुगुदां	धुगुड्दां धुगुड्- दां
	चचकार.	થકે	થકું	थेई तिततत	थेई तिवतत	थेई तिततत	थेड	थेई तिततत	थेई तिततत
	ताल,	36.	8.	٠ •	23.	3.5	5.	ર્8.	۶ [°]

- 1
8
पाछा
100
गुनचालीस
ताल
<u>(a</u>
9
पुरुष
2

चेचकार. परमेलु. अक्षर ताह मात्रा.	थेई तिततत मिनयों ऽ २६ । हाथको झाले	थेई तिततत मिनथों s २७ हाथको सालो	थेई ताहे मात्रा सहमाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक । २८	थेई तिततत मजगज गरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिदीहे सजगज s २९।८	थेई मटाकट नियु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक	थेई तिततत मटिकट गुरु ताल मात्रा गुरुकी णी अंकहे सा ताल लीकहे सा मात्रा दोय बिंदी किटिकट . ऽ ३१ । ।	थेई तिततत तिकिक्टि s ३२ । । गुरुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा दीय बिंदी झालो	थेई तिततत सिधिकिट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा दीय बिंदी झालो
च्चकार.	थेई तिततत	थेई तिवतत	প্র	थड़े तिततत	शुरु	थेई तिततत		थेई तिततत
ताल.	W.	3.	3.	30	o	39.	3.5	43

षष्ठो तालाध्याय-लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो. १११

नाल.	चचकार.	प्तमलु.	सहमाणी असर ताल मात्रा.	समस्या,
20	্ব কুট	थोंगा	उम्र ताल मात्रा । ३४ ।	उचुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
ا عن	थेई तिततत	तगधिमि धिमिधिमि	मुरु ताल मात्रा ऽ ३५ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल खीकहे सो मात्रा दोय बिदीहे सी झालो
wi	थेड़े तिततत	तगतग धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३६ ।	गुरुकी भहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिदीहे सो झालो
9.	थेई तिततत	ताधिमि हमधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३७ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा दीय बिदीहे सी झाली
200	थेई तिततत	तकथों थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ३८ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिदीहे सी झालो
or m	थेई विततत	धिधिगिन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३९ ।	गुरकी सहनाणी अंकहे सो ताउ ठीकहे सो मात्रा दोय बिदीहे सी झाड़ो

ल्बुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

तासकी उत्पत्ति सिरुयते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नारचमें वर्तिवेको चंचरपुर आदिक पांचतालनसों छषु एक मात्राको टलुत तीन मात्राको गुरु दोय मात्राको द्वत आधिमात्राको लेकें अथ पातालकुंडली

टाक्षर जिल्ह्यते॥ याहिको जोकिकमें परमञ्जू कहत है॥ ताथै। ततत्थ तततत् थैथै ऽश्वाथा किटकिट ऽकिट किट । किटथीं ताथों तत-थों ऽतेतत तत्था ऽताहं। हंती ताहंऽताकिन किनकिन तकुदं ऽकुकुथों। थुंथुं गाथुं गाथुं ऽथुंगा ताथिमि तत्तिमि ऽत्तत् तत घिमिधिमि ऽधिमिधिमि तततत ऽमटिकट किटिकट ऽ मटिकट ताता थोंगा ऽतततत् थोंगा ऽथोंथों थोंगा ऽथा था थुमिकेटें ऽ धुमुकिट थाडिथरि ई कुंथरि डे कुकुथरि । कुकुथा थैथा ऽथाथै । थाथै थाधत धत्मक डे धत्मक धतमक ड मतमक । मैंतैघत । घत घत गिनमधि ऽ गनयधि गनथौं ऽ तततत थैता ऽ किटिकिट । किटतत किटतत किटयों डे तत थों ० एक मात्रा ॥ फैर एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ और एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक उघु होय उघुकी एक मात्रा ॥ फैर दोय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और तीन गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ फैर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और तीन गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ फैर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ आगे तीन गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ फैर एक प्लुत होय प्लुतकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होये गुरुकी दीय मात्रा ॥ फेर एक उचु होय उचुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय उचु होय उचुकी एक मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ ऐक छचु होय छघुकी एक मात्रा ॥ एक टलुत होय टलुतकी तीन मात्रा ॥ और दोय द्वत होय दुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक समु होय समुकी एक मात्रा ॥ ओर स्यार समुअशब्द होय । तहां पथम आवापक । १ । दुसरो विशेषक । २ । तीसरी गतालकंडलीको सक्त लिल्यते। ३८।३८।६८।६८८८८८८८८८।८।८८।।८८८।३००।(।।।।) अथपा-देशी ताउ उत्पन्न किरि ॥ वाको पाताउ कुंडली नामिकिनों ॥ अश्व पाताल कुडलीको लखन लिल्पते ॥ जा तालमें एक तघु होय छंचुकी एक मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक छघु होय छघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ ओर एक छबु होय हबुकी निष्कामक । ३ । चीथों प्रवेशक । ४ । ऐसी जो ताल ताहि पातालकुंडली जांनिये ॥ यह ताल गुनवालिस ताली है ॥ अथ नतथाँ । कुकुथिर । थोंथरि । ततादीध । गणथाँ । इति पातालकुंडली ताल संपूर्णम् ॥

षष्ठो तालाध्याय-पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो. ११३

			पातालकुंडल	पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो, ३९.
नाल.	च्यकार.	परमळु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	HH
٠٠	थेई तिततत थेई थेई	ताकिन किन किन तकुदं	10,0	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्या विंदी झालो
90.	थुई	कुकुर्थो	ल्बु ताल मात्रा । १० ।	हिनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा ए
11.	थेई तिततत थेई थेई	धुंधुं गाथुं गाथुं	दलत ताल मात्रा (३ ११ ॥)	। ताल लीक हं सो माज्य परिकमा विदी झालो
32.	थेई निततत थेई थेई	थुंगा ताधिमि तत्त्रधिमि	प्टुत ताल मात्रा (३ १२ ॥)	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सां ताल लांक ह सा मात्रा तान गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
9 8.	थेई तिततत	तततत थिमिथिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक मात्रा दीय विंदी झालो
30	थेई तिवतव	धिमिधिमि तततत	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी तांट ठीक मात्रा दीय विंदी झाटो
ه. ع:	थेई तिततत	मरकिट किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।	हिनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय
w	थई तिततत थेई थेई	महाकृट ताता थोंगा	च्छुत ताल मात्रा (<u>३ १६ ॥</u> ८)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सां ताल लोक हे सा मात्रा तान गोलकुंडाली हाथकी परिकमा विंदा झालो

خد	ı
6	ı
***	ı
ئىر	ì
। ताली,	1
=	ı
	1
F	ı
æ	ı
TE	l
=	ı
P	ı
1	Į
10/	Ί
15	1
E	ı
K	ı
4	ı
12	ı
M	ı
• 15 9	ł
पातालकुंडली ताल गुनचालीस त	
E	1
E	
5	I
	1

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
9	थेई तिततत	तततत थोंगा	गुरु ताल माता ऽ १७ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक मात्रा दीय विंदी झालो
36.	थेई निततत	थोंथों थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालो
8.	थेई तिततत	थाथा थुमकिट	मुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।े	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी झाली
30.	थेई तिततत थेई थेई	धुमुकिट थडि थरि कुंथरि	प्लुत ताल मात्रा (डे २० ॥ <u>े</u>)	टलकी सहनाणी अंक हे सा ताल ठीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
29.	हुं हैं इंग्रह	कुकुथरी	उचु ताल मात्रा । २१ ।	4
2.5	थेई तिततत	कुक्था थैथा	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालो
25.	्छ	थाथै	त्रपु ताल मात्रा । २३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
8	थेई तिततत थेई थेई	थांथे थांधह धहवह	प्लुत ताल मात्रा (डे २४ ॥ <u>६</u>)	प्कुतकी सहनाणी अंक हे सो ताछ छीक हे सो मात्रा तीन गोछ कुंडाछो हाथकी परिक्रमा विंदी झाछो

			पाताळकुं ड ्	पाताळकुंचली ताल गुनचालांस ताला, ३९.
नाल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
gi a	थेई तिततत	धतभत धतभत	गुरु ताल मात्रा ऽ २५॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विदी झाली
wi	थहं	हालहाल	उषु ताल मात्रा । २६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
9,	थि	धलधल	छघु ताल मात्रा । २७।	तो मात्रा
۶.	थेई तिवतत	धटघट गिन धर्घि	गुरु ताल मात्रा ऽ २८ ।	मात्रा
8,	थेई तिततत	गनधर्षि गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २९।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो
90.	थेई विववत	तततत थता	गुरु ताल मात्रा ऽ ३० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल खीक हे सी मात्रा दीय विदी झाछो
39.	थेई	किटिकट	त्रमुताल मात्रा । ३१ ।	गहनाणी अंक ह सो ताल लीक हे सो मात्रा ए
4	थेई तिततत थेई थेई	किटतत किटतत किटथोँ	प्लुत ताल मात्रा (डे ३२ ॥)	प्तुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो

नाल.	चचकार.	प्रमुख्.	सहनाणी समस्या,	
				4
m'	elic .	व्य	ं ३३ = दुतका सहनाणा अक ह सा ताल लाक ह सा मात्रा आधा	ना आधा
20	/tc	न्त्र	- द्रुत ताल मात्रा उ ३४ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल छीक हे सो मात्रा आधी	ग आधी
ين	क्ष	ततथों	उपुताल मात्रा महनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	त्रा एक
w	थर्ड	कुकुधरि	- छचु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक त । ३६ । -। निशब्दआवापकदाहिणो हाथ वाहणी त्रफ चलावनो	ा एक ताई चलावनों
9.	थिक	थांथरि	ट्यु ताल मात्रा त्युकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक । ३७ । निशब्दविक्षेपकदाहिणो हाथ दाहिणीत्रफ चलावनों पतिककी त्रफ	त्रा एक विनों पतिककी त्रप
v.	थड़	ततादृधि	ज्यु ताल मात्रा अपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक । ३८ । निशब्दनिष्कामकदाहिणो हाथ उपरने चलावनों	त्रा एक गवनों
0.	्ड ह	गणधाँ	उपु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक । ३९ । े निशब्द प्रवेशक दाहिणो हाथ निवेंनो चलावनों	त्रा एक सवनों

नाट्यमे वाद्य नुद गीत इंद्रलोककुंडली ताल चवालीम तालो, ४४. इंद्रलोककुंडलीकी उत्पत्ति लिक्पते॥ शिवजीने उन मागेंतलनम विचारके अध

996 बरितिषेकों चंचलुटादि पांचों तालनसों। उपु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके देशी ताल उत्पन्न करि-वाको। इंद्रलोककुंडली नाम किनो। यह ताल चवालीस तालो है। अथ इंद्रलोककुंडलीको लखन लिख्यते॥ जामें दोय लघु

Turiniuit, थौंवा किटवंत किटवंत डे किटवा किटवा ड तत्था वाहं ड तत्था वततत ड तत्था धुमुधुम धुमुक्किट डे तगधिमि धिमिधिमि थिमि किट डे धुगुड्दां धुगुड्दां धुगुड्दां डे धुगुड्दां धिप्यमन मनथों डे तक्षिमि थिमिधिमि मनथों डे ताहं ताहं ड जगजम जगजमें ड गजमट । मटाकेट मटाकेट ड किटिकट किटिकेट ड किटथों । थोंगा । तगधिमि तगधिमि तगतम डे धिमिधिमि तांधिमि ड तगिषिमि तगतग ऽ घिमिधिमि । तांत्रिमि घिमितग ताथों ऽ थोंगा । तकथों थोंगा ऽ ताहं । तकथों । थोंगा । धिमिधिमि थोंगा ऽ हीय। उचु एक मात्राको जांनिये॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा जांनिये॥ फेर एक उघु होय। उघुकी एक मात्रा। अथ पाठाक्षर जिल्ब्यते ॥ याहिकों जौकिकमें परमदु कहतेहें थारिकिट । थारिकिट । तत्थारि थिरिकिट ऽ किटथारि । तत्थारि ताकिट ताकिट ऽ किटतत किटथों ऽ ताहं ताहं ऽ ताकिट किटिकिट ऽ तांतां। ततकिट तततत किटथों े ताहं। थोंगा थोंकिट ऽ

॥हं । वाहं । घिषिगन । थोंथों । इति इंद्रलेक्कुंडली संपूर्णम् ॥

पष्ठो तालाध्याय-इंद्रलोक ंडली ताल चवालीस तालो. ११९

परमहु. अध्यय ताद्य माजा	वि –	छचु ताल मात्रा । २ ।	तत्थिरि गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा दोय थिरिकिट ऽ ३ । ।	किटथरि । ४। उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	थिर तिकट प्लुत ताल मात्रा प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन वाकिट (३ ५ ॥८) मोल कुंडालो हाथकी परिकमा विदी झालो	गुरु तात मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे ऽ ६ ।	ाहं ताहं ऽ ७ । विदी झाछो	ताकिट गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय किटकिट ऽ ८ ।
- H			तत्थरि गुरु ताल थिरिकिट ऽ ३	किटथारि । ४	केट प्लेप ि			भू भू भू
चचकार.	श्रु	्छ ।	थेई विवतत	खुड़े इंडे	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत	थेई तिततत	थेई तिततत
ताल.		'n	m	ဆ	; ئو	w	9.	v

			इंद्रलोक्डेंडली ताल चवालीस ताली, ४४.	
नाल.	च चकार.	प्रमुखे.	सहनाण। अक्षर ताळ मात्रा.	
જં	हें इंड	वीवां	उचु ताल मात्रा टचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक मात्रा एक । ९ ।	उ टीक मात्रा एक
90.	थेई तिततत थेई थेई	ततकिट तततत किटथां	प्लुत ताल मात्रा प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा ती (३ १० ॥८) गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी झालो	उ ठीक मात्रा तीन कमा विदी झाछो
99.	्रिक रहे	ताहं	उचु ताल मात्रा समुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक । ११ ।	उ लीक मात्रा एक
93.	थेई तिततत	थोंगा थोंकिट	गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ऽ १२ ।	ं ठीक मात्रा दीय विंदी झाठो
93.	थेई तिततत थेई थेई	थोंता किटतत किटतत	प्हुत तास्त्र मात्रा प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो तास्त्र सिक हे सी (डे १३ ॥८) गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी	छ छिक हे सो मात्रा तीन परिक्रमा विंदी झाछो
98.	थेई तिततत	किटता किटता	गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो तील ऽ १४ । विदी झाला	उ ठीक हे सी मात्रा दोय
2.	थेई तिततत	तत्था ताहं	गुरु तास मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ऽ १५ ।	उ टीक हे सो मात्रा दोय
w	थेई तितंतत	बत्था वववव	मुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ऽ १६ ।	ठ ठीक हे सो मात्रा दोय ठो

पष्टो तालाध्याय-इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो.

इंद्रलोककुंडली ताल चवालीस तालो, ४८.	सुमम्बा	प्टुनकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा बिंदी झालो	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा बिंदी झालो	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडाली हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक मात्रा एक	प्टुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिकमा बिंदी झालो	प्तुतकी गर गरी अंक हे सी तात लोक भाग तान गांत कुंडाली हाथकी परिकमा बिंदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय बिंदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी तात ठीक हे मात्रा दीय बिंदी झालो
इंदलोक्	महनाणी अक्षर ताल मात्रा.	प्लेत ताल मात्रा (३ १७ ॥)	प्टुत ताल मात्रा (ं १८॥८)	प्टुत ताल मात्रा (डे १९॥८)	छषु ताल मात्रा । २० ।	प्लेत ताल मात्रा (हेर गाउँ)	प्टुन वाल भावा (३ २२ ॥ <u>०</u>)	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।
	प्सम्बु.	तत्था धुमुधुमु धुमुक्टि	तगधिमि थिमि थिमि थिमिक्टि	धगुद्दां धगुद्दां धगुद्दां	ध्युद्धः	धुगुड्दां धिधि गन गनधों	तकापीम धिमि धिमि गनथों	ताहं नाहं	जगजग जग जग
	चचकार.	थेई निततत थेई थेई	थेई तितनत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	(P)	थेड़े तिततत थेई थेई	थेई जिलत थेई थेई	थेहैं तित्तत	थेई विवतत
	ताल.	9.	gc.	٥,	٠, ،	29.	۵. د	8.	30 A'

_			1				ब्रे	
हुनाणी ताह मात्रा.	डर्षुकी सहनाणी अंकहे सो ताल टीकहे सी मात्रा एक	सहनाणी अंकहे सो ताउ टीकहे सो मात्रा बिंदी झाटो	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झाले।	छघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक	त्युकी सहनाणी अंकहे सो तात तीकहे सो मात्रा एक	प्टुतकी सहनाणी अंकहे सो तात तीकहे सो मात्रा तीन हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो	सहनाणी अंकहे सो ताल टीकहे मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	हम् ताल मात्रा । २५ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ।	गुरु ताल मात्रा ऽः७।	हबु ताल मात्रा । २८ ।	हबु ताल मात्रा । २९ ।	त्वृत ताल मात्रा (३ ३० ॥८ू)	गुरु ताल मात्रा ऽ ३१ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३२ ।
प्रमिलु.	गजमट	मटकिट मटाकेट	किटकिट किटकिट	िकटयों	थॉगा	तगधिमि तम धिमि तमतग	धिमिधिमि तांधिमि	तगधिमि तगतग
बचकार.	eko.	थहे तिततत	थेई तिवतत	्ट्र रहे	क्र	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत	थेई तिततत
नाल,	3.	wi	9.	3.	8.	o,	. a 9.	8

20
ताले,
वालीस
ताल च
कुडली
इद्रलोक

			इद्रलाक् कुड्र	हद्लाक्ष्डेडला ताल चवालास ताला, ४४.
ताल.	चचकार.	परमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	ं समस्या.
m	cher (3	धिमिधिमि	छबु ताल मात्रा । ३३ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
30 m	थेई तिततत थेई थेई	तांधिमि धिमि- तग ताथों	. पुरत ताल मात्रा $(3 + 3 \times 10^{-1})$	प्टुतकी महनाणी अंक हे भो वाल सीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडासो हाथकी परिक्रमा बिंदी झासो
ร่ พ	લ્ટ	थोंगा	हवु ताल मात्रा । ३५ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ रीक हे सी मात्रा एक
m.	थेई तिततत	तकथों थोंगः	गुरु ताल मात्रा ऽ ३६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाल टीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
3.6	થકે	ताहं	टचु ताल मात्रा । ३७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
36.	[%] চিন্তু নি	तकथों	हबु ताल मात्रा । ३८ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ हीक हे सो मात्रा एक
85	थड़	थोंगा	छबु ताल माता । ३९ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
° 20	थेई तिततत	धिमिधिमि थॉगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ४०॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाठ होक हे सी मात्रा दीय बिदी झाठो

l
ŀ
۱
۱
1
١
1
,

	न्यस्ति महनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा एक	नि:शब्द—आवापक	HTST	भाजा उचुका सहनाणा अक्हें सा वाल अभ भाग अभ	नि:शब्द —विक्षपक	मात्रा त्वक्रा महनाणा अक्र मा वार वार गाग भ	निःशब्द्-निष्मामक	AN INIO THE CONTRACT OF THE CO	मात्रा त्वका महनाणा अकह ता वाल लाक नाग	
सहनाणी अध्यय नास मात्रा	अस्तर पाए गा	जब पाल मा		लघ् ताहः भात्र	~ ~ ~ ~	लघ ताल माड			लंब ताल मा	?
परमल.				- Fe		धिधिगन				116 116
च चकार.		थेई		,	ফ		शुङ्			Te Lo
ताल.		20			ر من من		~ ~~			3 3

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, इंट.

तीन द्विराम होय द्विरामकी पोंन मात्रा। ओर वार छबु होय छबुकी एक मात्रा। फेर छह र छिवराम होय। छिवराम डेड चंचत्पुटादिक पांच तालनसो । अणु चोथाई मात्राको। दुत आयि मात्राको । द्विराम पोंन मात्राको । लघु एक मात्राको । ल-अथ ब्रह्मांडकुंडली तालकी उत्पत्ति छिरुयते ॥ शिवजीनं उन मांगेतालनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नाटचेंमें वरतिवेको विराम डेड मात्राको। गुरु रोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको। छेके रेशी ताल उत्पन्न करि।। वांको ब्रह्मांडकुंडली ताल नामिकनों॥ अथ ब्रह्मांडकुंडली तालको लखन लिस्पने ॥ जामें एक अणु होय अणुकी चोथाई मात्रा। दीय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा।

तकुंकु े धलां े धलां े थायों । ततथों । तत थिमि।थरियों । तकुकृथलां ो तगतथलां ो थिमिथरि कुकु ो इकुथरिकुक ो थरि नममिण रे दोधिमधों रे दांधिमि थोंथों उतगदां नगतग ऽ थारिकुकु नमगिण ऽदांदां तकथिमि अधिमिथोंमिथोंगन ऽ किरीकिटथों ऽ ब्ह्लांडकुंडली ताल जांनिये ॥ यह ताल छत्तीस तालेहि ॥ अथ ब्ह्लांडकुंडली तालको स्वरूप लिल्पते ॥ ५०० ेेे ।।।। ोोो 11 र ऽऽऽऽऽऽऽऽ रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे रे अथ पात्राक्षर सिस्धते ॥ याहिकों सोकिकमें परमतु कहते है त ज कु ाधिमि । नकथरिकिटथों ऽ दांदांकिटथों ऽ थाधिमि किटनग दिगदिग डे दिगिदिगि दांतकु किटतकु डे झेझे थोंगिणि टिटिकिट डे तगतग तगतिध धिक्यों ऽ तधितधि तगियक चिक्यों ऽ तगनग तग्यिगि नग्यों ऽ ततहत वाहत तहिकर ऽ तहकुत हकुकुकु तक्यों डे टहकुक् कुरथों 3 रकुरकु रकुकुक रकुसे 5 तकुधिमि धिमिसे संथारि 3 तकुकुकु घिषिगण थोंथों 3 इति बसांडकुंडली ताल मात्राको। ओर जामं आठ गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। फर बारह प्लुत हीय प्लुतकी तीन मात्रा॥ ऐसी जी ताल ताहि

(ब्रह्मांडकुंडल	ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस तालें, ३५ं
नाल.	च्चकार.	प्रमहु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
·.	वि	l e	अणुताल मात्रा ६ १ -	अणुदुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लिकहे सो मात्रा चाथाई
n'	AC.	<u> </u>	द्रुत ताल मात्रा ० २ ==	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधि
mi	ite	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लिकहे सो मात्रा आधि

			मह्मांदकुदली	महादिकुंडली ताल छनीस तालो, ३६.
नाल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणा अक्षर ताल मात्रा.	समस्याः
20	वत	6º	द्वि, ताल मात्रा े ४ ≡	द्विरापकी सहनाणी अंकहे सी ताल लिक हे सी मात्रा पीण
نع	वत	धढां	र्वि.ताल मात्रा े ५ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पीण
w	तत	मञ्	दृषि, ताल मात्रा ३ ६ =	द्विरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सी मात्रा पीण
9.	र्ड है	थाथों	त्रषु तात मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिकहे सी मात्रा एक
vi	िक	त्तथों	त्रमु ताल मात्रा । ८।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीकहे सी मात्रा एक
نه	र्के	तत्रधिमि	हबु ताल मात्रा । ९ ।	उचुकी सहनाणी अंकहे सी तात तीकहे सो मात्रा एक
90.	्छ ।	थरियों	त्यु ताल मात्रा । १० ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
9.6	तथहै	तकुक् धलां	लवि.ताल मात्रा ो ११ ।=	लिब्रामकी सहनाणी अंक हे सी वाल लिकहे सी मात्रा देड

w
-
ताले,
छत्तास
100
ताल
इस्
60
<u>ब्रह्मांडकुंडली</u>

			300000	मसावहार साथ हमान साथा रह
नाल.	चचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	समस्या,
5.	तथेई	तगतधटां	त्रवि. ताल माता ो १२ ।=	अविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा देड
3.3.	तथह	धिमिथारि कुकु	त्रवि, ताल मात्रा ो १३ ।=	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो नाल ठीक सो मात्रा देड
38.	तथड़े	मकुथारे कुकु	त्रवि. ताल मात्रा ो १४ ।=	लिब्रामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा देड
3.	तथिङ्	थिरिनम रि.ण	टिवि. ताठ मात्रा ो १५।=	ठावरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल ठीकहे सो मात्रा देड
w	त्यक	दो धिभिथों	जिव, ताल माता ो १६ । =	लविरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा देड
9,	थेई विततत	दांधिम थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १७ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिदाहे सो झालो
36.	थेई तिततत	तगद्री नगतग	गुरु ताल माना ऽ १८ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सी ताल लीकहे सी मात्रा दोय बिंदी शालो
9.6	थेड़े तिततत	थरिकुकु नमगिन	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो नात ठीकहे सो मात्रा दाय बिंदी झाछो

			महांडकुंडली	महांडकुंडली ताल छत्तीस तालो, २६.
ताल.	बचकार.	प्रमङ्ज.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	
30	थेई तिततत	दांदां तक्धिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
33.	थेई तिततत	धिमिधिमि थॉगन	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहें सी ताल लीकहें सी मात्रा दीय बिंदी झाली
2,	थेई विवतत	किर्ट किरथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
23.	थेई तिततत	नकथार किटथॉं	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।े	तान टीकहे सो मात्रा शु झाटो
30	थेई तिततत	दांदां किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।	गुरुकी सहनाणी अंकहे सी तात तीकहे सो मात्रा दीय बिंदी झालो
3,	थेई तिततत थेई थेई	थाधिमि किट नग दिगदिग	प्नुत ताल मात्रा ३ २५ ॥ 🖔	
w	थेई तिततत थेई थेई	दिगिदिगि दां- तकु किटतकु	ट्टुत ताल मात्रा (३ २६ ॥ ८)	
3.	थेई तिततत थेई थेई	झेझे थॉ गिणि टिटिकिट	त्युत तास्त्र मात्रा (३ २७ ॥८)	द्मतकी सहनाणी अंकहे सा ताल लीकहे सो मात्रा तीन गील कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो

पष्ठी तालाध्याय-ब्रह्मांडकुडली ताल छत्तीस तालो. १२९

ब्रह्मांडकंडली ताल छनांस तालो. ३६.	समस्या.	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	सहनाणी गोलकुंड	प्डुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	प्हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	प्हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गौलकुंडाली हाथकी परिकमा विंदी झाली	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
ब्रह्मांडफ़्रेडल	सहनाणां अक्षर ताल मात्रा.	प्हुत ताल मात्रा (३ २८ ॥८)	प्तुन ताल मात्रा (३ २६ ॥ ८)	प्लत ताल मात्रा (डे ३० ॥)	प्डत ताल मात्रा (३ ३१ ।।)	प्टुतताल मात्रा (३ ३२ ॥ <u>५)</u>	प्लुत ताल मात्रा डे ३३ ॥ े	ट्युत ताल मात्रा ३ ३ मा	प्टुत ताल मात्रा (३ ३५ ॥)
	प्रमिलु•	तगतग नगत धि धिकथा	त्तियताथ तगधि क धिकथों	तगतग तगधि गि नगथों	ततहत ताहत तहकिट	तहकृत हकुकुकु तक्थों	टकुटकु टहकु कुक्यों		तकु धिमि धि मिसें झेंथरि
	चचकार.	थई निततत थई थई	थेई नित्तत्त थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	थेई विततत थेई थेई	1	थेई तितत्त थेई थेई
	नाल.) i	3,	o m	39.	4	m.	90 90	3°

संगीतसार

ब्रह्मांडकुंडली ताल छत्तीस ताली, ३६.

अथ अहिभेष तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥शिवजान उन मागै तालनमें विचारिकें। गीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेको।।

त्रछन लिल्यते॥ जामें एक द्वत होय। एक गुरु होय। फेर एक द्वत होय। फेर एक गुरु होय। एक द्वत होय। एक गुरु होय। ओर एक द्वत होय । फेर एक गुरु होय ॥ या शीतिसो गीता दिकमें सुख उपजावे । सो आहिमेष ताल जानिये ॥ यह ताल आठ दुत आधि मात्राको गुरु दीय मात्राको ठेके ॥ देशी ताउ उत्पन्न किरि । बांको आहिभेष नामिकनो ॥ अथ आहिभेष ताउको तालो है।। अथ आहिमेष तालको सरूप लिख्यते ० ऽ ० ऽ ० ऽ ० ऽ।। अथ पाटाक्षर लिख्यते।। तकु ० धिमिधिमि तत्था ऽ तकु॰ थातक धिमिकिट ऽ थै॰ धीिकटधीिकट ऽ तकु॰ धिधिगन थोंथों ऽ इति अहिभेष ताल संपूर्णम् ॥

अथ आहि भेष ताल आठ ताली, ८.

समस्या,	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लोक हं सा मात्रा दाय विंदी हाथको झालो
सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ ==	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।
परमञ्जु.	læ° l⊏°	धिमिधिमि क्ट्या
चचकार.	Ac	थेई विवतत
ताल.	÷	ď

षष्ठो तालाध्याय-अहिभेषं और अहिगातिताल सात तालो. १३१

vi	
तालो,	
अत	
अहिमेष	
अहिमेष ताल आठ	

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
ar	No	16°)	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा आधि
रुवं	थेई विवतत	थातक धिमि किट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो तांत तीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथकी झालो
نه	/IC	্ব ক	द्वत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
w	थेई तिततत	धीकिट धी किट	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।े	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
9	/ IC	6	द्रुत ताल मात्रा ० ७ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
v	थेई तिवतत	धिधिगन थों थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विदी हातको झालो झालों भान

अहिमति ताल सात तालो, ७.

अथ अहिगति तालकि उत्पात्ति लिष्यते॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें विवको चंचलुरादिक पांचीतालनसों सातांअंगठेके । देशी ताल उत्पन करि । वाको अहिगति ताल नाम कीनों ॥

संगीतसार.

अहिगति तालको सछन तिरुपते ॥ जातालमें एक प्लुत होय । ओर एक गुरु होय । एक तिवराम होय । एक सबु होय । एक इंविराम होय। ओर एक द्रुत होय। एक अणु होय। यभ उत्तरी रीत सो गीता दिकमें सुख उपजावं। सो आहिगति ताल अथ पाटाक्षर जिल्यते । याहिको लोकिकमें परमजू कहत है। थिमितां थिमितां तांधिमि डे किटकिकि टाकिकिट ड ताकिट किट ो थोंगा । तिते े ते॰ ति 💛 । इति अहिगति तात्र संपूर्णम् ॥ जानिये॥ अथ अहिगति तालको स्वरूप लिल्पते॥ ऽऽो।

आहेगाति ताल सात तालो, ७.

1	_	ı	1	1	
	खुतकी सहनाणी अंक हे सो चिकुंडालो हाथकी परिकमा	गुरुकी सहनाणी अंक है सो वाल लोक है सा मात्रा दाथ विदी झालो	लिंदिरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा देड	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	प्कुत ताल मात्रा (डे १ <u>॥</u>)	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	अवि <u>,</u> ताल मात्रा े ३ । =	ठचु ताल मात्रा । ४ ।	द्वि, ताल मात्रा े ५ ≡
प्तमुखेः	थिमितां थिमि- तां तांथिमि	किटकिकि टकिकिट	ताकिट किट	धोंगा	विते
च चकार.	थेई तिततत श्रेई थेई	थेई तिततत	तथह	शु	वत
ताल.	9	'n	m	ဆ	نو

षष्टो तालाध्याय-अहिगति और हेमाचल ताल आठ तालो.

त परमळु. सहनाणी	
असर गल मात्रा.	-
क्र ताल मात्रा	द्रत नाल
0	0
अणु ताल मात्रा	अणु ताल

अहिगति ताल सात तालो, ७.

हेमाचल ताल आठ तालो, ८.

अथ हेमाचल तालकी उत्पनि लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकी चछन जिल्यते॥ जामें एक द्वत होय। एक द्विराम होय। फेर एक द्वत होय। फेर एक द्विराम होय। फेर एक द्वत होय। एक द्विराम दोय । आर एक द्रुत होय । एक द्विराम होय।या रितसों गीतादिकमें सुख उपजावे सी हेमाचल ताल जानिये ॥ यह **वाउ आ**ठ तात्रों है ॥ अथ हेमाचल तात्रको सहत्प तिल्यते ०००००० अथ पाटाक्षर तिल्यते ॥ याहिकों लोकिकमें डुंब आधिमात्राको द्विराम पोनमात्राकों ठेके । देशीताल उत्पन्न करि । वाको हेमाचल नाम किनों । अथ हेमाचल तालको परमनु कहतहें थे े वथे े थु े तथे े जक े नकुकु े थि े तथां े इति हेमाचल ताल संपूर्णम् ॥

	•		F 22	દમાં વર્ષ તાલ ગાંઠ તાલા, પ
ताल.	च्चक्रा.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
	\psi \	45	द्भव ताल मात्रा	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
n'	तंत	पद्	द्वि. ताल मात्रा े २ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पीण
h.	ΛC	ਕਾ	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
30	वव	वह	द्वि, ताले मात्रा े ४ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
يع	les	जक	हुत ताल मात्रा ० ५ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
w²	वत	न् नुकुक	द्वि, ताल मात्रा े ६ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोण
9.	No	দ্বি	दुत ताल मात्रा ० ७ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
V	#	तथां	द्वि, ताल मात्रा े ८ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा पीण

विष्णुतास चोबीस तालो, २४.

त्वधु होय त्वधुकी एक मात्रा। फेर एक तयु होय त्वधुकी एक मात्रा। एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। एक तयु होय त्वधुकी एक मात्रा। दीय गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। फेर एक तयु होय त्वधुकी एक मात्रा। ओर दीय तयु होय तयुकी एक मात्रा। अथ विष्णुतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उनमार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य बाद्य नाटचमें वरतिवेको चंच-अथ विष्णुतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन समु होय समुकी एक मात्रा । एक गुरु होय गुरुकी दोय माता । ओर दोय एक गरु होय गुरुकी दीय मात्रा । आगे एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक उचु हीय उचुकी एक मात्रा । फेर एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। एक ततु होय ततुकी एक मात्रा। दीय गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा । फेर तीन गुरु होय गुरुकी त्पुट आदिक पांच तालनमेसो लघु एक मात्राकों गुरु दोय मात्राको छेके देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाकों विष्णुताल नाम किनों ॥

न्तिस्येवे ॥। ऽ॥। ऽ। ऽऽ॥ ऽऽ। ऽ। ऽऽऽऽऽ अथ पाटाक्षर् लिस्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहतहै तकथरि । तत-दीय मात्रा। या रितसों गीतादिकमें सख उपजावे ॥ सो विष्णुताल जांनिये ॥ यताल चोबीस तालो है ॥ अथ विष्णुतालको सरूप धिमि । घिषिगण । कुकुदां कुकुदां ऽ धिमिकिट । घिमिकिट । तकथों । दांकिट दांकिट ১ तत्थों । किटाकेट थाकिट ऽ धिषमन घिषिक्टि ऽ धार्धगन । धिद्गन । तक्यों । घिथिगिन तक्यों ऽ घिघिकिट धांकिट ऽ धिधिगिन । कुक्परि कुक्यरि ऽ कुकुरां

विष्णुताल, चोबीस तालो २४.

विधिकिट थांकिट ऽ यिषिकिट थांकिट ऽ यिथिकिट थांकिट ऽ यिथिकिट थांकिट ऽ यिथिकिट गिनथों र ॥ इति विष्णुतास संपूर्ण ॥

	3 50
समस्या.	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उषु ताल मात्रा । १ ।
परमञ्जु.	तकथार
चनकार,	্ব ক
नाल.	6.

विष्णुताल चोबीस ताली, २४.

					_			- ·;
समस्या.	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मांता दीय बिंदी झाली	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक हे सी मात्रा दीय बिंदी झाछी	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	छषु ताल मात्रा । २ ।	उचु ताल मात्रा । ३ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	उषु ताल मात्रा । ५ ।	छषु ताल मात्रा । ६ ।	लघु ताल मात्रा । ७ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।	उपुताल मात्रा । ९ ।
प्रमुखे.	ततिधिमि	धिधिगण	कुकुदां कुकुदां	धिमिकिट	धिमिकिट	तकथाँ	दांकिट दांकिट	तत्थों
चचकार.	शुरु	थुई	थेई निततत	हें इंट	क्र	थेड्	थेई तिततत	शहे
ताल.	ก๋	mi	∞	نو	w	9	v	نه

	-
ч	
•	

समस्या.		गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हं सो मात्रा दाय विदा शाला	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ डीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रादीय विंदी झाली	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झाले	्र गामी अंक ने मा नाम तीक है सी मात्रा दीय विदी झाली		गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दाय विदा झाल।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो
सहनाणी	अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्र ऽ १८ । े	उच्च ताल मात्रा । १९ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २०॥	नाउ	गुरु ताल मात्र	2	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।	मुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।
	- 1	कुक्धरि कुक्धरि	1	विधिकिट	1	धाकिट	i	धिधिकेट धांकिट	धिधिकिट गिनथॉ
	चचकार.	थेड़े तिततत	कुड़े ह	थेड़े तिततत	भेट विततत		थेई तिततत	थेई तिततत	थेई विवतत
.	नाल.	3,	9,	0	. 60		3	43	30 0'

पंक्षिराज ताल आठ तालो.

अथ पिनराज तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेकों॥ क्रुवलघुलेके।देशीताल उत्पन्न करि । वाकों पक्षिराज नाम किनों ॥ अथ पक्षिराज तालको लछन लिल्यते ॥ जामें पथम एक द्रुत द्भुतकी आधि मात्रा। एक ततु होय त्वुकी एक मात्रा। किर एक द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। किर एक त्रुष होय तमुकी एक मात्रा । एक द्वत होय एक तमु होय एक द्वत होय द्वतकी आधि मात्रां। फेर एक तमु होय तमुकी एक सरूप लिख्यते । । । । अथ पाराक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमतू कहतहे ॥ जग ॰ तकथों । तग ॰ ताहं । कु माजा। या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो पक्षिराज ताल जांनिये ॥ यह ताल आठ तालो है ॥ अथ पक्षिराज तालको कु॰ कुकुथरि । नग॰ गणथों । इति पिक्षराज ताल संपूर्णम् ॥

अथ पक्षिराजताल, आठ तालो ८.

			4
समस्या,	मथमे द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक मात्रा आधि	उनुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो तात आडी तिक दोय आधि मात्रा
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ ==	ठघुताल मात्रा । २ ।	द्रुत ताल मात्रा ॰ ३ =
प्रमिछु•	जग	तकथों	त्रां
चचकार,	/IC	थे हैं इंड	AC
ताल.	÷	'n	m

	H
vi	-
<u>ि</u>	The second second
आठ	-
ाजताल	
पक्षिरा	•

समस्या,	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक हे सी मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक	विद	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा एक मात्रापे मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उचु ताल मात्रा । ४ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ५ ==	ठघुतालमात्रा । ६ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ७ ==	त्रषु ताल मात्रा । ८ ।
प्रमुखे.	ताहं	18-9 18-9	कुकुथरि	नंग	मणथॉ
चचकार.	18. 18.	/hc	थहं	\to	शुरु
ताल.	∞	نخ	us	9.	v

गारूगीताल, चांतालो ४.

उन्छन लिल्पने ॥ यामं तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । ओर एक द्विराम होय द्विरामकी पोंन मात्रा । या रीतसों गीता-अथ गारूगी तालकी उत्पाच लिस्बने ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य याद्य नारचमें वरतिवेको दुत आधि मात्राको द्विराम पान मात्राको टेके देशी ताल उत्पन्न करि। वांको गाह्रगी ताल नामिकना।। अध गाह्रगी तालको दिक्मे मुख उपजावे ॥ सो गारूगी ताल जांनिये ॥ ये ताल चेतालो हे ॥ अथ गारूगी तालको सरूप लिल्यते ०००० अथ गास्त्री तालका पाटाक्षर जिल्पते ॥ याहिकौ जे।किकमे परमळू कहतहैं ॥ जग॰जग॰नग॰तककु े अय चचकार जिल्पते ते॰ते॰ वै । विवे ं इति गारूगी ताल संपूर्णम् ॥

गारूगी ताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या.
9.	,hc	जग	दुत ताल मात्रा • १ =	प्रथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक आडी दोय हे सो आधि मात्रा
a'	ΛC	जग	दुतताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक हे सो मात्रा आधि
mi	,le	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक आधि मात्रा
သံ	वव	पक्के	द्वि.ताल मात्रा े ४ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो तात तिक ह सो मात्रापींण हे इहां विश्रामपे मान

झेंबड ताल तितालो.

सोंबदतात्रको सरूप तिरुचते ॥े अथ सोंबदतात्रको पा-टळन टिल्पते॥ जामें दोय त्रघु होय त्रघुकी एक मात्रा। एक द्विराम होय द्विरामकी पीण मात्रा। या रीतसों गीतादिकमें अथ झोंबड तालकी उत्पनि लिस्यते ॥ शिवजीन उन मागैतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नारयमें वरतिवेको ल्बु एकमात्राको दिवराम पाँन मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ वाको झोंबड ताल नाम किनों॥ अध झोंबडतात्सका मुख उपजावे ॥ सी झोंबड ताल जांनिये॥ यह ताल तिताली है ॥ अथ

संगीतसार.

द्राध्नर जिल्यत ॥ याहिको लोकिकमे परमलू कहतहें ॥ ताहं। ततकथों े अथ चचकार जिल्यते थेई थेई तिथेई ॥ इति

झॉबड ताल, तितालो ३.

झोंबडताल संपूर्णम् ॥

ताल.	चचकार.	प्रमिछे.	सहनाणा अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
6.	श्रुहें व	ताहं	छचु ताल मात्रा । १ ।	पथम तपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक हे सी मात्रा एक
'n	शुरु	ताहं	त्वं ताल मात्रा	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक हे सी मात्रा एक
			-	
	350	7	द्वि. ताल मात्रा	विक के या
m	विशह	प्रकेत्र।	 	पाण मात्रापमान

नीलझोंबडी ताल तितालो.

बड़ी तालको लखन लिख्यते॥ जाम एक गुरु हीय गुरुकी दीय मात्रा। ओर दीय लघु हीय लघुकी एक मात्रा। या रीतसों गी-अथ नीलझॉबडी तालकी उत्पात्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिक गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरति-वेको। गुरु दीय मात्राको। उषु एक मात्राको हेकं। देशी ताल उत्तन करि। वाको नीलझोंबडी ताल किनों॥ अथ नीलझों-पृहाक्षर जिल्यते । याहिको डोकिकमें परमहू कहत हैं ॥ दांदां थरिथरि ऽ कुकुथरि । गणभों । अध चचकार जिल्यते तादिकमें मुख उपजावे। सो नीलझोंबडी ताल जांनिये। अथ नीलझोंबडी तालको सरूप लिल्यते आ अथ नीलझोंबडीतालको थेई विततत ऽ थेई । थेई । इति नीलझोंबडी ताल संपूर्णम ॥

नीलझोंबंडी ताल, तिताली ३.

	प्सम्ल.	तहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
`	दांदांथारथार	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक ह सो ताल लिक हे सी मात्रा दीय बिंदीझाली
i –	कुकृथरि	छचु ताल मात्रा । र	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठिक हे सो मात्रा एक
1	गणथॉ	छचु ताल मात्रा । ३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल जिक हे मात्रा एक मात्रापे मान

चकताल चोद्हताली.

अर्थ चक्रतालक्री उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको द्रुत यह ताल चोद्हतालो हे ॥ अथ चक्रतालको सन्तप लिल्यते ००००।००।०। अथ चक्रतालको पाराक्षर जिल्यते ॥ या-और एक लघु होयें लघुकी एक मात्रा। फैर दीय द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा। एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। एक द्रुत हीय द्रुतकी आधिमात्रा । फेर एक छघु होय छघुकी एक मात्रा । या रीतसों गीतारिकमें सुख उपजावे ॥ सी चक्रताल जांनिये॥ आधिमात्राको छघु एक मात्राकोलेके । देशी ताल उत्पन्तकरि ॥ वाको चक्रताल नाम किनो ॥ अथ चक्रतालको तछन लिख्यते । हिको लोकिकमें परमल कहत है जा० जा० नक् थै० ताथै। थरि० कुकु० धिमि० दांथै। दां० दांथि थिथिकिट। यामें च्यार द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा । और एक तयु होय तयुकी एक मात्रा । फेर तीन द्रुत होय द्रुतकी आधिमात्रा िषिषि गन्या । इति चक्रताल चौद्हतालो १४ ॥

ó
ताला
चाद्ह
चक्रताल,
अय च

	स्ट परमञ्ज, सङ्गाणी समस्या. समस्या.	जग	हुत ताल मात्रा जग ०२ = इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लिक मात्रा आधि	प्रत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लिक मात्रा आधि ० ३ =	के द्वत तालमाता द्वतकी सहनाणी अंक हे सो ताललीक मात्रा आधि ं	ताथे ताथे । ५ ।	हत ताल मात्रा इत ताल मात्रा इतकी राहनाणी अंक हे सा ताल शिक मात्रा आधि ० ६ =	कुकु कुकु ० ७ = दतकी सहनाणी अंक हे से। वास्टिक मात्रा आधि	ते थिमि द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताललीक मात्रा आधि
	चचकार.	, to	de	, ic	/ /tc	cha.	/IC	ίτο	, ltc

∞ ∞
5710
चाद्हताल
S
2
43

				भार । त		
समस्या,	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो तात ठीक मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल हीक मात्रा आधि	लघुकी सहनाणी अंक हे सो नाल लीक मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक मात्राष्टे मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उच्न ताल मात्रा । ९ ।	द्रुत ताल मात्रा ० १० ==	द्रुत ताल्ड मात्रा ० ११ =	उच्च ताल मात्रा । १२ ।	द्वत ताल मात्रा ० १३ =	ट्यु ताल मात्रा । १४ ।
प्रमुखे.	मृं ध	'जिं'	ih.	भिंधिकिट	धिधि	गनधों
चचकार.	थेडे	/IC	(IE	्ट इं	/I U	্য দেশ
ताल.	o;	90.	99.	92.	93.	.8 6

त्रिकुंडव ताले. अथ त्रिकुंडव तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गे तालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नारचमें वरतिवेमें॥ द्रुतआधि मात्राको राविराम पोनमात्राको तेकें देशीताल उत्पन्न करि। वाको त्रिकुंडव नाम किनो॥ अथ त्रिकुंडव तालको त्रक्षण

95

चोदह तालों हे ॥ अथ त्रिकुंडव तालको सफ्प लिख्यते ०००००००००००० अथ । याहिको लोकिकमे परमलु कहतहै दां० दां०त्रक० तकि० तकुकु े ता० थै० थारि० द्रुतकी आधिमात्रा । फेर एक श्विराम होय श्विरामकी पाँन मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सी छिल्यते॥ जामे चार द्वत होय द्वतकी आधि मात्रा। एक दविरामै होय दविरामकी पाँत मात्रा। तीन द्वत होय द्वतकी आधि मीता एक दिवराम होय दिवरामकी पौन मात्रा। फेर दीय द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक दिवराम होय दिवरामकी पान मात्रा ता॰ थो॰ तथों े धी॰ तथीं े इति त्रिकुंडवताल संपूर्णम् ॥ त्रिकुंडव ताल जांनिये ॥ यह ताल चीदह ताले त्रिकुंडव तालको पाठाक्षर लिस्यते ॥ याहिको एक द्रुत होय बलां ठे

			त्रिकुंडवताल, चोद्ह तालो १४.	
ताल.	चचकार.	प्रमिछे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	
٠.	ite	* lo ·	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	ठीक हे सो मात्रा आधि
n'	No	*15-	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि ० २ =	हे सो मात्रा आधि
m	Ac	न	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि ० ३ =	ह सो मात्रा आधि
20	,ho	ताक	दुत ताल मात्रा दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	हे सी मात्रा आधि
نح	स्य	\$0°,	द्वि. ताल मात्रा द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पींण	क हे सी मात्रा पींण

			।त्रकुद्यताल, चाद्ह ताला १४.	
ताल.	चचकार.	परमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	
w	ЛC	ता	द्रुत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	ফ্র
a.	ΛC	কৈ	द्रुत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	ঠে
v	(PC	थारि	द्रुत ताल मात्रा ०८= १८=	Çior
نه	तत	धलां	द्वि. ताल मात्रा २ ९ =	भोंग
9.0	,h c	वा	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा ० १० =	आधि
49.	ίτ	<u>च</u> ्	ाजा जुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा =	आधि
ر. ه	तत	नथों	द्वि. ताल मात्रा े १२ ≡ विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पीण	नेंवा
93.	he	धी	हुन ताल मात्रा इन ताल मात्रा इन नाल सहकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा ० १३ =	आधि

30 30	
ताला	
चादह	
ताछ,	
त्रिकंडवत)

समस्या.	मा द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पाण इहा भात
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	द्वि. ताल मात्रा े १४ ≡
परमलु.	नथौं
चचकार.	तत
नाल.	30

स्वर्णमेश्ताल, संतीस तालो ३७.

लघुकी एक मात्रा। और एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। फिर तीन दुत होय दुतकी आधि मात्रा। एक लघु होय लघुकी यांमें एक लघु होय लघुकी एक मात्रा। एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। तीन द्वत होय द्वतकी आधि मात्रा। आगे एक लघु होय द्रविराम गोंण मात्राको लेकें देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाको स्वणेमेरु ताल नाम किनों ॥ अध स्वर्णमेरु तालको लक्षण लिख्यते ॥ अथ स्वर्णमेरु तालकी उत्पनि लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्ग तालनमं विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वर-तिवेको। वंचत्पुर आदिके पांची तालनमेसों अघु एक मात्राको गुरु दीय मात्राको द्वत आधि मात्राको प्लुत तीन मात्राको

एक द्विराम होय द्विरामकी गोंण मात्रा । ओर दोय दुत होय दुतकी आधि मात्रा । एक द्विराम होय द्विरामकी पोंण मात्रा । एक दुत होय द्वतकी आधि मात्रा । फेर दोय उघु होय उघुकी एक मात्रा । ओर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । एक दुत होय द्वतकी आधि मात्रा । फेर दोय उघु होय उघुकी एक मात्रा । ओर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । या रीतसों गितादिकमें मुख उपजावे । सी स्वर्णमेरु तात्र जानिये ॥ यह तात्र मेतीस तात्रो है ॥ ३७ ॥ एक दुत होय दुतकी तीन मात्रा। फेर एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। ओर तीन दुत होय दुतकी आधि मात्रा। ओर फेर एक गुरु होय गुरुकी रीय मात्रा। आगे दीय द्वत होय द्वतकी आधि मात्रा। फेर एक तयु होयं त्वयुकी एक मात्रा। और केर दीय द्रुत होय द्रुनकी आधि मात्रा । ओर एक तयु होय त्रघुकी एक मात्रा । और एक प्टुत होय प्टुतकी तीन मात्रा । एक मात्रा। फेर एक गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा। और तीन दुत होय दुतकी आधि मात्रा। एक उद्यु होय उद्युकी एक मात्रा

अथ स्वर्णमेरु तालको सरूप लिख्यते॥ ऽ०००।ऽ**००**०।ऽ**०**००।००। ऽऽ००।ऽऽ०००००।।ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको लैक्किमें परमद्भ कहत है ॥ तत्था । तत्था तत्था उथारि ॰ कुर् ० कुकु ० दंथा । थातक तकतक ऽतक ॰ तक ॰ था० किटिकिट किटकिट किटकिट श्या॰ था॰ थों॰ थोंथों । थों॰ गा॰ ताथों । धुमुधुमु धुमुधुमु थांथां डेततडां तातक ड तक ॰ थिमि ॰ तक्थों । धिकितक धिकतक तकथां डे तेते तेथे डते॰ ते॰ थें॰ तथें े धिधि॰ नग॰ थहां े थिमि ॰ थोंगा । थोंगा थोंथों ऽ ॥ इति स्वर्णमरुताल संपूर्णम् ॥ धिधिगन

Thinks are befin graft

,			
चचकार.	परमञ्जु.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा,	समस्या,
थंड	तत्था	उच्च ताल मात्रा । १ ।	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक है सी मात्रा एक
थेई तिततत त	तत्था तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाट टीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
(htt	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
/IC	hr 6 -9	द्रुत ताल भाता ० % ==	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
رات	& 1	ुद्रत ताल मात्रा ९ ।	दुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

,•										
मितीस तालो ३७ समस्या.	क मन्त्रामी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी पात्रा एक	तिहमाना नाम मान साम स	गुरुकी सहनाणा अक र पा भार भार में नाम त्रीक हे सी मात्रा आधि			द्रतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	क नाम मिन्न एक	उचुकी सहनाणा अक ह ता पाल जार ह	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल तीक हे सो भाता दाय बिदा शाखा	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
स्वर्णमेरताल. संतीस	अक्षर ताल मात्रा.		2 9	्रवत ताल मात्र ० ८ ा	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुत ताल मात्रा	= 06 0	जबुताल मात्रा	मुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।	द्वत ताल मात्रा
	प्रमञ्जे.	दंथा	थातक तकतक	प ्र	तक	į	<u>a</u>	िकटिकट	किटकिट किरकिट	ध्री
	च चकार.	शहर	थेई तिततत थ	,ht	ite	1	te	्हे इंड	थेई तिततत	, he
	ताल.	US.	9.	v	٠		•	99	3	m or

स्वर्णमेकताल, संतीस ताली ३७.

			نظ ما ما ما درا ا	स्व अम्बर्धाल वाला र
नाल. -	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
%	AC	धा	द्रुत ताल मात्रा ० १४ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि
3.	/hc	ਰੰ	द्रुत ताल मात्रा ०१५ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल तीक हे सो मात्रा आधि
wi	शहर	थोंथों	उषु ताल मात्रा । १६ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
2.	Ac	च ्	हुत ताल मात्रा ० १७ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
3.	(IC	गा	द्वत ताल मात्रा • १८ ==	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताट टीक हे सो मात्रा आधि
0,00	थंड	नाथों	ट्यु ताल मात्रा । १९ ।	ो मात्रा त
0	थर्ड निततत थर्ड थर्ड	धुमुधुमु धुमुधुमु धुमुधुमु	प्लुत ताल मात्रा (डे २० ॥)	. (10
29.	थेई तिततत	ततडां तातक	गुरु ताल माता ऽ २१ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दाय विंदी हाथको झालो

स्वर्णमेरुताल, संतीस तालो ३७.

		ন্য	(ফু	la	नि		ख	型	من ا
		लीक हे सो मात्रा आधि	ो मात्रा आधि	सो मात्रा एक	ह हे सो मात्रा तीन विंदी झाछो	टीक हे सो मात्रा दोष झाछो	ों मात्रा आधि	ो मात्रा आधि	ो मात्रा आधि
			उ टीक हे सो	ल लीक है	गाउ ठीक हे पारिकमा विदी		उ उक्ति है	उ टीक हे सो मात्रा	उ टीक हे सो मात्रा
	समस्या	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल	दुतकी सहनाणी अंक हे सो तास	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा	हे सो हाथकी	अंक हे सो ताल विदी हाथको	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल
नि वाल रुप		सहनाणी अं	सहनाणी अं	सहनाणी अ	ो सहनाणी अंक गोलकुंदालो	सहनाणी	सहनाणी अं	सहनाणी अं	सहनाणी अं
स्वणम्कताळ, संतास ताळा		द्रतकी	द्भतकी	अहम् अ	प्तुतकी	गुरुकी (द्रुतकी	द्भतकी	क्रु
रव जाम	सहनाणी अक्षर तास्त्र मात्रा,	हुत ताल मात्रा .° २२ ==	द्रुत ताल मात्रा ० २३ =	छषु ताल मात्रा । २४ ।	प्लुत ताल मात्रा (३ २५ ॥७)	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ।८	द्रत ताल मात्रा ० २७ =	द्वत ताल मात्रा ० २८ =	द्रुत ताल मात्रा ० २९ =
	परमञ्जु.	पु	धिमि	तक्थों	धिकितक धिक- तक तकथां	तते तथी	Λ υ	Æ	ান
	चंचकार.	AC	/ le	(15) Char	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत	/ IC	/IC	, lc
	नाल.	a'	a, a,	ج ج	8. 2.	w.	ج ق	2.	35

9
ताले
संतीस
ताल,
वर्णमेर

			10 H in D.	स्वामकताल, प्रतास ताला २७.
नाल.	चचकार.	प्रमिछे.	महनाणां अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
60°	तत	पुत्र	द्वि, ताल मात्रा े ३० ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा पोण
49.	ДC	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ०३१ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा आधि
ar m	łС	नग	द्वत ताल मात्रा ० ३२ ==	दुतकी सहनाणी अंक ह सो ताट लीक हे सो मात्रा आधि
m	तत	धलां	द्वि, ताल मात्रा े ३३ =	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो नात तीक हे सो मात्रा पोण
20 m	/IE	थिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ३४ ==	दुतकी सहभाणी अंक हे सी ताल शीक हे सी मात्रा आधि
gi m	ख इंड	थोंगा	छषु ताल मात्रा । ३५ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
m	्रेड्ड ति	थोंगा	उच्च ताल मात्रा । ३६ ।	त्उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
8°	थेई तिततत	धिधिशिन थाँ	गुरु ताल मात्रा ऽ ३७ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सा मात्रा दीय विदी झालो झालों मान

शंखताल, द्शताली.

स्वरूप हिस्पते े १०००८०००। अथ शंखनात्रको पाठाक्षर जिल्धते ॥ यांहीको टोकिकमें पग्मनू कहत है ॥ तां॰ द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक टिविराम होय अविरामकी डेड मात्रा। तीन द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा। एक गुरु होय गुरुकी रोष मात्रा। रोष अणु होष अणुकी चीथाई मात्रा। फर एक द्रुत होष द्रुतकी आधि मात्रा। ओर एक छषु होष छघुकी एक मात्रा। या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे ॥ सो शंखताछ जांनिये ॥ यह ताल द्शताहो है । अथ शंखताहको एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन करि ॥ यांको शंखताल नाम किना ॥ अथ शंखतालको लखन लिस्यते ॥ जा तालेमें एक चंचत्पुट आदिके पांच तालनमेंसों द्रत आधि मात्राको। लिविराम डेड मात्राको। गुरु दोय मात्राको। अणु चोथाई मात्राको। लघु अथ शंसतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकी तक तकथों ो जग जग थे जक दां तक दां ८ थि ८ थि ८ थि भि गनथा। इति शंखनात मंपूर्णम् ॥ शंखताल, इश ताली १०.

समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	प्रथम तिवरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल तीक हे सो मात्रा डेड	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	टबि.ताट मात्रा ो २ । =	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =
प्सिलु.	वां	तक तकथों	लग
चचकार.	/ic	तथह	/IC
नाल.	نه ا	n'	m

नाल.	चचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	नाणी ल मात्रा,
∞	/IC	जग	० ध्यत ताल मात्रा	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
بخ	/IC	্বর	ुद्धत ताल मात्रा ९ ५ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
w	थेई तिततत	तकदां तकदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।े	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालें।
9.	वि	ফ্র	अणु नात्र मात्रा ८ ७ -	अणुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सी मात्रा चाथाई
vi	कि	 	अणु ताल मात्रा	अणुकी सहनाणी अंक हे सी तात लीक हे सी मात्रा चीथाई
	,lc	धिमि	उत्त ताल मात्रा ० ० ० ==	दुनकी सहनाणी अंक हे सो नाट सीक हे सो मात्रा आधि
•	थुड्	गनथां	ह्यु ताल मात्रा । ३० ।	उचुकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सो मात्रा एक मात्राषे मान
	4	Ó	द्रमरी शंस	दूसरी शंखताल, इग्यारताला ११.

दूसरी शंखताल, इग्यार ताल ११.

स्टिस्यते ॥ याहिको सोकिकमें परमद्र कहत है था॰ थै॰ तथै> तकधिकि तकधिकि ऽ धांधिमि धांधिमि धांधिमि े तकिटत एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी पात्र मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सी शंख ताल जांनिये॥ यह ताल ग्यारहतालो है॥ अथ शंखतालको स्वरूप सिरुयते ०००६६६।। ०० अथ पाठाक्षर होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक प्छत होय । प्छतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर एक अविराम होय । लेबिरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक द्विराम होय । द्विरामकी पाँन मात्रा ॥ चैचत्पुट आदिक पांची तालनमें सो द्रुत आधि मात्राको।दिषिराम पोंन मात्राको। गुरु दीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको। लिबराम हेड मात्राको । अणु आधि मात्राको हे । देशी ताल उत्पत्र करि ॥ वांको शंखताल नामिकनो ॥ अथ शंखतालको तछन त्त्रिरूयते॥ जामें दीय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ और एक दिशाम हाय। दियामकी पाँत मात्रा॥ ओर एक गुरु क्टितक ऽ तकतकथों रे थोंगा। धलांे जग वि ।। इति दूसरी शंखताल संपूर्णम् ॥

			। सहनाणां	
नाञ्ज	चचकार,	परमञ्जु.	अक्षर ताल मात्रा.	मनदना,
	,to	ন	द्रत ताल मात्रा	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
, :	-		0	
	,	A's	द्रत ताल मात्रा	डतकी महनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
'n	hc	ਕ 	11	
			द्रत ताल मात्रा	निवरायकी महनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पींण
m	वत	ਕ ਹ	111	

0	Ž
0	•
	5
	2
	=
	_
ŀ	/
F	=
Ļ	•
b	0
L	:
E	7
ŧ	=
Ţ	2
	7
	-
	ľ

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
30	थेई निततत	तक्धिकि तक्धिकि	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो तांत्र लीक हे सो मात्रा दीय विदी झालो
ئخ	थेई तिततत थेई थेई	धांधिमि धांधि- मि धांधिमि	. प्लुत ताल मात्रा (३ ५ ॥६)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
w	थेई तिततत	तिकटत किट तक	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा वाउ ठीक हे सा मात्रा दीय विदी झाछो
9	तथंड्	तक तकथों	स्रोव, तास्त्र मात्रा ो ७।=	लिंदरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड
v	थेई	थोंगा	उधु ताल मात्रा । ८ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
منه	वत	धतां	द्वि. ताल मात्रा ९ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पोंण
. 0	(to	जग	द्भत ताल भाता ० १० ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल शिक हे सो मात्रा आधि
99.	ति	वि	अणु ताल मात्रा ११ -	अणुद्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा चोथाई मात्राषे मान
		-		

मंयोगताल, चोद्हतालो.

सी संयोगताल जांनिये॥ यह ताल चोद्दह तालो है॥अथ संयोग तालको स्वरूप लिल्यते डेऽो।२००००।ो ऽडे अथ पाठाक्षर तिरूपते ॥ याहिको लेकिकमें परमत् कहत है ॥ धितिक्रिधि धितिकित किथियों डे धिमिधिमि घिमिथों ड धिकट आधि मात्रा ॥ फेर एक दविराम होय। दविरामकी पोंण मात्रा ॥ एक छषु होय। छषुकी एक मात्रा ॥ एक छविराम होय । छविरामकी पोंण मात्रा॥ ओर एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ दोय जामें अणु होय। अणुकी चोथाई मात्रा॥ फेर एक द्रुत होय। द्रुतकी डेड मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ फेर एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। नाम किनो ॥ अथ संयोग तालको लखन लिख्यते ॥ जाम एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ ओर एक टिविराम होय । टिविरामकी डेड मात्रा ॥ एक टिवु होय । टिवुकी एक मात्रा ॥ एक दिवराम होय । द्विरामकी भिकट ी तकथों। तथों े जग वि अधि अकिट विद्यां े तत्थों। तत्त्यों विभिन्न धािकट अस्तिष स्रोधिमि तकथों डे अथ संयोगतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नाटयेमें बरतिवेकों द्विराम पींण मात्राको। छषु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्हत तीन मात्राको हेके। देशी ताल्डतपत्र करि॥ बांको संयोग ताल चचत्पुट आदिके पांच तालमेंसों द्वत आधि मात्राको। अणु चीथाई मात्राको। द्विराम पोंण मात्राको। छषु एक मात्राको इति संयोगताल संपूर्णम् ॥

अथ संयोगताल, चोद्ह तालो १४.

समस्या.	पथम प्लेतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन मोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विदी झालो
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	प्तुत ताल मात्रा (३ १ ॥५)
प्रमिलु.	धितकिधि धित कित किथियों
चचकार.	धेई तिततत धेई धेई
नाल.	2.

नाल
चाटह
q
18
E
त
Ī

	-		-	
नाल.	च चकार.	प्रमिछु.	पहुंगाण। अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
ก๋	थेई तिततत	धिमिधिमि विमिथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
m	तथेह	धिकट धिकट	ह्यवि. ताल मात्रा े ३।=	लियामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
30	्ट इंड	तकथों	उच्च ताल मात्रा । %	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
3"	ततं	नथों	द्वि. ताल मात्रा े ५ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पाँण
w	/ic	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ६ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
9.	ति	ফ্র	अणु तान्न मात्रा , ७ –	अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चोथाई
v	<u>च</u>	म	अणु ताल मात्रा	अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चाथाई
o:	po	िकिट	द्रुत ताल मात्रा ० ९ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधी

संयोगताल, चीद्ह ताली.

संगीतसार.

	क्ट्रें विद्	महां सहों तस्यों तत्त्र्यों	द्वि. ताल मात्रा ३ १० == छषु ताल मात्रा । ११ । छवि, ताल मात्रा १ १२ ।=	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल सीक हे सो मात्रा पोंण समुकी सहनाणी अंक हे सो ताल सीक हे सो मात्रा एक समिताणी अंक हे सो ताल सीक हे सो मात्रा डेड
कि कि	तितवत	थाकिट धाकिट	गुरु ताल मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झाली
श्रुहें व	तिततत इ थेई	- घठतभ हांधिमि तक्यों (े हुन पाल इस्	त्वुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालापे मान

त्रिवर्तकताल, पर्तालो ६.

अथ त्रिवतिक तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नत्य वाद्य नाट्यमें वर-तिवेको। उषु एक ःत्राको द्वत आधि मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको त्रिवर्तक ताल नाम किनो ॥ अथ त्रि-वर्तक तालको लखन लिल्यते ॥ यामें दीय लघु हीय लघुकी एक मात्रा । दीय द्वत हीय द्वतकी आधि मात्रा । केर दीय लघु हीय स्मुकी एक मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो त्रिवर्तक तास्त्र जांनिये ॥ यह तास्त्र षरतास्त्रो है ॥ अथ त्रिव-देक तासको स्वरूप सिल्यते ॥००॥ अथ पाठाक्षर सिल्यते ॥ याहिको सोकिकमें परमस्त्र कहत है ताहं । ताहं । जग॰ जग॰ वाथों । गनथों । इति त्रिवर्तक तास्त्र संपूर्णम् ॥

अथ त्रिवर्तक ताल. षदतालो ६.

सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उचु ताल मात्रा लचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उचु ताल मात्रा । २ ।	द्रुत ताल मात्रा ०३ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	हमु ताल मात्रा । ५ । । ५ ।	उचु ताल मात्रा अचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक । ६ ।
परमलु.	ताहं	ताहं	. संज	E	तात्थों न	गनथों
चचकार.	ক্ষ	हुं हैं इंडे	AC	Įσ	ंक	युङ्
ताल.	6.	ni	m	∞	gi	w

नारायणताल, पद्तालों ६

अथ नारायणतासको सक्षण सिख्यते ॥ जामें दीय द्रुत हीय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक समु होय । समुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ फेर एक उधु होय। उधुकी एक मात्रा॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ या र्तिसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो नारायणताल जांनिये ॥ यह ताल छह तालो हे ॥ अथ नारायणतालको स्वरूप लिख्यते अथ नाराघणतालकी उत्पत्ति लिस्चते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाद्यमें वरतिवेको बुत आधि मात्राको। तचु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको छेक । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको नारायणताल नाम्किनो ॥ • । ऽ। ऽ अथ पाठाक्षर त्रिल्यते ॥ याहीकों लोकिकमं परमळ् कहत है दां॰ दां॰ थारिकिट । किणनग गनथोंऽ थारिथों भिधिकट किटथों ऽ इति नारायणताल संपूर्णम् ॥

नारायणताल, पट्तालो ६.

समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक है सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	हुत ताल मात्रा ० १ ==	द्वत ताल मात्रा ० २ ==	त्रमु ताल मात्रा
प्रमञ्जे.	* ho-	क्रि	यरिक्ट
चचेकार.	/IC	,ho	्रिक
ताल.	6	٠٠٠	m

पष्टो तालाध्याय-नासयण ओर विष्णुताल चोतालो.

मान	चचकार.	प्रमेखे.	सहन्नाणी अक्षर ताल मात्रा.	सर्मस्या.
20	थेई तिंततत	किणनग गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी झालो
نح	्र इंड	थरिथा	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
w	थेई तिनवत	थिषिक्ट किटथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे रों। ताल लीक हे सा मात्रा दोय विदी हाथको झालों झालों भान

नारायणताल, षद्ताली ६.

विष्णुताल, चोतालो ४.

अथ विष्णुतालकी उत्पत्ति लिस्पते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य वाद्य नात्यमें वरति-करि। वांको विष्णुताल नाम किनों ॥ अथ विष्णुतालको लखन लिख्यते ॥ जाम एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय जांतिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ विष्णुतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ॥ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमुद्ध विको । चंचसुर आदिक पांच तालमेसों । गुरु दीय मात्राको । छघु एक मात्राको । प्हुत तीन मात्राको हेके । देशी ताल उत्पन छघु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ एक ट्युत होय । ट्युतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिक्षें मुख उपजावे । सो विष्णुतास कहत है थांकिटि थांकिटि ऽ गिडिदां। गिडिदां। तकतक घिषान थोंथों ऽ इति विष्णुताल संपूर्णम्॥

9.8.8

विष्णुताल, चोतालो ४.

	ताल लीक हे सो मात्रा दीय	सी मात्रा एक	1	. सां मात्रा तान यो झाटापे मान
समस्या.	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ली विंदी झालो	सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा	हनाणी अंक हे सी ताल लीक ह सी नाने टाणकी परिक्रमा विंदी झाली झा
	1	ल्डिक्		मात्रा प्लेतकी सहनाणी
सहनाण। अक्षर ताल मात्रा	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	हबु ताल मात्रा । २ ।	छषु ताल मात्रा । ३ ।	प्लुत ताल
प्रमिछे.	थांकिटि थांकिटि	गिडिदां	मिडिदां	तकतक
चचकार.	थेई तिततत	্জ (ন	्छ इंड	थेड़े तिततत
नाल.	٠	n'	m	2

गद्यताल, तितालो ३.

अथ गद्यतात्रकी उत्पन्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मार्गतात्रनमें विचारिकं गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वर्तिवेको। चंचत्पुट आदिके पांच ताञ्नमेत्तों उचु एक मात्राको। प्लुत तीन मात्राको तेके। देशी ताञ्ज उत्पन्न करि॥ वांको गद्यताञ्ज नाम-किनों॥ अथ गद्यताञ्को तक्षण लिख्यते॥ जामें दोय तघु होय। तपुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ या रीतत्तों गीतादिकमें सुख उपजावे सो गद्यताञ्ज जांनिये॥ यह ताञ्ज तिताञो है॥ अथ गद्यताञ्को स्वरूप लिख्यते॥। उस्ति गद्य-अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको त्रीमिक्ष । घिधिकिट विधिकिट गन्यों उद्गि गद्य-अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको त्रीकिकमें एत्तक हित्यते॥ ताल संपूर्णम् ॥

गद्यताल, तिताली ३.

समस्या,	पथम उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विदी झालों झालों मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	त्रषु ताल मात्रा । १ ।	ल्यु ताल मात्रा । २ ।	दुवत तास्त्र मात्रा (३ ३ ॥६)
प्तमुखे.	धिमितक	धिमिधिम	धिधिषिकट थिथिकिट गनथों
चचकार.	্ব বৃদ্ধ	्ट इंड	थेई तिततत थेई थेई
ताल.	<i>~</i>	ก๋	m

नर्तकताल, चोतालो ४.

फेर एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक ट्विराम होय । ट्विरामकी डेड मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उप-जावे । सी नर्तक ताल जांनिये ॥ यह ताल चोतालों है ॥ अथ नर्तकतालको स्वरूप लिख्यते ०। ०) अथ पाठाक्षर लिख्यते द्रुत आधि मात्राको । उषु एक मात्राको । त्रिवराम डेड मात्राको तेकें ॥ देशी तात उत्पन्त करि ॥ वांको नर्तकतात्र नामिकनों ॥ अथ नर्तकतालको लक्षण लिल्यते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय लघुकी एक मात्रा ॥ अथ नर्तकतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें बर्तिवेको वां॰ तक्यों। तां॰ तत्तक्यां ो इति नतंकतात्र संपूर्णम् ॥

•									١
समस्या.	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	प्रथम दुनकी सहनाणा अक ह सा वाल लाक ह पा गांग	BO IEIH IR KAR FIR TO TO TO TO THE TO	त्वकृत सहनाणां अक ह सा वात लाभ ह या गा भ	STEE THE STATE OF	द्रुतकी सहनाणी अंक ह सी तील लोक है पा गांग गांग	कि है सी मात्रा हैंड	हावरामका सहनाथा अभ र ता सान	11. 11.11
सहनाया	अक्षर वाल भाभः	द्वत ताल मात्र।		लघु ताल मात्र।	~	द्रुत ताल मात्रा	0	द्वि. ताल मात्रा	
GREG	1	· 	,	नुकार्य		• 17	<u>-</u>	2	प्रक्रिता
	ط طافه از د	AG		The state of the s	<u>, </u>	ام	U	-	तथड
17. 4 24.4	माञ	0		6	÷		m	,	30

इप्णताल, तिताले। छ.

िस्त्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उप-जावे। सी दर्गणताल जानिये॥ यह ताल तिताली है।। अथ दर्गणतालको स्वरूप लिल्पते ० ० ऽ अथ पार्राक्षर लिल्पते।। द्रुत आधिमात्राको । गुर दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको दर्भणताल नाम किनों ॥ अध दर्भणतालको लखन अथ द्र्पणतालकी उत्पनि लिस्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको। याहिको लोकिकमें परमतु कहत है घिमि॰ दां॰ तक्कुकु कुकुकें ऽ इति दर्णगताल संपूर्णम् ॥



षष्ठो तालाध्याय-दर्पण और मन्मयताल पद्तालो

ताल.	च चकार.	प्रमुख्ने.	सहनाणी अर्थर ताल मात्रा.	समस्या.
<i>-</i> :	/IC	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १ ==	पथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
ก๋	/ IC	·खं:	द्वत ताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
m	थेई तिततत	प्रकृतिक के के के कि कि के कि कि के कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झालो झालों मान

क्रमणताल, तिवाया है.

मन्मथताल, पर्तालो ६.

ब्रांनिये॥ यह ताल छहतालो है।। अथ मन्मथतालको स्वरूप लिख्यते। ००। ऽऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको ली-किकमें परमलु कहत है तकथों। थारि० थारि० तकथों। घिगितां घिघिकिट ऽ धिक्षिमन थोथों ऽ इति मन्मथताल-तेषुणेम्॥ हीय। उचुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीत्सों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो मन्यथताल क्षेषु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको मन्मथताल नाम किनों ॥ अथ मन्मथतालको तछन जिल्पते ॥ जामें एक तमु होय । तमुकी एक मात्रा॥ दोय दुत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक तमु अथ मन्मथतालकी उत्पत्ति किष्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको

मन्मथताल, षद्तालो ६.

Kalic	व्यक्ति	प्रमल	सहनाणी	समस्याः
		· ?	अक्षर ताल मात्रा.	
نہ	शेड	तकथों	त्रषु ताल मात्रा । १ ।	पथम लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक मात्रा एक
نه ا	/lo	थारि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा आधि
ni	Ac	थरि	द्रुत ताल मात्रा. ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक मात्रा आधि
30	्ट इंड	तकथों	उच्च ताल मात्रा । ४ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा एक
نوا	थेई तिततत	धिगितां धिभिक्ट	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।	मात्रा दोय विदी
نو.	थेई तिततत	धिधिगन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक मात्रा दाय विदा झाला झालापे मान

रतिताल, चोतालो ४.

चंचलुर आदिके गांच तालनमेतों। लघु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ बांको रितिताल नाम-अथ रतिमालकी उत्पत्ति लिक्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको।

989

पष्टो तालाध्याय-रतिताल ओर सिंहताल चोतालो.

किनों ॥ अथ रातिताङको हक्षण ि या रीतसों गीतादिकमें सुख डपजावे । ^३ ॐ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको हो रातिताल संपूर्णम् ॥

रतिताल, चोतालो ४.

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर तास्त्र मात्रा.	समस्या,
-	थेई	धुमिकिट	उच्च ताल मात्रा । १ ।	प्रथम उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
o.	हिं	धुमिकिट	सबु ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
mi	थेई तिततत	धाधिग धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाखो
20	थेई तिततत	धिमिकुक सेंसे	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो झालों मान

सिंहताल, चोतालो ४.

अथ सिंहतालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाद्यमें वरतिवेका । अषु प्रक् एक मात्राकों । द्रुत आधिमात्राकों लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको सिंहताल नामिकनों ॥ अथ सिंहतालको लक्षण

संगीतसार

हिल्यते ॥ जामें एक छष्ड होय । छषुकी एक मात्रा । तीन दुत होय । दुतकी आधि मात्रा । या रीतसों गीतादिकमें सुख उप-जावे। सो सिंहतास जांनिये॥ यह तास चोतासो है॥ अथ सिंहतासको स्वरूप सिंस्यते। ॰ ॰ ॰ अथ पाठाक्षर सिरुयते॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहत है थांकुकु। नकः कुकुः थां थांः इति सिहतात संपूर्णम् ॥

सिंहताल, चोतालो ४.

	सगा	तसार.		
समस्या.	मथम उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो तात ठीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रों म.न.
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उषु ताल मात्रा । १ ।	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुत ताल मात्रा ० % ==
प्रमुखे.	र्काकुक	 18	89	थां थां
च्चकार.	थुड	At	At	(to
ताल.	-	من	mi	. æ

वीरविकमताल, चोतालो ४.

अथ वीरविकमतालकी उत्पन्ति लिक्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य बाद्य नाद्यमें वरति-वेको । तड्ड एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दीय मात्राको होके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको वीरविकमताल

पष्टो तालाध्याय-वीरविकमताल ओर रंगताल पांचतालो. १७१

आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो वीरविक्रमताल जांनिये ॥ अथ नामिकनों ॥ अथ वीरविक्रमतालको लक्षण लिल्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी वीरविकमतालको स्वरूप जिल्यते । ॰ ॰ ऽ अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमलु कहत है थुंकर । थुमि॰ थुमि॰ थिकिनिक झेंझें ऽ इति वीरविक्तमताल सं

•	_	
-	_	
		•
	-	
	•	
a.	-	
- 5		
- 6	_	
- 1	-	
-	-	
**	~	

			41414	वारावक्रमताल, चाताला ४.
नाल.	च चकार.	प्रमिछे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
o ·	हें इंड	र्क्ट्रें	उच्च ताल मात्रा । १ ।	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
n:	/IC	थीम	द्धत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सा ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि
m	ite	र्धाम	द्भत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
သင်	थेई तिततत	थिकिनिक झेंझे	गुरु ताल मात्रा ऽ % ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो झालों मान

रंगताल, पांचतालो ५.

अर्थ रंगतात्रकी उत्पत्ति लिख्यंत ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नादयमं वरतिवेकों। हुत आधि मात्राको। गुरु दीय मात्राको हेके। देशी वाल उत्पन्न करि ॥ वांको रंगवाल नाम किनों ॥ अथ रंगतालको लखन

હર	•		संगीत(सार.		
ार द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा । ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा । या रीतता मातादिकम उ जांनिये ॥ अथ रंगतासको स्वरूप सिल्यते ० ० ० ० अथ पाठाशर सिल्यते ॥ याहिकों सोकिकमें तां० धिमि० तां० धिधिमन थोंथों ऽ यह तास्र पंचतासे है । इति रंगतास संपूर्णम् ॥ रंगतास्त्र, पंचतास्त्रे ५.	समम्या.	प्रथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	दुतर्का सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	मात्रा आधि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक है. सो मात्रा दोय विदी झालो हाथको झालोंप मान
र द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा जांनिये ॥ अथ रंगतालको स्वरूप गां० धिमि० तां० थिथिगन थांथों	सहनार्णा अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	द्वत ताल मात्रा ० २ =	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रत ताल मात्रा ० % ==	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८
ब्यार द्वत होय । ।त्व जांनिये ।। अ ० तां० धिमि	प्रमुखे.	धिमि	·i=	विभि	ਜ ਂ	धिधिगन थोंथों
न्धिल्यते ॥ जा तालमें च्या सुख उपजावे सो रंगताल गरमञ्जू कहत है धिमि॰	चचकार.	/tc	/IC	(ht)	्रीच	थेई तिततत
छिस्यते ॥ ^इ सुख उपजावि परमङ्क कहत	तास्त्र.	6.	۵,	m	∞ ∞	5.

श्रीरंगताल, पंचतालो ५. अथ श्रीरंगतालकी उत्पत्ति लिस्येते ॥ शिवजीते उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नादयमें वरतिवेको । तम्ब एक मात्राको । गुरु दीय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको हेके । देशी ताल उत्पन्त करि ॥ बांको श्रीरंगताल नामिकनों ॥ अथ

लीकिकमें परमतु कहत है थारिकुकु । धिधिकिट । योंकिट थिमिधिमि ऽ किणनकु । तकिधिकि धिमिगिन थोंथों ऽ इति श्रीरंगताल संपुर्णम् ॥ श्रीरंगतालको लक्षण लिल्यते ॥ जा तालमें दीय तघु होय । उघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फैर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसां गीतादिकमें सुख उपजावे.। सो श्रीरंगताल जांनिये ॥ अथ श्रीरंगतालको स्वरूप लिख्यते ।।ऽ।ेऽ यह पंचतालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको

श्रीरंगताल, पंचतालो ५.

1-					1
समस्या,	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	लचुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रादोय बिंदी झालो	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्सा विंदी झाली झालोंप मान
महनाणी अक्षर ताल मात्रा,	लघु ताल मात्रा । १ ।	ठघु ताल मात्रा । २ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।	ल्यु ताल मात्रा । % ।	च्छुत ताल मात्रा उपाठि
प्रमें हु.	थरिकुकु	विधिकिट	थांकिट धिमिधिमि	किणनकु	तकिथिकि धि- मिगिन थोंथों
चचकार.	্ত কু	शुङ्	थंई तिततत	थेहे	थेई तिततत थेई थेई
ताल.	6	•	gar	30	بنح

प्रत्यं ताल, पंचतालो

अथ पाराक्षर जिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहत है दिगितमि दांदां ऽ थरिकुकु थांथां ऽ धीकिट धीकिट ऽ थिधि-नाउ नामिकेने ॥ अथ पत्यंगतातको तक्षण जिल्घयेते ॥ जा तात्में तीन गुरु होष । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय तघु हीय । तघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सी पत्यंगताल जांनिये ॥ अथ पत्यंगतालको स्वरूप लिल्यते ऽ ऽ ।। चैचापुटादिक पांच तालनमेसी गुरु दीय मात्राकी। उघु एक मात्राकी ठेके। देशी ताल उत्पन्न करि।। वीकी पत्यंग-अथ प्रत्यंगतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिकं । मीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वर्रातेवेको किट। धिमिथों। यह ताल पंचताली है।। इति पत्यंगताल संपूर्णम्।।

मत्यंगताल, पंचतालो ५.

			1
समस्या,	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हं सा ताल लोक हं सा मात्रा दाथ विदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो पाल टीक हे सा मात्रा दाय विदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लोक हे सा भाग दाय विदी झालो
त्तहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।
प्रमुखे.	दिगिति यंदां	तत थरिकुकु थांथां	धीक्ट धीक्ट
चचकार,	थेई निततत	थेई तिततत	थेई तिततत
ताल.	6	نهم	m

प्रत्यंगताल, पंचतालो ५.

	8	
समस्या.	उचुकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो माः	नारकी मननामी अंक ने मी बात जीक है भी मा
सहन ो त ऽ मात्रा.	सिधिकिट उपु 1 मात्रा । ४ ।	Br –
	्ड इंट	कु

वांको चतुरस ताल नाम किनों ॥ अथ चतुरस तालको तछन लिल्यते ॥ जा तालमें एक गुरु हैंगिय । गुरुकी दीय म' मा ॥ और उक उषु होय । उषुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सी चतुरस्र चंचलुट आदिके पांच तालनमेसों । गुरु दीय मात्राको । तयु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको तेके । देशी तात उत्पन्न करि अथ चतुरस्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य गारयमें वरतिवेक। ज्ञाल जांनिये ॥ अथ चतुरस्र तालको स्वरूप लिख्यते ऽ। ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें थरिकुकु थांथां ऽ धिनदां । धिमिधिमि धिधिमन थोंथों डे इति चतुरस्र ताल संपूर्णम ॥ चतुरस्रतारू, तितालो ३.

संगीतसार.

			1411/1/11
समस्या.	मध्म गुरुका तर्गाणा पान र भारता विदी हाथको झाला	त्वकृत सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	त्वतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तान गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालापें मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	त्रषु ताल मात्रा । २ ।	प्लुत ताल मात्रा (डे ३ ॥७)
प्रमिछे•	थरिकुकु थांथां	धिगदां	धिमिधिप विषिगन योंथों
च चकार,	थेई निवतत	्ड इंड	थेई तिततत शहे शहे
ताल.	6	a'	m

त्रिभिन्नताल, तितालो ३.

सो त्रिमिनताल जांनिये॥ अथ त्रिमिनतालको स्वरूप लिल्पते। ऽे अथ पाठाक्षर जिल्पते॥ याहिको लोकिकमें परमलु अथ त्रिभिन्नतालकी उत्पात्ति लिख्यते ॥ शिवजीतें उन मार्गतालनमेंसो विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरित-उत्पन्न करि ॥ वांको त्रिभेनताल नाम किनों ॥ अथ त्रिभिन्नतालको तलन तिल्यते ॥ जा तालमें एक तपु होय । तपुकी एक बेको.। चंचत्पुर आदिके पांच तालनमेसों। छषु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके। देशी ताल मात्रा।। एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा।। एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा।। या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे कहत है धीकिटि। धिधिकट धिकत ऽ तकुकुन कुकुकिण झेंझें 3 यह तितालों है।। इति तिभिन्नताल संपुर्णंमु।।

त्रिभिन्न ताल, तितालो ३.

नाल.	चचकार.	प्रमञ्ज.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
o-	थि	धीकिट	त्रषु ताल मात्रा । १	पथम उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
n'	थेई तिततत	धिथिकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हातको झालो
m	थेई निततत थेई थेई	तकुक तकुक किणसंस	प्टुत ताल मात्रा (३ ३ ॥७)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सो मात्रा तीन गाउकुंडाओं हातकी परिक्रमा विंदी झालो झालोंभान

हंसनु ताल, पंचनालो ५.

किरि ॥ वांको हंसनु ताल नाम किनों ॥ अथ हंसनु तालको स्वरूप राखन जिल्यते ॥ जा तालमें एक जघु होय । राधुकी एक मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी मात्रा ॥ ओर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ देग होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ आध्य हंसनु तालको स्वरूप नात्रा ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ हंसनु तालको स्वरूप अथ हंसनु तालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमे विचारिके गीत नृत्य बाग्र नाद्यमें वरतिवेको बंबतुर आदिक पांच तालनमेंसों। त्रघु एक मात्राको। प्लुत तीन मात्राको। द्रुत आधि मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न हिल्यते । ३०० डे अथ पाठाक्षर हिल्यते ॥ याहिको होकिकमें परमङ्क कहत है तक्यों। ताक्किट धिकिट तक्यों डे धिमि॰ दां॰ ततकिटि धिधिगन थोंथों डे इति हंसनु ताल संपूर्णम् ॥ हंसनु ताळ, पंचताछो ५.

संगीससार.

		गत्रा एक		तीन		HB.		ज्याप्त	5 = 5	तीन	मान	
समस्या,		क महमापि थंक हे में। मान तीक है मी म	मयम उप्रमा सहनागा जरु है है। है है है	तका सहनाणी अंक है सा ताल लोक है सो मात्रा तीन	गालकुंडाला हाथकी परिक्रमा विदी झाला	S TEIR TO FINE CO. C. C. C. C. C. C. C. C. C. C. C. C. C.	दुतकी सहनाणा अक ह सा ताल लाक ह पा नाना		दुनकी सहनाणी अंक हे सा तील लोक है या गांग जाप	के महुला अंक है मा ताल लीक है सो मात्रा तीन	जुतका पहुनाचा जुम र भाग विद्या झालो झालाप मान	मीतकडाला लायमा
मदनाणी	ΧĬ.		11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	1	(3 2 10)		तिति भाग		मात्रा	1	_	- 3
	परमछु.		तक्यों		तिकट थिकिट प	Ì	शिमि	Ì	· k		नतिकिरि धि-	Trong
	च्चकार.		914	F	थेई तिततत	थड़ थड़	, ht	,	, h	F	थेडे नितत	
	नाल.		o	<u>.</u>	0	;		'n		30		5

तुरंगलीला ताल, चातालो ४.

ताल नाम किनों ॥ अथ तुरंगलीला तालको तछन जिल्यते॥ जा तालमें एक द्रुत होय। द्रुतकी आधिमात्रा॥ ओर एक दिवराम अथ तुरंगलीला तालकी उत्पनि लिक्यते॥ शिवजीने उन मार्गताउनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नारचमें बरित-विको । चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसो । द्वत आधिमात्राको द्विराम पाँणमात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको तुरंगलीला

षष्टो तालाध्याय-तुरंगलीला ताल, शरभलीला ताल आठतालो.१७९

नाउ जानिये ॥ अथ तुरंगडीला नासको स्वरूप सिल्यते ००० अथ पाठाक्षर सिल्यते ॥ याहिकों सोकिकमें परमद्भ होय । द्विरामकी पोंणमात्रा ॥ और दीयद्रुत होय । द्रुतकी आधिमात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो तुरंगलीला कहत है. जग धरां ठ तक थों । इति तुरंग होता ताल संपूर्णम् ॥

तुरंगळीला ताल, चोतालो ४.

नाल.	च्यकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	समस्या,
٠	, ltc	जग	ट्रत ताल मात्रा ० १ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो तान नीक हे सो मात्रा आधि
نم ا	पंप	धलां	द्वि, ताल मात्रा े २ ≡	द्विरामकी सहनागी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा पींण
m	(to	तक	कृत ताल मात्रा ० ३ ≔	दुतभी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
200	(ht	द्ध	द्भन ताल मात्र ० %	दुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

श्रम्मलीला ताल, आठतालो ८.

नाउको उछन जिल्पते॥ जा तालमें रीय उषु होय। उषुकी एक मात्रा॥ ओर चार द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ फेर छबु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको हेके। देशी ताउ उत्पन्न करि॥ वांको शरभहीला ताल नामिकनों॥ अथ शरभहीला अथ शरमलीला तालकी उत्पति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गताहनमें विचारीके ।गीत नृत्य वाद्य नादयमें वरतिवेकों ।

संगीतसार.

दीय समु होय । समुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उपजावे । सो शरमसीसा तास जांनिये ॥ यह आठतासो है ॥ अथ शरमसीसा तासको स्वरूप सिख्यते ॥००००॥ अथ पाठाक्षर सिस्यते ॥ याहिको सोकिकमे परमसू कहत है खिगदां। धिमि किट । दिग० दिग० तां वां व पृक्टि । तक्यों । इति शरमछी हा तां संपूर्णम् ॥

शरमहीह्या ताल, आउतालो ८.

परमतु. अक्षर ताळ मात्रा, समस्या	सिगदां तयु नास मात्रा सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	चिमिक्ट हुव ताल मात्रा त्रुक्की सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	दिंग हुत ताल भात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल टीक हे सो मात्रा आधि	दिंग द्रुत ताल भात्रा दुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो भात्रा आधि	तां हुत ताल मात्रा हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
चचकार.	is is	થકે	ΛE	ИC	Λic
ताङ.	ř	ئى	m	∞.	ثمة

षष्ठो तालाघ्याय-शरभलीला ताल, कंदर्प ताल पंचतालो. १

ताल.	चचकार,	परमञ्ज.	सहनाणा अक्षर दाल मात्रा.	समस्या.
w	ΛC	वां	द्वत ताल मात्रा ० ६ =	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
9.	्ड इंड	धूकिट	उच्च ताल मात्रा - ७	त्युकी सहनाणी अंक हे सी नात तीक हे सी मात्रा एक
v	शुरू	तकथों	ल्यू ताल मात्रा	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

शरमछीला ताल, आउताली ८

कंदर्प ताल, पंचतालो ५

विको। द्रुत आधि मात्राको। उपु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ बांको कंदर्प ताल नाम एक मात्रा॥ और दोष गुरु होय। गुरुकी दोष मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे। सो कंद्रे तास जांनिये॥ यह तास किनों।। अथ कंद्र तालको सछन सिरुयते ॥ जा तालमें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक समु होय । समुकी अथ कंड्प तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें । बरति-**म्डेक** पंचताली है।। अथ कंद्रपंतालको स्वरूप लिस्क्यते ००। ऽऽ अथ पाठाक्षर जिस्क्यते।। याहिको लोकिकमें परमञ् तक जग विभितक। धास्त धीस्त ऽ धिधिमन थोंथों ऽ इति कंदपैताल संपूर्णम् ॥

5 -
8
9
P
10
E
ताल
IC
che
L.
10
.18

					,-		1		1	
न्तमस्या,	A STATE OF THE PROPERTY OF THE	पथम दुतकी सहनाणी अंक है सा ताल लाक ह सा माना आप	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	THE PARTY AND THE PARTY OF THE	उचका महनाणा अक ह भा वाज लाक ह वा गाग अम	महन्द्री यहनाणी शंक हे सा ताल लीक है सा मात्रा दीय	भूतमा पर्वासाम् । सम्बन्धाः सास्ता	महक्षा महत्राणी अंक हे मी ताल लीक हे सी मात्रा दीय	गुरम्। पहुनाया नाम है । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	
सहनाणी	अस्त नाल मात्राः	उद्भाताल मात्रा ० ३ ॥	द्वत ताल मात्रा ० २ =	निया साम मान	5° -		गुरु ताल भाता ऽ ४ ।ऽ		गुरु ताल मात्र। ऽ ५ ।ऽ	
प्रमञ्	1	त	वन	Capital Capital and Statement Section of Assessed	धिमितक		धीकत धीकत		धिधिमन कांओ	7
11.00	व व का ८	AC	/to		स्य म्ह	The state of the s	थेई तिततत		थेई तिवतत	
	10 10 10	o÷	n.		w		∞		نح	

वर्णाभन्न ताल, चोतालो ४.

वेको। द्रुत आधि मात्राको। तदु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको तेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको वर्णभिन्नताल नाम किनों।। अथ वर्णभिनतासको सम्म निरुषते।। जा तासमें दीय दुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा।। ओर एक सपु होय। सघुकी अथ वर्णभिन्न तालकी उत्पत्ति लिस्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य वाद्य नाट्यमें वरित-

षष्टौ तालाष्याय-वर्णभिन्न ओर कोकिलात्रिय ताल तितालो. १८३

कहत है एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीतसौँ गीतादिकमें सुख उपजावे ॥ सी वर्णभिन्न ताल जांनिये ॥ यह ची-लोकिक्में परमञ्ज अथ वर्णमिन तालको स्वरूप लिरूपते ००।ऽ अय पाठाक्षर लिरूपने ॥ याहिको थां ॰ थरि ॰ तकुथरि । तकिकट झेंझें । इति वर्णभिन ताल संपूर्णम् ॥ ताले हैं ॥

वर्णभिन्न ताल, चातालो ४

नाल.	चचकार.	प्तमिछु.	सहनाणी अक्ष्य ताल माञा.	समस्या.
•	Ac	धां	द्रुत ताल मात्रा ० ी ==	पथम दुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल क्षिक हे सो मात्रा आधि
نه	/l u	थरि	इत ताल मात्रा • • =	दुनकी सहनाणी अंक हे सी नाट टीक हे सी मात्रा आधि
mi	रेड्ड	तक्षारि	लुष तान मात्रा । ३ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी ताज लीक हे सी मात्रा एक
20	थेड़े तिततत	तिकिकिट झें	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा नाउ टीक हे सा मात्रा दोय विदी झाओं झाओं मान

कोकिलाप्रिय ताल, निताला ?.

अथ कोकिलाप्रिय तालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विवारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेको । चंबतपुरादिक पांचतास्त्रनमसो । प्लुत तीन मात्राको । स्यु एक मात्राको सेके । देशी तास उत्पन्न करि ॥ वांको को- कि सामिय नास किनों ॥ अथ कोकि समिय तासको सखन सिल्यते ॥ जा तासमें । एक प्लत होय । प्लतकी तीन मात्रा ॥ सो ताउ कोकिजापिय ताउ जांनिये ॥ अथ कोकिजापिय ताउको स्वरूप हिस्चिते ८।८ अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहत है घोरूत धोरूत थिथिकिट 3 तक्यों। तिकिदिगि दिथिगिन थोंथों 3। इति कोकिलापिय ताल संपूर्णेम् ॥ अगेर एक छघु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे ॥

कोकिलाप्रिय ताल, तितालो इ

नाल.	चचकार.	प्सिछे.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	ममस्या,
9.	थेई निततत थेई थेई	धीकत धीकत घिधिकिट	प्टुत ताल मात्रा (े १ ॥)	ट्छतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
n'	थेडे	तकथों	छषु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
mi	धेई तिततत धेई धेई	तकिदिगि बि- धिगिन थोंथों	तिक्रिदिगि बि- त्लुत ताल मात्रा धिगिन थौंथों (े ३ ॥८)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे तो ताल लीक हे तो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी झालों झालों मान

निशंकलीला ताल, चोतालो ४.

बर्तिवेको । चंचत्पुटादिक पांचतालनमेंसों । प्लुत तीन मात्राको । गुरु दीय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ बांको नि-अथ निशंकलीला तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजींनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाटयमें शंक्रतीला ताल नाम किनों। अथ निशंकरीला तालको लखन लिख्यते॥ जा तालमें दीय प्लत होय। प्लतकी तीन माना॥ ओर दीय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रिततों भीतादिक्षें सुख उपजाते । तो निरांकठीला नाल जानिये ॥ यह वाल यीनाकी अध पाटाक्षर सिन्ध्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमसु कहत अरिथां थारियां तकुकुकु डे थीकिट थीकिट यरिया डे तत्त्रां निगितां ड विविधित थांथों ड इति निशंकलीलाताल संपूर्णम् ॥ है।। अथ निशंकलीला तालको स्वरूप लिल्यन डेडेडड

निशंकलीला ताल, चातालो ८.

नाल.	चचकार.	प्तमुखे.	सहनाणी अक्षर् ताळ मात्रा,	समस्या.
6	थेई तिततत थेई थेई	यरियां यरियां प्लुत नात मात्रा तक्कुकु	प्लेत ताल मात्रा (डे १ ॥ ८)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
'n	थेई तिततत थेई थेई	(B)	प्लुत तान्द्र मात्रा (<u>डेर्स्स</u>	प्टुनकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी शाले
m	थेई तिततत	ततदां तमिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विदी झालो
20	थेई विततत	िधिधिगिन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रादाय विदी झालो झालाँ मान

जय ताल, साततालो ७.

अथ जयतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य वाद्य नाटयमें वरितिवेको चंचत्पुटादिकमें । पांच तालनमेसी लघु एक मात्राको । गुरु दीय मात्राको । दुत आधिमात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके

एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फैर दीय उचु हाय । त्युकी एक मात्रा ॥ दीय द्वत होय । द्वतकी ताल साततालो है ॥ अथ जयतालको स्वरूप लिल्पते । ऽ ।। ० ० ऽ अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमुख देशी तास उत्पन्न करि। वांको जयतास नाम किनों ॥ अथ जयतासको सङम सिस्यते ॥ जा तासमें एक समु होय । समुकी आधि मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या शितसों गीता दिकमें सुख उपजांवं । सो जयताल जानिये केहत है ताई। तत्थिरि थरिथा ऽ ताहं। ताहं। तत ॰ था ॰ तत्था ताथरि थरिथों ऽ इति जयतास्त संपर्णम्।।

जय ताल, सातताले। ७.

नाल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
<i>-</i>	कुरु	नाहं	उषु ताल मात्रा । १	प्रथम उघुकी सहनाणी अंक हे सो तांठ ठीक हे सो मात्रा एक
n'	थेई तिततत	तत्थरि थरिथा	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताट लीक हे सी माना दीय विदी झाली
m	cho-	ताह	छच् ताल मात्रा । ३ ।	स्युकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी माता एक
20	हुं इंड	.हि	त्रषु ताल मात्रा । ४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सा मात्रा एक
نح	AC	तत	द्रुत ताल मात्रा ० ५ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा आधि

ં
ातताला
ताळ, स
स

हि	चचकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
نو. ا	Ac	था	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
9.	थेई नित्तत थेई थेई	तत्था नाथरि थरिथों	प्टुत ताल मात्रा (े जाहि)	प्हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताट टीक हे सी मात्रा तीन विदी झाटो गोटकुंडाटो हाथकी परीक्रमा झाटापें मान

पूय ताल, माततालें ७.

दीय मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दीय दुत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको पूयताल नाम किनों॥ अथ पूयतालको लखन लिल्यते॥ जा तालमें एक गुरु होय। गुरुकी द्रोय मात्रा ॥ एक तत्रु होय । त्रघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । अथ पूय तालकी उत्पत्ति लिस्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नारचमें वर्तिवेको याहिको लोकिकमें परमलु कहत है।। दिगदिग दांदां ऽ ताधिमि ताथिमि तत्तिमि ९ विमि ॰ तां ॰ तत्तिभि तांतां ऽ तत्त्रिभि सी पूयताल जांनिये ॥ यह ताल साततालो है ॥ अथ पयतालको स्वरूप लिख्यते ऽऽ००ऽ। ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ं अंगुरादिक पांच तालनमेसों गुरु रीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको। द्वत आधि मात्राको। त्यु एक मात्राको हेक तिकिदिगि घिषिगन थों डे इति प्यताल संपूर्णम् ॥

	l
9ં	١
E	
-	١
सातत	
6	
C	1
2	5

ममस्या.	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दीय विदी झाली	प्हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताट टीक हे सो मात्रा नीन गोटकुंडाटो हाथकी परिकमा विंदी झाटो	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	गुरुकी महनाणी अंक ह सो ताउँ टीक हे सा मात्रा रोप विदी झाटो	त्वपुकी सहनाणी अंक हे सी तान ठिक हे सो मात्रा एक	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सी ताळ ठीक हे सी मात्रा तीन गोछकुंडाछो हाथकी परिक्रमा विदी हाछो हाछोंप मान
हुँद सहनाणी अक्षर् ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	प्टुत ताल मात्रा (ंऽ र ॥७)	द्वत ताल मात्रा ० ३ ==	द्वत ताल मात्रा ० % ==	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	छबुताल मात्रा । ६ ।	दुत ताल मात्रा (डि. १ ॥६)
र्गमेखे.	दिगदिग दांदां	ताधिमि ताधि- मि तत्रधिमि	धिमि	चं	तत्विभि वांतां	तत्तिधिमि	तकिदिगि धिधिगन थें।
चचकार.	थेई तिवतत	थेई तिततत थेई थेई	,hc	AC	थेई तिवतत	थड़े शहर	धेई तिततत थेई थेई
ताल.	9.	من	m	∞.	نو .	w	9.

रति ताले थे. अथ रति तालको । गीत नालको । गीत नृत्य नाय नायमे वरतिवेको

969 δĺ.

चंचरपुटादिक पांचतात्वमेंसों। सबु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको होके। देशी तात्र उत्पन्न करि॥ बांको रितताल नाम किनों॥ अथ रिततालको सळन स्टिस्यते॥ जा नालमें एक न्यु होय। स्युकी एक मात्रा॥ तीन गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे। सो मिताल जांनिये॥ यह तात्र चोतालों है॥ अथ गितालको स्वरूप सिस्वयते। ऽऽऽ अथ पाठाक्षर सिस्वयते॥ याहिको सोकिकमें परमतु कहत है तकथों। दांदां दिगिदिगि ऽधिरकुकु थिरिकुकु ऽनकुकुकु झें ऽ

नाल.	चचकार.	प्रमिछु•	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
٠	(S)	तकथों	उच्च ताल मात्रा	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
0.	थेई विवतत	दांदां दिगादाग	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाट टीक हे सो मात्रा दीय विंदी झाछो
m	थेई तिततत	थरिकुकु धरिकुकु	गुरु तान माता ऽ ३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे मी तान नीक हे सी मात्रा रोय विंदी सालो
∞	थेइं तिततत	नकुकुक स	गुरु ताल मात्रा ऽ % ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विदी झालो झालों मान

विष्णुमत रति ताल, आठतालो ८.

नारयमे अथ बिष्णुमत रतितालकी उत्पांच लिख्यते ॥ शिवजींने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य बर्तिवेको । चंचलुटादिक पांचतालनमेंसां । द्वत आधि मात्राको । छघु एक मात्राको । गुरु दीय मात्राको लेके । देशी ताल हुतकी आधि मात्रा ॥ एक त्यु होय । त्युकी एक मात्रा ॥ फेर दोय द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ याँ रीतसों गीतादिक्में सुख उपजावे । सो विष्णुमत रितताल जांनिये ॥ अथ विष्णुमत रिततालको स्वरूप लिख्यते ००००।०० ऽ अथ पाठाक्षर हिस्यत ॥ याहिको होक्किम परमें कहत है डां॰ हां॰ तिक विकि थाथे। यिरि॰ उत्पन्न करि॥ वांको विष्णुमत रतिताल नाम किनों ॥ अथ विष्णुमन रानितालको स्वरूप लिल्यते ॥ जा तालमें च्यार द्रुत होय। थारि कुकुनिक में ऽ इति विष्णुमत रितताल संपूर्णम् ॥

विष्णुमत रतिताल, आठताली ८.

			सहनाणी	समस्या
ताल.	चचकार.	प्रमुखे.	अस्र ताल मात्रा.	
·	/hc	खं	द्रुत ताल मात्रा ० १ ==	प्रथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
n	(ht	·hv·	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
mi	,-5 %	तिक	द्भत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक ह सो मात्रा आधि
∞	,hc	तिक	द्रुत ताल मात्रा ० ४ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो नाठ ठीक हे सो मात्रा आधि

षष्ठो तालाध्याय-विष्णुमत रति ताल ओर चचरी ताल तितालो. १९५

विष्णुमत रति ताल, आठतालो ८.

चचरी ताल, तितालो ३.

द्भुत आधि मात्राको । र्विराम पीन मात्राको टेके । देशी ताल उत्पन किरि । वांको चचरीताल नाम किनो ॥ अथ चचरीताल-को सक्षण जिल्यते ॥ जातालमें क्षेय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दिवराम होय । दिवरामकी पोन मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकमें सुख उपजावे। सो चचरीताउ जांनिये ॥ यह तास तितालों है ॥ अथ चचरी तासको स्वरूप लिख्यने ००० अथ अथ चचरी तालकी उत्पनि लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नारयमें वरितिको माठाक्षर लिख्यते ॥ याहिकों लोकिकमें परमञ् कहन है था० थै० थरिकु ठ इति चचरीताल संपूर्णम् ॥

चम्रताल, तिताला ३.

ताल.	चचकार.	परमञ्ज.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या,
6	ΛC	धा	द्भत ताल मात्रा ० १ ==	पथम द्रुतकी सहनाणी अंक है सी नाट हीक हे सी मात्रा आधि
oż	Λ ι σ	<i>া</i> ন	द्भत ताल मात्रा ० १ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताट टीक हे सा मात्रा आधि
m	तत	थरिकु	द्मिं ताल मात्रा ठ ३ ≡	र्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल टीक हे सो मात्रा पोण मात्रों मान

कंकाल ताल, चोतालो ४.

अथ कंकाल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरति-वेको । चंचलुट आदिके । पांच तालनमेसों लघु एक मात्राको । गुरु दीय मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कंका सता उनाम किनों ॥ अथ कंका सता सका निष्यते ॥ जा तालमें एक तपू होय । जपकी एक मात्रा ॥ ओर दीय नाल जांनिये।। अथ कंकाल नालको स्वरूप सिल्यते। ऽऽ। अथ पाठाक्षर जिल्यते॥ याहिको छोकिकमें परमतू कहते है।। गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फिर एक टाषु होय । उषुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकरें सुख उपजाते । सी कंकाल किटिकिटि । किटिकिटि थांकिट ऽ थिमिथिमि नांनां ऽ तक्यों । इति कंकालनाल संपूर्णम् ॥

पड़ो तालाध्याय-कंकाल ताळ ओर मह ताल, पट्तालो.

ति. प्रमुक्त (प्रमुक्त	19-				
बचकार. परमळु. अक्षर ताळ धेई किटिकिटि उमु ताञ ते किटिकिटि गुरु ताञ ते धांकिट ८ २ धोई वांतां ८ ३	मस्या,	उचुकी सहनाणी अंक हे सा ताल टीक हे सो मात्रा	सहनाणी अंक हे तो ाल ठीक हे तो मामा विदी झाले।	अंक ह सी वास बिंदी झालो	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा
हों की प्र	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	नाउ	100	म ज	क म
	વ(મહે.	किटिकिटि	किटिकिट थांकिट	धिमिधिमि वांतां	तक्थों
10 m 20	चचकार.	र्ड ।	∤l⊏	(te	्ड इंड
	ताल.	9.	'n	mi	200

र्कताल ताल, चोतालो ४.

मह ताल, पर्तालो ६.

अथ मख्रतालकी उत्पन्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाद्यमे वर्तिवेकों ॥ अय महतालको तक्षण तिस्यते ॥ जा तालमें च्यार त्यु होय। त्युकी एक मात्रा॥ एक द्वत होय। दुतकी आधी मात्रा॥ एक र्विराम होय । र्विरानकी गोंण मात्रा ॥ या रीततों गीतादिकमें मुख उपनावें । सो महताल जांनिये ॥ यह ताल छ तालें। है ॥ लुषु एक मात्राको । दुत आधी मात्राको । द्विराम पाँण मात्राको छेके । देशी ताछ उत्पन्न करि ॥ यांको मछताछ नाम किना ॥ अथ्य मह्नातको स्वरूप न्निल्यने ।।।।०० अय पाठाक्षर न्निल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहने है ताहं। तक्यों। बाहं। तकथीं। जम ॰ धनां > इति महताल संपूर्णम्।।

نععا	
8	
600	
e,	
0	

नाल.	चयकार.	प्रमेहुं.	सहमाणी अक्षर ताल मात्रा,	समस्या.
`	्ड इंड	ताहं	उच्च ताल मात्रा । १	पथम तघुकी सहनाणी अंक हे सा तान तीक हे सी मात्रा एक
กำ	थह	तकर्थों	उच्च ताल मात्रा । २	अधुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सी मात्रा एक
m	थेई	नाह	त्यमु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा एक
20	थेड्ड	तकथाँ	उद्य ताल मात्रा - %	स्युकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
5 °	/l o	जग	० उद्गत ताल मात्रा	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सा ताट टीक हे सा मात्रा आचि
w	नव	ध	र्गवे. ताल्ज मात्रा े ६ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताज तीक हे सो मात्रा पोण मात्रांपे नाम

रंगामरण ताल, पंचताली प.

अथ रंगाभरण तालकी उत्पत्तिं लिख्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नाट्यमे बरिते वैवलुट आदिक पाँच तालनमेसों। गुरु दोय मात्राको। तद्यु एक मात्राको। प्लेत तीन मात्राको लेके ॥ देशी ताल

याहिकों डोकिकमें परमन्तु कहते है तत्था तत्था ऽ विविक्ति तत्था ऽ धरि थरि। नक्थों। तकुकुत कुकुकिण झे डे इति सो रंगाभरण ताल जानिये ॥ यह पंचतालो है ॥ अथ रंगाभरण तालको स्वरूप लिल्यते ऽऽ।। ऽ अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ उत्वन करि ॥ वांको रंगांभरण ताल नाम किनों ॥ अथ रंगाभरण तालको लक्षण लिल्पते ॥ जा तालमें रोय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय छषु होय। छषुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें संख उपजाबे रंगाभरण ताल संबूर्णम् ॥

रंगाभरण ताल, पंचतालो ५.

चक्कार. परमळु. अक्षर ताळ मात्रा. अक्र ताळ मात्रा. प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ औक हे सो मात्रा होय धेई तिततत तत्था तत्था उ. १ । । प्रकि ताळ मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ औक हे सो मात्रा होय धेई तिततत तक्थां ट छुत ताळ मात्रा तक्षुकी सहनाणी अंक हे सो ताळ ठीक हे सो मात्रा एक धेई पिई कि तक्थां उ. १ । । <th></th> <th></th> <th></th> <th></th> <th></th>					
थई तिततत तत्था तत्था त्रथा त्रथा त्रथा त्रथा तुरु ताल मात्रा प्रथम गुरुकी महनाणी अंक हे सी ताल टीक हे सी मात्रा होय के विद्या है यह प्रतितत्त तक्ष्कृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त हिंदी हालों सिंदी हालों मात्रा तक्षकृत कुकु- प्रतितत्त हिंदी हालों हिंदी हालों सिंदी हालों मात्रा तक्षकि हिंदी हालों मात्रा तक्षकि हिंदी हालों सिंदी हालों सिंदी हालों मात्रा सिंदी हालों सिंदी हालों सिंदी हालों सिंदी हालों मात्रा सिंदी हालों सिंदी हिंदी	ताल.	व्यवकार.	प्रमङ्गु.	सहनाणी अंक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
भेड़े नितत तक्कुत कुक तुरु ताल मात्रा पुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा होया है के से नात्रा मात्रा प्रकृति तक्कुत कुक - त्युत ताल मात्रा प्रकृत तक्कि कुक - त्युत ताल मात्रा प्रकृत कुक - त्युत ताल मात्रा प्रकृत सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा ए प्रकृत तितत तक्कुत कुक - त्युत ताल मात्रा प्रकृत सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा प्रकृत कुक - त्युत ताल मात्रा प्रकृत सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा प्रकृत विदेश हो सी मात्रा प्रकृत विदेश हो सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी सी	نه ا	थेई. विवतत	तत्था तत्था	नाउ	पथम गुरुकी महनाणी अंक हे सी ताल लैंकि हे सी मात्रा दोय विंदी शालो
भेई थेई विज्ञ कुक- टुउत तात्र मात्रा टिड्न सहनाणी अंक हे सो तात्र तीक हे सो मात्रा प्र के से सिनाणी अंक हे सो तात्र तीक हे सो मात्रा प्र विज्ञ सहनाणी अंक हे सो तात्र तीक हे सो मात्रा प्र विज्ञ सहनाणी अंक हे सो तात्र तीक हे सो मात्रा प्र विज्ञ सहनाणी अंक हे सो तात्र तीक हे सो मात्रा प्र विज्ञ सिक्त सहनाणी अंक हे सो तात्र तीक हे सो मात्रा सात्र सात्रा सात्र सात्रा सात्रा सात्रा सात्रा सात्रा सात्रा सात्र सात्रा सात्रा सात्रा सात्रा सात्रा सात्र सात्रा सात्र सात्र सात्रा सात्र सात्रा सात्र सात्र सात्रा सात्र सात्र सात्रा सात्र सात्य सात्र स	n'		धिधिकिट नत्था		गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
धंई तक्यों । ४ । धंई तितत तकुकृत कुकु- तुत तात्र मात्रा तहुतकी सहनाणी अंक हे सो तात्र ठीक हे सो मात्रा प्रें थेई थेई विण सें (उ प्राठ)	m	्ट इंड	थरिथरि	मान	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक
थेई गिततत तकुकृत कुकु- एडुत ताल मात्रा टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा थेई थेई किण से (उ पाठ) गोछकुंडाछो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो झालों	50	भूड	तक्यां	उचुनाल मात्रा । ४ ।	त्वपुकी सहनाणी ांक हे सी ताल ठीक है सी मात्रा एक
	5	(E chur	तककृत कुक- किण स		

जयमंगल ताल, चोतालो ४.

अथ जयमंगलतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमं विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नारचमं वर्गत-वेकों। उचु एक मात्राको। द्वत आधि मात्राको ठेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको जयमंगलताल नाम किनों।। अय जय-अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको जोकिकमें परमदु कहते है तिकितिक । दांतिक । धिमिधिमि । थों॰ इति जयमंगलताल संपूर्णम् ॥ मंगलतालको लखन लिल्यते ॥ जातालमें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ या रीत-सों गीता दिकमें सुख उपजावें। सो जयमंगठताठ जांतिये ॥ यह चांताठो है ॥ अथ जयमंगछता छक्को स्वरूप छिल्यते ।।। ॰

जयमंगल ताल, चोतालो थ.

मथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक उदुकी सहनाणी अंक हे सो ताल श्रीकृहे सो मात्रा एक उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रा मान	अक्षर नाढ मात्रा.	वाकतिक दोनकि होनकि धिमिधिमि	the char char char char char char	
متو يوام مود بق و حود الالاعلام	नाउ	בי	, lo	
सो तात लीक हे सो मात्रा	माउ	धिमिधिमि	'hn-	j
सहनाणी अंक हे सो वाट दीक़ हे सो	4	hr	ehar sol	
उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो	नात	तिकृतिक		
समस्या.	महनाणी अक्षर ताद्ध मात्रा.	प्रमञ्जु.	चचकार,	नाल.

विजयानंद नाल, पंचतालो ५.

वेकों । छघु एक मात्राको । गुरु दोय मात्राको छके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको विजयानंद ताल नाम किनों ॥ अथ विजया-नंद तालको लखन लिख्यते ॥ जा तालमें दीय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ तीन गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीतरों गीतादिकमें सुख उपजांवे । सो विजयानंद ताल जांनिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ विजयानंद तालको स्वरूप लिख्यते अथ विजयानंदतालकी उत्पाचि लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नारयमें बर्गत

इति विजयानेद ताङ संपूर्णम् ॥ विजयानेद ताछ, पंचताछो ५.

ऽ धांधां

रिमल् कहत है ताहं। तातिक।

न्टिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें

अथ पाठाक्षर

288

	_	1	1	1 ,0-	1	
।वस्यानद् ताल, पचताला प.	समस्या,	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	लबुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउँ ठीक हे सो भात्रा दोय विंदी झाछो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोष विदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी नाल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालों झालों मान
万の一	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	ल्घु ताल मात्रा । १ ।	त्रषु तात्र मात्रा । २ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ 8 ।	मुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८
	प्रमुखे.	ताहं	तातिक	धिकिटाके धिकिटाके	धांयां . स्रिमिधीम	धिदिगिन थों
	चंचकार.	थङ्	शहर	थेई दिक्तत	भेड़े तिततत	थेड़े तिततत
	नाळ.	 -	ď	mi	သ	3.

राजविद्याधर ताल, तितालो ३.

संगीतसार.

80 E

अय राजविद्यायरतालक् उत्पत्ति. लिक्स्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमं विदारिके। गीत नृत्य बाद्य नाद्यमें बरितिवैकों। उचु एक मात्राको । द्वन आर्थि मात्राको । इतिराम पोंण मात्राको टिके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको राज-मिद्याभर ताल नाम किनों ॥ अथ राजिवद्याथर तालको छछन लिज्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और सी गजविद्यायर ताल जांनिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ राजविद्यायर तालको स्वरूप लिल्यंत । ० े अथ पाठाक्षर एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ या भीततों गीतादिकमें मुख उपजावें जिल्पते ॥ याहिको त्रोकिकमें परमतु कहत है तक्यों । तां॰ तथों े इति राजविद्याधर तात्र संपर्णमु ॥

	नाल.	۶.	ů.	m
	चचकार.	्ट्रे जि	(IO	नन
	प्रमिलु•	तक्यों	चाः	तथां
गजविष	महनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उषु ताल मात्रा । १ ।	द्रुत ताल मात्रा ० २ ==	इवि॰ ताल मात्रा २
गजविद्याधर ताक, तितालो ३.	समस्या,	प्रथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल टीक हे सी मा	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मा

अभंग तालो, दोयताली २.

m m

मात्रापे मान

अथ अमैगतालकी उत्पनि लिक्यने ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य वाद्य नार्यमे वरतिवेकां॥

अभंग ताल ओर रायवंक ताल, पंचताली.

₩,

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	भ्रह्मर ताल मात्रा.	समस्या.
<i>σ</i> .	हेत <u>.</u>	. चिगदां	लंब ताल माना	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा माता एक
'n	थेड़े निततत थेड़े थेडे	दां तकिटिन घि गनथों	प्टरत तास्य मात्रा (र ३ ॥६)	प्नुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकंडालो हाथकी परिक्रमा विंटी ब्रात्सा आलापें भान

नाम किना ॥ अथ रायवंक तालको लक्षम लिक्यते॥ जामे एक गुरु होय। गुरुकी दीय अथ रायवंक तालकी उत्पनि लिख्यते ॥ शिवजीने उन मामैतालनमें विचारिके । गीत मृत्य बाद्य नाट्यमें वरति-विकों। चंचपुर आदिक पाँच काउनमेसों। गुरु दोय मात्राको। उषु एक मात्राका। दुत आधि मात्राको छेके। देशी ताल गीतादिकमें सुख उपजांवें । सो रायवंक वाल जांनिये ॥ यह ताल पंचताली ह ॥ अथ रायवंक तालको स्वरूप लिस्थते मात्रा ॥ एक त्व द्वीय। त्ववुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय द्वेत होय। द्वेतकी आधि मात्रा। ं रामिनक ताल, पंचतालों ५ करि॥ वांको रायवंक ताल या रीतसों द्रापुत्र

ऽ।ऽ०० अथ पाठाक्षर जिल्पते॥ याहिको लोकिकमं परमलु कहते है नकुकुन कुकुथांऽ कुकुथां। घिषिधिमि घिमिथों ऽ थां॰ थां॰ इति रायवंक ताल संपूर्णम् ॥

रायवंक ताल, पंचताली ५.

•		समा	तसार.		
समस्या.	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सा मात्रा दोय विदी हाथका झाला	अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोयें विदी झालो	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रों मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ६ १ ।	त्रमु ताल मात्रा । १ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	इत ताल मात्रा ० % =	द्रुत वाल मात्रा ० ५ =
प्रमुखे.	नकुकुन कुक्यां	कुक्यां	धिधिधिमि चिमिथों	ਕ	त्राः
च चकार.	थेई विवतत	र्ड	भेड़े विततत	/IC	/It
ताल.	خ	'n	nà.	30	ن خو

प्रतापशेखर ताल, तिनाले इ.

नाट्यमें अथ प्रतापशेस्वर तालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नार्र्यमें वरातिवेकों । चंचत्पर आदिक पांचो बालनमेंसों । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । र्यवराम पोंण मात्राको लेके ।

षष्टो तालाध्याय-प्रतापरोखर ताल और वसंत ताल षद्तालो.

देशी वाल उत्पन्न करी॥ बांको प्रतापशेखर ताल नाम किनों॥ अथ पतापशखर तालको लखन लिख्यते॥ जामें एक प्लुत होय। प्रमुतकी तीन मात्रा॥ एक द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा॥ एक दृविराम होय। दृविरामकी पाँण मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें असम उत्पत्नते। सो मत्राकेस्टर वास जानिके ॥ --- --- ०--- ० सुस उपजाने । सी मतापेशिसर ताल जानिये ॥ यह ताल तिताली है ॥ अथ मतापशेसर तालको स्वरूप लिल्पते ऽ ० ८ अथ पाठाक्षर जिल्ब्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहत है थांथां थांथां विभिधिमि डे थे ० तथों ८ इति मतापशेखर तात्र संपूर्णम् ॥

मतापशेखर ताल, तितालो ३.

ताल.	चचकार.	स्मञ्.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	. समस्या,
3,	थेई तिततत थेई थेई	थांथां थांथां चिमिधिष	प्लेत ताल मात्रा (३ १ ॥७)	पथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
ก๋	No	<i>থ</i> ৱ	द्वत ताल मीता ° २ =	ल सिक है
m	वत	नथौं	द्वि॰ताल मात्रा ठे३ ≡	दिवरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण मात्राषे मान

बसंत ताल, षद्तालो ह.

अथ वसंत तालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नात्यमें वरतिवे-कों। चंचरपुरादिक पांची तालमेसों। तमु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको लेके। देशी तात उत्पन्न करि ॥ वांको वसंत तात बांमें किनो ॥ अय वसंत तालको लजन जिल्पते ॥ जामें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ तीन मुरु होय । मुरुकी दीय भात्रा ॥ या रीतसी मीतारिकमें मुख उनजांचे । सो वसंत ताल जानिय ॥ अय वसंत तालको स्वरूप जिल्पते । ।। ऽऽऽ अय पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहत है ताहं। योंगा । योंग्रीरे । तक्तितिक विधिकिरऽ ताकिर ताकिर ताकिर जिल्मिक्से परमजु कहत है ताहं। योंगा । योंग्रीरे । तक्तितिक विधिकिरऽ ताकिर ताकिर जाकिर ऽ

वसंत ताल षटतालो ६.

तास्त्र.	चचकार.	ं परमञ्जु.	महनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
-i	थेडे	नाहं	ठवु ताल मात्रा । १ ।	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
n	गुरु	थॉगा	उषु ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
mi	्छ चि	थोंथरि	ठषु ताल मात्रा । ३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
20	थेई तिततत	तकिताक धिधिकिट	मुरु ताल माना ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
نح	थेई तिततत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।	मात्र
wi	थेई विततत	झिमिझिम झें	मुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो झालों मान

गजझंपक ताल, चातालो ४.

अथ गजझंपक तालकी उत्पनि लिख्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नारचमें बर्तिनेकों । चंचलुटादिक पांचा तालनमेंसों । गुरु दीय मात्राको । द्रुग आधि मात्राको । द्विराम पांण मात्राको छेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको गजझंक ताट नाम किनों ॥ अथ गजझंक नाटको ऌछन छिल्पते ॥ जामें एक गुरु होष । गुरुकी दोष मात्रा ॥ दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दिवराम होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ या रीततों गीतादिकमें मुख उपजाने । सो गजझंपक ताल जानिये ॥ अथ गजझंपक तालको स्वरूप लिल्पते ऽ००० अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहत है धिकिटिधि किटिधिकि ऽ तकि ॰ तकि ॰ तथों े इति गजर्शंपक ताल संपूर्णम् ॥

गजझंपक ताल, चोताली ४.

नाल.	चचकार.	प्रमुखे,	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
-	थेई तिततत	धिकिटिधि किटिधिकि	मुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल टीक हे सो मात्रा दीय विंदी झालो
'n	(IC	पक्	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
m	ite	तिकि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
သံ	वत	क्यों	देवि. ताल मात्रा ठे ४ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण मात्राषे मान

चतुर्मुस ताल, चीताली ४.

फैर एक उच्च होय। उच्चकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा। या रीतसों गीता दिकमें मुख उपजाये। सी अथ चतुमुंख तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरति-वेकों। उच्च एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको। ट्उत तीन मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको चतुर्मुख ताल नाम किनो ॥ अथ चतुमुँख तालको लक्षण लिख्यते॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा॥ चतुमुंख ताल जानिये ॥ अथ चतुमुंख तालको स्वरूप लिल्यते । ऽ । ऽ याहिको लोकिकमं परमल् कहत है ताहं । तकितिक ताहं ऽ थिकथारे। तिकतिक दिधिगन थों डे इति चतुर्मुख ताल संपूर्णम् ॥

चतुर्धेष नाल, चोतालो ४.

समस्या.	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झाली	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विदी झालो झालापे मान
सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	टिष्ठु ताल मात्रा । १ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	त्रमु ताल मात्रा । ३ ।	द्वत ताल मात्रा (३ 🔻 ॥५)
प्रमञ्जे.	ताहं	तकिताक ताहं	थकिथरि	तकितकि दिधिगन थों
चयकार.	हेत. राज्य	थेई विववत	हा इ.स.	थेई तिततत थेई थेई
नाल.	9.	a ⁱ	m	эò

पष्ठो तालाध्याय-मदन ताल ओर रमण ताल तिताली.

अथ मद्न तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनें विवारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों ॥ नाम किनो ॥ अथ मद्न तालको तक्षण जिल्घते ॥ जामें दीय दुत हीय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ एक गुरुं होय । गुरुकी दीय चंचलुटादिक पांचो तालनमेंसो । द्रुत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको छेके । वेशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको मदन पाल मात्रा ॥ या रीतसौँ गीतादिकमें सुख उपजावे सो मुद्न ताल जानिये ॥ अथ मद्न तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ऽ अथ गठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको जोकिकमें परमन्नु कहत है जक ० थरि ० थाकिट थरियों ऽ इति मद्नताल संपूर्णम् ॥

मद्न ताल, तिताले। ६.

	नाल.	<i>-</i> -	ni	.स. इ.स.
	चंक्हा(,	∤ E	(htt	निवनव
	प्रमञ्जु.	ल स्	थरि	थाकिट थरिथों
महंग	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	क्रुत ताल मात्रा • १ =	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	मुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।
मद्दन ताल, तितालो ३.	समस्या,	मथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आ	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोन

रमण ताल, तितालो इ.

চ

अय रमण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नाट्यमे बरतिषेकों ॥

संगीतसार.

गुरु दीय मात्राको । द्वत आधी मात्राको । उषु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन करि ॥ वांको रमणताल नाम किनो ॥ अथ रमण तालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें एक गुरुहोय्। गुरुकी रीय मात्रा ॥ एक दुत होय। दुतकी आधी मात्रा ॥ एक छ होय। छ पुकी एक मात्रा॥ या रीतसों गीता दिक में सुख उपजाने। सी रमण ताल जानिये॥ अथ रमण तालको स्वरूप जिल्यते ऽ । अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमं परमन्तु कहा है धिकिधिमि धाधिनि ऽ नक तक्यों इति रमण ताल संपूर्णम् ॥

रमण ताल, तितालो ३.

नाल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
6	थेइं तिततत	धिकिथिमि धाधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोष विदी सालो
ñ	Λυ	वि	द्भत ताल मात्रा ० २ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक है सो मात्रा आधि
mi	्ञ फ़ा	तकथाँ	लघुताल मात्रा । ३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताउठीक हे सी मात्रा एक मात्राप मान

तार ताल, चाताला ४.

अथ तार्तालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों॥ **डुत** आधि मात्राको । दिवराम पाँण मात्राको । तस्य एक मात्राको तेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ बांको तार ताल नाम किनो॥

तालाध्याय-तार ताल ओर पार्वतीलोचन ताल, नोतालो.२०७

अथ तारतात्को लखन लिख्यते ॥ जामें एक दूत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पोंण मात्रा ॥ दोय उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकमें सुख उपजाये । सी तारतान्न जानिये ॥ यह तान्न चीतान्नो है ॥ जक ० जकुकु ठ अथ तारतालको स्वरूप निरूपते ० ८ ।। अथ पाठाक्षर निरूपते ॥ याहिको नोकिकमें परमनु कहत है किट्यों । किट्यों । इति तारताल संपूर्णम् ॥

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या.
-	No	स क	द्रुत ताल मात्रा प्रथम द्रुतकी सहनाणी	नाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
n	तत	हिन हि न र	द्वि॰ ताल मात्रा द्विरामकी सहना।	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
m	हुं	िकटथाँ	. उ. । त्र । अपूर्का सहनाणी	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
∞	्य ।	किटथॉ	तमु ताल मात्रा तम् । । ४ ।	अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक
			पार्वतीलीचन ताल, नोताली ९.	0.7

अथ पार्वतीलोचन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत कृत्य बाद्य नारयमें वर्तति-वेकों। चंचपुरादिक पांचो तालनमेंसों। गुरु दोय मात्राको। लविराम डेड मात्राको। प्लुत तील मात्राको। हुत आधि मात्राको

हैके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ बांको पार्वतीलोचन ताल नाम किनों ॥ अथ पार्वतीलोचन तालको लखन लिल्यते ॥ जामें तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक त्रविराम होय । त्रविरामकी डेड मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर दोय मुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीत सों गीता दिकमें सुख उपजावे । सी पार्वती-**डोचन ताल जानिये.॥ यह** ताल नोतालो है ॥ अथ पार्वतीलोचन तालको स्वरूप लिल्यते ऽऽऽो ऽऽऽ० अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहत है | दिगिदिगि दीकिट ऽ तकधिमि थिमितक ऽ थांकिट थांकिट ऽ दिगादिग दिग गिडिदां गिडिदां ताडिगाड े तागीदिरि गिथिदिमि ऽ यिथिक्ट तकथां ऽ थरि॰ थों॰ इति पार्वतीस्रोचन तास्र संपूर्णम् ॥

पावितीछोचन ताछ, नवताछो ९.

	-,	·,		
समस्या.	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना दोय विदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सोताल लीक हे सो मात्रायोय विदी झालो	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना डेड
सहनाणी अस्पर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	अवि, ताल मात्रा े। ४ । ≕
प्रमुखे.	दिमिदिमि क्रीकिट	तक्रथिमि थिमितक	थांकिट थांकिट	दिगदिग दिग
च चका (.	थेई तिततत	थेई निततत	थेई तिततत	तथह
ताल.	÷	'n	æ	20

نه
10
नाता
3
चन त
माख
पाब

ताल.	चचकार.	प्तमुखे.	सहनाणी अक्षर् नाळ मात्रा.	समस्या,
نه ا	थेई तिततत थेई थेई	गिडिदां गिडिदां तडिगिडि	दुवत नास्त्र मात्रा (हे भ्राहि	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
نور ا	थेडे तिनतत	तागीदृदि गिधिदिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झाली
9.	थेई निवतत	धिथिकिट तकथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झालो
1	he	थरि	द्रुत ताल मात्रा ०८=	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
نہ ا	AC	यः	द्भत ताल मात्रा ० % ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा आधि मात्राप मान

मुगांक ताल, निनालो ३.

अथ मुगांक तालकी उत्पन्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत बाद्य नृत्य नार्यमें वरति-आधि मात्रा ॥ एक उषु होय । उषुकी एक मात्रा ॥ या गीनसों गीतादिक्षें सुख उपजांवें । सो मृगांक ताल जानिये ॥ यह नितालो वेकों। द्विराम पाँण मात्राको। द्रुन आधि मात्राको। उपु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको मुगांक ताल नाम कीनों ॥ अथ मुगांक तालको लखन लिख्यने ॥ जामें एक द्विराम होय । द्विरामकी पींण मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी

है।। अय मुगांक तातको स्वस्ता जिल्पने ठ । अय पाठाझर जिल्पने ॥ याहिका लोकिकमें परमजु कहते है जकुकु कुकु ० किणरें । इति मृगांक ताल संपूर्णम् ॥

मृगांक ताल, तितालो ३.	समस्या,	पथम द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पींण	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सा मात्रा एक	
मृगां	सहसाश अक्षर ताल मात्रा. द्विश्ताल मात्रा ठे१ ≡		द्रुत ताल मात्रा ० २ =	छबु ताल मात्रा । ३ ।	
ŧ	प्रमञ्जू. जक्क		6 ,	िकणझें	
,	चचकार.	पत	Λ υ	थेई	
	नाल.	3.	نه	eri	

एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ या री गतीं गीता दिक में सुख उपजावें । सा राजमार्तंड ताल जानिये ॥ अथ राजमार्तंड तालको स्वरूप जिल्पते ऽ। o आथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ पाहिको डोकिकमें परमजु कहते हे भिन्निमि झिकतक ऽ झनिकट । झे o अथ राजमातैंड तालको सक्षण जिल्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक सघु होय । सघुकी एक मात्रा ॥ अथ राजमातंडतालकी उत्पत्ति लिक्यते॥ शिवजीते उन मार्गतालनमें विचारिक गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको । उषु एक मात्राको । द्रुत आधी मात्राको छेके । देशी ताल उताल करि।वांको राजमार्तंड ताल नाम कीनों । राजमार्तंड ताल, तिताले। ३. इति राजमार्तेड वाट संपूर्णम् ॥

राजमातैड ताल, तितालो ३.

ताल.	बचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
خ ا	थेई तिततत	 झिक्तिक झिक्तिक	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी सालो
نه	शुङ्	झनकिट	छषु ताल मात्रा । २	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
mi	عار	क्र	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि

कलाध्वनि ताल, पंचतालो ५.

म्रतिवेकों। उन्न एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको कलाध्वानि ताल मात्रा ॥ फेर एक छत्रु होय । छषुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुन होय । प्लुनकी तीन भात्रा ॥ या रीतसों भीता दिक्नें सुख उपजादें सो कठाण्याने ताउ जानिये ॥ अय कठाण्यानिनात्रको स्वस्ता तिरूष्ते ।। ऽ। ऽ अय पाठासर जिरूपने ॥ याहिको लाकिकने परमसु अथ कलाध्वनि तालकी उत्पात्ति लिख्यते ॥ शिवनीते उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य वाद्य नारचमें नाम किना ॥ अथ कराध्वानितालको लछन लिख्यते ॥ जामें दीय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दाय कहत है झसे। तक्यों। विमिधिम तक्यों ऽ थारियरि। तिकिशिम निश्नित थों डे इति कडाध्यति वाज संपूर्णम् ॥

सरस्वति कंठाभरण ताल, षद्गालो ह.

अथ स्वरस्वति कंडाभरण तालकी उत्पत्ति लिस्यंत ॥ शिवजीनं उन मागैतालनमें । गीत नृत्य वाद्य नाद्यमें दीय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दीय द्रुत होय। द्रुतकी आधी मात्रा ॥ या रीतमों गीतादिकमें मुख उपजावें । सो सरस्वति वरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको। लघु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको लेके। देशी ताल उपन्न करि ॥ वांको सरस्वति कंठाभरण ताल नाम किनों ॥ अथ सरस्वति कंठाभरण तालको लखन छिन्यते ॥ जामें दीय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥

कंठामरण ताल जानिये ॥ यह छतालो है ॥ अथ सरस्वति कंठाभरणतालको स्वरूप लिल्यते ऽऽ।। ॰ ॰ अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहत है तकतक थोंगा ऽ झिमिझिड थोंगा ऽ थिथिकिट। थिमिथिमि। गन० थों० इति सरस्विति कंठाभरणताल संपूर्णम् ॥

सरस्वति कंठाभरण ताल, छतालो ६.

ताल.	चेचकार.	प्रमिछे.	सहनाणी अक्षर् ताल मात्रा.	समस्या.
9.	थेई तिततत	तकतक थांगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा दोय विदी झालो
n.	थेई निततत	झिमिझिड थॉगा	गुरु ताल माता ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
m	that to	धिधिकट	उच्च ताल मात्रा । ३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक
20	हुन हैं इस्	विमिधिमि	उचुनाल मात्रा । ४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
نح	ال ال	म	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	दुवकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा आधि
w	/ltr	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रोंप मान

दंद ताल, मातताले। ७.

नुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर दीय छषु होय । छषुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतिसों भीतादिकमें सुख उपजावें। सो इंद्र ताल जानिये ॥ यह सान तालों है ॥ अथ इंद्र तालकों स्वरूप लिल्यते ॥ ऽऽ ॥ ऽ अथ पाठाक्षर चैंचरपुटादिक पांची तालनमेंसों। अबू एक मात्राको। गुरु रीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि जिल्यते ॥ याहिको लोकिकम परमलु कहते है ताहं। थरिथरि । थिगिडिथि गिडिशं ऽ थिमितक दिगिदां ऽ दांदां। कुकुतक अथ द्वंद्व तालकी उत्पात्त । त्रिच्यते ॥ शिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके। मीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरतिवेकों बांको दंद ताल नाम किनों ॥ अथ दंद तालको टछन लिल्यते ॥ जामें रीय तपु हीय । तपुकी एक माना । रीय गुरु हीय

इंद्र ताल, साततालो ७.

झणिकिट झाणिकिट झें 5 इति इंद्र ताल संपूर्णम् ॥

ताल.	चचकार,	प्सिलु.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	समस्या,
٠	थिङ	नाह.	उच्चताल मात्रा । १	पथम उघुकी सहनाणी अंक हे सी नाउ ठीक हे सी माता एक
من	्र इंड	थरिथरि	उच्च ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
m	थेई तिततत	यिगिहिधि गिहिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो

ब्रह ताल, साततालो ७.

181	।लाध्या ———	4-88 	ताल अ	14 142
स्मस्या.	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक		प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालापें मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	छषु ताल मात्रा । ५ ।	छचु ताउ मात्रा । ६ ।	टबुत ताल मात्रा (उँ कु ॥८)
प्रमिलु.	धिमितक शिगिदां	दांदां	हि इक् इक् इक्	झाणिकिट झाणिकिट झे
चचकार.	थेई तिततत	थेई निवतत	त्र	धेई नित्तत्त थेई धेई
नाल.	20	5.	wż	9.

चित्रपुर ताल, पर्तालो ६.

चंचत्पुटादिक पांच तांजनमेंतों। अयु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। प्लुत तीन मात्राको सेके। देशी तास उन्पन्न करि॥ वांको चित्रपुटतास नाम किनों॥ अयु चित्रपुटतासको सखन सिरुपते॥ जामें दोप समु होप। समुकी एक मात्रा॥ दोप द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ फेर एक समु होप। समुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों अथ चित्रपुरतालकी उत्पत्ति लिष्ण्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतासनमें विवारिके गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों।

गीतादिकमें मुख उपणामें। सो चित्रपुरताल जानिये ॥ यह ताल छह तालों है ॥ अथ चित्रपुरतालको स्वरूप लिल्यते ॥००। 3 👛 अथ पाडाक्षर क्लिक्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दिगिदां । धिमितक । दां॰ तक्यों । किटथारि घिषिगन थों डे इति चित्रपुर ताल संपूर्णम् ॥

चित्रपुट ताल, षट्तालो ६.

-				١٢٠			
	समस्या,	पथम लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	प्छतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालपे मान
١	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	ठषु ताल मात्रा । १ ।	छषु ताल मात्रा । २ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्धत ताल मात्रा ० ४ ==	छषु ताल मात्रा । ५ ।	प्लुन ताल मात्रा (ेरे ६ ॥३)
	प्रमञ्जु.	दिगिदां	थिमितक	৳	'kr	तक्यों	किटथारि धिधिगन थों
	चचकार.	शहे	थेड़े	Λσ	ίto	char B	थेई तिततत थेई थेई
	ताल.	•	'n	m	20	*.	uż

गौरी ताल, पंचतालो ५.

अथ गौरीतालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरितिकों। अषु भौरीतालको लेक्ष्यते॥ जामें पांच लघु रेक् मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको गौरीताल नाम किनों॥ अथ गौरीतालको लक्ष्यण लिख्यते॥ जामें पांच लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे। सो गौरीताल जानिये॥ यह ताल पंचतालों है॥ अथ गौरी तालको स्वरूप लिख्यते।।।।। अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहते है ताहं। टिट्टिं। तकुथारि। किण्णिटि। तक्थों। इति गौरी ताल संपूर्णम्॥

गौरी ताछ, पंचताछो ५.

ताल.	चक्कार.	परमछु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
<i>~</i>	शहे	ताहं	ल्यु ताल मात्रा । १ ।	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सी तात ठींक हे सी मात्रा एक
'n	शहे	डाइ	हचु ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
m	शेड्ड	तकुथारि	स्वृताल मात्रा । ३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
သံ	थड़े	म् डिंग्स्याहि	लघु ताल मात्रा । ४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
نح	्त्र इंड	तकथों	त्मु तात्र मात्रा । ५ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

सारस ताल, पंचतालो ५.

स्क्षण सिल्यते ॥ जामें तीन द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय समु होय । समुक्की एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुक्त उपजावे । सो सारस तास जानिये ॥ यह तास पंचतासो है ॥ अथ सारसतासको स्वरूप सिल्यते ० ० ० ॥ अथ पाठाक्षर सिल्यते ॥ याहिको सोक्किमें परमसु कहते है जाकि० णक० थॉं० थरियों । तक्थों । इति सारस तास संपूर्णम् ॥ हुत आधि मात्राको। उषु एक मात्राको ठेके। देशी ताउ उत्पन्न करि। वांको सारस ताउ नाम किनों।। अथ सारस ताउको अय सारस तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाटचमें वरतिवेकों

	RUIGRIK.					
सारस ताळ, पंचताळो ५.	समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	ट्युकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रापें मान
सा	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	दुत ताल मात्रा ० १ =	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	हुत ताल मात्रा ० ३ ==	छषु ताल मात्रा । ४ ।	छषु ताल मात्रा । ५ ।
	प्तमञ्जु.	जाक	क्रां	यं	थारिथों	तकथाँ
	चचकार.	Ac	מה	(NG	्र इत	शह
	नाल.	9.	n'	m	200	نع

म्कंद ताल, माततालो ७.

अथ स्केंद् तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर् एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीतसों गीता-एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय द्रुत होय। द्रुतकी आधी मात्रा ॥ दोय गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीतसों गीता-दिकमें सुख उपजावे। सो स्केदताल जानिये ॥ यह ताल सात तालो है ॥ अथ स्कंद्तालको स्वस्त लिख्यते ८। ८०० ८८ अथ गुरासर लिख्यते ॥ याहिको लेकिकमें परमसु कहते है चिधितक धीकिट ८ थरिकिट। तिकटत ताकिट ८ नक० किट० झिनिकिट अथ स्कंद्तालकी उत्पत्ति लिष्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य बाद्य नारथमें वरतिवेकों गुरु दीय मात्राको। तपु एक मात्राको। दुत आधि मात्राको लेके। देशी तात उत्पन्न करि। वांको स्कंद्ताल नाम किनों झिमिझिमि ऽ तकझम झे ऽ इति स्केदताछ संपूर्णम् ॥

स्कंद ताल, साततालो ७.

ताल.	चचकार.	पत्मलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
-	थेई तिततत	धिधितक धीकिट	मुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी झाली
p;	शुरु	थरिकिट	उच्च ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी वाउ ठीक हे सी मात्रा एक
m	थेई तिततत	तकिटत ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी झाठो
30	ΑU	नक	दुत ताल मात्रा ° ४ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

स्कंद ताल, साततालो ७.

संगीतसार.

तात.	बचकार.	प्रमन्तु.	सङ्नाशी अक्षर ताळ मात्रा,	समस्या,
s.i	AC	किर	द्वत ताल मात्रा ० ५ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
w	थेई तिवतत	झनिकिट झिमिझिम	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रारोय विंदी झालो
9	थेई तिततत	तक्झम झ	मुरु ताल मात्रा ८ ७ ८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालों झालों मान

उत्सब ताल, तितालो ३.

उच एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको छेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको उत्सव ताल नाम किनों ॥ अथ उत्सव तालको उक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ दीय प्लुत हीय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजाने । सो उत्सवताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ उत्सव तालको स्वरूप लिल्यते । डे डे अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहते है झिमिकिट। झांकिट झांकिट झणझण े झिकझणि किटाकिण झें े इति उत्सवताल संपूर्णम् ॥ अथ उत्सव तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य मार्थमें वरतिवेकों ।

mi	
त्सव ताळ, तिताळा	
ताछ, ।	
उत्सव	-
	सहनाणी

	मात्रा एक	ं तीन	मात्रा तीन ग्रोंप मान
समस्या,	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी	प्हतकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सा मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा बिंदी झाले	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मा गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालों
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उच्च ताल मात्रा । १ ।	$\frac{1}{(3 + 10)}$	प्हुत ताल मात्रा (े ३ ॥ ॥)
प्रमुखे.	झिमिकिट	झांकिट झांकिट झणझण	झिकेझाणि किटकिण झे
चचकार.	र्क	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेडे
ताल.	•	'n	m

भम्न ताल, साततालो ७.

वाद्य नार्यमें भग्नताल नाम किनों ॥ अथ भग्नतालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें चार द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ दोय लघु होय । रुघुकी एक मात्रा॥ एक रुविराम होय । त्रविरामकी डेड मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो भग्नतारु जानिये ॥ यह वरतिबेकों। द्रुत आधी मात्राको। छघु एक मात्राको। त्रविराम डेड मात्राको छेके। देशी तात्र उत्पन्न करि ॥ वांको वाल सात नालों है ॥ अथ भन्न तालको स्वरूप लिल्यते ० ० ० ।। । अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु अथ भम्रतालका उत्पन्ति लिक्चते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य कहते हैं जक नक कुकु थिरि ताहं। धिमिथरि। हिमि तकथों ो इति भन्नताल संपूर्णम् ॥ मन्न ताल, साततालो ७.

			• • •	
ताल.	बचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
÷	Ισ	पुक	द्वत ताल मात्रा ० ी ==	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
ni	lt t	म	द्वत ताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
m	Ac	8-9 8-7	द्रत ताल मात्रा ० ३ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
200	ΑC	यरि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा आधि
5	্ড ভ	ताहं	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
w	्ड ह	धिमिथारि	उच्च ताल मात्रा ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
9	तथेई	दिगि तकथों	अवि. ताल मात्रा । ७ ।=	लिवरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा हेड मात्राषे मान

विलोकित ताल, चोतालो ४. अथ विलेकित तालकी उत्पत्ति लिक्षते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नादचेमें वर-

विवेकों। बंबलुटादिक पांच तालनमें तों। गुरु दोय मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन करि। वांको विलोकित ताल नाम किनों ॥ अथ विलोकित तालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी जावे। सो विलोकित ताल जानिये॥ यह ताल चीतालो है॥ अथ विलोकित तालको स्वरूप लिल्पतेऽ००े अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको जोकिकमें परमनु कहते है थरिथरि थांकिट ऽ घिषि ० किट ॰ कुकुथरि घिषिगन थों ऽ इति विजेकित दीय मात्रा ॥ दीय द्वत हीय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उप-ताल संपूर्णम् ॥

विलोकित ताल, चोतालो ४.

 ष्ट्रचकार. परमलु. सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	थेई तिततत थांकिट ऽ १ ।८ मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय धांकिट	ते थिथि हुत ताल मात्रा हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा आधि	ते किट द्वत ताल मात्रा द्वतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	थेई तिवतत कुकुथरि प्लुत ताल मात्रा प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा तीन
च चकार.	थेई तिततत	AC	AC	थेई तिवत्त्व भू

संगीतसार.

पद्मा ताल, चोतालो ४.

सिल्यते ॥ जामें दीय तघु होय । तघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फेर एक तघु होय । तघुकी एक समु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको पद्माताल नाम किनों॥ अथ पद्मातालको लक्षण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो पद्माताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अथ पद्मातालको स्वरूष जिल्यते ।।ऽ। अथ पाठाक्षर जिल्ब्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहते है ताहं। तागिडि। दिगिदां दिगिदां ऽ गनथों अथ प्रधातालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेकों इति पद्माताल संपूर्णम् ॥

पद्मा ताल, चोतालो ४.

नाल.	व च क । १.	परमञ्जू. ताहं	सहना र ताल ताल	मा सि
i	हैं। इस्	नागिड	- 20 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 	सहनाणी अंक हे सो तान सीक हे सो मात्रा
	थेई तिततत	दिगिदां दिगिदां	मुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकां सहनाणा अक हं सा ताल लाक हं सा भाग दाय विदी हाथको झाला
	्रहा वि	गनथाँ	उषु ताल मात्रा । ४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्राष्ट्र मात्राष्ट्र मात्राष्ट्र मात्राष्ट्र

पष्ठो तालाध्य य-रंगप्रदीप ताल ंद

अथ रंगपदीप तालको टक्षण लिख्यते ॥ जामें दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक टघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो रंग-पाहिको टोकिकमें परमनु कहते है द्विमिकट द्विभिकट ऽ दिदिगिन धीकिट ऽ थरिकिट। तकथां तकथां ऽ घिमिथरि नकुकिण अय रंगप्रदीपतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिक। गीत मृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों अमुरु दीय मात्राको । छषु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको छके । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रंगपदीप ताल नाम किनो । मदीप ताल जानिये॥ यह ताल पंचतालो है॥ अथ रंगमरीप तालको स्वरूप लिल्यतेऽऽ।ऽऽ अथ पाठाक्षर लिल्यते। सें डे इति रंगपदीप वास्त्र संवूर्णम् ॥

रंगप्रदीप ताल, पंचतालो ५.

रंगप्रदीप ताल, पंचतालो ५.

समस्या,	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी सालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो	उपुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	मुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	छषु वाल मात्रा । १ ३ ।
प्रमिलु.	द्वमिकिट द्वमिकिट	दिदिगिन धीकिट	थरिकिट
चवकार,	थेई तितवत	थेई तिततत	#
नाल.	÷	a:	æ

रंगमदीप ताछ, पंचताछो ५.

वील.	. बचकार.	ब्रमिछे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
36 .	थेहं वितवव	तकथां तकथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा दीय बिंदी झाछी
بنح	थेई तिततत शहे थेई	धिमिथारि नकुकिण झें	प्नुत्ताल मात्रा (उ ५ ॥६)	ट्उतकी सहनाणी अंक हे सो पाल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झाले। झालोप मान

सुदर्शन ताल, साततालो ७.

अय सुद्र्शन तालका उत्पत्ति लिल्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नाटयमं वरतिवे-सक्षण लिख्यते ॥ जामें छह द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा॥एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उप-कों। द्रत आधि मात्राको । गुरु दीय मात्राको हेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको सुद्र्शन ताल नाम किनों ॥ अथ सुद्र्शनतालको जाने। सो सुदर्शन ताल जानिये॥ यह ताल साततालो है॥ अथ सुदर्शन तालको स्वरूप लिख्यते ० ० ० ० ० ० अथ पाठाक्षर जिल्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तत थे ता थे थि थि थी थीं दिधिमन थों ऽ इति मुद्शन ताल संपूर्णम्॥

सुदर्शन ताल, साततास्त्रो ७.

₹.p1 20m	मात्रा आधि
	सो मा
	क क
	ो ताल लीक है
संगरिया.	₽
#	
	सहनाणी अंक
	मथम द्रुतकी
	मधम
	1]
सहनाणी अस्पर तोल मात्रा.	कुत सील भाता 0 9 ==
प्रमुद्धः अस्पर तोह्य मात्रा.	तत हुत बाल भाता ।
मचकार, परमदु, अक्षर तोह मात्रा,	ते तत हुत नाल भाता

सात्र.	क विकास	प्रमङ्खे.	सहनाणी अन्नर ताल मध्या.	हमस्या,
de	No	ে	द्रुत ताल मात्रा ० २ ≖	दुतकी सहमाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
m	/htt	चा	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो माना आधि
သံ	/ lo	কে	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ डीक हे सो मात्रा आधि
نمخة	/to	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
w	Æ	ब्रा	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	ि अंक है
9.	थेई तिततत	दिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ टीक हे सो मात्रा दोय विदी झाडो झाडापें मान

सुक्शन ताल, सातताना ७.

मुदेवत्म ताल, पंचतालो ५.

अथ सुदेवत्सतालकी उत्पात्त लिक्षते ॥ शिवकीं उन मार्गतालनमें विचारिके । मीत नृत्य वाद्य नार्र्यमें वरतिवेकों । आधी मात्राको । द्विराम पाण मात्राको । सबु एक मात्राको हेके । देशी तास उत्पन्त करि । बांको सुदेवत्स तास नाम किनों॥

कथ मुदेवत्सताटको समण जिल्यते॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पोज मात्रा ॥ तीन सुदेवत्सतातको त्वत्त्र विह्यते ० ०।।। अथ पाठाक्षर विख्यते ॥ याहिको लोकिकमं परमतु कहते है जम ॰ नकुकु ० चिचि-स्म होया। समुकी एक मात्रा ॥ या रीवसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सी मुदेवत्सवास जानिये॥ यह तास पंचवासों है ॥ अथ कट । पीकिट । वक्यों । इति मुद्रेबत्सताल संपूर्णम् ॥

सुदेवत्स ताल, पंचतालो ५.

તાહ.	, चचकार,	ब्सिलु.	सहनाणी असर ताल मात्रा,	समया.
3.	/ C	वंग	हुत ताल मात्रा ° १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
กำ	चव	199	द्षि॰ताल मात्रा ठे२ ≅	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा पाण
m	गुड़े	धिधिकट	उचु ताल मात्रा । ३ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ टीक हे सी मात्रा एक
20	थह	धीकिट	न्याः असे पाट केसे	टघुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ डीक हे सी मात्रा एक
3 °	4	तकथों	ट्यु ताट मात्रा	टाषुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना एक

राज ताल, साततालो ७.

ष्यय राजतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाटचमें बरतिवेकों । टच्च एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्वत आधि मात्राको । गुरु दोय मात्राको छेके । देशी ताल उत्पन्न कि। बांको राज ताल नाम किनों ॥ अथ राजतालको तक्षण लिल्यते ॥ जामें एक तबु होय । तबुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दोय द्वत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक उच्च होय । उचुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होये। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या शितमों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो राजताल जानिये॥ यह ताल सात तालो है। अथ राजतालको स्वरूप लिल्पते। ८०० ऽ। ८ अथ पाठाक्षर लिल्पते।। याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तक्यों िषिमितक विमिधिमिं थरिथों 3 थरि कुकु विमिधिमि थाकुकु ३ थोंगा। तकरिंगि दिदिगन थों 3 इति राजतात्र संपूर्णम् ॥

राज ताल, सातनालो ७.

ताल.	च चकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
ند	्व ।	पक्षां,	उषु ताल मात्रा । १ ।	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सा ताउ ठीक हे सो मात्रा एक
n'	थहं तिततत थेई थेई	क्वताधिन धिनि धिनि थारथों	प्टुत ताल भाता (३ २ ॥)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल खीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झाली
m	AC	यरि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि

			E	राज तार्ह, साततालो ७.
ताल.	चचकार.	प्रमङ्घे.	सहनाणी अक्षर ताल मन्ना.	समस्या,
36	No	6 ;	द्भेत ताल मात्रा • ६ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि
تنخ	थेई विषतत	धिमिधिमि थाकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालो
w	क्र	धोंगा	त्मु ताल मात्रा । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक
9.	थेई विततत थेई थेई	तकदिग दिदिगन थों	प्टुत ताल मात्रा (३ ० ॥६)	त्नुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झाली मात्रों मात्र

रति ताल, माततालो ७.

किल्पते॥ जामें एक द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा॥ दोय उच्च होय। उच्चकी एक मात्रा॥ फेर तीन द्वत होय। द्वतकी नाल साद साओं है।। अथ रतितालको स्वरूप किल्यते ।।०००। अथ पाठाक्षर विस्थते।। याहिको लोकिकमं परमजु कहते बुव आधि मात्राको। उनु एक मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको रितताल नाम किनों ॥ अथ रिति तिको तक्षण अग्राधि मात्रा ॥ फ्रेर एक उन्नु होय । उन्नुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकमें मुख् उपजावे । सो रतिताउ जानिये ॥ मह अथ रतितालकी उत्पत्ति लिस्पते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालममें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों है तक नाहं। थरिथरि। थै दां निक किणमें । इति रित्रवा संपूर्णम् ॥

			राति ह	रति ताळ, चात्रताळी ७.
नाठ.	चचकीर.	प्रमुखे.	सहमाणी अभर ताल मात्रा.	समस्या.
	(NET	 	द्वत वाल मात्रा	मथम हुतकी सहनाणी अंक हे सी ताट टीक हे सी मात्रा आधि
nº.	शुङ्	ताहं	हबू ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
m	कुर	थरिथारि	छषु ताल मात्रा । ३ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा एक
30	/tc	কে	द्रुत ताल्ड मात्रा • ४ =	द्वतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो भाता आधि
نو	/NET	#	द्भत ताल मात्रा • ५ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा आधि
us"	,tu-	विक	द्वत ताल मात्रा ० ६ =	दुतकी सहमाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा आधि
9.	थे	िकणझें	उच्च ताल मात्रा ी ७ ।	उर्जुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सी मात्रा एक
	,		7	And a

ात्रवृत । क्षेत्रक्षेत्र उत्पत्ति किरूयने ॥ सिवयीने उन मार्गवालमें विकारिके। गीव वाद्य नृत्य नार्यमें वर्गविकों। वाषु

रंगीवसार

जिल्यते ॥ जामें दोय अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पोंणमात्रा ॥ या रीतत्तो मीतादिकमें मुख उपजावे । सी त्रिवर्त ताळ जानिये ॥ यह ताळ तितालों है ॥ अथ त्रिवर्त तालको स्वरूप लिल्यते ८८० अथ पाठाक्षर चीथाई मामाको । इबिराम पीण मात्राको छेके । देशी ताछ उलम करि। बांको तिवर्तताल नाम किनो ॥ अथ त्रिवर्ततालको लक्षण जिल्यते ॥ याहिको डोकिकमें परमञ्ज कहते है त ाधि प्रसत् ६ हित तिवर्तताल संपूर्णम् ॥

त्रियते साछ, तितालो ३

ताल.	चचकार.	पत्मछ.	सहनाणी असर ताल मात्रा.	सुमस्या,
6.	ति	të	अणु ताल मात्रा '१ -	मथम अणुकी सहनाणी अंक हे सी नाल लीक हे सी मात्रा बीथाई
a.	मि	क्र	अणु ताल मात्रा ४ २ –	अणुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी माना चीथाई
, air	वत	धनं	द्वि∘ ताल मात्रा े ३ ः	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी वाट टीक हे सी मात्रा पींण

अमंग ताल, पंचताली ५.

अर्थ अभंग तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत बाद्या नृत्य नाटचमें वरतिवेकों। सुत आपी मात्राको । उमु एक मात्राको । उदिराम हेड मात्राको ठेके । देशी ताउ उत्पन्न करि । बांको अभंग ताउ नाम किनो 🔢 अथ अभंग तालको तक्षण छिल्पते ॥ जामें दीय दुत हीय । द्रुतकी आधी मात्रा॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लिब्सा ँ होय। अविरामकी डेड मात्रा॥ फेर एक उच्च होय। उचुकी एक मात्रा॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो अभंमताज्ञ जानिये॥ यह पंचताली है॥ अथ अभंगतालको स्वरूप लिल्यते ००। ।। अथ पाठाक्षर लिल्यते॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहते है तत थे वाथे। थरिकुकु थे । गनथों। इति अभंगतात संपूर्णम्॥

ည်	ភ		अभंग	अमंग ताळ, पंचताछो ५.
ताल्ड.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर नाळ मात्रा.	समस्या,
	Λ υ	तत	द्रुत ताल मात्रा ॰ १ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
T ·	/IC	নে	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी माना आधि
	ctus 157	वाथै	स्ध्र ताल मात्रा । ३ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक
	तथेड़	थारिकुकु थे	अवि. ताल मात्रा े ४ ।	अविरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड
	थेहं	गनथों	उषु ताल मात्रा । ५	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल बीक हे सो मात्रा एक

झंपक ताल (धुव १), तितालो ३.

नकी उत्पत्ति सिल्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतास्नमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नार्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधि मात्राको । द्वि-॥ १॥ दूसरे तालको नाम कमला ॥ २ ॥ तीसरी वालको नाम उत्ताह ॥ ३ ॥ चोथे नालको नाम झजमंगल ॥ ४ ॥ पांचवे नास विक्रम ॥ ५ ॥ छटवो ताल मधुर ॥ ६ ॥ सातवो ताल निर्मेल ॥ ७ ॥ आठवो ताल भीम ॥ ८ ॥ नवमी वाल कामीद् ॥ ९ ॥ दशवी ताल चंद्रशेखर ॥ ३० ॥ ग्यारमी ताल ऊमाणा ॥ ११ ॥ बारमी ताल कुंतल ॥ १२ ॥ वेरवी ताल कीडा ॥ १३ ॥ चोर्मो तिलक ॥ १४ ॥ पंट्रनो विजय ॥ १५ ॥ सीलनो वज्र ॥ १६ ॥ तहां धुनको पथम भेद संपक्की उत्पचि सो झंपक ताल जानिये ॥ यह ताल तितालों है ॥ अध झंपक तालको स्वरूप लिल्पते ।।। अध पाठाक्षर लिल्पते ॥ अथ संगीतमें मतिके। शआदिक सात ताल मसिद्धते। मबंधनमें तिनके ध्रवआदिक सात ताल है। ताहां पहले तालको नाम घुन ॥ १ ॥ दूसरी तालको नाम मंठ ॥ २ ॥ तीसरे तालको नाम रूपक ॥ ३ ॥ चीथे तालको नाम झंपक ॥ ४ ॥ पांचवे ुं का पाण मात्राको। उचु एक मात्राको। तिवराम डेड मात्राको। गुरु रोय मात्राको। प्जुत तीन मात्राको छेके। देशी ताल लिल्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विवारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकां । लविराम डेड मात्राको । लघु एक मात्राको टेके। देशी ताट उत्पन्न करि। वांको झंपक तात नाम किनों॥ अध झंपक तातको टक्षण टिल्यते॥ जामें एक नाउको नाम त्रिपुट ॥ ५ ॥ छटे तालको नाम अठताली ॥ ६ ॥ सातवे तालको एक ताली ॥ ७ ॥ जथ ध्रवआदिक सात ताल-उत्पन करि। उनके धुवादिक नाम किनों ॥ तहां धुवतालके सीलह भेद है। तिनके नाम लिल्पते ॥ पहले तालको नाम संपक स्विश्मि होय । स्विश्मिकी डेड मात्रा ॥ दीय तम्बु होय । स्वुकी एक मात्रा ॥ या शितसौं मीतादिकमें सुख उपजावे । याहिको डोक्किमें परमडु कहते है थरिकुकु थे ो चिधिकिट । तक्यों । इति झंपक ताड संपूर्णम्

mi
तितालो
ताल.
अपक

नाङ.	च्चकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल माञ्चा.	समस्या.
-	तथेई	यरिकुकु थै	लवि॰ताल मात्रा े १।=	पथम तिवि सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड
r	शुरू	धिधिकर	त्रवृतात्र मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी तात ठीक हे सी मात्रा एक
m	कु	तकथाँ	त्रमु ताल मात्रा । ३ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्राषे मान

कमला ताल (धुव २), षद्तालो ६.

अथ धुवको दूसरो मेद ओर कमलातालकी उत्पत्ति लिस्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचा-रिके। मथम मीत। द्वितीय नृत्य। त्रतीय वाद्य। नाटचमें वरतिवेकों। चंचत्पुटादि पांची तालनमेंसी गुरु दोय मात्राको। अब अथ कमटातालको तक्षण जिल्पते ॥ जाम एक गुरु होय । गुरुकी दीय माता ॥ एक लघु होय । लघुकी कुंक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। र्विराम गेंण मात्राको छेके। देशी ताउ उत्पन्न करि। वांको कमठा ताउ नाम किनों॥ उचुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीतसीं गीतादिकमें सुख उपजावे । सी कमला ताल जानिये ॥ यह छह वाली है ॥ अथ कमता तालको स्वरूप लिल्पते ऽ। ० ठ। ऽ अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकमं परमजु कहते एक मात्रा ॥ एक द्वर होय । द्वरकी आधि मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पींण मात्रा ॥ फेर एक लघु होय है भिषिकिर भांकिर ऽ थिमिकिर। थिर् थरिक > गिडिगिडि। दिदिगन थों ऽ इति कमला ताल संपूर्णम्॥ कमछा ताल, पद्तालो ६.

4			संग	तिसार.		
समस्या,	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय रिंदी झाली	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	दुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा पोंण	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झालो झालापें मान
सहनाणी अस्पर तास्त्र मात्रा.	मुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	छबु ताल मात्रा । २ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्वि. ताल मात्रा े ४ ≡	छच् ताल मात्रा । ५ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।
प्रमुखे.	धिधिकिट धांकिट	धिमिकिट	थरि	थरिक	मिहिमिदि	दिद्गिन थाँ
चषकार.	थेई विततत	विडे	ΛC	वत	शहर	थेई तिततत
12	-	r'	m	30	نح	w

उत्साह ताल (धुव ३), तिताले ३.

अथ धुवको तिसरो भेद और उत्साहतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। वंचतपुटादिक पांच तालनमेंसी। प्लुत तीन मात्राको। गुरु दीय मात्राको। लघु एक मात्राको हेके

पद्यो तालाध्याय-उत्साह और व्रजमंगल ताल पद्तालो

सीन मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकमें सुख उपजावे । सो उत्साइवाल जानिये ॥ यह ताल तिताली है ॥ अथ उत्साइतालको स्वरूप लिल्पते ८८। अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको क्ष्मी ताल उत्पन करि। वांको उत्साहताल नाम किनों ॥ अथ उत्साहतालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें एक प्लुत होय । प्लुतकी लीकिकमें परमल कहते है तकिकिडि दिगिर्दा डिगिर्दा डिमितां घिमितां ड घिमियों। इति उत्साहताल संपूर्णम् ॥

ताल.	ब्बक्रा.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
<u>-</u>	थेई तिततत थेई थेई	तिकेकिडि दगि प्लुत गिडि दिगिदां (े	प्टुत ताट मात्रा (३ १ ॥६)	पथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो
'n	<u>थेई</u> तिततत	धिमितां सिमितां	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी तास लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालो
m	कुंद्र	धिमिथों	त्वषु तात्व मात्रा । ३ ।	छबुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रांपे मान

बजमंगल ताल (धुव ४), पट्तालो ६.

एक बुत होय । बुतकी आधि मात्रा ॥ एक त्रविराम होय । त्रविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ वृक्ति वज्जमंगल नाम किनों ॥ अथ वज्ञमंगल तालको तक्षण लिल्यते ॥ जामें एक लिबराम होय । लिबरामकी डेड मात्रा ॥ फेर अथ चाथा भेर ध्रवको बजमंगल तालकी उत्पत्ति लिक्यते॥ शिवजीन उन मागैतालनमें विचारिके। गीत चृत्प वाद्य नारचमें वरतिवेकों । त्रविराम डेड मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । त्रुषु एक मात्राको तेके । देशी तात उत्पन्न करि।

दीय उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो व्रजमंगलताल जानिये ॥ यह ताल पर्तालो है ॥ अध्य व्रजमंगल तालको स्वरूप लिल्यते १०१०। अध पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धिमि धिनितां। स्ति॰ धरि धरिकुकु । नकु॰ थोंगा । तक्थों ॥ इति व्रजमंगलताल संपूर्णम् ॥

•	,	1			·		
व्यमंगल ताल, पट्तालो ६.	समस्या.	पथम लिबरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड	दुतकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा आधि	अविरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक
यसम	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	अवि. ताल मात्रा ो १।=	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	खबे. ताल मात्रा े ३ =	द्रुत ताल मात्रा ० ४ ==	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	ठमु ताल मामा । ६ ा
	प्रमिलु.	धिमितां धिमितां	तत	धरि धरिकुकु	नु	थोंगा	तक्यों
	चचकार.	तथेई	NO.	त्यहे	Æ	र्ड रहे	कृत
	मुख	<i>-</i>	۳	m²	3 0	نو	w

विकम ताल (धुव ५), पंचतालो ५.

डेड मात्रा॥ फेर एक छबु होय। छबुकी एक मात्रा॥ या रीतसों गीता दिकमें मुख उपजावे। सो विकमताल जानिये॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ विकमतालको स्वरूप लिल्यते ० ८ । । । अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहते अथ पांचवो भेद् घ्रुवको विकमतालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य देशी तास उत्पन्न करि ॥ वांको विक्रमतास नाम किनों ॥ अथ विक्रम तासको सक्षण सिल्पते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आबी मात्रा ॥ एक द्विराम होय । ट्विरामकी पींण मात्रा ॥ एक उच्च होय । त्वचुकी एक मात्रा ॥ एक त्विराम होय । त्रविरामकी बाद्य नाटचमें बरतिवेको। द्रुत आधी मात्राको। द्विराम पींण मात्राको। सम् एक मात्राको। समिराम हेड मात्राको लेके है किट जिकट ठ नकुकिट । धाधिमिधिमि ो गनथों । इति विक्रमताल संपूर्णम् ॥

विकम ताल, पंचतालो ५.

समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा पोंण	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल टीक हे सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ° १ =	द्वि. ताल मात्रा े २ ≡	उद्ध ताल मात्रा । ३ ।
प्रमिछे.	कि	अकिट	नकृकिट
चचकार.	de	ਰਹ. -	शह
ताल.	9.	a.	m

विक्रम ताल, पंचताली ५.

मुख्	च चकार.	प्रमङ्ग.	सहनाणी असर ताल मात्रा.	समस्या.
20	तथेई.	था थिमिधिम	अवि. ताल मात्रा े ४ ।=	उविरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा हेड
نو	्ठा भूक	मनथों	त्रेषु ताल मात्रा । ५ ।	उचकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

मधुर ताल (धुव ६), षट्तालो ६.

अथ छटो भेद् ध्रुवको मधुर तालकी उत्पत्ति लिस्थते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें। गीत नृत्य वाद्य नारचमें बरितिवेकों। द्विराम पींण मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। उचु एक मात्राकों लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको मधुर ताल नाम किनों ॥ अथ मधुर तालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें तीन द्विराम होष । द्विरामकी पाँण मार्श ॥ दोष द्वत होष । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक तमु होय । त्रघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें मुख उपजावे । सो मधुर ताल जानिये ॥ यह छह वालो है ॥ अथ मधुर तालको स्वरूप तिरुयते ১১००। अथ पाठाक्षर तिरुयते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहते है ॥ श्रेथ रिकुक् र भीषि धिकुकु र थरिथ रिधिमि र दां शिष्टि गनथों। इति मधुर ताल संपूर्णम् ॥ मधुर ताल, षदतालो ६.

ट्रिंसमकी सहनाणी अंक हे तो वाल लीक हे तो मात्रा पींण तमस्या 111 द्वि. ताल मात्रा अक्षर ताल मात्रा. थैय रिकुकु प्रमिछे. चचकार E ताल.

ताल. $\frac{1}{1}$ च परम $\frac{1}{1}$ सह नाणी $\frac{1}{1}$ सह नाणी $\frac{1}{1}$ सह नाणी अंक हे सो वाल ठीक हे सो मात्रा पींण $\frac{1}{1}$ ते $\frac{1}{1}$						
चचकार. परमलु. अक्षर ताल महनाणी ति	समस्या.	मात्रा	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पींण		दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा आधि	मात्रा
च व व व व व व व व व व व व व व व व व व व		नाउ	न न	दुत ताल मात्रा ° 8 =	दुत ताल मात्रा ॰ ५ =	
च व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	प्रमिलु.	धीधि धिकुक	थरिथ रिधिमि	नां	गाड	गनथों
الله الله الله الله الله الله الله الله	चचकार.		तत	No	NO	युङ्
	ताल.	a.	m	30	نهج	w²

Hy, al. , 4x 101 6.

निर्मल ताल (धुव ७), साततालो ७.

नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। उच्च एक मात्राको। द्रुत आधी मात्राको। त्रविराम डेड मात्राको छेके। देशी ताद्य उत्पन्न करि। बांको निर्मेड तात्र नाम किनो॥ अथ निर्मेत्र तात्रको तक्षण जिल्पते॥ जामें दीय उच्च होय। त्रघुकी एक मात्रा॥ दीय हुत अथ सातवो मेद् ध्रुवको । निर्मल ताल ताका उत्पाचि लिल्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत होंय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दीय लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा । मा रीततों गीता- दिकमें मुख उपजावे । सो निर्मेख नाल जानिये ॥ यह सात नालो है ॥अय निर्मेल नालको स्वरूप लिल्पते ।। ॰ ॰ ो ो । अथ बाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकनं परमजु कहते है नाहं। थोंगा । दिगि॰ दिगि॰ नत नाहं ो निर्मेषों । इति

निर्मेल ताल, साततालो ७.

माछ.	चचकार.	प्रमङ्	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
	हुँ	ताहं	उषु ताल मात्रा । १ ।	मथम उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल टीक हे सो मात्रा एक
n'	্ষ ত্ৰ	थॉगा	लघु ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो तात ठीक हे सो मात्रा एक
mi	No	हिंग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
20	(he	हिंग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो मात्रा आधि
بع	तथेई	त्त्र वाहं	डावे. ताल मात्रा ो ५ ।=ं	टिवरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा हेड
سخد	तथेई	नरि नाहं	अवि. ताल मात्रा े ६ । =	अविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल टीक हे सो मात्रा डेड

ानमंख ताह, सातताहो ७.

भीम ताल (धुव ८), सातताले। ७. अथ धुवको आठमो भेद । भीमतालकी उत्पत्ति लिकाते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य

षांको मीपताउ नाम किनों ॥ अय भीमताउको ठक्षण जिल्यते ॥ जामें दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्रिविशम होय । लिवरानकी डेड माना ॥ एक तमु होष । तमुकी एक माना ॥ ओर एक लिवराम होष । तिनरामकी डेड माना ॥ फेर होप छच्न होय। छच्की एक मात्रा ॥ या रीततों मीतादिक मुख उपजाते। सो भीम ताल जानिये ॥ अथ भीमरालको स्वक्तप लिख्यते ०० ।।।। अय पाठाशर लिख्यते ॥ याहिको टोक्किमें परमलु कहते है ॥ भी ० किट० घां घिषिकिट ो बाद्यं नाट्यमें वरतिवकों। द्वत आधि मात्राको। स्विराम हेड मात्राको। समु एक मात्राको सेके। देशी तास उत्पन्न करि वक्षी । ताकिटि तक ो थरिथा । दिथियों । इति भीमतात्र संपूर्णम् ॥

मधम दुवकी सहनाणी अंक हे सो वाज डीक हे सो मात्रा आधि दुतकी सहनाणी अंक हे तो वाल टीक हे सो मात्रा आधि समस्या मामताळ, साततालो ७. द्रुत ताल मात्रा अक्षर नाल मात्रा. द्रुत ताल मात्रा 11 सहनाणी प्रमुखे. The 5 चचकार. ताहर

मीम ताळ, साववाछो ७.

ताल.	च च कुडार.	प्रसिद्ध.	सहनाणी अक्सरे ताल मात्रा.	समस्या.	
شه	त्येष्ट्रं	मां थिभिकट	्न वि	त्विरामकी सहनाणी अंक हे सी तान लीक हे सी मात्रा हेड	
	c fen	तकधी	डबु ताल मात्रा । ४ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी ताउँ ठीक हे सी मात्रा एक	
فيد	क्षेड्रं	वाकिटि तक	अवि∘ताल मात्रा े ५ । ≡	टाबरामकी सहनाणी अंक हे सो नाट टीक हे सो मात्रा डेड	`
	epar (B)	थरिया	त्रेषु वाल मात्रा । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक	
	शहे	द्धियाँ	छषु ताल मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक झालापें मान	

कामोद ताल (ध्रुच ९), साततालो ७.

अथ नवमो भेद धुवको । कामोद तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजींने उन मानेतालनमें विचारिके । मीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । लिविराम हेड मानाको । उनु एक मानाको । द्रुत आपि मानाको लेके । देशी ताल उत्पन्न किरे । आंकोंको कामोद तालको त्रिशण लिल्पते ॥ जामें एक लिविराम होय । लिविरामकी हेड माना ॥ एक तमु होय । तमुकी एक माना ॥ देव होय । द्रुतकी आधि माना ॥ फेर एक लिवराम होय । लिवरामकी हेड माना ॥ पूक तमु होय । तमुकी एक माना ॥ दोव होय । द्रुतकी आधि माना ॥ फेर एक लिवराम होय । लिवरामकी हेड माना ॥ क्रेर दोग्र तमु होय । तमुकी एक माना ॥ मा शितसों मीतादिकमें सुख उपजावे । सांकामोद ताल जानिय । अध्य कासोद तालको

 .	
ादांचरा	
मार् वक्त्र	
the	
地	
क्षेत्र व	
। याहिको लोकिकप	
याहिको	वाड़ सं
निस्यते #	इति कामीद वाल संपूर्णम्।
191	। तक्थों ।
=	ो दिगादां
0	(
_	de/
अन्यते .	ः तक्यरि
でド	त्तं
स्वरं जिल्ला	थां॰ थां॰

				a triumin dan Lucut
नाल.	चत्रकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
-	प्राकृ	थरि ततथै	ख़िव. ताल मात्रा े। १ ।=	प्रथम तिवरामकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो मात्रा डेड
٠٠.	्ड इंडर	हिंधिय	स्तु ताल मात्रा । २ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
	/IC	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
20	; /छ ः	थां	द्रुत ताल मात्रा ० ४ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल खीक हे सो मात्रा आधि
البو	तथेई	तकुथरि थै	े जिष्टि, ताल मात्रा े ५ । =	ठिषरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा डेड
w	क्र	दिगिदां	न्द्रपुताल मात्रा । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
9.	थेड्	तकथों	सम्बन्धि मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

Jistowie.

राम होय । लिबिरामकी डेड मात्रा ॥ फेर दीय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसीं गीतादिकमें सुख उपजावे । सी चंद्र-अय द्रावी भेर घुवको । चंद्रशेखर तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मागंतालनमें विचारिके। गीत नृत्य चंद्रशेखर वाज नाम किनों।। अथ चंद्रशेखर तालको टक्षण लिल्यते।। जामें एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि माना।। एक लघु बाद्य नाटचमें वर्तिवेकों। द्रुत आधि मात्राको । उतु एक मात्राको । त्रविराम डेड मात्राको लेके । देशी तात्र उत्पन्न करि । वांको होय। छचुकी एक मात्रा ॥ एक लिबराम होय। लिबरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक द्वत होय। द्वतकी आधी मात्रा ॥ फेर एक लिब-पाहिको लोकिकमें परमनु कहते है जक झेंझे। तक धीतक ो दिधि । तक दिगिदां ो थोंगा। गिडिथों। इति चंद्रशेखर शैसर ताल जानिये ॥ यह सात तालो है ॥ अथ चंद्रशेखर तालको स्वरूप लिस्पते ०। । ० ।। अथ पाठाक्षर लिस्पते ॥ चंद्रशेखर ताल (घ्रुव १०), साततालो ७. ताड संपूर्णम् ॥

संवशेखर मास. मात्रतालो ७.

•			. ,	
नुस्तित वाल, वाववाल। ७	समस्या.	मथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	उचुकी तहनाणी अंक हे सो वाट टीक हे सो मात्रा एक	अविरामकी सहनाणी अंक हे सी वाज जीक हे सो मात्रा हेड
1 43 13 5 5	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ° ी ==	उच्च ताल मात्रा । २ ।	टावि॰ वाट मात्रा े ३।=
	परमञ्ज.	बक	/कः :कः	तक् धीतक
	चचकार.	λ O	शहे	तथह
	ताल.	3.	8.	pi.

ताहर.	मंचकार.	प्रमिछु.	सहमाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
သ	Λο	िहास	इत ताल मात्रा ८ ८ ८ ८ ८	दुवका सहनाणी अंक हे सो ताउ टीक हे सो मात्रा आधि
به	तथिई	तक दिगिदां	सर्विश्वास मात्रा े ५ ।=	लियामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना डेड
w	यह	धोंगा	उष्टे पाल मात्रा । ६ । लु	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ दीक हे सो मात्रा एक
9	या	गिडियों	उच ताल मात्रा लघ	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापे मात्र

चंद्रशेलर ताह, साततान्ने ७.

ऊमांण ताल (धुव ११), साततालो ७.

बाद्य नाटचमें वरतिबेकों। उन्नु एक मात्राकों। द्वुत आधि मात्राकों। टाविराम हेट मात्राकों टोके। देशी ताट उत्पन्न कृरि। बांकों ऊर्माण ताट नाम किनों।। अथ ऊमाण ताटकों टक्षण टिल्पते।। जाम दोय टावु होय। उन्हेश एक मात्रा।। एक द्वुत होय। द्वुतकी आधि मात्रा।। एक द्वुत होय। द्वुतकी आधि मात्रा।। फेर एक होय। द्वुतकी आधि मात्रा।। फेर एक खिदाम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय। टाविराम होय।। वाव्य टाविराम होय।। वाव्य प्राधार टिल्पते।।। काव्य पाठाक्षर टिल्पते।। अय ग्यारवो ध्रुवको भेद । ऊर्माण तालकी उत्पाचि लिख्यते ॥ शिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य

हैकी लीक्किन परमें कहते हैं ताह । ताह । दिगि । दो गिडियों । तक । भी थरियों । इति ऊमीण ताल ℃ अमीण ताल, सातताछो

नाल.	िक्षिकार.	प्रसद्धे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
-	200	वाहं	उद्घेताल मात्रा । १ ।	प्रथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक
n'	**	वाहं	त्रषु ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
mi	NO	दिग	द्भते ताल मात्रा ० ३ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
	गणेह	दां गिडिदां	उदि शास्त्र मात्रा ८ । ==	अविरामकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा डेड
المرد ا	he	10	हुत ताल मात्री ॰ ५ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी तांत सीक है सी मात्रा आधि
شود	तथि	धो थरिदा	अवि॰तास्य मात्रा े ६।=	णी अंक हे सी ताल लीक हे सी म
9	1000	गनधाँ	हम् ताल मात्रा । ७ ।	उपुकी सहनाणी अक है सा वाल लाक है सा भाग ९क मात्रापें मान
		•		

अथ बारवी घुवको भेद । कुंतलतालक् उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य पाठाक्षर पह ताल साततालो है।। अथ कुंतलतालको स्वरूप लिख्यते। ० । ० ।। अथ पाठाक्षर लिख्यते।। याहिको लोकिकमें द्भुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लविराम होय " बाध नारचमें बरतिवेकों। उदु एक मात्राको। द्वत आधि मात्राको। ठिबराम डेड मात्राको छेके। देशी वाठ उत्पन करि छिरामकी डेड माना ॥ रोप टघु होय । टघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उपजांव । सो कुंतलताल जानिये । वांकी कुंतलताल नाम किनों ॥ अथा कुंतलतालको लक्षण लिल्बते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय प्रमञ्ज कहते हैं थाकिट । था ० तत थाकिट ो तक ० कुकु थरियां ो दिगधां । तक्थों । इति कुंतलतालनको कुंतल ताल (धुव १२) साततालो ७.

क्तिलताह, साततालो ७.

क्णेनम् संपूर्णम् ॥

समस्या,	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सी नाल लीक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	डविरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	स्पृताल मात्रा । १ ।	द्रुत ताल मात्रा ० २ ==	ह्यवि॰ताल मात्रा े ३ ।=
प्रमञ्जु.	थाकिट	धा	तत थाकिट
च्चकार.	होई.	At	तथेई
मुख	<i>-</i>	'n	m

क्तळताळ, साततालो.

ताळ.	मुच्छात.	प्रमुखे.	महनाणी अक्कार ताल मात्रा.	सुमस्या.
29	Ac	&-) E	P7 \$200 \$12.77 \$1	दुवकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा आधि
5	न्योह	कुकु धारियां	स्ववि∘वास्त्र मात्रा ोः ५ । ≕	टाविरामकी सहनाणी अंक हे सो बाट सीक है सो मात्रा हेड
w	थुड्ड	हिगधाँ	ठघुताले माता । ६ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सी मात्रा एक
2	25.	तकथों	उच् ताल मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनार्णा अंक हे सो ताल टीक हे सो मात्रा एक मात्रापे मान

अथ तरवो ध्रवको भेद। कीडातालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिक गीत नृत्य बाह्य नाट्यमें बर्गतिकों। द्रुत आवि मात्राको । द्विराम पोंग मात्राको । लंकु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको कीडाताल मान ॥ अथ कीडातालको लक्षण लिक्यते ॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आखि मात्रा ॥ एक द्विराम होय। द्वि- सम्की मेंण मात्रा ॥ एक त्रुव होय। लक्ष्यको एक मात्रा ॥ देग्य हविराम होय। द्विरामकी गाँग मात्रा ॥ ओर एक त्रुव होय। क्ष्यकी एक मात्रा ॥ देग्य हविरामकी गाँग मात्रा ॥ आप कीडातालको क्ष्यकी एक मात्रा ॥ कोडातालको है ॥ अथ कीडातालको स्वरूप किक्का हो कि सक्ष्य निर्माण में ॥ अक्षर हा ताले है ॥ अथ कीडातालको स्वरूप किक्का हो कि सक्ष्य हे ॥ अक्षर ताले है ॥ अथ कीडातालको । कीडा ताल (धुव १३) षट्ताली ६.

लो.

-		The second secon		
ताल	चचकार,	प्रमुद्धे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
	/l c	<u>&</u>	इत ताल मात्रा	मथम दुतकी सहनाणीं अंक हे मा ताल ठीक हे सो मात्रा आधि
~	चंच	80	द्वि॰ताल मात्रा ठेर ≣	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा पींण
m	the S	थरिथाँ	त्यु ताल मात्रा । ३ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
4 20,	वव	दिगिंड	दिषि ज्यास्य मात्रा ठ ४ =	द्विरामकी सहनाणी अंक है सो ताल लीक है सी माना पोण
***	वत	मि <u>केक</u> े	द्वि॰ताल मात्रा ১ ५ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक है सी ताल लीक है सी मीता पीण
	CE CE	मनथा	उच्न बाल मात्रा । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
			तिलक ताल	(धुव १४) षट्तालो ६.

क्रीडाताल, पर्ताछो ६.

अथ चीद्वी धुवको भेट् । तिलकतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालमें विचारिके । गीत नृत्यं वाध नाटचेने वरितेकों । उनु एक मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । द्रित्राम पेण मात्राको हेके । देशी ताल उत्पन्न करि ।

उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्राण मान

छषु ताल मात्रा w

गनथों

等

२५३			संगीत	सार.		,
नों ॥ अथ विलकतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दाय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय। दिविराम होय । द्रियाभकी पोंज मात्रा ॥ दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादि- लिकताल जानिये ॥ अथ तिलकतालको स्वरूप लिख्यते ।। ० ।। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको ताहै । थोंगा । तत॰ थिताके ८ दिथितां । गनथों । यह छह तालो है ॥ इति तिलक्षताल संपूर्णम् ॥	समस्या.	मथम उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	दिवरामकी सहनाणी अंक हे सें। ताल लीक हे सो मात्रा पाँण	उचुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा एक
ं विटक्वाटको टक्ष यि । द्विरामको प् मिये ॥ अथ तिट पा । तत ॰ थितकि	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	ठषु ताल मात्रा । १ ।	सम्बन्धान माना । २	द्भव ताल मात्रा ० ३ ==	द्वि वाल मात्रा ० ४ =	उषु ताल मात्रा –
किनों ॥ अथ तिल् एक द्विराम होय तिलक्ताल जानि है नाहं। थोंगा	प्रमिलु.	ताहं	ध्रांगा	तत	थितिक	दिधितां
ाल नाम मात्रा ॥ गावे । सी खुकहते	ब बकार,	शह	्रेड इंड	Ac	वत	थेई
वाको तिलकत इतकी आधि कमें सुख उपप	ताल.	-	ก๋	m	20	نو

विजय ताल (ध्रुव १५) साततालो ७.

जिल्यते ॥ याहिको लेकिकमं परमनु कहत है दिथि॰ । ताहं । तकि॰ दिगिदां । धिकिकि > धिमिधिमि । तक्यों । इति अय पंद्रवो धुवको भेद । विजयतालकी उत्पत्ति लिक्यते॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य उचुकी एक मात्रा ॥ फिर एक द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक उचु होय। उचुकी एक मात्रा ॥ और तो बिजयताल जानिये॥ यह ताल सात तालो है॥ अथ विजय तालको स्वरूग लिल्यते ०।०।०।। अथ पाठाक्षर नाटचर्ने वरतिवेकों ॥ द्वत आधि मात्राको । तदु एक मात्राको । द्विराम गाँण मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको रक द्विराम होय । द्विरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर दोय तबु होय । तबुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । बैजय ताल नाम किनों ॥ अथ विजय तालको तक्षण लिल्यते ॥ जामें एक द्वन होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय वेजयताल संपूर्णम् ॥

विजय ताल, साततालो ७.

1	Ca		
समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
सहनाणी अक्ष्मर ताळ मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	लघु ताल मात्रा । २ ।	दुत ताल मात्रा ० ३ =
प्रमिलु.	दिधि	ताहं	तिक
चचकार.	/IC	થકે	/tσ
नाळ.	<i>-</i>	ď	mi

			विजय ताल	विजय ताल, सातताला ७.
नीख.	ब्चकार.	प्रमञ्ज	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
***	**	हिमिदां	उच्च ताल मात्रा । ४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो वाउ ठीक हे सो मात्रा एक
3.	चंच	विकिक	द्वि∘ताल मात्रा ठे ५ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पींण
w	পূজ হৈন	धिमिधिमि	स्तु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
9	To the state of th	तक्यों	उच्च ताल मात्रा लच्च	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सो मात्रा एक

क्छ ताल (धुव १६) पंचतालो ५.

अच्य सीलको मेर् धुवको। वञ्जतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ चिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य किनों ॥ अथ कर्जनास्क हो सक्षण सिरूपते ॥ जामें दोय हुत होय । हुतकी आधि मात्रा ॥ तीन दिवराम होय । दिवरामकी पीण ••১১४ अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ माहिको जोकिकमें परमन्तु कहते हैं था॰ थै॰ थरिकु े विकुकु े विधों है ॥ इति वज बाद्य नाट्यमें वर्गतेवेकों। द्रुत आर्थि मात्राकों। द्विराम गींग मात्राको होके। देशी ताल उत्पन करि। वांको वज्जताल नाम क्षक ॥ का रिक्सों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो वजताउ जानिये॥ यह ताल पंचतालो है॥ अय वजतालकों स्वरूष जिल्यों वाउ संपूर्णम् ॥

पष्टी तालाध्याय-वज्ञ ताल-और विजयताल पंचताली. २५

वज्ञ ताल, पंचतालो ५.

विजय ताल (मंठ १) पंचताली ५.

अथ शुहादिकनमें पहले। मेठ । विजय तालकी उत्पत्ति लिरूयते ॥ थिवजीने उन मार्गतालनमें विनारिके । यीव मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके। देशीवाद्ध उत्पन्न कृति॥ वांको मंठ वाल नाम किनों। मो मंठ वालके छवीस भेद है। प्रित्तके नाम लिख्यते॥ वहां पहलो विजय। १। दूसरो प्रथम। २। तिसरो वक्त ।३। त्रोथो धनंजय। ४। पांचवोंबिराम। ५। मुख वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । द्रुत आधी मात्राको द्विराम पाँणमात्राको । उधु एक मात्राको । कविराम डेड मात्राको । मुरु दोष

छटो सालग । ६ । सातवो सारस । ७ । आठवो की । ८। नवो पाडि । १ । दशवो रवि । १० । ग्यारवो विचार । १ १। बारमो किर दोय उमु होय । उमुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों भीता दिक्में मुख उपजावे । सो विजयतात जानिये ॥ यह तात पंचतालो अमिंह । १२ । तेस्बों रंगमंह । १३ । चीर्वो वण्तंह । १४ । पंत्रवी जयमिय । १५ । सोलबो गीर्वाण । १६ । सतरवी संकीणेंगर। ३६। तहा मंठको पथम भेर । विजय तालकी उत्पत्ति लिल्पते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नुत्य वाद्य नाह्यमें वर्रतिवेकों । छघु एक मात्राको गुरु दीय मात्राको छके ॥ देशीताल उत्पन्न करि ॥ वांको विजय ताल नाम । ३१ । बतीसवो पिय । ३२ । तेतीसवो सत्य । ३३ । चोतिसवो पंचवात । ३४ । पैतीसवो वारिमंट । ३५ । छतीसबो किनों ॥ अथ विजय तालको सक्षण सिष्यते ॥ जामें दोय सबु होय । सबुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ कमल । १७। अपदारवी चित्र । १८। उगणीसवी तारिषय । १९ । विसवी विसाल । २० । ईकवीसवी कल्याण मंठ । २१ । सवाईसवी श्रीरंग । २७ । अठावीसवी गंभीर । २८ । गुणतीसवी भन्न । २९ । तीसवी कस्तिग । ३० । इकतीसवी पंचघात माईसनी बरुभ । २२ । तेईसवी वर्ण । २३ । चोईसवी पनभू । २४ । पचीसवी मुहित । २५ । छबीसवी करारु । २६

विजय ताल, पंचतालो ५.

है। अथ विजय तालको स्वरूप लिल्यते।। ऽ।। अथ पाठाक्षर लिल्यते॥ याहिको लोकिकम परमल कहते है तक्षिकि

दिगदां। तागिडि गिडिरां ऽ तत्तिमा । गनथाँ । इति विजयतात्र संपूर्णम् ॥

- E	ो ताल लीक हे सो मात्रा एक
समस्या.	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो त
सहनाणी अध्रर तात्र मात्रा,	उषु ताल मात्रा । १ ।
परमलु.	तकधिक
चचकार,	हु ं
ताल.	;

विजय ताल, पंचतालो ५.

नाल.	चचकार,	प्तिकु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
نه	शृङ्	दिगद्ां	ह्य ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
mi	थेई तिततत	तागिड गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झालो
20	थेई	तत्तिधिमि	उषु ताल मात्रा - 8 -	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक
نو	थह	गनथाँ	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रांपें मान

प्रथम ताल (मंठ २), तितालो ३.

अथ मैठ तालको दूसरो भेद । प्रथम तालकी उत्पत्ति लिक्षते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत वांको पथम ताल नाम किनों ॥ अथ पथम तालको लक्षण जिल्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और एक द्वत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । गुरु दोय मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । त्युत बीन मात्राको छेके । देशी ताछ उत्पन्न करि । होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक प्टुत होय। प्टुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो पथम ताह २५८

जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ पथमतालको स्वरूप तिल्यते ऽ ेऽ अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें पर-मन्द्र कहते हैं चिधिकिट थरियां ऽ धिमि ॰ थरिकुकु दिधिगन थों डे॥ इति पथम ताल संपूर्णम् ॥

प्रथम ताल, तितालो ३.

,			· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
चचकार. परमेलु. अक्षर त		अध्यर्भ	सहनाया अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या.
है,	कि,	ने प	ताल मात्रा	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हें सी ताल लीक हें सो मोना दीय निंदी झाली
र्श्वा र	2 121	इत ता	ताल मात्रा	निर्देशियां अस्ति है सो साज आधि
के विकास	_	0	11	
है तिततत थारिकुकु प्टुत त	ी मुर्गे		नाड मात्रा	सो ताउ ठीक हे सो मा
 /=		75	(9	गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो झालाप मान

संगीतसार.

मक ताल (मंठ ३), चोतालो ४.

अथ चक्रवालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें तीन लघु होष । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा॥ या रीतसीं अथ मंठको तीसरो भेद । चक्र तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरितिवेकों। उचु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्त करि। वांको चकताल नाम किनों॥ गीतादिकमें सुख उपजावे। सो चक्रताल जानिये॥ यह ताल चीताली है।। अथ चक्रतालको स्वरूप लिल्पते।।।ऽ अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको जोकिकमें परमञु कहते है ताहं। विभिष्धिमि। ताकितां। विधिमन थों ऽ इति चक्रताज संपूर्णम्॥

पष्ठो तालाध्याय-चक ताल और धनंजय ताल चोतालो. २५९

A13	चचकार.	प्रमङ्	सहनाणी अस्पर ताल मात्रा.	समस्या,
ج ا	श्रु	<u>in</u>	उचु ताल माता । १ ।	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ टीक हे सी मात्रा एक
نه	्र करें इस्टेर्डिंग इस्टेर इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर्डिंग इस्टेर इस्टेर्ड इस्टेर इक	धिमिधिमि	ड्यु ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक
m	्य र	तकितां	उच्च ताल मात्रा । ३ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल कीक हे सो मात्रा एक
ဆ	थेई विततत	धिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी माना दीय विंदी झाली झालापें मान
			•	

चक्र ताल, चोतालो ४.

वाद्य नाट्यमें वर्तिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। तपु एक मात्राको। गुरु रोय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल्य उत्पन्न करि । वांको धनंजयताल नाम किनों।। अथ धनंजयको लक्षण लिख्यते।। जामें एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा।। एक लघु होय। त्रुतकी तीन मात्रा।। यारितों। प्रक लघु होय। त्रुतकी तीन मात्रा।। यारितों। मितादिकमें मुख उपजावे। सो धनंजय ताल जानिये।। यह ताल चोतालों है।। अथ धनंजय तालको स्वरूप लिख्यते।। ऽ उ अथ पाराक्षर लिख्यते।। याहिको लोकिकमें प्रमुख कहते है जक थारिथां। धीकिट धीकिट ६ तकुकुत कुकुथिति थों उ तकुकुत कुकुथरि थों डे अथ मंठको चाथो मेद । धनंजय तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गताहनमें विचारिके । गीत नृत्य धनंजय ताल (मंठ ४) चातालो ४. हति धनंजयताल संपूर्णम् धनंजय ताल, चाताली ४.

नाल.	चचकार.	प्रसङ्	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
3.	No	ल क	द्वत ताल माना ॰ १ =	मथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
a'	ई हें	थरिथां	छषु ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
m	थेई तिततत	धीकिट धीकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झालो
20	थेई निततत थेई थेई	तकुकृत कुकृथारि थों (ट्युत. ताल मात्रा (डे ४ ॥ ८)	प्लुतंकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विदी झालो झालों मान

विराम ताल (मंठ ५) षदताले ६.

अय मंठको पांचवो भेद् । विरामतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। द्विराम गाँण मात्राको। लघु एक मात्राको। लविराम हेड मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। गंको विरामताल नाम किनों ॥ अथ विरामतालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक दिवराम होय । दिविरामकी पाँण मात्रा ॥ एक उच्च होय । उच्चकी एक मात्रा ॥ एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक उच्च होय । उच्चकी एक मात्रा ॥ एक उविराम होय । उविरामकी देर मात्रा ॥ घारीमसोँ मीत्रानिक्रों सम्बन्ध ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक लिब्साम होय । लिब्समिकी डेड मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे। सो बिरामवात जानिये ॥ यह तात छहतालो ह ॥ अथ विरामतात्रको स्वरूप जिल्पते ० ०।०। ो अथ पाठाक्षर तिल्यते ॥ ताधि । धलां े कुघलां । तक जिक्किट । ताध गनथों ो इति विरामताल संपूर्णम् ॥ कहते हैं याहिको टोकिकमें परमनु

विराम ताल, षहतालो ६.

	चचकार.	प्सिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
6	صار	तिध	्व	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल शिक हे सी मात्रा आधि
,			11	
ព	t	ין נו	द्वि, ताल मात्रा	作 多 本
٠	7		 	पर्गाणा अक ह या वाल लोक ह या भागा
m	(g)	क्षटां	उषु ताल मात्रा	उपकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
	,	,	-	
2	įħ	ķ	दुत ताल मात्रा	
×0	-	}	 20 0	मान हिंदी है है है है है है है है है है है है है
>	Į į	45	ल्यु ताल मात्रा	
٥	<u>3</u>	0 de de de de de de de de	- 5'	त्युका तर्गाणा अक ल ता वाल ताक ल ता मात्रा एक
U	नुभेट	मुद्रि गुरुभू	लिव. ताल मात्रा	
خ	T -	7	11 00	लाबरानका यहनाथा भन्न हाता ताल लाक ल सा मात्रा दह

सालग ताल (मंठ ६) षद्तालो.

फेर तीन दुत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ एक उषु होय । उषुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो अथ मंठको छटो भेद । सालग तालकी उत्पत्ति लिक्यते॥ शिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाटचमे वरतिवेकों। दुत आधि मात्राको। उषु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि॥ वांको सालग ताल नाम किनों। अथ सालम तालको लक्षण लिल्पते॥ जाने एक द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा॥ एक लघु होय। तघुकी एक मात्रा॥ सालग नाल जानिये ॥ यह नाल ष्ट्नालो है ॥ अथ सालग नालको स्वरूप लिख्यते ०। ० ० ०। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहते है तक ० थिथिथिमि । दिगि ० गिडि ० दिगि ० तक्थों । इति सालम ताल संपूर्णम् ॥

सालग ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	परमञ्ज.	सहनाणी अक्षर ताळ माम्ना.	
9.	/tc	तक	डुत ताल मात्रा हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो	ह सो मात्रा आधि
r	थेडे	धिषिषिमि	त्रेषु ताल मात्रा । २ । । २ ।	सी मात्रा एक
m	/IC	िहिंग	दुत ताल मात्रा दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे स	सो मात्रा आधि
20	Λσ	गिडि	हुत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे	सो मात्रा आधि

पष्टी तालाध्याय-सालग और

समस्या.	। ताल लीक हे सो मात्रा आधि	ी ताल लीक हे सी मात्रा एक मान
	दुतकी सहनाणी अंक हे सो	त्रधुकी सहनाणी अंक हे सी ताल मात्राषे मान
सहमाणी अक्षर ताल मात्रा,	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	उषु ताल मात्रा।
म्रम्हु.	दिग	तकथों
चचकार.	/te	शहर
É	3.	w

सालम ताल, पर्तालो ६.

सारस ताल (मंड ७) आठतालो ८.

अय मंडको सातवो मेड्। सारसतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नाटचेमें वरिविवेकों। द्रुत आधि मात्राको।गुरु दीय मात्राको। उचु एक मात्राको ठेके। देशी ताठ उत्पन्न करि। वांकों सारस यह ताल आठ तालो है ॥ अथ स्वरूप लिल्पते ० ० ऽ ।।।। अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु गुरुकी दीय मात्रा ॥ च्यार छघु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो सारस ताल जानिये ॥ कहते है दां ॰ दां ॰ थिथिकिट दिगदां ऽ कुकृषरि दिगदां ऽ तांतक । थिभिधिमि । किटथरि । गनयों । इति सारस वाल नाम किनों ॥ अथ सारस तालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और दीय गुरु होय । नाट संपूर्णम् ॥

किं बिकी मथम द्रतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि न्य द्राय 6 6 6 8 सो मात्रा मात्रा मात्रा मात्रा मात्रा माज मात्रा लीक हे सो 即用 乍 乍 the F he ,hc he लीक व्ह स्थ लीक लीक लीक <u>त</u> सो नाउ व 9 0 हे सो ताउ अंक हे सो ताल गाउ 9 झाले झाहो ममस्या. अंक हे मो अंक हे मी 乍 H अंक है he गुरुकी सहनाणी अंक हे अक अंक सहनाणी सहनाणी सहनाणी सहनाणी सहनाणी सहनाणी सारस ताल, आठतालो ८. उदकी द्रतकी गुरुकी <u> उपकी</u> **उ**षकी **उ**वकी अक्षर ताल मात्रा. मात्रा मात्रा मात्रा मात्र मात्रा मात्रा 11 ताल मात्रा मात्र 1 सहनाणी म माल नाल 0 13 ताल माल 9 V 20 5 w tu? E C E E TT9 0 500 90 **B**9 0 <u> विधिक</u>िट कुकुथरि दिगदां धिमिषिमि दिगद्ां प्रमुद्धे. किटथारे तांतक ·w · 10. गनथों तिततत तिततत च चकार. 2 12 Sp. E. 10 do थुड़े शुरु माल. v 9

कील ताल (मंठ ८), पर्तालो ६.

अथ मंठको आठबो भेद । कील तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य भ बाद्य नाटचेमें वरितेके । द्रुत आधि मात्राको । त्रुषु एक मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि ॥ बांको कील ताल नाम किनों ॥ अथ कील तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत होय । द्रुतकी आयि मात्रा ॥ एक छघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फैर दीय दुत हीय । दुतकी आधि मात्रा ॥ फैर दीय तबु हीय । तबुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजाने। सो कील ताल जानिये॥ यह छह ताले। है। अथ स्वरूप लिल्पते ०।००।। अथ पाठाक्षर लिल्यते॥ याहि-को लोकिकमें परमलु कहते है थारि॰ धीथरि । यिमि॰ तक॰ यिमिक्टि । तक्यों । इति कील ताल संपूर्णम् ॥

कील ताल, पद्तालो ६.

नाल.	चचकार,	प्रमिछु.	सहनाणीं अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
·	Λ υ	धरि	दुत ताल मात्रा प्रथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी	अंक हे सी तात टीक हे सी मात्रा आधि
n'	हे जिल्ला इस्ति के स्थाप	धीथारि	त्वपुताल मात्रा तपुकी सहनाणी अंक हे सो	है सी ताल लीक है सी मात्रा एक
m	,h c	थिमि	द्रुत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सी	हे सी वाट टीक हे सी मात्रा आधि
∞ .	che	<u>क</u>	द्रुत ताल मात्रा ० ४ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो	सो ताल लीक हे सी मात्रा आधि

कील ताल, षड्तालो ६.

संगीतसार.

समस्या,	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रापें मान
सहनाणी अस्पर ताल मात्रा.	छबु ताल मात्रा । ५ ।	छचु ताल मात्रा । ६ ।
प्रमञ्जे.	धिमिकिट	तकथों
चचकार.	थिङ	কে
ताळ.	نح	w

पांड ताल (मंठ ९), एक तालें। १.

एक तालो है 11 अथ स्वस्त्र लिख्यते 5 अथ पाठाक्षर लिख्यते 11 याहिको लेकिकेषे परमनु कहते हैं । थाथा तकदिधि गनथों 3 इति पंडिताल संपूर्णम् 11 अथ मंठको नवो भेद । पंडि तालकी उत्पत्ति लिक्षते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विवारिके । गीत नृत्य बाघ नारचमें वरतिवेकों ॥ प्लुत तीन मात्राको छंके । देशी ताल उत्तन्त करि । वांको पंडिताल नाम किनो ॥ अथ पंडितालको लक्षण न्टिल्पते॥ जामें एक प्टुत होय। प्टुतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों गीतारिकमें मुख उपजावे। सो पंडिताल जानिये॥ यह ताल

पंडि ताल, एकतालो १.

समस्या.	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालोंप मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	प्लुत ताल मात्रा (हे १ ॥६)
प्सिलु.	धाधा तकदिधि गनथों
च चकार.	थेई निततत थेई थेई
नाल.	6

रिषेताल (मंठ १०), नोतालो ९.

अथ मैठको दशवो भेद । रवितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । गुरु दीय मात्राकों । छघु एक मात्राको छेके । देशी ताछ उत्पन्न करि । बांको रविताछ नाम दीय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ ओर च्यार छषु अशब्द होय। छषु अशब्दकी एक मात्रा ॥ या रीतसौं गीतादिकमें सुख उपजावे सी रविताल जानिये॥ यह नोतालो है ॥ अय रवितालको स्वरूप लिल्यते ऽऽ।ऽऽ(।।।।) अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको किनों ॥ अथ रिवतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दीय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ लोकिकमें परमलु कहते हैं। गिडिदां गिडिदां ऽ गिडिदां नकुकुक ऽ ताहं। थिमिथों किटाथिमि ऽ दिगिदां दिगिदां ऽ थोंगा। ततथे। ततिदिधि । गनथों । इति रवितास संपूर्णम् ॥

रवि ताल, नातालो ९.

-			
समस्या,	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी आहो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झाली	
सहनाणी अस्त्रर् ताल्ल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	त्वधु ताल मात्रा । ३ ।
परमञ्ज.	गिडिदां गिडिदां	गिडिदां नकुकुकु	ताहं
चचकार.	थेई तिततत	थेई विततत	थड़े
नाळ.	o÷	ก่	gri

राबे ताल, नोतालो ९.

संगीतसार.

- 1
गुरु ताल मात्रा गुरुकां सहनाणा अके हे सी अक
गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दाय
नाल मात्रा पथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लोक है सा मात्रा
—। निश्चः — आवापक द्राहिणा हाथका बाइतरफ
उच ताल मात्रा टचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
उच नाल मात्रा टिषुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
गजा हिंदि सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा

विचारताल (मंठ ११), पंचतालो ५.

अथ मंठको ग्यारवो भेद । विचार तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिग्जीने उन मागैतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेकों। छषु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको। दविराम पोंण मात्राको छेके। देशी ताछ उत्पन्न करि।

विचाur, प्रमुख 4 होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुखडपजावे । सो रतास जानिये ॥ यह पंचतासे है ॥ अथ स्वरूप सिल्यते ।।। ०० अथ पाठाक्षर सिल्यते ॥ याहिको सोकिकमें बांको विचारताल नाम किनों ॥ अथ विचारतालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा कहते है थोंगा । तकथरि । गिडिदां । कुकु ॰ यिथों े इति विचारताल संपूर्णम् ॥

विचार ताल, पंचतालो ५.

नाल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
	्र इंड	थांगा	छचु ताल मात्रा । १	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
نه ا	थहं	तकथरि	उषु ताल मात्रा ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
mi	ंडर	गिडिदां	छच् ताल मात्रा । ३ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो मात्रा एक
200	/hc	6°	द्रुत ताल भाता ० ४ =	- i
ند	चंच	विथों	दिव. ताल मात्रा	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पींण मात्राषे मान

रंगांबसार.

श्रीमंड ताल (मंड १२), आड तालो ८.

वाद्य नाटचमें वरतिवेकों ॥ उचु एक मात्राको । दुत आधि मात्राको । गुरु दीय मात्राको लेके ॥ देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको अथ मंठको बारमो भेर । श्रीमंठतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीन उन मागैतालनमें विचारिके । गीत नृत्य श्रीमंठ वाल नाम किनों ॥ अथ श्रीमंठवालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें दीय लघु हीय । लघुकी एक मात्रा ॥ और चार दुत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीता दिकमें सुख उपजावे ॥ सो श्रीमंठ तात्र जानिये। यह तास आठ तासो है। अथ श्रीमंठ तासको स्वरूप सिस्यते॥००००ऽऽ अथ पाठाक्षर सिस्यते॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहते हैं। ताहं। ताहं। थिमि॰ थिमि॰ नकु॰ कुकु॰ किरंट किरंट ऽ दिधिगन थों ऽ इति श्रीमंठताल संपूर्णमु॥

श्रीमंड ताल, आडतालो ८.

	मात्रा एक	<u>æ</u>	। आधि	
समस्या,	पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा	दतकी महत्राणी अंद के में कर नी पर
अस्पर नाल मात्रा.	लघु ताल मात्रा । १ ।	ठेषु ताल मात्रा । २ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुत ताल मात्रा
प्मेळु.	ताहं	ताहं	धिमि	धिम
चचकार.	शहर	थेई	(htt	Λ ι σ
ताल.	9.	8.	กะ	3 0

षष्ठो तालाध्याय-श्रीमंठ और रंगमंठ ताल साततालो.

ताल.	चचकार,	प्सिलु.	सहनाणी अस्पर ताल मात्रा,	समस्या,
۶۰,	/it	डि °	द्भृत ताल मात्रा ५ ====================================	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
w	(HE	6 9	द्धत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
9°	थेई तिततत	किरेट किरेट	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो
vi	थेई तिवतत	दिधिगन थों	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा दोय विदी झाठो झाठों मान

श्रीमंठ ताल, आठतालो ८.

रंगमंठ ताल (मंठ १३), साततालो ७.

अथ मंठको तेरवा भेद् । रंगमंठतालकी उत्पित लिख्यते ॥ शिवजीन उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य द्धतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक छषु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उपजावे । सो रंगमंठताल जानिये ॥ यह ताल साततालो है ॥ अथ रंगमंठतालको वाद्य नाटचमें वरतिवेकों । गुरु दीय मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । लघु एक मात्राको छेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको रंगमंठताल नाम किनों ॥ अथ रंगमंठ तालको लक्षण लिल्पते ॥ जार्ने एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा॥ओर दोय द्रुत होय।

स्वरूप डिल्पेत दिगि० घिषिक्रि	ऽ ० ० ग्रेट धीकि	ऽ००। अथ टऽथरि० चि	। अथ पाऽाक्षर चिरुषते ॥ याहिको लोकिकमेंऽ थिरिः धिमिः तक्यों ॥ इति रंगमंउताल संपूर्णम् ॥रंगमंठ ताल, साततालो ७.	. होकि हमें प्रमुद्ध कहते है ताकिट ताकिट ऽ दि।। ऽ उ संपूर्णम् ॥ ।तताहो ७.
नाल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	समस्या.
j ÷	थेई तिततत	ताकिर ताकिर	गुरु ताल मात्रा पथम गु ऽ १ ।८	पथम गुरुकी सहनाणीं अक ह सी तील लाक ह पा गांगा राग विंदी हाथको झालो
'n	/IC	हिंग	द्वत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
m	/to	दिगि	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा आधि
20	थेई तिततत	धिधि किट धी किट	मुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो
33	ΛC	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
w	јtс	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
9	্ব ক	तकथों	उष्टु ताल मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक

पण्मंड ताल (मंड १४), आडतालो ८.

अथ मैठको चबदावो भेद् । षणमैठतालको उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको। छघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको वणमंठताल नाम किनों ॥ अथ षण्ठको उक्षण जिल्यते ॥ जामें दोय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय उघु होय । उघुकी एक मात्रा ॥ फेर च्यार अशब्द सघु होय । सघुकी एक मात्रा॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो षणमंठतास जानिये ॥ यह तास आठ तासे है ॥ अथ षण्मंट तासको स्वरूप सिस्यते ऽऽ।।(।।।।) अथपाराक्षर सिस्यते ॥ याहिको सोकिकमें परमनु कहते है घीमिघिमि थरिथां ऽ तकदिगि कुकुथां ऽ यिमिथों । थोंगा । अशब्द्...ताहं । दिगिदां । दिगिदां । तकथों । इति षण्मंठताल

षण्मंड ताल, आठतालो ८.

		1	
समस्या.	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा दीय विंदी झाली	उचुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	त्रषु ताल मात्रा । ३ ।
प्सिछु.	ाधीमीधीम थरिथां	तकदिगि कृकुथां	धिमिथों
चचकार.	थेई तिततत	थेई तिततत	্ড নি
ताल.	÷	'n	กำ

षणमंड ताल, आडतालो ८.

	च चकार.	प्रमिल्छ.	सहमाणी अध्यर नाल मात्रा.	समस्या,
	्ड इंड	थोंगा	उच्च ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
	थहे	ताह	छचु ताल मात्रा । ५ ।	स्पुकी सहनाणी अंक हे सी तात ठीक हे सी मात्रा एक -। अशब्दआवापक दाहिणो हाथ बाँईत्रफ
	e de la companya de l	दिगिश	उत्त पात्र - १व्य पात्र - १व्य पात्र	टचुकी सहनाणी अंक हे सो तात टीक हे सो मात्रा एक ।- अशब्दविक्षेपक दाहिणो हाथ दाहिणीत्रफ
	्छ स्व	दिगिदां	उच् तास्त्र मात्रा - ७ -	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक । अशब्दनिष्कामक दाहिणों हाथ ऊचों करणों
	थेड	तकथों	उच्च ताल मात्रा । ८ ।	त्युकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रापेमान अशब्द प्रवेशक दाहिणी हाथ नीचेकोपताकिनों

जयप्रिय ताल (मंठ १५), तितालो ३.

किनों ॥ अथ जयपियतालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ अथ मंठको पंद्रवो भेद् । जयप्रियतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाटचमें वर्तिवेकों। उच्च एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको जयपियताल नाम

षष्ठो तालाध्याय-जयप्रिय और गीर्वाण ताल पंचतालो. २७५

एक समु होय। समुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकों सुख उपजावे। सो जयप्रियतास जानिये ॥ यह तास तितास्त्रो है ॥ अथ जयप्रियतासको स्वरूप सिख्यते। ऽ। अथ पाटाक्षर सिख्यते ॥ याहिको सोकिकों परमसु कहते है ताहं। धिधिकिट माहं ऽ गनथों । इति जयपियताल संपूर्णम् ॥

जयप्रिय ताल, तितालो ३.

ताल.	चवकार,	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
6	थेई	ताहे	छघुताल मात्रा । १ ।	पथम उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
n'	थेई तिततत	धिथिकिट नाहें	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी झालो
mi	शुरु	गनथों	उचु ताल मात्रा । ३ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक

गीबीण ताल (मंठ १६), पंचताली ५.

अथ मंठको सोलवो भेद् । गीविणितालकी उत्पत्ति लिष्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमं विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। उदु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको गीवांणताल नाम किनों ॥ अथ गीवांणतालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय

संगीतसार.

जुरकी दीय मात्रा ॥ फेर एक ठमु होय । उघुकी एक मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी स्वरूप जिल्यते। ऽ। ऽऽ अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको लोकिकमं परमञ्ज कहते है थॉगा । तकादीध थॉगा ऽ धिमि-दीय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो गीवांणताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अथ गीवांणतालको थिमि । थांथरि थांथरि कुकुथरि डे दिधिगन थों ऽ इति गीवांणतात्र संपूर्णम् ॥

गीर्वाण ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चचकार,	प्तिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
6.	शुरु	थ्रांगा	उच्च ताल मात्रा	मथम उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
'n	थेई तित्तत	तकदिधि थोंगा	- नि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
m	्स इस	धिमिधिमि	#	
သ	थेई तिततत थेई थेई	यांथरि थांथरि कृक्धरि	हैं।	प्छतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकंदालो दाशकी परिक्रमा विंदी बाले
نح	थेई तिततत	हिंधिगन थों		गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दीय विकास सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दीय
		-		

कमल ताल (मंठ १७), द्शतालो १०.

अथ मंडको सत्रवो भेद् । कमल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। उपु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कमलताल नाम किनों ॥ अथ कमल तालको त्रक्षण तिरुत्यते ॥ जामे एक त्त्रपु होय । त्रपुकी एक मात्रा ॥ दीय दुत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ फेर दीय छघु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ फेर दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर तीन छघु होय । छघुकी एक मात्रा॥या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सीकमलताल जानिये ॥यह ताल द्शतालो है ॥ अध कमल तालको स्वरूप लिल्यते ।००।।००।।। अथ पाठाक्षर सिल्यते ॥ याहिको लेकिकमें परमलु कहते है ताहं। थरि ० थां ० दिगिदां। गिडिगिडि तैक o तां o चिधिकिट । थोंगा । तक्थों । इति कपलताल संपूर्णम् ॥

कमल ताल, दशतालो १०.

ताल.	चचकार.	प्रमेलु.	सहनाणी अश्वर नाल मात्रा.	समस्या,
: ا	थड़	ताहं	छषु ताल मात्रा । १ ।	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
نه	,tc	थरि	द्रत ताल मात्रा ० २ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
mi	्रीच	थां	द्धत ताल मात्रा ३ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा आधि

	l
ġ	١
_	ı
ε	ı
T	1
S C C C	
S T	
कमध	
8	-

			कमल ताल, दशताला ८०	· · · ·
ताल.	चचकार,	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर् ताळ मात्रा,	समस्या.
30	्र वि	दिगिदां	खु ताल मात्रा । ४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
5,	(B)	गिड्माड	उच ताल मात्रा लघुकी सह	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताठ ठीक हे सी मात्रा एक
wº	/IC	पश्च	द्भत ताल मात्रा ० ६ =	सहनाणी अंक हे सी ताठ ठीक हे सी मात्रा आधि
9.	AC	च	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सह	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ टीक हे सो मात्रा आधि
v	्ठ नेक		उचु ताल मात्रा । ८ ।	सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
من	थिङ्	थोंगा	ह्य ताल मात्रा । ९ ।	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
90°	्र क	तकथों	ह्यु ताल मात्रा । १० ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल तीक हे सो मात्रा एक
				चोबास्रो ए

ंचंत्र ताल (मंठ १८), चांतालो ४. अथ मंठको अठारवो भेट्। चित्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य

षष्टी तालाध्याय-चित्र ताल और तारप्रति ताल चोताली. २७५

किनों ॥ अथ चित्रतालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें दीय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन बाद्य नाटचमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको चित्रताल नाम मात्रा ॥ फेर एक द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो चित्रतात्र जानिये ॥ यह चोतात्जो है ॥ अथ चित्रतालको स्वरूप लिल्पते ०००० अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ साहिको लेकिकमें परमजु कहते है डुगु॰ डुगु॰ धुमिधिमि थरिथा तकतक ८ थो ० इति चित्रतास संपूर्णम् ॥

ं संपूर्ण स् ॥ चित्र ताल, चोतालो ४.

प्सिट्ड.	सहनाणा अस्पर ताल मात्रा.	समस्या,
tr 0 tr 1	ताल मात्रा	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
ישו שלי	ताल मात्रा २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताट टीक हे सो मात्रा आधि
धुमिधिमि प्लुत थरिथा तकतक	ताल मात्रा प्र	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालाएँ मान
् स्त्र	ताल मात्रा % = %	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा आधि

तारप्रति ताल (मंठ १९), चोतालो ४.

अथ मंठको उगणीसवो भेड्। तार्प्रति तालकी उत्पत्ति लिष्धते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत

२८० नाम किनों ॥ अथ तारमतितालको सक्षण सिल्यते ॥ जामें दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ दोय सघु होय । सघुकी मृत्य वाद्य नारचमें वर्रातिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। उचु एक मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको तारमतिताल एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो तारमित ताल जानिये ॥ यह ताल चोतालो है ॥ अय स्वरूप लिष्यते ००। अथ पाठाक्षर जिल्चते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दां॰ दां॰ कुकुथरि। गनथों। इति तारमति ताल संपूर्णम्॥

तारप्राति ताल, चोतालो ४.

	44	namix.	•	
समस्या,	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे मो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
सहनाणी अस्पर ताल मात्रा.	दुत ताल मात्रा ° ी ==	द्रुत ताल मात्रा ० २ ==	ट्यु ताल मात्रा । ३ ।	ल्डु ताल मात्रा
परमछु.	نظ	.	कुकुथारि	गनथों
च बकार.	Λ υ	AC	शहर	थेड
ताल.	9.	o;	m	ဆ

विशाल ताल (मंठ २०), साततालो ७.

अथ मैठको बीमवो भेद । विशालतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य गारा नारचमें वरितिकों। द्रुत आधि मात्राको । उषु एक मात्राको छेके । देशी तात्र उत्पन्त करि । वांको विशात्र तात नाम किनों ॥ अथ विशास तासको सक्षण सिष्धते ॥ जामें रीय दुत हीय । दुतकी आधि मात्रा ॥ एक सघु होय । सघुकी एक मात्रा ॥ सो विशास तास जानिये ॥ यह तास सात तासो है ॥ अथ स्वरूप सिल्यते ००।००।। अथ पाठाक्षर सिल्यते ॥ याहिको ", फैर दीय द्रुत हीय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फैर दीय छघु हीय। छघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजाबे लोकिकमें परमलु कहते है थिमि॰ थरि॰ ताकिट। थिषि॰ गिडि॰ थोंगा। थिमिथों। इति विशाल ताल संपूर्णम् ॥

विशास तास, साततास्रो ७.

समस्या.	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्रतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
सहनाणी असर नाल मात्रा,	द्रुत ताल मात्रा ० ९ ==	द्वत ताल मात्रा ० २ ==	उच्च ताल मात्रा । ३ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुत ताल मात्रा ० ५ ==
परमत्रु.	धिमि	थरि	वाकिट	धिधि	गिडि
चचकार्	AC	Ac	्रेंड	, ltc	, ltc
ताल,	9.	n	m	30	نح

विशाल ताल, साततालो ७.

संगीतसार.

नाल.	च चकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	समस्या,
w²	্ন দি	थोंगा	छच् ताल मात्रा । ६	त्रघुकी सहनाणी अंक हे सी तात ठीक हे सो मात्रा एक
9.	(ST	धिमिथों	हबु ताल मात्रा । ७	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

कल्याण ताल (मंठ २१), साततालो ७.

अथ मंठको ईकईसवो भेद् । कल्याण तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों । गुरु दीय मात्राको । छषु एक मात्राको छके । देशी ताछ उत्पन्न करि । वांको कल्याण मंठ-ओर च्यार अशब्द छबु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कल्याण मंठ ताछ जानिये ॥ यह ताल नाम किनों ॥ अश्व तक्षण जिल्यते ॥ जांम एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय लघु होय । उघुकी एक मात्रा ॥ ताल सात ताली है।। अथ स्वरूप लिल्यते ऽ।। (।।।।) अथ पाठाक्षर लिल्यते॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहते है थांकिडि थांकिडि ऽ तकतक । दिगिदां । ताहं । थोंगा । थांथां । थायों । इति कल्याण ताल संपूर्णम् ॥

कल्याण ताल, सातताली ७.

ताळ. चचकार. परमलु. अहरार ताल मात्रा. १. थेई तितत्त धांकिडि गुरु ताल मात्रा प्रथम गुरुकी स	समस्या. सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी झाले हाथकों
--	--

 र. थेई तकतक निर्मात मात्रा तक के से ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ताह्म ति के से से पाल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ताह ते के से ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक तम्म ति ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रकास ति ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रकास ति ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रकाम ति ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रकाम ति ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान ति ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान प्रमान प्रकाम नि ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान प्रकाम नि ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान प्रकाम नि ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान प्रकाम नि ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान प्रमान प्रकाम नि ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रा प्रमान प्रम प्रमान प्रम प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान प्रमान	नाल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर नाळ मात्रा.	समस्या,
स्गर् हमु तह मात्रा हुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो म ताहं हु ताल मात्रा हुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो म योगा हु ताल मात्रा हुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो म धांधां हु । ८ । । अशब्द विक्षेपक धांधां हु । ८ । । अशब्द विक्षेपक धांधां । ६ । न अशब्द विक्षेपक लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा याथों । ६ । न अशब्द निष्मापक याथों । ७ । े अशब्द प्रवेशक	n	हुन इंटर	तकतक	ताल मात्रा २ ।	ठीक हे सो मात्रा
वाहं 39 ताल मात्रा उष्ठाया थोंगा - अशब्द अविषक थोंगा - अशब्द विक्षेपक वांधां - अशब्द विक्षेपक वांधां - अशब्द विक्षेपक वांधां - अशब्द विक्षेपक व्याथों - अशब्द विक्षेपक व्याथों - अशब्द विक्षेपक व्याथों - अशब्द विक्षेपक - अशब्द विक्षेपक - अशब्द विक्षेपक - अशब्द विक्षेपक - अशब्द विक्षेपक - अशब्द विक्षेपक - अशब्द प्रवेशक	m	शुङ्	दिगदां	ताल मात्रा ३ ।	ठीक हे सो मात्रा
थोंगा त्वपु ताल मात्रा त्वपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो म त्वपु ताल मात्रा त्वपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो म न अशब्द निष्माक थाथों विष्मा ताल नात्रा त्वपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा थाथों । ७ । े अशब्द प्रवेशक	သံ	थेड़े	नाञ.	ताल मात्रा ४	ताल लीक हे सी मात्रा
धांधां तिष्ठ प्रायों तिष्ठ प्रायों श्रायों तिष्ठ प्रायों - अश्रव्यः प्रवेशक	34	chun-	थोंगा	ताल मात्रा ५ ।	अंक हे सो ताउ टीक हे सो मात्रा वेक्षेपक
थाथों उचु ताल मात्रा त्युकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा प्राथों ७ । ८ अशब्द प्रवेशक	w	क्ष	घांधां	ताल मात्रा	अंक हे सो वाल लीक हे सी मात्रा निष्मामक
	9	थि	थाथों	ताल मात्रा ७	ाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक मात्राषे मान प्रवेशक

कल्याण ताल, साततालो ७.

बह्नम ताल (मंड २२), तितालो इ.

अथ मैठको बाईभवा भेद । बह्छभ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य चाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको। उपु एक मात्राको ठेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको वल्लभताल नाम किनों॥ मंत्रीतमार

अथ बसुभ तालको तक्षण लिल्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक तसु होय । तसुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो वछभताल जानिये ॥ यह ताल तितालों है ॥ अथ स्वरूप लिख्येते ऽ। ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यत ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है धांकिट धांकिट ऽधिमिधिमि । किणकुकु याँ ऽ इति वहमताल संपूर्णम् ॥

बहुभ ताल, तितालो ३.

	सगा	तसार.	
समस्या.	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झाली	स) मा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो झालाप मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	ठघु ताल मात्रा । २ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८
व्यम्बद्धे.	धांकिट धांकिट	धिमिधिमि	क्रिणकुकु थों
चचकार.	थेड़े तिततत	क्र	थेई तिततत
- न्ताल	6	*	m

वर्ण ताल (मंठ २३), साततालो ७.

अर्थ मंडको तेईसवो भेद । वर्णतालकी उत्पत्ति लिस्थते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नारचम वरतिवेकों। उधु एक मात्राको द्रुत आधि मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन करि। वांको वर्णताल नाम किनों॥ अथ वर्णतास्त्रको सक्षण सिरुयते॥ जामें दीय समु हीय। समुकी एक मात्रा॥ दीय दुत हीय। दुतकी आधि मात्रा॥ भेर एक समु होय । त्रघुकी एक मात्रा ॥ और दीय दुत हीय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीनादिकमें मुख उपजावे । सी वर्णतात्र

जानिये ॥ स्रोक्किम	यह ताल परमन्त्र कहते	सात ताले है । । है दिगिदां ।१	॥ अथ वर्णतात्त्रको स्वरूप तिरूचते ।। ॰ ॰ । थोंगा । कुकु॰ थरि॰ धिमिथरि । तक॰ । थों वर्ण ताल, साततालो ७.	पत ।। ० ०। ० ० अथ पाठाक्षर सिरुपत ॥ याहिका । तक ०। थों० इति वर्णतास संपूर्णम् ॥ १७.
नाल.	च च कार.	प्रमद्धे.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या.
-	थेड़े	दिगिदां	उच्च ताल मात्रा । १ ।	प्रथम उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
n'	्र	धोंगा	उषु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
m	/tc	16-9 16-9	द्रुत वाल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
∞ ∞	(IC	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	। सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि
تع	थिङ	धिमिथरि	उषु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
w	/to	तक	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सह ० ६ =	। ताल लीक हे सो मात्रा
9.	Ac	थॉ	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सह	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि मात्रोंपे मान

पुनर्भू ताल (मंड २४), साततालो ७.

अथ मंठको चोबीसवो भेद । पुनभूतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य अथ पुनर्भ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दीय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और च्यार अशब्द लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीता दिकमें सुख उपजावे । सो पुनर्भ ताल जानिये ॥ यह ताल चाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। उषु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांकी पुनभू नाम किनों॥ सात नाउं। है ॥ अथ स्वरूप लिल्यते।। ऽ (।।।।) अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं। ताहं। गिडिदां गिडिदां ऽ थरिथरि । कुकुथरि । तकदिथि । गनथों । इति पुनभूताल संपूर्णम् ॥

पुनर्भ ताल, साततालो ७.

ताल.	च नकार,	प्तमुखे.	सक्ष्माणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
<u>~</u>	हेत <u>े</u>	ताहं	छषु ताल मात्रा । १	मथम उपुकी सहनाणी अंक हे ती ताल लीक हे सो मात्रा एक
'n	शुङ्	ताहं	ह्य ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
mi	थेई तिततत	गिडिदां गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो
သံ	ું હે	थरिथरि	हबु ताह मात्रा । ४ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक अशब्दआवापक

षष्टो तालाध्याय-पुनर्मू और मुद्रित ताल आठतालो.

नेहिं	चचकार.	प्तमुद्धे.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	सुमस्या.
ند	्टे इंड	कुक्यरि	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक अशब्दविक्षेपक
w	क्र	तकदिधि	उद्ध ताल मात्रा । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताट टीक ह सो मात्रा एक अशब्दनिष्कामक
9.	र्वेड	गनथों	उषु तात मात्रा - ७	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी तात तीक हे सी मात्रा एक मात्रापें मान अशब्द प्रवेशक

पुनर्भ ताल, साततालो ७.

मुद्रित ताल (मंठ २५), आठतालो ८.

अथ मुदित तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ दीय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर च्यार अशब्द उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजादे । सो मुद्रित ताल जानिये ॥ यह आठ तालो है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ऽ।। ऽ (।।।।) अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकि-अथ मंठको पंचवीसवो भेद । मुद्रित तालकी उत्पत्ति लिस्यते ॥ शिवजींने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य बाद्य नाटचमें वरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको। उपु एक मात्राको हेके। देशी ताह उत्पन्न करि।वांको मुद्रित ताह नाम किनों। कमें परमनु कहते है द्रिमिकिट द्रिमिद्रिमि ऽ दिगिदाँ । दिगिदाँ । घिमिकिकि धिमिषां ऽ ताहं । घाँगा । किणिकिणि । गनघाँ इति मुद्रित ताल संपूर्णम् ॥ मुद्रित तास, आठतास्रो ८.

कराल ताल (मंठ २६), पद्तालो ६.

अय मंठको छवीसवाँ भेद । कराल तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उने मागैतालनमें विचारिके । गीव नृत्य बाद्य नाट्यमें वर्तिवेकों। उषु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको हेके। देशी वाङ उत्पन्न करि। वांको कराह ताछ माना ॥ फेर दीय तमु होय। तमुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ या रीतसोँ मीतादिकमें मुख उप-जाने । सो कराल ताल जानिये ॥ यह ताल छह ताली है ॥ अथ स्वस्त लिल्यते। ऽऽ।। ऽ अथ पाठाक्षर लिल्यते। याहिको लोकिकमें प्रमलु कहते है ताहं। कुकुथरि थरिमिथ ऽ धीकिट भीकिट ऽ ताइं। दिगिदां। घिधिगन थों ऽ नाम किनों ॥ अथ कराउ तालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय गुरु होय । गुरुकी दोष

कराल ताल, पट्तालो ६.

हति कराल ताल संपूर्णम् ॥

नाउ.	नबकार.	फ्रमलु.	सहनाणा अक्षर ताल मात्रा,	समस्या,
·	र्ड इंट	ताहं	हवू ताल मात्रा । १	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना एक
n'	थेई तिततत	कुकृथरि थरिमिथ	गुरु ताल माना ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी बाता दीय विंदी हाथको झालो
m	थेई तिततत	धीं किट धीं किट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हेसो मात्रा दोय विंदी झालो
သ		नाइ.	उषु ताल मात्रा । ४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

संगीतसार.

			करा	कराल ताल, षद्ताला ६.
તાહ.	चचकार,	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
نع	थेड्ड	दिगिदां	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
w	थेई तिततत	धिधिगन थों	मुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विदी हाथको झालो झालों मान

अथ मंठको सताईसवों भेद । श्रीरंग ता उक्त उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीन उन मागैतालनमें विचारिके । गीत (मंड २७), षद्ताला ६. श्रीरंग ताल (

बांको श्रीरंगताल नाम किनों ॥ अथ तक्षण तिरंच्यते ॥ जामें दोय तचु होय । तचुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक तचु होय । तचुकी एक मात्रा ॥ और एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और एक तचु होय । तचकी एक मात्रा॥ या रीतमों गीतादिकों सब उपजावे । सो श्रीरंगताल जानिये ॥ यह ताल छह तालो है ॥ अथ स्वरूप तिरुषते मृत्य बाद्य नाटचर्ने वरतिवेकों। छषु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि । ऽ। डे । अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । ताहं । धिकुकुाध कुकुथरि ऽ तकथों । गिडिदां । ट्युकी एक माना॥ या शिवसों गीवादिकमें मुख उपजावे। सो श्रीरंगताल जानिये॥ यह वाल छह तालो है॥ अथ स्वरूप तकुकुकु 3 गनथों । इति श्रीरंगताल संपूर्णम् ॥

पथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना एक श्रीरंग ताल, पहताली ह लघु ताल मात्रा अक्षर ताल मात्रा. सहनाणी प्सिलु. नाह ब चकार. ST ST नाउ.

श्रीरंग ताल, षट्तालो ६.

ताल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणा अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
نم	युर्	ताहं	उचु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
mi	थेई तिततत	धिकुकृधि कुकुथरि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल अिक हे सो मात्रा दोय विदी झालो
20	्ट इंडे	तकथों	छचु ताल मात्रा । ४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
نو	थेई तिततत थेई थेई	गिडिदां गिडि- दो पकुकुकु	टढ़त ताल मात्रा े ५ ॥८	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
شوبا	्रेड हैं। इस्केट	गनधों	उच्च ताल मात्रा । ६ ।	हे सी ताल लीक हे सी

गंभीर ताल (मंड २८), दोयतालो २.

अय मंठको अठाईसवों भेद्। गंभीर तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नाटचेंने वरितिवेकों। गुरु दीय मात्राको। प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको गंभीर ताल नाम किनों॥ अथ गंभीर तालको लक्षण लिख्यते॥ जामें एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ फेर एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन

संगीतसार.

मात्रा ॥ या रीत सों गीता दिक्षे मुख उपजावे। सो गंभीर ताल जानिये॥ यह ताल दोय तालो है ॥ अथ गंभीर तालको स्वक्र मिक्ष्यते ऽ अथ पाठाक्षर जिल्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है दांदां कुकुथारि ऽ तकि धिकि धिषिगन थों 3 इति गंभीरतात संगुर्णम् ॥

मंभीर ताल, दीयताली २.

\	ताल.	म्बकार.	व्यम्	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.	
	-	थेई तिततत	दांदां कुक्यरि	मुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा दीय विंदी झाली हाथकी	aviian
	نه	थेई तिततन थेई थेई	तिकधिकि धिधिमन थों।(ट्युत ताल मात्रा 3 र ॥६	प्नुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिकमा विंदी झालों सालों मान	-

मिन्न ताल (मंठ २९), नातालो ९.

अपथ भिन्न तालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें तीन द्रुत हीय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फैर अय मंठको गुनतीसवों भेट् । भिन्न तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्रुत आधि मात्राको। उषु एक मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको भिन्न ताल नाम किनों॥ एक द्रुत होय । दुतकी आधि माना ॥ फेर एक उचु होय । उचुकी एक माना ॥ फेर एक दुत होय । दुतकी आधि माना ॥ और दीय उमु होय । उमुकी एक पाना ॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उपजाने । सी भिचताछ जानिये ॥ यह ताल नीतालो

धिमि॰ यां	ं धिमिं कुकु	कुष्टामा कुक	गुर्थाम् । कुकु । घामाधाम् । यार्० यांगा । पक्या । श्राप भिन्न ताल, नीताली ९.	मा त्रांत त्रांत होते ।
ताल.	चचकार,	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	तमस्या,
6	/IC	धिमि	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक
n.	No	र्घां	द्रुत ताल मात्रा उत्हासहनाणी अंक हे ० २ =	सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा आधि
ند.	Att	धिमि	द्रुत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल अ ३ =	सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
»	char	कुकुधिमि	उचु ताल मात्रा तपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल	सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
5.	do	18-9	द्रत ताल मात्रा द्रतकी सहनाणी अंक हे र	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा आधि
w.	्रेड इंड	धिमिधिमि	उचु ताल मात्रा । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
9	סו,	थार	द्रुत ताल मात्रा द्रुतका सहनाणी अंक हे	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा आधि

मिन्न ताल, नोतालो ९.

ताल.	बचकार.	प्रमेळ.	सहनाणी	THE
		?	असर ताल मात्रा.	ינועלוי.
v	भुद्	Pir ju	छबु ताल मात्रा	4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
		=	- v	ंतुका तहनाया अक ह सा वाट टाक ह सा मात्रा एक
0	ग्रेहे	मुख्य <u>े</u>	लबु ताल मात्रा	4 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
	ř	, ;	0.	उपका महमाणा अक ह सा वाल लाक ह सा मात्रा एक

कलिंग ताल (मंठ ३०), तितालो ३.

अथ मंठको तीसवाँ भेद् । कलिंग तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत मृत्य माद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्वत आधि मात्राको। लघु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन करि। वांको कलिंग ताल नाम किनों ॥ अथ करिंग तालको जक्षण लिख्यते ॥ जामें एक दुत होय । द्रतकी आधि माना ॥ दोय लघु होय । त्रघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो कलिंगताल जानिये ॥ यह ताल तितालो है ॥ अथ स्वरूप लिस्यते ० । । अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको टोकिकमें परमदु कहते है जिक व्यस्क्रिक । गनथों । इति करिंगतात्र संपूर्णम् ॥

कांछेंग ताल, तिताछो ३.

समस्या,	पश्य दनकी महत्रमानि क्षा र र र र र र	नया दुषमा पर्वाणा अक ह सा ताल लाक ह सो मात्रा आधि
सहनाणी असर नाल मात्रा.	द्रुत वाल मात्रा	
परमञ्जे.	जिक	
चचकार.	Λ ι σ	
नाल.	_	

पष्टी तालाध्याय-कलिंग और पंचघात ताल पंचताली.

चचकार.	परमञ्ज.	सहनाणी	समस्य),
etie-	थरिकुक	उन्हें वाल मात्रा । २ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
हुन्हु इंटि	गनथों	ह्यू ताल मात्रा । ३	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्राषे मान

पंचषात ताल (मंठ ३१), पंचतालो ५.

अथ मंठको ईकतीमवों मेट् । पंचघात तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके । गीत

नाम किनों ॥ अथ लक्षण लिल्पते ॥ जामें दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फिर नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। उचु एक मात्राको। द्वत आधि मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको पंचघात ताल है ॥ अथ स्वरूप जिल्पते।। ॰ ॰ । अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको जोकिकमें परमजु कहते है ताहं। ताहं। तकि॰ तकि॰ एक उघु होय । उघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीता दिकमें सुख उपजावे । सी पंचघात ताल जानिये ॥ यह ताल पंचताली तकथों । इति पंचघात ताल संपूर्णम् ॥

पैचघात ताल, पंचतालो ५.

ताल.	चनकार.	परमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
		ताहं	न्धु तान मात्रा । १ ।	प्रथम उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी माता एक

نو نو	
पचताल	
न्त्र,	
पचघात	

			, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	-11.1.11
समस्या.	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	त्रुषु ताल मात्रा । २ ।	द्भत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रुत ताल मात्रा • ४ =	छषु ताल मात्रा । ५ ।
प्रमिल्नु.	वाहं	तकि	तिक	तकथों
च्चकार.	गुरु	AC.	(to	गुर्दे
ताल.	a.	m	20	يم

प्रम ताल (मंठ ३२), पंचतालो ".

मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें मुख उपजावे । सा घेम ताल जानिये ॥ यह ताल पंच तालो है ॥ अथ स्वरूप लिल्यते ०। ०। ० अथ मंठको बतीसवों भेद । प्रेम तालकी उत्पत्ति लिल्घते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्वत आधि मात्राको। उषु एक मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको पेम ताल नाष फैर एक द्वत हीय। द्वतकी आधि मात्रा॥ और एक तघु हीय। तघुकी एक मात्रा॥ फेर एक द्वत होय। द्वतकी आधि किनों ॥ अथ पेम तासको सक्षण सिरूपते ॥ जामें एक द्वत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ एक सपु होय । सपुकी एक मात्रा ॥ अच पाठाक्षर जिस्ट्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है तक ॰ थोंगा । दिग ॰ विचिगन । थो ॰ इति प्रेमताल संपूर्णम् ॥

ین
चताला
प्च
E E
A H H

1		,	ľ	
ताल.	चचकार,	परमञ्जु.	सहनाणा अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या.
	Λ υ	तक	द्रुत ताल मात्रा प	पथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
	্ত কু	थोंगा	उच्च ताल मात्रा । २ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
	ΛC	दिग	द्रत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
	थेड़े	धिधिगन	उच्च ताल मात्रा । ४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ टीक हे सा मात्रा एक
	(to	यो	्डत ताल मात्रा प्रमा	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि

सत्यताल (मंठ ३३), पंचतालो ५.

अथ मंठको तेतीसवों भेद। सत्यतालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य नाद्य नाटचमें नरितेकों। त्रेषु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको सत्यताल नाम किनों॥ अथ सत्यतालको त्रक्षण त्रिल्यते॥ जामें एक त्रघु होय। त्रघुकी एक मात्रा॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ एक लघु होय । उमुकी एक मात्रा ॥ और एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक उमु होय । उमुकी एक मात्रा ॥ या रीवसों गीवादिकमें सुख उपजाने । सो सत्यताल जानिये ॥ यह ताल पंचतालो है ॥ अय सत्यतालको स्वरूप लिल्यते । ० । ० । अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहते है ताहं ! तक ॰ घिमिधिमि । शिधि ॰ गनथों॥ इति सत्यताल संपूर्णम् ॥

ताल.	च बकार,	प्रमञ्जे.	सहमाणी अक्षर ताळ मात्रा,	समस्या,
٠÷	थेई	ताहं	त्वे ताल मात्रा । १ ।	म उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सो मात्रा एक
نہ	/IC	पुरु	उत्त ताल मात्रा ० २ = इतक्	द्रतकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा आधि
กร้	ক ক	थिभिधिमि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
20	्रीए	द्गिध	उत्त ताल मात्रा ० % == इतक्	द्रतकी सहनाणी अंक हे सी ताउ टीक हे सी मात्रा आधि
نح	श्रु	गनथों	उच्च ताल मात्रा लच्चक	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल तीक हे सो मात्रा एक

प्रियताल (मंठ ३४), तिताला इ.

अथ मैठको चीतीसबों भेर । प्रियतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। उद्यु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको हेके। देशी ताह उत्पन्न करि।वांको पियताह नाम किनों॥ अथ पियतालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो पियताउ जानिये ॥ यह ताउ तिताओ है ॥ अथ पियतालको स्वरूप लिल्पते । । अय पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है थरिकुकु । थारि तक्यों । इति पिय ताल संपूर्णम् ॥

			प्रिय ताल	प्रिय ताल, तितालो ३.
ताल.	च चकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अस्पर नाल मात्रा.	समस्या,
3.	थेई	थरिकुकु	उचु ताल मात्रा प्रथम	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
'n	Л С	थारि	द्वत ताल मात्रा ० २ = द्वतकी	ो सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा आधि
m	्ट्र इंग्र	तक्थों	उच्च ताल मात्रा । ३ । ल्युकी	ी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

बारीमंठ ताल (मंठ ३५), पट्तालो ६.

किनों ॥ अथ वारींमंठतालको सक्षण जिल्यते ॥ जामें एक तचु होय । तचुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा॥ अथ मंठको पॅतीसवो भेद । बारीमंठतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। उषु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको वारिमंठताल नाम फ़ैर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फैर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीततों गीतादिकमें सुख उपजावे । तो वारीमंठताल जानिये ॥ यह छह तालों है ॥ अथ वारीमंठतालको स्वरूप लिल्पते । ऽ । ऽ । ऽ अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है ताहं । दिगिदां थरियरि ऽ घिधिकिट। गिडिदां गिडिदां ऽ घिमितक । घिधिगन थाँ ऽ। इति वारीमंठतास्त संपूर्णम् ॥

		*	गातसा	₹.			
वारीमंठ ताल, षदतालो ६.	समस्या.	मथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विदी झालो	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा रोय विंदी झालो	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो झालापे मान
वारी	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	छषु ताल मात्रा । १ ।	गुरु वाल मात्रा ६ २ ।८	उच्च ताल मात्रा । ३ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	उषु ताल मात्रा । ५ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।
	प्रमिलु.	ताहं	दिगिदां थारिथरि	धिधिक्ट	गिडियां गिडियां	धिमितक	धिधिगन थों
	चचकार.	थेह	थेई तिवतत	शुह्	थेई तिततत	थेड़	थेई विवतत
	नाल.	٠,	'n	m	200	بع	w

संकीणंताल (मंठ ३६), पर्चास तालो २५.

अथ मंठको छतीसवों भेद । संकीणतालकी उत्पत्ति लिल्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत किनें।। अथ संकीणतालको तक्षण तिरुपते।। जामें एक तम् होय। तमुकी एक मात्रा।। ओर दोय द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा।। फेर एक तमु होय। तमुकी एक मात्रा।। ओर दोय द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा।। फेर एक तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ ओर एक द्रुत होय। द्रुतकी आयि मात्रा॥ एक तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ फेर एक द्रुत होय।
द्रुतकी आधि मात्रा॥ एक तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ आर दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ फेर एक तमु होय।
तमुकी एक मात्रा॥ ओर दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ फेर एक तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ एक द्रुत होय।
द्रुतकी आधि मात्रा॥ एक तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ फेर दोय द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा॥ ओर च्यार अशब्द तकि आधि मात्रा॥ आप च्यार तमित्रालो है॥
अथ संकीणतालको स्वरूप तिस्वर्ते। ००।००।०।००।०।०।००।०।।।।) अध्य पात्राक्षर तिस्वते॥ नुत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों। उचु एक मात्राको। द्रुत आधि मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको संकीणीताल नाम याहिको लोकिकमें परमतु कहते है ताहं। दिगि॰ दिगि ॰ थरिया। धिमि ॰ धिमि ॰ थोंगा। थरि ॰ कुकुधिमि। थरि ॰ गिडिदां तत्त ॰ थै ॰ धीकिट। धिमि ॰ थै ॰ तकतां। किण ॰ किटथिरि। गिडि ॰ गिडि ॰ अशर्ह...थरिकुकु । तकुकुकु । किणदिधि। गनथों इति संकीणताल संपूर्णम् ॥

संकीणे ताळ, पचीसताछो २५.

•	३०१
समस्या,	मथम लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उच्च ताल मात्रा । १ ।
प्रमुखे.	ताहं
चवकार,	थेड्
ताल.	9.

संकीर्ण ताल. पचीसतालो २५.	परमतु. सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	दिगि डुत ताल मात्रा दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दिगि डुत ताल मात्रा हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	थरिथा तमाना तमुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी माना एक	थिमि दुत ताल मात्रा द्वतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	धिमि द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	थोंगा तमुना तमुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	थरि दुत ताल मात्रा दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	कुकुधिमि । ९ । ९ । १ । १ ।
संकाण	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा	ताल मा २	नाउ	न्यू तान्त्र । ४	न म	巨四	ह ने	त वा	ह्य ताह । ९
	परमञ्जु.	दिगि	दिगी	थरिथा	धिमि	धिमि	थोंगा	थार	कुकृधिम
	चवकार	/hc	/IC	हुड़ इंड	ħC	्रीए	(ST	/IC	हुं हैं -
	नाल.	a ⁱ	m	20	نو	wi	9.	v	من

पष्टी तालाध्याय-संकीर्ण ताल पचीसताली.

संकीण ताल, पचीसतालो २५.	समस्या.	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो माना आधि	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी माना आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	द्रुत ताल मात्रा ०१० ==	हमु ताल मात्रा । ११	द्रुत ताल मात्रा ० १२ ==	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	ठघु ताल मात्रा । १४ ।	द्वत ताल मात्रा ॰ १५ =	द्रुत ताल मात्रा ० १६ =	उचु ताल मात्रा । १७ ।
	प्तमुख्नु.	यरि	गिडिदां	तत	এ	धीिकट	धिमि	ক্র	तकतां
	च चकार.	AU	্ব নি	(U	/tC	(37	/IC	머니	কৈ
	नाल.	0	33.	9 2 .	93.	3°	ج م	wi	9

			संकीर्ण ताल, पचीसतालो २५.	
ताल.	चवकार.	प्रमिछे.	सहनाणी । अक्षर ताल मात्रा.	
3.	AC	िक्र	द्रुत ताल मात्रा इतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	
98.	थिङ्	िकटथरि	हु वाल मात्रा त्रमुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक । १९ ।	
٥,	∕IC	मिडि	हुत ताल मात्रा उर्० = हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आवि	
29.	Λυ	गिडि	द्रुत ताल मात्रा ० २१ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	
જે જે	थहे	थरिकुकु	समुताल मात्रा ट्युकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक । २२ । —। अशब्द्आवाषकदाहिणो हाथ बांडै तफ	
ار دو.	थिङ	के के के के के के प्राप्त	लीक हे सं हाथ दाहि	
30 6'	थिङ	किणाद्दिधि	तिक	
۶ ⁻	्ट इंड	गनथों	उषु ताल मात्रा अधुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक । २५ । अशब्द प्रवेशक दाहिणी हाथ नीचानें	

पष्टो तालाध्याय-रूपक और झंपक ताल तितालो.

सक्तप जिल्पते । अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहीको होकिकमें परमतु कहते है थिथि । तक्यों। इति रूपक ताज संपूर्णम् ॥ गीत मृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। द्वत आधि मात्राको। उषु एक मात्राको छेके। देशी ताछ उत्पन्न किरि। वांको रूपक वाउ नाम किनों ॥ अथ रूपक ताउको त्यसम जिल्पते ॥ जामे एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ एक उपु होय । त्यपुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उगजावे । सो रूपक ताल जानिये ॥ यह ताल दोय तालो है ॥ अथ रूपक तालको अय सडादिकनको तींसरो भेद। रूपक तालकी उत्पत्ति लिस्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिक

रूपक ताल (सडादिक ३), दोय तालो २.

			-
रूपक वाल, दृष्यताला द्,	मथम दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा आधि	उपुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा एक	
सहनार्णा सहनार्णा अक्षर ताल मात्रा.	द्भत ताल मात्रा	त्रमु ताल मात्रा । २ ।	•
प्रमञ्जु.	धिधि	तकथाँ	
चयकार.	/ IC	क हैं	
नाल.		n'	

झंपक ताल (सडादिक ४), तितालो इ.

क्रि। वांको संपक्त ताछ नाम किनो ॥ अथ संपक्त तालको लक्षण जिल्पते ॥ जामे एक द्वत होय । द्वतकी आधि मात्रा ॥ गीत मृत्य वाद्य नाटचर्ने वरतिवेक्तों। द्वा आधि मात्राको। द्विराम पीण मात्राको। उषु एक मात्राको छेके। देशी तात्र उत्पन्न अय सुडादिकनको चोथो भेद । झंपक तालकी उत्पत्ति लिल्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके

808

प्रक दिवास होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ एक उनु होय । उनुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों मीताहिकमें सुख उपजाये । सी झपक वाल जानिये। यह वाल तितालों है ॥ अय संक वालको स्वस्त लिल्पते ० ०। अय पाठाक्षर लिल्पते। याहिको लिकिकमें परमन्न कहते है धिधि धलां ठ तक्यों। इति संगक ताल संपूर्णम्।।

त्रिपुटताल (मुडादिक ५), तितालो ३.

अथ सुडादिकनको पांचवो भेद् । त्रिपुट तालकी उत्पत्ति लिल्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत मृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों। द्विराम पींण मात्राको। द्रुत आधि मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको त्रिपुट ताल नाम किनों ॥ अथ त्रिप्ट तालको लक्षण लिरूपते ॥ जामें एक दिविराम होष । दिविरामकी पोंण मात्रा ॥ दोय द्रुत होय । द्रुतकी अप्रधि मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकमें मुख उपत्रावे । सी त्रिपुर ताल जानिये ॥ यह बाल तिताली है ॥ अथ स्वरूप लिख्यते ० ० अथ पाठाक्षर जिल्पते। याहिको लोकिकमें परमनु कहते हैं तकुकु र थिमि॰ थो॰ इति त्रिपुट ताल संपूर्णम् ॥

पष्ठो तालाध्याय-त्रिपुट और आठताली चोतालो.

ताल.	च चक्रा.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
	पंप	6°	द्गवि. ताल मात्रा ১ १ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
•	ΛC	धिमि	इत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
m	/tc	क्ष	द्रुत ताल मात्रा	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि

त्रिपुट ताल, तितालो ३.

आउताली ताल (सडादिक ६), चातालो ४.

बाल नाम किनों ॥ अथ आठताली तालको लक्षण लिक्यते ॥ जाम एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ दोय द्रुत होय। द्रुतकी ति नृत्य वाद्य मारचर्मे वरितेको । त्यु एक मात्राको । दुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको आठताली आधि मात्रा ॥ फेर एक त्रघु होय । त्रघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उपजावे । सो आठतात्ती तात्र जानिये ॥ ब्रह तात्र चोतात्रों है ॥ अथ स्वरूप लिल्पते । ००। अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहते है ताहं । अथ सुडादिकनको छटो भेद । आठताली तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचासिके बिमि॰ धिमि॰ तक्यों। इति आठताती तात संपूर्णम्।।

ताल.	च चकार,	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताह मात्रा.	हनाणी समस्या.
÷	द्भा	वाहं	उषु ताल मात्रा	मथम उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी माता एक
نه	(lo	बिमि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा आधि
m	ΛC	धिमि	द्भुत ताल मात्रा ० ३ ==	द्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
20	शह	तकथाँ	उच्च ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

एकताली ताल (मूडादिक ७), एकताली. अथ सूडादिकनको सातवो भेट्। एकताली तालकी उत्पत्ति लिल्यते॥शिवनीं उन मार्गतालनमें विचारिके।गीव नृत्य बाद्य नारचमें बर्तिवेकों। तयु एक मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको एकताली नाम किनों॥ अथ एकताली सालको स्वरूप जिल्पते। अथ पाठाक्षर जिल्यते। याहिको लाकिकने परमलु कहने है गनथों। इति एकताली ताल संपूर्णम्॥

एकताली ताल. एकताली १.	सुमस्या.	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी तान तीक हे सी मात्रा एक
एकताल्	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	उषु ताल मात्रा । ७ ।
	प्रमिद्धु.	गनथों
	च चकः। (,	्राष्ट्र । जिल्ला
,-	ताल.	

मात्रा ॥ तीन उषु होय । छबुकी एक

मादिरिष्फ ताल, चोवीस तालो २४.

रीतसों आठन गणके । आठ रिप्फतास कहे हैं ॥ तहां पथम मादिरिंग्फ तास । ताक़ी उत्तिन सिरूपते ॥ शिवजीने उन मार्ग-गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और तीन उच्च होय । उच्चकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दीय जानिये। गुरुकी दीय मात्रा। १।दुसरी गण नगण हो।।। सो तीन उषुको जानिये। उषुकी एक मात्रा।२। और तीसरी भगन है ६।। जानिये। उचुकी एक मात्रा। गुरुकी दीय मात्रा। ४। पांचवी स्माण है।।ऽ सी दीय उचु एक गुरुको जानिये। उचुकी एक मात्रा । गुरुकी दीय मात्रा। ५ । छटी रगण है ऽ। ऽ सी एक गुरुका एक हाक्रों कर एक गुरुको जानिये। गुरुकी दीय मात्रा। लघुकी नाछ होत है।। जाहां रिप्फतासकी आदिमें मगण होय। सी मादिरिष्फ जानिये।। आर जाहां नगण आदिमें होय। सी नादि-रिष्फ जानिये ॥ और जाहां भगण पहलो होय । सो भादिरिष्फ जानिये ॥ और जाहां यगण पथम होय । सो यादिरिष्फ जानिये ॥ ओर जाहां सुगण आदिमें होय । सी सादिरिय्क जानिये ॥ ओर जाहां रगण आदिनें होय। सी रादिरिय्क जानिये॥ अमर जाहां जनण आदिमें होय। सी जादिरिष्क जानिये॥ ओर जाहां तगण आदिमें होय। सी नादिरिष्क जानिये॥ ऐसे हिके । देशी ताड उत्पन्न करि । बांको रिप्फताल नाम किनों ॥ अथ मादिरिप्फ तालको छक्षण छिल्पते ॥ जानें वीन सी एक गुरु दीय त्रवुको जानिये । गुरुकी दीय मात्रा । त्रवुकी एक मात्रा । ३ । चीथी यगण है। ऽऽसी एक त्रवु दीय गुरुकी आउबो तगण है ऽऽ। सो दोय गुरु एक उचुको जानिये। गुरुकी दोय मात्रा। उचुकी एक मात्रा। ८। इन आठ गणनको रिष्फ वालनमें विचारिके। गीत मृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों। चंचत्पुटादिक पांची वालनमेंसों। गुरु दोय मात्राको। लघु एक पात्राको अय मगणआदि आठगण पिंगलशास्त्रमें प्रसिद्ध है। तिनके नाम लिस्यते॥ तहां पयम मगणतो ऽ ऽ वीन गुरुको एक मात्रा। ६ ।सातवो जगण है। ऽ। सी एक उचुको एक गुरुको फेर एक उचुको है। उचुकी एक मात्रा। गुरुकी दीय मात्रा। ७। मात्रा ॥ और दोष गुरु होय । गुरुकी दोय पाता ॥ फैर दीय उच्च होय

सी मादिरिक्त वाल जानिये ॥ यह ताल चोईस तालो है ॥ अथ मादिरिक्क तालको स्वरूप लिल्यते ऽऽऽ।।। ऽ।।।ऽऽ।। ६ ऽ।ऽ।ऽ।ऽऽ। अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमजु कहते है जिकिण जिक्ण ऽ थिथितां थिथितां ऽ थांकिड दीय मात्रा॥ ओर एक छषु होय। छषुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ ओर एक छषु होय। छषुकी एक मात्रा ॥ दीय गुरु हीय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक उच्च हीय । उच्चकी एक मात्रा ॥ या रीतसों मीतादिकमें सुख उपजाबे थांकिट ऽ थरिथरि । वाहं । थोंगा । तकतां तकतां उ ताथे । ततथे । ताहं । धिमितत धिमितत ऽ गिडिदां गिडिदां ऽ थरिकिट । थरिकिट मिक्ट थांक्ट ऽ थरियां दिगिदिगि ऽ तकुकुकु । दिगिदां दिगिदां ऽ किटाकेट । थिषिकिट थीकिट ऽ थिकथिक । झिनकिट झिनांग उनुकी एक मात्रा ॥ दीय गुरु हीय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक उन्न हीय। उन्न की एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु हीय। धिधितां धिधितां ऽ गनथों । इति मादिरिष्फ ताल संपूर्णम् ॥

माहिरिष्फ ताछ, चोवीसताछो २४.

Alla	चचक ।	प्रमुख	सहनाजी	HHE
		20	अक्षर ताल मात्रा.	
	4	रिकिण	गुरु ताल मार्ग	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सो मात्रा दीय
,: .	यह विवयत	िंकिण	8 9 18	निंही हाथको झालो
	4	धिधितां	गुरु ताल मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय
÷	रह विवयव	धिधितां	9 2 5	विंदी हाथको झालो
c	13.4 (January	थांकिट	गुरु ताल मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा दीय
÷	74 10000	थांकिट	5	विंदी हाथको झाले

			मासि	मा सिरफ्त ताल, चोबीसतालो २४.
ताल.	चचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर नाज मात्रा.	समस्या,
ဆဲ	্বুর গুদ্ধ	थरिथरि	उच्न ताल मात्रा । ४ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी तात ठीक हे सी मात्रा एक
يع	(છ) વૈદ્ય	ताहं	त्रमु तात्र मात्रा । ५ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल खीक हे सी मात्रा एक
w	্ড ভ	थॉगा	उपु ताल मात्रा । ६ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक
9.	थेई विततत	तकतां तकतां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको सालो
ึง	कुं हैं	वाज	उषु ताल मात्रा । ८ ।	टचुकी सहनाणी अंक हे सी ताट टीक हे सी मात्रा एक
نه	G G	तत्थे	उषु ताल मात्रा । ९ ।	ट्यकी सहनाणी अंक हे सी ताट टीक हे सी मात्रा एक
90.	•ध्र ख	ताङ्	त्रपु ताल माता । १० ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक
ć	थेई तिववत	धिभितत धिमितत	गुरु ताल माता ऽ ११ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउँ ठीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झाउँ।

	ſ		T	1	T	,	1	T	:- :-·· _
माहिरिष्फ ताळ, चोवीसताळो २४	तमस्या.	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो	उचुकी सहनाणी अंक हे सी वाउ ठीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो दाल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा दींय विंदी हाथको झालो	लघुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा एक
माहि	सहनाणी अश्वर नाळ मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।	छषु ताल मात्रा । १३ ।	छबु ताल मात्रा । १४ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।८	हमु ताल मात्रा । १७ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।	उषु ताल मात्रा । १९ ।
	प्रमुखे.	गिडिदां गिडिदां	थारिकिट	थरिक्ट	तांकिट धांकिट	थारेयां दिमिदिनि	কণ কণ কণ	दिर्गिद्रां दिगिद्रां	िकटिकिट
	ं चचकार,	थेई तिततत	हुन हैं। इस्केट	शक्	थेई तिततत	थेई निततत	शहे	थेई नितवत	गुड़
	माछ.	98.	9.3	38.	3.	w	9.	36.	8.

षष्ठी तालाध्याय-मादिरिप्फ और नादिरिप्फ ताल चौईसतालो. ३१३

	चचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
100	थेई तिततत	धिधिक्ट धीक्टि	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
i	ी हैं	धिकधिक	उच्च ताल मात्रा । २१ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
1	थेई तिततत	झिनकिट झिनांग	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
	थेई तिततत	धिधितां धिधितां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
	थेई	गनथों	उच्च ताल मात्रा । २४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक

नादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

अथ दूसरो। नादिरिष्फ तालकी उत्पन्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरितिकें। तमु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको नादिरिष्फ ताल नाम किनों॥ अथ नादिरिष्फ तालको तक्षण लिख्यते॥ जामे तीन तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ ओर च्यार गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ भिर दीम तमु होय। तमुकी दीय मात्रा॥ फेर दीम तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ फेर दीम तमु होय। तमुकी एक

मादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

मात्रा ॥ दीय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक त्व ब्रु होय । त्वषुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ । ऽ। ऽ। अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लोकिकमं परमलु कहते है ताहं। थिमिथिमि । थरिथां। धुमिकिट धुमिकिट ऽ वकथां थरियां ड तामिडि धीमिडि ड तांधिमि तांतां ड कुकुतां । थोंगा । थोंकिट । किणणक तलकिण ड तातक थिमितां ड एक लघु हीय। लघुकी एक मात्रा॥ आर एक गुरु हीय। गुरुकी दीय मात्रा॥ फेर एक लघु हीय लघुकी एक मात्रा॥ दीय गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजाव । सो नादिरिष्फ वाल जानिये ॥ यह ताल चै ईस ताले है ॥ अथ ना दिरिष्फ ताल को स्वरूप लिल्यते ।।।ऽऽऽऽ।।ऽऽ।।ऽऽ।ऽ नातक । नातक । संसनक निमितां ऽ नाकिर नाकिर ऽ नाथै । थांतक नतथै ऽ नाहं । किंटिधिमि थोंगा ऽ कुकुथों । घिघिमिडि दांदां ऽ थैया थोंथों ऽ तांकुकु । इति नादिरिष्फ तास संपूर्णम् ॥

नाड़िरिष्फ तालै, चौईसतालो २४.

ı——		1	1
समस्याः	प्रथम तपुकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सो मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	ल्यु ताल मात्रा	ल्खु ताल मात्रा । २	उपु ताल मात्रा । ३ ।
परमलु.	ताहं	धिमिथिमि	थरिथां
चचकार.	शहर	थेड्ड	थेई
ताल.	9.	a*	m

पष्टो तालाध्याय-नादिरिष्फ ताल चौईसतालो.

नादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.	समस्या.	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झाले।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ टीक हे सी मात्रा दोय विदी हाथको झाटो	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दोय विदी हाथको झालो
नादिरिष	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।८	छचु ताल मात्रा । ८ ।	उपु ताल मात्रा । १ ।	छचु ताल मात्रा । १० ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।८
	प्सिलु.	धुमिकिट धुमिकिट	तक्थां थरिथां	तागिडि धीगिडि	तांथिभि तांतां	कुकुप ्	थॉगा	थांकिट	किणणक तंत्रिकण
	चचकार.	थेई तिततत	थेई निततत	थेई तिततत	थेई तिततत	थ्र	्डे जि	र्ड	थई तिततत
	ताल.	%	g-i	w	9`	v.	من	0	999

नाहिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

			नाविरिक्त ताल, वाश्तताला रह.	200
ताल.	क्रिकार.	परमञ्जु.	सहनाणी अक्षर नाळ मात्रा.	समस्या.
92.	थेई तिततत	तातक धिमितां	गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी ऽ १२ ।८	ो अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
<u>w</u>	कु	तातक	उषु ताल मात्रा । १३ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक
30 67	્ક ફક	तातक	उपु ताल मात्रा । १४ ।	सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक
يخ	थेई तिततत	झंझनक धिमितां	गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी ऽ १५ ।১	ी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
w	थेई विवतत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी ऽ १६ ।८	ो अंक हे सो वाट टीक हे सो पाता दीय विदी हाथको झाटो
9	्क (क	नाथै	उचु ताल मात्रा । १७ ।	सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
3c.	थेई तिततत	थांतक ततथे	गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी ऽ १८ ।১	ो अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
9,	্ ড ত্ৰ	ताहं	उषु ताल मात्रा । १९ । तुष्का सहनाण	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक

षष्ठो तालाघ्याय-नादिरिप्फ और भादिरिप्फ ताल चौईसतालो. ३१७

ताल.	चचकार.	प्रमिछ.	सहनाणी अध्यर ताल मात्रा.	समस्या.
90	थेई तिततत	किटिधिमि थॉगा	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
29	थह	कुक्धाँ	उच्च ताल मात्रा । २१ ।	अंक हे सो ताल टीक हे सो
8	थेई तिततत	्घिथिगिडि दांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	अंक हे सो ताल लीक विदी हाथको झालो
m'	थेई तिततत	धैथा योंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विदी हाथको झालो
30 n'	्ट्र नेक	म् इन् इन्	छचु ताल मात्रा । २४ ।	त्उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक

ना दिरिष्फ ताल, चौईसताली २४.

भाड़िरिष्फ ताल, चौईमतालो २४.

किनों ॥ अथ भादिरिष्फ तांटको स्थण डिल्यते ॥ जॉमें एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और दीय सघु होय । सघुकी पुक मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और स्यार सघु होय । सघुकी एक मात्रा ॥ दीय गुरु होय । गुरुकी अथ तीसरो । भादिरिष्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य चाद्य नाटचमें वरतिवेकों। गुरु दोय मात्राको। उषु एक मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको भादिरिष्फ ताल नाम

दोय मात्रा ॥ फेर दोय उम्र होय। उमुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक उम्र होय। उम्रकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ जेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी रिष्फ वास्त्रको स्वरूप सिरुच्यते ऽ।। ऽऽ।।।।ऽऽ।।ऽऽ।ऽ।ऽ। अथ पाठाक्षर सिरुच्यते ॥ याहिको सोकिकमें चंकण । कुकुणक ठिंठी ऽ धातक । धिमिथों गांधिमि ऽ किरकट । थिमिथिमि थैया ऽ घिधिषिमि कुद्धां ऽ थरिथों । इति भादि-थारिथां । कुंथरि । कुकुदां । किटिकिटि ताहं ऽ ताहं किटिकिटि ऽ थॉकिट । घिषिथां । तैकिमि थरिदिषि ऽ धिकुणाधि कुणधा ऽ ट्यपुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो भादिरिष्फ ताल जानिये ॥ यह ताल चोईसतालो है ॥ अथ भादि-बरम छु कहत है दांधिम दांधिम ऽ दांथरि । कुकुथरि । ततथै धिमिथिमि ऽ दिगिदां दिगिदां ऽ धुमिगिडि धुमिगिडि ऽ थरिथां दीय मात्रा ॥ फेर एक त्व होय । त्वक्की एक मात्रा ॥ और दीय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फेर एक तुषु होय

माहिरिक्त ताल, चौईसतालो २४.

रिष्फ ताल संपूर्णम् ॥

समस्या,	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक
सहनाणी। अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	त्रषु ताल मात्रा । २ ।	त्रषु ताल मात्रा । ३ ।
प्सिलु.	दांधिमि इंधिमि	दांथरि	कुकुथरि
च चकार,	थेई तिततत	्रहे इंट	शहे
गाउँ	•	'n	m

30,
चौड्सताला
ताळ, चौंड्र
भादिरू

	डीक हे सो मात्रा दोय ।टो	ह सी मात्रा दीय	. सी मात्रा दीय	हे सो मात्रा एक	लीक हे सो मात्रा एक	हे सो मात्रा एक	हे सी मात्रा एक	सी मात्रा दोय
समस्या.	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो तास सीक विंदी हाथको झासो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे विंदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताउँ ठीक हे विंदी हाथको झाछो	उचुकी सहनाणी अंक हे सो तात ठीक हे सो	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल टीक हे	अंक हे सो ताल टीक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वास सीक हे सी विंदी हाथको झासो
पहुराया अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	हवू ताल मात्रा । ७ ।	छषु ताल मात्रा । ८ ।	लघु ताल मात्रा । ९ ।	ठषु ताल माता । १० ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।
परमञ्जे.	ततथै धिमिधिमि	दिगिदां दिगिदां	धुमिगिडि धुमिगिडि	यरिथां	थरिथां	कुंथारि	कुकुद्	किटिकिटि ताहँ
चचकार.	थेई तिततत	थेई तिततत	थेई विततत	शह	्ड इत्	थेई	थि	थेई तितवत
नाल.	20	ند	w	9.	v	o:	0	99.

संगीतसा .

			भाड़िरिष्फ ताळ,	ताल, चौईसतालो २४.
ताल.	चचकार.	प्रमञ्ज.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
98.	थेई तिततत	ताहं किरि किरि	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे तो ताल लीक हे तो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
93.	थह	थोंकिट	उषु ताल मात्रा । १३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक
98 90	थेहं	धिधिथां	उषु ताल माता । १४ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सा मात्रा एक
ئې ا	थेई तिततत	तंकिंगि धारीदृधि	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउँ ठीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झाछो
w.	थेई तिततत	धिकुषाध कुणधा	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो
96.	थेड्	तंकण	त्रमु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
36.	थेई तिततत	कुकुणक रिंठी	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
0,	्त <u>्</u> र	भातक	छबु ताल मात्रा । १९	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

पट्टो तालाष्याय-भादिरिप्फ और यादिरिप्फ ताल चौईसतालो. ३२१

ताल.	चचकार.	प्रमिछे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
°.	थेई तिततत	धिमिथों गांधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे से। ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
23.	थेड्	क्रिकट	त्रषु ताल मात्रा । २१ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
5.	थेई तिततत	थिमिधिमि थैथा	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी नाल खीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको साला
ar ar	थेई तिततत	धिभिधिमि कुद्यां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झाला
30 0	Tes To	थरिथों	त्रमु ताल माता । २४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा एक

यांदिरिक्त ताल, चौईसतालो २४.

नाट्यमं वरितवेकों। छषु एक मात्राको । गुरु दीय मात्राको छेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको यादिरिष्फ ताल नाम किनों ॥ अथ चाथो । यादिरिष्फ तालकी उत्पत्ति लिक्ष्यते ॥ शिवजीनें उन मागैतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य उक्षण जिल्यते ॥ जामें एक उचु होय । दोय गुरु होय । उचुकी एक मात्रा । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओर कीन गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥तीन उचु होय। उचुकी एक मात्रा॥एक गुरु होय। दोय उचु होय। गुरुकी दीय मात्रा। अथ यादिरिक तालको

भादिरिष्फ ताल, चैहिसताली २४.

खबुकी एक मात्रा ॥ और दीय तचु हीय । एक गुरु हीय । तचुकी एक मात्रा । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक गुरु होय। एक तचु होय। एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा। उचुकी एक मात्रा॥ एक उचु होय। एक गुरु होय। और एक उचु होय। उचुकी एक माजा। गुरुकी दीय माजा॥ दीय गुरु होय। एक लघु हीय। गुरुकी दीय माजा। लघुकी एक माजा ॥ या रीतसों भीतादिकमें । ऽ।।।।ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽऽ। अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको जोकिकमें परमजु कहते है दांकिट। किडिदां दांकिट ऽधीमिडि सु**ल** उपजावे। सो यादिरिष्फ ताळ जानिये॥ यह ताळ चौईंस तालों है॥ अथ यादिरिष्फ तालको स्वरूप लिल्यते। ऽऽऽऽ।। मिडिगिडि ऽ घिधितक दांदां ऽ थरिकिट किटदां ऽ धिमिधिमि थैथा ऽ गांधिमि । घिमितां । तातक । धातक थिमिथां ऽ कुकुथरि

यादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

कुकुतां। तांतां। कुकुथारे। तांकिट धिमितां ऽ धिकधिक कुर्यां ऽ थोंकिट। थरियां थोंकिट ऽ नगधिम। थोंकिट थरिकिट

दांदां । थरिकट थरिथां ऽ तत्था थांकिट ऽ तक्थों । इति यादिरिप्फ ताल संपूर्णम् ॥

ताल.	चचकार.	प्रमञ्ज,	सहनाणी अक्षर् ताल मात्रा.	समस्या,
6	e fine	दांकिट	ट्यु ताल मात्रा । १ ।	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
ئم	थेई विवतत	किडिदां दांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
en"	थेई तिवतत	भागिह गिहिगिह	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो

षष्ठो तालाध्याय-यादिरिष्फ ताल चौईसतालो. ३२३

		1		-	1				1
प्फ ताल, चाइसताला २४.	समस्या,	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सा मात्रा दोय विदी हाथको झालो	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
यादिरिक	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।८	ठचु ताल मात्रा । ७ ।	छषु ताल मात्रा । ८ ।	छषु ताल मांत्रा । ९ ।	मुरु ताल मात्रा ऽ १० ।	ट्यु ताट मात्रा । ११ ।
	प्रमुखे.	भिधितक दांदां	थरिकट किटवां	धिमिधिमि थैथा	गांधिमि	धिमितां	तातक	धातक धिमिथों	कुकथरि
	चचकार.	थेई तिततत	थेई तिततत	थेई तिततत	थेई	প্র	थेड़े	थेई तिततत	der
	वास्ट्र.	သ	نح	wi	9.	v	منه	0	99.

याहिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

			। सहनाणा	Tal.
ताल.	चचकार.	प्तमुखे.	अक्षर ताल मात्रा.	संमध्या.
n	(જ)	कुक्त	स्युतास मात्रा । १२ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक
m	क्ष	वांवां	उषु ताल मात्रा । १३	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
30	इंत	कुक्धरि	लघु ताल मात्रा । १४ [°] ।	सो मात्रा
3.	थेई तिततत	तांकिट धिमितां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो
w	थेई तिततत	धिकाधिक कृद्धां	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो पाता दोय विंदी हाथको झाउो
9.	थेई	थोंकिट	त्रमु तात्र मात्रा । १७ ।	त्उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
2.	थेई तिववत	थरियां थोंकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
نه	e ja	नगधिम	ह्यु ताल मात्रा । १९ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक

षष्ठो तालाध्याय-यादि॰ और सादिरिण्फ ताल चौईसतालो. ३२५

नाल.	बंबकार,	प्रमुखे.	सहनाणी अस्पर ताल मात्रा.	क समस्या,
20.	थेई निततत	थॉकिट थरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी माना दीय विंदी हाथको झालो
23.	्म रहे	वृंदां	छचु ताल मात्रा । २१ ।	
8	थेई तिततत	थरिकेट थरिथां	मुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झाला
53.	थेई तिततत	तत्था थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको झालो
30 0	थेइ	तकथों	त्रमु ताल मात्रा । २४ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

यादिरिष्फ ताल, चौईसताली रथ

सादिरिष्फ ताल, चौईमतालो २४.

अथ पांचवा । सादिरिष्क तालकी उत्पिति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्ग तालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य अथ सादिरिष्फ तालको लक्षण लिख्यते ॥ जामें दीय लघु हीय । लघुकी एक मात्रा ॥ च्यार गुरु हीय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ तीन लघु हीय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु हीय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ तीन लघु हीय । लघुकी एक मात्रा ॥ और तीन नाटचमें वरतिवेकों। उषु एक मात्राको। गुरु दोय मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको सादिरिष्फ ताल नाम किनों।

गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ एक ततु होय। ततुकी एक मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ और एक ततु होय । उनुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय भात्रा ॥ और एक उनु होय । उनुकी एक मात्रा ॥ फेर दीय गुरु अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको लाकिकमे परमजु कहते है जगजग । किणकिण । दिगिदिगि ताहं ऽ थरिथां थोंगा ऽ थांथिर बांवां ऽ किटदां किटदां ऽ चिमिधिमि । तातक । तत्तिक । किटिकट थोंगा ऽ थोंगा । तिककिक । थारिथां । थरिथारि जानिये ॥ यह वाख चौईस वालो है ॥ अथ सादिरिक्क वालको स्वरूप लिल्यते ।।ऽऽऽऽ।।।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽ।ऽ।ऽऽ। थैथै ऽ कुकुथरि तकुकुकु ऽ दांथरि दिगिदिगि ऽ थिधिकिधि । ताहं ताहं ऽ थिमिथां । दिगिदिगि थत्था ऽ दांदां । कुकुदां कुकुदां ऽ ड़ीय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और एक उघु हीय । उघुकी एक मात्रा ॥ था रीतसों गीताहिकमें सुख उपजावे । सो सादिरिष्फ किणनक कुकुदां ऽ ताथों । इति सादिरिय्फ तास संपूर्णम् ॥

सादिरिक्त ताल, चौईसतालो २४.

चनकार	प्रमञ्	सहनाणा	
	3	अक्षर ताल मात्रा.	מחלמן.
(9) clas	ज्ञाना	उच्च ताल मात्रा । १ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक
(S)	िकणाकण	त्रं ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक
थड़े तितत	ति दिगिद्गि ताह	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	, गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झाउो

	भ्रम्हे नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त्व क्षेत्रं नित्तत्त	यारेथां थोंगा थांथारे तांतां किटदां विमिधिम तातक ततिकेट स्रोंगा	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा ऽ % ।७ गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।। ऽ ६ ।। लघु ताल मात्रा । ७ । लघु ताल मात्रा । ८ । लघु ताल मात्रा । ८ । लघु ताल मात्रा । ८ । उ । । ८ ।	सांबुर्ग एक ताळ, चोइसताला २८. मात्रा. गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय ।८ मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय मात्रा उद्यकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रा उद्यकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय मात्रा नुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय मात्रा नुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय मात्रा नुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय मात्रा नुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय मात्रा नुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय
99.	थेई	थॉगा	#	सो वाल

38.
ई सतालो
ताल, ची
साबिरिक्त

	-:	:	1	1			1	
समस्या.	उपुकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथकी झाली	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको सालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथकाे झालो	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	त्रषु ताल मात्रा । १२ ।	ल्यु ताल माता । १३ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरु ताल माता ऽ १६ ।	उम्रु ताल मात्रा । १७ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ १८	उच्च ताल मात्रा । १९ ।
प्सिलु.	तिककिक	थरिथां	थरिथारि थैथै	कुक्थार तकुकुक	दांथरि इिमोइनि	धिधिकिधि	ताहँ ताहं	बिमिथां
ष्वकार.	्र हुत	शह	थेई तितवत	थेई तिवतत	थेई विततत	्ड इंड	थेई तिततत	क्रं
नाल.	32.	87	20	3°	wi	30	36.	9.

पष्ठो तालाध्याय-सादिरिष्फ और रादिरिष्फ ताल चौईस तालो. ३२९

¥1	नाल.	चचकार.	परमळु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
· _!	30.	थेई तिततत	दिगिद्गि थत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सी मात्रा दोय विदी हाथको झाछो
and the second s	29.	थेई	यांदां	ठयु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
	3.	थेई तिततत	कुक्दां कुक्दां कुक्दां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो
		थेई तिततत	किणनक कुकुदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झालें।
	o. 00	्छ इंड	नाथों	छषु ताल मात्रा । २४ ।	उघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

सादिरिष्फ ताल, चौईसतालो २४.

रादिरिष्फ ताल, चौईम तालो २४.

अथ छटो। रादिरिष्फ तालकी उत्पन्ति लिख्यते॥ शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें बरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको। उचु एक मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको राहिरिष्फ ताल नाम किनों॥ अथ राहि-रिष्फ तालको लक्षण लिल्यते ॥ जॉर्म एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ फेर् चार गुरू होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥

एक गुरु होये। गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक ततु होय। तदुकी एक मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक तपु होय। तदुकी एक मात्रा ॥ फेर दीय गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ और एक तदु होय। तपुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों अपैर तीन तम होय। तमुकी एक मात्रा॥और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥केर दोय तमु होय। तमुकी एक मात्रा॥ मीतादिकमें मुख उपजावे। सो रादिरिय्फ ताल जानिये ॥ अथ रादिरिय्फ तालको स्वरूप लिख्यते ऽ।ऽऽऽऽ।।।ऽ।।।ऽ ।।ऽ।ऽ।ऽऽ। अथ पाठाक्षर सिल्पते ॥ याहिको त्योकिकमें परमतु कहते हैं दांकिट दांकिट ऽ किडिदां। धिमिधिमि थरिथां भीकिट घिधिकिट ऽ गिडिदां गिडिदां ऽ दांदां थरिकिट ऽ ताहं। ताहं। थरितत। ततथिर ताहंऽ धिभिधिमि। हिरिगन दिगिद्रं तांतक ऽतकांकेण। धिधितक थाकिण ऽतकांकेण दांदां थारिथां ऽ घिकिटिधि किटदां ऽ तक्यों । इति रादिरिष्फ ताल तक्यों । भीकिड भीगिड ऽ गिडिगिडि तकदिगि ऽ धीतां । धीतां ।

राष्ट्रिरिक्त ताल, चौईस नालो २४.

नाल.	चचकार.	प्रमिल्नु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
-	थेई तिततत	दांकिट दांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
n'	কে	किडिदां	उषु ताल मात्रा । २ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक
w	थेई तिततत	धिमिधिमि थांरथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी झाली
30	थेई तिततत	धीकिट धिधिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो

30
ताले
चौईस
ताल,
۶
रादिरि

राज्यस्य तालः चारतः तलः	परमेलु. अक्षर ताल मात्रा.	गिडिंदां गुरु ताल मात्रा गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय गिडिंदां ऽ ५ ।८	दांदां थिरिकट जुरु ताल मात्रा जुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दाय ऽ ६ ।८	ताहं लघु ताल मात्रा लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	ताहं नधुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक	थरितत हु । उ । उ । उ ।	ततथारि ताहं ऽ १० ।८ विद्यास्त हिनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सो माना दोय	धिमिधिमि	
			1	property.			नाह.		in the second
	चंबकार,	थेई विततत	थेई तिततत	थेई	श्रु .	हु। •	थेई तिततत	्रेड इंडर	
	नाल.	يم	w	9.	v	من	•	6	

}	1		रादि सहनाणी	साक्षिप्प ताल, चौईस तालो २४. ॥
चचकार.		प्रमुख्	अक्षर ताल मात्रा.	, IPACE
थुड़े		तकथों	त्मु ताल माता । १३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
थेई तिततत	1000	धीकिडि धीगिडि	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो
थेई तिततत त्व	田田田	गिडिगिडि तकदिगि	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथकी झाली
गई ।		धीतां	ल्यु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
गुड़े 		धीतां	उषु ताल मात्रा । १७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा एक
थेई क्तितत दिगि	कि	दिगिद्ां तांतक	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झाछो
थिङ	1 10	तक्रिकण	छचु ताल मात्रा । १९ ।	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा
थेई तिततत 8	W 80	धिधितक थाकिण	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झाछो

	चचकार,	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
29.	थिङ्	तकांकण	ल्बु ताल मात्रा । २१ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
7.5	थेई तिततत	दांदां थारिथां	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नाउ ठीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झाछो
8.	थेई तिततत	धिकिशिष किटदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विदी हाथको झाले।
30 0'	थेई	तकथों	उच्च ताल मात्रा । २४ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्रारें मात

राविरिष्फ ताल, चौइस तालो २४.

अथ सातवो । जादिरिष्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। उदु एक मात्राको। गुरु दीय मात्राको छेके। देशी वाल उत्पन्न करि। वांको जादिरिष्फ ताल नाम किनो।

जादिरिक ताल चौईस तालो २४.

अथ जादिरिष्फ तालको सक्षण हिरुव्यते ॥ जामे एक तदु होय । तदुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक उचु होप। उचुकी एक मात्रा ॥ ओर तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर तीन उचु होय। उचुकी एक मात्रा ॥ और एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर तीन उचु होय। उचुकी एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ दोय उचु होय। उचुकी एकमात्रा ॥ और दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर एक उचु होय।

सतदां ऽथैथै गिडिदां ऽ दांकुकु । थारिकुकु । जगजग किणकुकु ऽ दांदां तककुकु ऽ थारिथे । कुकुदां कुकुथे ऽ तिककि थिथे ऽ थरि थारि थारियां ऽ तकथों । इति जादिरिय्फ ताल संपूर्णम् ॥ समुकी एक मात्रा ॥ और तीन गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फेर एक उन्नु होय । तमुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख्स उपजावे । सो जादिरिष्फ ताल जानिये ॥ अथ जादिरिष्फ तालको स्वरूप लिल्यते ।ऽ।ऽऽऽ।।।ऽ।।।ऽ।।ऽऽ सत्या थांकिट ऽ गिडिगिडि थांकिट ऽ ततकिट । तांकिट । थरिकिट । थिथिकिट थीकिट ऽ थरिथरि । कुकुदां । ततदां । गिडिगिडि । ऽऽऽ। अथ पाठाक्षर त्रिरूपते ॥ याहिको ट्योकिकमें परमञ्ज कहते है वाहं। तत्तिभामे वाहंऽ धिमिधिमि। तांकिट तांकिट ऽ जाहिरिक ताल. चौईस तालो २४.

ताल.	चवकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
•	क्र	ताह	छषु ताल मात्रा । १ ।	मथम उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
n-	थेई विततत	तत्त्रधिमि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दाय विदी हाथको झालो
mi	्ड ह	विभिधिमि	ठघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
20	थेई तिततत	तांकिट तांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।८	अंक हे सी ताल विंदी हाथकी
نح	थेई तिततत	तत्था थांकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झाला

. जाताच्याय-जादिरिष्फताल चौईस ताली. इइए
मनस्या. गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा द्येप हिनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक विद्युकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
अस्ति में के ताल में में के ताल में के ताल में के ताल में के ताल में के ताल में के ताल में में के ताल में के ताल में के ताल में में में में में में में में में में
प्रमाकुः व्यक्तिमिहः विभिन्निः विभि
थे हैं तितत्त्व कि स्ति कि सि सि कि सि सि सि सि सि सि सि सि सि सि सि सि सि

ည်	
ताला	
चौइस	
ताल,	
रेट्फ ह	
मावि	

			जाांदारक्त ताल,	ाल, चाइस ताला २४.
नाल.	च्चकार.	प्रमुखे.	सहमाणी अक्षर ताळ मात्रा.	समस्या.
30 67	थेई विततत	गिहिगिहि तत्त्वं	गुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
şi G	थेई तिततत	थेथे गिडिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो नात ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झाछो
w.	(ST	्तुं. कुः क	त्रमुताल मात्रा । १६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी वाट टीक हे सी मारा एक
3.	45	थारिकुकु	त्रम् ताल मात्रा । १७ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताट लीक हे.सो मात्रा एक
36.	थेई तितवत	ज्याज्य क्रिणकुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
98.	थेई विततत	द्दि तककुकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १९ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
30.	te de	थरिथै	उद्ग ताल मात्रा । २० ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एंक
29.	थेई विवतत	্চ কুর জ্ব	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथकी झालो

और तादिरिप्फ तालाध्याय-जादिरिप्फ

Ti-	THE PERSON IN	-	सहनाणी	
		٠ ١ ١	अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
85	रे. थेई तिवतत	तिककांक ध्येष	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी आलो
8	१. थिई तिततत	्र विश्वा विश्वा	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।८	
o√ 20	ी. शर्	तक्यों	स्रमुताल मात्रा । २४ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक मात्राषे मान

जािहरिष्फ ताल, चैंईस तालो २४.

अथ आठवो । तादिरिष्फ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें ताड़िरिष्फ ताल, चौइंस तालो २४

वरतिवेकों। गुरु दीय मात्राको। उषु एक मात्राको ठेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको तादिरिप्फ ताल नाम किनों॥ अथ तादिरिप्फ तालको लक्षण लिल्यते॥ जामे दोय गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा॥ और एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा॥ फेर तीन गुरु होय गुरुकी दीय मात्रा ॥ तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर दोय | अथ लोकिकमे परमसु कहते हैं ततथा ततथा ऽ कुकुदिमि तत्था ऽ घिमिथारि। कुकुदां कुकुदां ऽ टिटिकिणि किणिकिणि ऽ जगजग तक्किण ऽ गुरु होय।गुरुकी दोय मात्रा॥और दोय तबु होय। तबुकी एक मात्रा॥ दोय गुरु होय।गुरुकी दोय मात्रा॥ और एक तबु होय उनुकी एक मात्रा॥ केर एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा॥ एक उनु होय। उनुकी एक मात्रा॥ और एक गुरु होय। गुरुकी नादिरिप्फ नालको स्वरूप लिंह्यने ऽँऽ।ऽऽऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ।।ऽऽ।ऽ।ऽ। अथ पाठाक्षर लिंह्यने ॥ याहिको दीय मात्रा ॥ फेर एक उद्घ होय । उद्यकी एक मात्रा ॥ या रीततों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो तादिरिष्फ ताल जानिये ।

दांदां। थरिदां। थाथरि। धिकिटिधि किटदां ऽ थोंगा। किटथों। थरिथरि । ततकिट ताकिट ऽ घिमिधिमि ततकिट ऽ दिगिदिगि। दांथरि। **घिमिथरि** तकथों ऽ घिषिकधि धिककिण ऽ धिधिकिण। धीकिट गनथों ऽ ताहं। धिमिथां ताहं ऽ किटथों। इति तादिरिप्फ ताल संपूर्णेम् ॥

41141	वानदार पक्या ७ ।वाव	कार्य विकास	्रावावाकणा । वााक ताकिरिक्त ता	प्राथ पिकृष्टिण अपिष्टिण पाप्ति अपिष्टाचा अप्ताया आहे. इ.स. ताकिरिक्त ताल, चौईस ताली २४.
ताल.	चचकार.	परमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
٠.	थेई तिततत	ततथा ततथा	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोष विंदी हाथको झालो
~	थेई तिततत	कुकृद्गि तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
m	श्रु	धिमिथरी	उच्च ताल मात्रा । ३ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
30	थेई तिततत	केक्ट्रा केक्ट्र केक्ट्रा केक्ट्रा	गुरु तात्र मात्रा ऽ ४ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा दीय विदी हाथको झालो
' نو	थेई तिततत	रिटिकाण किणिकिण	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
w	थेई विवतत	जगजग तककिण	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथका झालो
9°	S S S S S S S S S S S S S S S S S S S	दांदां	त्रमु ताल मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

7 28	
. चौडम तालो	
ब्रिंटिक तास्र	
He	

				_				
समस्या,	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सी मात्रा एक	उघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको आलो	सो वाल हाथको
सहनाणी अक्षर तास्त्र मात्रा,	उद्ध ताल मात्रा । ८ ।	लघु ताल मात्रा । ९ ।	मुरु ताल मात्रा ऽ १० ।८	छषु ताल मात्रा । ११ ।	लघु ताल माता । १२ ।	त्रषु तात्र मात्रा । १३ ।	मुरु ताल मात्रा ऽ १४ ।	मुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८
प्रमिलु.	थारिदां	थाथरि	थिकिटिधि किटदां	थोंगा	किटथॉ	यारथार	ततकिट ताकिट	धिमिधिमि ततक्रिट
चचकार.	थेड़े	्टे इंट	थेई तिततत	थुङ्	युङ्	्र इंड	थेई तिततत	थेई तिततत
ताल.	V	نه	90.	11.	٦.	er'	%	2,

				ताविरिक्त ताल, पाइत ताला रह.
त्ताल.	चंत्रकार.	परमळु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
w	शुरु	दिगिद्गि	त्मु ताल माता । १६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
5	थे हुं इंड	दांथार	उषु ताल मात्रा । १७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
۲,	थेई विततत	धिमिथारि तक्थों	गुरु ताल मात्रा ऽ १८ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
9.	थेई तिततत	षिषिक।ध धिककिण	गुरु तात्र मात्रा ऽ १९ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
٥.	हुं हैं इंटर	धिधिकिण	त्रमु ताल मात्रा । २० ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो तात तीक हे सो मात्रा एक
29.	थेई तिततत	धीकिट गनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
22.	शहर ।	महं.	टिब ताट मात्रा । २२ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
8.	थेई तिततत	धिमिथां ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ २३ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झालो

	सी मात्रा एक
सुमस्या.	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रापे भान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	छबु ताल मात्रा । २४
प्रमुखे.	िकरयों
चचकार,	्छ च्या
ताल.	20.

दंती ताल, सतरा तालो १७.

अथ दंती तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य नाटचमें बरतिवेकों । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको दंती ताल नाम किनों ॥ अथ दंतीतालको लक्षण लिल्यते ॥ जामें तीन लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ ओर तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर तीन गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ तीन जामें च्लुत होय ।

च्हुतकी तीन मात्रा ॥ और एक सबु होय । स्युकी एक मात्रा ॥ फेर एक इत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फिर एक छघु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसों किण । ताथै ततथै ऽ थिकिटिधि थिगधिम ऽ थिकिट्यि किटिदिमि ऽ दिथितां दिथितां थिमिधिमि डे थिगिडिधि गिडिदां थिथिमन डे गीतादिकमें सुख उपजावे। सो दंती ताल जानिये ॥ यह ताल सवातालों हे ॥ अथ दंती तालको स्वरूप लिस्पते ।।।०००० ऽऽऽऽऽ। ०ऽऽ। अथ पाठाक्षर त्रिच्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमनु कहते है ताहं। थोंगा। तकथों। तग ० जग ० बहकुट तहकुट ततान े थरिथों। तक १ दिगिदां दिगिदां ऽ धिमिथिरि कुजिकण किणथों े तकथों। इति दंती ताल संपूर्णम्॥

दंती ताल, सतरा ताली १७.

,					<u> </u>			
कुनाणी ताल मात्रा.	पथम उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सी वाल ठीक हे सी मात्रा एक	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक	दुतकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	स्तु ताल मात्रा । १ ।	उच्च ताल मात्रा । २ ।	समुतास मात्रा । ३ ।	द्रुत ताल मात्रा ° ४ =	द्वत ताल मात्रा ० ५ =	द्भत ताल मात्रा ० ६ ==	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरु ताल मात्रा ऽ ८ ।
प्सिलु.	ताहं	थोंगा	तकथों	वंग	जग	किण	ताथै ततथै	धिकिटिधि सिग धिग
चचकार.	্ড কুট	<u>ड</u> ेह	थेई	ΛO	ДC	/IC	थेई तिततत	थेई तिततत
ताल.	9.	oʻ	mi	30	نع	w	9°	v

_	
9.	
माञ	
सतरा	
नाल,	
दता	

				क्ता ताळ, सतरा ताळा १७.
ताल.	चचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा,	समस्या.
من	थेई तिततत	धिक्टाध क्टाइगि	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथका झालो
30.	थेई तिततत थेई थेई	दिधितां दिधितां धि मिथिमि	दुवत ताल मात्रा (३ १०॥०)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सा मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
9 9.	थेई तिततत थेई थेई	धिगिडिधि गि डिदां धिधिगन	प्डेत ताल मात्रा (०॥ ११ १)	हे सो ताउ ठीक हाथकी परिक्रमा
a'	थेई तिततत थेई थेई	तहकुट तहकुट तत्भन	प्लुत ताल मात्रा (३ १२ ॥)	प्तुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
£.	शहे	थरियों	उच्च ताल मात्रा । १३ ।	त्रपुकी सहनाणी अंक हे सी तात तीक हे सो मात्रा एक
	ρtc	4	द्रुत ताल मात्रा ० १४ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
۶,	थेई तिततत	दिगिदां दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विंदी हाथको झालो
ugi	थेई तिततत थेई थेई	धिमिथिरि कुज किण किणथॉ	प्लुत ताल भाता (३ १६ ॥८)	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो

रंधी तसार

नाल.	चचकार.	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा	समस्या,
2	विहे	तकथों		उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे मो मात्रा एक

दंती ताळ, सतरा तालो १७.

महाब्याघ्र ताल, नोतालो ९.

मात्रा॥ फेर दीय छबु हीय। छबुकी एक मात्रा॥ फेर एक गुरु हीय। गुरुकी दीय मात्रा॥ फेर एक टकुत होय। टलुतकी अथ महाब्याघ तालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरति-वेकों। टबुत तीन मात्राको। गुरु दोय मात्राको। उघु एक मात्राको ठेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको महाच्याघ ताल नाम किनों॥ अथ महाच्याघ तालको लक्षण लिल्यते॥ जामें दीय प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ फिर दीय गुरु होय। गुरुकी दीय तीन मात्रा ॥ एक उघु होय उघुकी एक मात्रा ॥ या रीतसें गीतादिकमें सुख उपजावे।सो महान्याघ ताळ जानिये ॥ यह ताळ नोतालो है । अथ महान्याघको स्वरूप छिल्यते डेडडा। डडे। अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमे परमकु कहते है जगजग तगनग थाथा 3 थांकिट थडिथां 3 थारियां कुकुथां ऽ थिमिथिमि तत्थे ऽ ताहं। ताहं। ततिथिमि ताहं ऽ ताधिक तिमिनिड दिगदां 3 गणथों । इति महान्याघ ताल संपूर्णम् ॥

महाच्याघ ताल, नोताली ९.

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
	थेई तिततत	जगजग	प्टुत ताल मात्रा	पथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी नाल लीक हे सी मात्रा तीन
, ;	थेई थेई	तगनग थाथा	(§ 1 (§)	गोलकुंडाली हाथकी परिकमा विंदी झालो

ş	U	Ų
~	O	•

1				महाट्य	महाध्याघ ताळ. नांताळो ९.
- XX	नाल.	चंचकार.	प्रमुख.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
	ni.	थेई तिततत थेई थेई	थांकिट थांथां थाइथां	प्टुत ताल मात्रा (डे २ ॥६)	प्डतकी सहनाणी अंक हे सो वाउ ठीक हे सो मात्रा तीन गोउक्डाओ हाथकी परिक्रमा विंदी झाडो
	m	थेई तिततत	थरियां कुकुथां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।	हे सी ताल लीक हे सं दी हाथको झालो
_]	∞	थेई तिततत	धिमिधिमि _{तत्थै}	गुरु ताल माना ऽ ४ ।	सो ताल हाथको
]	اند	કૃષ્ટ	ताहं	उच्च ताल मात्रा । ५ ।	सो वाड
	w	थेई	ताहं	छचु ताल मात्रा । ६ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
	9.	थेई तिततत	ततिधिमि ताहं	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
	vi	थेई तिततत थेई थेई	ताधिक तमि- गिड दिगदां (प्टुत ताल मात्रा े ।	
	من	शुरु	गणथॉ	ठचु ताल मात्रा । ९ ।	सो ताल ठीक

मूर्य ताल (नवग्रह १), सोला तालो १६.

० ०। ० । ० । ० ऽ ० ऽ । ऽ ऽ यह तात्र सीत्रा तात्रो हे ॥ अथ पाठाक्षर जिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहते है त ० त चोथाई मात्रा ॥ और एक लांबेराम होय । लांबेरामकी डेड मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ और एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सी सूर्यताल जानिये ॥ सूर्यताल दीतवारके दीन मुखसुं गावनों ॥ और सूर्यदेव पूजनीक होय । तब गावे अथवा सूने ती सूर्य पसन्न होय ॥ यह मंगठीक है ॥ याको सदा गावनों ॥ अथ सूर्य तालको स्वरूप लिख्यते ८८०८ द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा ॥ फेर एक अणु होय । अणुकी चीथाई मात्रा ॥ एक द्रिराम होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ फेर एक अणु होय। अणुकी चोथाई मात्रा ॥ और एक त्व होय। त्वंकी एक मात्रा ॥ फेर एक अणु होय। अणुकी थै ० त ७ तथै ७ कि ७ किगथों । द्र ७ द्रागिडि गिडि ो घ ० धिमिधिम तत्त्रिमि ऽ कु ० किर्द किर्रंट गिडियों डे तक्यों । अय श्री मूरजीकों आदि छे हें नोब्रह है।तीनके नाम लिल्पते॥ तहां पथम सूर्य ताल । १। दूसरो चंद्र मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य बाद्य नाट्यमें बर्तिवेकों। चंचत्पुटाड़िक पांच तालनमें सो। अणु चोथाई मात्राको। द्रुत आधी-मात्राको । द्विराम पोंणमात्राको । छषु एक मात्राको । छविराम डेडमात्राको ।गुरु दीय मात्राको । प्लुन तीनमात्राको छेके । देशी ताल होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चीथाई मात्रा ॥ एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ फिर एक स्रुष नाल। २। नीसरो मंगल नाल। ३। चोथों बुद्ध नाल। ४। पांच सो बुस्पति नाल। ५। छटो शुरू नाल। ६। सातवों शनिसर उत्पन्न करि ॥ वांको मूर्यतास नामकिनों ॥ अथ मूर्य तात्को तक्षण तिष्यते ॥ जामें रोप अणु होय । अणुकी चोथाई मात्रा ॥ एक बाल । ७। आठबो राहु तास । ८। नवमो केतु ताल । ९। तहां पथम मूरज ताल। ताकी उत्पत्ति लिल्पते॥ शिवजीनै उन तक्षिप तक्यों ऽ तकिशिम दिधिमन यों डे इति संपूर्णम् ॥ सूर्य ताल, सोला तालो १६.

			सूच ताल, चाला	ે, વાછા તાલા / ૯.
चचकार, पर्	r) di	परमद्धे.	सहनाणां अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
E E		ाट	अणु. ताल मात्रा ८१ –	पथम अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सा मात्रा चौथाई
(E		lt:	अणु. ताल मात्रा	अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सा मात्रा चौथाई
्रीय (tr	(W		द्वत ताल मात्रा ० ३ =	दुनकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधी
(<u>tr</u>	ht		अणु, ताल मात्रा	अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई
तत तथै	पुरू	1 →	दिव. ताल मात्रा े ५ ≡	र्वि॰ सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पीण
ति	(E	/le	द्धत ताल मात्रा ८ ६ –	अणुदुनकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई
थेई किणथें	किया	न्द्रः	उषु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
(F)	hero		अणु. ताल मात्रा	अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई

- 1	
انسا	
~	
वाछा	
साला	
T	
ताछ,	
E,	

			2 2 2 2	त्र्य ताल, नाला ताला १५:
तास्त्र,	च वक्हार,	प्रमुखे.	सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा,	. समस्या,
o,	त्य है	द्रगिंह गिंह	अवि. ताल मात्रा े ९ ।=	लिंदामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
30.	कि	bor	अणु, ताल मात्रा '१º –	ताल ल
19.	थेई तितनत	धिमिधिमि तत ि भिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झाळो
92.	कि	18-2	अणु. ताल मात्रा '१२ -	सो माः
8.	थेई तिततन थेई थेई	क्रिरेट क्रिरेट गिडिथों	प्टुत ताल मात्रा (ें १३ ॥है)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
.86	थेड्	तकथों	ठघु ताल मात्रा । १४ ।	हे सो मात्रा
3.	थेई विततत	तक्थिमि तक्थों	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।८	मात्रा
33	थेई निततत थेई थेई	तकिदिगि दिधिगन थों	प्लुत ताल मात्रा (३१६ ॥५)	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो झालों मान

चंद्रताल (नवग्रह २), बारा तालो १२.

अथ नवग्रह तालमें दूसरो । चंद्रतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य षाद्य नाटचमें वरतिवेकों। द्विराम गौंण मात्राको। उचु एक मात्राको अविराम डेड मात्राको। गुरु दोय मात्राको। प्लुत तीन दिविरामकी पैांण मात्रा ॥ फेर एक द्वत होय द्वतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक उच्च होय । उचुकी एक मात्रा ॥ ओर एक द्वत होप । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक टिविराम होय । टिविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक गुरु हीय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक द्वत होय। द्वतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक प्लेत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीता-दिकमें मुख उपजावे। सो चंद्र ताल जानिये।। यह ताल बारा तालो है। या चंद्रतालको सोमवारके दिन मुखसो गावनो। ओर लक ० तकथों । घिषि ० किट घिषिकिट ो तां ० दिमिदिमि दिगिदां ८ कुकु ० थांकिट घिषिकिट गनथों ८ इति चंद्रताल संपूर्णम् ॥ मात्राको लेके। देशी ताल उत्पत्र किरि। वांको चंद्रताल नाम किनों ॥ चंद्रतालको लक्षण लिक्यते ॥ जामें एक द्रुत होय डुतकी आधि मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी पाव मात्रा ॥ फेर एक दुत होय । दुतकी आधि मात्रा ॥ और एक द्विराम होय। चंद्रमा पुजनीक होय तब गावे। अथवा सुने अथवा गवावे तो चंद्रमा मसच होय ॥ अथ चंद्र तालको स्वरूप लिख्योते o vo do । o lo so S अथ पाठाक्षर लिल्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है जक o त ∨ ततo कुकिण d

चंद्र ताल, बारा तालो १२.

•	३४	9
समस्या.	पथम दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	
सहनाणी अक्षर ताळ मात्रा.	द्रत ताल मात्रा • 3 ==	
प्रमुद्धे.	वक	
चचकार,	,tc	
नाल.	9.	

ż	
~	
_	
ताला	
F	
बारा	
F	
_	
ताल,	
Ĕ	
T	
lx P	•
P	
••	
	d
	1

			चंद्र ताल, बारा ताला १२.	-
ताल.	चचकार.	परमछे.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	
n.	ीच	lt	अणु. ताल मात्रा अणुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा	हे सी मात्रा चौथाई
pri	(ht	वत	ात्रा = =	डीक हे सो मात्रा आधि
30	वत	कुकिण	द्वि॰ताल मात्रा ८ ४ =	सो मात्रा पोण
نو	ίτ	तक	द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक ।	ठीक हे सी मात्रा आधि
w	्ड इंड	तक्थों	उचु ताल मात्रा त्वपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल सीक । ६ ।	सीक हे सी माता एक
9°	/hc	धिधि	द्रुत ताल मात्रा ० ७ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक	लीक हे सी मात्रा आधि
v	तथेई	किट धिधिकिट	अवि॰ ताल मात्रा स्वि॰ सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो	हेसी मात्रा डेड
نه	AU.	चं:	द्रुत ताल मात्रा ०९ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा आधि	हे सो मात्रा आधि

षष्ठी तालाध्याय-चंद्र और मंगल ताल बारा ताली.

ल, बारा तालो १२. समस्या. गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी झालो द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि प्लेतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन	हाथकी परिक्रमा विंटी झालो झालाँ मान
चंद्र त्यस्ति अक्षर ताल मात्रा. विद्वा स्था सहमाणी अक्षर ताल मात्रा. विद्वा स्था स्था किर मिलि किर मिल किर मिलि किर मिल किर मिलि किर मिलि किर मिलि किर मिलि किर मिलि किर मिलि किर मिल	(3 92 116)
पत्मछ. दिमिद्दिम दिगिद् ! कुकु धांकिट धिथि-	िकट गनथा
ध्रुं बिततत थड़े विततत थड़े तिततत	थइ थइ
नाल. १०.	

मंगल ताल (नवशह ३), बारा तालो १२.

मात्राको । गुरु दीय मात्राको । प्लुत तीन मात्राको लेके । देशी ताल जॅपन किरि । बांको मंगल ताल नाम किनो ॥ अथ मंगल तालको लक्षण लिस्यते॥ जामे एक द्विराम होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ ओर एक अणु होय । अणुकी चैथाई मात्रा ॥ एक एक उचु होय। उचुकी एक मात्रा ॥ एक द्विराम होय। द्विरामकी पोण मात्रा ॥ एक उविराम होय। उविरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्विराम होय। द्विरामकी पोण एक द्विराम होय। द्विरामकी पोण पिण मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक द्विराम होय। द्विरामकी पोण मात्रा ॥ एक प्लिमे ॥ एक प्लेत होय। प्लेतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उषजाव। सो मंगळ ताळ जानिये॥ मंगळवारके दिन गाव। ओर मंगळ पूजनीक हो तब गावे सुनतों मंगळ प्रसम् होय। यह ताळ मंगळीक है। याको सदा नाटचमें वरतिवेकों। दविराम पोंण मात्राको । अणु चैथाई मात्राको । द्वत आधि मात्राको । उचु एक मात्राको । अविराम डेड अथ नवग्रहमें तीसरो । मंगल तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके । गीत नृत्य बाद्य दिविराम होय । दिवरामकी पोण मात्रा ॥ एक द्वत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ और एक दिवराम होय । दिवरामकी पोण मात्रा ॥

संगीतसारं.

गावनां ॥ यह ताळ बारा ताळी है ॥ अथ मंगळ ताळको स्वरूप लिस्क्येत २०२०२।२)२ऽ२ अथ पाठाक्षर लिस्क्येते ॥ याहिको लोकिकमें परमुळ कहते है घळां २ त ॰ कुकिण २ जग० तथे २ तकथों । ततां २ घिधिकिट कुकु ो घिनिक २ थार्थां थार्थां ८ घळां २ तिगिगिडि दिदिगिडि थों ८ इति मंगलताल संपूर्णम् ॥

मंगल ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार,	प्सिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
9.	तत	धलां	द्वि. ताल मात्रा े १ ≡	पथम द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा पाँण
n'	ण	læ	अणु. ताल मात्रा ८ २ —	अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई
m	तत	कुकिण	द्गवि, ताल मात्रा ठे३ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
30	/IC	जग	द्रुत ताल मात्रा ० % ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
نح	तत	तथे	द्वि. ताल मात्रा े ५ ≅	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताउ बीक हे सा मात्रा षोंण
w	हेर्ड	तक्यों	उच्च ताल माता । ६ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

ر برد	
5. बारा ताला	
9	
मगल ताल.	
मगल	
	ľ

नाल.	च चकार.	प्तिलु.	सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	समस्या,
9°	तत	ततां	द्गवि. ताल मात्रा े ँ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सा तात ठीक हे सो मात्रा पोंण
v	तथेई	मिथिकिट कुकु	टवि. ताल मात्रा ो ८।=	डविरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा डेड
نه	तत	धिनिक	द्वि. ताल मात्रा े ९ ≡	र्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पींण
	थेई विवतत	्यरियां यरियां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी नाल ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
99.	वव	ध टां	द्वि. ताल मात्रा ० ११ =	र्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा पोंण
۵.	थेई तिततत थेई थेई	त्तांगीवि दिद्गिहि थों	प्लुत ताल मात्रा (३ १२ ॥७)	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी झालो झालापे मान

बुध ताल (नवग्रह ४), बारा ताले। १२. अथ नवग्रहमें चोथो। बुधतालकी उत्पत्ति लिस्चेते ॥ शिव⁵निं उन मागैतालनें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेकों। त्यु एक मात्राको। अणु चोथाई मात्राको। दुन आधि मात्राको। द्विरामपोण मात्राको। लविराम हेड मात्राको। गुरु रोय मात्रा-को। दुलेत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्त करि। वांको बुधताल नाम किनों॥ अथ बुधतालको लक्षण लिस्पेते॥ जामें एक

सुख उपजावें। सी बुधताल जानियें।। या बुधतालको बुधवारके दिन गांवे सुने गवावे। ओर बुध पुजनीक होय। तब गांवे सुने बुध मसन्त्र होय। यह तालमंगलीक है।। अथ बुध तालको स्वरूप लिस्यते। ४।० १०। १।० १० यह ताल बारा ताली है।। अथ होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ एक छघु होय। छघुकी एक मात्रा ॥ एक द्विराम होय। द्विरामकी पोंण मात्रा ॥ फेर एक छघु होय। छघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक छिवराम होय। छिवरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक छघु होय। छघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा ॥ एक छघु होय। छघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें लमु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ एक अणु होय। अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा ॥ फेर एक दुत गठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमन्तु कहते है थायरि । कि ~ थाथै । कुकु ॰ थिमिथों । कुकिण > थिमिथिमि संपूर्णम् ॥ भीधीपि । ताहं। तांतां किटाकिट ऽ थिधिकिट। ततकिट धुमिकिट गणधों डे इति ब्यताल ।

बुध ताल, बारा तालो १२.

ताल.	चचकार.	प्रमञ्जु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.
ه:	(P)	थाथरि	उचु ताल मात्रा प्रथम उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा एक
n'	টি	क्	अणु ताल मात्रा अणुकी सहनाणी अंक हेसी ताल ठीक हेसी मात्रा चौथाई
m	्ट (ह	थाथै	उचु ताल मात्रा । ३ ।
သ	(htt	 8 9	द्रुत ताल मात्रा

œ	•
नाल	
वार	
ताल,	
7	

			भटनाणी		
चचकार.		प्रमुखे.	अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.	
शुरु		धिमिथों	उषु ताल मात्रा । भ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	
तत		कृहिण	द्वि. ताल मात्रा ठ ६ ≡	दिरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पाँण	
थिङ्	l i	धिमिथिमि	उचु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	
तथेई		धीधीयिमि	ह्यवि, ताल मात्रा ो ८।=	लिबरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड	
कुर्		त्त्र.	उच्च ताल मात्रा । ९ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	
थेई निततत		वांवां किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो	
श्रं		थिथिकिट	उषु ताल मात्रा । ११ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	
थेई तिततत थेई थेई	h 	ततकिर धुमि- किर गणथों	प्लुत ताल मात्रा (३ १२ ॥६)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिकमा विंदी झालो झालापें मान	

संगीतसार.

अथ नवग्रहमं पांचवा । बृहस्पति तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमं विचारिके । गीत नृत्य डेड मात्रा ॥ फेर एक द्विराम होय । द्विरामकी पाँण मात्रा ॥ फेर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा ॥ ओर एक लविराम होय । लविरामकी डेड मात्रा ॥ ओर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ फेर **वाद्य नाट्यमें** वरतिवेकों । लिवराम डेड मात्राको । अणु चैथाई, मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । द्विराम पींण मात्राको । लघु एक मात्राको । गुरु दीय मात्राको । त्व्रत तीन मात्राको हेके । देशी ताल उत्पन्न करि। वांको बृहस्पति ताल नाम किनों ॥ अथ फेर एक लिबराम होय । लिबरामकी डेड मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक लिबराम होय । लिबरामकी **मृहस्पति** तात्त्रको त्रक्षण त्रिरूपते ॥ जामें एक त्रविराम होय । त्रविरामकी डेड मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ बृहस्पात ताल (नवग्रह ५), बारा ताले। १२.

बृहस्पति ताल, बारा तालो १२.

गिडि दां ो धुमिक्टि धुमिधुमि दिधियों े इति बृहस्पति ताल संपूर्णम् ॥

एक हिरिम होय। हिविशमकी डेड मात्रा ॥ आर एक प्लुन हाय। प्लुनमा भावनों। ओर बृहस्पति पुजनी होवे तब गवि अथवा सो बृहस्पति ताल जानिये ॥ या बृहस्पति तालको बृहस्पतिवारके दिन गावनों। आथ बृहस्पति तालको स्वरूप लिख्यते ो ८ ो सुने तो बृहस्पतिजी प्रसन्त होय। यह ताल मंगलीक है। याको सदा गावनों।। अथ बृहस्पति तालको स्वरूप लिख्यते ो ७ े ० ो ८ ो । ो ८ ो ८ यह ताल बारा तालो है ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हैं धींधींकिट ो कु ८

भहमाणी अस्थर नाळ मात्रा. अस्थर नाळ मात्रा. अस्थर नाळ मात्रा प्रथम त्यविरामकी सहनाणी अंक हे सो नात्र ठीक हे सो मात्रा डेड
चचकार. तथेई

			बृहस्पा	बृहस्पति ताल, बारा तालो १२.
ताछ.	चचकार,	प्रमुखे.	सहनाणी अस्सर ताल मात्रा.	समस्या,
'n	ति	18->	अ.द्र. ताल मात्रा ' १	अणुद्रतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा चौथाई
m	तथेई	धिधिकिट तक	स्ति, ताल मात्रा े ३ । =	लिबिरामकी सहनाएं। अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड
20'	,h c	जग	द्रुन ताल मात्रा ० ४ ==	दुनकी सहनाणी अंक हे सो नाउ ठीक हे सो मात्रा आधि
5"	तथङ्	धिधितां थिमि	छिबि, ताल मात्रा ो ५ ।=	लिबरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड
w	ंतत	तथां	द्गिब. ताल मात्रा े ६ ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पोंण
3.	त्यह	किटिकिटि थां	. डावे. ताढ मात्रा े ७ ।=	सिनापी अंक हे सी तास सीक हे सी मात्रा डेड
vi	क्षे इंड्रे	थरिधां	उषु ताल मात्रा । ८ ।	त्युकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
انه	तथेई	्यिमिधिमि तत	त्रवि. ताल मात्रा े। ९ । =	तिशामकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा हेड

જં
तालो
वारा
ताल,
बृहस्पात

नाल.	चचकार,	प्सिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
90.	थेई तिततत	दिगिद्रां दिगिद्रां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३० ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विदी हाथको झालो
6	चथ ई	गिडिगिडि दां	गिडिगिडि दां लिव. ताल मात्रा	लिबिरामकी सहनाणी अंक हे सो वाल लिक हे सो मात्रा डेड
92.	थेड़े तिततत थेड़े थेड़े	धुमिकिट युमि- धुमि दिधियों	प्लुत ताल मात्रा (३ १२ ॥५)	प्डतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झाला झालापें मान

थुक ताल (नवग्रह ६), बारा तालो १२.

अथ नवमहमें छटो। शुक्रतालकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने उन मागैतालनमें विचारिके। गीत नृत्य वाद्य नारचमें बरितिवेकों । गुरु दोय मात्राको । अणु चौथाई मात्राको । द्रुत आधि मात्राको । द्यविराम पाँण मात्राको । त्रुषु एक मात्राको । त्रावि-र्सि डेड मात्राको । प्लुत तीन मात्राको हेके । देशी ताल उत्पन्न करि । वांको शुक्रताल नाम किनों ॥ अथ शुक्रतालको उक्षण स्टिल्यते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ और एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरु-की दीय मात्रा ॥ और एक दुत होय। दुतकी आधि मात्रा ॥ एक गुरु होय। गुरुकी दीय मात्रा ॥ केर एक दिवराम होय । दिव-रामकी पींण मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक उचु होय । उचुकी एक मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दीय ष्ट्युतकी तीन मात्रा॥ या रीतसों गीतारिकमें सुख उगजायें । सो शुक्तताल जानिये । जो गावे अथवा सुने तो शुक्र पसन्य होय ॥ यह मात्रा ॥ फेर एक लिविराम होय । लिविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ ओरर एक प्लुत होय ।

षष्टो तालाध्याय-शुक्रताल बारा तालो

बाल मंगलीक है। याको सद्ग गावनो ॥ अथ थुरुतालको स्वरूप लिख्यते ऽ ৺ ऽ ० ऽ ० । ऽ ो ऽ ऽ यह ताल बारा तालो है ॥ अथ पाठाक्षर जिल्पते ॥ याहिको लोकिकमें परमङु कहते है थांथरि विमिधिमि ऽ वि ~ ताक्विर ताक्विर जक ॰ ताहं ताहं ऽ थरिक ठ तकटिं तकटिं ऽ थोंगा। घिकिथों थोंगा ऽ ता थोंगा ो घिषिनक धिनक ऽ तकुनकु घिषिगन थों ऽ इति शुरुतास्त संपूर्णम् ॥

गुक ताल, बारा तालो १२.

विव	चचकार,	प्रमुखे:	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या,
श्रु	विवत्तव	थांथरि धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	मथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
	(巨	ছ	अणु ताल मात्रा	सो ताल लीक हे सो मात्रा चैथाई
नुहरू	विवतत	ताक्षिट ताक्षिट	गुरु तास मात्रा ऽ ३ ।८	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय अ विदी हाथको आलो
	(htt	पंक	द्वत ताल मात्रा ० % ==	ती ताल लीक हे सी मात्रा आधि
chor S	निततत	ताहै ताहै	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।८	गुरकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी दाशको यात्रो
ic .	वत	थरिक	द्वि. ताल मात्रा ० ६ =	神神

गुक्र ताल, बारा तालो १२.

समस्या,	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय विदी हाथको झाले।	उचुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताट लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झाछो	अविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेड	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी मात्रा दीय विदी हाथको झालो	प्हुतकी सहनाणी अंक हे सो ताठ ठीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडाटो हाथकी परिक्रमा विंदी झाछो झाठापे मान
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।८	स्य वास्त्र मात्रा । ८ ।	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	लंबि.ताल मात्रा ो १० ।=	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ।८	प्लुन ताल मात्रा (३ १२ ॥ ८)
प्तमुळे.	तकटिं तक्टिं	थोंगा	धिकिथों थोंगा	ता थोंगा	धिधिनक धिनक	तकुनकु धिधिगन थों
घचकार,	थेई तिततत	थि	थेई तिततत	तथङ्	थेई तिततत	थेई तिततत थेई थेई
ताल.	9.	vi	نه	.0	99.	9 %.

शनिश्वर ताल (नवम्रह ७), बारा तालो १२.

अथ नव्यहमें सातवो। शनिश्वर तालकी उत्पत्ति लिष्यते॥ शिवजीने उन मागैतालनेमें विचारिके। गीत नृत्य षाद्य नाटचमें वरतिवेकों। प्लुत तीन मात्राको। अणु चौथाई मात्राको। द्वत आधि मात्राको। द्विराम पोंण मात्राको। उघ एक मात्राको। लिविराम डेड मात्राको। गुरु दीय मात्राको छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। बांको शनिश्वर ताल नाम किनों॥ अथ शनिश्वर वात्तको त्रक्षण त्रिस्येते ॥ जामें एक प्तुत होय । प्तुतकी तीन मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पींण मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक छघु होय । उघुकी 💃 फैर एक प्लुन होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक द्रुत होय। द्रुतकी आधि मात्रा ॥ फेर एक प्लुन होय। प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ एक टाविराम होय । टाविरामकी डेड मात्रा ॥ फेर एक प्लुत होय । प्छुतकी तीन मात्रा ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे । सो शनिश्वर ताल जानिये ॥ होय। यह तास मंगसीक है याको चाहो तब सदा गावनों ॥ अथ शनिथर तासको स्वरूप सिस्थते उ ८ ८ ८ ८ ८ ८ । ४) ८ ८ या तालको शनिश्वरके दिन गावे । ओर शनिश्वर पूजनीक होय । तब गावनों गवावनों । अथवा सुने तो शनिश्वरजी प्रसन्त अथ पाठाक्षर जिल्घते ॥ याहिको लोकिकमें परमतु कहते है। थांक्टि दांथडि थाथां ऽत ४ कुकुदां थाथिरिथोंगा ऽतक ० दांगिडि द्रांदां गिडिदां ऽ धलां े धिना धिना दिधितां ऽ तक्यों । ततकुकु ततकुकु तक्यों ऽ यांगा यों ो धिमिकिट ततकिट किटाकिट ऽ मिदिधि गनथो ऽ इति शनिश्वर ताल संपूर्णम् ॥

शनिश्चर ताल, बारा तालो १२.

ולו ח	।ला.	- =
समस्या,	पथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा तीन गोलकंडालो हाथकी परिक्रमा विने वाले	ह सो वाख डीक हे स
सहनाणी अक्षर नाल मात्रा.	प्टुत ताल मात्रा ३ १ ॥।	अणु ताल मात्रा ' २ –
प्रमञ्जे.	थांकिट दांथाडे थाथां	læ
चनकार.	थेई तिततत धेई थड़	Œ
नाल.	9.	n'

शनिश्चर ताल, बारा ताली १२.

सामुद्र ताहु, बारा ताहु। इंट. गी ह मात्रा.	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विदी झालो	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पाँण	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो	उचुकी सहनाणी अंक हे सो वाट टीक हे सो मात्रा एक	प्तुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोनकुंडाटो हाथकी परिकमा विंदी झालो	जविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा डेडा
सहनाणी अस्पर ताळ मात्रा.	1	द्रत ताल मात्रा ० ४ =	प्टुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥६)	द्वि. तास्त्र मात्रा े ॄं ६ ≡	प्टुत ताल मात्रा (३ % ॥১)	ल्घु ताल मात्रा । ८ ।	दुवत ताल मात्रा (रे ९ ॥७)	लवि.ताल मात्रा ो १० ।=
परमलु.	कुकुदां थाथरि थोंगा	1	दांगिडि दांदां गिडिदां	धलां	धिना धिना दिधितां	तकथों	ततकुकु तत- कुकु तक्यों	थोंगा थें।
चचकार.	थेई तिततत थेई थेई	(he	थेई तिततत थेई थेई	वन	थेई निततत थेई थेई	धुंदे	थही निततत थही थही	तथेई
ताल.	m	∞.	نح	w	9.	vi	منه	90.

होय । अथ याको स्वरूप विरुव्यने ८ ८ ८ । ८ ८ ० ० अथ पाठाक्षर विरुव्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमन्न कहते हैं।

शनिश्चर ताल, बारा ताली १२.	सात्रा,	प्लेतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सी गालकंडाली डाथकी परीक्रमा विशे टाणको	
शनि	सहनाणी अस्रर ताल मात्रा,		गुरु ताल म ऽ १२
	प्रमुखे.	धिपिक्ट तत- किट किटकिट	तकदिधि गनथों
	चचकार.	थेड़े तिततत थेड़े	थेई तिततन
	नाल.	99.	9.9.

राह्न ताल (नवमह ८), बारा ताले। १२.

अथ नवग्रहमें । आठवों राह्न तात्रकी उत्पत्ति स्टिच्यते ॥ शिवजीने उन मार्गताअनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरतिवेकों। प्लुत तीन मात्राको । अणु चौथाई मात्राको । गुरु दोय मात्राको । लिबराम डेड मात्राको । समु एक मात्राको । द्विराम पोंण मात्राको । द्वन आधि मात्राको हेके ॥ देशी ताल उत्पत्र करी ॥ वांको राह्ताल नाम किनों ॥ अथ साहु तालको सक्षण सिरुपते ॥ जामें एक प्लुन होय । प्लुतकी नीन मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौयाई मात्रा ॥ फेर क्किर एक अणु होय। अणुकी चौथाई मात्रा॥ केर एक त्यु हाय। त्युकी एक मात्रा॥ और एक अणु होय। अणुकी चौथाई कुक गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ एक अणु होय। अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक टाविराम होय । टाविरामकी डेड मात्रा॥ द्रुतकी आँधि मात्रा ॥ आर एक अणु होय । अणुर्का चौथाई मात्रा ॥ या रीतसैँ गीतााईकमें सुख उपजावे। सो राहु ताल जानिये ॥ याका बुगवार अथवा शनिश्वर वारको गावनो ॥ अथवा राहुपूजनीक होय तब गाव ॥ अथवा सुनेतो राहु मसच मात्रा ॥ फेर एक दिविरीम होय । दिविरामकी पाँण मात्रा ॥ एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ फेर एक द्वत होय ।

प्रथम प्टुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विदी झालो अणुदुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चीथाई तत्था थों किट दिगिदां डेत र तत्विमि दांदां ड कुर तकुकृत कुकु ने कुर थिरियां। तर किणा कि डे दिर जक थ अणुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई अणुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई लिवरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल सीक हे सो मात्रा डेड गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दीय विंदी हाथको झालो समस्या. राहू ताळ, बारा ताळी १२. ट्यवि॰ताट मात्रा तत्था थोंकिट जित ताल मात्रा अणु ताल मात्रा अक्षर ताल मात्रा. अणु ताल मांत्रा गुरु ताल मात्रा अण् ताल मात्रा || |-|-<u>=</u>º सहनाणी 20 तत्तिधिभि दांदा 89 दिगिदां परमञ्जु. नकुक्त t 18-9 89 सैंपूर्णम् ॥ थेई निततत थेई निततत थेई थेई वचकार. तथड़ (E 百 (F इति राहूनाल से तील نح 'n w m ∞:

उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा एक

लघु ताल मात्रा

थरियां

197

9.

9

माल.	चचकार.	प्रमिलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
Ŋ.	(l u	अणु ताल मात्रा अणुकी सहन	अणुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा चौथाई
نه	तत	िकणिक	र्वाव मात्रा े ९ ≡ र्वशमकी स	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण
٠	ति	(for	अणु ताल मात्रा अणुका सहनाणी	नाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सी मात्रा चौथाई
6 77	/IC	प्रभ	द्वत ताल मात्रा ० ११ = द्वतकी सहना	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
'n	ति	ध	अणु ताल मात्रा अणुकी सहनाणी	नाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा चौथाई

राह ताळ, बारा ताळो १२.

केतु ताल (नवग्रह ९), ग्यारह ताले। ११.

स्टक्षण विरुपते ॥ जाम एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन मात्रा॥ ओर एक द्वत होय। द्वतकी आधी मात्रा॥ एक गुरु होय। गुरुकी अथ नवग्रहमं । नवमों केतुतालकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य स्विराम पींण मात्राको। अणु चौथाई मात्राको हेके। देशी ताल उत्पन्न किर। वांको केतु ताल नाम (किनों ॥ अथ केतु तालको नाटचेमें बर्तिकेकों। प्लुत तीन मात्राको। द्वत आधी मात्राको। गुरु रोय मात्राको। लबिराम डेड मात्राको। छषु एक मात्राको

संगीतसार.

दोय माज्ञा ॥ फेर एक द्वत होय । द्वतकी आधी मात्रा ॥ एक लिबराम होय । लिबरामकी डेड मात्रा ॥ ओर एक द्वत होय । द्वतकी आधी मात्रा ॥ एक तत्रु होय । त्रुकी एक मात्रा ॥ एक द्रुत होय । द्रुतकी आधी मात्रा॥ फेर एक द्विराम होय । द्विरामकी पींण मात्रा ॥ फेर एक द्वत होय। द्वतकी आधी मात्रा ॥ ओर एक अणु होय । अणुकी चौथाई मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुल उपजावे । सो केतु ताल जानिये ॥ या केतु तालको युद्धवारके दिन गावनो । ओर केतु पुजनीक होय तब गावनों ॥ अथवा सुने तो केतु मसन्य होय ॥ केतु तासको स्वरूप सिरुयते ३० ऽ० १०१०० पह तास ग्यारह तासी है ॥ अथ पाठा-सर जिल्पते॥ याहीको लोकिकमें परमलु कहते हैं॥ तांतां धिमिधिमि तकतां े थरि ० कुकुरां थरिरां ऽ किण ० दांकिकि दां ो सत । सी । थै । विषि ठ थरि क ८ इति केतुताल संपूर्णम् ॥

	,		-	***************************************	
केतु ताल, ग्यारह तालो ११.	समस्या	पथम प्लतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विदी झालो	हे सी ताउ ठीक हे स	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो	दुतकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सी मात्रा आधि
केंद्र त	सहनाणी अक्षर नाळ मात्रा.	प्लुत ताल मात्रा (३ १ ॥।)	दुत ताल मात्रा ० २ =	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।८	द्रुत ताल मात्रा ॰ ४ ==
	प्रमञ्जे.	तांतां धिमि- धिमि तकतों	थारि	कुकुदां धरिदां	क्रियो
	च चकार.	थेई तिनतत थेई थेई	ИC	थेई विततत	/lo
	ताल.	-	'n	m	သုံ

	701		व्याय-	4.3 AL	·	।वजय ः	1 34	। ताला	1
ताल, ग्यारह ताला ११.	समस्या,	सिंहमाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा डेड	दुनकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा आधि	त्यपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा एक	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	र्विरामकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा पींण	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि	अणुकी सहनाणी अंक हे सी ताज जीक हे सी मात्रा चौथाई	
De	सहनाणी अस्तर ताल मात्रा.	ट्टावि॰ताल मात्रा े ५ ।=	द्वत ताल मात्रा ० ६ ==	छचु ताल मात्रा । ७ ।	द्रुत ताल मात्रा ० ८ ==	दृषि॰ ताल मात्रा ১ ९ ≡	दुत ताल मात्रा ० १० =	अणु ताल मात्रा ४ ११ –	ζ
	प्रमुखे.	द्ांकिकि दां	वत	ताथै	<i>া</i> ন	तथिधि	्थार	l s	
	चचकार.	तथेई	ίτ	रेड हैं	No	तत	Ac	(চ	
	ताल.	نه	w	9°	v	·oi	. 0	9.	-

नाटयमं वरतिवेकों विजय तालके। उत्पत्ति लिस्यते ॥ शिवजीने उन मार्गतालने विचारिके गीत नृत्य वाद्य अध

षिषिमिन दिगिदां दांथरि ३ थोंथरि थैथरि थैथा ३ जक्रकिण जिक्णायि यिमिथिनि ३ थिकतां थिकतां थिकतां विधिकिट ३ धीकिट धीकिट चंचलुटादिक पांचीतालनमेंसों । गुरु दीय मात्राको । लचु एक मात्राको । प्लुत तीन मात्राको । द्रुत आधि मात्राको लेके । देशी ताल उत्पन करि । वांको विजय ताल नामकीनों ॥ अथ विजय तालको लक्षण लिल्पते ॥ जामें एक गुरु होय । गुरुकी दोष मात्रा ॥ एक छघु होय । छघुकी एक मात्रा ॥ पांच प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ ओर तीन द्रुत होय । द्रुतकी आधि मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो विजय ताल जांनिये ॥ अथ विजय तालको स्वरूप लिल्यते ऽ। ऽ ऽ ऽ ऽ ००० यह ताल द्शा ताली है।। अथ पाठाश्तर लिख्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हैं। ताकिट धीकिट ऽ ताकृताकृ किट किट 3 तत • गन ॰ थों • ॥ इति विजय ताल संपूर्णम् ॥

विजय ताल, दश ताली १०.

				1	•
समस्या.	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी झालो	त्वपुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक	प्टुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सा मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंदी झालो	
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८	उद्ध ताल मात्रा । २	द्वत ताल मात्र (डे ३ ॥)	प्टुत ताल मात्रा (डे र ॥८)	
प्रमुखे.	ताकिट थीकिट	ताक्ताक्	धिधिणिन दि- गिदां दांथार	योंधारे धेथारि थैथा	
चचकार,	थेई निततत	्ट्र नेड	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	
ताल,	9.	'n	mi	20	

पष्टी तालाध्याय-विजय ताल और कामधेनु ताल चौतालो. ३६९

	1		T	1	1	1
समस्या.	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विदी सालो	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विदी झालो	प्तुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्या विंदी झालो	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	तकी सहनाणी अंक हें सो ताल ठीक हे सो मात्रा आधि	दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
सहनाणां अक्षर नाल मात्रा.	दुत ताल मात्रा (ऽ ५ ॥।)	द्धत ताल मात्रा (ऽ ६ ॥७)	प्टुत ताल मात्रा (डे ७ ॥)	द्रत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्वत ताल मात्रा ० १० =
प्रमञ्जे.	जकुकिण जकि णधि धिमिधिमि	धिकतां धिकतां धिथिकिट	धीकिर धीकिर किरकिर	तत	गन	ঝ
च नकार.	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	(lt	(lc	,h c
नाल.	نح	w	9.	v	من	0
80				_		

विजय तालं, दश तालो १०.

कामधेनु ताल्जे ४. अथ कामधेनु तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥शिवजीनं उन मार्गतालनमें विचारिकेगीत नृत्य वाद्य नारचमें वरतिवेकों॥ प्लुत तीन मात्राको लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको कामधेनु ताल नाम किनों॥ अथ कामधेनु तालको लक्षण लिख्यते॥

जामें च्यार प्लुव होय। प्लुबकी वीन मात्रा ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावे। सो कामधेनु ताल जानिये॥ अथ कामधेनु तालको स्वरूप लिख्यते ८८८ अथ पाठाक्षर जिख्यते॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते है।। थाधिमि थरिथिमि थारिथां ८ हांगिडि गिडिगिडि दिगिदां ८ धुमिकिट धुमिकिट झमिसमि ८ तिकिदिगि थिथिगन यों ८ हति कामधेनु ताल संपूर्णम्॥

कामधेनु ताल, चौतालो ४.

समस्या,	पथम ट्वुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल ढीक हे सी मात्रा तीन	प्हुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन	प्डुतकी सहनाणी अंक हे सो ताउ ठीक हे सो मात्रा तीन
	गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झालो	गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झालो	गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विंही झालो	गोटकुंडाटो हाथकी परिकमा विंदी झाटो
सहनाणी	प्लुत ताल मात्रा	प्लुत ताल मात्रा	प्टुत ताल मात्रा	प्लुत ताल मात्रा
अक्षर ताल मात्रा.	(रे १ ॥ ।	(३ २ ॥६)	(३ ३ ॥८)	(३ ४ ॥८)
प्रमञ्जु.	थाधिमि थरि-	दांगिडि गिडि-	धुमिकिट धुमि-	तिकदिगि थि-
	धिमि थरिथां	गिडि दिगिदां	किट झमिझमि	धिगन थों
चचकार.	थेई तिततत	थेई तिततत	थेड़े तिततत	थेई तिततत
	थेई थेई	थेई थेई	थेड़े थेड़े	थेई थेई
ताल.	6	'n	m	∞:

पुष्पबाण ताल, चोबीस तालो २४.

अय पुष्पबाण तालकी उत्पत्ति लिख्यते॥शिवजीने उन मार्गताउनमें विचारिके। गीत मृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों ॥ बुत आधी मात्राको । छबु एक मात्राको। गुरु रोप मात्राको । प्रुत तीन मात्राको छेके। रेशो ताउ उत्पन्न करि । बांको पुष्पबाण नाल नाम किनों ॥ अय पुष्पमाण नाउको लक्षण जिल्पते॥ जामें च्यार द्वुन होय। द्रुनकी आधी मात्रा॥ और च्यार लघु होय।

दीय इत दिगिदां ऽ तक्किगिडि किणितक ऽ धिधिकिट धिधि एक मात्रा ॥ और दोय गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा ॥ फेर दीय प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ और च्यार पुष्पवाणको गुरुकी दीय मात्रा ॥ और चार प्लुत होय । प्लुतकी तीन मात्रा ॥ दोय छषु होय । छषुकी एक मात्रा ॥ फेर थरियां ३ गिडिगिडि । दिगिदां द्रुतकी आधी मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो पुष्पवाण ताल जानिये ॥ अध ००००।।।।ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽो।।००यह नाल चीवीस नालो है ऽ त्कनक याहिको लोकिकमें परमस् कहते हैं थैं थां तत*े* थैं ताहं। थोंगा । धिमिधिमि दिगिदाँ ऽ धींधीं तकधिमि धिमितक ऽ किटितक किटिनक ततक्ति उ द्रांतित ज्रांतित थिमितक डे किटितक किटिनक ततिकट डे दांधिमि दांशिन किट ऽ तकुदिगि थोंगिणि ऽ थैथा तनथै थैथा डे ध्रमिकिट धिमिक्टि डे ताहं। ताहं। तिद्व थों ० इति पुष्पवाण तास संपूर्णम्॥ **जिल्यते**

पुष्पवाण ताल, चौईस तालो २४.

पग्मलु. अक्ष्म ताष्ठ मात्रा.	थे द्रत ताल मात्रा पथम द्रतकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सी मात्रा आधि	था द्रुत ताल मात्रा द्रुतकी सहनाणी अंक हेसी ताल लीक हेसी मात्रा आधि	तत दुत ताल मात्रा दुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	थे द्रुत ताल मात्रा ० ४ = द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि
अक्षा	ltro o	tr, o	יאן איניי	to fure o
चचकार,	/ IC	ΛC	ΛC	ΛC
ताल.	9.	ก๋	ก	20

3 0
ताला
चाइस
ताळ,
पुष्पवाण

चनकार.	प्सिलु.	। सहनाणी अक्ष्म ताल मात्रा.	समस्या.
	वाहं	उच्च ताल मात्रा	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
1	थोंगा	उच्च ताल मात्रा । ६ ।	त्युकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
1	धिमिधिमि	उच्च ताल मात्रा । ७ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
	थोंगा	उच ताल माता	त्रघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
थेई तिततत	हिगीदां हिगीदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।८	है सो मात्रा त
तिततत	तकृगिडि दिगिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।	ाट टीक हे सो मात्रा को झाटो
तिततत धर्ड	धींधीं तक- धिमि धिमितक	प्लुत ताल मात्रा (३ ११ ॥६)	सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
थेई तिततत थेई थेई	किटितक कि- टितक ततकिट	प्लेत ताल मात्रा (डे १२ ॥८)	त्तुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन गोलकुंडाली हाथकी परिक्रमा विंदी झाली

		7						•
समस्या.	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताउँ ठीक हे सी मात्रा दोय	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय	गुरुका सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा दोय	गुरुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सा मात्रा दीय	प्लेतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा तीन	प्लुनकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन	प्तुतकी सहनाणी अंक हे सी ताउँ ठीक हे सो मात्रा तीन	ट्उतकी सहनाणी अंक हे सी ताउ ठीक हे सो मात्रा तीन
	विंदी हाथको झाछा	विंदी हाथको झालो	विंदी हाथको झाला	विंदी हाथको झाले।	गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो	गोलकुंडालो हाथकी परिकमा विदी झालो	गोछकुंडाछो हाथकी परिक्रमा विंदी झाछो	गोउकुंडाठो हाथकी परिक्रमा विंदी झाठो
सहनाणी	गुरु ताल मात्रा	मुरु ताल मात्रा	गुरु ताल मात्रा	गुरु ताल मात्रा	प्लुत ताल मात्रा	प्लुत ताल मात्रा	प्लुत ताल भाग	प्सुत ताल मात्रा
अक्षर ताल मात्रा.	ऽ १३ ।	ऽ १४ ।	ऽ १५ ।८	ऽ १६ ।	(हे १७ ॥६)	(रे १८ ॥६)	(3 १९ ॥८)	(३ २० ॥५)
प्रमञ्जे.	दांधिमि	तकुनक किणि	थिधिक्टि	तकृदिगि	धेथा ततथे	धुमिकिट धुमि-	जगनग थारि-	गिडिग़िड तकि
	दांधिमि	तक	थिधिक्ट	थॉगिणि	थैथा	किट थैथा	थां थरिथां	दिगि थोंगिण
च चका(,	थेई विवतत	थेई निततत	थेई तिततत	थेई तिततत	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिरतत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई
नाउ.	er.	م م	ř	<u>6.</u>	2	2	8	8.

पुष्पबाण ताल, चौईस तालो २४.

ताल.	चनकार.	प्समृद्धे.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
29.	्रम्ब ।	महिं	ल्खु ताल मात्रा। २१ ।	उचुकी सहनाणी अंक हे सी वाल लीक हे सी मात्रा एक
8	eter (d)	तहिं	छचु ताल माता । २२ ।	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक
m.	ne	विदि	द्भत ताल मात्रा ० २३ ==	दुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल ठीक हे सी मात्रा आधि
20	/tc	घो	दुत ताल मात्रा ० २४ ==	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि

प्रतापशेष्वर ताल, चौतालो ४.

नाट्यमें अथं पताषसेखर तासको ससण सिरुपते ॥ जामै एक प्सुत होष । प्सुतकी तीन माना ॥ और दोय द्वत होय । द्वतकी आधि बाजा ॥ एक द्विराम होय । द्विरामकी पौज मात्रा ॥ ऐसं रीतसों जामें च्यार ताछ होय । सो प्रजापशेखर ताछ जानिये ॥ अथ बरितिकेंगें। षट् पितापुत्र नामें तालतीं। प्लुत द्रुत द्विराम लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांकी पतापशेखर नाम किनों॥ मनापशंखर तालको स्वरूप लिख्पते ३००० थया थैरत ताथों उतक विभि नथों ३ इति मताशोखर ताल संपूर्णम् ॥ अथ प्रतापशेखर तालकी उत्पन्ति लिक्यते॥ शिवजीने उन मार्गतालनमें विचारिक गीत नृत्य वाद्य

षष्ठी तालाध्यायं-प्रतापशेखरताल और समताल दश ताली. ३७५

,		_		रिवाल
समस्या,	मथम प्लतकी सहनाणी अंक हे तो ताल लीक हे तो मात्रा तीन गोलकुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो	ाउ ठीक हे सी	दुतकी सहनाणी अंक हे सो वाल लीक हे सो मात्रा आधि	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पाँण
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	प्टुत ताल मात्रा (डे१ ॥६)	द्रत ताल मात्रा ० २ =	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्वि. ताल मात्रा ১ % =
म्समञ्जे.	थैथा थैतत ताथों	प ् रक	थिमि	नथों
चचकार.	थेई तिततत थेई थेई	, lt	Λυ	तत
ताल.	9.	oʻ	m	ဆိ

मतापशेखर ताल, चीतालो ४.

समताल, दश तालो १०.

अथ समतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके। गीत नृत्य बाद्य नादयमें वर्तिवेकों। जुने चुत होत द्विराम लेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको समताल नाम किनों॥ अथ समतालको लक्षण लिख्यते॥ जामें दीय पुत होय। दुतकी भाषी मात्रा॥ दोय छुवे होय। दुतकी आधी मात्रा॥ दोय लुवे होय। दुतकी आधी मात्रा॥ दोय लुवे होय। दुविराम होय। दुतकी आधी मात्रा॥ दोय लुवे होय। दुविराम होय। द्विराम होय। दुविराम होय। दुतकी आधी मात्रा॥ एक द्विराम होय। द्विरामकी पैराण मात्रा॥ या रीतसों गीता-विके मुम्ब उपजावे। सो समताल जानिये॥ यह ताल दश तालो है॥ अथ समतालको स्वरूप लिख्यते । याहिको लोकिकमें परमूल कहते है तक्थर तक्थिर तांधिम उत्तिहाधि किट्धिम तक्धिम उ वाहै। तह ॰ तह ॰ ताहं। ताहं। जग ॰ जग ॰ तथें े इति समतास्न संपूर्णम्॥

समताल, दश तालो १०.	समस्या,	पथम प्लेतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको बालो	भंक हे सा ताल लीक हे सी पा हाथकी परिकास विद्या हाथको	कि हे सी ताल जीक है सी मा	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	द्वतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधि	लघुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	उपुकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा एक	द्वतकी सहनाणी अंक हे सी वाट टीक हे सी मात्रा आधि
W.	सहनाणी असर ताल मात्रा	प्लत ताल मात्रा (३ १ ॥)	प्तुत ताल मात्रा े र ॥७)	ल्खु ताल मात्रा । ३ ।	द्वन ताल मात्रा 8 =	डुत ताल मात्रा	ठम्न ताल मात्रा । ६ ।	ल्यु ताल मात्रा । ७ ।	डुत ताल मात्रा
	म्(मेलु.	तकथर तकथरि तांधिमि	तिकटाध किट थिमि तकथिमि	ताहं	je je	तह	नाइं	ताहं	ज्या व
£	चचकार.	थेई तिततत थेई थेई	थेई तिततत थेई थेई	श्रुक	de l	ЛC	हों हैं इस्केट	'ল ল	, lo
	ताल.	o l	انه	mi	သ	ا ئو	wi	9'	v

ė
ताला
दश
ताळ,
E

ताल.	च चकार.	प्रमञ्जे.	सहनाणी अह्मर ताल मात्रा.	समस्या,
نه	/IC	जग	द्रतः ताल मात्रा ० ९ =	बुतकी सहनाणी अंक हे सी ताल लीक हे सी मात्रा आधि
90.	तत	तथै	द्वि. ताल मात्रा े १० ≡	द्विरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा पोंण

रंगद्यीत ताल, पंच तालो ५.

मिल्यते॥ जामे तीन गुरु होय । गुरुकी दीय मात्रा॥ एक उचु होय। उचुकी एक मात्रा॥ एक प्लुत होय। प्लुतकी तीन अथ रंगदोत तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालमें विचारिके । गीत नृत्य वाद्य नाटचमें वरति-मात्रा ॥ या रीतसों गीतादिकमें मुख उपजावे । सो रंगद्योत ताल जानिये ॥ अथ रंगद्योत तालको स्वरूप लिरुयते ऽऽऽ। डे विको। उद्धर चंचपुरसों गुरु छषु प्लुत छेके। देशी ताल उत्पन्न करि। वांको रंगद्यीत नाम किनों॥ अथ रंगद्योत तालको लक्षण अथ पाठाक्षर लिल्पते ॥ याहिको लीकिकमें परमतु कहते है नाकिट नाकिट ऽ धिमिधिमि धिमिकिट ऽ थरिकुकु अरिकुकु ऽ नाहं तकादीम दिगिषिषि गनथों 3 इति रंगदोत ताल संपूर्णम् ॥

रंगद्योत ताल, पंच तालो ५.

	•
समस्या,	पथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सी तांत तीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।८
प्रमञ्जे.	ताकिट ताकिट
चचकार.	थेई तिततत
E C	

रंमधोत ताल, पंच ताली ५.

			सहनाणी	
નાહ	· idea	·80+)}	असर नाल मात्रा.	समस्या.
ρ	के दिवा	विभिधिमि	गुरु ताल मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीय
خ		विमिकिट	8 3 18	विंदी हाथको झालो
64	शेहे निततत	थरिकुकु	गुरु ताल मात्रा	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय
÷			s ع ا	विदी हाथको झालो
3	浩	भुद्	छषु ताल मात्रा	4 4 - 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 - 4 4 4 - 4 4 4 - 4 4 4 - 4
•	ř	<u>.</u>	- ∞	के जिल्ला अक है तो पाठ अकि है मान के जिल्ला कि जिल्ला के
3	थेई तिततत	तकदिगि दिगि	प्लेत ताल मात्रा	प्लेतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दीन
ب	थेई थेई	विधि गनधों	(3 4 115)	कडाले हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झाले

इति देशी ताल संपूर्णम् ॥

अथ अणु आदि सातों अंगनके प्रस्तारको लक्षण लिक्यते

इष्ट तालके अणु आदि सातों अंगनमें जितने अंग हाय। तिनका गुरु प्लुत आदि एक अंग राचि। पंथामैं भेरेनेमें च्हुतै आदिकसों छोटो गुरु आदिक अंग। चुत आदिकके नीचे जितिये ॥ और वाक पहडे भेर्ने दाहनी ओरको जे अक्षर रास्तिये ॥ तहां मथम मेर्ने जे दोय च्यारि । प्लुत आदिक अक्षर होय । तिनमें जो मथम प्लुत आदिक होय । ताके आगे वा हीय। ते अक्षर आगते दुत्तरे मेर्ने पहिलेना जो छोटो अंग गुरु आदि जिल्पेह तौकी दाहनी ओर जिलिये ॥ और पथ्न जनिराम । जनिरामैसों छोटो उनु । उनुसों छोटो दिनरामं । दैनिरामसों छोटो हुतै । हुतसों छोटो अणु । यांते अणुैसों सब बह भेदमें पहले प्लुत आदि बड़े अंगसों। दुसरे भेर्के पहले गुरु आदि छोटो अंगमें। जो अगु आदि बैटे। सो अंगु आदि अंग। गुरु आदिक बांई और मानी भरिवको जिलिये ॥ ऐसं पर्तार कीजिये जहां ताई सगरे प्लतादिकनके । अणु अक्षर होय ॥ र्षिहां बड़े अंग प्डुते आदिक आगीत भेर्मे। गुरु आदिक छोटो अंग जिलिके कि है।। प्डुरेसों छोटो गुरु। गुरुसों छोटो अंग है।। ओर प्लुत अंग सबसों बड़ो है यह जांनिये।। इति प्रस्तार त्रक्षण संपूर्णम् ॥

अथ प्रस्तारको उदाहरण लिख्यते॥ नो एक अणुको पस्तारं करे। तहां पहठे भेर्मे एक अणुँ धारिये। आगे अणुते छोटो अंग निह है। यार्त मस्तार नहीं चले ॥ या अणुका एक भेर् जीनिये … ॰ (१)॥ इति अणुमस्तारको लक्षण संपूर्णम् ॥ अथ द्वतप्रस्तार लिक्पॅत ॥ जो द्वतको प्रस्तार करे । तहाँ पहले एक द्वत धरिये । सो एक भेदें … ॰ (१) ॥ आगे

गुतसाँ छोटो अंग अणु है। सी आगड़े भेदमें जिबिये ॥ आर दुतकी मात्राकी भरति कारिवेकों ये अणुके बांई ओर एक अणु और लिसिये ॥ ऐस दोय अणुको दुसरो भेर् है … ॰ ॰ (२)॥ अणुते आगे प्रस्तार नहीं ॥ ऐसे द्वतके दोय भेद जानिये ··· • (१) ~ ~ (२) ॥ इति द्वतको मस्तार संपूर्णम् ॥ अथ द्विरामको प्रस्तार क्लिक्यते॥ जो द्विरामको प्रस्तार करे। वहां पहले द्विराम लिखिये॥ ऐसी एक मेद ... और तीसरे भेर्ने दुतकी दाहिणी ओरको अणु। या अणुके दांहिणी ओर जिबिये॥ और द्विरामकी मात्रा भरिवेकों। इन दीक अणुके बांई ओर एक अणु और जिबिये॥ सो बोथों भेद ··· ~~~(४)॥ ऐसै दिविरामके च्यार भेद जांनिये ··· े (१) ~ ॰ (२) 🌢 (३) ॥ और दाविरामसों छोटो अंग द्रुत । सी दुसरे भेरमें लिलिये ॥ और द्विरामकी मात्रा भरिवकों । द्रुतके बांई और एक अणु या अणुके बांई ओर एक द्रुत लिबिये ॥ सी तीसरी मेर् … ॰ ॰ (३)॥ आगे द्रुततें छोटो अणु सी चीथे भेर्मे लिबिये ॥ किसिये॥ सो दुसरा भेर ... ५ ० (२)॥ आगे द्वते छोटो अणु । सो तीसरे भेर्मे जिसिये॥ फेर द्विरामकी मात्रा भरिवेकी

अमाग उचुने छोटो इविराम । सी दुसरी भेर्मे जिखिये ॥ और उचुकी मात्रा भरिवेकों । या द्विरामकी बाई ओर एक अथ लघुको प्रस्तार लिख्यते॥ जो लघुको पस्तार करे। तहां पहले एक लघु लिखिये॥ सी पहलो भेद हें ···।(१)॥ जिलिये। सी दुसरी भेर ... ७० (२)॥ आगे र्विरामतें छोटो दुन । सो तीसरे भेर्मे जिलिये ॥ या उघुकी मात्रा मिरिवेकों। द्रुतके बांई ओर एक द्रुत और लिविये ॥ सो तीसरों भेर ··· ॰ ॰ (३)॥ आगे द्रुतरें छोटो अणु। सो आते प्रथम इविरामते छोटो द्रुत ॥ सी छटवे भेर्ने लिखिये ॥ और पांचवे भेर्क द्विरामकी दाहिणी ओरको अणु । या तो गांचने भेर्मे जिलिये॥ और उषुकी मात्रा भरिनेकों या अणुके बांई ओर एक द्विराम लिलिये॥ सो पांचनो भेद … ১ (५)॥ बोधे मेहमें जिखिये ॥ और तीतरे मेहमें पथम द्रुतके दृहिणी ओरको द्रुत। या अणुके दृहिणी ओर जिखिये। या लघुकी मात्रा भरिवेकों। इन द्रतअणुके बांई ओर एक अणु और लिबिये। सो बीयो भेर् … $\sim \sim \circ (8)$ ॥ आगे द्रुतरें छोटो अणु। नुतके दृष्टिणी और लिखिये।। या त्रवृक्ती पात्रा मरितेकों। या द्रतके बांई ओर । एक अणु लिखिये।। सी छटों मेर् ० ८ (३) ८ ८ ८ (४) ॥ इति द्विरामको पस्तार संपुर्णम् ॥

… ०००(६) आगे मध्यके द्रुतको छोटो अगु । तो सातवी भेर्ने लिखिये॥ और छटे भेर्ने द्रुतकी दाहिनी ऑरको अणु या

निसिये ॥ सो त्रघुको आठवो भेर् … ॰ ॰ ॰ (८) ऐसे त्रघुके आठ भेर् जानिये …। (१) ॰ ॰ (२) ॰ ॰ (२) अणुके दाहिनी और लिखिये ॥ या उमुकी मात्रा मरिवेकों । इन दोऊ अणुके बांई ओर । एक द्रुत लिखिये ॥ सी सातवी मेंद्र ... ॰ ॰ ॰ (७)॥ आगे द्रुतरें छोटो अणु। सो आठवे भेद्में लिस्बिये॥ और सातवे भेदमें। द्रुतकी दाहिनी ओरके दोऊ अणु। या अणुके दाहिनी शोर लिखिये ॥ या लघुकी मात्रा भरिवेकों । इन तीनो अणुके बांई ओर । एक अणु और ~~。(8)~~(५)~。~(६)。~~(७)~~~~(८)॥ इति अणु । द्वता । दविराम । छघुके मस्तार मेद संपूर्णम् ॥ या रीतसों छबु। छविराम । गुरु। प्लुत। इनको पस्तार कीजिये ॥ जहां दोय तीन आदिक अंगनको पस्तार होय तहां शास्त्रोक रीत समझि। याहि तरह कीजिये ॥ इति प्रस्तारमेद लक्षण संपूर्णम् ॥

अथ अणु आदि सातों अंगन प्रस्तार भेदकी संख्या लिख्यते ॥ तहां पथम अणु है। ताके पस्तारके एक भेद आउवो गुरु। ताके पस्तारके एकसी चीद्भेद् है ॥ ११४ ॥ और नीवो अणु गुरु। ताके पस्तारके दोयसी बाईसभेद् है ॥ २२२ ॥ है।। 9 ॥ और दुसरी द्रुत है। ताके प्रस्तारके दोय भेद है।। २ ॥ तीसरो द्विराम है। ताके प्रस्तारके च्यार भेद है ॥ ४ ॥ और चीथो उचु है। ताके प्रस्तारके आठ भेद है।। ८ ॥ पांचवो अणु उचु। ताके प्रस्तारके पंधरा भेद है।। १५ ॥ और दशाबी द्रुत गुरु। ताके प्रस्तारके च्यारसी चौतीस भेर है ॥ ४३४॥ और ग्यारवी द्विराम गुरु। ताके प्रस्तारके आठसी सतेताछीस बनीससेतवीस भेद है।। ३२३३ ॥ किर चीदवी द्रुत प्लुत । ताके पस्तारके नेसिठिसेसोले भेद है ॥ ६३१६ ॥ और पंधवी द्रियाम भेद है।। ८४७ ॥ बारवी प्लुत । ताके प्रस्तारके । सीलेसे छपन भेद है ॥ १६५६ ॥ और तेरवी आण प्लुत । ताक प्रस्तारके ज्खुत। ताके मस्तारके। बारहजार तीनसे छनीस भेद है।। १२३३६ ॥ और सोलबो लघु ज्बुत। ताके मस्तारके। चोईस हजार अविराम छटो। नाके मस्तारके तीस मेद है।। ३०॥ और सातवी अणु छविराम है। ताके मस्तारके अठावन भेद है।। ५८। ताल्याणवे मेद है।। २४०९७ ॥ ऐसे ही एक एक अणु वधते संख्या वधती जाय है।। अथ प्रस्तारसंस्था करिवेको लक्षण लिक्यते ॥ तहां प्रथमके कोठांतं लेके । वाथो कोठाताई च्यारो कोठानमें अनु-कमर्सो च्यारि अंक धरियं … १।२।४।८ ॥ पांचवे इत्यादि कोठाके जोड । उत्तरे कमर्सो प्रथम। दूसरे । तीसरे । वीथे । छटवे। आठवे । और बारावे कोठाके अंक ॥ ताके छटवो । आठवो । बारवो कोठा नहि मिले तो पांचवे । सातवे । ग्यारवे । कोठा-द्यावो कोठाको जोड ··· २२२। ११ था पटा ३०। टा २॥ ग्यारवो कोठाको जोड ··· ४३४। २२२। ११४। पटा १ ॥ बारपे काठाको **णोड** ··· ३२३३।१६५६८४७।४३४।११४॥३०।२ ॥पंघनो कोठाको जोड ···६३१६।३२३३।१६५६।८४७।२२२।५८।४॥ नकें अंक धरिये। तथा अब पांचवे कोठाको जोड … ८१४१२१९ ॥ छटवो कोठाका जोड … १५८८४१२१९ ॥ सातवो कोठाको जोड …३०।१५।८।४।१॥आठवो कोठाको जोड … ५८।३०।१५।८।२।१॥ नवमो कोठाको जोड … ११४।५८।३०।१५।४॥ तीलवी कीठाकी जोड ... १२३३६।६३१६।३२३३।१६५६।४३४।११४।८॥

•							
-,	n 0	m p	∞ [−]	ۍ- پ-	w-,-	95	V 50
6	a	200	V	2	0	2	366
or ,	° °	99 S S	8 %	9.8 5.	8 ° °	2 10	w C
222	33 E & 39	9 30 V	200	क्ष क	85 EF 35	1 mm	9 8 8 8

॥ इति प्रस्तारसंख्या यंत्र संपर्णम् ॥

द्वेत अंगनकों कम जानिककों संख्या रीतिका उक्षणें छिख्यते ॥ जहीं कोउ अणु आदिक सातों अंगनके प्रतारमें । पहछे दुसरे आदिक भेद्में। अणु दुत आदि अंगनकों कम पुछे। तहां जा अंगके मस्तार पुछे ता अंगके जितने अणु होय तितने कोठाकी पिकराचि। उन कोठानमें संख्या जंत्रके कमसी। एकाहिक अंक मिरेये ॥ जो दूसरी तिसरा भेर पुछे तहां पुच्छयो अंक। रीयको वा तीनको अंक 🛚 वीं पंकिक अंति कोठारें जो अंक होय तारें घराईये। घराया पीछे जो अंक रहतारें होय । सो अंतिके पातिके कोठारें हेके। पहहे कोठाताई उत्तरे कमसी कोठाकी अंके रहतीमेसे घटाईपे। तब पूछे भेरके। अणु दुर्त आदिक अंगनको कम होय है। तहां अंति अंकपॅसे पहलो जहां भिलते तीन अंक घटे तहां उठघु लिजिये॥ जहां जो पहले एक वा दीय तीन अंक घटते। आगे एक वा दीय अंक नही घटे। आगे एक वा दोय वातीन मिलते वान्यारेन्यारे घटे। तहा कहें कमसों द्वतद्विशाम लघु अक्षर कमसों जानिये॥ जहां अय नष्टको लक्षण लिल्पेते ॥ मंस्पारीति ॥ अणुआदि सातों अंगनके पस्तौरमें दूसरा तिसरा आदिकपूछे तहा सब मेदनमें अणु छटवो कोठा । आठवी कोठा घटे । पांचवो सातवों नवमी दर्शवी ग्यारवों कोठा छोडिये। तहां प्लुत लिजिये ॥ ऐसे सब भेदनमें अंतिकें अंकमें। अंतिक पासिक कोठासों तेकं। तगते च्यारि कोठा घरे। और पांचवो कोठा छोडिये। तहां खाबिराम जिजिये। अंक नहीं घरे तम आणु लिजिये।। और जहां अंक घरे तहां द्वत लिजिये। जहां मिलते दीय अंक घरे। तहां दिषिराम लिजिये। ऐसेही च्यार कोठातो लगते। और छटवी कोठा घटे। पांचवी सातवों कोठा घटे तहां गुरू लिजिये ॥ और लगते च्यार कोठा अपनी बुद्धीसों अणु आहिक अंगनसों समझिये ॥ इति नष्ट विचार संपूर्णम् ॥

नष्ट उहिष्ट

पटाईपे ॥ पराया पीछैं जो अंक रहे एक दोय आदिक। सो जिले भेरकी संख्या जांनिये ॥ अथ उदाहरण लिक्छने ॥ जैसे अथ उदिष्टको लक्षण लिक्यते ॥ जहां अणु आदि सातों अंगनके पहले दुसरे आदि कोउ एक भेद लिखि ॥ वांकि संख्या पूछे। तहां जिसि भेर्मे जो अणु आदिक अंग होय। तिनके नष्ट रीतिसों जे संख्याके अंश आवे।। ते अंतिके अंकमें

संगीतसार

कमर्सों पहले अणुरे एककों । दुतरे दीयकों । और अणुरे च्यारकों ये अंक धरियें।। आठको अंक अंतिषे धरियं।। या आठके अंकमें इइं तिसरों अणु हे तो तिसरो च्यारिकों अंक है सों नहीं घरे ॥ दूसरो । २ । दुत है। तो दूसरो अंक दोयको है। सो आठको ।८। अंकमें घटाइये।तब छहको अंक रहे॥ और पहलो। १। अणु है।तो पहले एकको अंकहे। सो छहका अंकमें नहीं घटाइये। तो या लिखिये भेदकी संख्या आठ कम दे। याने छहको । ६ । अंक है ॥ या छटवों भेद जानिय ॥ ऐसेही द्विराम आदिक अंक जहां तमुके आर मेद है।। तहां अणु द्रुत अणु ... ० ० ...या मेदकी संख्या कहों। ऐसे पूछे।। तहां ए मेद तिसिये।। तमु मेदके संख्याके अंक बेटे कमसों च्यारको दोषको एकको ए मिल तीन अंक। तष्ट रीतसों घटाइये॥ अंक विनाघटे। अणु॥ अंक घटे। द्वत ॥ दोय मिलते अंक घरे। व्विराम ॥ मिडते तीन अंक घरे। उषु ॥ ऐसेही अविराम गुरु प्लुतके जा कमसों नष्टमें घरे। ताही रीतसों घराईये ॥ निसे भेर्मे होय । ताकी संख्या जानिवेकों । नष्ट रीततो कमतों अंक घराये संख्या जानिये ॥ इति उद्दिष्ट संपूर्णम् ॥

ट्युच्लुत प्रसारके सोटह अणु होय । तो यहां नीचटी आंडपंकि सोटह कोठानकी रिचये ॥ पीछे बाई ओरतें एक एक कोठा वाटि। उपरती उपरती उपरती उपरती पिक होय ताहां ताई॥ ऐसेहि अणुमेरुमे ऊभी सोटिह पंकि रिचये ॥ ऐसे मेरु रचके नीचटी पिके आदि सब पंकिनके पहटे तिरछा सब कोठानमें । एक एकको अंक भरिये ॥ अपेर दूसरे हुसरे कोठानमें एक दोय आदिक अंक कमसों भरिये ॥ फेर नीचली पिक भरिये। ताको प्रकार कहत है ॥ नीचली अपेर कोठानमें एक होय आदिक अंक कमसों पहटो कोठा जिस्ते पिक परिये। ताको प्रकार कहत है ॥ नीचली पिक भरिवें जो कोठा भयो होय । योहि उत्लें कमसों पहटो कोठा छोडि । दुसरो तीसरो चोथो छटवो आठवो और बारवो इन कोठानके जितने अंक होय । तिनकों जोडि वाकों आगडे कोठामें परिये ॥ यहां पत्यक्ष अंतको चीथो छटवो आठवो अथ षट् प्रस्तार जानिये ॥ अणु आदि सात अंगनके सात मेरु है । तहां अणु मेरुको लक्षण लिष्ध्यते ॥ जहां जो कोऊ तालको मस्तार कीजिये। वा तालके जितने अणु होय । तितनी गिणतीके कोठा रिव । एक नीचली पिक कीजिये॥ अगतो । पिने को । जोडवेमें नहीं लिजियं ॥ और छटवों आठवी बारवी कोठा नहीं मिलेतों उन कोठानकों ग़तवो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ या रीतसां नीवली पंकि भरिये ॥ दुसरी आदिक उपरली-उपरली पंकि भरिवेको प्रकार कहत है ॥ उपरली पंकिमें जो कोटा भन्यो होय । ता कोटाको नीचलो कोटा। नीचले पंकिनसे। पहलो कोटा गिणके। उलटे कमसो उपरली पंकिको। दुसरो तिसरो चोथो छटवो आठवा बारवो कोटा होय । इन सब कोटानके अंक जोडि । आगले कोटामें धरिये ॥ यहांभी पंकिको बाई ओरको प्रत्यक्ष अंतको । चोथो छटो आठवो बारवो कोटा। जोडवेमें नहीं लीजिये ॥ और छटवो आठवो बारवो कोटा नहीं मिले तो। उन कोटानको आगलो। याने पांचवो सातवो ग्यारवो कोटा लीजिये ॥ वा रीति नीचली पंकि कीजिये ॥ यही रीतसे दुसरी आदिक उपरली उपरली सब पंकि भरिये ॥ यह रीति जानिये ॥ उन पंकिनके सबते नीचलेके पंकिनमें जितनें कोटा होय । तहां पथनसें नीचले कोटानमें । अणु हीन भेद ॥ तातें उपरले उपरले कपरले कपरले कोटानमें। एक अणु दोय अणु आदिक भेद कमसों जानिये ॥ और सब कोटा जोडी ए तालके पस्तारभेदनकी संख्या होत है ॥ इति अणु भेरको लक्षण संपूर्णम् ॥

संगीतसार.

१. अणुमेरु यंत्र.

														Ī	9
														9	94
													9	98	94
												9	93	93	308
											9	92	92	90	१५६
										9	99	99	99	932	*44
									9	90	90	६५	190	३९५	৩৩১
								9	9	٩.	48	50	305	५८५	१६२ ९
							9	۷	c	**	७२	२३६	*32	११६६	ર ૨૩૨
						3	٠	٠	34	ખુક	१७५	300	८६५	9868	3430
					9	Ę	Ę	રહ	*2	१२५	२५०	439	९३८	२१००	3<22
				9	4	ч	20	3 o	૮૫	134	330	५५५	9209	२०९५	४२१५
			9	~	~	98	२०	чх	٥ د	१८९	300	६२६	9080	२०२३	3408
		9	3	3	٩	१२	39	*2	९६	9 7 2	२८५	***	८३९	9336	२३१८
	,	ર	ર	ч,	٤	94	96	٧0	, 4×	908	૧५૨	२७५	¥90	७१७	१०९४
,	9	9	٦	ર	ч	ч	99	93	28	32	५६	ષ્દ	938	963	256
-	0	٥	1	۰ I	ì	<u>ټ</u>	s	ۍ د	o s	٥٥	ŝ	~ s	د د	े डे	13
9	ર	3	R	4	é	v	د	8	90	99	92	93	98	94	9 &
9	2	٧	c	94	3 €	५८	998	222	*3*	C 7 '0	१६५६	3333	€39€	12338	२४०९५

२. द्वत मेरु.

अथ द्वत मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ या दुतमें प्लुत आदिक अंक जितने अणु होय तिन कोठाकी नीचली पंक्ति कीजिये। या पंक्तितें उपरली दुसरी पंक्ति । बांई ओरतें एक कोठा घाटि कीजिये ॥ तातें उपरही तीसरी आदिक पंक्ति जितनी होय। तितनी सब आपआपसों पहली पंक्तिसों बांई ओरतें दीय दीय कोठा घाटि किजिये ॥ ऐसे दुत मेरुमें उभी नो पांकि रचिये ॥ अब दुत मेरुकी नीचली पंकि आदिक पंक्तिमें एकादिक अंक भरिवेको प्रकार कहते हैं ॥ नीचली पंक्ति आदिक एक कोठाकी पंक्ति ताईं। जितनी पंक्ति होय। तिनके पहले पहले कोठामें। एक एक अंक भरिये ॥ इन पंक्तिनके दूसरे दूसरे कोठामें । एक दोय तीन च्यार आदिक अंक कमसों भरिये ॥ ऐसे दोय दोय कोठा भरिये ॥ अब नीचर्टी पहली पंक्तिके। तीसरे आदिक कोठा भरिवेको प्रकार कहते हैं। जो संख्या जंत्रकि नाई ॥ जाकोठाँमें अंक भरनो होय ता कोठाकी पासिके कोठाते छेके । संख्या जंत्रकी नाई उछटे कमसों ।सात कोठा लिजिये॥ उनके अंक जोडि चार कोठाताई आगले कोठामें अंक भरिये ॥ यहा च्यार कोठा भरे उपरांत । जो पांचवा आदिक कोठा भरनो होय । वाके पासके कोठांते उलटे कमसों दूसरे कोठाको छोडि । संख्या जंत्रके कमकी रीतिसों सात कोटा जोडी। अंक भरिये॥ तहां द्वत मेरुमें छटवी आठवी बारवी कीटा नहीं मिले । तो ऊनको पहलो पांचवा सातवो ग्यारवो कोठा लिजिये ॥ और छटवो बारमो कोठा मिलेतो वोही लिजिये ॥ यातें सात कोठानके जोडमें उलटे कमसों । दुसरो पांचवो सातवो नवो ग्यारवो ये कोठा छोडि । बाकि कोठा जोडिये॥ और तेरवो आदिक बारहते उपरांत कोठा नहीं लिजिये ॥ ऐसे नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब ऊपरठी ऊपरठी पंक्तिनके भरिवेंको प्रकार कहते हैं ॥ यहां ऊपरठी पंक्तिनके तीसरे आदिक कोठामें । ऊपरली पंक्तिके दूसरी कोठातें उलटे कमसों दुसरो एक अंकको पथम काेठा है। सो तो छोडि। वा काेठाके नीचली पंक्तिकाे कोठा होय । सो दूसरे कोठाको स्थान ठिजिये । बाकिके पहले संख्या कमसों जोडि तीसरे आदिक कोठानमें भरिये। इन ऊपरली पंक्तिनमें छटवो आठवो बारवो कोठा नाहि मिलेतो । पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा नहीं लिजिये । ऐसे दुतमेरुकी ऊपरली सब पंक्ति भरिये ॥ यहा भी अणु मेरुकी सिनाई एकादिक कोठानकी आहि सोलह पंक्ति रचिये॥ उन पंक्तिनके सबतें नीचलेके पंक्तिके कोठानमें। विना दुतके भेदनकी संख्या जानिये ॥ और दूसरे आदिक उपरहे कोठानमें कमसौं एक दुत दोय द्रुत आदिक भेदनकी संख्या जानिये ॥ और सब कोठा जोडि ए तालके प्रस्तार भेदनकी संख्या होत है ॥ इति द्रुतमेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥ २. द्रुत मेरु यंत्र.

															9
													9	٥	3 &
									¥		٩		२८	49	२७३
									٩	Ę	29	६२	908	४६२	9 9 ६ 9
							9	ч	૧૫	80	904	. २६१	६१५	groy	3340
					9	*	90	२४	49) = E	२९८	Exo	9343	200°	પ ૭ ૧ દ્
_			9	3	ધ્	9.3	30	દ્દ્ 3	920	રયુષ્	400	५८९	४९०५	३६३९	६९०९
	9	ર	3	Ę	9 3	28	44	८२	१५२	३७६	79E	८९३	५ ६० ८	२८६८	५०९३
9	۹,	ર	Υ	Eq	90	90	२९	80	60	9:8	२२६	300	६ ३२	૧૦૫૬	१७७६
7	4	3	*	4	٤	હ	c	5	90	99	93	13	9.8	94	9 &

३. दविराम भेरु.

अथ द्विरामको लक्षण लिख्यते ॥ प्लुन आदि अंगके जितने अणु होय। तितने याने सोलह कोठाकी अणुमेरके सिनाई। नीचली पंक्ति प्रथम कीजिये॥ ताकी उपरली दूसरी पंकि। बाई ओर दोय कोठा चाटि कीजिये॥ आगे तीसरी आदि उपरली पंकि जितनी होय। तितनी सब आप आपकी पहली पांकिसों। बाई ओरतें तीन कोठा घाटि कीजिये॥ ऐसे दोय कोठाकी पांकि ताई। छह पांकिको दिवराम मेरु रचिये॥ अब दिवराम मेरुको भिरवेंको प्रकार कहे है।। यहां सब पांकिनके प्रथम कोठानमें। एक एकको अंक भिरये॥ और दूसरे दूसरे कोठानमें। पहली और दूसरी पंकिमें। दोऊ ओर। दोय दोयको अंक भिरये॥ और तीसरे आदिक पंकिनमें। तीन च्यार आदि अंक कमसों दुसरे कोठामें धरिये॥ अन पहली पांकि। नीचली पांकि। भिरवेंको प्रकार कहे है ॥ पहलें दोऊ कोठा जोडी तीसरे कोठामें धरिये॥ ये तीन कोठा जोडी चोथे

कोठोमें धरिये ॥ ऐसे च्यार कोठा भरि । कमर्सी तीसरी कोठा छोडि । संख्या क्रमके जंबके सिनाई । पहलो । दूसरो । चोथो । छटो । आठवो । बारवो कोठा । ऐसे सात कोठा जोडि पांचवें आदिक कोठानमें धरिये ॥ यहां छटवो आठवो बारवो कोठा नहीं मिले तो। पांचवो सातवो ग्यारवो कोठा लीजिये॥ ऐसे नीचली पांकि भरिये ॥ अब उपरली पांकि भरिवेंको पकार कहे है ॥ यहां ऊपरली ऊपरली पंक्तिके तीसरी कोठाके नीचली कोठा होय ये कोठा और ऊपरली पंक्तिके दोय कोठा । यें तीन कोठा जोडि । ऊपरही दूसरी पंक्तिके तीसरो कोठा अरिये ॥ ऐसे तीसरे कोठाके नीचलो कोठा जोडि । ऊपरलो काठा छोडि तात उन्हें कमसी दूसरी पहिन्छी कोठा हेके । चीथी कोठा भरिये ॥ ऐसैहि पांचवे आदिक कोठानमं धरिये ॥ यहां जा कोठाको नीचछो कोठा जोडिये सो कोटा ऊपरली नहीं लीजिये।। यहां छटवो आठवो बारवो कोटा नहीं मिलेतों । पांचवों सातवों ग्यारवों कोटा नहीं लीजिये ॥ ऐसे ऊपरली सब पंकि भरिये । यहां उभी छह पंक्ति रचिय ॥ यहांभि अण महकी सीनाई सबसे नीचर्छा पंक्ति सोलह कोउनकी रचिय ॥ उभे पंक्तिनमें । सबतें नीचला कोठानमें । विना द्विरामके भेदनकी संख्या है ॥ तातें उपरछे उपरछे कीठानमें । एक दोय आदि दविरामके भेदनकी संख्या जानिये ॥ इन पंक्तिक सब कोठा जोडि । ए तालके पस्तारभेदकी संख्या जानिये॥ इति द्विराम मेरुको लक्षण संपूर्णम्॥

३. दविराम भेरु यंत्र.

														9	E
											3	ч	२०	Eug	984
								9	٧	9.8	¥ 0	905	२७६	६७८	१६०४
					9	3	5	२२	48	123	२७८	6 0 E	9306	२७६६	५७९३
		9	२	4	90	22	YY	39	960	3६०	808	9300	२६६६	4349	९८८२
9	2	3	Ę	90	<u>-</u> ۹	3 3	६१	900	998	340	६३३	9 9 3 4	२०४६	३६७५	६६१७
9	٦	3	¥	4	Ę	ં	6	<	90	99	92	93	98	94	98

४. लघु मेरु.

अथ लघु मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ प्लुत आदि अंगके जितने अण होय । तितने याने सोलह कोठाकी पहली पंक्ति अणुमेरु सिनाई किजिये। तातें ऊपरली दूसरी पंक्ति । बांई ओर तें तीन कोटा चाटि कीजिये ॥ तातें उपरठी तीसरी आदिक पंक्ति । आप आपकी पहली पंक्तिसों च्यार च्यार कोठा घाटि कीजिये ॥ ऐसे एक कोठाकी पंक्तिताई ॥ पांच उभी पंक्तिनको लघु मेरु रचिये ॥ अब लघु-मेरु भरिवेको पकार कहे हैं ॥ यहां सब पंक्तिनके । पहुँ कोठानमें एक एक अंक भरिये । और पहली नीचली पंकि । और वाके ऊपरली दूसरी दूसरे पंक्तिक दूसरे कोडामें । दीय दीयकी अंक भरिये ॥ तीसरी आदिक पंक्तिमें दूसरे दूसरे कोडामें तीन आदिक कमसों अंक भरिये॥ अब पहली नीचली पांकि भरिवेको पकार कहे है।। यहां पहली पांकिकें तीसरे कोठामें च्यारको अंक धरिये।। ये तीनो कोठा जोडी। चांथी कोठी भरिये ॥ यां चेथि कोठाते ऊलंट कमसों चोथा कोठा छोडि । संख्या जंत्रके कमसों सात कोठा जोडि । पांचवे आदिक सब कोठा भरिये ॥ यहां छटो आठवो बारवो कोठा नहीं मिले तों । पांचवें। सातवो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ ऐसे पहली नीचली पांकि भरिये । अब उपरली दूसरी पांकि भरिवेको पकार कहे है।।यहां जो कोठा भरनो होय । तातें पहले कोठांक नीचे जो कोटा होय । तासों चोथो कोटा छेके। वा कोटाके ऊपरला कोटा छोडि। संख्या जंत्रके कमसों ऊप-(स्रो कोटा जोडि । आगरे सब कोटा भरिये ॥ यहां छटो आठवो बारवो कोटा नहीं मिलेतों । पांचवा सातवा ग्यारवा कांटा नहीं लीजिये ।। ऐसेही तीसरी आदिक ऊपरही सब पंक्ति भरिये ॥ इहां उभि पंक्तिनमें । सबतें नीचले कोठानमें । विना छघुके भेदनकी संख्या जानिये॥ और ऊपरछे ऊपरछे कोठानमें। ऋमसों एक दोय आदिक उचनकी भेदनकी संख्या जानिये॥ सब कोटा जोडि ए तालके पस्तारकी संख्या जानिये ॥ इति लघु मेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

४. लघु मेरु यंत्र.

												(9
											3	¥	3.6	**	१२५
							૧	3	9	२५	€ 3	943	382	639	१८७५
			,	٦	ч	9 2	२६	५६	920	3,40	पुत्र	9088	२९७९	×398	c < 43
9	ર	Υ	હ	93	२५	*6	60	9 & 3	304	५७२	9003	२० १ ०	३७६९	७०६५	१३२४३
9	٦	3	¥	4	Q	٠	c	5	90	99	92	93	98	94	98

५. लविराम मेरु.

अथ लिवराम मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ यहां प्लत आदि अंगके जितने अणु होय। तितने याने सोलह कोठाकी पहली नीचली पंक्ति कीजिये।तातैं ऊपरली दूसरी पंक्ति। बांई ओर तें पांच कोटा वाटि किजिये ॥ तातें ऊपरली तीसरी आदिक पंकि । आपआपकी पहली पहली पंकिसों बांई ओरतें छह छह कोटा चाटि की-जिये ॥ ऐसै तीन उभी पंकिसों छविराम मेरु रचिये ॥ अब छविराम मेरुको भरिवेको पकार कहे हैं ॥ सब पंक्तिक पहले पहले कोठामें एक एकको अंक भरिये ॥ अब पहली नीचली पंक्तिके भरिवेको प्रकार लिख्यते ॥ पहली पंक्तिको पहली कोठा दुनो करि । दूसरो कोठा भरिय ॥ दूसरो कोठा दुनो करि । तीसरो भरिये ॥ तीसरो कोठा दुनो करि । चांथो कोठा भरिये ॥ ये च्यार कोठा जोडि पांचवो कोठा भरिये ॥ या पांचवा कोठाते उट्टे कमसों संख्याजंत्रके नई पांचवा आदि कोठा जोडि । छटवे आदिक कोटा भरिये ॥ यहां छटो कोटा नही र्छाजिये । या आठवो बारवो कोठा नहीं मिलेतों। सानवों ग्यारवों कोठा लिजिये। ऐसं नीचली पंकि भरिये ॥ अब उपरली दूसरी पंक्ति भरिवेको प्रकार कह है ॥ या उपरली पंक्तिमें जो कोटा भरनो होय तातें पहले कोटाकें नीचे जो कोटा होय। तातें उलटे कमसों छटो कोटा लेके वाको ऊपरली ऊपरली पंक्तिको कोटा छोडी। बाकीके ऊपरही पंक्तिके कोठा संख्या जंत्रके ऋगसों जोड़ी । आगले आगले सब कोठा भरिये ॥ यहां आठवो बारवो कोठा नहीं मिलेतो सातवो ग्यारवो कोठा नहीं लीजिये ॥ ऐसेही तीसरी आदिक सब पंक्ति भरिये ॥ यहां उभी पांकिनमें सबसें नीचले कोठामें विना लविरामके भेदनकी संख्या है ॥ ओर उपरले कोठानमें क्रमसों एक दोय आदिक टविरामके भेदनकी संख्या जानिये ॥ उभी ठीकके सब कोठा जोडि छिवरामके पस्तारकी संख्या होत है ॥ इति छिवराम मेरुको लक्षण संपूर्णम् ॥

५. लविराम मेरु यंत्र.

											3	3	٩	રષ	E , E,
					9	٦	ч	92	२८	६२	938	२९४	६३०	9338	२८०५
9	2	¥	e	94	२ ९	५ ६	908	२१०	206	७८५	9499	२९३६	५६७७	२०९७७	२१२२६
9	2	3	*	4	Ę	٠	c	3	90	99	12	93	9.8	94	26

६. गुरु मेरु.

अथ गुरुमेरुको लक्षण लिख्यते ॥ प्लुत आदि अंगके जितने अणु होय । तितने याने सोलह कोठाकी नीचली पहली पंक्ति कीजिये ॥ तातें ऊपरली दसरी पंकि-बांई ओर ते सात कोठा घाटि कीजिये ॥ तातें ऊपरली तीसरी आदिक पंक्ति आप-आपकी पहली पंकीसों बांई ओरतें आठ आठ कोठा घाटि कीजिये॥ ऐसे तीन पंकि-नसों गुरुमेरु राचिये ॥ अथ गुरुमेरुको भरिवेको प्रकार कहे है ॥ सब पंक्तिनके प्रथम कोठानमें एक एक को अंक धरिये ॥ अब नीचली पंक्ति भरिवेको प्रकार लिख्ये हैं। पहला काठा दूणा करि । दूसरा काठा भरिये । ऐसं दूसरा दूणा करि तीसरा । तीसरी दूणों करि चोथो । ये च्यारो कोठा जोडि पांचवो भरिये । ये पांचो कोठा जोडि छटो भरिये। आंग या सातवे कोठातें ऊलटे कमसे या छटा कोठासी संख्या जंत्रके कमसों कोठा जोडि सातवी कोठा भरिये। आगे या सातवे कीठोतें ऊलटे कमसों । सातवो आठवो कोठा छोडि बाकिके कोठोतें संख्या जंत्रके कमसों जोडि । आगरे आगरे सब कोठा भरिये । इहां बारवो कोठा नहीं मिरे तो ग्यारवो कोठा लीजिये ॥ ऐसे नीचली पंक्ति भरिये ॥ अब ऊपरली पंक्ति भरविको प्रकार कहे हैं। जो कोठा भरनो हाय तासों पहलीका कोठाके नीचले जो कोठा होय। तातें ऊलटे ऋमसों । आहवो कोहा होके । वा कोहाके ऊपरको ऊपरली पंक्तिको कोहा छोडि । संख्या जंत्रके कमसों वाकी कोठा जोडि । आगले आगले सब कोठा भरिये ॥ यहां बारवो कोठा नहीं मिले तो । ग्यारवो कोठा नहीं छीजिये ॥ एसेही तीसरी आदिक पंक्ति भरिये ॥ उभी सब पंक्तिके सबतें नीचले कोठानमें ॥ विना गुरुके मेदनकी संख्या है । और ऊपरछे ऊपरछे कोठानमें एक दोय आदिक । गुरुनके भेदनकी कमसों संख्या जानिये ॥ और छिकके सब कोटा जोडि गुरुके पस्तार-भद्की संख्या जानिये॥ इति गुरुमेरुको लक्षण संपूर्णम्॥

६. गुरु मेरु यंत्र.

-															٩
4							3	3	4	92	२८	£ 2	136	y K 300 name	६४६
9	२	*	c	94	3 0	ye	993	२२०	*29	८३५	१६२८	3909	६१७८	१२०३६	२३४५०
•	3	3	~	ч	Ę	v	c	,	90	99	92	93	9.8	94	96

७. प्लुत मेरु.

अथ प्लुत मेरुको लक्षण लिख्यते ॥ इहां प्लुत आदिक अंगके जितने अणु होय । तितने याने सोलह कोठानकी अणुमेरु सिनाई पहली नीचली पंक्ति कीजिये ॥ तातें ऊपरली दूसरी पंक्ति बांई ओरतें। ग्यारह कोठा चाटि कीजिये॥ तातें ऊपरली तीसरी आदिक सब पंक्ति । आपआपकी पहली पहली पंक्तिसों बारह बारह कोठा चाटी कीजिये ॥ ऐसे दोय पंक्तिसों प्लुत मेरु रचिये ॥

अथ प्लत मेरुके भरिवेको प्रकार लिख्यते ॥ नीचली आदिक सब पंक्तिनके । पहले पहले कोठानमें एकएकको अंक भरिये ॥ अब नीचली पहली पंक्तिके भरिवेको प्रकार कहे हैं॥ नीचली पंक्तिको पहलो कोठा दूनो करि दूसरो कोठा भरिये ॥ ऐसे पहलो पहलो कोठा दूनो दूनो करि । नीचली पंक्तिके चार कोठा तांई भरिये ॥ ये चारी कोठा जोडि । पांचवा भरिये ॥ ये पांची जाडी । छटो भरिये ॥ आगे या सतावे कोठातें उलटे कमसों संख्या जंबके कम करी कोठा जोडि । आगले आगले कोठामें ग्यारवे कोठा ताई अंक भरिये ॥ ग्यारवो कोठा छोडि । संख्या जंत्रके कमसों बाकि कोठा जोडि । आगरे आगरे बारवो आदिक सब कोठा भरिये ॥ यहां छटवो आठवो कोठा नहीं मिले तो । पांचवों सातवो कोठा लीजिये ॥ ऐसे नीचली पंकि भरिये ॥ अब उपरली दसरी पंक्ति भरिवेको पकार कहे हैं ॥ या ऊपरली पंक्तिमें दूसरो आदि जो कोठा भरनो होय। तातें पहले कोठाके नीचे जो कोठा होय । ता कोठासों ऊलटे कमसों बारवी कोठा लीजिये। वा कोठाके ऊपरको ऊपरली पंकिमें जो कोठा होय तो छोडिके। बाकि कोठा । संख्या जंत्रके कमसों जोडि । दूसरे आदिक सब कोठा भरिये ॥ यहां छटो आठवो कोठा नहीं मिछे तो ॥ पांचवों सातवो कोठा नही लीजिये ॥ ऐसे ही तीसरी आदिक ऊपरही सब पंक्ति भरिये॥ यहां उभी पंक्तिनके। सब तें नीचले काठानमें। विना प्लुतके भेदनकी संख्या है ॥ और ऊपरले ऊपरले कोठानमें । एक दोय आदिक प्लुतके भेदनकी संख्या जानिये ॥ और छीकके सब कोठा जोडि प्लुतके पस्तारभेदकी संख्या होत है ॥ इति प्लुतमेरु लक्षण संपूर्णम् ॥

७. प्लुत मेरु यंत्र.

						9	ર	ч	92	२८				
3	3	*	c	94/30	40	998	२२२	x3x	c r '9	9 દ્ધપ	3 2 3 9	E399	१२३२४	२४ ६९
3	2	3	R	Ę	٠	c	,	90	99	93	93	98	94	98

ऐसे अणुदुत आदि सातो अंगनके । एक आदि आपकी बुद्धीकी चाही जो संख्या । तहां तांई । खंडपस्तार रचिवेको कम । इन मेरुनसों समझिये ॥ ॥ इति षष्ठो तालाध्याय संपूर्णम् ॥



The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

ВY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon. Secretary, Gayan Samaj, Poona.

PART VII: RAGAD HYAYA.

(All rights reserved.)

Registered under Act XXV of 1867.

Price of the complete Work in seven parts Rs. 15.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID

1912.

पूना-गार नसमाज.

संगीतसार ७ माग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

पकाशकः

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी सेकेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ७ वा रागाध्याय.

पुस्तकका सर्वथा अधिकार इ. स. १८६७ का आक्ट २५ के अनुसार प्रकाशककर्ताने आपने स्वाधीन रखा है.

पूना ' आर्यभूषण ' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण सात अध्यायका मूल्य रु. १५, और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २॥.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

सप्तमा रागाध्याय-सृचिपत्र.

विषयक्रम.	-0×>				
					घृष्ठ.
राग ओर गीति लछन	• • •		• • •		8
शुद्धा गीतिनको लछन		•••	•••		ર
दुसरी गीति भिन्ना ताको लछन		• • •			,
तीसरी गीति गौडी ,, ,,	• • •	•••	• • •		२
चोथी गीति वेसरा ,, ,,	• • •	•••	•••		२
पाँचमी गीति साधारणि ,, ,,		•••	•••		ر ع
तालप्रधान गीति ,, ,,	• • •	•••		•••	3
स्वरप्रधान ँगीति ,, ,,		•••		•••	र ३
नवप्रकारके रागनके लछन	•••		•••	•••	3
रागनके भेद, शुद्ध, छ।यालग, सं	कीरन ओर	 संपरन. षाड	ः व ओर ओट	··· ਰ	र ३
यामरागादिकके अनुक्रमसुं लर्छन		•••	1 11(-110	•••	۲ ۷
उपराग, भाषाराग, विभाषाराग, अंत	तरभाषाराग.	 रागांगरामः ३	 ग्राचांगराग र्व	••• केयांग-	8
राग, उपांगरांगको लछन	•••		11 11-1/1-1-1	4141-	6)
देशी रागको लडन	•••	•••	••••	•••	8
शुद्ध, छायालग ओर संकीर्णको ल		•••	• • •	• • •	4
रागके गायवेमं जे गति कहिये ति	,⊘ा, नके नाम ≂र	 ਹਜ	•••	• • •	Ę
शुद्ध आदिक पांच गीतिनमें गाय	भग भाग छ। वेमें शक्त अ	ਆ। ਇੀਕ ਸਾਂਕ	भेजनी गण	• • •	Ę
आठाईस उपरागके नाम संख्या		।। प्रभा पा प	मद्का राग	• • •	Ę
· .	•••	•••	• • •	• • •	٥
	 च्ये सम ्ब स्	A	A	->	6
सकल आचारजके मतसों जुदे उ			विभाषाराग	ओर	
	•••		• • •	•••	6
सौवीर रागकी च्यारिच्यारि भाषारा			•••	• • •	6
कर्कुभ रागके छह भाषाराग ओर त	।।न ।वभाषार	ाग आर एक	अतर भा	पाराग	9
त्रिवण रागकी इकीस भाषाराग ओर			•••	• • •	9
पंचमरागके दस भाषाराग ओर दोय			•••	•••	3
भिन्न पंचमरागके च्यार भाषाराग अ			• • •	•••	3
टेकेंकेशिक रागके दोय भाषाराग अ	ार एक विभा	षाराग	• • •	• • •	3

२ सूचिपत्र.

हिंदोल रागनो भ				• • •	• • •		9
बोट्ट रागको भाषा	राग एक .		•••	• • •	••••		१०
मालव कैशिक राग	ाके तेरह	भाषाराग अ	गेर दोय वि	भाषाराग	••••		१०
गांधार पंचम रागव	को एक भ	षाराग		•••	• • •		१०
भिन्न षड्ज रागके	भाषाराग	सतरा ओ	र विभाषारा	ग च्यार			१०
वेसर षाडव रागके	भाषाराग	दोय ओर	विभाषाराग	दोय			१०
मालव पंचम रागवे	हे भाषाराम	तीन		•••			१०
तान रागकी भाषा	राग एक	•	•••	•••			१०
पंचम षाडव रागव	हो भाषारा	ा एक		•••	•••		१०
रेव गुप्ति रागको भ	ाषाराग एव	ह विभाषार	ाग एक ओ	र अंतर भा	षाराग तीन		१०
मुख्य भाषा, स्वर							११
रागांग, भाषांग, रि							१२
देसीराग ओर तीन			•••				१४
नाट ओर कर्नाट					•••		१६
भैरव ओर गुर्जरी	रागोंके प्र	कार	•••	• • •	•••		१७
जातिनके वरतिवेव							१७
भिन्नषड्ज रागको		••			•••		१७
स्वरभिननो लड	न .						१८
जाति भिन्नको लब	छन .			***			१८
शुद्धभिन्नको लड		•••					१९
श्रुतिभिन्नको लछन			• • •				83
स्वरसमूहंको पक							१९
आलापको लछन							१९
रूपकको लछन					•••	•••	20
अक्षिप्तकाको लछ				•••	•••	•••	२०
(१) भैरव राग					•••	•••	23
भैरवकी रागनी						•••	23
))))	भरर्व		,	•••	••••	•••	24
" "	க்பா		•••	•••	• • •	•••	२६
	वरार्र		•••	•••	•••	•••	20
	सेंधव	r fr	•••	•••	•••	•••	39
(२) मालकोंस	रागकी उ	यति	•••	•••	•••	•••	
मालकोंसकी राग	ानी टोडी		• • •	• • •		•••	30 22
	•		• • •	•••	•••	•••	३२
	i	ौरी	•••	•••	•••		
"	"	11/1	• • •	4.0			३५

~	^	0 0					`
मालकोसव	की राग	गनी गुनकरी	•••	• * *	•••	•••	३७
())	,	, बुकुमा	•••	•••	•••	•••	36
		गकी उत्पत्ति	•••	•••	• • •	•••	y o
हिडील	की राग	ानी विलावली	•••	• • •	• • •		88
"	,,		•••	•••	•••	• • •	४३
"	,		•••	•••			84
"	,		•••	•••	• • •	•••	80
/ 1)	,	, ललित	•••	•••	.,.		86
(४) दापव	क राग	की उत्पत्ति	•••			•••	40
दीपकक	रिगन	ति केदारी	• • •	• • •	•••		40
;;	77		•••	•••			48
,,	,,		• • •	•••	• • •	•••	५३
"	"	कामोदी	• • •	•••	•••		44
, , ,,	,,	नट	• • •	•••	• • •	•••	५६
	रागकी	_	•••	••••	•••	• • •	46
श्रीरागर्क	ो रागन		•••	•••	•••	• • •	६०
"	,,	मालवी (म	गरवा)	•••	•••	• • •	६१
"	,,	मालश्री	•••	•••	•••	• • •	६३
,,	,,	असावरी	***	•••	•••	• • •	६५
, ,,	,,,	धनाश्री	•••		•••	•••	६६
(६) मेघरा			•••	•••	•••	• • • •	७०
मेघरागकी	रागर्न	ो गोडमहारी			••••	•••	७१
"	,,	देसकार	•••	•••	•••	•••	७२
"	,,	भूपाली	• • •	•••	• • •		७३
"	"	गुर्जरी	•••		•••		હ્યું ઉછ
_ ;;	,,	श्रीटंक	•••	•••	• • •		७६
भैरवको	पुत्र	बंगाल	•••	•••	•••	•••	હહ
,,	"	पंचम	•••	•••	•••		७७
53	,,	मधुर	•••	•••	•••		60
"	"	. हरष		•••	•••		50
"	,,	देषाख		•••	•••		७९
"	,,	ललित	•••	***	• • •		७९
"	,,	बिलावल		•••	•••	•••	60
33	"	माधव	•••	•••	•••		८१
मालकोंसको	पुत्र	नंदन	•••				૮ શે
	-					- , -	•

मालकोंसको	पुत्र	खोखर	•••		•••	• • •	८२
हिंडोलको	पुत्र	बंगाल	•••	•••	•••	• • •	८२
,,	"	चंद्रबिंब	•••	• • •	•••	• • •	८३
,,	"	सुभ्रांग		• • •	• • •	• • •	८३
"	,,	आनंद		•••	• • •	• • •	<8
>)	,,	बिभास	•••	• • •	• • •	•••	58
,,	,,	वर्धन		• • •	•••	• • •	८५
"	,,	वसंत	• • •	• • •		• • •	८६
"	,,	विनोद	•••	• • •	• • •	• • •	८६
दीपकको	पुत्र	कुसुम		••••	• • •	• • •	60
"	,,	कुसुम		• • •	• • •	•••	८७
,,	"	राम	•••	• • •	•••	•••	66
"	,,	कुंतल	•••	• • •	•••	•••	22
दीपकको	पुत्र	कलिंगडो	• • • •	• • •	•••	•••	८९
"	,,	बहुल	• • •		•••	• • •	९०
"	"	चंपक	•••	•••	•••	* * *	९१
,,,	,,	हेम	• • •	• • •	• • •	• • •	९२
श्रीरागको	पुत्र	सैंधव	• • •	• • •	•••	•••	९३
"	,,	मालव	• • •	• • •	• • •	•••	९३
"	"	गौड	• • •	•••	•••	• • •	९३
"	,,	गंभीर	• • *	•••	* * *	• • •	38
>1	; ;	गुणसागर	•••	• • •	•••	• • •	९४
"	"	विगड ———	•••	•••	•••	• • •	९५
"	"	कल्याण	•••	•••	• • •	•••	९५
"	"	कुंभ 	•••	***	•••	•••	९६
"	"	गड	* * 4	•••	•••	•••	९६ ९७
मेचरागको	पुत्र	नग	* * *	• • •	• • •	• • •	
"	"	कान्हरो सारंग	•••		•••		९७ ९८
"	"	कदारो	•••	•••	,	9	99
"	"	कदारा गाडे	•••	•••	•••	•••	33
"	"	गाड मल्लार	***	•••	•••		808
"	"	_{महार} जालंधर	•••	• • •	•••	• • •	१०१
"	"	जालपर संकर	•••	•••	• • •	•••	805
भिरतनी)) [[5]	परज	***	••••	•••	•••	१०९
भैरवक्रो	पुत्र	गरण	***	•••	• • •		101

हिंडोलको पुत्र सामंत		•••	• • •	१०४
,, ,, त्रिवण	•••	•••	•••	१०६
,, ,, स्याम			•••	१०७
श्रीरागको पुत्र देवगांधार	•••	• • •	•••	१०८
देसाखरागकी रागनी कुडाई	***	•••	***	११०
वसंतकी रागनी देवगिरी		• • •	•••	११ १
आनंद भैरवी	• • •	•••	• • •	११३
आनंद भैरव	•••	••••	•••	११४
गांधार भैरव		•••		११५
शुद्ध भैरव		• • •	***	११६
शुद्ध ललित भैरव	• • •	•••		११६
वसंत भेरव		•••	•••	११६
स्वर्णाकर्षण भैरव	•••	•••	•••	११८
पंचम भैरव		•••		११८
मेघरागकी पाचवी रागनी गांधारी	****	•••	•••	११८
श्रीरागकी तीसरी रागनी पहाडी		•••	•••	११९
शुद्ध कामोद	• • •		44.	११९
सामंत कामोद	***	•••	• • •	१२०
तिलक कामोद		•••	• • •	१२१
कल्याण कामोद		•••	•••	१२२
अडाणा			•••	१२३
सहाणा				१२५
तंभावती	•••			१२६
खर	•••			१२७
कुंभावरी	• * •	•••	•••	१२९
सरस्वती	• • •	•••	***	१३०
वडहंस	***	• • •	•••	१३१
वायुर्जीका अभवा पूर्याकल्याण	•••	•••	• • •	१३२
	•••	• • •	****	१३३
लंकदहन पासवती	• • •	• • •	• • •	१३५
वागिश्वरी	•••	***	• • •	१३५
	•••	•••	• • •	१३६
लीलावती		• • •	• • •	१३८
नटनारायण		• • •	•••	
नटनारायणकी रागनी वेलावली	• • •		***	१३९
,, ,, कांबाजी	••••	•••	•••	१३९

र चिपन्ने.

.

नटर	रागकी रा	गनी	सांवेरी	•••	•••		१४०
	,,	"	सुहवी	•••	•••	• • •	१४१
	,,	"	सोरट		• • •	• • •	१४२
नटन	ारायणको	पुत्र	शुद्धनाट	• • •	•••	•••	\$88
	"	"	हमीरनाट		•••	•••	१४५
	"	12	सालंगनाट	•••			१४७
	,,	"	छायानाट	• • •	•••	•••	१४८
	"	,,	कामोद नाट	• • •	•••	•••	१४९
	7)	"	केदारनाट		•••	•••	१५0
	"	"	मघनाट	•••	•••	•••	१५२
	"	27	गौडनाट	•••	•••	•••	१५३
	"	"	भूपालनाट	• • •	• • •	••••	१48
	37	"	जेजनाट		•••	•••	१५५
	77	72	शंकरनाट	• • •	•••	• • •	१५७
	"	"	हीरनाट	•••	•••	•••	१५८
	"	"	देषाखनाट		•••	•••	१६०
	"	"	स्यामनाट	•••	•••	•••	१६१
	"	"	कान्डडनाट	•••		•••	१६२
	"	,,	वराडीनाट	•••	• • •	••••	१६३
	"	37	विभासनाट	••••			१६४
	"	,,	बिहागनाट	• • •	• • •	• • •	१६५
	,, .	"	संकराभरण	•••	•••	•••	१६६
शुर	द्रनाटकी रा	गनी	आभीरी	•••	•••	***	१६८
शुर	द्द नाटको	पुत्र	जुजावंत	•••	•••	•••	१६९
	रिर राग		•••	•••		• • •	१७०
श	के वस्त्रभा	•••	***	• • •	• • •	•••	१७१
	विस्त	•••	• • •		• • •	•••	१७१
3	जिर्	• • •	• • •	•••	• • •	• • •	१७३
લા	मं वरी	•••	•••	• • •	•••	•••	१७३
सार		•••	• • •	•••	•••		१७४
की	वाहर	• • •	•••	•••	• • •	••••	१७५
	(मण	• • •	• • •		• • •	•••	१७५
	(च्वनी	• • •	•••	•••	•••	•••	804
	प्रमोध		•••	•••	•••	•••	१७७
मन	हिर	• • •	***	•••	•••	•••	१७७
							-

देवकारिका	•••	•••	•••	•••	१७८
विचित्राँ	•••	•••	•••	•••	१७८
चौराष्टक	•••	• • •	•••	•••	१७९
शुद्धवंगाल	• • •		•••	•••	१७९
कर्णाटबंगाल	•••	•••	•••	•••	१८०
गोरखी बिलावल	•••		•••	• • •	१८०
शंकर बिलावल	•••	•••	•••	•••	१८१
अलहिया बिलावल	•••	•••	•••	• • •	*** 163
लछोसाख बिलावल	•••		•••	•••	१८४
भुक्षि बिलावल	•••	•••	•••	• • •	१८५
सरपदी बिलावल	•••	•••		•••	१८५ 🗸
कन्हडी बिलावल	•••	•••	•••	•••	१८७
उत्तर गुजरी	•••		•••	• • •	१८९
दक्षिण गुजरी	•••	•••	•••	•••	१८९
मंगल गुजरी	•••	•••	• •	•••	१९०
प्रताप वराली	•••	***	• • •	•••	१९०
कल्याण वराली	***	•••	• • •	•••	१९०
नाग वराली		•••	•••	•••	१९१
पुन्नाग वराली	• • •	•••	••••	•••	१९१
शुद्धवराली	• • •	•••	• • •	•••	१९१
टोडी वराली	***	•••	• • •	• • •	१९२
छायाटोडी •••	•••	• • •	• • •	•••	१९३
बहादुरीटोडी	•••		• • •		१९४ 🗸
जोन्पुरीटोडी	•••	• • •	•••	•••	१९६
मार्गटोडी	•••	•••	• • •	• • •	१९८
लाचारीटोडी	•••	•••	•••	•••	१९९
काफीटोडी	•••	•••		•••	२०१ [/]
पूर्वीसारंग	***		****	•••	२०२
शुद्धसारंग	***	•••	•••	•••	२०३
वृंदावनीसारंग गोडसारंग	•••	•••	•••	•••	२०४
	***		•••	• • •	२०५
धवलसिरी	•••	•••	•••	•••	२०७
जैतसिरी	•••		• • •	•••	२०८
फूलसरी	•••	•••	•••	•••	२१०
पर्योधनासिरी	•••	, , ,	7#7	***	२११

स्चिपत्र .

भीमपलासी ११५ शुद्धगोड ११९ रीतीगोड ११९ नारायणगोड ११९ केदारगोड ११९ केन्द्रारगोड ११९ केन्द्रागोडी ११९ चित्रगोडी १२९ पूर्वी १२९ पूर्वी १२९ पूर्वी १२९ पूर्वी १२९ पूर्वी १२९ स्त्रगोडी १२९ शुद्धगोडी १२९ शुद्धकल्याण १२९ शुद्धकल्याण १२९ शुद्धकल्याण १२९ शुद्धकल्याण १२९ सावणीकल्याण १२९ प्रतिकल्याण १२९								
शुद्धगे । ११९ सिती गोड २१९ सालवगोड २१९ मालवगोड २१९ के दारगोड २१९ के दारगोड २१९ के दारगोड २१९ के दारगोड २१९ के दारगोड २१९ के दारगोडी २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी कान्हडा २१९ वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी महार २१० वित्रगोडी म			•••		• • •	•••		२१२
रीतीगोड २१९ मास्त्रवगोड २१९ मास्त्रवगोड २१९ केदारगोड २१९ केत्रारगोड २१९ कान्हडगोड २१९ वृत्रागोडी २१९ वृत्रागोडी २२० वृत्रागोडी २२० वृत्रागो			• • •		•••	•••	• • •	२१४
रीतीगोड २१९ मास्त्रवगोड २१९ मास्त्रवगोड २१९ केदारगोड २१९ केत्रारगोड २१९ कान्हडगोड २१९ वृत्रागोडी २१९ वृत्रागोडी २२० वृत्रागोडी २२० वृत्रागो	ş	पुद्धगोड	•••	•••	•••	• • •		२१५
नारायणगीड २१९ केदारगीड २१९ कान्हडगीड २१९ कान्हडगीड २१९ पूर्वी २१९ वित्रगीडी २१९ वित्रगीडी २१९ पूर्वी २१९ वित्रगीडी २१९ पूर्वी २१९ वित्रगीडी २१९ वृद्धगीडी २१९ वृद्धगीडी २१९ वृद्धगीडी २१९ वृद्धगीडी २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकल्याण २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २१९ वृद्धकराजेबार २९७ वृद्धकराजेबार २०० वृद्धकराजेबार	4	तिगौड	•••	•••	•••	•••	• • •	२१५
नारायणगोड २१० केदारगोड २१० कान्हडगोड २१० कान्हडगोड २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगोडी २१० वृत्तगाण २१० वृत्तगाण २१० वृत्तकल्याण २१० वृत्तकल्याण २१० वृत्तकल्याण २१० वृत्तगाण २०० वृत्तगा	1	गालवगोड	•••		•••			२१६
केदारगोड २१९० कान्हडगोड २१९० वित्रगोडी २१९० वित्रगोडी २९९ पूर्वी २१९ पूर्वीगोडी २९९ पूर्वीगोडी २९९ पूर्वीगोडी २९९ पूर्वीगोडी २९९ इमनराग २९७ इमनकल्याण २९७ जितकल्याण २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकणाट २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ पूर्वाकल्याण २९७ प्राच्याकणाट २०० प्राचकणाट २०० प्राच्याकणाट २०० प्राच्याकणाट २०० प्राच्याकणाट २०० प्रा	;	नारायणगोड		•••	•••	•••	,	280
कान्हडगोड १११ पूर्वी २११ पूर्वी २११ पूर्वी २११ पूर्वी २११ पूर्वी २११ पूर्वी २११ पूर्वीगोडी २२१ पूर्वीगोडी २२१ इमनराग २२१ इमनकल्याण २२९ जेतकल्याण २२९ जेतकल्याण २२९ पूरियाकल्याण २२९ पूरियाकल्याण २२९ पूरियाकल्याण २२९ पूरियाकल्याण २२९ गंकरकेदार २३१ शंकरकेदार २३१ शंकरानंद २३४ शंकरानंद २३४ गंकरानंद २४४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २३४ गंकरानंद २४४ गंकर	į	केदारगौड	•••	•••		• • •		२१८
पूर्वी २१९ वित्रगोडी २२९ युद्धगोडी २२९ यूर्वीगोडी २२९ यूर्वीगोडी २२९ यूर्वागोडी २२९ यूर्वागोडी २२९ यूर्वागोडी २२९ युद्धकल्याण २२९ युद्धकल्याण २२९ युद्धकल्याण २२९ युद्धकल्याण २२९ यूर्वाकल्याण २२९ युर्वाकल्याण २२९ युर्वाकरांच्याण २२९ युर्वाकरांच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्या	\$	तान्हडगौड	•••	•••		• • •	••••	२१८
वैत्रगीडी शुद्धगीडी पूर्वीगीडी हमनराग हमनकल्याण शुद्धकल्याण शुद्धकल्याण नेतकल्याण सावणीकल्याण सावणीकल्याण सावणीकल्याण मलोहाकेदार शंकरानेद शंकरानेद शंकराअरुण गुंजावत कान्हडा नाईकी कान्हडा गारा गारा गारा कान्हडा सुसेनी कान्हडा पूर्या कर्णाट स्रुक्त मल्हार स्रुक्त मल्हार नायक स्प्रद्धारुको मल्हार भीयाकी मल्हार भूरवा मल्हार			• • •		•••			
शुद्धगोडी २२६ पूर्वीगोडी २२६ इमनराग २२६ इमनकत्याण २२६ शुद्धकल्याण २२६ जीतकत्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ प्रावणीकल्याण २२६ स्रावणीकल्याण २२६ स्रावणीक्षार २२६ शंकराकेदार २३६ शंकराअरुण २३६ प्रावणाक १२६ प्रावणाक १८६ स्रावणाक १८६ प्रावणाक								२२०
पूर्वीगीडी १२१ इमनराग १२१ इमनकल्याण १२१ शुद्धकल्याण १२१ जीतकल्याण १२९ प्रियाकल्याण १२९ प्रियाकल्याण १२९ प्रियाकल्याण १२९ प्रियाकल्याण १२९ प्रियाकल्याण १२९ प्रियाकल्याण १२९ महोहाकेदार १३९ शंकराकेदार १३९ शंकराजरुण १२९ जुंजावत कान्हडा १३९ जाता कान्हडा १३९ स्वांचिय कान्हडा १४९ खंबायची कान्हडा १४९ प्र्या कर्णाट १४९ प्रियाकी मल्हार १४९ मीयाकी मल्हार १४९ म्रिया मल्हार १४९ प्रिया मल्हार १४९		एद्दगौडी	• • •			• • •		
हमनराग								
इमनकल्याण शुद्धकल्याण नेदेश शुद्धकल्याण नेदेश शुद्धकल्याण नेदेश नेदेश शुद्धकल्याण नेदेश नेदेश नेदेश शुद्धकल्याण नेदेश नेदेश नेदेश नेदेश नेदेश स्वायामी कान्हडा न्वायक नेदेश न				•••				
शुद्धकल्याण		•		• • •				
जैतकल्याण सावणीकल्याण १२० पूरियाकल्याण १२० पूरियाकल्याण १२० मलोहाकेदार १३० शंकरकेदार १३० शंकराअरुण उंजावत कान्हडा नाईकी कान्हडा गारा गारा कान्हडा १४० हुसेनी कान्हडा १४० पूर्या कर्णाट स्रक्षी मल्हार नायक स्वय्याक मल्हार भावाकी मल्हार १४० नेट मल्हार १४० नेट मल्हार १४० २४७			• • • •	•••				
सावणीकल्याण २२० पूरियाकल्याण २२० पूरियाकल्याण २२० मलेहाकेदार २३० शंकराकेदार २३० शंकरानंद २२० शंकराजरुण २२० जुँजावत कान्हडा २३० गारा कान्हडा २३० गारा कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४० पूर्या कर्णाट २४० पूर्या कर्णाट २४० पूर्या कर्णाट २४० पूर्या कर्णाट २४० मीयाकी मल्हार २४० मीयाकी मल्हार २४० पूरिया मल्हार २४० पूरिया मल्हार २४० पूरिया मल्हार २४० पूरिया मल्हार २४० पूरिया मल्हार २४० पूरिया मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २५० नट मल्हार २४० नट मल्हार २४० नट मल्हार २५० नट मल्हार २५० नट मल्हार २५० नट मल्हार २५० नट मल्हार २५० २५० नट मल्हार २५० २५० नट मल्हार २५० २५० २५० नट मल्हार २५० २५० २५० २५० २५० २५० २५० २५० २५० २५०		2 ·					•••	
पूरियाकल्याण मलोहाकेदार शंकरकेदार शंकरानंद शंकराअरुण जुंजावत कान्हडा नाईकी कान्हडा गारा गारा कान्हडा हुसेनी कान्हडा पूर्या कर्णाट सूरकी मल्हार नायक सम्ब्रह्मर स्हार भीयाकी मल्हार भीरा नट्टार भीराया स्वार					•••	•••	•••	
मलोहाकेदार २३१ शंकरकेदार २३४ शंकराजंद २३४ शंकराअरुण २३४ जुंजावत कान्हडा २३५ गारा २३८ गारा कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४१ एवा कर्णाट २४५ पूर्यो कर्णाट २४५ नायक स्प्रद्यस्त्रात्र मल्हार २४५ मीयाकी मल्हार २५० नट मल्हार २५०			• • •	•••	•••	***	•••	
शंकरकेदार २३२ शंकरानंद २३४ शंकराअरुण २३४ जुंजावत कान्हडा २३५ गारा २३५ गारा कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४१ स्वंबायची कान्हडा २४१ स्र्की मल्हार २४५ म्रायक स्पद्धारको मल्हार २४५ भूरिया मल्हार २४५ भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५१			•••	•••	•••	•••	• • •	
शंकरानंद शंकराअरुण ज्ञुंजावत कान्हडा नाईकी कान्हडा गारा गारा गारा कान्हडा हुसेनी कान्हडा पूर्या कर्णाट पूर्या कर्णाट स्रुक्ति मल्हार नायक स्पर्यस्ता मल्हार भीयाकी मल्हार नट मल्हार नट मल्हार			•••	•••	****	•••	• • •	
शंकराअरुण जुंजावत कान्हडा नाईकी कान्हडा गारा शक्ति कान्हडा श्रु गारा शक्ति कान्हडा श्रु गारा कान्हडा हुसेनी कान्हडा श्रु खंबायची कान्हडा थ्रुश पूर्या कर्णाट स्रकी मल्हार नायक सम्बद्धार भीयाकी मल्हार २४४ भूरिया मल्हार २४४ नाय कर्ण्यस्थल मल्हार २४४ भूरिया मल्हार २४४		-	•••	• • •	• • •	•••	• • •	
जुंजावत कान्हडा २३५५ नाईकी कान्हडा २३५५ गारा २३५५ गारा कान्हडा २४१० हुसेनी कान्हडा २४११ खंबायची कान्हडा २४११ पूर्या कर्णाट २४५५ नायक सम्बद्धान मल्हार २४५५ भूरिया मल्हार २४५५			• • •	•••	•••	•••	•••	
नाईकी कान्हडा २३७ गारा २३७ गारा कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४१ खंबायची कान्हडा २४१ पूर्या कर्णाट २४४ स्रकी मल्हार २४५ नायक सम्बद्धार २४७ भूरिया मल्हार २४७ भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५०			• • •	• • •	•••	•••	••••	
गारा गारा कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४१ खंबायची कान्हडा २४१ पूर्या कर्णाट २४४ सूरकी मल्हार २४५ नायक सम्ब्रह्मको मल्हार २४५ भूरिया मल्हार २४८ भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५०			•••	• • •	. • •	•••	••••	
गारा कान्हडा २४० हुसेनी कान्हडा २४१ खंबायची कान्हडा २४१ पूर्या कर्णाट २४४ पूर्या कर्णाट २४४ म्र्रकी मल्हार २४५ मीयाकी मल्हार २४८ भूरिया मल्हार २४८ भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५०			•••	•••	•••	• • •	• • •	
हुसेनी कान्हडा २४१ खंबायची कान्हडा २४३ पूर्या कर्णाट २४४ सूरकी मल्हार २४५ नायक अव्यक्तको मल्हार २४५ भूरिया मल्हार २५० भूरिया मल्हार २५०			• • •	•••	• • •	•••	•••	
स्वंबायची कान्हडा २४३ पूर्या कर्णाट २४५ सूरकी मल्हार २४५ नायक अस्प्रस्का मल्हार २४५ मीयाकी मल्हार २५० भूरिया मल्हार २५०			•••	•••	• • •	•••	•••	
पूर्या कर्णाट			•••	•••	•••	•••	• • •	
स्रकी मल्हार २४५ नायक अव्यवस्ता मल्हार २४७ मीयाकी मल्हार २५० भूरिया मल्हार २५०	•	प्रवाधिया कान्हडा राजी सामारि	* * *	• • •	• • •	•••	• • •	
नायक सम्बद्धान मल्हार २४७ मीयाकी मल्हार २४८ भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५१			•••	•••	•••	•••		
मीयाकी मल्हार २४८ भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५१				•••	• • •	•••		
भूरिया मल्हार २५० नट मल्हार २५१				•••	•••	***		- "
नृट मल्हार २५१	Ŧ	ायाका मल्हार		• • •	• • •	•••	•••	
	8	ारया मल्हार	• • •	•••	• • •	•••	•••	२५०
गाड मल्हार २५३			•••	•••	•••	•••	•••	-
·	ij	ाड मल्हार	•••	•••	•••	•••	•••	२५३

सूचिपत्र.

	-	-	
UI	47	lide	मतसों.
•	1 - 1		-4-4 644 8

		•••					
नीलांबरी	•••	•••	•••	• • •	• • •	• • •	२५३
मु खा री		•••	•••	•••	•••		२५४
देवशियूषिका	•••	••••	•••	• • •	•••		२५४
हिंजेज	• • •	•••	•••	***	•••		244 -
कोछहास	•••	•••	•••	•••			२५५
घंटाराग	••*	•••	•••	• • •			२५६
शर्बरीराग	•••		•••	• • •	• • •	• • •	२५६
पार्वती			•••	••••	•••		२५६
शुद्धाराग		• • •	. • •	•••		• • •	२५७
सिंहवर		•••			•••		२५७
चक्रधर	•••	• • •		•••	• • •		२५८
मंजुघोषा	•••	•••	•••	•••	•••		245
रत्नावली	• • •	•••	•••		• • •		२६0
कंकणराग	•••	• • •	• • •		•••		२६०
साधारिता	•••			• • •	•••		२६०
कांबोधी		•••			•••		२६१
गोपी कांबोधी				• • •	• • •		२६१
अर्जुनराग		•••	• • •	• • •	• • •		२६१
कुमारी	• • •		•••	•••			२६२
रक्तहंसी		***	•••		•••		२६२
सौदामिनी	• • •		• • •	•••	•••		२६२
कुरंगराग	•••	•••	• • •	• • •		•••	२६३
कल्पतरु				•••	•••		263
नद्वाराग		•••	•••				२६३
सौवीरी				•••	• • •		२६४
मार्गहिंडोल		• • •	•••	• • •			२६४
दक्षि णा त्या							२६५
कोकिळराग			•••		• • •		२६५
वैजयंती						• • • •	२६५
शुद्धाराग	•••					•••	२६६
रंगती	•••	•••	••••				२६६
शुद्धभिन्ना	****	• • •				•••	२६६
विशालाराग		• • •		•••		•••	२६७
पुलिंद <u>ी</u>	•••	•••	•••	•••	•••	•••	250
3,1,4,	••••	•••	****	•••	• • •	• • •	11.

भिन्नपंचमी	•••	• • •	••••	• ••	•••		२६८
मधुकरी	• • •	•••	••••			••••	२६८
शुद्धषाडव	•••		•••	•••	•••	•••	२६८
बाह्य षाडव	••••	• • •	****	••••			२६९
गांधारपंचम	••••			•••	•••		२६९
कालिंदी	••••	•••	••••	•••			२७०
कछेली	• • •	•••	••••	•••	•••	•••	२७०
नूतमंजरी	••••	•••	•••	•••	• • •		२७१
पौराली	••••						२७१
भिन्नपौराली		•••	•••	••••		••••	२७१
देवारवर्धिनी	••••	•••		••••	••••	••••	२७२
भोगवर्धनी		••••	•••	••••	•••	••••	२७२
शिववल्लमा	•••	•••	••••		••••	• • •	२७ २
मालवसरी	••••	•••		••••		••••	२७३
गांधारवल्ली	••••	•••	•••	•••		••••	•
	•••	• • •	•••	••••	••••	•••	२७३
स्वरवली नंतरी	• • •	••••	•••	••••	•••	•••	२७३
तुंबरी	••••	• • •	•••	• • •	• • •	****	२७४
शालिवाहनी	•••	* * *	•••	•••	•••	• • •	२७४
कोसलीराग	• • •	•••	• • •	• • •	• • •	• • •	२७४
शक्रमिश्रा	• • •	•••	•••	• • •	****	•••	२७५
हर्षपुरी	• • •	•••	•••	• • •	• • •	•••	२७५
रक्तगांधारी	• • •	•••	• • •	•••	•••	• • •	२७५
भाषागांधारी	•••	•••	•••	•••	•••		२७६
षड्ज माषा	•••	• • •	•••	•••	••••	• • •	२७६
मालवी	• • •	•••	• • •	•••	• • •		२७७
षड्ज मध्यमा	•••	• • •	• • •	•••	•••		२७७
उमा तिलक	•••	•••	• • •	•••	•••	•••	थण्ड
, झंझोटी	•••	****	•••	•••	•••		२७९
ं हुजीज	• • •	•••	•••	•••	•••	•••	२८०
पीलु	•••	•••	• • •	• • •	• • •	• • •	२८२
हंसाकेंकनी "	• • •	•••	•••	•••	•••		२८३
, म ्रिहार	•••	• • •		•••	•••	•••	२८४
ठूमरी	•••	• • •	•••	• • •	•••	• • •	२८५
परेवीप	•••	•••	•••	•••	•••		२८७
काफी	F 7 7	***	•••	***			266
1							

सूचिपत्र.							
सौहनी वेखरी	•••	•••	•••	•••	•••	२८९	
वैखरी	•••	•••	•••		•••	२९१	
सिंदुरिया	• • •	•••	• • •		• • •	२९२	
ऐराक	•••	•••	• • •	• • •		२९३	
रज्जाल	•••	•••	• • •	•••	•••	398	
सींधडा	•••	••••	•••	•••	• • •	२९६	

सप्तमो रागाध्याय.

राग ओर गीति लछन.

योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः । रञ्जको जनचित्तानां स रागः कथिते। बुधैः॥ १ ॥

अथ रागाध्यायकी वचिनका लिख्यते ॥ तहां प्रथम रागको लखन लिख्यते ॥ जो धुनि वीणानितैं अथवा कंठतें उत्पन्न होय ओर सातों स्वरतें जुक्त होय अरु स्थाई आदि सातों स्वरके च्यारी वर्ण अलंकार जामें युक्त होय ॥ या रीतिसों श्रोतानके चित्तको अनुरंजन करे । सो राग जांनिये ॥

अथ मतंग मुनिके मतसों राग लछन कहत हैं ॥ जो स्वर ध्वनि-युक्त अपनें भेदनसों मनकों अनुरंजन करे ताको राग कहतहें ॥

ऐसं हि सोमनाथ मुनि सकल कला प्रवीणहे। सो राग लखन कहतह ॥ इहां प्रसिद्ध स्वर तालसों मिल्यो धुनि होय। सो राग जांनिये॥

या रागकों सुनिके कोइ पसच होतहे ॥ अरु कोइ ऐसें कहतहें के यह राग हमकों रुचत नहीं ॥ यातें अनुरंजनतो आपआपकी इच्छासों होय हे ॥ यासों रागको स्वर तालजुक धुनिहें । अपनि रुचीसों अनुरंजन हें ॥

सो या रागके गायवेकी पांच प्रकारकी रीतिहै ॥ तिनको गीत कहतहें ॥ सो यह पांच प्रकारकी गीतिसों राग पांच प्रकारको जांनिये ॥

अथ पांच गीति तिनके नाम लछन लिख्यते ॥ तहां पहली गीतिको नाम शुद्धा जांनिये । १ । दुसरी गीतिको नाम भिन्ना जांनिये । २ । तीसरी गीतिको नाम गौडी जांनिये ।३। चौथी गीतिको नाम वेसरा जांनिये ।४। पांचमी गीतिको नाम साधारणि जांनिये । ५ । इन पकार पांच गीतिनके लछन कहेहें । सो समझिये ॥ इति पांच गीतिनके नाम लछन संपूर्णम् ॥

अथ संगीत रत्नाकरके मतसों पांचा गीतिनके लछन लिख्यते॥ तहां मथम शुद्धा गीतिनको लछन कहतहें॥ जहां रागके खर सुधेही उच्चार कीजिये ॥ समानता कहतें । घट वध नहीं होय बराबर होय अरु मनोहर स्वर होय ॥ काननकों आछो लगे । अरु जामें बहुत कंप नही होय।सो गीति शुद्धा जांनिये ॥ १ ॥ इति शुद्धा गीतिके लछन संपूर्णम् ॥

अथ दूसरी गीति भिन्ना ताको लखन लिख्यते ॥ जहां स्वरकों न्हस्व कहतें थोडो उचार होय । ओर स्वर विषम होय । विषम कहतें बांके होय । ओर ज्यामें मधुर कंप होय । वित्तकों एकाम करे सो गीति भिन्ना गीति जांनिये ॥ इति भिन्ना गीति संपूर्णम् ॥

अथ तीसरी गीति गौडी ताको लछन लिख्यते ॥ जहां रागके स्वर बराबर उचार कीजिये ॥ अरु मनोहर होय ओर मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इण तीनों स्थाननमें अत्यंत कंपयुत होय । ओर ज्याकी स्थिति अखंडजुत कहिये । टूटती नहीं होय । अरु तीनों स्थाननमें कानकों प्यारि लग । ओर गोड देशमें प्रसिद्ध होय सो गीति गौडी जांनिये ॥ इति गौडी गीति संपूर्णम् ॥

अथ गैडि गितिको भेद ओहाटी ताको लछन लिख्यते ॥ जहां रागके बराबर स्वरको मृदु उच्चार कीजिये । ओर कमसों स्वरनको जलदीजलदी उच्चार कीजिये ऐसे दुत दुततर वेगजुत स्वर होय स्वरको कंप मनोहर होय । ओर ओकार ओर हकारको वेगस्वर उच्चार होय । अरु ज्याके गायवेकी बेठीकमें व्यति लगति ठाडी रहे । अरु अवाजतामें गहकाकी होय । सिगरनके मनमें घणी प्यारि लगे सो गौडी ओहाटी जांनिये ॥ इति ओहाटीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ चोथी गीति वेसरा ताको लछन लिख्यते ॥ जहां रागके स्वरहे सों द्वत वेगेसों जलदि जलदि उचार कीजिये। अरु स्थाई आदि च्यारों वरननमें। घणो अनुरंजन होय। सो गीति वेसरा जांनिये॥ इति वेसरा गीति-को लछन संपूर्णम् ॥

अथ पांचमी गीति साधारणि ताको लखन लिख्यते ॥ जहां च्यारों गीतिनके लखन आप मिले । अरु उन लखनके मिलायतें कोईक सुंदर अनुरंजन जांनोंजाय। सो गीति साधारणि जांनिये॥ इति पांचो गीतिके नाम लखन संपूर्णम्॥ ५॥

इन पांचों गीतिनके नांवें गाये हैं । एक एक राग पांच प्रकारकों जांनिये ॥ तहां शुद्धा गीतिमं गायो राग शुद्धा नाम जांनिये ॥ १ ॥ भिन्नामं गायो राग भिन्नानाम जांनिये ॥ २ ॥ गौडी गीतिमं गायो राग गौडी नाम जांनिये ॥ ३ ॥ वेसरा गीतिमं गायो राग वेसरा नाम जांनिये ॥ ४ ॥ साधारणि गीतिमं गायो राग साधारणि नाम जांनिये ॥ ५ ॥ तहां स्वराध्यायमं मागधी ॥ १ ॥ अर्थ मागधी ॥ २ ॥ संभाविता ॥ ३ ॥ पृथुटा ॥ ४ ॥ ये च्यारि गीति है । तिनमं शुद्धादिक गीतिनमं जो भेद है । ताको टिंडन कहतहें ॥

जो मागधी आदि च्यारि गीतितो चंचतपुट आदिक मारगी तालनके एक एक आदि भेदनसों होतह । तासों मागधी आदि गीति है । सो ताल प्रधान गीति है । ताल जिनमें मुख्य होय सो ताल प्रधान जांनिये ॥ ओर ये शुद्धादिक पांच गीति हे सो न्हस्त दीर्घ उच्चारतें । अरु मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इण तीनों स्थाननके कंपतें होत हे । यातें सातों स्वरनमें ये गीति कहीजे हे । तार्त ये पांचो स्वर प्रधान गीति हे । ये पांच शुद्धादि गीति दुर्ग आचारिजके मतसों सात गीति कही हे । अरु भरतमुनिके मतमें च्यारों गीति कहीजे हे । याष्टिक आचारिजनें तीन गीति कहीजे हे । अरु शार्द्छ मुनिनें एक गीति कही हे ॥ इति गीतिनके लखन वरनन संपूर्णम् ॥

अथ नव प्रकारके रागनके लखन लिख्यते ॥ तहां पथमतो प्राम राग ॥ १ ॥ दूजी उपराग ॥ २ ॥ तीजी भाषाराग ॥ ३ ॥ चोथी विभाषाराग ॥ ४ ॥ पांचमी अंतरभाषाराग ॥ ५ ॥ छटी रागांगराग ॥ ६ ॥ सातमी भाषांगराग ॥ ७ ॥ आठमी कियांगराग ॥ ८ ॥ नवमी उपांगराग ॥ ९ ॥ यह नव प्रकारके रागहे ९ एकतो शुद्ध ॥ १ ॥ छायालग ॥ २ ॥ संकीरन ॥ ३ ॥ इण भेदनसों तीन तीन प्रकारके राग जांनिये ॥ ऐसे नव प्रकारके रागनसें सताईस २७ भेद जांनिये ॥ ओर ये सताईस भेद हे । सो संपूरन ॥ १ ॥ षाडव ॥ २ ॥ औडव ॥ ३ ॥ इण तीन भेदनसों तीन प्रकारके हे । सो सगरे रागनके भेद ॥ ८ १ ॥ ईक्यासी भेद होत हैं ॥

अथ अनुपविलास अनुपांकुश अनुपरत्नाकर चंद्रोदय वा सारंग-देवके मतसों रागके नव ९ भेद लिख्यते ॥ तहां सात स्वरको राग संपूरण जांनिये ॥ १ ॥ छह स्वरको षाडव जांनिये ॥ २ ॥ पांच स्वरको राग ओडव जांनिये ॥ ३॥ पूरण ओडव ॥४॥ पूरण षाडव ॥५॥ ओडव पूरण॥६॥ षाडव पूरण॥ ७ ॥ षाडव ओडव ॥ ८ ॥ ओडव षाडव ॥ ९ ॥ इति भावभट मतसों नवराग भेद संपूर्णम् ॥

अथ राग भेदनकी संख्या लिख्यते ॥ तहां ग्राम रागनके तीस भेद हे ॥ ३० ॥ उपरागनके नव भेद हे ॥ ९ ॥ भाषारागनके बीस भेद हे ॥ २० ॥ विभाषा रागनके बीस भेद हे ॥ २० ॥ अंतर भाषा रागनके च्यारि भेद हे ॥ ४ ॥ रागांग रागनके आठ भेद हे ॥ ८ ॥ भाषांगके ग्यारह भेद हे ॥ ११ ॥ कियांगके बारह भेद हे ॥ १२ ॥ उपांगके तीन भेद हे ॥ ३ ॥ ऐसे मार्गी रागनके भेद जांनिये ॥ ओर देशी रागतो अनंतहे जातें देशी रागनकी संख्याको प्रमाण नही ॥ इति राग भेदनकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ याम रागादिकके अनुक्रमसुं लछन लिख्यते ॥ जो पड्ज यामके मध्यम यामके मिलेतें उपजे होय अरु अठारह ॥ १८ ॥ जातिको संबंधी होय। भाषा राग आदिसों न्यारो होय। सो याम राग जांनिये ॥ इति याम राग लछन संपूर्णम् ॥ १ ॥

अथ उपरागको लछन लिख्यते ॥ जो यामरागको समीपी होय अरु जातिनतें ओर जाति उतपत्ती होय सो उपराग जांनिये ॥ इति उपराग लछन संपूर्णम् ॥ २ ॥

अथ भाषारागको लछन लिख्यते ॥ जो बामरागके आलापको पकार जा रागमें रिचके गाईये । सो भाषाराग जांनिये ॥ इति भाषाराग संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अथ विभाषाको लछन लिख्यते ॥ जो भाषारागको आलाप लोका-नुरंजनके अरथ गाइये । सो विभाषा राग जांनिये ॥ इति विभाषाराग संपूर्णम् ॥ ४ ॥

अथ अंतरभाषाको लछन लिख्यते ॥ जो विभाषा रागको आछाप

लोकानुरंजनके अरथ गाइये। सो अंतरभाषा जांनिये॥ इति अंतरभाषा लखन संपूर्णम् ॥ ५ ॥

अथ रागांगको लछन लिख्यते ॥ जो रागमें याम रागकी छाया आवे अरु यामरागतें न्यारो होय ताकों मतंगादि मुनि रागांग कहेहें ॥ इति रागांग राग संपूर्णम् ॥ ६॥

अथ भाषांगको लछन लिख्यते॥ जो रागमें भाषा रागकी छाया बांधि-ये सो वह राग भाषा रागनतें कछूक जुदो होय ताको भाषांग जांनिये॥ इति भाषांग राग संपूर्णम्॥ ७॥

अथ कियांगको लछन लिख्यते ॥ जा रागके सुनेतें चिंता । १ । उछाह । २ । करुणा । ३ । आदि अनेक किया उपजे । सो कियांग जांनिये ॥ इति कियांग संपूर्णम् ॥ ८ ॥

अथ उपांगको लछन लिख्यते ॥ जो रागमें उपरागकी छाया वरते सो उपांग जांनिये ॥ इति उपांग राग संपूर्णम् ॥ ९ ॥ इति मार्गीरागनके नव भेद लछन संपूर्णम् ॥

अथ देशीरागको लछन लिख्यते ॥ तहां कोईक आचारिज यह कहे हैं। रागांग। १। भाषांग। २। उपांग। ३। कियांग। १। ये च्यार भेद देशी रागनमे जांनिये ॥ तहां देसी किहये जो अपनी इछासों लोकानुरंजनके लिये। च्यार श्रुतिके स्वरको । १। अथवा तीन श्रुतिके स्वरको । २। अथवा दोय श्रुतिके स्वरको । ३। घटि वधि श्रुतिनसों उच्चार कीजिये। जामं शास्त्रको नेम निह होय ऐसें कहूं कोमल । १। अथवा तीव्र । २। अथवा तीव्रतर । ३। अथवा तीव्रतम । ४। अथवा अति कोमल । ५। अपनी बुद्धि बलसों कीजिये सो रागमें देशी भाव जांनिये ॥ अरु शास्त्रकी रीतिसों जहां स्वरनको उच्चार कीजिये सो रागमें मारगी भाव जांनिये ॥ ओर देसी रागनको भरतादिक मुनि अनिबद्ध कहे हैं। अनिबद्ध कहिये। शास्त्र रीति जामें नहीं होय यांते देसी राग अनंत है इनकी संख्या नहीं। इनका मारगी रागनमें जय कोई स्वर श्रुति घटि विध कीजिये तब यही राग देसी राग होत हैं ॥ इति देसी रागको लखन संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध । १ । छायालग । २ । संकीर्ण । ३ । इन तीनुको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें शास्त्ररीतिसों स्वरनको उच्चार होय । ओर वा रागकी जो जाति होय । ता जातिको प्रकार होय ऐसं लोकानुरंजन होय सो शुद्ध राग जांनिये ॥ इति शुद्ध रागको लछन संपूर्णम् ॥

अथ छायालग रागको लछन लिख्यंत ॥ या छायालगको लैकि-कमे सालग कहत हैं जा रागमें लोकानुरंजनके लिये। ओर रागकी छायावरते सो राग छायालग जांनिये॥ इति छायालग राग लछन संपूर्णम्॥

अथ संकीर्ण रागको लछन लिख्यते ।। जा रागमें ठोकानुरंजनके छिये शुद्ध ओर छायालग रागोंका मिश्रण करे । सो संकीर्ण राग जांनिये ॥ इति संकीर्ण राग लछन संपूर्णम् ॥

अथ रागके गायवेमं जे गित कहिय तिनके नाम लछन लिख्यते ॥ तामें पहली रागकी गित कांडारणा हे ताको लछन लिख्यते ॥ जो रागके गायवेमं तारस्थानमें दुत वेगसों घणी जलदी कीजिय । अरु जलदीसोंही गमक कीजिये । अरु चतुराईसों राग बिगडे नहीं सो गित कांडारणा जांनिये ॥ इति कांडारणा संपूर्णम् ॥

अथ खुल्लगति लछन लिख्यते ॥ जो रागके गायवेमं मंद्रस्थानमं लोकानुरंजनके अरथ गमकनसों विस्तार कीजिये सो खुल्लगति जांनिये ॥ इति खुल्लगति संपूर्णम् ॥

अथ फुल्लगतिका लछन लिख्यते ॥ जो रागके गायवेमें मंद्रस्थानमें अरु तारस्थानमें दोऊ ठोर गमकनसों तान विस्तार कीजिये । सो फुल्लगति जांनिये ॥ इति फुल्लगति संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध आदिक पांच गीतिनमं गायंवमं शुद्ध आदिक पांच भेदको राग होतहे तिनके कमसों राग लिख्यते॥ तहां षड्जयामं पड्ज । १। केशिक । २। मध्यम । ३। शुद्धसाधारित । ४। राग शुद्धहै । ओर मध्यमयाममें पंचम । १। मध्यमयाम पाडव । २। शुद्धकेशिक । ३। ये राग शुद्धहै । ऐसे दोऊ प्रामनके मिलिके सात राग शुद्ध जांनिये॥ इति सात शुद्ध रागनके नाम संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-भिन्न, गौड, वेसरा, साधारणि ओर उपराग. ७

अथ भिन्नरागको लछन लिख्यते ॥ भिन्न गीतिमें गाये ते राग भिन्न नामको होत हे सो राग पांच पकारको जांनिये ॥ तहां षड्ज ग्राममें कैशिक मध्यम । १ । भिन्न षड्ज । २ । होतहै । ओर मध्यम ग्राममें तान । १ । कैशिक । २ । भिन्न पंचम । ३ । होतहै । ऐसे दोऊ ग्रामनके मिटिके पांच राग भिन्न जांनिये ॥ इति भिन्न रागको लछन संपूर्णम् ॥

अथ गोड रागके नाम लिख्यते ॥ गोडी गीतिमें गाईये राग गोड जांनिये ॥ सो राग तीन है । ३ । तहां षड्ज ग्राममें गोड । ३ । मध्यम कैशिक । २ । होत है ओर मध्यम ग्राममे गोड कैशिक होत है । १ । ऐसे दोऊ ग्रामनके तीन राग गोड जांनिये ॥ इति गोड रागनके नाम संपूर्णम् ॥

अथ वेसरा गीतिमें गांय ते राग वसर जांनिये ॥ सो राग आठ हं। ८। तिनकं नाम लिख्यते ॥ तहां षड्ज याममें टक । १। वेसर षाडव। २। सौवीर । ३। ये राग होत है। ओर मध्यम याममें बोट । १। मालव कैशिक। २। मालव पंचम। ३। यह राग होत हे। ओर टक कैशिक। १। हिंदोल। २। यह राग दोऊ यामनमें होत हे। ऐसे एक एक यामके तो तीन तीन = छह। ६। ओर दोऊ यामके दोय। २। ये सब मिलके आठ रागके वेसर जांनिये॥ इति वेसर नाम राग संपूर्णम् ॥

अथ साधारणि गीतिमें गाये ते राग साधारणि जांनिये॥ सो साधारणि राग सात ह ॥ ७॥ तिनके नाम लिख्यत ॥ तहां षड्ज ग्राममें रूप साधार। १। शक। २। भस्माणपंच। ३। यह राग होत हे। ओर मध्यम ग्राममें गांधार पंचम ॥ १॥ षड्जकेशिक ॥ २॥ यह राग होत है॥ ककुभराग दोऊ ग्रामनतें होत हे। ऐसें एक ग्रामके॥३॥ दूसरे ग्रामके॥२॥ और दोऊ ग्रामको एक ऐसें मिलिकें सात ॥७॥ राग साधारणि जांनिये। ऐसें पांच गीतिनमें तीस राग जांनिये। इन तीसों रागनको ग्राम राग जांनिये॥

इहां जा जा गीतीमें जो जो राग कहेहे सोहि राग उन गीतिनमें गाइये। यातें न्यारि न्यारि गीतिके न्यारे न्यारे राग कहते हें सो जांनिये ॥ ये राग दोऊ ग्रामनकी शुद्ध ॥ १ ॥ विकत ॥ २ ॥ अठारह जातिसों होतहे । यातें उनको ग्राम राग कहे हें ॥ इति ग्राम राग नाम लखन संख्या समाप्त ॥

अथ उपरागके अठाईस ॥ २८ ॥ नाम संख्या लिख्यते ॥ यह उपराग षाडण आदिक अठारह रागनसों उपजे हें । परंतु माम रागनके निकट वरति हे । यातें इनकों उपराग कहतहें । तहां मथम शकतिलक । १। टक्कसेंधव । २ । कोकिलापंचम । ३ । रेवगुप्त । ४ । पंचम षाडव । ५ । भावनापंचम । ६ । नागगांधार । ७ । नागपंचम । ८ । इति आठ मुख्य उपराग संपूर्णम् ॥

अथ उपराग बीस ॥ २० ॥ लिख्यते ॥ श्रीराग । १। नह । २। बंगाल । ३ । बंगाली । ४ । भास । ५ । मध्यम पाडव ।६। रक्त हंस । ७। कोलह हास । ८। मसव । ९ । भैरव । १० । ध्विन । ११ । मेघराग । १२ । सोमराग । १३ । कामोद । १४ । कामोदी । १५ । आश्रपंचम । १६ । कंदर्ष । १७ । देशाख्य । १८ । केशिकककुभ । १९ । नहनारायण । २०। इति बीस । २०। उपराग संपूर्णम् ॥ ऐसे पहले आठ ओर ये बीस मिलिकें। उपराग अठाईस । २८। जांनिये॥

अथ भाषाराग पंद्रह ॥१५॥ तिनके नाम लिख्यते॥ सौवीर ।१। ककुभ । २ । टक । ३ । पंचम । ४ । भिन्न पंचम । ५ । टक कैशिक । ६ । हिंदोल । ७ । बोह । ८ । मालव । ९ । कैशिक । १० । गांधार पंचम । ११ । भिन्नषड्ज । १२ । वेसर षाडव । १३ । मालव पंचम । १४ । पंचमषाडव । १५। भाषा कहिये याम रागनके आलाप ताके उपजावे ग्यारहहै। यातें इनको भाषा राग कहत हे । याष्टिकमुनिके मतसों भाषा राग कहे हें ॥ इति भाषाराग पंदरह संपूर्णम् ॥

और मतंग मुनिके मतसों छह ग्राम राग भाषारागनको उपजावें हैं। और कश्यपके मतसों बारह राग भाषारागनके करता जांनिये॥ शार्दूछ मतमें च्यार ग्राम रागनके करता जांनिये॥ इति ॥

अथ सकल आचारजके मतसों जुदे जुदे रागनके भाषाराग । १। विभाषा-राग । २ । अंतरभाषाराग । ३ । तिनके नाम संख्या लिख्यते ॥ तहां प्रथम सौवीर रागकी च्यारि च्यारि भाषाराग, तिनके नाम लखन कहत हें सो जांनो सौवीरी । १ । वेगमध्यमा । २ । साधारिता । ३ । गांधारी । ४ । ओर ककुभ रागके भाषाराग छह तिनके नाम । भिन्न पंचमी । १ । कांबोजी । २ । मध्यमग्रामा । ३ । रगंती । ४ । मधुरी । ५ । शकमिश्रा । ६ । ओर याहि ककुम रागके तीन विभाषाराग है तिनके नाम। भागवर्धनी । १। आभीरिका । २। मधुकरी । ३। जांनिये ॥

ओर या ककुभरागकी एक अंतर भाषाराग शालिवाहिन । १ । जांनिये ॥ अथ त्रिवणरागकी इकीस ॥२१॥ भाषारागके नाम लिख्यते ॥ टक्कत्रवणा । १ । वैरंजी । २ । मध्यमग्रामा । ३ । देहा । ४ । मालववेसरी । ५ । छेवाटी । ६ । सेंधवी । ७ । कोलाहला । ८ । पंचमलक्षिता । ९ । सौराष्ट्री । १० । पंचमी । ११ । वेगरंजी । १२ । गांधारपंचमी । १३ । मालवी । १४ । तान-विल्ता । १५ । लिलेता । १६ । रिवचंदिका । १७ । ताना । १८ । वाहे-रिका । १९ । दोह्या । २० । वसरी । २१ ॥ इति इकीस भाषारागके नाम संपूर्णम् ॥

या त्रिवणरागकी च्यार विभाषाराग तिनके नाम । देवारवर्धनी । ? । आंधी । २ । गुर्जरी । ३ । भावनी । ४ । जांनिये ॥

पंचम रागके दस १० भाषा राग तिनके नाम कैशिकी । १। त्रावणी । २। तानोद्भवा । ३ । आभीरी । ४। गुर्जरी । ५ । सैंधवी । ६ । दाक्षिणात्या । ७ । आंधी । ८ । मांगठी । ९ । भावनी । १० । जांनिये ॥

या पंचम रागके विभाषा राग दोय तिनके नाम । भस्मानी । १ । अंबा-लिका । २ । जांनिये ॥

ओर भिन्न पंचम रागके च्यार भाषाराग तिनके नाम शुद्धधेवतभूषिता । १ । भिन्नधेवतभूषिता । २ । वाराटी । ३ । विशाला । ४ । जांनिये ॥

अथ या भिन्न पंचमरागके विभाषा । १ । तिनके नाम छिख्यते ॥ या भिन्न पंचमरागको विभाषाराग कैशिकी जांनिये ॥

अथ टक्ककेशिक रागके भाषाराग दोय।२। तिनके नाम लिख्यते॥ मालवी। १। भिन्नवलिता। २। जांनिये॥

या टककेशिक रागका विभाषाराग दाविडी । १ । जांनिये ॥

अथ हिंदोल रागके भाषाराग नव । ९। तिनके नाम लिख्यते ॥। वेसरी । ९। चूतमंजरी । २। षड्ज मध्यमा ।३। मधुरी ।४। भिन्न पौराली ।५। गौढी । ६। मालव वेसरी । ७। छेवाटी । ८। पिंजरी । ९। जांनिये ॥ अथ बोद्दरागको भाषाराग ॥ मांगली । १ । जांनिये ॥ अथ मालवकौशिक रागके भाषाराग तेरह ।१३। तिनके नाम लिख्यते ॥ बंगाली । १ । मांगली । २ । हर्षपुरी । ३ । मालव वेसरी । ४ ।

लिख्यते ॥ बंगाली । २ । मांगली । २ । हषंपुरी । ३ । मालव वेसरी । ४ । संजिनी । ५ । गुर्जरी । ६ । गौडी । ७ । पौराली । ८ । शुद्धा । ९ । मालवरूपा । १० । अर्धवेसरी । ११ । सैंधवी । १२ । आर्मीरी । १३ । जांनिये ॥

या मालवकौशिककी विभाषा राग दोय ।२। तिनके नाम कांबोजी । ९ । देवारवर्धिनी । २ । जांनिये ॥

गांधार पंचमरागको भाषाराग गांधारी । १ । जांनिये ॥

अथ भिन्न षड्ज रागकं भाषाराग १७ तिनकं नाम लिख्यते॥ गांधारवली। १। कछेली । २। स्वरवली । ३। निषादिनी । ४। त्रवणा । ५। मध्यमा । ६। शुद्धा । ७। दाक्षिणात्या । ८। पुलिंदिका । ९। तुंबुरा । १०। षड्जभाषा । ११। कालिंदी । १२। लिलता । १३। श्रीकंठिका । १४। बंगाली । १५। गांधारी । १६। सैंधवी । १७। जांनिये॥

अब या भिन्न षड्ज रागके च्यारि विभाषा राग तिनके नाम । पौराली । १ । मालवी । २ । कालिंदी । ३ । देवारवर्धिनी । ४ ।

अथ वेसरपाडव रागके भाषाराग २ तिनकं नाम लिख्यते ॥ बाह्य । १ । बाह्यपाडवा । २ । जांनिये ॥

या वेसरषाडवके विभाषाराग ।२। तिनके नाम । पार्वती । १ । श्रीकंठी । २ । जांनिये ॥

अथ मालवपंचम रागक भाषाराग तीन । ३ । तिनके नाम लिख्यंत ॥ वगवती । १ । भाविनी । २ । विभाविनी । ३ । जांनिये ॥

ओर तानरागकी भाषाराग तानोद्भवा । १ । जांनिये ॥ ओर पंचमषाडव रागको भाषाराग पोता । २ । जांनिये ॥ ओर रेवगुप्ति रागको भाषाराग भाषांशका । ३ । जांनिये ॥ ओर याहि रेवगुप्तिको विभाषाराग पह्नवी । ४ । जांनिये ॥

ओर रेवगुप्ति रागहीके अंतरभाषाराग तिनके नाम । भासविता । १ । किरणावली । २ । शंकाविता । ३ । जांनिये ॥ और कोईक आचार्य ऐसे कहे जो पछ्यी 191 मासविश्वता । २ । किरणा-वर्शी । ३ । शंकाविश्वता । ४ । ईन च्यारों रागनको उपजायवेवारो कोऊराग नहीं है ये राग आपही स्वच्छंद कहतें न्यारे है ॥ इनको रेवगुप्तिकी विभाषा अंतरभाषा निहं जांनिये ॥

ऐसे सब रागनके भाषाराग । ९६। ओर विभाषाराग । २०। ओर अंतर-भाषा । ४ । ये सब मिलिके एकसोबीस । १२० । राग होतहे ॥ ऐसे सारंगदेवनें संगीत रत्नाकरमें कहे हैं ॥

तहां मतंगमुनिनं भाषाराग च्यार । ४ । प्रकारके कहे हें ॥ प्रथम मुख्य भाषा । ९ । स्वरभाषा । २ । देसभाषा । ३ । उपराग भाषा । ४ । जांनिये ॥

अथ तहां मुख्य भाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागमें षड्जा दिक स्वर । १। गौडादिक देस ईन दोउनको नाम निह आवे सो भाषाराग मुख्य जांनिये ॥ इति मुख्य भाषाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ स्वरभाषाको लछन लिख्यते ।। जा भाषारागमें षड्जादिक सात स्वरनमें एक एक स्वरको वा दोय स्वरको नाम आवे । जिन स्वरनको नाम आवे ते स्वरघणे वरते जाय । सो स्वरभाषा राग जांनिये ॥ इति स्वरभाषाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ देसभाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागेमं गौड आदि देशनको नाम आवे । जा देसको नाम आव ता देसकी रीतिसों आछि तरह राग गायो जाय । सो देसभाषा जांनिये ॥ इति देसभाषाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ उपराग भाषाको लछन लिख्यते ॥ जा भाषारागर्ने तीनो भाषारागनमें न्यारी न्यारी रीति होय । अथवा तीननको लछन मिलतो होय । सो उपराग भाषा जांनिये ॥ इति च्यार प्रकारके भाषाको लछन संपूर्णम् ॥

अब ईन च्यारों भाषनके याष्टिक मुनिनें न्यारे नाम कहेहैं मुख्य भाषाको नाम मूलभाषा । १ । स्वरभाषाको नाम संकीर्ण भाषा । २ । देसभाषाको नाम देसभाषा । ३ । उपराग भाषाको नाम छायाभाषा । ४ । ऐसे च्यारोनके नाम जांनिये ॥

तहां बीस भाषाराग है तिनमें शुद्धा। १ । आभीरी। २ । रगंती। ३ ! मालवंबसरी तीन । ३ । ये छह भाषाराग मुख्यभाषा जांनिये ॥ बाकीके चोदह । १४ । रागनमें सो देसभाषा जांनिये ॥ जो राग स्वरके नामसों होय । सो स्वरभाषा जांनिये ॥ ओर जो राग देसके नामसों होय । सो देसभाषा जांनिये ॥ ओ भाषारागमें स्वरको अथवा देसको नाम निह होय । सो भाषाराग उपरागभाषा जांनिये ॥

इहां भाषा । ३ । विभाषा । २ । अंतरभाषा । ३ । इनके राग एकसोबीस । १२० । कहें तिनमें कोईक दोय रागनका एक नाम है ताको अटकाव नहीं । नाम दोय च्यारनको एक नाम भलेही होय ये राग न्यारे न्यारे जांनिये ॥ यातं एक नामके दोय राग अथवा तीन राग होय । तहां संदेह नहीं करनों जैसें गुर्जरी यहां नाम दोय तीनवार आयो ता यहां गुँजरी नामके न्यारे न्यारे राग जांनिये॥ इति रागाध्यायमें ब्यामराग, उपराग, भाषाराग, विभाषाराग, अंतर-भाषारागनके नाम—लळन—भेद संपूर्णम् ॥

अथ रागांग । १। भाषांग । २। कियांग । ३। उपांग । ४। राग-नके अनुक्रमसों नाम-संख्या लिख्यते ॥ तहां पहले सत्ययुग । १। त्रेता । २। द्वापार । ३। युगनेमं पसिद्ध गाये ते जे रागांग । १। भाषांग । २। कियांग । ३। उपांग । ४। राग तिनके नाम कहे हैं ॥

अथ प्रथम रागांगके नाम लिख्यते ॥ शंकराभरण । १ । घंटारव । २ । हंसक । ३ । दीपक । ४ । रीति । ५ । पूर्णाटिका । ६ । लाटि । ७ । पह्नवी । ८ । ये राग आठ । ८ । रागांग जांनिये ॥

अथ भाषांगरागके नाम लिख्यते ॥ गंभीरी । १ । वेहारी । २ । खशिक । ३ । उत्पत्नी । ४ । गोल्ली । ५ । नादांतरी । ६ । नीलोलली । ७ । छाया । ८ । तरंगिणी । ९ । गांधारगति । १० । वैरंज्या । ११ । ये ग्यारह राग । ११ । भाषांग जांनिये ॥ इति भाषांग राग संपूर्णम् ॥

अथ कियांग रागनके नाम लिख्यते ॥ भावकी । १। स्वभावकी । २। शिवकी । ३ । मरुककी । ४ । त्रिनेत्रकी । ५ । कुमुदकी । ६ । अनुकी । ७ ।

ओजकी । ८ । इंद्रकी । ९ । नागकी । १० । धन्यकी । ११ । विषायकी । १२। ये बारह। १२। राग कियांग जांनिये ॥ इति कियांग रागके नाम संपूर्णम्॥

अथ उपांग रागके नाम लिख्यते ॥ पूर्णाट । १ । देवाल । २ । गुरुंजिका । ३ । ये तीन राग उपांग जांनिये ॥ ऐसे च्यारों अंगनके मिलिके चोतीस । ३४ । रागहैं । ते भरत मतंग याष्टिक आदि मनिस्वरननें आगहे जगनमे गाये है ॥

अब या किंद्युगमं इनके स्वरूपनको भेद कोई नहीं जाने । जो आगिले पुरुष अपने धरममें सावधानहूं तैसो शास्त्र रीतिसों इन रागनको गान करतेथे कलिजुगमे धरमपर जादा आचरण करते नहिं ॥ लोकमनमाने चलेछे धर्मसूं डरते नहीं है ॥ तोहू इन रागनके गान मंगल करताहै ॥

अथ रागांग । १ । भाषांग । २ । कियांग । ३ । उपांग । ४ । इन च्यारों अंगनके अब कितयगमें जे प्रसिद्ध नाम हैं तिनके संख्या तिख्यते॥

तहां पथम रागांग रागनके नाम कहे हैं ॥ मध्यमादि। १। माछवश्री। २। तोडी । ३ । बंगाल । ४ । भैरव । ५ । वराटि । ६ । गुर्जरी । ७ । गौड ।८ । कोलाहल । ९ । वसंत । १० । धनाश्री । ११ । देशी । १२ । देशाख । १३ । ये राग तेरह जांनिये ॥ इति रागांग नाम संपूर्णम् ॥

अथ भाषांग रागके नाम लिख्यते ॥ तहां पथम डोंबकी याको लोकिकमे भुपाली कहतहैं । १ । आसावरी । २ । वेलावली । ३ । मथम मंजरी । ४ । आडिकामोदिका ।५। नागध्वान ।६। शुद्धवराटि । ७ । नद्दा कर्णाट । ८। बंगाल । ९। ये राग नव भाषांग जांनिये ॥ इति भाषांग र। गके नाम संपूर्णम् ॥

अथ कियांग रागके नाम लिख्यते।। रामकरी । १ । गौडकरी । २ । देवकरी । ३ । ये राग तीन कियांग जांनिये ॥ इति कियांग रागनके नाम संपूर्णम् ॥

अथ उपांग रागके नाम लिख्यते ॥ कौंतलि ॥ १ ॥ दांविडी ॥ २ ॥ सैंधवी ॥ ३ ॥ स्थानवराटि ॥ ४ ॥ इतस्वरवराटि ॥ ५ ॥ प्रतापवराटि ॥६॥ छायावोडी ॥ १९ ॥ तुरष्कतोडी ॥ ८ ॥ महाराष्ट्रीगुर्जरी ॥ ९ ॥ सौराष्ट्रीगुर्जरी ॥ १० ॥ दक्षणागुर्जरी ॥ ११ ॥ द्राविडीगुर्जरी ॥ १२ ॥ भुंछिका ॥ १३ ॥ स्तंभतीर्थिका ॥ १४ ॥ छायावेलावली ॥ १५ ॥ मतापवेलावली ॥ १६ ॥ भैरवी ॥ १० ॥ कामोदासिंहली ॥ १८ ॥ छायानहा ॥ १९ ॥ रामकृति॥२०॥ वल्लातिका ॥ २१ ॥ मल्हारी ॥ २२ ॥ मल्हार ॥ २३ ॥ गौड ॥ २४ ॥ देशवाल याको लौकीकमे कर्णाट कहतहै ॥ २५ ॥ तुरष्क याको लोकिकमे मालवगौड कहतहै ॥ २६ ॥ द्राविड ॥ २० ॥ ये राग सताईस ॥ २० ॥ उपांग जांनिये॥

ये च्यारों अंगनके राग कोईकोईक प्रसिद्ध कहे हैं अरु इनतें ओरहु राग प्रसिद्ध अनेक कहे हैं। सो मतंगमुनिनें ऐसं कहें हैं॥

जो देसी राग अनंत है इनको अनिबद्ध जांनिये ॥शास्त्रमे बांधे नही है। यांतें इनकी संख्या निह परंतु कहें जे च्यारो अंगनके कित्युगमे प्रसिद्ध राग ते सब मिलिके बावन। ५२। होते हैं ॥ पहिल कहें जो राग अरु ये रागसों सिगरे मिलिके दोयसोचोसिट। २६४। होतहें ॥ ऐसे संगीत रत्नाकरके करता सारंगदेव कहतहें ॥ इति च्यारो अंगनके प्रसिद्ध राग—नाम संपूर्णम् ॥

तहां यामरागादिक नव पकारके रागनमें प्रथम तीस याम कहे है ॥ तिन याम रागनमें प्रसिद्ध देशीभाषा विभाषा । अंतरभाषा रागांग । भाषांग कियांग । उपांग रागनके उपजायवे । वारे जे यामराग तिनको छछन प्रथम कहे हैं ओर बाकीके याम रागनको छछन । उन रागनके जहां जहां देशीराग आदिराग आवेंगे तहां तहां कहेंगे ॥

अब देसी रागनके कारण जे यामराग तिनके पथम भिन्न षड्ज नामको यामराग है। ताको छछन कहिवेको पहछे जाति जाति सामान्य रागको छछन कहेहै ॥ ये जाति सामान्य राग संगीत पारिजातमे कहे है ॥

अथ संगित पारिजातके मतसों रागनके नाम—संख्या लिख्यते ॥
सैंधव ॥ १ ॥ धनाश्रीके तीन भेद संपूर्ण ॥ २ ॥ षाडव ॥ ३ ॥ औडव ॥ ४ ॥
मेघमल्हार ॥ ५ ॥ नीलांबरी ॥ ६ ॥ मालश्री ॥ ७ ॥ रक्तहंस ॥ ८ ॥ गौरी ॥ ९ ॥
महारी ॥१०॥ पंचम ॥११॥ वसंत ॥१२॥ देसारब्य ॥ १३ ॥ देसकारी ॥ १४ ॥
मुखारी ॥१५॥ मैरवी ॥१६॥ भूपाली ॥ १७ ॥ मसम ॥ १८ ॥ वसंतभैरव ॥ १९॥

सप्तमो रागाध्याय-संगीत पारिजातके मतसो राग-नाम संख्या. १५

कोल्लहास ॥ २० ॥ भैरव ॥ २१ ॥ मध्यमादि ॥ २२ ॥ बंगाली ॥ २३ ॥ नारायणी ॥ २४ ॥ विभास ॥ २५ ॥ कानडी ॥ २६ ॥ मेघनाद ॥ २७ ॥ छायातोडी ॥ २८ ॥ तोडि ॥ २९ ॥ मार्गतोडि ॥ ३० ॥ घंटाराग ॥ ३९ ॥ वराटि ॥ ३२ ॥ शुद्धवराटि ॥ ३३ ॥ तोडिवराटि ॥ ३४ ॥ नागवराटि ॥ ३५ ॥ पुन्नागवराटि ॥ ३६ ॥ प्रतापवराटि ॥ ३७ ॥ शोक वराटि ॥ ३८ ॥ कल्याण-वराटि ॥ ३९ ॥ खंभावति ॥ ४० ॥ कल्याण ॥ ४१ ॥ आभीर ॥ ४२ ॥ रामकली ॥ ४३ ॥ मालव ॥ ४४ ॥ सारंग ॥ ४५ ॥ गुणकरी ॥ ४६ ॥ शंकराभरण ॥ ४७ ॥ बृहत ॥ ४८ ॥ बडहंस ॥ ४९ ॥ ककुभ ॥ ५० ॥ गोपिकां-बोधी ॥ ५१ ॥ वेछावछी ॥ ५२ ॥ केदारी ॥ ५३ ॥ कांबोधी ॥ ५४ ॥ दीपक ॥ ५५ ॥ पटमंजरी ॥ ५६ ॥ सिलता ॥ ५७ ॥ बहुँसी ॥ ५८ ॥ गुर्जरी ॥ ५९ ॥ दक्षिणागुर्जरी ॥ ६० ॥ रेवगुप्त ॥ ६१ ॥ गौड ॥ ६२ ॥ केदारगौड ॥ ६३ ॥ कर्णाटगौड ॥ ६४ ॥ सारंगगौड ॥ ६५ ॥ रीतिगौड ॥ ६६ ॥ नारायण-गौड ॥ ६७ ॥ मालवगौड ॥ ६८ ॥ देसी ॥ ६९ ॥ हिंदोल ॥ ७० ॥ मार्ग-हिंदोल ॥ ७१ ॥ टक ॥ ७२ ॥ नाट ॥ ७३ ॥ नाटनारायण ॥ ७४ ॥ सालगनाट ॥ ७५ ॥ छायानाट ॥ ७६ ॥ कामोदनाट ॥ ७७ ॥ आभीरनाट ॥ ७८ ॥ कल्याणनाट ॥ ७९ ॥ केदारनाट ॥ ८० ॥ वराटि ॥ ८१ ॥ नाट ॥ ८२ ॥ पूर्या ॥ ८३ ॥ श्रीराग ॥ ८४ ॥ पहाडि ॥ ८५ ॥ सावेरी ॥ ८६ ॥ पूर्वी ॥ ८७ ॥ सारंग ॥ ८८ ॥ साछंग ॥ ८९ ॥ विहंगड ॥ ९० ॥ सामंत ॥ ९१ ॥ नादनामकी ॥ ९२ ॥ गोण ॥ ९३ ॥ मंगलकोशिक ॥ ९४ ॥ कुडाई ॥ ९५ ॥ देवगांधार ॥ ९६ ॥ त्रिवर्ण ॥ ९७ ॥ कुरंग ॥ ९८ ॥ सीदामिनी ॥ ९९॥ देविंगरी ॥ १००॥ वैजयंती ॥ १०१ ॥ हंस ॥ १०२ ॥ कोिकल ॥ १०३ ॥ जयश्री ॥ १०४ ॥ सुरालय ॥ १०५ ॥ अर्जुन ॥ १०६ ॥ ऐरावत ॥१०७॥ कंकण ॥१०८॥ कुमुद् ॥ १०९ ॥ कल्पतरु ॥११०॥ रन्नावली ॥ १११ ॥ सोरठ ॥ ११२ ॥ मारू ॥ ११३ ॥ चक्रधर ॥ ११४ ॥ मंजुघोष ॥ ११५ ॥ सिंहरव ॥ ११६ ॥ शिववल्लम ॥ ११७ ॥ आनंद्भैरव ॥ ११८ ॥ मनोहर ॥ ११९॥ मानवी ॥ १२०॥ राजधानि ॥ १२१॥ रामराज

॥ १२२ ॥ शंकरानंद्र॥ १२३ ॥ शर्वरी ॥ १२४ ॥ इति संगीत पारिजातके मतसों रागनकी संख्या संपूर्णम् ॥

अथ संगीत रत्नाकरके मतसों नाटरागनकी संख्या लिख्यते॥ कान्हारनाट। १। हीरनाट। २। हमीरनाट। ३। कामोदनाट। ४। शुद्धनाट। ५। मेघनाट। ६। सारंगनाट। ७। केदारनाट। ८। नाट। ९। इति नव नाट संपूर्णम्॥

अथ अनुपविलासके मतसों सोलह नाटके नाम लिख्यते ॥
शुद्धनाट । १ । सालंगनाट । २ । छायानाट । ३ । केदारनाट । ४ । कल्याणनाट । ५ । आभीरनाट । ६ । कर्णाटनाट । ७ । वरालीनाट । ८ । सारंगनाट
। ९ । कामोदनाट । १० । वर्णनाट । ११ । बिभासनाट । १२ । हम्भीरनाट
। १३ । कदंबनाट । १४ । पूर्णनाट । १५ । पूर्यानाट । १६ । इति अनुपविलास मतसों सोलह नाट संपूर्णम् ॥

अथ याष्टिकके मतसीं चोदह। १४। प्रकारके कान्हाडाके नाम-संख्या लखन लिख्यते।। शास्त्रमे कान्हाडेको नाम कर्णाट कहे हैं॥

सुद्धराग मिलीते सो कान्हडोदर बार जांनिये ॥ १ ॥
जामें मल्हारको मेल होय सो कान्हडो नायकी जांनिये ॥ २ ॥
जामें धनासिरीको मिलाप होय सो कान्हडो वागेसरी जांनिये ॥ ३ ॥
जामें मेघरागको मिलाप होय सो कान्हडो अडाना जांनिये ॥ ४ ॥
जामें फरोदस्तरागको मिलाप होय सो कान्हडो शहाणा जांनिये ॥ ५ ॥
जामें जेतसिरीको मिलाप होय सो कान्हडो पूरिया जांनिये ॥ ६ ॥
या पूरियाको मंगलाष्ट कहतहै ॥ जामें मुद्दिकरागको मिलाप होय सो
कान्हडा मुद्दिक कान्हडो जांनिये ॥ ७ ॥

जामें गारा रागकां मिलाप होय सो कान्हडो गारा कान्हडो जांनिये ॥८॥ जामें हुसेनी रागको मिलाप होय सो कान्हडो हुसेनी कान्हडो जांनिये॥९॥ जामें काफी रागको मिलाप होय सो कान्हडो काफी कान्हडो जांनिये॥ १०॥

जामें सोरठ रागको मिलाप होय सो कान्हडो सोरठ कान्हडो जांनिये॥११॥

जामें खम्बायती रागको मिलाप होय सो कान्हडो, खम्बायती कान्हडो जांनिये॥ १२॥

जामें गौडरागको मिलाप होय सो कान्हडो, गौड कान्हडो जांनिये। याको कान्हडो गौड कहत है॥ १३॥

जामें ओर रागको मिलाप न होय सो कान्हडो कर्णाट जांनिये।। १४॥ इति चोदह कान्हडाको नाम संपूर्णम्।।

अथ सारंगदेव राजऋषिके मतसो संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव । ३ । इन तीन तीन प्रकारके जितने राग है तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां अनुष्टुप् चक्रवर्तिके मतसों नव प्रकारके भैरव भेद लिख्यते ॥ सुद्धगांधार यह संपूर्णम् । १ । अंतर गांधार यह संपूर्णम् । १ । साधारण गांधार यह संपूर्णम् । ३ । वसंत भैरव । ४ । आनंद भैरव । ५ । नंद भैरव । ६ । गांधार भैरव । ७ । स्वर्णाक भैरव । ८ । पंचम भैरव । ९ । ये नव प्रकारके भैरव राग संपूर्णम् ॥ संपूर्ण । १ । षाडव । २ । औडव । ३ । ऐसे तीन प्रकारके भैरव जांनिये ॥ इति नव प्रकारके भैरव संपूर्णम् ॥

अथ नव पकारकी गुर्जरी। तहां षड्ज याम आदि लेके सब रागनके उपजायनवारे याम राग कहे हैं तिन जातिमें लोकीकमें भैरव राग मिसद है। ताके कहिवेको अठारह जातिनमें अनुक्रमसों षाड्जी आदि सुद्ध सात जाति छोडिके विकृति जाति जो षड्जोदीच्यवा। ताको लखन स्वराध्यायमें अठारह । १८। जाति लखननमेंसो तहां देखी लीजिये॥

अथ जातिनके वरतिवेकी रीति लिख्यंते ॥ ये अठारह जाति वरितवेको संपूर्ण जांनिये कोई जाति एक स्वरके घटाये षाडव होत है। दोय स्वर घटाये तें औडव होत है ताको उदाहरण संपूर्णको भावभटने कसो सो कहतहैं। सासा मम गग गगपम गममध पमिरसा धध पध धधसा। ऐसेही षाडवके उदाहरण जांनिये॥ इति षड्जोदीच्यवती जाति संपूर्णम्॥

अथ भिन्न षड्ज रागको लछन लिख्यते ॥ षड्जोदीच्यवती जातिसों जाकी उत्पत्ति होय । ओर जामें रिषम पंचम नहीं होय । जाको अंशस्वर महस्वर धैवत होय पथम स्वर जाको न्यास होय । जाकी उत्तरायता वरताव होय । जामें संचारी वरन सुंदर होय जामें पसन्नांत अलंकार होय । जामें काकली निषाद अरु अंतर गांधार होय । जाको देवता ब्रह्माजी है । हेमंतऋतु कहतें । मागिसर पौष इन दोय महिनामें दिनके पहले पहरमें गावनों । ओर जामें बीभच्छ रस भयानक रस मुख्य होय । चऋवर्ती राजाके राजितलकके समें राजाकी सभामें गावनों ऐसो जो राग सो भिन्न षड्ज राग जांनिये ॥

या रागके स्वरनमें पड्ज स्वर भिन्न कहतें विकृत है यातें याको भिन्न पड्ज कहे हैं। ऐसेही जहां ओर कोउ स्वर भिन्न होय। तहां ऐसेही विकृत स्वरकी भिन्न संज्ञा जांनिये॥ सो भिन्न राग च्यार प्रकारको है श्रुति भिन्न। १। जाति भिन्न। २। सुद्ध भिन्न। ३। स्वर भिन्न। ४। ऐसे च्यार भिन्न जांनिये॥ भिन्न कहिये विकृत ऐसे बारह। १२। विकृत अथवा बाईस। २२। अथवा बियाचाठीसनमें। ४२। जो स्वर विकृत होय सो भिन्न जांनिये॥ यातें भिन्न पड्ज रागमें पड्ज विकृत जांनिये॥

अथ प्रथम स्वर भिन्नको लछन लिख्यते ॥ जामं अपनी जातिको वादीस्वरतो लीजिये । अरु संवादीस्वर छोडि दीजिये । अथवा संवादी न्यास स्वर कीजिये । ओर विवादी स्वर अनुवादीस्वरहुं लीजिये । सो राग वा जातितें भिन्न स्वर जांनिये ॥ ऐसे रागहूं ते राग भिन्न स्वर जांनिये जैसे शुद्ध षाडवराग । १। तें भिन्न षड्जराग अरु भिन्न पंचमरागको स्वरसमूह न्यारो है ऐसे भिन्न षड्ज भिन्न पंचम शुद्ध षाडवतें भिन्न जांनिये ॥ इति स्वर भिन्नको लछन संपूर्णम् ॥

अथ जाति भिन्नको लछन लिख्यते ॥ जा रागमें अपनी जातिको अंशस्वर स्वल्पता कहिये । थोडेपनेंत अथवा बहूत कहिये । बहूतपनेंत वह अंश स्वर स्थाई वरण होय के ग्रहस्वर होय । ओर बाकींके स्वर सूक्ष्म अथवा अति सूक्ष्म होय अरु कृटिलतालींये होय । सो राग जाति भिन्न जांनिये ॥ कहूंक रागनों हूं जाति भिन्न होत है । जैसे सुद्ध कैसिक मध्यम रागके ओर भिन्न केतिक रागके अंशस्वर ग्रहस्वर एकही हे तो हूं अपनी जातिके स्थाई आदिवर्ण सूक्ष्म अतिसक्ष्म स्वर प्रयोगके भेदतें ये दोउ राग आपसमें जाति भिन्न जांनिये ॥ इति जाति भिन्नको लखन संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध भिन्नको लछन लिख्यते ॥ ओर रागके मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । स्थानके स्वरसमूह छोडि करिक जुदे स्थानके स्वरसमूह जा रागमें होय । ओर वह स्वरसमूह एकही है परंतु स्थानको भेद होय । सो सुद्ध भिन्न जांनिये ॥ जैसे सुद्ध कैसिक रागको ओर भिन्न कैसिक रागको स्वरसमूह एकही है । परंतु शुद्ध कैसिकरागमें वह स्वरसमूह मंद्रस्थानको छीजिये ऐसे स्थान भेदतें शुद्ध कैसिक ओर भिन्न कैसिक । ये दोऊ आपसमें शुद्ध भिन्नको लछन संपूर्णम् ॥

अथ श्रुति भिन्नको लछन लिख्यते ॥ जा रागमं च्यार श्रुतिको स्वर विक्रत होयके दोय श्रुतिको रहे ओर दोय श्रुतिको गांधार होय सो राग श्रुति भिन्न जांनिये ॥ जैसें भिन्न तानरागमं निषादस्वर काकठी होयके पड्जकी पहली दोय श्रुति लेतहै तब च्यारि श्रुतिको पड्ज सो दोय श्रुतिको होत है । ओर गांधार स्वर भिन्न तानरागमें दोय श्रुतिकोही है । योतं भिन्न तानराग श्रुति भिन्न जांनिये ॥ ऐसे काकठी निषाद अंतर गांधार भिन्न पड्जमें हूं कहे हैं । तातें भिन्न पड्जमें हूं श्रुति भिन्न जांनिये ॥ इति च्यार प्रकारके भिन्न लछन संपूर्णम् ॥

अथ भिन्न पड़न रागको ध्यान लिख्यते ॥ जा रागको पीतवरनहैं ओर वीर रसमें मगन हैं। संग्राममें हाथमें खड्ग लेके वैरीके माथे कांटे हैं। बार बार शस्त्रको चलावे हे ओर कायर पुरुषको देखिके वांके उपर शस्त्र नहि चलावे है। ऐसो जो राग तांहि भिन्न पड्ज जांनिये॥

अब इहां रागके वरतिवेके जो स्वरसमूह सो पांच मकारको है ॥ आलाप । १। रूपक । २। करण । ३। वर्तिनी । ४। आक्षिप्तका । ५। तिनके नाम-लखन कहत है ॥

अथ प्रथम आलापको लछन लिख्यते ॥ रागके जा वरतवेमें ग्रह-स्वर । १ । अंशस्वर । २ । तारस्वर । ३ । मंद्रस्वर । ४ । न्यासस्वर । ५ । अपन्यासस्वर । ६ । इनको थोडापनेको बहुतपनेको अथवा षाड ३ । १ । औडव । २ । इनको इहां आछीतरह ग्यान नहीं होय । अरु रागतो आछीतरह वरत्यो जाय सो वरताव आलाप जांनिये ॥ अथ भिन्न षड्जके आलापको उदाहरण लिख्यते ॥ ध गा मा म गा सा सा स ग म धा धा नि ध म ग मा मा मां मां म म ध मा ग सा स स । स ग सं स म धा धा स नि सा सा स सा स सा । सा नी सा नी सा नी धा धा स नि स सां स संग संग म धा धा नि धा म ग मा म ध ध नी नी मा गा म गा सा ॥ इति आलाप उदाहरण—लखन संपूर्णम् ॥

अथ रूपकको लछन लिख्यते ॥ जा आलापमें रागके विभागनमें विभाग करिके स्वरको उच्चार होय । ओर अपन्यास स्वरनको जान्यो जाय ऐसो जो आलाप होय ताको रूपक जांनिये ॥ यह रूपक नाम आलाप भाषा आदिक रागनमें कीजिये ॥ ग्रामराग । १ । उपराग । २ । रागनमें यह मतंग मुनिके मत हैं । ओर इहां करणवर्तनके नाम कहें । परंतु इनके लछन प्रबंधनकी अध्यायमें कहेहें । ये दोउ करण । १ । वर्तिनी । २ । प्रबंधरूपही हे । यातें इनको लछन नहीं कह्यो । यह सारंगदेव राजऋषिके मत है ॥ इति रूपकको लछन संपूर्णम् ॥

अथ आक्षिप्तकाको लछन लिख्यते ॥ जहां जातिनमें कही जे कला तिनकी रीतिसों स्वरनको उच्चार कीजिये। फेर उन स्वरनमें रामकृष्ण आदि शब्दको उच्चार कीजिये। ऐसे जितनी कला होय तितनी कलानमें कीजिये। ओर उन कलानमें चित्र मार्ग। १। वार्तिक मार्ग। १। दक्षिण मार्ग। ३। इन तीनो मार्गनसों चंचतपुट आदि मार्गी तालनके एक कल। १। दिकल । २। चतुष्कल। ३। भेद होय। ऐसे जो स्वर ओर अक्षर इन दोजनकी रचना रागनमें कीजिये सो आक्षिप्तका जांनिये॥ इति आक्षिप्तकाको लछन

अथ आक्षिप्तकाको उदाहरण लिख्यते ॥ धधधनि पपम गस गमनि धधधनि धपम गस गमध॥ जल ०० तरं ०० ग०० भं०० गुरं ०० अने ०० करेणु॥ इति आक्षिप्तकाको उदाहरण संपूर्णम् ॥

अब संगीत रत्नाकरके मतसों भिन्न षड्ज नामके ग्राम रागसों भैरवराग उत्पन्न भयो है सो सब रागको राजा है ॥

अथ श्रीमत् हनुमानजीके मतसों भैरव आदि राग रागीनीनकी उत्पत्ति स्वरूप लखन जंत्र लिख्यते ॥ तहां प्रथम भैरव रागकी उसति

हिल्यते ॥ श्रीशिवजीनं तांडव नृत्य रच्यो ता समय सकल देवता, मुनि, असुर, नाग आदि सिगरे आये । ता समय दैत्यनके त्रास देवेके वास्ते श्रीशिवजीके अघोर मुखतें भैरव राग पगट भयो । ताको श्रवण करिके दैत्य सब भाग गये देवतानको हर्ष भयो ॥

अथ भैरवरागको स्वरूप लिख्यते ॥ स्वेत जाको रंग है । स्वेत वस्नको पहरे हैं । अरु गजचर्मको ओढ हैं । सर्पनके गहणे पहरे हैं । जटाजूटमें गंगाको धरे हैं । ओर चंद्रकलाको ललाट्ये धरे हैं । तीन जाके नेत्र है । नरमूंडनकी माला पहरे हैं । अरु जाके हातमें तिशूल है । सब रागनके आदि । भैरवराग शास्त्रमें तो यह पांच स्वरनसें गायो है । ध नि स ग म ध । यातें औडव है । ओर लोकिकमें अनुरंजनके अरथ ऋषभ । पंचम ये दोऊ स्वरभी वरते हैं । याते संपूरनहूं है । याको च्यार घडीके सबेरेतें दोय घडीके तडके ताईं । गावनो यहतो याको बस्तत है । ओर चाहो जब गावो यह राग सदाही मंगलीक है ॥

अथ भैरवरागकी परीक्षा लिख्यते ।। घाणीमें तील डारि वार्में लाठि मेलिके बलध जोते नहीं । ओर भैरवराग गाईये जो वांके गायवेसों घाणीकी लाठि । आपहीसों फिरवे लगे । तब भैरवराग सांचो जांनिये ॥

अब याकी आलाप चारी सात स्वरनमें की जिये ॥ राग वरते सो जंत्र लिखिये है। तासों समिसिये ॥ यामें ग्रहां सन्यास धैवत है ॥ नृत्य निर्णयके मतसों पड्ज न्यास राख्ये। यह संगीतदर्भणके मतसों भैरवराग है पांच स्वरनसों गायो है। यातें संगीतदर्भणके मतसों औडव जांनिये ॥ ओर राग विवोध चंद्रोदय। नृत्य निर्णय। ओर वगैर ग्रंथनमें यह भैरवराग सात स्वरनमें गायो है पड्ज स्वरमें ग्रह अंशन्यास राखे है। याते भैरवराग संपूर्ण है । यह भैरवराग साक्षात् भैरव स्वरूप है। जो कोई पुरुष श्रद्धा भक्तीसों पवित्र होयके शास्त्र रीतिसों पंचायतन पूजामें देवतानकी स्तुतिमें ये रिच गावे। अथवा नित्य नियमसों सुनें ताको च्यारु पदार्थ शिवजी प्रसन्त होयके देत हैं। यातें मुक्तीकी इच्छा करिके। श्रीशिवजी हनुमानजी नारदजी आदि देवकिष । भरत आदि ब्रह्मार्ष । सारंगदेव आदि राजर्ष । संगीतशास्त्रके जानिवेवारनें गायो हे॥

संगीतसार.

प्रथम राग भैरव (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक तक
स	षड्ज असली, मात्रा एक तक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय तक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय तक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	नि	निषाद अंतर, मात्रा एक तक
ध	धेवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असली, मात्रा एक तक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक तक		

॥ इति भैरव राग संपूर्णम् ॥

अथ इन रागनकी रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ ये छहो राग अपने अपने कारिज करिके । शिवजीके आगे ठाढें भये ता समय पार्वतीजीनें कहा तुमको क्या कामनाहे तब रागननें सहाई मांग्यो हमकों स्त्रीरूप सहाई दीजिये । तब पार्वतीनें शिवजीसों विनंधि करी महाराज इनकुं स्त्री दीजिये । तब शिवजीनें पार्वतीजीके बचन सुनी । डेरुमेंसो काढी इन छहो रागनको पांच पांच रागनी दीनी । तब रागनी डेरुमेसों निकसि करिके । नृत्यसों शिवजीको पसन किये । तब शिवजीनें वरदान दीनों जो तुमकों गांवेंगे ताके सकल मनोरथ सफल होवेंगे ॥ इति सकल रागनीनकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥

अथ भैरवरागकी पांचो रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें डेरूमें सें सब रागनीनको उत्पन्न करिके। उनमें सों विभाग करिवेको
अघोर मुखसों गायके। प्रथम मध्यमादि नाम रागनी भैरवकी छाया जूकि देखी
भैरवको दीनी॥ अथ मध्यमादि रागके स्वरूप लिख्यते॥ सुवरनको जाको
रंग हे। केसरसों चरचित जाको सरीर हे। अरु कमलपत्रसें विसाल जाके नत्र
है। अरु जाके पितनें हिसके आिंटंगन कर जाके मुखको चूंबन कियो है।
ऐसी जो रागनी तांहि मध्यमादि.जांनिये॥ ओर लोकिकमें याको मधुमाधव
कहे हैं। शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गाई है। मपधिन सिरगम। यातें
संपूर्ण हे। अथवा मपिन सगम। यातें औडव याको दोय घडीके सबेरेते हें
घडीके सबेरे तांई गावनी। एक घडीको प्रमान है यह तो याको बखत है। ओर
याको दिनके प्रथम पहरेंमें चाहो जब गावो। याकी आलाप चारी सात स्वरनमें
किये राग वरतेसों जंत्रसों समिसये॥ अनूप विलाससें यहांस रिषम न्यास पड्ज॥

भैरवरागकी मध्यमादि (मधुमाधवी) रागनी १ संपूर्ण.

रि	रिषम चढी, मात्रा दोय तक	ध	धैवत असिल, मात्रा दोय तक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय तक	प	पंचम असिल, मात्रा एक तक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
प	पंचम असिल, मात्रा दोय तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक तक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक तक

(मधुमाधव-ओडव.)

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक
प	पंचम असली, मात्रा एक तक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक	प	पंचम असलि, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक तक		

नि	निषाद उत्तरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक तक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक तक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक

अथ भैरवरागकी दूसरी भैरवीरागनी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं बाकी रागनीनमेसों विभाग करिवेको । अघोरमुखसों गायकें दूसरी

सप्तमी रागाध्याय-भैरवी और बंगाली रागको स्वरूप-जंत्र. २५

भैरवी नाम रागनी भैरवकी छाया जुकि देखी भैरवको दीनी ॥ अथ भैरवी रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ पीरो जाको रंगहे बडे जाके नेत्रहै । अरु सुंदर कैला-सके शिखरमें स्फिटिककें सिंहासनेंप विराजमान फूले कमलके पत्रनसों शिवका पूजन करतहै । हाथसों ताल बजावतेहै ॥ ऐसी जो भैरवकी रागनी तांहि भैरवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तों यह सात स्वरनसों गाईहै । म प ध नि स रि ग म । यांतें संपूरन है ॥ अथवा ध नि स ग म ध । यांतें औडव हूंहै ॥ याको घडिके तडके तलक दिन उगें ताई गावनों । दिनके दोय पहर ताई चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरतेसो जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें महांस न्यास पड्ज ॥

भैरव रागकी द्वितीय रागनी भैरवी २ (संपूर्ण).

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक तक	ध	घैवत उतरी, मात्रा एक तक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय तक	प	पंचम असलि, मात्रा एक तक
प	पंचम असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक

सं	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक तक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय तक

ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक
	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक तक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक तक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक

अथ भैरव रागकी तीसरी बंगाली रागनी ताकी उत्पनि लिख्यते ॥ शिवजीनें बाकी रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । अघोर मुखसों गायके तीसरी बंगाली नामरागनी भैरवकी छाया जुक्ति देखी भैरवको दीनी ॥

अथ बंगाली रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर रंग मनोहर जाकी मूर्ति है। अरू सुंदर मुंजकी कणगती पहरे हैं। ओर वृक्षकी वल्कके वस्त्र पहरे हैं। छंबो जाको शरीर हे अरू बड़ो जामें कोध है। अरू सामवेदको गान करत है। ऐसी जो रागनी तांहि बंगाली जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह पांच स्वरनसों गाई है। सग मप निस यांतें औडव है अथवा मप धानि सिर ग म यांतें संपूरन है। याको दिनऊगतें ले घड़ी एक दिनचड़े जहां तांई गावनी। यह तो याको बखत है। दिनके प्रथम पहरमें चाहो जब गावो याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग बरतेसो जंत्रसों समझिये॥ अनूपविलाससें ग्रहांस न्यास धैवत॥

भैरव रागकी तृतीय रागनी वंगाली (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय तक
नि	निषाध उत्तरी, मात्रा एक तक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय तक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक तक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक तक

प	पंचम असिंह, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिंह, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा च्यार	ग	गांधार उतरी, मात्रा च्यार
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असाठि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

अथ भैरव रागकी चोथी वरारी नाम रागनी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । अघार मुखसों गायके वरारी नामरागनी भैरवकी छाया जुिक देखे भैरवको दीनी ॥

अथ वरारी रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर रंग सुंदर जाको सरीर है। हाथनमें कंकण पहरे हैं। ओर अपनें पतिके उपर चवर दुलावत है। सुंदर जाके केंस है। कल्पवृक्ष फूल काननमें पहरे है। ऐसी जो रागनी तांहि वरारी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स यांतें संपूरन है । याको दिनके दूसरे पहरकी घडी एक बाकी रहे जब गावनी यहतो याको बखत है । दुसरे पहरमें चाहो जब गावो । अब याकी आलाप चारी सात स्वरनमें किये राग वरतेंसो जंत्रसों समिश्चये । संगीत दरपनसें ग्रहांस न्यास पहुज ॥

भैरव रागकी चतुर्थ रागनी वरारी ४ (संपूर्ण).

			6
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

नि	निषाध चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उत्तरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछि, मात्रा एक

अथ भैरव रागकी पांचई सेंध श रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनीमेंसों विभाग करिवेको । अघोर मुखसों गायके । पांचवी
सेंधवी नाम रागनी । भैरवकी छाया जुिक देखि भैरवकों दीनी । याको छोकीकमें सेंधवीको नाम सिंधू कहत है ॥ अथ सेंधवीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर सुंदर
जाको स्वरूप है । कसूमल वस्त्र पहेरे हैं । मिजनाके फूलनको घारे हैं । हाथमें
जाके त्रिशूल है । शिवजीकी भक्तीमें जाको चित्त आसक है । प्रचंड जाको
कोप है । वीर रसमें मम्र है । ऐसी जो रागनी तांहि सेंधवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो
यह सात स्वरनसों गाई है । स रिगम प ध नि स । याते संपूरन है । अथवा
स ग म प ध नि स यातें पाडवहूं है । याके दिनके दूसरे पहरकी दूसरी घडीमें
गावनों ओर संग्राम समेंमें चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें
कीये राग वरते सो जंत्रसों समिश्चयें । अनूपविलासमें ग्रहांस धैवत न्यास पड्ज ॥

भैरव रागकी पांचवी रागनी सैंधवी ५ (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा तीन
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

इति सैंधवी रागनी संपूर्णम् ॥ इति भैरव रागकी सब रागनी संपूर्ण॥

अथ मालकोंस रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके वामदेव नाम दूसरे मुखतें मालकोंस भयो । देवतानको अंग दैत्यनके जूद्धतें । छिन भिन भये तिनके यथायोग्य करिवेके लिये । यह राग अमृतक्तप है । याके अवण करिके देवतानके अंग यथायोग्य भये कौशिक रागको नाम शास्त्रमें मालकौसिक । अक्त लोकीकमें मालकोंस कहत है । अथ मालकोंसको स्वरूप लाल जाको रंग है । ओर हाथमें पीरे रंगकी छडी लीये है । आप बडो बीर है । ओर वीरपुरुषनमें जाको परिचय है । वीरपुरुष जाके संग है । वैरीनकी माथानकी माला पहरे है । ऐसो जो होय तांहि मालकोंस राग जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स यांतें संपूरन है । याको छे घडीके संवरे तलक च्यार घडीके संवरे तांई गावनों । यहतो याको बखत है । ओर यह राग मंगलीक है चाहो तब गावो ॥ अथ मालकोंस रागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जोसिघडीमें आ-रणा छाणा धरीके मालकोंस राग गाईये जो गाईवेसों बिनाही अग्नि डारे सिघडी पज्वित होई। तब मालकोंस राग सांचो जांनिये ॥ याकी आलावचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें ग्रहांस न्यास पड्जमें ॥

अथ द्वितीय राग मालकोंस २ (संपूर्ण).

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
प	पंचम चढ़ी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी निचली सप्तककी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिंछ, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ानि	निषाध उतरी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मालकोंस राग संपूर्णम् ॥

अथ मालकोंसकी पांची रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागनीनमें विभाग करिवको वामदेव नाम मुखसों गायके। प्रथम रागनी टोडी मालकोंसकी छाया जुक्ति देखी मालकोंसकों दीनी॥ अथ प्रथम टोडी रागिनीको स्वरूप लिख्यते॥ याको लोकिकमें भीयाकी टोडी कहे है। जाके अंगतुसार ओर मोगरेके फूल समान ऊजल जाको अंग है। ओर केसर कपूरको अंग राग छगाये है। बनमें हिरनसों विहार करे है। ओर हाथमें बीण बजावे हैं। ऐसो जो राग तांहि टोडी कहियें। मध निस रिगम। अथवा सिरिगम पध निस। यह शास्त्रको मत है। यह सात स्वरनसों गाई है। यातें संपूर्ण है। अरू दिनके दूसरे पहरकी चौथी घडीमें गावनी यहतो याको बखत है। अरू दूसरे पहरमें चाहो तब गावो। याकी आछापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। अनूपविछाससें महांस गांधार न्यास षड्जमें॥

अथ मालकोंसकी प्रथम रागनी टोडी १ (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाध उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम अंतर, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा चार

॥ इति टोडी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मालकों सकी दितीय रागनी खंबायची याको लोकिकमें बंबायती कहत हैं ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याहुकों शिक्जीनें वामदेव मुखसों गायके मालकों सकी छाया जुक्ति देखि मालकों सकों दीनी ॥ अथ खंबायतीको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदरता अरू लावण्य जुक गौर जाको अंग है । ओर रागकी धूंनी जाको प्यारी है । कोिकलके समान जाके कंठको नाद है । ओर पिय वचन कहे हैं । सुखको देह ओर बड़ी रसज्ञ है । ऐसी जो रागनी तांही खंबायती कहिये । शास्त्रमेंतो यह छ सूरनमें गाई है । ध नि स रि ग म ध। यातें षाड़व है याको रात्रिकी दूसरे पहरकी पीछली घड़ीमें गाईये । ओर रात्रिके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी छ सुरनमें किये । राग वरत, सो जंत्रसों समझिये ॥ संगीत दरपनकें मतसें । यहांश । धैवत । न्यास । षड्ज ॥

मालकों सकी दितीय रागनी खंबायती २ (पाडव).

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

घ	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, नीचठी सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

सं	षड्ज असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मालकोंसकी दूसरी रागनी मारगी खंबायती संपूर्णम् ॥

अथ देसी खंबायतीको जंत्र लिख्यते ॥ त्रहांश गांधार न्यास षड्ज ॥

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धेवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	प	पंचम असिंह, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उत्तरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-मालकोंसकी खंबायती और गौरी रागनी. ३५

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असछि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक		

॥ इति देशी खंबायती रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मालकोंसकी तीसरी रागनी गौरी तार्की उत्पत्ति लिख्यते ॥ गौरीहूकों शिवजीनं वामदेव मुखसों गायके मालकोंसकी छाया जुिक देखी मालकोंसको दीनी ॥ अथ गौरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर वरण तरुण जाकी अवस्था है । मधुर वचन बोले हें । ओर कानमें आंबके मोर धरे हैं । कोकिलकेसे जाको कंठ स्वर है । ऐसी जो रागनी तांही गौरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है ॥ या रागिनीकों दिन मूंदेसूं लेके घडी एक राति जाय । तहां ताई गाईयें ॥ यहते।

सगातसार.

याको बखत है। अरू रात्रिको पहले पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये। राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये॥ अनुपविलाससें संपूरण। महांश रिषभ न्यास पड्ज ॥

मालकोंसकी तृतीय रागनी-गौरी ३ (संपूर्ण).

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असाछि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, उपरली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निपाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	मात्रा एक		निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-मालकोंसकी गौरी और गुनकरी रागिनी. ३७

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति मालकोंस रागकी तीसरी रागनी गौरी संपूर्णम् ॥

अथ मालकोंसकी चोथी रागनी गुनकरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ गुणकरीकों शिवजीनें वामदेव मुखसों गायके । मालकोंसकी छाया जुक्ति देखी मालकोंसको दीनी ॥ अथ गुणकरीको स्वरूप लिख्यते ॥ शोक करिके व्याप्त ओर लाल जाके नेत्र है । ओर दीनतांईसों देखे हैं नीचो जाको मुख हैं । अरू धूमरेमें लोटवेसों धूमर जाको देह है । चोटि जाकी खुली रही है। पीयके संगमकी चाहसों पीडित है । ओर करुण रसमें मग्न है । दूबरें जाको अंग है । ऐसी जो रागनी तांहि गुनकरि जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुर-नमें गाई है । स रि म प ध सा । यातें ओडव है । याको दिनके तीसरे पहरके प्रथम एक घडीमें गाईये । यहतो याको बखत है । ओर तीसरे पहरमें चाहो जब गावो । याकी आलाप चारी पांच सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये । संगीत पारीजातसें । ग्रहांश । धैवत । न्यास । षड्ज ॥

मालकोंसकी चोथी रागनी गुनकरी ४ (ओडव).

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
4	पंचम असिल, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, उपराल सप्तककी मात्रा तीन
स	षड्ज असिल, ऊपरिल सम्बक्धी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा तीन	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
4	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति मालकोंसकी गुनकरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मालकोंसकी पांचई रागनी ककुमा ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याद्कों शिवजीनें वामदेव मुखसों गायके मालकोंसकी छाया जुिक देखी मालकोंसको दीनी ॥ अथ ककुमाको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर सुंदर पृष्ट जाके अंग है । अरू रितके चिन्ह जाके अंगमें है । ओर विचित्र जाको मुख है । चंपाके फूलकी माला पहरे है । कटाक्षयुक्त जाके नेत्र है । ओर पैलेके चित्तकों हावमाव करिके वस करे है । सुंदर जाको स्वरूप है । ऐसी जो रागनी तांहि ककुमा जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है। ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनमें दूसरे पहरमें गावनी । यहतो याको बखत है । ओर दिनके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये । राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें । ग्रहांश । धैवत । यनस । षड्ज ॥

सप्तमो रागाध्याय-मालकांतरागकी रागनी ककुभा. अथ मालकोंत्तकी पांचमी रागनी ककुभा ५ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी । मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिंह, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ध	धेवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

नि	निषाध पढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	ग	गांधार चढीं, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मालकोंसकी रागनी ककुभा पांचमी संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोल रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके पथम सद्योजात नाम मुखतें हिंडोल राग भयो । सो देवतानमें सता गुणके उद्यके अरथ ।
यह राग आनंद्रू है । याके अवण करिके देवतानको चित्त आनंद्रू ही । हिंडोलमें झुल्यों यातें हिंडोल कहत है । अथ हिंडोल रागकों स्वरूप लिख्यते ॥ देंगनों जाको श्यामरूप है। ओर कपोतके कंठकेसी हूितको धरे हैं । बड़ो कामी है। ओर तरुण स्त्री जाको मंद झोला दे हैं । ऐसे हिंडोरामे बेठिके झूिलविके सुखको धरे हैं । ऐसो जो राग ताहि हिंडोल जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमं गायो है । सगम धित सास निधम गस। यातें औडवहा याको दोय घडी दिन चढ़े उपरांत च्यार घडी दिन चढ़े जहां ताई गावनों । यहतो याको बखत है । दिनमें चाहो जब गावो ॥ अथ हिंडोल रागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो हिंडोराको साजि करिके राखिय । ओर वाके आगें हिंडोल राग गाईये । जो गाईवेसों हिंडोरा विनाहि । झोला दीये हाले तब हिंडोल राग सांचो जानिये ॥ अब याकी आलापचारि पांच सुरनमें किये । राग वरतेसो जंत्रसों समिसिये । संगीत दरपनसें । यहांश । न्यास । बड्जमें ॥

अथ तृतीय राग हिंडोल ६ (ओढव).

स	षड्ज असाठि,पूरण मात्रा च्यार	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा चार	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज पूरन, मात्रा चार
नि	निषाद चढी, मात्रा एक		

॥ इति तृतीय राग हिंडोल राग संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोल रागकी पांची रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें वाकी रागनीनमंसों विभाग करिवेकों । पांच रागिनी सद्यो जात नाम
मुखसों गायके । हिंडोलकी छाया युक्ती देखि हिंडोल रागको दीनी ॥ अथ विलावली हिंडोलकी पथम रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें पांची रागनीनमें
सों विभाग करिवेकों पथम विलावली सद्यो जात नाम मुखसों गाईके । हिंडोछकी छाया युक्ति देखि हिंडोल रागकों दीनी ॥ अथ विलावलीको स्वरूप
लिख्यते ॥ संकेतमें पियके पास जायवेको । अंगनमें आभूषन पहरे हैं । ओर
अपनो इष्ट देव जो कामदेव ताको वारंवार स्मरण करे है ॥ नीले कमलको सो
जाको शरीरको रंग है । ऐसी जो रागिनी तांहि विलावली जांनिये ॥ शास्त्रमें
तो यह सात सुरनसो गाई है ॥ ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है ।
याको दिनके पथम पहरकी पांचवी घडीमें गावनों ॥ यहतो याको वखतहै । ओर
पथम पहरमें चाहो तब गावों । याकी आलाप चारि सात सुरनमें किये । राग
वरतेसो जो जंत्रसो समझिये । संगीत दरपनसें । ग्रहांश धैवत । न्यास पड्ज । अन्प
विलासमें ॥

हिंडोलरागकी प्रथम बिलावली रागनी १ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलकी विलावली और रामकली रागनी. ४३

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषम चढी, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोलरागकी पथम रागनी बिलावली संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी दूसरी रागनी रामक ली ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनेभों विभाग करिवेकों । सद्यो जात नाम मुखसों गाईके ।
हिंडोलकी छाया युक्ती देखी हिंडोल रागकों दीनी ॥ अथ रामकलीको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेको जाको शरीरको रंग है । अरु देदीप्यमान आभूषन पहरे हैं ।
नीले पीतांवरको शरीरमें पहरे हैं । ओर अपने पतीकेपास बेठी हैं । मनोहर जाको कंठस्वर है । बडो जाको मान स्वर है । ऐसी जो रागिनी तांहि राम-कली जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स ।
याते संपूर्ण है । ओर कोईक याको रिवम धैवतहीन कहे है । स ग म प नि स ।
याते ओडव है । ओर कीतने ह याको पंचम स्वरहीन कहे है । स रि ग म ध
नि स । यातें षाडव है । याको दिनके मथम पहरकी दूसरी घडीमें गाईये । यह
तो याको बखत है । ओर प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी
सात सुरनमें वा छ सुरनमें वा पांच सुरनमें किये राग वरतेको जंत्रसों समाझेये ॥
संगीत दरपनसें महांश न्यास षड्ज ॥

हिंडोल रागकी दूसरी रामकली रागनी २ (संपूर्ण).

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	4	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असली, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति हिंडोलरागकी दूसरी रागनी रामकली संपूर्णम् ॥

रामकलीकों देसी जंत्र रागनी रामकली (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा तीन
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलरागकी रामकली और देसाख रागनी. ४५

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिंह, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद अंतरकी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धेवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असाछि, मात्रा एक	प	पंचम असारि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय

प	पंचम असछि, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असछि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति रानकली रागको देसी जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी तीसरी देसाख नाम रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीने वाकी रागनीनमेसों विभाग करिके। सद्यो जात नाम मुखसों गायके दसाखको हिंडोलकी छाया जुकी देखी हिंडोलको देसाख दीनी॥ अथ देसाखको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर उज्जल वीररससों जाके शरीरमें रोमांच भयो है । महजुद्ध संबंधसों विलासयुक्त जाके बाहू है । लंबो जाको स्वरूप है ओर उम्र
है । ओर चंद्रमासो जाको मुख है । ऐसी जो रागिनी तांहि देसाख जांनिये ॥
शास्त्रमें तो छ सुरनमें गाई है । गमपधिन सगायों पाइव है । ओर कोईक
याको संपूर्ण कहे है । गमपधिन सिंग । यातें संपूर्ण है । याको दिनके
दूसरे पहरमें पांचवी घडीमें गावनी । यहतो याको बखत है । अरु दूसरे पहरमें
चाहो जब गावो । याकी आलाप चारी छ सुरनमें वा सात सुरनमें किये राग
बरतेसों जंत्रसों समझिये ॥ संगीत पारिजातसें संपूर्ण । महांश । गांधार । न्यास षड्ज ॥

हिंडोल रागकी तृतीय देसाख रागनी ३ (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मध्यमसों मिं- डीके मात्रा चार
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिट, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	प	पंचम असिछ, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, उपरली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, निषादसों मिंडि मात्रा दोय	4	पंचम अससि, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलकी देसाख, पटमंजरी, ललित रागनी. ४७

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोल रागकी तीसरी देसाख रागनी संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी चोथी रागनी पटमंजरीकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें वाकी रागनीनमंसों विभाग करिवेकों। सद्यो जात नाम मुखसों पटमंजरी गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखी हिंडोल रागकों दीनी॥ अथ पटमंजरीको स्वरूप लिख्यते॥ पतिके वियोगसों अंग जाके दूबरे हैं ओर सुंदर है।
ओर जाके कंठमे फूलनकी माल विरहके संतापसों सूकि रही है। प्यारी सखी
जाको धिरज वधावे है। ओर धूलिसों धूमर जाको अंग है। ऐसी जो रागनी
तांहि पटमंजरी जांनिये। शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। पध नि स रि
ग म प। यातें संपूर्ण है। याको दिनके पथम पहरकी छटी घडीमें गाईये। यह
तो याको बखत है। अरु दिनके पथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलाप
चारि। सात सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत द्रपनसें।
महांश पंचम संगीत पारिजातसें न्यास षड्ज॥

इति हिंडोल रागकी चतुर्थ पटमंजरी रागनी ४ (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असाठि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाभ उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असाछि, मात्रा एक
नि	निषाध उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोल रागकी रागनी चोथी पटमंजरी संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलकी पांचवी रागनी लिलतकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें उनमेसों विभाग करिवेकों। सद्यो जात नाम मुखसों गाईके । वाको लिल हिंडोलकी छाया युक्ति देखी हिंडोल रागकों दीनी॥ अथ लितको स्व-रूप लिख्यते॥ फूले सतपराके फूलनकी माला पहरे है। अरु तरुण जाकी अवस्था है। गोरो जाको रंग है। फूले शोभायमान जाके नेत्र है। विलासमें चतुर है। ऐसो जो राग तांहि लिलत जांनिये। शास्त्रमें यह पांच सुरनसों गायो है। स ग प ध नि स । यातें औडन है। अथना स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। ओर कोईक याको आरंभ धैनतसों कहत है। ध नि स ग प ध । ऐसे हूं औडन है। याको सूरजके उदय पहले एक घडीमें गाईये। यह तो याको बखत है। अरु राातिके चोथे पहरमें चाहो तब गानो। याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें महाँश न्यास पड्जमें॥

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलरागकी ललित रागनी.

हिंडोल	रागकी	पांचवी	ललित	रागनी	4	(संपूर्ण)).
--------	-------	--------	------	-------	---	---	---------	---	----

स	पड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाध चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
मं	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति हिंडोलकी पांचरी रागनी लिलत संपूर्णम् ॥ अथ लिलत रागको मारगी जंत्र लिख्यते (ओडव)॥

स	षड्ज असलि, ऊपरलि सप्तककी, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज अंसिल, मात्रा दोय	प	पंचम असाठि, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दीय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	नि	निषाध चढी, मात्रा एक

॥ इति हिंडोछ रागकी पांचो रागनी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीके तत्पुरुष चोथे मुखते दीपक राग भयो आनंद करिके । देवता जड होगये तिनके चेतनाके अरथ । यह राग चैतन्यरूप अग्निमय है । याके अवण करिके देवता सावधान भये ॥ अथ दीपकको स्वरूप लिख्यते ॥ बाला स्त्रीसों मुरत करिवेको दीपक युक्त जो घर तामें बेठो है । ओर सुंदर जाको गौर स्वरूप है । तहां नाईकाके सीस फूलके जे रत है । तिनसों अत्यंत प्रकास भयो जांनिके लजासों दीपककों बढांकरतां जो राग तांहि दीपक राग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांते संपूर्ण है । याको संध्याके समयमें एक घडी घटतें गांवनो । रातिके तीसरे पहरतांई गांवनो । यह तो याको बखत है । अरु कोई याको बखत सायंकालमें कहे है । अरु दिवालीके दिन चाहो जब गावों सदा मंगलीक है ॥ अथ दीपक रागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो दीवामें वाति तेल धरि वाकों जोवे नही । अरु दीपक राग गाईये । जो गायवेसों दीया आपहीसों जुपवेलिजाय तब दीपक राग सांचो जांनिये । यह राग देवलोकमें वरत्योजाय है । मनुष्यलोकमें याको वरतवेकी काहुकी सामर्थ्य नही यांते ॥

अथ दीपक रागकी पांची रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने वाकी रागनीनमुद्धों विभाग करिवेकों । तत्पुरुष नाम मुखसों । पांची सागनी गाईके ईन रागनीनको दीपककी छाया युक्ति देखी । दीपक रागका दीनी ॥ अथ दीपककी मधम रागनी केदारिको स्वरूप लिख्यते ॥ अंग गौर

सप्तमो रागाध्याय-दीपककी केदारी और करणाटी रागनी. ५१

जिसके माथेंमें जटा विराजे है। अरु चंद्रमा जाके मालमें विराजे है। जाके सापनके आमृषन है। ओर योगपटको धारन करे है। जाको चित्त शिवके ध्यानमें मगन है। ऐसी जो रागनी तांहि केदारी जांनिये। शास्त्रमें तो यह पांच सुरमें गाई है। निस ग म प नि। निप म ग स नि। यातें औडव है। याको रातिके दूसरे पहरकी प्रथम घडींमें गावनी। यह तो याको बखत है। अरु रातिके दूसरे पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरते-सों जंत्रसों समझिये। संगीत दरपनसें। ग्रहांश न्यास निषाद॥

अथ दीपक रागकी प्रथम रागनी केदारी १ (संपूर्ण).

नि	्निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा दोय
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, ऊपरली सप्तककी मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दीय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय

॥ इति दीपक रागकी प्रथम रागनी केदारी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी दूसरी रागनी करणाटीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेको तत्पुरुष नाम मुखसों करणाटी गाईके
वाको दीपककी छायायुक्ति देखी। दीपक रागको दीनी याहिको कन्हडी कहतहै॥
अथ करणाटीको स्वरूप लिख्यते॥ गौर अंग जाको एक हातमें खड्ग है। और
दूसरे हाथमें हाथिके दांतको पत्र है। देवताचारणनके समूह जाकी स्तृति करेहै।
ऐसी जो रागनी तांहि कन्हडी जांनिये। शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें वरतीहै।
निस रिगम पध नि। यातें संपूर्ण है। याको रातिके दूसरी पहरकी दूसरी
घडीमें गांवनी। यहतो याको बखत है। ओर रातिके दूसरी पहरमें चाहो तब
गावो। यह राग सुद्ध है। याकी आलापचारि सात सुरनमें किये। राग वरतेसो
जंनुसों समझिये। संगीत दरपनसें ग्रहांश न्यास निषाद अनूपविलाससें न्यास षड्ज॥

अथ दीपक रागकी दूसरी करणाट रागनी २ (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ध	धैयत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा तीन	स	वड्ज अस लि, मात्रा^{के}एक

*	म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक
2	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
	नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
. `	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
	नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

॥ इति दीपकरागकी तीसंरी रागनी देसी टोडी संपूर्णम् ॥

अथ दीपककी चोथी रागनी कामोदी ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको॥ तत्पुरुष नाम मुखसों कामोदी गाईके। वाको दीपककी छायायुक्ति देखि दीपकको दीनी। अथ कामोदीको स्वरूप लि-ख्यते॥ सुंदर रंग गारो पीरे वस्त्र पहरे है। सुंदर जाके केश है। ओर बनमें रुदन करे हैं। कोइलका शब्द सुनि अत्यंत दुःख पावे है। अरु भयसों दिशानको देखे है अपनें पतिकों याद करे है। ऐसी जो रागनी तांहि कामोदी जांनिये। शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। धिन सि रि ग म पि । यातें संपूर्ण है। याको रातिके दूसरे पहरकी दूसरी घडीमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर रातिके दूसरे पहरकी दूसरी घडीमें गावनी। याकी आलापचारि सात सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। नृत्यनिर्णयसें यहांश। न्यास। षड्ज ॥

अथ दीपक रागकी चोथा रागनी कामोदी ४ (संपूर्ण).

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा तीन
स	पहुज असारि, मात्र [ा] एक	ध	धैक्त चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मध्यमसौं मिडिकें मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
प	पंचम असाठि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दीय

॥ इति दीएक रागकी चोथी कामोदी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ दीपकर्की पांचवी रागनी नटकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शि-वर्जीनें उन रागनमंसों विभाग करिवेको । तत्पुरुष नाम मुखसों नट गाईके । वा-को दीपककी छायायुक्ति देखि दीपकको दीनी । याहिको लोकिकमें सूधानट कहे हैं । अथ नटको स्वरूप लिख्यते ॥ एक हाथ जाको घोडेके कंधेपे है । अरु सोनेकसों जाको रंग है । बैरीनके लोहीसों जाको देह लिप्तहै । अरु संग्राम भूमीमें विचरे है । बडो जाको पताप है । ओर रंग युक्त जाकी मूर्ति है । वीर-रसमें छिकरहो है । ऐसो जो राग तांहि नट जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । सि ग म प ध नि स । योतें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरकी छटी घडीमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर रातिके पथम पह-रमें चाहो जब गावो । याकी आलापचारि सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये । संगीत दरपनसें ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

अथ दीपक रागकी पांचवी नट रागनी ५ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
त्र	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मध्यमसा मिडिकें मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद् उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रो एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मध्यमसो मिडिकें मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असछि, मात्रा एक

भाषामें साफ नट कहेहैं ॥ इति दीपक रागकी पांचवी नट रागनी संपूर्णम् ॥ अथ नट राग औडव मार्गीको जंत्र लिख्यते.

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, नीचली सप्तककी मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असालि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैबत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा तीन
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति नटराग औडव संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी उत्पत्ति लिख्यंत ॥ शिवजीके पंचम ईशान नाम मुस्तसों । श्रीराग भयों ॥ देवतानके वर देवेके अर्थ ॥ यह लक्ष्मीनारायण रूपहै ॥ देवताननें याको श्रवण करिकें सब मनोरथ पाये ॥ अथ श्रीरागको स्वरूप लिख्यते ॥ अठारह वरसकी अवस्था है ॥ अरु कामहूं तें मनोहर जाकी मूर्ति है ॥ कोमल पल्लव कानमें धरेहैं ॥ षड्जादिक सातों सुर जाकों सेवहैं ॥ ओर लाल वस्त्र पहरेहैं ॥ राजाकीसी जाकी मूर्ति है ॥ ऐसो जो राग तांहि श्रीराग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सप्तस्वरनमें गाईहै ॥ स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्णहै ॥ याकों दोय घडी दिन पिछलेसों ले संध्या ताई गावनों । यह तो

याको वखतहै ओर चाहो जब गावो ॥ अथ श्रीरागकी परिक्षा छिल्यते ॥ जो कोई अदमी मिरगयो होय ॥ अरु वाके आगे श्रीराग गाईये। जो गाईवेसों वह मन्यो अदमी चैतन्य होय। तब श्रीराग साचो जांनिये ॥ याकी आलापचारी सप्तस्वरनमे किये ॥ राग वरतेसों जंत्रसों समझिये। अनूपविलास ओर संगीत पारिजातसें ॥ रिषम । ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

रि	रिषम उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
4	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	नि	निपाद चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा चार

॥ इति श्रीराग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी पांचों रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वाकी रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों गाईकें । श्रीरागकी छायायुक्ति देखि पांच रागनी श्रीरागको दीनी ॥ तहां श्रीरागकी प्रथम वसंत रागनी ताको स्वरूप िरुव्यते ॥ नील कमलसों जाको श्याम रंगां ओर विलासयुक्त है ॥ शरीरकी सुगंधसों जाके पास भवरा गुंजार करेहे ॥ मोर चंदिकासों चोटी गुहींहै । ओर काननमें आंबके मार धरेहै । ऐसी जो रागनी तांहि वसंत जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसो गाईहै ॥ स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्णहै ॥ याको चार घडी उपरांति दिनके पथम पहरमें गाईये ॥ अरु वसंत पंचमीको मुख्य करिकें गाईये ॥ यह राग मंगलीकहै चाहो तब गावो ॥ याकी आलापचारि सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समझिये ॥ संगीत दरपनसें । ग्रहांश । न्यास । षड्ज ॥

श्रीरागकी प्रथम रागनी वसंत ५ (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम् चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असारि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	घ	धैयत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असारि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी प्रथम रागनी वसंत संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी दूसरी रागनी मालविकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याहूको शिवजीनं ईशान मुखसों गाईकें । श्रीरागकी छायायुक्ति देखि श्रीरागको दीनी । याको छोकीकमें मारवो कहतहें ॥ अथ मालवीको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर सचीकन जाकी कांति है। काननमें कुंडल पहरेहैं। ओर मानीहै । तरुण स्त्री जाके मुखकों चुंबन करेहे । कंटमें माला पहरेहैं । ओर संध्या समें संकेत घरमें पे हे । एसो जो राग ताहि मालवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनमें गायोहै ॥ नि स ग म ध नि । यातें औडव है । याको दिनके चोथे पहरकी छटी घडीमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चोथे पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारि छे सुरनमें किये । राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये । अनूपविलाससें प्रहांश । धैवत । न्यास । पड्ज ॥

श्रीरागकी द्वितीय रागनी मालवी (मारवा) २ (षाडव).

ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी द्वितीय माछवी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी तीसरी रागनी मालश्री ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
मालश्रीको शिवजीनें ईशान मुखसों गायके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि श्रीरागको दीनी ॥ अथ मालश्री रागनीको स्वरूप लिख्यते॥ गौर जाको नाजूक शरीर
है॥ हाथसों लाल कमल फिरावे है। ओर आंबके वृक्षके नीचे बैठी है। मनमुसिकान करेहै। ऐसी जो रागनी तांहि मालश्री जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात
सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याको दिनके चोथे
पहरकी पांचवी घडीमें गावनी। यह तो याको बखत है। अह चोथे पहरमें चाहो
जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों
समझिये। संगीत द्रपनसें यहांश। न्यास। षड्ज ॥

श्रीरागकी तीसरी रागनी मालश्री ३ (संपूर्ण).

स	षड्ज असिंह, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिंछ, मात्रा दोय	स	षड्ज असिट, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार असछि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धेवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
स	षड्ज असिछ, मात्रा दोय	प	पंचम असिंछ नीचर्छी सप्तककी मात्रा दोय
प	पंचम असलि, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	नि	निषाध चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय

-			
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	4	पंचम असिल, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	T	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	q	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असाछि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चडी, मात्रा एक	स	षड्ज असाछि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धेवत अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	प	पंचम असिछ, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा दोय	स	षड्ज असार्छ, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धेवत असलि, नीचली समककी मात्रा एक
प	पंचम असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी तीसरी मालश्री रागनी संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी चोथी रागनी आसावरी ताकी उत्पत्ति लिरूपते ।। आसावरीको शिवजीनं ईशान मुखसों गाईके । श्रीरागकी छायायुकि
देखि श्रीरागको दीनी ॥ अथ आसावरीको स्वरूप लिल्यते ॥ ऊजरो नीलमनीसों
जाको रंग है । ओर मलयाचल पर्वतके शिखरमे बैठी है । ओर मोरचंदिकाके
वस्त्र पहरे है । गजमोतिनकी माला जाके कंठमें है । ओर चंदनके वृक्षमें लिपेट
सर्घकौषित्विकेवको चूडा हाथनमें पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि आसावरी
जांनिये । शास्त्रमें ता पांच सुरनमें गाई है । ध म रि स प ध । यातें औडव है ।
अथवा स रि म प ध नि सा । ऐसे कोऊक याको षाडव कहै । याको दिनके
दूसरे पहरकी सातवी चडीमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दिनके
दुसरे पहरमें चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग
वरतेसों । जंत्रसों समझिये । नृत्य निर्णयसें ओर रागचंद्रादयसें । यहांश ।
मध्यम । न्यास । षडुज ॥

श्रीरागकी चतुर्थ रागनी आसावरी ४ (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा च्यार
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी चौथी आसावरी रागनी संपूर्णम् ॥ अथ आसावरी मार्गीको जंत्र लिख्यते.

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद असिल, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असाल, मात्रा दोय	प	पंचम असिछ, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
स	षडण असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-श्रीरागकी आसावरी और धनांश्री रागनी. ६७

प	पंचम असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असिंछ, मात्रा दोय
म	मध्यम अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत उत्तरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
प	पंचम असिछ, नीचर्छी सप्तककी मात्रा एक	स ः	षड्ज असाठि, मात्रा दोय
ध	धेवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक		

॥ इति आसावरी मार्गीको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागकी पांचमी रागनी धनाश्री ताकी उत्पत्ति लि
हयते ॥ शिवजीनें धनाश्रीकों ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छायायुक्ति
देखी श्रीरागको दीनी ॥ अथ धनाश्रीको स्वरूप टिख्यते ॥ दूवरीकेद्छसों स्याम

जाको रंग है । ओर अपनें पियकों चित्र आप टिखे है । विरहसों दूबरी है ।
ओर जाके विरहसों कपोछस्वेत है । नेत्रनके आसूनके प्रवाहसों कूचनको धोवे है।
ऐसी जो रागनी तांहि धनाश्री जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छ स्वरनमें गाई है।

स रि ग म ध नि स । यातें षाडव है । ओर छोकिकमें याको संपूर्ण वा औडवभी

कहे हैं । याको दिनके तीसरे पहरकी पांचमी घडीमें गाईये । यह तो याको बखत
है । ओर यह रागनी मंगठीक है । चाहो जब गावो । याकी आछाप चारी छ

सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समिस्रये । संगीत दरपनसें । यह । न्यास । षड्ज ॥

श्रीरागकी पांचवी रागनी धनाश्री ५ (षाडव).

स	षड्ज असिंह, मात्रा दोय	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ि —	निषाद चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	;	धेवत अंतर, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा तीन
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम असाठि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा चार
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक		

॥ इति श्रीरागकी पांचमी धनाश्री रागनी संपूर्णम् ॥ अथ धनाश्री रागनी मार्गी (मियाकी) पाडव.

स	षड्ज असारी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढीं, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा तीन

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धेवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली समककी मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति धनाश्री मियाकी मार्गी षाडव संपूर्णम् ॥

अथ मेघराग जि उत्पत्ति लिख्यते ॥ मेघराग पार्वतीजीके मुखतं भयो । शिवजीके भाठ नेत्रके तेजतं । तप्त भयो जो त्रैहोक्यताकी सीतलताके अरथ यह राग जलरूप है। याको अवणकार त्रैहोक्य सीतल भया ॥ अथ मेघरागको स्वरूप लिख्यते ॥ नीले कमलसों जाको रंग है । ओर चंद्रमासों जाको मुख है । पीतांवर पहरे हैं । चातक जाकी याचना करे हैं । अमृतसी जाकी मंद्र मुसकानि है । ओर वीर पुरुषमें विराजमान है । ओर तरुण जाकी अवस्था है । ऐसा जो राग तांहि मेघ जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको आधिरात । समें गावनो घडी दोय तांई । यह तो याको बखत है । ओर चाहो जब गावो । यह राग सदाही मंगलिक है ॥ अथ मेघरागकी परीक्षा लिख्यते ॥ जो आकासमें वादल नहीं होय धूप पडती होय ता । समें मेघराग गाईये । जो गाईवे । सो तासमें मेह बरसने लगे । तब मेघराग साचो जांनिये । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते।सों जंतरसों समझिये । अनूपविलाससें । प्रहांश । धेवत । न्यास । षड्जमें ॥

अथ छठो राग मेघ ६ (संपूर्ण).

ध	धेवत चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा तीन
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
प	पंचम असस्रि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय		

॥ इति मेघराग संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-मेघरागकी गोडमङ्कारी और देसकार रागनी. ७१

अथ मेघरामकी पांची रामनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनें वाकी रागके विभाग करि अपने मुखसों पार्वतीजीसों विनंति करि जो मेघराग तिहारे मुखसों उत्पत्ति भयो । यातं इन रागनीनमेसों विभाग करि । अपने मुखतों गाईके मेघकी छायायक्ति दोखिके पांच रागनी मेघ रागको दीनी । ऐसे शिवजीकों वचन सुनि पार्वती शिवजीकों नमस्कार करिके । उन रागनीन-मेंसां विभाग करिवेकों । अपने मुखसों गाईके । मेचरागकी छायायाकि देखि । पांच रागनी मेघरागकों दीनी । तहां मेघरागकी प्रथम रागनी गोडमझारी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनीनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुल-सों पथम रागनी गोडमहारी गाईके । वाकों मेघरागकी छायायुक्ति देखि मेघ-रागकों दीनी ॥ अथ गोडमहारीको स्वरूप छिख्यते ॥ गोरो जाको वरण है । ओर तरुण अवस्था है। कंठको नाद कोकिलकोसों है। अरु गांनके बलसीं पतिको सुमरन करेहैं दूबरी जाकी देहहै। ऐसी जो रागनी ताहि गोड मलारी जांनिये ॥ शास्त्रमं । पांच सुरनमें । ध नि रि ग म ॥ यातें औडव ओर होकी-कमें संपूर्ण कहेहै ॥ याको रातिके दूसरे पहरकी सातवी घडीमें गावनी । यह तो याको वक्तहै ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारि सात सुरनसों किये सो जंत्रसो समझिये ॥

मेघरागकी प्रथम रागनी गोड मल्लारी १ (संपूर्ण).

ध	धैवत चढीं, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, ऊपरलि सप्तककी मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म्	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असाछि, मात्रा एक
4	पंचम असंहि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दीय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मेघरागकी पथम गोडमहारी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ मघरागकी दूसरी रागनी देसकारकी उत्पत्ति लिख्यते॥ पार्वतीजीनें रागनीनमेंसों विभाग करिके। अपने मुखसों देसकार गाईके। वाको मघकी छायायुक्ति देखि मघरागको दीनी॥ अथ देसकारको स्वरूप लिख्यते॥ जाके सुंदर केंस है। अरु कमलपत्रसं बडे नेत्र है। कठोर कुच है ओर चंद्रमासों मुख है। अरु सुंदर शरीर है ओर अतारके संग सुरत करत है। ऐसी जो रागनी तांहि देसकार रागनी जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके तीसरे पहरकी छटी घडीमें गावनी। यह तो याको वक्त है। ओर दिनके तीसरे पहरमें चाहो तब गावो यह रागनी सुद्ध है। याकी आहरामी सात सुरनमें किये। सो जंत्रसों समझिये॥

सप्तमो रागाध्याय-मेघरागकी रागनी देसकार और भूपाली. ७३ मेघरागकी द्वितीय रागनी देसकार २ (संपूर्ण).

प	पंचम असांछे, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

प	पंचम असिछ, मात्रा एक	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असाछि, मात्रा दोय	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ध	घैवत उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ अंतर, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति मेचकी दुसरी रागनी देसकार संपूर्णम् ॥

अथ भेघरागकी तीसरी रागनी भूपालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों भूपाली गाईके । ताको मेघरागकी छायायुक्त देखि मेघरागकों दीनी ॥ अथ भूपालीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको वर्ण है । अरु केसरीको अंगराग किये है । ऊंचे कुच है । चंद्रमासो मुख है । मनोहर रूप है । विरहतें दुवरी अतारको समरण करे है ।

सात रस जुक्त है। ऐसी जो रागनी तांहि भुगाठी जांनिये। शास्त्रमें तो सप्त स्वरनमें गाई है। स रिग म प ध नि स। योतें संपूर्ण ॥ अथवा पांच सुरनमें गाई है। सा रिग प ध सा। योतें ओडव है। याके रातिके प्रथम पहरकी चौथी घडीमें गावनी। यह तो याको बखत है। रात्रिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आ०। सात सु०। सो जंत्रसों समझिये॥

मेघरागकी तृतीय रागनी भूपाली ३ (ओढव).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषम चढीं, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक ।
प	पंचम असालि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवतं चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

अथ मेघरागकी चौथी रागनी गुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पारवतीजीनें उनरागनमेंसों विभाग करिवेकों आपने मुलसों गुजरी गाईके वाकों

सप्तमो रागाध्याय-मेघरागकी गुजरी और श्रीटंक रागनी. ७५

मेघरागकी छायायुक्त देखी मेघरागको दीनी ॥ अथ गूजरीको स्वरूप छिल्यते ॥ सोलह बसरकी अवस्था है सुंदर जाके केश है ॥ चंदनके वृक्षके नीचे कोमल पल्लवनकी शेजमें बेढी है ॥ अरु वीणांक तारमें विचित्र सुरनको उच्चार करे है पवीण है ॥ ऐसी जो रागनी तांहि गुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमें सात सुरनमें गाईये । िरंगमप ध नि स रि । संपूर्ण । याको दिन दूसरे पहरकी पथम घडीमें गावनी यह तो याको वखत है । और दिनके दोय पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये रागवरतेसो । जंत्रसों समझिये ॥

अथ मेघरागकी चतुर्थ रागनी गुजरी ४ (संपूर्ण).

स	षड्ज असिंह, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोष
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असठि, मात्रा एक	स	षड्ज असिंह, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उत्तरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मेघरागकी चोथी रागनी गुजरी संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागकी पांचवी रागनी श्रीटंककी उत्पत्ति लिख्यते॥ पारवतीजीनं उन रागनमें सो विभाग करिवेको॥ अपने मुखसों श्रीटंक गाईके वाकों मेघरागकी छायायुक्त देखि मेघरागको दीनी॥ अथ श्रीटंकको स्वरूप लिख्यते॥ शास्त्रमें याको टंक छोकिकमें श्रीटंक कहेहै॥ कमछनीके दछकी सेजपं सोवे है॥ ओर वियोगनीहै उद्दिग्न जाको चित्तहै॥ ऐसी अपनी पियाको देखिके वासों संभाषण करिवेको उत्कंठित। ऐसी जो सुवर्णकोसों जाको देह को रंग है ओर अपने घरमें आयो। ऐसी जो राग तांहि श्रीटंक जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है॥ सारे गमपधिन सात यातें संपूर्ण है॥ याको दिनके दुसरे पहरकी दुसरी घडीमें गावनी॥ याको यो वखत है ओर चाहो जब गावो यह मंगठीक है। यह राग सुद्ध है। याकी आछापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसो। जंत्रसों समिश्चये॥

अथ मघरागकी पांचवी रागनी श्रीटंक ५ (संपूर्ण).

	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
	नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, नीचर्छा सप्तककी मात्रा एक
,	घ	धवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
	नि	,निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	प	पंचम असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-भैरवके पुत्र बंगाल, पंचम, मधुर और हरष. ७७

म		नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी
	मात्रा एक		मात्रा एक
प	पंचम असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक	`	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा तीन
ध	धैवत उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ारे	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ारे	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार

॥ इति मेघरागकी पांचवी श्रीटंक रागनी संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको प्रथम पुत्र वंगाल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनें पसन होय करि उन रागनमेंसो विभाग करिवेको । भैरवकी छाया युक्ति देखि वाको बंगाल नाम करिकें । भैरव रागको पुत्र दीनों ॥ अथ बंगालको स्वरूप लिख्यते ॥ जो पवित्र होईकें कुशनके आसनपर बैठके रुदाक्षकी मालासों आपके इष्ट शिवको जप करे है । शुभजनेऊ जाके कंठमे है वदको पाठि है । सुफेद वस्त्र-नको पहरे है । सोनेकी झारि जाके आगे धरी है। ओर नृत्य गीत जाको प्यारे है । ऐसो जो राग तांहि बंगाली जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसो गायो है । स ग म प नि सा । यांतें औडव है । याको सूर्यंजदय समयमें गावनों यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं जाकी शिवाय बुद्धि होय यासों वरति लीजिये ॥ इति बंगाल संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको दुसरो पुत्र पंचम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों । अघोर नाम मुखसों गाईकें भैरवकी छाया युक्ति देखि । वाको पंचमनाम करिके भैरवको पुत्र दीनो ॥ अथ अंचमको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । पानको बिडा हाथमें है । दुसरे हाथमें स्वेत कमल फिरावे है । कोमल केश मधुर ताके वचन है । पीतांबर पहरे है । कर्पूर अगर चंदन कस्तूरी आको अंगराग शरीरमं लगाये है । माथेंप मुकुट है । मालमें जाके चंदमा विराजे है । ऐसो जो राग तांहि पंचम जांनिये ॥ शास्त्रमें तो पांच सुरनसों गायो है । स ग प ध नि स । यातें औडव है । याकों रातिके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको वस्तत है पहरदिन चढे पहले चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं या जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति पंचम संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको तीसरो पुत्र मधुर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनेंसी विभाग करिकें अघोर मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि । वाको मधुर नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों ॥ अथ मधुरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है ॥ पायननूपर पहरे है ॥ मधुर जो वीणाके सुरमें मिलिके गाये है ॥ अरु स्वर्गमें जाको वास है जो पृथ्वीमें नही रह है ॥ सगरी विद्यानकी खानि है अरु गुनीनमें सिरोमनि है अरु लाल चोलना पहरे है ॥ माथेपें फेटा है ॥ लाल दूपटा कांधेपे है ओर सुनिवेवारे पुरुषको मन वस करे है ॥ ऐसी जो राग तांहि मधुर जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गायो है । म प ध नि स रि ग म। यातें संपूर्ण है । याको दिनके मथम पहरमं गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दुपहरसों ईच्छाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति मधुर संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको चोथो पुत्र हरष ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनं उन रागनमेंसो विभाग करिकें । अघोर नाम मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखी हरष नाम करिके भैरवको दीनों । अथ हरषको स्वरूप लिख्यते ॥ ताको आनंदसो मुख पफुल्लित है ॥ हाथनमें करताल लिये है । घरदार नाफर-वानी रंगको चोलना पहरे है ॥ ओर मांथेपें लिलो फटा है ॥ ताके उपर माथेपें सिरपेंच बांधे है । और कंठनमें मोतिनके हार पहरे है काननमें कुंडल पहरे है ॥ सुम्र दुपटा ओढे है । अल उतावलो बोल है ॥ गोरो जाको अंग है ॥ ऐसो जो सप्तमो रागाध्याय-भैरवके पुत्र देशाख, लालित और बिलावल. ७९

राग तांहि हरष जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसें। गायो है । ध नि स म म ध । यातें औडव है । याको दिनकें प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दुपेरतांई चाहो तब गावो । याकी आछापचारी पांच सुरनमें किये राग वस्ते यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वस्त छीज्यो ॥ इति हरष संपूर्णम् ॥

अथ भैरवको पांचवो पुत्र देषास ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनेंसी विभाग करिवेकों । अघोर नाम मुखसों
गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि। वाको देषास नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों॥
अथ देषासको स्वरूप लिख्यते॥ जाके माथेंपें सिंदूरकी विंदी है। नेत्रनमें धीर रस
झलक है। बलसों बन्यो है। ओर जीतिसों जाको जसहै। जाके पुष्ट भुजदंडनमें
रजलिएहो है। मल्ल जुद्धमें प्रवीण है। बड़ी जाको कोध है। मल्लपनेकी ध्वजा
जाके हाथमें है। ओर भीमसेन वा हनुमानके समान जाके बल है। ओर शरीर
है। लातसों वेरीकी छातिकों दाबे है। ऐसो जो राग तांहि देषास जांनिये॥
शैंशिस्त्रमें तो यह छ सुरनसों गायो है। म प ध नि स ग। योतं पाडव है। याको
दिनके दूसरे पहरमें गावनों। यह तो याको बखत ओर दिनके दोय पहरमें चाहो
तंदीं गावो। याकी आलाप छ सुरनमें किये राग वरते यह राग सुन्यो नहीं। यातं
जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लिज्जो॥ इति देषास
संपूर्णम्॥

अथ भैरवको छटो पुत्र लिलित ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं पसन्न होयके उन रागनमंसो विभाग करिवेको । अघोर नाम मुखसों गाईके । भैरवकी छाया युक्ति देखी । वाको लिलत नाम करिके भैरवकों पुत्र दीनों ॥ अथ लिलको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके भालमें केसरिको तिलक है । ओर चंदनकी कोर है । ताके बीचमें चंदनेको विंदा है । वीजुरीसों गोरो अंग है । गलेमें चंपाके फूलनकी माला पहरे है । हाथमें पके नागरवेलिके बीडा है । फूलवाडीकी जाके पोसाग है । ओर बडो विलासी है तरुण अवस्था है । मतवारे हाथीकीसी चाल है । कामदेवसों सुंदर है । ऐसो जो राग तांहि लिलत जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों गायो है । स ग म ध नि स । यांते औडव है । याको सूर्यको

उद्यसमयमें गावनों । यह तो याको बखत है । और दिनके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरतें ॥ हींडोल रागकी पांचवी । ५ । ललित तहां याको जंत्र है ॥ इति भैरव रागको छटो पुत्र ललित संपूर्णम् ॥

अथ भैरव रागको सातवो पुत्र बिलावल ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें उन रागनमें सो विभाग करिके। अघोर नाम मुखसों गाईके भैरवकी
छाया युक्ति देखि। वाको बिलावल नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों।।। अथ
बिलावलको स्वरूप लिख्यते॥ जाके हृद्य केसरी अरु चंदनसों चर्चित है। सुफेद वस्त्र पहरे है। माथेपें जडावु मुकुट है। काननमें मणिके जडे कुंडल है। गोरो जाको रंग है। एक हाथमें कमल फिरावे है। बांई हाथमें ताल बजावे है। एक हाथसों धीं धीं धि किट या प्रकार मृदंग बजावे है। ऐसो जो राग तांहि बिलावल जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है। ग प ध नि सा रि ग। याते संपूर्ण है। दिनके प्रथम पहरेमें गावनों। यह तो याको बखत है। दिनके दूसरे पहर तांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सों जंत्रसों समझिये॥

भैरव रागको सातवो पुत्र विलावल ७ (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा तीन	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-भैरवके पुत्र माधव और मालकोसके पुत्र. ८१

स _	षड्ज असिल, मात्रा दोय	प	पंचम असाठि, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मीडिके मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढीं, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा ६

॥ इति भैरव रागको सातवो पुत्र बिलावल संपूर्णम् ॥

अथ भैरव रागकों आठवो पुत्र माधव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको सद्यो जात नाम मुखसों गाईके भैरवकी छाया युक्ति देखि । वांको माधव नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों । अथ
माधवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है बडो तेज है । रंगिवरंगे वस्त्र
पहरे है। मोतिनकी माला कंठमें है । कामदेवके समान जाको रूप है । ओर सोनेके
मिणिजडित कुंडल जाके कानमें है । बीन बजावे है । चतुरनके मनको मोहे है । ऐसो
जो राग तांहि माधव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो छह सुरनसों गाया है । ग म ध नि
स रि ग । यांते षाडव है । दुपहर तांहि चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी
छह सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यांते जंत्र बन्यो नहीं ।
जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरित लीजिये ॥ इति माधव संपूर्णम् ॥ इति भैरव
पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ मालकोसको पुत्र नंदन ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनं प्रसन्न होईके वामदेव नाम मुखसों गाईके मालकोसकी छाया युक्ति
देखी। बांको नंदन नाम करिके मालकोसको पुत्र दीनों। अथ नंदनको स्वरूप
लिख्यते॥ गोरो अंग है केसरीको तिलक ललाटमे है। जाके एक हाथमें लकुट
है। अरु एक हाथमें पंचरंगी गेंद है। मोतिनके हार गलेमें है। मोतिनके कुंडल जाके
कानमें है। नील कलंगी माथेमे है। जरीको मेचा बांधे है। अरु सोसनी वस्त्र
पहरे है बडो नेत्र है। सोनेका गहना पहरे है। ऐसो जो राग तांहि नंदन
जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनेमं गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें

संपूर्ण है। याको रातिके चौथे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है। दिनके दुसरे पहर तांई गावनो । याकी आठाप चारी सात सुरनमें किये राग वरतें। यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरत ठीज्यो ॥ इति माठकोसको पुत्र नंदन संपूर्णम् ॥

अथ मालकोसको पुत्र खोखर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनेंसो विभाग करिबेको वामदेव नाम मुखसों
गाईके मालकोसकी छाया युक्ति देखि वांको खोखर नाम करिके मालकोंसकों
दीनो । अथ खोखरको स्वरूप लिख्यते ॥ जो हाथसों ताल बजावे है सब गुनीनमें सिरोमणि है । ओर ढोलकके परननके संग गान करे हैं । उजरी पोसाग
पहरे है । ईंद्रके मनको हरष उपजावे हैं । ओर गंधर्वको नायक है नृत्यमें गानमें
पवीन है सुरतीत मूर्छना सुद्ध जाने है नटवर भेष धारे है । ऐसो जो राग तांहि
खोखर जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरमें गायो है । स रि ग म प ध नि
स । यांतें संपूर्ण है । याको दिनके पथम पहरमें गावनो । यह तो याको बखत
है । ओर दिनके दोय पहरमें चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र
बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरित लीजिये॥ इति खोखर मालकोसको पुत्र संपूर्णम् ॥

अय हिंहोलके आठ पुत्रनकी उत्पत्ति लिख्यते॥

प्रथम पुत्र बंगाल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमें-सो विभाग करिवेको । सद्यो जात नाम मुखसों गाईके हींडोलकी छाया युक्ति देखि वांको बंगाल नाम करिके हींडोलको पुत्र दीनो । अथ बंगालको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो अंग है विचित्र वस्त्र पहरे है । ओर ओरबदार मोतीनकी माला कंग्रेमे है । अपने शरीरकीसों कामदेवको जीत है । मधुर सुरसों ताल बजावे है । मुखसों उँकार उच्चार करे है । मणिनको जडाउ मुकट जाके माथेपे बिराजे है । सबजनको मन वस करे है । मंद मुसकान करे है । सब रागको राजा है। ऐसो जो साग ताहि बंगाल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । ध नि स

सप्तमो रागाध्याय—हिंडोलके बंगाल, चंद्रबिंब, सुभ्रांग आदिपुत्र. ८६ याको बखत है। ओर दिनके दोंय पहर तांई चावो तब गावो। याकी आलाप चारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं॥ इति बंगाल संपूर्णम्॥

अथ हिंडोलकां दुसरो पुत्र चंद्रविंव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनेंमीं विभाग करिवेकों। सद्योजात नाम मुखसों गाईके
हिंडोलकी छाया युक्ति देखि। वांको चंद्रविंबनाम करिकं हिंडोलकु पुत्र दीनों॥
अथ चंद्रविंबको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है॥ अमेलक ढोलक जाके
कांखमे है॥ रंग विरंगे फूलनकी माल जाके कंटम विराजमान है॥ कमल पत्रसे
जाके नेत्र है॥ हाथसों कमल फिरावे हे॥ अरु जाके मुखमें कमलकी सुगांधि है॥
तासों भवर गुंजारकर है॥ लाल वस्त्र पहरे है॥ सोनेके आभुषन पहरे है॥ ऐसी
जो राग सो चंद्रविंब जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है॥ ग म प ध
नि स रि ग। योतं संपूर्ण है॥ याको दिनके पथम पहरमें गावनों यह तो याको
वस्तत है॥ ओर दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलाप चारी सात
सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं यातें यंत्र बन्यो नहीं जाकी
सिवाय बुद्धि होय सों वरतली ज्यो॥ इति हिंडोलको पुत्र चंद्रविंब संपूर्णम्॥

अथ हिंडोलको तिसरो पुत्र सुम्रांग ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनेंमें विभाग करिवेको सद्योजात नाम मुखसों मायकें
हिंडोलकी छाया युक्ति देखि वांको सुम्रांग नाम कीनों ॥ अथ सुम्रांगको स्वरूप
लिख्यते ॥ केसरिको सो जाको रंग है। अंगनमें आभूषन फूलनके है केसरि। चंदनकों
अंगराग अंगनेंमें किये है। अरु हाथनसीं ताल बजावे है। सुपेद वस्त्र पहरे
है। स्त्रीनको हसावे है। आप हसे है। आनंदमें मग्न है। खंजनसे चपल नेत्र है।
ऐसो जो राग तांहि सुम्रांग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसो गायो है ॥
स ग म प ध नि स । यातें षाडव है ॥ याको दिनके पथम पहरमें गावनों यह तो
याको वस्तत है ॥ ओर दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो ॥ याकी आलाणां
चारी छह सुरनमे है ॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं ॥ जाकी सिवाय
बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति सुम्रांग संपर्णम्॥

अथ हिंडोलको चोथो पुत्र आनंद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनं षसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ॥ सद्योजात नाम
मुखसों गाईकें हिंडोलकी छाया युक्ति देखि । वांको आनंद नाम करिकें हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ आनंदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है ॥ स्वेत
वस्त्र पहरे है ॥ तांबूलके रससों दांतनकी पंक्ति जाकी लाल है ॥ शरीरमें चंदनकों अंगराग लग्यो है ॥ अरु देवांगनानके मनको वसिकरे है ॥ हाथनसों ताल
बजावे है ॥ अरु मधुर राग गावे है ॥ याकों लोकमें नाजर कहे है ॥ देवांगना
जाके संग है ॥ ऐसो जो राग तांहि आनंद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात
सुरनसों गायो है ॥ म प ध नि स रि ग म । यांतें संपूर्ण है ॥ याको दिनके पथम
पहरमें गावनो । यह तो याको बखत है । ओर दिनके दोय पहर तांई चाहो तब
गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते यह राग सुन्यो नहीं
यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति आनंद
संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको पांचवो पुत्र बिभास ताकी उत्पत्ति लिख्यते।।
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। सद्योजात नाम
मुखसों गाईकें हिंडोलकी छाया युक्ति देखी वांको विभाग करिके हिंडोलको पुत्र
दीनो ॥ अथ विभासको स्वरूप लिख्यते ॥ सर्द कालको संपूरन चंद्रमासों जाको
मुख है। गोरो जाको अंग है। रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। चंचल जाके नेत्र है॥
पीतिमें मझ है। अरु केसरीको रंग जाके भालमें है। फूलनकी माला जाके
कंठमें विराजे है। मणिनके जडाउ आभूषन जाके कंठमें है। मनमान्यो विहार
करे है। हाथमें सूवाको पढवा है। तरुण जाकी अवस्था है। ओर जाके अधरामृत चूवे है। ऐसो जो राग तांहि बिभास जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात
सुरनमें गायो है। गपध स निधप म गरि स म। यातें संपूर्ण है। याको
रातिके चोथी पहरसों लेके सूर्यके उदय पहले गावनों। यह तो याको बखत है।
ओर दिनके प्रथम पहर तांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलके पुत्र विभास, वर्धन, वसंत ओर विनोद. ८५ हिंडोलको पांचवो पुत्र विभास-संपूर्ण ॥

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक		A second

॥ इति हिंडोलको पांचवो पुत्र विभासको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको छटो पुत्र वर्धन ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनें प्रसन्न होईके उन रागनेंमों विभाग करिके । सद्योजात नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखी । वांको वर्धन नाम करिके हिंडोलको पुत्र दीनो । अथ वर्धनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । केसरकी खोल छलाटमें है । माथेपें मुकुट है । सुपेद वस्त्र पहरे है । हाथनमें जाके खड्ग है । हीरानके जडाऊ आभूषन पहरे हैं। महत तरुण सुंदर स्ती जाके संग है। वीररसमें मग्न है। ओर कल्पवृक्षकी छायामें मनभाई कीडा करे है। मोतिनके हार पहरे है। ऐसो जो राग तांहि वर्धन जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। पध नि स रि ग म प। यातें संपूर्ण है॥ याको दिनके दुसरे पहरेमें गावनों॥ यह तो याको बखत है। ओर दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आछाप सात सुरनमें किये राग वरते॥ यह राग सुन्यो नहीं याते जंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत छीज्यो॥ इति वर्धन संपूर्णम्॥

अथ हिंडोलको सातवो पुत्र वसंत ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। सद्योजात नाम मुख-सों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखी। वांको वसंत नाम करिके हिंडोलको पुत्र दीनो॥ अथ वसंतको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है। ठाल वस्त्र पहरे है। माथेपें मुकुट है। मोतिनकी माला जाके गरेमें है। ओर फूवागनकी फूलवारी सरोवरनेंम जाकी भीति है। अरु फूलनकी सुगंध जाके अंग अंगनेंमें है। ओर वोरपास जाके भौरानकी समह गुंजार करे है। मुखमें बीडा खाय है। सींगी मुखसो बजावे है। पग नूपुरकी झनकारसों तरुनीनके मनको हरष उपजावे है। कामदेवको मित्र है। ऐसो जो राग ताहि वसंत जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रिगम प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो यह तो याको बखत है। अरु वसंत पंचमीके दिन ओर सब ऋतुनमें सब समेमे गावनों। यह राग मंगलीक है। याकी आस्त्राप-चारी सात सुरनमें किये राग वरते॥ इति वसंत संपूर्णम्॥

अथ हिंडोलको आठवो पुत्र विनोद ताकी उरपति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसो विभाग करिवेको सद्योजात नाम मुखसों गाईके हिंडो-लकी छाया युक्ति देखिके । वांको विनोद नाम करिके हिंडोलको पुत्र दिनो ॥ अथ विनोदको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेसो अंग है। हाथमें पानको बीडा है । सुंदर तिलक जाकै लखाटमें है । माथेपें जाके चंद्रमाकी कला है । अरु अलकमकी छविसुं सुल उपजाने हैं। स्वेत वस्त पंहरे हैं। सोनेका कहा जाके हाथमें है। गरेमें मोति-नकी माला है। काननमें जाके कुंडल है। कपोलनमें मुकटकी झलक पड़े हैं। हाथमें वीणा बजाने हैं। पसन जाको मन हैं। सरीरमें सुगंधकी लपट आने हैं। ऐसी जो राग तांहि निनोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। स रि म प ध नि स। यातें पाडन हैं। याकों दुसरे पहरमें गाननों। यह तो याको बखता है। ओर चाहो तब गानो यह राग मंगलीक है। याकी आलाप चारी छह सुर-नमें किये राग नरते॥ यह राग सुन्यो नहीं यातं जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिनाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति निनोद राग संपूर्णम् ॥

॥ इति हिंडोलके आठ पुत्र संपूर्णम् ॥

॥ अथ दीपकके आठ पुत्रकी उत्पत्ति लिख्यते ॥

अथ दीपकको प्रथम पुत्र कुसुम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनं पसन्न होईकें उन रागनमें सो विभाग करिवेको । तत्पुरुष नाम मुखसों गाईके दीपककी छायायुक्ति देखि वांको कुसुम नाम करिके दीपकको पुत्र दीनो ॥ अथ कुसुमको स्वरूप लिख्यते ॥ वांके वोर पास में रानकें समूह गुंजार करे हैं । कमलनके आसनेंप बेठो है । ओर कमल जांके दोऊ हाथनमें है । गोरोजाको रंग है। श्वेत वस्त्र पहरे हैं। मोतीनकी माला पहरे हैं । हाथनमें कडा पहरे हैं। माथेंप जांके मुकुट है । ऐसो जो राग ताहि कुसुम जांनिये ॥ शास्त्रमं तो यह छह सुरनसों गायो है ॥ सध नि सगमप। यांते षाडव है ॥ याको दिनके दूसरे पहरमें गावनो । यह तो याको वखत है । ओर दोय पहर उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी छह सुरनमें किये राग वरते ॥ यह राग सुन्यो नहीं यांते जंब बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होयसों वरत लीजिये ॥ इति कुसुम संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको दूसरो पुत्र कुसुम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीतें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । तत्पुरुष नाम मुखसों गाईके दीपककी छासा युक्ति देखि दीपककों पुत्र दीनों ॥ अथ कुसुमको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंगहै । लाल वस्र पहरेहै । कमलके आसनेपें बेठोहै । अरु कमल जाके हाथनमेंहै । माथेपें मुकुटहै । सोनेके आभूषन पहरेहै । अपनें समान मित्रको बतलावेहै ॥ ऐसो जो राग तांहि कुसुम जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों
गायोहै । स नि प स ग म । यातें औडवहै । याको दिनके तीसरे पहरेमें गावनो
यहतो याको वस्ततहै । ओर संध्याताईं चाहो तब गावो । याको आलापचारी
पांच सुरनमें किये । राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं ।
जाकी सिवाय बुद्धि होयसों वरत लीजिये ॥ इति कुसुम संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको तीसरो पुत्र राम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनं उन रागनेमेंसों विभाग करिवेको दीपककी छाया युक्ति देखि। वांको नाम राम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ रामको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरोजाको रंगहै । कल्प-वृक्षकी छायामें रलिसंहासनपें बेठोहै । रंगिवरंगें वस्त्र पहरेहै । अनेक आभूषन पहरेहै । सखीजाके पीछे ठाडी पंखा करहै ॥ आंगकूं हाथ जोरि ठाडी जो अपनी स्त्री तिनसों बात करहै ॥ ऐसा जो राग तांहि राम जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायाहै ॥ सिर गम पध निस । याते संपूर्ण । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो । यह तो याको बखत ओर दिनके दोय पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलाप सात सुरनमें किये । राग वरते ॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं ॥ जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरत लीज्यो ॥ इति राम राग संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको चोथो पुत्र कुंतल ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनें उन रागनेंमें विभाग करिवेको तत्पुरुष नाम मुखसों गाईकें दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको कुंतल नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥ अथ कुंत-लको स्वरूप लिख्यते ॥ जो पदार्थ सुनेहेसो जाको याद रहे है । ओर जो बांसरीम रागनीकी आलापचारी करेहै ॥ चंपाके फूलनकी माला गरेमेंहै । एक हाथसों ताल बजावेहे । पीतांबर पहरेहे । गोरो जाको अंगहे । सुंदर फुले कमलकी चोकीपें बेठोहे । दोऊ वोर चवर जाके उपर दुले है । बड़ नेत्रहे । सोनेके आमू-षन पहरेहे ॥ ऐसो जो राग तांहि कुंतल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुर-नसों गायोहे । स रि ग म प ध नि स । याते संपूर्णहे । याको ग्रीष्म ऋतुमें दुप- हरके समयमें गावनों ॥ यहतो याको बखत है दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलावचारी सात सुरनमें किये । राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंब बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरत लीज्यो ॥ इति कुंतल संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको पांचवो पुत्र किलंग याको लोकिकमें किलंगडों कहे है ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें मसन होईकें उन राग-नमेंसों विभाग करिवेकों । सद्योजात नाम मुखसों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको किलंग नाम करिके दीपककी पुत्र दीनों ॥ अथ किलंगको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । केसरीकी खोल जाके ललाटमें है । मुखमें बीडा खाय है । रंगिबरंगे वस्त पहरे है । बांईकोर कमरमें जाके कटारी है । ओर हाथनमें जाके खड़ग है । जाके मनमें कोध है । युद्धके लिये सिंहनाद करे है जाके रूपकूं देखि बैरीनके हिय धरके है । बड़ो बलवंत है । युद्धके लिये बांह जाकी फरके है । ऐसो जो राग तांहि किलंग जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । म ग रि स स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको वखत है । दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों । जंत्रसों समझिये ॥

दीपकको पांचवो पुत्र कलिंगडो संपूर्ण ॥

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषम चढी, मात्रा तीन	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति दीपकको पांचवो पुत्र कलिंग संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको छटा पुत्र बहुल ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको। सद्योजात नाम
मुखरों गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि। वांको बहुल नाम करिके दीपकको
पुत्र दीनों॥ अथ बहुलको स्वरूप लिख्यते॥ जाके अरुण कमलसे नेत्र है।
हाथमें बीडीनको डच्चा लिया है। चंद्रमासों मुख है मुखमें पान खाय है। ताके
पीक जाके कंठमें झलक है। ओर पानडीके कुंडल बनाय काननमें झलक है।
नागरि वेलिका पाननसों जाकी फेंट भरी है। जाके मित्रहू वीडा बहुत खाय है।
उनहींके संग रहे है। सोनेके आभूषन पहरे है। गोरी जाको अंग है। सुपेद वस्त
पहरे है। ऐसो जो राग वांहि बहुल जांनिये॥ शास्त्रमें तो छह सुरनसों गायो
है। ग प ध नि स नि ध प म ग। यांतें षाडव है। दिनके प्रथम पहरमें गावनों।
यह तो याको बखत है। दिनके दोय पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलाप
चारि छह सुरनमें किये राग वरते सों। जंत्रसों समझिये॥

अथ दीपकरो छटो पुत्र बहुल षाडव (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ध	धैनत चढी, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक		

॥ इति दीपकको छटो पुत्र बहुल षाडव संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको सातवो पुत्र चंपक ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें पसच होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको तत्पुरुष नाम मुखसों
गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको चंपक नाम करिके दीपकको पुत्र
दीनों ॥ अथ चंपकको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । हाथमें कमछ है ।
लाल कमलसें जाके नेत्र है । कमलसों जाको मुख है । जाको शरीर हरषसो
पफुछित है । जडावु मुकुट माथेपें है । काननमें कुंडल है । सुपद अरु पीरे वस
पहरे है । बडि जाकी छिब है । ग्रीष्म ऋतुमें दुपहरको सरोवरके निकट सचन
वृक्षकी छायामें विश्राम करे है। वीणा हाथमें बजावे है । ऐसो जो राग तांहि चंपक
जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स ।
यातें संपूर्ण है । याको दिनके दोय पहरमें गावनों यह तो याको वखत है । दिनके
तीसरे पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग
वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सि० ॥ इति दीपकको
सातवो पुत्र चंपक संपूर्णम् ॥

अथ दीपकको आठवो पुत्र हेम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनेंगें विभाग करिवेको । सद्योजात नाम मुखरों
गाईके दीपककी छाया युक्ति देखि । वांको हेम नाम करिके दीपकको पुत्र दीनों ॥
अथ हेमको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्न पहरे है । मंदमुसकानयुक्त जाको मुख है । कोकिलसों कंठ है । जो बचन सुनि कामनीनके चित्तलल
वावे है । पक्के नागरवेलके पान सुमसन्न रहे है । विडाके खावेवारे जाके मित्र है ।
ऐसो जो राग तांहिं हेम जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि
ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों यहतो याको
वस्त्रत है । रातिके दोय पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारि सात
सुरनमें राग वरते सो जंत्रसें समझिये ॥

दीपकको आठवो पुत्र हेम संपूर्ण ॥

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
सं	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रां एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक	रि ग	रिषभ चढी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक
			,

॥ इति हेम संपूर्णम् ॥ इति दीपक पुत्र संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-श्रीरागके पुत्र सैंधव, मालव, गौड, गंभीर. ९३

॥ अथ श्रीरागके पुत्र नव ॥

तहां अथम पुत्र सेंधव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनमेंसो विभाग करिवेकों । ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । सेंधव नाम करि श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ सैंधवकों स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंगहै । रंगबिरंगे वस्त्र पहरेहै । पाखरके घोडा-पर चढेहै । पाथेपें ताकें झिलमल टोपहै । जाके दाहिने हाथमें नागी तरवारहै । वीररसमें मझहै । कालिके चरणारविंदको ध्यानहै । बडो बलवानहै । जाकें नेत्रनमें कोध झलकहै । युद्धमें बडो बीरके संघार करहै । ओर बडो उद्धतहै ॥ ऐसो जो राग तांहि सैंधव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायोहै ॥ स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्णहै । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वखतहै । संग्राममें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किय राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । जाकी सिवा० ॥ इति श्रीरागको प्रथम पुत्र सैंधव संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको दूसरा पुत्र मालव ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनें पसन्न होईके उन रागनमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरागकी छाया युक्ति दोखि । वांको मालव नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अध मालवको स्व० ॥ गेरो जाको रंग है । फूले कमलसों मुख है । सूर्यको सो तेज है । संपूर्ण पृथ्वीको राजा है । अरु विसाल कमलसे जाके नेत्र है । गरेमें कमलकी माला पहरे है । सिंहासनें बेठो है । माथें मुकुट है । हाथनमें कमल फिरावे है । रंगिवरंगे वस्त्र पहरे है । अनेक प्रकारके आमूषन पहरे है । जाके ऊपर चवर दुले है । अरु छत्र फिरे है । जगतमें जाकी आज्ञा रुकतनाहिं । ऐसो जो राग तांहि मालव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह पांच सुरनसों गायो है । स नि प ग म । यांतें औडव है । दिनके तीसरे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । दोय पहर उपर चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि० ॥ इति मालव संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको तीसरो पुत्र गौड ताकी उत्पत्ति छिख्यते ॥ शिव-

छाया युक्ति देखि । वांको गौड नाम करिकं श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गौडको स्वरूप छि० ॥ गोरो जाको अंग है । चंदनको तिछक जाके छछाटमें है । काननमें कुंडछ है । मुखमें बीडा चाव है । सुपेद वस्त्र पहरे है । गछेमें माछा पहरे है । नारायणकी पूजा करे है । कोकिछकेसे मधुर स्वरसें स्तुति करे है । ऐसो जो राग तांहि गौड जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध स । यातं षाडव है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनो यह तो याको बखत है । अह पहर रात गयातांई चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं जाकी सिवाय बुद्धि० ॥ इति श्रीरागको तीसरो पुत्र गौड संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको चोथो पुत्र गंभीर ताकी उत्पत्ति ंलक्ष्ये । शिवजीनें पसन होईके उन रागनमें सों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गंभीर नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गंभीरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । जामें मोरा गुंजार करे है । ऐसो कमल जो हाथमें है । ओर मुकुट माथेपें है । मोतिनकी माला कंठमे है । एक हाथसों ताल बजावे है । जाके वित्तमें बडी प्रीति है । बडो सुखी है । मगरमछपें बेठचो है । कीडा करे है । ऐसो जो राग तांहि गंभीर जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । गम प ध नि स रि ग । यांते संपूर्ण है । याको सांजसमें गावनों यह तो याको बखत है । रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरन किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं यांते जंत्र बन्यो नहीं । जािक सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति गंभीर संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको पांचवो पुत्र गुणसागर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको इंशान नाम मुखसों गायके श्रीरागकी
छाया युक्ति देखि। वांको गुणसागर नाम करि श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ गुणसागरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है। माथों मुकुट
है । जडाऊ कुंडल पहरे है । अरु हाथनमें सोनेका कडा है । रति करिके युक्त है।
अनेक पूलनकी माला पहरे है । सर्व गुन युक्त है । रतनाकरके समुद्दके बीचमें
खेल करे है । पूलपूलनसों ओर कमलनसों सखीनके संग पेम युद्ध करे है ।

सप्तमो रागाध्याय-शेद्धाद्योहे गुणसागर, विगड आदि पुत्र. ९५

ओर बस जाति है। कामदेवसों सुद्धे है। ऐसो जो राग तांहि गुणसागर जांनिये।। शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है। याको दो पहरमें गावनो यह तो याको बखत है। दिनमें चाहो तब गावो। याकी आठापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सु० याते ० जाकी सिवाय ० ॥ इति गुणसागर संपूर्णम् ॥

अथ श्रोराग ा छटो पुत्र विगड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें पसच होईके उन रागनोंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको विगड नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ विगडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरोचनसों गोरो जाको अंग है । रंगबिरंग वस्त पहरे है । माथेपं जाके मुकुट है । सोनेका कडा जाके हाथनों है। हाथमें जाके वीडा है । कामदेवके समान रूप है । सखीनके संग अंतरको आदिले सुगंध लगावे है । ओर कोककलामें निपुन है । धनुषविद्या जाने है । ऐसो जो राग तांहि विगड जांनिये ॥ शास्त्रमें छ सुरनसों गायो है । गम प नि स रि म । यातें षाडव है । याको सायंकालसमें गावनो यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लीज्यो ॥ इति विगड संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको सातवो पुत्र कल्याण ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें पसन्न होईके उन रागनेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों
गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको कल्याण नाम करिके श्रीरागको पुत्र
दीनां ॥ अथ ाव्याण्यको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । सुंदर वस्न पहरे
है । हीरामोती रत्नजडे सिंहासनेंप बेठचो है । जडावु मुकुट माथेंप है । छत्र
जाके उपर फिरे है । जाके दोऊ मोर चवर ढुरे है । ओर जो राजसमा कर बेठचो
है । मुखमें बीडा खाय है । जाकी सुगंधसों भौरा गुंजार करे है । मोतिनको गरेमें
हार है । बडे नेत्र है । ऐसो जो राग तांहि कल्याण जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात
सुरनसों गायो है । ग म ध रि स नि ध प म स रि ग । यांते संपूर्ण है । याको
रातिके प्रथम पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । रातिके दोपहरतांई बाहो

तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि हो ।। इति कल्याण राग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरागको आठवो पुत्र कुंभ ताकी उत्पत्ति लिख्यते।।

शिवजीनें प्रसच होईके उन रागनेंसों विभाग करिवेकों। ईशान नाम मुखसों
गाईको श्रीरागकी छाया युक्ति देखि। वांको कुंभ नाम करिकें। श्रीरागको
पुत्र दीनो ॥ अथ कुंभको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेसो जाको रंग है। स्वेत वस्त
पहरे है। माथेंपें जाके मुकुट है। फूल जाके काननमें है। झलझलातो सोनेको
कमल जाके हाथमें है। जाके दोऊ मोर चवर ढुले है। चंदन धूप पुष्प या अक्षत
इनसों मंगलाचार करे है। ओर पास संगकी सखीनके मधुर सुरनसों गावे
है। ऐसो जो राग तांहि कुंभ जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है॥ स
रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्या समें गावनो यह तो याको
बखत है॥ रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात
सुरनमें किये राग वरतें। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी
सिवाय बु०॥ इति कुंभ राग संपूर्णम्॥

अथ श्रीरागको नववा पुत्र गड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिव-जीनं प्रसन्न होईके उन रागनमें सों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गाईकें श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गड नाम करिकें श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ गडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको स्वरूप है । स्वेत वस्त्र पहरे है । कमलपत्रसे नेत्र है । काननमें कुंडल है । ओर सोनेके कडा जाके हाथनमें है । ओर चित्रनके संग वर्ता आलाप करे है । मोतीनकी माला जाके कंठमें है । माथें जाके मुकुट है । ऐसो जो राग तांहि गड जांनिये ॥ शास्त्रमें तो पांच सुरनसीं गायो है ॥ प ध म ध नि स नि ध प । यांतें औडव है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । यह राग सु० जांते जं० ॥ जाकी० ॥ इति श्रीरागको नववो पुत्र गढ संपूर्णम् ॥ इति श्रीराग पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ मेघरामके पुत्र आठकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पांच रागनी-स्राहित मेचरायन शिवजीकी आज्ञातें । पार्वतीजीकों गान श्रुतिसों पसच कीनों।

सप्तमो रागाध्याय-मेघके पुत्र नग, कान्हरो, ओर सारंग. ९७

तब पार्वतीजीनें पसन्न होईकें वांको वरदान आठ पुत्र दीनों ॥ तहां प्रथम मेघरागको पुत्र नग ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें पसन्न होईकें उन रागनों
सों विभाग करिवेकों । अपनें श्रीमुखसों गाईकें मेघरागकी छाया युक्ति देखि ।
वाकों नग नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों ॥ अथ नगको स्वरूप लिख्यते ॥
गोरो जाको रंग है । सुपेद वस्त्र पहरे है । विसाल कमलसे जाके नेत्र है । मध्येषें
मुकुट है। गलेमें गज मोतीनकी माला है। मन्यनसों जड़े सोनेके आभूषन पहरे है ।
बहुत सुख करिके देवतानकी सभामें इंद्रसो अधिक जाकी छबी है । जाको सेज
जग मग है । ऐसो जो राग तांहि नग जांनिये सास्त्रमें तो यह सात सुरनसों
गायो है । स रि ग म प ध नि स ॥ यांतें संपूर्ण है । याकों संध्या समें गावनो
यह तो याको वखत है । ओर रातिके चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं
यांतें जंत्र बन्यो नही जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरित लीजिये ॥ इति मेघ
रागको प्रथम पुत्र नग संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको दूसरो पुत्र कान्हरो ताकी उत्पाति लिख्यते॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागनमेसों विभाग करिवेकों। अपनें श्रीमुखसों गाईकें मेघरागकी छाया युक्ति देखि वांको कोन्हरो नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों॥ अथ कान्हराको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है। केसरका वस्त्र पहरे है। हीराकी सोनाकी देहकी दुति है। कामदेवके समान जाको रूप है। ओर जाके दांत है। हाथनमें जडावु कडा है। गरेमें मोतिनके हार पहरे है। माथेमें मुकुट है। काननमें जडावु कंडल है। अनेक प्रकारके सुगंधको फुलनसो सुगंधित जाको अंग है। सोनेके आभूषण पहरे है। संगीत सास्त्रमें सुघर है॥ ऐसी जो राग तांहि कान्हरो जांनिये। सास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। प ध नि स रि ग म प। योतें संपूर्ण है। याकों रातिके प्रथम पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। ओर रातिके दोय पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये राग वरतें यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं जांकी शिवाय बुद्धि होय। सो वरत लीजियो। इति मेघरागको दूसरो पुत्र कान्हरो संपूर्णम्॥

अथ मेघरागको निसरी पुत्र सारंग ताकी उत्पत्ति लिख्यते।।
पार्वतीजीनं पसन्न होईके उन रागनमंसों विभाग करिवेकों आपनें श्रीमुखसों गाईके
मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको सारंग नाम करिके मेघरागको पुत्र दीनों ॥
अथ सारंगको स्वरूप लिख्यते। स्याम जाको रंग है। पीतांबर पहरे है। मणिनसों
जडाऊ मुकुट जाके माथेपे है। वनमाछा पहरे है। च्यारुजाके भूजा है। बानसहित सारंग
धनुष सुदर्शन संख ओर चक्र ओर गदा ये सख्त हाथमें लिया है। बांई कोर
जाके लक्ष्मी गरूडके उपर असवार है। ऐसो जो राग तांहि सारंग जांनिये।
साख्नमें यह तो सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स यातें संपूर्ण है।
याकों दिनके दुसरे पहरमें गावनो यह तो याको वखत है। ओर दिनमें चाहो तब
गावों। याकी आलापचारि सात सुरनमें किये राग वरतें सो। जंत्रसों समझिये॥

मेघरागको तीसरो पुत्र सारंग (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दो
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गंधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असस्रि, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असालि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असार्छ, मात्रा एक	रि	रिषम चढीं, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति मेघरागको तीसरो पुत्र सारंग संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको चोथो पुत्र केदारो ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
पार्वतीजीनें पसन्न होईके उन रागमेंसों विभाग करिवेको। अपनं श्रीमुखसों
गाईके मेघकी छाया युक्ति देखि। वांको केदारो नाम करिके
मेघरागको दीनों॥ अथ केदारको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग
है। सुपेद धोवती उपरना पहरे है। बांगें हाथमें जाके तिशूल है। डाये हातमें
दंड है। योगासन सों बेठो है। योगाभ्याससों मनमें शिवजीको ध्यान करे है।
कामदेवको जानें जीत्यो है। लाल कमलसे जाके नेत्र है। सरपकी जाके जनेऊ
है। सिरपें जटाजूट धारे है। मालमें जाके चंद्रमा है। ऐसो जो राग तांहिकेदारो
जांनिये। शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है॥ निध प म ग रिस नि।
यातं संपूर्ण है। याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों। येतो याको वखत है।
और रातीके दोपहर तांई चाहो तब गांवो। याकी आलापचारी सात सुरनमें
कीये राग वरते॥ यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय
बुद्धि होय सो वरत लीज्यो। इति मेघरागको चोथो पुत्र केदारो संपूर्णम्॥

अथ मेघरागको पांचवो पुत्र गोड ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीने उन रागनमें सो विभाग करिवेको अपने श्रीमुखसों गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गोड नाम करिकें मेघरागको पुत्र दीनां ॥ अथ गोडको स्वरूप छिल्पते ॥ श्याम जाको रंग है । वगतर पहरे है । माधेपें मुकुट है । वा

मुकुटको जामोनकें नवीन पलकनसों ढांके है। ललाटमें भसमनको तिपुंड है। दाहिनें हातमें माला है। कोधसो उपर चढे है। भीलनके समूह जांकें संग है। गज मोतीयनकी माला पहरे है। मृगनकी शिकारमें निपुन है। रौद्रमें मझ है। मनमें शिवजीको ध्यान धरे है। ब्रह्मचारी है। ऐसो जो राग तांहि गोड जांनिये। शास्त्रमेंतो सात सुरनसों गायो है। स रिगम प ध निग रिस। यांतें संपूर्ण है। याको बीष्ममें दूपरीकों गावनों यहतो याको दखत है। ओर बीष्ममें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरतें सो जंत्रसो समझिये॥

मेघरागको पांचवो पुत्र गोड (संपूर्ण ५).

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गंधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा दोय .	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय
₹	षड्ज असछि, मात्रा दोय	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-मेघके पुत्र मह्लार, जालंधर, ओर संकर. १०१

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक		

॥ इति मेघरागको पांचवो पुत्र गोड संपूर्णम् ॥

अथ मेघरागको छटो पुत्र मह्लारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें प्रसन्न होईके उन रागनेमें सों विभाग करिवेंको । अपने श्रीमुखसों गाईके
मघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको महार नाम करिके मघरागको पुत्र दीनों ॥
अथ महारकों स्वरूप लिख्यते ॥ श्यामजाको रंग है । भयानक जाको भेष है ।
सर्पकी माठा गरेमें पहरे है । फूठनकी आभूगण पहरे है । स्वीजाके संग है । विध्याचल्नमं वस है । केलकेपत्रनकों पहरे है । केलहीके वलकनको मुकुट पहरे है ।
मोरनके गरेमें फासि नाखि उनके पंख उखारे है । जाके दोनू हातनेमें धनुषबान है । कमरमें किटआरि है । तीखो छुरा है । ऐसो जो राग तांहि महार
जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनतों गायो है । नि ध प म ग रि स । स
रि ग म प ध नि । यातें संपूर्ण है । याको वर्षाऋतुमें गावनों यहतो याको वखत
है । ओर वरषा होय तब चाहो तब गावो यह राग मंगलीक है ॥ याकी
आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र
बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सों वरत लीजो ॥ इति मेघरागको छटो
पुत्र महार संपूर्णम् ॥

अथ भेघरागको सातवो पुत्र जालंधरकी उत्पत्ति लिख्यते॥
पार्वतीजीनें पसन्न होईकें उन रागनमेंसों विभाग करिवेंको अपनं श्रीमुखसों
गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि। वांको जालंधर नाम करिके मेघरागको
पु०॥ अथ जालंधरको स्वरूप लिख्यते॥ गोपगोपी गायबछा तिनके हेत गोवईन पर्वतको वांमे हाथकी चिंट आंगुरीसों उठाईकें सात दिन तांई धारन
करतो भयो स्याम जाको रंग है। पीतांबर पराव है। मुरली बजावे है। मूसल
धार महकी झडी लगी रही है। बडी जामें गर्जना है। ऐसो पोंन चले है।
तासमें इंदको मद जीत्यो है। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। अर गोकुलको रख-

वारो है। नानापकारके आभूषण पहरे है। माथेपें मोर मुकुट है। ऐसी जो राग तांहि जालंधर जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। स ग म प ध नि स। यातें पाडव है। याको ग्रीष्म ऋतुमें दूपहरमें गावनों याको यो वस्त्रत है। ओर ग्रीष्म ऋतुमें चाहो तब गावो। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो०॥ इति जालंधरराग संपूर्णम्॥

अथ मेघरागको आठवो पुत्र संकर ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमंसों विभाग करिवेकों । अपनें श्रीमुखसों गाईकें मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको संकर नाम करिकें मेघरागको पुत्र दीनों ॥ अथ संकरको स्व० ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त पहरे है । रूप करिकें मनमथको जीते है । तीखो तिशूल जाके हाथमें है। जडाऊ कीरट जाके माथेपें है । सोनेक कडा जाके हाथमें है । कमल पत्रसे जाके नेत्र है । मुखमें वीडा खाय है । अरगजाको लेप करे है । स्वीनकें संग विहार करे है ॥ ऐसो जो राग ताहि संकर जांनिये । शास्त्रमें तो ये सात सुरनसो गायो है ॥ प म ग रि स नि रि ग म प च नि । यांतें संपूर्ण है । याको रातिकें मथम पहरमें गावनों यह तो याको वस्तत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सु० ॥ यांतें जं० जाकी सिवाय० इति संकर संपूर्णम् ॥ इति छ रागके पुत्र संपूर्णम् ॥

अथ नृत्य निर्णयके मतसो परजकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेंको । अवार नाम मुखसों गाईकें भैरवकी छाया युक्ति देखि। बांको परज नाम करिके भैरवको पुत्र दीनों ॥ अथ परजको स्व०॥ गोरो छंबो अंग है । कोमल मीठे नेत्र है । सब लोगनके उपगार करवे बारो है । जाकी भार्याके हाथमें ताल है । पिनाक बाजा यारागके हाथमें है । राति दिन जाको जाचना करे है । तिनको दृज्य देके मनोरथ पूरन करे है । राजानके अमवतां सामायमान है । ऐसी जो राग तांहि परज जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनसं गायो है । स रि ग म प ध नि स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । राबिके मथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिमें चाहो तंब गावो याकी आलांनियो सात सुरनसों किये राग वर्तेसो जंनसीं जांनिये ॥

सप्तमो रागाध्याय-भैरवको पुत्र परज, हिंडोलको सामंत कुंतले. १०३ अथ भैरवको पुत्र परज (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाध चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उत्तरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढ़ी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा तीन	ध	धेवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उत्तरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत उत्तरी, मात्रा दोय

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति भैरवको पुत्र परज संपूर्णम् ॥

अथ नृत्यनिर्णयके मतसों हिंडोलको पेहलो पुत्र सामंत ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । वामदेव नाम मुखसों गाईके हिंडोलकी छाया युक्ति देखि । वांको सामंत नाम हिंडोलरागको पुत्र दीनों ॥ सामंतको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है। रंगवीरंगे वस्त्र पहरे है । कमलके सें हात पांव है। काननमें कुंडल है। माथे मुकुट है। फूलनकी माला कंठमे है। ऐसो जो राग तांहि सामंत जांनिये। शास्त्रमें तो पांच सुरनसों गायो है। स रि म प नि । यातें ओढव है। याकों दुपहरमें गावनो यहतो याको बखत है। ओर दिनमें चाहो तब गावो। याकी आलाप चारी पांच सुरनमें किये राग वरते सों। जंत्रसों समझिये ॥

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलके पुत्र सामंत ओर निवण. १०५ हिंडोलको पेहलो पुत्र सामंत (ओहव)

प	पंचम असिल, मात्रा दीय	रि	रिषम चढी, मात्राःचीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असारि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषादं उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असालि, मात्रा एक

॥ इति हिंडोलको पेहलो पुत्र सामंत संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको दूसरो पुत्र त्रिवण ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों। वामदेव मुखसों त्रिवण गाईके वांको हिंडोलकी छायायुक्ति देखि हिंडोलको पुत्र दीनो॥ अथ त्रिवणको स्वरूप लिख्यते॥ गोरोजाकों रंग है। रंग विरंग वस्त्र पहरे है। कमलसरिखे जाके नेत्र है। कमलसे जाके हाथ पांव है। काननमें कुंडल है। माथेपें मुकुट है। फूलनकी माला गलमें है। सुंदर जाको रंग है। ऐसो जो राग तांहि त्रिवण जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यांते संपूर्ण है। याको दुपहरसमें गावनो। यहतो याको वस्तत है। और दिनमें चाहो तब गावों याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें सों। जंत्रसों समझिये॥

हिंडोलको दूसरो पुत्र त्रिवण (संपूर्ण)

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि म	रिषभ उतरी, मात्रा एक मध्यम चढी, मात्रा दोय	ग रि	गांधार चढी, मात्रा एक रिषम उतरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-हिंडोलको पुत्र स्यामराग, श्रीरागको पुत्र. १०७

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति हिंडोलको दूसरो पुत्र त्रिवण संपूर्णम् ॥

अथ हिंडोलको तीसरो पुत्र स्याम ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपने वामदेव मुखसों स्याम राग
गाईकें । वांको हिंडोलकी छाया युक्ति देखि हिंडोलको पुत्र दीनो ॥ अथ स्याम
रागको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांवर पहरे है । विचित्र कप
भेदानि करिकें मधुर सुरनसों गावे है । कसरिको तिलक भालमे है । ओर कामनीनके संग विहार करे है । मदसो छक्यो है । ऐसो जो राग तांहि स्याम जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांते
संपूर्ण है । याकों संध्यासमें गावनां । यहतो याकों बखत है । ओर रात्रिक
पथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरत सों जंत्रसों समझिये ॥ इति स्याम राग संपूर्णम् ॥ अथ याको जंत्र लिख्यते ॥

हिंडोलको तीसरो पुत्र स्याम राग (संपूर्ण)

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्राः एक
प	पंचम असाल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असारि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक -	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असाछि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धेवत चढी, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मामा एक
্ধ	धेवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्राः एक
म	मध्यम उर्त्तरी, मात्रा दोय	स	षड्जः असिछिः, मान्ना एक

॥ इति हिंडोलको पुत्र स्याम संपूर्णम् ॥:

अथ श्रीरागको पुत्र देवगांधार गुरादिणायके मतसों लिख्यते ॥ अथ देवगांधारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवका । ईशान नाम मुखसों गाईके श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । बांकी देवगांधार नाम करिके श्रीरागको पुत्र दीनो ॥ अथ देव गांधारको स्वरूप लिख्यते ॥ शरीर जाका चंद्रनसों चर्चित है। स्वेत वस्त पहरे है। ओर रतनके सिंहासनेंं बेठचो है। इंद्रादिक अस्तुति करे है। ओर परम रिसक है। संपूर्ण आभूषण पहरे है। हाथमें जाके कमछ है। ऐसो जो राग तांहि देवगांधार जांनिये। शास्त्रमें तो सात सरनतों गायो है। स रि ग म प ध नि स । याते संपूर्ण है। याको वस्तत है। ओर चाहो तक गावो। यहतो याको बस्तत है। ओर चाहो तक गावो। यहती आछाप चारी सप्त स्वरनमं किये राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये।।

श्रीतामको पुत्र देवगांधार (संप्रूर्ण)

ध	धैवत उत्तरी, मात्रा क्षेय	रि	रिषभः उत्तरी, मात्रा, एकः
प	पंचम असाछि, मात्रा एक	म	मध्यमः उत्तरीः, मात्रा एकः
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, माना एक
म	मध्यम उतरी, मान्ना एक	नि	निमादः उत्तरी, मात्रा एक
यः	गांधार उत्तरीः, मान्ना एक	भः	चेतन उत्तरीः, माताः एक

4	षड्ज असलि, मात्रा तीनः	ध	धेवत उत्तरी, मात्रा एक
नि	निसादः उत्तरी, मात्राः एकः	्प	पंचमः असल्धि, माह्या एकः
ः स्र-	षह्ज असिछ, मात्रा दोय	ध	धैदत उत्तरी, माना एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा दोय	ч.	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	" म	मध्यम उतरी, माजा, एक

प	पंचम असाछि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषादं उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		·

॥ इति श्रीरागको पुत्र देधगांधार संपूर्णम् ॥

अथ रागार्णवके मतसों देसाख रागकी रागनी कुडाई ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याको लौकिकमें सुधराई कहत है । पार्वतीजीनें उन रागनोंसों विभाग करिवेको अपन मुखसों कुडाई गाईके देसाखकी छाया युक्ति देखि । देसाख रागको कुडाई रागनी दीनी ॥ अथ कुडाई रागनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । सोलह वरषकी अवस्था है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । अरगजाको अंगराग लगाये है । मोतिनके गहना पहरे है । छलाटमें गहना पहरे है । जाके अलके छूटी रही है । अपनें समानरूप सखी जाके संग है । एक हाथमें वीणा बजावे है । ओर दूसरे हाथमें बीन बजावे है । मधुर मधुर सुरसों गावे है । अपनें मानीनाथसों मनावे है । ऐसी जो रागनी वाहि कुडाई जांनिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गाई है । ध नि स रि ग म प म । यातें संपूर्ण है । याकुं दिनके दूसरे पहरमें गावनी यह तो याको बखत है । और दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग बरतेसो जनसों जानीय ॥

सप्तमो रागाध्याय-देसालकी कुढाई ओर वसंतकी देवगिरी. १११ देसाल रागकी रागनी कुडाई (संपूर्ण.)

म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असारि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत असिल, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा तीन

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा तीन
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति देसाख रागकी रागनी कुडाई संपूर्णम् ॥

अथ सोमनाथके मतसों वसंतकी रागनी देवगिरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों वामदेव मुखसों देवगिरी रागनी गाईके वांको वसंतकी छाया युक्ति देखि वसंत रागको रागनी दीनी ॥ अथ देवगि-रीको स्वरूप लिख्यते ॥ सांवरो जाको रंग है । केसरिके रंगके वस्त पहरे है। चंदन केसिरको अंगराग लगाये है। ऊंचे कठोर जाके कुन है। मोतानके हार गलमे पहरे है। पानवीडा मुखमें चावे है। मतवारे चकोरतें नेत्र है। ओर सुठोत जाके अंग है। सखीनके संग विहार करे है। ऐसी जो रागनी तांहि देविगरी जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। सारि गम प ध नि सा। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गांचनी यहतो याको चखत है। और दुपारपहले चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों। जंत्रसों समझिये॥

देवगिरी रागनी (संपूर्ण)

`स	षड्ज अंसलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चंढी, मात्रा दीय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असंछि, मात्रा दोय
ध	धैवत चंढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	म	मध्यम असार्छ, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग गांधार चढी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक पंचम असीडि, मात्रा एक पंचम असीडि, मात्रा एक पंचम असीडि, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक पंचम असीडि, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-राग आनंदभैरवी ओर आनंदभैरव. ११६

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्राः एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति देविगरी रागिनी संपूर्णम् ॥

अथ आनंद्भैरवीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको ॥ अपनें मुखसों राग गाईके वांको आनंदभैरवी नाम कारिके कीनों । अथ आनंदभैरवीको स्वरूप लिख्यते ॥ भैरवीकी मेलेंग जाकी उत्पत्ति होई जाको ग्रहस्वर निषादमें होय गांधारमें उत्तर होय । ऐसी जो रागनी तांहि आनंदभैरवी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स । योतं संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो यह रागनी मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सो । जंत्रसों समिझये ॥ अथ याको जंत्र लिख्यते

आनंदभैरवी (संपूर्ण).

		THE RESERVE	The same says and the same says and the same says and the same says are says as the same says and the same says are says as the same says are says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says as the same says are says are says as the same says are says as the same says are says and the same says are says as the says are says as the same says are says as the says are says and the says are says as the says are says as the says are says as the says are says as the says are says as the says are says as the says are says and the says are says as the says are says as the says are says and the says are says are says as the says are says are says and the says are says are says
नि	निषादं उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उत्ही, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
a a		E .	24
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		•

॥ इति आनंदभैरवी संपूर्णम् ॥

अथ आनंदभैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन मार्गरागनमं विभाग करिवेकों अपने मुखसों राग गाईके वांको आनंदभैरव नाम कीनों ॥ अथ आनंदभैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें निषाद सूर उतन्यो होई। गांधारमें जाको महस्वर होई। बहुली गुजरीको जामें लखन होई। सो आनंदभैरव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सप्त स्वरनसों गायो है। गम प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको ममातसमें गावनों। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों। जंत-सों समिश्ये ॥

आनंद्रभैरव (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक .
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-गांधार, शुद्ध, शुद्धललित, वसंतमेरव. ११५

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

नि	निवाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धेवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	· स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति आनंदभैरव संपूर्णम् ॥

अथ गांधारभैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों राग गाईकें वांको गांधारभैरव नाम-कीनों ॥ अथ गांधारभैरवको लखन लिख्यते ॥ जामें देवगांधार मिले सो भैरव-गांधार जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । याकों मभात समें गावनों ॥ अथ शुद्ध भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेकों अपने सद्योजात नाम मुखसों गाईकें वांको शुद्ध भैरव नाम कीनों ॥ अथ शुद्ध भैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। स्वेत वस्त पहरे है । अंगमें भस्म लगाये है। तीन नेत्र है। माथंपे जटाजूट बांधे है। एक हाथमें त्रिशूल है। कंठमें शृंगको धारन करे है। कांननमें मुद्रिका पहरे है । चंद्रमा मुकुटमें है। बैल्पें चढो है। ऐसो जो राग तांहि शुद्ध भैरव जांनिय ॥ सास्त्रमें तो सात सुर-नसां गायो है। स रि ग म प ध नि स । यांते संपूर्ण है। यांकुं हेमंत ऋतुमें प्रभात समें गावनों ॥

अथ शुद्धलित भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन राग-नमेंसों विभाग करिवेको । अपनें सद्योजात नाम मुखसों गाईकें। शुद्ध भैरवकी छाया युक्ति देखि शुद्ध भैरवको पुत्र दीनों ॥ अथ शुद्धलित भैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। स्वेत वस्त्र पहरे हैं। बडो चतुर है। सुंदर जाके चतुर भालमें केसरिको वेदा है। ओर चंपाके मिलकांके फूलनकों मुकुट माथेंपे कमल पत्रसे जाके नेत्र है। विसाल युक्त है। बडो कामी है। वीडा जाके हाथपे है। दुसरे हाथसों कमल फिरावे है। पंडित स्त्रीनको मनावे है। ऐसो जो राग सो शुद्ध लिलतभैरव जांनिये॥ सास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याकों प्रभात समें गावनों। यह तो याको वस्त्र है।।

अथ वसंत भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसां विभाग करिवेको । अपने मुखसों वसंत संकीर्ण भैरव गाईकें वांको वसंत भैरव नाम कीनों ॥ अथ वसंत भैरवको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । लाल वस्त पहरे है । बडो जाको शब्द है । किन्नरजाकी अस्तुति करे है । नाना प्रकारके बाजे बजावे है । मदमें छक्यो है । बागमें विहार करे है । ओर जाकी शरीरकी सुगंधसों मोरा गुंजार करे है । मुखमें विडा चावे है । कमादेवके समान रूप है । ऐसो जो राग सो वसंत भैरव जानियें ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको हेमंत ऋतुमें प्रभात समें गावनों ।

सप्तमो रागाध्याय-स्वर्णाकर्षण, पंचम ओर मेघगांधारी. ११७ ओर चाहो तब गावों । याकी आछापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों जंत्रसों समझिये ॥ अथ जंत्र छिख्यते ॥

वसंत भैरव (संपूर्ण).

स	षडज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असारि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	भ	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद असिल, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज़ असाछि, मात्रा एक .

॥ इति वसंत भैरव संपूर्णम् ॥

अथ स्वर्णाकर्षण भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ श्रीशिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । राग गाईके वांको स्वर्णाकर्षण नाम कीनें। ॥ अथ स्वर्णाकर्षण भैरवको छछन लिख्यते ॥ जाभैरवमें गांधार स्वर नहीं होई ओर रिषम पंचम होय । सो भैरव स्वर्णाकर्षण भैरव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। ध नि स रि म प ध । यातें षाडव है । याको प्रभात समें गावनों ॥

अथ पंचम भैरवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सां विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाई वांको पंचमभैरव नाम कीनों ॥ अथ पंचमभैरवको छछन लिख्यते ॥ जामें पंचमराग मिले सो भैरव पंचमभैरव जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प। यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्या नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत लिज्यो । इति पंचमभैरवकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥

अथ सोमनाथके मतसों मेघरागकी पांचवी रागनी गांधारी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गाईके मेघरागकी छाया युक्ति देखि । वांको गांधारी नाम करिके मेघरागको रागनी दीनी ॥ अथ गांधारीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । पीतांबरको पहरे है । बडे नेत्र है । केसर चंदनको अंगराग लगाये है । ओर मोतिनके हार गलामें पहरे है । एक हाथसों वीणा बजावे है । मधुर सुरनसों गांन करे है । सोनेके आभूषन पहरे है । सखी जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि गांधारी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है । रिध निप म ग रिस । यांत संपूर्ण है । याकुं दिनके मथम पहरमें गावनी । यह तो याको वखत है । ओर दुपरमें चाहो तब गावो ॥ इति गांधारी संपूर्णम् ॥

अथ श्री मिकी तीसरी रागनी पहाडी ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥

सप्तमो रागाध्याय-पहाडी, शुद्धकामोद ओर सामंत. ११९

शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपने तत्पुरष नाम मुखसों पहाडी गाईके । वांको श्रीरागकी छाया युक्ति देखि । श्रीरागको रागनी दीनी ॥ अथ स्व० ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । तरुण जाकी अवस्था है । मदमें छिकि है । मतवारे हाथीकीसी चाछ है । शृंगार रसमें मग्न है । तरुण जनके मनको आनंद उपजावे है । कमछपत्रसे नेत्र है । पतिके संतापको हरे है । मंद मुसिकानि करे है । चंद्रमासो जाको मुख है । अरु गीत नृत्यमें आसक्त है । ऐसी जो रागनी तांहि पहाडी जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाई है । स रि म प ध नि स । यातें षाडव है । याको संध्यासमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । यह राग मंगठीक है । यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरती छिज्यो ॥ इति पहाडी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धकामोदकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं अरु पार्वतीजीनं जे राग उत्पन्न कीये । तिनमं अधिक रसकेतांई संकीणं करिके लोकमं गावे है । तहां प्रथम संकीणं , कामोदनमं शुद्धकामोद लिखे है ॥ अथ शुद्धकामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । कामदेवसों सुंदर है । एक हातसों स्वेत कमल फिरावे है । कस्तूरीको तिलक जाके भालमं है । जडाऊ मुकुट जाके सीसपे है । काननमं कुंडल पहरे है । हाथनमं जाके जडाऊ कडा है । मुलसों पान चवावे है । अनेक सुंदर स्त्री जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि शुद्धकामोद जांनिये ॥ शास्त्रमं तो यह सात सुरनसों गाई है । म ग रि म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

शुद्धकामोद (संपूर्ण).

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	घ	धैवत चढी, मात्रा दोय

प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	नि	निषाध चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षडज असलि, मात्रा एक

॥ इति शुद्धकामोद संपूर्णम् ॥

अथ दुसरो सामंतकामोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेसों विभाग करिवेको अपने मुखसों केदार राग संकीर्ण कामोद गाईके वांको सामंतकामोद नाम कीनो ॥ अथ सामंतकामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। स्वेत धोती उपरना पहरे है। बांये हाथमें सुपेद कमल है। दाहिने हाथमें दंड कमंडलु है। मनमें शिवजीको ध्यान करे है। लखाटमें कस्तूरीको विंदा है। खाल कमलसे जाके नेत्र है। माथेपें फूलनको मुकुट है। कंठमें गज मोतीनकी माला पहरे है। ऐसो जो राग तांहि सामंतकामोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है। गम पिन सिर ग। योते षाडव है ॥ याको अर्धरात्रमें गावनों यह तो याको वखत है ॥ ओर रात्रिके तिसरे पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते सों जंत्रसों समझिये॥

॥ इति सामंत संपूर्णम् ॥

॥ अथ सामंतकामोदको जंत्र लिख्यते ॥

ंस	बड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ч	(पंचम: असिडि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय

सप्तमो रागाध्याय-तिलककामोद ओर कल्याणकामोद. १२१

प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सामंतकामोदको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ तिसरो तिलककामोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको अपने मुखसों पट्राग संकीर्ण कामोद राग गा- ईके । वांको तिलककामोद नाम कीनों ॥ अथ तिलककामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगिवरंगे वस्त्र पहरे है । केसिर चंदनको अंगराग किये है । कस्तूरीको विंदा जाको लिलाटमें है । मुकुट जाके मांथेंपे है । मोतीनकी माला जाके गरेमें है । कामनीनके संग वनमें विहार करे है । ओर उदार है । जाके हाथमें बेतकी छड़ी है । ऐसो जो राग तांहि तिलककामोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाया है । प नि स रि ग म प । यांते पाडव है । याको रात्रिके प्रथम पहरमें गावनो यह तो याको वस्तत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो याकी आलापचारी छह सुरनमें कियें राग वरें । सो जंत्र सों समझिये ॥

तीसरो तिलककामोद (षाडव).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाध चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असिछ, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषाध चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

्प	पंचम असाटी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति तीसरो तिलककामोद संपूर्णम् ॥

अथ चोथो कल्याणकामोद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें तो विभाग करिवेकों । अपने मुखसों कल्याण राग संकीर्ण कामोद गाईके । वांको कल्याणकामोद नाम कीनों ॥ अय कल्याणकामोदको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । हाथमें जाके पानका वीडा है । हीरानके जडाऊ सिंहासनेंपें वेठचो है । स्वेत वस्त पहरे है । हाथनेंपें जडाऊ कडा है । माथेंपें फूलको मुकुट है । गरेमें फूलनकी माला है । हाथमें वेतकी छडी है । केसरिको अंगराग कीये है । सोनके आभूषण पहरे है । सी जाके संग है । आनंदमें यह है । ऐसो जो राग तांहि कल्याणकामोद जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सह स्वरनसों गायो है । ग म प ध नि स रि ग । यांतें संपूर्ण है । याको रात्रिके प्रथम पहरेंसे गावनों । यह तो याको बखत है । ओर रात्रिमें चाहो तब गावो । याकी वाला सार स्वरनमें किये राग वरतें सों जंत्रसों समझिये ॥

कल्याणकामोद (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
q .	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असाछि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
प	पंचम असंस्रि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		•

॥ इति कल्याणकामोद संपूर्णम् ॥

अथ अडानाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनेमंसी वि-भाग करिवको । अपने मुखसों महारराग संकीरन कान्हडो गाईके वांको अडानो नाम कीनो ॥ अथ अडानाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीरे वस पहरे है । ये रागकी सीकनी जाकी दांतनकी पांकि है । हाथममें जडाऊ कडा है । मोतीनके हार जाके गलेमें है । मणिनके जडाऊ कुंडल काननमें पहरे है । अनेक पकार सुगंध फूल धारन करे है। चंदनको अंगराग किये है। बीडा मुखर्म खाय है। ताके पीक कंठमें झलके है। सोनेके आभूषण पहरे है। मुकुट माथेपें है। ऐसी जो राग तांहि अडाना जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है॥ नि ध प म ग रि स ग रि॥ यांतें संपूर्ण है॥ याको रातिके दूसरे पहरमें गावनो। यह तो याको वखत है। ओर रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते॥ सो जंत्रसों समझिये॥

अथ अडाना (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

4	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	Ħ,	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्री, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति अडाना संपूर्णम् ॥

अथ सहानाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करिवंको । अपने मुखसों फिरोदस्त संकीर्ण कान्हरो गाईके । वांको सहानो नाम किनों ॥ अथ सहानाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । रंगिष-रंगे वस्त पहरे है । कमलपत्रसे जाके नेत्र है । अंतरके सोभीजे जाके केंस है । कंठमें रत्नकी माला है । ललाटमें केसरिको तिलक है । सिंहासनपें बेठो है । मुकुट जाके माथेपें है । काननमें कुंडल है । हाथनमें कडा है । छत्र जाके उपर फिरे है । दोऊ वोर चवर ढुले है । मित्रनके संग संभवतो है । ऐसो जो राग तांहि सहानो जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि नि ध प म ग रि स । यांते संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको वस्तत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसो समझिये ॥

अथ सहाना (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा तीन
स	षड्ज असिलें, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	١	पंचम असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद् उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असछि, मात्रा एक

म :	मध्यम असस्रि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
वि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ष	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति सहना संपूर्णम् ॥

अथ तंभावतीकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन मार्गरामनमें निभाग करिवेको । अपनें मुख्यों सुद्ध मालसरी संकीर्ण महार गाईके । वांको बंम्मवती नाम किनों ॥ अथ तंभावतीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । मन जाको परचय है । कंटमें माला है । चंदनको अंग-सम किये है । फूलनको गहना पहरे है । मृगकेसे नेत्र है । सुंदर जाको शरीर है । मुद्द पियसाँ हाथिक नचन कहे है । सालिनके संग बनमें विहार करे है । अह मोरनको नवावे है । ऐसो जो राग तांहि तंभावती कहिये । शास्त्रमेंतो साव सुरनसाँ गायो है । घ नि स रि ग म प ध । याते संपूर्ण है । रातिके क्सरी पहरमें गावनों । यह तो याको वस्तत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

अथ तंभावती (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
घ	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा तीन
प	पंचम असछि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति तंभावती संपूर्णम् ॥

अथ खटरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिक्जीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों आसावरी टोडी स्याम बहुल गुजरी संकीर्ण देवगांधार गाइंके । वांको खट नाम किनों ॥ अथ खटरागको स्वरूप लिख्यते ॥ कोरो जाको रंग है । रंग बिरंगे वस्त पहरे हैं। चंदनको अंगराग किये है । ओर माथेमें मुकुट है । इहडहे फूलनकी माला कंटमें है । रंतिसुखमें मग्न है । स्वी जाके संग है । कामदेव कलानें मम है। ओर सोलह बरसकी जाकी अवस्था है। ऐसो जो राग तांहि खटराग जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। गप मप धनि स रिगमप। यातें संपूर्ण है। याकों प्रभातसमें गावनों। यह तो याको बखत है। ओर दोय पहर तांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते सों। जंत्रसों समझिये॥

खटराग (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
्प	पंचम असारी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असस्ति, मात्रा एक

म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति खटराग संपूर्णम् ॥

अथ कुंभावरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों वि-भाग करिवेको । अपनें मुखसों सोरठ संकीणं मालश्री गाईके वांको कुंभावरी नाम कीनो ॥ अथ कुंभावरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। लाल वस्त्र पहरे है । ऊने कठोर जाके कुन है । मोतीनके हार जाक हदयेमें सोभायमान है । काननमें नीलकमल पहरे है । तांसो च्यारु ओर भुंगा गुंजार करे है । जाके दरसन कीयेतें कामदेव उपजे है । हाथसों लालकमल फिरावे है । ओर नाजूक जाको शरीर है । आमके रूखके नीचे बठी है । मंद्र मुसिकानि करे है । सखी जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि कुंभावरी जांनिये । शास्त्रमें तो छह सुरनसों गाई है । स रि ग म प नि स । यांतें पाडव है । याको संध्यासमें गावनी । यह तो याको बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुर-नमें कीये राग वरतेसों जंत्रसों समिक्सये ॥

कुंभावरी रागनी (पाडव).

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असस्रि, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोम	रि	रिवम चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षडज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा तीन	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति कुंभावरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ सरस्वतीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों नटनारायण संकराभरण संकीणंसुद्धजेतश्री गाईके । वांको सरस्वती नाम कीनों ॥ अथ सरस्वतीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है। पीतांवरको पहरे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । जाकी सुंदर कांति है। बडी द्यावान है । नवीन स्त्रीनमें विहार करे है । मोरनसों कीडा करे है । केसरिचंदन कस्तूरीको अंगराग लगाये है । फूलेकमलकी माला पहरे है । शृंगारमें मग्न है । नृत्यगीतमें मगन है । काननमें कमलकी कली पहरे है । केसरिको तिलक ललाटमें है । आंखनमें काजर आंजे है । हाथमें चूडी पहरे है । कस्तुमल जाकी चोली है । नाकमें वसरी पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि सरस्वती जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प घ नि स ।

सप्तमो रागाध्याय-वडहंस ओर वायुर्जीका वा पूर्याकल्याण. १३१ यांतें संपर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह तो याको बखत है। आर रातिके चाहो तब गावो॥ इति सरस्वती संपूर्णम्॥

अथ वडहंसराग ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों देविगरी गौरीमालव संकीर्णपूरिया धनासरी गाईके वांको वडहंस नाम कीनों ॥ अथ वडहंसको स्वरूप लिख्यते॥स्याम जाको रंग है।पीतांबर पहरे है।माथेपं मुकुट है। काननमं कुंडल पहरे है।आंमको मौर काननमं धरे है। सोनेके आभूषण अंगनमंपहरे है। च्यार भूजा है।जाकी सोलह बरसकी अवस्था है। सोनेस मींजेजा सुंदर जाके केंस है। कमलकोसों मुख है। कमलपत्रसे नेत्र है। कमलनकी माला पहरे है। चवर जाके किरे है। वस्तको धारन करे है। जाके आगे गंधर्व गान करे है। ऐसो जो राग तांहि वडहंस जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनमं गायो है। स रि म प ध नि स । यांते पाडव है। याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों। यह तो याको बखत है। ओर दिनमं चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये॥

वडहंसराग (षाडव).

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
4	पंचम असिल, मात्रा तीन	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असछि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प .	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा दीय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असिंछ, मात्रा दोय
ध	घैबत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असाछि, मात्रा एक	स	षड्ज असंछि, मात्रा दोय

॥ इति वडहंसराग संपूर्णम् ॥

अथ वायुर्जीकाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ याहीको लोकिकमें पूरिया कल्याण वा मेनाष्टक कहे हैं। शिवजीनें उन रागमेंसीं विभाग करिवेको अपनें मुखसों धवलसंकीर्ण कान्हडा गाईके। वांको वायूर्जिका नाम कीनों ॥ अथ वायू-जिंकाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरा जाको रंग है। रंगविरंगे वस्न पहरे हैं। चंदन केसरिको अंगराग लगाये हैं। सुंदर चोली पहरे हैं। मृगकेसे बडे जाके नेत्र है। शृंगार रसमें मम्र है। हाथनमें कंकण है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे हैं। तरुण अवस्था है हासीके वचन कहे है। सखीनकी समामें बैठी है। माथेपें छत्र है। ओर पास जाके चवर डुले हैं। सब अंगनमें आमूषण पहरे हैं। ऐसी जो रागनी ताहि वायूर्जिका जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सम स्वरनसों गाई है। स रि गम प ध नि स। यातें सपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर आधि रात पहले चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरममें किये राग वरतेंसों जंत्रसों समझिये॥

वायुर्जिका अथवा पूर्याकल्याण रागनी (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मोत्रा एक	ग	गांधार असंलि, मात्रा एक
प	पैचम असस्रि, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	ग	गांधार असंछि, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-वायुर्जिका वा पूर्याकल्याण ओर लंकदहन. १३६

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम उत्तरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार असलि, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार असलि, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिंह, मात्रा एक

n इति नायुष्टिद्य अथवा पूर्याकल्याण रागनी संपूर्णम् ॥

अथ लंकदहनकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमेंसीं
विमाग करिवेको । अपनें मुखसों क्विपरी केदारो संकीर्णगारो गाईके । वांको
छंकदहन नाम कीनों ।। अथ लंकदहनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग
है । स्वेत बस्न पहरे है । हाथसों कमल फिरावे है । बडे जाके नेन है । बडे
जाके केश है । रितकलामें पवीण है । कोमल जाको अंग है । सब अंगपे सोनेके आमूषण पहरे है । दूसरे हाथमें छडी है । मनमें शिवकी ध्यान करे है ।
मिननकरिके युक्त है । ऐसी जो राग तांहि लंकदहन जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह
सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याकों संध्या-

संभें गावनों । यह तो याको वखत है । आर रातिमें चाहो तब गावा । याकी आछापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥ लंकदहन राग (संपूर्ण).

	अभवेश राज (याच्य).			
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असाछि, मात्रा एक	
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी; मात्रा एक	
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	
रि	रिषभ चढी, मात्रा चार	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	

॥ इति छंकदहन संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-पासवती, वागीश्वरी ओर लीलावती. १३५

अथ पासवतीकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करिवेको अपने मुखसों देविगरी गौड पौरवी गुजरी संकीर्ण पौरवीके आधे स्वर गाईके। वांको पासवती नाम कीनों॥ अथ पासवतीको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है। रंगिवरंगे वस्त पहरे है। ओर रंगिवरंगी चोली पहरे है। कोमल जाको अंग है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। मधुर वचन कहे है। बडी चतुर है। हाथमें हाथीदांतके चूडा पहरे है। पावनमें नूपर पहरे है। नाकमें जाडाउ फूलदार वेसरी पहरे है। लाल जाके होट है। वनमें विहार करे है। फूलनकी मालामुं जाकी चोटी गूही है। मोरनके संग कीडा करे है। वनचरनकी स्त्री जाके ओर पास है। ऐसी जो रागनी तांहि पासवती जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है। स रि गम प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको प्रभातसमें गावनी। यह तो याको बखत है। दुपहरतांई चाहो तब गावो॥

अथ वागीश्वरी रागनी कान्हडाको भेद ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥
शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको अपनें मुखसों धनासिरी संकीणं कान्हडो गाईके । वांको वागीश्वरी नाम कीनों ॥ अथ वागीश्वरीको स्वरूप लिख्यते ॥ सांवरो जाको रंग है। रंगिवरंगे वस्त पहरे है। चंदनको अंगराग लगाये है। अनारको फूल जाके हाथमें है। जाके हिराके कनी सं दांत है। जाके हाथनें जडाउ कडा है। गरेमं मोतीनको हार है। माथेपं मुकुट है। मणीनके कुंडल पहरे है। अनेक भांति फूलनकी माला पहरे है। नृत्य रागसों पसन्त है। शृंगार रसमें मम्न है। ऐसी जो रागनी तांहि वागीश्वरी जांनिये॥ शास्त्रमें तो सात सुरनमें गाई है। निध पम गिरिस सारिग मिपि पित्रमें मानिये। याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये राग वरतेसो जंत्र सों समझिये॥

वागीश्वरी रागनी (संपूर्ण).

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांबार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असस्ति, माना एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिंछ, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवन चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
নি	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति वागीश्वरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ लीलावतींकी उत्पत्ति लिरूयते ॥ शिवजीने उन रागनमंसीं विभाग करिवेको । अपने मुलसों जैतश्री छलित संकीर्ण देशकार गाईकें । बांको लीलावती नाम कीनों ॥ अथ लीलावतीको स्वरूप लिख्यते ॥ लाल जाको रंग है। कमलपत्रक्षे जाके नेत्र है। मात हातीकीसी चाल है। इंद जाको मित्र है। रंगिकरंगे वक्ष पहरे है। मोतीनकी माला गरेमं है। हाथमें कमल है। शुंगार रसमें

मस है। सोला वरसकी अवस्था है। अपने समान सखीन करिके युक्त है। फूछमाला-सूं गुथी जाकी वेनी है । मंद मुसकान करे है । ऐसी जो रागनी तांहिं छीला-वती जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प श्र नि स । यातें संपूर्ण है । याकों दिनके चोथे पहरमें गावनी याहितो याको वस्तत है । भार दिनमें चाहो तब गावा । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रामनी वरते। सो जत्र सों समझिये॥ अथ जंत्र लिख्यते॥

लीलावती (संपर्ण)

		-	
म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	િ ર	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोष
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक		, , , , , ,

अथ नटनारायणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीको तांडव नृत्य संपूर्ण भयो तब पार्वतीजीके मुखतें ॥ विष्णुकी पियकी अरथ नटनारायण भयो विष्णु दैत्यनसों युद्ध करिके थिकगये है । सो उनके खेद दूरि करिवेके लिये यह रागनी विश्रामरूप है । वांको श्रवनकरि विष्णु मगनभयो ॥ अथ नटनाराय-णको स्वरूप लिख्यते ॥ विष्णुरूप है स्याम सुंदर देह है । पीतांबर पहरे है । नट-वरभेष है । मोरमुकुटको धारण करे है । काननमें मकराकृत कुंडल है । कीस्तुभ-मणी पहरे है । केसरिचंदनसों चिंत जाको अंग है । वनमाला पहरे है । गोप ग्वाल जिनके संगि है । ऐसो जा राग तांहि नटनारायण जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गायो है । म प ध ग रि स । यांते पाडव है । याको वर्षासमें गावनों । यह तो याको वखत है । दिनके तीसरे पहरेमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें कीये राग वरेतेसों जंत्रसों समझिये ॥

नटनारायण (षाडव).

प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असाछि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा च्यार

॥ इति नटनारायण संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी रागनीनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीके मुखसों उत्पन्न होईके । नटनारायणनें पार्वतीजीसों विज्ञप्ती कीनी महाराज में कों रागनी दीजे तब । शिवजीकी आज्ञा लेकरिके पार्वतीजीनें । अपने मुखसों पांच रागनी गाईके । नटनारायणकी छाया युक्ति देखि नटनारायणको दीनी ॥ तहां

प्रथम नटनारायणकी रागनी वेलावली ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों वलावली गाईके । वांको नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । नटनारायणको दीनी ॥ अथ वेला-वलीको स्वरूप लिख्यते ॥ गारा जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । विचित्र रंगकी कंचुकी पहरे है । सुवर्णके आभूषण सब अंगनमें पहरे है । कस्तूरीको विंदा जाके भालमें है । कमलकी माला जाके कंटमें है । मृदंगको बजावे है । सखीनके संग मधुर सुरनसों गावे है । ऐसी जो रागनी तांहि वलावली जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गाई है । य नि स रि ग म ग ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनी । यह तो याको वखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो याको जंत्र हनुमान मतमें हिंडोल रागकी रागनी प्रथम विलावली तांकें जंत्रसों आलापकीज्यो ॥ इति वेलावली संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी दूसरी रागनी कांबाजी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमंसों कांबोजी विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों गाईके याको नटनारायणकी छायायुक्ति देखि । वांको कांबोजी नाम करिकें नटनारायणको रागनी दीनी ॥ अथ कांबोजीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । केसरिया वस्त्र पहरे है । मोहनो स्वरूप है । बडे जाके नेत्र है । मुखमें पानके विडा चवावे है । छछाटमें कस्तूरीको विंदा है । सोनेके जडाऊ गहना सब अंगनमं पहरे है । करनाट देसमें अरु आंध्र देसमें भई है । सखी जाके संग है । सारंगी बजावे है । ऐसी जो रागनी तांहि कांबोजी जांनिये ॥ शास्त्रमं तो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यांते संपूर्ण है । याको दिनके मथम पहरमें गावनी यह तो याकी वस्त्रत है । ओर दिनमें चाहो तब गावों ॥ इति कांबोजी संपूर्णम् ॥

अथ नद्नारायण्की तिसरी रागनी सांवेरी ताकी उत्पत्ति

गिंदी पार्वतीजीनं उन रागनमें से विभाग करिवेकों। अपने मुखसों सांवेरी रागनी गाईके वांकों सांवेरी नाम करिके नटनारायणकी छाया युक्ति देखि। नटनारायणकी विभाग करिके नटनारायणकी छाया युक्ति देखि। नटनारायणकी विभाग करिके सिक्ता स्वरूप छि०॥ स्यामजाको वर्ण है। सोसनी वस्त्र पहरे है। पिंछी जाकी चोली है। चंद्रमासो मुख है। नाजूक अंग है। मृगके से जाके नेव है। चिद्रा जाके भालमें है। मोतीनके हार कंठमें पहरे है। सोलेह पकारके शृंगार किये है। मतवारे हांधीकीसी चाल है। मंद मुसकान करे है। ऐसी जो रागनी तांहि सांवेरी जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाई है। ध ग ध रि ध स रि ग म प ध। यातें वाडव है। याको सांजसमें गावनी यहतो याको वखत है। ओर चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये। राग वरतें सों जंवतें।

सांवेशी रागनी (पाडव).

ध	धेवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
'स	षड्न असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज अस्रात्रि, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

(3 4 =	मांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
्रिर	रिक्मः चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
! #	षड्जः चडी ; मात्राः दोय	म	मध्यमः उत्तरी, मात्रा दो य
ुध.	धेनत चढी, मात्रा एक	प	पंजम असलि, मात्रा तीन

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	सं	षड्ज असिछे, मात्रा एक
म	मध्यम अससि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिस, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषम चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिट, मात्रा दोय

॥ इति सांवेशी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी चोथी रागनी सहवी ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीने उन रागनमें सो विभाग करिवेको । अपने मुखसों सहवी गाईके । वांको नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । नटनारायणको दीनी ॥ अथ सहवीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्थाम जाको रंग है । पीतांबरको पहरे है । नाजुक जाको शरीर है । ओर अमृतकी सीनाई आनंदकारी है । फूले कमलसें जाके मुख है । वहण जाकी अवस्था है । ओर सुगंधके फूलनसों गुही जाकी वेनी है । रंगविरंगी चोली पहरे है । मंदमुसकान करे है । शृंगार रसमें मग्न है । चवर जाके उपर ढुरे है । बडे जाक नेत्र है । ऐसी जो रागनी तांहि सुहवी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रिगम प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समिशिये ॥

सहवी रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
भ	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा तीन
ग.	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद् उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असालि, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	₹.	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सुहवी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकी पांचई रागनी सोरठ ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों सोरठ

सप्तमो रागाध्याय-नटरागकी पांचई रागनी सोरठ. १४३

गाईके नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । वांको नटनारायणको दीनी ॥ अथ सोरठको स्वरूप छिल्यते ॥ गोरो अंग है । कमलसों विसाल नेत्र है । चंद्रमासी मुख है । दाडिमके बीजसिरके दांत है । अनेक रंगकी पोषाग पहरे है । कठोर कुच है । आसमानी रंगकी चोली पहरे है । सुछंद विहार करे है । कामदेवसों व्याकुल है । शृंगार रसमें मग्न है । ऐसी जो रागनी तांहि सो-रठ जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुरनसों गाई है । स रि म प ध नि स । यातें पाढव है । याको आधिरातिसमें गावनी । यह तो याको चखत है । रा-तिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

सोरठ रागनी (पाडव).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असारि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
-	1719 1019 11 11 11		
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
R	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
'म,	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	स	षड्ज असंति, मात्रा एक
म	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाई उतरी, मात्रा एक
-ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति सोरठ संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणके शुद्धनाटादि जे प्रत्र है तिनकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागमेंसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसों गाईके सुद्धको दिक रागनसों संकीर्ण नट गाईके । उन संकीर्णनके सुद्धनाटादि नामकरिके । नरनारायणको पुत्र दीनो । तहां नरनारायणको मथम पुत्र शुद्धनार ताकी उत्पत्ति लि-रूपते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों सुद्धराग सं-कीर्णनट गाईके । वांको शुख्नाट नाम करिके । नष्टनारायणको दीने ॥ अथ शु-द्यनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ शिवजीके ईशान मुखसों जाकी उत्पत्ति है । महा धीर है। ठाछ जाको रंग है । कमलसे जाके नेत्र है । स्वेत वस्त्र पहरे है । हाथमें खड़ग है। बड़ो जाको मताप है। हास्ययुक्त सुंदर आक्रे कवन है। गंभीर नाद है। रागमार्गमें विहार करे हैं। घोडापे चढ़को है। सोभायमान है। ऐसा जो राग ताहि शुद्धनाट जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें नायो है । स रिगम १ ध नि स । यनतें संपूर्ण है । याको शर्दकतुमें संध्यासमये गावनों । यह तो बाको बस्तत है । ओर ऋतुमें संध्यासमें चाही तब मावी यह राग मं-गतीक है। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये। राग बरतेसी । जंत्रसी समझिये॥

सप्तमी रागाध्याय-नटरागको पुत्र शुद्धनाट ओर हमीरनाट. १४५ नटनारायणको प्रथम पुत्र शुद्धनाट (पाडव).

ग	गांधार चढी, मात्रा देःय	प	पंचम असिट, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दाय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढीं, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ારે	रिषभ चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम असलि, मात्रा दाय	प	पंचम असिट, मात्रा एक

स	षड्ज असिंह, मात्रा दाय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम असिल, मात्रा दोय	म	षड्ज असिछ, मात्रा दोय

॥ इति नटनारायणको प्रथमपुत्र शुद्धनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनार(यणको दूसरो पुत्र हमीरनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनेंपेंसों विभाग करिवेको । ईशाननाम मुखसों हमीरराग संकीर्ण राग गाईके । वांको हमीरनाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनों॥ अथ हमीरनाटको स्वरूप लिख्यते॥ शृंगार रसमें मग्न जाको चित्र है। शरीर हू शृंगार पुक्त है। गोरो जाको रंग है। मंद मुतकान युक जाको मुख है। तांबूलकी निर्द्रीसों होउ जाको लाल है। हाथमें दंडी और दंड लिये है। तरुण कामदेवकों नित्र है। लाल वस्त्र है। यडो पतापी है। कांमनीनकें मनको वस करे है। ऐसी जो राग तांहि हनीरन ट जांनिये॥ शास्त्रमेंनी सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यों संपूर्ण है। रानिके पथम पहरमें गावनों। यहतो याको वस्त्रत है। रानिमें चाहा तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसें। समझिये॥

नटनारायणको दूरि। पुत्रै हमीरनाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, यात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, मात्रा एक
म	मध्यम असिल, मात्रा दीय	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
प	पंचम अप्ताली, मात्रा दीय	प	पंचम असिल, मात्रा एक
नि	निषाइ चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

॥ इति नटरागको दूसरी पुत्र हभीरनाट संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-नटरागको पुत्र सालंगनाट, छायानाट. १४७

अथ नटनारायणको तीसरो पुत्र सालंगनाट ताकी उत्पासि लिख्यते।। शिवजीनें वांकी रागनीनमेसों विभाग करिवेको। ईशाननाम मुख सो सारंग राग संकीर्ण नट गाईके। वांका सालंगनाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनो। अथ सालंगनाटको स्वरूप िख्यते॥ गोरो जाको रंग है। तरुण जाकी अवस्था है। ओर हाथमे वज्र लिये है। कांमदेवसो मित्र है। मोतीनकी मा गलेमें है। सुंदर वस्त्र है। स्विनके संगमें विराजे है। एसो राग तांहि सालंगनाट जांनिये। शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। म प घ नि स रि ग म। यों संपूर्ण है। रातिके पथम पहरमें गावनों। यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आला ग्वारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों। अंकसों समझिये॥

अथ सालंगनाटको जंत्र (संपूर्ग).

स	षड्ज असंहि, मात्रा एक	घ	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज अप्तिः, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज अस्ति, मात्रा दोय

रि	रिषभ चढी, मात्र∵ एक	प	पंचम असाटि, मात्रा दोय
स	षड्ज असिछ, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असाछि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति नटनारायणको तीसरो पुत्र सालंगनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको चाथो पुत्र छायानाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें वांकी रागनमें सें विभाग करियेको । ईशान नाम पु-खसों छाया संकीर्णनट गाईके । वांको छायानाट नाम करिके । नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ छायानाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गारो रंग है । छाल जाके नेत्र है । कंटमें मोतीनको हार है । स्वेत वस्त्र गुलाबीपाध पहरे है । सुंद्र वस्त्र है । हाथमें फूलछडी ले है । ऐसी जो राग तांहि छायानाट जांनिये ॥ शास्त्रमें-तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिक प्रथम पहरेमें । चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये॥

अथ छायानाट जंत्र (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	धड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	स	षड्ज असिट, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा चार

॥ इति छायानाटको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको पांचवो पुत्र कामादनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यंत ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेका । ईशाननाम मुखसों गाईके। वांको कामोद नाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनो ॥ अथ कामोद-नाटको स्वरूप लिख्यंत ॥ सोनेका सो रंग है। पितांबर पहरे है। सुंदर घोडेंपें असवार है। महावीर है। ओर गुलाल जाके लग्यों है। रंगविरंगे वस्त्र पहरे है। विचित्र गहना पहरे है। ओर जाका बड़ा प्रताप है। गुमानसो भरचों है। ऐसो जो राग तांहि कामोदनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। याके आरोहमें गांधार तीव्र जांनिये ॥ आवरोहमें गांधार धवत लीजे नही। धि सि सि र ग म प प धि न से। याको रातिक प्रथम पहरमें गावनों। यह तो याको वस्तत है। कोऊक याको दिनके दूसरे पहरमें गात है। याकी आलापचारी सात सुरनमें कियें राग वरतेसों। जंत्रसों समिश्चिये ॥

अथ कामोदनाटको जंत्र (संपूर्ण).

स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा दोय
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढ़ी, मात्रा दोय

নি	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

ध	घेवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा चार
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति कामोदनाटको जंत्र संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको छटो पुत्र केदारनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें वांकी रागनेमेंसां विभाग करिवेको । ईशाननाम मुखसो केदार राग संकीर्ण नट गाईके। वांको केदारनाट नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनो ॥ अथ केदार नाटको स्वरूप लिख्यते॥ पीत रंग है। चंद्रमासो मुख है। बांये हाथमें तिशूल है। दाहिनें हाथमें दंड है। स्वेत वस्त्र पहरे है। ओर मोतीनकी माला जाके कंठमे हैं। कमलपत्रसे नेत्र है। वैरीनको संघार कर है। वीररसमें मग्न है। और सूर्यकेसो जाको तेज है। ऐसो जो राग तांहि केदार नाट जांनिये॥ शास्त्रमंता यह छह सुरनसों गायो है॥ गम पध निस॥ यातें षाडव है। रातिके दूसरे पहरमे गावनों यहनो याको बखत है। कोऊक रातिके मथम पहरमें गांव है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसो समझिये॥

केदारनाटको जंत्र लिख्यते (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिंछ, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा चार
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति केदारनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको सातवो पुत्र मघनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते।।
शिवजीनें उन नाटनेंमंसो विभाग करिवेको ईशाननाम मुखसो मेघराग संकीर्ण नट गाईके। वांको मघनाट नाम करिके नटनारायणको दीनो।। अथ मघनाटको स्वरूप लिख्यते॥ स्थाम स्वरूप है। पीतांबरको पहरे है। ओर सोनेके आभरण पहरे है। केसरि चंदन घिस शरीरसों लगावे है। ओर हाथमें जाके खड्ग है। ओर घोडापे असवारी है। मघनादसों बैरीनसों भय उपजावे है। ऐसो जो राग तांहि मघनाट जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सप्त स्वरनसों गायो है। ध नि स रि ग म प ध नि स। योतं संपूर्ण है। दीनके चोथे पहरमें गावनों। यह तो याको बखत है। वर्षाऋतुमें मुख है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समिसये॥

मेघनाटजंत्र (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक .
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिट, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिंह, मात्रा दोय

॥ इति मेघनाट संपूर्णम्

अथ नटनारायणको आठनो पुत्र गौडनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनेमंसों विभाग करिनेको । ईशान नाम मुलसों । गौडनाट संकीर्णनट गाईके । वांको गौडनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ गौडनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ लालवर्ण है । केसिरिया वस्त्र पहरे है । सोनेके बखतर पहरे है । जाके कंठमें गज तितिक हार है । दाहिने हाथमें माला है । बांये हाथमें ढाल है । ओर कोधसों घोडेको चोगान किरावे है । तीखे जाके नेत्र है । जाके लिलाटमें केसिरिको निपुंड है । शिवजीको ध्यान करे है । ऐसो जो राग तांहि गौडनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह लह स्वरनसों गायो है । स रि ग म प ध स । यांते षाडव है । रातिके दूसरे पहरेमें गावनों । यह तो याको बखत है । वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी छह सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समिसिये ॥

गौडनाटराग (पाडव).

ध	धैवत चढीं, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पैचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढीं, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स .	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति गौडनाटराग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको नवा पुत्र भूपालनाट ताकी उत्पानि लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों । भूपालराग संकीर्णनट गाईके । वांको भूपालनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ भूपालनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । केसिरिको अंगराम किये है । चंद्रमासो मुख है । ओर तरहतरहके आभूषण पहरे है । हाथमें क-मल फिरावे है । ओर मंद्रमुसकानयुक्त बचन कहत है । बडो प्रतापी है । उदार धुनि है । ऐसो जो राग तांहि भूपालनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुर-

नमें गायो है। स रिगम पध स। योतं षाडव है। रातिके पथम पहरमें गावनो । यह तो याको वस्तत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समिझिये॥

भूपालनाट राग (षाडव).

स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असारि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम अप्तरि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिंछ मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी मात्रा एक	स	षड्ज असंछि, मात्रा च्यार

॥ इति भूपालनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको दशवो पुत्र जेजनाट तांकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेकी ईशान नाम मुखसीं जुजवंत संकीर्णनट गाईके वांको जेजनाट नाम कीनों ॥ अथ जेजनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । केसरिको तिलक छलाटमें है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे है। बीर रसमें मग्न है। लालकमलसे नेत्र है। सुंदर मुसकानयुक्त जाको मुख है। ऐसी जो राग तांहि जेजनाट जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स । यार्ने संपूर्ण है। कोऊक याको रिषम हीनहू कहत है। तिनके मतसों षाडव है। सांझसमें गावनों। यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समिक्सिये॥

जेजनाट राग (संपूर्ण).

	गमाठ राग (राजून).				
रि	रिषभ चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		
ग	गांवार चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	-रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		
रि	रिषभ चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक		
स	षड्ज असाठि, नीचली सप्तक्की मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक		
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक		
रि	रिषम चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

*	पड्ज असाल, मात्रा एक	Ч	पचम असाल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांवार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ार	रिषम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतारे, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांबार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति जेजनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको ग्यारवो पुत्र शंकरनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों शंकरामरण शंकीणिनाट गाईके । वांको शंकरनाट नाम कीनों ॥ अथ शंकरनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको वर्ण है । रक्त वस्त्र पहरे हे । फूले कमलकी माला जाके कंटमें है । सुंदर जाको रूप है । शुंगार रसमें मग्न है । चंनदन केसरि अगर कर्पूर कस्तूरी ईनको । अंगराग मालमं केसरिको तिलक है । नानापकारके आमूत्रण पहरे है । बड़ो पतापी है । ऐसा जो राग तांहि शंकरनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

शंकरनाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दीय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
4	पंचम असिट, मजा दोय	ध	धेवर चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिंह, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ इति शंकरनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको बारवो पुत्र हीरनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन नाटनमें तो विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों हीरनाटसंकी जैनट गाईके । वांको हीरनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ हीरनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । फूलनकी माला पहरे है । केसरिको अंगराग किये है । हाथमें खड्ग है । बेरीनके हीयमें भय उपजावे

है। ऐसी जो राग तांहि हीरनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रिगम प ध नि स। योतं संपूर्ण है। याको दिनके चोथे पह-रमें गावनों। यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आला-पचारी सात सुरनमें किये। राग वरतसों। जंत्रसों समझिये॥ हीरनाट राग (संपर्ण)

	हारनाट राग (सपूर्ण).			
म	मध्यम चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	
रि	रिषभ चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	
स	षड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	
प	पंचम असिल, मात्रा दोय पड्ज असिल, नीचली सप्तककी मात्रा एक		रिषभ चढी, मात्रा एक षड्ज असलि, मात्रा एक	
	षड्ज असाठि, नीचली सप्तककी		,	
स	षड्ज असाठि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	
स प	षड्ज असाठि, नीचठी सप्तककी मात्रा एक पंचम असठि, मात्रा एक	स ग	षड्ज असलि, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा दोय	

अथ नटनारायणको तेरवा पुत्र देषाखनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेंसां विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसां । देषाखराग संकीर्णनट गाईके । वांको देषाखनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ देषाखनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके भालमें सिंदूरको विंदा है । ओर आंखनमें वीररस झलके है । सोनेके सों जाको अंग है । पुष्ट अंग है । विजयको छलमें पवीन है । पुष्टभुजोमं रज लिग रही है । मल्लयुद्धमें चतुर है । पीतांबरकी कालनी है । हनुमानसो वली है । ओर लातसों वैरीकी लातिमें महार करे है । ऐसो जो राग तांहि देषाखनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह लह सुरनमें गायो है । ग प ध नि स स नि ध प म ग स । यांतें षाडव है । याको संध्यासमें गावनो । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी लह सुरनमें किये । राग वस्तेसों । जंत्रसों समिक्षिये ॥

देषाखनाट राग (पाडव).

प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक.
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उत्तरी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	स	पड्ज असली, मात्रा दोय
li li			

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असालि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	,	

सप्तमी रागाध्याय-नटरागकी पुत्र स्वामनाट ओर कानाडनाट. १६१

अथ नटनारायणको चोद्वो पुत्र स्याम ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें उन नाटनमेसों विभाग करिवेको ईशान नाम मुखसो स्याम राग संकिणिनट गाईके। वांको स्यामनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों॥ अथ स्यामनाटको स्वरूप लिख्यते॥जाको स्याम रंग है। पीतांबरको पहरे हैं। कोकिलको सो मधुर नाद है। कंटमें मोतीनकी माला है। केसरिको तिलक लिलाटमें है। कामिनीनके संग विहार करे है। ऐसो जो राग तांहि स्याम जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यांतें संपूर्ण है। रातिके प्रथम पहरेमें गावनो। यह तो याको बखत है। रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समिक्सिये॥ स्यामनाट राग (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिछि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज अंसिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति स्यामनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको पंद्रवो पुत्र कानाड ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनें उन नाटनमेसों विभाग करिवेको। ईशान नाम मुखसों। कानाडराग संकीर्णनट गाईके। वांको कानाडनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों॥ अथ कानाडनाटको स्वरूप लिख्यते॥ जाको गोरो रंग है। पीतांबर पहरे हैं। जडाऊ कड़ा हाथनमें है। ओर माथेपें सोनाको मुकुट है। हाथमें खड़ग लिये है। बांये हाथमें कमल है। गजमोतीनकी माला कंठमें है। घोडोपें असवार है। संग फोज है। ऐसो जो राग तांहि कानाडनाट जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातं संपूर्ण है। याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों। यह तो याको बख़त है। ओर रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतेसों। जंत्रसों समिझिये॥

कानाडनाट राग (संपूर्ण).

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असार्छ, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-नटरागको पुत्र वराडी ओर विभासनाट. १६३

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असार्छि, मात्रा एक	म	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति कानाडनाट राग संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको सोलवा पुत्र वराडी ताकी उत्पत्ति लिरूयते ॥ शिवजीनें उन नाटनमेसों विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों वराडीराग संकीर्णनट गाईके । वांको वराडीनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ।
याको लोकिकमें वरारी कहे है ॥ अथ वराडीनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ अपनें
मुखसों मित्रनके मधुर वचनसों जाकी स्तुति होत है । गोरो जाको वर्ण है ।
रंगविरंगे वस्त पहरे है । अति पसच जाको मुख है । अति सकुमार जाकि देह
है । फूलनकी माला पहरे है । ओर जाके उपर चवर हुरे है । कामदेवको मित्र
है । जाके मनमें बडो उछाह है । अधिक प्रताप है । ऐसो जो राग तांहि वराडी
नाट जांनिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स ।
यांतं संपूर्ण है । याको सांझसमें वा दिनके चोथे पहरमें गावनों । यह तो याको
बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये ।
राग वरतेसों । जंत्रसों समिझिये ॥

वराडीनाट राग (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
रि	रिषम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	मांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

इति वराडीनाट राग संपूर्णम्

अथ नटनारायणको सतरवो पुत्र विभासनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन नाटनमंसों । विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसों विभासराग संकीर्णनट गाईके । वांको विभासनाट नाम करिके नटनारायणको दीनों ॥ अथ विभासनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ चंद्रमासों जाको मुख है । गोरो जाको रंग है । पीतांवर पहरे है । चंद्रनको अंगराग लगायो है । फूलनकी माला जाके गरेमें है । केसरिको तिलक लगाये है । हाथमें जाके खड्ग है । ऐसो जो राग तांहि विभासनाट जांनिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनसों गायो है । ग प ध स नि ध प म ग रि स । यातं संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमं गावनों । यह तो याको बखत है । रातिसमें प्रथम पहरमें गावत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समिस्रये ॥

विभासनाट (संपूर्ण).

प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
म	गांघार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-नटरागको पुत्र विभासनाट ओर विहागनाट.१६५

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	घैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक षड्ज असलि, मात्रा एक	नि रि	निषाद चढी, मात्रा एक

॥ इति विभासनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणकां अठारवा पुत्र विहागनाट ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जानें उन नाटनमें सो विभाग करिवेको । अपने मुखसों विहाग गाईके वांको विहागनाट नाम करिके । नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ विहागनाटको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । ओर जाके शरीरमें सुगंध आवे है । पानको बीडा हाथमें है । कामदेवयुक्त है । विरहनीनको इर पावे है । लालकमलसे नेत्र है । मिल्लकाके फुलनकी माला पहरे है । अपने समानरूप सखीसवन करिके सुखी है । ऐसो जो राग तांहि विहागनाट जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दुसरे पहरेमं गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

विहागनाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय		

॥ इति विहागनाट संपूर्णम् ॥

अथ नटनारायणको पुत्र संकराभरण ताकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ पार्वतीजीनें पसन्त होईके उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गाईके । नटनारायणकी छाया युक्ति देखि । वांको संकराभरण नाम करिके नटनारायणको पुत्र दीनों ॥ अथ संकराभरणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कसुमल वस्त पहरे है । गलेमें कमलकी माला है । सुंदर रूप है । शृंगार किये है । शरीरमें सुगंध लगाये है । विभूतिको तिलक है । नृत्य करि-वेका आरंभ जाको मिय है । आनंदयुक्त है । ऐसो जो राम तांहि संकराभरण

सतमी रागाध्याय-नटरागकी पुत्र संकराभरण, आभीरीरागनी. १६७ जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमं गायो है। स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याको प्रभातसमें गावनों। यह तो याको बखत है। सायंकालसमें रात्रिमें पसिद्ध है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों जंत्रसों समझिये॥

संकराभरण (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा तीन	ध	धेवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, भात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा दीय	स	षड्ज असिल, मात्रा तीन
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

॥ इति संकराभरण संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धनाटकी रागनी आभीरी ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनेंसों विभाग करिवेको। ईशान नाम मुखसों आभीरी गाईके वांको शुद्धनाटकी छात्रा युक्ति देखि। शुद्धनाटको आभीरी दीनी॥ अथ आभीरीको स्वरूप लिख्यते॥ स्याम जाको रंग है। स्याम वस्त्र पहरे है। रिसले जाके नेत्र है। मधुर बचन बोले है। सुंदर चोटी है। कोमल अंग है। मुगानकी माला पहरे है। काननेंमें ढेडी पहरे है। शुंगार रसमें मग्न है। रासमें नृत्य करि मनको हरे है। ऐसी जो रागनी तांहि आभीरी जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनेंमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यांतें संपूर्ण है। याको दिनके चोथे पहरेंमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर दुपहर उपरांति चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनेंमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समिक्षये॥

आभीरी रागनी (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	बड्ज असलि, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
-म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा वीन

॥ आभीरी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध नाटको प्रथम पुत्र जुजावंत ताकी उत्पत्ति लिख्यते॥
शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करिवेको। ईशाननाम मुखसों जुजावंत राग
गाईके। बांको शुद्ध नाटकी छाया युक्ति देखि। शुद्ध नाटको पुत्र दीनो॥ अथ
जुजावंतको स्वरूप लिख्यते॥ जाको स्थाम रंग है। पीतांवर पहरे है। केसरिको
तिलक लिखाटमें है। मोतिनकी माला कंटमें है। सुंदर मुरली बजावे है। छलितत्रिमंगी है। शुंगाररसमें मग्न है। कामदेवको प्यारो है। ऐसो जो राग तांहि
जुजावंत जांनिये॥ शालोंनो यह सात सुरनमें नायो है। स रि ग म प ध नि
स ॥ साते संपूर्ण है। याको संभ्यासमें गावनो। यह तो याको वसत है।
राष्ट्रिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावे।। याकी आलाक्यारी सात सुरनमें किये।
राष्ट्रिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावे।। याकी आलाक्यारी सात सुरनमें किये।

जुजावंत (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिख, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, माना एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
ध	वैबत उतरी, मात्रा एक	स	वड्ज असुडि, मात्रा एक

॥ इति जुजानंत नंपूर्णम् ॥

अथ हमीर रागकी उत्पत्ति लि व्यते ॥ शिवजीने उन रागनमें सी विभाग करिवेको । ईशान नाम मुखसो हमीर गाईके । वांको शुद्ध नाटकी छाया युक्ति देखि । वांको हमीर नाम कीनों ॥ अध हमीर हो स्वरूप लिख्यते ॥ गीरी

सममो रागाध्याय-हमीर, शक्तिबह्धभा ओर फरोदस्त राग. १७१

जाको रंग है। ठाठ वस्त्र पहरे है। शृंगाररसमें मग्न है। तरुण जाकी अवस्था है। मंद मुसिकान करे है। एक हाथमें छड़ी है। दुसरे हाथमें दंड ठिये है। कामदेवको मित्र है। माथें मुकुट है। काननमें कुंडल है। हाथनमें कड़ा है। स्नीनके मनको वस करे है। ऐसो जो राग तांहि हमीर जांनिये॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है। सारि । म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको संध्या समें गावनों। यहतो याको वत्रत है। ओर आधि रात तांई चाहो तय गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागदरते॥ इति हमीर संपूर्णम्॥

अथ शिक्तवस्नाकी उत्पत्ति टिस्पते ॥ शिवजीनं उन रागनमें विभाग करिवेको । अपने मुखसां जुजाकरी, रामकरी, गांधार, स्याम, गूजरी, संकीणं पूर्वी, गाईके । याको शक्तिवहामा नाम कीनो ॥ अथ शिक्तवहामां नाम कीनो ॥ अथ शिक्तवहामां ने स्वरूप दिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। पीतांवर पहरे हैं। कसरिको तिस्क सिसामें हैं। कंटमें मोतीनकी मासा पहरे हैं। चंद्रमासो जाको मुख है। चंचर जाके नेत्र है। बड़ो चतुर है। शुंगाररसमें मम्र है। रत्नके सिहासने बेटो है। चंद्रनको अंग-राग स्याये है। ओर हाथसों कमस फिरावे है। सब अंगनमें आनूषण पहरे है। मदमें छक्यो है। कामनीनके संग विहार करे है। ऐसो जो राग तांहि शिकि-वह्मा जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स । याते संपूर्ण है। याका प्रभात समें गावनों। यह तो याको वसत है। ओर चाहो तब गावो। यह राग मंगस्रीक है। याकी आस्रापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं याते जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतस्रीज्यो॥ इति शिक्तवहामा संपूर्णम् ॥

अथ फरोद्स्तकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें पसन्न होई करिके उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों पूर्वीं स्याम संकीर्ण गोड गाईके वांको फरोद्स्त नाम कीनों ॥ अथ फरोद्स्तको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्न पहरे है । कमलपत्रसें बडे जाके नेत्र है । अंतरसो भीजे केंस है । रत्नकी माला है । लिलाटमें केसिकों तिलक लगायो है । मिद्राके अंमलसों छक्यो है । सुंदर स्नीनके संग कीडा करे है । ऐसो जो राग तांहि फरोद्स्त जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध

नि स । याति संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बस्तत है । ओर रहिंसें पाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरममें किये । राग बरतेसों । जंजरों समझिय ॥

फरोदस्त (संपूर्ण).

	मरावस्य (तर्रूण)ः			
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असिल, मात्रा एक	
' म :	मध्यमः चढी, माचा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक	
्ष	पंचम असलि, मात्रा एक	ध	धैयत चर्ढा, मात्रा एक	
नि	निसाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा दोयः	
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक	
•		1	1	
Į.	मध्यम उतरी, मात्रा एक	T.	मध्यम जतरी मात्रा होय	
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा.एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	
म ग	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय पंचम असस्रि, मात्रा दोय	
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	4	पंचम असिल, मात्रा दोय	
ग म	गांधार चढी, मात्रा एक मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय गांधार चढी, मात्रा एक	

अथ अंधजरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनेंमसों वि-भाग करिवेको । अपनें मुखसों मारुमुद्ध जयरा श्रीसंकीणं केदारो गाईके । वांको अंधजर नाम कीनों ॥ अथ अंधजरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको अंग है । लाल वस्त पहरे है । चंद्रमासो जाको मुख है । अंतरसो लंबे जाके केंस है । सोनेकीसी जाकी कांति है । बड़ो जाको रूप है । अनेक रंगके फूलनकी माला पहरे है । रसिले तीसे अनियारे जाके नेत्र है । मंद मुसकान करे है । काननमें कमलकी कली पहरे है । केसरको तिलक जाके लिलाटमें है । एक हाथमें दंड . है । दूसरे हाथमें तिशुल है । वाचंबर विलाय बेटचो है । शिवको ध्यान करे है । मित्रनके संग विहार करे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसी जो राग तांहि अंधजर जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर आधिराति तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग बरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र वन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति अंधजर संपूर्णम् ॥

अथ अंधावरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेसों वि-भाग करिवेको । अपनें मुखसों खटआसावरी संकीर्ण देसी गाईके । वांको अंधावरी नाम कीनों॥ अथ अंधावरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त पहरे है । जाकी चोटी मोतियाके फूलनसों गुही है । काननमें जडाऊ कुंडल है । कंठमें जाके मोतीनकी माला है । लालकं चुकीको पहरे है । हाथमें जाके कंकन है । जाके पावनमें नूपुर है । कांमल जाको अंग है । हाथनमें दर-पन लिये है । अपनें स्वरूपको निहारे है । केलनीके बनमें पियको ध्यान करे है । देवता जाकी स्तुति करे है । ऐसी जो रागनी तांहि अंधावरी जांनिये ॥ शास्त्रमेतो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दुसरे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलामकारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों। जंतसों समझिये॥

संगीतसार.

अंधावरी (संपूर्ण).

म	मध्यमं उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, माचा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असाठि, मात्रा एक
ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	4	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असाठि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति अंधावरी संपूर्णम् ॥

अथ सावरकी उत्पत्ति लिरूयते ॥ शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों संकराभरण पूर्वी केदार विलावल संकीर्णकुकुभ गाईके। बांको सावर नाम कीनों ॥ अथ सावरको स्वरूप लिख्यते ॥ गीर जाको अंग है। स्वेत वस पहरे है। पृष्ट जाको अंग है। जाके अंगनमें रित झलके है। बंगाके फूलनकी माला जाके कंठमें है। लाल डोरादार बडे जाके नेप है। कटा- सप्तमा रामाध्याय-कोवाहर, श्रीरमण ओर ताराध्वनी राग. १७५

छिनसों स्निन्के मनको हरे है। एक हाथमें छडी लिये है। दुसरे हाथमें त्रिशूट लिये है। मित्रनसहित है। शृंगाररसमें मग्न है। कमलनकी माला पहरे है। सुंदर जाको रूप है। केसरको अंगराग लगाये है। केसरिको तिलक लिलाटमें है। माथेपें जाके मुकुट है। काननमें कुंडल पहरे है। सब अंगनमें आभूषण है। मृदंगको शब्द जाको प्यारो है। ऐसो जो राग तांहि सावर जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। धिन सिरिंग मिप धि। यांतें संपूर्ण है। याको दिनके पथम पहरेमें गावनों। यह तो याको बखत है। ओर दिनमें चाहो तब गावे।॥ इति सावर संपूर्णम्॥

अथ कोवाहरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों वि-भाग करिवेको । अपनें मुखसों विहाग राग कल्याण संकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको कोवाहरनाम कीनों ॥ अथ कोवाहरको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त पहरे है । मुखमें तांबूल खायो है । कामदेव करिके युक्त है । राजानकी सभा कीये सिंहासनपें बेट्यो है । मोतीनकी माला कंटमें है । कमल-पत्रसे विसाल जाके नेत्र है । छत्र जाके ऊपर फिरे है । दोऊ ओर चवर जाके उपर दुर है । सेवकजन करिके युक्त है । माथेपें जांक मुकुट है । हाथनमें कडा पहरे है । काननमें कुंडल पहरे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसो जो राग तांहि कोवाहर जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । यांको रातिके पथम पहरेमें गावनो । यह तो यांको वखत है । ओर आधिरात तांई चाहो तब गावा । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जांकी शिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कोवाहर संपूर्णम् ॥

अथ श्रीरमण रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागन्मेंसो विभाग करिवेको । अपने मुखसों संकराभरण संकीणं श्री गाईके । वांको श्रीरमण नाम कीनों ॥ अथ श्रीरमणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । लाल वस पहरे है । कमलकी माला कंठमं पहरे है । शृंगाररसमें मग्न है । केसरचंदन-कां अंगराग है । नृत्य गीत जाको प्यारो है । बडे जाके नेम है । तरुण जाकी अवस्था है । हांसिके वचन कहे है । सुंदर जाको स्वरूप है । हाथसों कमस फिरावे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । केसरको विलक्ष लिखाइमें

लगाये है। ऐसी जो राग तांहि श्रीरमण जांनिये ॥ शास्त्रमंती यह सात सुरनसीं गायों है। स रिगम पध निस। यांतें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनों। यह तो याको बस्तत है। ओर चाहो तब गावो। यह राग सुन्यो नहीं। यांतें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति श्रीरमण संपूर्णम् ॥

अथ ताराध्वनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखनों सुद्धमल्लार संकीर्णकेदार गाईके । वांको तारा-ध्वनी नाम कीनों ॥ अथ ताराध्वनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । ओर पीतांबरको पहरे है । चंदनको अंगराग लगाये है । लिलाटमें केसरको तिल्लक लगायो है । ओर बड़ नेन है । वारनको जुड़ा जाके माथे बंधो है । शिवजिको ध्यान करे है । मित्रन करिके सरन है । मोतीनकी माला कंटमें पहरे है । ओर सब अंगनमें आमूषण पहरे है । मोरनके समूहमें विहार करे है । परम उदार है । ऐसो जो राग तांहि ताराध्वनी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है । स नि ध प म ग रि स । योतं संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । आधिरात तांई चाहो तब गावो । याकी आल्लापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

ताराध्वनी राग (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उत्तरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय	4	पंचम असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोस
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, माना एक

सप्तमी रागाध्याय-श्रीसमोध, मनोहर,देवकारिका,विचित्रा राग. १७१०

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

॥ इति ताराध्वनी राग संपूर्णम् ॥

अथ श्रीसमोधकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेसीं विभाग करिबेको । अपने मुखसीं मालिसरी, सुद्धशी, टंकराग, भीमपलासी, संकीर्ण गाईके । बांको श्रीसमोध नाम कीनों ॥ अथ श्रीसमोधको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंग वस्त पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । रंगविरंग क्स पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । रंगविरंग क्स पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । रंगविरंग फूलनको धरे है । मृगकेसे विशाल जाके नेत्र है । तरुण जाकी अवस्था है । शुंगार रसमें मग्न है । बहुत सुंदर है । सताईस मोतीनकी माला गलेमें है । हाथमें कमल फिरावे है । आनंदके आसूं जाके नेत्रनमें आवे है । विभागनी जो अपनी स्ती ताको मनावे है । ऐसो जो राग तांहि श्रीसमोध जांनिये ॥ शास्तमें-तो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांते संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर आधीरात तांई चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यांते जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होग्न सो वरतलीज्यो ॥ इति श्रीसमोध संपूर्णम् ॥

अथ मनोहर रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेसः विभागकरिवेको । अपने मुखसों राग गाईके वांको मनोहर नाम कीनों ॥ अथ

मनोहरको स्वरूप छिल्यते ॥ जाकी शुद्धस्वरके मेलमें उत्पत्ति होय । और मध्यम नहीं होय । जामें पंचमको पड्जको कंप होय । धैवतको माथत होय करिकें धैवत ते अवरोहमें पंचमको पड्जको कंप होय । धैवतको माथत होय करिकें धैवत ते अवरोहमें पंचमको कंप करिये । ओर पंचमते पड्जको उच्चार किर मध्यमको उच्चार की निवारको उच्चार किर मध्यमको उच्चार की निवारको उच्चार की निवारको उच्चार की निवारको कंप की जिये और पड्जमें पूर्ण की जिये । शास्त्रमें तो यह सात सुरनसों गायो है । स रिगम पध निसा यातें संपूर्ण है । याको दुपहर उपरांति छेके संध्या ताई चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंव बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय। सो वरतली ज्यो ॥ इति मनोहर राग संपूर्णम् ॥

अथ देवकारिकाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कुंभारी, सरस्वती, संकीर्णमालसिरी गाईके । वांको देवकारिका नाम कीनों ॥ अथ देवकारिकाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्न पहरे है । कमलपत्रसे जाके नेत्र है । चंदमासों जाको मुख है । सब अंगनमें आभूगण पहरे है । आनंदको जल जाके नेत्रनमें आई रहे है । गांन जाको प्यारो है । तरुण सखी जाके संग है । मोरनके संग कीडा करे है । केसर चंदनको अंगराग लगाये है । फूले कमलकी माला पहरे है । शृंगाररसमें मम्र है । जडाऊ फूलकी वेसरि कानमें पहरे है । कमलकी कली नाकमें पहरे है । जाके माथें केसरकी आड है । नेत्रनमें काजर आंजे है । हाथमें काचकी चूडी पहरे है । नानापकारके वाजनसें आसक्त है । तरुण अवस्था हांसिके बचननसों पियसों बतलावे है । ऐसी जो रागनी तांहि देवकारिका जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स । यांते संपूर्ण है । संध्यासमें गावनी । यह तो याको बसत है । रातिमें चाहो तब गावो ॥ इति देवकारिका संपूर्णम् ॥

अथ विचित्राकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनंपसां वि-माग करिवेको । अपने मुखसों ईमन, वरावी, संकीर्णचेतीगोडी गाईके । बांको विचित्रा नाम कीनों ॥ अथ विचित्राको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग हैं । रंगविरंगे वस्त पहरे हैं । हाथसां कमल फिरावे है । बडे जाके नेत्र है । सप्तमो रागाध्याय-चौराष्टक, शुद्धवंगाल, कर्णाट, गोरखीवि॰. १७९

अत्तरसो भीजे सुंदर जाके केंस है। पानकी बीडी खाई है। कंठमें मोतीनकी माला पहरे हैं। छत्र चवर जाके उपर फिरे हैं। रत्निसंहासनें बेठी हैं। किन्निर जाके संग है। मधुर बचन सखीनसों कहे हैं। फूछनसों जाकी वेनी गुही हैं। शृंगाररसमें मम्न है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। ऐसी जो रागनी तांहि विचित्रा जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है। सि रि ग म प ध नि सा यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह ता याको बखत है। आ-धिरात तांई चाहो तब गावो। यह रागगी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतछीज्यो॥ इति विचित्रा संपूर्णम्॥

अथ चौराष्ट्रकिकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेसीं विभाग करिवेको । अपने मुखसों विभाग संकीणं लिखत गाईके । वांको चौराष्ट्रक नाम कीनों ॥ अथ चौराष्ट्रकको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको वर्ण है । पानको बीडा हाथमें है । ओर दुसरे हाथमें सूवाको पींजरों है । मुकुट जाके माथेपें है । मालमें केसरको विंदो है । स्वेत वस्त्र पहरे है । ओर बडो कामी है । अनेक तरहके आभूषण पहरे है । मोतीयाके फूलनकी माला जाके कंटमें है । कमलपत्र-से विशाल जाके नेत्र है । मीठी बानीसों सूवाको पढावे है । ऐसो जो राग तांहि चौराष्ट्रक जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध स । यातें पाडव है । याको सूर्योद्यसमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दिनमें मथम पहरेंमें चाहो तब गावो ॥

अथ शुद्धवंगालकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिश्जीनें उन रागनमेसों विमाग करिवेको । अपनें सद्योजात नाम मुखसों शुद्धवंगाल गाईके । वांको शुद्ध भैरवकी छाया युक्ति देखि शुद्धभैरवको पुत्र दीनों।। अथ शुद्धवंगालको स्वरूप लिल्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त पहरे है । दाहिणे हाथमें चंद्रकांति मणिकी माला है । बांयें हाथमें सोनेका प्याला है । ओर स्वरसों वेदको पाठ करे है । उदार रूप है । ऐसो जो राग तांहि शुद्धंगाल जांनिय ॥ शास्त्रवेतो यह सात सुरनसों गायो है । स रि ग म प ध नि स । यार्त संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यह तो याको वस्त्रत है । ओर चाहो तब गावो । यह राग मंगलीक

है। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो 'वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धवंगाल संपूर्णम् ॥

अथ कर्णाटबंगालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन समनमेसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कर्णाटसंकीर्णवंगाल गाईके । वांको कर्णाटवंगाल नाम कीनों ॥ अथ कर्णाटवंगालको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है ।
स्वेत वस्त पहरे है । कस्ंभी पाघ बांधे है । हाथनमें कडा पहरे है । जडाउ बाज्
है । माथेपं मुक्ट है । काननमें कुंडल है । गरेमं मोतीनकी माला है । अपन
समान ससी संग है । कमलके फूलकी छडी हाथमें है । ऐसो जो राग नांहि
कर्णाटबंगाल जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह छह सुरनसों गायो है । ग म प ध नि स
न । योते बाडव है । याको पहर दिनभीतर गावनों । यह तो याको बखत है ।
कुंबहर पहला बाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । याते जंत्र बन्यो नहीं ।
जाकी सिवाय बुद्धि होय सो बरतलीज्यो ॥ इति कर्णाटबंगाल संपूर्णम् ॥

अथ गोरखीबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागलगमें विभाग करिवेको । अपनें मुखसों जजवती संकीर्ण बिलावल गाईके । बांको गोरखीबिलावल नाम कीनों ॥ अथ गोरखीबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । ओर लिलाटमें कसरको तिलक लगाये है । कंटमें रत्नकी माला पहरे है । मौढ जाकी अवस्था है । शृंगाररसमें मम्र है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । माथेपं जाके मुकुट है । काननमें जाके मुद्दा है । करेसो जो राग तांहि गोरखीबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमें तो सात मुरनसों गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो यहतो याको वस्त्र है । दुपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात मुरनमें किये राग वरतेंसों । जंत्रसों समझिये ॥

गोरखीबिलावलराग (संपूर्ण).

ध	चैवतः <i>चढी</i> ; मात्रा एक -	म	मध्यमः उत्तरी, सामा दोय
1 and 4 122	पंत्रम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय

रि	रिषम चढी, मात्रा ए⊅	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
			,
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी. मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
नि ध	निषाद उतरी, मात्रा एक धैवत चढी, मात्रा एक	ग रि	गांधार चढी, मात्रा दोय रिषभ चढी, मात्रा एक
-		_	

॥ इति गोरखीबिलावल राग संपूर्णम् ॥

अथ शंकरिवलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीन उन रागनमेसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों कदारराग संकीणिवलावल गाईके ।
वांको शंकरिवलावल नाम कीनों ॥ अथ शंकरिवलावलको स्वरूप लिख्यते ॥
गोरी जाको अंग है । स्वेत वस्त पहरे है । मनमें शिवजीको ध्यान करे है । लाल
कमलसे जाके नेत्र है । सुंदर जाको रूप है । केसर चंदनको अंगराग लगाये है ।
मिणनके जडाऊ मुकुट जाके माथेपें है । मिणनके कुंडल काननमें है । एक हाथसो कमल फिरावे है । दुसरे हाथसों ताल बजावे है । मित्रककरिकें सहित है ।
ऐसो जो राग तांहि शंकरिवलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है ।
ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरेमें गावनों । यह
तो याको वस्तत है । कोई याको रातिसमें गावे है । याकी आलापचारी सात
सुरनमें किये राग वर्रेतसों । जंतसों समझिये ॥

संगीतसार.

शंकरबिलावल (संपूर्ण).

सम्सम्भागः (सर्व).				
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक	
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक	
स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक	
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा एक	
स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा तीन	
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा तीन	
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	म	मध्यम असलि, मात्रा एक	
स	षड्ज असठि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	
ग	गांबार चढीमात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	
स	षडूज असलि, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	

॥ इति शंकरिवटावट संपूर्णम् ॥

सप्तमी रागाध्याय-अलहियाबिलावल और लहीसांसविलावल.,१८३

अय अलहियाबिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजींने उन रागनें में विभाग करिवेको । अपनें मुखसों बिलावल संकीर्णाबिलावली गाईके । बांको अलहियाबिलावल नाम कीनों ॥ अथ अलहियाबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । कमलके रंगके वस्त्र पहरे है । शुंगाररसों मग्न है । कोमल जाको अंग है । तरुण जाकी अगस्या है । मधुर धुनिसों मृदंग बजावे है । केसरको तिलक जाके ललाटमें है । माथों मुकुट है । जडाऊ कुंडल जाके का-ननमें है । मदसों लक्यो है । ऐसो जो राग तांहि अलहियाबिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यांतें संपूर्ण है । याको दिनके पथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दुपहर तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

अलहियाबिलावल (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असिट, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरीं, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति अलहियाबिलावल संपूर्णम् ॥

अथ लखेसासिकावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनमें ते विभाग करिवेको । अपने मुखसों इमनसुद्ध संकीर्ण विलावल गाईके । बांको लखोसाखिकावल नाम कीनो ॥ अथ लखोसाखिकावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । कसर चंदनको अंगराग कीय है । जडाऊ मुकुट माथेपे है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । सिंहासनेपें बैठचो राग करे है । छत्र चवर जाके उपर दुरे है । हाथसों कमल फिरावे है । ऐसो जो राग सो लखोसाखिकावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । स रि ग प ध नि स । यातें बाडव है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको वस्तत है । दुपहर ताई बाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी छह सुरनमें किये राग वरतेसों जंत्रसों समाझिये ॥

लछोसाखबिलाबल (पाडव).

R	रिवम वढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, बुह्मा दोय	रि	रिषम चढी, माना दोय
प	पंचम असलि, मात्रा दीय	प	पंचम अस्ति, मात्रा तीन

सप्तमो रागाध्याय-भाक्षिबिलावल और सरपरदाबिलावल. १८५

ध	धैवत चढी, गात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय	ध	धेवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
रि	रिषम चढी, यात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	िर	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय	स	पड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति उछोसाखिबछावछ संपूर्णम् ॥

अथ भुक्षिक्जिवलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमं-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भुक्षिक्टावल नाम कीनों ॥ अथ भुक्षिकि अवलको स्वरूप लिख्यते ॥ जामे मध्यम सुर हीन होय ओर जामें षड्ज पंचम स्वरको कंप होय । धैवतमें जाको न्यास अंस ओर गृह स्वर होय । वियोगमें जाको गावनो होय । ऐसो जो राग नांहि भुक्षिकिलावल जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह लह सुरनसो गायो है । ध नि स रि ग प ध । यांतें षाडव है । याको चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मुक्षिक्लावल संपूर्णम् ॥

अथ सरपरदाविलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागन-मेंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों गोड संकीर्णविलावल गाईके । वांको सरप-रदा बिलावल नाम कीनों ॥ अथ सरपरदाबिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरों जाको रंग है। रंगबिरंगे वस्त्र पहरे हैं । कोमल जाको अंग है । शुंगाररसमें मझ है । कमलके रंगकी चोली पहरे है । तहण जाकी अवस्था है। मोतीनकी माला कंठमें पहरे है । मोरनके गणसों विहार करे है । मधुर सुरनसों गांवे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे हैं। ऐसी जो राग तांहि सरपरदाबिटावल जांनिये॥ शास्त्रमेंती यह सात सुरनसों गायो है। ध नि स रि ग म प ध। यातें संपूर्ण है। याकां दिनके प्रथम पहरेंमें गावना। यह तो याकां वखत है। दूपहर पहले चाही तब गावी। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समिसिये॥

सरपरदाविलावल (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा च्यार	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतारि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
K	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिडि, मात्रा एक

रि	रिषम चडी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म .	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, भात्रा एक
नि	निपाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम अक्षति, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सरपरदायिखावल संपूर्णम् ॥

अथ कन्हडी बिलावलकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्णानं उन रागनेमंसों विभाग करिवेको । अपनं मुखसों कन्हडी संकीर्ण बिलावल गाईके ।
वांको कन्हडी बिलावल नाम की नों ॥ अथ कन्हडी बिलावलको स्वरूप लिख्यते ॥
गोरो जाको रंग है । कमल सिखे लाल वस्त्रको पहरे है । रंग विरंगी जाके
वस्त्र है । तरुण जाकी अवस्था है । एक हाथमें खड्ग है । दुसरे हाथमें ताल
है । सिद्ध चारण जाकी स्तुति करे है । ऐसो जो राग तांहि कन्हडी बिलावल
जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । स रिगम प ध नि स ।
यातें संपूर्ण है । याको दिनके मथम पहरेमें गावनो । याकी आलापचारी सात
सुरनमें किये राग बरते । सो जंत्र सो समझिये ॥

संगीतसार.

कन्हडीबिलावल राग (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज अरालि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चर्ट:, मात्रा एक
प	पंचम असछि, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, माना दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असंहि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
গ	गांबार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
म .	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
1			

गांधार चढी, मात्रा एक

रि रिषम चढी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-उत्तर, दक्षिणादि, भंगलगुजरी, प्रताप, कल्पान. १८९

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, माना एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिः, मात्रा एक

॥ इति कन्हडीविलावल संपूर्णम् ॥

अथ उत्तरगुजरीकी उत्पत्ति शिख्यते ॥ जाके आरंभमें मुख गांधार स्वर होय । जाके आरोहमें मध्यमस्वर और निपादस्वर न होई । गांधारस्वर संयुक्त मध्यमस्वर होय । धेवन संयुक्त निषादस्वर होय । गांधारस्वरहीकी जामें मूर्छना होय । ऐसी जो रागनी नांहि उत्तरगुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंनो यह सात सुरनमें गाई है । ग प ध म स नि ध प म ग रि स । याने संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनी । यह नो याको बस्ता है । ओर दुएहर नांई चाहो तब गावो। यह रागनी सुनी नहीं याने जंत्र बन्धा नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतन्धीज्यो ॥ इनि उत्तरगुजरी संपूर्णम् ॥

अथ दक्षिणादिगुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जानं उन रागनर्मेसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों क्रकृष, पूर्वी, विलावल, संकीर्ण केदार गाईके ।
वांको दक्षिणादिगुजरी नाम कीनों ॥ अथ दक्षिणादिगुजरीको स्वरूप लिख्यते ॥
गोरो जाको रंग है । रंगियरंगे वस्त पहरे है । कोमल अंग है । शृंगाररसमें मग्न
है । तरुण अवस्था है । ककरेजी चाली पहरे हे । कमलपत्रसं बंडे नेत्र है । पृष्ट
अंग है । जाके शरीरमे रित झलके है । चंदिक फूलनकी माला पहरे है । शिवजीके घ्यानमें मग्न है । ओर पास जाके सखी है । सब अंगनमें आभूषण पहरे
मुखमें तांबूल चवावे है । एक हाथमें छडी है । ऐसी जो रागनी तांहि दक्षिणादिगुजरी जांनिये॥शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स। यांते
संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरेमें गावनी । यह तो याको बखत है । आधि
रातितांई चाहो तब गावो । यह रागनी सुनी नहीं । योतें जंत्र बन्यो नहीं ।
जीकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति दक्षिणादिगुजरी संपूर्णम् ॥

अय मंगलगुजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनेंमं विमाग करिवेको । अपनें मुखसों स्याम, रागकरीं, गांधार, ईनरें संकीणं गुजरी गाईके । वांको मंगलगुजरी नाम कीनों ॥ अथ मंगलगुजरीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांवर पहरे है । वांये हाथमें जाके छड़ी है । पूर्ण चंद्रमासों जाको मुख है । माजिनको हार पहरे है । कसूमल चोली पहरे है । कानमे जाके जडाऊ कुंडल है । पायनमें न्पुर है । वांचल जाके नेत्र है । कुंकुमको बिंदा लगाये है । चंदनको अंगराग लगाये है । हाथसों स्वेत कमल फिरावे है । रत्नके सिंहासनमें बेठी है । सखी जाके संग है । शृंगाररसमें मम्न है । कोमल मधुर वचन कहे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि मंगलगुजरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है । स रि ग म प घ नि स । योतें संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरेंमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह रागनी सुनी नहीं । योतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मंगलगुजरी संपूर्णम् ॥

अथ प्रतापवरालिकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जानं उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको प्रतापवराली नाम कीनों ॥ अथ प्रतापवरालिको लखन लिख्यते ॥ स्वरनके भेदते जामें मध्यमकी व्रतर निषाद-वीवार गांधार जामें आदि । ऐसी रागनी गाईके । वांको नाम प्रतापवराली कीनों ॥ शास्त्रमें तो यह सप्तस्वरनमें गाई है । गम प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दुसरे पहरमें गावनी । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति प्रतापवराली संपूर्णम् ॥

अथ कल्पानवरालीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागन-भैसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कल्पानवराली संकीर्ण गाईकं । बांको कल्पानवराली नाम कीनों ॥ अथ कल्पानवरालीको रवस्त्य लिख्यते ॥ गोरो रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । सखी जन जाके मीठे वचनसे स्तुति करे है । पूछ-नसे गुड़ी जाकी बेनी है । चवर दुरे है। नानामकारके शुंगार करे है । कोमल अंग सप्तमी रागाध्याय-नागवराली, पुञ्चागवराली, सुद्धवराली, टोडी. १९१

है। मुखमें पान खाये है। गरेभें मोतीनकी माला है। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। छत्र चवर जाके उपर ढुरे है। शृंगाररसमें मग्न है। मधुर सुरनसों अपनों राग गांवे है। ऐसी जो रागनी तांहि कल्पानवराली जांनिय ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह ता याको वखत है। दूवहर उपरांति चाहो तब गावो। यह रागनी सुनी नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरत लीज्यो ॥ इति कल्पानवराली संपूर्णम् ॥

अथ नागवरालीकी उत्पत्ति लिएयते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सें विभाग करिवेको । दिशेष लोकानुरंजनके लिय । अपनें मुखर्सो रवरनके भेदतें । जामें मध्यम तिव्रतर अरु कोमल धैवत । गांधार धैवतको उच्चार करी । ऐसी रागनी गाईके । वांको नाम नागवराली कीनों । शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । ग मंप प नि स रि स नि ध प म ग म प ग ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनी । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें । यह रागनी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुखि होयसों वरत लीज्यो ॥ इति नागवराली संपूर्णम् ॥

अथ पुन्नागवराहीकी उत्पत्ति तिस्यते ॥ शिवर्जाने दिशेष होकानुरंज-नके हीये । अपने मुखसों रवरनके भेरते ॥ जामें निषादतीव अरु मध्यम तीवतर । गांधार धैवतसों आलाप करी । ऐसी रागनी गाईके। वांको पुन्नागवराही नाम कीनों । शास्त्रमंती यह सात सुरनमें गाई है । ग म प ध नि स रि स नि ध प म ग । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनी । यह रागनी सुनी नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरत ही यो ॥ इति पुन्नागवराही संपूर्णम् ॥

अय सुद्धवरालिकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंतां विभाग करिवेकों । अपने मुखसों सुद्ध राग संकीणं वराली गाईके ॥ वांको सुद्ध वराली नाम कीनों ॥ अथ सुद्ध वरालीको रवस्त्य लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंग- विरंग वस्त पहरे है । मोनीनक हार जाके कंठमें है । सोनेक जडाऊ कडां जाके हाथमं है। कतरिको अंगराग किये है। अपने पीयके गोदने वेठी है। ओर हाथसों बीन बजाव है। सुगंधसो सनी सुथरी जाकी अलक है। मंद मुसकान करे है।

अरु नेत्रकी ढुलनसों चतुरनके मनको वस करे है। ऐसी जो रागनी तांहि सुद्ध वराली जांनिये। शास्त्रमेंतो सात सुरनसों गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दुपहरको गावनी। यह तो याको वस्तत है। ओर दिनमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते। सो जंत्रसो समझिये॥ अथ सुद्धवराली (संपूर्ण).

म	मध्यम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	i II	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांथार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ч	पंचन असिछ, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चडी, मात्रा एक	स	पड्ज असिंछ, मात्रा तीन

॥ इति सुद्धवराठी संपूर्णम् ॥

अथ टोडीवरालिकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेका अपने मुखसों चेतीसंकीर्ण आसावरी गाईकें । वांको टोडीवराली नाम कीनों ॥ अथ टोडीवरालिको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । विचित्र रंगके वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । बांये हाथमें कमल है। दाहिनें हाथमें ताल बजावे है । तरुण जाकी अवस्था है । मुखमें पान चाबे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । जाके उपर चवर दुरे है । सिंहासनमें बेठी है। ऐसी जो रागनी तांहि टोडीवराली जांनिये॥ शास्त्रमेतो यह सात सुरनमें गाई है।

सप्तमो रागाध्याय-टोडीवराली, छायाटोडी ओर बहादुरीटोडी. १९३ स रि ग म प ध नि स । यानें संपूर्ण है। याको दिनके तीतरे पहरमें गावनो । यह तो याको बखन है। ओर दिनमें च हो तब गारो । याकी आखावचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें। सो जंत्रसों समितिये॥

टांडीवराली (भंपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
स	पड्ज असिल, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असछि, मात्रा दोय	रि	रिषम उत्तरी, मात्रा दोय

q	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा देख		

॥ इति टोडीवरासी संपूर्णम् ॥

अथ छायाटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों निषाध पंचम स्वरहीन टोडी गाईके । बांको छायाटोडी नाम कीनों ॥ अथ छायाटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ कुंदके फूलसों जाको मुख है । बडे जाके नेन्न है । देखन वारे पुरूषनके नेन्नको अरु मनको आनंद उपजावे है । वनमें सुंदर फूले कल्पवृक्षकी छायामें विहार करे है । ऐसी जी रागनी तांहि छायाटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गाई है । सि म ध री । बांतें ओडव है । याको दिनके प्रथम पहरे उपरांति गांवनी ।

यहतो याको वस्तत है। दुपहर तांई चाहो तब गावो। याकी आछापचारी पांच सुरनमें किये रागनी वरते। सो जंत्रसों समझिये॥ छायाटोडी (आडव).

म	मध्यम असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असाहि, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम असलि, मात्रा दोखे	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति छायाटोडी संपूर्णम् ॥

अथ बहादुरीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागन-मेंसों विभाग करिनेको । अपने मुखसों टोडी संकीर्ण आसावरी गाईके । बांको

सप्तमो रागाध्याय-बहादुरीटोडी ओर जोनपुरीटोडी. १९५

बहादुरीटोडी नाम कीनों ॥ अथ बहादुरीटोडीको स्वरूप टिल्यते ॥ स्याम जाको रंग है। रंगविरंगे वस्त पहरे है। बांये हाथमें दंड है। दूसरे हाथमें ताल बजावे है। चंदनको अंगराग लगाये है। मोहनी मूर्ती है। ओर सागरे शृंगार करिके युक्त है। केलनके वनमें पियके जसको गावे है। गंधर्व जाकी स्तुति करे है। तरुण जाकी अवस्था है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। मंद मुसकान मुख है। ऐसी जो रागनी तांहि बहादुरीटोडी जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गाई है। स रि ग म ध नि स। यांते संपूर्ण है। याका प्रभात समें गावनी। यह तो याको वखत है। मध्यान तांई चाहो तब गावा। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते। सो जनसों समिझिये॥

बहादुरीटोडी (संपूर्ण).

			The second secon
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धेवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिट, मात्रा एक
प	पंचम असिंह, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा देश्य
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उत्तरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
ध	धैवत उत्तरी, मात्रा दोय	ग	गांचार उतरी, मात्रा एक
स	पड्ज अ५छि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ण असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति बहादुरीटोडी संपूर्णम् ॥

अथ जे नपुरिटिहि की उत्पत्ति हिस्यते ॥ शिवर्जाने उन रागनमेंसी विभाग करिदेकों। अपने मुखसों टोडी संकीर्ण कान्हडी गाईके। वांको जोनपुरिटोडी नाम कीनों ॥ अथ जोनपुरिटोडीको स्वरूप हिल्यते ॥ उजल वर्फ सिलो जाको रंग है। केसर कर्पूरको अंगराग लगाये है। रंगविरंगे वस्त पहरे है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। बडे जाके नेत्र है। एक हाथमें खड्ग है। दूसरे हाथमें वीणा बजावे है। सिद्ध चारण जाकी रतृति करे है। ऐसी जो रागनी तांहि जोनपुरिटोडी जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यांते संपूर्ण है। दिनके दूसरे पहरेंमें गावनी। यहतो याको वस्तत है। दूपहर तांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें। सो जंत्रसों समझिये॥

सप्तमो रागाध्याय-जोनपुरीटोडी ओर मार्गटोडी. जोनपुरीटोडी (संपूर्ण).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उत्तरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
स	षडज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, मात्रा दोय

ध	धेवत उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असिट, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति जोनपुरीटोडी संपूर्णम् ॥

मार्गटोडी (पाडव).

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांबार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैबत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उत्तरी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा दीय
ч	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, माना दोय

॥ इति मार्भटोडी संपूर्णम् ॥

अथ लाचारीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको काफी, पटमंजरी, देसी, संकीर्णटोडी गाईके। वांको लाचारीटोडी नाम कीनों ॥ अथ लाचारीटोडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंग- बिरंगे वस्त पहरे हैं । वांये हाथमें छडी है । दाहिनें हाथसों ताल बजावे है । तरुण जाकी अवस्था है । प्रकृतित जाके नेत्र है । सब अंगनमें आमृषण पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । जननको मोहित करे है । अबीर लगाये है । मुखमें पान खाये है । पितको स्मरण करे है । जाकी प्यारी सखी उत्साह बढावे है । पितको मिलाप चावे है । शृंगाररसमें जाको चित है । ऐसी जो रागनी तांहि लाचारीटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । दूपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । रागनी वरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

लाचारीटोडी जंत्र (संपूर्ण).

9	पंचम असलि, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दीय	प	पंचम असलि, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांबार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा देश्य
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिट, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उत ी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा ए क
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति टाचारीटोडी संपूर्णम् ॥

अथ काफीटोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवको । अपने मुखसां काफीसंकीणंटोडी गाईके । वांको काफीटोडी नाम कीनों ॥ अथ काफीटाडीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । छायानाटके मेलसों उत्पत्ति भई है । सुंदर जाकी चोटी है । काननमं जडाऊ करणफूल है । सुंदर वस्त्र आभूषण पहरे है । ओर मिदरापानसों मतवारी है । तरुण जाकी अवस्था है । अनेक सहेली जाके संग है । ऐसी जो रागनी तांहि काफीटोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्त-स्वरनमें गाई है । याका पंचनमे अंशगृह स्पर षड्जमें न्यास स्वर । प ध नि ध प म ग रि स । यातं संपूर्ण है । याको दिनके दूसरी पहरकी पांचई घडीमं गावनी । यहता याको वलत है । ओर दिनके दूसरे पहर तांई चाहो तब गावो । याकी आल।पचारी सात स्वरनमें किये रागनी वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥ काफीटोडीं (संपूर्ण).

प	पंचम असिल, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असछि, मात्रा एक	ध	धेवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असाले, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवन उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक्
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति काफीटोडी संपूर्णम् ॥

अय पूर्वीसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमंसों विभाग करिवेकों । अपनें मुखसों पूर्वी संकीण सारंग गाईके । वांको पूर्वीसारंग नाम कीनों ।। अथ पूर्वीसारंगको स्वरूप लिख्यते ।। गारा जाको रंग है । रंग- बिरंगे वस्त पहरे है । चंदनको अंगराग लगाये है । फूलेलसो भीजे केस है । कस्तूरीको विंदो लिखाटमें है । कमलपत्रसे नित्र है । मंद्रमुसकान करे है । सखीनमे मधुर सुरसों गान करे है । शृंगाररसमे मग्न है । माथेपें मुकुट है । बाहुनमे भुजबंद है । मुरली बजावे है । विचित्र फूलनकी माला पहरे है । ऐसी जो रागनी तांहि पूर्वीसारंग जांनिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि गम प च नि स । यांते संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरेमें गावनी यह तो याको बखत है । संध्या तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये यह रागनी सुनी नहीं। यांते जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वस्त-लीज्यो ॥ इति पूर्वीसारंग संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों शुद्धसंकीर्ण सारंग गाईके । वांको शुद्ध सारंग नाम कीनों ॥ अथ शुद्धसारंगको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतां-वर पहरे हैं । माथेपें जाके मुकुट हैं । काननमें मकरास्त्रत कुंडल हैं । ओर की-स्तुभमणि जाके कंटमें है । जिनके चार भुजा है । शंख चक्र गदा पद्मको धारण करे हैं । ओर बाई वोर जिनके लक्ष्मी विराजमान है । देवतानकी सभामें विराज है । सिद्ध पार्षद जिनकी स्तुति करे है । ऐसो जो राग तांहि शुद्धसारंग राग जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । मध्यानको गावनो । यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सों जंत्रसों समिन्निये ॥

शुद्धसारंग (संपूर्ण).

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असाठि, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति शुद्धसारंग संपूर्णम् ॥

अथ वृंदावनीसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागन मंसों विभाग करिवेको । पार्वतीजीके मुखसो सारंगराग संकीर्ण महार गाईके । महार-की छाया युक्ति देखि वांको महार सारंग नाम कीनों । याको होकिकमें वृंदा-वनीसारंग कहे है ॥ अथ वृंदावनीसारंगको स्वरूप हिल्यते ॥ स्याम जाको रंग है । दोय जिनके भुजा है । काछनी पहरे है । पीतांवरको पहरे है । मुखसो मुरही बजावे है । मोर मुकुट जिनके माथेपे है । सखा जाके संग है । गाई बरावे है । माध्यानसमें कदमके हखके नीचे बैठचों है । ऐसो जो राग तांहि वृंदावनीसारंग जांनिये ॥ शास्त्रमंतो यह पांच सुरनरों गायो है । स रिम पिन स । यांतें ओडव है । को उक याको पाडव कहत है । याको मध्यानसमें गावनों । यह तो याको वखत है । ओर दिनमें चाहो तब गावो याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरतें । सों जंत्रसों समिक्षये ॥

वृंदावनीसारंग (ओडव).

रि	रिषम चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ч	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	्प	पंचम असिल, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्र। एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति वृंदावनीसारंग संपूर्णम्

अथ गौडसारंगकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों संकरा अरुणटसंकीर्ण सारंग गाईके । वांको गौडसारंग नाम कीनों ॥ अथ गौडसारंगको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । स्वेत वस्त्र पहरे है । चंदनको अंगराग किये है । मिणनके जडाऊ मुकुट जाके माथेपे है । सोनेके जडाऊ कडा हाथेपें है । मुखमें तांबूल खावे है । कमल-पत्रसें बंडे जाके नेत्र है । बडो जाको प्रताप है । कोस्तुभमणि जाके कंठमें है । वनमालाको पहरे है । सखानके संग विहार करे है । ऐसो जो राग तांहि गौड-सारंग जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातं

संपूर्ण है। याको मध्यान उपरांति गावनों। यह तो याको बखत है। दिनमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें कियेराग वरते। सों जंत्रसों समिझये॥ गौडसारंग (संपूर्ण).

-		-	-
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
गि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतारे, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा चार
प	पंचम असाछि, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक		

॥ इति गौडसारंग संपूर्णम् ॥

अथ धवलिसरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंस विभाग करिवेको । अपनें मुखसों वरारीसंकीर्ण जैतिसरी गाईके । वांको धवलिसरी नाम कीनों ॥ अथ धवलिसरीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगबिरंगे वस्त्र पहरे है । अपनी इछासों सखीनके संग विहार करे है । फूलनसों जाकी वेनी गुही है । चवर जाके ऊपर हुरे है । अनेक प्रकारके शृंगार करे है । कामदेव करिके व्याप्त है । हाथमें कमल फिरावे है । कसूमल चोली पहरे है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । चतुरनके मनको वस करे है । ऐसी जो रागनी तांहि धवलिसरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । सारि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । दुपैर उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी व ते । सों जंत्रसीं समझिये ॥

धवलिसरीरागनी (संपूर्ण).

स	षड्ज असिंह, मात्रा तीन	नि	निषाद् उतरी, मात्रा एक
नि		ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मामा एक
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
R	रिषम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, माना एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
1		}	
ग.	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग रि	गांधार उतरी, मात्रा एक
<u> </u>			

॥ इति धवलसिरी संपूर्णम् ॥

अथ जैतिसरीकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीन उन रागनमें सो विभाग करिवेको। अघोर नाम मुखसों जैतिसरी गाईके। वांको देशकारकी छाया युक्ति देखी देशकारको दीनी॥ अश्र जैतिसरीको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है। कसूमल वस्तनको पहरे है। नाकमें लवंगकी मांति वेसरी पहर है। कमलकन्लीनको कानमें पहर है। ओर कसूमल कंचूकीको पहरे है। चंद्रमाकी कलासों कृटिल केसरिकी विंदी जाक लिलाटमें है। काजर जीके आंखनमें है। दोऊ हाथमें काचकी चूरी है। जाके केसनकी सुंदर वेनी है। अंगनमें सोनेक आम्चण पहरे है। ऐसी जो रागना तांहि जैतिसरी जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसा गाई ह। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके चोथे पहरमें गावनी। यह तो याको बखत है। और रात्रिमें प्रथम पहरमें चाहो तब गावो। याकी आलापवारी सात सुरनमें किये। रागनी वरते। सों जंबसों समिनिय॥

जैतसिरी (संपूर्ण).

	अवात्तरा (स्रयूष).			
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक	
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक	
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक	
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक	
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक	
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा एक	
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	घ	धेवत उतरी, मात्रा एक	
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक	

अथ फूलसरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसां विभाग करिवेकरे । अपने मुखसों संकीणं मालसिरी गाईके । वांको फूलसिरी नाम कीनों ॥ अथ फूलसरीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्थाम रंग है । रंगबिरंगे वस्व पहरे है । कोमल अंग है । सुगंधयक जाकी वेनी है । तांबूल जाके मुखमे है । ओर प्रवीण है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । नाकमें बडे मोतीनकी वेसरी पहरे है । चंदनको अंगराग लगाये है । मृगकेसे बडे जाके नेत्र है । तरुण अवस्था है । अपने पियसों हासीके बचन कहे है । हाथसों कमल फिरावे है । ऐसी जो रागनी तांहि फूलसरी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गाई है । स रिग मध्य निस । यातें संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी यहतो याको बखत है । दुपहर पीछे चाहो तब गावें। याकी आलापचारी सात सुरनमें कीये रागनीवरते । सों जंत्रसों समझिये ।

फूलसरी रागनी (संपूर्ण).

	8	•	
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन
₹	रिषम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार वडी, गांधा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-पूर्याधनासिरी ओर मुलतानी धनासिरी. २११

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढीं, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय

॥ इति फूलसरी रागनी संपूर्णम्

अथ पूर्याधनासिरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों पूर्या संकीर्ण धनासिरी गाईके । वांकों
पूर्याधनासिरी नाम कीनों ॥ अथ पूर्याधनासिरीको लखन लिख्यते ॥
स्याम रंग है । पीतांबर पहरे हैं । सब अंगनमें आभूषण पहरे हैं । एक हाथसों
कमल फिरावे हैं । मोतीनकी माला कंटमें हैं । सखी जाके संग है । वनमें विहार
करे हैं । आनंदके आंसू जाके नेत्रमें है । मंद्र सुरसों गावे हैं । ऐसी जो राग
तांहि पूर्याधनासिरी जांनिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि
ग म प ध नि स । यातं संपूर्ण है । याको दिनके तिसरे पहरमें गावनो । यहतो
पाको वखत है । ओर चाहो तब गावो यह राग मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सों जंत्रसों समिसिये ॥

पूर्याधनासिरी (संपूर्ण).

धेवत उतरी, मात्रा दोय

धैवत उत्तरी, मात्रा एक

पंचम असलि, मात्रा एक

मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा तीन	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिट, मात्रा एक
ध	धैवन उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति पूर्याधनासिरी संपूर्णम् ॥

अथ मुलतानी धनासिरीकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनं उन रागनमंसां विभाग करिवेको। अपने मुखसां पाहाडी राग संकीर्ण धनासिरी गाईके। वांको पहाडी धनासिरी नाम कीनों। याको लोकिकमें मुलतानीधनासिरी कहे है॥ अथ मुलतानि धनासिरीको स्वरूप लिख्यते॥ गोरो जाको रंग है। श्वेत वस्न पहरे है। मदसों छके जाके नेत्र है। मतवारे हाथी कीसी जाकी चाला है। नृत्य ओर गानमें आसक है। केसर चंदनको अंगराग कीये है। विभूती जाकी

मतमा रागाध्याय-मुलतानी धनासिरी और भीमपलासी. २१३

अलक है। अंगनमं अनेक प्रकारके आभूषण पहरे है। ऐसी जो रागनी तांहिं मुख्यानी धनासिरी जांनिय। शास्त्रमेंनो यह सात सुरनमें गाई है। स रि ग म प ध नि स। यातं संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी। यह तो याको बखत है। ओर चाहो तच गावो य रागनी मंगडीक है। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनीवरते। सों जंत्रसों समार्झिये॥

मुलतानी धनासिरी (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा तीन	प	पंचम असलि, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
4	पंचम असिह, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी मात्रा एक	स	षड्ज असिंटि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति मुलतानी धनासिरी संपूर्णम् ॥

अथ भी मपलासीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों विहागसंकीणंधनासिरी गाईके । वांको भीम-पलासी नाम कीनों ॥ अथ भीमपलासीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे हैं । सब अंगनमें आभूषण पहरे हैं । हरशके आंसू जीके आंखनमें हैं । अंगमें अरगजाको अंगराग कीये हैं । हाथमें जाके पानको बीडा है । वंगाके फूल ओर जायके फूलनसों गुही जाकी वेनी हैं । कंठमं मालतीके फूलनकी माला है । विरहनीके मनको वेध हैं । ऐसी जो रागनी तांहि भीमपलासी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यांत संपूर्ण है । याको दिनके चोथे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । यह रागनी मंगलीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

भीमपलासी (संपूर्ण).

प	पंचम असिल, मात्रा दोय	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धेवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
4	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-शुद्धगौड, रीतिगौड ओर मालवगौड रागनी.२१५

q	पंचम असछि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिंह, मात्रा एक	भ	पड्ज असलि, मात्रा तीन
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति भीमपलासी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपने तत्पुरुष नाम मुखसों शुद्धगौड गाईके । वांको श्रीरागकी छाया युक्ति देखि श्रीरागको पुत्र दीनों ॥ अथ शुद्धगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । कसूमल कसरिया वस्त्र पहरे है । बडे नेत्र है । कंटमें कमलके फूलनकी माला पहरे है । कसरके तिलक ललाटमें है । अपने समान सखा जाके संग है । शृंगाररसमें मग्न है । मदमें छक्यो है । मतवार हाथीकीसी चाल है । ओर बन-विहारमें आसक है । तांबूल खाये है । सब अंगनमें आमूर्ण पहरे है । ऐसो जो राग तांहि शुद्धगौड जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरुनमें गायो है । नि ध पम गिर नि स । यातें संपूर्ण है । संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दुपहर उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरुनमें किये । राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धगौड संपूर्णम् ॥

अथ रीतिगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों।
विभाग करिवेको अपनें मुखसों राग गाईके। वांको रीतिगौड नाम कीनों ॥
अथ रीतिगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको धैवतसो उच्चार होय। जाके अवरोहमें
पंचम सुरहीन होई। ओर जाको न्यास स्वर षड्ज ओर रिषममें होय। ऐसोणो राग तांहि रीतिगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनसों गायो है। ध
निस्न रिगम प्या गांतें संपूर्ण है। याको वीसरे पहरमें मावनों। पाकी जा-

लापचारी सात सुरनमं किये । राग वरतें यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति रीतिगौड संपूर्णम् ॥

अथ मालवगोडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनं मुखसों मालवसंकी र्णगोड गाईके । वांको मालवगोड नाम कीनों ॥ अथ मालवगोडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगिवरंगे वस्त्र पहरे है। पद्मसरीखो जाको मुख है। पद्मसे बंड जाके नेत्र है। कंठमें फूलनकी माला है। मुखमें तांबूल खायो है। अपनें समान मित्रनकरिके संयुक्त है। केसरिको तिलक जाके लिलाटमें है। शृंगाररसमें मग्न है। अंगनमें आभूषण पहरे है। ऐसो जो राग तांहि मालवगोड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यांतें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनों। यह तो याको बखत है। दुपहर पिछे चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये। राग वरतेसों। जंत्रसों समिझिये॥

मालवगोड (संपूर्ण).

ध	धेवत असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
स	षडज असलि, मात्रा एक	ध	धेवत असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिह, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा एक
ध	धेवत असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

सप्तमी रागाध्याय-मालव, नारायण, केदार और नान्हडगौड. २१७

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असिट, मात्रा एक	ध	धैवत असलि, मात्रा चार
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवन असिल, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असिंछ, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक		

॥ इति माछवगौड संपूर्णम् ॥

अथ नारायणगोडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । जा रागमें गांधार स्वर तीत्र होय जाके अवरोहमें धैवत गांधार न होय । निषादस्वर आदिमे ओर मध्यमें होय । जाके आरोहमें रिषम ओर पंचमको गमक अपनें स्थानमें होय । जामें पछोस्वर आगेके स्वर ताँहि होय । जाको न्यासस्वर मध्यमस्वरमें होय । ऐसो जो राग तांहि नारायण गौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । नि स रि ग म प ध नि स नि प म रि स । यांते संपूर्ण है । तीसरे पहर उपरांति गावनों याकी आछाप चारी सात सुरनमें किये । राग वरते यह राग सुन्यो नहीं। यांते जंत्र बन्यो नहीं। जांकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतछी ज्यों ॥ इति नारायणगौड संपूर्णम् ॥

अथ केदारगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवको । अपने मुखसों केदारसंकी जिगीड गाईके। वांको केदारगीड नाम किनों ॥ अथ केदारगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो रंग है । कस्मूमल केसिया यस पहरे हैं । चंदनको अंगराग किये है । केसिरको तिलक लिलाटमें है । कमलकी माला कंटमें है । मुखमें तांबूल चवावे है । भित्रन करिके सिहत है । शिवजीके ध्यानमें मग्न है । एक हाथमें दंड है । दूसरे हाथमें तिश्रूल है । शांसकिसी तीन रेषा जाक कंटमें है । बड़े नेत्र है । मद मुसकान करे है । ऐसो जो राग तांहि केदारगीड जांनिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । सि रा म प ध नि स । यांते संपूर्ण है । रातिके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वस्त । यह राग सुन्यो नहीं। यांते जंत्र बन्यो नहीं ॥ इति केदारगीड संपूर्णम् ॥

अथ कान्हडगौडकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसों कान्हडसंकीर्णगौड गाईके । वांको कान्हडगौड नाम कीनों ॥ अथ कान्हडगौडको स्वरूप लिख्यते ॥ गौर जाको रंग है । पीनतांबर पहरे हैं । केसरको तिलक जाके लिलाटमें हैं । शृंगाररसमें मम है । अपनें समान मित्रन करिके सिहत है । बडे जाके नेत्र है । माथेपें जाके मुकुट है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । वनमें बिहार करे है । ऐसी जो राग तांहि कान्हडगौड जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात गुरनमें गायो है । नि ध प म ग रि स । यांतें संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर चौपहर पिछे बाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकि सिवाय बुद्धि होय।सो वरतलिण्यो ॥ इति कान्हडगौड संपूर्णम् ॥

अथ पूर्वीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपने मुखसों नट विलावल संकीर्ण पूर्वी गाईके । वांको पूर्वी नाम कीनों ॥ अथ पूर्वीको स्वरूप छिख्यते ॥ छाछ जाको रंग है । श्वेत वस्ननको पहरे हैं। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। मुखमें तांबूल चवावे है। सुंदर जाके केस है। छिछाटमें तिछक है। माथेपें जाके मुकुट है। काननमें कुंडल पहरे है। हाथमें कमल फिरावे है। ओर धोडापें चढयो है। स्त्रीनके मनको हरे है। तरुण जाकी अवस्था है। मंद्रमुसिकानि करे है। ऐसी जो राग तांहि पूर्वी जांनिये। शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है। स रिगम प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके चोथे पहरमें गावनो। यह नो याको वखत है। आर संध्या-तांई चाहो तब गावो । याकी आछापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

पुर्वी (संपर्ग).

	e' /		/-
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असटि, मात्रा दोय
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	21	गंधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोयं
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा दोय
रि	रिषम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
77		LT	ी धैवत उत्तरी मात्रा एक

प	पंचम अप्ताली, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक		

॥ इति पूर्वीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ चैत्रगोडीकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको। अपनें मुखसों चेत्रगोडी गाईके। श्रीरागकी छायायुक्ति देखि। चैत्रगोडी नाम करि श्रीरागको पुत्र दीनों॥ अथ चैत्रगोडीको स्वरूप लिख्यते॥ सोल्ह बरसकी जाकी अवस्था है। गोरा जाको रंग है। ओर अनेक रंगके वस्त्र पहरे है। हाथमें कमल फिरावे है। सुंदर जाके कस है। बडे नेत्र है। सिख्याण जाकी स्तुति करे है। ओर उनके संग विहार करे है। ऐसो जो राग तांहि चैत्रगोडी जांनिये॥ शास्त्रमंतो यह पांच सुरनमं गायो है। स रि म पित सा यातें ओडव है। याको अस्तसमें गावनो। यह तो याको वस्त है। ओर रातिके प्रथम पहरमें गावो। याकी आलापचारी पांच सुरनमं किये राग वरते। सो जंत्रसों समिक्षिये॥

चैत्रगौडी (ओडव).

स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असारि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति चैत्रगौडी ओडव संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धगोडीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करिवेको । शुद्धकल्याण संकीर्ण गाईके । वांको शुद्धगोडी नाम कीनों ॥ अथ शुद्धगोडीको स्वरूप टिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत वस्त पहरे है । केसरको अंगराग कीये है । मोतीनकी माटा पहरे है । अनेक आभूषण पहरे है । सिंहासने बेठी है । सखीनकी सभाम सोभीत है । मंद मुसकान करे है । ऐसी जो रागनी तांहि शुद्धगोडी जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । सरि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरकी दूसरी घडीमें गावनी । यह तो याको वस्तत है । ओर रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वस्ते । यह रागनी सुनी नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥

अथ पूर्वीगोडिकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेंसों विभाग करिवेका । अपने मुखसों पूर्वीसंकीणंगीडी गाईके । वांको पूर्वीगौडी नाम कीनों ॥ अथ पूर्वीगौडीको स्वरूप लिख्यते ॥ तरुण जाकी अवस्था है । सांवरो जाको रंग है । केसरकी विंदी जाके लिलाटमें है । ओर रंगबिरंगे वस्ननको पहरे है । हाथमें कमल फिरावे है । चंद्रमाको देखकर मस्नताकी चेष्टा करे है ।

चंदनको अंगराग किये है। मोतीनकी माला जाके कंठमें हैं। सुंद्र गुहीहुई चोठी जाके पीठेंपे है। शृंगाररसंमं मझ है। ऐसी जो राग तांहि पूर्वीगोडी जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है। स रिगम पधिन स। यातें संपूर्ण है। याको संध्यासमें गावनी यह तो याको बखत है। ओर रातीके पहले पहरतांई चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किजीये॥ इति पूर्वीगोडी संपूर्णम्॥

अथ इमनरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों बिलावल संकीर्ण कल्याण गाईके । वांको इमन नाम कीनों ॥ अथ इमनको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। श्वेत वस्त्र पहरे है । कस्तूरी केसरको अंगराग कीये है । माथपें मुकुट है । मिणको जडाऊ कुंडल है । रत्नके सिंहासनपें बेठचो है । मुखमें तांबूल चावे है । सुगंधसों भौरा जाके वोरपास गुजार करे है । हाथसों कमल किरावे है । जाके आगे गंधवें गान करे है । देवांगना नृत्य करे है । ऐसो जो राग तांहि इमन जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रिगमपध निस । यांतें संपूर्ण है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । आधि राततांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंबसों समझिये ॥

इमनराग (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ч	पंचम असिछ, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असाठि, मात्रा एक

॥ इति इमन राग संपूर्णम् ॥

अथ इमनकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसीं विभाग करिवेको । अपने मुखसों इमन संकीर्ण कल्याण गाईके । वांको इमन-कल्याण नाम कीनों ॥ अथ इमनकल्याणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत वस्त्र पहरे है । चंदनका अंगराग किये है । मुखमें तांबूछ चवावे है । कंठमें मोतीनकी माला है । कमलपत्रसे बडे जाके नेत्र है । सब अंगनमें आभूषण पहरे है । छत्र फिरे है । चवर दुरे है । रत्नकं सिंहासनपं बडो दरबार किये बेठो है । कसरको तिलक लिलाटमें है । अगनमें अनेक प्रकारके पूलनके गहना पहरे है । मदसों छको है । तरुण जाकी अवस्था है । स्नीनके संग विहार करे है । ऐसो जो राग तांहि इमनकल्याण जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ योतं संपूर्ण है । याको संध्यासमें गावनों । यह तो याको बखत है । आधी राततांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

संगीतसार.

इमन- ,ल्याण (संपूर्ण.)

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दीय
स	षड्ज असरी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा दोय
ध	धैवत चढीं, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा द्रोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

રિ	रिशम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
िं	निपाद चढी, मात्र द्वीय	प	पंचम असिंह, मात्रा एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा तीन
नि	निषा चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असिंछ, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असाछि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा तीन
स	षड्ज असिंह, मात्रा दोय	ध	धेवत चढी, मात्रा दोय
प	पंचम असछि, मात्रा एक	प	पंचम असारि, मात्रा एक
स	षड़ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति इमनकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध इ.ल्यः णकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेसीं विभाग करिवेको अपने मुखसीं राग गाईके वांको शुद्धकल्याण नाम कीनों ॥ अथ शुद्धकल्याणको स्वरूप टिख्यते ॥ जा कल्याणमें मध्यम और निषाद स्वर न होय । ऐसी जी राग तांहि शुद्धकल्याग जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । स रि ग प ध स । योतं औडव है । याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों ॥ यह तो याको वखत है । संध्या उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलाप चारी पांच सुरनमें किये रागवरते । सों जंत्रसो समझिये ॥

शुद्धकल्याण राग (ओडव).

प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ч	पंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांथार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स	वर्ज असलि, मात्रा एक

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिंह, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिट, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
-	CONTRACTOR DESCRIPTION OF THE PROPERTY OF THE		
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय		

॥ इति शुद्धकल्याण राग संपूर्णम् ॥

अथ जैतकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको जैतश्री । केदार संकीर्ण कल्याण गाईके वांको जैतकल्याण नाम कीनों ॥ अथ जैतकल्याको स्वरूप छिल्यते ॥ गोरी जाको रंग है । कसूपछ वस्त पहरे है। नाकमें मोतीकी बुलाक पहरे है। सोनेके कुंडल पहरे है। हाथमें जडाऊ कडा है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । कमलपत्रसे विशास्त्र नेत्र है। छत्र जापें फिरे है। चवर ढुरे है। रत्नके सिंहासनेपें बठचो है। सब अंगनमें आभूषण पहरे है। ऐसी जो राग वांहि जैतकल्याण जानिये॥ शास्त्रमेता यह सात मुरनमें गायो है। ग म प ध नि स रि ग। यातें संपूर्ण है। याको रातिके पथन पहरमें गायनो। यहतो याको वखत है। आधी राति पहले चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरेतं। सों जंत्रसों समझिये॥

जैतकल्याण (संपूर्ण).

प	पंचम असिंह, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निपाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ध	वैवत असलि, मात्रा एक
म	मध्यम चढी. मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ असिट, मात्रा एक
रि	रिषभ असिट, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	ध	धैवत असिल, मात्रा एक
		A. Principal State of the Local	
4	पंचम असन्हि, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक
स '	षड्ज असलि, मात्रा दीय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा दोय

सप्तमो रागाध्याय-सावणीकल्याण ओर पूरियाकल्याण. २२९

C 1000	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	स	पड्ज अचित, माधा दीय
	रि	रिषभ अरुलि, मात्रा एक		

॥ इति जैतकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ सावणीक ल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमं-सों विभाग करिवेको । अपने मुखसों बिटावट, कानीद संकीणीक ल्याण गाईके । बांको सावणीक ल्याण नाम कीनों ॥ अथ सावणीक ल्याणको स्वस्त्य लिख्यते ॥ स्वेत जाको वर्ण है । स्वेत वस्त्रनको पहरे है । एक हाथमें कमल है । मोतिनकी माला कंठमें है । मुकुट माथेपें हे । काननेमें कुंडल है । रत्नके सिंहासनेपें बैठयो है । छत्र जाके उपर फिरे है । चवर जाके उपर हुरे है । तरुण पुरुषनकी सभा किये है । मृदंगको शब्द जाको प्यारो हे । ऐसो जा राग तांहि सावणीक ल्याण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । संघ्यासमें गावनों । यह तो याको बस्तत है । ओर चाहो तब गावो । यार्ज आलापचानि सात सुरनमें किये राग वरोसों । जंबसों समझिये ॥

सावणीकल्याण (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिंट, मात्रा एक	स	षड्ज अविजि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा देख	ध	धैयन चढीं, मात्रा एक
म	षड्ज असारि, मारा दोय	n	निषाद लटी. सादा एक '
ग	गांबार चढी, मात्रा दोव	ध	धेवत पत्री, मात्रा दोष

प	पंचम असिल, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा तीन

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ार	रिषम चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिट, मात्रा एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति सावणीकल्याण संपूर्णम् ॥

अथ पूरियाकल्याणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागन-मेंसों विभाग करिवेको। अपनें मुलसों पूरिया संकीर्णकल्याण गाईके। वांको पूरियाक-ल्याण नाम कीनों॥ अथ पूरियाकल्याणको स्वरूप लिख्यते॥ जा रागके आरंभमें तीव मध्यम होय ओर स्वर कंपजुत होय। निषाद जामें तीव होय। ऐसो जो राग तांहि पूरियाकल्याण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है। याको रातिके प्रथम पहरमें गावनों। यहतो याको बखत है। आधि राति पहले चाहो तब गावो। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकि सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति पूरियाकल्याण संपूर्णम्॥

अथ मलोहांकदारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों स्यामरागसंकीणं केदारो गाईके । वांको मलोहा-केदारो नाम कीनों ॥ अथ मलोहांकदारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । कंटमें रत्नकी माला पहरे है । भालमें केसरीको तिलक है । मदसों छक्यो है । जाके बाये हाथमें दंड है । दाहिनें हाथमें निशूल है । माथेपें जाके मुकुट है । काननमें कंडल है । हाथमें जाके कमल है । मित्रनके संग बिहार करे है । कमलपत्रसे विसाल नेत्र है । मधुर सुरनसों गान करे है । ऐसो जो राग तांहि मलोहांकदार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । नि स रि ग म प ध नि । योतें संपूर्ण है । याको रातिक प्रथम पहरेमें गाव-नों । यह तो याको बखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों जंत्रसों समझिये ॥

मलोहाकेदार (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असाछि, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असछि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा दोय
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक ' .
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	प	पंचम असछि, मात्रा एक

स	षड्ज अाि, गात्रः एक	प	पचन अस.छि, मात्रा एक
रि	रिवम चढी, मात्रा एक	्य	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
नि	निवाद चर्ढा, शत्रा दोय	प	वंचम असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	ध	धैवत चढीं, मात्रा दोय
Ч	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा दोय	स	पड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मडोहाकेदार संपूर्णम् ॥

अथ शंकरके दारकी उत्पत्ति ालख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करियेको । अपने मुखसों शंकरके दार संकी फेंक्सर गाईके । वांको शंकरके दार नाम की नों ॥ अथ शंकरके दारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतां वर पहरे है । कमल गे ने ग है । चंदा के मरको अंगराग किये है । तरुण जाकी अगस्या है । मरसों छक्या है । कमल नकी माल कंठमें है । अने क आभूत्र ग पहरे है । खीनके संग विहार करे है । ऐसी जो राग तांहि शंकरके दार जानिये ॥ शास्त्र में तां यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । याने संपूर्ण है । याको दिनके दुसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । दिनमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरते सों । जंत सों समिसिय ॥

सप्तमो रागाध्याय-शंकरकेदार, शंकरानंद ओर शंकराअरुण. २३३

1-	राकरकदार (संपूर्ण).				
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक		
प	पंचम असलि, मात्रा दीय	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
ग	गांधार चढी, मात्रा देाय	ध	धैवत चढी, मात्रा एक		
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक		
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक		
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक		
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक		
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	॥ इति शंकरकदार संपूर्णम् ॥			

अथ शंकरानंद्की उत्पत्ति लिख्यते ॥ शंकराभरणसो उत्पत्ति होय। रिषम गांधार पंचम जाके अंश स्वर होय। रिषममें जाको न्यास स्वर होय। ओर जामें अंशस्वरसें वादि स्वर तक तिनके यागते कंप होय। ऐसो जो राग तांहि शंकरानंद जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याका सबसमें गावनों यह राग मंगलीक है। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सा वरतली ज्यो ॥ इति शंकरानंद संपूर्णम् ॥

अथ शंकराअरुणकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंत्तां विभाग करिवेको । अपने मुखसों बिहाग धनासिरी संकीर्ण गाईके । वांको शंकराअरुण नाम कीनो ॥ अथ शंकराअरुणको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरी जाको रंग है । उजले वस्त्र पहरे है । कामदेवको मोहे है । मिणनको जडाऊ कुंडल पहरे है । हाथमें जडाऊ कडा है । कमलसे जाके नेत्र है । मुखमें पानको विडो खाये है । देहमें चंदनको लेप किये ह । सब अंगनमें गहना पहरे है । दाडिमको फूल जाके हाथमें है । बडो कामी है । कामदेवके समान रूप है । विरहनिके मनको वेधे है । चंपाके जायके फूलनकी माला जाके कंठमें है । ऐसा जो राग तांहि शंकराअरुण जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । योतं संपूर्ण है । याको रातिके दुसरे पहरमें गावनो । यह तो याको वखत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

शंकराअरुण राग (संपूर्ण).

नि	निषाद चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-शंकराअरुण ओर जुजावंतकान्हडा. २३५

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिंछ, मात्री एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिट, मात्रा दोय	Ч	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा दोय	T T	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	मध्यम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय		

।। इति शंकराअरुण राग संपूर्णम् ॥

अथ जुजावंतकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमं-सों विभाग करिवेको । अपने मुखसों जुजावंत सकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको जुजावंतकान्हडो नाम कीनों ॥ याहीको लोकिकमें जेजकान्हरो कहत है ॥ जुजावंत-कान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । कंठमें मोती-नकी माला है । केसरको तिलक लिलाटमें है । चंदनकेसरको अंगराग किये है । काम-देवको मित्र है । हाथमें जाके कडां है। काननमें कुंडल है । छत्र चवर जाके उपर फिरे है । वनमें विहार करे है । ऐसो जो राग तांहि जुजावंतकान्हडो जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको आधि राति पिछे गावनो । यहतो याको वस्तत है । ओर रातिमें चाहो तब गावे। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समिस्रये ॥

संगीतसार. जुजावंतकान्हडा (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
रि	रिषम चढी, मात्रा तीन	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

म	'मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-नाईकीकान्हडा ओर गारा राग. २६७

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा दोय

॥ इति जुजावंतकान्हडा संपूर्णम् ॥

अथ नाईकीकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागन-मेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गारा, काफी, कान्हडो, गाईके । वांको नाईकीकान्हडा नाम कीनो ॥ अथ नाईकीकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदर-लिविण्थ युक्त जाको अंग है । रागकी धुनी जाको प्यारी है । कोकिलके समान जाके कंठको नाद है । बडो रसज्ञ है । गोरो जाको रंग है । पीतांबरको पहरे है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । ऐसो जो राग तांहि नाईकीकान्हडा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दुसरे पहरमें गावनो । यहतो याको वखत है । सांझ उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते। सो जंत्रसों समझिये ॥

नाईकीकान्हडा (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	म	मध्य उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असठि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति नाईकीकान्हडा संपूर्णम् ॥

अथ गारा रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों काफी खंभायची संकीर्णगारा गाईके । वांको गारा नाम कीनों ॥ अथ गाराको स्वरूप लिख्यते ॥ सुंदर लावणतायुक्त जाको शरीर है । रागकी धुनि जाको प्यारी है । कोकिलके समान जाके कंठको नाद है । नानापकारके आभूषण पहरे है । शृंगाररसमें मम्न है । ऐसो जो राग तांहि गारा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यांत संपूर्ण है। याको दूपहर उपरांति चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सों जंत्रसों समझिये ॥

सप्तमो रागाध्याय-गारा ओर गाराकान्हडा. २३९ गारा राग (संपूर्ण).

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	ध	धेवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असछि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिंह, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति गाराराग संपूर्णम् ॥

अथ गाराकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों गारासंकीर्ण कान्हडो गाईके । वांको गाराकान्हडा नाम कीनों ॥ अथ गाराकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांवरको पहरे है । माथेपं जाक मुकुट है । मोतीनकी माला कंठमें है । हाथमें जडाऊ कडां है । सोंदर्भ लावण्ययुक्त जाको शरीर है । रागकी धुनि जाको प्यारी है । कोकिलकोसो जाको कंठको नाद है । बडो रसज्ञ है । ऐसो जा राग तांहि गाराकान्हडा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर सांझ उपरांति चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसो समझिये ॥

गाराकान्हडा (संपूर्ण).

रि	रिषभ असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असिल, मात्रा दोय
स '	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-गाराकान्हडो और हुसेनीकान् डो. २४१

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक
रि	रिषम असिल, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिटि, मात्रा दोय	प	पंचम असिछि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिंछ, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक		

॥ इति गाराकान्हडो संपूर्णम् ॥

अथ हुसेनीकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें-सों विभाग करिवेको । अपने मुखसों देषाख सुहासंकीणं कान्हडो गाईके । वांको हुसेनीकान्हडो नाम कीनों ॥ अथ हुसेनीकान्हडाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांवर पहरे है । माथेप मुकुट है । हाथनमें कडां पहरे है । बीररसमें मग्न है । ढंबो शरीर है । चंद्रमासो मुख है । शृंगाररसमें मग्न है । तरुण अवस्था है । ऐसो जो राग तांहि हुसेनीकान्हडो जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । प ध नि स रि ग म प । यांते संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है। संध्या उपरांति चाहो तब गावो । याकी आठापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

संगीतसार.

हुसेनी ान्हडो (संपूर्ण).

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	<u>म</u>	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असंत्रि, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा दोय
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ असछि, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, माशा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
घ	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम असाठि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

सप्तमा रागाध्याय-खंभायचीकान्हडो ओर पूरियाकणाट. २४३

अथ खंभायचीकान्हडाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों खंभायची संकीर्णकान्हडा गाईके । वृांको खंभायचीकान्हडो नाम कीनों ॥ अथ खंभायचीकान्हडाको स्वरूप छि-ख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । सुंदर रूप है । बडो रिसलो नाद जाको प्यारो है । माथेपे जाके मुकुट है । हाथनमें कडां पहरे है । कोिक-लकोसो जाके कंठको नाद है । पिय वचन कहे है । मोतीनकी माला कंठमें है । एसो जो राग तांहि खंभायचीकान्हडो जािनये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । योतें सपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिके प्रथम पहरमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

खंभायचीकान्हडो (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असछि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असारि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढीं, मात्रा दोय
	·		

प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धेवत चढी, मात्रा एक

प	पंचम असिछि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
स	षड्ज असली, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति खंभायचीकान्हडो संपूर्णम् ॥

अय पूरियाकणांटकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसी विभाग करिवेको । अपने मुखसों पूरियासंकीर्णकान्हडो गाईके । वांको पूरियानकर्णाट नाम कीनों ॥ अथ पूरियाकर्णाटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर षड्जमें होय । षड्जहीकी मूर्छना जाके आरंभमें होय । ऐसी जो राग तांहि पूरियाकर्णाट जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको रातिके दूसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । आधि राति पहले चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

पूरियाकर्णाट (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम इतरी, मात्रा तीन

प	पंचम असिल, मात्रा एक	ч	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन
स	षड्ज असिल, ^{मा} त्रा दोय	Ч	पंचम असिल, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा दोय
म	षड्ज असिल, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिंह, मात्रा दोय

॥ इति पूरियाकर्णाट संपूर्णम् ॥

अथ सूरकीमल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमं-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों सोरठकान्हडसंकीर्णमल्हार गाईके । वांको सूरकीमल्हार नाम कीनों ॥ अथ सूरकीमल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । कमलपत्रसे विसाल नेत्र है । चंद्रमासों मुख है । शृंगाररसमें मग्न है । कंठमें मोतीनकी माला पहरे है । मोरनके संग कीडा करे है । वर्षाऋतुमें जाको आनंद है । हीराकी कनीसो जाके नेत्रका तेज है । हाथनमें जडाऊ कडां पहरे है । कुंडल जाके कानमें है । माथेपे मुकुट है । मित्रन करिके युक्त है । ऐसो जो राग तांहि सूरकीमल्हार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यांतें संपूर्ण है । याको आधि रात्रीसमें गावनों । यह तो याको बखत है । वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये । राग वरतेसों । जंत्रसों समिक्तिये ॥

संगीतसार.

सरकीमल्हार (संपूर्ण).

म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	िर	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	प	पंचम असिट, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असाठि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
स	षंड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-नायकरामदासकी और मीयाकी मल्हार. २४७

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	रि	रिषम चढी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक		

॥ इति सूरकीमल्हार संपूर्णम् ॥

अथ नायकरामदासकीमल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनेमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों अडानासंकीर्णमल्हार गाईके । वांको नायकरामदासकी मल्हार नाम कीनों ॥ अथ नायकरामदासकी मल्हारको स्वरूप लिख्यते । गोरो जाको रंग है । रंगविरंगे वस्त्र पहरे हैं । बडो कामी है। कंटमें मोतीनकी माला पहरे हैं । मेघकी गर्जना सुनिके आनंदको पावे हैं । मोरनके संग कीडा करे हैं । शृंगाररसमें मग्न है । हाथनमें कडां पहरे हैं । माथेपें मुकुट है । काननमें कुंडल है । सिंहासनपें बेटचों है । माथेपें छत्र फिरे हैं । ओर पास जाके चवर दुर है । मित्रन करिके सहित है । ऐसो जो राग तांहि नायकरामदासकी मल्हार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । पध नि स नि ध प म ग रि स । यांतें संपूर्ण है । याको वर्षाऋतुमें गावनों । यह तो याको बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । राग वरंतेसों । जंत्रसों समझिये ॥

नायक रामदासकी मल्हारराग (संपूर्ण).

		-	-
नि	निषाद उतरी, मात्रा	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय

ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय	प	पंचम असिल, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति नायकरामदासकी मल्हारराग संपूर्णम् ॥

अथ मीयाकी मल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन राग-नमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसीं मल्हार गाईके । वांको मेघरागकी छाया युक्ति देखि मेघरागको दीनों । अथ मीयाकी मल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम वर्ण है । लहरिया अंगमें पहरे है । चंदनको अंगराग कुचनमें लगाये है । रंग-विरंगे वस्त्र पहरे है । मोतीनके हार कंठमें पहरे है । कांति फेलरही है । मुखसीं पान खाय है । पीक जाके कंठमें झलक है । मेघ गरजे है । विजुरी चमके है । तीसमें जाके ओर पास कामसे दुःखी मोर ओर कुकुट नाचरहे है । ऐसो जो राग तांहि मीयाकी मल्हार जानिये । शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । समिमो रागाध्याय-मीया नि मस्हार और धूरिया मस्हार. २४९ कोईक याको पांच सुरनमेंभी कहे है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको अर्थरात्रि समें गावनों यहतो याको वस्तत है। वर्षाऋतुमें चाही तब गावी। याकी आछापचारी सात सुरनमें किये रागवरते। सो जंत्रसों समझिये॥

मीयाकी मल्हार (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
स	पड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	स	षह्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	प	पंचम असाहि, मात्रा दोय
स	षड्ज असछि, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति मीयाकी मल्हार संपूर्णम् ॥

अथ धूरिया मल्हार-ि उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसों मल्हार जेजेवंती गाईके । वांको धूरिया मल्हार नाम कीनों ॥ अथ धूरिया मल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । केसरको तिलक लिलाटमें है । रत्नकी माला कंठमें है । कामदेव युक्त है । मोरनके संगकीडा करे है । ऐसी जो राग तांहि धूरिया मल्हार जांनिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको वर्षाऋतुमें गावनों । यहतो याको वखत है । याकी आलाप-वारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

धूरिया मल्हार (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय		
रि	रिषभ चढी, मात्रा तीन	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक		
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन		
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

स	षड्ज असिल, मात्रा तीन	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा चार	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा दोय	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
	पंचम असंहि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति धूरिया मल्हार संपूर्णम्

अश्व नटमल्हारकी उत्पत्ति-लिख्यते ॥ शिवजीनं उन - रामनमें सां विभाग करिवेको । अपने मुखसों नट संकीर्ण मल्हार गाईके। वांको नटमल्हार नाम कीनों ॥ अथ नटमल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ श्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । सुपेद वस्त्र ओढे है । मुकुट जाके माथेपें है । कुंडल जाके कानमें है । मोतीनकी माला पहरे है । हाथमें खड्ग है । घोडापें चढचो है। मंद मुसकान युक्त वचन कहे है । बिलासमें वर्षासमें मोरनको नचावे है । मोरनसो विनोद करे है । कमलसे नेत्र है । ऐसो जो राग तांहि नटमल्हार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । याको अंशस्वर महस्वर पड्जमें जानिये ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है । याको वर्षाऋतुमें सांजसमें गावनां । यह तो याको वस्तत है । वरखामें चाहो तब गावो । याकी आखाद्वारां सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

नटमस्यार (संपूर्ण).

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा तीन	प	पंचम अप्तलि, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा दोय
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

ध.	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
4	पंचम असछि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	प	पंचम असाछि, माना एक

सप्तमो रागाध्याय-गोड मल्हार ओर पारिजातके मतसौ राग. २५३

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
स	पड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति नटमल्हार राग संपूर्णम् ॥

अथ गोड मल्हारकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों गोड संकीणं मल्हार गाईके । वांको गोड मल्हार नाम कीनों ॥ अथ गोड मल्हारको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । मदसों जाको परिचय है । कंठमें माला पहरे है । बाये हाथमें ढाल है । दाहिने हाथमें भाला है । सिंहनाद करे है । माथेपें फूलनको मुकुट है । भालमें केसरिको तिलक है । वीररसमें मग्न है । वनमें विचरे है । मनमें शिवजीको ध्यान करे है । ओर उद्भट है । ऐसो जो राग तांहि गोड मल्हार जांनिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । घप म ग रिस स रिगम प ध निस । यातें संपूर्ण है । याको अर्ध रात्रिसमें गावनों । यहतो याको वखत है । वर्षाऋतुमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये ॥ इति गोड मल्हार संपूर्णम् ॥

॥ अथ पारिजातके मतसौं राग लिख्यते ॥

तहां प्रथम नीलांबरी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको नीलांबरी नाम कीनों ॥ अथ नीलांबरीको स्वरूप लिख्यते ॥ जा रागमें षड्ज मामकी मुर्च्छना होय। साबों सुरनके मेलमें उत्पन्न होय। जामें सुंदर कंप होय। जाको सुद्ध स्वर कंपमें होय। न्यास स्वर मध्यम होय। ओर तैसेंही गांधार स्वर रिषम स्वर निषाद स्वर येद्ध अंशस्वर न्यासस्वर होत है। ओर जामें षड्ज स्वरको उच्चार कीजिये। पंचमके उच्चार कीजिये। ओर पंचमकी उच्चार करिके षड्ज स्वरको उच्चार कीजिये। ऐसी जो राग तांहि नीलांबरी जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। स रि ग म प ध नि स। यातें संपूर्ण है। याको प्रभातसमें गावनो। यहतो याको वखत है। ओर चाहो तब गावो। यह राग मंगलीक है। याकी आलापचारि सात सुरनमें किये। यह राग सुन्यो नहीं जातें बुद्धि चली नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो॥ इति नीलांबरी संपूर्णम्॥

अथ मुखारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीमें उन रागनमंसों विभाग करिवेको। अपने मुखसों राग गाईके वांको। मुखारी नाम कीनों ॥ अथ मुखारीको स्वरूप लिख्यते ॥ जा रागमें रिषमस्वर कोमल होय। गांधार स्वर पूरव संज्ञक होय। धैवत स्वरमें जाको गृह स्वर होय। ओर निषाद स्वर जहां पूर्व संज्ञक होय। धैवत स्वर जहां कोमल होय। षड्जमें जाको न्याम स्वर होय। कोईक याको गृहस्वर अंशस्वर न्यासस्वर षड्जहीमें कहत है। ओर पारिजातके मतसों षड्ज जाको न्याय स्वर होय। अंशस्वर पंचममें होय। ऐसो जो राग तांहि मुखारी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। ध नि स नि ध प म ग रि स। यातें संपूर्ण है। याको प्रभावसमें गावनों। यहतो याको वखत है। ओर चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरतें। यह राग सुन्यो नहीं यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलिज्यो ॥ इति मुखारी राग संपूर्णम् ॥

अथ देविपयूषिकाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवणीनं उन रागनेमंसां विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके वांको देविपयूषिका नाम कीनों ॥ अथ देविपयूषिकाको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । पीतांबर पहरे है । केसर चंदनको अंगराग किये है । अंतरसों भींजे ठंवे जाके केंस है । मोतीनकी माठा कंटमें है । माथेपें मुकुट है । हाथनमें जडाऊ कडां पहरे है । काननमें कुंडल पहरे है । देवतानकी समामें बठयो है । मधुर सुरनसों गावे है । ऐसो जो राग तांहि देविपयूषिका जानिये ॥ शास्त्रमेंतो सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध

सप्तमो रागाध्याय-हिंजेज, कोछ्रहास, घंटाराग, आदि रागनी. २५५

नि स । यांतें संपूर्ण है । याको मध्यांनसमें गावनों । यहतो याको वस्तत है । ओर संध्या तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग बरतें । यह राग सुन्यो नहीं यांतें बुद्धि नहीं चली यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति देविषयूषिका संपूर्णम् ॥

अथ हिंजेजरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवणीनं उन रागनमंसी विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको हिंजेज नाम कीनों ॥ अथ हिंजेजको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें गांधारकी ओर निषादकी गति तीन बेर होय है । यह हिंजेजके मेलमें भैरवादि राग अनेक होत है । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर निशादमें होय । अंतरकाकलीस्वर करिके सिहत होय । ऐसो जो राग नांहि हिंजेज जानिये ॥ अथ हिंजेजको लल्लन लिख्यते ॥ जामें पड्ज रिषम शुद्ध होय। ओर मध्यम पंचम शुद्ध होय। ओर जामें धेवत भी शुद्ध होय । ओर जामें मध्यम कोमल लघु होय । निषाद जामेर तीन होय । ऐसो जो राग नांहि हिंजेज जानिये ॥ या हिंजेजके मेलतें हिंजेजी ओर भैरवादिक राग होत है । शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । नि स रि ग म प ध नि । यांतें संपूर्ण है । यह लोक मिसद्ध थोरो है । संगीतशास्त्र गायवेवारे अधिक समझें सों हिंजेजको जानें । याको चाहो तब गावो । याकी आलाप-चारी सात सुरनमें किये । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें बुद्धि चली नहीं यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति हिंजेज राग संपर्णम् ॥

अथ कोल्लहासकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कोल्लहास नाम कीनों ॥ अथ कोल्लहासको लखन लिख्यते ॥ जा रागमें मध्यमस्वर नहीं होय । जाके अवरोहमें धैवतस्वर न होय । जाके आरंभमें गांधारस्वरकी मूर्च्छना होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर गांधारमें होय । ऐसो जो राग तांहि कोल्लहास जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । ग प ध नि स रि ग नि प ग रि स स रि ग । यांतें पाडव है । याको प्रभातसमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर दुपहर पहले चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वर्ते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कोल्लहास संपूर्णम् ॥

अथ घंटारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विमाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको घंटा नाम कीनों ॥ अथ घंटारागको लखन लिख्यये ॥ जा रागके आरंभमें गांधारस्वर होय। निषाद जाक अंतरमें होय। जामें कोमल धेवतस्वर होय। ऐसो जो राग तांहि घंटाराग जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात सुरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि स नि ध प म ग रि स । यांतें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरेमें गावनों । यहतो याको बखत है । ओर संध्या तांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें बुद्धि चली नहीं । जांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति घंटाराग संपूर्णम् ॥

अथ शर्बराकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शर्बरी नाम किनों ॥ अध्य शर्बरी-को छछन लिख्यते ॥ जा रागकी गोडीके मेछमें उत्पत्ति होय । ओर जहां याको गृहस्वर षड्जमें होय । अंशस्वर जाको पंचममें कीजिये । मध्यममें जाको न्यासस्वर कीजिये । ऐसी जो राग तांहि शर्बरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको सबसमेमें । गावनां यह राग मंगलीक है । याकी आछापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति शर्बरी संपूर्णम् ॥

अय पार्वतिकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके वांको पार्वती नाम कीनों ॥ अथ पार्वतीको लखन लिख्यते ॥ जो वेसरीखाडमें विभाषा होय । जाको षड्जमें अंशस्वर गृहस्वर होय । ऐसी जो रागनी तांहि पार्वती जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय वृद्धि होय । सो वरतलिज्यो ॥ इति पार्वती रागनी संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-शुद्ध, सिंहधर और चक्रधर राग. २५%

अथ शुद्धारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीन उन रागनमें से विभाग करिष्का । अपने मुखसों राग गाईके वांकी सुद्धा निर्म कीनी। अथ शुद्धाका लखन लिख्यते ॥ जो राग मिन पड्जकी भाषा होय जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर धेवतम समाप्त होय । जाके आल्लाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर धेवतम समाप्त होय । जाके आल्लाको भेवत होय । पंचम नहीं होय । जोर पड्जस्वर गांधारस्वरमें मिले होय । अथवा गांधार स्वरमें पंचम स्वरमें मिले होय । अथवा गांधार स्वरमें पंचम स्वरमें मिले होय । अथवा गांधार स्वरमें पंचम स्वरमें मिले होय । अथवा सात स्वरमें अथवा छ स्वरमें गायो है । अथवा सात सुरमें गायो है ॥ ध नि स रि म ध । यांचे ओहा है । ध नि स रि म म प ध स । यांचे संपूर्ण है । याको चाहो तब गांवो याकी आलादचरी सात स्वरनमें किय राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांचे बुद्धि चली नहीं । यांचे वहीं वहीं नहीं । यांचे जंज बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वर्ण लीकियो ॥ इति शुद्धा राग संपूर्णम् ॥

अथ सिंहवरकी उरपित लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनमें विभाग कितिको अपने मुखसो राग गाईके बांको सिंहवर नाम किनो ॥ अथ हिंहवरको लखन लिख्यते ॥ भैरवके मेलमें जाकी स्वर उत्पत्ति होय । मध्यमसों जाको आलाम होय ॥ एसो लोके सम्मान वाहि सिंहवर जानिये ॥ शासमें वो यह छह स्वरनमें । गायो है । मान वह सम्मान वाहि सिंहवर जानिये ॥ शासमें वो यह छह स्वरनमें । गायो है । मान वह माने विका माने हैं । मान वह से । साको जीसरे पहरू माने विका पाने विका समानि वाह है । साको जीसरे पहरू माने विका राम । वह से साको वाह से साको जाता स्वर है । साको अलाम कि साको कि से राम । वह तो याको वसत है । याकी आलाम वाह सहस्त्र माने किसे राम । वह से साको अलाम वाह से साको जाता स्वर है । साको अलाम वाह से साको किसे राम ।

सिंहवर राग (पाइक)

म	मध्यक सत्रिभाका एक ।	ध	भैष्वता अकरी क्रिमामा म्होत्रक े	77
प	मंत्रमः कस्तिः मानाः एक ः	स	पङ्ज श्रात्ी्रकाताःवीन	ý

रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	स	षड्ज असाठि, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
स '	षड्ज असिल, मात्रा दोय	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक

प	पंचम असिल, मात्रा दोय	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति सिंहवर संपूर्णम् ॥

अथ चक्रधरकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उनरागनंमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको चक्रधर नाम कीनों ॥ अथ चक्र- धरको लखन लिख्यते ॥ नाटके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय । पंचम स्वर हीन होय । षड्ज स्वर जाके आदिमें होय । ऐसो जो राग तांहि चक्रधर जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । स रि म ध नि स । यातें पाडव है । याको तीसरे पहर उपरांति गावनों । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

चक्रधर राग (पाडव).

स	'षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषमं चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा दोय
ग	गांधार चढी, मात्रा दोय	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा दोय	स	षड्ंज असिल, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

स	षड्ज असिल, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
ध	धेवत चढी, मात्रा एक		

॥ इति चकधर संपूर्णम् ॥

अथ मंजुघोषाकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनं उन रागनमंसां विभाग करिवेको। अपने मुखसां राग गाईके। वांको मंजुघोषा नाम कीनों॥ अथ मंजुघोषाको लखन लिख्यते॥ श्रीरागके मेलमें जाकी उत्पत्ति होय। गांधार स्वर जामें नहीं होय। धैवत स्वर जाकी आदिमें होय। आरोहमें निषाद नहीं होय। ऐसो जो राग तांहि मंजुघोषा जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरमें गायो है। सिर्म प ध स। यातें ओडव है। याको दूपहर उपरांत गावनो। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र सन्यो नहीं। जाकी शिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति मंजुघोषा संपूर्णम्॥

:

अय रत्नावलीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागगेंसीं विभाग करिवेकी । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको रत्नावली नाम कीनों ॥ अथ त्नावलीको लखन लिख्यते । जाके आलापमें रिषम निषाद नहीं होय । मध्यम गांधार जामें अति तीव्रतर होय । और गांधारहीकी जामें मूर्छना होय । पंचम स्वरमें न्यास होय । ऐसो जो राग तांहि रत्नावली जानिये । शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरमें गायो है । ग म प ध स ग । यातें ओडव है । याको दोय पहर उपरांत गावनो । यहतो याको वखत है । ओर रातिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरतें । यह राग सुन्यो नहीं । जातें जंत्र बन्यो नहीं । जातें जंत्र बन्यो नहीं । जातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतली ज्यो ॥ इति रत्नावली संपूर्णम् ॥

अथ कं गणरामकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको कंकण नाम कीनों ॥ अध कंकणको छछन छिख्यते ॥ शंकराभणके मेरुमें जाकी उत्पत्ति होय । ओर पंचम स्वर नहीं होय । गांधारस्वर जाके आदिमें होय । ओर यहुतबेर जामें मध्यमको उच्चार होय । ऐसो जो राग तांहि कंकण जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह स्वरनमें गायो है । ग म ध नि स रि ग । यांतें पाडव है । याको दूरहर उपरांति गावनों । यहतो याको बखत है । रातिमें चाहो तब गावो । याकी आछापचारी छह स्वरनमें किये । राग वरेंते यह राग सुन्यो नहीं । यांते बुद्धि चर्छी नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो इरतर्टीज्यो ॥ इति कंकण राग संपूर्णम् ॥

अथ साधारिता की उत्यक्ति लिख्यते ॥ शिवर्णानें उन रागनमें शें विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको साधारिता नाम कीनों ॥ अथ साधारिताको छछन छिख्यते ॥ सोवीर रागके में छमें जाकी उत्पत्ति होय । ओर जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर पंचनस्वरमें होय । ओर रिषम मध्यमको पहुज मध्यमसों मिछाप होय । सिगरे स्वरमें गमक होय । ऐसी जो राग तांहि साधारिता जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह सात स्वरनें गायो है । प ध नि स रि गम प प । यांते संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आछापचारी सात सुरनें

सप्तमो रागाध्याय-कांबोधी, गोपीकांबोधी, अर्जुनादि रागनी. २६१

किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चठी नहीं । यातें जंत्र बन्ये नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतठी ज्यो ॥ इति साधारिता संपूर्णम् ॥

अथ कांवोधीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको कांबोधी नाम कीनों ॥ अथ कांबोधीको लखन लिख्यते ॥ जा रागके आरंभमें तीव्र गांधारस्वर होय । ओर गांधारस्वरकी मूर्छना आदिमें होय । जाके आरोहमें मध्यमस्वर ओर निषादस्वर न होय । जो गांधारस्वर आदिमें न कीजिये । उत्तरायता मूर्छनाही कीजिय । ऐसो जो राग तांहि कांबोधी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग प ध स स नि ध प म रि स ग रि स । यांतें संपूर्ण है । याको दूसरे पहरमें गावनों । यहता याको बखत है । ओर दूपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कांबोधी राग संपूर्णम् ॥

अथ गोपीकांवोधीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको गोपीकांवोधी नाम कीनों ॥ अथ गोपीकांवोधीको लखन लिख्यते ॥ जा रागको गृहस्वर धैवतमें होय । जाको आरोहमें निषादस्वर न होय । जाको अंशस्वर मध्यमस्वर पंचमस्वरमें होय । जाको न्यासस्वर पड्जमें होय । ऐसो जो राग ताहि गोपीकांवोधी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । ध स स नि ध प म ग रि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरेमें गावनो । यहतो याको बखत है । दूपहर पहलां चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किय राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । योतें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरत-लीज्यो ॥ इति गोपीकांबोधी राग संपूर्णम् ॥

अथ अर्जुनरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको अर्जुन नाम कीनों ॥ अथ अर्जुनको लखन लिख्यते ॥ जो गोरीरागके मेलमें भयो होय । ओर जाके आरो-हमें मध्यम निषाद नहीं होय । ओर अवरोहमें गांधार धैवनको आलाप नहीं होय। गांधारतें याको आरंभ करनो। ऐसो जो राग तांहि अर्जुन जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। गपध स स निपम गरि स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों। यहतो याको बखत है। याकी आछापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतछी ज्यो॥ इति अर्जुन राग संपूर्णम्॥

अथ कुमारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसीं विभाग करिवेको । अपने मुखसां राग गाईके । वांको कुमारी नाम कीनों ॥ अथ कुमारीको छछन लिख्यते ॥ गोरीके मेलमें जाकी उत्पत्ति होया । ओर धैवतस्वरमें जाको गृहस्वर होय । धैवतहीमंं जाको अंशस्वर न्यासस्वर होय । ओर बहुल्पाता करिके कंपितस्वर होय । ऐसो जो राग तांहि कुमारी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सप्तस्वरमें गायो है । ध नि स रि ग म प ध । यातें संपूर्ण है । याको प्रभातसमें गावनों । यहता याको बखत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कुमारी राग संपूर्णम् ॥

अथ रक्तहंसीकी उत्पत्ति लिख्यंत ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको। अपने मुखसों राग गाईके। वांको रक्तहंसी नाम कीनों॥ अथ रक्तहंसीको लखन लिख्यंत ॥ जा रागमं गांधार स्वर नहींई। ओर आरोहमें निषाद स्वर नहीं होय। अवरोहमें धैवत करिके हीन होय। ओर षड्जकी मूर्छना जाके आला-पमें होय। मालवके मेलमें उत्पन्न होय। ऐसो जो राग तांहि रक्तहंसी जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरमें गायो है। स रि म प ध स नि। यातें पाडव है। याको प्रभातसमें गावनो। यहता याको बखत है। ओर दूपहर पहले चाहो तब गावो। याकी आलाचारी छह सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें जंब बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति रक्तहंसी संपूर्णम्॥

अथ सौदामिनीकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसीं राग गाईके । वांको सौदामिनी नाम कीनों ॥ अथ सौदामिनीको लक्षन लिख्यते ॥ जामें रिषभ धैवत कोमल होय । अरु गांधार तीव- सप्तमो रागाध्याय-कुरंग, कल्पतरु, नहा, सौवीरी, मार्गहिंडोल. २६६ तम मध्यम तीव्रतर निषाद तीव्र जाको आलाप गांधार स्वरते । ऐसो जो रागतांहि सौदामिनी जानिये ॥ शास्त्रमेंता यह सात स्वरनमें गायो है ॥ ग म प ध स रि स नि ॥ यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों । यह तो याको बखत है । याकी आलापचारी सान सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति सौदामिनी संपूर्णम ॥

अथ कुरंगरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनंमंसां वि-भाग करिवेको अपनें मुखसां राग गाईके। वांको कुरंग नाम कीनों ॥ अथ कुरंगको छछन लिख्यते ॥ जामें मध्यम तीव्रतर गांधार जामें अति तीव्रतर । अरु निषाद तीव्र अरु अंसस्वर न्यासस्वर जाको पंचम पड्जमें होय । ऐसो राग गांईके । बांको कुरंग नामकीनों । शास्त्रमेंतां सात सुरनमें गायो है ॥ स रि ग म प ध नि स ॥ यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनों यह तो याको बखत है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कुरंग संपूर्णम् ॥

अथ कल्पतरुकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग किरिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको कल्पतरु नाम कीनों ॥ अथ कल्पतरुको लखन लिख्यते ॥ जामें धैवत न होय । अरु तीव्र तीव्रतर गांधार रिषभ होय । अरु रिषभसों जाको उच्चार होय । षड्जको न्यास होय । ऐसो जो राग तांहि कल्पतरु जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनमें गायो है । रि ग म प नि स रि । यातें पाइव है । याको तीसरे पहर उपरांति गावनों । यहतो याको बखत है । ओर चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये । राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति कल्पतरु संपूर्णम् ॥

अथ नद्दारामकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनेमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको नद्दा नाम कीनों ॥ अथ नद्दाको लखने लिख्यते ॥ जो वेसरि षाडवकी भाषा होय । जाको गृहस्वर

पहाँ में होया। संध्यममें जाकी समाप्ति होया। गांधारं स्वराणीं ध्यहं सो होय । एत्रमस्तर नहीं होया। ऐरिक्षो जो ताम तांहि जनहा एकानिये। । शास्त्रमें सो पहाँ छह स्वरनमें गामो है। सारि मा भानि से । याते पाइक है। स्वाको सबक्षें । गावतो । याकी आछापचारी छह स्वरनमें किये राग वरते । यह राम सुन्यो नहीं। धार्ते क्षेत्र नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होस ता को वस्त की हमें। मा हाति हमा स्वर्णम् ॥ इति हमा ता को वस्त की हमें। मा हमी हमी स्वर्णम् ॥

ो अध्य सौवीरीकी उत्पत्ति । लिख्यते 🕪 शिवजीने । उन स्मान्येसी वि-भाष करिवेको । अपने मुखसो रामनी गाईके । वांको सौनीसी नाम कीनो । । । सीवीरीको उछन लिख्यते ॥ जा रागनीकी सीवीरीके भेडमें उलाचि होस्। ओर्ामुद्धभाषा होता । बहुत जामें मध्यमस्वरको प्रयोग होम । भड्जस्वरमें जाके आरंभःहोस । ओर समाप्ताहोस । जहां संवादीस्वर ष्रहजा धैवत ओर रिषभधैका होस । वहां पड्जधैवतके संवादमं मधम सीवीरी भाषा है जाकी महन्त्र पंचुमको, सिलाप । ओर अध्यममें जाको अंशस्वर हारेग्र होग्र होग्र सुक् जामें मध्यम होय । मध्यमस्वर करिके सोभायमान होय ॥ अथ सीदीन रीको स्वरूप छिल्यते ॥ जाके शरीरकी कमछके फूछकीसी कांति है । संभोगकी जाके इंडा है।। अपने पितिसों संभोग करनुकि है। क्रमछन्मसे जाके वित्र है। शांतरसमें बक्क है ॥ ऐसी 'जो सागनी' तांहि सीवीरी जानिये ॥ शास्त्रमें सो साक सुर्-। नमें गाई। है। सारि ग म पोधानि सा याते। संमूर्ण है। धाको। दिनके ने बोधा पहरमें मोबनी । यहता याको क्लत है । और दूपहर उपरांत चाही तंगा गांबी । यांकी आलागपनारी सातः सुरनमें किये रागमी वरते । यह रागमी मुनी मही 🕛 योंकं वुद्धिवर्धाः महीं। अति जंत्र वन्यो नहीं । जाकी सिवाये वृद्धिः होयं। सी। वर्षसंजीक्यो ॥ इति सीवारी संपूर्णम् आ अस्त । । सामान विकास का कार्यान

अथ मार्गाहंडालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीतं उन रागनमस् विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको मार्ग हिंडोल नाम कीनों ॥ अर्था मार्ग हिंडोलको छिछने लिख्यते ॥ अर्था मार्ग हिंडोलके । अर्छा मेर्ग स्वरको उत्थार होने साहिंडोल मार्ग जानिय ॥ शास्त्रमेती यह छह । सुरमें नाया है। रिम्म प्रामिस रिप्प मार्ग पाहक है। यांको दिसके । दूसरे अपहरे र रपरांति। मार्ग न सप्तमो रागाध्याय-दक्षिणात्या,के।किळ, वैजयंती, शुद्धादि राग. २६५ नो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मार्ग हिंडोल-राग संपूर्णम् ॥

अथ दक्षिणात्याकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको दक्षिणात्या नाम कीनों ॥ अथ दक्षिणात्याकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ भिन्नागीति भाषा होय । जांको अंशस्वर गृहस्वर धैवतमें होय । पंचम स्वर जामें थोरो होय । षड्जमें धैवत पंचम मिली होय । ऐसो जो राग तांहि दक्षिणात्या जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । धिन स ग म पध । योतें षाडव है। याको चाहो जब गावो । याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं । योतें बुद्धि चली नहीं । योतें जंत्र बन्यों नहीं । जांकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति दक्षिणात्या संपूर्णम् ॥

अथ कोकिळरागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों
विभाग करिवेको । विशेष लोकानुरंगनके लिये । अपनें मुखसों राग गाईके ।
वांको कोकिळ नाम कीनों ॥ अथ कोकिळको लछन लिख्यते ॥ कल्याण रागके
मलमें अरु मध्यम निषाद जामें सदैव नहीं होय । अरु गांधारातें उच्चार करनों ।
ऐसो राग गाईके । वांको कोकिळ नाम कीनों । शास्त्रमें यह पांच स्वरतें गायो
है । ग प ध स स ध प ग प ग रि स । यातें औडव है । याकी आलापचारी
पांच सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। यातें
जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कोकिळराग संपूर्णम् ॥

अथ वैजयंतीरामकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रामनमंसों विभाग करिवेको । विशेष लोकानुरंजनके लिये । अपनें मुखसों राम गाईकं। वांको वैजयंती नाम कीनों ॥ अथ वैजयंतीको लखन लिख्यते ॥ जामें छह वार श्रुति मध्यमको उचार । धैवतकोमल निषादतीन अरु रिषम तें उचार । आरोहण अवरोहमं कबहू गांधारको धैवतको उचार होय । ऐसो राम गायके । वांको नाम वैजयंती कीनों ॥ शासमें सम स्वरनतें गायो है । रि म प नि स स नि प ध प म

प म रि ग रि स । योतं संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरेमें गावनो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति वैजयंतीराग संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धारामकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको शुद्धा नाम कीनों ॥ अथ शुद्धाको छछन लिख्यते । जो राग भिन्न षड्जकी भाषा होय । जाको अंश स्वर गृहस्वर न्यासस्वर समाप्त धैवतमें होय । आछापमें जाको धैवत कोमछ होय रिषम पंचम नहीं । अथवा वांके आछापमें रिषम होय । अरु पंचम न होय । अरु षड्ज स्वर गांधार स्वरमें मिले होय । अथवा गांधार मध्यम स्वरमें मिले जाको न्यास होय । जामें मध्यम स्वर गांधार स्वर धैवत स्वर गंभीर होय । एसो जो राग तांहि शुद्धा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच अथवा छह अथवा सात सुरनमें गायो है । ध नि स ग म यांतें ओडव है । ध नि स रि ग म ध यांतें पाडव है । यांको चाहो जब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें वुद्धि चली नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी शिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति शुद्धाराग संपूर्णम् ॥

अथ रंगतीभाषाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों रागनी गाईके । वांको रंगतीभाषा नाम कीनों ॥ अथ रंगतीभाषाको स्वरूप लिख्यते ॥ जाको पीरा वर्ण है । मुंदर है । अपनें पितके वियोगक संतप्त है । सखीजन जाको मान देके समाधान करत है । उदास जाको मन है । ऐसी जो रागनी तांहि रंगती भाषा जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गाई है । ध नि सा म प ध । योतें ओडव है । याको सर्व समै गावनी । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागनी वरते । यह रागनी सुनी नहीं । योतें बुद्धि चली नहीं । योतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत-लिखों ॥ इति रंगतीभाषा रागनी संपूर्णम् ॥

अथ शुद्धभिन्नाकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखर्सी राग गाईके । वांको शुद्धभिन्ना नाम कीनीं ॥ अथ शुद्धभिन्नाको लखन लिख्यते ॥ जाकी भिन्न पंचमतें उत्पत्ति होय ।

सप्तमो रागा ध्याय-शुद्धभिचा,विशाला, पुलिंदी, भिन्नपंचमी आदि.२६७

धैवतमें जाको अंशस्वर न्यासस्वर गृहस्वर होय। ओर जाके रिषम धैवत षड्ज मध्यममें मिलि होय। किचर देवतानको प्यारो है। ऐसो जो राग तांहि शुद्धिभिन्ना जानिये॥ शास्त्रमंतो यह सप्तस्वरनमें गायो है। ध नि स रि ग म प ध। यातें संपूर्ण है। याको चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं। तातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलिज्यो॥ इति शुद्धिभना राग संपूर्णम्॥

अथ विशालारागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जानं उन रागनमंसों विभाग करिवेका । अपने मुखसों रागनी गाईके । वांको विशाला नाम कीनों ॥ अथ विशालाका ललन लिख्यते ॥ जो रागनी भिन्न पंचमकी भाषा होय । जामें पड्जस्वर ओर धेवतस्वरको संचार होय । जाको पंचममें अंशस्वर होय । धेवतमें जाको अंत होय । धेवतसों सोभायमान होय । किन्नर देवतानको प्यारी है । ऐसी जो रागनी तांहि विशाला जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । स रि ग म प ध नि स । योतं संपूर्ण है । याको चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें। यह रागनी सुनी नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति विशाला रागनी संपूर्णम् ॥

अथ पुलिंदीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों रागनी गाईके । वांको पुलिंदी नाम कीनों ॥ अथ पुलिंदीको लखन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय । ओर जामें गांधार पंचम न होय । षड्ज धैवतमें ओर षड्ज मध्यममें मिली होय । ऐसी जो रागनी तांहि पुलिंदी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गाई है । ध नि स रि म ध स योतें ओडव है । याको चाहो जब गावो । यह मनुषनको प्यारी है । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागनी वरतें । यह रागनी सुनी नहींं। यातें जंन, बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति पुलिंदी रागनी संपूर्णम् ॥

अथ भिन्नपंचमीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको भिन्नपंचमी नाम कीनों ॥ अथ भिन्नपंचमीको छछन लिख्यते ॥ जाकी भाषा आसावरी होय । जाको धैवत स्वर अंतमें होय । गांधार जामें तीव्रतर होय । कोमल जामें मध्यम सुर होय । मध्यममें जाको गृहस्वर अंशस्वर होय । जामें थोडो षड्जको उच्चार होय । आरोहमें पंचम कहि कहि न होय । मध्यम पंचममें जाको न्यासस्वर होय । जामें रिषम पंचम धैवत बहोत होय । गांधार जाके अवरोहमें नहीं होय । सो भिन्न पंचमी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । म प ध नि स रि ग म । योतें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आला-पचारी सात सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । योतें बुद्धि चली नहीं । योतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति भिन्नपंचमीराग संपूर्णम् ॥

अथ मधुकरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको मधुकरी नाम कीनों ॥ अथ मधुकरीको लखन लिख्यते ॥ जो राग ककुभ विभाषाको होय । जाको पड्जमें आरंभ होय । गांधार पंचममें जाको न्यासस्वर होय । ओर निषाद पड्ज रिषभ धैवत पंचम जामें बहुत आवे । ऐसो जो राग तांहि मधुकरी जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात स्वरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स । यांतें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो ॥ इति मधुकरी राग संपूर्णम् ॥

अथ शुद्ध षाडवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके वांको शुद्धषाडव नाम कीनों ॥ अथ शुद्ध षाडवको लखन लिख्यते ॥ जाकी विकत मध्यम जातिमें उत्पत्ति होय । विकत मध्यमं जातिके तेईश भेद हैं । जामें पंचम अरु गांधारको वरतवो कितन होय । जाको अंशस्वर न्यासस्वर मध्यम स्वरमें होय । तीव्र मध्यम स्वर जाके आरंभमें होय । काकली निषाद अंतर गांधार जामें आवे । मध्यमकी आदि मूर्च्छना

सप्तमो रागाध्याय-शुद्धषाडव,ब्राह्मषाडव, गांधारपंचम,आदिराग.२६९

जाके आलापमें होय। अठराही आदि वरन नाम जो संचारी वरन करिके। मिल्यों जो प्रसन्नता नाम अस्मंकारिता करिके शोभायमान होय। नृत्यके आरंभमें याको गावनो ॥ यह राग हास्यरस अरु शृंगाररसको पुष्टकर है। ऐसी जो राग ताको नाम शुद्ध षाडव जानिये॥ अथ शुद्ध षाडवको स्वरूप लिख्यते॥ श्वेत जाको वर्ण है। श्वेत वस्त्र पहरे है। वृक्षकी लायके नीचे बैठचो है। अपनी प्यारी स्त्रीके संग हास्यविनोद करे है। सीसपें जाके मुकुट है। ऐसो जो राग तांहि शुद्ध षाडव जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमं गायो है। मा सा री नी धा धा धा नी मा पा पा धा नी मा धा सा री गा धा सा सा सा सा री ग मा धा मा री गा नी धा सां धा नी मा मा ॥ यातं संपर्ण है। यह टोडी रागको पिता है। यातें टोडी रागको जन्म है। शुक्राचारजको यह राग प्यारो है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो। यह तो याको बखत है। दोय पहर ताई चाहो जब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि नहीं चली। यातें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो॥ इति शुद्ध षाडव संपूर्णम्॥

अथ बाह्म पाडवकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनेमें सो विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको बाह्म पाडव नाम कीनों ॥ अध बाह्म पाडवको छछन छिख्यते ॥ जामें निषाद स्वर गांधार स्वर मिल्यो होय । अरु रिषम स्वर मध्यम स्वर मिल्रे होय । अरु जाको मध्यम स्वरमें अंशस्वर ग्रह्स्वर न्यासस्वर होय । जो बेसर पाडवकी भाषा हाय । ऐसो जो राग तांहि बाह्म पाडव जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनेमें गायो है । म प ध नि स रि ग म । यातें संपूर्ण है । याको चाहो जब गावो । याकी आछापचारी सात सुरनेमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि नहीं चली । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति बाह्म पाडव संपूर्णम् ॥

अथ गांधार पंचमकी उत्पत्ति लिख्यते॥ शिवजीनं उन रागनमेंसों विभाग करिवको। अपने मुखसों राग गाईके। वांको गांधार पंचम नाम कीनों॥ अथ गांधार पंचमको लखन लिख्यते॥ जा रागकी गांधारी संकीर्ण उतर गांधा-रीतं उत्पत्ति होय। ओर गांधारमें अंशस्वर ग्रहस्वर न्यासस्वर होय। अरु जाकी हारिणाश्वा मूर्च्छना होय। ओर जामें प्रसन्न मध्यम अलंकार हाय। जामें काकलीको संचार होय। ओर अर्भुत हास्य करुणरसमें जाको प्रयोग होय। सा गांधार पंचम है ॥ अथ गांधा पंचमको स्वरूप लिख्यते ॥ सोनेकोसो जाको वर्ण है। सोनेके कुंडल काननमें पहरे है। ओर अपनी स्वीसों हासीके बचन कहे है। ओर विमानमें बठ्यो है। ऐसो जो राग तांहि गांधार पंचम जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह सुरनेमं गायों । य प ध नि स ग म । यातें पाडव है। याको चाहो जब गावो। यह राग मंगलीक है। याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते। यह राग हन्यों नहीं। यातें जंत्र बन्यों नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो॥ इति गांधार पंचम संपूर्णम्॥

अथ कालिंदी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों र गनी गाईके । वांको कालिंदी नाम कीनों ॥ अथ कालिंदीको छछन लिख्यते ॥ जो भिन्न पड्जकी विभाषा होय । जाको यहस्वर पड्जमें होय । अरु धैवतमें जाको अंत होय । अरु निषाद जामें थोरा होय । जामें पंचम रिषभ न होय । ओर इज मध्यममें मिली होय । ऐसी जो रागनी ताहि कालिंदी जानिये ॥ शास्त्रमें वा यह पांच स्वरनमें गाई है । ध नि स ग म ध । यातें ओडव है । याको चाहें जब गावो । यातें अद्भुत दशामें गाई है । याकी आलापचारी पांच सुरनमें िय रागनीवरते । यह रागनी सुनी नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं। यातें जंत्र बन्यो हीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कालिंदीराग संपूर्णम् ॥

अय कछेलीको लछन लिख्यते ॥ जाको षड्जमं अंशस्वर ग्रह्स्वर होय । न्यासस्वर मध्यममें होय । कृरतानमें जाको आश्रय होय । जामें गांधार धैवत स्वर नहीं होय । अरु भिन्न षड्जकी भाषा होय । एसो जो राग तांहि कछेली जानिये ॥ ओर कोईक आचार्य या तरह कहत है । जाको अंशस्वर गृह मध्यममें होय । जामें कोमल ोर तीन रिषभ होय । जाको आरंभमें गांधार निषाद नहीं ॥ शास्त्रमेंता पांच सुरलमें गाई है । स रि म प नि स । यातें ओडव है । अर्थवा म प ध स रि म प । याको चाहो तब गावो । यह राग सुन्यो नहीं । यांत बुद्धि चली नहीं । यां जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति कछेलीराग संपूर्णम् ॥

सप्तमो रागाध्याय-नूतमंजरी, पौराली, निन्नपौराली, आदि राग. २७१

अथ नृतमंजरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंतीं विभाग करिवेको । अपने मुखसों रागनी गाईक । वांको नृतमंजरी नाम किनों ॥ अथ नृतमंजरीको छछन लिख्यते ॥ जो राम हिंडोछकी भाषा होय । जामें षड्ज मध्यम संचारी होय । ओर मध्यमस्वर नाके अंतमें होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर पंचममं होय । रिषम जामं नहीं होय और निषाद गांधारमें मिछी होय। ऐसी जो रागनी तांहि नतमंजरी जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह छह स्वरनमं गाई है । प ध नि स ग म प । योतं षाडव है । याको दिनके प्रथम पहरेमं गावनी । याकी आछापचारी छह सुरनमं किये रागनी गरेते । यह रागनी सुनी नहीं । यांते बुद्धि चछी नहीं । यांते जंत्र बन्यो नहीं । ज की सिवाय बुद्धि हाय सो वरत-छीज्यो ॥ इति नृतमंजरी संपूर्णम् ॥

अथ पोरालीकी उत्पत्ति लिख्यते । शिवजीनें उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईवे । वांको पौराली नाम किनों ॥ अथ पौरालीको लक्षण लिख्यते ॥ जो राग भिन्न पड्जकी विभाषा होय । जाको अंशस्वर मध्यममं होय । रिषमस्वर मध्यम पंचममं परस्पर मिले होय । एसो जो राग तांहि पौराली जानिये ॥ यावा चाहो जब गावो । शास्त्रमंतों यह सात स्वरनमं गायो है । म प ध नि स रि ग म । योतें संपूर्ण है । याको बाहो जब गावो । याकों गाईवेतें । नागसर्प परस्त्र होय । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । यह राग सुन्यं नहीं । योतें बुद्धि चली नहीं । योतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि हे य सो वरतलीज्यो ॥ इति पौराली राग संपूर्णम् ॥

अथ भिन्नपौराली राग लिख्या। शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको। अपने मुखसों राग गाईके। वांको भिन्नपौराली नाम किनों॥ अथ भिन्नपौरालीको लक्षण लिख्यते॥ जो िडोलरागकी पांचमी भाषा होय। जाको अंशस्वर गृहस्वर धैवतमें होय। ओर न्यासस्वर पड्ज होय। ओर सातु सुर करिके मिली होय। पंचमरागमें पधान होय। ऐसो जो राग तांहि भिन्न-पौराली जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। म प ध नि स रि ग म स। यातें संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम इहरमें गावनों। याकी आलापचारी,

सात सुरनमें किये राग वरतं । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति भिन्न-पौराली राग संपूर्णम् ॥

अथ देवारवर्धनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें-सों विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको द्वारवर्धनी नाम किनों ॥ अथ देवारवर्धनीको लखन लिख्यते ॥ जो राग मालवकी विभाषा होय । जामें गांधार निषाद नहीं होय । ओर जाको अंत पंचमस्वरमें होय । जाको अंशस्वर षड्जमें होय । ऐसो जो राग तांहि देवारवर्धनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह पांच सुरनमें गायो है । स रि म प ध सा । यातें ओडव है । याको पातसमें गावनों । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरत-लीज्यो ॥ इति देवारवर्धनी राग संपूर्णम् ॥

अथ भोगवर्धनीकि। उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको भोगवर्धनी नाम किनों ॥ अथ भोगवर्धनीको लक्षण लिख्यते ॥ जो ककुम रागकी विभाषा होय । जामें तीव्र कोमल गांधार होय । ओर जाको अंशस्वर मृहस्वर न्यासस्वर धैवतस्वर होय । गांधार पंचम जाको न्यासस्वर होय । रिषमस्वर किहंही न होय । ओर धैवत निषादकी गमकनसों जाको गायो होय । ऐसो जो राग तांहि भोगवर्धनी जानिये ॥ शाक्षमंत्रों यह छह सुरनमें गायो है । ध नि स ग म प ध । यांतें षाडव है । याको शांतरसमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो ॥ इति भोगवर्धनी संपूर्णम् ॥

अथ शिववल्लभा रागकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनं उन राग-नर्मेसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको शिववल्लभा नाम किनों ॥ अथ शिववल्लमाको लक्षण लिल्यते ॥ मुखारी रागके मेलेमें जाकी उस्पत्ति होथ । जामें मध्यमस्वर नहीं होय । गांधाएस्वरतें जाको आलाप जाके सिनमा रागाच्या य-मालवेसरी, गाधारवही, स्वरवाही आदिराग. २७६ पंचममें अंशन्यास होय। ऐसी जो राग तांहि शिववहामा जानिये॥ शास्त्रमेंती यह छह स्वरनेंमें गायो है। गपध सस निधपनिधप गगगिर। यांतें पाडव है। याको दोय पहर उपरांत गावनों। याकी आछापचारी छह स्वरनेंमें किये राग वरते। यह राग सुन्यो नहीं। यांतें बुद्धि चछी नहीं। यांतें जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतछी ज्यो॥ इति शिववहामा राग संपूर्णम्॥

अथ मालवेसरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसी
विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको मालवेसरि नाम कीनों ॥
अथ मालवेसरिको लखन लिख्यते ॥ जो हिंडोल रागकी भाषा होय । गांधारस्वरमें ओर पंचमस्वरमें जाको न्यासस्वर होय । ओर पड्जमें जाको गृहस्वर होय ।
ओर पड्जमें समाप्त होय । ओर मध्यमस्वर ओर पंचमस्वरमें गमक युक्त होय ।
जाके आलापेमें रिषम धैवत नहीं होय । ऐसो जो राग तांहि मालवेसरि
जानिये ॥ शास्त्रनेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । स ग म प नि स । यांतें ओडव
है । याको संध्यासमें गावनों । याकी आलापचारी पांच स्वरनमें किये राग वरतें ।
यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवास बुद्धि होय सो
वरतलीज्यो ॥ इति मालवेसरि संपूर्णम् ॥

अथ गांधारविक्षीको लछन लिख्यते ॥ जो भिन्न पड्जकी भाषा होय । धैवतमें जाकी समाप्ती पंचमें जाको अंशस्वर होय । ओर पड्ज धैवत जुक्त होय । ऐसी जो राग तांहि गांधारविक्षी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । स ध नि स रि ग म प ध । योतं संपूर्ण है । याको पितृनके कार्यमें गावनों । आद्वादिकनमें याके गायेते पितृ मसन्त होत है । यह राग सुन्यो नहीं । याते जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरति जयो ॥ इति गांधारविक्षको छछन संपूर्णम् ॥

अथ स्वरवल्लीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमें सो विभाग करिवेको । अपने मुखुसों रागनी गाईके। वांको स्वरवल्ली नाम कीनों ॥ अथ स्वरवल्लीको लल्लन लिख्यते ॥ जो भिन्न पड्जकी भाषा होय । रिषमस्वर तामें नहीं होय । जाको निषादमें गृहस्वर होय । जाको अंशस्वर वैवतमें होय । जाको आलाप कोमछवायुक्त होय । ऐसी जो रागनी तांहि स्वरवल्ली जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह सुस्तमें माई है। नि स ग म प ध नि ध। वातें नाडव है। बाक़ी आहा तब गावो । यह मुनीश्वरनको प्यारी है। याकी आलाप चारी छह स्वरवर्षे किये रागनी वरतें। यह रागनी सुनी नहीं। यातें जंब बन्मो नहीं। जाकि सिवस्य नुद्धि होय सो वरतछी ज्यो ॥ इति स्वरवही रागनी संपूर्णम् ॥

अथ तुंबरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनें सो विभाग करिवेको । अपने मुखसों रागनी याईके । वांको तुंबरी नामकी ने आध्य तुंबरी को लख्यते ॥ जो रागनी मिल पड्जकी भाषा होय । ओर जाके आखा-पर्ने तिष्मस्वर नहीं होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर वैवलों होयः। ऐसी जो रागनी नांहि तुंबरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गाई है । ध्य नि स ग म प य । याते पाडव है । याको चाहो जब गावो । याको जासपारी गावेतो बलचारी विद्या आवे । यह रागनी विद्या देनहारी है । ओर गावे वाको विद्या समाप्त होय । याकी आलापचारी छह स्वरनमें किये रागनी वस्ते । अह रागनी सुती नहीं । याते जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो बस्तली-ज्यो ॥ इति तुंबरी संपूर्णम् ॥

अथ शालिवाहनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन श्रमतेयंशं विभाग करिवेको । अपने मुखसां सम बाईके । बांको शालिवाहनी नाम कीनों ॥ अथ शालिवाहनीको लखन लिख्यते ॥ जो सग ककुवकी अंतरभाषा होय ॥ जाको रिपमने अंशस्वर गृहस्वर होय । ओर धैवतमें जाको अंशस्वर होय । असे वेवतमें जाको अंशस्वर होय । असे तो सग ताहि शालिवाहनी जानिके॥ शालामें पिछ होय । ऐसो जो सग ताहि शालिवाहनी जानिके॥ शालामें तो यह सात स्वरनमें मायो है । रि ग म म ध नि स । माको दिनके हुकार पहरमें गावनों । साकी आलापनारी सात सुरनमें किये राग वरते । अहर सग सुन्यो नहीं । याते जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होम सो वस्तक्षिणमें।॥ इति शालिवाहना संदूर्णम् ॥

अथ-कोसलीरामकी उत्पत्ति लिख्यते नावशिषकीनं का न्यानित्ति विभाग केरिनेको । अपने मुख्यों समती मार्के । बांको कोसली सामकीविधालाय कोसलीको उत्पत्त विकावे ॥ अर्थे रागती भिन्न संत्रमकी विभागा हो । अवाधी वंशासर-सहस्वर निवाको हो सन्ति हो सन्ति केरियान सप्तमो रागाध्याय-शक्तमिश्रा, हर्षपुरी, रक्तगांधारी, भाषागांधारी. २७% स्वरः नहीं । ऐसी जो रागनी तांहि कोसली जानिये।। शास्त्रमें यह छह स्वरनेषे गाई है। नि स ग म प ध । याते पाडव है। याको चाहो जब गावों। याकी आसापपारी छह सुरनमें किये है। रागनी वरते। यह रागनी सुनी नहीं। याते जंब बन्यों नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतली ज्यों।। इति कोसली रावनी संपूर्णम् ॥

अथ शक्कमिश्राकी उरपत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनेमें सिंध्यान मान कि निर्मा । अपने मुखसों राग गाईके । वांको शक्किमश्रा नाम की नो ॥ अध्य शक्किमश्रा नाम की नो ॥ अध्य शक्किमश्रा नाम की नो ॥ अध्य शक्किमश्रा नाम की नो ॥ अध्य शक्किमश्रा नाम की नो ॥ अध्य शक्किमश्रा नाम की नो ॥ अध्य शक्किमश्रा निर्माद पंचम अरु रिषम धैवत संवादी स्वर होय । अरु निषाद जाको अंशस्वर प्रहस्वर होय । रिषममें जाको न्यास होय । ऐसी जो राग तांहि शक्किमश्रा जनिया । शास्त्रमें तात स्वरनसों गायो हैं। निर्माद गाम प भ निर्मा यातें संपूर्ण है । याको दिनके दूसरे पहरमें गावनों । याकी आछापचारी सात सुरनमें कि रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें वृद्धि चछी नहीं । यातें जंन बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतही ज्यो ॥ इति शक्किमश्रा राग संपूर्णम्॥

अथ हर्षपुरी रागकी उत्पत्ति लिक्यते ॥ शिवजीन उन रागनमें सी विमाग करिवेको । अपने मुखसो राग गाईके । वांको हर्षपुरी नाम कीनो ॥ अघ हर्षपुरीको उछन लिख्यते ॥ जो मालकोसकी भाषा होय । पङ्जमें जाको अंशस्वर गृहस्वर होय । जामें मध्यम स्वर तीं च होय । वेंबत जामें नहीं होय । ऐसो जो राग तांहि हर्षपुरी जानिये ॥ शास्त्रमें तो यह छह स्वरनमें गायो है । स रि गम प नि स । यार्वे पाडव है । यार्को चाहो तब गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किय रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यार्वे नहीं । जाकी सिवास बुद्धि होयसो वरतली ज्यो ॥। इकि हर्षपुरी राग संपूर्णम् ॥।

अधारकागांधारीकी उत्पत्ति लिख्यतः॥शिकानि उन रागनमंसी विकाम करिकेशे । अपने मुखसो राग गाईके । वांको रक्तमांधारी नाम कीनो ॥ अधारकगांधारीको लेखन लिख्यते ॥ जाके अंशस्वरः पड्जा गांधार। मध्यमः विकाममें होसा अंशर जाके महमें रियम्धा लोडके पड्जा गांधारको अंशरवरः नसीं मिलाप होय । रिषमके त्यागतें यह बाहव है । ओर धेवत रिषमके त्यागतें ओहव है । यातें याको बाहव ओहव मिली है । जो अंशस्वर पंचम होई तो बाहव नहीं होय । ओर षड्ज निषाद पंचम मध्यम ये च्यार स्वरनसों ओहव नहीं होय । यातें याको बाहव मिली ती जानिये ॥ जहां मिले बड्ज गांधारको मिलाप होय । ओर रिषम स्वरकी मूर्छना होय। ऐसो जो राग तांहि रक्तगांधारी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरके आरोहमें । ओर पांच स्वरनके अवरोहमें गायो । प नि स ग म प ध नि प म ग स नि । यातें बाहव याको प्रभातसमें गावनों । यह तो याको बखत है । ओर दूपहर तांई चाहो तब गावो । याकी धालापचारा छह स्वरके आरोहमें । ओर पांच स्वरनके अवरोहमें । किये राग वरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें बुद्धि चली नहीं । यातें जंज बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति रक्तगांधारी राग संपूर्णम् ॥

अथ भाषा गांधारीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसों विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको भाषागांधारी नाम कीनों ॥ अथ भाषागांधारीको ल्लन लिख्यते ॥ जो भिन्न पड्जकी भाषा होय । जाको अंश-स्वर गांधारमें होय । मध्यम स्वरमें जाकी समाप्त होय । ऐसो जो राग तांहि भाषा गांधारी जानिये ॥ शाखमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि ग । यातें संपूर्ण है । याको एकांतमें गावनों । यह शार्द्ल मुनीश्वरको राग है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यातें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होयसो वरतलीज्यो ॥ इति भाषा गांधारी राग संपूर्णम् ॥

अथ पड्ज भाषाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेंसी विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । वांको पड्जभाषा नाम कीनों ॥ अथ पड्ज भाषाको लखन लिख्यते ॥ जो मिन्न भाषा होय । जाको अंश-स्वर गृहस्वर समाप्त धैवतमें होय । निषाद काकली अंतर करिके मिली होय । जाके आखापने रिषम पंचम नहीं होय । ऐसी जो राग तांहि पड्ज भाषा जानिये । शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । ध नि स ग म ध निका याते ओडव है । याको चाहो सब गावो । अह देवपूजाने पाको गावो तो देवता

सप्तमो रागाध्याय-मालवी, षड्जमध्यमा, उमातिलक. २०७ प्रसम्न होय। सर्व काम फल दे याकी आलापचारी पांच स्वरनमें किये रागवरते। यह राग सुन्यो नहीं। यातें बुद्धि चली नहीं जाते जंत्र बन्यो नहीं। जाकी सिवाय बुद्धि होय। सो वरतलीज्यो। इति षड्ज भाषाराग संपूर्णम्॥

अथ मालविकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सों वि-भाग करिवेको । अपनें मुखसों राग गाईके । वांको मालवी नाम कीनों ॥ अध्य मालवी रागको लखन लिख्यते ॥ जो भिन्न षड्जकी भाषा होय । जामें षड्ज रिषम गांधार मध्यम होय । जाको अंशस्वर गृहस्वर न्यासस्वर धेवतस्वरमें होय । धेवत जामें कोमल होय । ऐसो जो राग तांहि मालवी जानिये । शास्त्रमें-तो यह पांच स्वरनमें गाई है । ध स रि ग म ध । योतें ओडव है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय । सो वरतलीज्यो । इति मालवीराग संपूर्णम् ॥

अथ पड्जमध्यमाकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवर्जानें उन रागनमें सों गाईके । वांको पड्जमध्यमा नाम कीनों ॥ अथ पड्जमध्यमाको लखन लिख्यते ॥ जाके आदिमें पड्ज स्वर होय । ओर मध्मम स्वरमें जाको अंशस्वर होय । मध्यममें जाकी समाप्त होय । ओर हिंडोल रागकी भाषा होय । अरु जामें निषाद रिषभ नहीं होय । अरु पड्ज मध्यममें ओर गांधार मध्यम स्वरमें युक्त होय । ऐसो जो राग तांहि पड्ज मध्यमा जानिये । शास्त्रमेंतो यह पांच स्वरनमें गायो है । स ग म प ध स । यांतें ओडव है । याको दिनके मध्यम पहरमें गावनों । याकी आलापचारी पांच सुरनमें किये रागवरते । यह राग सुन्यो नहीं । यांतें बुद्धि चली नहीं । यांतें जंत्र बन्यो नहीं । जाकी सिवाय बुद्धि होय सो वरतलीज्यो । इति पड्ज मध्ममा राग संपूर्णम् ॥

अथ उमातिलककी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवणीनें उन रागनमें सों विभाग करिवेको । अपनें मुलसों षट्राग संकीर्ण गौरी गाईके । वांको उमातिलक नाम किनों । अथ उमातिलककी स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जाको रंग है । वि-विक बस्तनको पहरे है । ओर हाथमें जाके कमल है । ओर सुंदर जाके नेत्र है । अरु सुंदर जाके केस है । माथेपें जाके मुकुट है । ओर कानमों कुंडल पहरें हैं। मोतीनकी माला जाके कंठके हैं। अर शुंगाररसमें मम है। अपने समान मित्र जाके संग है। ओर मधुर स्वरसों गान करें हैं। एसी जेड़ राज्य गांहि उमातिलक जानिये। शालानेंगे यह छह स्वरनमें गायों हैं। सारि गांक संप्या पनि सा। यातें पाड़व है। माप नि सारि गांम पांतें संपूर्ण है। याको संप्या समें गावनों। यह तो याको वसवा है। ओर आधी राति तांक वाहो तम गांकशा याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये रागवरते सो जंगसों समझिक ।।

उमातिलक राग (संपूर्ण).

ैम इ	मध्यम उत्तरी, मात्रा दीय	म	मध्यम उतरी; मात्रा एक
प	पंचमः असलि, मात्राः दोयः	ध	वैयव चढी, मात्रा दोयः
ःनिः	निषादः उत्तरी, मात्राः दोयः	्पः	पंचमः अत्तरिः, मात्राः ए कः
ध	वैक्त-चढी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोस
प	पंत्रम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक

स पहल असिल, मात्रा एक गांधार नहीं, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक पंचम असिल, मात्रा एक

सप्तमी रागाध्याय-उमातिलक, झंझाटी ओर हुजीज राग. २७९

स	इड्ज असचि, मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
ध	चैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	्मध्यमः चढी, मात्राः एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ग	सांधार चढी, आत्रा एक	स	षड्ज असिछ, मात्रा एक
' म	[°] मध्यम उत्तरी, मात्रा एक		*

॥ इति उमातिलक राग संपूर्णम् ॥

अथ झंझोटीकी उत्पत्ति लिख्यते ।। शिवजीनें उन रागनमंतीं विमाग करिवेको । अपने मुखसों विलावल संकीर्ण भूपाली गाई । वांको अंझोटी नाम कीनों ॥ अथ झंझोटीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरी जाको रंग है । रंगविस्ने वस्त महरे हैं । नेत्रनमें काजर आंजे है । लिलाटमें जाके खंकुमको विदा है । हाथनें कंकण पहरे है । ओर पुलनकि गुथानको धरे है । ओर नासिकामें भडकदार वेसरि पहरे है । ओर पुलनकि मोतीनकी माला है । ओर महसों छकी है । ऐसी को रामनी तांहि संझोटी जांकिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गाई है । म प ध नि स रि ग म प नि म रिश्न म । आतं संपूर्ण है। याको दिनके घोथे पहरमें गावनी । यह ती बाको वस्ता है । ओर वाहो तब गावो । यह रागनी मंगलीक है । याकी आलाप-वारी सात सुरनमें किये रागनी वरतेसों । जंक्सों समझिये ॥

संझोटी रागनी (संपूर्ण).

X	नत चढी, नीचडी समककी मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ż
n	बंद्रज असंति, माना एक	ग	ग्रीभार चंढी, मात्रा एक	1

प	पंचम असछि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असछि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषंभ चढी, मात्रा एक

स	षड्ज असलि, मात्रा एक	प	पंचम अप्तलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ध	धेवत चढी, नीचडी समककी मात्रा एक

म	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असंखि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक		

॥ इति संसोटी राग संपूर्णम् ॥

अथ हुजीजकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनमें सो विभाग करिवेको । अपने मुखसी कोईक आचार्याने । सोरठ विहाग विलावल संकीर्ण गाईके । नेन ये रागको आभास देखि । वांको हुजीज नाम कीनों ॥ अथ जीजका स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगविरंग वस पहरे है । और अंगमें जाके सुगंध आवे है। कामदेव करिके युक्त है। कमलपत्रसे जाके नेत्र है। ओर चंद्रमासी जाकी मुख है। शृंगाररसमं मग्न है। ओर तरुण जाकी अवस्था है। ऐसी जो राग तांहि हुजीन जानिये॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है। सिरिगमपधित सपधित सिरिगम। यांतें संपूर्ण है। याको चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरते। सो जंत्रसों समिसिये॥

हुजीज राग (संपूर्ण).

प	पंचम असिल, मात्रा दोय	प	पंचम असलि, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ग्	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असचि, मात्रा एक

नि	निवाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असछि, मात्रा दोय
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उत्तरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक

ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असछि, मात्रा एक	रि	रिषभ उत्तरी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति हुजीज राग संपूर्णम् ॥

अथ पीलूकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ कोईक यवनीचार्यनें काफी संकीर्ण गीरी गाईके । वांको पीलू नाम कीनों ॥ अथ पीलूको स्वरूप लिख्यते ॥ कानमें जाके आंबको मोर है । कोकिलसो जाको कंठ है । ओर सोलह वर्षकी जाकी अवस्था है । गोरों अंग है । रंगिवरंगे वस्त्र पहरे है । बंड जाके नेत्र है । ऐसो जो राग सांहि पीलू जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात सुरनमें गायो है । रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको चाहो जब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागवरते । सो जंत्रसों समझिथे ॥

पीलू राग (संपूर्ण).

रि	रिषभ असस्ति, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय
नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक
स	बह्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ असछि, मात्रा एक
रि	रिकम अंतर, मात्रा एक	स	पङ्ज असचि, मात्रा एक
ग	नांधार उत्तरी, मात्रा दोस	नि	निवाद चढी, मात्रा एक
R	रिषम् उत्तरी, मात्रा दीय	ध	वेवत उत्तरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-पीलू राग ओर हंसकिंिनी राग. २८३

प	पंचम असिंछ, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	घ	धैवत उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ असस्ति, मात्रा एक

नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक		

॥ इति पीलू राग संपूर्णम् ॥

अथ हंसिकंकिनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपनें मुखसों वैती संकीर्ण आसावरी गाईके । वांको हंसिकंकिनी नाम कीनों ॥ अथ हंसिकंकिनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है। रंगिवरंगे वस्त्रनको पहरे है। सोलह वर्षकी अवस्था है। बाये हाथमें जाके कमल है। दाहिने हाथमें दरपन है। शृंगार रसमें मग्न है। किन-रिनके संग अपनें पियको जस निर्मल गावे है। उनके संग विहार करे है। गंधवे जाकी अस्तुति करे है। ऐसी जो रागनी तांहि हंसिकंकिनी जानिये ॥ शास-मंतो यह सात सुरनमें गाई है। नि स रि ग म प ध स। यातें संपूर्ण है। याको संप्र्यासमें गावनी। यहतो याको वस्त है। ओर रातिके मध्य पहरमें गावनी। यहतो याको वस्त है। ओर रातिके मध्य पहरमें गावनी। याकी आलापवारी सात सुरनमें किये रागनी वरते। सो जंत्रसों समझिये॥

संगीतसार.

हंसिकिंिनी राग (संपूर्ण).

नि	निषाद अंतर, नीचली सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असछि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिछ, मात्रा दोय	ग	गांधार अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

Ч	पंचम असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दीय
म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार अंतर, मात्रा दोय	स	षड्ज असिल, मात्रा दोय

॥ इति इंसिकिंकिनी राग संपूर्णम् ॥

अथ भटिहार रागकी उत्पत्ति लिरुयते ॥ शिवजीनं उन रागनमंत्रीं विभाग करिनको । अपने मुखती परजसंकीर्ण विभास गायके । वांको प्रभातकार नाम कीनों ॥ याको लोकमं भटिहार नाम कहे है ॥ अथ अप्रेस्टिंडे स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । चित्रविचित्र वस्त पहरे है । अनेक प्रकारके आभूषण पहरे है । जाके लिलाटमें केसरीकी विंदी है । मिलकाके फूलनकी माला पहरे है । मधुर वचन कहे है । राजानके आगें सभाम शोभायमान है । ओर अनंत द्रव्यदान करे है । ऐसो जो राग तांहि भटिहार जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गायो है । स रि ग म प ध नि स प ध रि ग म स । यांते संपूर्ण है । याको पूर्व्यद्वारों गावनों । यहतो याको बस्तत है । ओर दिनके प्रथम पहरमें बाहो सब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वस्तें । सो जंत्रसों समझिये ॥

भटिहार राग (संपूर्ण).

*.		•						
4	पंचम असिल, नीचली सप्तक्की मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक					
ध	धेवत चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	गांधार चढी, मात्रा एक					
स	षड्ज असलि, मात्रा दोय	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक					
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक					
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक					
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक					
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम चढी, मात्रा एक					
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक					
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक					
म	मध्यम चढी, मात्रा एक	ग	गांवार चढी, मात्रा एक					
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक					
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक					

॥ इति भटिहार राग संपूर्णम् ॥

• अथ दूमरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ कोईक यवनाचार्यने गारा संकीर्ण काफी गाईके। वामें नये रागको आभास देखि वांको दुमरी नाम कीनों॥ अथ ठूमरीको स्वरूप छिरूपते ॥ जाके सुनेतं अति सुख होय । ओर सुंदर जाको शरीर है । ओर जाको नाद प्यारो है । ोिकिछकेसी जाको कंठस्वर है । ओर बंड जाके नेत्र है । ऐसी जो रागनी तांहि ठूमरी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । रि ग म प ध नि स । यांते संपूर्ण हैं । याको बाहो तब गावो । याकी आछापचारी सात सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समिसये॥ दूमरी राग (संपूर्ण).

रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	स	पह्ज असति, मात्रा एक
स	बड्ज अतिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	पड्ज अत्तित, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज अससि, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
निः	निषाद उत्तरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक

1	1		
ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक		

॥ इति ठूमरी राग संपूर्णम् ॥

अथ परद्धिती रागनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनर्में विभाग करियेको । अपनें मुखसों काफी संकीर्ण धनाश्री गायके । वांको परदीपकी नाम कीनों ॥ अथ परदीपकीको स्वरूप लिख्यते ॥ स्थाम जाको रंग है । सुंदर जाकी मूर्ति है । ओर रंगविरंगे वस्त्र पहरे है । पियको स्मरण करे है । ओर सली जाको समाधान करे है । पियके वियोगसों दुःली है । ऐसी जो रागनी तांहि परदीपकी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरनमें गाई है । नि रि ग म प ध नि स । यातें संपूर्ण है । याको दिनके तीसरे पहरमें गावनी । यह तो याको बखत है । ओर दुपहर उपरांत चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये रागनी वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

परदीपकी रागनी (संपूर्ण).

-					
नि	निषाद असन्ति, नीचरी सप्तककी मात्रा एक	प	पंचम असिछ, मात्रा एक		
स	पह्ज अस्तिः, माना एक	म	मध्यम असाहि, मात्रा एक		
q.	पंचम असाति, मात्रा दोय	ग	गांधार असछि, मात्रा एक		
व	वेक्त उत्तरी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक		

प	पंचम असिछ, मात्रा एक	स	पड्ज असलि, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	रि	रिषम उतरी, मात्रा एक
ग	गांधार असलि, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति परदीपकी राग संपूर्णम् ॥

अथ काफी रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंसीं विभाग करिवेको । अपने मुखसों राग गाईके । बांको काफी नाम कीनों ॥ अथ काफी रागको छछन लिख्यते ॥ जाके आलापमें गांधार मध्यम निषादको मेल होय । ओर रिषम धैवत तीवतर होय । जाको निषादसों आरंम होय । ओर जाकी षड्ज समाप्तमें होय । ऐसो जो राग तांहि काफी जानिये ॥ शास्तमेंतो याको गुनी सात स्वरनमें गावे है । नि सा रि ग म प ध नि स रि स । यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

काफी राग (संपूर्ण).

Action Con Language				
Ê	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	रि	रिषम चढी, मात्रा एक	
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक	
ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मामा एक	
म	मध्यमः असस्रि, मात्रा एक	रि	रियम चढी; मात्रा एक	
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	्ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक	

म्	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असिल, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
	14		606 3 A 4541 4 1 Nr 57491

रि	रिषम चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उत्तरी, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति काफी राग संपूर्णम् ॥

अथ सौहनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन रागनमें सो विभाग करिवेको । अपने मुखसो परजसंकीण माठवी राग गाईके । वांको सौहनी नाम किनों ॥ अथ सौहनीको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । श्वेत ब्रह्म पहरे है । ओर ताठ हाथमें है । ऐसी स्त्री जाके संग है । हाथमें जाके पिनाक वाजो है । नानाप्रकारके आभूषण पहरे है । ओर मधुर बचन कहे है । ओर राजानकी सभामें शोभायमान है । कुंडल जाके काननमें विराजमान है । ओर मद्सो छक्यो है । ऐसो जो राग ताहि सौहनी जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह छह स्वरनमें गायो है । ग म ध नि स रि ग । याते बाडव है । याको रातिके तीसरे पहरें गायनो । यहती याको बखत है । ओर राजिमें चाहो तक गावो । याकी आलापचारी छह सुरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों सपिसये ॥

रंग्रिक्स्स.

सौहनी राग (षाडव).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद बढी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	ध	धैवत अंतर, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असस्रि, नीचर्री समककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
नि	निषाद चढी, नीचँछी सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	विवत अंतर, नीचर्टी सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक

म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत अंतर, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक

नि निषाद चढी, नीचली सप्तककी स पड्ज असलि, मात्रा एक

॥ इति सौहनी राग संपूर्णम् ॥

अथ वैसरीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनं उन रागनमंत्तां विभाग करिवेको । अपनं मुससों रामकठी संकीणं पंचम गाईके । वांको वैसरी नाम कीनों ॥ अथ वैसरीको स्वरूप लिख्यते ॥ पूर्णचंद्रमासो जाको मुस्त है । ओर मोतीनकी माला पहरे है । ओर नील वस्त्रनको पहरे है । ओर हाथनमें जडाऊ कडा है । ओर चंचल जाके नेत्र है । ओर मधुरी जाकी बानी है । ओर बढो चतुर है । ओर स्याम जाको रंग है । वीडी पानकी हाथमें है । एक हाथसों कमल फिरावे है । दूसरे हाथमें जाके वेणु है । ओर केसर चंद्रनको अंगराग लगाये है । सुंदर मुकुट जाके माथेपें है । ऐसो जो राग तांहि वैसरी कहिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात सुरनमें गायो है । ग म प ध नि स रि । यांते संपूर्ण है । याको दिनके प्रथम पहरमें गावनों । यह तो याको बस्तत है । ओर दुपहरतांई चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें । सो जंत्रसों समझिये ॥

वैखरी राग (संपूर्ण).

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	नि	निषाद चढी, नीचली सप्तककी मात्रा एक

स	पड्ज असलि, मामा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
ग	गांधार चढी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक
रि	रिषभ उत्तरी, मात्रा एक		

॥ इति वैखरी राग संपूर्णम् ॥

अय सिंदूरिया रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवनीने उन रागनमेंसीं विभाग करिवेको । अपने मुखरों काफी संकीर्ण आसावरी गाईके । वांको
सिंदूरिया नाम कीनों ॥ अथ सिंदूरियाको स्वरूप लिख्यते ॥ स्याम जोको वर्ण
है । ओर कीपल जाको अंग है । हाथमें दर्पन लिये है । ओर शृंगार करिके
युक्त है । और केलिनके बनमें अपने पियको जगावे है । सुंदर जाके केंस है ।
और गंधवं जाकी स्तुति करे है । उम जाको रूप है । ओर मदिरापानमुं छिकि
रही है । ऐसी जो रागनी ताहि सिंदूरिया जानिये ॥ शास्त्रमंतो बह सात स्वरमस्
गाई है । नि स रि ग म प ध । याते संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । यह
रागनी मंगलीक है । याकी आलावचारी सात स्वरनमें किये रागनी वरते । सो
जंत्रसों समझिये ॥

सिंदूरिया रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद उत्तरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उत्तरी, नीना दीय
स	'पर्ड्ज 'असंसि, मात्रा एक	ध	धैवत उत्तरी, नौंवा एक
R	रिषम उत्तरी, मात्रा एक	प	पंचम असंछि, पात्रा एक
्. म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	ध	धैवत उतरी, नावा एक
q	पंचय असंखि, मात्रा एक	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक

सप्तमो रागाध्याय-सिंदूरिया, ऐराक ओर उजाल राग. ६९६

प	वैचम असछि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवंत उत्तरी, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक
स	पड्ज अस खि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	Ħ	षड्ज असालि, ऊपरली सप्त कर्का मात्रा एक
रि	रिषभ उतरी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	नि	निषाद उत्तरी, मान्ना एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	रि	रिषभ उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत उतरी, मात्रा एक	स	षड़ज असिल, मात्रा एक

॥ इति सिंदूरिया राग संपूर्णम् ॥

अथ ऐराक रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ कोईक आचार्यनें काफी सैकीर्ण कान्हडी गाईकें। वांको ऐराक नाम कीनों ॥ अथ ऐराकको स्वरूप लिख्यते ॥ जांके हाथमें खड्ग है । दूसरे हाथमें कमल है । देवता ओर चारण जाकी स्तुति करे है । गोरो जाको रंग है । सब अंगनमें आमूषण पहरे है । ओर चंदनको अंगराग लगाये है । ऐसो जो राग वांहि ऐराक जानिये ॥ शास्त्रमेंतो यह सात स्वरूनमें गायो है । याको अंशस्वर गृहस्वर निषाद है। याको न्यासस्वर पंचम । नि ध प म ग रिस स रिगम प। यातें संपूर्ण है । याको चाहो तब गावो । यह राग मंग-लीक है । याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग वरतें। सो जंबसों समझिये ॥ ऐराक राग (संपूर्ण).

į	नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	•	पंचम असलि, मात्रा एक	
		धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम इतरी, मात्रा एक	

ग	गांधार चढी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, नीचली सप्तककी मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा दीय
स	षड्ज असालि, मात्रा एक	नि	निषाद उत्तरी, मात्रा दोय
ग	गांधार उतरी, मात्रा तीन	म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक

नि	निषाइ उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	पड्ज असलि, नीचली सप्तककी मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
रि	रिषभ चढी, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, ऊपरली सप्तककी मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक		

॥ इति ऐराक राग संपूर्णम् ॥

अथ उज्जाल रागकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रागनमेंसी विभाग करिवेकी । अपने मुखसीं काफी संकीर्ण सारंग गाईके । वांकी उजाल नाम कीनों ॥ अथ उजालको स्वरूप लिख्यते ॥ स्थाम जाकी रंग है । ज्यार

जाके भुजा है। पीतांबर पहरे है। ओर मोरमुकुट कुंडल पहरे है। अनेक तर-हके विहार स्त्रीनके संग करे है। ऐसो जो राग तांहि उज्जाल जानिये॥ शास्त्र-मेंतो यह सात सुरनमें गायो है। निध पम गिर स। यांते संपूर्ण है। याको दिनके प्रथम पहरमें गावनो। ओर चाहो तब गावो। याकी आलापचारी सात सुरनमें किये राग दरते। सो जंत्रसों समिझिये॥

उजाल राग (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
स	षड्ज असाहि, मात्रा एक	प	पंचम असाछि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय	नि	निषाद उतरी, मात्रा दोय
प	पंचम असछि, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
स	षड्ज असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा एक
ग	गांधार उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
स	षड्ज असलि, मात्रा तीन	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
_			
प	पंचम असलि, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा दोय
ध	धेवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा दीय
7			

पंचम असलि, मात्रा एक निषाद उतरी, मात्रा एक

स	पड्ज़ असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा दोय
म	मध्यम उत्तरी, मात्रा एक	स	षड्ज असलि, मात्रा तीन

॥ इति उजाल राग संपूर्णम् ॥

अथ सिंधडा रामनीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने उन रामनमंत्तीं विभाग करिवेको । अपने मुखसों काफी संकीण सोरह गाईके । वांको सिंधडा नाम कीनो ॥ अथ सिंधडाको स्वरूप लिख्यते ॥ गोरो जाको रंग है । रंगवि-रंग वस्त पहरे है । उदे रंगकी चोली पहरे है । विशाल जाके नेत्र है । अनेक तरहके आभूषण पहरे है । दादिमीके वीजसे जाके दांत है । महिरापानकी मव-वारी है । ऐसी जो रामनी तांहि सिंधडा जानिये ॥ शास्त्रमंतो यह सात स्वरनमं गाई है । याको अंशस्त्रर गृहस्वर निषादमें न्यासस्वर षड्जमं जानिये । रिगम प ध नि स । याते संपूर्ण है । याको रानिसमें गावनो । यहतो याको वस्तत है । ओर दिन रानिमें चाहो तब गावो । याकी आलापचारी सात स्वरनमें किये राग वरते । सो जंत्रसों समझिये ॥

सिंधड। रागनी (संपूर्ण).

नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	नि	निवाद उतरी, मात्रा दीय		
रि	रिषम चढी, मात्रा एक	घ	वैवत चढी, मात्रा एक		
म	मुख्यमः उत्री, मात्राः एकः	T	पंत्रम असम्भि, माना प्रक		
4	प्रमाम असाद्धिः मान्यः एकः	ध	वेत्रव चबी, गाला प्रक		
थ	मेनक चढी, माला, एक	म	मध्यम् उत्सी माना एक		

ध	धैवत चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
ध	धैवत चढी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असिल, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

नि	निषाद उतरी, नीचछी सप्तककी मात्रा एक	ध	धैवत चढी, मात्रा एक
∙स	षड्ज असार्छ, मात्रा एक	प	पंचम असलि, मात्रा एक
	रिषभ चढी, मात्रा एक	म	मध्यम उतरी, मात्रा एक
म	मध्यम उतरी, मात्रा एक	रि	रिषभ चढी, मात्रा एक
प	पंचम असलि, मात्रा एक	ग	गांधार उतरी, मात्रा एक
नि	निषाद उतरी, मात्रा एक	स	षड्ज असिल, मात्रा एक

॥ इति सिंधडा राग संपूर्णम् ॥ सप्तम रागाध्याय समाप्त.

इति श्रीमन सरजकुलमंडन अरिमद्वंडन मही मंडलावंडल सकल विद्या विद्याविशारद धर्मावतार श्रीमन्महेंद्र महाराज राजाधि-राजेंद्र श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री सवाई प्रतापिसहदेवविरचिते श्री राधागोविंद संगीतसार संपूर्ण श्रंथ॥ समाप्त ॥१॥ श्रीकृष्णाय नमः॥